पद्मपुराण भाषा -८

षष्ठ उत्तरखण्ड

जिसमें जालन्धरकी कथा, सब तीर्थ, गङ्गादिक नदी, विष्णुसहस्र नाम स्तोत्र, छब्बीस एकादशी, भगवद्गीता, भागवत, शालग्राम, कार्त्तिक, माघ और सब व्रतोंका माहात्म्य, रामचन्द्रादि सब अवतारों के चरित्र आदि कथा विस्तारपूर्वक ललित भाषा में वर्णित है ॥

जिसका

भार्गववंशावतंस बाबूप्रयागनारायण जीके व्ययसे ज़िला उन्नाव मौज़े तारगांवनिवासी पण्डित रामविहारी सुकुल ने संस्कृतसे प्रत्यक्षरका भाषामें अनुवाद कियाहै ॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

सन् १८९९ ई० ॥

पद्मपुराण भाषा षष्ठ उत्तरखण्ड का सूचीपत्र ॥

पद्मपुराण भाषा षष्ठ उत्तरखण्डकी भूमिका॥

सम्पूर्ण महाशयोंको विदितहो कि इस उत्तरखण्डमें अनेक प्रकारके चरित्रहैं जिनकी प्रशंसा पुस्तक देखनेही से विदित होसक्ती है इसमें जालन्धरकी कथा, श्रीशैल, हरिद्वार, गंगा, प्रयाग, दशाश्वमेध, तुलसी, शंख, चक्र, गदाआदि की महिमा, द्वारकाका आख्यान, महोत्सवकीविधि, ताल, बावली, कुँआँ और पौसराआदि के बनानेका पुण्य, गणेशजी और विष्णुजी के भक्तों के आगमन, पुराने मन्दिरों के बनानेका माहात्म्य, गङ्गाजीका समागम, साभ्रमती नदी का माहात्म्य, विष्णुसहस्रनामस्तोत्रकथन तथा माहात्म्य, छब्बीस एकादशियों की कथा, और माहात्म्य, गोदावरीका माहात्म्य, शंख, चक्रआदिका धारण, यमुना, गण्डिका, वेत्रवती, गिल्लितीर्थ, शिलाक्षेत्र, अर्बुदेश्वर और इसीके तीर्थादि, सरस्वती और सिद्धक्षेत्रादिकों के माहात्म्य, पद्मनाभजी की उत्पत्ति, तुलसीका धारण, गोपीचन्दनका माहात्म्य, विज्ञानदर्शन और विशेषकर तहांपर धूप और दीपकादान, पट्टकीपूजा, निरञ्जनका माहात्म्य, कार्त्तिक, माघ और सब व्रतोंका विधिपूर्वक माहात्म्य, जगन्नाथजीका माहात्म्य, फूलोंसे विष्णुजीकापूजन और तिनका माहात्म्य, पर्वत और देशोंकावर्णन, गऊ और सिद्धोंके पूजनआदिका माहात्म्य, सिक्थदेने के पुण्यका वर्णन, केलेके गर्भका दान, वृक्षका दान, घोड़े और हाथीका दान, उत्तम जपका माहात्म्य, मंत्रदीक्षाका आगम, गुरुदेव और शिष्यके लक्षण, चरणोदकका माहात्म्य, पिताकी श्राद्धादिक, पिताके मरनेकी तिथिमें पिण्डदान, नीलोत्सर्गकी विधि, चन्द्र सूर्यके ग्रहणमें दानका फल, शालग्रामका माहात्म्य, रुद्रके नामआदि, मथुरा और कुरुक्षेत्रआदिका माहात्म्य, सेतुबन्धरामेश्वरजी का आख्यान, त्र्यम्बक महादेवजीका माहात्म्य, पंचवटीका फल, दण्डकारण्यका माहात्म्य और तिसी माहात्म्यमें नृसिंहजी की उत्पत्तिका कारण, भगवद्गीता, भागवत और यमुनाजीका माहात्म्य, हस्तिनापुरका [illegible] रुक्माङ्गदका चरित्र, वैष्णव की महिमा और वैष्णवके भोजनकराने का द्रव्यके लोभसे विष्णुजी की निन्दाकरनेवालों के पापोंका वर्णन [illegible] का आख्यान, हिमाचलका दर्शन, ब्रह्माकी उत्पत्तिके देशका [illegible]

की उत्पत्ति, गयाजीका व्याख्यान, गदाधर भगवान्का स्वरूप, फल्गुजीका वर्णन और माहात्म्य, महाबोधस्वरूप और कल्कीजीका यश, रामगया और प्रेतशिलाका माहात्म्य, ब्रह्म, शालग्राम, ब्रह्मयोनि और अक्षयवटका आख्यान, और वहांके श्राद्धके फलका वर्णन, महारुद्रकी विष्णुजी में भक्ति, सागरका माहात्म्य, तिल और यवके तर्पणका पुण्य, तुलसीदलसमेत देवोंका तर्पण, शंखनादका माहात्म्य और असंख्यसंज्ञक पुण्य, इतवार विष्णुसंज्ञक, वैधृति और व्यतीपात इन योगोंका माहात्म्य, अन्न, वस्त्र, पृथ्वी, शय्या, गऊ और बैलका दान, जन्माष्टमी, मत्स्य, कच्छप, वाराह और गऊआदिकोंका माहात्म्य और दान, प्रह्लादआदि भक्तोंका माहात्म्य, जागरण और दीपदानकी महिमा, पहरों में अलग पूजाका फल, परशुरामजीका आख्यान, रेणुकाकावध और परशुरामजी का ब्राह्मणोंको भूमिदान, परशुरामजीको आश्रमकी पुण्य, नर्मदा और पुण्यपूजनका आख्यान, वेद और पुराणोंका दान, आश्रमोंका निरूपण, सोने के दान और ब्रह्माण्डदानका पुण्य, पद्मपुराणके दानआदिका फल इत्यादि अनेक विषय वर्णितहैं इसका भार्गववंशावतंस बाबू प्रयागनारायणजी के व्यय से जिला उन्नाव मौजे तारगांव निवासी पण्डित रामविहारी सुकुलने अत्यश्रमका भाषानुवाद कियाहै पुराणों में यह पुराण शिरोमणिहै ॥

मैनेजर अवधअखबार

पद्मपुराण भाषा

षष्ठ उत्तरखण्ड ॥

पहला अध्याय ॥

उत्तरखण्ड की सम्पूर्ण कथा का संक्षेप से वर्णन ॥

नारायण, नरोंमें उत्तम नर, सरस्वती देवी और व्यासजी के नमस्कार कर इस ग्रन्थको प्रारम्भ करते हैं १ और जिन श्रीगुरुजी ने अज्ञानरूपी अन्धकार से अन्धे हमारे नेत्रको ज्ञानरूपी अंजन की सलाई से खोलदिया ऐसे श्रीगुरुजी को नमस्कारहै २ शौनक आदिक ऋषि सूतजी से बोले कि हे जानने वालों में श्रेष्ठ सूतजी आपने अनेक प्रकारकी कथाओं से युक्त परम आनंदका देनेवाला पातालखण्ड जो कहा वह हम लोगोंने सुना ३ और इस समय में हम लोग यह सुना चाहते हैं कि पद्मपुराण में भगवान् की भक्तिका बढ़ाने वाला जो कुछ शेष रहगयाहो वह हे गुरुदेव कृपाकरके कहिये ४ तब सूतजी ने कहा कि हे शौनकादिक मुनीश्वरो नारदजी के पूंछने पर पापका नाशनेवाला विज्ञान जो महादेवजी ने उनको सुनाया है वह सुनिये ५ एक समय में भगवान् के प्रिय नारदमुनि लोकों में घूमते घूमते कुछ मनकी प्राप्तहुई बात को पूंछने के लिये मंदराचल में महादेवजी के पासगये ६ तहां बैठेहुए महादेवजी को नमस्कार कर उन्हीं की आज्ञा पाकर उनके सम्मुखही आसन में बैठकर ७ जो आप लोगोंने पूंछाहै वही प्रश्न महादेवजी से

कि हे भगवन् हे देव हे देवों के स्वामी हे पार्वती के स्वामी और हे संसार के गुरु ८ भगवान् के तत्त्व का विशेष ज्ञान जिससे हो वह कहिये तब महादेवजी ने कहा कि हे नारदमुनि वेद से मिलेहुये पुराण को कहता हूं सुनिये ९ जिसके सुनने से निस्सन्देह सब पापों से छूटजावे पहले नरजी का यश पर्वतजी का चरित्र १० जालंधर जीका आख्यान श्रीशैल हरिद्वार गंगा ११ प्रयाग तीर्थ दशाश्वमेध तुलसी शंख चक्र गदा आदिकी महिमा १२ द्वारका का आख्यान महोत्सवकी विधि ताल बावली कुँआँ और पौसरा आदिके बनाने का पुण्य १३ गणेशके भक्त और विष्णुके भक्तोंके आगमन पुराने मंदिरों के बनाने का माहात्म्य गंगाजी का समागम १४ साभ्रमती और तीरसे उत्पन्न का माहात्म्य स्त्री और शूद्रों के धर्म त्यागेहुओं करके धारण १५ पार्व्वती और महादेव जी के संवाद में विष्णुजी का सहस्रनामकथन और पहले जन्म वाले नारदजी का कैलास से लाना १६ ऐसे विष्णुजी के सहस्रनाम को विशेष कर ब्राह्मण क्षत्रिय स्त्री और शूद्रों को एकाग्रचित्त लगाकर पढ़ना चाहिये १७ यह पवित्र श्रेष्ठ पुण्य का देनेवाला आयु बढ़ानेवाला विष्णुजी का सहस्रनाम विशेषकर पढ़ने योग्यहै इसके पढ़ने से विष्णुजी के सायुज्यको प्राप्त होता है १८ पृथ्वी में विष्णुजी का सहस्रनाम पवित्र सुना जाताहै और चौबीस अवतारों का स्थानक इस को कहते हैं १९ और विष्णुजी के माता और पिता और अन्तरको मैं कहूंगा गोत्र वेद और तिनके कर्मोंको २० और विज्ञान दर्शन में तिनकी स्त्रियों कोभी कहूंगा चौबीस एकादशी और द्वादशी के प्रभाव २१ गोदावरी का माहात्म्य शङ्ख चक्र आदि का धारण इस में विशेष करके ब्राह्मणोंको शङ्ख चक्र आदिका धारण कहाजायगा २२ और हे मुनि यमुना गंडिका और वेत्रवतीका माहात्म्य निस्संदेह तुमसे कहूंगा २३ निष्क्रितीर्थसे उत्पन्न पुण्य और शिप्रा क्षेत्र की महिमा यह उत्तरखण्ड में कहूंगा २४ अर्बुदेश्वरका माहात्म्य और उसमें जो तीर्थादिक हैं उन सबका और सरस्वती और सिद्ध क्षेत्रादिकों का भी माहात्म्य वर्णन होगा २५ पद्मनाभजी की उत्पत्ति तुमसे

का धारण गोपीचन्दन का माहात्म्य पट्टकी पूजा २६ निरञ्जन का माहात्म्य विज्ञानदर्शन और विशेष करके तहां पर धूप और दीप का दान २७ कार्तिक माघ और सब व्रतोंका विधिपूर्वक माहात्म्य २८ हे नारदमुनि सुनिये उत्तम जगन्नाथ जी का माहात्म्य भी कि जिनके दर्शन करनेसे मनुष्य ब्रह्महत्यादिक पापोंसे छूट जाताहै २९ और जहां पर पकेहुए परलोक के देनेवाले प्रसाद को वेदशास्त्र में निपुण ब्राह्मणलोग भोजन करते हैं ३० तब और मनुष्योंकी क्या गिनती है वहांपर पच्चीसनाग बहुतसी नाचनेवाली भी हैं ३१ और ब्राह्मण बालक और गऊ मारने की हत्या ये सब जगन्नाथ जी के दर्शन से नाश होजाती हैं ३२ और जगन्नाथ ऐसा शब्द उच्चारण करनेसे प्राणी बड़े पापोंसे छूटजाताहै फूलोंसे विष्णुका पूजन और तिनका माहात्म्य ३३ पर्वत और देशोंका वर्णन गऊ और सिद्धों के पूजन आदि का माहात्म्य ३४ सिक्थदेने के पुण्यका वर्णन केले के गर्भका दान वृक्षका दान ३५ घोड़े और हाथीका दान उत्तम जप का माहात्म्य मंत्रदीक्षा का आगम गुरुदेवके लक्षण ३६ और पुराणके जाननेवाले जिसतरह से शिष्यका लक्षण कहते हैं तिसका वर्णन चरणोदकका माहात्म्य पिताकीश्राद्धादिक ३७ पिताके मरने की तिथिमें पिण्डदान नीलोत्सर्गकी विधि चन्द्र सूर्यके ग्रहण और ग्रहणमें दानका फल ३८ शालग्रामका माहात्म्य और उनमें माला और चन्दन चढ़ानेका माहात्म्य दशमी एकादशी का वेध द्वादशी एकादशी ३९ रुद्रके नाम आदि मथुरा और कुरुक्षेत्र आदिका माहात्म्य ४० सेतुबन्ध रामेश्वरजीका आख्यान त्र्यम्बक महादेव जीका माहात्म्य पंचवटी का फल ४१ और हे वाडवों में श्रेष्ठ मुनि जी दण्डकारण्यका माहात्म्य और तिसी माहात्म्यमें नृसिंहजी की उत्पत्तिका कारण ४२ गीता भागवत और यमुनाजी का माहात्म्य हस्तिनापुर का वर्णन ४३ रुक्मांगद का चरित्र वैष्णवकी महिमा और एक वैष्णव के भोजन ४४ कराने से समुद्र पर्यन्त पृथ्वी के दान करनेका फल प्राप्त होता है तिसका वर्णन ४५ सत्त्वकरके युक्त सात्त्विक कामुक राजस और तामस अधम कहाते हैं और वैष्णवों

के लक्षण ४६ वेद धर्म में परायण ब्राह्मण वैष्णवों का हे नारदमुनि माहात्म्य जैसाहै वहभी कहताहूं ४७ और हेऋषियोंमेंश्रेष्ठ जे लोग द्रव्यके लोभसे विष्णुकी निन्दा करते हैं तिनके पापोंका वर्णन४८ ज्वालामुखी का आख्यान हिमाचल का दर्शन ब्रह्माकी उत्पत्ति के देशका वर्णन ४९ कायस्थों की उत्पत्ति गयाजी का व्याख्यान गदाधर भगवान् का स्वरूप और फल्गुजीका वर्णन ५० और इन्हों का माहात्म्य जिसप्रकार पद्मपुराण में देखा और सुनाहै महाबोध स्वरूप और कल्कीजीकायश ५१ रामगया और प्रेतशिलाका माहात्म्य ब्रह्मा शालग्राम ५२ ब्रह्मयोनि और अक्षयवटका आख्यान और वहांके श्राद्धके भारीफल का वर्णन ५३ विष्णु महात्मा करके महादेवकृत भक्ति जो कि इस समयमें भी काशीमें महारुद्र जपते हैं ५४ और हे नारदमुनि सागर का माहात्म्य तिलके तर्पण और यवके तर्प्पण का पुण्य ५५ तुलसीदलसहित देवोंका तर्प्पण और जिस प्रकार ब्रह्माने हमसे तर्पण का माहात्म्य कहा तिसका वर्णन ५६ शङ्खनादका माहात्म्य और असंख्यसंज्ञकपुण्य ५७ इतवार विष्णुसंज्ञक वैधृति और व्यतीपात इन योगोंका माहात्म्य ५८ हे नारदमुनि ये सब यथोक्त कहूंगा अन्न, वस्त्रपृथ्वी, ५९ शय्या, गऊ और वैलकादान, जन्माष्टमी, मत्स्य, ६० कच्छप, वाराह और गऊ आदिकोंका माहात्म्य और दान ६१ और जो पृथ्वीमें प्रह्लाद आदि भक्त सुनेगये तिनकाभी हे नारदमुनि माहात्म्य ६२ जागरण और दीपदानकी महिमा पहरोंमें अलग पूजाका फल ६३ परशुरामजी का आख्यान रेणुकाका वध और परशुरामजीका ब्राह्मणोंको भूमिदान ६४ परशुरामजी के आश्रमकी पुण्य नर्म्मदा और पुण्यपूजन का आख्यान ६५ वेद और पुराणों का दान आश्रमों का निरूपण सोने के दान और ब्रह्माण्डदान का पुण्य ६६ पद्मपुराण का दान और खण्डों की व्यक्ति पहला सृष्टिखण्ड दूसरा भूमिखण्ड ६७ तीसरा स्वर्गखण्ड चौथा पातालखण्ड और पांचवां उत्तर खण्ड ६८ यह पद्मपुराण महात्मा व्यासजी ने संसार और ब्राह्मणों के कल्याणके लिये बनायाहै ६९ शूद्रों के पुण्यकी उत्पत्ति और नाम-

दारिद्र्य का नाशकरे मोक्ष सुख और शीघ्र नाशरहित कल्याण को देवे और हे नारदमुनि विधिसे सुनके दानको भी मनुष्यकरे ७० ॥
इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेमहेशनारदसंवादेबीजसमुच्चयोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय॥

बदरीनारायणमाहात्म्य और महादेव के ऊपर नारायण का प्रसन्न होकर वरदान देना॥

महादेवजी नारदमुनिसे बोले कि एकलाख पच्चीसहज़ार पर्वतों के बीचमें बड़ा पुण्यकारी उत्तम बदरिकाश्रम है १ जहां नरनारायण देव रहते हैं तिनके स्वरूप और तेजको इस समय कहताहूं २ हिमवान् पर्वत के कँगूड़े पर कृष्ण के आकार नर नारायण ये दो पुरुष वर्त्तमानहैं ३ तिनमें एक तो श्वेतवर्ण हैं और दूसरे श्यामवर्ण हैं हिमवान् पर्वत में जो जाते हैं सो उसीरास्ते से होकर जाते हैं ४ पिंगल श्वेतवर्ण जटाको धारण किये महाप्रभु नरजी हैं और श्यामवर्ण, जगत् के आदि महाप्रभु नारायण जी हैं ५ चार भुजा वाले महान् पुरुष शोभासंयुक्त व्यक्त अव्यक्त सनातन हैं तिनकी उत्तरायण में बड़ी पूजा होती है ६ और दक्षिणायन सूर्य्यों में छः महीने पाला बहुत पड़ताहै इससे पूजा नहींहोती है ७ इससे ऐसा देवता न हुआहै और न होगा जहां पर देवता बसते हैं और ऋषियों के स्थान भी हैं ८ अग्निहोत्र और वेदके शब्द सदा सुनाई पड़ते हैं कोटि हत्या के नाशनेवाले तिनके दर्शन करने चाहिये ९ और अलकनन्दा गंगाजी वहां पर हैं तिन के स्नान करै स्नान के करतेही बड़े पापोंसे छूटजाताहै १० वहां संसारकेस्वामी निस्संदेह रहते हैं महादेवजी नारदसे कहते हैं कि हे नारद एक समयमें मैंने वहां पर बड़ी तपस्या की ११ तब भक्तों के ऊपर कृपा करनेवाले नाशरहित पुरुष साक्षात् ईश्वर गरुड़ध्वज नारायणजी हमसे बोले कि हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्नहैं वरदान मांगिये १२ जो जो कामनाहो उसको हम देवेंगे तुम कैलासके स्वामी संसार के पालने

के लक्षण ४६ वेद धर्म में परायण ब्राह्मण वैष्णवों का हे नारदमुनि माहात्म्य जैसाहै वहभी कहताहूं ४७ और हेऋषियोंमेंश्रेष्ठ जे लोग द्रव्यके लोभसे विष्णुकी निन्दा करते हैं तिनके पापोंका वर्णन४८ ज्वालामुखी का आख्यान हिमाचल का दर्शन ब्रह्माकी उत्पत्ति के देशका वर्णन ४९ कायस्थों की उत्पत्ति गयाजी का व्याख्यान गदाधर भगवान् का स्वरूप और फल्गुजीका वर्णन ५० और इन्हों का माहात्म्य जिसप्रकार पद्मपुराण में देखा और सुनाहै महाबोध स्वरूप और कल्कीजीकायश ५१ रामगया और प्रेतशिलाका माहात्म्य ब्रह्मा शालग्राम ५२ ब्रह्मयोनि और अक्षयवटका आख्यान और वहांके श्राद्धके भारीफल का वर्णन ५३ विष्णु महात्मा करके महादेवकृत भक्ति जो कि इस समयमें भी काशी में महारुद्र जपते हैं ५४ और हे नारदमुनि सागर का माहात्म्य तिलके तर्पण और यवके तर्प्पण का पुण्य ५५ तुलसीदलसहित देवोंका तर्प्पण और जिस प्रकार ब्रह्माने हमसे तर्पण का माहात्म्य कहा तिसका वर्णन ५६ शङ्खनादका माहात्म्य और असंख्यसंज्ञकपुण्य ५७ इतवार विष्णुसंज्ञक वैधृति और व्यतीपात इन योगोंका माहात्म्य ५८ हे नारदमुनि ये सब यथोक्त कहूंगा अन्न, वस्त्रपृथ्वी, ५९ शय्या, गऊ और बैलकादान, जन्माष्टमी, मत्स्य, ६० कच्छप, वाराह और गऊ आदिकोंका माहात्म्य और दान ६१ और जो पृथ्वीमें प्रह्लाद आदि भक्त सुनेगये तिनकाभी हे नारदमुनि माहात्म्य ६२ जागरण और दीपदानकी महिमा पहरोंमें अलग पूजाका फल ६३ परशुरामजी का आख्यान रेणुकाका वध और परशुरामजीका ब्राह्मणोंको भूमिदान ६४ परशुरामजी के आश्रमकी पुण्य नर्म्मदा और पुण्यपूजन का आख्यान ६५ वेद और पुराणों का दान आश्रमों का निरूपण सोने के दान और ब्रह्माण्डदान का पुण्य ६६ पद्मपुराण का दान और खण्डों की व्यक्ति पहला सृष्टिखण्ड दूसरा भूमिखण्ड ६७ तीसरा स्वर्गखण्ड चौथा पातालखण्ड और पांचवां उत्तर खण्ड ६८ यह पद्मपुराण महात्मा व्यासजी ने संसार और ब्राह्मणों के कल्याणके लिये बनाया है ६९ शूद्रों के पुण्यकी उत्पत्ति और तीव्र-

दारिद्र्य का नाशकरे मोक्ष सुख और शीघ्र नाशरहित कल्याण को देवे और हे नारदमुनि विधिसे सुनके दानको भी मनुष्यकरे ७० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेमहेशनारदसंवादेबीजसमुच्चयोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

बदरीनारायणमाहात्म्य और महादेव के ऊपर नारायण का प्रसन्न होकर वरदान देना ॥

महादेवजी नारदमुनिसे बोले कि एकलाख पच्चीसहज़ार पर्वतों के बीचमें बड़ा पुण्यकारी उत्तम बदरिकाश्रम है १ जहां नरनारायण देव रहते हैं तिनके स्वरूप और तेजको इस समय कहताहूं २ हिमवान् पर्वत के कँगूड़े पर कृष्ण के आकार नर नारायण ये दो पुरुष वर्त्तमान हैं ३ तिनमें एक तो श्वेतवर्ण हैं और दूसरे श्यामवर्ण हैं हिमवान् पर्वत में जो जाते हैं सो उसीरास्ते से होकर जाते हैं ४ पिंगल श्वेतवर्ण जटाको धारण किये महाप्रभु नरजी हैं और श्यामवर्ण, जगत् के आदि महाप्रभु नारायण जी हैं ५ चार भुजा वाले महान् पुरुष शोभासंयुक्त व्यक्त अव्यक्त सनातन हैं तिनकी उत्तरायण में बड़ी पूजा होती है ६ और दक्षिणायन सूर्य्यों में छः महीने पाला बहुत पड़ताहै इससे पूजा नहीं होती है ७ इससे ऐसा देवता न हुआहै और न होगा जहां पर देवता बसते हैं और ऋषियों के स्थान भी हैं ८ अग्निहोत्र और वेदके शब्द सदा सुनाई पड़ते हैं कोटि हत्या के नाशनेवाले तिनके दर्शन करने चाहिये ९ और अलकनन्दा गंगाजी वहां पर हैं तिन के स्नान करै स्नान के करतेही बड़े पापोंसे छूटजाताहै १० वहां संसारकेस्वामी निस्संदेह रहते हैं महादेवजी नारदसे कहते हैं कि हे नारद एक समयमें मैंने वहां पर बड़ी तपस्या की ११ तब भक्तों के ऊपर कृपा करनेवाले नाशरहित पुरुष साक्षात् ईश्वर गरुड़ध्वज नारायणजी हमसे बोले कि हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्नहैं वरदान मांगिये १२ जो जो कामनाहो उसको हम देवेंगे तुम कैलासके स्वामी संसार के पालने

वाले साक्षात् रुद्रहो १३ तब महादेवजी ने कहा कि हे जनार्दन जो आप बहुत प्रसन्न हैं और वरदान देनेकी इच्छा है तो दो वर हमको दीजिये १४ कि तुम्हारी भक्ति सदाहो भक्तराज मैं होऊं सम्पूर्णलोक यह कहैं कि यही सदैवका भक्त है १५ तुम्हारे प्रसाद से हे देवों के स्वामी मैं मुक्तिका देनेवाला होऊं और जे मनुष्य हमको भजैं तिन का निस्संशय देनेवाला होऊं १६ विष्णुका भक्त संसार में प्रसिद्ध होऊं और जिसको हम वरदेवें तिसकी हे प्रभुजी मुक्ति होवे १७ जटा धारण किये भस्म अंगों में लगायेहुए मैं आप के समीप रहूं और तुम्हारे चरणों के प्रसाद से संसार में प्रसिद्ध होऊं १८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायांनारदोमापतिसंवादे बदरीनारायणमाहात्म्येरुद्रप्रसादोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

जालन्धर की उत्पत्ति और ब्रह्माका उसको वरदान देना वर्णन ॥

सूतजी शौनकादिकों से कहते हैं कि एक समय में दुःख से दुर्बल पाण्डवों के देखनेके लिये नारदमुनि काम्यवन में गये वहांपर पाण्डवों ने विधिपूर्वक नारदको सत्कार किया १ और युधिष्ठिर ने नारदजीके नमस्कार कर यह कहा कि हे भगवन् किस कर्म से हम दुःखरूपी समुद्र में गिरे हुए हैं २ तब नारदमुनि ने कहा कि हे पांडुपुत्र दुःख को छोड़ो सुख दुःखके समाहार संसार में कौन मनुष्य सुखीहै ३ ईश्वर भी स्थायी नहीं है देहके संचयों से पीड़ित है दुःखहीन कोई देहधारी नहीं है सबको दुःख सहना पड़ता है ४ सूर्य्य के शरीरको बलवान् राहु ग्रसता है और अमृत के भोजन में राहु के शिरको भगवान्ने काटडाला ५ भगवान् को जालंधर वीरने सागर के गह्वर में छोड़ा और जालंधर वीरको महादेवजी ने मारा ६ तब युधिष्ठिर ने कहा कि यह जालंधरवीर कौन और किसका पुत्र था और कैसे बलवान् हुआ और लड़ाई में महादेवजी ने कैसे उसको मारा ७ यह सब हे तपोधन विस्तार से कहिये जब राजाने इसप्रकार कहा तब नारदमुनि बोले ८ कि हे राजन् युधिष्ठिर सब पाप-

समूहोंके नाशनेवाली सुन्दर कथा सुनिये जिसमें महादेवजी और जालंधर का परमअद्भुत युद्ध हुआ है ९ एक समय में अप्सराओं और बहुत देवतोंको लेकर इन्द्र महादेवजीकी स्तुति करनेको चले कि जिन इन्द्रके संगमें वीणाके सिखलाने में निपुण गन्धर्व और रम्भा, तिलोत्तमा, रामा, कर्पूरा, कदली, १०। ११ मदना, भारती और कामा ये सब अप्सरा वा और भी नाचनेवाली सब आभरणों से भूषित होकर उनके समीपआईं १२ गन्धर्व, यक्ष, सिद्ध, नारद, तुम्बुरु, किन्नर और किन्नरोंकी स्त्रियां १३ वायु, वरुण, कुबेर, यम- राज, अग्नि, निर्ऋति वा औरभी देवतों के समूह आये १४ तिन में विमान में इन्द्र और अप्सरा और देवता लोग अपने अपने वाहनों में चढ़कर शीघ्र कैलासकोचले १५ और चलकर देवोंने पर्व- तों में उत्तम कैलासको देखा जो कि सब पर्वतों में ऐसाहै कि पृथ्वी को शोभित कर रहा है १६ सब ओरसे सुखको देनेवाला शुद्ध सि- द्धि की राशि ऐसा स्थित है और जहां पर वृक्ष कल्पवृक्ष हैं और पत्थर मनोवाञ्छित को देनेवाले हैं १७ पुन्नाग, नाग, चम्प, तिलक, देवदारु, अशोक, पाटल, आंब और कल्पवृक्ष के वृक्षों से पर्व्वत शोभायमान है १८ और जहां पर पवन वन के उत्तम आसवों को लेकर चलती है और मलयाचल की वायु शीतल मन्द सुगन्धित बह रहीहै १९ बावलियों में स्फटिक मणिकी सीढ़ियां और अथाह निर्मल जल भरा हुआहै मूंगेकी नाल से सींचे सोने के समान क- मल हैं २० कोकाबेलि की दीप्ति सब दिशों में शोभितहै और बाव- लियां कमलों से शोभित हैं और पद्मरागकी तरह ढकी हुई हैं २१ और हरितमणि से बँधीहुई और गोमेद से सब ओर आच्छादित और पद्मरागकी शिलाओं से बँधी और अनेक प्रकारकी धातुओं से विचित्रित हैं २२ इसप्रकार स्वर्ग से अधिक रचे हुए अत्यन्त सुंदर पर्वतों में श्रेष्ठ कैलास पर्वतको देखकर सब विस्मय को प्राप्त होकर २३ इन्द्र और सब अप्सरा विमान से उतरकर नन्दीश्वर द्वारपाल से बोले २४ कि हे गणों में श्रेष्ठ हमारे उत्तम वचन को सुनो और जल्द महादेवजी से जनाओ कि सब देवों समेत इन्द्र

नाच कराने के लिये आये हैं इसप्रकार के इन्द्र के वचन सुनकर नन्दीश्वर महादेवजी से बोले २५। २६ कि हे प्रभो सब देवों सहित नाच कराने के लिये इन्द्र आये हैं तब महादेवजी ने कहा कि जल्द इन्द्र को लाओ २७ तब नंदी अप्सरा और देवों सहित इंद्र को लेगये इन्द्र महादेवजी को देखकर स्तुति करनेलगे २८ और रम्भादिक सब अप्सरा महादेवजी के समीप मृदंग वीणा आदि बाजाओं से आनन्दपूर्वक नाच करनेलगीं २९ कोई कांसेके बाजा और कोई वंशी आदि की ताल से अच्छीतरह नाचने लगीं और इन्द्रभी ३० देवतोंको दुर्लभ सुंदर नाच करनेलगे तब महादेवजी प्रसन्न होकर इन्द्रसे बोले ३१ कि हे देवताओं में श्रेष्ठ हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं वर मांगिये जब यह महादेवजी ने कहा तब अपने भुजाओं के बलसे अभिमानी इन्द्रने ३२ महादेवजीसे कहा कि हे प्रभो जहां आपकेसमान योद्धाहो उससे हमको युद्धदीजिये ३३ तब महादेवजी ने उन को वही वरदिया तब तो इन्द्र वरको पाकर चलेगये उनके चलेजानेपर महादेवजी बोले ३४ कि हे गणो हमारे वचन सुनो यह इन्द्र अत्यन्त अभिमानी है ऐसा कहकर महादेव जी के क्रोध आगया ३५ वह क्रोध मेघों के अँधेरेके समान मूर्तिको धारणकर आगे खड़ाहो महादेवजी से बोला ३६ कि हे प्रभो हमको आज्ञा दीजिये क्या करें तब महादेवजी ने कहा कि स्वर्ग के समुद्र और सागर में प्राप्त होकर इन्द्रको जीतो ऐसा सुनकर वीर्य्यवान् क्रोध अन्तर्द्धान होगया और सबगण विस्मयको प्राप्त होगये ३७ ३८ जब महादेव का कल्प हुआ और कामसे समुद्र मिलगये तब स्वर्गका समुद्र अपनी युवावस्था के भारकी गर्मी से मत्त हुआ ३९ उसको देखकर सिंधुराज भी जल की कल्लोल से युक्त हुआ तब हे राजन् गङ्गासागरका संगम होगया ४० फिर समुद्रने महानदी को प्राप्त होकर आत्माके बलसे रमण करके अत्यन्त योद्धा ४१ महानदी में पुत्र उत्पन्न किया जब समुद्रके पुत्र उत्पन्न होगया ४२ और रोया तो पृथ्वी कँपी तिससे त्रिलोकी में शब्द हुआ उस समय में ब्रह्माने समाधि में बँधे मुद्राको छोड़दिया ४३ और उसी समय में

असुरेन्द्र के वचन से तीनों लोकको डरेहुए देखकर ब्रह्मा समुद्र के पास ४४ बड़ा आश्चर्य समझकर हंसपर चढ़कर जल्द गये ब्रह्मा को आते देखकर समुद्रने पूजन किया तब ब्रह्माने कहा कि हे समुद्र तुम वृथा क्यों गर्जतेहो ४५ तब समुद्र बोला कि हे देवों के स्वामी मैं नहीं गर्जताहूं मेरे बलवान् पुत्र है उस बालककी आप रक्षाकरें क्योंकि आपका दर्शन दुर्ल्लभ है ४६ ऐसा कहकर अतिरूपवती अपनी स्त्री से कहा कि बालक को ब्रह्माजी को दिखावो तब उस स्त्री ने अपने स्वामी की आज्ञा से जाकर पुत्रको लाके ब्रह्माजी के समीप ४७ उनके कोड़े में बैठाल कर उनके नमस्कार किया तब अद्भुत समुद्र के पुत्रको देखकर ब्रह्माके बड़ा आश्चर्य हुआ ४८ बालक ने कूर्च पकड़लिया तब ब्रह्मा बालक के हाथ छुड़ाने में समर्थ न होसके तब समुद्र ने हँसकर ब्रह्मा के पास जाकर कूर्च को पकड़कर बालक के हाथको छुड़ादिया ४९ इसप्रकार बालक के पराक्रम को देखकर ब्रह्माने प्रसन्न होकर जालंधर ऐसा कहा इसीसे उसका नाम जालंधर हुआ ५० फिर ब्रह्माजी ने उसको वर दिया कि यह जालन्धर देवतों से भी जीता न जायगा ५१ और हमारे प्रसादसे पातालसमेत स्वर्ग को भोग करैगा ऐसा कहकर ब्रह्माजी हंस पर सवार होकर जल्द अंतर्द्धान होगये ५२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायांयुधिष्ठिरनारदसंवादे उत्तरखण्डेजालन्धरोत्पत्तिब्रह्मागमोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय॥

जालन्धर का वृंदाके साथ विवाह होना और उसका अभिषेक होना॥

नारदमुनि युधिष्ठिर से बोले कि जालन्धर बालक क्रम क्रम से बढ़कर माताके कोड़ा से समुद्र के समीप दौड़कर १ पिंजरे में स्थित सिंह के बच्चों और सिंहों और हाथियों से खेलते हुए युद्ध करता भया २ फिर आकाश में उड़तेहुये पक्षियों को कूदकर पृथ्वी में गिराताभया और अपने गर्जने से समुद्र और स्वर्गको डराताभया ३ और समुद्र के भीतरके सब जीवों को बहुत कष्ट देता भया तब तो

सब जीव समुद्र से निकलगये ४ जीवों से रहित जल को देखकर बड़वानल अग्नि भी उसके डर से अपनी जगह छोड़के हिमालय में प्रवेश करगया ५ क्रम क्रमसे समुद्र का पुत्र बढ़कर बाल्यावस्था छोड़कर युवावस्था को प्राप्त होकर स्वर्गको भी दबाने लगा ६ और एक समय में अपने पितासे कहा कि हे पिताजी मेरे रहने के योग्य बड़ाभारी स्थान दीजिये ७ पुत्रके ऐसे वचन सुनकर समुद्र ने कहा कि हे पुत्र पृथ्वी में दुर्लभ ऐसी राज्य को तुमको दूंगा ८ तिस पीछे एक समय में शुक्रजी समुद्रके यहां आये तो समुद्र ने उनको आये देखकर विधि से पूजनकर ९ बहुत सुन्दर आसन पर बैठाला उस समय में अत्यंतरूपवान् समुद्र शुक्रजी से १० हाथ जोड़कर बोला कि हमारे बड़े भाग्य हुए जो आप का आगमन हुआ कहिये क्या क्या आपकी आज्ञा है उसको हमकरैं ११ तब दैत्यकुल के आचार्य शुक्रजी समुद्र से बोले कि माता की जवानी हरनेवाले ऐसे पुत्र के पैदाहुये से क्या हुआ १२ जो अपने वंश के आगे ध्वजा की तरह नहीं फहरावे निश्चय पराक्रम से तुम्हारा बालक त्रैलोक्यको भोग करैगा १३ अब जम्बूद्वीप में योगिनीगणों से सेवित महापीठ को तुमने इस समयमें डुबा दिया है उसको छोड़कर जालंधरका स्थान वहां पर बनावो १४ और हे समुद्र वहांपर उसको राज्य भी दो हमारे प्रसादसे तुम्हारे पुत्रको कोई जीत और मार नहीं सकेगा १५ जब इसप्रकार शुक्रजी ने प्रीति से कहा तो पुत्रकी प्रीतिके निमित्त जल में स्थल देखकर १६ चारसौ कोस का लम्बा और बारहसौ कोस का चौड़ा पुण्यदेश जालन्धरही के नामसे १७ दैत्यों में श्रेष्ठ मयको बुलायकर सागरने यह कहा कि जालंधर के लिये जालन्धर पीठमें पुर बनाओ १८ जब समुद्रने इसप्रकार कहा तब मयने रत्नमयपुर बनाया जिस में रक्खा नगरके बाहरका फाटक सीढ़ी और गृहभूमिक बनेहुए हैं १९ और इन्द्रनील से बँधेहुये महलों के तले स्थित ताण्डवके मुरैले ऐसे उत्तम बनेहुए हैं मानों मेघों का उद्योग मान रहेहैं २० और मूंगे माणिक्य जड़े हुये महलों से उठीहुई किरणें शकुनों से भ्रामके रुचिर अंकुर की शंका से सेवन की जाती

हैं २१ और सोनेके महलों में सोनेकी दीप्ति को अग्नि समझकर अग्निही की शंका कर अग्नियों से कातर मुरैले देखही कर भाग जाते हैं २२ और स्फटिक मणि की शालाओं से उठी प्रभासे मिल कर दिशा मंदराचल से उद्भ्रांत फेना सहित समुद्रके सदृश शोभित हुईं २३ और अपने अपने महलों के झरोखोंमें स्थित, पूर्ण सन्ध्या के चन्द्रमाके समान मुखवाली स्त्रियां मोह करती हैं २४ और इन्द्र नीप कादम्ब वृक्ष और समीप के वनकी सुगन्धित पवन स्त्रियों के चित्तमें प्रवेशकर उनके मोहनज्वर करती हैं २५ और महलोंमें स्त्री और पुरुष के संयोग की तसवीर देखकर मनुष्य अपनी स्त्रियों से भोगकर निश्चय दूना समय व्यतीत करते हैं २६ और झरोखों से निकली हुई धूप और धूमकी पंक्तियां आकाश में गंगा और यमुना के संगम के सदृश हुईं २७ और अनेक घरसे उत्पन्न दीप्ति से सम्पूर्ण आकाश इन्द्रधनुषसंयुक्त शरद्काल के मेघ की तुल्य शोभितहुआ २८ और सदैव श्रम से भ्रान्त, महल के शिर के ऊपर स्थित, पीड़ित सूर्य्य के घोड़े दोपहरमें विश्राम करते हैं २९ और कहीं कहीं महलोंमें रात्रिमें चँबेलीकी माला धारण करतीहुई श्रेष्ठ स्त्रियां नक्षत्रों के समान शोभित हुईं ३० और सोने के हिंदोल की जंजीर के घिसने से उत्पन्न शब्द मेरु पर्वत की पृथ्वी को सुन्दरी करता भया ३१ तिसपुरमें नदियों और शुक्रजी सहित समुद्र बाजाओं और अपने गर्जनों से पुत्र का अभिषेक करता भया ३२ ब्रह्माजी ने तारकासुरकी जीत में स्वामिकार्तिक को और बृहस्पति ने इन्द्र के देवताओं के स्वामी होनेमें इन्द्रको जिन वाणियों से पढ़ कर मंगलाचार किया था शुक्रजीने भी अत्युत्तम वाणियों से मन्त्र के उत्सवोंसे विवाह समयमें तैसेही मंगल किया कि जिससे पृथ्वी अत्यन्त आनन्दयुक्त हुई ३३ समुद्र ने जालन्धर पुत्र के लिये समुद्रही से उत्पन्न सहस्र महापद्म भयानक सेना दी ३४ और शुक्र जी ने उसको प्रीतिसे रुद्रके मोह करानेवाली माया मृतसंजीवनी नाम विद्या अपनी दी ३५ और शस्त्र व अस्त्र की औरभी विद्या विधि से उसको सिखलाईं ३६ तब समुद्र जालन्धर

अभिषेककर नदियों समेत सुंदर देहसे अपने स्थानको गया ३७ और जालंधर गोपुरों से शोभित सुंदर पुरको देखकर शुक्रजी और ब्राह्मणों के समूहों से अच्छे प्रकार पूजित होकर घूमता भया ३८ इसी अवसरमें पातालके रहनेवाले बड़े बलवान् कालनेमि इत्यादि दैत्य जालंधरके पास प्राप्त हुए ३९ और उन बली वीरों ने समुद्रकी दीहुई सेना के सेनापति शुंभासुर दैत्यको नियत किया ४० तब जालंधर अपनी फ़ौजको अपने वशमें कर और पृथ्वीमें जल को स्थिरकर पिताकी दी हुई राज्यको करनेलगा ४१ कि इसी अवसरमें पहले स्वर्ग की रहनेवाली स्वर्णानाम अप्सरा कि जिसके कौंच के प्रसाद से वृन्दानाम कन्या हुई थी ४२ जो कि ऐसी रूपवती थी कि ब्रह्माने जो सुन्दरता अलग अलग रची थी वह सब इकट्ठा देखने के लिये वृन्दाही की देहमें बनादी ४३ ऐसी अत्यन्त पवित्र अंगवाली मनुष्यों के मोहनेवाली स्त्री को शुक्र जी ने स्वर्णा से जालन्धर के लिये मांगा तब स्वर्णा ने उसको देदिया ४४ तब शुक्रजी ने वृन्दा से कहा कि कामदेव के जगत्‌नेत्र शस्त्र, आश्चर्य करनेवाले इस रूप से हे रंभोरु तुम्हारी बड़ी उमर और सुखी हो ४५ और कामदेव के समान सुन्दर बड़े नेत्रोंवाले वीर जालन्धर को कि जिसको ब्रह्मा ने सम्पूर्ण सुन्दरता दी है और आप उसको देखकर विस्मित भी हुएहैं ऐसे पतिको प्राप्तहो तब तो शुक्रजीका सम्मत समझके वृन्दा जालंधरके पास प्राप्तहुई ४६ तो जालंधर ने गांधर्वविवाह से वृन्दा के साथ विवाह किया और दोनों स्त्री पुरुष मनुष्योंको आनन्द करनेवाले हुए ४७ और तिसके साथ जालंधरने चंचलता को त्यागदी और वृद्धों के करने योग्य वृत्तसे पराई स्त्री की न कांक्षा करताभया ४८ किसी समयमें जालंधर सभा में बैठाथा कि राहुको शिरहीन देखकर शुक्रजीसे पूंछा कि यह क्यों देहके आधे भागही करके है ४९ तब उसके वचन सुनकर शुक्रजी ने पहले का वृत्तान्त आदि से सुनाया कि जिसप्रकार देवताओं ने अमृत के कारणसे क्षीरसमुद्र को मथा था ५० इस प्रकारके वचन सुनकर विस्मित हो जालन्धर ने प्रसन्नता से राहु से कहा कि तुम

कामदेवके सदृश इस समय रूपवान् होजाओ ५१ इसप्रकार शुक्र जीके मंत्रसे प्रतापी जालंधरने उसको रूपवान् कर चचा को स्मरण कर देवताओं से लड़ाई करने का विचार किया ५२ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेनारदयुधिष्ठिरसंवादेजालंधरोपाख्यानेवृन्दाविवाहोजालंधराभिषेको नामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

देवों और जालन्धरकी सेनासे परस्पर युद्ध होना ॥

युधिष्ठिरने पूंछा कि हे नारदजी जालन्धरका कौन चचाथा और लड़ाई का कारण देवतों से क्याथा और किस प्रकार युद्ध किया १ तब नारदजीने कहा कि हे राजन् सुनिये जालन्धर का चचा क्षीरसागर था क्षीरसागर को मथकर देवताओं ने धन लेलिया था २ लक्ष्मी, चन्द्रमा, अमृत, ऐरावतहाथी, उच्चैश्श्रवा घोड़ा ये सब वस्तु देवता और दैत्योंने समुद्र मथने में प्राप्त कीथीं परन्तु देवताही ले गये ऐसा सुनकर जालन्धर असुरने देवों के साथ विग्रह किया ३ और किसी समय में बलवान् जालन्धरने दुर्वारण दूतको इन्द्र के स्थान में सन्देशा सिखाकर भेजा कि वहां जाकर सब सन्देशा कहना ४ तबतो दुर्वारण दूत रथपर सवार होकर आकाश में इन्द्रके स्थानके पास गया परन्तु जब स्थानमें प्रवेश करना चाहा तो द्वार पर द्वारपालों ने रोंका ५ तब दूतने कहा कि जालन्धर का दूत मैं इन्द्रके समीप आयाहूं आपलोग जाकर इन्द्र को जनाइये ६ ऐसे दुर्वारण दूत के वचन सुनकर द्वारपाल इन्द्र के पास जाकर नमस्कार कर बोला कि हे देव पृथ्वी से दूत आयाहै ७ जब द्वारपालने इन्द्र से ऐसे कहा तो इन्द्रने कहा कि दूतको लाओ तब द्वारपाल तिस दूतको हाथसे पकड़कर इन्द्रके समीप लेगया ८ तब दुर्वारणने इन्द्रकी सभा में प्रवेशकर क्या देखा कि इन्द्र तीस [illegible] देवताओंके बीचमें ६ चामर की पवन से सेवित सुन्दर [illegible] सनमें बैठेहुए हैं और इन्द्राणी के प्रेमरूपी रससे फूल [illegible]

रूपी हजार नेत्र जिनके १० ऐसे इन्द्र को वृहस्पतिजी समेत देख
कर दुर्वारणने प्रणामकिया और अपने अभिमानसे इन्द्रके नयनों
की शोभा देखकर हँसा ११ और बतलायेहुए आसनपर बैठा तब
इन्द्रने कहा कि तुम किस के दूतहो और किस कार्य के लिये आये
हो १२ तब दुर्वारणने इन्द्रसे कहा कि मैं जालन्धर का दूतहूं वह
सब लोकोंका राजा है उसकी आज्ञा हमारे मुख से सुनिये १३ कि
हमारा चचा क्षीरसागर मन्दराचल से आपने क्यों मथा और बड़े
धनवाले खज़ानेको क्यों हरलिया १४ लक्ष्मी, चन्द्रमा, अमृत, ऐ-
रावतहाथी, उच्चैश्श्रवा घोड़ा, मणि और मूंगे इत्यादि इनसबको दो
और हे इन्द्र जल्द स्वर्ग को छोड़दो १५ आप हमारे वचन से जो
उचितहो सब जल्द करो और जो जीने की इच्छा चाहो तो राजा
जालन्धर से क्षमा कराओ १६ तब इन्द्रने हँसकर दुर्वारण से कहा
कि हे दूत संक्षेप से समुद्र के मथने का कारण सुनिये १७ पूर्वकाल
में हिमवान् पर्वतका पुत्र मैनाकनामी हमारा वैरी तिस जड़ समुद्रने
अपने भीतर छिपा लियाथा १८ और घोड़ारूपी अग्निने चराचर
जीवों को जलादिया था उसको भी दुरात्मा समुद्र ने छिपाया १९
और धर्म्म के वैरी दानवों का आश्रय प्रभु यह है सदैव दानवोंको
दही, घी और दूध देता है २० इसीसे हे दुर्वारण हम सब पुराने
देवताओं ने इस को मथा और यह दंडदिया कि इसकी सब लक्ष्मी
हरली २१ और अगस्त्य मुनिने इसको सुखा दियाथा यह दुःसंग
ही से कष्ट उठाता है २२ यह जालन्धर सब सेना समेत भी जो
आवेगा तो उसी समय में नाशको प्राप्त होजायगा २३ ऐसा कह
कर इन्द्र चुप होरहा तब दूतने जालन्धर के पास जाकर आदि से
इन्द्रका सब कहा हुआ सुनाया २४ नारदने युधिष्ठिर से कहा कि
जालन्धर इन्द्र का सन्देशा अपने दूत के मुख से सुनकर क्रोधकर
सब सेना को बुलवाता भया २५ तब जालन्धर की आज्ञा से रसा-
तल और पृथ्वी के सब दैत्य अपनी अपनी सेना लेकर जालन्धर
के पास आगये २६ उस समय जालन्धर की सेनाकी यात्रा के स-
मय में सैन्यकी गर्जनसे हे युधिष्ठिर आकाशसे लेकर पातालपर्यंत

सब दिशाओं में शब्द भरजाता भया २७ किसी किसी राक्षसों के घोड़ा, हाथी, ऊंट, बिलार, व्याघ्र, सिंह और मूसे कैसे भयानक मुखहैं और बिजुली की तरह नेत्रहैं २८ सांपके सदृश किसी के बार बड़ी बड़ी देहवाले और किसीके तलवार के तुल्य रोयें हैं कोई दौड़ रहे हैं और कोई मेघसदृश गर्ज रहे हैं २९ रथ, हाथी, घोड़ा और पैदलसे सेना व्याप्त है लड़ाई के विनोद के समूहों से प्रकाशित है सौ अब्ज हज़ार करोड़ जिसमें नायक हैं इसप्रकार सब सेना शोभायमान हुई ३० सौ योजनके विस्तारवाले विमानहैं जोकि हंसके करोड़ों करके युक्त हैं भूतिके हज़ार समूह हैं और सब वस्तुओं से अच्छीतरह पूरितहैं ३१ इसप्रकारके विमान में सवार होकर जल्द जालंधर चला और पहलेही दिन सेनाके साथ दो पहरके समयमें मंदराचलमें प्राप्तहुआ ३२ और दूसरे दिन सेना समेत मेरुपर्वत में पहुंचा जोकि पालकी ले चलनेवालों से खण्डित है और भारी हाथियोंसे दलितहै ३३ फिर इलावृत्त शिखरमें उसकी भारी सेना ठहरी तिस पीछे दैत्यों के सेनापति खाण्डव नन्दनवन को तोड़ने लगे ३४ और मेरु पर्व्वत के शिखर ढहानेलगे और कल्पवृक्ष के वृक्षोंमें हिन्दोलके मंचाने बांधनेलगे ३५ और सिद्धोंकी स्त्रियों के साथ रमण करनेलगे उन स्त्रियों के कुचों की केसर, पान, चन्दन, अगरु, भूषण ३६ और केशपाशसे गिरेहुए फूलों से मेरुपर्वतकी नदी पूर्ण होगई और सुमेरु के पूर्व दिशाका भाग हाथियोंसे चूर्ण होगया ३७ दक्षिणका भाग रथों और उत्तर पश्चिमका योद्धाओं से चूर्ण होगया तिस पीछे जालन्धर असुर ने दैत्योंको महेन्द्र शिखरमें भेजा तब तो दैत्य लोग नगारों को बजातेहुए चले यमराज और वरुणकी राजपुरी को तोड़कर ३८। ३९ औरभी लोकपालों की पुरियों को तोड़तेहुए इन्द्रपुरी में आपहुँचे तबतो स्वर्ग में आकाश, पृथ्वी और अन्तरिक्षके उत्पात होनेलगे ४० बहुतसी धूलि गिरनेलगी और बहुत अन्धकार छागया तिस समय में दीप्तिहीन वज्र इन्द्र के हाथ से गिरपड़ा ४१ ऐसे स्वर्ग में भयङ्कर अशकुन देखकर इन्द्रने बृहस्पतिजी से कहा क्याकरें किसकी शरण में जावें

इस उपस्थित युद्धको देखिये ४२ तब बृहस्पतिने इन्द्रसे कहा कि वैकुण्ठवासी विष्णुजीके चरणकी शरणमें चलो ४३ जब बृहस्पति जी ने इस प्रकार कहा तो इन्द्र देवताओं के संग जल्द वैकुण्ठ में कैटभके वैरी विष्णु के शरण में गये ४४ तब विजयनाम द्वारपाल ने भगवान् से जाकर कहा कि जालन्धर के भयसे डरेहुये सब देवता प्राप्त हुए हैं ४५ तब तो लक्ष्मीजी ने भगवान् से कहा कि देवतों के लिये युद्ध करनेवाले आप से मेरा भाई जालन्धर मारने योग्य नहीं है शाप दिया गया है परन्तु हमारी प्रीति से मारने के योग्य न होवे ४६ ऐसे लक्ष्मी के वचन सुनकर त्रैलोक्य के पालने वाले विष्णुजी पंखों के फैलाने से ढकगया है आकाश ऐसे गरुड़ पर चढ़कर ४७ वैकुण्ठ से जल्द निकलकर जालन्धर के भय से डरे हुए दीप्तिहीन देवतों को देखते भये ४८ और सब देवताओं ने भी जल समेत मेघों की तुल्य श्यामवर्ण शार्ङ्ग धनुष शंख गदा और कमलसे शोभायमान चार भुजावाले विष्णुजी को देखा ४९ तब तो इन्द्रने स्तोत्र पढ़कर विष्णुजी के आगे कहा कि हे देव जालंधर से स्वर्ग चूर्ण होगया ५० ऐसे इन्द्रके वचन सुनकर देवताओं को अभय देकर देवताओंके साथ असुर जीतने को विष्णुजी भी शोभितहुए ५१ तदनन्तर वज्रको धारणकिये इन्द्रजी मातलि नाम सारथीके लायेहुए रथपर सवार होकर भगवान्‌के आगे चले ५२ बाईं और दहनीओर सब देवता भी चले और मेढ़पर सवार होकर दहनी ओर अग्निजी चले ५३ और इन्द्र के पुत्र जयंत ऐरावत हाथी पर और इन्द्र उच्चैःश्रवा घोड़ा पर सवार होकर दोनों भगवान् के आगे चले ५४ धाता, अर्यमा, मित्र, वरुण, अंश, भग, इन्द्र, विवस्वान्, पूषा, पर्जन्य ५५ त्वष्टा और विष्णु ये बारह सूर्य इन्द्रके आगे स्थितहुए ५६ और वीरभद्र, शंभु, गिरिश, महायशाः, अजैकपात्, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, अपराजित ५७ भुवनाधीश्वर, कपाली, स्थाणु, और भग ये ग्यारहरुद्र ५८ और श्वसन, स्पर्शन, वायु, अनिल, मारुत, प्राण, अपान और जीव ये आठ पवन भी इन्द्र के आगेचले ५९ और तिनके बीच में विवस्वान् नाम सूर्य

बारह मूर्तियों से चले किन्नरों के स्वामी कुबेर पालकी पर सवारहो कर चले ६० ग्यारहो रुद्र बैल पर त्रिशूल और परिघ हथियार लिये हुए चले पवन हरिण पर चले ६१ गन्धर्व, चारण, यक्ष, पिशाच, उरग, गुह्यक ये सब हथियार बांधेहुए सेनाके आगेचले ६२ इस भांति सेनाने पूर्व और पश्चिम समुद्रको दबालिया और उसी सेना में शूकर का रूप धारणकर हरिजी ६३ दैत्यों की सेना नाश करने के लिये शीघ्रही स्वर्ग्ग से आकर प्राप्तहुए तिसमें सुमेरु का उत्तर भाग तो देवों की सेनासे आच्छादित होगया ६४ और सोने के कँगूड़ेसे उतरकर जालन्धरकी सेना सुमेरुके दक्षिणओर जल्द स्थित होगई ६५ और एक दिन रातमें तिस इलावृतखण्डमें मेरु और मन्दराचलके बीचमें युद्धकी भूमि रचीगई ६६ तिसमें शुक्र की कही हुई दैत्यों की जय देनेवाली भूमि में आनन्द समेत शीघ्र दैत्य जातेभये और बृहस्पतिकी कही हुई में देवता गये ६७ रथके श्रेष्ठवीरों, मेघों के समान श्यामवर्ण मद बहनेवाले हाथियों, अगणित घोड़ों और गरुड़ आगे चलनेवाले ऐसे पैदलों से रणभूमि शोभितहुई ६८ तदनन्तर दोनों सेनाओंमें बाजाओंका बड़ा शब्द और परस्पर गर्जते हुए वीरोंके गर्जने का बड़ाही कोलाहल हुआ ६९ तिसपीछे दैत्य और देवतों का बड़ा भयानक युद्ध हुआ सब सेनाका इसप्रकार मर्दन हुआ कि जैसे तीनोंलोकों का नाशहो ७० और भयसमेत बहुत थकीहुई श्रुति वारंवार रोदन करती भई और अपने रथों के आकार भी न दिखाई दिये बाणों से तिस समय में पूर्णहोगये ७१ धूलि कपड़ोंको कँपाताहुआ रोमावली खड़ेहुए आकाश शोभित हुआ और भयानक पक्षियों के शब्दों से डरके मारे रोदनसा करता भया ७२ तिस समय में इन्द्र की आज्ञा से संवर्त आदिक मेघ हाथियों पर सवार होकर युद्धमें असुरों से लड़नेलगे ७३ देवताओं में गन्धर्व, किन्नर तो घोड़ोंपर चढ़े साध्य, सिद्ध रथों पर यक्ष, चारण हाथियों पर ७४ किम्पुरुष और पवनके भोजन करनेवाले सर्प पैदलहुए और यमराजजी का नायक रोगोंका स्वामी यक्ष्मा भी पैदलही हुआ ७५ तिस समय में दानवों और रोगों का

बड़ा घोर युद्धहुआ पहले तो शूल और ज्वर रोगसे राक्षस गिराये हुए पृथ्वी में लोटनेलगे ७६ फिर दानवोंके मारेहुए रोग संग्राममें गिरगये और कोई कोई रोग तो पहाड़ोंमें भगगये ७७ और तिस कालमें वैशल्यकरणी आदि सहज औषधें सेनामें दानवों से लड़ने लगीं और यमराज के दूत ७८ बाण, मुद्गर और पट्टिशों से राक्षसों करके मारे गये तिन में पैदलवाले पैदलवालों से तीक्ष्ण तलवार और परश्वध नाम हथियारोंसे ७९ परस्पर कोटियों मारेगये और रक्तसे लाल देहहुए घोड़ों के चढ़नेवाले तिस समयमें तेज घोड़ोंपर चढ़ आकाशमें प्राप्तहुये ८० और परस्पर मिलकर मारनेलगे और रथके चढ़नेवालोंका भयानक समूह रथों के समूहों से पृथ्वीको आच्छादित कर ८१ धनुषों से छूटे तीक्ष्णबाणों से महारथियोंको ताड़ित करते भये और मदसे क्षीणहुए कपोल अङ्गवाले वीर हाथोंसे हाथोंको दृढ़बांधकर ८२ और क्रोधयुक्त हाथियों के सवार भी हाथियोंके सवारोंसे लड़कर पृथ्वीमें गिरतेभये और कोई दैत्य दोनों हाथों से रथको उठा कर आकाश में चला गया ८३ और घोड़े के चढ़नेवाले, घोड़े और हाथियोंको पृथ्वी में गिराताभया और किसी का कांधा पकड़ कर जालन्धर के पास शीघ्रता से गया ८४ और कोई राक्षस दोनों कखरियोंमें दो हाथियों और तीसरे हाथीको पेट के ऊपर और चौथेको मस्तक में धरकर लड़ाई में दौड़ताभया ८५ और कोई दैत्य म्यान से निर्मल वस्त्रवाली तलवारको निकालकर सहस्रों देवताओं को युद्धमें गिराताभया ८६ और रतिमें लम्पट, मोटे स्तनों वाली और सूक्ष्म अङ्गवाली कोई अप्सरा आकाश से जल्द रणभूमि में आकर किसी दैत्य को लेगई ८७ और तीक्ष्ण बाण लगेहुए उसके मुंहको चूंवती भई फिर कालनेमि राक्षसने देवताओं की सेनाको बांधा और नाचनेलगा ८८ तब तो क्रोधयुक्त जनार्दन भगवान् कालनेमिके पास पहुंचे यमराज दुर्वारणवीर के पास चन्द्रमा और सूर्य्य राहुके पास ८९ वैश्वानरदेव केतुके और बृहस्पति जी शुक्र के अश्विनीकुमार अङ्गारपर्णक राक्षस के ९० इन्द्रका पुत्र संह्लाद के और कुबेरजी निर्ह्लाद के पास पहुंचे रुद्रोंने

निशुम्भ राक्षसको घेरा वसुओंने शुम्भको ९१ मेघों के सदृश स्थित जम्भ को विश्वेदेवों ने घेरा वायुवज्र रोमा के पास और मृत्युमय राक्षस के पास पहुँचे ९२ शक्तिको हाथ में लियेहुए इन्द्र नमुचि के पास दौड़े और देवताभी अपनेअपने बलके समान राक्षसोंके पास दौड़कर पहुंचे ९३ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेयुधिष्ठिरनारदसंवादेदेवदानवयुद्धंनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

देवता और दैत्योंके युद्धमें बल दैत्यका स्वर्ग में जाना ॥

नारदजी ने कहा कि हे युधिष्ठिर सब वीरों से द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा तब क्रोधयुक्त हरिजी ने कालनेमि राक्षसको गदासे मारा १ तब तो गदाके लगने से उसको मूर्च्छा आगई मूर्च्छा को छोड़कर विष्णुकी चिन्तनाकर बाणोंसे उसने विष्णुजीको मारा तब तो क्रोधयुक्त हरिजी ने उसको प्राण रहितकर पृथ्वी में गिरादिया २ और चन्द्रमाने राहुकी चिन्तनाकर उसके तलवारमारी तब राहुने चन्द्रमाको छोड़ दिया और तिसी समय सूर्य्य के पास दौड़ा ३ और सूर्य्यजीको लड़ाई में जीतकर फिर चन्द्रमाके पास दौड़ आया तब तो चन्द्रमाने फिर उसके तलवारमारी ४ परन्तु राहुके अङ्गकी कठिनता से तलवारही चूर्ण होगई फिर तो राहुने कठिन घूंसेसे चन्द्रमाको मारा ५ और चन्द्रमाको बड़ीजल्दी उठाकर कण्ठमें धरकर लीलकर फिर उगिल दिया ६ और अपने चिह्न हरिणको तो अपनी छातीही में रखलिया और चन्द्रमा को छोड़ दिया और घोड़ों में रत्नरूप उच्चैःश्रवा को पकड़कर ७ जालन्धर के समीप लेजाकर भक्ति से उस को देदिया फिर क्रोधयुक्त दुर्वारण राक्षसने गदासे यमराजको मारा ८ तब तो इन्द्र के पुत्र ने तीक्ष्ण बाणों से उस को मारा फिर संह्लाद राक्षसने परिघों से मारकर इन्द्र के पुत्रको मूर्च्छित कर पकड़ के ९ ऐरावत पर चढ़कर जालंधरके पास गमन किया और कुबे[illegible] गदा से निह्लाद को मारा १० रुद्रों ने पराक्रम कर त्रिशूलों [illegible]

शुम्भ को मारा और निशुम्भने बाणके समूहों से रुद्रों को अत्यंत पीड़ित किया ११ शुम्भासुर ने देवतों के समूहों को बाणों से पूरित करदिया और मायाके जाननेवाले मयराक्षस ने मृत्युको फँसरी से बांधकर लेआके १२ जालन्धरको दिया जालन्धरने मृत्युको समुद्र में छोड़ दिया कि जिससे लोक निर्भयजीवे १३ और इन्द्र नमुचि को फँसरी से बाँधकर रसातल में लेगये तिस पीछे संसारके नाशने वाले भगवान्के पास जालन्धरगये १४ तदनन्तर इन्द्र और बल राक्षस का घोरयुद्ध होने लगा बलके अंग की दीप्तियां इस प्रकार प्रकाशित हुईं कि जैसे सूर्य्यकी किरणों से दशों दिशा प्रकाश युक्त होजाती हैं १५ तिससमयमें इन्द्रने भयङ्कर शब्दकिया कि जिसको सुनकर सबल हँसा तिसके हँसतेही उसके मुखसे मोतियां निकलनेलगीं १६ तब तो उस के अंगकी अभिलाषा से इन्द्रने युद्ध किया और अत्यन्त बलीकी अच्छी प्रकारसे स्तुतिकी १७ तब तो बलने कहा कि हे सुरश्रेष्ठ वरदानमांगो तब इन्द्रने कहा कि हे दैत्यों के स्वामी जो आप प्रसन्नहैं तो अपनी देह दीजिये १८ इसप्रकार के इन्द्रके वचनोंको सुनकर उसने कहा कि शस्त्रोंसे काटकर हमारी देह लीजिये महात्माओंको कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो न देसकें १९ (जैसे बहरेको वाणीका सुनाई देना अन्धे को चञ्चल आंखोंवाली स्त्री का मिलना और कायर पुरुष को शत्रुओं में फूलकी मालाकी तरह श्री निष्फल है १ महात्मालोग मारनेवाले शत्रुको भी ग्रहण करते हैं जैसे पहाड़की नदियां अपनी वैरिणी नदियोंके साथ समुद्र में मिलजाती हैं २ और पराये हितमें लगाहुआ सज्जन मनुष्य विकारको मृत्यु समय में भी नहीं प्राप्त होता जैसे काटाहुआ चन्दन का वृक्ष कुल्हाड़े के मुंह को भी सुगन्धित करता है ३ थोड़ी भी सज्जनों में लक्ष्मी नहीं दीजाती तो श्रेष्ठ देव को भी नष्ट करती है जैसे चन्द्रमाकी वही कला शेष रहजाती है जो महादेव के शिर में रहती है ४ वही साधुलोग तीनोंलोकमें शिरोमणि होते हैं जो उपकार न करनेवाले के ऊपर भी साधुताही दिखलाते हैं और अपने

ये ५ श्लोक बहुत पुस्तकों में नहीं दिखाई पड़ते जो कि ( ) इस चिह्नके भीतर हैं॥

प्रयोजन के कारण से देह काटडालीगई हो तो उसमें साधुओं का क्षमा करना कुछ बात नहीं यों तो दुर्जन मनुष्य भी करते हैं १९ जब बलने कहा कि हमारे अंग को काट लीजिये तब इन्द्रने मुद्गर से उसके अंगको काटना प्रारंभ किया परन्तु उसका अंग न कटा तब तो इन्द्र के चिन्ता हुई २० तब इन्द्रके सारथी ने इन्द्रसे कहा कि वज्रसे काटिये तब इन्द्रने वज्रसे बलके अंग को काटा २१ तो उसके अंगका एक भाग तो कनकाचल में दूसरा हिमाचलमें ती-सरा गोनग में २२ चौथा गंगाजी में पांचवां मन्दराचल में और विजय के अंगसे उत्पन्न छठाभाग वज्राकर में गिरा २३ शुद्धकर्म्म और उसके जातिमें शुद्धहोनेके कारणसे उसकी देहके अंगरत्नोंके बीजके भावको प्राप्तहुए २४ वज्रसे हाड़ोंके कण जो गिरे वे छःको-णकी मणिहोगये नेत्रों से इन्द्र नीलमणिहुई कानों से माणिक्यहुए २५ घावसे पद्मरागमणि हुई मेदसे मरकतमणि जीभसे मूंगे दांतों से मोती २६ मज्जासे मरकतमणि नस से गारुत्मतमणि विष्ठा से कांसा वीर्य से चांदी मूत्र से तांबा २७ अंग के उद्वर्त्तन से पीतल शब्दसे वैडूर्यमणि और श्रेष्ठरत्न २८ नहों से सोना रक्तसे रस मेद से स्फटिकमणि मांससे मूंगा २९ ये सब रत्न पृथ्वी में बलकी देह से हुए पुण्यकी वृद्धिकी सम्पत्तिसे निर्मल मनुष्यों करके रत्नादिक भोगकिये जाते हैं ३० इस अवसर में बलकीरानी प्रभावती ने ल-ड़ाईमें इन्द्र से अपने पतिको नाश सुनकर उनके चरणों के समीप आकर ३१ कटेहुए देखकर बहुत विलाप किया और आंशुओं से पूर्ण नेत्रवाली छूटेबालों और मोटे स्तनवाली प्रभावती ३२ बोली कि हा अत्यन्त बलवान् सुन्दरदेहवाले संसारके प्यारे स्वामी हम को छोड़कर आप यहां क्या मोक्षको प्राप्तहोगये ३३ देखो औरदे-हधारी वृद्धावस्था और कुष्ठादिकों से व्याप्त देहको जानकरभी बड़ी प्रिय समझकर नहीं त्यागते हैं और आपने इस प्रकारकी देहको वृथा छोड़दिया ३४ और हे प्रिय तुम्हारी सुन्दरदेहमें हार शोभित होताथा और लड़ाईमें उत्साहयुक्त आपने हमारी वेणी
तिसको हे प्रिय आपही खोलिये क्योंकि हमतो विधवा के

से भगवान् विस्मययुक्त होतेभये २० तब संलग्न शिरको देखकर गरुड़ पृथ्वी में गिरपड़े और कूदकर शिर अपनी जगह पर चला गया २१ फिर शैलरोमा गरुड़को छोड़कर विष्णुजीको मारनेलगा विष्णुजी ने तलवार से उस को मारकर पृथ्वी में गिरा दिया २२ तदनन्तर जालन्धर खड्गरोमा सारथी से बोला कि हमारे रथ को भगवान् के पास लेचलो २३ तव तो जालन्धर के वचन सुनकर खड्गरोमा रथको लेगया तव आगे विष्णु को देखकर जालन्धर ने उनसे कहा २४ कि हे लक्ष्मी के पति विष्णुजी शङ्का को छोड़कर मुझे मारिये मैं तुमको न मारूंगा तव जालन्धरके ऐसे वचन सुन कर क्रोधसे लाल नेत्रकर २५ भगवान् प्राणके हरनेवाले वाणों से उस को पूर्णकर देतेभये विष्णुजी से उस का अङ्ग कटगया परन्तु प्रतापी जालन्धर २६ वाणों के समूहों से भगवान् को भी पूर्ण कर देताभया और इसके सैकड़ों वाणों से भिन्न अङ्ग होकर मूर्च्छित होकर गरुड़जी गिरपड़े २७ तव जालन्धर के वाणों से पृथ्वी में गिरेहुए गरुड़को देखकर वैकुंठमें स्थित रथको भगवान् ने स्मरण किया २८ तिसीसमय में घोड़ों से जुताहुआ और सारथी से रहित भगवान् का रथ प्राप्त होगया तव तो घोड़ों से जुते रथको देखकर भगवान् विस्मय युक्त होगये २९ और गरुड़को समझाकर सार-थी वनाया गरुड़ने माथेमें मुकुट और हृदयमें कौस्तुभ मणि धार-णकी ३० और वड़े वली घोड़ों को रथमें लगाकर रथके पहियों से पृथ्वी को विदारण करतेहुए देवतों के साथ भगवान् जालन्धर के पास पहुंचे ३१ और वेगसे वाणोंसे दानवों की सेनाको मारा फिर इन्द्रने वीतिहोत्र को आज्ञादिया ३२ उन्हों ने पवन संयुक्त दानवों की सेना को जलादिया तव देवतों समेत भगवान् से दैत्य सेना नाशहुई ३३ तिस समय में जालन्धर ने अपनी थोड़ी सेना वची हुई देखकर शुक्रजीको ध्यानकिया तव शुक्रजी प्राप्त होगये तो जा-लन्धरने उनसे कहा कि हमारी सेना देवोंने मारडाली ३४ और मंत्र के जाननेवाले आप स्थितही रहे आप तो विद्यामें वहुत प्रसिद्ध हैं हे ब्रह्मन् ऐसी विद्या और छत्र वलसे क्याहै ३५ कि जो विद्या रोग

से व्याकुलों की न रक्षाकरै और बल शरण आये की रक्षा न करे तब तो जालंधर के वचन सुनकर शुक्रजी बोले ३६ कि हे राजन् जालन्धर ब्राह्मण हमारे बल को रणभूमि में देखिये ऐसा कहकर जल छिड़कदिया और हुंकारसे सबको प्रबोधित किया ३७ देवतों के प्राण नाशने वाले बाणसमूहों से गिरा दिये गये थे उन सबको शुक्रजी ने जिलादिया तो सब जालंधर के आस पास खड़े होगये ३८ जो कि बाणों से जर्जरदेह और भिन्न होगये थे उन्होंने प्राण धारण करलिये और अमर होनेके कारण से नहीं मरे ३९ तदनन्तर देव नारायणजी बृहस्पतिजी से बोले कि हे देवताओं के गुरु आपके बलको धिक्कारहै जो देवों को नहीं जिलासके ४० तब तो बहुत जल्द बृहस्पतिजी जगत् के नाथ नारायणजी से बोले कि हे स्वामी ओषधियों से हम देवोंको जिलादेंगे ४१ ऐसा कहकर बृहस्पति जी क्षीरसागर में स्थित द्रोणाचल में जाकर सुख से अपने आप ओषधियां ग्रहणकर ४२ तिन्हीं के योगसे देवों को जिलाते भये तब देवता लोग उठकर दानवों की सेना को मारने लगे ४३ देवतोंको उठे देखकर जालंधर शुक्रजी से बोले कि हे शुक्रजी विना आपकी विद्या के ये देवता लोग कैसे उठे ४४ ऐसा जालन्धर का कहा सुनकर शुक्रजी उस से बोले कि क्षीरसमुद्र के बीच में बड़ा भारी द्रोणनाम पर्वतहै ४५ उसमें ओषधियां हैं जो कि मरेहुओंको जिला देती हैं वहां पर जाके बृहस्पतिजी ओषधियों के समूहलाये हैं ४६ उन्हीं के योगसे मन्त्रों को पढ़कर मारेहुए देवोंको उठायाहै इस प्रकार शुक्रजी का कहा सुनकर बड़ा बली जालन्धर सेना का भार ४७ शुम्भको देकर बहुत शीघ्र क्षीरसागर में गया और वहां जाके बड़े दीप्तिवाले सुन्दर स्थानमें प्रवेशकिया ४८ फिर तो क्षीरसमुद्रके क्रीड़ा के स्थानको देखा कि जहां न गरम न ठण्ढी पवन है और अंधकार भी नहीं है ४९ जहांहीं मोटे स्तनों के भारसे युक्त पतले करिहांववाली अच्छे दांतोंकी श्रेष्ठस्त्रियां गाती नाचती और क्रीड़ा करती हैं ५० और हावभाव कटाक्ष कररही हैं करिहांव को लचाती हैं सुंदर मोह करानेवाले अंगों और भुजाओंके इधर उधर

मटकाने ५१ और शब्दयुक्त पांवों के धरने और मीठे वचन बोलने सुगन्ध और सुखके देनेवाले कपड़ों और आंखों में बैठे हुए भँवरों के हुंकारदेने ५२ चामरोंके ढुरनेकी लीलाओं मालाओं और मुसक्यान समेत देखने से वे सब श्रेष्ठ स्त्रियां सेवा कररही हैं वहांपर जाके जालंधर ५३ संग्रामके उत्साही ने क्रीड़ा करतेहुए दुग्धसमुद्रको देखकर उनके प्रणामकर कहा कि हे तात हमको द्रोणाचलके ओषधियों के बहानेसे आप मार रहेहैं इससे द्रोणाचलको लहरोंसे डुबादो ५४ तब क्षीरसागरने कहा कि हे पुत्र शरण में प्राप्तहुए को लहरों से कैसे डुबाऊं क्योंकि जो शरण में आयेहुए को त्यागता है उसकी मुनिलोग प्रशंसा नहीं करते हैं ५५ चचाके वचन सुनकर क्रोधयुक्त जालंधरने द्रोणाचलको तलके प्रहारसे ताड़ितकिया ५६ तब तो वह डरकर रूप धारणकर जालंधरके पास प्राप्त हुआ और बोला ५७ कि हम तुम्हारे दासहैं शरणमें आयेहुए मेरी रक्षा कीजिये और हे बड़ी भुजावाले जालंधरजी मैं आपकी आज्ञासे रसातलको जाताहूं ५८ हे प्रभुजी जबतक आप राज्यकरेंगे तबतक मैं वहीं ठहरूंगा तब तो ओषधियों के शब्द और सिद्धोंके रोनेसे ५९ जालंधरके देखतेही द्रोणाचल रसातलमें चलागया फिर जालंधर वीर रणभूमि में चलाआया ६० और पूर्व के कल्पित रथ में चढ़ा और रथमें बैठेहुए भगवान्को देखकर ऊंचे स्वरसे हँसा ६१ और बोला कि तबतक आप रथमें बैठें जबतक हम शत्रुओंको मारें ऐसा कह कर शीघ्रही बाणों से देवताओंकी सेना को मारा ६२ बाणों से विदारित देवता लोग बृहस्पतिजीसे बोले कि रक्षा कीजिये तब तो बृहस्पतिजी बहुत जल्द क्षीरसमुद्रके यहां गये ६३ और वहां द्रोणाचलको न देखकर चिन्तायुक्त होगये और जल्द रणभूमिमें आकर देवताओं से बोले ६४ कि हे देवताओ तुम सब भागो क्योंकि द्रोणाचल नाश होगयाहै ऐसा बृहस्पतिजी कहरहेथे कि लवणासुरने उनके यज्ञोपवीत और बाल हँसकर तीक्ष्णबाणों से काटलिये तब तो बृहस्पतिजी प्राणके भयसे व्याकुल होकर भागे ६५।६६ और सब देवताभी लड़ाई छोड़कर भागे इसप्रकारसे जालंधर सब देव-

ताओं को भगाकर भगवान् पर दौड़ा ६७ रणमें उत्साहयुक्त भगवान् भी उसके पीछे दौड़े तब तो विष्णुजी और जालंधरका बड़ा घोर युद्ध होनेलगा ६८ जालन्धर ने बाणके समूहोंसे भगवान् को आच्छादित किया परन्तु भगवान् ने अपने बाणों से उसके बाणों को काटकर टुकड़े टुकड़े करदिया और उसको बाणों से पूरितकर दिया ६९ और पीड़ित भी किया कि बाणों से पीड़ायुक्त देहहोकर जालन्धर रथछोड़कर ७० जल्द विष्णुजीके जीतने को दौड़ा तिस को आतेहुए देखकर भगवान् ने बाणोंसे पीड़ित किया ७१ परन्तु वह विष्णुजी के बाण सहताहुआ रथके समीप पहुंचा और पहुंचतेही एक हाथसे गरुड़ और दूसरेसे भगवान् के रथको ७२ आकाशमें घुमाकर श्वेतद्वीप में फेंकताभया जालन्धर के हाथसे फेंके हुए गरुड़ भी गिरपड़े ७३ और उन्होंने बहुत काल क्रौंच द्वीपमें विश्राम किया और जालन्धरके रथके घुमाने से भगवान् भी गिर पड़ेथे ७४ परन्तु वे रणभूमि में आगये और जालन्धरसे बोले कि खड़ारह खड़ारह तब लड़ाई जिसको प्रिय ऐसा जालन्धर फिर आयेहुए भगवान्को देखकर ७५ बाणोंसे पृथ्वीको पूर्णकर गर्जा ७६ तब तो भगवान् ने प्रकाशयुक्त शक्ति को शीघ्रही उसकी छाती में मारा तब जालन्धर गिरगया फिर उसका सारथी लड़ाई से डेरे में लेगया तब जालन्धर ने सारथी से कहा कि किसने मुझे निर्लज्ज कियाहै ७७ तब तो उसने उनके गिरने और अपने लेजानेका सब हाल बतादिया फिर वह रणभूमिमें आया और तिसी समयमें भगवान् और जालन्धरका पैदलही घोर युद्ध होनेलगा भगवान् तो लक्ष्मीके प्रेमसे उसको न मारतेभये परन्तु उसके बाणों से आपही गिर जाते भये ७८ तदनन्तर भगवान्को पृथ्वीमें गिरे देखकर जालन्धर दैत्य उनको उठाकर अपने रथमें सवार होजाता भया तब तो विष्णुजीकी प्यारी लक्ष्मीजी रोतीहुई प्राप्तहुई ७९ और स्थित होकर कमलनयन अपने पति को पड़े देखकर जालन्धर से बोलीं ८० कि हे भाई हमारे वचनसुनो कि तुमने विष्णुजीको जीता और पकड़भी लियाहै परन्तु हे महाबल बहनको विधवापन देनेको

ग्यनहींहो ८१ ऐसे लक्ष्मी के वचन सुनकर बड़ी भुजावाले जालन्धर ने जगत्के स्वामी विष्णुजी को छोड़ दिया और भक्तिसे बहन को नमस्कार किया ८२ और बहनही की स्नेहसे विष्णुजीके चरणोंको वन्दना किया तब तो विष्णुजीने जालंधरसे कहा कि तुम्हारे कर्मसे हम प्रसन्नहुए हैं हे दैत्यों के स्वामी वर मांगिये तुमको क्या वरदूं ८३ तब जालन्धरने कहा कि हे केशवजी जो आप हमारे शूरताके कर्म्मसे प्रसन्न हैं तो लक्ष्मीजी समेत हमारे पिताके स्थानमें रहिये ८४ फिर भगवान्ने कहा कि ऐसाही करेंगे ऐसा कहकर गरुड़को स्मरणकर लक्ष्मी समेत उसपर चढ़कर क्षीरसमुद्र में चले गये ८५ तबसे लेकर कृष्णचन्द्रजी का निवास श्वशुरके मन्दिर में है लक्ष्मीके प्रिय करनेकी इच्छासे भगवान् समुद्रमें बसते हैं ८६॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यूसंहितायामुत्तरखण्डेजालन्धरोपाख्यानेयुधिष्ठिरनारदसंवादेसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

जालन्धरका न्याय से प्रजाओं को अनेक प्रकार के सुख देकर राज्य करना॥

युधिष्ठिरने कहा कि हे नारदजी जालंधरने लड़ाई में देवताओं को भगादिया और विष्णुजी को अपने मन्दिर में टिकाया इसके पीछे जो किया वह कहिये १ तब नारदजी ने कहा कि जालन्धर शुम्भादिक वीरों को प्रसन्नता से दानदेकर स्वर्गमें गया और वहां देखनेलगा २ कि सोने के गहनों से मनुष्य अलंकृत हैं वृक्ष सदैव फलते हैं अश्वमेध यज्ञ का फल ३ हाथी, कपड़े, सोना, गऊ, कन्या, तिल, फूल, कपूर, पान, कस्तूरी, केसर ४ इन वस्तुओं को जे महात्मा देतेहैं ते इन्द्रकी पुरीको देखते हैं वर्षाऋतुओं में घर दान करने और जाड़े में अग्नि के दान से ५ और सब बाजे जो शिव जीके स्थानमें बजाते और चैत्रमें दही और भात समेत पौशाला बनवाते वे लोग भी इन्द्रपुरी देखते हैं ६ और जहां पर हिंडोलेकी शय्या अपने आप झूलती और सारिका, सुआ, हंस, घूमते हुए भौंरे, कोकिला ७ ये सब दूतों के काम करते और प्रिय के मिलाप

को देते और जिसपुर में रंभा, राममेनका, तिलोत्तमा, ८ सुषमा, सुन्दरी, घृताची, पुञ्जिकस्थली, सुकेशी, सुमुखी, रामा, मंजुघोषा, मालिनी ९ मृगोद्भवा, सुखदा, धनदंष्ट्रा, तिलप्रभा ये सब अप्सरा अश्वमेध और राजसूय यज्ञ करनेवालोंको प्राप्त होती हैं १० और कोटियों पापहीन मनुष्य अप्सरों के साथ क्रीड़ा करते हैं इस प्रकार बहुत सुख स्वर्ग में जालन्धर ने स्थापन किये ११ और प्राण के समान प्यारे शुम्भ और निशुम्भ दैत्यको अपने जालन्धर पीठ में युवराजकर स्वर्ग से आकर जालन्धर दैत्य ने दो अर्व वर्षतक अपने बल से राज्य किया १२ युधिष्ठिर ने कहा कि देवताओं के युद्ध में उनको जीतकर १३ प्रतापी राजा जालन्धर ने फिर क्या किया तिसको हे नारदजी सुनने की इच्छावाले मुझसे विस्तार से कहिये १४ तब नारदजी ने कहा कि हे राजन् युधिष्ठिर सुनिये जिसप्रकार जालन्धर ने किया वह यथार्थ कहता हूं उसने देवतों को लड़ाई में जीतकर अकण्टक राज्य किया १५ चित्रसेन आदिक गन्धर्व उसको सेवनेलगे और सब देवताओं के यज्ञ के भागों को वह भोजन करनेलगा १६ और क्षीरसमुद्र से देवताओं ने जो रत्नादिक हरलिये थे ये सब वा और भी बलवान् जालन्धर ने जीतकर इकट्ठा किये १७ और उसके पृथ्वी में राज्य करनेके समयमें कोई मनुष्य न मरता और न नरक में जाता १८ और नम्रता से दूसरी लड़ाई नहीं होती और भोगसे दूसरी क्षय नहीं होती और बांझ, अभागिनी, गहनों से हीन, १९ कुरूपा, दुःखसे मिलनेवाली, दुष्टा, यशहीन और विधवा स्त्री कहीं नहीं थी और कोई मनुष्य धनहीन नहीं था २० सबजगह दान देनेहीवाले थे दान लेनेवाले नहीं थे और पुण्यात्मा मनुष्य ब्राह्मणोंको अपना धन दान करतेथे २१ रूप और युवावस्था से युक्त स्त्रियां घर घरमें थीं गौवों के दूध, दही और घीभी बहुत था और मनुष्य बुढ़ापे से रहित होते थे २२ सब के मंगलही होताथा कहीं पर मारपीट और बन्धन नहीं होते थे वाणसे जीवों का मारना नहीं था और कोई किसी से पीड़ित था २३ ऋण कहीं नहीं दिखाई देता था सब ओर धनी

संतोषी, सब अन्नोंसे युक्त सब जगह प्रजाथी २४ केलि, ऊंख और दूधका अत्यन्त मीठा रस मनुष्यों के घरमें था स्त्री और पुरुषों के हितकारी वचन सुनाई देते थे और राहमें जानेवाले मनुष्योंसे कोई कुछ छीन नहीं लेता था २५ और आकाश से अखण्ड जहां तहां धारा गिरती थी और जालंधर के स्मरणसे कर्पूर, घी और शक्कर समेत मनुष्यों के मुखमें भी धारा गिरती थी २६॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेउत्तरखण्डेपंचपंचाशतसाहस्र्यसंहितायामुत्तरखण्डे युधिष्ठिरनारदसंवादेजालंधरसौराज्यवर्णननामाष्टमोऽध्यायः ८॥

नवां अध्याय॥

सब देवताओं के तेजसे चक्रकी उत्पत्तिहोना॥

युधिष्ठिरने कहा कि हे नारदजी जालन्धरसे जीतेहुए इन्द्रादिक देवताओं ने स्वर्गकी राज्य छीन जानेपर क्या किया १ तब नारद जी बोले कि देवता लोग आकाशको छोड़कर बहुत कालतक दुर्दशा को प्राप्तभये न तो अमृत और न यज्ञही रहे तब तो ब्रह्माजी के स्थानको जाते भये २ और वहांपर परमेष्ठी ब्रह्माजीको देखा कि प्राणायाम से अपना मन परमात्मा में लगायेहुए हैं ३ तब तो सब देवताओं ने सत्यवाणियों से जाकर ब्रह्माजीकी स्तुति की तो ब्रह्मा जी प्रसन्न होकर बोले कि क्या करें ४ तदनन्तर देवताओं ने फिर जालन्धर का सब हाल और अपना अपमान सब कह सुनाया ५ तो ब्रह्माजीने क्षणभर ध्यान किया और देवताओं को सङ्ग लेकर कैलासको चले और पर्वतके समीप वैचित्र्यसे व्याकुल खड़ेहोकर ब्रह्मा और इन्द्रादिक देवता स्तुति करनेलगे ६ कि भव, शर्व, नीलग्रीव, स्थूल, सूक्ष्म बहुत रूपवाले शिवजीको नमस्कार है ७ इस प्रकार सब देवताओं के मुखकी वाणीको सुनकर महादेवजी नन्दी से बोले कि देवोंको जल्दलाओ ८ इसप्रकारके महादेवजीके वचन सुनकर नन्दी ने बहुत जल्द देवों को बुलाया तो विस्मितनेत्र हुए देवतों ने शिवजीके स्थानपर जाकर देखा ९ कि संसार के कल्याण करनेवाले महादेवजी आसनपर बैठे हैं और भक्तिशाली, नन्दी, कु-

रूप, कुटिल, जटारखाये और धूलि गण
सेवा कर रहेहैं वहांपर देवताओं नम-
स्कारकर कहा १०।११ कि इन्द्र हे वृथा
चला गया हे शरणागतवत्सल १२ तब
उच्चप्रकारसे पिनाकधारी विभु जी महादेव
जी से बोले कि देवताओंकी महादेवजीने
ब्रह्मा के मन की ईप्सित का मानभङ्ग
जानकर १४ और प्रेम यह सब सम-
झकर महादेवजी जी से नहीं मारागया
वह हम से ब्रह्माजी पहले के बनेहुए जो
वज्रआदि बलवान् जालन्धर असुर नहीं
मारा की बनीहुई हेतियों से हम से भी
नहीं औ हमारे बलका सहनेवाला पुष्टशस्त्र
बना उत्तर सुनकर ब्रह्माने महादेवजी से
जानतेहो महाशस्त्र आपही बनाइये १८
महादेवजी बोले कि हे ब्रह्माजी देवताओं
आप छोड़िये १६ तब ब्रह्माजी ने ब्रह्मास्त्र
न छोड़ा तिस पीछे महादेवजी ने तीनों नेत्रों
छोड़ा २० और सब देवताओं ने भी क्रोध
ड़ा इसी अवसर में महादेवजीने विष्णुजी
दैत्य के मारनेवाले श्री विष्णुजी भी प्राप्त
कि हम क्या करें तब महादेव जी ने उनसे
पसे लड़ाई में जालन्धर क्यों नहीं मारग-
देवताओं को छोड़कर क्षीरसमुद्र में शयन
श्रीविष्णुजी बोले कि हे देवेश जो हम उस
कैसे हमारी प्रियाहोती तिससे हे पार्वतीके
णभूमि में जालन्धर को मारिये २४ तब
आप क्रोध से उत्पन्न तेज छोड़िये तब तो
छोड़ा तो सब तेजबढ़ा तो व्यापक बढ़ेहुए

कोटिसहस्र
गे खड़ेहो
आथा वास
जिये॥
ह्मा जालन्धर के
ब। तुम्हारे मा-
के हमारे वचन
नी शूलधारी म-
से कहो क्योंकि
कि देह में तो
हाथमें भिक्षाका
महादेव जीके
अत रतनवाली,
रूपसे मोहित
विनोद के लिये
और आप हँसते
हैं ६ कि वृन्दा
कि अत्यन्तही
भी नहीं प्राप्त
सहनेवाले जा-
हम तो अन्त-
शिवजी के यहां
कैलासको जा-
ने पूछकर शीघ्र
तब राहुने अ-
त्मासे अपनी
कार कहा ११
न् द्वारपालोंने
। तो द्वारपालों

ने हथियार उठाये १२ परन्तु नन्दीश्वर ने द्वारपालों को निवारण कर उससे कहा हे बर्बर तू कौनहै और कहां से यहां आयाहै और क्या काम है यह सब कहो भय देनेवाले ये द्वारपाल तुम को नहीं मारेंगे १३ तब राहुने कहा हे द्वारपाल मैं जालन्धरका दूत हूं तुम मुझे महादेव जी के समीप ले चलो अपने महाराज का प्रयोजन बीचमें हम किसीसे नहीं कहसक्ते हैं १४ दूतका कहा सुनकर नन्दी महादेवजी के पासगये और उनके नमस्कारकर आगे खड़ेहो उन से बोले १५ कि हे महाराज एक कार्य्य के लिये राहु द्वारपर खड़ा है वह आवे या चलाजावे यह आप आज्ञा दीजिये १६ नन्दी का कहा सुनकर महादेवजी ने शीघ्रही सखियों समेत सोतीहुई पार्वती को वहां से अलग भेजकर १७ पीछे से नन्दी द्वारपालक से बोले कि हे नन्दी दूत को लेआवो तब महाबलवान् नन्दी दूतका हाथ पकड़कर १८ लेआये तिस समय में राहु ने देवताओं के बीच में महादेवजी को देखा कि जटारखाये नील आत्मावाले १९ पांचमुख और दशभुजावाले हैं सांपोंका जनेऊ भी पहनेहुए हैं पार्वतीसे उस समय में वहांपर रहित हैं मस्तक में चन्द्रलेखा शोभायमानहैं २० ऊंची सांसों को छोड़तेहुए भूतगणों से सेवित हैं सब देवसमूहों से युक्त और कोटिन गणों से सेवित हैं २१ तदनन्तर महादेव जी ने दूत को आगे प्राप्त हुआ देखकर कहा कि अपना वृत्तान्त कहिये तब राहुने कहना प्रारम्भ किया २२ कि हे महादेवजी जालन्धर ने हमको तुम्हारेपास भेजाहै हमारे मुखसे तिसके कल्याण करनेवाले वचन सुनकर जल्दकीजिये २३ हे पर्वत के सोनेवाले तुम तपस्या में निष्ठ, गुणहीन और धर्म्म से वर्जितहो तुम्हारे पिता माता नहीं हैं वसु और गोत्र आदि से भी हीन हो २४ और बड़ी भुजावाला जालन्धर तीनों लोकोंको भोग करताहै तिसी के वशमें तुम भी हो तिससे उसका कहा करिये २५ आप पुराणपुरुष कामी हैं बैलपर कैसे आप चढ़ते हैं राहुके ऐसा कहतेही महादेवजीके पुत्र स्वामि-कार्तिक और गणेशजी भी आगये २६ और तिसी समय में सत्य बोलनेवाले महादेवजी ने अंगमर्दन किया तो फैले हुए हाथों से

सर्प वासुकि जी पृथ्वीतल में गिरपड़े २७ तदनन्तर उन्हों ने गणेशजी के वाहन मूसे की पूंछ पकड़ी तब तो गणेशजी ने अपने वाहन को ग्रसाहुआ देखकर छोड़ो छोड़ो ऐसा कहा २८ इस अन्तर में स्वामिकार्तिक जी के वाहन अच्छे स्वरवाले मयूर को क्रोधयुक्त देखकर उनके भयसे वासुकि सर्प ने ग्रसेहुए मूसेकी पूंछको उगिल दिया २९ और महादेवजी के अंग गलेको लपेटकर स्थित होगया तिसके श्वास की वायुसे अग्नि उत्पन्न हुआ ३० और अग्नि की गरमी से चन्द्रलेखा जटाजूट की मार्ग में स्थित होगई और वह ऐसी गीली होगई कि महादेवजी का शरीर जैसे प्लावितहो ३१ तिसकी अमृतधाराओं से ब्रह्माके मस्तककी पंक्ति महादेवके मस्तक पालनेवालों के जिलाने वाली तिस समय में हुई ३२ और पूर्वका अभ्यास कियाहुआ सब योग और श्रुतियों का क्रमपाठ होनेलगा परस्पर पढ़ना सुनकर शिरभी विवाद करनेलगे ३३ कि मैंहीं आदिहूं मैंहीं पूर्वहूं परसेपर मैंहींहूं मैंहीं रचनेवाला पालनेवालाहूं इस प्रकार उत्साहयुक्त परस्पर ३४ शोचते भी हैं कि न हमने दिया न भोगकिया और न हवन किया और लोभमें ग्रस्त मनसे ब्रह्मा को द्रव्य भी अर्पण नहीं की ३५ तदनन्तर महादेवजी के जटाजूट से भारीगण प्रकट हुआ कि जिसके तीन मुंह तीन चरण तीन पूंछ हैं और सातहाथ का लम्बा है ३६ कीर्त्तिमुख नाम है पिंगल वर्ण है जटाओं को धारण किये है तिसको देखकर मस्तकों की पंक्ति भय से मृतक की नाईं स्थित होगई ३७ और कीर्तिमुख ने शिवजी के आगे खड़ेहो उनके प्रणाम कर कहा कि हे देव हे प्रभुजी मैं बहुत भूखाहूं ३८ तब महादेवजी ने कहा कि तुम लड़ाई में मारेहुओं को भोजन करना तब तो उसगणने क्षणमात्र विचार किया और तिस समय में कहीं लड़ाई न देखकर ३९ ब्रह्माके भक्षण करनेको प्राप्त हुआ परंतु महादेवजीने निषेध करादिया तब तो उसने अपना सब अंग भक्षण करलिया ४० क्योंकि अत्यन्त भूखाथा और सब ओर से निषेध भी किया गयाथा तिस समयमें उसका साहस और भक्ति देखकर ४१ प्रसन्नहोकर महादेवजी ने कहा कि हमारे स्थानमें सदा

स्थित रहो हमारे स्थानसें तुम्हारे चित्तसे जो रहित होगा ४२ वह जल्द गिरजावेगा ऐसाकहने पर वह अन्तर्द्धान होगया और तिस समय में ब्रह्माके मस्तक में देवताओं ने फूलों की वर्षाकी ४३ इस प्रकार का महादेवकी सभामें अद्भुत चरित्र देखकर विस्मित होकर राहुने फिर महादेवजी से पूंछा ४४ कि स्वाधीन योगीश्वर आपको बलसे भाव कैसे स्पर्श करते हैं और इन्द्रियोंसे तुम पूजितहो और विषयोंसे कैसे प्राप्त होसक्के हो ४५ ब्रह्माआदिक लोकपालोंकी पूजा सब ओर से ग्रहण करते हो किसी देवताको नहीं देखते हो परन्तु किसको पूजते हो ४६ भिक्षा भोजनकरके रहतेहो संसार में ईश्वर कैसे आपहो और हे योगीन्द्र सुंदरी पार्वतीजी को छिपायेहो इससे उनको हमें देदो ४७ और इससमयमें स्वामिकार्त्तिक और गणेश पुत्रों समेत भिक्षा का पात्र लेकर घर घर में भिक्षा मांगो ४८ इसी तरहसे राहुने अनेक बातें महादेवजी से कहीं परन्तु महादेवजी ने सुनकर कुछ उत्तर न दिया ४९ तदनन्तर मौनहुये महादेव जी को छोड़कर उसने नन्दी से कहा कि भयंकर मुखको धारेहुये आप महादेवजी के सेनापति और मंत्रीहैं ५० इसप्रकार आचरणोंसे भ्रष्ट महादेवको आप शिक्षा देवेको योग्यहैं और जो क्रोधसे नहीं मानेंगे तो रणभूमि में मारे इन्द्रकी तरह गिरेंगे ५१ इसप्रकार के राहुके वचन सुनकर नन्दीने महादेवको जनाकर उनकी भ्रुकुटीकी संज्ञाही से उनका मत समझकर ५२ राहुको पूजितकर भेजदिया तदनंतर राहुने जालंधर के पास जाकर विस्तारसे सब वृत्तान्त और पार्वती जी के मनोहर रूपको भी वर्णन किया ५३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेनारदयुधिष्ठिरसंवादेजालंधरोपाख्यानेकैलासाद्राहुप्रत्यागमनंनामदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

शिवजी के गण और जालंधरकी सेनासे युद्धहोना और उसकी सेनाका हारना ॥

नारदने कहा कि प्रतापी जालंधरने दूतके वचन सुनकर निर्भी

समय में सब सेनाओं को बुलाकर यात्रा की तब तो इधर उधर से आतीहुई सेना का शब्द सुनाई दिया १ स्त्री समेत मन्दराचल की कन्दराओं में सोतेहुए किन्नरों को उठातेहुए और मेरु और मंदराचलही की कन्दरा में हाथियों को भी उठाते हुए सिंहों की पंक्तियां आगे छोड़ने में इस प्रकार से रास्ता में भारी सेना का ऐसा शब्द हुआ कि मानों तीनों लोक बहरे करदेगा २ तदनन्तर जालन्धरपीठ में नगारों का शब्दहुआ कि जिस वीरों के प्यारे महान् शब्द से ३ ऊंचेऊंचे पहाड़ कांपनेलगे बड़े उत्तम महल चलायमान होगये सातों समुद्रों के भीतरसे दैत्य दानव निकलआये ४ और अनेकप्रकारके वाहनोंसंयुक्त तैयारहुए वीर गर्जनेलगे और घोड़ाओं का भी बड़ाभारी शब्द बाहर और आगेहुआ ५ और रथके पहियों से घिसी हुई पृथ्वी भी चलायमान हुई अथवा चलतेहुए हाथियों के समूहों से वनसमेत पृथ्वी रुकगई ६ और जालन्धर करके प्रेरित दशहज़ार भयानक योधा रथों में स्थित हुए दो हज़ार अर्व्व घोड़ों और एक अर्व हाथियों पर ७ और एक लाख सेना पताका समेत रथोंपर शोभितहुई नव्वे करोड़ मुख्य नायक दिखलाई पड़े छत्रों से सूर्य्यजी को आच्छादितकर बड़ीभारी सेना जाती भई ८ कहींपर सफ़ेद छत्रों से कमलका वन पिंजर और पीला होगया सुरैले बने हुए छत्रों से नीले कमल और भी अच्छी भांति कहीं पर नीले होगये और जिसकी यात्राके समयमें धूलिकाझुंड कहीं मेघों तक पहुंचा और पताका के वस्त्रों से आकाशरूपी ताल कहीं पर अच्छी मानों लहरें ले रहे हैं ९ और जालंधरकी सेनाके चलने के समय में हाथी और घोड़ामयी भूमि, ध्वजा और छत्रमय आकाश और दिशाओं का चक्र चामरमय होताभया १० तदनन्तर जालंधर दैत्य यात्रा के लिये उत्साह युक्त हुआ और अनेक प्रकार के रत्नों से विभूषित शक्ति को कांधे पर धरकर ११ सागरवासी श्री विष्णुजी से पूछने को आया और उनके नमस्कार कर जालंधर ने यह कहा १२ कि आपको भोगके लिये क्या दूं हे कुशलयुक्त भगवन् यह आप आज्ञा दें तब आनन्दयुक्त नारायण ने उसके वचन

सुन कहा १३ कि आपका प्रिय मनोवाञ्छित हम क्या करें जब उस से यह कहा तब तो बहुतजल्द प्रसन्नहोकर उसने भगवान् से कहा १४ कि मैं रणभूमि में युद्धके लिये जाताहूं आप सुखी होकर इसी समुद्र में रहिये तब तो लक्ष्मीजी ने अक्षत दिये और भगवान् ने भी पूजाकी १५ फिर वह भगवान् के स्थानसे निकलकर समुद्र से पूंछनेको आया और उनके प्रणामकर दूरहीसे यह कहा कि हे पिता जी मैं महादेवजी को संग्राममें जीतनेको जाताहूं आप आज्ञा देने के योग्यहैं महादेवसे युद्ध करने को जातेहुए पुत्र के वचन सुनकर १६। १७ समुद्रने कहा हे पुत्र उस तपस्वीको छोड़दीजिये हमारी दीहुई राज्यको भोगकीजिये और तपस्वी को दूरही से छोड़िये १८ तुम्हारा प्रताप अत्यंत अद्भुतहै तुम्हारी बराबर राजा नहीं है और तुमने स्वर्ग से भी अधिक पृथ्वी को करदियाहै १९ तुम्हारी राज्य में पृथ्वी वैकुण्ठ की तरह शोभित होरही है और विष्णुजी जो कि दैत्योंसे जीते नहीं जासक्तेथे उनको लक्ष्मी समेत तुम लेआये २० हे पुत्र हमारे समीप बसो और भिक्षुक महादेवजी को छोड़ दो इस प्रकार जब समुद्रने कहा तब तो पार्वती में अनुरागयुक्त २१ जाल-न्धर ने पिता के वचन को न जानकर अपने योद्धों के पास आकर उनसे कहा कि युद्धकेलिये तैयारहो यह आज्ञादिया फिर तो वृन्दा जालंधरके पास गई और उनसे बोली २२ कि हे राजाओं में श्रेष्ठ स्वामी ख़राब योगी से युद्ध नहीं करना योग्यहै और पार्वती में लगे हुए मन को निवृत्त कीजिये २३ और आप पार्वती की क्यों इच्छा करते हैं क्या पार्वती हमसे अधिकहै तपस्विनी, आलम्बरहित, सदा महादेवमें आसक्त, २४ पुत्रकी इच्छा करनेवाली, बांझ और कृत्रि-मपुत्रवाली है नारदने वृथा उसकी प्रशंसाकीहै उसको छोड़कर हम को सेवन कीजिये २५ इसप्रकारके वृंदाके वचन सुनकर जालंधरने कहा कि पार्वती के रूपको विना देखे हमारा चैत नहीं निवृत्तहोगा २६ हे वृन्दे तुम राजधानी और देशकी पालना करो और हमारा सदा स्मरण करना यदि हमको महादेव जी मारडालें २७ इस प्र-कार स्वामी के वचन सुनकर हास्ययुक्त वृन्दा पालकी पर चढ़कर

जालन्धरपीठको तिसीसमय चलीगई २८ तदनन्तर महाबलवान् समुद्र का पुत्र जालंधर साठ हज़ार पद्म सेना लेकर कैलास को प्रस्थान करता भया २९ इस बीच में गण, पुत्र और पार्व्वतीसहित महादेवजी मानसोत्तर कैलास को छोड़कर चलेगये ३० तदनंतर पहलेही दिन में जालन्धर कैलास में प्राप्त होगया और देखने में कौतूहलयुक्त होकर कैलासही में सेनाको ठहराकर देखनेलगा ३१ कि जहां सुन्दर केसर कल्पवृक्ष की धूलिके समूहों से व्याप्त ठण्ढे जलों वा शीकर के आसारों से प्रभुग्न पवन चलती है ३२ और सिद्धोंकी स्त्रियोंके मोटे स्तनोंमें ऊंची तरंगयुक्त कल्पवृक्षकी मंकरंदोंसेयुक्त सुन्दर पवन चलती है ३३ और शोकरहित रुचि स्निग्ध स्त्रियों के पांवोंके चिह्न देखकर जालन्धर मनोरथ से व्याकुल हुआ ३४ और अपने प्रतिबिम्ब देखने में हर्षयुक्त देवता प्रीतिको प्राप्त हुए और किन्नरों की स्त्रियों के रतिकर्म्म से व्यञ्जित दीप्तियां ३५ सब ओरसे प्रकाशित हुईं और कल्पवृक्ष के और अशोक के पत्ते भी शोभित हुए और महादेव के गणों से दबेहुए अनेक प्रकार के वेलाओंसे व्याकुल वृक्ष ३६ दीप्तिमान् हुए मानों कामदेव राजाने यशसे अच्छी प्रकार धारण किये हैं और चन्दन और कस्तूरी की सुगन्ध से मतवाले भँवरों के समूह शोभित हैं जो कि जलाये हुए कामदेव के निर्वाण के अंगारों के सदृश हैं ३७ और स्त्रियों के अत्यन्त उत्तम कान्ति की सुगन्धता देखकर आसक्त हुआ है मनका विनोद ऐसी कस्तूरी कालिमा को प्राप्तहुई ३८ और कहीं कहींपर श्रेष्ठ गेरू के समान प्रकाशित कमल हैं और लवंगदलों के सदृश आसनों से चलायमान चकोरहैं और पहाड़ोंकी नदियों की तटीमें सूर्यकीतरह प्रकाशित कुंडलहैं और चलायमान निचुल की मंजरी में विनय से नम्र भँवरे हैं ३९ और कहीं कहींपर दलित कोकिलाओंसे व्याकुल नवीन आम के अंकुर हैं और हरिणों के समूहों से सेवित प्रबल धान्योंकी जड़ें हैं और कहीं कहींपर श्रेष्ठ, सुन्दर, देवताओं की स्त्रियों के चरणों से पवित्र वन हैं जहांपर मुनियोंका भी मन विकारको प्राप्त होताहै ४० इसप्रकार के गुणोंसे युक्त महादेव

के मन्दिर और सब रत्नों से युक्त विचित्र कैलास को देखकर ४१ अत्यन्त विस्मययुक्त जालन्धर शुक्रजी से बोला कि हे तात आप के सदृश वाले क्यों महादेव जी को तपस्वी कहते हैं ४२ कि तिस प्रकारकी इनकी स्त्री और मनोहर इसप्रकार का घरहै परन्तु महादेवजी को वहां न देखकर यह कहा कि हे शुक्रजी महादेवजी कहां चलेगये ४३ क्या मेरे भयसे तो कहीं नहीं चलेगये जब इसप्रकार पूंछा तब तो शुक्रजी बोले कि महादेवजी नहीं जानेयोग्य मानसोत्तर महापर्वत को गये ४४ जहांपर और कोई नहीं समर्थ होसक्ते हैं वहांपर गये हैं ऐसे शुक्रजी के वचन सुनकर महाबलवान् जालन्धर दैत्य बोला ४५ कि हे शुक्रजी मैं महादेवजी के पास जाता हूं आपआगे चलें ऐसा कहकर जहांपर महादेवजी आपहीथे वहां पर गया ४६ और पर्व्वतों में श्रेष्ठ मानसपर्व्वत को देखा कि साठ हज़ार योजनों का तो ऊंचाहै ४७ और दैत्यों की सेनाओं से आच्छादित है तब तो बहुत से दैत्योंके राजा शीघ्र पहाड़पर चढ़गये ४८ और छत्रोंसे वहां पर अँधेरा छागया बाजाओं के शब्दसे कंप होगया और सेनाकाशब्द आकाश और भूमिमें पूरित होगया४९ नारदजी ने युधिष्ठिरसे कहा कि बड़ीभारी दैत्योंकी सेनाको आती देखकर महादेवजी ने सखियों समेत पार्वती जी को अत्यन्त ऊंचे पर्वत के कँगूड़े में बैठादिया ५० और युद्धमें दुर्मद, सब तैयारहुए प्रमथों के तीस सहस्र गणोंसे युक्त शिवजी ५१ गणोंके स्वामी नन्दीसे बोले कि तुमसे महादैत्य जालन्धर वीर मारने योग्यहै ५२ महाकाल आदिक वीरों से युक्त होकर तुम संग्राम में जाओ और अत्यन्त पराक्रमसे तबतक युद्ध करो ५३ कि हे वीर जबतक शत्रु से हमारी जीत न हो इसप्रकार के महादेवजीके वचन सुनकर नंदी सारथी से बोले ५४ कि हे बुद्धिमान् काकतुण्ड हमारा रथ इसी समय लाओ नंदीका वचन सुनकर सारथी रथको लाया ५५ कि जिस में बारह घोड़े लगेहुये हैं और सोलह पहियों से युक्तहै साठ ध्वजा और तीस योजनासे भी संयुक्त है ५६ सब शस्त्रोंसे पूर्ण युद्धवाला रथप्राप्तहै और नन्दीके चक्रकी रक्षाकेलिये पुत्र स्वामिकार्त्तिक और

गणेशजीको भी ५७ महादेवजी ने आज्ञादिया वेभी अपने अपने वाहनोंपर चढ़कर तैयारहुए तब तो गणोंसे युक्त नंदी वाणी से महादेवजीकी पूजाकर ५८ रथपर सवारहोकर दानवोंके पास पहुंचे कि जिन नन्दीके मस्तकमें बारह योजनका छत्र विराजमानहै ५९ जब तक नन्दीनिकलें तभीतक सब दानव आगेही पर्वत के ऊपर चढ़ गये जो कि बड़े भयानक हैं ६० और गणों के तीक्ष्ण आयुधों से मारेहुए कुछ तो पृथ्वीमें गिरपड़े और सब दूरहीसे पर्वतको छोड़ देते भये ६१ तब तो धूमकी समान तिस पर्वतसे उतरकर गणोंने तीक्ष्णशस्त्रोंसे महाबलवान् दैत्यों को मारा ६२ फिर तो देवताओं से युक्त गणों को देखकर दैत्य की सेना आच्छादित कर लेती भई तब तो गणों और दानवोंका युद्धहुआ ६३ कि जिसमें देवता और दैत्योंकी घोर बाणोंकी वर्षाहुई कि जिससे सब दैत्य संग्राम में मारे गये ६४ रथ और घोड़ोंके सवार और पैदलोंको महाबलवान् काकतुण्डगणों ने मारा तब तो लड़ाई में बड़े मायावी मारेहुए दैत्योंके समूहों के ६५ शिरोंसे आकाश व्याप्त होगया जो कि शिर हँसरहे, भयंकर, छूटेहुए बाल,लाल मुंहवाले, भयानक दाढ़ और नेत्रोंवाले हैं ६६ और सिंह लुण्डोंकी जंघा, गांठें करिहाँव और पीठको खा रहे हैं रक्त से लाल कबन्धों से सब ओर पृथ्वी पूर्ण होगई है ६७ तदनन्तर सेनाओंमें दौड़तेहुए और महादेवके गणोंसे गिरायेहुए दैत्यों के स्वामियोंका इसप्रकार बड़ाभारी शब्द हुआ कि जिस प्रकार युगके नाशमें गर्जतेहुए समुद्रोंका होताहै ६८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेनारदयुधिष्ठिरसंवादेजालंधरोपाख्यानेदैत्यसैन्यपराजयोनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

गणेश और गणोंको युद्धमें पीड़ित देखकर वैलपर चढ़कर शिवजी का रणभूमि में आगमन ॥

नारदजी ने युधिष्ठिर से कहा कि नन्दीश्वर जिस में आगे ऐसे गणोंसे दैत्योंकी सेना मारीहुई देखकर क्रोधयुक्त शुंभ आदिक २

गणोंके पास प्राप्तहुए १ तब तो महादैत्य शुम्भ नन्दीसे युद्धकरने लगा महाकाल से निशुम्भ लोकेश्वरसे काल २ पुष्पदन्त से शैल-रोमा माल्यवन्त से महाबल लड़नेलगा-तब तो मायाबल से रण-भूमिमें बड़ा शब्दहुआ ३ चण्डसे भयानक स्कन्दसे राहु कूष्माण्ड से सर्परोमा मदनसे घर्घर ४ शुभसे केतुमुख विनायकसे जंभ हास से पातालकेतु भृंगीशसे रोमकण्टक ५ इस प्रकार कोटिन महादेव के गण और दैत्य परस्पर युद्ध करनेलगे और दोनों ओरके स्वामी देखते भये ६ दृढ़ प्रहार करनेवाले गण और दैत्य बाणों से मारने लगे और तिन बाणोंको नंदी में छोड़ा कि जैसे महासार पर्वतमें छूटाहै ७ तदनन्तर नन्दीने बाणों से शुम्भके मुँहको यों पूर्ण करदिया कि जैसे पवन पत्तोंके समूहोंसे मन्दराचल की कन्दरा को पूर्णकरे ८ तब तो शुम्भ धनुष छोड़कर रथसे उतरके पहाड़ उखाड़कर दौड़ा और नन्दीश्वरकी छातीमें पहाड़हीसे मारा ९ तब नन्दी का हृदय भेदनकर और रथको भी चूर्णकर वह पहाड़ इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा कि जैसे वज्रसे पहाड़ गिराहै १० तिस समयमें नंदी को मूर्च्छा आगई और क्षणमात्रहीमें सचेत होकर वेगसे दौड़े और महाकाल निशुम्भके मुद्गरसे हृदय में मारागया ११ फिर महाकाल ने निशुम्भ दैत्यको गदासे मुकुटके ऊपरमारा तब तो महाबलवान् निशुम्भ ने उस प्रहारको न समझकर १२ महाकालके दोनों पांव हाथसे पकड़कर घुमाके फेंक दिया और बड़ा शब्द किया १३ रक्त से लाल वह तिसके मुँह की पवन पीकर गर्ज्जा और शैलरोमा ने पुष्पदन्तके मुंहमें मुष्टिसे मारा १४ तब तो उसने शैलरोमाके गदा मारकर उसको भूमिमें गिरादिया तिसको पृथ्वी में गिराहुआ देख कर महाबलवान् गिरिकेतुने महाभयंकर पुष्पदन्तको मुद्गरसे मारा तब पुष्पदन्तने तलवारसे उसके शिरको काटडाला १५। १६ और गिरिकेतुकी चर्म खड्गको लेकरदौड़ा तबउसके शिरने उनसे कहा कि लड़ाईकी इच्छा करनेवाले हमको छोड़कर क्यों जातेहो १७ शिर हीन इस हमारी देहको छोड़कर भागतेहुए क्या तुमको लज्जा नहीं आती है ऐसा कहकर उसशिर और लुण्डने उनके पांवों को १८

पकड़ लिया तब पुष्पदन्त ने तीक्ष्ण तलवारसे कोखी में मारा तो उसकी कोखिसे एक असुर निकला कि जिसके सौ मस्तकहैं महाबली है १९ दोसौ आंखों और दोही सौ भुजोंसे युक्त है और कटाहुआ उसका शिर घूमता हुआ लुण्ड के समीप प्राप्तहोकर २० उसी में ज्योंका त्यों लगगया तब तो प्राप्तहुए उसके शिर को देखकर पुष्पदन्त ने तलवार से काटा तदनन्तर भूकम्पननाम भयंकर ज्वर दैत्य २१ पहुंचा तब तो दोनों से पुष्पदन्त बहुत मर्दन किया गया दुःसह अति वेगवाले तिसज्वरसे जब बहुतक्लेशयुक्त हुआ २२ तो काँपता हुआ शिवजीका गण लड़ाई छोड़कर पहाड़ को चला गया फिर महाधनुषधारी कोलाहल ने तीन बाणों से माल्यवन्त के २३ कांधों में मारा तब माल्यवान्ने भी कोलाहल असुरके माथे में बाण और अनेक प्रकारके शस्त्र मारे २४ तब उसनेभी आत्मा का लाघव दिखलाकर माल्यवान्को मारा फिर गणोंमें श्रेष्ठ माल्यवान् पीड़ाको छोड़कर २५ पहाड़को लेकर उसको मारा तब तो उस से भयानक ज्वलन नाम ज्वर निकला २६ जिसके तीन मस्तक, नव हाथ और नवही पांव, अत्यन्त पिंगल उस ज्वर ने अपने तेज से माल्यवान्को मोहित करदिया २७ तब वह लड़ाई छोड़कर पहाड़ में चलागया फिर चण्डिके भयानकने हृदयमें फँसरी मारी २८ कि तिस से घोड़ा निकला और उसको समुद्र में फेंकदिया फिर स्वामिकार्तिक ने तीक्ष्णबाणों से राहुको मारा २९ और बाणसमूहों से आच्छादित कर शीघ्रही शक्तिको छोड़ा तब तो तेज से प्रकाशित आतीहुई महाशक्तिको ३० देखकर राहु आकाश में कूदकर शीघ्र दोनों हाथों से पकड़लेता भया और उसको लियेहुये ऊंचे स्वर से वारंवार गर्ज्जा ३१ और शिरहीन भी राहु है तब भी उसने स्वामिकार्तिकही की शक्ति से उनकी छाती में मारा तो उनकी देह से नदी निकली ३२ तिस नदी से स्वामिकार्तिकजी डूबनेलगे परन्तु बड़े कष्टसे नदी रुकी तो पहाड़ को स्वामिकार्तिकजी चलेगये ३३ तब जालंधरने ज्वरसे सेनाके समूहका कठोरशब्द सुना कि अच्छे स्वर वचन विदग्ध हैं तब तो उसने कोकिलापति को भी न स्मरण

किया ३४ बाणों से उगिलतेहुये अग्निको वर्बर ने तलवारसे मारा सर्परोमाने मुष्टिसे कूष्माण्डके माथेमें मारा ३५ पातालकेतुने हास को मुद्गरसे हना कि उसकी देहसे हाथी निकला और हाथीने मुद्गर को खालिया ३६ फिर पातालकेतु ने मुष्टिसे हाथी की शूंड़में मारा और रोमकण्टक ने भृंगीशको आयुधों से जर्जर किया ३७ तो वह लड़ाई से डरकर शीघ्र पहाड़को चलागया फिर सहसा से धूम्रवर्ण शुभ्रकेतु के मुखमें गिरा ३८ तो बड़ी देह और मुंहवाले केतु दैत्य ने गणको लीललिया तब तो बड़ाही संग्राममें हाहाकार हुआ ३९ और जृम्भके तीक्ष्णबाणों से गणेशजी का अंगकटा और जृम्भही के फरसासे गणेशजी के हाथीकी शूंड़कटी ४० और उसी ने शक्ति से गणेशजीके पेटमें मारा और बाणोंसे भिन्न कियाहुआ मूसा गुहा के मुँहमें प्रवेशकर गया ४१ और प्रहारसे व्याकुलहोकर रणभूमि में गणेशजी विलाप करनेलगे कि हे माता हे पिता हे भाई हे मेरे प्यारे मूसे ये नाम कहकर रोये ४२ तिससमयमें गणेशजीका रोना सुनकर दूसरे कँगूड़ेसे पार्व्वतीजी ने शिवजी के पास आकर कहा ४३ कि गणेश जी दैत्यों से मारेगये और स्वामिकार्त्तिक भी गिरा दियेगये हे शिवजी क्या आप पर्व्वत में क्रीड़ा करते हैं दोनों पुत्रों और गणोंकी रक्षा कीजिये ४४ सदैव शूल आदिक जो शस्त्र आप धारण करतेहैं उनका इसीसमयमें अवसर है तदनन्तर पार्वतीजी के वचन सुनकर वीरभद्रसे महादेवजी बोले ४५ कि जल्द बैलको तैयारकरो तब तो उनके कहनेपर वीरभद्रजी ने उसीसमय में बैल को तैयारकिया उसके दोनों सींगों में सूर्यकीसी दीप्तिवाले दो मुकुटोंको बाँधा ४६ कण्ठमें सौघण्टे कानों में एक एक दर्पण कांधे में जंजीरें पांवोंमें भारीनूपुर ४७ पूंछमें हजार चामर और मुँहमें आठ फँसरीभी बांधी और कल्याण करनेवाली पार्वतीदेवी महादेवजी के समीप खड़ीहुई ४८ जो कि आठफँसरी से युक्त और तलवार को भी धारे हुएहैं और उसपर बैलपर सम्पूर्ण शस्त्रधरनेसे वह शोभित हुआ ४९ पार्वतीजीने अपनी घंटोंकी माला पहनाई और तिलक देकर आदरपूर्वक यह कहा ५० कि हे बैलों में श्रेष्ठ तुम लड़ाई के

संकट में महादेवजी को न छोड़ना शत्रुओं को जीतकर महादेव के साथही आना ५१ इसप्रकारके पार्वतीजी के वचन सुनकर महादेव जी बैलपर चढ़े और उसीपर सहस्रों आयुधभी धरलिये और अपने अलङ्कारों से भूषितहुए और पार्वतीजी से आदरसमेत कहा कि मैं लड़ाई पर जाताहूं ५२ तुम अकेलीस्त्रीहौ अपने रूपोंसमेत रहना क्योंकि दुष्ट दैत्य प्राप्त हुएहैं ५३ हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्व्वती तिसकारण से अपनी आत्माहीसे आत्माकी तुम रक्षा करना ऐसा कहकर बैलपर चढ़कर महादेवजी रणभूमि को चलेगये ५४ जिन के साथमें तीसहज़ारपद्म प्रमथहैं और सिंहयुक्त रथमें शीघ्रतायुक्त वीरभद्रजी चढ़े ५५ ये वीर महादेवजीके बाईं ओर रक्षा करनेलगे और शत्रुके वीरों के मारनेवाले मणिभद्रजी घोड़े नहेहुए रथमें चढ़े ५६ ये धनुर्द्धारी महादेवजी के दहिनी ओर रक्षा करनेलगे और पहाड़के ऊंचे कँगूड़ेसे उतरकर गणोंसमेत लड़ाईमें प्राप्तहोगये ५७ बैलपर चढ़ेहुए महादेवजीको देखकर दैत्य गर्जनेलगे तिससमयमें दैत्य और प्रमथों की सेनामें बड़ाभारी शब्दहुआ ५८ और दोनों से परस्पर घोर संप्रमर्द हुआ तदनंतर नंदी, महाकाल, काल, स्कंद, महाबल, ५९ माल्यवान्, पुष्पदन्त, वृषली, स्वर्णदंतिक, चण्डीश, मदन, चण्ड, कूष्माण्ड, गुप्तलोमक ६० ये सब जो पहले लड़ाई में भग्न होगयेथे वे सब रणसङ्कट में प्राप्त होगये और महाबलवान् राक्षसलोग महादेवजी के आगे युद्ध करनेलगे ६१ गण और दानव योधाओंका बड़ा भयङ्कर युद्धहुआ तदनंतर महाबली राक्षसों ने गणोंकी सेनाको भगादिया ६२ और बाणोंके समूह, शूल, कुंत, गदा, मुद्गर और परिघोंसे शिवजीको सब ओरसे आच्छादित कर दिया ६३ जैसे इन्द्रिय पांच पांच विषयोंसे आत्माको ढक लेती हैं तदनन्तर महादेवजी ने घोर बाणोंसे दैत्योंको इसप्रकार नष्ट किया जैसे माघका महीना स्नानकरनेसे तत्क्षणही पाप नाश होजातेहैं ६४

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशतसहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेनारद-
युधिष्ठिरसंवादेजालन्धरोपाख्यानेश्रीमहादेवरणसमागमनं
नामद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

जालन्धरका मायाके महादेव बनकर पार्वतीके पास जाकर गणेशादिकों की मायाहीसे मृत्यु दिखलाना॥

नारदजी ने युधिष्ठिरसे कहा कि जालंधर रणभूमि में दैत्यों का कोलाहल सुनकर रथपर चढ़कर महादेवजीके पासआया १ और क्रोध से खड्गरोमा सारथी से शीघ्र बोला कि हज़ार घोड़ों से युक्त रथको जल्द भेजो २ मैं शूरतासे जटा भस्म और अस्थियों से भूषित तपस्वी शिवजी को मारूंगा हमारे साथ युद्ध में लँगड़े बैलपर चढ़ेहुए की क्या सामर्थ्यहै ३ नारदने कहा कि इसप्रकार खड्गरोमा से जब कहा तो वह रथ ले आया उस रथपर चढ़ घोर धनुष लेकर जल्द दौड़ा ४ तिसको वीरभद्र ने तीक्ष्ण बाणों से रोका और निरुच्छ्वास कियेहुए देहसे बाणों से युक्तहुआ ५ यद्यपि महादेवजी का परिग्रह देवों के समानहै तथापि क्या मुंड चन्द्रमाकी समानता को प्राप्त होजाते हैं ६ मणिभद्र ने बाणों से जालन्धर को ताड़ित किया फिर वह मणिभद्रको फँसरीसे बांधकर महादेवजीसे बोला ७ कि यदि तुमको शस्त्र में अभ्यास हो तो युद्ध करने को आइये तुम मुझको मारो नहीं तो पहले मैंही जटाधारी तुमको मारूंगा ८ इस प्रकार अभिमान से कहते हुए को क्रोधसे वीरभद्र ने बाणों से इस भाँति पूरित करदिया जैसे किरणोंसे सूर्यनारायण कमल को पूरित करते हैं ९ तदनन्तर मणिभद्रने गदासे तिसकी सेनाको मारा रथके ऊपर रथ घोड़ापर घोड़ा और हाथीके ऊपर हाथीको मारकर पृथ्वी में गिरादिया उससमय में पृथ्वी रक्त के कीच से लाल और दुर्गम होगई १०। ११ पहाड़से गणों में श्रेष्ठ लोग दानवोंको मारनेलगे और शूर दानव प्राणरहित होकर पृथ्वी में गिरनेलगे १२ रुण्ड, दोर्दण्ड, मूंडों से हाथियों की पीठ, सूंड और गांठियों से दानव शूर गिरते भये तिनसे पृथ्वी पूर्ण होगई १३ नारदने कहा इसप्रकारके अत्यन्त दुर्जय महादेवजीको रणभूमिमें देखकर और लोकमें और लक्षणों को भी देखकर १४ और देवता नक्षत्र और चन्द्रमा सक-

लादिकों में और सब देवता और सूर्यों में भी वैसा तेज न देखकर
१५ मर्दन किया हुआ भी जालन्धर फिर चिन्तना करने लगा कि
जिस पार्वती की प्रशंसा नारदजी ने की थी उसको मैंने नहीं देखा
१६ इससमय में पर्व्वत की गुहामें स्थितहै उसको मैं कैसे देखूंगा
पहले उसीके देखनेको जाताहूं पीछे महादेवजीसे युद्ध करूंगा १७
यह मनसे चिन्तना कर शुम्भ दैत्यसे बोला कि हे वीर घोर जयमें
तुम मेरी समान पराक्रमी हो १८ हमारे समान रूप धरकर तुम ल-
ड़ाई करने को योग्य हो युद्ध, डेरा और सेना का भार सब तुम्हारे
ऊपरहै १९ मैं चित्तके हरनेवाली पार्वतीके देखने को जाताहूं ऐसा
कहकर अपने अंगसे उसको आभूषण २० बख्तर शस्त्र इत्यादिक
और सारथीसमेत रथ देकर सेना छोड़ कर दुर्व्वारणसहित २१
छिपकर जालन्धर महादेवका और दुर्व्वारण नन्दी का रूप बनाय
मानसोत्तरपर्वत की गुहामें छिपीहुई पार्वती के पास पहुँचे २२।२३
कि जिस कँगूड़े में सखियों समेत पार्वती जी थीं उन्हों ने बाणों से
भिन्न नन्दी के कांधे का सहारा किये रक्त से भीजे कपड़े पहने हुए
शिवजी को आते देखकर बहुत विस्मय किया और सखियों से क-
हा कि क्या महादेवजी की हार होगई इसप्रकार आश्चर्ययुक्त २४
२५ दुःखित होकर सखियों समेत मायाके महादेवजी के पास जा-
कर पूछने लगी कि हे देवताओं के स्वामी तुम्हारी क्या दशाहुई
किसने तुमको लड़ाई में जीता है २६ और हेनाथ बाणसमेत कैसे
होकर संसारी पुरुषों की तरह रोते हो जब इसप्रकार पार्व्वतीजी
ने उनसे कहा तो महादेवजी ने अलग अलग गहने वासुकि सर्प
इत्यादिक अपने अंग से धीरे से उतारकर पार्वती को दिये गणेश
और स्वामिकार्तिकजी के कटेहुए शिर और कोखी दिखलाये २७
२८ कि जिनके देखने से पार्व्वतीजी हा स्कन्द हा गणेश हा रुद्र
ऐसा कहकर रोनेलगीं और तिनकी शोक से दुर्ब्बल सब सखियां
भी रोती भईं २९ तिस समय में नन्दी ने पार्व्वतीजी से कहा कि
तुम इनकी रक्षाकरो मणिभद्र, वीरभद्र, वीर्य्यवान् पुष्पदन्त, ३०
दम्भन, धूमतिमिर, कूष्माण्ड आदिक, चण्डी, भृङ्गी, किरीटि, महा-

काल, शृङ्खली, ३१ चण्डीश, गुप्तनेत्र और काल आदिक ये सब रणभूमिमें मारेगये गणेश और स्वामिकार्तिकके घूमतेहुए शिर ३२ महासंग्राममें मैंने देखे तिससे हे देवीजी मैं लेता आयाहूं ऐसा कह कर उनके आगे रखदिये इसप्रकार के मायाके नन्दीके वचन सुन कर पुत्रोंके शिरलेकर ३३ पुत्रपुत्र ऐसा कहकर ऊंचेस्वरसे पार्वती जी रोनेलगीं और बोलीं कि हे तारकअसुर के वैरी स्वामिकार्तिक तुम जालन्धर से युद्ध में कैसे मारेगये ३४ देवताओं ने तीन दिन तक तुमको सेनापतिमें अभिषेक करायाथा तब हे वीर तुमने कैसे तारकासुर को माराथा ३५ क्या महादेवजी ने तुमको छोड़दियाथा जिससे तुम पृथ्वी में गिरगये और अभागिनी मैंने पतोहूका मुख भी नहीं देखा ३६ और हे पुत्र तुमने संसार के भोगों को भी नहीं भोगा हे हेरम्ब हे विघ्नों के स्वामी हे लम्बेपेट और हे हाथी के समान मुखवाले पुत्र गणेश ३७ तुम्हारी सिद्धलोग पूजा करते थे सो तुम रणभूमि में किस से गिराये गये और तुम्हारे वाहन मूसे को किसने मारा ३८ इसप्रकार रोतीहुई पार्वती दुःखयुक्त मायाके महादेव से बोलीं कि हे देवों के स्वामी महादेवजी आप साक्षात् रुद्र हैं इस से हम को अभयकीजिये ३९ और हे देव जालन्धर से मारा हुआ बैल कहांगया और बाण से जर्जर देहवाले आपका प्रिय मैं क्याकरूं ४० तदनन्तर पार्वतीजी के वचन सुनकर ऊंची श्वासलेकर मायाके महादेवजी बोले कि पुत्र तो मारेगये परंतु हे प्रिये वृथा क्यों शोच करती हे ४१ इससमय में हे देवि अपने अङ्गके सङ्गसे हमारी रक्षा करनेको योग्यहो असमयमें उचित आतुर महादेवजी के वचन सुनकर पार्वतीजी बोलीं कि आप उचित वचन नहीं कहते हैं ४२ हे महादेवजी पण्डितलोग महाकष्ट, पतित, डर, समाधि, वमन, महाज्वर, श्राद्ध, यात्रा, गुरुदेव और वृद्धोंके समीप में रति को वर्जित करते हैं ४३ अत्यन्तदुःखित, पुत्रशोकसे पीड़ित, म्लान, आंसुओंसे परिम्लान और आतुर मुझको क्यों प्रार्थनाकरतेहो ४४ पार्वती के इसप्रकार के वचन सुनकर पार्वतीही के रूपमें मोहित मायाके महादेवजी स्वार्थका उद्देशकर बोले ४५ कि आतिथुक पु-

रुषको स्त्रियां रति नहीं देतीं तो निस्सन्देह घोर रौरव नरकमें पड़ती हैं ४६ हे श्रेष्ठमुखवाली पार्वतीजी गण, पुत्र, बुद्धि और गृहसे शून्य और इससमय में सबसे शून्य मैंहूं ४७ जीवितसे विहीन मैं तुमसे यहां पूछनेकेलिये आयाहूं कि मैं अपनी प्रकृति को छोड़ता हूं तुम जल्द अपनेघरमें प्रवेशकरो ४८ और नन्दी से कहा कि हे नन्दिन् उठो तीर्थमें आगेहो और पार्वतीजीसे कहा कि हे कांते इच्छापूर्वक जाओ और अपनी प्रकृति को त्यागकरो ४९ इसप्रकार माया के महादेव के वचन सुनकर शोकसे जड़ कीगई पार्वती जी बड़ीभारी श्वास धारण करनेलगीं ५० और तिसके परम क्षोभ में क्षणमात्र कुछ न बोलीं जिसपार्व्वती से स्थावर जंगम सब जगत् मोहित है वही पार्व्वती जी जालन्धर से मोहित होकर आत्मा के दुःख को न जानती भईं ५१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेयुधिष्ठिरनारदसंवादेजालन्धरोपाख्यानेमायामहेशागमनंनामत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय॥

नारायणजीका मायारचना॥

युधिष्ठिर ने नारदमुनि से पूंछा कि हे ब्रह्मन् इसप्रकार माया के महादेवसे पार्वतीजी जब मोहित होगईं तिसपीछे फिर क्या हुआ यह सब हमसे कहने के आप योग्यहैं १ तब नारदजी ने कहा कि हेराजेन्द्र युधिष्ठिर क्षीरसमुद्र में सोतेहुए नारायणजी का हृदय अकस्मात् क्षोभको प्राप्तहुआ नयनोंसे आंशू बहने लगे २ इसप्रकार के भारी उत्पात के लक्षण भगवान् देखकर शेषकी शय्या से उठके लक्ष्मीजी और वायु को देखकर ३ कहने लगे कि क्या करना चाहिये तदनंतर आपही ने गरुड़को स्मरणकिया तो स्मरण करतेही गरुड़जी प्रभुजी के आगे हाथ जोड़कर खड़े होगये ४ गरुड़ को आगे देखकर भगवान् उनसे बोले कि हे गरुड़ जहां युद्ध है वहां तुम जाओ ५ जालन्धर वीर मारागया या उससे मोहित देवजी मारेगये तिस को देखकर शीघ्र आकर हम से सब

कहो ६ जालन्धर और महादेवजी का युद्ध देखने को तुम्हीं समर्थ हो महासंग्राम में कौन और देहधारी जानकर जासक्ता है ७ कदाचित् वहांपर शस्त्र और अस्त्रकी वर्षा से दुर्गमयुद्ध होताहो तो बाण के संचार में बाणोंसे आच्छादित देह होकर वहां जाकर ८ पार्वती जीकी वृत्तिको देखकर शीघ्र आनेके योग्यहो फिर भगवान् दैत्यकी माया दूरकरने के लिये विचारकर शीघ्रही ९ सब सिद्धकरनेवाली गोली गरुड़ को देतेभये और कहा कि हे वीर इससे भ्रम न होग ऐसा भगवान्के कहने पर गरुड़ने गोली मुखमें छोड़ली १० औ भगवान् कहने के अनुसारही उनकी प्रदक्षिणा कर अद्भुतवेगयुत निकलकर आकाशमें प्रवेशकर चला ११ और वहां जाकर दैत्य के समूहों से दुस्सह घोर युद्ध देखा परन्तु अच्छी तरहसे क्या कुछ भी वृत्तान्त न देखा १२ फिर शीघ्रही वहां से देवताओं के भी नहीं जाने योग्य, दुर्ग, अत्यन्त ऊंचे मानस पर्वत में गये १३ वहांपर उन्होंने पार्वती के स्थानको न देखा परन्तु कुछ शब्द सुनाई दिया १४ तो वहां पास जाकर माया के महादेवजी को देखा गरुड़ ने गोली को मुंहमें छोड़ा परन्तु तब भी भ्रमको प्राप्त हुए १५ और जानकर समझा कि यह दैत्य है महादेवजी नहीं हैं बड़े कष्टकी बातहै ऐसा कहकर रोते हुए क्षीरसमुद्र में आगये १६ और नारायण जी के आगे सब वृत्तान्त कहा कि हे देव जालन्धर से महादेव जी विडम्बित भयेहैं १७ और तिस मायारूप पापी से पार्वती जी पीड़ित होरही हैं हे गोविन्दजी आप संग्राम में जावें १८ और जालन्धरसे मायायुद्ध करें जालन्धर शुभपीठमें तिसकी रानीको मैं देखआयाहूं १९ महलमें बाजा बजाती गीतगाती और क्रीड़ा करती है वह पार्वती से अधिक सुन्दरी है और रम्भा उर्वशी के सैकड़ोंसे भी श्रेष्ठ है २० इस समय में मनुष्यलोक और पाताललोक में उसकी समान कोई स्त्री श्रेष्ठ नहीं है फिर हे भगवन् स्त्रियों की क्या वार्ता है २१ जो मनुष्य देहसे उसको छुवेगा वह कृतार्थ होगा और तुम्हारे साले की स्त्री है इससे उस प्यारी को हर कर आप रमण कीजिये महादेवजी का उपकार और अपनी आत्मा का सुख कीजिये २२

नारदजीने युधिष्ठिरसे कहा कि नारायण ने गरुड़के वचन सुन उस को डाटकर अच्छी तरह से उपाय शोचकर शीघ्र ब्राह्मण को छोड़ दिया २३ और लक्ष्मी को पीताम्बर ओढ़ाकर योगमाया के बलसे दूसरे रूपसे निकलगये २४ क्योंकि वृन्दारिकाके प्रेमसे मोहित हो गये थे छिपेहुए भगवान्को जाते देखकर २५ शेषजी दूसरे रूप से उनके पास आकर भक्तिसे बोले कि आपठहरें मुझको आज्ञादी-जिये २६ क्याकरूं कहां जाऊं हे जनार्दनजी काम बताइये क्योंकि सदैव तुम्हारा मुँहदेखकर मैं भोजन करता हूं यही मुझको सुख है २७ तब भगवान् बोले कि महादेवके कारण और पार्वतीजीके उप-कारके लिये अपनी देहको आच्छादितकर सुन्दरी जालंधरकी स्त्री को मैं हरूंगा २८ हे बन्धु दुर्गमवनको वृंदाके आकर्षणाकी सिद्धि के लिये जाताहूं तुमभी चलो ऐसा कहकर दोनोंजन वनको चलेगये २९ और जाकर विष्णुजी और शेषजी जटा वल्कलको धारणकर संपूर्ण कामना और फलका देनेवाला पुण्यकारी आश्रम रचते भये ३० वहांपर तिनके शिष्य और प्रशिष्य भी कामरूपही हुए और सिंह, बाघ, शूकर, रीछ, वानरभी उसवनमें बहुत थे ३१ तदनंतर तिसवनमें भगवान् ने वृन्दाको मन्त्रसे आकर्षण किया और उसके हृदय में सन्ताप किया ३२ इसी अवसरमें जालन्धरकी रानी घोर तापको प्राप्तहुई सुन्दर स्त्री के हाथसे चलाये हुए चामरों को चला देतीभई ३३ और वह सूक्ष्मअङ्गवाली वारंवार अपने प्रियके आ-गमनकी चिन्ता करनेलगी चन्दन और अगुरु अङ्गमें लगाहुआ भीहै परन्तु शीघ्रही मूर्च्छा को प्राप्तहोगई ३४ चतुर्दशीकी रात्रिके चौथे पहर में उसने विधवाके भयका सूचक भयंकर स्वप्न देखा कि पीलीभस्म से मर्दित जालन्धरका सूखा शिर होगयाहै गीध आंखें काढ़ते और कानों के अग्र और नाक भी काटतेहैं ३५।३६ और छूटे बाल, करालमुख, कालेवर्ण, लाल कपड़े पहने, रक्त मुखमेंलगा और खप्पर हाथमेंधारे ऐसी कालीदेवी खारहीहै ३७ इसप्रकारका स्वप्न जालंधरकी रानी ने देखा कि जिसमें आत्माकी भी विडम्बना और दैत्योंकानाश भी संयुक्तहै ३८ तदनन्तर वह जालन्धरकी स्त्री भी

बाजा, गाने के प्रबन्धवाली स्तुतियों के वचनों और किम्पुरुषों की पढ़ीहुई वंशकी स्तुतियोंसे जगाईगई ३९ और जब सब थकगये तो सबको उसने प्रसन्नहोकर धनदेकर विदा किया फिर ब्राह्मणोंको बुलाकर देखे हुए स्वप्न को उनसे कहा तो शास्त्र के पारगामी ब्राह्मण लोग उस स्वप्नको सुनकर तिससे बोले ४० कि हे देवि यह दुःस्वप्न बड़ा घोर, अचिंत्य और भय देनेवाला है तिससे अचिन्त्य भयका नाश करनेवाला ब्राह्मणों को दान दीजिये ४१ तब तो जालन्धरकी रानीने गौ, वस्त्र, रत्न, हाथी और गहने ब्राह्मणोंको दानकिये तो ब्राह्मणलोग सन्तुष्ट होकर उसका अभिषेक करते भये ४२ अभिषेक कीगई भी वृन्दा ज्वरसे पीड़ाको प्राप्तहुई तदनन्तर वह ब्राह्मणोंको विदाकर महल में चढ़गई ४३ और वहां पर स्थित होकर उसने अपने प्रकाशितपुर को देखा तिस पीछे भगवान्ने अपने कर्म्मसे उसको आकर्षण किया ४४ तो घरमें स्थितहोनेको वह रानी न समर्थहुई तो घोड़ी नहेहुए और स्मरदूती सखी के हांकतेभये रथपर चढ़कर वह सूक्ष्म अंगवाली स्त्री वनको चली जो कि वन सौभाग्य अनेक प्रकारके वृक्ष पक्षियोंके गण ४५। ४६ फूल और झरनोंसे युक्तहै और अप्सराओं से शोभायमान है और दूसरी तरहकी पवन नहीं चलती है केवल मन्दवायु चलती है ४७ इसप्रकारके वन को देखकर वृंदारिकाने अपने पतिको स्मरणकिया कि किसप्रकार आगे प्राप्तहुए जालन्धर वीरको मैं देखूंगी फिर तो वह वहां सुख को न प्राप्तहुई तो दूसरे वनमें प्रवेशकिया सखी के हांकतेहुए रथमें सवार विष्णुकी मायासेमोहित ४८। ४९ वृक्षोंसे युक्त वनको देखा जो कि भारी पत्थरोंसे रुँकाहुआ मृगनयनी स्त्रीको भय देनेवाला ५० सिंह और बाघ के भय से युक्त सियार और सांपों से सेवित और आकाश तक ऊंचे वृक्षोंसे गुहाओं में अन्धकारसे पूरितहै ५१ ऐसे भयानक वन को देखकर वह चञ्चल नेत्रवाली आश्चर्ययुक्त हुई और उस रथ हांकने वाली स्मरदूती सखी से कहा कि मेरे रथको जल्द घरलेचलो ५२ तो स्मरदूती बोली कि हे सखि मैं दिशा तो जानतीही नहीं हूं कहां रथ लेचलूं घोड़ियां थकगई हैं और रास्ता

नहीं विद्यमान है ५३ हे देव किससे प्रेरित यह रथ वहां जावे यहां पर कोई मांस खानेवाला जीव न भक्षण करलेवे ५४ ऐसा कहकर वह शीघ्रतासे रथ हांकनेलगी तो जल्द रथ आनन्दयुक्त सिद्धों के पास प्राप्त होगया ५५ वह वन बड़ाही भयंकर है वहांपर सिद्धही तो दिखलाई दिये और प्रबल पवन और पक्षियोंका शब्दभी वहां नहीं है ५६ तेजप्रकाश और कहींपर जलभी नहीं दिखाता वहांपर रथके उलटे लक्षण हुए ५७ कि घोड़ियां नहीं हिनहिनाती हैं पहियेका शब्द भी नहीं सुनाई पड़ता पताका नहीं फहराते घण्टियोंमें शब्द नहीं होता ५८ और ध्वजाके खम्भे में लगेहुए भारी घंटेभी नहीं शब्द करते हैं इसप्रकार देखकर वृन्दा सखी से बोली ५९ कि हे स्मरदूति बाघ और सिंहों से भयंकर वन को कहां जारही है हे सखि हमें घर, राज्य और वनमें भी सुख नहीं है ६० तब स्मरदूती बोली कि हे देवि सुनो आगे अत्यन्त घोर पहाड़है उसेदेखो आगे देखकर भयविह्वल घोड़ियां नहीं चलती हैं ६१ तिसके यह वचन सुनकर वह जालन्धरकी स्त्री डरी और अपने कण्ठ के हारको देखकर रथसे शीघ्र उतरी ६२ इसी अवसरमें भयंकर आकारवाला राक्षस आया कि जिस के तीनपांव, पांचहाथ, सातआंखें, अत्यन्त भयानक ६३ पिंगलवर्ण, बाघकेसे कान और मुंहवाला पक्षियों के समान रक्तसेलाल बाल लटकता हुआ है ६४ इसप्रकार के राक्षस को देखकर वह कमल की कोशके सदृश अंगवाली स्त्री सहसा से डरगई हाथोंसे आंखें बन्दकर कदली के वृक्षकी नाईं काँपने लगी ६५ और दूती ने चाबुक को छोड़कर रानी से कहा कि हे देवि यह खाने को आरहा है इससे मैं बहुत डरती हूं मेरी रक्षा कीजिये ६६ इसीअवसर में वह रथकेपास पहुंचगया और घोड़ियों समेत उस रथको हाथ से घुमाकर फेंक दिया ६७ तो वह रानी बाघके भयसे हरिणीकी समान भूमिमें गिरगई और स्मरदूती वृक्ष की जड़में कटे हुए अशोककी लताके सदृश गिरपड़ी ६८ तदनन्तर उस राक्षस ने सब घोड़ियों को भक्षण करलिया और रानीको भी हाथ ... स भांति पकड़ा कि जैसे सिंह हरिणीको पकड़े ६९ और ... ड़

ससे बोला कि तुम्हारे स्वामीको महादेवजीने रणभूमिमें मारडाला तुमको जो प्राण रखने हों तो ७० हमें अपना पति बनाकर निडरहो वहुतकाल जीवो और स्वादुसमेत महामांससंयुक्त वारुणीमदिराको भी पीवो इसप्रकारके वचन सुनकर रानी प्राणरहितसी होगई ७१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेजालन्धरोपाख्यानेश्रीमन्माधवमायाकथनंनामचतुर्दशोध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

वृन्दाको ब्रह्मपदकी प्राप्तिहोना॥

नारदजी ने युधिष्ठिरसे कहा कि तिससमयमें नारायणदेव जटा और वल्कलको धारणकर और दूसरा उनका अनुचर फलहस्तमें लेकर जालंधरकी स्त्री और स्मरदूती के पास आपहुँचे १ तिनको देखकर मृगनयनी स्मरदूती बड़ा विलाप करनेलगी तिसके विलाप के वचन सुन दोनोंजन बोले २ कि हे कल्याणि भय न करो तुम्हारी रक्षाकरनेको हम प्राप्तहुए हैं दुष्टोंसे सेवित इसघोर वनमें तुम क्यों आईहो ३ इस प्रकार उस सूक्ष्मअंगवाली को समझाकर भगवान् राक्षससे बोले कि रे अधम आचार करनेवाले इस कोमलांगी और पवित्र मुसक्यानवाली को छोड़ ४ रे मूर्ख रे दुराचारी क्या करनेको तू स्थित हुआहै लोकके नेत्रोंके सर्वस्वको भक्षणकरनेके लिये उद्यत हुआहै ५ यह पुण्यके प्रभावयुक्त होवे क्योंकि पृथ्वीका आभूषणरूप है और तू लोकको लोकहीन और कामको अभिमान से वर्जित ६ करेगा क्योंकि इस समयमें इस वृन्दारिकाको मारना चाहताहै तिससे इस सुखप्रासादकी देवीको जल्द छोड़ ७ इस प्रकार के हरिके वचन सुनकर क्रोधयुक्त राक्षस बोला कि जो समर्थ होतो हमारे हाथ से अभी छुड़ाओ ८ जब राक्षसने इसप्रकार कहा तो भगवान्ने क्रोधदृष्टिसे देखदिया तो वह वृंदाको छोड़कर भस्महोकर गिरगया ९ तदनन्तर जगदीशकी मायासे प्रमुग्धा वृन्दा भगवान्से बोली कि दयाके समुद्र आप कौनहैं जिन से मैं रक्षा की गई हूं १० और हे तपस्वियों के निधि शरीर और मनका दुःख, संताप ये सब राक्षसके

नाशसे आपने मीठीवाणी से दूर करदिया ११ हे सौम्य, तपोधन! तुम्हारे स्थान में मैं तपस्या करूंगी १२ तब तपस्वीरूप भगवान् बोले कि भरद्वाजका पुत्र देवशर्मा नामहूं सम्पूर्ण भोगोंको छोड़कर घोरवन में प्राप्तहुआहूं १३ यह मेरा शिष्य ब्रह्मचारी भी मेरे संग है और भी जो रूपचाहें वह धारें और जहांचाहें वहां जासकें ऐसे मेरे बहुतसे शिष्यभी हैं १४ हे कल्याणी! जो तुम हमारे आश्रममें स्थित होकर तपस्या करोगे तो तुम हे रानी! आवो हम दूसरे दूर के वनमें चलेजावेंगे १५ ऐसा भगवान् जालन्धरकी स्त्री से कहकर पूर्वदिशा के प्रेत और पिशाचोंसे युक्त वनको मंदचालसे चले १६ और आंसुओंसे पूर्ण नेत्रवाली वृन्दारिका और स्मरदूती ये तिन के पीछे २ चलीं और हमको भी संगलेतेचलो यह कहनेलगीं १७ तिसी समयमें उसी वनमें कोई दुराचारी पापीने जालफैलाया उस में जब जीव भर होते तो १८ जालको सिकोड़लेता और जाल के जीवोंको निकालकर फिर जाल छोड़देता १९ उस व्याधने दो स्त्रि-योंको देखा तब स्मरदूती ने वृन्दासे कहा कि हे देवि मुझे भक्षण करने को आता है हे सखि! हमारा हाथ पकड़ो २० तब वृन्दा ने उसका कहना सुनकर विकृत मुखवाले व्याधको देखा और उसको देखकर जालन्धरकी स्त्री डरकी पवनसे कँपी २१ और विकल हो-कर स्मरदूती सखीके साथ दौड़तीहुई तपस्वियोंके आश्रममें प्राप्त होगई २२ और उस वनमें अत्यन्त अद्भुतदेखा कि पक्षियोंके सोने के अंग और वे अनेक प्रकारके शब्द बोलते हैं २३ और सोनेकी भूमिकावाली, सोनेहीके कमलों से युक्त बावलीदेखी नदियां दूधब-हनेवाली और वृक्ष शहद चूनेवाले २४ शक्करकी राशि लड्डुओं के ढेर और सब खाने के पदार्थ स्वादुयुक्त बहुतसा गहना २५ और सुन्दर शस्त्र आकाश से गिरतेहुए देखे और वहांपर तृप्तहुए सिंह कूदते फांदते हैं २६ और एक मठ में सुन्दर तपस्वी को वृन्दा ने देखा कि व्याघ्रका चर्म्म बिछाकर बैठाहै और तीनोंलोकोंको प्रका-शित कररहाहै २७ तब तो वृन्दा ने उनसे कहा कि हे विभो! इस पापीसे हमारी रक्षा करो रक्षाकरो तपस्या, धर्म्म, मौन और ज

भी २८ हे तपोधन! डरे हुएकी रक्षा करने से अधिक पुण्य किसी धर्म्म में नहीं होता है डरीहुई आलस्ययुक्त अंगवाली तपस्वी से इसप्रकार कहही रहीथी २९ कि तबतक सब जीवोंका बाँधनेवाला दुष्टात्मा व्याधभी प्राप्त होगया तब भयसे डरी हुई वृन्दादेवी तपस्वी भगवान् के कण्ठ में लिपटगई ३० और भुजाओं से सुख के स्पर्श को कर अशोकवल्लीकी तरह लिपटी तब तपस्वी रूप भगवान् बोले कि तुम्हारे आलिंगन के भावसे तुम्हारे स्वामीका गुणों से अधिक सब अंगोंसे युक्त फिर शिर होजावेगा हेस्त्री! तू पतिके लिये चित्रशालामें जा ३१। ३२ जब मुनिरूप भगवान् ने उससे यह कहा तो वृन्दा अपने पतिका शिर लेकर चित्रशाला में जाकर सुन्दरशय्या में बैठगई ३३ और अत्यन्त चंचल वह आंख मूंदकर ओठोंको पान करने लगी तबतक जालन्धरको आकार ३४ उसीके से भुजा उंचाई वाक्य मन और भावको भगवान् ने करलिया ३५ तदनन्तर वृन्दा सम्पूर्णदेहयुक्त अपने प्रिय को देखकर बोली कि हे स्वामिन्! तुम्हारा प्रिय मैं करूंगी अपने युद्धका वृत्तान्त हमसे कहो ३६ वृन्दा के वचन सुनकर माया का जालन्धर बोला कि हे देवि जिस प्रकार महादेवजी और हमसे युद्धहुआ है वह सुनो ३७ हे प्रिये! महादेव के घोरचक्र से हमारा शिर काटागया तबतक तुम्हारी सिद्धियोग से हमारी आत्मा तुम्हीं में प्राप्त होगई ३८ तो कटाहुआ शिर तुम्हारे अंग संगसे जीवित यहां आगया हे प्रिये! हे बाले! तुम हमारे वियोगसे अत्यन्त दुःखित हुईहो ३९ जो हम तुम को छोड़कर युद्ध में चलेगये थे इससे हमारे विप्रिय को क्षमा करना ४० तदनन्तर सब भोगोंसे युक्त वृन्दारिका देवी ने पान, विनोद, कपड़े और अच्छे गहने जालन्धर को दिये ४१ और रतिमें चंचल ने प्रियको अच्छीतरह लिपटकर चुम्बन किया और मोहन से उत्पन्न मोक्षसे भी अधिक सुखपाया ४२ और नारायणदेवनेभी लक्ष्मी के प्रेमरससे अधिक सुखमाना और वृन्दाने वियोगका सब दुःख माधव में दूरकर दिया ४३ जो कि माधव उस की क्रीड़ारूप पवित्र प्रकाशित बावली के राजहंस हैं और जिसके रूपके भावसे

कृष्ण जी लक्ष्मी में वांछारहित होगये ४४ और वह तिसी वन में तुलसीके रूपको धारण कर लेती भई और वृन्दाके अंगके पसीने से पृथ्वी में अत्यन्त पवित्र नदी प्रकटभई ४५ और जगत्के पति भगवान् कुछ दिन वृन्दाके अंगके संगसे उत्पन्न सुखको कर शिव जीका कार्यही मानते भये ४६ एक समय सुरत के अंतमें वृन्दाने दोभुजा वाले पुरुषों में श्रेष्ठ अपने कण्ठमें लिपटे हुए तपस्वी को देखा ४७ तो देखतेही कण्ठ से भुजाओंके बन्धनको छोड़कर तिनसे बोली कि आप तापस के रूप से क्यों मुझे मोहित करने को आये ४८ तिसके वचन सुन तिसी को शान्त करतेहुए तपस्वी भगवान् बोले कि हे वृन्दारिके तुम मुझे लक्ष्मी के मनके हरनेवाले जानो ४९ तुम्हारा स्वामी महादेवजीके जीतने और पार्वतीजी के लेनेको गया है हमीं शिवहैं अलग अलग करके स्थितहैं ५० जालन्धर लड़ाई में मारागया हे पापहीन वृंदे इस समय में हमीं को सेवनकरो॥ नारदने कहा हे राजन् इसप्रकारके विष्णुजी के वचन सुनकर मलिनमुख और क्रोधयुक्त होकर वृन्दारिका बोली ५१ कि जिसने तुमको लड़ाई में बांधलिया और पिता की वाणी से जीवते हुए छोड़ दिया और अनेक प्रकारके रत्नोंसे आपका सत्कार किया उसीकी स्त्रीको आपने हरलिया यह बहुत योग्य किया ५२ जो नित्यही धर्मका पतिहै वह पराई स्त्री में कैसे रतहो और विद्वान् लोग यह कहते हैं कि ईश्वर भी किये हुए कर्मको भोगता है ५३ मायारूपी आप तपस्वी से जिसप्रकार मैं मोह को प्राप्तहुई तिसी प्रकार आपकी स्त्री को कोई मायारूपी तपस्वी हर लेजावे ५४ इसप्रकार जब उसने भगवान् को शाप दिया तो भगवान् क्षणमात्रही में अन्तर्द्धान होगये वह चित्रशाला, शय्या और बन्दर ५५ भगवान्के चले जानेही पर सब नष्ट होगये तो वृन्दाने वनको शून्य देखकर प्राप्तहुई सखी से कहा कि विष्णुने बड़ा छलकिया ५६ पुरकी प्राप्त हुई राज्य छूटी और मेरा स्वामी भी सन्देह है कि जीताहै या नहीं ब्रह्मा से रचीहुई मैं वनमें यह जानकर कहांजाऊं ५७ मनोरथों के विषय हमारे प्यारे का दर्शन हुआ इस प्रकार अत्यन्त दुःखयुक्त

वृन्दारानी गरमश्वास लेकर बोली ५८ कि हे स्मरदूतिके तुम ने हमारा मरण प्राप्तकिया तब तो स्मरदूतिका बोली हमारे आप प्राणों से अधिक प्यारी हैं ५९ इसप्रकार के उसके वचन सुन वृन्दाने वन में जाकर बड़ा तालाब देखकर ६० दुःखको छोड़कर जल से देहको धोकर तालावही के किनारे पद्मासन बाँधकर मनको विषयरहित कर ६१ सखीके साथ निराहार रहकर बड़ीघोर तपस्याकर भगवान्‌के संग से दूषित अपनी देहको सुखाडाला ६२ तदनन्तर गन्धर्वलोक से अप्सराओं के समूह वृन्दा के पास आकर उससे बोले हे कल्याणि स्वर्गको जावो देहको न छोड़ो ६३ जिसने तीनों लोकोंका जीतनेवाला गांधर्व शस्त्र प्राप्तकिया और भगवान् के प्रसन्न करनेवाली देह प्राप्तकी तिसदेहको क्यों छोड़तीहो और अपने पतिको महादेवजी के श्रेष्ठ बाणों से नष्टहुआ समझो हे चण्डि हे भद्रे पुण्यलाभकी आभूषण इस समयमें होवो और शीघ्रही देवताओंके वनको सेवनकरो ६४ इसप्रकार अप्सराओंकी वाणीको सुनकर जालन्धरकी स्त्री हँसकर बोली कि अत्यन्तवीर पतिने मुझे स्वर्ग से लाकर यहां छोड़ा अब मैं देवताओं के जीतनेवाले पतिसे वियोगको प्राप्तहुई तो पहले सुखके पात्र अपने पतिको मोक्षप्राप्त होने के लिये मैं यत्न करूंगी कि जिससे मोक्षको प्राप्त होजावें ६५ ऐसा कहकर वृन्दाने अप्सराओं के गणोंको बिदा करदिया परन्तु वृन्दा की प्रीति की फँसरी से बँधी हुई वे नित्यही आने जानेलगीं ६६ तदनन्तर वृन्दा योगाभ्यास से ज्ञानरूपी अग्नि से गुणों को जलाकर विषयोंसे मनको खींचकर तिसकेपर अर्थात् ब्रह्मको प्राप्त हुई ६७ वहांपर वृन्दारिकाको देखकर अप्सराओं के समूह प्रसन्न होकर स्तुतिकर फूल बरसानेलगीं ६८ फिर स्मरदूती काष्ठ के समूहको इकट्ठाकर उसमें वृन्दाकी देहको धर अग्नि जलाकर आप भी अग्नि में प्रवेश करगई ६९ फिर अप्सराओं ने उनकी जली हुई भस्म को गंगाजी में छोड़ दिया ७० जहां पर वृन्दा ने अपनी देह छोड़कर ब्रह्ममार्ग प्राप्तकिया है वहांही गोवर्द्धन पर्वतके समीप वृंदावन हुआ है ७१ तदनंतर अप्सराओं ने अप्सराओं से स्वर्ग

में जाकर जालंधर की स्त्री का हाल और जालंधर के मारेजाने का सब वृत्तान्त कहा यह सुनकर सब देवदेवी प्रसन्न मन होकर जालन्धर शत्रुके अत्यन्त प्रबल भयको छोड़कर अत्यन्तभारी नगारे बजानेलगे और वहींके सब और देवोंने सुना तो वेभी परमशोभा को प्राप्तहुए ७२ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेउत्तरखण्डेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायांजालन्धरोपाख्यानेवृन्दायाब्रह्मपदप्राप्तिर्नामपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

जालन्धरके मायारूपका परित्याग ॥

युधिष्ठिर ने कहा हे नारदमुनि किसप्रकार जालन्धर ने महादेव जीका रूप धारणकर पार्वतीजी को देखा और क्या किया यह सब विस्तारसे हमसे कहिये १ तब नारदमुनि बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर जब मायाके महादेवने पार्वतीजी की प्रार्थना की तो क्षोभ को प्राप्तहुई पार्वतीजी उससे कुछ न बोलीं २ और यह निश्चय किया कि महादेवजी आतुर नहीं हैं तपस्यासे हमको प्राप्तहुए हैं यह बात उनको योग्य नहीं है यह समझकर उस से नहीं बोलीं ३ और वहांपर प्रतीकार न देखकर उसके देखतेही देखते वहां से उठकर आकाशवाहिनी गंगाजीको देखनेलगीं ४ और गंगाजी के समीप रहनेको उचितमानकर पार्वतीजी तपस्याकेलिये जातीभईं कि पूर्व समयमें भी महादेवजी हमको तपस्याहीसे मिलेथे इससमयमें भी तपस्याकरें ५ इसप्रकार चिन्तनाकर सखियों के साथ जाकर आकाशसे गिरती हुई दूधके सदृश ६ गंगाजीको देखा जो कि मानसोत्तरमें गिर रही हैं मानों आकाशसे हार मालाकी नाईं आ रही हैं ७ गंगाजीका जल स्वर्गसे जैसे खींचागयाहो जिसप्रकार ब्रह्माजी के मुखसे श्रुतियों की पूरधारा निकलती है तैसेही आकाशसे गंगाजी निकली हैं ८ सखियोंके साथ पार्वतीजी ने गंगाजी को देखकर प्रसन्नहो स्नान किया और अपनी देहकी पूजाकर पीछेसे गंगाजी के किनारे बैठगईं ९ और परस्पर देखकर पार्वतीजी ज॰

बोलीं कि तुम जल्द हमारा स्वरूप धारणकर उसके समीप जावो १० और यह जानआवो कि महादेवजी हैं या औरही कोई है जो तुमको वह आलिंगनकर चुंबन आदिककरै ११ तो मायाको धारणकिये असुरको जानना और जो हमारे निमित्त कुछ शुभ या अशुभकहे १२ तो निस्संशय महादेवजी समझना यहां आकर हमसे सब कहना इसप्रकार जब पार्वतीजी ने जयाको आज्ञादिया तो वह माया के महादेवजी के समीप गई १३ उसको आती देखकर अत्यन्त काम से पीड़ित उसने पार्व्वतीजी समझकर उसका आलिंगन किया और शीघ्रही अपना वीर्य्य छोड़ दिया तो वह थोड़ी इन्द्रिय का होगया १४।१५ फिर जया ने उससे कहा कि हे दैत्य तू महादेव नहींहै थोड़े वीर्यवाला और अधम आचारयुक्त है और मैं पार्वती नहींहूं उनकी सखीहूं १६ ऐसा कहकर उसने अपनारूप धरकर फिर उससे कहा कि इसीपापसे तुम महादेवजीसे मारे जावोगे १७ इसप्रकार जयाने जानकर पार्वतीजी के पास जाकर उनसे कहा कि हे देवि यह जालन्धर है तुम्हारे प्यारे महादेवजी नहीं हैं १८ तब तो महादेवजी की प्यारी पार्व्वतीजी भयसे पीड़ित हुईं और शीघ्रही कमलके मध्यमें प्रवेशकरगईं और जालन्धर के भय से पार्वतीजीकी सखियां कमलोंमें भँवरी होगईं १९ इस अन्तरमें वनमें प्राप्त जालन्धरकी स्त्रीको न देखकर भययुक्त रक्षा करनेवाले शीघ्रही रणभूमिमें आये २० तब शुम्भने उनसे पूछा तो शुम्भको नमस्कारकर आत्माके परिहारकेलिये विष्णुजी को वृन्दाके हरनेमें कहा २१ वृन्दाका हरना सुनकर भययुक्त होकर शुम्भ ने महादेवजीसे लड़ाई छोड़कर जालन्धरके पास चण्ड और मुण्डको भेजा २२ तो अत्यंत शीघ्र चलनेवाले दैत्योंने मानसोत्तरमें आकर वृक्षके बीचमें महादेवका रूपधारेहुए जालन्धर से बोले २३ कि हे राजाओंमें श्रेष्ठ विदेशमें प्राप्तहुई उस स्त्री से क्याहै जिसको वैरीलोग नहीं देखते और बंधुजन नहींभोगते २४ हेदेव महादेवजीने शुम्भको जीतलिया और रणभूमि में सेनाको मारडाला यहां से चलकर लड़ाई करो पार्वती को तुम नहीं पावोगे २५ हे राजन् सिंहकी स्त्री

को सियार कैसे प्राप्त होसक्ता है और अन्धकार सूर्यकी दीप्ति को कैसे पा सक्ताहै २६ तुम्हारे जालन्धर पीठसे तुम्हारी रानीको विष्णुजी ने हर लिया है यह वार्त्ता सुनाई देती है तिससे तुम लड़ाई करो २७ रणभूमिमें महादेवजी को जीतकर सब ईश्वरों के ईश्वर होवो अथवा महादेवजी के बाणोंसे खण्डितहोगे तो तिनके पदको जावोगे २८ इसप्रकार चण्ड और मुण्डका भाषण सुनकर जालंधर क्रोधयुक्त लाल आंखेंकर उस पहाड़से निकला २९ और चंड मुण्ड को समझाकर महादेवजी का रूप छोड़कर चलतेहुए राहमें दुर्वारणसे कहा ३० कि हे दुर्वारण देखो इस समयमें जो विष्णु ने कियाहै मायाको धारणकर वृंदारानीको अपने पदमें प्राप्तकर दिया ३१ बुद्धिमान् घरमें स्थितहुए दामाद का विश्वास न करै निश्चय उसको कन्या देकर बाहर करदेवै ३२ मनुष्य दामादको सदैव घर में न रहनेदेवै क्योंकि वह धीरे धीरेसे धन और स्त्री आदिकों को ग्रहण करलेता है ३३ तब दुर्वारण ने कहा हे राजन् जो कर्म किये जाते हैं वे वैसेही भोग कियेजातेहैं तुम पार्वती के हरनेको आयेथे विष्णुजीने तुम्हारीही स्त्रीको हरलिया इसप्रकारके स्पष्ट वचन सुनकर जालन्धर क्षणमात्र मौन होकर चिंतनाकर ३४ बोला कि हे दुर्वारण मैं महादेवजीके जीतनेको जाऊं अथवा घोर विष्णुजी को जीतूं दोनों कार्योंमें से कहिये क्याकरूं ३५ तब दुर्वारणने कहा कि जो हरिको जीतने को जावोगे तो पीछे से महादेवजी मारेंगे और वीरलोग भी रणभूमि में मारेंगे और महादेवजी जाने न देंगे ३६ तिससे महादेवजी को जीतकर अपने वशमेंकर पीछेसे गोविन्दजी के पासचलो जो तिनके पदको जानतेहो ३७ इससमय में शीघ्रही महाबली दैत्योंके पासजावो और शीघ्ररुचिहो तो महाघोर संग्रामकरो ३८ देशकालके उचित दुर्वारणके वचन सुनकर जालन्धर योगी महादेवजी के साथ युद्ध करनेको जाताभया ३९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेउत्तरखण्डेपंचपंचाशतसहस्रसंहितायांजालन्धरोपाख्यानेजालन्धरस्यमायारूपपरित्यागोनामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

शुक्रजी का कृत्या राक्षसी की योनि में प्रवेश होना ॥

नारद ने युधिष्ठिर से कहा कि तदनन्तर जालंधर ने कबन्ध के समूहों से भयानक रक्त, मांस का समूह, मज्जा, मेद और हाड़ों से दुर्गम संग्राम को देखा १ प्रिया के हरण से दुःखित उस दैत्यने रण-भूमि में बैलपर चढ़ेहुए महादेवजी को देखा २ कि जिन का भयानक सर्पके भोगसे विभूषित अंगहै जटाओं के समूह चंद्रमा भूषण है तिस से चिह्नित हैं और नेत्र अग्निकील के ऊपर शोभायमान अंग है इस प्रकार विना लड़ाईही के उसने देखा ३ और शीघ्रही अपने रथपर चढ़कर क्रोधयुक्त होकर शुम्भसे कहा कि तुमने तपस्वीको नहीं मारा ४ तब शुम्भ ने जालंधर से कहा उन्हों ने बड़ी तपस्या की है लड़ाई में दुर्जय महादेव जी हमलोगों से नहीं मारे जासक्ते हैं ५ इसप्रकार शुम्भका कहा सुनकर जालंधर क्रोधमें मूर्च्छित होकर सहस्रपद्म दैत्योंकी सेनासे घिरेहुए महादेवके पास ६ कालकेदार धनुषको ग्रहणकरगया और अत्यंत स्थूल, लोहस्तंभ बहुत तीक्ष्ण बाणों को ७ संग्राम में दुर्धर्ष जालन्धर ने इस प्रका छोड़ा जैसे वर्षा ऋतुमें मेघवर्षे आतेहुए जालंधर को महादेव ज के गण लड़ाई में रोंकते भये ८ तदनंतर क्रोधसे महादेवजी ने घो बाणों के समूहों से जालंधरको ताड़ित किया और उन्हीं के बाणों उसका कवच पृथ्वी में गिरादिया गया ९ कवचरहित भी वह मेघ से युक्त पहाड़कीनाईं शोभित हुआ फिर महादेवजीने बाणों से उ के अंगको कीलित करदिया १० तो उसके शरीरसे बहुत रक्त नि कला कि जिससे सब पृथ्वी शीघ्रही डूबगई ११ तब तो देवता भय को प्राप्तहुए और दैत्यलोग काँपनेलगे और प्रमथ वीर लड़ाई को छोड़कर भागगये १२ सब ओरसे रक्तकी नदी बहरही है मानों न दीही दूसरी मूर्ति धारणकर बहीहै तदनंतर जालंधरने महादेवजी से कहा कि तुम धनुष धारण करनेवालों में श्रेष्ठहो १३ इस समयमें वही करूंगा जिससे नाशको प्राप्त होजावो ऐसा कहकर बाणसमेत

कालकेदार धनुषको ग्रहणकर १४ शीघ्रही अनेक प्रकारों के बाणों से महादेवजी को पूरित करदिया सहस्रकोटि बाणों से अंग पूरित होनेमें महादेवजी रणभूमिमें शोभितहुए १५ पक्षियोंसे जैसे आकाश और वृक्षोंसे बड़ा पर्वत तैसेही जालन्धरके बाणोंसे महादेवजी को व्याप्त देखकर १६ वीरभद्र क्रोधसे जालन्धर पर दौड़ा और उस उपमारहित बली ने जालन्धरको पीड़ित किया १७ सहस्रों बाणों से बिधाहुआ क्रोधयुक्त प्रतापी जालन्धर वीरभद्र के धनुष, बाण, रथ, छत्र और सारथीको बाणोंसे तिलतिल काटताभया और रथरहित वीरभद्रने गदासे उसको मारा १८। १९ तैसेही जालन्धरने भी गदासे वीरभद्रको मारकर पृथ्वीपर गिरादिया गदाकी चोट से गिरेहुए अत्यन्त मूर्च्छित वीरभद्रको देखकर २० मणिभद्र लड़ाई में जालन्धर पर दौड़ा अत्यन्त क्रोधयुक्त तिन को आते देखकर दैत्य २१ बाणों से सब सामग्रीरहित कर देता भया तदनन्तर मूर्च्छाको छोड़कर सिंहके समान शब्दकर वीरभद्र जी उठे २२ और प्रतापी मणिभद्र भी क्रोधयुक्त होकर वैसेही उठे और आकाश में स्थित जालन्धरको पर्व्वतोंसे मारनेलगे २३ तिसके अङ्गमें पर्वत गिरेहुए देखकर शब्दकर वीरभद्रने मुष्टियों से उसको मारा २४ और मणिभद्रने उसके दोनों पांव पकड़कर रथसे खींचकर घुमाया तो यह अद्भुतहीसा हुआ २५ मणिभद्रसे पकड़ा हुआ भी वह महाबली दैत्यों का राजा पांवों की चोट से मणिभद्रको मारकर गिरा देताभया २६ और महाबाहु वाले उसने मुष्टियों से वीरभद्रको भी मारा तदनन्तर गणोंसे युक्त नन्दिकेश्वरजी आये २७ सेना समेत शुम्भने उनको आते देखकर रोंका तदनन्तर द्वन्द्व युद्ध करनेकेलिये गण और दैत्य परस्पर आपहुंचे २८ शुम्भ शिलादज से राहु महाकालसे निशुम्भ कोलाहलसे केतु कालसे २९ शैलोदर गुहसे महाबली जम्भ माल्यवान्से महापार्श्व चण्डसे चण्डीश रोमकण्टकसे ३० विकटास्य भृङ्गिसे उरुनेत्र गणेशसे इसप्रकार दैत्योंके स्वामियों से गणोंके स्वामी युद्ध करनेको जातेभये ३१ तदनन्तर शुम्भ युध बाणोंसे शिलादज ताड़ित हुआ परंतु उसने भी भारी

के कँगूड़ोंसे चूर्णकरडाला ३२ शुंभ शिलादजसे पीड़ित हुआ और उसने शक्तिसे शिलादजको मारा महाकालने राहुको लड़ाई में मारा ३३ तदनन्तर शक्ति और बड़े पहाड़ से राहुके रथको नष्ट करदिया और प्रतापी कोलाहल निशुम्भकी शक्तिसे मारागया ३४ फिर कोलाहलने शक्तिको पकड़कर सारथीसमेत रथको मारा जब दैत्य रथहीन होगया तो लड़ाई में अधिक क्रोधयुक्त हुआ ३५ फिर निशुम्भ ने हज़ार फणियोंसे कोलाहलको मारा और मारकर अत्यन्त शीघ्र दूसरे रथपर चढ़गया ३६ जब फणिचक्रसे कोलाहल मारागया तो उसके मूर्च्छा आगई क्षणमात्रही में मूर्च्छाको छोड़कर अपने रथसे जल्द उतरकर तलवार और ढाल लेकर ३७ निशुंभके रथ इत्यादि को तलवारहीसे काटडाला फिर अपने रथपर चढ़कर उसकोवाणों से ताड़ितकिया ३८ और महावली निशुम्भ उसके पराक्रमसे विस्मित होकर अत्यन्त क्रोधकर शक्तिसे उसके घोड़ों समेत रथको नष्ट करताभया ३९ तब वलवान् कोलाहल रथहीन होकर दौड़कर निशुम्भ के रथ को नष्ट कर देताभया ४० और केतु पुच्छको ग्रहणकर आकाशमें घुमाताभया फिर कालने केतु के ऊपर पहाड़ चलाया और उसने भी वेगसे पहाड़ही फेंका ४१ तो कालने पहाड़ को चूर्ण कर डाला यह देखकर केतुने मुष्टियों से ताड़ित किया तो कालके सब अंग चूर्ण होगये फिर डरसे केतुके साथ युद्ध छोड़कर भागगया ४२ और शैलोदर ने गदा से स्वामिकार्तिक की छातीमें मारा फिर स्वामिकार्तिक ने शक्ति से मारकर उसको भूमि में गिरा दिया ४३ शक्तिके प्रहारसे मरेहुए राक्षसको देखकर स्वामिकार्तिक जी इसप्रकार विचित्र गर्जे कि जैसे क्रौंच के मारने पर गर्जे थे ४४ फिर माल्यवान् ने वाणसमूहों से जंभको पीड़ितकिया और जंभने भी तीक्ष्णवाणों से माल्यवान्को मार मूर्छितकर छोड़दिया ४५ फिर महापार्श्व वाणसमूहों से घोड़ाहीन रथको लेकर लीलाहीमें नेत्रमें प्राप्तकर घोड़ारहित चण्डके ऊपर चलाताभया ४६ घोड़ाहीन रथ को देखकर चंड हाथी के ऊपर चढ़गया और कूदते हुए महापार्श्व को गदासे मारा ४७ महापार्श्वने गदाकी चोटको न समझकर मु-

ष्टिसे चण्डको मारकर पृथ्वी में गिरादिया ४८ और रोमकण्ठ नाम बड़े भारी असुरको चण्डीशने शस्त्रोंसे पीड़ित किया फिर उसने चण्डीश के पांवों को पकड़कर रथके ऊपर गिरा दिया ४९ फिर वह सहसासे पृथ्वी में गिरगया तब भीषणेक्षण उसके पास पहुँचा फिर उरुनेत्रने बाणोंसे गणेशजीको मारा ५० और दांतसे छाती में मार कर उनको पृथ्वी में गिरादिया फिर उरुनेत्र क्षणमात्रमें शान्ति को प्राप्तहोकर जल्द रथपर चढ़गया ५१ और मुद्गरसे सिंदूरसे शोभित गणेशजी के मस्तकमें मारा फिर गणेशजी ने पट्टिशसे उरुनेत्रकी छाती में मारा ५२ तो उसके मुखसे नवमस्तक और अठारहभुजा का बड़ाभारी राक्षस निकला और वह भी गणेशजी पर दौड़ा ५३ नवशीर्ष और उरुनेत्रसे लड़ाई में गणेशजी रोंकेगये परन्तु जर्जर देहयुक्त उन्हों ने क्रोधसे फरसा ग्रहणकर ५४ उसीसे उनदोनों के शस्त्रों को काटा गणेशजी को उनदोनों से रुंकेहुए देखकर स्वामिकार्तिक जी ५५ शीघ्र आकर नवशीर्षक को मारते भये और उस को मारकर उरुनेत्र पर दौड़े ५६ और अपनी शक्तिसे उसको भी मारकर गिरा दिया तब जालन्धर स्वामिकार्तिक को देखकर सेना समेत उनके पास पहुंचा ५७ तो पुत्रकी प्रीतिसे गणोंसमेत महादेवजी असुरों के मारने के लिये आनपहुँचे तदनन्तर अद्भुत दोनों सेनाओं का बड़ा भयंकर युद्ध होनेलगा ५८ महादेवजी और जालंधरके युद्धमें आकाश और भूमि मानों प्राणरहित से होगये तदनंतर क्रोधयुक्त जालंधर घोर बाणों को संधानकर ५९ कि जिनमें सहस्र और सौ संख्यावाले पत्र सब ओरसे भूषित हैं तिन्हींबाणों से उसने महादेवजी के माथेमें मारा ६० तो वे बाण उनके माथे में चन्द्रमाकी तुल्य प्रकाशित हुए और उन्हीं से महादेवजी शोभित अधिक हुए ६१ जैसे घामके अन्त सन्ध्याकाल वर्षाऋतुमें सूर्य्य प्रकाशित होते हैं तदनन्तर महादेवजीने अग्निके सदृश महाबाण ग्रहणकिया ६२ कि जिसके वेगमें पवन फलमें अग्नि और सूर्य्य सब ग्रन्थियोंमें काल और बाणमें पृथ्वीदेवी स्थितहै ६३ महादेव जी ने तिसी बाणसे शीघ्र जालन्धर के हृदयमें ताड़ित किया और

बाणके लगने से रक्त के समूह से डूबगया ६४ और बाणसे भिन्न अंग होकर वज्रके लगने से पहाड़की नाईं गिरा तब तो दैत्यलोग शोच करने लगे और प्रमथलोग गर्जने लगे ६५ जालन्धरको मूर्च्छित देखकर दैत्यलोग महादेवजीको घेरलेतेभये कोई तो जालंधरकी रक्षाके लिये उद्यत हुए और कोई आस पास खड़े हुए ६६ जबतक जालन्धर मूर्च्छायुक्त रहा तभीतक महादेवजी ने बाणों से जालन्धरकी सेनाको मारडाला ६७ बहुत समय के पीछे जब उस की मूर्च्छाजगी तो उसने सब सेनाको नष्टहुई रणभूमि में पड़ी हुई देखा तो भययुक्त होकर ६८ परमगुरु शुक्रजी को मन से स्मरण किया स्मरण करतेही शीघ्रही शुक्रजी जालन्धरके पासआन पहुंचे ६९ और आशीर्व्वाद देकर उससे कहा कि हे महाबली महाराज हम तुम्हारा क्या कार्य्य करें ७० नारदजी ने युधिष्ठिर से कहा कि इसप्रकार के शुक्रजी के वचन सुनकर उनका बहुत सत्कार कर नमस्कारकर गुरुदेवजी से राजा जालन्धर बोला ७१ कि हे शुक्रजी सब मरेहुए दैत्यों को जिलाइये जब जालंधर ने यह कहा तो शुक्रजी सेना को देखनेलगे ७२ कि पच्चीस हजार योजनों के प्रमाणमें पड़ीहुई है और दैत्यों के ऊपर उनके अंगों में रथ पड़े हुए हैं ७३ ऊंचाई में पंचानवे योजन पृथ्वी योधा वाहन और देहादिकोंसे पूर्ण होगई है ७४ जबतक महादेवजी सांपों से मजबूत जटाओं के समूहोंको बांधें तभीतक शुक्रजी ने मंत्रपानीमें पढ़कर उसीसे छिनक कर दैत्योंको जिलाकर उठादिया जैसे सिंह व्याघ्रोंको हाथी शूकरों को ७५।७६ इसीप्रकार आतेहुए दैत्योंको देखकर महादेवजी चिंता करनेलगे कि क्याहुआ मरेहुओंको किसने जिलायाहै ७७ चिंतना करतेही शुक्रजी को देखा कि लड़ाई में दैत्यों को जिला रहे हैं और अत्यन्त वेगसे दौड़ रहे हैं ७८ तदनन्तर क्रोधयुक्त महादेवजी ने शुक्रके मारनेका मनमें निश्चय किया तो शुक्रजी महादेवजी से एकान्तमें बोले ७९ कि हे महादेवजी सब विद्यामें निपुण मैं ब्राह्मण हूं मुझे आप कैसे मारेंगे मेरे मारने से ब्रह्महत्या होगी ८० इसप्रकार शुक्रजी के वचनसुन महादेवजीने शूलको त्याग करदिया और

ब्रह्माके शिरके लगने का पूर्व वृत्तान्त स्मरण किया ८१ कि प्यारे प्राणोंको हरतेहुए भी ब्राह्मण नहीं मारने योग्यहै इन्होंने तो दैत्यों को जिलायाहै सब प्रकार हमसे दण्ड देने योग्य नहीं है ८२ तिस से इन दैत्योंके जिलानेवाले शुक्रजीको शीघ्र स्त्री की योनिमें डाल-ताहूं इसप्रकार कहतेहुए महादेवजी के तीसरे नेत्र से शीघ्रही ८३ वस्त्रहीन, घोर, बाल छूटी हुई, बड़े पेटवाली, मोटे और लम्बे स्त-नवाली, भारी योनियुक्त, डाढ़ और आंखों से भयानक ऐसी कृत्या निकली ८४ और बोली कि क्या आज्ञा है तब महादेवजी उस से बोले कि हे कृत्ये तुम दुर्मति दैत्यों के आचार्य्य शुक्रजी को अपनी योनिमें छोड़लो ८५ जबतक हम जालन्धरको मारें तबतक इनको भगमें रक्खो जालन्धर के मारने के पीछे फिर छोड़देना ८६ इस प्रकार महादेवजी के कहने पर वह कृत्या शुक्रजी को दौड़ी तो शुक्र जी उसको देखकर पृथ्वी में गिरगये और दैत्यलोग भागगये ८७ बालों में खींचकर कँपातीहुई वह कृत्या हँसतीहुई नग्न शुक्रजीको आलिंगनकर योनि में धारण कर लेती भई ८८ भगमें छोड़तेहुए शुक्रजी को देखकर जबतक जालन्धर राक्षस बाणोंको सन्धानकरे तभीतक वह कृत्या अन्तर्द्धान होगई ८९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायांयुधिष्ठिरनारदसंवादे जालंधरोपाख्यानेशुक्रयोनिप्रवेशोनामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

शिवजी से जालन्धर का वध होना ॥

नारदजी ने युधिष्ठिर से कहा कि जालन्धर महादेवजी से बोले कि हे शिवजी अपनी आत्मा की रक्षा करो मैं तुमको विष्णुजी के पास फेंकताहूं १ पीछेसे ब्रह्माको खींचकर समुद्रमें गिरादूंगा तुम्हारे पकड़नेसे मैं सबका ईश्वर होजाऊंगा २ ऐसा कहकर सेनाका सब भार शुम्भासुर आदिकों में धर और निशुम्भ आदिक योद्धाओंसे चतुरंगिणी अनन्त सेनाको रक्षित कर ३ शुम्भ, निशुम्भ, फेंकार, फेरुण्ड, धूम्रलोचन, केतु, विडालजंघ, राहु, दुर्वारण, यम, ४

लासुर, लवण, भूमिरेत, अन्धकासुर, रक्तवीर्यादिक, चण्डी और चामुण्डी इन सब दैत्योंमें श्रेष्ठोंको ५ लड़ाई में उद्यत देखकर वीरभद्रादिक गण रोंकतेभये ६ तदनंतर बड़ा घोर रोमावली खड़े होने वाला युद्ध हुआ जिसमें पहले घावों से व्याकुल दैत्यलोग गिरे ७ फिर शुम्भादिक दैत्यों ने सब शस्त्र लेकर गणोंको मारा तो उनमें से कुछ गण भागगये ८ दैत्यों ने गणोंको जीत शिवजीको रोंका और बाणोंकी वर्षा इसप्रकार करनेलगे कि जैसे मेघ मेरुगिरि में बूंदोंसे वर्षें ९ तदनंतर बली भैरवजी ने बैलके ऊपरसे धनुष खींचकर तीक्ष्ण बाणसमूहों से दानवोंको मारा १० कुछ राक्षस तो नन्दीजीके मार से लड़ाई में गिरे और महादेवजी ने शुम्भादिकोंको बाणोंसे जर्ज कर ११ शस्त्र अस्त्रोंसे हाथी मनुष्य और घोड़ोंसे व्याप्त शेष सेना को लड़ाई में मारकर इसप्रकार पृथ्वीको भरदिया १२ जैसे वज्र लगने से पर्वतों से पृथ्वी पूर्ण होजावे तदनन्तर जालन्धरने माया की गौरी बनाई १३ जोकि सुन्दरता औ गुणों से युक्त सब अलंका रों से भूषितहै ऐसी मायाकी जयाको बनाकर जालन्धर बोला १४ कि तुम शीघ्र लड़ाई में महादेवजी के आगे जाकर मोहित करो जालन्धरका कहना सुनकर मायाकी जया जातीभई १५ लड़ाई में जाकर महादेवजी के आगे बाल खोलकर रोनेलगी तब तो महा देवजी ने उससे पूंछा तो वह बोली कि मानसोत्तर पर्वतसे १६ हे देव तुम्हारी प्यारी को जालन्धर हर ले गया है तिसके वचन सुन महादेवजी बोले १७ कि हे जये तुम बैलपर चढ़आवो तुमको रा क्षस हर लेजावेंगे तदनन्तर उनके कहने से वह बैलपर चढ़गई और महादेवजी को आलिंगनकर १८ बोली कि मैं जातीहूं हे म हादेवजी पार्वती के बिना मैं न जीऊंगी ऐसा कहकर महादेवजीके जटाओंमें प्रविष्ट चन्द्रमा को शीघ्र ग्रहणकर बैलमें १९ उतरपड़ी और महादेवजी पार्वती को हरीसुनकर चिन्ता करनेलगे २० दैत्य मायासे परिष्वक्त शिवजीने भी नहीं समझा इसी अवसर में बड़ी सेनासे युक्त जालन्धर प्राप्तहुआ २१ जोकि माया की पार्वती को अपने रथमें बैठाले हुए हैं जालन्धर की जयमें बाजाओं का शब्द

हुआ २२ कि जिससे पृथ्वी चलायमान हुई पर्वत शब्द करनेलगे जालन्धर ने पार्वतीजी को महादेवजीको दिखलाया २३ तो उन्हों ने वियोग से दुःखी, दुर्बल, आंसू बहती हुई, जबर्दस्त वैरीके रथमें चढ़ी, हानाथ हाप्रिय हारुद्र इसप्रकार वारंवार कहती हुई अपनी प्यारी को इसप्रकार देखा जैसे पाखंडी के पास श्रुतिहो २४। २५ तबतो महादेवजी ने पार्वतीजीको ध्यानकिया कि हमको प्यारी कैसे मिले तदनन्तर दैत्य की माया से मोहित महादेवजी रोदन करने लगे २६ और बोले कि हमारे मोह हुआहै हे कांते हे प्रिये तुम दानवोंसे कैसे हरलीगईहो इसप्रकार शोक और मोहसे युक्त महादेव जी को देखकर जालंधर २७ हँसकर बोला कि जैसे कोई करुणायुक्तहो आप तो सब प्रमाणशून्य हैं और कामदेव के शृंगारसे वर्जितहैं २८ आप ईश्वरहैं परन्तु पार्वतीके विना वराककी नाईं उत्पन्नसेहो हे शिवजी न रोवो तुम्हारी प्यारीको मैं देताहूं २९ और हे रुद्र हमसे रक्षित भी हो अब पार्वती को ग्रहणकरो ऐसा महादेवजी से कह अपने रथसे पार्वतीजी को उतारकर ३० महादेवजी के सम्मुख उनकी सेनाकी ओर भेजताभया महादेवजी भी शीघ्र बैलको बढ़ाकर उसकी सेनाकीओर पार्वतीके ग्रहण करनेके लियेचले जो कि पार्वती रक्षाकरो २ इसप्रकार रोरही हैं जबतक महादेवजी पार्वतीको हाथसे पकड़ें ३१। ३२ तबतक शुंभासुर शीघ्रही पार्वती को लेकर आकाश में स्थित होगया तब तो बली महादेवजी ने उसके मारनेके लिये शूलछोड़ा ३३ तो शुंभने उसको छोड़दिया तो शूल के ऊपर गिरपड़ी और पवित्र सब अंगवाली शूलके संग छोड़ीहुई रोतीहुई ३४ महादेवजीके आगेगिरी और तथा यहकहकर मरगई मायाकी पार्वती को मृतक देखकर शोक मोहसे युक्त ३५ हा प्रिया ऐसा कहतेहुए महादेवजी पृथ्वी में मूर्च्छायुक्त होकर गिरे और क्षणमात्रमें रणभूमिही में सचेतहोकर शुंभ इत्यादिकोंको उन्होंने शाप दिया कि गौरी तुम सबको मारेगी ३६ नारदजीने युधिष्ठिरसे कहा कि हे राजन् महादेवजी के शापसे मन्वंतरके बीतनेपर शुम्भादिक दैत्य रणभूमिमें देवी से गिरायेगये ३७ तिन सबको शापदेकर रो

हुए और शोचकी बातें कहते हुए वहांसे निकलकर महादेवजी कहनेलगे कि हे प्रिये रणभूमिमें दुःखित हमको छोड़कर तुम कहांगई ३८ रतिको छोड़कर वियोगसे पीड़ितको तुमने श्रीकंठ किया और वासुदेवभी तुमसे त्यागेहुए हमको नहीं जानते ३९ हे देवि दक्षकी यज्ञमें अग्निकुण्ड में तुमने शिर हवन करदिया और फिर हमको प्राप्तहुई अब फिर हमको कैसे छोड़ती हो ४० हे पवित्र अंगवाली पार्वती उठो उठो हमको समझाओ इस अवसरमें दैत्यकी मायासे विमोहित महादेवजी को जानकर ४१ देवतागणों के मध्यमें स्थित आकाशसे अदृश्य ब्रह्माजी आये और रोतेहुए शिवजी से यहबोले ४२ कि शोक, मोह, पिता और माता से आप हीन हैं दुःख, सुख, पुत्र, स्त्री और वैरी आपके नहीं हैं पितासे आप नहीं उत्पन्न हैं ऋषियोंकेगण आपको अपने आपही उत्पन्न मानतेहैं तो मोह आपके कैसे हुआ ४३ हेनाथ आप एकहैं परन्तु अनेक प्रकारके शरीर आप धारण करलेते हैं जैसे सूर्य्य एकहैं और समुद्रकी लहरियों में भी वही सूर्य दिखाई पड़ते हैं तो जानाजाता है कि बहुत से सूर्य्य हैं परन्तु सूर्य एकही हैं यमी पुरुष ध्यान से आपके चरणमूल को प्राप्तहोते हैं और आपका रूप श्रेष्ठहै दुःखसे समझने योग्यहै और कहने में नहीं आसक्ता है ४४ यह आपकी प्यारी पार्वती नहीं थी जालन्धर ने मायासे रचीथी इससे हेदेव मायाको त्यागकरो पार्वतीजी तो कमल की कली में प्राप्त हैं इससे आप युद्धकर वैरियों के समूहों को नष्टकरें और हमलोगों की रक्षाकरें ४५ इस प्रकार के ब्रह्माजी के वचन सुनकर महादेव जी बोधको प्राप्तहुए और तिस को राक्षसों की माया समझ कर बड़ीभारी शिला छोड़ते भये ४६ और तिससे तीनसौ करोड़ दैत्यों को मारा तदनन्तर बड़े क्रोधसे बैलपर चढ़कर ४७ पिनाकधनुप में बाणोंको सन्धान करतेभये तदनन्तर जालन्धर ने माया से अलग हुए महादेव जी को देखकर इन्द्रादिकों को मोह करानेवाला मायाका महाबल अत्यन्त अद्भुत मायाजाल शीघ्र प्रकट किया ४८ । ४९ और जालन्धर कोटिभुजा का होगया वृक्ष अस्त्र और शस्त्रोंसे महादेवजी से युद्ध करनेलगा

तदनंतर पृथ्वीको पहाड़ और धातुओं से शोभित करताभया ५० सुंदर देवताओं के स्थान बनाता भया कि जिनमें अनेक प्रकारके फूल लगेहुए हैं इसप्रकारसे भूमिको मंडित करता भया और वहीं पर अप्सरा नाचने लगीं मेनका अप्सरा जो कि मनको हरनेवाली है वहभी वहांपर थी ५१ तब महादेवजी युद्धको भूलकर धनुषको त्यागकर मायामय नाच और बाजा और गीतों से मोहित होकर बैलपर सवार होकर चलते भये ५२ बैलपर चढ़ेहुए महादेव जी को ताण्डव गीत बाजा और नाचकी लीला से विमोहित देखकर समुद्रभी रूप धारणकर शीघ्र मोहित करनेके लिये आताभया ५३ तिन जंतुओं को समुद्रमें छोड़कर वह उत्सवभी हँसता भया कहां सब देवता और कहां नन्दी इत्यादि गण चलेगये ५४ तब कृष्ण जीने आकर महादेवजी से कहा कि आप तो पूज्यहैं परन्तु दैत्यकी माया से मोहित हुएहैं हे भगवन् क्या आप उपेक्षा करते हैं पेटमें स्थित चक्रको निकाल कर ५५ इसके वधके लिये यत्न कीजिये संग्राममें आप जालंधर को क्यों नहीं मारते हैं इसप्रकार के कृष्णजी के वचन सुनकर अपना को ईश्वर स्मरणकर ५६ बैलपर चढ़कर शीघ्र रणभूमि को आये महादेवजी को आते देखकर सबसेना से युक्त ५७ जालन्धर राक्षस क्रोधयुक्त होकर लड़ाई में रोंकता भया और क्रोधयुक्त महादेवजीका सृष्टिके संहारका करनेवाला रूपहुआ और तीसरे नेत्रकी अग्नि से राक्षस लोग टीड़ी की नाईं जलगये महादेवजी का घोर ज्वालामय रूप देख कर ५८। ५९ शुम्भादिक और राहु इत्यादिक राक्षस डरगये और मारे डर के पाताल में प्रवेश करगये ६० सेनाके अनेक योद्धाओंको लड़ाई में मारेहुये देख कर और मारनेसे बचेहुए शुम्भादिकोंको भागेहुए देखकर ६१ तिस समयमें अकेला जालंधरही लड़ाईमें पहाड़ की नाईं स्थित रह गया और परमार्थ महादेवजी का रूप प्रसन्नहोकर साक्षात् देखता हुआ ६२ हँसकर महादेवजीसे बोला कि जिसरूपसे आप चराचर को जलाते हैं तिसको हरलीजिये ६३ अपने योगबल को छोड़कर लड़ाई कीजिये इसप्रकार के जालन्धरके वचन सुनकर महादेवजी

बोले ६४ हे दैत्योंके स्वामी तुम वरदान मांगो तुम्हारे कर्मसे मैं प्रसन्नहूं इसप्रकार के हमारे रूपको देखकर भी इस समय में निर्भय हो ६५ हे दानव सब ब्रह्माण्ड हमारे रूपके तेजके देखने में समर्थ नहीं है और तुम निर्भय हो ६६ नारदजी ने युधिष्ठिर से कहा कि संसार से इच्छा न रखनेवाला जालन्धर इसप्रकार महादेवजी की प्रसन्नता मानकर उनसे पर सायुज्य मुक्ति मांगताभया ६७ तब श्री महादेवजी बोले हे दैत्य भोग सिद्धिसे युक्त वृंदाके मनके हरनेवाली सुन्दर यह तुम्हारी देहहै और तुम कालको चाहते हो ६८ रे मूर्ख मुहूर्त मात्रभी अकेले रहनेवाले नाशरहित परमात्माको न जानकर क्यों देहको त्यागकर मुक्तिकी इच्छा चाहता है ६९ तुम्हारी प्यारी वृन्दारानी योगमायासे हरलीगई और ब्रह्मस्वरूप को जानकर तिस परमपद को प्राप्तहुई ७० इससमय में वह और उसका पद दोनों दुर्लभ हैं स्वर्ग और मोक्षके मध्य संसार में तुम वरको प्राप्तहो ७१ तब जालंधरने कहा कि हे देव मुक्तिपद कृतार्थहुए किसी किसी पुरुषको लाभ होसक्ता है इससमय में मैं कृतार्थ हूं जो आपसे मारा जाऊंगा और आपके दर्शन भी करूंगा ७२ तब महादेवजीने उससे कहा कि परमक्षेत्र हमारे स्थानके जानेकी जो तुम्हारी इच्छा है तो हमको जल्द क्रोधयुक्त करो दृढ़ बाणोंसे दैत्यको मारकर ७३ तदनन्तर तुमको मारूंगा तो हे पापरहित तुम हमारे स्थान को प्राप्त होगे इसप्रकार के महादेवजी के वचन सुन जालंधर महादेवजीसे बोला ७४ सब संसारके पूज्य आपको पहले मैं न मारूंगा ७५ नारदजी ने युधिष्ठिर से कहा कि महादेवजी से जब उसने इसप्रकार की वार्ता की तो उन्हों ने शीघ्रही बाणों से उसको मारा और वे बाण जालंधर की देह में लगे हुए शोभित होनेलगे ७६ जैसे लोहगिरि के समीप अग्नि से प्रकाशित बांस शोभित होते हैं तब तो जालंधर ने महादेव के अंगको बाणों से पूर्ण करदिया ७७ तिन बाणोंसे महादेवजी इसप्रकार शोभितहुए जैसे राक्षसों से व्याकुल आकाश शोभित होता है जालन्धर और महादेवजी का द्वन्द्वयुद्ध हुआ ७८ महादेवजी से दूसरा अधिक मारनेवाला न हुआ और उससे अ-

धिक दूसरा सहनेवाला भया तिस समयमें उससे कोटि हज़ार प-र्वतों से ७९ महादेवजी को पूरित करदिया तदनन्तर महादेवजी ने उसकी छाती में शूल मारा ८० तो उसके मुखसे भयानक ज-म्भज्वर निकला वह वीरज्वर कि जिसका सिंहकासा मुख और सब आकार मनुष्य कैसे थे ८१ दैत्य के मुखसे सिंह के तुल्य मुखवाले ज्वरको निकलते देखकर महादेवजीने घोर हुंकार किया तो शरभ निकल आया ८२ शिवजी के हुंकारही से निकले हुए शरभने उस ज्वर को नष्ट कर दिया बैलों में श्रेष्ठ नन्दीश्वर संयुक्त नहीं जीतने वाले महादेवजी को देखकर ८३ जालन्धर वेग से बैल के समीप आया और उसकी पूंछ पकड़कर आकाशमें घुमाकर ८४ महाबाहु ने हिमवान् पहाड़में फेंकदिया तदनंतर महादेवजीने अत्यन्त घोर त्रिशूलको चलाया ८५ तो उसने महादेवजी के समीपही हाथसे प-कड़लिया और रथपर चढ़ेहुए ने कालकेदार धनुषको ग्रहणकर ८६ पृथ्वी में स्थित महादेवजी को बाणोंसे पूरित करदिया तब महादेव जी ने बाणोंसे शस्त्र और उसके बाणोंको काटकर रथको भी चूर्णकर दिया ८७ जो कि रथ सारथी और घोड़ोंसे युक्त दशयोजन का वि-स्तृतथा तब तो जालंधर भी रथहीन होकर शिवजी को दौड़ा ८८ तो महादेवजी और जालंधर का भयानक अद्भुत रोम खड़ेहोनेवा-ला युद्ध हुआ तिस युद्धको देखकर अकाण्डकल्प के अंतकी शंका से देवता डरगये ८९ और बड़े पराक्रमी दोनों जन सब अस्त्रों से मारनेलगे पांवों से पृथ्वीको चलायमान करते और शब्दों से आ-काशको कँपा रहे हैं ९० तदनन्तर जालंधर का उत्कट बल देखकर महादेवजी ने योगमायाके बलसे शीघ्र शस्त्रजाल को हरलिया ९१ तो कोटि भुजाका दैत्य जिसकी दाढ़ें और नेत्र भयानक थे शस्त्रहीन भी वह जालन्धर शीघ्र दौड़कर महादेवजी के पासगया ९२ और विशाल करबन्धसे शिवजी को लड़ाई में बांधताभया तदनन्तर म-हादेवजी ने तलवारसे हाथके समूहोंको काटडाला ९३ जालंधरकी भुजासे आक्रांतहुये महादेवजी नीललोहित होगये जालंधर लीला-पूर्वक उनसे युद्ध करनेलगा ९४ हाथ कटने पर शिरकटेहुये राहुकी

बोले ६४ हे दैत्योंके स्वामी तुम वरदान मांगो तुम्हारे कर्मसे मैं प्रसन्नहूं इसप्रकार के हमारे रूपको देखकर भी इस समय में निर्भय हो ६५ हे दानव सब ब्रह्माण्ड हमारे रूपके तेजके देखने में समर्थ नहीं है और तुम निर्भय हो ६६ नारदजी ने युधिष्ठिर से कहा कि संसार से इच्छा न रखनेवाला जालन्धर इसप्रकार महादेवजी की प्रसन्नता मानकर उनसे पर सायुज्य मुक्ति मांगताभया ६७ तब श्री महादेवजी बोले हे दैत्य भोग सिद्धिसे युक्त वृंदाके मनके हरनेवाली सुन्दर यह तुम्हारी देहहै और तुम कालको चाहते हो ६८ रे मूर्ख मुहूर्त मात्रभी अकेले रहनेवाले नाशरहित परमात्माको न जानकर क्यों देहको त्यागकर मुक्तिकी इच्छा चाहता है ६९ तुम्हारी प्यारी वृन्दारानी योगमायासे हरलीगई और ब्रह्मस्वरूप को जानकर तिस परमपद को प्राप्तहुई ७० इससमय में वह और उसका पद दोनों दुर्लभ हैं स्वर्ग और मोक्षके मध्य संसारमें तुम वरको प्राप्तहो ७१ तब जालंधरने कहा कि हे देव मुक्तिपद कृतार्थहुए किसी किसी पुरुषको लाभ होसक्ता है इससमय में मैं कृतार्थ हूं जो आपसे मारा जाऊंगा और आपके दर्शन भी करूंगा ७२ तब महादेवजीने उससे कहा कि परमक्षेत्र हमारे स्थानके जानेकी जो तुम्हारी इच्छा है तो हमको जल्द क्रोधयुक्त करो दृढ़ बाणोंसे दैत्यको मारकर ७३ तदनन्तर तुमको मारूंगा तो हे पापरहित तुम हमारे स्थान को प्राप्त होगे इसप्रकार के महादेवजी के वचन सुन जालंधर महादेवजीसे बोला ७४ सब संसारकेपूज्य आपको पहले मैं न मारूंगा ७५ नारद जी ने युधिष्ठिर से कहा कि महादेवजी से जब उसने इसप्रकार की वार्ता की तो उन्हों ने शीघ्रही बाणों से उसको मारा और वे बाण जालंधर की देह में लगे हुए शोभित होनेलगे ७६ जैसे लोहगिरि के समीप अग्नि से प्रकाशित बांस शोभित होते हैं तब तो जालंधर ने महादेव के अंगको बाणों से पूर्ण करदिया ७७ तिन बाणोंसे महादेवजी इसप्रकार शोभितहुए जैसे राक्षसों से व्याकुल आकाश शोभित होता है जालन्धर और महादेवजी का द्वन्द्वयुद्ध हुआ ७८ महादेवजी से दूसरा अधिक मारनेवाला न हुआ और उससे अ-

धिक दूसरा सहनेवाला भया तिस समयमें उससे कोटि हज़ार प-र्वतों से ७९ महादेवजी को पूरित करदिया तदनन्तर महादेवजी ने उसकी छाती में शूल मारा ८० तो उसके मुखसे भयानक ज-म्भज्वर निकला वह वीरज्वर कि जिसका सिंहकासा मुख और सब आकार मनुष्य कैसे थे ८१ दैत्य के मुखसे सिंह के तुल्य मुखवाले ज्वरको निकलते देखकर महादेवजीने घोर हुंकार किया तो शरभ निकल आया ८२ शिवजी के हुंकारही से निकले हुए शरभने उस ज्वर को नष्ट कर दिया बैलों में श्रेष्ठ नन्दीश्वर संयुक्त नहीं जीतने वाले महादेवजी को देखकर ८३ जालन्धर वेग से बैल के समीप आया और उसकी पूंछ पकड़कर आकाशमें घुमाकर ८४ महाबाहु ने हिमवान् पहाड़में फेंकदिया तदनंतर महादेवजीने अत्यन्त घोर त्रिशूलको चलाया ८५ तो उसने महादेवजी के समीपही हाथसे प-कड़लिया और रथपर चढ़ेहुए ने कालकेदार धनुषको ग्रहणकर ८६ पृथ्वी में स्थित महादेवजी को बाणोंसे पूरित करदिया तब महादेव जी ने बाणोंसे शस्त्र और उसके बाणोंको काटकर रथको भी चूर्णकर दिया ८७ जो कि रथ सारथी और घोड़ोंसे युक्त दशयोजन का वि-स्तृतथा तब तो जालंधर भी रथहीन होकर शिवजी को दौड़ा ८८ तो महादेवजी और जालंधर का भयानक अद्भुत रोम खड़ेहोनेवा-ला युद्ध हुआ तिस युद्धको देखकर अकाण्डकल्प के अंतकी शंका से देवता डरगये ८९ और बड़े पराक्रमी दोनों जन सब अस्त्रों से मारनेलगे पांवों से पृथ्वीको चलायमान करते और शब्दों से आ-काशको कँपा रहे हैं ९० तदनन्तर जालंधर का उत्कट बल देखकर महादेवजी ने योगमायाके बलसे शीघ्र शस्त्रजाल को हरलिया ९१ तो कोटि भुजाका दैत्य जिसकी दाढ़ें और नेत्र भयानक थे शस्त्रहीन भी वह जालन्धर शीघ्र दौड़कर महादेवजी के पासगया ९२ और विशाल करबन्धसे शिवजी को लड़ाई में बांधतामया तदनन्तर म-हादेवजी ने तलवारसे हाथके समूहोंको काटडाला ९३ जालंधरकी भुजासे आक्रांतहुये महादेवजी नीललोहित होगये जालंधर लीला-पूर्वक उनसे युद्ध करनेलगा ९४ हाथ कटने पर शिरकटेहुये राहुकी

नाईं युद्ध करता रहा और युद्धसे उसने महादेवजीको प्रसन्नकिया ९५ तो महादेवजी प्रसन्न होकर उससे बोले कि तू दुर्लभ वरदान मांग तो उसने उनसे कहा कि आप मुझे अपना पद दीजिये ९६ और शस्त्रहीन हमारे भुजोंको अनादर करने के योग्य नहीं हौ इस से जल्द हमको सिद्धि दो अर्थात् हमारे भुजा ज्यों के त्यों कर दो यदि नहीं करोगे तो तुमको मैं मारूंगा ९७ ऐसा कहकर वह भुजा युक्त हुआ और मुष्टिसे उनकी छाती में मारा तदनन्तर महादेवजी ने सुदर्शनचक्र जो पहले आपही ने बनायाथा ९८ मुखसे निकाल कर हाथमें ग्रहणकर क्रोधसे तौलनेलगे जो कि कोटि हज़ार सूर्य्य की दीप्तिसंयुक्त है और चराचर को ग्रस रहाहै ९९ तिसी चक्र से जालन्धरका शिर काटलिया तो उसका शिर आकाश में सौयोजन पहुँचता भया १०० जिसमें सैकड़ों डाढ़ों से कराल मुख है स्वर्ग और भूमि जिसके नेत्रहैं इसप्रकारका शिर व्याघ्रकी चालसे ब्रह्मा के स्थानमें जाताभया १०१ फिर स्वर्गमेंगया तदनंतर महादेवजी के पास दौड़ा जिसमें बहुतसा रक्त बह रहा है और भयङ्कर शब्द कररहा है १०२ तो उसको देखकर दिशा नष्ट होगईं आकाश भी नाशको प्राप्तहुआ तेजस्वियों का प्रकाश न रहा और डरसे पृथ्वी चलायमान होगई १०३ आतेहुए शिरको महादेवजी ने शीघ्र चक्र से मारा तो दो टुकड़ेहोकर वह हिमवान् पर्वतमें गिरा १०४ तदनन्तर जालन्धर के शिरके दोनोंटुकड़े सब प्राणियों के देखतेही महादेवजी में प्रवेश करगये १०५ और तिसके कण्ठसे सैकड़ों हज़ारों दैत्य उत्पन्नहुए तिनकोभी उसीचक्रसे महादेवजीने मारडाला १०६ फिर रक्तसे लालवर्ण जालन्धर का रुण्ड नाचनेलगा और उसके कण्ठसे वारंवार दैत्य उत्पन्न होनेलगे १०७ तो वारंवारही महादेव जी चक्रसे काटनेलगे और उसके मेदसे सब पृथ्वी पूर्णहोगई १०८ तो पृथ्वी मेदहीसे प्रसिद्धताको प्राप्तहुई और जहांपर जालन्धर का रक्त पहाड़की नाईं होगया था १०९ वहां पर कैलास के उत्तरभाग में शोणितपुर होगया तदनन्तर सब ओर बिथरेहुए मांससमूह को देखकर ११० महादेवजी ने चौंसठ गणों को स्मरण किया तो उन

के स्मरण करतेही देवी महादेवजी के समीप प्राप्तहुईं १११ और हाथ जोड़कर बोलीं हे शिवजी क्याकरें ११२ तब महादेव जी ने कहा कि पहाड़के समान दैत्यके मांसके समूहको तुम लोग हमारी आज्ञा से शीघ्रभक्षण करजावो ११३ ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, माहेंद्री ये सब अपने गणों से शोभित ११४ इस प्रकार महादेवजीकी आज्ञापाकर क्रूरनेत्रसे देखकर मांससमूह को क्षणमात्रहीमें खालिया कि कुछ भी दिखलाने को न रहगया ११५ तदनंतर जालंधरका क्षीणदेह शक्तियोंसे दबाया हुआ और उन्हीं से ग्रसागया तो उसके देहसे दीप्तिनिकल महादेवजीमें प्राप्तहोकर क्षणमात्रही में न दिखलाई दी और सूर्य्यके सदृश उसका तेज भी महादेवजी में लीनहोगया ११६। ११७ इसप्रकार जालंधर महादेवजीसे नाशको प्राप्तहोगया फिर महादेवजी योगिनियों से प्रसन्न होकर बोले कि तुम सब वरदान मांगो तब उनसबों ने महादेवजी से पूंछा कि मनुष्यलोक में भोग मोक्ष और वरकी इच्छा करनेवाले मनुष्य ११८। ११९ नित्यही अपने घर में योगिनीगणों को पूजें तो आपके प्रसाद से उनका सब वांछित सिद्धि को प्राप्त हो १२० तब महादेवजी ने कहा भक्तिभावसे युक्त पृथ्वी में जो कोई तुम्हारे समूहों की नित्य पूजा करेगा तिसको हम वरदान देंगे १२१ और हमारा या विष्णुजी का भक्त भी होगा परन्तु योगिनीगणसे वैर करेगा तो हम भैरव होकर उसके कियेहुये सुकृत को हर लेंगे १२२ इसप्रकार लड़ाईमें योगिनियों को महादेवजी ने वरदिया तो वे बहुत प्रसन्नहुईं इसी अवसर में महादेवजी ने पार्व्वती और बैलको स्मरण किया तो १२३ स्मरण करतेही पार्वतीजी और बैल क्षणमात्रही में आपहुँचे सखियों संयुक्त पार्व्वतीजी १२४ भ्रामरी मूर्त्ति को छोड़कर आईं और महादेवजी के आधे आसनपर बैठगईं तदनन्तर पार्वतीसंयुक्त महादेवजी आनन्दको प्राप्तहुये १२५ और योगिनियोंसे बोले कि जालन्धरकी लुण्डके रक्तको पियो तो नकर अत्यन्त प्रसन्नहुईं १२६ और मांस मेदा और रक्त आनन्दसे नाचनेलगीं तब तो महादेवजी उनका नाच २९

सन्नहोकर १२७ आप भी भैरवरूप करके उनके बीचमें गये और योगिनियोंके समूह तीक्ष्ण डाढ़ें और भारी देहकी उससमय में हुईं १२८ इससमयमें भी काल पाकर ग्रसती हैं और रक्त पीती हैं लिसी से लड़ाई में माराहुआ नहीं उठा १२९ तदनंतर वहांपर ब्रह्मादिक देवताओं के समूह ऋषि और पवन देवता महादेवजीकी स्तुति करनेलगे १३० दिशा प्रसन्नहोगईं सुगन्धित पवन बहनेलगी और आकाशसे पृथ्वी में फूलों की वर्षा होनेलगी और नगारे भी बाजने लगे और महादेवजीका अभिषेक हुआ १३१ देवताओंने फूलोंकी अत्यन्त वर्षाकी तिससे घनी शहदकी धाराके आसार से पृथ्वी भी सींचगई और ऊपर सुगंधसे अन्ध सुंदर स्वरसे गान करनेसे भँवरों के समूह मँड़रा रहेहैं १३२ बाणके समूहोंसे महादेवजी ने जालंधर को नाश किया तो तीनोंलोक शोभितहुए फूलोंकी वर्षाहुई अप्सरा नाचने लगीं यक्ष सुर किन्नर आदिक गानेलगे १३३ और महादेवजी वैरीकी जीतसे उठे हुए यशसे अधिक अंगकी कीर्तियुक्त हुये सुर सिद्ध और चारणगणोंसे स्तुतिकियेगये सदैव कैलासको सेवते भये और पार्वतीजी भी शीघ्र सखीगणों से युक्त श्वेतको जातीभईं और देवताओं की स्त्रियां फूलों की वर्षा से सेवन करती भईं १३४ अत्यन्त दयालु महादेवजी ने देवताओं को अपने २ पदमें स्थापन किया और उनको और भी द्रव्यदिया अब इससेबढ़कर महादेवजी की दया और क्या कहनेयोग्यहै पृथ्वीतल और त्रैलोक्य सब उनके वश होगया १३५ देवता अपनी राज्यपाकर पहलेकी तरह प्रकाशित हुए यज्ञभागों को भोगने लगे और लोकपाल भी हुए १३६ नारद जी ने युधिष्ठिर से कहा कि हे राजन् लोकमें अत्यन्त बली जालन्धर का अद्भुत चरित्र यथावत् पहले से तुमसे वर्णन किया १३७ कि जिसके वशहोकर विष्णुजी अबतक क्षीरसमुद्र को नहीं छोड़ते हैं सब अपना कर्म भोगते हैं कर्मको निस्संशय समझो १३८ तुमसे दुःख दूर करनेके लिये उत्तम आख्यान कहा जबतक देह है तभीतक कर्म सुख दुःख कर्महीसे १३९ वशहोकर देहधारी भोग करता है ज्ञानसे अधिक तो रक्षा करनेवाला कोई नहीं है कृष्णादि

कोभी देहके बन्धमें सुख और दुःखादिक वर्त्तमान हुए हैं १४० तौ
वैराग्यसे पराङ्मुख औरोंको क्या कहना है इससे सबसे बली कर्म
की गतिको इसप्रकार की जानकर १४१ धीरहोवो और फिर शुभ
कर्म्म के आगमन को परखो समय में शत्रुओं को जीतकर अपनी
राज्य को फिर प्राप्तहोगे १४२ इस इतिहास को सुनकर दुःख नहीं
होगा इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यथावत् कहेगये हैं १४३
इससे स्वर्ग होताहै पाप नष्ट होजाते हैं पुण्य होती है शोक और मो-
ह नाशहोजाते हैं इसके सुननेसे ब्राह्मण ज्ञानको पाता क्षत्रिय राज्य
पाता १४४ वैश्य बहुत सम्पत्ति को पाता और शूद्र सुखको प्राप्त
होताहै जिस राजाकी राज्य छूटगई है और वहअच्छी राहमें चलता
है १४५ तो इसके नित्य सुनने से फिर राज्य को प्राप्त होताहै इस
को सुनकर सज्जनोंको सुनावे दुर्जनोंको सुनाना योग्य नहींहै १४६
जैसे कोकिलाका शब्द मीठा होताहै कौवे का रूखा होताहै सज्जनों
के हृदय को प्रिय मनुष्य इस निष्पाप चरित्र को सुन १४७ सोना,
तिल, कपड़ा आदिक गऊ और पृथ्वी के दानसे कथा बांचनेवाले
को प्रसन्नकरे तिनके प्रसन्नहुए फलको मनुष्य प्राप्त होता है १४८
और कथा बांचनेवाले गुरुके पूजनसे देवता भी प्रसन्न होते हैं और
भी ब्राह्मणों को पूजनकरे और अन्नदानदेवे १४९ और जो उत्तम
चरित्रको सुनता है वह पुत्र पौत्र और ऐश्वर्ययुक्त नित्यही जय को
प्राप्त होता है और विष्णुलोक में प्राप्त होताहै १५० और इसी ब-
हाने से जे मनुष्यों में श्रेष्ठ तुलसीकी उत्पत्तिका कारण सुनते हैं तिन
के कुछ पाप नहीं रहजाते १५१ यह तुलसीमाहात्म्य बड़ा पवित्र
और पापोंका नाशनेवाला है इसके सुनने और कहने से निस्संदेह
मोक्षको प्राप्त होताहै १५२ पापके नाश करनेवाली तुलसीको अ-
पने घरमें लगावे तो उनके दर्शनसे निस्संशय ब्रह्महत्या भी नाश
होजातीहै १५३ कातिक और माघमें तुलसी से भगवान्‌की पूजन
करै और वैशाख में विशेष करके भगवान् का पूजन कहा है १५४
और एकही प्रदक्षिणासे सदा सब पापनष्ट होजाते हैं और जे शूद्र
हैं परन्तु पृथ्वी में वे दानमें युक्त रहते हैं वे भी कालपाकर शुद्धिको

प्राप्त होजाते हैं और देवताओं के पूजन के योग्य देह होजाती है पापदूर होजातेहैं और इस कलियुग में इस समयमें विष्णुजन तो बहुत दुर्लभ हैं १५५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेजालंधरोपाख्यानेश्रीजालन्धरवधमहोत्सवोनामाष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

श्रीशैलपर्वतका चरित्र और माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरनेकहा कि हे नारदमुनि श्रीशैलनामी सुंदर पर्वत कहां है वहांपर कौन तीर्थ हैं किस देवताका पूजन होताहै लोकोंमें किस दिशामें है यह सब इस समयमें कहिये १ तब नारदजीने कहा कि हे राजन् युधिष्ठिर पर्वतों में उत्तम श्रीशैलका चरित्र कहताहूं जिसके सुननेसे मनुष्य बालहत्यादि पापोंसे छूटजाताहै २ वह पर्वत वन बहुत सुन्दरहै मुनियोंसे भी सेवितहै अनेकप्रकारके वृक्ष और लताओंसे आच्छादित है और अनेक प्रकारके फूलोंसे भी शोभायमानहै ३ हंस कोकिलाओंके शब्द और मुरैलोंकी ध्वनिसे शब्दायमान है श्रीवृक्ष, कैथा, शिरीष, राजवृक्ष, ४ कल्पवृक्षके फूल, कदम्ब, गूलर और अनेक प्रकारके सुगन्धयुक्त पुष्पोंसे उस पहाड़ में वन सुगन्धितहै ५ सम्पूर्ण ऋषिकी स्त्रियां और शिष्योंसे सेवितहै कोई तो अभ्यासमें युक्तहैं और कोई व्याख्यान में तत्परहैं ६ कोई तो ऊपर को भुजा उठाये हैं और कोई अंगुष्ठ के अग्रों से स्थितहैं कोई तो महादेवजी के ध्यानमें लगे हैं और कोई विष्णुजीके ध्यान में परायणहैं ७ कोई भोजनही नहीं करते कोई पत्तोंके भोजनमें रत हैं कन्दमूल और फलोंका कोई आहार करते हैं कोई बोलतेही नहीं हैं ८ कोई एक पांवसे खड़ेहुएहैं और कोई पद्मासनमें स्थितहैं कोई निराहारही हैं इसप्रकार घोर तपस्या करते हैं ९ वहांके स्थान बड़े पुण्यकारी हैं अनेक प्रकारकी सुन्दर नदियां हैं देवताओंके मन्दिर और तालाब अनेकहैं १० वह पर्वत सब ओरसे दिखाई पड़ता है और मल्लिकार्जुनक वहांपर सदैव रहते हैं ११ और पर्वतके ऊपर

न्दर कँगूड़ाहै कि जिसके दर्शनहीमात्र से निस्सन्देह मुक्ति होती
यह पर्वतोंमें उत्तम पर्व्वत दक्षिणदिशा में वर्तमानहै यहींपर ब-
त सुन्दर पातालगंगा वर्तमानहैं वहां स्नानमात्रहीसे मनुष्य सब
पों से छूटजाताहै श्रीशैलपर्व्वत के शिखरको देखे और निश्चय
ाशीजीमें मृत्युहो १२। १४ और केदारमें जलपीवे तो फिर जन्म
हीं होताहै वहांपर तपस्वी और योगियों के बड़े २ स्थानहैं १५
ससे सब यत्नसे तिनके दर्शन करावै यह विज्ञानदेव महापापोंके
श करनेवाले हैं १६ वहींपर सिद्धपुर नगर बहुत सुन्दर स्वर्गकी
त्य सुखका देनेवाला है जहांपर अप्सरा नित्य गाती और रमण
ती हैं १७ इससे यह पर्वतराज दर्शनमें सुख करनेवालाहै मुक्ति
इच्छा करनेवालेको इनका दर्शन करना योग्यहै १८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डे
श्रीशैलोपाख्यानेएकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

राजा सगरका सौ अश्वमेध यज्ञ करना ॥

श्रीमहादेव जी नारद जी से बोले कि हे देवर्षियों में श्रेष्ठ महा-
यकारी हरिद्वारके चरित्र को सुनिये जहांपर गंगाजी बहरही हैं
र उत्तम तीर्थभी वहांपर बहुतसे हैं १ देवता, ऋषि और मनुष्य
ग वसते हैं और साक्षात् विष्णुभगवान् भी नित्यही वहांपर ब-
। हैं २ पहले बड़ाभारी तीर्थ उत्पन्न हुआ जिसके दर्शनमात्रही
पाप दूर होजाते हैं ३ वहीं पर पुण्यकी विशेषतासे विष्णुजी के
ाणके छूनेही से विष्णुजी के चरणों का जल महासुन्दर गंगाजी
न्नहुई ४ महात्मा भगीरथ उसी राहसे गंगाजी को लाये हैं और
ने पुरुखोंका उद्धार कियाहै ५ तब नारदजी ने कहा कि हे महा-
जी महातपस्वी भगीरथ कौनथे जिन्होंने मनुष्योंके हितके का-
तीर्थको लादिया ६ गंगातीर्थ बड़ापुण्य और सबपापोंका
ालाहै सबलोक इसको तीर्थों में उत्तमोत्तम कहते हैं १०
नसे भी जो गंगागंगा ऐसा कहै तो सबपापोंसे छूटक

लोकको वह चलाजावे ८ और हे अच्छे व्रतके करनेवाले भगीरथ
कैसे गंगाजी को लाये और क्या कार्य्य किया तब महादेवजी बोले
कि भगीरथ अत्यन्त सुन्दर गंगाद्वार में जिसप्रकार से गंगाजी को
लाये हैं ९ वह सब क्रमसे मैं कहताहूं पहले हरिश्चन्द्र राजाहुए जो
कि त्रैलोक्य में सत्य पालनेवाले हुए १० तिनके विष्णुजी में परा
यण एक रोहित पुत्र हुआ तिनके अच्छी मार्गमें स्थित धर्म्मात्मा
वृकपुत्र हुआ और इसी कुलमें तिनके सुबाहुपुत्र हुआ तिनके गर
नाम पुत्रहुआ यह अत्यन्त धर्मात्मा नहीं हुआ ११।१२ कदाचित
कालके योग से इसीकारण से दुःखित हुआ राजा वहां परदेश से
धर्मके कारणसे तर्जित हुआ १३ तो अपने कुटुम्ब को लेकर भा-
र्गवजी के स्थानमें गया तो कृपाकरके तिससमय में उन्होंने राजा
की रक्षाकी १४ वहींपर तिनके सगर नाम पुत्र हुआ वह पुत्र उस
पुण्यस्थान में शुक्रजी से रक्षा को प्राप्त होकर बढ़ा १५ तो उस
क्षत्रिय के जनेऊ आदिक सब कर्म भार्गवजी करते भये शस्त्र और
वेदोंका अभ्यास कराते भये १६ फिर भार्गवजी से महातपस्वी स-
गर राजा आग्नेय अस्त्रको प्राप्तकर पृथ्वीमें जाकर तालजंघ और
हय सशक और पारदों को मारते भये तब नारदजी ने महादेवजी
से कहा कि हेशंकरजी सगरका माहात्म्य विस्तारसे कहिये १७।१८
सूर्यवंशी महाबलवान् और प्रसिद्ध महाराज हुएहैं तब महादेवजी
ने कहा कि हेपुत्र नारद गरके व्यसन में हैहय तालजंघादिक और
शकोंने सब राज्य उनका हरलिया यवन, पारद, कांबोज, और प-
ह्लव १९।२० ये पंचगण हैं इन्होंने हैहय के अर्थ पराक्रम किया
जब राजा गरकी राज्य हरगई तो वह वनको चलागया २१ तो उन
की स्त्रीभी पीछे चलीगई वहांपर उस दुःखित गरराजा ने प्राणोंको
छोड़दिया और तिसकी कल्याणी स्त्री गर्भसहित और व्रतसंयुक्तथी
२२ उसने पहले पुत्रकी इच्छासे शुक्रजी को वरण कियाथा उसने
भर्ताकी चिता लगाकर वनमें अत्यन्त विलापकिया २३ और सती
होना चाहतीथी तो और्वने गरकीस्त्रीको मनाकिया और धर्म्मात्मा
सतोगुणी, प्रियपुत्रको उसके निवेदन किया २४ बालकके निवेदित

होतेही वह मरणसे निवृत्त हुई तदनन्तर दोमासके बीतने पर वह
और्वके स्थानमें बढ़ा २५ तो और्वने जातकर्म आदि योग उसका
किया और क्रमसे बढ़ने पर जनेऊ आदि सब कर्म भी किया २६
और वेदादिक सब पढ़ाकर अस्त्रभी सिखाते भये २७ आग्नेयअस्त्र
जो देवताओं से भी दुःखसे सहा जाता है उसको उसबली राजाने
सीख कर सेनासमेत २८ क्रुद्ध होकर शीघ्र हैहयों को मारा और
लोकों में कीर्तिको प्राप्त हुआ २९ तदनन्तर शक, यवन, कांबोज,
और पह्लवों को मारने लगे तो वे पीड़ित होकर वसिष्ठकी शरणमें
जाते भये ३० तो महाप्रकाशित उनको अभय दिया और समय
पाकर सगर को निषेध करते भये ३१ सगर अपनी प्रतिज्ञा और
गुरुजी के वचन सुन धर्मसे उनको मारते भये उन सबको विकार
युक्त करदेते भये ३२ शकोंके आधे शिरको मुण्डकर छोड़देते भये
यवनों और कांबोजों के सब शिरों को मुड़ा ३३ पारद मुण्डकेश
और पह्लवों के ठुड्ढीही रक्षा करनेवाली रहगई इस प्रकार सबको
जीतकर धर्मका संग्रह करते भये ३४ सबको धर्महीसे जीतनेवाला
राजा इस पृथ्वीको जीतकर अश्वमेध यज्ञ करने के लिये जल्द सं-
स्कार करताभया ३५ उसका छोड़ा हुआ घोड़ा पूर्व दक्षिण समुद्र
में वेला के समीपही में हरलिया गया और पृथ्वी में प्रवेशित कर
लियागया ३६ राजाने उस देशको पुत्रोंसे सबओर से खनाया तो
उन्हों ने खनकर महासमुद्र कर दिये परन्तु घोड़ा को न पाते भये
३७ और शीघ्रतासमेत उन्होंने एक आदि पुरुषजगत् के स्वामी
कपिलदेवजी को देखा ३८ तिनके नेत्र की उत्पन्न अग्नि से साठ
हज़ार पुत्र जलगये केवल चार शेष रहगये ३९ हर्षीकेतु, सुकेतु,
धर्म्मरथ, और शूर पंचजन ये तिनके वंश के करनेवाले रहे ४०
भगवान् हरिजी ने अपने आप तिस को पांच वर दिये वंशमोक्ष
सुकीर्ति समुद्रतनय और तिसी कर्म्म से सागर के भाव को प्राप्त
हुए और अश्वमेध के घोड़ा को समुद्र से प्राप्तकर उस महायश-
स्वी ने सौ अश्वमेधयज्ञ किया ४१ । ४२ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेउत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

गंगाजीकी उत्पत्ति और हरिद्वारजी का माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी ने महादेवजी से पूछा कि हे विज्ञानेश्वर राजा सगरके महाबलवान् साठहज़ार पुत्र कैसेहुए यह सब चरित्र कहिये १ तब महादेवजी ने कहा कि तपस्या से जलेहुए पापवाली सगर की दो स्त्रियांथीं तिन्होंने मुनियों में श्रेष्ठ औौर्वजी को प्रसन्नकिया तो उन्हों ने कहा कि वरदान मांगो २ तो एक स्त्री ने वेगवान् साठहज़ार पुत्रों का वरदान मांगा और दूसरी ने वंशके धारण करनेवाले एकहीपुत्र को मांगा ३ तदनन्तर एक स्त्री ने तुम्बी में साठहज़ार शूरपुत्रों को उत्पन्न किया और वेसब क्रमसे धाइयों करके बढ़ाये गये ४ घीके भरेहुये घड़ोंमें और कपिलाओं के दूधोंमें प्रीति के बढ़ानेवाले बालक छोड़ेगये ५ उसी दूधके योगसे वे महात्मा बढ़े और एक पंचजननाम पुत्र राजाहुआ ६ पंचजनके पराक्रमी अंशुमान् नाम पुत्र हुआ उसके दिलीप पुत्रहुआ दिलीपके भगीरथ पुत्रहुआ ७ जिस ने नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी को लादिया और समुद्र में लाकर गंगा जीको पुत्री के भावमें कल्पना किया ८ तब नारदजी ने महादेवजी से पूंछा कि हे दयानिधे भगीरथ गंगाजी को कैसेलाये उन्होंने क्या तपस्या की थी यह सब हमसे कहिये क्योंकि आप सुन्दर व्रत के करनेवाले हैं ९ तब महादेवजी बोले कि हे भगीरथ पुरुखाओं के हितके लिये हिमाचल में गये वहां जाकर दशहज़ार वर्ष तपस्याकी १० तो मायारहित आदिदेव भगवान् प्रसन्नहुए उन्हों ने आकाश से इन गंगाजी को दिया ११ वहीं पर विश्वेश्वर देव सदैव स्थित रहते हैं तो भगीरथ ने गंगाजी को न आती देखा महादेव जी के जटाजूट में दशहज़ार वर्ष स्थितरहीं और उन्हींके प्रभावसे न निकलीं १२ । १३ तो भगीरथने विचार किया कि हमारी माता कहां गईं ध्यानसे विचारकर जाना कि महादेवजी ने ग्रहण करली १४ तो भगीरथ राजा कैलासको जातेभये वहां जाकर बड़ी घोरतपस्या की १५ जब महादेव जी इसप्रकार आराधित हुए तो बोले कि मैं

गंगाजी को दूंगा और तिसी समय में एक बाल छोड़कर गंगाजी को दिया १६ भगीरथ गंगाजीको लेकर पातालमें जहां कि उनके पुरुखे भस्महुएथे वहांलाये तो गंगाजीका पहला अलकनन्दानाम हुआ १७ और हरिद्वार में जब प्राप्तहुईं तो विष्णुपादोदकी कहाईं यह हरिद्वार तीर्थों में श्रेष्ठ है और देवताओं को भी दुर्लभ है १८ इसी तीर्थ में मनुष्य स्नानकर और विशेषकर भगवान् के दर्शन करें और जे दक्षिणा करते हैं वे दुःखभागी नहीं होते हैं १९ ब्रह्महत्यादिक पापोंकी अनेकों राशियां भगवान्‌के दर्शनही से सदा नाश होजाती हैं २० महादेवजी ने कहा कि एकसमय भगवान्‌के स्थान हरिद्वारमें मैं गया तो उसतीर्थके प्रभावसे विष्णुके रूपके तुल्य होगया २१ और भी मनुष्योंमें श्रेष्ठ जो जाते हैं वे नीरोग रहते हैं वे मनुष्य नरनारी सब चारभुजावाले हैं भगवान् के दर्शनही से सब वैकुण्ठ को जाते हैं हमको भी यह सुन्दर हरिद्वार तीर्थ सबसे अधिकहै २२। २३ तीर्थोंमें श्रेष्ठतीर्थ और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का देनेवालाहै कलियुगमें मनुष्योंके धर्मका करनेवाला मोक्ष और अर्थका देनेवाला है २४ जहांपर बहुत सुन्दर निर्मल गंगाजी नित्यही बहती हैं यह उत्तम, पुण्य, हरिद्वारका चरित्र २५ कहा सुननेवाले पुरुषोंको शाश्वतफल होताहै अश्वमेध यज्ञके करने और सहस्रगऊके दान करनेसे २६ जो पुण्य होताहै विद्वान् उस पुण्य को भगवान्‌के दर्शनही मात्रसे प्राप्तकरताहै गऊ ब्राह्मण और पिताके मारनेवाले २७ इसप्रकारके बहुतसे पाप भगवान्‌के दर्शनही मात्रसे नाशको प्राप्त होजाते हैं २८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशतसहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति नारदसंवादेहरिद्वारमाहात्म्येगंगोत्पत्तिपूर्वकंहरिद्वारमाहात्म्यं नामैकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

गंगा, प्रयाग और यमुनाजीकी स्तुति वर्णन ॥

महादेवजी ने नारदमुनि से कहा कि हे मुनियों में श्रेष्ठ यथोक्त

इक्कीसवां अध्याय ॥

गंगाजीकी उत्पत्ति और हरिद्वारजी का माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी ने महादेवजी से पूछा कि हे विज्ञानेश्वर राजा सगरके महाबलवान् साठहज़ार पुत्र कैसेहुए यह सब चरित्र कहिये १ तब महादेवजी ने कहा कि तपस्या से जलेहुए पापवाली सगर की दो स्त्रियांथीं तिन्होंने मुनियों में श्रेष्ठ औौर्वजी को प्रसन्नकिया तो उन्हों ने कहा कि वरदान मांगो २ तो एक स्त्री ने वेगवान् साठहज़ार पुत्रों का वरदान मांगा और दूसरी ने वंशके धारण करनेवाले एकहीपुत्र को मांगा ३ तदनन्तर एक स्त्री ने तुम्बी में साठहज़ार शूरपुत्रों को उत्पन्न किया और वेसब क्रमसे धाइयों करके बढ़ाये गये ४ घीके भरेहुये घड़ोंमें और कपिलाओं के दूधोंमें प्रीति के बढ़ानेवाले बालक छोड़ेगये ५ उसी दूधके योगसे वे महात्मा बढ़े और एक पंचजननाम पुत्र राजाहुआ ६ पंचजनके पराक्रमी अंशुमान् नाम पुत्र हुआ उसके दिलीप पुत्रहुआ दिलीपके भगीरथ पुत्रहुआ ७ जिस ने नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी को लादिया और समुद्र में लाकर गंग जीको पुत्री के भावमें कल्पना किया ८ तब नारदजी ने महादेवज से पूंछा कि हे दयानिधे भगीरथ गंगाजी को कैसेलाये उन्होंने क्य तपस्या की थी यह सब हमसे कहिये क्योंकि आप सुन्दर व्रत वे करनेवाले हैं ९ तब महादेवजी बोले कि हे भगीरथ पुरुखाओं वे हितके लिये हिमाचल में गये वहां जाकर दशहज़ार वर्ष तपस्यार्क १० तो मायारहित आदिदेव भगवान् प्रसन्नहुए उन्हों ने आकाश से इन गंगाजी को दिया ११ वहीं पर विश्वेश्वर देव सदैव स्थित रहते हैं तो भगीरथ ने गंगाजी को न आती देखा महादेव जी के जटाजूट में दशहज़ार वर्ष स्थितरहीं और उन्हींके प्रभावसे न निकलीं १२ । १३ तो भगीरथने विचार किया कि हमारी माता कहां गईं ध्यानसे विचारकर जाना कि महादेवजी ने ग्रहण करली १४ तो भगीरथ राजा कैलासको जातेभये वहां जाकर बड़ी घोरतपस्या की १५ जब महादेव जी इसप्रकार आराधित हुए तो बोले कि मैं

गंगाजी को दूंगा और तिसी समय में एक बाल छोड़कर गंगाजी को दिया १६ भगीरथ गंगाजीको लेकर पातालमें जहां कि उनके पुरुखे भस्महुएथे वहांलाये तो गंगाजीका पहला अलकनन्दानाम हुआ १७ और हरिद्वार में जब प्राप्तहुई तो विष्णुपादोदकी कहाई यह हरिद्वार तीर्थों में श्रेष्ठ है और देवताओं को भी दुर्लभ है १८ इसी तीर्थ में मनुष्य स्नानकर और विशेषकर भगवान् के दर्शन करै और जे दक्षिणा करते हैं वे दुःखभागी नहीं होते हैं १९ ब्रह्महत्यादिक पापोंकी अनेकों राशियां भगवान्के दर्शनही से सदा नाश होजाती हैं २० महादेवजी ने कहा कि एकसमय भगवान्के स्थान हरिद्वारमें मैं गया तो उसतीर्थके प्रभावसे विष्णुके रूपके तुल्य होगया २१ और भी मनुष्योंमें श्रेष्ठ जो जाते हैं वे नीरोग रहते हैं वे मनुष्य नरनारी सब चारभुजावाले हैं भगवान् के दर्शनही से सब वैकुण्ठ को जाते हैं हमको भी यह सुन्दर हरिद्वार तीर्थ सबसे अधिकहै २२। २३ तीर्थोंमें श्रेष्ठतीर्थ और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का देनेवालाहै कलियुगमें मनुष्योंके धर्मका करनेवाला मोक्ष और अर्थका देनेवाला है २४ जहांपर बहुत सुन्दर निर्मल गंगाजी नित्यही बहती हैं यह उत्तम, पुण्य, हरिद्वारका चरित्र २५ कहा सुननेवाले पुरुषों को शाश्वतफल होताहै अश्वमेध यज्ञके करने और सहस्रगऊके दान करनेसे २६ जो पुण्य होताहै विद्वान् उस पुण्य को भगवान्के दर्शनही मात्रसे प्राप्तकरताहै गऊ ब्राह्मण और पिताके मारनेवाले २७ इसप्रकारके बहुतसे पाप भगवान्के दर्शनही मात्रसे नाशको प्राप्त होजाते हैं २८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति नारदसंवादेहरिद्वारमाहात्म्येगंगोत्पत्तिपूर्वकंहरिद्वारमाहात्म्यं नामैकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

गंगा, प्रयाग और यमुनाजीकी स्तुति वर्णन ॥

महादेवजी ने नारदमुनि से कहा कि हे मुनियों में श्रेष्ठ यथोक्त

गंगाजी के माहात्म्य को कहताहूं जिसके श्रवणमात्रही से उसीक्षण में पापनाश होजाते हैं १ और जो मनुष्य गंगा गंगा सैकड़ों योजनों से भी कहे वह सब पापों से छूटकर विष्णुलोक को जावे २ जो गंगाजी विष्णुके चरण कमलोंसे उत्पन्नहुई और स्थूल राशिके पापोंके नाश करनेवाली हैं ३ नर्मदा, सरयू, वेत्रवती, तापी, पयोष्णी, चन्द्रा, विपाशा, कर्म्मनाशिनी ४ पुष्या, पूर्णा, दीपा, विदीपा, सूर्य्यतेजसा इन में हज़ार बैल दानसे जो फलमिले ५ वह फल गङ्गाके दर्शनसे क्षणहीमें प्राप्तहो यह गंगा महापुण्या है विशेषकर ब्राह्मण के मारनेवाले ६ नरकमें भी हों उनके भी पापके नाशनेवाली है चन्द्रमा और सूर्य्य के ग्रहणमें जो फलहै ७ वह गंगाजी के दर्शनही मात्रसे मिलता है जैसे सूर्य्यके उदयमें अन्धकार दूर होजाताहै ८ तैसेही गंगाजीके प्रभावसे पाप नाश होजाते हैं सदैव संसारमें यह पूज्य पवित्र और पाप की नाश करने वाली है ९ कल्याण का रूप और विष्णुजी ने पहले निर्मित किया है सुन्दर रूपयुक्त यह माता दीनोंके पवित्र करनेवाली है १० देवताओं में जैसे विष्णुजी तैसेही नदियोंमें उत्तम गंगाजी हैं जे मनुष्य निरन्तर माघ मास में स्नान करते हैं ११ उनको तीन सौ कल्पतक दुःख नहीं प्राप्तहोता और जहां गंगा यमुना और सरस्वती हैं वहांपर स्नान और पानकर निस्सन्देह मुक्तिका भागी होताहै १२ महादेवजी बोले कि हे प्रभो कृष्णचन्द्रजी तुम्हारी वार्ता प्रियसे कहताहूं और वह तुम्हारी स्तुति हो और जो भोजन करूं वह तुम्हारे निवेदन हो और जहां जाऊं वह आपकी दासताहो और अन्तःकरण में अपने दोनों चरण दीजिये उन्हीं में हमारा दण्डवत् प्रणामहो और हे स्वामिन् जो हम करें उसीसे संसारके स्वामी भगवान् प्रसन्नहों १३ और यह यमुनाजीका जल है जिसके दर्शन वन्दना छूने और धारण करनेसे मनुष्य छूटजाते हैं १४ और तबतक संसार से उठे दारिद्र्य रोग मरण और व्यसनों से अनादर को प्राप्तहुए मनुष्य भ्रमते हैं जबतक हे महानदि हे सूर्य्यपुत्रि यमुनाजी आपके नीलवर्ण जलको नहीं देखते और मस्तक में नहीं धरते १५ जिस गंगाजी का स्मरण शीघ्रही

दुष्कृतके समूहको नाश करताहै और लाख योजनसे पापकी पंक्तियों को जीतताहै और जिनका नाम उच्चारण करनेसे संसार पवित्र होता है सो बड़े भाग्य की बात है कि वही गंगाजी हमारे नेत्रों से दिखलाई देंगी १६ जिनके दर्शन की उत्कण्ठासे आनन्दयुक्त मन से जिसके मार्ग में जातेहुए कुशली पुरुषको शीघ्रही प्रथम कृत्य यह है कि वह स्वर्गरूपी समुद्र को प्राप्त होता है और गंगा जी में स्नान, सन्ध्या, तर्पण, देवताओंका पूजन, श्राद्ध और ब्राह्मणों का भोजन आदिक ये सब सम्पूर्ण होते हैं और भगवान् के प्रीति के देनेवाले होते हैं इसमें आश्चर्य नहीं है १७ देवी भूत परंब्रह्म और परमआनन्द की देनेवाली हैं हे गंगेजी अर्घ को ग्रहण करो पापको हरो तुम्हारे नमस्कार है १८ जिन गंगाजीका जल साक्षात् धर्मके द्रवका समूह है और भगवान् के चरणरूपी कमलों के अमृत का सार है दुःखरूपी समुद्र के तारनेवाला है देवता और मनुष्य जिस की स्तुति करते हैं स्वर्ग की सीढ़ीका मार्ग है सब पापों के नाशने वाला है श्रेष्ठ गुणों के गणोंसे युक्तहै जिस जलको धारणकर प्रकाशित होरही है ऐसी भागीरथी श्रीमतीदेवी के हम नमस्कार करते हैं १९ हे गंगेजी आप दुःखरूपी समुद्रमें डूबेहुए मनुष्यों के समूहों की तारनेवाली हैं और प्रकाशित कल्लोलों से निर्मल कान्तियुक्त हैं अन्धकार के समूहको नष्ट करदिया है संसार के पवित्र करनेवाली हैं और हे देवि दुष्कृत और भयसे दबे हुए कृपा के बर्तन मुझको पवित्र कीजिये और हे मातः हे शरणकी देनेवाली डरेहुए शरण में आये मेरीरक्षा कीजिये २० हे सखे आपका मानस क्यों कांपता है क्या आप नरकके डरसे डरेहुए हैं और क्या आपको यह डरहै कि यह श्रुतिहै कि पापकर्म करनेवाला नरकमें प्राप्तहोताहै इससे आप न डरें हमारी गतिको सुनो कि जो हमसे पापरूपी पहाड़ की नाश करनेवाली गंगाजी प्राप्तहुई तो आपको भी नरक कैसे होगा और हमारे तो दूसराधर्म और धन नहीं है २१ सर्वेशादिकों की यह प्रशंसा और जिनका स्नान आनन्दका स्थान है यह देखकर देवताओंकी स्त्रियां बड़ी प्रसन्नताको प्राप्तहुईं और यम नियममें लगेहुए

श्रीगंगाजी के जलमें जे इन्द्र या देवताओंके होनेकी इच्छासे स्नान करते हैं ते पापकर्म करनेवाले भी देवता होते हैं इसमें वेद प्रमाण हैं २२ हे सखे बुद्धि में अच्छीबुद्धि तुम्हारी हो और मानस कल्याणयुक्तहो और चरण भी ऐसेहों कि जिनसे तीर्थयात्राहो दृष्टि बहुत अच्छीहो वाणी प्राणसे अधिक प्यारीहो और प्रकट गुणों से युक्त देहहो प्राणियोंकी पुष्टि करनेवालाहो जिससे सब आपकरके अतुल सुखके देनेवाले पुण्य तीर्थको मैं प्राप्तहूं २३ श्रीगंगा, यमुना और सरस्वती ये तीनों नदियां प्रयाग में आभरणरूप हैं इसप्रकार का सब तीर्थोंका स्वामी तीर्थोंमेंश्रेष्ठ प्रयाग हमारे ऊपर कृपाकरै और ऊपरको प्राप्तकरै और दश प्रकारके भीतर के अन्धकार को अपने तेजसे नष्टकरै २४ ब्रह्मा, विष्णु, महादेव और इन्द्रादिक देवता ये सब अत्यंत जाननेवाले हैं परन्तु पापके नाश करनेके लिये सफेद और नीलवर्ण जिसके तीरको सेवन करते हैं ऐसा तीर्थों का राजा प्रयाग जयको प्राप्तहो २५ यमुनाजीका संगपाकर जहांपर गंगाजी प्रत्यग् प्राप्तहोकर मनुष्योंकी दैहिक दैविक भौतिक इन तीनोंतापों को नष्टकरती है ऐसा तीर्थोंका राजाप्रयाग जयको प्राप्तहो २६ जहां पर श्याम बरगद का वृक्षहै जिसमें श्यामही गुणहै जो कि अपनी श्यामवर्ण छायासे मनुष्यों को आच्छादित करता और जिसके दर्शन और छायामें रहने से श्रम दूर होजाताहै ऐसा तीर्थोंका राजा प्रयाग जयकोप्राप्तहो २७ ब्रह्मादिक देवता भी आत्मकृतिको छोड़ कर पुण्यात्मक भागधेय को सेवन करते हैं और दण्डधारण करने वाले जहांपर अपने दंडको छोड़ देतेहैं ऐसा तीर्थोंका राजा प्रयाग जयको प्राप्तहो २८ जिसकी सेवा से देव मनुष्य देवतादिक देवर्षि प्रतिदिन स्वर्ग और सबसे उत्तम भूमि की राज्य को प्राप्त होते हैं ऐसा तीर्थोंका राजा प्रयाग जयको प्राप्तहो २९ और यह प्रसिद्ध बात है कि पापों को नाश करताहै नाम प्रताप में दृष्टियां नहीं होसक्ती हैं जिसकी किरणों से त्रिलोकी तापयुक्त होता है ऐसा तीर्थों का राजा प्रयाग जय को प्राप्त हो ३० जो कि सब और उज्ज्वल कांतिवाले चामर को धारण करता है सफेद और श्यामवर्ण जहां

पर गंगा और यमुना जी हैं और आद्य बरगद का वृक्ष छत्र की नाईं शोभित होता है ऐसा तीर्थों का राजा प्रयाग जय को प्राप्त हो ३१ गंगा यमुना और सरस्वती इन तीन नदियों के मिलने से त्रिवेणीहुई जिसके स्नान करनेवाले ब्रह्मपद को प्राप्तहोते हैं ऐसा तीर्थों का राजा प्रयाग जय को प्राप्त हो ३२ किसी किसी के तो करोड़जन्म बीतजाते हैं और यह कहतेहीरहते हैं कि मैं प्रयागजी को जाऊंगा और किसी किसीकी इच्छाही से वर्षों के समूह बीतते जाते हैं और जो भाग्यलक्षों से प्रयागजी गये और नेत्रों से दर्शन किया और त्रिवेणी में स्नान किया तो उत्तमलोक को प्राप्त होजाते हैं ३३ ब्रह्मादिक देवताओं ने कलियुग में मनुष्यों को यज्ञकरने में योग्य न समझकर और स्वर्ग की कामना देनेवाले जयस्तुत्यादि स्तोत्र और वचनों से कैसे देवताओं के पद की प्राप्ति होगी इस प्रकार चितासे आतुर मनुष्यों को देखकर अग्निष्टोम और अश्वमेध इत्यादि यज्ञके फलको अंगसहित भी अच्छीतरह देखकर प्रयागको तीर्थराज बनाया ३४ मैंनेप्रमाद आतुरतादि दोषसे संध्या की विधिकी उपासना नहींकी और जो प्रसाद से यहांपर संध्याको करते तो सम्पूर्ण जन्मकी भी मेरी संध्या पूर्ण होजाती ३५ जो प्रयागजी उत्तमप्रेमों से ध्यान और संकीर्तितहुआ सदैव मनोवांछित पदको देता है जिसकी बहुत उत्तम महिमा है और श्रीत्रिवेणी जी की धूलिभी बहुत उत्तम है ऐसे अतुलफल के देनेवाले तीर्थराज प्रयाग को हम नमस्कार करते हैं ३६ हमने क्या अच्छी तपस्या की थी और क्या यज्ञकियाथा सुपात्रमें अनेक प्रकारका क्या दान कियाथा देवताओं की क्या पूजाकीथी अच्छे तीर्थ की क्या सेवाकी थी और ब्राह्मणों के समूहों को पूजादिकों से क्या सत्कार किया था जिससे कल्याण देनेवाली महादेवजीकी राजधानी काशीजी अपने आप प्राप्तहुई ३७ सम्पूर्ण पापों की नाशकरनेवाली सर्वाश्चर्यमयी संसाररूप समुद्रसे तारनेवाली शिवजी की पुरी काशीजी अनेक जन्मकी भाग्योंसे हमको प्राप्तहुई तो अच्छे जन्मका फल हम को प्राप्तहुआ कुलभी शोभित हुआ आत्मा पवित्र किया और भी

सब करचुके ३८ मनुष्य जीवतेहुए कल्याणके लक्षों को देखता है यह वार्ता झूंठ नहीं है हमने इसी क्षणमात्रमें नाशहोनेवाले शरीर से काशीजी प्राप्तकी ३९ काशीजी में सुन्दर भूमिमें अच्छे तीर्थोंके लिंग गिनने और पूजनमें देवता भी नहीं समर्थ हैं जोकि गुप्तपुराने और सिद्धहैं उनके हाथ जोड़कर मैं प्रणाम करताहूं ४० डरसे,पाप के समूहों, आनन्द से अगणित पुण्यों के करने से क्या है विद्याके अभ्यास,मदसे, जड़ताके दोष और कष्टसे भी क्याहै अभिमानसे, धनके उदय और निर्धन होनेकी तापही से क्याहै श्रीमणिकर्णिका के जल में स्नान करने से संसार के स्वामी दिखलाई देते हैं ४१ और हमको गदाधरजी की नगरी गयाजी जो कि शीघ्रही मोक्षकी देनेवाली मनोरथोंसे भी नहीं प्राप्त होनेवाली स्वप्नकी प्रवृत्तिकेभी विषय में आनेवाली रोगरहित अच्छी उत्साहसेयुक्त बल और केवल मनके दूसरे रागसे प्राप्तहुई ४२ हम अपनी कृति नहीं मानते हैं और न पूर्वके पुरुषोंकी प्राप्तिका बलही मानते हैं और अपने जनोंका अचलप्रमाणभी नहीं मानते हैं तो स्वाप और तापआदिक क्याहैं जो गयाजी दुःख से प्राप्त होती हैं प्रयाग, यमुना और काशी ये सब सुन्दर पर्वके आगमसे प्राप्तहुए तो इनसे जो महाफल हुआ वह जयको प्राप्तहो यह सब श्रीसरस्वतीजीकी कृपासे हुआ ४३ जो गदाधरजी श्राद्ध के समय में दूरही से स्मरण कियेजाते हैं और पितरोंकी मुक्तिको देदेते हैं ऐसे गयाजीमें स्थित साक्षात् गदाधरजीको मैं नमस्कार करताहूं ४४ मैं बड़ी दुस्तर मार्गको कि जिस में छोटे छोटे जीव और व्याघ्र सर्प भी भरेहुए हैं तिसको पारहोकर यहां आकर अच्छेख़र्च या यथाशक्ति कमख़र्चसे यहां पर श्राद्धकी परन्तु उत्तमजल और गदाधरजीके दर्शनकी हमको उत्कंठा प्रतिदिन रहती है ४५ सबके आत्मा श्रीगदाधरजीके दर्शन और गयाजी के श्राद्धसे देवता प्रसन्न होते हैं और इस संसारको चेष्टारहित की नाईं उदासीन के भावको कैसे प्राप्त भगवान् किये हैं हे सबके देनेवाले क्या आपकी निर्दयता या प्रभुता कलियुगकी है क्या मनुष्योंमें सत्वका देखनाहै क्या इसकी सेवाकी रुचिहै ४६ हे गदा-

धरजी मैंने आपके प्रसाद से गयाजी में श्राद्धकी अब हे देव मुझे घर जाने की आज्ञा दीजिये ४७ चारों देवताओं के स्तोत्र स्वर्ग्ग और अर्थके देनेवालेहैं श्राद्धकाल और स्नानके समयमें जो नित्य पढ़ताहै ४८ उसको इसके सुनने पढ़ने और जपनेसे सब तीर्थोंके स्नान के बराबर फल मिलताहै ४९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारद संवादेगङ्गाप्रयागयमुनास्तुतिर्नामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

तुलसी और शालग्रामजीका माहात्म्य वर्णन ॥

श्रीमहादेवजी नारदजी से बोले कि हे नारदजी तुलसीजी का माहात्म्य कहताहूं सुनिये कि जिसके सुननेसे जन्मसे लेकर मरणपर्यंत के पापोंसे छूटजाताहै १ पत्ती, फूल, फल, जड़, डालें, त्वचा, कांधे ये तुलसी से उत्पन्न हुए सब और मट्टी आदिक भी सब पवित्र हैं २ जिनका शरीर तुलसी की लकड़ी की आग से जलाया जाताहै और जो तुलसीकी लकड़ीको सब अंगों में देकर मरताहै ३ और पीछेसे जलाया जाताहै वहभी पापसे छूटजाता है मरणके समयमें जिसको भगवान्का कीर्त्तन और स्मरण प्राप्त होताहै ४ और तुलसीकी लकड़ीसे जलाया जाता है उसका फिर जन्म नहीं होताहै जो सैकड़ों लकड़ी के बीच में एकभी लकड़ी तुलसी की ५ जलाने के समय में हो तो दशहज़ार करोड़ पापों से छूटकर मुक्ति होजावे गङ्गाजी के जलके अभिषेक से पुण्य पुण्यके भावको प्राप्त होती है ६ तुलसीकी लकड़ी से मिलीहुई और भी लकड़ियां पुण्य के भावको प्राप्त होजातीहैं तुलसीकी लकड़ीसे मिलीहुई और लकड़ियोंकी भी चिता जबतक जलती है ७ तो उस मनुष्यके करोड़ कल्प के भी किये हुए पाप नाश होजाते हैं तुलसी की लकड़ी की आगसे जलेहुये मनुष्यको देखकर ८ विष्णुके दूत लेजाते हैं यमराजके दूत नहीं हज़ारों करोड़ जन्मोंसे छूटकर भगवान्के प्रत्यहोताहै ९ संसार में तुलसीकी लकड़ीकी आगसे जो

लाये जातेहैं वे विमानोंपर चढ़ाये जाते हैं उनके ऊपर देवता फूल बरसाते हैं १० सब अप्सरा नाचतीं गन्धर्व्व लोग गाते महादेव समेत विष्णुजी उसको देखकर प्रसन्न होते हैं ११ भगवान् उसका हाथ पकड़कर घरमें लेजाकर उसके अंगसे देवताओं के देखतेही सब पापों को शुद्ध कर देते हैं १२ जय शब्दको आगेकर महोत्सव को कराकर जहांपर घीसे तुलसी की लकड़ीकी आग १३ अग्नि के स्थान या श्मशानही में जलती है तो मनुष्यों के पाप नष्ट होजाते हैं और जे ब्राह्मण तुलसीकी लकड़ीकी अग्नि से होम करते हैं तो सिक्क सिक्क वा तिलमें भी अग्निष्टोमके फलको प्राप्त होते हैं १४ और जे तुलसीकी लकड़ी से उत्पन्न धूपको भगवान्को देतेहैं वे सौ यज्ञके समान पुण्यको प्राप्त होते हैं और सौ गऊके देने के फलको प्राप्त होतेहैं १५ तुलसीकी लकड़ीकी अग्निसे जो नैवेद्य को पकाते हैं तो वह भगवान् को दियाहुआ अन्न मेरुके तुल्य हो जाताहै १६ और तुलसी की अग्निसे जो भगवान्के दीप करताहै तो हज़ारलक्ष दीपके पुण्य के फलको प्राप्त होताहै १७ और जो भगवान् के तुलसी की लकड़ी से चन्दन देता है उसके समान वैष्णव पृथ्वी में नहीं दिखाई पड़ता १८ वह हे नारदमुनि विष्णुजी की कृपा का वर्त्तनही होजाताहै १९ और तुलसीकी लकड़ी से उत्पन्न चन्दनसे कलियुगमें हरि भगवान्के लेपन जो भक्तिसे नित्य करताहै वह भगवान्के निकट क्रीड़ा करताहै २० तुलसीके कीचड़ से लिप्त अंगहुआ विष्णुजी का पूजन करता है तो एकही दिनसे सौ दिनके पूजन का फल और सौ गोदानके करनेका फल प्राप्त होता है २१ कृष्णजीके लेप लगाने के लिये तुलसीके काष्ठका चन्दन जबतक मन्दिरमें रहता है तबतक पुण्यके फलको सुनो २२ तिलके आठ प्रस्थके देनेसे जो पुण्य मनुष्यको मिलताहै वह फल भगवान् के प्रसादसे मनुष्यों को मिलताहै २३ और जो पितरोंके पिण्डमें तुलसीसे उत्पन्न दल देताहै तो पत्ती पत्तीमें सौ सौ वर्षकी उसको तृप्ति होजाती है २४ तुलसीकी जड़की मट्टीसे विशेष स्नान करै तो जबतक अंगमें मट्टीरहै तबतक उसने तीर्थ में मानों स्नान

किया २५ और तुलसीकी मंजरी से जो पूजन करताहै तो जबतक चन्द्रमा और सूर्य्य रहें तबतक अनेक पुष्पोंसे कीहुई पूजाका फल उसको मिलता है २६ और जिस घर में तुलसी के वृक्षों की बाग होती है तो दर्शन करने और छूने से ब्रह्महत्यादिक सब पाप नाश होजाते हैं २७ महादेवजी बोले कि हे नारदमुनि और भी तुम से कहता हूं जिस को मैंने किसी से नहीं कहा वह एकाग्रचित्त होकर सुनो २८ जिसघर गांव वा वनमें तुलसी होती है वहीं वहीं पर प्रसन्नआत्मा संसारके स्वामी भगवान् बसते हैं २९ और उस घरमें दारिद्र्, बन्धुओं से उत्पन्न अयोग, दुःख, डर और रोग नहीं होता जहां पर तुलसीजी स्थित हैं ३० सब जगह तुलसी पुण्यकारी हैं पुण्यक्षेत्र में विशेष करके हैं पृथ्वी में भगवान्के समीपही लगाना उत्तमहै ३१ उनको तुलसीके लगानेहीसे नित्यही विष्णुपद प्राप्त होताहै उत्पात, भयानक रोग अनेक प्रकारके अशकुन ये सब भक्तिसे तुलसीके पूजन करनेसे नष्टहोजाते हैं क्योंकि शान्तिके करने वाले भगवान्हीं हैं ३२ तुलसीकी गन्ध सूंघकर जहां पवन जाताहै वे दशोदिशा पवित्र होजाती हैं और चारप्रकार भूतग्राम भी पवित्र होजाता है ३३ और जिस घरमें तुलसी की जड़की मट्टी रहती है वहांपर सदैव देवता महादेव और कृष्ण भगवान् रहतेहैं ३४ तुलसीके वनसे उत्पन्नछाया जहां जहां होतीहै वहांपर पितरोंको तर्पणकरै और जो कुछदेवे तो वह नाशरहित हो ३५ तुलसीकी जड़ में ब्रह्मास्थितहैं बीचमें कृष्णचन्द्र और मंजरीमें महादेवजी बसते हैं तिसीसे तुलसी पवित्रहै ३६ जो मनुष्य सन्ध्या समयमें तुलसी के विना मार्जन करता है वह सब राक्षस हर लेजाते हैं और नरक मिलताहै ३७ तुलसीके पत्रोंसे मिलेहुए जलको जो शिरसे धारण करता है वह गंगाजी के स्नानका फल और सौगउओं के दान के फलको प्राप्त होताहै ३८ शिवजी के मन्दिर में विशेषकरके जो तुलसीको लगावे तो बीजकी गिनती से प्रत्येकयुगकी संख्यासे स्वर्गमेंबसे ३९ पार्व्वतीजीने महादेवजीके लिये पहले [illegible] र्व्वतमें तुलसीके सौवृक्ष लगायेथे तिसीसे वे प्रसन्नहुए ४

अवसरमें श्रावणमें संक्रान्ति में जो तुलसी को लगावे तो अधिक पुण्यहो ४१ दरिद्री जो तुलसीको नित्य पूजनकरै तो ऐश्वर्य्ययुक्त होजावे और सब सिद्धिके करनेवाले कृष्णचन्द्रजी यशकोदेवें ४२ शालग्रामजी की मूर्त्ति जहां होती है वहां भगवान् रहते हैं वहांपर स्नान और दानकरना काशीजीसे भी सौगुणा अधिकहै ४३ कुरुक्षेत्र, प्रयाग और नैमिषारण्य से करोड़गुणा पुण्य शालग्राम की मूर्त्तिके पूजनसे होता है ४४ शालग्रामजी की मूर्त्ति जहांपर स्थित होती है तो काशीजी में जो पुण्य होता है वह सब वहींपर होताहै ४५ मनुष्य ब्रह्महत्यादिक पापोंको जो करताहै वे सब शालग्रामकी मूर्त्तिके पूजनसे शीघ्रनाश होजाते हैं ४६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति नारदसंवादेतुलसीशालग्राममाहात्म्यंनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

प्रयागजीका माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे नारदमुनि प्रयाग तीर्थ के माहात्म्यको जैसे सुनाहै वैसेही कहताहूं महादानमें परायण पुण्यकर्म के करने वाले जहांपर बसते हैं १ जहां गंगा यमुना और सरस्वती हैं वही तीर्थोंमें श्रेष्ठ और देवताओंको भी दुर्लभ है २ इसप्रकारका तीर्थ तीनोंलोकों में न हुआहै और न होगा ग्रहोंमें जैसे सूर्य्य और नक्षत्रों में जैसे चन्द्रमा श्रेष्ठहै ३ तैसेही तीर्थों में उत्तम प्रयागजी हैं प्रातःकालमें जो प्रयागजीमें स्नान करता है ४ वह महापापसे छूट कर परमपदको प्राप्त होताहै दारिद्र्यके अभावकी इच्छा करनेवाले को वहांपर यथाशक्ति कुछदेना भी चाहिये ५ और जो मनुष्य प्रयागमें जाकर स्नान करताहै वह धनी और बहुतकाल तक जीनेवाला निस्संदेह होजाताहै ६ जहांपर अक्षयवटके मनुष्य दर्शनकरें तो उनके दर्शनहीमात्र से ब्रह्महत्या नाश होजाती है ७ वह अक्षयवट प्रसिद्ध है कल्पके अन्तमें भी दिखाई पड़ताहै जिसके पत्तेमें विष्णुजी सोते हैं इसीसे यह अक्षय कहाता है ८ विष्णुजीके प्यारे

मनुष्य वहांपर पूजा करते हैं सूतसे आच्छादितकर वहांपर पूजन करावै ९ माधव भगवान् सुखसे नित्यही वहां रहते हैं निश्चय उन के दर्शन करनेसे महापापोंसे मनुष्य छूटजाताहै १० जहांपर देवता ऋषि और मनुष्य अपने अपने स्थानको आश्रितकर नित्यही स्थित रहते हैं ११ गऊका मारनेवाला चाण्डाल दुष्ट वा दुष्टचित्त वाला बालकका मारनेवाला और मूर्खभी जो वहांमरै १२ तो वह भी चार भुजावाला होकर बहुत समयतक वैकुण्ठमें वसे और प्रयागमें जो मनुष्य माघमहीनेभर स्नानकरे १३ तो उसके फलकी गिनती नहीं है सब लोकोंमें यह सुनाहै कि जलको नारा कहते हैं उस नारानाम जलहीमें स्थान जिसकाहो उसको नारायण कहते हैं वही भगवान् स्नान करनेवालोंको भुक्ति और मुक्ति देते हैं ग्रहोंमें जैसे सूर्य और नक्षत्रोंमें चन्द्रमा जैसे श्रेष्ठहै १४।१५ तैसेही महीनों में माघका महीना सब कामों में श्रेष्ठ है मकरके सूर्यों में माघ महीनेमें प्रातःकाल निर्मल १६ गऊके चरणमात्रभी जलमें स्नान करै तो पापियोंको भी स्वर्गमिले यह योग चराचर त्रैलोक्य में दुर्लभहै १७ इसमें जो तीन दिन भी यत्नवान् पुरुष स्नानकरै और पांच वा सातवार प्रयागके स्नानकरै १८ तो वह कुलमें चन्द्रमाकी समानबढ़े चराचरजीव और मनुष्य इत्यादिक १९ प्रयागतीर्थ की सेवाकर थोड़ेही काल में वैकुण्ठ को प्राप्त होते हैं और वसिष्ठादिक और सनकादिक ऋषिभी २० प्रयागतीर्थ को वारंवार सेवनकरते हैं विष्णु महादेव और इन्द्रभी २१ जिस तीर्थों में उत्तम प्रयाग में बसते हैं वहांके दान और नियमोंकी मुनिलोग प्रशंसा करते हैं २२ वहांपर स्नान और जलपान करनेसे फिर जन्मनहीं होताहै २३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति नारदसंवादेप्रयागमाहात्म्येचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पच्चीसवां अध्याय॥

तुलसीजीका त्रिरात्रव्रत वर्णन॥

नारदजी महादेवजी से बोले कि इसी प्रकार तुलसीजी का

हात्म्य आपके प्रसाद से मैंने सुना इस समय में त्रिरात्र तुलसी के व्रतको कहिये १ तब महादेवजी बोले कि हे महाबुद्धे! हे विप्र! इस पुराने व्रतको सुनो जिसके सुननेसे सब पापों से निस्संदेह छूटजाता है २ पूर्व्वकाल में रैभ्यन्तरकल्प में प्रजापति राजा हुए तिनकी स्त्री महापतिव्रता चन्द्ररूपा नामसे प्रसिद्ध हुईं ३ उन्होंने सब कामना और फल के देनेवाले इस व्रत को किया तुलसी जी के त्रिरात्रका व्रत धर्म,काम, अर्थ और मोक्षका देनेवालाहै ४ जिन्हों ने तुलसी का व्रत सुनाहै उनका जीवन सफलहै कार्तिकके शुक्लपक्षकी नवमी को ५ नियममें स्थित होकर व्रत करनेवाला जितेन्द्रिय मनुष्य पृथ्वीमें सोवे त्रिरात्र व्रतका उद्देशकर पवित्र और निवृत्त मन होकर ६ तुलसी के वनके समीप नियमपूर्व्वक सोवे तदनन्तर मध्याह्न के समय में नदी आदिक के निर्म्मल जलमें ७ स्नानकर पितर और देवताओं को विधिपूर्व्वक तर्पण कर सोनेके लक्ष्मी समेत भगवान् को बनवावे ८ अपने कल्याण की इच्छा करने वाले को द्रव्य होने पर कृपणता न चाहिये फिर पीले और सफ़ेद दोप्रकारके वस्त्रलावे नवग्रहों का आरम्भ विधिपूर्व्वक शान्ति करै ९ और खीरको बना कर वैष्णव होमकरै द्वादशी में भगवान्‌की यत्नसे पूजाकर १० पुष्ट शुद्ध कलशको विधिपूर्वक स्थापनकरै पञ्चरत्न पत्ते और ओषधियों से युक्तकरै ११ तिस कलशके ऊपर बर्तनमें लक्ष्मीसमेत भगवान् की मूर्त्तिको तुलसी की जड़में वेद और पुराणके मन्त्रोंसे स्थापित करै १२ केवल दूधहीसे तुलसीके वनको सींचे फिर पञ्चामृतसे देवदेव संसारके गुरु भगवान्‌को स्नानकरावे १३ जो अनन्तरूप सम्पूर्ण संसारके रूप गर्भके जलमें लोककी विधिको धारण करते हैं वही देवदेव प्रसन्नहों जो देव कि मायासे संसारको रचते हैं १४ ॥ प्रार्थनामन्त्रः ॥ हे अच्युत हे देवताओं के स्वामी हे तेज की राशि हे संसारके स्वामी सदैव अन्धकार के आप दूर करनेवाले हैं भवसागर से हमारी रक्षाकीजिये १५ ॥ आवाहनमन्त्रः ॥ पञ्चामृत से चन्दन और जलसे और गंगा आदिकके जलसे स्नान करायेगये भगवान् प्रसन्नहों १६ ॥ स्नानमन्त्रः ॥ चन्दन, अगुरु, कर्पूर और

केसर आदिक का विलेपन हे देव! भक्तिसे मैं देता हूं लक्ष्मीसमेत आप ग्रहण कीजिये १७ ॥ विलेपनमन्त्रः ॥ हे नारायण! हे नरकरूपी समुद्र के तारनेवाले हे त्रैलोक्य के स्वामी! आपके नमस्कार है आपको दो सुन्दर वस्त्र देताहूं १८ ॥ वस्त्रमन्त्रः ॥ हे दामोदर! हे पुरुषोंमें श्रेष्ठ! आपके नमस्कारहै भवसागर से हमारी रक्षाकीजिये और यज्ञोपवीतको मैं देताहूं उसको ग्रहण कीजिये १९ ॥ उपवीतमन्त्रः ॥ हे प्रभो! हे देवताओं के स्वामी! सुगन्धित चमेली आदिक के फूलों को मैं देताहूं प्रीति से आप ग्रहण करें २० ॥ पुष्पमन्त्रः ॥ हे नाथ! हे परमेश्वर! भक्ष्य भोज्यों और सब रसोंसेयुक्त नैवेद्यको आप ग्रहणकरें २१ ॥ नैवेद्यमन्त्रः ॥ सुपारी नागपत्र और कर्पूर समेत पानको हे देवेश! मैं देताहूं आप ग्रहणकरें २२ ॥ ताम्बूलमन्त्रः ॥ घीसे मिले हुए गुग्गल की भक्ति से धूप गुरुजी को देकर इसीप्रकार पूजाकरनी चाहिये फिर घीसे दीपदेवे २३ एकाग्रचित्तहोकर अनेकप्रकार के लक्ष्मीनारायण के आगे और तुलसी वनके समीप दीप देवे २४ फिर देवदेव चक्रधारी भगवान्को अर्घ देवे नवमी में नालियरसे पुत्रके लिये अर्घ उत्तम है २५ दशमी में धर्म काम और अर्थकी सिद्धिके लिये नींबूका अर्घ अच्छाहै एकादशीमें अनारका अर्घ देवे तो सदैव दारिद्र्य नष्टहो २६ फिर बांसे के वर्तनमें सातो धान्य सातफल पत्र और सुपारी संयुक्तकर २७ कपड़े से ढककर भगवान्के आगे इस मन्त्रसे निवेदनकरै तिसको हे विप्रेन्द्र नारदमुनि! एकाग्रचित्तहोकर सुनो २८ हे देव! हे देवदेव! तुलसीसहित आप शंख से संयुक्त हमारे दिये हुए अर्घ को ग्रहण कीजिये आपके नमस्कारहै २९ ॥ अर्घमन्त्रः ॥ इसप्रकार लक्ष्मीसमेत देवताओंके स्वामी जनार्दन भगवान्की पूजाकर व्रतकी पूर्णता की सिद्धिके लिये देव देवेशकी प्रार्थनाकरै ३० हे देवेश! काम क्रोधसे हीन मैंने व्रतकिया है इसी व्रतसे हे देवेश! हमको शरणमें रखिये ३१ हे देव! हे जनार्दन! भगवान् इसव्रतके ग्रहणकरनेसे जो कुछ हमने पूरा न कियाहो वह आपके प्रसादसे सब पूर्णहोजावे ३२ हे कमलनयन! हे केशवजी! और जलके शयन करनेवाले

आपके नमस्कारहै इसव्रतको मैंने आपहीके प्रसादसे कियाहै ३३ हे अज्ञानके नाशनेवाले! हे केशव भगवान्! आप इस व्रतसे प्रसन्न होकर ज्ञानरूपी दृष्टिको दीजिये ३४ तदनन्तर रात्रिमें जागरणकरै गानके जाननेवालों नाचके जाननेवालों से गान और नाच करावै और सुन्दर पुण्यके आख्यानोंसे पुस्तकको बँचावै ३५ जब रात्रि व्यतीतहोजावै और निर्मल सूर्य उदयहों तो ब्राह्मणोंको नेवता देकर भक्तिसे वैष्णव श्राद्धकरै ३६ फिर खीर और घीसे अच्छीतरह भोजन कराकर पान, फूल, चन्दन आदिक और दक्षिणाओंसे युक्त ३७ जनेऊ, कपड़े, माला और चन्दन देकर तीन स्त्री और पुरुषों के जोड़ोंको भोजनकरावे कपड़ा, गहना, केसर ३८ और शक्ति से बांसके बर्तनों में ये सब वस्तु और नारियल, पूरी, कपड़े और अनेकप्रकारके फल रखकरदेवै ३९ और स्त्रीसमेत गुरुजी को कपड़े और सुन्दर गहने पहनावे चन्दन और मालाओंसे पूजनकरै ४० सब सामग्रियों से युक्त दूध समेत कपड़ा और दक्षिणायुक्त गौ को देवे और हे नारदजी! हमारे कहेहुए को सुनो ४१ स्नान करनेवाले मनुष्यों को सब तीर्थों में जो पुण्यहोताहै वह सब फल भगवान् के प्रसाद से उसको मिलता है ४२ और अनेकप्रकार के सब कामना वाले और मनोरथों के भोगों को भोग कर विष्णुजी के प्रसाद से अन्त समय में विष्णुजी के पदको प्राप्तहोता है ४३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति नारदसंवादेतुलसीत्रिरात्रव्रतवर्णननामपंचविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

अन्नके दानकी प्रशंसा॥

नारदजी ने महादेवजी से कहा कि दान करनेकी कामनावाला मनुष्य अधिक गुणवाले ब्राह्मणको इस संसार में कौन कौन वस्तु दान देवे यह सब आप कहिये १ तब महादेवजी बोले कि हे नारद मुनि! सुनो संसारमें तत्त्वको जानकर अन्नकी प्रशंसा मुनिलोग इस प्रकार करते हैं कि सब अन्नहीमें प्रतिष्ठितहै २ तिससे विशेषकरके

मनुष्य अन्न देने की इच्छा करते हैं अन्नके समान दान न हुआहै और न होगा ३ स्थावर जंगम सब संसार अन्नही से धारण किया हुआहै संसार में अन्नही बलका करनेवालाहै और अन्नही में प्राण स्थितहैं ४ अपने ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवालेको चाहिये कि कुटुम्ब को भी चाहे पीड़ाहो परन्तु ब्राह्मण महात्मा के लिये खानेके योग्य अन्नको देवे ५ जाननेवाले में श्रेष्ठ मनुष्य अपने परलोक सुधारने के लिये अर्थी और दुःखयुक्त ब्राह्मणको अन्नदेवे ६ अपने ऐश्वर्य की इच्छाचाहे तो थकेहुए राह में वर्तमान गृहस्थ घर में आयेहुए ब्राह्मणको ७ शीलसमेत, मत्सरहीन और आये हुए क्रोधको छोड़ कर विद्वान् मनुष्य अन्नदेवे तो सुखपूर्व्वक स्वर्गको प्राप्त होवे ८ अतिथिकी निन्दा न करे और कभी वैर न करे ब्रह्मके जाननेवाले को अन्न देवे तो यही दान श्रेष्ठ होता है ९ थकेहुए, जिसको कभी देखा न हो ऐसे राहमें वर्तमानको जो अन्न देताहै वह बहुत उत्तम उत्तम सब धर्म्मोंको प्राप्त होताहै १० पितर देवता ब्राह्मण और अतिथियों को जो नर अन्नोंसे प्रसन्न करताहै उसकी अपार पुण्य होतीहै ११ बड़े पापों को भी करके अर्थी विशेष करके ब्राह्मणको जो अन्न देताहै वह पापोंसे छूटजाताहै १२ ब्राह्मणोंमें अन्नका दान देवे तो वह नाशरहित दानहोताहै और शूद्रकोभी देवे तोभी बड़ा फल होता है इससे अन्नका दान शूद्र और ब्राह्मण में श्रेष्ठ है १३ गोत्र चरण और पढ़ना नहीं पूंछे भिक्षुक ब्राह्मण आवे तो उसको अन्नदेदेवे और वह लेकर चलाजावे १४ अन्न देनेवालेके शुभ वृक्ष सब कामना और फल से युक्त आनन्दयुक्त इसलोक और स्वर्ग्ग लोक में होते हैं १५ हे नारदमुनि अन्नदान से जो लोक मिलते हैं उनको सुनो कि उन महात्माओं के विमान आकाश में प्रकाशित होतेहैं १६ जोकि अनेक संस्थानरूप और अनेक प्रकारकी काम-नाओंसे युक्त होते हैं सब कामना और फलके देनेवाले वृक्ष भुवन में स्थित होते हैं १७ सोनेकी सुंदर बावली चारोंओर विद्यमानहैं और सैकड़ों विमान जिनमें सुन्दर शब्द होरहे हैं १८ भक्ष्य और भोज्यमय पहाड़हैं वस्त्र और गहने भी ढेरके ढेर हैं नदियां दू-

बहरहीहैं और घीकेपहाड़हैं १९ सुंदर वर्णोंके उत्तम महलहैं और सोनेकी उज्ज्वल शय्याहैं ये सब अन्न देनेवालोंको मिलतेहैं तिससे अन्नका देनेवाला होवे २० ये लोक पुण्य करने वालेको मिलते हैं अन्न दानमें बड़ाही फलहै तिससे पृथ्वीमें मनुष्योंको विशेषकरके अन्नका दान देना योग्यहै २१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेअन्नदानप्रशंसानामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

वृक्ष, पौसाला, सरोवर, तप, पढ़ना और धर्मका व्याख्यान ॥

महादेवजी नारदजी से बोले कि जलका दान भी दानोंमें सदा उत्तम है तिससे बावली, कुंवा और ताल बनवावे १ कुकर्मी भी पुरुष जो कुंवां बनवावें और उनमें जल निकले तो उसके भी आधे पाप नाश होजातेहैं और सदैव अच्छे कर्मकरै तो उसकी क्याबात है २ जिसके खात और तालाब या कुँवांमें गौवें ब्राह्मण और साधु मनुष्य जलपीवतेहैं वह वंशको तारदेताहै ३ गरमीके समयमें जिसका जलरहता है उसको घोर विषमक्लेश कदाचित् भी नहीं प्राप्त होते ४ अब तालाबोंके खुदवानेसे जो गुणहोतेहैं तिनको कहतेहैं तालाबका बनवानेवाला सब जगह तीनोंलोकमें पूजित होताहै ५ अथवा मित्र का स्थान जो कि मित्रकी मैत्री का बढ़ानेवाला कीर्त्ति का उत्पन्न करनेवाला और श्रेष्ठहै तालाबका निवेशनभी ६ विद्वान्लोग कहतेहैं कि धर्म अर्थ कामका फलहै तालाब देशमें सुकृत है क्षेत्रके बीच महाश्रय है ७ चार प्रकारके प्राणियोंके तालाब को उपलक्षित करतेहैं सब तालाब उत्तम कल्याणको देते हैं ८ देवता मनुष्य गन्धर्व पितर नाग राक्षस और स्थावर प्राणी ये तालाबको सेवन करतेहैं ९ जिसके तालाबमें वर्षाऋतुमें जल रहताहै तिसके बनवानेवालेको अग्निहोत्रका फल निस्संदेह मिलता है १० हेमन्त और शिशिरऋतुमें जिसका जल रहता है उसके बनवानेवाले को हजार गोदान का फल निस्सन्देह प्राप्त होता है ११ वसन्त और

ग्रीष्मऋतुमें जिसका जल रहताहै विद्वान्लोग कहते हैं कि उसके बनवानेवाले को अतिरात्र और अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है १२ तदनन्तर महादेवजी नारदजीसे कहतेहैं कि हे महर्षे अब इन वृक्षोंके लगानेमें गुणोंको सुनो अतीत और अनागत ये दोनों पितृ वंशहैं १३ इनको वृक्षका लगानेवाला तार देताहै तिससे वृक्षों को लगावे वृक्षों के लगानेसेही निस्सन्देह पुत्र और पौत्र होते हैं १४ परलोक में प्राप्त होकर नाशरहित लोकों को प्राप्त होता है वृक्ष फूलों से देवताओं के सब समूह पत्रों से पितर १५ और छाया से सब अतिथियों को पूजते हैं किन्नर, सर्प्प, राक्षस, देवता, गन्धर्व्व, मनुष्य १६ और ऋषियों के समूह वृक्षोंका आश्रय करते हैं फूले और फलयुक्त हुए तो मनुष्योंको तृप्त करते हैं १७ इसलोक और परलोक में धर्म्म से वही पुत्र हैं कि जे ब्राह्मण तालाव, वृक्ष, इष्ट, यज्ञों के करनेवाले हैं १८ ये सब और सत्य बोलनेवाले स्वर्ग्ग ही में बसते हैं सत्यही परंब्रह्म है सत्यही परम तपस्याहै १९ सत्यही परयज्ञ है सत्यही परंश्रुत है देवताओं में सत्यही जागता है सत्य ही परमपदहै २० तपस्या यज्ञ पुण्य और देवर्षियोंका पूजन आद्य विधि और विद्या ये सब सत्य में प्रतिष्ठित हैं २१ सत्यही यज्ञ, दान, मन्त्र, सरस्वतीदेवी, ब्रतचर्या और ओंकार है २२ सत्यहीं से पवन चलता है सूर्य्य तपते हैं अग्नि भस्म करते हैं और स्वर्ग्ग भी सत्यही से स्थितहै २३ सत्य बोलनेवाला सब देवताओंका पूजन सब तीर्थों का स्नान इन सबको निस्सन्देह प्राप्त होता है २४ हजार अश्वमेध यज्ञके समान सत्यका बोलनाहै सबको सब यज्ञों का सत्यही शेष रहजाता है २५ सत्य से देवता पितर और ऋषि प्रसन्न होजाते हैं मुनिलोग सत्यही को परंधर्म्म परम्पद २६ और परंब्रह्म कहतेहैं तिससे सत्यही तुमसे कहताहूं सत्यमें निरत होकर मुनिलोग सुदुष्कर तपस्याको करके २७ सत्य धर्ममें रत सिद्धहुए वहांसे स्वर्ग्ग को अप्सरा गणोंसेयुक्त विमानों में चढ़कर प्राप्तहुए हैं २८ इससे सदैव सत्यही कहनाचाहिये सत्यसे अधिक कोई नहीं है अथाह, भारी, सिद्ध, और अच्छे तीर्थ में पवित्र हृदययुक्त मनु-

ष्य २९ शुद्ध मनसे युक्तहोकर स्नानकरें वही स्नान श्रेष्ठ कहाते हैं अपने वा दूसरे वा पुत्रके लिये भी जो मनुष्य झूंठ नहीं बोलते हैं वे स्वर्ग्ग में जाते हैं ३० वेद यज्ञ और मन्त्र ब्राह्मणों में नित्यही हैं परन्तु सत्यके छोड़नेसे वे शोभित नहीं होतेहैं तिससे सत्यही बोले ३१ नारदजीने महादेवजीसे कहा कि फिर विशेषकर सब वर्ण और ब्राह्मणोंकी तपस्या का बल कहिये ३२ तब महादेवजी ने कहा तपस्या ध्यान सम्पूर्ण कामना और अर्थ के साधन करनेवाले और द्विजातियोंकी सुदुष्कर होती है उसको मैं तुमसे कहताहूं सुनो ३३ तप ही श्रेष्ठ कहा है तपही से फल को प्राप्त होता है जो नित्यही तपस्या में रतहै वह देवताओं के साथ आनन्द को प्राप्त होता है ३४ तपस्याही से स्वर्ग्ग, यश, मोक्ष और और भी अधिक प्राप्त होताहै ३५ ज्ञान, विज्ञान, सम्पत्ति, सौभाग्य, रूप और मनसे जिस जिस वस्तुकी इच्छा करताहै वह सब तपस्यासे प्राप्त होताहै ३६ तपस्याके नहीं करनेवाले ब्रह्मलोकको कभी नहींजाते जिस किसी कार्य्यकी इच्छाकर मनुष्य तपस्या करता है ३७ तिस सबको परलोक या इसीलोकमें वह प्राप्त होताहै मदिरा पीनेवाला, पराई स्त्री से मैथुन करनेवाला, ब्राह्मणका मारनेवाला, गुरुकी स्त्री से मैथुन करनेवाला ये सब तपस्या से तरते हैं और सबसे छूटजाते हैं ३८ निश्चय सब के ईश्वर महादेव, सनातन विष्णुजी, ब्रह्मा, अग्नि, इन्द्र और जे तपस्यामें और भी युक्तहैं ३९ ते ऊर्ध्वरेता मुनियों के छियासी हज़ार तपस्याही से देवताओं के साथ आनन्द को करते हैं ४० तपस्याही से इन्द्र ने राज्य प्राप्तकी और तपस्यासे ही सब की पालनाकरते हैं और प्रतिदिन सबको वृत्तिदेते हैं ४१ सूर्य और चन्द्रमा देवता सबलोकों के हित में रतहैं तपस्याहीसे नक्षत्र और ग्रह प्रकाशित होते हैं ४२ सब वस्तुओं को तपसेही प्राप्त होते हैं और सब सुखोंको भोग करते हैं और जो वनमें वनके मूल फलोंको भोजनकर तपस्या करता है ४३ जो वेदको पहले पढ़ताहै यह भी तपसेही होताहै और वेदके पढ़ाने से ब्राह्मणों में श्रेष्ठको जो पुण्य प्राप्त होताहै ४४ वह अध्यायके जपसे द्विगुणे फलको भोग करता

है चन्द्रमा और सूर्य्यके उदय विना संसार जैसे अन्धकारयुक्त रहताहै ४५ तैसेही विना पुराणके ध्यान करना भी होताहै और जो तपस्या कररहा है और शास्त्र से ज्ञानको धारण करताहै ४६ और मनुष्योंको समझाताहै तिससे पूज्य गुरु कौन होगा सब पात्रों से पुराणका जाननेवाला पात्र श्रेष्ठहै ४७ गिरनेसे जो रक्षाकरै उसको पात्र कहते हैं धन, धान्य, सोना, कपड़े अनेक प्रकारके ४८ जे सुपात्रको देते हैं ते श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होते हैं गऊ, भैंस, हाथी, घोड़े ये सब बहुत सुन्दर ४९ जो मुख्यको देता है तिसके पुण्य के फल को सुनो वह सब लोकों के अक्षय अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त होताहै ५० और जो जोतीहुई, सुन्दर, फलयुक्त पृथ्वी को मुख्यही को देताहै वह दश पहले और दश पीछेकी पीढ़ियों को तारदेताहै ५१ और सुन्दर विमानपर चढ़कर विष्णुलोक को जाता है देवता गोक्षणक यज्ञों और बलियों पुष्प की पूजाओं से वैसा प्रसन्न नहीं होतेहैं जैसा पुस्तकके बांचनेसे होते हैं विष्णुके मन्दिर में जो धर्म पुस्तक को बँचवाताहै ५२। ५३ और देवी, महादेव, गणेश और सूर्यके स्थानमेंभी जो बँचवाताहै वह मनुष्य राजसूय और अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है ५४ इतिहास पुराणों से पुस्तक बांचनेका पुण्य होताहै और सब कामनाओंको प्राप्तहोताहै और सूर्य्यलोक को वह भेदन कर ५५ ब्रह्मलोकको प्राप्त होता है सौकल्प वहां रहकर पृथ्वी में राजा होताहै ५६ हज़ार अश्वमेध यज्ञके करनेसे जो फल होता है वही फल देवताके आगे पुस्तक बांचनेसे उस पुरुषको प्राप्त होताहै ५७ तिससे सब यत्नसे इतिहास पुराणों से विष्णुके मन्दिर में पुस्तक को बँचवावे विष्णुजी और अन्य भी देवताओंको इसके समान और प्रीति करनेवाला नहीं है ५८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादे वृक्षप्रपासरोवरतपोऽध्ययनधर्मव्याख्यानमाहात्म्यंनामसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

शास्त्रकी व्याख्या और महिमा वर्णन॥

महादेवजी नारदजी से बोले कि यहांपर पुराने इतिहासको कहताहूं जिसमें श्रेष्ठ पुण्यहै और सब पापोंको नाशताहै १ ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमारने ब्रह्माजी के नमस्कार कर इस हमारे आख्यानको कहाहै २ सनत्कुमारजी बोले कि आनन्दयुक्त श्रुतियों समेत मैं धर्म्मराजजी के देखनेको गया तो परमभक्तिसे सुन्दर आसन उन्होंने मुझे दिया ३ उसपर बैठकर मैंने कुछ अद्भुत देखा कि सोने का विमान जिसमें मूंगाओंकी वेदी बनीहुई हैं ४ मणि और मोतियोंसे विचित्र किंकिणीके जाल शोभित होरहेहैं तिसपर अपने आसनसे आतेहुए पुरुषको ५ देखकर संभ्रमसे विभुधर्म्मजी उठकर दहना हाथ पकड़कर अर्घसे पूजन करतेभये ६ और शिर सूंघकर अपने आगे बैठालकर पीछेसे पूजनकर देवेश धर्म्मजी यह वचनबोले ७ कि हे धर्म्मदर्शिन् आपका अच्छा आगमन हुआ आपके दर्शनसे मैं प्रसन्नहूं आप हमारे समीप स्थित होकर कुछ ज्ञान हमसे कहिये ८ फिर जहां ब्रह्माजी स्थितहैं वहां आप जावेंगे ऐसा कहतेही थे कि श्रेष्ठ विमानपर चढ़ेहुए दूसरे ९ पुरुष, देव, धर्मराजजीके पास आगये तब उन्होंने नम्रतासे उनका भी पूजनकिया १० तब धर्मजीसे नारदजी बोले कि इन्होंने क्या कर्म्म कियाथा जिनके ऊपर आप बहुत प्रसन्न हुएहैं ११ इसमें मुझको बड़ा आश्चर्य्य है कि आपने अपनेही हाथसे इनकी पूजाकी १२ तैसेही दूसरे नरकीभी पूजाकी मैं श्रेष्ठ विमानमें आनेवाले इनको अच्छे कर्म्म करनेवाले मानता हूं १३ कि जिनकी आपने अपने हाथ से पूजाकी आपकी पूजा ब्रह्मा विष्णु और शिवादिक सदा करते हैं १४ जिनके इसप्रकारके परमपुण्यहैं इन्होंने क्या कर्म कियेथे हे सर्वज्ञ हमसे कहिये कि जिस कर्मके करनेसे ये सुन्दरफलको प्राप्तहुएहैं १५ यह सुनकर धर्मजी बोले कि हे महामते इनके कियेहुए कर्म सुनो जिसको करके यहांपर पूज्य प्राप्तहुएहैं १६ वैदिशनामनगर पृथ्वीमें प्रसि-

हुहै वहांके राजा धरापालनामी थे १७ पूर्वहीं किसीसमयमें पार्वती देवीने क्रोधसे अपने गणको शापदियाथा कि हमको छोड़कर दूसरीस्त्री श्रेष्ठ नहीं है जोकि हम स्वामीके हृदयमें प्रविष्टहैं इसीतरहसे क्रोध से शाप देदिया १८ कि बारहवर्षतक तू सियारहो ऐसा कहतेही वह सियार होकर पृथ्वी में घूमने लगा १९ फिर पार्व्वती जी ने कहा कि हेपुत्रवेतसी और वेत्रवती के सङ्गम में तुम्हारे शापका अन्त होगा २० वहींपर जाकर उसने विना भोजन के व्रतको कर उसी क्षेत्र में प्राणों को छोड़दिया तो सुन्दररूप धारणकर विष्णुजी के समीप चलागया २१ वहां पर यह बड़ाभारी आश्चर्य्य देखकर धरापाल राजाने विष्णुजी का मन्दिर बनवाकर उसी क्षेत्र में उन्हों ने भी प्राण छोड़ दिये २२ तो सुन्दर शरीर धारणकर प्रभुजी को वहां पर स्थापितकिया और उसीपुरमें सब मनुष्योंको भगवान् के दर्शन में लगाकर २३ विष्णुजी का वह सुन्दरस्थान जो कि सदैव मनुष्यों से पूर्णथा उसमें ब्राह्मणों के समूहों की पूजाकर २४ इतिहास और पुराणके जाननेवाले विद्यामें श्रेष्ठ और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ बांचनेवाले की विशेष कर पूजा कर २५ चन्दन और फूल आदिकों से पुस्तक की भी पूजाकर नम्रता समेत राजाने बांचनेवाले से कहा २६ कि यह विष्णुजीका स्थान आपके आगे बनवायाहै चारों वर्ण के मनुष्य इसमें सुनने की इच्छा से आवेंगे २७ हे द्विजश्रेष्ठ आप स्थितहोकर जब तक पूरासालहो तबतक पुस्तक को बांचिये और इस उत्तम जीविका को ग्रहण कीजिये २८ सोने के सौ निष्क हम आपको पूरावर्ष होनेपर अपने कल्याण के लिये देंगे २९ इस प्रकार पुस्तक बांचना जो कि पुण्यकारी है वह प्रवृत्त हुआ और सालभरतक रहा ३० तदनंतर आयुके नाशसे कालके धर्म अर्थात् नाश को प्राप्तहुए तो विष्णुजी ने आकाश से विमानभेजा उस पर चढ़कर विष्णुलोकको चलेगये ३१ यहकर्मोंकी व्युष्टिहुई इसप्रकार पुण्यचरित्र बड़े पुण्यसमेत पवित्र पापका नाशनेवाला पाद्मपुराण सुना ३२ सब देवताओं की चन्दन और फूल के उपहारों से वैसी प्रसन्नता नहींहोती जैसी पुराण के सुननेसे होती है ३३ सोना,रत्ना-

दिक वस्तु, कपड़े सम्पूर्ण, गांव और नगरों के दानसे भी वैसी प्रसन्नता नहींहोती ३४ जैसी सब देवताओंकी प्रीति इतिहास और पुराणोंके धर्म सुननेसे होती है ३५ तैसीही साध्य सब अर्थ और कामना और कन्यादानमें भी होती है ३६ परन्तु इनसे अधिक पुस्तकके बांचने से होती है बहुत कहने से क्याहै और में वैसी भगवान् की प्रीति नहीं होती ३७ पुण्यचरित्र में विशेष होती है यह गुह्य चरित्र हे विप्र नारदजी तुम से कहा जो और भी मनुष्यों में श्रेष्ठ ब्राह्मण यहां आया ३८ और संगतिसे उत्तम धर्मके श्रवणको सुनकर परमात्माकी श्रद्धासे उसकी भक्तिहोगई ३९ तो उसने महात्मा बांचनेवाले की प्रदक्षिणा की और उस ब्राह्मणने सोनेके माषक को दिया ४० और अत्यन्त लालचके कारणसे उसने कभी कोईदान नहीं किया था परन्तु सुपात्र के दान से उस को निस्सन्देह फलकी प्राप्ति हुई ४१ महादेवजी बोले कि हे महामुने नारदजी यह कर्म उन्हों ने कहा ४२ इस पुण्यका माहात्म्य जे बुद्धिमान् सुनते हैं उनकी दुर्गति कभी जन्म जन्ममें नहीं होती है ४३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेशास्त्रव्याख्यामहिमानामाष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

उन्तीसवां अध्याय॥

गोपीचन्दन का माहात्म्य॥

महादेवजी बोले कि हे नारदमुनि और भी गोपीचन्दनका माहात्म्य जैसा मैंने देखा और सुनाहै वह कहताहूं सुनो १ ब्राह्मण वा वैश्य वा शूद्र अथवा द्विजहो परन्तु गोपीचन्दन से लिप्त अंगवालाहो तो ब्रह्महत्या से छूटजाताहै २ और जो गोपीचन्दन का तिलक करताहै वह मदिरापान आदिके दोषोंसे निस्सन्देह छूटजाता है ३ गोपीचंदनसे लिप्तअङ्गवाला विष्णुमें तत्पर वैष्णव सब दोषों से छूटजाता है जैसे गङ्गाजी के जलसे सब दोष नष्ट होजाते हैं ४ ब्राह्मण का मारनेवाला, मदिरा पीनेवाला, सोना चुरानेवाला, और गुरुजीकी स्त्रीसे मैथुन करनेवाला शूद्र वा द्विजहो ५ तो वह सैकड़ों

जन्मके पापोंसे छूटजाताहै विशेषकरके सबके लिये द्वादश तिलक कहे गयेहैं ६ ऐश्वर्य्यकी इच्छावाले वैष्णव ब्राह्मणोंको लगानेचाहिये माथेमें दण्डके आकार छाती में कमलके आकार ७ भुजा में बांसके पत्रके समान और दीपक के आकार बनावे दहने भुजा में चारचक्र ८ नाममुद्रा दो तिनमें एकशङ्ख बीच और किनारोंमें दो दो कमल धारणकरै ९ बायें में चारशङ्ख और नाममुद्रा पहले की तरह बनावे एकचक्र और दोदो गदाभी बनावै १० माथेमें एकगदा हृदयमें नाममुद्रा तीन तीन विचित्र और बीचमें दोदो शङ्ख बनावे ११ हृदय पसली और स्तनोंके ऊपर गदा और कमल भुजा की तरह बनावे और तीन चार चक्र कर्णकी मूलमें दो और नीचे १२ एक एक और तिलकोंमें धारणकरै और सम्प्रदायज मुद्राको शिष्टोंके अनुसारसे धारणकरै १३ जैसी रुचिहो इसमें नियम नहीं है तिलकके धारण करनेसे चाण्डाल भी शुद्ध होजातेहैं १४ और वैष्णवोंके निन्दकको हम चाण्डालसे भी अधिक मानते हैं वह भी तिलकके धारण करनेसे विष्णुके समान जानने योग्य है इसमें विचार नहीं करना चाहिये १५ वैष्णव ब्राह्मण जोकि विष्णुके ध्यानमें तत्परहै उसमें और विष्णुजी में कुछ अन्तर नहीं जानना चाहिये वही विष्णु होताहै १६ और वेदमें यह पढ़ा जाताहै कि शङ्ख चक्र का धारनेवाला ब्राह्मण वेदके पढ़ने में तत्परहो तो वही नारायणहै १७ तप्त चक्रका धारण करनेवाला ब्राह्मण पंक्ति पावनोंको पवित्र करताहै तिसकी भक्तिसे युक्त महापापोंसे छूटजाता है १८ तुलसी के पत्रकी माला वा तुलसी के काष्ठकी मालाको धारणकर ब्राह्मण निस्सन्देह मुक्तिका भागी होताहै १९ वैष्णव ब्राह्मण विष्णुरूपही है और मरणके समयमें जिसके गोपीचन्दनका तिलक लगाहोता है २० वह विमानपर चढ़कर विष्णुजीके परम्पद को प्राप्त होताहै कलियुग में गोपीचन्दनके तिलकको जे मनुष्यों में श्रेष्ठ लगाते हैं उनकी दुर्गति कभी नहीं होती शङ्ख और चक्रको दहिने औ बायें २१ । २२ हाथमें धारणकर विशेषकर महापापोंसे छूट जाते हैं मदिरा पीनेवाले स्त्री और बालकों के मारनेवाले २३ और

स्त्रियोंमें गमन करनेवाले जो पृथ्वी में दिखलाई देते हैं उनकी भी भक्तोंके दर्शनसे निस्सन्देह मुक्तिहोजाती है २४ महादेवजी कहते हैं कि इस तुच्छ संसार में वैष्णवजन कहां हैं विष्णुजी की भक्तिके प्रसादसे मैं वैष्णव हुआहूं २५ काशी में बसकर रामराम जपनेके पुण्यादि योगसे निस्सन्देह मैं शिव हुआहूं २६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेगोपीचन्दनमाहात्म्यंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

दीपव्रत और माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी महादेवजीसे पूछनेलगे हे ब्रह्मन् सब व्रतोंमें श्रेष्ठ संवत्सर नाम दीपकी उत्तम विधि और माहात्म्यको हमसे कहिये १ जिससे सब व्रत निस्संदेह होजावें और सब कामनाओंकी समृद्धि हो और सब पाप नाशहोजावें २ तब महादेवजी बोले कि हेनारद मुनि तुमसे पापका नाशने वाला रहस्य कहता हूं जिसके सुनने से ब्राह्मण गऊ और मित्रका मारनेवाला गुरु की स्त्री से मैथुन करने वाला ३ विश्वासघात करनेहारा क्रूर आत्मावाला ये सब सदैवकी मुक्तिको प्राप्त होते हैं और सैकड़ों कुलों का उद्धार कर वह मनुष्य विष्णुलोक को जाताहै ४ वही संवत्सर दीप की उत्तम विधि और माहात्म्य को मैं कहताहूं ५ हेमन्तऋतुके पहले महीने अगहनकी सुन्दर एकादशी को प्राप्त होकर काम क्रोध से रहित मनुष्य ब्राह्म मुहूर्त्त में उठकर ६ दीप देनेवाला मनुष्य नदी संगमतीर्थों में तालाव नदियों या घरही में स्नानकरै ७ कि मैंने सब तीर्थों में स्नान कियाहै वह स्नान हमको सदा दीजिये ८ स्नानमंत्रः। देवता और पितरोंको तर्पणकर जपकर जितेन्द्रियहो तिस देवप्रभु लक्ष्मीनारायणजीको पूजै पञ्चामृत चन्दन और जलसे स्नानकरावे ९ कि हे देवदेव हे संसारके पति हेदेवताओं के स्वामी आपने लक्ष्मीसमेत स्नान किया अब घोर संसार बन्धनसे हमको उद्धारकरो १० तिस पीछे भक्ति से वैदिक और पुराण के मंत्रों से लक्ष्मीसमेत जनार्दन

देवको पूजै ११ अतोदेवयापौरुषेण इसमंत्रसे चन्दन आदिक च-
ढ़ावे मत्स्य,कूर्म्म,वाराह,नरसिंह,बुद्धदेव,कल्की,रामदेव और वि-
ष्णुदेवके नमस्कारहैं सर्वात्मा तुम्हारे नमस्कारहैं ऐसा कहकर शिर
की पूजाकरै केशव आदिकों के नामोंसे भगवान्को पूजै १२।१३।
१४ वनस्पतिका सुन्दररस निर्मल सुगन्धित पवित्रहै हेदेव देवेश
इस धूपको ग्रहणकरो आपके नमस्कारहै १५ धूपमंत्रः॥ दीप अ-
न्धकार को नाशता और कान्ति को देताहै तिससे दीप के दानसे
जनार्दनजी हमारे ऊपर प्रसन्नहों १६ दीपमंत्रः॥ हेदेवदेव हेसंसार
के पति परम अमृत उत्तम इस अन्नादिक नैवेद्य को लक्ष्मी समेत
आप ग्रहणकरो १७ नैवेद्यमंत्रः॥ तदनन्तर भक्तिसे अर्घ्यदेवै और
जनार्दन भगवान्को इसीप्रकार ध्यानकर हाथमें फल और शङ्खसे
जललेवे १८ कि हेकेशवजी हज़ार जन्मोंसे जो हमने पाप कियेहों
वे सब आपके प्रसादसे नाशको प्राप्त होजावें १९ इतिअर्घमंत्रः॥
तदनंतर सुंदर नवीन घड़ेको घी या तेलसे पूर्णकर लक्ष्मीनारायणं
जी के आगेलावे २० तिसके ऊपर तांबे या मिट्टीका बर्तन धरकर
उसी बर्तनमें नवडोरों के तुल्य बत्तीको बनाकर २१ सुनिश्चलघड़ा
स्थापितकर दीपको जलाकर पवित्रहोकर मनुष्य फूल और चंदन
आदिकोंसे पूजनकर तिस पीछे संकल्पकरै २२ कि इसमंत्रसे विना
पवनके धामोंमें कुशली प्राणीके काम एक सम्राट् आपही विराज-
मानहैं २३ मैंने संवत्सरदीप जो कि अविच्छिन्न अग्निहोत्रहै तिस
को जलायाहै इससे हे केशवजी हमारे ऊपर प्रसन्नहो २४ तदनंतर
वेदके ज्ञानमें परायण जितेन्द्रिय होकर पतित पापी और पाखण्डी
मनुष्योंसे बातचीत न करे २५ रात्रिमें जागरणकरै गीत नाच और
बाजा इत्यादिक बजवावे पुण्यके पाठ अनेकप्रकारके धर्म्मके आ-
ख्यान कहै व्रत करै २६ तदनन्तर प्रातःकाल उठकर पूर्व दिन की
क्रियाकर भक्तिसे ब्राह्मणोंको भोजन करावे और यथाशक्ति उनकी
पूजन करै २७ और आपभी पारणकर नमस्कारकर विसर्जन करै
इसीप्रकार दृढ़व्रत होकर वर्षपर्य्यंत करै २८ दीप सोनेका पल
का या आधेपल या चौथाई पल का हो बत्ती चांदी की

एक पल या आधेपलकी कही है २९ घीसे पूर्णघड़ा तांबे के बर्तन से युक्तहो मुक्तिके द्वारकी इच्छा करनेवाला भक्तियुक्त मनुष्य यथाशक्ति से लक्ष्मीनारायण देव की मूर्ति सोने की बनवावे तदनन्तर वह विद्वान् मनुष्य साधुओंमें श्रेष्ठ ब्राह्मणों को निमंत्रण करे ३०। ३१ उत्तम पक्षमें बारह मध्यम पक्षमें छः निकृष्ट पक्षमें तीनही ब्राह्मणों को निमंत्रण दे और एक कर्मका करनेवाला ब्राह्मण हो ३२ जोकि स्त्रीसहित शान्त,विशेषकर क्रियायुक्त, इतिहास पुराण और धर्म्म का जाननेवाला, कोमल ३३ पिताका भक्त, गुरुजी की सेवा करनेवाला, देवता और ब्राह्मणों की पूजा करनेवालाहो उनकी पादार्घदानकी विधिसे कपड़े अलंकार और भूषणों से ३४ स्त्रीसमेत अकेलेहीकी भक्तिसे पूर्ववत् पूजाकर दीपकी वत्तीसेयुक्त लक्ष्मीनारायणदेवको ३५ घी के घड़ेसे संयुक्त तांबेके बर्तनके ऊपर स्थापित कर तिस पीछे ब्राह्मणको देवे और इसमंत्रसे नारायण परमात्माको ध्यानकरै तिसको तुम से कहताहूं ३६ कि अविद्यारूपी अन्धकार से व्याप्त संसारमें पापका नाशनेवाला ज्ञान और मोक्षका देनेवाला मैंने यह दीपदानदियाहै ३७ इतिदीपमन्त्रः॥ फिर यथाशक्ति भक्ति से ब्राह्मणको दक्षिणा देकर पीछेसे घी,खीर, लड्डुओं से ब्राह्मणोंको भोजन करावे ३८ तिस पीछे स्त्रीसमेत ब्राह्मणको कपड़ोंसे आच्छादितकरै सामग्रियों समेत शय्या और बछड़े सहित गऊकोदेवे ३९ फिर यथा द्रव्यके अनुसार उन ब्राह्मणोंकोभी दक्षिणा देवे मित्र स्वजन और बन्धुओंको भोजन और पूजनकरावे ४० इसप्रकार दीप व्रतकी समाप्तिमें बड़ा उत्सवकर विसर्जनकर पीछेसे हाथ जोड़कर क्षमाकरावे ४१ इसप्रकार करनेसे जो पुण्य और संक्रांति संक्रांति के करने से जो पुण्यहै तिसी फलको मनुष्य संवत्सर दीपके करने से प्राप्तहोताहै ४२ मासके व्रतोंसे जो पुण्यहै वहीपुण्य मनुष्योंको संवत्सरदीपके व्रतके करने और दीपदानसे होती है ४३ यथासंख्य दान व्रत और योगव्रतोंसे जो फलहोताहै वह सांवत्सरदीपके करने से होताहै ४४ गऊ, पृथ्वी, सोनाको दान और विशेषकर घर आदि के दानसे जो फल विद्वान्को प्राप्तहोता है वही फल दीपके देने से

होता है ४५ दीपका देनेवाला कान्ति, नाशरहित धन, ज्ञान और परमसुखको प्राप्तहोताहै ४६ और दीपके दानसे सौभाग्य, अत्यंत निर्मल विद्या, आरोग्य और परमऐश्वर्य को निस्सन्देह प्राप्तहोता है ४७ दीपका देनेवाला सब लक्षणोंसे संयुक्त सुभगा स्त्री, पुत्र, पौत्र, प्रपौत्रों और नाशरहित सन्तानको प्राप्तहोताहै ४८ ब्राह्मण परम ज्ञान, क्षत्रिय उत्तमराज्य, वैश्य धन और सब पशुओंको और शूद्र सुखको प्राप्तहोताहै ४९ कुमारी सबलक्षणयुक्त स्वामी और अच्छी उमर, पुत्र और बहुत से पौत्रों को प्राप्तहोती है ५० और वह स्त्री कभी विधवापनको नहींदेखती और दीपदानके प्रभावसे वियोगको भी नहीं प्राप्त होती ५१ और दीपदान से आधि और व्याधि भी नहीं प्राप्तहोती डराहुआ डरसे छूटजाताहै और बँधाहुआ बंधनसे छूटजाताहै ५२ दीपके व्रतमें परायण ब्रह्महत्यादिक पापोंसे निस्स-न्देह छूटजाता है जैसे कि ब्रह्माका वचन है ५३ जिसने भगवान्‌को सांवत्सर दीप जलाया उसने निस्सन्देह चान्द्रायण कृच्छ्र करलिये ५४ वही महात्मा धन्यहैं और उन्हींने जन्मका फल प्राप्त किया है जिन्हों ने भक्तिसे भगवान्‌की पूजाकर सांवत्सर दीप जलायाहै ५५ जे दीपकी बत्तीके देखनेवाले भी हैं वेभी देवताओं के दुर्लभ परम स्थानको प्राप्तहोतेहैं ५६ और जे यथाशक्ति से दीपमें तेलकी बत्ती को सदैव जलाते हैं वेभी परमगति को प्राप्त होतेहैं ५७ दीपक के शान्तिको प्राप्तहुए और मनुष्यों के कहतेहुए भी जो जलाने में न समर्थहो तो वे सब उसफलके भागीहोतेहैं ५८ जो थोड़ाथोड़ा तेल भिक्षा मांगकर विष्णुके दीपदान करताहै वहभी उसीपुण्यको प्राप्त होताहै ५९ और जलतेहुए दीपको जो अधम मनुष्य भी देखताहै और भगवान्‌के हाथ जोड़ताहै वह भी विष्णुलोक को प्राप्तहोताहै ६० दीपके जलाने में जो अपने आप बुद्धि करताहै वह सब पापों से छूटकर विष्णुलोक को प्राप्तहोताहै ६१ इसमें पुराने इतिहासको कहते हैं जिसके सुननेसे मनुष्य सब पापोंसे छूटजाता है ६२ सर-स्वती के सुन्दर किनारे सिद्धाश्रम था वहां पर पहले वेदके जानने वाले कपिलनाम ब्राह्मण बसतेथे ६३ वहव्रत उपवासों र-

हते,दरिद्री और वेदके जाननेवाले भी थे भिक्षा मांगकर कुटुम्बकी पालना करतेथे ६४ व्रत उपवास और नियमोंसे विष्णुजीकी आराधना करते और विधिसे विष्णुजीकी पूजनकर सदा दीप जलाते ६५ और उसी तैलको लेकर अपने घरमें भगवान् की पूजाकरपरमभक्तिसे भगवान् की प्रसन्नताके लिये दीप जलाते ६६ इसप्रकार कपिल महात्मा के करतेहुये तीक्ष्ण डाढ़वाला बिलार मूसोंको सदा खानेलगा ६७ वहांपर मूसोंके खानेकेलिये नित्यदिन बिलार आता भया तब कपिलजीने भगवान्के आगे खानेकेलिये ध्यानकिया ६८ तो उन्होंने जाना कि हमारे स्थानमें बिलारने बहुतसे मूसे खाडाले हैं जे जे तेल और बत्ती के हरनेकेलिये आते हैं ६९ तिन सबको बिलार खाडालताहै यह सब ध्यानसे समझकर इसी प्रकार वर्त्तमान रहकर किसी समय में कालके पर्य्ययसे ७० सपत्नीक उस ब्राह्मणने एकादशी में अपने घर में पवित्रहोकर व्रतकिया और भगवान् की पूजा ७१ तदनंतर स्तुति और नाचमें परायणहोकर ब्राह्मणने जागरण किया तो आधीरातमें निद्रासे मोहितहोगये ७२ तो उसी समय में तीक्ष्णडाढ़वाला बिलार आगया और घरकेकोनमें स्थितहोकर सदा नैवेद्यको खाजाताभया ७३ फिरछोटी मुसरियाको देखा कि वह तेल पीनेके लिये आई है और मन्द तेजवाले दीपमें बत्तीके चुराने में योग्यहै ७४ तो उसने पांवसे बत्तीको छुआ और बिलारके भयसे फिर बिलमें घुसगई उसके पांवसे जो बत्ती छुइगई तो दीप अच्छी तरह से जलने लगा ७५ और तेलका बर्त्तन भी नयगया तो उस समय में बड़ा प्रकाश होगया ब्राह्मण भी मोहिनी नींदको छोड़कर जागा ७६ और मूसों का खानेवाला बिलार भी उस रात्रिमें जागा तदनन्तर सबेरा होतेही ब्राह्मणने नित्यकी क्रियाकी ७७ और बंधुजनों समेत पारण किया इसीप्रकार महात्मा कपिलजी के वर्तमान रहते में ७८ उनके पुत्र पौत्र और उत्तम धन होताभया आरोग्य परम ऐश्वर्य्य और बड़ीभारी लक्ष्मीकोभी प्राप्तहुए ७९ दीपव्रतके प्रभाव से कपिलजी मोक्ष को प्राप्तहुए और पुण्यकारी सूर्य्य और चन्द्रमाके मण्डलको भेदनकर ८० दीपज्योति स्वरूपसे परमात्मा

में युक्त होगये और मुसरियाभी कालसे बिलके मध्यमें मरगई ८१ तो वह भी श्रेष्ठ विमान पर चढ़कर विष्णुलोक को चलीगई और बिलारभी कालपाकर मरा तो वहभी स्वर्गको ८२ श्रेष्ठ विमान में चढ़कर देवता और गन्धर्वों से सेवित अप्सरा और विद्याधरों के गणोंसे युक्त ८३ वह महातेजस्वी जयशब्दादिक मङ्गलों और नागों से स्तुतिको प्राप्त हुआ विष्णुलोक को जाताभया ८४ वहांपर हज़ार कोटि कल्प और सौ करोड़ कल्प अनेकप्रकार के भोगोंको भोगकर पृथ्वीमें राजा होताभया ८५ जिसका सुधर्म्मा नाम हुआ यह धर्मवान्, देवता और ब्राह्मणोंका पूजनेवाला, रूपवान्,ऐश्वर्य्य युक्त,महाबल और पराक्रमसे युक्तहुआ ८६ तिसकी अत्यन्तप्यारी स्त्री सब लक्षणों से युक्त, पतिकी सेवा करने वाली अत्यन्त सुन्दरी शीलयुक्त रूप सुन्दरी नामवाली हुई ८७ वह सब स्त्रियोंमें सुभगा होतीभई इसके पुत्र और कन्या बहुत होतीभई ८८ इसप्रकार स्त्री पुरुषों के प्रीतिपूर्वक विहार करते भगवान् के नेत्रोंका बोध करानेवाला कार्तिक महीना प्राप्तहुआ ८९ उस में भगवान् के परायण लोग दीप जलाते हैं और कृच्छ्र चान्द्रायणादिक व्रत और नियम ९० संसारके भयसे डरेहुए विष्णुभक्त लोग करते हैं तदनन्तर प्रबोधिनी एकादशीको प्राप्तहोकर राजा रानीसे बोले ९१ कि हे भद्रे पुण्यकारिणी प्रबोधिनी आन पहुंची इससमयमें जितेन्द्रिय होकर व्रतकर विष्णुकी तोंदीके कमलमें मैं पूजा करूंगा ९२ और पुष्कर तीर्थ में स्नानकर कमलनयन, अच्युत,देवताओंके स्वामी जनार्दन भगवान्की लक्ष्मी समेत पूजाकरूंगा ९३ पवित्र हास्ययुक्त, प्रियके हितमें लगीहुईने इसप्रकार स्वामी का वांछित सुनकर गुह्य वचन उनसे कहा ९४ कि हे राजन् हमारे हृदयमें भी कामना उत्पन्न हुई है रूप और सुन्दरता की वांछा मेरे हृदयमें वर्त्तमान है ९५ प्रथम पुष्कर तीर्थको आपके साथ जानेकी इच्छा है तब तो राजा स्त्रीसमेत हाथी घोड़ा रथ के समूह और पुरोहित को साथ लेकर पुष्कर जी में आगये वहां स्नान कर पितृ और देवताओं को ध्यान और तर्प्पण किया ९६ । ९७ और दीपों के समूह जलते हुए सब

से सुन्दर स्थानमें कमलनयन अच्युत देवेशजीको पूजा ९८ फिर देवताके मन्दिरमें लिखेहुए बिलारको देखा उसको देखकर राजाने पहले के जन्म कर्म्म को स्मरण किया ९९ और प्यारी रानीके कमलरूपी मुख को देखकर हँसा तब तो रूपसुन्दरी रानी बोली कि हे स्वामिन् हमारे सम्मुख देखकर आपके हँसने का क्या कारण है १०० तब तो प्रसन्नतायुक्त राजाने पहले के कर्म्म का फल कहना प्रारम्भ किया कि हे रानी पहले जन्ममें मैं ब्राह्मण के स्थानमें बिलार हुआथा १०१ वहांपर मैंने सैकड़ों हज़ारों मूसे खाये तदनंतर नारायणजीके आगे जो दीपकी रक्षा किया १०२ मूस खानेके बहानेसे मैंने यह कामकिया तबभी मुझे कर्मका फल विष्णुलोक प्राप्त हुआ और इससमय में राज्य प्राप्तहुई १०३ तब रूपसुन्दरी रानी बोली कि मुझको भी पहले जन्मका स्मरण हुआहै छोटी मुसरिया ब्राह्मण के स्थान में मैंथी १०४ कार्तिककी प्रबोधिनी एकादशी में दीप मन्द जल रहाथा तब मैं बत्ती चुरानेके लिये बिलसे निकली १०५ तो फूलों से पूजेहुए नारायण को देखा और नींदयुक्त ब्राह्मणको जगाया और तिसी समय में मैंने बत्ती खींची १०६ तब तो आप मेरे पकड़ने के लिये उठे तो मैं बिल के बीचमें आपको देखकर घुसगई १०७ घुसतेहुए मेरे पांवसे दीपकी बत्ती अच्छी तरह जलनेलगी और तेलका बर्तन नयगया तिसीसे मैं सुख भोग करनेलगी १०८ हे राजराजेन्द्र जो मैंने दीप प्रकाशित किया उसी से मैंने इससमय में उत्तम रूपको पाया १०९ आप तो स्वामी मिले राज्य पुत्र इसप्रकारका सुख और अत्यन्त दुर्लभ ज्ञान ये सब दीपके प्रकाशित करनेसे प्राप्तहुए ११० तिससे सब यत्नोंसे इस उत्तम दीप व्रतको हम और आप श्रेष्ठ भक्तिसे करेंगे १११ क्योंकि पूर्व्वजन्मके कर्मके फलसे राज्यादि सम्पदा प्राप्तहुई और पूर्व्वजन्मका स्मरण भी बनारहा और सब पाप नाशहोगये ११२ तिससे सब यत्नोंसे विधि और मन्त्रादि पूर्व्वक पुरुषोंको दीपदान करना चाहिये जिसका पुण्य चन्द्रमा, सूर्य्य और तारागण जबतक रहते हैं तब तक वह अनेक सुख भोगताहै ११३ इसप्रकारके वचन सुन श्रद्धा

युक्त और रानीसहित राजाने तिसी समयमें दीपव्रत को ११४ पुष्करतीर्थ में किया तो उसके प्रभावसे दोनोंको देवता और दानवों को दुर्लभ श्रेष्ठमुक्ति मिलतीभई ११५ यह दीपका माहात्म्य पृथ्वी में जे मनुष्य सुनते हैं ते सब पापों से छूटकर भगवान् के स्थानको प्राप्त होते हैं ११६ और जे पुरुष वा स्त्री भक्ति में तत्पर होकर इस व्रत को करते हैं उनके पाप छूटकर ब्रह्म सनातन को प्राप्त होते हैं ११७ महादेवजीने कहा कि हे विद्वन् नारदमुनि यह मुक्ति, सब सुख और धनका देनेवाला महाव्रत दीप व्रत तुमसे कहा ११८ इसके करने से उसीक्षण में पापके प्रभावों से उत्पन्न नेत्ररोग और आधि व्याधि सब नाश होजाते हैं ११९ दारिद्र्य, शोक, मोह और भ्रम नहीं होता और जन्म जन्ममें घरमें लक्ष्मी प्राप्त रहती है १२० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति-
नारदसंवादेदीपव्रतमाहात्म्यंनामत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

जन्माष्टमी व्रतका वर्णन ॥

नारदजी ने महादेवजी से पूछा कि हेदेवदेव हे संसार के स्वामी हेभक्तों के अभय देनेवाले हे महादेवजी हमारे ऊपर कृपाकरके व्रत को कहिये १ तब श्रीमहादेवजी बोले कि पहले सब पृथ्वीका भोग करनेवाला हरिश्चन्द्रनाम राजा हुआ तिसके ऊपर प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने कामनाओं की देनेवाली, सुन्दर, सब रत्नोंसे युक्त, दिव्य, बालसूर्यकी दीप्तिकेसमान, पुरी दी वहांपर स्थितहोकर राजा सातो द्वीपकी पृथ्वी को २। ३ धर्म्म से इस प्रकार पालनेलगे जैसे पिता अपने पुत्रको पाले धन धान्य और पुत्र नातियोंसेयुक्त राजा ४ शुभ राज्यकी पालना करतेहुए बड़ी विस्मयको प्राप्तहुआ कि ऐसी पहले कभी किसीकी राज्य नहीं रही ५ और न इसप्रकारके विमानपर और कोईचढ़े किसकर्मका फलहै जिससे मैं इन्द्रकी तरहहूं ६ इस प्रकार चिन्तायुक्त राजाने श्रेष्ठ विमानपर चढ़कर पर्वतों में श्रेष्ठ मेरुपर्वतको देखा ७ जहांपर महात्मा दूसरे सूर्यकी नाईं हिरण्यमय

शैलकी पट्टमें बैठेहुए थे ८ जिनका सनत्कुमार नामथा जो कि ब्रह्मर्षि, ज्ञान और योगमें परायणथे उनको देखकर विस्मययुक्त पूंछने की इच्छासे राजा विमान से उतरा ९ और प्रसन्न होकर उनके चरणों की वन्दना किया तब उन्होंने भी आशीर्वाद दिया फिर सुखपूर्वक बैठकर राजाने सनत्कुमारजी से पूंछा १० कि हे भगवन् यह दुर्लभ सम्पदा हमको किस कर्म से प्राप्तहुई है और पूर्वजन्मका मैं कौनहूं ११ यहसब आप कहें क्योंकि आपने मुझे ग्रहण किया है तब सनत्कुमारजी बोले कि हे राजन् पूर्वके वृत्तान्तका कारण कहता हूं सुनिये १२ जिसके करने से विशेष करके तुम्हारे ऊपर दयाहुई तुम पूर्वजन्म में सत्यवाणी बोलनेवाले पवित्र, वैश्य थे १३ अपना काम तुमने छोड़दियाथा इससे बांधवों ने तुम्हें छोड़दिया तब स्त्रीसमेत जीविकासे हीनहोकर १४ बांधवों को छोड़कर दूसरों के यहां जीविका की इच्छासे निकलगये परन्तु कहीं भी जीविका नहीं हुई तब दुर्भिक्षसे पीड़ित १५ एकवनमें कमल फूलेहुए तालाबको देख कर तुमने कमल ग्रहण किये १६ और उनको लेकर पुण्यकारिणी और कल्याणयुक्त काशीपुरी में आये १७ परंतु किसीने कमल मोल नहीं लिये तब तो वहांपर एकमठथा उससे निकलकर एक मनुष्य आया १८ और तुमभी वहां जाकर बाजोंका शब्द सुननेलगे तब तो तुमने बाजा बजानेवाले से पूंछा कि ये बाजा क्यों बज रहे हैं १९ तब तो उसने जवाबदिया कि इन्द्रद्युम्ननाम प्रसिद्ध काशीके राजा हैं २० तिनकी महाभागा कन्या चन्द्रावती जयंती अष्टमी का व्रत किये हुए है २१ तब तो वैश्य जहांपर वहथी वहां प्राप्तहुए और सन्तुष्टचित्त होकर बड़े आनन्दको प्राप्तहुए २२ और वहांपर देव वैतानिकविधि उन्होंने देखी कि जहांपर सूर्यसमेत भगवान् हरि जी पूजे जातेहैं २३ तिनकी भक्तिसे स्त्रीसमेत तुमने फूलोंसे पूजन किया और जो शेषथे उन्होंनेभी फूलोंसे पूजा २४ तब तो विस्मययुक्त काशिराजकी कन्या ने देखकर पूछा कि किसने यह पूजनकिया है तब तो सब कर्म और रक्षाकर्म भी वैश्यका किया हुआ जान कर २५ वैश्यके ऊपर प्रसन्न होकर उनको बहुतसा द्रव्य देनेलगी

परंतु वैश्यने द्रव्यनहीं लिया तब तो उसने भोजनकेलिये कहा २६ तो भोजन भी नहीं ग्रहण किया विष्णुसंयुक्त सूर्यजी को विधिपूर्वक पूजा २७ और रक्षाकिया था तदनन्तर प्रातःकाल तिन सबकी सलाह से इच्छापूर्वक निकल आये २८ यह वैश्यरूप तुमने और जन्ममें सुकृत इकट्ठा कियाथा फिर अपने कर्मके योगसे २९ नाश को प्राप्तहुए तो उसी भारीपुण्यसे विमान उससमय में प्राप्तहुआ हे राजन् पूर्वजन्मकेलिये हुए फलको भोग कररहेहो ३० तब राजा हरिश्चन्द्रजी बोले कि जो आपने कृपा किया है तो यह सब कहिये कि किस महीने में वह तिथि होती है और किस विधिसे करना चाहिये ३१ तब सनत्कुमारजी बोले कि हे राजन् मेरे कहनेको अच्छी तरह सुनिये श्रावण महीनाकी कृष्णपक्षकी अष्टमी में ३२ रोहिणी भी मिले तो वह जयंतीनाम तिथि कहाती है वारंवार जन्म इसव्रत के करने से नहीं लेना पड़ताहै ३३ जिस प्रकार ब्रह्माजी ने इसकी विधि हमसे कही थी उसीप्रकार से कहताहूं जिसके करने से पाप छूटकर विष्णुलोक को मनुष्य चला जाता है ३४ व्रत रहकर काले तिलों समेत स्नानकरै और पुष्ट घड़े का कलश स्थापनकरै उस में पंचरत्नभी छोड़े ३५ हीरा, मोती, वैडूर्य, पुष्पराग और इन्द्रनील को कात्यायनजी श्रेष्ठ पंचरत्न कहते हैं ३६ और तिस कलश के ऊपर लक्षणों से युक्त सोनेका बर्तनधर उसके ऊपर नन्दकी स्त्री यशोदाको सोनेही की बनवाकर धरै ३७ जो कि विस्मययुक्त मुखवाली और पुत्र कृष्णजी को दूध पीनेकेलिये स्तन देरही हों और कृष्णजी यशोदा माताका एकस्तन पीरहे हों और दूसरा हाथसे छुये हों ३८ माताको प्रेमसे देखकर वारंवार उनको सुख देरहेहों जब तक शक्ति विद्यमानहो तो सोनेही के कृष्णजीको बनवावे ३९ शक्तिके अनुसार दो निष्ककी मूर्ति बनवानी चाहिये और भी मूर्ति यशोदाजी की सोनेही की होवे शक्ति न हो तो लोहेही की बनवावे ४० रोहिणीजी भी सोनेकी हों चन्द्रमा चांदीका हो जो कि अंगूठे के बराबर हो और चार अंगुलकी रोहिणीजी हों ४१ कि जिनके कानों में कुण्डल और गलेमें कण्ठके गहने हों इसप्रकार के माता सहित संसारके स्वामी

गोविन्दजी को बनवाकर ४२ दूधआदिसे स्नान करावे और चन्दन चढ़ावे सफ़ेद दो कपड़े चढ़ावे फूलकी मालाओं से भी शोभित करै ४३ अनेक प्रकारके नैवेद्य और फल चढ़ावे दीपजलावे और फूलके मंडपसे शोभितकरै ४४ और भक्तियुक्त मनुष्य अच्छीतरह से गीत, नाच और बाजा बजवावे यथाशक्ति इस विधान को कर पीछे से गुरुजी को पूजकर पूजा समाप्तकरै ४५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेजन्माष्टमीव्रतंनामैकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

धर्म्म का वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि सौ यज्ञों को सिद्धदेखकर जो कि श्रेष्ठ दक्षिणाओंसे समाप्त हुईथीं और सौ यज्ञोंका संकल्पभी पूरा होगया तब इन्द्र बृहस्पतिजी से पूंछनेलगे १ कि हेमहातपस्वी हेभगवन् किस दानसे सब सुखोंको प्राप्त होते हैं जो नाशरहित और बड़े मोलका हो वह हमसे कहिये २ इस प्रकार जब इन्द्रने देवोंके देव पुरोहित महा बुद्धिमान् बृहस्पति जी से कहा तो वे हँसकर उन से बोले ३ कि हेइन्द्र सोना, गऊ और पृथ्वी के देनेसे सब पापों से छूटजाता है ४ सोना, चांदी, कपड़ा, मणि और रत्न ये सब तुमने दिये हैं परन्तु जो कोई फारसे जोतीहुई बोई और जिसमें अन्नभी पकगयाहो ऐसी पृथ्वीको देताहै वह जबतक सूर्यनारायण दिखलाई देते हैं तबतक स्वर्गमें रहताहै ५।६ और जीविकासे क्षीण मनुष्यने जो कुछ पाप कियाहो तो निश्चय गोचर्म के प्रमाण भूमि के दानसे वह शुद्ध होजाताहै ७ दशहाथका दण्डहोताहै तीस दण्डका वर्तनहोताहै और दश वर्तन का गोचर्म्म होताहै यही ब्रह्म गोचर्म्म का लक्षण है ८ सहित बैल के बाल बछवा के पैदा करनेवाली हज़ार गौवें जहां पर खड़ी होसकें उसको गोचर्म कहते हैं ९ उस गोचर्ममात्र पृथ्वी को गुण, तपस्या से युक्त, जितेन्द्रिय ब्राह्मणको दे तो जबतक सागरान्ता पृथ्वी स्थितरहे तबतक उसका अपार फलहोवे १० जैसे जल

में गिरा हुआ तेलका विन्दु फैलता है तैसेही पृथ्वी का किया हुआ दान अन्न अन्नमें फैलताहै ११ जैसे पृथ्वी में बीज जगते हैं तैसेही भूमिदानसे युक्त मनुष्य कामनाओं को जगाता है १२ अन्नके देने वाले नित्यही सुखी रहते हैं वस्त्र का देनेवाला रूपवान् होता है जो पृथ्वीको देताहै वह मनुष्य सबदेनेवाला होताहै १३ जैसे दूधयुक्त गऊ दूध छोड़कर बछड़े को पालती है तैसेही पृथ्वी भी पृथ्वी देने वालों को पालती है १४ शङ्ख, भद्रासन, छत्र, श्रेष्ठ, घोड़ा श्रेष्ठ हाथी का भी दान वैसा नहीं है भूमि दानके पुण्यका फल स्वर्गही है १५ सूर्य्य, वरुण, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्रमा, हुताशन और शूलपाणि भगवान् पृथ्वी देनेवाले की प्रशंसा करते हैं १६ पितर और पितामह भी उसका वर्णन करते हैं कि हमारे कुलमें पृथ्वीका देनेवालाहुआ है यह हमारा रक्षक होगा १७ मुनि लोग तीन भारी दान कहते हैं गऊ, पृथ्वी और सरस्वती इन में से सरस्वती जपने से पृथ्वी बोने से और गऊ दुहने से नरक से उद्धार कर देती हैं १८ विद्वान् ब्राह्मण के धारण करने से ये सब दुर्गतिको तार देते हैं वस्त्रके देने वाले वस्त्र पहनकर नहीं वस्त्रके देनेवाले नंगे १९ अन्नके देनेवाले तृप्त और नहीं अन्न देनेवाले भूखेही जाते हैं नरकके डरसे डरे हुए सब पितर यह इच्छा करते हैं २० कि जो पुत्र गया जावेगा वह हम लोगोंकी रक्षा करनेवाला होगा बहुत पुत्र जिसके हों परन्तु एक भी जो गयाजी चलाजावे २१ या अश्वमेधसे यज्ञकरै नीलबैलही को जो छोड़े जो कि वर्ण से तो लोहितहो मुख और पूंछमें सफ़ेद और लालहो २२ खुर और सींग सफ़ेद हों वह नील बैल कहाता है सफ़ेद पूंछवाला नील बैल जो जलको उद्धरताहै २३ तो उससे साठ हज़ार वर्ष पितर तृप्त रहते हैं और जो उसके सींगों में चहला लगा रहताहै उससे कुलका उद्धार होजाता है २४ उसके पितर महादीप्तिमान् सोमलोक को जाते हैं जहांपर राजा दिलीप, नृग और नहुष रहते हैं २५ वा और भी राजा जहांपर रहते हैं फिर और नहीं वहां पहुँचता बहुत सगर आदिक राजाओं ने पृथ्वी दी है २६ जिस जिसकी जो भूमि दीहुई है तिस तिसको वहां फल प्राप्त हुआहै ब्रा-

ह्मण, स्त्री और बालकों का मारनेवाला अथवा पतित हो २७ औ
सौ हज़ार गौवों के मारने से जो पाप हो वह सब पृथ्वी के दान
नाश होजाताहै अपनी दीहुई या दूसरेकी दीहुई पृथ्वीको जो छी
लेताहै २८ वह विष्ठाका कीड़ा होकर पितरों समेत पचता है औ
पृथ्वी का देनेवाला साठ हज़ार वर्ष स्वर्ग्ग में रहता है २९ भूमिका
छीनने और सलाह देनेवाला दोनों साठहज़ार वर्ष नरकमें रहते हैं
पृथ्वी के देनेवाले से अधिक पुण्यवान् और छीननेवाले से अधिक
पापी कोई नहीं है ३० भूमिका देनेवाला जबतक प्रलय नहीं होती
तबतक स्वर्ग्ग में रहता है और छीननेवाला प्रलयही तक नरक में
रहताहै ३१ अग्निका पुत्र प्रथम सोनाहै पृथ्वी वैष्णवी और गौवें
सूर्य्यकी कन्या हैं जो सोना, गऊ और पृथ्वी को देताहै वह तिनके
अपार फलको भोग करताहै ३२ पृथ्वीको जो लेता और दानदेता
है वे दोनों पुण्यकर्म्मवाले स्वर्ग्गमें जाते हैं ३३ अन्यायसे जो पृ-
थ्वीको छीनलेता या जो मनुष्योंसे छिनवालेता वे दोनों सात पीढ़ी
तक नाश कर देते हैं ३४ छीनने और छिनवानेवाले दोनों अन्ध-
कारसेयुक्त मन्दबुद्धिवाले वारुणकी फँसरीसे बांधे जाते हैं और ति-
र्य्यग्योनियों में जन्म लेते हैं ३५ क्योंकि जिसकी पृथ्वी छीन लेता
है उसके आंशू गिरनेसे तीन पीढ़ीतक नष्ट होजाते हैं ३६ पृथ्वीका
छीननेवाला बावली और कुवाँ हज़ार बनवावे सौ अश्वमेधयज्ञकरे
और करोड़ गऊका भी दानकरे तबभी शुद्ध नहीं होता ३७ किया,
दिया, तपस्या करना और पढ़ना इनसे जो धर्म होताहै वह आधा
अंगुल पृथ्वी के छीननेसे नाश होजाताहै ३८ गऊ, तीर्थ, गांवकी
रास्ता, श्मशान गांव इनको पीड़ा देनेसे जब तक प्रलय नहो तब
तक नरकमें प्राप्त होताहै ३९ कन्या के लिये झूंठ बोलने में पांच,
गऊके लिये दश, घोड़ाके लिये सौ, पुरुषके लिये हज़ार ४० और
सोनाके लिये झूंठ बोलने में जितने उत्पन्नहुए या होवें सब नष्टहो
जाते हैं ४१ प्राण कंठमें भी प्राप्तहों तबभी ब्राह्मणकी द्रव्य में प्रीति
न करे क्योंकि अग्निके जलेहुए फिर जम जाते हैं ब्राह्मणसे जलाया
हुआ नहीं जमसक्ता है ४२ अग्नि और सूर्य्य के जलाये हुए और

राजाके दण्डसे मारेगये फिर जम आते हैं परन्तु ब्राह्मणके शापसे मारेहुए फिर नहीं जमते हैं ४३ ब्राह्मणकी द्रव्यसे पुष्ट अंग वारंवार कार्य्यके समयमें इसप्रकार गल जाते हैं जैसे बालूकी दीवाल गल जाती है ४४ ब्राह्मण की द्रव्य हरनेसे मनुष्य रौरव नरकमें जाताहै मुनिलोग विषको विष नहीं कहते हैं ब्राह्मणकी द्रव्य छीननाही विष कहते हैं ४५ क्योंकि विष तो अकेलेहीको मारताहै और ब्राह्मणकी द्रव्य पुत्र और पौत्रों को भी नाशती है मनुष्य लोहके चूर्ण, पत्थर के चूर्ण और विषको भी जलादेताहै ४६ परन्तु तीनों लोकोंमें कोई पुरुष ब्राह्मणकी द्रव्यको नहीं जलासक्ता ब्राह्मणके द्रव्यसे जो सुख और देवता की द्रव्यसे जो प्रीति है ४७ वह धन कुल और अपने नाशके लिये होताहै ब्राह्मणकी द्रव्य ब्राह्मणकी हत्या और दरिद्रका धन ४८ गुरु और मित्रका सोना ये स्वर्ग में स्थित मनुष्यको भी पीड़ा देते हैं वेदके पढ़नेवाले, कुलीन, दरिद्र, ४९ संतुष्ट, नम्र, सर्व-वयुक्त, वेद का अभ्यास, तपस्या, ज्ञान और इन्द्रिय के संयम में युक्त ५० इसप्रकार के मनुष्य को जो दिया जाताहै वह नाशरहित होताहै जैसे कच्चे बर्तन में दूध, दही, घी और मिठाई धरने से ५१ कच्चे पने से बर्तनही फूटजाता है पकाहुआ नहीं फूटता ऐसेही गऊ, सोना, कपड़ा, अन्न, पृथ्वी और तिलोंको जो मूर्ख ग्रहण करताहै वह लकड़ी की नाईं भस्म होजाता है और जो तालाब को नया करता है या पुरानेको भी खनवाता है ५२।५३ वह सब कुलको उद्धारकर स्वर्गलोक में जाताहै बावली, कुंवाँ, तालाब और बाग ५४ इनको जो दुरुस्त करादेता और मोतीको जो देताहै और गर्मी के समय में जिन तालाब आदिकों का जल रहता है ५५ उसको विषम घोर क्लेश कभी नहीं प्राप्तहोता पृथ्वी में एक दिनभी जो तालाब आदिकों में जल रहा ५६ तो उसके सात सात पीछे के कुल तर जाते हैं दीप के दान करनेसे मनुष्य अच्छी देहयुक्त होताहै ५७ और दक्षिणाके दानसे स्मरण और बुद्धि को प्राप्त होताहै पापकर्म्म भी करके जो मनुष्य सुपात्र ब्राह्मणको दानदेताहै वह विशेष करके पापोंसे लिप्त नहीं होता पृथ्वी, गऊ और नौकरको जो जबर्दस्ती से छीन

५८।५९ और फिर उसको नहींदेता उसको ब्राह्मणका मारनेवाला कहते हैं विवाह, यज्ञ, और दानके समयमें ६० मोहसे जो विघ्नको करताहै वह मरकर कीड़ा होताहै दानसे धन फलताहै जीवोंकी रक्षासे जीवन फलताहै ६१ रूप, ऐश्वर्य, आरोग्य जीवके न मारनेके फलको भोगतेहैं फल और मूलके भोजनसे पूजा और सत्यसे स्वर्गलाभ होताहै ६२ और बहुधा बैठनेही से सब ओर सुख देनेवाली राज्यको प्राप्तहोताहै दीक्षा में सुखसे युक्त अच्छे मार्ग्ग चलनेवाला तृण का भोजन करनेवाला ६३ रूपवान् त्रिषवण स्नान करनेवाला ये वायु पीकर यज्ञको प्राप्त होतेहैं सन्ध्या वेद और जपसे युक्त नित्य स्नान करनेवाला दक्ष होताहै ६४ जीवका न मारनेवाला नाशरहित स्वर्गकी राज्यको प्राप्त होताहै और अग्निमें प्रवेश करनेवाला ब्रह्मलोक में जाताहै ६५ रसोंके छोड़ने में पशु और पुत्रोंको प्राप्त होताहै और व्रत करनेवाला बहुत कालतक स्वर्ग में बसता है ६६ सदैव भूमिपर सोनेवाला मनोवांछित गतिको प्राप्त होताहै वीरासन, वीरोंकी शय्या और वीरोंके स्थानकी जो उपासना करता है ६७ उसके नाशरहित लोक होते हैं और सब कामना प्राप्त होती है व्रत, दीक्षा और अभिषेक बारह वर्षकर और वीरोंके स्थानमें शयनकर पवित्र धर्म्म करनेसे स्वर्ग्गलोक प्राप्त होताहै ६८। ६९ बृहस्पतिजी का यह पुण्यवान् मत जे ब्राह्मण पढ़ते हैं उनके आयु, विद्या, यश और बल ये चारों बढ़ते हैं ७० नारदजी ने कहा कि बृहस्पतिजी ने इन्द्रसे अपने बनायेहुए धर्मशास्त्रको कहा और मुभ भक्तको सम्पूर्ण महादेवजी ने सुनाया ७१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेधर्मकथनेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

दशरथकृत शनैश्चरस्तोत्र का वर्णन ॥

नारदजी ने महादेवजी से पूंछा कि हे सुरोत्तम शनैश्चरकी पीड़ा कैसे प्राप्त होती है यह सब हमसे कहिये क्योंकि आपके मुखसे सु-

ननेसे प्राणी उससे छूट जाते हैं १ तब महादेवजी बोले कि नारद जी वृत्तांतको सुनो तिससे बंधनसे छूटजाताहै ग्रहोंमें ग्रहराज सब से श्रेष्ठ शनैश्चरहै २ यह प्रसिद्ध देवताहै कालरूपी महाग्रहहै ज-टाओंको धारे वज्रके समान रोमहैं और दैत्योंकोभी डरवानेवालाहै ३ तिसका आख्यान संसार में प्रसिद्ध नहीं है विशेषकर मैंने छिपा रक्खाहै कभी किसीसे नहींकहा ४ रघुके वंशमें पहले अत्यंत प्रसि-द्ध राजा दशरथ हुए जोकि चक्रवर्त्ती बड़े वीर सातोंद्वीपोंके स्वामी थे ५ उन्होंने कृत्तिकाके अंतमें शनैश्चरको जानकर ज्योतिषियों से यहभी जाना कि रोहिणी को भेदनकर शनैश्चर इससमय में प्राप्त है ६ यह बड़ा घोर शाकट भेद जोकि देवता और असुरों को भय देनेवाला इसमें बड़ा घोर बारहवर्षका दुर्भिक्षहोगा ७ मन्त्रियों स-मेत राजाने इसप्रकार के वचन सुन सलाह किया कि क्या भयंकर उपस्थित हुआ है ८ पुर और देशके वासियों और सब संसार को याकुलदेखा और सबओर मनुष्य यह कहरहे हैं कि यह क्षय प्राप्त हुआहै ९ देशवासी,नगरवासी और ग्रामवासियोंको चारोंओर डर से डरेहुए देखकर राजाने वसिष्ठ इत्यादिक ब्राह्मणोंसे पूछा १० कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठो इसमें विधि क्याहै वह हमसे कहिये ११ तब व-सिष्ठजी बोले कि यह रोहिणी नक्षत्रहै इसके भिन्न होनेसे प्रजा नहीं रहसक्ती यहयोग ब्रह्मा और इन्द्रादिक देवताओंसे भी असाध्यहै १२ ऐसा मनसे चिन्तनाकर राजा दशरथ परमभारी साहसकर सु-न्दर धनुष और आयुधोंसेयुक्त १३ रथमें शीघ्रतासे चढ़कर नक्षत्र-मंडलको गये जोकि सवालाख योजन सूर्यके ऊपर स्थितहै १४ तब तो रोहिणीको पीठमें कर राजा सोनेके, सुन्दर, मणि और रत्नोंसे भू-षित, हंसके वर्ण समान घोड़ोंसे युक्त, महापताकाओं से ऊंचे, रथ में चढ़े महारत्नोंसे प्रकाशित, किरीट और मुकुटोंसे उज्ज्वल १५। १६ आकाशमें दूसरे सूर्यकी नाईं प्रकाशित हुए और कानों पर्यंत पूर्ण धनुष में संहार अस्त्रको लगाते भये १७ तब तो देवता असुरोंको भयदेनेवाले संहार अस्त्रको शनैश्चरजी देख डरसे हँसकर राजासे यह वचनबोले १८ कि हेराजेन्द्र

रुष श्रेष्ठ और शत्रुओं को भय देनेवालाहै देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर, सर्प्प १६ मेरे देखनेहीसे भस्म होजाते हैं तुम्हारी तपस्या और पौरुषसे मैं प्रसन्नहुआहूं मनसे जो कुछ इच्छाकियेहो वह वर मांगो मैं दूंगा २० तब राजादशरथ बोले कि जबतक नदियां, समुद्र, चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वीहै तबतक आप कभी रोहिणी को भेदन कर न जाना २१ यही हम मांगते हैं और वर आप से नहींचाहते हैं तब शनैश्चरने कहा ऐसाही होगा इसप्रकार वर देकर फिर राजासे बोले कि मैं प्रसन्नहूं दूसरा वर मांगिये तब प्रसन्न आत्मायुक्त राजाने उसीसमयमें दूसरा वर शनैश्चर से मांगा २२।२३ कि हे सूर्यके पुत्र तुम शकटको न भेदनकरना और कभी बारह वर्षका दुर्भिक्ष न करना २४ तब शनैश्चरजी बोले कि बारह वर्ष का दुर्भिक्ष कभी नहीं होगा और तुम्हारा यश तीनों लोकों में फैलेगा २५ दोनों वरों को पाकर राजा बहुत प्रसन्न हुए रथके ऊपर धनुष को धर हाथ जोड़कर २६ सरस्वती देवी और गणों के स्वामी गणेशजी को ध्यानकर शनैश्चर का स्तोत्र पढ़ने लगे २७ कि कृष्णवर्ण, नीलवर्ण, महादेव जी के सदृश, कालरूपी अग्नि के सदृश, यमराजरूप आप के नमस्कार है २८ आपकी देह मांसरहितहै, भारी डाढ़ी और जटाहैं सुन्दर नेत्र हैं और पेटके सूखजाने से आप भयके देनेवालेहैं ऐसे आपके नमस्कारहै २९ और आप की पुष्कलदेह है, मोटे रोयें हैं, भारी, सूखे और काल की डाढ़रूप आप के नमस्कार है ३० और कोटरनेत्र, कष्ट से देखने के योग्य, घोर, रौद्र, भीषण और कराल आपके नमस्कारहै ३१ सबभक्षण करनेवाले, वलीमुख, सूर्य्यजी के पुत्र, और सूर्य्यको भय देनेवाले आप के नमस्कार है ३२ नीचे की दृष्टिवाले, संवर्तक, मन्दचालवाले और निस्त्रिंश आपके नमस्कार है ३३ तपस्या से जली देह वाले, नित्यही योगमें रत, नित्यही भूखसे व्याकुल और नहीं तृप्त आपके नमस्कार है ३४ ज्ञान के नेत्र, सूर्य्यजी के पुत्र आप के नमस्कार है प्रसन्न होकर आप राज्य देते हैं और अप्रसन्न होकर उसी क्षणमें हर लेतेहैं ३५ देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर,

सर्प्प ये आपके देखनेही से सब जड़से नाश होजाते हैं ३६ हे देव मेरे ऊपर प्रसन्न हूजिये क्योंकि वरके योग्य मैं प्राप्त हुआ हूं जब राजाने इसप्रकार स्तुति की तो ग्रहों में श्रेष्ठ, महाबली शनैश्चरजी ३७ प्रसन्नहोकर फिर बोले कि हे सुव्रत हे राजेन्द्र तुम्हारे इसस्तोत्रसे मैं प्रसन्न हुआहूं हे रघुके आनन्दके देनेवाले अपनी इच्छासे वरमांगो मैं दूंगा ३८ तब राजा दशरथ बोले कि हे शनैश्चर अब से लेकर आप देवता, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी और सर्पोंको कभी किसीको पीड़ा न देवें ३९ तब शनैश्चरजी बोले कि ग्रहणकरैं तिन को ग्रह कहते हैं सब ग्रह पीड़ा करनेवाले हैं और हे राजन् आपने जो मांगा वह नहीं देने योग्यहै परन्तु उसमें कुछ युक्तको कहताहूं ४० तुम्हारे कहेहुए स्तोत्रको जो मनुष्य एक या दोबार पढ़ेगा वह क्षणभरमें पीड़ासे छूटजावेगा ४१ देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर, राक्षस इनके जन्म, बारहवें, चौथे और आठवें स्थान में मैं प्राप्तहूंगा तो मृत्यु को दूंगा ४२ परन्तु जो फिर श्रद्धासेयुक्त पवित्र और एकाग्रचित्त होकर शमी के पत्रोंसे लोहेकी हमारी मूर्त्तिको पूजनकर ४३ उर्द, तिल, लोह, दक्षिणा, काली गौ और बैलको ब्राह्मणको देवे ४४ और विशेषकरके हमारेही दिनमें यह दानदे और इस स्तोत्रसे पूजनकरे और फिर पूजनकर हाथ जोड़कर स्तोत्र को जपै ४५ तिसको मैं कभी पीड़ा नहीं करता गोचर वा जन्मलग्न, दशा, अन्तर्दशा इनमें ४६ तिसको ग्रह की पीड़ासे मैं सदैव रक्षा करताहूं इसविधिसे संसार पीड़ासे छूटजाता है ४७ इस युक्तिसे मैं तुमको वर देताहूं तब तो तीन वर पाकर राजा दशरथ तिससमय में ४८ अपनी आत्माको कृतार्थ मानतेभये और वेगयुक्त राजा शनैश्चर के नमस्कार कर उनकी आज्ञा से रथपर सवार होकर ४९ अपने स्थानमें प्राप्तहुए तो बड़ा उससमयमें कल्याणहुआ जो शनैश्चरके दिन सबेरे उठकर इसस्तोत्रको पढ़े ५० और पढ़तेहुयेको जो श्रद्धासे सुने वे दोनों पापसे छूट स्वर्गलोकको प्राप्तहोवैं ५१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेदशरथकृतशनिस्तोत्रंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

त्रिस्पृशाव्रत का आख्यान ॥

नारदजी महादेवजी से बोले कि हे सर्वेश्वर त्रिस्पृशा नाम व्रत को विशेषकर कहिये जिसको सुनकर मनुष्य कर्म्मबंधनसे क्षणमात्रमें छूटजावे १ तब महादेवजी बोले कि सब पापों के समूह और महादुःखों के नाशनेवाले कृष्णावतार और त्रिस्पृशा नाम महाव्रत को सुनो २ जो कि व्रत वांछा करनेवालोंकी कामना देनेवाला और नहीं वांछावालोंको मोक्षका देनेवालाहै ३ और नित्यही जिसने त्रिस्पृशाका कीर्तन किया तिसने कलियुग में प्रत्यक्ष केशव भगवान् का पूजन किया ४ पुरश्चरण के करने से सब पाप नाश नहीं होते परन्तु त्रिस्पृशा के नाममात्र से निस्संदेह नाश होजाते हैं ५ शास्त्र पुराणादिक यज्ञ कोटियों तीर्थ अनेक व्रतोंके समूह और देवताओं के पूजन से मोक्ष नहीं होता यदि त्रिस्पृशाका व्रत नहीं कियाजावे क्योंकि देवदेवने यह वैष्णवी तिथि मोक्षही के लिये दिखलाई है ६ । ७ ब्राह्मणोंको सांख्य जानना बहुत दुःखसे कलियुगमें है और विशेषकर इन्द्रियोंका अपने वशमें लानाहै और मनस्थिर नहीं हो सक्ता ८ क्योंकि मनुष्य विषयों से युक्त, ध्यानकी धारणासे वर्जित, काम भोगमें लगे हुएहैं उनको त्रिस्पृशाही मोक्षकी देनेवाली है ९ हमसे पहले ब्रह्माके समुद्र में क्षीरसागरमें प्रणत जीवोंके लिये मत्स्यरूप भगवान् ने पहले कहा था १० कि विषयोंसे भी संयुक्त जे त्रिस्पृशा व्रत को करेंगे तिनको हम मोक्षदेंगे चाहे वे सांख्यशास्त्र से वर्जितहों ११ और कामभोग में लगेहों तिनको त्रिस्पृशा मोक्ष की देनेवाली है बहुत मुनिसमूहों ने इसको किया है १२ कार्तिक के शुक्लपक्षमें सोमवार या बुधवारमें जो त्रिस्पृशाहोवे तो करोड़ पापों के नाशनेवाली हो १३ जिसके व्रत करने से हत्यायुक्त महादेव के हाथसे ब्रह्मकपाल उसी क्षणमें पृथ्वी में गिरपड़ा १४ कलियुग के करोड़ों पापसमूहों से गंगादेवी छूटगई क्योंकि भगवान् के उपदेश से उन्होंने त्रिस्पृशाका व्रतकिया १५ और बाहुवीर्य के आठहत्या

पहलेलगी थीं परन्तु वे भी भृगुके उपदेशसे त्रिस्पृशाके व्रतसे जाती रहीं १६ और शतायुधने वनमें ब्राह्मणको माराथा वह भी त्रिस्पृशा के व्रत से ब्रह्महत्या से छूटगया १७ इन्द्र के नमुचिसे उत्पन्न हत्या बृहस्पतिजी के उपदेशसे त्रिस्पृशा के व्रतसे नाशहोगई १८ ब्रह्म-हत्यादिक पापभी त्रिस्पृशाके व्रतसे नाश होजाते हैं तो और पापों की क्या कथाहै १९ जो त्रिस्पृशा का व्रत न करै तो प्रयाग, काशी, गोमती और कृष्णजीके समीप में भी मोक्ष न हो २० प्रयाग, गो-मती और कृष्णजी के समीप में मरने से और गोमती में स्नानही करनेसे शाश्वती मुक्ति होती है २१ और त्रिस्पृशाके व्रतसे विषय में वर्तमान काम भोगसे युक्तकोभी घरही मुक्ति होती है २२ सांख्य शास्त्र से विषय से निवृत्तको भी दुर्लभ मुक्ति है तिससे हे नारदजी मोक्ष देनेवाली त्रिस्पृशाकोकरो २३ तब नारदजी बोले कि हेमहा-देवजी त्रिस्पृशाका महाव्रत कैसाहै जो आपने इससमय में द्विजा-तियों के मुक्तिका देनेवाला हमसे कहा है २४ तब महादेवजी बोले कि भगवान्ने गंगाजी के ऊपर कृपाकर प्राचीसरस्वती के किनारे त्रिस्पृशा को पहले कहाथा २५ गंगाजी बोलीं कि हेभगवन् हृषी-केश कलियुग के करोड़ों ब्रह्महत्यादिक पापों से युक्त मनुष्य कलि-युगमें हमारे जलमें स्नान करते हैं २६ तिनके सैकड़ों पाप दोषोंसे हमारी देह कलुषीकृत है हे गरुड़ध्वजजी हमारा पाप कैसे जावेगा २७ तब प्राचीमाधवजी बोले कि हे पुत्रि निस्संदेह मैं कहताहूं रो-दन न करो श्यामवट तो हमारा स्थान है और हमारे आगे प्राची देवीहै २८ सरस्वतीजी आगे बहरही हैं तिनको देखो और नित्य स्नानकरो तो यहीं पवित्र होजावोगी २९ जहांपर प्राची सरस्वती है वहांपर मैं निस्संदेह सैकड़ों करोड़ तीर्थों और देवताओंसे युक्त बसताहूं ३० यहस्थान पवित्र और मेरे प्रियहै करोड़हत्याका नाश करनेवालाहै इसको संतुष्ट होकर मैंने दियाहै क्योंकि तुम मेरे प्राणों से अधिक प्यारीहो ३१ हमारी आज्ञासे प्राची सरस्वतीके जलमें करोड़ हजार तीर्थ नित्यही स्थित रहते हैं ३२ ब्राह्मण का मारना, मदिरापीना, गऊका मारना, शूद्रकी स्त्री का मारना, ब्राह्मणका द्रव्य

छीनलेना, माता पिताका सत्कार न करना ३३ कुम्हार के चाकको छूना, गुरुजी से वैर करना, नहीं भोजन के योग्यका भोजन करना, सब पापों के करने से प्राची सरस्वती में ३४ हमारे आगे एकवार भी स्नान करनेसे पाप नष्ट होजाते हैं तिससे हे गंगाजी स्नानकरो पापसे हीन होजावोगी ३५ तब गंगाजी बोलीं कि हे देवेश हे माधवजी मैं नित्य आने में नहीं समर्थहूं पाप मेरे कैसे नाशहोंगे यह आप कहिये ३६ तब प्राचीमाधवजी बोले कि हे गंगाजी जो तुम नित्य आनेमें नहीं समर्थहो तो और उपाय तुमसे कहताहूं क्योंकि तुम मेरेचरणसे उत्पन्नहो ३७ जोकि सरस्वती से अधिक, सौकरोड़ तीर्थोंसे अधिक, करोड़ यज्ञ, व्रत दान ३८ और जप होमसे अधिक धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्षके फलकी देनेवाली, सांख्ययोग से भी अधिक, कल्याणयुक्त त्रिस्पृशाको करो ३९ जिसही महीनामें शुक्लपक्ष या कृष्णपक्षमें मिले वह करनी योग्यहै करनेसे पाप छूट जाते हैं ४० तब गंगाजी बोलीं कि हेदेव हे माधवजी त्रिस्पृशा किसप्रकारकी है जिसकी इसप्रकारकी महिमा आपने हमसे इससमय में कही ४१ दशमी एकादशी और द्वादशी ये एकही दिनमें होवें तो वही त्रिस्पृशा होती है या और होती है यह आप हमसे कहिये ४२ तब कृष्णचन्द्रजी बोले कि जो तुमने कहा वह आसुरी त्रिस्पृशाहै उसको यत्नसे वर्जित करै जैसे कि जीविकासे हीन पतिके साथ स्त्री का विवाह वर्जितहै ४३ यह त्रिस्पृशा असुरों के लिये कही है उमर और बलकी नाशनेवाली है इसको रजस्वला स्त्रीकी नाईं यत्नसे वर्जितकरै ४४ और जो स्त्री अपनी जातिको छोड़कर अधम जातियों में प्राप्त होगई वह विशेष करके छोड़ने योग्य है ऐसेही दशमी युक्त एकादशी भी छोड़देवे ४५ जैसे ज्ञानसे हीन मनुष्य रजस्वला के संगसे दूषित होजाते हैं तैसेही दशमीयुक्त एकादशी मनुष्योंको दूषितहै ४६ त्रिस्पृशाके व्रतसे सैकड़ों हत्या छूट जाती हैं एकादशी द्वादशीहो और कुछ रात्रिरहे जो त्रयोदशीभी होजावे ४७ वह त्रिस्पृशा जानने योग्य है दशमी समेत नहीं है अपराध करके प्रायश्चित्त करने से मनुष्य छूटजाताहै ४८ परन्तु हे गंगाजी दशमी के

वेधसे उत्पन्न दोषको मैं नहीं क्षमाकरताहूं उसने हालाहल और विषका भक्षणकिया ४९ जिसने दशमीयुक्त एकादशीके व्रतको किया ऐसा मानकर दशमीयुक्त एकादशी नहीं करने योग्यहै ५० करोड़ जन्मका कियाहुआ पुण्य और पुत्र नाश होजाते हैं और अपने पुरुखोंको स्वर्ग से रौरव आदिक नरक में डाल देताहै ५१ अपनी देहको शोधनकर एकादशी व्रत करनेयोग्यहै वृद्धिमें त्यागने योग्य है विना वेधसे श्रवणादिकोंमें संयुक्तभी त्यागनी चाहिये ५२ वृद्धि के सन्देह उपस्थितहुए एकादशी के व्रत करनेवालों के जन्मका पुण्य नाश होजाताहै ५३ हमारी आज्ञासे द्वादशीका व्रतकरे क्योंकि वह मुझे प्रियहै ५४ तब गंगाजीवोलीं कि हे जगन्नाथ आपके वचनसे त्रिस्पृशाको मैं करूंगी और आपहीकी आज्ञासे सब पापोंसे छूट जाऊंगी ५५ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे नदियों में श्रेष्ठ गंगा देवी तुम अपने स्थानकोजावो तुम्हारा कल्याणहो तुम कभी डरना नहीं पाप तुमको नहीं दबासकेंगे ५६ जे सरस्वतीके जलमें स्नान कर माधवजीकी पूजाकर जगन्नाथजीके नमस्कार करतेहैं ते परमगतिको जाते हैं ५७ तब गंगाजी बोलीं कि हे ब्रह्मन् इसकी विधि कहिये सम्पूर्णतासे मैं करूंगी और रोगहीन देवेश माधवजीको प्रसन्न करूंगी ५८ तब प्राचीमाधव जी बोले कि हे नदियों में श्रेष्ठ गंगादेवी त्रिस्पृशाकी विधिको मैं कहताहूं सुनिये जिसके सुनने से मनुष्य पापोंसे छूटजाताहै ५९ द्रव्यके अनुसार पलभर या आधे पल या चौथाई पलकी सोनेकी हमारी मूर्ति बनवावे ६० और बर्तन तांबे का बनवाकर उसमें तिल भरदेवे और जलसमेत सुन्दर कलशमें पंचरत्नभी छोड़देवे ६१ फूलकी मालाओं से आच्छादित करै कपूर और अगुरुसे धूपदेवै पीछेसे दामोदर भगवान्‌को स्थापितकर स्नान और चन्दन चढ़ावे ६२ दो कपड़े चढ़ावे पुराण के कहेहुए मन्त्रोंसे पूजन करै ऋतुके उत्पन्न सुन्दर फूल और कोमल तुलसीदल चढ़ावे ६३ छत्र और खड़ाऊंभी विष्णुजीको देवे और सुन्दर बहुत फल चढ़ावे ६४ रुपट्टेसमेत नवीन पुष्ट यज्ञोपवीतको चढ़ावे और बहुत उत्तम मजबूत बांसेका दंडदेवे ६५ दामोदर भ-

गवान्के चरण माधवजीकी गांठें कामके देनेवाले भगवान्की गुह्य इन्द्रिय वामनजीका करिहांव ६६ पद्मनाभजीकी नाभि विश्वयोनि जीका पेट ज्ञानगम्यजीका हृदय वैकुण्ठगामीजी का कण्ठ ६७ सहस्रबाहुजीके भुजा योगरूपीके नेत्र भक्तिसे विधिसे पूजनकर विधिपूर्वकही अर्घदेवे ६८ दोनों हाथों में शंखके ऊपर सुन्दर नारियल को सूत्रों से लपेटकर अर्घदेना चाहिये ६९ हे जनार्दनजी नित्यहीं स्मरण करनेसे आप पापों को नाशते हैं दुःस्वप्न, दुःशकुन मनहीसे नाश होजाते हैं ७० हेदेव दुर्गतिसे उत्पन्न इसलोक और परलोक का नरकका भय हमको है ७१ तिससे हे देवेश हमारी रक्षाकरो और अर्घको ग्रहण करो तुम्हारे नमस्कार है और हे दामोदरजी हमारे ऊपर सदैव कृपादृष्टि रहे ७२ फिर धूप दीप और नीराजनकरे और नीराजनको भगवान्के मस्तकमें घुमावे ७३ इस विधिसे पूजनकर तिसपीछे अपने गुरुजीकोपूजे और सोना,कपड़े,पगड़ी,कंचुक,७४ जूता,छतुरी,मुंदरी,कमण्डलु,भोजन,पान,सप्तधान्य और दक्षिणा देवे ७५ गुरुजी और भगवान्की पूजाकर जागरणकरे गान और नाच करावे और शास्त्रका भी पाठहो ७६ रात्रिके अन्तमें भगवान् को विधिसे अर्घदेवे और स्नानआदिक क्रियाकोकर वाड़वों समेत भोजनकरे ७७ शिवजीबोले कि हे नारदजी यह अद्भुत, रोमहर्षण त्रिस्पृशा का आख्यान सुनकर गंगास्नानसे उत्पन्न पुण्यको प्राप्त होता है ७८ अश्वमेध सहस्रयज्ञ और वाजपेय सौ यज्ञके फलको त्रिस्पृशा के व्रतसे प्राप्त होताहै ७९ पितापक्ष, मातापक्ष और अपने पक्षों समेत मुक्त होकर विष्णुलोकमें प्राप्त होताहै ८० तीर्थ और क्षेत्र करोड़ों करनेसे जो फलहै वह त्रिस्पृशा के व्रत करने से मिलताहै ८१ ब्राह्मण और कृष्णमन वाले क्षत्रिय वैश्य वा शूद्र या और जातिवाले ८२ ये सब पृथ्वीको छोड़कर मुक्तिको प्राप्तहोजाते हैं मन्त्रोंमें जैसे द्वादशाक्षर मन्त्रराजहै ८३ तैसेही व्रतोंमें त्रिस्पृशाहै इसको पहले ब्रह्मा और फिर राजर्षियोंने कियाथा ८४ औरों की क्या कथाहै त्रिस्पृशा मुक्तिकी देनेवाली है इस विधिसे त्रिस्पृशाके व्रतको ८५ जो मनुष्य भक्तिसे करताहै उसके फलको कहता

हूं सुनिये हज़ार मन्वन्तर काशीजी में गंगा के स्नान करने से जो फल होता है वह त्रिस्पृशा के करनेवाले को भी होता है और करोड़ वर्ष प्राची सरस्वती और यमुनाके स्नान में जो फल मिलता है ८६। ८७ वह त्रिस्पृशाके व्रत करनेवाले को मिलताहै और कुरुक्षेत्र में करोड़ सूर्य्य के ग्रहणमें स्नान ८८ और सोनेके सौभार दान करनेसे जो फलहै वह त्रिस्पृशाके करनेसे भी है करोड़ हज़ार पाप और करोड़ सैकड़ा हत्या ८९ एकही व्रतसे शीघ्रही भस्म की जाती हैं यह त्रिस्पृशाका व्रत नहीं गति होनेवालोंको भी गति देने वालाहै ९० जिन्होंने सैकड़ों भारी पाप कियेहैं वेभी गतिकी इच्छा करते हैं इस व्रतको श्रीकृष्णजी ने व्यासजी के आगे कहाथा ९१ जो कोई मनुष्य ब्राह्मण से लिखाकर प्रकाशित करताहै वह पापसमूहोंसे युक्तभी हो तोभी उसकी मुक्तिहोगी ९२ सैकड़ों मन्वन्तर की पुण्यों से यह मिलताहै क्योंकि यह त्रिस्पृशा संसारमें दुर्लभहै मनुष्यों को नहीं प्राप्तहोता ९३ कलियुगमें त्रिस्पृशाको प्राप्तहोकर जे अधम मनुष्य नहीं करते हैं उनके जन्मकाफल और जीना निष्फल होताहै ९४ और जिन्हों ने कलियुगमें एकवार भी त्रिस्पृशा को कियाहै वे विना पुत्र और विनाश्राद्धोंके प्रेतपनेसे तरजाते हैं ९५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेत्रिस्पृशाख्यानंनामचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

पैंतीसवां अध्याय॥

उन्मीलनी व्रतका वर्णन॥

महादेवजीबोले कि हे नारदजी अब तुमसे अत्यन्तश्रेष्ठ उन्मीलनीको कहताहूं जिसके सुननेहीसे जन्मसंसारके बन्धनसे १ पापी पुरुष पापोंसे छूट जाता है और स्वर्गलोकमें प्राप्त होताहै देवता और पितर तिसकी गतिको प्राप्त होतेहैं २ विद्यार्थी विद्याको प्राप्त होताहै और तिसके व्रतसे निस्संदेह सब कामना प्राप्त होती हैं और स्वर्गलोकमें प्राप्त होताहै ३ या शिवलोकमें जाताहै इससे हेराजन् तुम वैष्णवोंका पूजन करतेहो ४ तो जे वैष्णवोंका नित्य पूजनकर-

ते हैं उनको राजा दण्ड नहींकरता ५ और उनके भोजनके पीछे जे भक्तिसे उनकी पूजनकर पीछे भोजन करते हैं उन्होंने विष्णुजी का पूजनकिया ६ हे राजन् तुम शालग्रामजीकी मूर्त्तिको नित्यही माथे में लगाकर भक्ति से कण्ठ में धारण करतेहो ७ और विष्णुजी की बचीहुई धूपकोभी भक्तिहीसे सेवनकरतेहो और भक्तोंकी सदा आरतीकर ८ शंखसे जलको भक्तिसे भगवान्के माथे में घुमाकर नित्यही शिरमें धारणकर बाक़ीको वैष्णवोंको देतेहो ९ और प्रतिदिन सब सामग्री से युक्त नैवेद्यको भगवान्के अर्थ देकर उसी विष्णुके निवेदित अन्न को वैष्णवोंसमेत तुम भोजन करते हो और नित्य ही सहस्रनामसे भक्तिपूर्व्वक भगवान्की स्तुति करते हो १०।११ और विष्णुजीको दीप और अर्घदान देकर गीत और नाच करते हो और दूर्वाओं से पूजन करतेहो १२ इसमें हे वत्स हे राजन् दूर्वाओंसे पूजन अत्यन्त दुर्लभहै क्योंकि इसके पूजन करनेसे पृथ्वी के दानके बराबर पुण्यहोताहै १३ इससे इससंसारमें पृथ्वीपर दूर्वाओं के समान कोई नहींहै विष्णु सायुज्यकी इच्छा करनेवाले को तिससे पूजन करना चाहिये १४ और तुम दूर्वाओं से नित्यही पूजन करतेहो यव अक्षतों से विशेषकरके पूजनकरते और नहीं भी करतेहो १५ और हे राजन् पक्षपक्षमें महापापों के नाश करनेवाले द्वादशी व्रतको विधिपूर्वक करतेहो १६ जोकि व्रत मोक्ष, सुख और उमरका सदा देनेवालाहै यह विष्णुजी का व्रत वैष्णवोंको मोक्षका देनेवाला हमनेकहा १७ यह गृहस्थोंको सुख और संन्यासियों को मुक्तिका देनेवाला,सब रोगादिकोंका नाश करनेवाला,पवित्र,देहका शोधनेवालाहै १८ हे राजन् इसव्रतको तुम करतेहो या नहीं जागरणसमेत दशमीके वेधसे रहित करते हो १९ और तुलसीदलों से नित्यही हरिजीको पूजतेहो और गोपीचन्दनको भी माथेमें धारण करते हो २० जोकि सब लोकोंका पवित्र करनेवालाहै इससे गोपीचन्दन को तुम धारण करतेहो २१ ब्राह्मण का मारने वाला, सोना चुरानेवाला, मदिरा पीनेवाला, नहीं भोग करनेवाली स्त्री से भोग करनेवाला, महापापी और झूठ बोलने वाला २२ ये सब तिलक

धारण करनेसे मुक्तिको प्राप्त होजाते हैं और तुम कण्ठमें नित्यही आंवलेके २३ माला और तुलसी के माला और द्वारका में उत्पन्न शालग्राम जीकी मूर्त्तिको धारण करतेहो २४ और भुक्ति मुक्ति फल के देनेवाले इनको नित्यही पूजतेहो पद्मपुराणको भगवान्‌के आगे पढ़तेहो २५ और दैत्यराज प्रह्लाद राजाका चरित्र भी पढ़तेहो द-शमी वेधसमेत एकादशीके व्रत करनेवाले मनुष्यों को २६ यत्नसे शास्त्र देखकर रोकते हो क्योंकि वेधसमेत एकादशी जिस राज्य में होती है २७ उस पापसे लिप्त होकर राजा नरक में जाताहै और जो चारप्रकार के वेधको छोड़कर एकादशीका व्रत करताहै वह क-रोड़ कुल उद्धारकर विष्णुलोकमें जाताहै २८ तब गौतमजी बोले कि हे राजन् वैष्णव महाव्रतको कहताहूं सुनो जिसको सुनकर सब पापी उसी क्षणमें मुक्तिको प्राप्त होजाते हैं २९ द्वादशी से उत्पन्न पुण्य मैंने किसी से नहीं कहाथा ३० तुम वैष्णव और मनुष्यों में भागवत में भक्तहो इससे यह वैष्णव महागुप्त व्रत तुम सुनो ३१ पहले प्रसन्न होकर माधवजी ने उन्मीलनी व्रतको हमसे कहाथा उसी को मैं तुमसे कहता हूं ३२ दिनरात एकादशी हो और सबेरे एक घड़ीहो वह उन्मीलनी जाननी चाहिये यह विशेष करके भग-वान् को प्रियहै ३३ तीनों लोकमें जे तीर्थ, पवित्रस्थान, यज्ञ, वेद, तपस्या हैं वे उन्मीलनीके करोड़वें भागके बराबर नहीं हैं ३४ इस के समान कोई न हुआहै न होगा प्रयाग, कुरुक्षेत्र, काशी, पुष्कर, ३५ हिमाचल पर्वत, मेरु, गन्धमादन, नील, निषध, विंध्याचलप-र्वत, नैमिषारण्य, ३६ गोदावरी, कावेरी, चन्द्रभागा, वेदिका, तापी, पयोष्णी, क्षिप्रा, चन्दना ३७ चर्मण्वती, सरयू, चन्द्रभागा, गंडिका, गोमती, विपाशा, महानद शोण ये सब उन्मीलनीके बराबर नहीं हैं ३८ हे राजन् वारंवार बहुत कहने से क्या है उन्मीलनी के बराबर कोई नहीं है भगवान्‌से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं है ३९ उन्मीलनीको प्राप्त होकर जिन्हों ने भगवान्‌का पूजन किया उन्हों ने पापचक्रके समूहकी राशिको क्षणमात्र में गिरादिया ४० और जिस महीने में उन्मीलनी तिथिहो उसी महीनेके नामसे गोविन्दजी यत्नपूर्व्वक

जने चाहिये ४१ मासके नामसे भगवान्की मूर्त्ति अपनी शक्ति के अनुसार श्रद्धा भक्तिसेयुक्त मनुष्य सोनेकी बनवावे ४२ पवित्रजल, पञ्चरत्न, चन्दन, फूल, अक्षत और मालाओंसे युक्त कलशको स्थापित करै ४३ और बर्तन जल गेहूं और अनेक रत्नोंसे संयुक्त करै अनेक प्रकारके सुगन्धित चन्दनादिक ४४ और मल्लिका और चमेलीके फूलोंसे पूजनकरै सफेदचावल यत्नसे भरदेवे ४५ दोकपड़े, जनेऊ, दुपट्टा, जूता और शिरके ऊपर छतुरी ४६ भोजन, जल के वर्त्तन, तिलोंसमेत सप्तधान्य, चांदी, कपास, खीर, मुंदरी ये सब निवेदनकरै ४७ और सोनेसे सींग मढ़ी, चांदी के खुरवाली, तांबे की पीठ, कांसेकी दोहनी, रत्नोंकी पूंछवाली, बछवा और गहनोंसे युक्त गऊ तिस समयमें गुरुजी को देवे और सामग्रियों समेत शय्याको भक्तिपूर्व्वक साधुको देवे ४८। ४९ धूप, दीप, नैवेद्य, फल और पत्र को निवेदनकरै और इन मन्त्रोंसे महाभक्त केशवजी की पूजन करैं ५० तुलसीदल और ऋतुके उत्पन्न फूलोंसे पूजनकरें महीनेके नाम से विष्णुरूपी भगवान्के चरण और गांठोंको पूजे ५१ गुह्यपतिकी गुह्य इन्द्रिय, पीतांबरधारी की कटि इन्द्रिय, ब्रह्ममूर्त्तिके धारणकरने वालेकी नाभि, विश्वयोनिका पेट, ५२ ज्ञानगम्य का हृदय, वैकुण्ठमूर्त्तिका कण्ठ, ऊर्ध्वगका माथा, दक्षान्तकारीके भुजा, ५३ सुरेशका शिर और सर्वमूर्त्तिका सब अङ्ग पूजे और अपने नामसे आयुधादिकोंकी भक्तिसे पूजनकरै ५४ नारियर आदिकोंके साथ अर्घदान करना चाहिये शङ्खके ऊपर जल रख चन्दन पुष्प और अक्षतोंसे युक्त ५५ सूत्रसे लपेटकर विधिपूर्व्वक अर्घदेवे कि हे देवदेव हे महादेव हे श्रीकेशव हे जनार्दन ५६ हे सुब्रह्मण्य तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै हे पुण्यराशिके बढ़ानेवाले शोक मोह महापाप संसारसमुद्र से हमारा उद्धार कीजिये ५७ हे महास्वामिन् सैकड़ों करोड़ जन्मों से मैंने सुकृत नहीं किया तिस पर भी आप संसारसमुद्र से हमारा उद्धार कीजिये ५८ और हे देवेश इसव्रतसे जे हमारे और पहलेके पुरुखे कुयोनिमें प्राप्त या पापसे मृत्युके वशमें प्राप्तहैं ५९ जे होंगे और जे होगये हैं तिनको प्रेतलोकसे उद्धार कीजिये मैं भ्रांतहूं आ-

पके अधीनहूं मेरी अचल भक्तिहो ६० और मैंने आपको भक्तिसे अर्घ दियाहै उसको हे गदाधरजी ग्रहण कीजिये इसप्रकार अर्घ देकर धूप,दीपादिक, विष्णुसे उत्पन्न नैवेद्य,६१ स्तोत्र, आरती,गान, और नाचसे भगवान्को प्रसन्नकरै और कपड़े,गोदान और भोजनों से गुरुजीको प्रसन्नकरै ६२ ऐसा करनेसे गुरुजी भी प्रीतिको प्राप्त होंगे क्योंकि लोकोंके तारनेके लिये ब्रह्माजीने गुरुजीको बनाया है ६३ इससे यत्नसे निश्चय गुरुजी की पूजा करनी योग्य है शत्रुको जो नाश कर देवे और मित्रको सदा दिखलावे ६४ वही सब धर्म्म अर्थका जाननेवाला गुरु जानना चाहिये वित्तशाठ्य न करते हुए गुरुजीको निवेदनकरै ६५ गुरुजीके निवेदन करनेसे व्रत परिपूर्ण होताहै दिनका कर्म्म करके ब्राह्मणोंके साथ भोजन ६६ करना योग्यहै और दिनको कथा वार्त्ताओंसे पूराकरै इसविधिसे जो उन्मीलनीव्रतको करताहै ६७ वह करोड़ हज़ार कल्प श्रीविष्णुजीके समीप बसताहै ६८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति-नारदसंवादेउन्मीलनीव्रतंनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

पक्षवर्द्धनी एकादशीका माहात्म्य ॥

नारदजी बोले कि हे महादेव जी पक्षवर्द्धनी किस प्रकारकी है जिसकाव्रत करनेसे प्राणी बड़ेपापोंसे छूटजाता है १ तब श्रीमहादेवजी बोले कि अमावास्या वा पूर्णमासी संपूर्ण हो और प्रतिपदा के दिन साठ नाड़िकाहो तो वह पक्षवर्द्धनी है दशहज़ार अश्वमेध करनेका फल देनेवाली है २ तब नारदजी बोले कि हे देवसत्तम हे महादेवजी इसकी पूजाकी विधि पूंछताहूं जिसके करनेसे बड़े फल को प्राप्तहो ३ तब महादेवजी बोले कि हे ब्राह्मण के पुत्र नारदजी इसकी पूजाकी विधि इससमय में कहताहूं विष्णुजीकी पूजा अर्चा करनेसे निस्सन्देह फलको प्राप्त होता है ४ जिस पूजाके विधानसे माधवजी प्रसन्नताको प्राप्त होते हैं पुष्ट,जलसे पूर्ण, कलशधर उस

में चंदन छोड़े ५ पञ्चरत्नसे भी युक्तकरे फूलके मालाओं से आच्छादितकरे और उस कलशके ऊपर तांबेका बर्तन गेहूं भरकर धरे ६ महीने के नामसे सोनेकी भगवान् की मूर्ति बनवावे और पंचामृत से अच्छीप्रकार ७ जगन्नाथ जगत्पति जी को स्नान करवावे फिर केसरि, अगुरु और चन्दनों से लेपकरावे ८ दोकपड़े, छतुरी और जूता भी देवे और कलशके ऊपर स्थित देवतों के स्वामी की पूजा करे ९ पद्मनाभके चरण विश्वमूर्तिकी गांठें ज्ञानगम्यके जंघा ज्ञानप्रदके कटि १० विश्वनाथका पेट श्रीधरकाहृदय कौस्तुभकण्ठ का कण्ठ क्षत्रांतकारी के भुजा ११ व्योममूर्द्धाका माथा और सर्वरूपी का शिर पूजे और सर्वाङ्गी, सुन्दर रूपवाली लक्ष्मीका उनके नाम से १२ विधिपूर्वक पूजनकर फिर सुन्दर नारियल से देवदेव चक्रधारी भगवान् को अर्घ देवे १३ कि इसी अर्घदान से व्रत सम्पूर्ण होजावे और हे संसार के स्वामी भगवान् संसारसमुद्र में डूबे हुए हमको उद्धार कीजिये १४ आप सब लोकों के स्वामी हैं और साक्षात् संसार के पतिहैं हे पद्मनाभजी हमारे दियेहुए अर्घको ग्रहण कीजिये आपके नमस्कारहै १५ और सुन्दर छओं रसोंसे युक्त नैवेद्य भक्ति से विशेष करके केशवजी को देवे १६ और कर्पूरसमेत नागपत्रभी भक्तिसे भगवान्को देवे घी वा तिलके तेलसे दीप जलावे १७ और अच्छी विधिसे गुरुजीकी पूजा करावे वस्त्र, पगड़ी और कंचुकदेवे १८ और यथाशक्तिसे दक्षिणा गुरुजीको देवे भोजन और पानदेकर अर्घदेवे १९ अपने वित्तके अनुमानसे निर्द्धनों करके यथाशक्ति यत्नसे पक्षवर्द्धनी द्वादशी करनी योग्यहै २० तदनन्तर जागरण, गीत, नाच, पुराणोंका पाठ और हास्य आह्लाद ये सब करे २१ और जे भगवान् के जागरण की स्तुति और प्रशंसा करतेहैं उनकेघरमें दश जन्मतक नित्यही उत्सवहोताहै २२ इससे यह पक्षवर्द्धनी अत्यन्त धन्यकरने योग्यहै इसको करके सब पुण्यफलको निस्सन्देह प्राप्त होता है २३ और पक्षवर्द्धनीका माहात्म्य जे बुद्धिमान् सुनतेहैं तिन्होंने सब अच्छे कर्म्मकिये जबतक प्रलय न हो २४ पंचाग्निके साधन और तीर्थके साधनमें जो पुण्यहै वह

पुण्य विष्णुजी के जागरणके कारण से प्राप्त होतीहै २५ यह पक्ष-वर्द्धनी पुण्यकारिणी, पवित्र और पाप नाशने वाली है और व्रत करने से करोड़ हत्या के नाश करनेवाली है २६ वसिष्ठ, भारद्वाज, ध्रुव और अंबरीषने पहले इसविष्णुकी प्यारी पक्षवर्द्धनीको किया है २७ यह काशी और द्वारकाके समान पुण्यकारिणी है इसको जो भक्त व्रत करता उसको यह वांछित देतीहै २८ यह धन्य और अतिशयकरके धन्यहै दशहजार हत्याओंको नाशती है ज्ञानमें तत्पर वैष्णवों को विशेष करके करनी योग्य है २९ व्रत में तत्परों करके सर्वेश्वरदेव सेवने योग्यहैं और बहुत कहनेसे क्याहै उत्तमव्रत करनेही योग्य है ३० जैसे शुक्लपक्ष में विशेषकरके चन्द्रमा बढ़ता है तैसेही भक्तोंके करनेसे पक्षवर्द्धनी बढ़ती है ३१ जैसे सूर्य के उदय में उसी क्षण में अन्धकार नष्ट होता है तैसेही पक्षवर्द्धनी के करने से पाप नाशको प्राप्त होजाते हैं ३२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेपक्षवर्द्धनीएकादशीमाहात्म्यंनामषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

सैंतीसवां अध्याय॥

एकादशीके जागरणकी महिमा वर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे नारदजी जागरणका माहात्म्य कहताहूं सुनिये जिसको सुनकर महापापी निस्सन्देह मुक्तिको प्राप्त होताहै १ तब नारदजीबोले कि विश्वेश्वर विष्णुजी सदा पवित्र करनेवाले हैं तिनके व्रतका माहात्म्य हे शिवजी आपके मुखसे सुना २ तिस पर भी जागरणका माहात्म्य सुननेकी इच्छाहै रात्रिमें जागरणका माहात्म्य कैसाहै और भक्ति कैसीहै ३ और हे विश्वेश्वर हे प्रभुजी पहरोंमें जो पूजाहै उसको कहिये क्योंकि लोकोंमें आप सदा पूज्यहैं आपही जनार्दन देवहैं आपही विश्वेश्वरदेवहैं जिससे कि जनार्दन में आपकी भक्तिहै ४ और सब भक्तोंमें आपही उमापति श्रेष्ठहैं इस लोकमें भक्तिसे सर्वदा आपहीकी आख्या सदैव वर्तमानहै ५ इससे जिसप्रकार से मनुष्यों की मुक्तिहो हे विश्वेश्वर जागरण का मा-

त्म्य आप कहिये ६ तब महादेवजी बोले कि मनुष्य एकादशी में रात्रिमें भक्तिसे विष्णुजी को पूजकर विष्णुजी के आगे वैष्णवों समेत जागरण करै ७ गीत, बाजा, नाच, पुराणका पढ़ना, धूप, दीप, नैवेद्य, फूल, चन्दनका लेप, ८ फल, अर्घ और श्रद्धासे दान, इंद्रियों का संयम, ये सब सत्य, वचन और क्रियासे युक्तकरै ९ जो मनुष्य आनन्दसमेत निद्रारहित सदा जागरण करता है उसके सब पाप छूटजाते हैं और विष्णुजीका प्यारा उत्पन्न होताहै १० रात्रिमें जागरण प्राप्त होनेपर जे वैष्णव सोजाते हैं उन्होंने विष्णुसंज्ञक व्रतको नष्टकरदिया ११ और जे मनुष्य विष्णुसंज्ञक व्रतमें कृष्णके भावसे जागरण करते हैं कभी सोते नहीं हैं १२ और मनसे कृष्ण के नाम वारंवार इसरात्रिमें कहते हैं ते विशेष करके अतिशय धन्य जानने चाहिये १३ क्षण क्षणमें गोदान घड़ीमें चौगुना पहरोंमें करोड़गुणा चारों पहरोंमें असंख्य १४ जागरणके निमिषार्द्धमें भगवान्के आगे विशेष करके वह फल कोटिगुणित होताहै तिसकी संख्या नहीं विद्यमानहै १५ और जो मनुष्यों में श्रेष्ठ भगवान् के आगे नाचता है उसका जन्मसे मरणपर्यन्त फल नाशनहीं होता १६ आश्चर्य और उत्साहयुक्त, पापके बकने से हीन, प्रदक्षिणायुक्त और नमस्कार को पहले कर १७ आरतियों से युक्त एकाग्रचित्त होकर पहर पहर में भगवान् की आरती करे १८ एकादशी में जागरण छब्बीस गुणयुक्त है जो मनुष्य भक्ति से करता है वह फिर पृथ्वी में नहीं उत्पन्न होता १९ और जो वित्तशाठ्यसे वर्जित मनुष्य भक्तिसे इसप्रकार एकादशी में जागरण करताहै वह परमात्मामें लीन होजाताहै २० और जो धनवान् होकर वित्तशाठ्य से जागरण करताहै उस दुरात्मा कपटीने आत्मा हारडाली २१ और जो विष्णुके जागरण प्राप्त होने में उपहास करताहै वह साठहज़ार वर्ष विष्ठामें कीड़ा होता है २२ और जो वेदका जाननेवाला भी ब्राह्मण विशेषकरके उपहास करे वह भी निश्चय चाण्डाल कहाताहै २३ पलभर या आधापल भी जो जागरण करै वह धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्षके नाशरहित पदको प्राप्तहोताहै २४ और जो वेद शास्त्र में नित्यही रतहो और

ज्ञभी नित्यही कराताहो परंतु रात्रिमें जागरण प्राप्तहोने में निंदा
रेगा तो नरकमें प्राप्तहोगा २५ और जो हमारी पूजाकरेगा और
विष्णुजी की निन्दाओं में तत्पर होगा वह इकीस पीढ़ी से नरक में
प्राप्तहोगा २६ (क्योंकि विष्णुही शिवहैं शिवही विष्णुहैं एकही मू-
र्ति हैं परन्तु दोप्रकारके स्थित हैं) तिससे सब तरहसे निन्दा नहीं
करावे वे मनुष्य मायासे मोहित कलियुगरूपी सांपसे काटेहुए इस
प्रकार सोतेहैं जैसे शहद निकालनेवाले दिनमें सोते हैं जोकि जा-
गरण नहीं करते हैं जिन को कलियुग में एकादशी प्राप्तहुई परन्तु
जागरण नहीं किया २७। २८ वे निस्सन्देह नष्टहोगये जिससे कि
जीना निश्चय नहीं है इससे दोनों नेत्रों को खोलकर वैष्णव पदमें
देवे २९ और जे कियेहुए जागरणको नहीं देखतेहैं वे पापी हैं यदि
पुराण बांचनेवाला नहीं मिले तो गान और नाचकरावे ३० और
जो बांचनेवाला मिले तो पहले पुराणको पाठकरे तो हज़ार अश्व-
मेध और दशहज़ार वाजपेय यज्ञ का पुण्य मिले परन्तु इससे भी
करोड़ गुणा पुण्य जागरण करनेसे मिलताहै पिता,माता और स्त्री-
पक्षकी ३१।३२ पीढ़ियोंको वह उद्धार करताहै जो जागरण करता
है यदि व्रतकादिन वेधाहुआहो तो जागरण भगवान्का पूजन ३३
और दानादिक सब इसप्रकार वृथा होजातेहैं जैसे कृतघ्नोंके साथ
उपकार वृथाहोताहै यदि व्रतकादिन बेधाहो और प्रारब्धसे जाग-
रणकरे ३४ तो उसके स्थानको छोड़कर विष्णुजी शाप देकर चले
जातेहैं और जो व्रतकादिन बेधा न हो तो जे मनुष्य जागरण करते
हैं ३५ उनके बीचमें प्रसन्न होकर भगवान् नाचते हैं और जितने
दिन भगवान् के आगे जागरण करता है ३६ उतनेही युग विष्णु-
लोकमें प्राप्तहोताहै और जितने दिन विना भगवान्के जागरणके
बसता है ३७ उतनेही हज़ार वर्ष रौरव नरक से नहीं निवृत्तहोता
और एकादशी में भगवान्के जागरणके विना जो सोताहै ३८ या
गूंगेकी तरह स्थित रहताहै गान और पाठ नहीं करताहै वह विना
भगवान्के जागरणके सात जन्मतक गूंगाही होताहै ३९ और जो
मूर्ख भगवान्के जागरणमें उनके आगे नहीं नाचता वह प०।

न्मतक लँगड़ा होताहै ४० और जो गीत नाच और जागरण करताहै वह ब्रह्माका पद, हमारा और विष्णुके पदको सत्यही पाता है ४१ और विष्णुके जागरणमें रत जो वैष्णव मनुष्योंको भी सम्भाताहै वह पितरों समेत बहुत कालतक वैकुण्ठमें बसताहै ४२ और जो भगवान्के जागरणमें बुद्धि देताहै वह मनुष्य साठहज़ार वर्ष श्वेतद्वीपमें बसताहै ४३ जो कुछ मनुष्यों ने करोड़ जन्ममें पाप किये हैं वह सब श्रीकृष्णकी जागरणकी रात्रिमें नष्ट होजाताहै ४४ और जे शालग्रामकी मूर्त्ति के आगे जागरण करते हैं उनका पहर पहरमें करोड़ ऐन्द्रवसे उत्पन्न फल कहाहै ४५ और विष्णुके दिन के प्राप्त होने में जे जागरण नहीं करते उनका जो कुछ किया होता है वह वृथा होजाताहै ऐसेही वैष्णवों की निन्दा से सब कियाहुआ निष्फल जाताहै ४६ काम, अर्थ, सम्पदा, पुत्र, यश, शाश्वतलोक ये द्वादशी के जागरण के विना दशहज़ार यज्ञों से भी नहीं मिलते ४७ और जिसकी बुद्धि द्वादशी के जागरण में नहीं होती उसका भगवान् के पूजन में अधिकार नहीं होता ४८ जागरण के लिये भगवान् के मन्दिरमें जातेहुए पुरुषके जितने पग होते हैं उतनेही अश्वमेध के समान फल उसका होताहै ४९ और चलते हुए की पृथ्वी में पांवों से जो धूल कण गिरती है उतनेही हज़ार वर्ष जागरण करनेवाला स्वर्ग्ग में बसताहै ५० तिससे कलियुगमें मलके नाश करनेके लिये द्वादशी द्वादशीमें घरसे जागरणको भगवान्के मन्दिरमें जाना चाहिये ५१ पराये अपवादसे युक्त,मनकी प्रसन्नता से वर्जित, शास्त्रसे हीन, गीतसे हीन, दीपसे वर्जित ५२ शक्ति के उपचारसे रहित, उदासीन, निन्दासहित और विशेषकरके कलियुक्त जागरण नवप्रकारका होताहै ५३ और जो शास्त्र, नाच, गान, बाजा, ताल, दीप, मधु और उच्चारोंसे संयुक्त और यथोक्त भक्तिसे युक्त जागरण होताहै वह प्रसन्न और तुष्टिका पैदाकरनेवाला और मूर्ख मनुष्यों के रागका करनेवाला होता है ५४ । ५५ और बारह गुणों से युक्त जागरण माधवजी को प्रिय होता है इससे शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षोंमें यत्नसे इस जागरणको करे ५६ और जो द्वादशी

के प्राप्त होने में भगवान्का जागरण नहीं करता उसके बहुत व्रत और तीर्थ के वाससे क्या होता है ५७ और जो परदेश में मार्ग की पीड़ासे युक्त होकर भी द्वादशी में भगवान् के जागरण को नहीं त्यागता वह हमारे प्रिय होता है ५८ और जो पाप से मोहित हमारा भक्तभी हो परन्तु श्री भगवान् का जागरण न करे तो उसका हमारा पूजन व्यर्थ है क्योंकि हमारे पूज्यको वह नहीं पूजता ५९ शैव, सौर, शाक्त और गणसेवक इनमें से वह कोई नहीं है जो एकादशी के दिन भोजनकरे उसे पशुसेभी अधिक जानना चाहिये ६० और उस दुष्ट पापात्मा ने अनादर किया जो हमारी भक्तिके बलको आश्रयकर एकादशी में भोजन करताहै ६१ उसकी बाहर और भीतरकी देह करोड़ों पापोंसे आच्छादितहै परंतु जे एकादशी में जागरण करते हैं वे छूट जातेहैं ६२ तिसने यमराजके दूतों और यमराज को कूर्परदिया जो वेधरहित द्वादशी के व्रत और जागरणको किया ६३ स्वर्ग की अपेक्षा वह निस्सन्देह मुक्तहोगया और जो वेधयुक्त एकादशी के व्रतको करता है उसको वांछित नरकका सुख मिलता है ६४ उससे पितर नाशहुए देवताओं काभी नाशकिया और उसने दैत्यों को राज्य दी जोकि वेधयुक्त एकादशी के व्रत को किया ६५ और जो आनन्दयुक्त होकर नाचता, ताली बजाता, मुख से गीतगाता वा और भी अनेकप्रकारके कौतुक दिखलाता ६६ और भगवान् के आगे रात्रिमें जागरण में स्थित रहता कृष्णजी के चरित्र पढ़ता वैष्णवों के समूहों को रागयुक्त करता ६७ मुखसे बाजा बजाता मारे आनन्द के रोम खड़े होजाते अनेक प्रकारके सेवकों को दिखलाता और अपनी इच्छा से वार्तालाप भी करता है ६८ इन भावों से जो मनुष्य एकादशी में जागरण करता तो पल पल में उसको करोड़ तीर्थ का फल प्राप्त होता ६९ और जो अच्छे मन से धूप और भगवान् की आरती करता और रात्रि में जागरण करता है वह सातों द्वीपों का स्वामी होता ७० और जो कुछ ब्रह्महत्या के बराबर भी उस ने पाप किये हों वे सब एकादशी के जागरणसे नाश होजाते ७१ एक और श्रेष्ठ दक्षिणाओं से समाप्त

हुई सब यज्ञ और एक ओर भगवान् का प्यारा उन्हीं का जागरणहै ७२ काशी, पुष्कर, प्रयाग, नैमिषारण्य, गया, शालग्रामजीका महाक्षेत्र, अर्बुदारण्य, ७३ पुष्कर, मथुरा, सब तीर्थ, यज्ञ, चारों वेद ये सब भगवान्‌के जागरणमें प्राप्त होते हैं ७४ और गंगा, सरस्वती, तापी, यमुना, शतद्रुका, चन्द्रभागा और वितस्ता ये सब नदियां भी जागरणमें पहुंचती हैं ७५ तालाव, कुण्ड और सब समुद्रभी एकादशीमें कृष्णके जागरणमें प्राप्त होते हैं ७६ और जे मनुष्य कृष्ण के जागरणमें नाचते, गीतगाते और वीणाके बाजा बजाकर प्रसन्न होते हैं उनकी देवतालोग वांछा करते हैं ७७ इस प्रकार जागरण कर भगवान् को पूजनकर द्वादशी में अपनी शक्तिके अनुसार वैष्णवों समेत पारणकरै ७८ तब महादेवजी बोले कि नारदजी अब द्वादशीका उत्तम माहात्म्य कहताहूं सुनो द्वादशी पुत्र और मोक्षकी देनेवाली सदा जाननी चाहिये ७९ मनुष्य प्रातःकाल स्नानकर भगवान्‌की पूजाकर व्रतको समर्प्पण करदे कि अज्ञानरूपी तिमिरसे अन्ध मुझको हे केशवजी इसीव्रतसे ८० सुमुख और प्रसन्नहोकर ज्ञानकी दृष्टिको देवो तदनंतर जो कुछ मिले उसका पारणकरो ८१ इसके उपरांत जैसा इष्ट और जैसी विधिहो उसके अनुसार करावे जब पारण में थोड़ी द्वादशी हो ८२ तब मुक्तिकी इच्छा करनेवाले को रात्रि में पारण करना चाहिये तिस काल में रात्रिका दोष नहीं होता और कहीं निषिद्धभी नहीं है ८३ और जो यह कहाहै कि रात्रि में स्नान न करै महारात्रिमें भोजन न करै तो पहले और पीछे के पहरोंसे दिनके समान कर्म करावे ८४ जिससमयमें थोड़ी द्वादशी पारणके दिनमें हो तो सवेरेही प्रातःकाल और दोपहरका कर्मकरे ८५ जिस मनुष्य ने पृथ्वी में सर्व्वदा द्वादशी साधनकी है तिसके पुण्यको विशेषकरके कहनेको मैं समर्थ नहीं हूं ८६ और अम्बरीपादिक जे पृथ्वीमें भक्त महाजन सुनाई पड़ते हैं उन्होंने द्वादशीको साधनकर सब कामना प्राप्तकी हैं ८७ और इसीहीके साधन करने से विष्णुजीके स्थान में प्राप्तहुएहैं मैंने जो तुमसे कहाहै यह सब सत्यही है ८८ विष्णुजीके समान दूसरा देवता नहीं है और द्वादशी

के बराबर कोई तिथि नहीं है इसमें देने भोजन कराने और पूजादिक जो कुछ कर्म किये जाते हैं ८९ वे भगवान्‌के पूजन होनेसे सब पूर्ण होजाते हैं बहुत कहनेसे क्याहै भक्तों को भगवान् प्रियहैं ९० प्रलयपर्यन्त सब कामना देते हैं और द्वादशीमें जो दिया जाता है वह सब सफल होताहै ९१ जैसे कुरुक्षेत्र में जो दिया जाताहै वह निष्फल नहीं होता तैसेही हे नारदमुनि द्वादशी का दियाहुआ भी निष्फल नहीं होता ९२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेद्वादशीएकादशीजागरणमहिमानामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

अड़तीसवां अध्याय॥

महादेवजी बोले कि हे पुत्र नारद एक समयमें विष्णुजी के समीप मैं गया वहांपर पहले मैंने द्वादशीका माहात्म्य पूछा कि जिस को सुनकर सब मुनि भोगोंको भोगकर स्वर्गको प्राप्त हुए हैं १ तब नारदजी बोले कि हे महादेवजी श्रेष्ठ महाद्वादशी किसप्रकारकी है और उसके व्रत करनेसे क्या फल होताहै हे सर्वेश्वर प्रभुजी आप सब कहिये २ तब महादेवजी बोले कि हे नारदजी यह एकादशी महापुण्य फल के देनेवाली है नक्षत्र और योगों से युक्त मुनिश्रेष्ठों को भी करनी चाहिये ३ जया,विजया और पापके नाशकरनेवाली जयंती ये सब पापोंको नाशती हैं फलकी इच्छा करनेवालोंको करना चाहिये ४ शुक्लपक्षकी एकादशी में जो पुनर्वसु नक्षत्रहो तो वह तिथियों में उत्तम जयातिथि कहाती है ५ तिसका व्रतकर मनुष्य निस्संदेह पापसे छूटजाताहै और जो शुक्लपक्षकी द्वादशी में श्रवण नक्षत्रहो ६ तो वह तिथियों में उत्तम विजयातिथि कहाती है इसमें दान करनेसे हज़ारगुणा अधिक फल होताहै ब्राह्मणोंका भोजन ७ होम और व्रत करना भी हज़ारगुणा अधिक फल देताहै और जो शुक्लपक्षकी द्वादशी में रोहिणी नक्षत्रहो ८ तो सब पापोंकी नाशने वाली जयन्ती नामतिथि कहाती है इसमें सात जन्मों के थोड़े या बहुत पापोंको ९ भगवान् अपने पूजनसे नाश करदेते हैं और जो

शुक्लपक्ष की द्वादशी में कभी पुष्य होवे १० तो वह महापुण्य करने वाली और पापों के नाशने हारी होती है जो मनुष्य एक सालभर नित्य प्रस्थभर तिलको देताहै ११ और जो इसमें व्रतही करताहै तो इन दोनोंका बराबर पुण्यहोताहै तिसमें संसारके स्वामी सबके ईश्वर हरिजी प्रसन्न रहते हैं १२ और प्रत्यक्ष दर्शन देते हैं और इसमें अपार फल होताहै इसको सगर, ककुत्स्थ और नहुषने साधन कियाहै १३ तिसमें आराधन किये कृष्णजी पृथ्वी में सब वस्तु देते हैं और विशेषकरके वाणी मन और देहके कियेहुए १४ सातजन्म के पापों से निस्सन्देह वह छूटजाता है तिन एकादशियों में से पुष्य नक्षत्र संयुक्त का व्रतकर १५ मनुष्य हज़ार एकादशी के फल को प्राप्तहोताहै और स्नान, दान, जप, होम, पढ़ना और देवताओं की पूजन १६ जो तिसमें कियेजावें तो अक्षयफल होताहै तिससे फल की इच्छा करनेवालोंको यह यत्नसे करनी योग्यहै १७ पांचवें अश्वमेधसे जब युधिष्ठिरजी स्नानकरचुके तो उन धर्मात्माने यदुकुलमें अवतार लियेहुए कृष्णजी से पूंछा १८ कि हे जनार्दन जी रात्रिमें उपवास और एकबार भोजन करनेवाले मुझको क्या पुण्य और फलहोगा वह सब हे प्रभुजी कहिये १९ तब श्रीभगवान् बोले कि सुंदर हेमन्तऋतुमें अगहन महीनाके कृष्णपक्षकी द्वादशी को व्रत करे दशमी में एकबार भोजनकरे शुद्धचित्त और दृढ़ व्रतयुक्त होवे २० दशमी में नक्त अर्थात् जब दिनके आठवेंभागमें सूर्य मन्द होगयेहों २१ उसीको नक्त जानना रात्रिके भोजनको नक्त नहीं कहते हैं गृहस्थका नक्षत्र दर्शनसे नक्त होताहै २२ और संन्यासीका दिनके आठवें भागमें होताहै रात्रिमें उनको निषेधहै तदनन्तर प्रातःकाल में व्रतकरनेवाला नियमको करके २३ पवित्र मनुष्य मध्याह्नमें स्नानकरै कुंवांका स्नान अधम बावलीका स्नान मध्यम २४ तालावमें उत्तमस्नान और नदी में सबसे श्रेष्ठ स्नान होताहै जहांपर जलके स्थित होनेमें जलही के बीचमें जन्तु पीड़ा पातेहों २५ वहां स्नान करनेसे पाप और पुण्य बराबर होताहै घरमें जलको शुद्धकर स्नान करने से उत्तमस्नान होता है २६ तिससे हे युधिष्ठिर घर में स्नान

करे और घोड़े के नीचेकी मट्टी रथके नीचेकी मट्टी विष्णुजी के मन्दिरकी मट्टी और साधारण मट्टीको लगावे २७ और यह कहे कि हे मट्टी जो कुछ हमने पहले इकट्ठे किये पापहैं उनको नाशकीजिये फिर आप क्रोध लोभ को छोड़कर एकाग्रचित्त दृढ़व्रत होकर २८ कुछ न बके और पाखण्डी मनुष्यों, झूठवाद करनेवालों, ब्राह्मणकी निन्दा करनेवालों, २९ वा और भी दुराचारी, नहीं भोग के योग्य स्त्रियोंसे भोग करनेवालों,पराईद्रव्य चोरानेवालों और पराई स्त्रियों से भोग करनेवालों को छोड़देवे ३० और श्रीकेशवजीकी पूजाकर नैवेद्य करावे और भक्तियुक्त चित्त से घरमें दीपदेवे ३१ और उस दिन नींद और स्त्रीभोगको त्याग देवे धर्मशास्त्रही के विनोदसे सब दिनको व्यतीतकरे ३२ और भक्तियुक्त होकर रात्रि में जागरणकर ब्राह्मणों को दक्षिणादे नमस्कार कर क्षमामांगे ३३ जैसे कृष्णपक्ष की वैसेही शुक्लपक्ष की भी एकादशीको इसीविधिसे करे हे युधिष्ठिर एकादशी में भेद नहीं करावे ३४ इसप्रकार जो करता है उसके फल को सुनो कि शङ्खोद्धार में मनुष्य स्नानकर गदाधरजी के दर्शनभी करे ३५ परन्तु तबभी एकादशी के व्रतकी सोलहवीं कला को न प्राप्तहोवे और संक्रांतियों में जो चारलक्ष देता है ३६ परंतु तबभी एकादशीकी सोलहवीं कलाको नहीं प्राप्त होता और प्रभासक्षेत्रमें चन्द्रमा और सूर्यके ग्रहणमें जो पुण्य होताहै ३७ वह फल एकादशीके व्रत करने वालेको निश्चय होताहै जैसे केदारमें जलपीकर फिर जन्म नहीं होता ३८ तैसेही हे युधिष्ठिर एकादशी गर्भके वास को नाश करतीहै और पृथ्वी में अश्वमेध यज्ञका जो फल होता है ३९ तिससे सौगुणापुण्य एकादशी के व्रत करनेवालेको मिलताहै और तपस्वी और श्रेष्ठ ब्राह्मण जिसके घरमें भोजन करते हैं ४० उसको जो फल मिलताहै वह निश्चय एकादशी के व्रत करनेवाले को मिलता है और वेदान्त के पार जानेवालेको हज़ार गऊ देनेसे जो पुण्य होताहै ४१ तिससे सौगुणापुण्य एकादशी के व्रतके करने वालेको होताहै और जिनकी देह में ब्रह्मा विष्णु और महादेव ये तीनों देवता ४२ बसतेहैं उन्हीं के समान एकादशी का व्रत करने

वाला होताहै जे भक्त भगवान् की पूजा करते हैं वही मनुष्य पुण्य कर्म्म करनेवाले हैं ४३ एकादशी के व्रतकी पुण्यकी गिनती नहीं है इतनी पुण्य तिसकी होती है जो देवताओंकोभी दुर्लभ है ४४ इस से आधा पुण्य रात्रिके भोजनसे प्राप्त होता है और रात्रिका आधा पुण्य देहधारियों को एकवार भोजन से होताहै ४५ तभीतक तीर्थ दान और नियम गर्जते हैं जब तक प्राणी एकादशी का व्रत नहीं करता ४६ तिससे हे पाण्डवश्रेष्ठ तुम इसव्रतकोकरो और हे पांडव जो तुम इसकी पुण्यसंख्या पूंछतेहो सो तौ मैंभी नहीं जानताहूं ४७ हे युधिष्ठिर यह उत्तम व्रत छिपाहुआथा इसको मैंने कहा एकादशी के बराबर हज़ार यज्ञभी नहीं है ४८ तब युधिष्ठिरजी बोले कि हे देव यह पुण्यकारिणी एकादशी तिथि कैसे उत्पन्नहुई और संसारमें पवित्र और देवताओंको प्यारी कैसेहुई ४९ तब श्रीभगवान् बोले कि हे युधिष्ठिर पूर्वसमय में सतयुग में मुरनामी दैत्य बड़ा अद्भुत महाभयानक और सब देवोंको भय देनेवाला हुआ ५० उस महासुर मृत्युरूपी दुरात्माने इंद्र और सब देवताओंको जीतलिया ५१ और स्वर्ग से भी निकालदिया तब तो सब देवता शंकासमेत भय से डरेहुए पृथ्वी में घूमने लगे और इन्द्रसमेत सब महादेवजी के पास गये ५२ तब इन्द्रने महादेवजी के आगे सब हाल कहा कि स्वर्गलोक से भ्रष्टहुए सब देवता पृथ्वी में घूम रहे हैं परन्तु हे महादेवजी मनुष्यलोक में देवता नहीं शोभित होते हैं इससे हे देव हमसे उपाय कहिये देवता किसगतिको प्राप्तहैं ५३।५४ तब महादेवजी बोले कि हे देवराज हे देवताओं में श्रेष्ठ जहांपर गरुड़ध्वज जी हैं जोकि शरणागतों की रक्षा करनेवाले, संसारके स्वामी, रक्षा करने में परायण हैं ५५ वहांपर जावो वे तुम लोगों की रक्षाकरेंगे तब तो महादेवजी के वचन सुन महाबुद्धिमान् इन्द्र ५६ देवताओं समेत क्षीरसागर में गये वहां जाकर जलके बीचमें गदाधरजी को सोते देखा ५७ तब तो हाथ जोड़कर इन्द्र स्तोत्र पढ़नेलगे ५८ कि हे देव हे देवताओं के स्वामी हे देवता और दैत्योंसे वंदना कियेगये हे दैत्योंके वैरी हे कमलनयन हे मधुदैत्यके नाशनेवाले हम लोगोंकी

रक्षाकीजिये ५९ सब देवता राक्षससे डरेहुए आपकी शरणमें प्राप्त हुए हैं इससे हे संसार के स्वामी हे भक्तों के ऊपर कृपा करने वाले हमारी रक्षाकीजिये ६० हे देव हे देवों के स्वामी हे जनार्दन हे कमलनयन हे दानवों के नाश करनेवाले हमारी रक्षाकीजिये ६१ आपकेपास सब देवता प्राप्तहुएहैं और आपही रक्षा करसक्ते हैं इससे हे प्रभुजी शरण में आये हुए देवताओं की सहायता कीजिये ६२ क्योंकि हे देव आपही स्वामी, बुद्धि, करनेवाले, कारण, सब लोकोंके माता और संसारके पिताहैं ६३ हे भगवन् हे देव हेदेवों के स्वामी हे शरण आयेहुएके ऊपर कृपाकरनेवाले भयसे डरेहुए देवता आपकी शरणमें प्राप्तहुए हैं ६४ हेप्रभुजी सब देवता अत्यन्त घोर महापराक्रमी मुरदैत्यसे जीत लिये गये और स्वर्गसे निकाल दिये गये हैं तबतो इन्द्रके वचन सुनकर विष्णुजी बोले ६५ कि हे इन्द्र वहदैत्य कैसाहै कैसारूप और बलहै और उस दुष्टका स्थान कहां है वीर्य्य और पराक्रम क्या है और कुछ उसको वरभी मिला है हे महाबुद्धिमान् सब हमसे कहिये ६६ तब इन्द्र बोले कि हे देवेश पहले ब्रह्मवंश से उत्पन्न बड़ाघोर तालजंघ नाम बड़ा असुर हुआ ६७ तिसका पुत्र अत्यन्त उत्कट, महावीर्य्यवान्, देवताओं को भी भय करनेवाला, प्रसिद्ध, मुरनामीराक्षस हुआ ६८ वह चन्द्रावतीपुरी में बसताहै उसीने सब देवताओंको जीतकर स्वर्गसे निकालदिया है ६९ और इन्द्र, पवन, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, वायु, वरुण ये सब और और उसने कियेहैं ७० हे जनार्दनजी सब उसने सत्यही सत्य अपने आप किये हैं और देवलोक सब स्थानों से वर्जित कर दियाहै ७१ इन्द्रके ऐसे वचन सुनकर क्रोधयुक्त भगवान् बोले कि मैं देवताओं के भय देनेवाले दुष्ट राक्षसको मारूंगा ७२ ऐसा कहकर देवताओं समेत भगवान् चन्द्रावती पुरी को गये वहांपर देवताओंने वारंवार गर्जतेहुए मुरको देखा ७३ तब तो उसने सब देवताओं को जीत लिया तो देवता दशोदिशाओं में भाग गये फिर भगवान् को देखकर राक्षस बोला कि खड़ेहो खड़े हो ७४ तब तो क्रोधसे लालनेत्र होकर भगवान् उससे बोले कि रे दुराचारी राक्षस

हमारे भुजाओंको देख ७५ तदनन्तर सब दुष्ट राक्षस भगवान् के सम्मुखहुए तो भगवान्‌ने बाणों से सबको मारा परन्तु भयसे व्याकुल वे फिर उत्पन्न होगये ७६ तब भगवान्‌ने दैत्योंकी सेनामें चक्र छोड़ा तिससे सैकड़ों काट डालेगये तो बहुत से नाशको प्राप्त होगये ७७ एक राक्षसही वारंवार युद्ध करतारहा उसने सब देवताओं और भगवान्‌को भी जीतलिया ७८ फिर भगवान्‌हीसे बाहुयुद्धकरनेलगा तो देवताओंके हज़ार वर्षतक उसने बाहुयुद्धही किया ७९ तब तो भगवान् बड़ी चिन्ताको प्राप्तहुए कि सब देवता नष्ट होगये तदनन्तर उससे हारेहुए विष्णुजीभी बदरिकाश्रमको चलेगये ८० वहां पर जाकर बारहयोजनकी सिंहावर्तीनाम गुहा कि जिसमें एक ही द्वारथा उसमें जनार्दनजी सोनेलगे ८१ तब तो दानवभी भगवान् के मारने के लिये उसी गुहामें घुसगया कि जिसमें महायुद्धसे थके हुए और योगमायासे भगवान् सोये हुएथे ८२ वहांपर विष्णुजीके पीछेही तिसीसमय गुहामें पहुंचगया और विष्णुजी को सोते देख कर वह राक्षस बड़े आनन्दको प्राप्तहुआ ८३ इसप्रकार विष्णुजी को हारे और शङ्कासे गुहामें पैठेहुए मानकर बोला कि मैं दानवोंके भय करनेवालेको निस्संदेह मारूंगा ८४ तब तो हे युधिष्ठिर विष्णु जीकी देहसे कन्या अत्यन्त रूपवान् सौभाग्ययुक्त सुन्दर हथियारों समेत निकली ८५ भगवान् के तेज अंशसे उत्पन्न महाबल और पराक्रमयुक्त उस कन्याको मुरनामी दैत्य ने देखा ८६ तब तो सब युद्धमें निपुण उसकन्या और मुरदैत्यसे युद्ध प्रारंभहुआ और वह कन्याभी अच्छी प्रकार युद्ध करनेलगी ८७ और उसकी हुंकार से मुरनामी महासुर भस्महोगया जब कन्याने राक्षसको मारडाला तो उसी समयमें भगवान्‌भी जगपड़े ८८ और गिरेहुए राक्षसको देख कर बड़ी विस्मयको प्राप्तहुए कि किसने अत्यन्त भयानक हमारे वैरीको मारा ८९ हमारी दयासे इसने अत्यन्त घोर कर्म्म कियेथे तदनन्तर कन्या बोली कि इसने देवता, गन्धर्व, यक्ष, उरग, राक्षस ९० और इन्द्रादिक सबको जीतकर स्वर्गसे निकाल दियाथा मैंने आप को सोते देखा और मुर राक्षस को पीछे प्राप्त हुआ समझकर ९१

जाना कि आपके सोतेहुए यह तीनोंलोकों को नाश करेगा तब तो कन्याके वचन सुनकर विष्णुजी वचनबोले ९२ कि जिसने हमको जीतलियाथा उसको तुमने कैसे जीता तब तो कन्यारूपी एकादशी बोली कि हे स्वामिन् तुम्हारे प्रसाद से मैंने महादैत्य को मारडाला ९३ तब श्रीभगवान् बोले कि तीनोंलोकोंमें मुनि और देवता आनंद को प्राप्त होगये अब हे भद्रे जो तुम्हारे मनमें रुचताहो वह हमसे कहो जो देवताओंकोभी दुर्लभहै वह निस्सन्देहदूंगा ९४ तब एकादशी बोली कि हे देव हे जगत्पते जो आप मेरे ऊपर प्रसन्नहैं और सत्य कहते हैं तो मैं हृदयमें एकवरकी वांछा करती हूं ९५ और हे देवेश हे प्रभुजी हे जगन्नाथ आपसे ईप्सितकी प्रार्थना करतीहूं जो सत्यहै तो तीनवाणी दीजिये ९६ तब श्रीभगवान् बोले कि हे सुव्रते अवश्य मैंने तुम से सत्यही सत्य कहा है तीनवाणी भी मैं देता हूं अवाक्य नहीं होगा ९७ तब एकादशी बोली कि हे प्रभो तीनोंलोकोंमें चारोंयुगोंमें इससमयसे मुझे ऐसा करदीजिये ९८ कि आपके प्रसादसे मैं सब तीर्थोंमें प्रधान, सब विघ्नोंके नाशनेवाली और सब सिद्धिकरनेवाली देवी होजाऊं ९९ और जे मनुष्य आपकी भक्तिसे हमारा व्रतकरेंगे उनके हे जनार्दन हे प्रभो सब सिद्धिहोजावे क्योंकि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हुए हैं १०० और जो व्रत, रात्रि में भोजन और एकवार भोजनकरे उसको हे माधवजी द्रव्य, धर्म और मोक्ष दीजिये १०१ तब विष्णुजी बोले कि हे कल्याणि जो तुम कहतीहो वह सबहोगा हे भद्रे सब मनोरथोंको तुम्हीं देवोगी और कोई नहीं देगा १०२ जेसंसारमें हमारे भक्त हैं और जेकार्त्तिक में भक्त हैं जो कि चारोंयुग और तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध हैं १०३ तुमको मैं शक्ति मानता हूं तुम्हारे व्रतमें स्थित जे हमारी पूजाकरेंगे वे निस्सन्देह मोक्षको प्राप्तहोंगे १०४ तीज, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और इन सबसे विशेष करके एकादशी तिथि ये हमारी अत्यन्तप्रिया है इस में सब तीर्थोंसे अधिक पुण्य निस्सन्देह सत्य सत्य होता है १०५ यह तीन वाणीसे तिसको वर दिया तो एकादशी महाव्रत हृष्ट पुष्ट होगई १०६ फिर भगवान् ने कहा कि तुम शत्रु को मारोगी और

श्रेष्ठगतिको देवेगी सब विघ्नोंको नाशकरेगी और सब सिद्धि और वरको देवेगी १०७ भगवान्ने कहा कि हे युधिष्ठिर दोनों पक्षोंकी एकादशी समान और कल्याणयुक्त हैं शुक्ल और कृष्णपक्षका भेद नहीं करावे १०८ सब व्रत करनेवालों को भेदनहीं करना चाहिये दिन या रात्रि में भक्तिमें तत्परहोकर सुने १०९ दोनों पक्षोंमें सब एक तिथिहोवे उदय समयमें थोड़ी एकादशीहो अन्तमें त्रयोदशी हो ११० और बीचमें द्वादशी पूरी हो तो त्रिस्पृशा नाम भगवान् को अधिक प्यारी होती है इस एकके व्रत करनेसे हज़ार एकादशी का फल होताहै १११ इसीप्रकार द्वादशी में पारण करनेसे भी हज़ारगुणा फल मिलताहै। अष्टमी, एकादशी, छठि, तीज, चतुर्दशी ११२ ये पूर्वविद्धा नहीं करनी चाहिये परविद्धा का व्रतकरे एकादशी दिन रात्रिहो और सबेरे भी घड़ीभरहो ११३ तो यह तिथि त्याग करनी योग्यहै द्वादशीयुक्त व्रतकरनी चाहिये इसप्रकार मैंने दोनों पक्षोंकी एकादशीकही ११४ एकादशीमें निस्सन्देह उपवास करें ते वैष्णवस्थान कि जहांपर भगवान् रहते हैं वहांपर प्राप्तहोतेहैं ११५ और विष्णुकी भक्तिमें परायण वे मनुष्य संसारमें धन्य हैं और जो सब कालोंमें एकादशीका माहात्म्य पढ़ताहै ११६ वह मनुष्य हज़ार गोदानके पुण्यके फलको प्राप्त होताहै और जेभक्ति से दिन या रात्रि में सुनते हैं ११७ वे निस्सन्देह ब्रह्महत्यादि पापों से छूटजाते हैं हे युधिष्ठिर विष्णुधर्म की बराबर गीताका अर्थ नहीं है और एकादशीके समान पापका नाशनेवाला व्रत नहीं है ११८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेएकादश्युत्पत्तिमुख्योनामाष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८॥

उनतालीसवां अध्याय॥

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी का माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरजी बोले कि मैं विष्णु विभु साक्षात् तीनोंलोकों के सुख देनेवाले संसार के स्वामी संसारके रचनेवाले पुराण पुरुषोत्तमजी की वन्दना करताहूं १ और हे देव देवेश लोकों के कल्याणके लिये

और पापोंके नाशकेहेतु एक भारी संशय हमारे है तिसको पूंछताहूं २ कि अगहनके शुक्लपक्षमें जो एकादशी होतीहै उसका क्या नाम और विधि है उसमें कौन देवता पूजाजाता है हेस्वामिन् यह यथोचित विस्तार से कहिये ३ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हेराजन् तुमने अच्छा प्रश्नकिया तुम्हारा अच्छा निर्मल यशभी है में उत्तम एकादशी को कहताहूं ४ हमारी प्यारी द्वादशी अगहन के कृष्णपक्ष में हमारी देहसे ५ देवता और असुरों के नाश करनेके लिये उत्पन्न हुईथी उसको मैंने तुम्हारे आगे कहा ६ पहले की एकादशी चराचर तीनोंलोकों में मार्गशीर्ष के शुक्लपक्ष में उत्पन्न हुई है ७ इसके उपरांत अगहनकी शुक्लपक्षकी एकादशी को कहताहूं जिसके सुनने से वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ८ सब पापोंके हरनेवाली मोक्षानाम कहाती है दामोदर देव को इस में यत्नसे पूजे ९ तुलसी की मञ्जरी और धूपदीपसे यत्नपूर्वक पूर्व की विधि से दशमी तथा एकादशीको पूजनकरै १० यह मोक्षा एकादशी महापापोंकी नाश करनेवाली है नाच गीत और स्तोत्रों से रात्रि में हमारा जागरण करना योग्यहै ११ हे राजन् सुन्दर पुराण की कथाको कहताहूं सुनिये जिसके सुननेहीसे सबपाप नाश होजाताहै १२ और जिसके पापसे पितर नरकमेंहों तो इस एकादशी के पुण्यदानसे निस्संदेह मोक्षको प्राप्तहोवें १३ वैष्णवों से शोभित सुन्दर चम्पक नगर में वैखानस नाम राजा प्रजाओं की पुत्र की तरह रक्षा करताथा १४ वेद और वेदांगके पार जानेवाले बहुतसे ब्राह्मण भी बसतेथे और वैखानस राजाकी प्रजा ऐश्वर्ययुक्त थी १५ इसप्रकार राजा राज्य करताथा कि रात्रिमें स्वप्नदेखा कि हमारे पितर नरकमें प्राप्तहैं १६ इसप्रकार तिन सबको देखकर राजा बड़े विस्मयमें हुआ और स्वप्न का सबहाल ब्राह्मणोंसे कहा १७ कि हे ब्राह्मणो मैंने अपने पितरों को नरकमें देखाहै और उन्हों ने हमसे यह कहा है कि हे पुत्र इस नरकसागर से तारिये १८ ऐसा कहकर हमारे पितर वारंवार रोने लगे ऐसा देखकर हमको सुख नहींहै १९ और यह भारीराज्य भी हमको सुख नहीं देती घोड़े और सब हाथीभी हमें नहीं रुचते २०

स्त्री और पुत्र भी नहीं रुचते हैं क्या करूं कहां जाऊं हमारा हृदय ढकाहुआ है २१ वह व्रत, तपस्या और योग कहिये जिससे हमारे पितर शीघ्रही मोक्षको प्राप्तहों २२ क्योंकि महात्मा, बलवान् पुत्र के जीतेहुए पिता घोर नरकमें होवे तो उस पुत्रका क्याफलहै २३ तब ब्राह्मण बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ यहांसे पासही भूत और भविष्यके जाननेवाले पर्वत मुनिका महान् स्थान है वहांपर जाइये २४ तिनके ऐसे वचन सुन ब्राह्मण और प्रजाओं से युक्त महान् वैखानस राजा शीघ्रही पर्वतमुनि के सुंदर स्थानको चले और वहां पहुंच कर २५। २६ ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेदके पढ़ने में निपुण मुनियों से घिरे हुए दूसरे ब्रह्मा की नाईं २७ मुनियों में श्रेष्ठ पर्वतमुनि को देखा तब तो राजा ने दण्डवत्कर मुनि के चरणछुये २८ तो मुनिने राज्य के सातों अंगों में कुशल पूंछी और राजा के सुखसेयुक्त राज्यमें निष्कण्टकता भी पूंछी २९ तब राजा बोले कि हे स्वामिन् आपके प्रसादसे हमारे सातों अंगों में कुशलहै क्योंकि जे विष्णु और ब्राह्मणों के भक्त हैं उनको विघ्न कैसे होसक्ते हैं ३० हे द्विजोत्तम मैंने स्वप्न में अपने पितरों को नरक में स्थित देखा है अब वे हमारे पितर किस पुण्य की सामर्थ्य से मोक्ष को प्राप्तहोंगे ३१ हे स्वामिन् हे मुनिसत्तम यही मेरे सन्देह है इसी के पूंछने के लिये आपके पास प्राप्त हुआ हूं कोई उपाय करना चाहिये ३२ राजाके वचनसुन ब्रह्माके सदृश तपस्वी मुनियों में श्रेष्ठ पर्वत मुनि ध्यानसे नेत्रोंको मूंद लेते भये ३३ और एक मुहूर्त्त ध्यानमें स्थित होकर राजासे बोले कि हे राजेन्द्र तुम्हारे पितरोंके पूर्व्वका चेष्टित मैंने जाना ३४ पूर्वजन्ममें तुम्हारे पिता राज्यसे अभिमानयुक्त क्षत्रियथे वे राजधर्म में प्रवृत्तहोकर स्त्रीके ऋतुकालमें ३५ किसी काम के लिये अपनी स्त्री को छोड़कर किसी गांव को चलेगये तुम्हारे पिताने अपनी स्त्रीको ऋतुदान नहीं दिया ३६ उसी पापके प्रभाव से तुम्हारे पिता पितरोंसमेत घोरनरक में डालेगये हैं ३७ तदनंतर राजा वैखानस फिर मुनिसे बोले कि हे मुनिजी किस व्रतके प्रभाव से तिनका मोक्षहोगा ३८ तब तो मुनिबोले कि अगहनके शुक्लपक्ष

में मोक्षानाम एकादशी का व्रत होताहै यह व्रत सबको करना चाहिये आप इसकोकरिये और पिताको पुण्यदीजिये ३९ तिसीपुण्य के प्रभावसे तिनका मोक्ष होगा ब्रह्माके वचनकी नाईं यह मैंने सत्यही कहाहै ४० मुनिके वचन सुनकर राजा अपने घरमें आगया और कष्टसे उसको अगहनका महीना प्राप्तहुआ ४१ तो सबसमेत राजाने मुनिके वचनसे व्रत किया और पुण्य को पिताको दे दिया ४२ पुण्यके देतेही क्षणमात्रहीमें आकाशमें फूलोंकी वर्षाहुई और राजा वैखानसके पिता पितरों समेत मोक्षको प्राप्तहोगये ४३ और राजासे आकाशमें पुण्यकारी वाणीबोले कि हेपुत्र तुम्हारा कल्याण हो ऐसा कहकर स्वर्गको गये ४४ इसप्रकार जो कल्याण करनेवाली मोक्षाएकादशी का व्रत करताहै तो उसके पाप नाश होजाते हैं और मरताहै तो मोक्षको प्राप्त होताहै ४५ इससे बढ़कर मोक्षदेने वाली कोई एकादशी नहीं है हे राजन् इसकी पुण्यकी गिनती को मैं नहीं जानता यह व्रत हमको बड़ा प्रिय है ४६ चिन्तामणि के समान यह मनुष्यों को मोक्षकी देनेवाली है इसके पढ़ने सुनने से वाजपेययज्ञका फल प्राप्त होताहै ४७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यां संहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेमार्गशीर्षशुक्लमोक्षदाएकादशीनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवां अध्याय॥

पौषकृष्णा सफला एकादशीका माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे स्वामिन् कृष्णचन्द्रजी पौषके कृष्णपक्ष की एकादशीका क्या नाम और क्या विधिहै और कौन देवता की उसमें पूजा होती है यह सब विस्तार से कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजेन्द्र आपके स्नेहरूपी बन्धन से कहताहूं कि बहुत दक्षिणावाली यज्ञोंसे हमको वैसी प्रसन्नता नहीं है २ जैसी कि एकादशी के व्रतसे होती है तिससे सब यत्नोंसे एकादशी करने योग्य है ३ हे धर्मात्माओंमें निपुण राजन् यह हम सत्यही कहते हैं झूठ नहीं है पौषके कृष्णपक्षमें सफलानाम एकादशी होती है ४ तिसमें

विधिपूर्व्वक नारायण देवको पूजै और पहले कही हुई विधि से क-
ल्याण करनेवाली एकादशीका व्रतकरै ५ सर्पों में जैसे शेषजी श्रेष्ठ,
पक्षियों में गरुड़, देवताओं में विष्णु, दो पांववालों में ब्राह्मण ६
तैसेही व्रतों में एकादशी तिथि श्रेष्ठहै हे राजन् वे मनुष्य सदैव ह-
मारे पूज्यहैं ७ एकादशी में लीनहुए जे एकादशी व्रतको करते हैं वे
इसलोकमें धनवान् होते हैं और मरते हैं तब मोक्षको प्राप्तहोते हैं८
सफला एकादशी में फलोंकरके नामसे भगवान्का पूजन करै जैसे
कि नारियल,सुपारी, बीजपूरक और जंबीरी नींबू ९ सुंदर आंवले,
लौंग, बेर और विशेषकरके आंबों से १० देव देवेश की पूजा करै
धूपदीप करै और सफला एकादशी में विशेषकरके दीपदान करावे
११ रात्रिमें वैष्णवोंसमेत जागरण करना चाहिये एकाग्रमनसे एक
पलभी जो रात्रि में जागरण करता है उसके पुण्य को सुनो उसके
समान यज्ञ और तीर्थ नहीं है १२। १३ और हे राजेन्द्र सब व्रत
उसकी सोलहवीं कलाको भी नहीं प्राप्त होते इसीप्रकार हज़ारवर्ष
तपस्यासे भी जो फल नहीं मिलता १४ उस फलको जागरण करने
वाला प्राप्त होता है अब हे राजशार्दूल सफला की सुन्दर कथा सु-
निये १५ माहिष्मत राजाकी प्रसिद्ध चम्पावतीपुरी थी उसमें उस
के पांच पुत्रथे १६ तिन पांचोंके बीचमें ज्येठापुत्र सदैव भारीपापों
में रतरहताथा दूसरोंकी स्त्री भोगकरता वेश्यामें आसक्त रहता म-
दिरा पीता १७ उसने पिताकी द्रव्य को पापकर्मोंसेही खर्च किया
नित्यही असद्वृत्ति में रतरहता ब्राह्मणोंकी निन्दाकरता १८ और
नित्यही वैष्णव और ब्राह्मणोंकी भी निन्दा करता इसप्रकारके पुत्र
को माहिष्मत राजा देखकर १९ कि जिसका नाम लुम्पकथा उस
को उसके पिता और भाइयों ने राज्य से निकाल दिया २० वह
लुम्पक परिपंथि के समान परिवारवालों से त्यागाहुआ उससमय
में चिन्ता करता भया २१ कि मुझको भाइयों और पिताने छोड़
दिया और निश्चय राज्यसे भी निकालदिया ऐसी चिंतनाकर उसी
समयमें पापमें बुद्धि करताभया २२ कि मुझ को घोरवन में जाना
चाहिये वहीं से पिताके सब पुरको नाश करदूंगा २३ ऐसी बुद्धिकर

वह लुम्पक उसपुरसे दैवयोगही से सघन वनमें प्राप्त होगया २४ वहांपर नित्यही जीवों को मारे चोरी करै जुवां अच्छीतरह से खेलै इसीतरहसे सब नगरको उसने पापकर्म्मसे चुरालिया २५ एकसमय रात्रिमें चोरीकरनेगया तो निशाचरोंने उसको पकड़लिया तब उनसे यह बोला कि मैं माहिष्मत राजाका पुत्रहूं २६ तब तो निशाचरोंने उस पापकर्म्म करनेवालेको छोड़दिया तो वह फिर वनमें चलागया वहांपर मांस और वृक्षके फल खाने में नित्यही रतरहा २७ परंतु उसदुष्टका आश्रम भगवान्‌के समीप कि जहां पर बहुत वर्षोंका पुराना पीपलका वृक्षथा वहांपर था २८ वनमें उस वृक्षका भारी देवतापन वर्तमान था वहीं पर पापबुद्धियुक्त लुंपक बसताथा २९ इसभांति बहुतकाल बीतने पर किसी पुण्यके संचयसे पौषके कृष्णपक्ष की दशमीमें ३० वृक्षोंके फल भोजनकर रात्रिमें जाड़ेसे पीड़ित लुम्पक नाम अत्यन्त पापी वस्त्रहीन और नेत्रोंसे भी कम देखकर ३१ पीपलके वृक्षके समीपहीसे अत्यन्त शीतसे पीड़ायुक्त नींद और सुखसे रहित प्राणहीनसा होगया ३२ और दांतोंसे मुँह को आच्छादित कर इसप्रकार सब रात्रि बिताता भया परन्तु उस महापापीको सूर्य्यके उदयमें भी चेत नहींहुआ ३३ लुम्पकको सफला एकादशी के दिनमें दोपहर को चेतहुआ ३४ तो व्यथायुक्त इधर उधर देखकर आसनसे उठा परंतु पांवोंसे बड़ी पीड़ाके साथ चलसका जैसे कि खंजन चलते हैं ३५ तब तो वह वनके बीचमें भूंखसे अत्यन्त पीड़ितहुआ कि उस दुरात्मा को जीवों के मारने में भी शक्ति न रही ३६ तब उसने फल तोड़े और तोड़कर आश्रम को आया कि तबतक सूर्य्यनारायण अस्तहोगये ३७ तो फलोंको वृक्षकी जड़में उसने धरदिया और हे तात क्या होगा ऐसा कहकर रोनेलगा ३८ और यह कहा कि इनफलोंसे लक्ष्मीके पति भगवान् प्रसन्नहोवें ऐसा कहकर उसे रात्रिमें नींद नहीं प्राप्तहुई ३९ तब तो भगवान् ने उस दुरात्माका रात्रि में जागरण और फलों से सफला एकादशी का पूजनमाना ४० अकस्मात्‌ही लुम्पक ने इस व्रतको किया तिसीपुण्यके प्रभावसे अकंटकराज्य उसको प्राप्तहुई ४१

जबतक सूर्य उदय और विष्णुजी प्राप्तरहें तबतक वह राज्यभोगे तिसी समयमें आकाशमें आकाशवाणी बोली ४२ कि हे पुत्र तुम सफला एकादशी के प्रसाद से राज्यको प्राप्तहोगे ऐसा वचन कहतेही वह लुम्पक सुन्दररूप धारताभया ४३ और उसकी बुद्धिश्रेष्ठ वैष्णवी होगई सुन्दरगहने और शोभासेयुक्त अकंटक राज्यको प्राप्तहुआ ४४ और उसने पांचसौ दश वर्षतक राज्यकिया उसके सुन्दरपुत्र और स्त्रियां कृष्णजी के प्रसादसे हुईं ४५ तब उसने शीघ्र राज्य छोड़कर पुत्रको देदी और कृष्णजी के समीप प्राप्तहुआ कि जहांपर जाकर मनुष्य शोच नहींकरते ४६ हे राजन् इसप्रकार जो सफला एकादशीका उत्तम व्रत करताहै वह इसलोकमें सुख प्राप्त करता है और मरताहै तो मोक्षको प्राप्तहोता है ४७ जे सफला एकादशीमें रत मनुष्यहैं वे संसारमें धन्यहैं और उनका जन्मसफलहै इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ४८ और हे राजन् पढ़ने सुनने और व्रतकरनेसे मनुष्य राजसूययज्ञके फलको प्राप्तहोताहै ४९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेपौषकृष्णासफलैकादशीनामचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

पौषशुक्ल पुत्रदा एकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे कृष्णजी आपने सफला एकादशीको कहा अब प्रसन्नतासे शुक्लपक्ष में जो होती है उसको कहिये १ कि क्या नाम और क्या विधिहै उसमें कौन देवता पूजे जाते हैं और हृषीकेश पुरुषोत्तमजी किसके ऊपर प्रसन्न होते हैं २ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् हे महाराज लोकोंकी कल्याणकी कामनासे पौष शुक्ल एकादशीको कहता हूं ३ पहलेकी विधिसे यह यत्न से करनी योग्यहै इसका पुत्रदानामहै सब पापोंको नाशती है श्रेष्ठ है ४ इसके नारायण देवताहैं जोकि कामना और सिद्धिके देनेवाले हैं चराचर तीनोंलोक में इससे श्रेष्ठ कोई नहीं है ५ भगवान् मनुष्य को विद्या और यशयुक्त करदेते हैं अब हे राजन् पाप नाशनेवाली श्रेष्ठ

कथा कहताहूं ६ पहले भद्रावतीपुरीमें सुकेतुमान् नामराजाथे तिन की चम्पकानाम रानीथी ७ परन्तु राजा पुत्रसे रहितथे उन्होंने मनोरथों से काल बिताया परन्तु वंशका करने वाला पुत्र नहीं प्राप्त हुआ ८ तब उस धर्मात्मा राजाने बहुत काल चिन्तनाकी कि क्या करूं कहां जाऊं पुत्रकी प्राप्ति कैसेहो ९ इसप्रकार राजा राज्य और पुरमें सुखको न प्राप्तहुआ और अपनी साध्वी रानीसमेत प्रतिदिन दुःखित होताभया १० दोनों स्त्री पुरुष नित्यही चिन्ता और शोक में परायण रहे और पितर भी राजाके दियेहुए जल को कुछ गर्म्म पीतेथे ११ कि राजाके पीछे हमनहीं देखते जो हमलोगोंको तृप्तकरे इसप्रकार स्मरणकर राजाके पितर भी दुःखितहुए १२ और राजा को बांधव,मित्र,मंत्री,सुहृद,हाथी,घोड़ा और पैदलकी सेनाभी नहीं रुचती भई १३ राजाके मन में नित्यही निराशता वर्त्तमानथी कि पुत्रहीन मनुष्य के जन्मका फल नहीं है १४ क्योंकि पुत्रहीनका घर शून्य रहता है और हृदय सदा दुःखयुक्त रहता है और विना पुत्र के पितृ देवता और मनुष्योंसे उऋण नहीं होता १५ तिससे सब यत्नोंसे मनुष्य पुत्रको उत्पन्नकरै इसलोक में तिनको यश और परलोक में सुन्दर गति मिलती है १६ जिन पुण्यकर्त्ताओं के घर में पुत्रका जन्म होताहै उनके घरमें उमर, आरोग्य और सम्पत्ति वर्त्तमान रहती है १७ जिन पुण्यकर्त्ता मनुष्यों के घरमें पुत्रका जन्म होता है उनकी बड़ी पुण्य और भगवान् में भक्ति होती है क्योंकि पुण्य और भक्तिके विना पुत्रकी प्राप्ति नहीं होसक्ती १८ और यह बुद्धिसे हमको निश्चय हुआ है कि पुत्रही सम्पदाहैं इसप्रकार चिन्तना करतेहुए राजा कल्याणको न प्राप्तहुए १९ प्रातःकाल और आधीरातमें चिन्तना करते भये और अपने आप अपनी आत्मा के नाशकी चिन्तना भी करनेलगे २० और आत्माके नाशमें तिस समय में दुर्गतिकी भी चिन्तना करते भये क्योंकि अपनी देहको पतित और पुत्रहीनदेखा २१ फिर तो अपनीही बुद्धिसे अपने हित का कारण विचारकर राजा घोड़ेपर चढ़कर सघन वनको चलेगये २२ कि जिसमें हरिण और पक्षी भरेहुएहैं राजाके जानेको पुरोहि-

त आदिक सबों ने भी नहीं जाना २३ वहांपर जाकर राजा घूमने लगे और वनके वृक्षोंको देखनेलगे जो कि नीचे लिखेजाते हैं बरगद, पीपल, बेल, खजूर, कटहर २४ बकुल, सप्तपर्ण, तिन्दुक, तिलक शाल, ताल, तमाल, सरल २५ इंगुदी, ककुभ, श्लेष्मातक, नग शल्लक, करमर्द, पाटल, बेर २६ अशोक, ढाक और सियार, चौगड़ा बनबिलार, भैंसा, शल्लक, चमर २७ और बेमौरि से आधे निकले हुए सांप, मतवाले वनके हाथी जो कि अपने बच्चोंसमेत २८ यूथप चारदांतयुक्त और हथिनियों के यूथोंके मध्यमें वर्त्तमान हैं तिन सब को देखकर और हाथियोंको देखकर राजा अपनेहाथियोंकी चिंतन करनेलगे २९ उनके बीचमें घूमतेहुए राजा शोभाको प्राप्तहुए और बड़े आश्चर्य्य समेत वनको देखा ३० और राह में सियारी और घुग्घूके शब्दसुने और रीछ और हरिणोंको देखते हुए वनके बीच में घूमनेलगे ३१ इसप्रकार दोपहरको राजाने गहन वनदेखा और भूंख प्याससे व्याकुल इधर उधर दौड़नेलगे ३२ और सूखगयाहै गल और कन्धर जिसका ऐसा राजा चिन्तना करनेलगा कि मैंने क्या कर्म किये हैं जो इसप्रकारके दुःख प्राप्तहुए हैं ३३ मैंने तो यज्ञ और पूजाओं से देवताओं को प्रसन्न किया और ब्राह्मणोंको दान और मीठे भोजनों से प्रसन्नकिया ३४ और सदैव प्रजाओंको पुत्र की तरह पालनकिया परंतु किसकारणसे हमको इसप्रकारका घोर भारी दुःख प्राप्त हुआ ३५ इस प्रकार चिन्तायुक्त राजा आगे वन को गये तो सुकृत के प्रभाव से उत्तम तालावदेखा ३६ कि जिसमें मछलियां भरीहुई हैं कमल, कारंड, चकही चकहा और राजहंसों से शोभित है ३७ मगर, अनेक प्रकारकी मछलियां और अन्य जलचरों से युक्तहै और उस तालावके समीप मुनियों के बहुतसे स्थान ३८ भी देखा तब तो लक्ष्मीयुक्त राजाका शुभ कहनेवाले शकुनोंसे दहना नेत्र और दहनाभुजा फरका ३९ जो कि सुन्दर फलको कह रहाहै और तालावकेही किनारे वेदकाजप करतेहुए मुनियोंको देखकर ४० राजा बड़े आनन्दयुक्त होगये और घोड़ेसे उतरकर मुनियोंके आगे खड़ेहोगये ४१ और उन व्रतयुक्तोंके अलग २ वन्दना

किया और हाथजोड़कर वारंवार दण्डवत् किया ४२ तबतो वे मुनि बोले कि हे राजन् तुम प्रसन्न तो हो तब राजाबोले कि आपलोग कौ-नहैं और क्या २ नामहैं और किसलिये सबलोग इकट्ठाहैं यह सब ह-मारे आगे कहिये ४३ तब मुनिबोले कि हेराजन् हमलोग विश्वेदेवा हैं आजसे पांचवें दिनमें माघ प्रारम्भ होगा इससे स्नान के लिये यहां प्राप्तहुएहैं ४४ और हे राजन् इससमय में पुत्रदा नाम एका-दशी है इसमें व्रत करनेवालोंको भगवान् पुत्र देतेहैं ४५ तब राजा बोले कि पुत्रके उत्पन्न करने में हमको यह बड़ा संदेहहै यदि आप प्रसन्नहों तो पुत्रदीजिये ४६ तब तो मुनि बोले कि हे राजन् आज ही पुत्रदा नाम एकादशी वर्त्तमानहै इसका उत्तम व्रत कीजिये ४७ तदनन्तर हमारे अभिषेक और भगवान्के प्रसाद से अवश्य तुम को पुत्रकी प्राप्तिहोगी ४८ इसप्रकार मुनियों के वचन और उप-देश और पुत्रदा एकादशी के विधानसे राजाने उत्तम व्रतकिया ४९ और द्वादशी में पारणकर मुनियों के वारंवार नमस्कार कर राजा अपने घरमें आये और रानी ने गर्भ धारण किया ५० और नवयें महीने पुण्यकर्मसे तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ जो कि पिताको बहुत प्रसन्न करनेलगा और वह कुछ वर्षों के उपरान्त राजाहोकर प्रजा पालने लगा ५१ तिस से हे राजन् युधिष्ठिर उत्तम पुत्रदा का व्रत करने योग्यहै इसको लोकों के कल्याणके लिये तुम्हारे आगे मैंने कहाहै ५२ और हे राजन् एकचित्त होकर जे मनुष्य पुत्रदाका व्रत करते हैं ते इसलोक में पुत्रोंको प्राप्त होते हैं और जब मरते हैं तो स्वर्ग में जाते हैं और इस के पढ़ने सुनने से अग्निष्टोम का फल प्राप्त होताहै ५३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति-नारदसंवादेपौषशुक्लपुत्रदैकादशीनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

माघकृष्णा षट्तिला एकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे कृष्ण हे जगन्नाथ हे आदिदेव हे जगत् के

पति प्रसन्नहोकर हमारे ऊपर कृपाकरके कहिये १ कि माघके कृष्ण पक्षमें कौन एकादशी होतीहै क्या नाम और उसकी क्याही विधि है यह विस्तारसे कहिये २ तब श्रीभगवान् बोले कि हे राजाओंमें श्रेष्ठ माघके कृष्णपक्षमें सब पापोंके नाश करनेवाली षट्तिलानाम एकादशी होती है १ उसकी पाप नाश करनेवाली सुंदर कथा सुनिये कि जिसको मुनिश्रेष्ठ पुलस्त्यजी ने दालभ्य से कहाथा २ दालभ्य जी बोले कि मनुष्यलोकमें प्राप्त प्राणी पाप करते हैं और ब्रह्महत्यादिक अनेक पापों से युक्तहैं ३ पराईद्रव्य चुराते हैं और पराये व्यसनमें मोहित होतेहैं वे कैसे नरकमें न प्राप्तहों यह आप सारांशसे कहिये ४ हे भगवन् विनाही परिश्रम थोड़े दानसे पाप नाशहों यह आप कहनेके योग्यहैं ५ तब पुलस्त्यजी बोले कि हे महाभाग दालभ्य तुमने अच्छा प्रश्नकिया इसदुर्लभ छिपेहुएको विष्णु ब्रह्मा और इन्द्रनेभी किसीसे नहीं कहा ६ तुम्हारे पूंछनेसे मैं इसको कहूंगा माघके महीने में जितेन्द्रिय होकर पवित्र मनुष्य स्नानकरे ७ काम, क्रोध, अभिमान, ईर्षा, लोभ और चुगलखोरीसे रहितरहे और भगवान् को स्मरणकर जलसे चरणों को धोवे ८ और भूमि में न गिरेहुए गोबरको मनुष्य ग्रहणकर तिल और कपास छोड़कर पिंडी बनवावे ९ जो कि गिनती में एकसौआठहों इसमें विचार नहीं करे तदनन्तर माघके प्राप्तहोने में जो एकादशीको पूर्वाषाढ़ नक्षत्र १० वा मूलहो और कृष्णपक्षहो तो पुण्यसमय में एकादशी के नियमों को ग्रहणकरे तहां उसकी विधि हमसे सुनिये ११ एकादशीका व्रत करनेवाला स्नानकर पवित्रहो और भगवान्का पूजनकर कृष्णजी के नामोंका कीर्त्तनकरे १२ रात्रिमें जागरणकरे और पहले होमकरवावे और दूसरे दिन फिर देवदेवेश भगवान् की पूजाकरे १३ चंदन अगुरु और कपूरसे पूजन और दीपदान देवे नैवेद्य कृसरदेवे और वारंवार कृष्णजीके नामोंका स्मरणकरे १४ कुम्हड़ा, नारियल अथवा नींबू या इन सबके अभावमें अच्छी सुपारी से विधिपूर्वक अर्घदेवे और भगवान् की पूजाकरे १५ हे कृष्ण हे कृष्ण आप दयालुहैं गतिहीनों को गतिहूजिये और हे पुरुषोत्तमजी संसाररूपी

समुद्रमें डूबेहुओंके भी ऊपर प्रसन्न हूजिये १६ हे पुण्डरीकाक्ष हे विश्वभावन हे सुब्रह्मण्य हे महापुरुष हे पूर्व्वज आपके नमस्कारहै हे जगत्पते लक्ष्मीसमेत हमारे दियेहुए अर्घ्यको ग्रहण कीजिये १७ इत्यर्घमंत्रः॥ तदनन्तर ब्राह्मणको पूजनकर उदकुम्भदेवे और छतुरी,जूता और कपड़ेभी देवे और यहकहे कि हमारे ऊपर कृष्णजी प्रसन्नहों १८ फिर यथाशक्ति ब्राह्मणको श्यामवर्ण गऊदेवे और हे द्विजश्रेष्ठ पात्रमें निपुण मनुष्य तिलपात्र भी देवे १९ क्योंकि स्नान, अन्नप्राशनमें कालेतिल श्रेष्ठ होते हैं तिनको यत्न से यथाशक्ति ब्राह्मणको देवे तो जितनी संख्या तिल दियेजावें २० उतने हज़ारवर्ष वह स्वर्गलोकमें बसताहै तिलसे स्नानकरनेवाला, तिलसे उबटना करनेवाला, तिलसे होम करनेवाला,तिलसे जलदेनेवाला २१ तिल का देनेवाला और भोजन करनेवाला ये छः तिल पापके नाशनेहारे हैं तब नारदजीबोले कि हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो हे विश्वभावन आपके नमस्कार है २२ षट्तिला एकादशीका क्या फलहै जो आप प्रसन्नहों तो उपाख्यान समेतकहें तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् जैसा कुछवृत्तान्त हमने देखाहै उसको तुमसे कहताहूं पहले मनुष्यलोक में एक ब्राह्मणी हुई जो कि व्रतचर्या और देवपूजा में नित्यही रतरहती २३ महीने के व्रतमें युक्त, हमारी सदाकी भक्ता, कृष्ण के व्रत में संयुक्त और हमारी पूजा में परायणथी २४ उसने व्रतों से शरीरको क्लेशितकिया और देवता, ब्राह्मण और कुमारियों को भक्तिसे २५ सब समय में घर इत्यादिक देतीहुई वह महासती सब समयमें अत्यन्त क्लेशवाले व्रतों में रतरही २६ परन्तु भिक्षुक को भिक्षा नहीं दी और ब्राह्मणों को नहीं तृप्त किया २७ तदनन्तर बहुतकाल बीतनेपर भगवान्ने चिन्तनाकी कि इसका शरीर कृच्छ्र व्रतों से निस्सन्देह शुद्ध है २८ इसने देहके क्लेशसे वैष्णवलोक पूजन किया परन्तु अन्नदान नहीं दिया जिससे अच्छी भांति तृप्ति होती २९ ऐसा जानकर हे ब्रह्मन् कापालरूप धारणकर भिक्षा का पात्रलेकर मैं मनुष्यलोक में प्राप्तहुआ ३० और मांगा तब तो उसने हमसे कहा कि हे ब्रह्मन् आप कहांसे आये और कहां जावेंगे

यह मेरे आगे कहिये तब मैंने फिर कहा कि हे सुंदरि भिक्षादीजिये ३१ तब तो उसने बड़ा क्रोधकर मट्टीका पिंड तांबेके बर्तनमें छोड़ दिया तब तो भगवान् उसको लेकर स्वर्गको चलेगये ३२ तदनन्तर बहुतकाल वीतनेपर वह महाव्रतसे युक्त तापसी व्रतचर्या के प्रभावसे देहसमेत स्वर्गको प्राप्तहुई ३३ और मट्टी की पिंडिका के देनेसे उसको सुन्दर घर प्राप्तहुआ परंतु उसमें अन्न कुछ भी नहीं था ३४ तब तो उसने घर देखकर जब कुछ न देखा तो घरसे निकलकर भगवान् के समीप प्राप्तहुई ३५ और बड़े क्रोधसे युक्त ये वचन बोली कि मैंने कृच्छ्रव्रत उपवास और पूजनसे सबलोक के पालक देव की आराधनाकी परन्तु हे जनार्दन हमारे घरमें कुछनहीं दिखाई पड़ता ३६। ३७ तब मैंने उससे कहा कि हे महाव्रते घर जाओ कौतूहल और विस्मयसे युक्त देवों की स्त्रियां तुम्हारे देखने को आवेंगी परन्तु षट्तिला के पुण्यवाचन के विना द्वार नहीं खोलना ३८। ३९ इसप्रकार जब मैंने कहा तो वह स्त्री चलीगई इसी अवसर में देवताओं की स्त्रियां वहांपर प्राप्तहुईं ४० और उन्हों ने कहा कि हे शोभने तुम्हारे देखने के लिये हमलोग आई हैं इससे इसीसमयमें द्वारको खोलिये ४१ तब वह मानुषी स्त्री बोली कि विशेषकरके सत्यही जो हमारा दर्शन करना चाहतीहो तो पुण्यकारी षट्तिलाका व्रत पूराकरलूं तो द्वार खोलूं ४२ श्रीकृष्णजी बोले कि तब तो एक भी नहीं बोली कि षट्तिला एकादशीका व्रतकिये विनाही खोलो फिर दूसरी ने कहा कि हमें यह मानुषी देखने योग्यहै ४३ तदनन्तर द्वारखुले तो उन्हों ने उस मानुषी को देखा कि देवी, गंधर्वी, आसुरी और सर्पिणी भी उसके समान नहीं हैं ४४ जैसी यह मानुषी देखी वैसी पहले कोई स्त्री नहीं देखा देवियों कही उपदेश से उसने षट्तिला का व्रत किया ४५ जो कि व्रत भुक्ति मुक्ति और फलका देनेवालाहै और क्षणमात्रमें वह मानुषी जो कि सत्य व्रतयुक्त थी रूप और कांतिसे युक्तहोगई ४६ और षट्तिलाके प्रभावसे उसके घरमें धन, धान्य, कपड़े, सोना और चांदीभी भरगया ४७ और क्षणमात्रही से रूप और कांतिको प्राप्तहोगई ४८ इसमें

अधिक तृष्णा नहीं करनी चाहिये और वित्तशाठ्य को वर्जित करै अपने द्रव्यके अनुसार तिल और कपड़े देवे ४९ तो मनुष्य जन्म जन्ममें आरोग्य प्राप्तहो दारिद्र्य,कष्ट और अभाग्य नहींहो ५० षट्तिला के व्रतमें इसविधि से जो तिलदेवे ५१ वह मनुष्य विना परिश्रमही सब पापोंसे छूटजावे इससे विधिपूर्वक सुपात्रको दानदे-नेसे सब पाप नाशहोजाते हैं और कोई अनर्थ और शरीरमें परि-श्रम नहीं होता ५२ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्रयांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारद-संवादेमाघकृष्णाषट्तिलैकादशीनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

माघशुक्ल जयाएकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे कृष्ण आपने अच्छाकहा क्योंकि हे प्रभु जी आप आदिदेवहैं और चिलुवे, अंडे, वृक्ष और खटमल आदि-कों के भी १ रचनेवाले पालनेहारे और नाश करनेवालेहौ माघकी कृष्णपक्ष की षट्तिलाको तो आपने कहा २ अब शुक्लपक्षमें कौन एकादशी होती है उसकानाम और विधि कहिये और कौन देवता उसमें पूजे जाते हैं ३ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजेन्द्र माघके शु-क्लपक्षमें सब पापोंकी नाशनेवाली जयानाम प्रसिद्ध एकादशी होती है ४ वह पवित्र,पापहरनेवाली, मनुष्योंको काम और मोक्षकी देने वाली ब्रह्महत्या और पिशाचपने को नाशनेहारी है ५ इसके व्रत करने से मनुष्यों को प्रेत नहीं होना पड़ता इससे श्रेष्ठ कोई पापके नाश करनेवाली और मोक्षके देनेहारी नहीं है ६ इसीकारण से हे राजन् यह यत्नसे करनी चाहिये अब इसकी सुन्दर पुराणकी कथा सुनिये ७ पद्मपुराणमें इसकी महिमा मैंने कही है एक समय स्वर्ग-लोकमें इन्द्र राज्य करतेथे ८ और अमृतके पानमें निरत अप्सरा-ओं के समूहों से सेवित, सुन्दर स्थानों में सुखसे देवता बसतेथे ९ वहीं पर कल्पवृक्षयुक्त नन्दनवन था कि जिसमें अप्सराओं समेत देवतालोग रमण करते थे १० एकसमय इच्छापूर्वक रमण करते

हुए इन्द्र आनन्दसे पचास करोड़ स्त्रियों समेत नाचनेलगे ११ गं-धर्व गानेलगे पुष्पदन्तक गन्धर्व, चित्रसेन, चित्रसेनकी कन्या १२ मालिनी, चित्रसेनकीस्त्री, मालिनीकी कन्या पुष्पदन्ती १३ पुष्पदंत का पुत्र माल्यवान् जो कि पुष्पदन्ती के रूप से अत्यन्त मोहितथा १४ उस पुष्पदन्ती ने कटाक्षोंसे माल्यवान्को वशमें करलिया अब उसकी लावण्यता और रूप को सुनो १५ कि उसके दोनों भुजा कामसे कण्ठमें फँसरीसे कियेगये हैं और नेत्र कानों पर्यन्त बड़े २ रक्तवर्ण और घूर्णित हैं १६ सुन्दर कान कुण्डलों से शोभित हैं कबूतर की सी गर्दन से युक्त और सुन्दर गहनों से भूषित है १७ और मोटे ऊंचेस्तन सोनेके कलशकी नाईं हैं और करिहांव इतना पतला है कि मूठी से पकड़नेके योग्य है १८ नितंब विस्तारयुक्त हैं और जघनस्थली भी विस्तृत है और लालकमलकी समान द्युति वाले चरण शोभायमानहैं १९ ऐसी पुष्पवतीसे माल्यवान् अत्यंत मोहितहुआ और वे दोनों इन्द्रकी प्रसन्नताके लिये नाचनेके लिये प्राप्तहुए थे २० और अप्सरागणों से सेवित गानेलगे कि जिनके काम से युक्त अंग हैं ऐसी पुष्पदन्ती और माल्यवान् २१ परस्पर प्रेमसे मोहकेवशमें प्राप्तहुए चित्तके भ्रमसेयुक्त शुद्धगान नहीं गा-तेहैं २२ परस्पर दृष्टि बँधगई हैं कामके बाणके वशमें प्राप्तहैं तब तो लेखर्षभने उन दोनोंका मनमिला जाना २३ और इन्द्रने ताल-क्रिया मानके लोप और गीतके विसर्जन से अपना अपमान चि-न्तनकर क्रोधकर दोनोंको शापदेतेहुए यहबोले कि पतितमूर्ख तुम दोनोंको धिक्कारहै हमारी आज्ञाको तुमने भंगकियाहै २४।२५ इससे स्त्रीभाव धारण करनेवाले तुम दोनों पिशाचहोवो और मनुष्यलो-कमें प्राप्त होकर कर्मके फलको भोगकरो २६ इसप्रकार जब इंद्र ने शापदिया तो शापसे मोहितहोकर दोनों दुःखितमन होकर हिम-वान् पर्वतमें प्राप्तहुए २७ और दोनों पिशाचके भावको प्राप्तहुए कि जिसमें दारुण दुःखमिला और संतप्तमन हुए जाड़ेसे क्लेशको प्राप्तहुए २८ और विमोहितहुए गंधर्व और अप्सराके भावको न जाना और देहके पापसे उत्पन्न गरमी से पीड़ितहुए २९ कर्म्म से

पीड़ितहुए रात्रि में सुख और शांति को न प्राप्तहुए और परस्पर वादकरते हुए पहाड़ में घूमतेभये ३० तो पालेसे उत्पन्न जाड़े से पीड़ित दाँत घिस रहे और रोमावलीयुक्त देहको धारण करते भये ३१ तिस समयमें पिशाचने अपनी पिशाचिका स्त्रीसे कहा कि क्या घोर, रोमहर्षण अधिक पाप हमनेकिया ३२ जिससे अपनेही दुःष्कृत कर्म्मसे पिशाचता प्राप्तहुई यह पिशाचता घोर नरकसे भी बढ़कर दुःख देनेवाली हम मानते हैं ३३ तिससे सब यत्न से पाप नहीं करै इसप्रकार चिन्तामें परायण और दुःखमें कर्षित दोनोंहुए ३४ परन्तु दैवयोग से तिनको माघकी जयानाम एकादशी जो कि तिथियों में उत्तम तिथिहै वह प्राप्तहुई ३५ उसदिन वे दोनों आहार और जलपानसे वर्जित रहे ३६ न तो जीवघात किया और न पत्र और फलका भक्षण किया पीपलके समीप सर्व्वदा दुःखसंयुक्त रहे ३७ और वैसेही उनके स्थितरहतेही सूर्यनारायण अस्तहोगये और घोर दारुण प्राणके हरनेवाली रात्रि प्राप्तहुई ३८ तौ कांपते हुए वे पृथ्वी में सो गये परस्पर से देह और भुजा दोनों के एक में मिलेहुए थे ३९ परन्तु निद्रा, रत और सुखको नहीं प्राप्तहुए इस प्रकार हे राजाओं में श्रेष्ठ वे दोनों इन्द्रके शापसे पीड़ित ४० और दुःखयुक्त हुए और दुःखही में रात्रि व्यतीत होगई और द्वादशी के दिनके आगममें सूर्य उदय होगये ४१ तो भगवान्ने उनकी मुक्ति हृदय में धारणकी कि इन्होंने जयाका व्रत किया और रात्रिमें जागरण भी किया ४२ तिसी व्रतके प्रभावसे जो कुछ हुआ वह सुनो कि द्वादशी के दिन प्राप्तहुए और जयाका व्रत करनेसे ४३ विष्णु जीके प्रभावसे उनका पिशाचपना चलागया पुष्पदन्ती और माल्यवान् पूर्व्वके समान रूपयुक्त होगये ४४ पहलेकेसे स्नेह से युक्त और पहलेही केसे गहने भी धारण किये विमानपर चढ़कर मनोरम स्वर्गमें गये ४५ और इन्द्रके आगे जाकर आनन्द से प्रणाम करतेभये इसप्रकारके दोनोंको देखकर विस्मययुक्त इन्द्र बोले ४६ कि किसपुण्यसे तुम दोनोंका पिशाचपना गया क्योंकि मैंने तुमको शापदियाथा तिसको किस देवता ने छुड़ा दिया ४७ तब माल्यवान्

बोले कि भगवान्‌के प्रसाद जया एकादशीके व्रत और हे स्वामिन् आपकी भक्तिके प्रभावसे पिशाचपना गया ४८ ऐसा सुनकर इंद्र फिर बोले कि पवित्र, पावन और हमारेभी वन्दनीय तुम दोनोंहुए ४९ क्योंकि भगवान् की भक्ति में परायण एकादशी के करनेवाले भये जेमनुष्य एकादशीमें लीन और कृष्णमें परायण होते हैं ५० वे हमको भी निस्सन्देह पूज्यहैं तुम देवस्थानमें पुष्पदन्ती के संग सुखपूर्वक विहारकरो ५१ कृष्णजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ इस कारणसे एकादशी करनी चाहिये जया एकादशी ब्रह्महत्याके नाश करनेवाली है ५२ जिसने जयाका व्रत किया उसने सब दान दिये और सब यज्ञ करडालीं ५३ और करोड़ कल्पतक वह वैकुण्ठ में निश्चय आनन्द करताहै और हे राजन् पढ़ने और सुनने से अ-ग्निष्टोमके फलको प्राप्त होताहै ५४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेमाघशुक्लजयैकादशीमाहात्म्यंनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

फाल्गुन कृष्ण विजया एकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे वासुदेवजी फाल्गुनके कृष्णपक्षकी एकादशीका क्या नाम है यह प्रसन्न होकर मेरे आगे कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि नारदने ब्रह्मासे यह पूछाथा कि फाल्गुनके कृष्ण पक्षमें विजयानाम एकादशी होती है तिसकी पुण्यको प्रसन्नहोकर कहिये २ तब ब्रह्माजी बोले कि हे नारद पाप नाशनेवाली श्रेष्ठ कथा को मैं कहता हूं सुनिये जिस विजया के व्रतको मैंने किसी से नहीं कहा ३ यह व्रत बहुत पुराना पवित्र और पाप नाशनेवाला है विजया एकादशी राजाओंको निस्सन्देह जय देती है ४ पूर्व समयमें रामचन्द्रजी चौदहवर्ष के लिये वनको गये और पंचवटी में सीता लक्ष्मण समेत वसे ५ विजयात्मा रामजी के वहां वसतेही चंचलता से रावणने उनकी यशस्विनी सीता स्त्रीको हरलिया ६ तो उस दुःख से रामजी भी मोह को प्राप्तहोगये और सीताको ढूंढ़तेहुए मारेहुए

जटायुको देखा ७ और पीछेसे वनके मध्यमें घूमतेहुए रामने कबन्धको मारा और सुग्रीवके साथ मित्रताहुई ८ और रामजी के लिये वानरों की सेना इकट्ठाहुई फिर सीता के ढूंढ़ने के लिये हनुमान्‌जी गये तो उन्होंने लंका के बाग में जानकीजी को देखा ९ और रामजी का चिह्न सीताजी को दिया और बाग उजाड़ा लंकाफूंका फिर वहांसे आकर रामजी से सब हाल कहा १० तदनन्तर रामचन्द्रने हनुमान्‌के वचन सुनकर सुग्रीवकी सलाहसे लंकाको प्रस्थानकिया ११ तो बीच में समुद्र मिला तो रामजी ने लक्ष्मण से कहा कि हे लक्ष्मण किस पुण्यसे यह समुद्र पार उतरें क्योंकि यह सदैव अगाध और जलके जन्तुओं से युक्तहै कोई उपाय नहीं देखते जिस से इसको उतरजावें १२ तब लक्ष्मणजी बोले कि आप आदिदेव और पुराणपुरुषोत्तम हैं द्वीपके मध्यमें बकदाल्भ्यमुनि वर्तमान हैं १३ हे रामचन्द्रजी इस स्थानसे दोकोसमें उनका स्थानहै वहांपर और भी बहुतसे ब्राह्मण बसतेहैं १४ हे राजेन्द्र वहां जाकर पुराने ऋषिश्रेष्ठ जी से पूछिये इसप्रकारके लक्ष्मणके अत्यन्त सुन्दर वचन सुन १५ रामजी बकदाल्भ्य महामुनि के देखने को गये और देवता जैसे विष्णुके प्रणामकरें तैसेही रामजी ने मस्तकसे मुनिको प्रणामकिया १६ तब तो मुनि ने रामजी को जाना कि ये पुराणपुरुषोत्तम हैं और किसी कारणसे मनुष्य शरीर को धारण किया है १७ तब प्रसन्न होकर मुनि बोले कि हे राम! आप का आगमन केसलिये हुआहै १८ तब रामजी बोले कि हे विप्र तुम्हारे प्रसाद े समुद्र के तीर प्राप्त हुए हैं सेनासमेत हम राक्षसोंसंयुक्त लंका ीतने को जातेहैं १९ हे मुनिजी आपकी कृपासे जिसप्रकार हम मुद्र उतरजावें उस उपायको प्रसन्न होकर इसीसमय करिये २० सीकारण से आपके दर्शन को मैं प्राप्त हुआहूं तब तो रामजी के चन सुन महामुनि बकदाल्भ्य २१ प्रसन्न होकर कमलनयन राजीसे बोले कि हे राम व्रतों में उत्तम व्रत इससमयमें करिये २२ सके करने से सहसा तुम्हारी जीतहोगी लंकाको राक्षसों समेत तकर निर्मल तुम्हारी कीर्तिहोगी २३ एकाग्रमन होकर इसव्रत

को करो फाल्गुनके कृष्णपक्षमें विजया एकादशी होती है २४ तिस के व्रतसे हे रामजी आपकी जीतहोगी और वानरों समेत समुद्रको निस्सन्देह तरजावोगे २५ अब हे राजन् फलके देनेवाली इसव्रत की विधिको सुनो दशमी के दिनमें एक घड़ा २६ सोने या चांदी या तांबे या मट्टीहीका बनवाकर स्थापितकरै उसमें जल और पत्ते छोड़ देवे २७ सातोंधान्य उसके नीचे और यवोंको ऊपर रखदेवे तिसके ऊपर सोनेके देवप्रभु नारायणजी को स्थापनकरे २८ और एकादशी के दिन सबेरे स्नानकरे और निश्चल कलशको स्थापन करे और कण्ठमें माला पहनावे लेपन २९ सुपारी और नारियल से विशेष करके पूजे चन्दन धूप दीप और अनेकप्रकार की नैवेद्य लगावे ३० और कलशके आगे अच्छी २ कथाओं से दिन बितावे और कलशही के आगे रात्रिमें जागरणकरे ३१ और अखण्डव्रत के हेतु घीके दीपसे प्रकाशकरे और जब द्वादशीमें सूर्यनारायण उदयहों तो कलशको नदी झरना या तालाबहीमें विधिपूर्वक पूजन कर स्थापित करे ३२।३३ और सोनेकी भगवान्की मूर्तिको वेदके पारगामी ब्राह्मणको देवे और कलश समेत महादानों को देवे ३४ हे राम यूथपों समेत इस विधि से यत्नपूर्व्वक व्रतको करो तुम्हारी जीतहोगी ३५ ऐसा सुनकर तिससमयमें रामजी ने अच्छीतरहसे यथोचित व्रतकिया और व्रतके करनेही से रामजीकी जीत होगई ३६ लङ्का को जीता रावण को लड़ाई में मारा और सीता जी को पाया इस विधि से हे पुत्र जे मनुष्य व्रत करते हैं ३७ तिनकी इस लोकमें जीत होती है और मरनेपर नाशरहित स्वर्ग मिलताहै इस कारणसे हे पुत्र विजयाका व्रत करना चाहिये ३८ विजयाका माहात्म्य सबपाप नाश करदेता है और पढ़ने सुनने से वाजपेय यज्ञ के फलको प्राप्त होताहै ३९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेफाल्गुन कृष्णाविजयामाहात्म्यंनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

फाल्गुन शुक्ल आमलकी एकादशीका माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे कृष्ण बड़े फलवाले विजयाके माहात्म्य को सुना अब फाल्गुनके शुक्लपक्षमें जिस नामकी एकादशीहो उस को इस समयमें कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे धर्म्मपुत्र हे महाभाग इस समयमें तुमसे कहताहूं सुनिये जो वसिष्ठमहात्मा ने पूंछनेपर मान्धातासे कहाथा २ विशेष करके फाल्गुनकी आमलकी एकादशी के व्रतका पुण्य जो कि विष्णुलोक के फलका देनेवालाहै कहागया है ३ आंवले के तले जाकर जागरण करै रात्रिमें जागरण करनेसे हज़ारगौवों के देनेका फलहोताहै ४ तब मान्धाता बोले कि हे द्विजों में श्रेष्ठ वसिष्ठजी यह आमलकी कब उत्पन्नहुई यह सब हमसे कहिये क्योंकि हमारे बड़ा कौतूहल है ५ यह काहेसे पवित्र और पाप नाशनेवाली हुई और इसमें व्रत करने से काहेसे हज़ार गौवोंका फल प्राप्तहोताहै ६ तब वसिष्ठ जी बोले कि हे महाभाग जि-स प्रकारसे यह पृथ्वीमें हुई वह कहताहूं आमलकीका महावृक्ष सब पापोंका नाशनेवाला है ७ पूर्वसमय में जब प्रलयमें एक समुद्र हो गया और स्थावर जंगम सब नष्ट होगये देवता असुरोंके समूह सर्प और राक्षस सब नष्टहोगये ८ तो वहां आदि देवेश परमात्मा स-नातन पुरुष अपने नाशरहित श्रेष्ठ ब्रह्मपदको प्राप्तहुए ९ तदनं-तर जागतेहुए ब्रह्मके मुख से चन्द्रमाकी समान दीप्तिवाला थूंकने का बिन्दु उत्पन्नहुआ और वह पृथ्वी में गिरपड़ा १० तो उस बिन्दु से भारी आंवलेका वृक्ष उत्पन्न हुआ जिसकी शाखा (डालें) और प्रशाखा बहुत फैलीं और वह फलकेभारसे नयगया ११ सब वृक्षों के आदिमें यह वृक्ष रचागयाथा तिस पीछे ब्रह्माने इन प्रजाओंको रचा १२ देवता, दैत्य, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प और निर्मल महर्षियों को १३ तब तो देवता जहांपर भगवान् को प्रिय आमलाथा वहां पहुंचे हे महाभाग तिस वृक्षको देखकर देवता बड़े विस्मय को प्राप्तहुए १४ कि इसवृक्षको हमनहीं जानते इसप्रकारकी चिन्त

करतेहुए स्थितथे कि आकाशवाणी हुई १५ कि यह आमलकीका वृक्ष श्रेष्ठ वैष्णवहै इसके स्मरणसे गोदानका फलहोताहै १६ छूनेसे दूना और खानेसे तिगुना फल होताहै तिससे सबयत्नसे आमलकी सदा सेवने योग्यहै १७ यह सबपाप नाशनेवाली वैष्णवीहै तिसकी जड़में विष्णु ऊपर ब्रह्मा १८ स्कन्धमें परमेश्वर महादेव शाखाओं में सब मुनि प्रशाखाओं में देवता १९ पत्तों में देवता पुष्पों में पवन और फलोंमें सब प्रजापति स्थितहैं २० मैंने सर्व्वदेवमयी इस आमलकी को कहा तिससे विष्णु की भक्ति में परायणों करके यह पूजने योग्यहै २१ तब देवता बोले कि आप कौनहैं हम नहीं जानते हैं किसकारणसे प्राप्त हुएहैं देवता हैं या और कोई है सब यथोचित कहिये २२ तब वाणी बोली कि जो सब प्राणियों और भुवनों का कर्ता है वही मैं विस्मित विद्वानों को देख कर सनातन विष्णु प्राप्त हुआहूं २३ इसप्रकार के देवदेव के वचन सुन ब्रह्मा के पुत्र आदि और नाशरहित देव की स्तुति करनेलगे २४ कि भूतात्म भूत आत्मा, परमात्मा, अच्युत और अनन्त के नमस्कार हैं २५ और दामोदर कवि और यज्ञेशजी के भी नमस्कारहैं इसप्रकार जब ऋषियों ने स्तुतिकिया तो भगवान् हरि प्रसन्नहुए २६ और उन महर्षियोंसे बोले आप लोगोंको क्या अभीष्टदेवें तब ऋषिलोग बोले कि हे भगवन् जो हमारे हितकी कामना से आप प्रसन्नहैं २७ तो किसी ऐसे व्रतको कहिये जो स्वर्ग मोक्षफल और धनधान्यको देवै और आत्मा को प्रसन्नकरै २८ थोड़ी परिश्रम हो और बहुत फल मिले और व्रतों में उत्तम व्रत हो जिसके करने से हे देवेश विष्णु लोक प्राप्तहों २९ तब विष्णुजी बोले कि फाल्गुनके शुक्लपक्षमें पुष्य नक्षत्र करके युक्त जो द्वादशी हो तो वह महापुण्यकारी और भारी पापोंकी नाशनेहारी होती है ३० हे द्विजों में श्रेष्ठ तिसमें विशेषक रना चाहिये वह सुनो आमलकी को प्राप्त होकर जागरण करना चाहिये ३१ तो मनुष्यके सब पाप छूटकर हज़ार गऊ देनेका फल प्राप्तहोताहै हे विप्रो यह व्रतों में उत्तम व्रत तुमलोगों से कहा तिस में भगवान् की पूजा करनेसे विष्णुलोक से नहीं छूटता है ३२

ऋषि बोले कि इसव्रतकी विधिकहो परिपूर्ण कैसे होताहै कौन मंत्र और नमस्कारहैं और कौन देवता इसमें कहाहुआहै ३३ कैसे दान और स्नानकरै और पूजाकी विधि कौन कही है अर्घ पूजनका यथोचित मन्त्र भी कहो ३४ तब विष्णुजी बोले कि द्विजों में श्रेष्ठो अच्छीतरहसे इसव्रतकी विधिसुनो एकादशीमें निराहार परदिनमें स्थितहोकर ३५ हे पुण्डरीकाक्ष मैं भोजनकरूंगा हे अच्युत हमको शरणहो इसप्रकारके नियमकर पहले दतून करै ३६ और पतित, चोर, पाखण्डी मनुष्य, दुर्वृत्त, मर्य्यादाभिन्न और गुरुजीकी स्त्रीसे भोग करनेवालों से बात चीत नहीं करै ३७ तदनन्तर तीसरे पहर में नदी, ताल, कुंवां या घरही में नियमयुक्त चतुर मनुष्य विधि से स्नान करवावे ३८ पहले मृत्तिकालम्भन और तिसपीछे स्नानकरवावे कि हे घोड़े, रथ और विष्णुसे दबी हुई पृथ्वी हे मृत्तिके करोड़ जन्ममें जो हमने पाप इकट्ठे किये हैं उनको हरो ३९।४० इतिमृत्तिकामन्त्रः॥ हे जल तुम सब प्राणियों के जीवन, देहके रक्षा करनेवाले चिलुये खटमल और वृक्षादिक जातियों के भी जीवनहो और रसों के पतिहो इससे तुम्हारे नमस्कारहै ४१ मैंने सब तीर्थ, कुण्ड, झरना, नदी और देवखातों में स्नान कियाहै यह स्नान भी हमाराहोवे ४२ इतिस्नानमंत्रः॥ और माषक या आधे या चौथाई माषक सोने की परशुराम मुनिकी मूर्त्ति बनवाकर ४३ घरमें आकर पूजा और पूजा का होम करवावे तदनन्तर सब सामग्रियोंसे युक्त आंवले के नीचेजावे ४४ वहां जाकर चारोंओर शुद्धकर मंत्रपूर्वक पुष्ट कलश को स्थापित करै ४५ और उसमें पंचरत्न और सुगन्धादिक छोड़े छतुरी और खड़ाऊके जोड़े भी धरदेवे सफ़ेद चंदनसे पूजनकरै ४६ कलशकी ग्रीवामें बड़ी २ माला पहनावे सबप्रकार की धूपदेवे और दिये जलावे सबओर से बहुत मनोहर रच देवे ४७ तिसके ऊपर बर्तनधर उसको सुन्दर लाइयों से भरदेवे फिर उस बर्तन में महा दीप्तिवाले परशुरामजी को स्थापितकरै ४८ विशोक भगवान् के नमस्कारहै इससे उनके चरणपूजे, विश्वरूपीके नमस्कार इससे गांठें, उग्रके नमस्कार इससे जंघा, दामोदर के नमस्कार इससे करिहांव,

४९ पद्मनाभ के नमस्कार इससे पेट भृगुलता धारेहुएके नमस्कार इससे छाती, चक्रधारी के नमस्कार इससे बायां भुजा, गदाधारी के नमस्कार इससे दहनाभुजा ५० वैकुण्ठ के नमस्कार इससे कण्ठ, यज्ञमुख के नमस्कार इससे मुख, विशोकनिधि के नमस्कार इससे नाक, वासुदेवके नमस्कार इससे दोनों नेत्र ५१ वामनजी के नमस्कार इससे माथा, रामजी के नमस्कार इससे दोनों भौंहें और सर्वात्मा के नमस्कार इससे मस्तक को पूजे ५२॥ इति पूजामन्त्रः॥ तदनन्तर देवाधिदेव को भक्तियुक्त चित्तसे सुन्दर फलसे अर्घ देवे ५३ तदनन्तर भक्तिसमेत चित्तसे जागरण करै नाच, गाना, बाजा बजाना, धर्म के आख्यान, स्तोत्र ५४ और वैष्णवों के आख्यानों से सब रात्रि बितावे फिर आंवले की विष्णु के एकसौआठ या अट्ठाईसही नामों से प्रदक्षिणा करै तिस पीछे सवेरे भगवान्‌की आरती करै ५५। ५६ और ब्राह्मणकी पूजाकर परशुरामजी के कलश में दोकपड़े और खड़ाऊं इत्यादि सबको ब्राह्मणहीको देदेवे ५७ और यह कहे कि जामदग्न्य के स्वरूप से भगवान् केशवजी हमारे ऊपर प्रसन्नहों फिर आंवलेको छूकर प्रदक्षिणा करै ५८ और विधि से स्नान कर ब्राह्मणों को भोजनकरावे तिस पीछे कुटुम्बसमेत आप भोजनकरै ५९ इसप्रकार करनेसे जो पुण्य होताहै वह सब तुमसे कहताहूं सबतीर्थ और सब दानों में जो फलहै ६० और सब यज्ञों से अधिकफल निस्संदेह मिलताहै यह व्रतों में उत्तमव्रत तुमलोगों से कहा ६१ इतना कहकर भगवान् वहींपर अन्तर्द्धान होगये और सब ऋषियों ने सब सम्पूर्ण व्रतकिया ६२ तैसेही हे राजेन्द्र तुमभी करने के योग्यहो क्योंकि यह व्रत दुराधर्ष और सब पापोंका छोड़ानेवाला है ६३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेफाल्गुनशुक्लामलक्येकादशीनामपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५॥

छियालीसवां अध्याय ॥

चैत्रकृष्ण पापमोचनी एकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे श्रीकृष्णजी फाल्गुनके शुक्लपक्षकी आमलकी को तो सुना अब यह कहिये कि चैत्र के कृष्णपक्ष में किस नामकी एकादशी होती है १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजेन्द्र पाप नाशनेवाला आख्यान कहताहूं सुनो जिसको चक्रवर्ती मान्धाताने लोमशजी से पूंछाथा और लोमशजी ने उनसे कहाथा २ मान्धाता जी बोले कि हे भगवन् लोकों के हितकी कामनासे यह मैं सुननेकी इच्छा करताहूं कि चैत्रके पहले पक्षमें किसनामकी एकादशी होती है क्याविधि और फलहै यह प्रसन्न होकर कहिये ३ तब लोमशजी बोले कि चैत्रके कृष्णपक्ष में पिशाचपनेके नाशनेवाली पापमोचनी एकादशी कहलाती है ४ उसकी कामना और सिद्धि देनेवाली, कल्याण देनेवाली, पाप नाशनेहारी और धर्म देनेवाली विचित्रकथा कहताहूं सुनो ५ पूर्वसमयमें अप्सराओं के समूहों से सेवित चैत्ररथ वन में वसन्त समयमें फूलों से युक्तहुए वनही में ६ कि जहां गन्धर्वोंकी कन्या बाजा बजातेहुए किन्नरों के साथ रमण कररही हैं और इन्द्रादिक देवता भी क्रीड़ा कररहे हैं ७ चैत्ररथ वनसे अधिक दूसरा सुखदेनेवाला कोई नहीं है उसमें मुनिलोग भारी तपस्याकर रहेहैं ८ और वहींपर ब्रह्मचारी मेधावीनाम ऋषि भी स्थितहैं अप्सरालोग उनके मोहने के लिये युक्तियां कररही हैं ९ उन अप्सराओं में एक मंजुघोषानाम अप्सरा उनके भावको विस्तारती हुई उनके भयसे एककोशभर पहले स्थितरही फिर धीरे २ से मुनिके आश्रमके पास आगई १० और विपंचिका को पीड़ादेतीहुई मीठेस्वर से गानेलगी फूल और चन्दन से सेवित उसको गातीहुई देखकर ११ कामदेव महादेवजी के वैरको स्मरणकर शिवभक्त मुनीश्वरोंके जीतनेकी आकांक्षाकर मुनिके देहमेंवास करताभया १२ और मंजुघोषाने भौंहोंको धनुषकी कोटि कटाक्षको गुण पलकयुक्त नेत्रोंको बाण १३ और स्तनों को पटकुटी बनाकर जीतनेके लिये कामदेव

की सेना होगई १४ और मेधावी मुनिको देखकर वह भी काम से पीड़ित हुई और युवावस्थासंयुक्त मुनि भी प्रकाशित हुए १५ सफ़ेद जनेऊ समेत दूसरे काम की नाईं दिखाई दिये और यह मुनि च्यवनजी के अच्छे आश्रममें वासकरतेथे १६ कि मंजुघोषा मुनिश्रेष्ठको देखकर कामकेवश प्राप्तहोकर धीरे २ गानेलगी १७ और मुनिश्रेष्ठ भी शब्द करतेहुए कंकणों और बिछियाओं से युक्त गाती हुई अप्सरा को देखकर १८ सेनासमेत कामसे बलसे मोहके वश प्राप्तकिये गये तब मंजुघोषा ने इसप्रकार के मुनि को देखकर १९ हावभाव कटाक्षों से उनको मोहितकिया और वीणाको नीचेधरकर मुनीश्वर को लिपटगई २० और मुनीश्वर ने वृक्ष में लताकीनाईं लिपटीहुई जानकर उसकेसाथ रमणकिया २१ उसकी उत्तमदेह देखकर मुनिजीका शिवतत्त्व चलागया कामतत्त्वके वशमें प्राप्तहोगये २२ और उनकामी ने रमण करतेहुए रात्रि और दिनभी नहीं जाना इसप्रकार मुनि का आचार तो लोपहोगया और बहुत वर्ष समय बीतगया २३ तब मंजुघोषा देवलोक जानेके लिये इच्छा करतीभई और रमतेहुये मुनिश्रेष्ठ से बोली कि हे ब्रह्मन् अपने देशजाने के लिये आज्ञादीजिये २४ तब मेधावीमुनि बोले कि हे श्रेष्ठ मुखवाली इस समय प्रदोष आदिमें जाना चाहती हो जबतक प्रातःकालकी संध्या है तबतक हमारे समीपरहो इसप्रकार के मुनिके वचन सुन वह भयसे डरगई २५ और हे राजन् फिर उन ऋषिसे उनकेशाप के भयसे डरीहुई बहुत वर्षोंतक रमण करने लगी २६ पचपनवर्ष नवमहीने और तीनदिन उसने मुनिकेसाथ रमणकिया परन्तु मुनि को रात्रि का आधाहीसा हुआ २७ जब इतना समय बीतगया तो उसने फिर मुनिसे कहा कि हे ब्रह्मन् मैं अपनेघर जाना चाहतीहूं इससे आज्ञा दीजिये २८ तब मेधावीजी बोले कि इस समय प्रभातहीहै हमारे वचन सुनिये जबतक हम सन्ध्याकरें तबतक तुम स्थिररहो २९ इसप्रकार के मुनिके वचन सुन वह आनन्दयुक्त हुई और पवित्र मुस्क्यानियुक्त कुछ मुसकाकर बोली ३० कि हे पापरहित विप्रेन्द्र कितनी तुम्हारी सन्ध्या बीतगई हमारेऊपर प्रसन्न

होकर बीते हुए समय को विचारिये ३१ इस प्रकार तिसके वचन सुन विस्मय से फूलगये हैं नेत्र जिसके ऐसा वह विप्रेन्द्र बीते हुए समयका प्रमाण करताभया ३२ तो सत्तावनवर्ष उसकेसाथ बीतेथे तब तो वह मुनि उसके ऊपर क्रोध करता भया और मारे क्रोधके ज्वालामाली होगया ३३ और अत्यन्त क्रोधयुक्त वह नेत्रों से विस्फुलिंगोंको छोड़ता हुआ कालरूपा और तपस्या की नाश करने वाली को देखताभया ३४ कि दुःख से जोड़ीहुई तपस्या को इसने नाश करदिया फिर कँपरहे हैं ओष्ठ और व्याकुलहैं इन्द्रियां जिस की ऐसा वह मुनि बोला ३५ कि तू पिशाचीहो इस प्रकार उसको शापदिया और बोले कि हे पापे हे दुराचारे हे कुलटे हे पातकप्रिये तुझको धिक्कारहै ३६ इसप्रकार मुनिके शापसे वह जलीहुई नम्रतापूर्वक स्थित, मुनिकी प्रसन्नता की इच्छा करती हुई वह स्त्री वचन बोली कि हे विप्रेन्द्र प्रसन्न होकर शाप अनुग्रह कीजिये ३७ क्योंकि सज्जनोंका संग वचनों और सातपगोंसे होताहै हेब्रह्मन् आपके साथ मुझे बहुत वर्ष बीतगये हैं इसकारणसे हे स्वामिन् हे सुव्रत प्रसन्न हूजिये ३८ तब मुनि बोले कि हे भद्रे शाप के अनुग्रह का करने वाला हमारा वचन सुनिये मैं क्या करूं हे पापे तूने मेरा बड़ा तप नाश करदिया ३९ चैत्रके कृष्णपक्षमें शुभ एकादशी होती है उसका पापमोचनिका नाम है वह सब पापों को नाश करती है ४० हे शुभ्रे उसका व्रत करनेसे पिशाचत्व जातारहेगा ऐसा कहकर वह मेधावी पिताके आश्रमको गया ४१ तब च्यवनजी पुत्र को आते देखकर उससे बोले कि हे पुत्र क्या तूने किया पुण्य तो सब नाश करडाली ४२ तब मेधावी बोले कि हे पिताजी मैंने निश्चय पाप किया क्योंकि अप्सराके साथ रमण किया अब हे तात प्रायश्चित्त कहिये जिससे पाप नाश होजावें ४३ तब च्यवन जी बोले कि चैत्रके कृष्णपक्ष में पापमोचनी नाम एकादशी होती है हे पुत्र उसका व्रत करने से पापकी राशिभी नाश होजाती है ४४ इस प्रकारके पिताके वचन सुन उसने उत्तम व्रत किया कि उसके पाप नाश होगये और वह तपस्यायुक्त होगया ४५ और उस मंजुघोषा

नेभी उत्तम व्रत किया कि वह भी पापमोचनिका के व्रतसे पिशाचत्व से छूटगई और सुन्दररूप धरकर वह अप्सरा स्वर्ग में चली गई ४६ लोमशजी बोले कि हे मान्धाता राजा जे मनुष्यों में श्रेष्ठ पापमोचनिका के व्रतको करते हैं तिनके जो कुछ पाप होते हैं वे सब नाशको प्राप्त होजाते हैं ४७ और हे राजन् पढ़ने सुनने से हज़ार गौवोंका फल प्राप्तहोताहै ब्राह्मण का मारनेवाला, सोना चुरानेवाला, मदिरा पीनेवाला और गुरुजी की स्त्री से भोग करनेवाला ४८ ये सब इसव्रतके करनेसे पापरहित होजाते हैं यह व्रतकरनेसे बहुत पुण्यका देनेवालाहै और व्रतोंमें उत्तमहै ४९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेचैत्रकृष्णैकादशीपापमोचनीनामषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे वासुदेव तुम्हारे नमस्कारहै हमारे आगे यह कहिये कि चैत्रके शुक्लपक्षमें किस नामकी एकादशी होती है १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् एकमन होकर पुण्यकारी पुरातनी कथा को सुनो जिसको दिलीप राजाके पूछनेपर वसिष्ठजी ने कहाथा २ राजा दिलीप बोले कि हे भगवन् हमारे सुननेकी इच्छा है आप प्रसन्नहोकर कहिये कि चैत्रके शुक्लपक्षमें किसनाम की एकादशी होती है ३ तब वसिष्ठजी बोले कि हे राजन् तुमने अच्छा प्रश्नकिया अब तुम्हारे आगे कहताहूं चैत्र के शुक्लपक्ष में कामदा नाम एकादशी होतीहै ४ वह बड़ी पुण्यकारी है और पापरूपी ईंधनको अग्निरूप है अब हे राजन् इसकी पाप नाशनेवाली और पुण्य देनेहारी कथाको सुनो ५ पूर्व समयमें सोना और रत्नों से विभूषित सुंदर नागपुरमें बड़े उत्कट पुण्डरीक इत्यादिक नाग बसते थे ६ उसपुर में पुण्डरीक राजा राज्य करताथा और गंधर्व, किन्नर और अप्सरा उसकी सेवा करतीथीं ७ उनमें श्रेष्ठ अप्सरा ललिता और ललित गन्धर्व ये दोनों स्त्री पुरुष रागसे संरक्त और कामसे पीड़ित ८ धन धान्यसे युक्त अपने सुन्दर घरमें रमण करतेथे ल-

लिताके हृदयमें सदैव पतिही बसताथा ९ और ललितके हृदय में ललिता स्त्री बसती थी एकसमय सभा में स्थित पुण्डरीक क्रीड़ा करता था १० और स्त्री के विना ललित गीत गाताथा कि उसने ललिताका स्मरण किया तो पद के बन्ध की च्युतिहुई और जीभ न गा सकी ११ तब तो नागों में श्रेष्ठ कर्कट ने उसके मन का भाव जानकर उसके पदके बन्धकी च्युतिको राजा पुण्डरीकसे कहा १२ कर्कोटकके वचन सुन सर्पोंका राजा पुण्डरीक क्रोधसे लालनेत्र करताहुआ अत्यन्त भयंकर भया १३ और कामसे व्याकुल गातेहुए ललित को शापदिया कि रे दुर्बुद्धे तू पुरुषों का भक्षण करनेवाला क्रव्याद राक्षसहो १४ जिससे कि हमारे आगे भी स्त्री के वशहुआ गाताथा तिसके वचनसेही वह राक्षसरूप होगया १५ कि जिसका भयानक मुख, विरूप नेत्र, देखनेसे भयंकर, भुजा योजनभर लंबे, मुँह कन्दराके तुल्य, १६ चन्द्रमा और सूर्य के समान नेत्र पर्वतके तुल्य गर्दन, नाकके छेद कन्दराके तुल्य, ओष्ठ योजनभर चौड़े १७ और हे राजेन्द्र तिसका शरीर आठ योजन ऊंचा इसप्रकारका राक्षसहोकर कर्मका फल भोगनेलगा १८ अब ललिताने अपने पति को बुरी सूरत का देखा तो बड़े दुःख से पीड़ितहुई चिन्तना करने लगी १९ कि क्या करूं कहां जाऊं मेरापति शापसे पीड़ितहै ऐसा मनसे स्मरणकर कल्याणको न प्राप्तहुई २० और पतिके साथ घोर गहन वनमें घूमनेलगी और वह कामरूपी राक्षस २१ निर्घृण,पाप में निरत, कुरूप, पुरुषोंको भक्षण करनेवाला, पापसे पीड़ित रात्रि और दिनमें सुखको न प्राप्तहुआ २२ ललिताभी पतिको ऐसा देख अत्यन्त दुःखितहुई उसके साथ गहनवनमें रोनेलगी २३ फिर ललिताने सुंदर स्थानदेखा उसमें शान्तदेह मुनिको देख शीघ्रही उनके नमस्कारकर आगे खड़ीहोगई २४ उसको दुःखित देख दया में परायणमुनि उससे बोले कि तू कौनहै कहांसे यहां आईहै यह हमारे आगे कह २५ तब ललिता बोली कि महात्मा वीरधन्वाकी कन्या ललितानाम मुझको जानो मैं पतिकेलिये यहां आईहूं २६ हे महामुने हमारा स्वामी पापदोषसे राक्षस होगयाहै कि जिसका भयानकरूप

और बुरे आचारयुक्तहै ऐसेपतिको देखकर हमको सुखनहीं है २७ हे ब्रह्मन् इससमयमें हमसे जो कृत्यहो वह कहिये कि जिसके पुण्य से मेरापति राक्षसपने से छूटजावे २८ तब ऋषिबोले कि हेरम्भोरु हे ललिते चैत्रमहीना का शुक्लपक्ष इससमयमें है इसकी कामदा नाम एकादशी सबपाप नाश करदेती है २९ हे भद्रे हमारे कहेहुए इस व्रतको विधिपूर्वक करो और इसव्रतकी पुण्यको अपने स्वामी को देवो ३० पुण्य देनेसे क्षणमात्रही में तिसका शापदोष जातारहेगा इसप्रकारके मुनिके वचन सुन ललिता प्रसन्न होगई ३१ और हे राजन् उसने एकादशीका व्रतकिया फिर द्वादशीके दिनमें ब्राह्मण के समीप और भगवान् के आगे ३२ अपने पतिके तारनेकेलिये वचन बोली कि मैंने कामदा एकादशी का व्रत कियाहै ३३ तिसके पुण्यके प्रभावसे मेरे पतिकी पिशाचता दूरहोजावे ललिताके वचन से उसही क्षणमें ३४ ललितका पाप जातारहा और सुन्दर देह समेतहोगया राक्षसत्व जाकर गन्धर्वता प्राप्तहोगई ३५ और सोना और रत्नोंसे युक्तहोकर ललिताकेसाथ रमण करनेलगा फिर पहले के रूपसे अधिक दोनों श्रेष्ठ विमानपर चढ़कर ३६ कामदा के प्रभाव से अत्यन्त शोभितहुए ऐसा जानकर हे नृपश्रेष्ठ यह यत्न से करनी चाहिये ३७ लोकोंके हितकेलिये तुम्हारे आगे मैंने कहा है यह ब्रह्महत्यादिक पापों के नाशनेवाली और पिशाचता नष्टकरनेहारी है ३८ चराचर तीनों लोक में इससे श्रेष्ठ कोई नहीं है पढ़ने सुनने से हे राजन् वाजपेय यज्ञका फल प्राप्त होता है ३९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेचैत्रशुक्लाकामदानामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

वैशाखके कृष्णपक्षकी वरूथिनी एकादशीका माहात्म्यवर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे वासुदेव वैशाखके कृष्णपक्षमें किसनामकी एकादशी होती है उसकी महिमा हमसे कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् वैशाखके कृष्णपक्षमें इसलोक और परलोक में

सौभाग्य देनेवाली वरूथिनी नाम एकादशी होती है २ इसके व्रत से सर्वदा सुखही होताहै पापकी हानि और सौभाग्यकी प्राप्ति होती है ३ दुर्भगा स्त्रीभी इसको करे तो सौभाग्य को प्राप्त होवे और सब मनुष्योंको भी यह भुक्ति और मुक्तिकी देनेवाली है ४ मनुष्यों के सब पाप नाशनेहारी और गर्भके वासको छुड़ानेवाली है इसही के व्रतसे राजा मान्धाता स्वर्गको प्राप्त हुएहैं ५ और भी धुंधमारादिक बहुतसे राजा स्वर्गको चले गयेहैं और भगवान् महादेव भी ब्रह्मकपाल से छूट गये हैं ६ जो मनुष्य दशहजार वर्ष तपस्या करताहै और जो कुरुक्षेत्रमें सूर्य्यके ग्रहण में सोनेके भारको देता है और जो वरूथिनी का व्रत करता है ये सब बराबर फलको प्राप्त होतेहैं ७ श्रद्धासमेत जो मनुष्य वरूथिनीका व्रत करताहै वह इस लोक और परलोक में वांछित को प्राप्त होता है ८ हे राजाओं में श्रेष्ठ यह पवित्रा और पावनी है बड़े २ पापोंको नाश करतीहै और करनेवालों को भुक्ति और मुक्तिकी देनेहारी है ९ हे नृपश्रेष्ठ घोड़े के दानसे हाथीका दान श्रेष्ठहै हाथी के दानसे पृथ्वीका दान श्रेष्ठहै पृथ्वी के दानसे तिलकादान अधिकहै १० तिलके दानसे सोनेका दान श्रेष्ठहै सोने के दानसे अन्नका दान अधिक है अन्नके दानसे श्रेष्ठ न हुआहै और न होगा ११ पितृ,देवता और मनुष्योंकी तृप्ति अन्नही से होती है अन्नदानकी समान कवियों ने कन्यादान कहाहै और अपने आप भगवान्ने गोदानभी कन्यादानके समानही कहा है और इनसबदानों से श्रेष्ठ विद्याकादानहै १२।१३ मनुष्य वरूथिनीका व्रतकर विद्यादानही के फलको प्राप्तहोताहै और जे पाप में मोहित मनुष्य १४ कन्याकी द्रव्य से जीवते हैं उनकी पुण्य नाश होजाती है और घोर नरकमें डाले जाते हैं तिससे सब यत्नसे कन्या के धनको नहीं ग्रहण करना चाहिये १५ और जो लोभसे कन्याको बेंचकर धन ग्रहण करताहै वह हे राजेन्द्र और जन्ममें बिलारहोता है १६ और जो यथाशक्ति गहनोंसेयुक्त कन्याको पुण्यसे देताहै उसकी पुण्यकी संख्याको चित्रगुप्तभी नहीं समर्थ हैं १७ इसीके फल के समान वरूथिनीका व्रत करनेसे फल होताहै कांस्य,मांस,मसूर,

चना, कोदव, १८ साग, मधु, पराया अन्न, दूसरीबार भोजन, मैथुन ये दश व्रत करनेवाला वैष्णव दशमीमें वर्जिदेवे १९ जुआंखेलना, निद्रा, पान, दतूनि, पराया अपवाद, चुगली, चोरी, जीवमारना, रति २० क्रोध और झूठ वचन ये एकादशी में वर्जित हैं और कांस्य, मांस, मदिरा, शहद, तेल, पतितसे बोलना २१ कसरत, प्रवास, दूसरीबार भोजन, मैथुन, बारबनवाना, परायाअन्न ये द्वादशी में छोड़देवे २२ हे राजन् इसविधिसे जिन्होंने वरूथिनीकी है उनके सब पाप नाश करके अन्तमें भगवान् नाशरहित गति देते हैं और जे रात्रिमें जागरण करते और भगवान्को पूजते हैं २३ उनके सबपाप छूटजाते हैं और परमगतिको प्राप्त होते हैं तिससे पापसे डरेहुओंको सब यत्न से यह करनीचाहिये २४ यमराजसे डराहुआ भी मनुष्य वरूथिनी को करै इसके पढ़ने सुनने से हजार गऊका फल प्राप्त होताहै और सब पाप छूटकर विष्णुलोकमें जाताहै २५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेवैशाखकृष्णवरूथिनीएकादशीनामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

वैशाखके शुक्लपक्षकी मोहनी एकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दनजी वैशाखके शुक्लपक्षमें किसनाम की एकादशी होती है क्या फल और विधिहै यह सब कहिये १ तब श्रीकृष्णजीबोले कि हे राजेन्द्र इसीको पहले बुद्धिमान् रामचन्द्रजी ने वसिष्ठजी से पूंछाथा जिसको कि तुम पूंछतेहो २ रामचन्द्रजीबोले कि हे भगवन् वसिष्ठजी सब पाप और दुःखों का नाश करनेवाला उत्तम व्रत सुननेकी इच्छाहै ३ मैंने सीता के विरह से उत्पन्न दुःख भोग किये हैं तिससे भयभीतहुआ हे महामुनिजी आपसे पूंछताहूं ४ तब वसिष्ठजी बोले कि हे राम तुमने अच्छा प्रश्नकिया क्योंकि तुम्हारी नैष्ठिकी बुद्धिहै तुम्हारा नामही ग्रहणकरनेसे मनुष्य पवित्र होजाताहै ५ तिसपरभी मनुष्यों के हितकी कामनासे पावनोंका प-

वित्र और व्रतों में उत्तम व्रत कहताहूं ६ हे रामजी वैशाखके शुक्ल-पक्ष में सबपापों के नाशनेहारी मोहिनी नाम एकादशी होती है ७ इसके व्रतके प्रभावसे मनुष्य मोहकेजाल और पापोंके समूहसे छूट जाते हैं यह मैं सत्यसत्य कहताहूं ८ इसकारणसे हे राम आपसदृशों करके पापों और महादुःखोंकी नाशनेवाली यहएकादशी करनी योग्य है ९ अब हे राम एकमनहोकर श्रेष्ठ, पाप नाशनेवाली कथा को सुनो जिसके सुननेहीं से महापाप नाश होजाताहै १० सरस्वती के सुन्दर किनारे भद्रावतीनाम अच्छीपुरी है वहांपर द्युतिमान् नाम राजा राज्य करताथा ११ जो कि चन्द्रवंशमें उत्पन्न,धृतिमान् और सत्यसंगरथा वहींपर धनधान्यसमृद्धियुक्त एकबनियां बसताथा १२ उसका धनपाल नामथा वह पुण्यकर्म्म करनेवाला, पौशाला, कुंवां, देवों के स्थान, ताल और मन्दिर बनवानेवाला १३ विष्णुकी भक्ति में रत और शान्तथा उसके पांचपुत्रथे सुमना, द्युतिमान्, मेधावी, सुकृत १४ और पांचवां पुत्र धृष्टबुद्धि था यह धृष्टबुद्धि सदा महा-पापों में रत, पराई स्त्रियोंके संगमें निरत,विटगोष्ठी में निपुण, १५ जुंवाँ आदिक व्यसनोंमें आसक्त और पराई स्त्रियोंसे रतिकी लाल-सा करनेवाला, देवता, अतिथि, बूढ़े, पितृ और ब्राह्मणोंका न पूज-नेहारा, १६ अन्यायमें वर्तमान, दुष्टात्मा, पिताकी द्रव्य नाशकरने वाला,नहीं खानेकी वस्तुओं का खानेहारा,पापी,मदिरा पीनेमें सदा रत, १७ वेश्याके कण्ठमें चौराहेमें भी भुजा डालनेवाला और दुष्ट था इसको इसके पिता और बान्धवों ने घर से निकाल दिया १८ तो उसने अपनी देहके गहने भी नष्ट करदिये फिर धनके नाश से वेश्याओं ने उसको छोड़दिया और निन्दाकी १९ तदनन्तर जब कपड़ों से हीन और भूंखसे व्याकुलहुआ तो चिन्ता करनेलगा कि क्याकरूं कहांजाऊं किस उपाय से जीवूं २० इसप्रकार चिन्ताकर पिताही के नगरमें चोरीकरना प्रारम्भकिया तो राजाके सिपाहियों ने पकड़लिया परंतु पिताके गौरवके कारणसे छूटगया २१ तबभी उसने चोरी नहीं छोड़ी सिपाही लोग उसको चोरी में पकड़े पावें तो बांधलेवें परन्तु राजाने कईबार उसको छोड़ छोड़ दिया वह दु-

राचार धृष्टबुद्धि मजबूत जंजीरों से बांधाजावे २२ और कोड़ों से वारंवार पीटाजावे परन्तु चोरी न छोंड़े एकवार सिपाही लोग फिर बांधलाये तो राजाने उससे कहा कि रे मूर्ख हमारे देश से निकल जा २३ ऐसा कहकर मजबूत बन्धनसे छुड़ादिया तो राजाके डरसे गहन वन को चलागया २४ वहांपर भूंख प्यास से व्याकुल इधर उधर दौड़नेलगा और सिंहकी समान हरिण,सुअर और चित्रलों को मारनेलगा २५ और सदैव मांसखाकर बन में रहनेलगा हाथ में धनुष और पीठमें तरकस रखकर २६ वनके पक्षी और चौपायों को मारताभया चकोर, मुरैले, कंक, तीतर, मूसा २७ और इनके सिवाय और भी जीवों को वह अन्ध, निर्घृण धृष्टबुद्धि नाशकरता भया क्योंकि पूर्वजन्म के कियेहुए पापोंसे पापरूपी कीचड़ में डूबा हुआ है २८ और दुःख शोकसेयुक्त दिन रात पीड़ासंयुक्त हुआ है परन्तु किसी पुण्यके आगमसे कौंडिन्यजी के आश्रम में प्राप्त होगया २९ उससमयमें तपोधन कौंडिन्यजी वैशाखमहीनेमें गंगाजी का स्नानकरके आगयेथे तब शोकके भारसे पीड़ित धृष्टबुद्धि उनके पास बैठा ३० तो उनके कपड़े की बिन्दु उसके ऊपर गिरी उसीसे उसके पाप और अशुभ सब नष्टहोगये तब तो हाथजोड़कर कौंडिन्य के आगे स्थितहोकर बोला ३१ कि भो ब्रह्मन् भो द्विजश्रेष्ठ हमारेऊपर दयाकरके कहो कि जिस पुण्यके प्रभावसे मुक्तिहोवे ३२ तब कौंडिन्यजी बोले कि जिससे पाप नाशहोवे वह एकमन होकर सुनो वैशाखके शुक्लपक्षमें मोहिनीनाम ३३ एकादशी होतीहै हमारे कहनेसे तुम उस व्रतकोकरो इस व्रतके करनेसे देहधारियों के बहुत जन्मों के इकट्ठा किये मेरुपर्वत के समान भी पाप नाश होजाते हैं इसप्रकार के मुनि के वचनसुन प्रसन्नबुद्धिवाला धृष्टबुद्धि ३४।३५ कौंडिन्यजीही के उपदेश से विधिपूर्वक व्रत करताभया हे नृपश्रेष्ठ उस व्रतके करनेसे वह पापरहित होगया ३६ और सुन्दरदेह होकर गरुड़के ऊपर चढ़कर सब उपद्रवोंसे हीन वैष्णवलोकको चलागया ३७ हे रामचन्द्रजी इसप्रकारका उत्तम मोहिनीव्रतहै चराचर त्रैलोक्यमें इससे बढ़कर कोई नहीं है ३८ यज्ञादिक तीर्थ दान इस

की सोलहवीं कलाको भी नहीं प्राप्तहोते और पढ़ने सुननेसे हज़ार गौवोंका फल प्राप्त होता है ३९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्रयांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेवैशाखशुक्लमोहन्येकादशीनामैकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

ज्येष्ठकृष्ण अपरा एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन ज्येष्ठके कृष्णपक्षमें किस नामकी एकादशी होती है उसका माहात्म्य सुनने की इच्छाहै तिसको कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् मनुष्यों के हितकी कामनासे तुमने अच्छा प्रश्नकिया यह बहुत पुण्यकी देनेवाली और भारी पापोंको नाशनेवाली है २ और इसका हे राजेन्द्र अपरा नाम है यह अपार फलकी देनेहारी है जो मनुष्य अपराको सेवताहै वह संसारमें प्रसिद्धिताको प्राप्तहोताहै ३ ब्रह्महत्या करनेवाला,गोत्रका नाशनेहारा, भ्रूणका मारनेवाला, पराये अपवादमें वादकरनेवाला और पराईस्त्रीमें रसिक ४ ये सब अपराके सेवनसे पापहीन निश्चय होजाते हैं झूठी गवाही देनेवाला झूठामान करनेहारा और झूठ तौलनेवाला ५ झूठ वेद और शास्त्रका पढ़नेहारा झूठ ज्योतिषी और वैद्य ६ झूठीगवाही से युक्त इनसबके नरकमें स्थान जानने योग्यहैं परन्तु येभी अपराके सेवनसे पापों से छूट जाते हैं ७ क्षत्रिय होकर जो अपने धर्म्म को छोड़कर युद्धसे भाग जाता है वह घोर नरक को प्राप्त होताहै क्योंकि उसने अपना क्षात्रधर्म्म छोड़ दिया है ८ परंतु अपराके सेवनसे पापों को त्यागकर स्वर्ग को जाता है और जो विद्यावान् शिष्य अपने आप गुरुजीकी निन्दा करताहै ९ वह महापापोंसेयुक्त घोरनरक को जाताहै परन्तु अपराके सेवने से वहभी सद्गतिको प्राप्त होताहै १० अब हे राजन् अपराकी महिमा कहताहूं सुनिये मकरके सूर्य्यमें माघमहीने में प्रयागमें जो फलहोता है ११ काशीमें ग्रहणमें स्नान करने से जो पुण्य प्राप्त होतीहै गया में पिण्डदेनेसे पितरोंकी तृप्तिको जैसे देताहै १२ सिंहकी बृहस्पति

में गौतमी में स्नान करने से जो फल मनुष्यको प्राप्तहोताहै और कन्याकी वृहस्पति में कृष्णवेणी के स्नानसे जो पुण्य होती है १३ कुंभमें केदारके दर्शनसे जो फल मिलताहै बदरीनारायण की यात्रा में उस तीर्थ के सेवनसे १४ जो फल मिलता है कुरुक्षेत्रमें सूर्य के ग्रहणमें जो फल मिलताहै हाथी घोड़ा और सोनेके दानसे दक्षिणा समेत यज्ञ करने से जो फल मिलताहै १५ वैसाही फल अपरा के व्रतके सेवन से प्राप्त होताहै आधी ब्याईहुई गौकेदने और सोना और पृथ्वी के देनेसे १६ मनुष्य जिसफलको प्राप्तहोताहै वहीफल अपरा के व्रतसे भी होताहै यह अपरा पापरूपी वृक्ष काटनेके लिये कुल्हाड़ी है पापरूपी इन्धन जलानेमें अग्निरूप है १७ पापरूपी अँधेरा दूर करनेके लिये सूर्यरूप है पापरूपी सारंगोंको सिंह के समानहै जलमें बुलबुला और जन्तुओं में पुत्तिकाकी नाईं १८ एकादशी के व्रतके विना फिर जन्म मरण होता रहता है अपराका व्रत कर भगवान्को पूजे १९ तो सबपापोंसे छूटकर विष्णुलोकमें प्राप्त होवे मनुष्यों के हितके लिये मैंने इसको तुम्हारे आगे कहा इसके पढ़ने सुनने से हजार गऊके देनेका फल प्राप्त होताहै २० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्रयांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेज्येष्ठकृष्णापरैकादशीनामपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

ज्येष्ठ शुक्ल निर्जला एकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे जनार्दन हे मानके देनेवाले अपरा का माहात्म्य तो मैंने सब सुना अब ज्येष्ठके शुक्लपक्षमें जो होती है तिसको कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि इसको धर्मात्मा, सत्यवती के पुत्र, सब शास्त्रोंके अर्थके तत्त्वके जाननेवाले, वेद और वेदांगके पारगामी व्यासजी वर्णन करेंगे २ तब युधिष्ठिर बोले कि मैंने मानव और वासिष्ठधर्म सुने अब हे व्यासजी यथोचित वैष्णवधर्म्म कहनेको आप योग्यहैं ३ तब श्रीवेदव्यासजी बोले कि हेराजन् मानव धर्म और वैदिकधर्म तुमने सुने अब कलियुग में यही करने को

समर्थ नहीं हैं ४ हे महामते सुखपूर्वक उपाय, थोड़ा धन, थोड़ा क्लेश, महाफल देनेवाला, सब पुराणोंका सारभूत ५ यहहै कि दोनों पक्षों की एकादशीमें भोजन न करें और द्वादशी में पवित्र होकर फूलोंसे भगवान् को पूजे ६ और ब्राह्मणोंको पहले भोजन कराकर पीछे से आपभी अन्नका भोजनकरै और हे जनोंके स्वामी सूतक और आशौचमें न भोजन करनाचाहिये ७ हे पुरुषों में श्रेष्ठ स्वर्ग की प्राप्त होनेकी इच्छावालोंको जबतक जीवें तबतक यह व्रतकरना चाहिये इसमें सन्देहनहीं है ८ चाहे पापी, दुराचारी, पापिष्ठ और धर्मसे हीन हों परन्तु एकादशी में न भोजनकरें तो यमराजके पास नहीं जाते हैं ९ इसप्रकारके व्यासजी के वचन सुन महाबाहु भीमसेन पीपल के पत्तेके समान कँपे और गुरुजी के नमस्कार कर उनसे बोले १० कि हे पितामह हे महाबुद्धे हमारे श्रेष्ठ वचन सुनिये युधिष्ठिर, कुंती, द्रौपदी ११ अर्जुन, नकुल, सहदेव ये सब अच्छीतरहसे व्रत करते हैं और कभी एकादशी में भोजन नहीं करते १२ ये सब हमसे नित्य ही कहते हैं कि हे भीमसेन तुमभी एकदशी में भोजन न करो तब हे तात मैं उनसे कहताहूं कि भूंख हमसे नहीं सहीजाती १३ विधिपूर्वक दानदूंगा और भगवान् को पूजूंगा तब तो भीमसेनके वचन सुनकर व्यासजी बोले १४ कि जो स्वर्ग्ग तुमको अभीष्ट हो और नरकदुष्टहो तो दोनों पक्षों की एकादशी में न भोजनकरो १५ तब भीमसेन बोले कि हे पितामह हे महाबुद्धे तुम्हारे आगे कहता हूं हे प्रभो एकबार भोजन करनेसे भी मुझसे भूंख नहीं सधती व्रतमें कैसे सधेगी १६ वृक नाम जो अग्निहै सो सदैव हमारे पेटमें रहती है जब हम समयपर खाते हैं तब तो शान्त रहती है १७ हे महामुने एक भी व्रत करनेको मैं समर्थ नहींहूं जिससे स्वर्ग प्राप्तहो वह करना चाहताहूं सो एक निश्चयकरके कहिये जिससे मैं कल्याणको प्राप्तहूं १८ तब व्यासजी बोले कि वृष और मिथुन के सूर्यों में जब एकादशीहो उसमें ज्येष्ठ के महीनेमें यत्नसे विना जल पीने के व्रतकरै १९ जलका आचमन भी चतुर मनुष्य नहीं करै और भोजन नहींकरै नहीं तो व्रत भङ्ग होजावेगा २० उदयसे उदयपर्य्यंत

मनुष्य जलको छोड़देवे तो उसका फलसुनो वह मनुष्य बारह द्वादशियों के फलको प्राप्त होता है २१ तदनन्तर द्वादशी में सवेरे निर्म्मल जलमें स्नानकर ब्राह्मणों को यथोचित विधिसे जल और सोना देकर २२ ब्राह्मणों समेत व्रत करनेवाला मनुष्य भोजनकरै हे भीमसेन ऐसा करनेसे जो पुण्य होताहै वह सुनो २३ सालभरमें जितनी एकादशी होतीहैं उन सबके फलको वह प्राप्तहोताहै इसमें हमको संदेह नहीं है २४ यह शङ्ख चक्र और गदाके धारण करने वाले भगवान्ने हमसे कहा है कि सबको मनुष्य छोड़कर एक हमारीही शरणमें प्राप्तहो २५ एकादशी में भोजन न करै तो पापसे छूटजावे क्योंकि कलियुगमें द्रव्यकी शुद्धिनहीं है और संस्कार स्मार्तहैं २६ इस दुष्ट कलियुग के प्राप्त होनेमें वैदिक संस्कार कहां हैं हे भीमसेन वारंवार बहुत कहनेसे क्याहै २७ दोनों पक्षोंकी एकादशी में भोजन न करै और ज्येष्ठ के शुक्लपक्षकी एकादशी में जलविना व्रत करै २८ तो हे भीमसेन वह जिस पुण्य के फलको प्राप्तहो वह सुनो सालभर में जो शुक्लपक्ष और कृष्णपक्षकी एकादशी कही हैं २९ वे सब निस्सन्देह उसने व्रत करडालीं क्योंकि एकादशी धन, धान्य, पुण्य, पुत्र, आरोग्य और कल्याणकी देनेवाली है ३० हे मनुष्योंमें श्रेष्ठ यह व्रत करने योग्यहै यह मैं तुमसे सत्यही कहता हूं बड़ी देहवाले, कराल,श्यामवर्ण, दण्ड और फँसरी के धारण करने वाले यमराज के दूत उस मनुष्य को नहीं प्राप्त होते हैं पीताम्बर धारण करनेवाले, सौम्य, चक्र हाथमें लिये, मनके समान वेगवाले ३१।३२ अंत समयमें वैष्णवोंको वैष्णवीपुरी में लेजाते हैं तिससे सब यत्नसे विना जलके व्रत करनी चाहिये ३३ और तिस समय में जलधेनु देवे तो सब पापोंसे छूटजावे तिससे हे भीमसेन तुम एकादशीमें व्रत भगवान् का पूजन ३४ सब यत्नोंसे सम्पूर्ण पापोंकी शांतिके लिये करो तो स्वप्न में दंतके रागता करके भी अपराध न होगा ३५ और द्वादशीके दिन में भोजन करूंगा उपवास में परायण मनुष्य इस मन्त्रको उच्चारण करे ३६ सब पाप नाशके लिये श्रद्धा और दमसे युक्त मनुष्य या स्त्रीने जो मेरु और मन्दराचल

के बराबर पापकियेहों ३७ तो एकादशी के प्रभावसे सब भस्म हो जावें और हे राजन् जे मनुष्य जलधेनु देने में न समर्थ हों ३८ वे सोने और कपड़ेसमेत घड़ादेवें और जो मनुष्य एकादशी में जल का नियम करताहै वह निश्चय पुण्यका भागी होताहै ३९ करोड़ सोनेका फल पहर पहरमें सुनाहै और जो मनुष्य एकादशीमें स्नान,दान, जप और होम करताहै ४० वह सब नाशरहित प्राप्त होता है यह कृष्णने कहाहै निर्जला एकादशीके विना दूसरे धर्मसे क्याहै ४१ अच्छी विधिसे व्रत करने से वैष्णव पदको प्राप्त होताहै और सोना, अन्न वा कपड़ा जो इसमें दियाजावे ४२ वह सब नाशरहित होजाताहै और जो एकादशी के दिन अन्न भोजन करताहै वह पाप को भोग करताहै ४३ इसलोकमें तो वह चांडाल और मरकर दुर्गतिको प्राप्तहोताहै और जो ज्येष्ठमासके शुक्लपक्षकी द्वादशीमें व्रत कर दान देते हैं वे परमपदको प्राप्त होते हैं ब्राह्मणका मारने वाला, मदिरा पीनेवाला, चोर, गुरुजीसे वैर करनेवाला, सदा झूठ बोलने हारा ४४।४५ ये सब निर्जलाका व्रत करनेसे सब पापोंसे छूटजाते हैं अब हे भीमसेन विशेषता सुनो निर्ज्जला एकादशी के दिन ४६ श्रद्धायुक्त मनुष्य स्त्रियोंको जो दानकरना चाहिये जलमें शयन करनेवाले भगवान्‌को पहलेपूजे फिर जलधेनु ४७ वा प्रत्यक्ष गऊ वा घृतधेनुदेवे और पुष्ट दक्षिणा और अनेकप्रकारके मिष्टान्नों से ४८ यत्नपूर्वक ब्राह्मणोंको प्रसन्नकरे जब ब्राह्मण प्रसन्नहोजाते हैं तो उन की प्रसन्नतासे भगवान् मोक्ष देते हैं ४९ और जिन्होंने इसका व्रत नहीं किया उन्होंने आत्मासे वैरकिया और वेही पापात्मा,दुराचारी और चोर निस्संदेहहैं ५० और जिन शान्त,दान्त,दानमें परायण, भगवान् के पूजनेवाले और रात्रि में जागरण करनेवालों ने इसका व्रत किया उन्हों ने सौ आनेवाली और सौ बीतीहुई पीढ़ियों और अपनाको वासुदेवके मन्दिरमें प्राप्त करदिया ५१।५२ अन्न,कपड़ा, गऊ, जल, शय्यासन, कमण्डलु और छतुरी को निर्जला एकादशी के दिनमें देना चाहिये ५३ और जो सुपात्र ब्राह्मणको जूते देताहै वह सोनेके विमानपर चढ़कर स्वर्गलोकमें जाताहै ५४ और जो

भक्तिसे इसको सुनता और कीर्तन करता वे दोनों स्वर्गको प्राप्त होतेहैं इसमें सन्देह न करनाचाहिये ५५ और जो फल कुरुक्षेत्रमें सूर्य्यग्रहणमें श्राद्ध करनेसे मनुष्यको मिलताहै वह इसके सुननेसे भी मिलताहै ५६ इसमें पहले दतूनकर नियम करनाचाहिये एकादशीमें भोजन और जलको भी छोड़देवे ५७ भगवान्‌की प्रसन्नता के लिये आचमनकरै और द्वादशीमें देवदेवेश त्रिविक्रमजीको ५८ चन्दन,धूप,फूल और सुन्दर कपड़ोंसे विधिसे पूजनकर इसमंत्रको कहै ५९ हे देवदेव हे हृषीकेश हे संसाररूपी समुद्रके तारनेवाले उदकुंभके दानसे हमको परमगतिको प्राप्तकरो ६० हे भीमसेन ज्येष्ठ महीनेके शुक्लपक्षकी निर्जला एकादशीको व्रतकर शक्करसमेत जल के घड़े ६१ जो ब्राह्मणोंको देवे वह भगवान्‌के समीप आनन्द करे फिर तिसपीछे भक्तिसे ब्राह्मणोंको उदकुम्भदेवे ६२ और तिसपीछे ब्राह्मणोंको भोजनकरा आप भी भोजनकरे इसप्रकार जो पूर्ण पाप नाशनेवाली द्वादशीका व्रत करताहै ६३ वह सब पापोंसे छूट रोगहीन पदको प्राप्त होताहै तबसे लेकर भीमसेनने शुभ एकादशीका व्रतकिया तो संसारमें इसका पांडव द्वादशी नाम प्रसिद्धहुआ६४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशतसाहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेज्येष्ठशुक्लानिर्जलैकादशीनामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

आषाढ़ कृष्ण योगिनी एकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे वासुदेवजी आषाढ़ के कृष्णपक्ष में किस नामकी एकादशी होती है यह प्रसन्नहोकर हमारेआगे कहो १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् सबपापोंका नाशकरनेवाला और मुक्तिका देनेहारा व्रतोंमें उत्तम व्रत तुम्हारे आगे कहताहूं २ आषाढ़ के कृष्णपक्षमें योगिनीनाम एकादशी बड़े पापोंकी नाशनेवाली होती है ३ यह संसाररूपी समुद्रमें डूबेहुओंको नौका, सनातनी और व्रतकरनेवालों को तीनों लोकमें सारभूत है ४ अब तुम्हारे आगे पुराणकी सुन्दर कथा कहताहूं कुबेरकीपुरी अलका में कुबेरजी म-

हादेव की पूजामें परायणथे ५ तिनके फूलोंका लानेवाला हेममाली नामथा इसकी स्त्री बड़ी सुरूपवती विशालाक्षी नामथी ६ हेममाली उसमें आसक्त, कामकी फँसरी के वशमें प्राप्तथा एकदिन उसने मानसरोवर से फूललाकर अपने घरमें रक्खे ७ और स्त्रीके प्रेमरूपी रसमें आसक्त कुबेरके स्थानको नहीं गया और कुबेरजी देवस्थान में महादेवजी का पूजन मध्याह्नसमयमें करतेथे और फूलोंके आने की राह देखतेथे और फूललानेवाले हेममाली अपने घरमें स्त्रीके साथ रमणकरतेथे ८।९ जब समय फूललानेका बीतगया तो कुबेर जी यक्षोंसे क्रोधकर बोले कि भोयक्षो दुरात्मा हेममाली क्यों नहीं आया इसका निश्चयकरो इसप्रकार कईबार उनसे कहा १० तो यक्षबोले कि हे राजन् स्त्रीमें आसक्त वह अपनी इच्छासे अपने घर में रमण करताहै यक्षोंके ऐसे वचनसुन कुबेरजी कोपमें पूरित होगये ११ और जल्द हेममाली को बुलाया समय अधिक बीतनेपर हेममाली डरसे व्याकुलनेत्रयुक्त होगया १२ और कुबेरजी के यहां आकर उनके नमस्कारकर आगे खड़ाहोगया उसको देखकर कुबेरजी के मारेक्रोध के लालनेत्र होगये १३ और ओष्ठ फरकनेलगे और अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर बोले कि रेपापी,दुष्ट, दुर्दृत्त तूने देवों की निन्दाकी १४ इससे स्त्रीसे वियोगहोकर तेरे अठारहो कोढ़होवें और रे प्रमथों में अधम इस स्थानसे तू चलाजावे १५ ऐसे कुबेर जीके वचन कहतेही वह उसस्थानसे गिरगया और भारीदुःखों से युक्त कोढ़ों से पीड़ायुक्त देह होगया १६ न तो तिसको दिनमें सुख और न रातमें नींदआवे छायामें पीड़ायुक्त देहहो और घाममें अत्यन्त पीड़ितरहे १७ परन्तु महादेवजीकी पूजाके प्रभावसे स्मरण उसका नहीं लोपहुआ पापोंसेयुक्त पहले के कर्म्मों को स्मरण कर रहाहै १८ और घूमताहुआ पर्व्वतों में श्रेष्ठ हिमाचलपर गया तो मुनियों में श्रेष्ठ, तपस्यामें निधिरूप मार्कण्डेयजीको वहां देखा १९ कि जिनकी उमर ब्रह्माकी उमर के बराबर विद्यमान है तब तो उस पापकर्म्म करनेवाले ने दूरही से उनकेचरणों की वन्दना किया २० तब मुनिवर मार्कण्डेय जी उसको कांपते हुए देखकर पराये उप-

कार करनेकेलिये बुलाकर यह बोले २१ कि क्यों तुमकुष्ठयुक्त हुए और अत्यन्त निंद्यहुए ऐसा कहनेपर हेममाली महामुनि मार्कंडेय जी से बोला २२ कि हे मुनिजी कुबेर का अनुचर हेममालीनाम हूं मैं प्रतिदिन मानसरोवर से कमल के फूलोंको लाकर २३ महादेव जी की पूजाकेसमय कुबेरजी को देताथा एकदिन मुझको समय न जानपड़ा २४ स्त्री के सुखमें आसक्त होगया तब शोकसे व्याकुल-चित्त मुझको क्रोधसे कुबेरजीने शापदिया २५ कि कोढ़सेयुक्त और स्त्रीसे तू वियोगी होजावे अब इससमयमें अच्छेकर्म से आपकेपास प्राप्तहुआ हूं २६ क्योंकि सज्जनोंका चित्त स्वभावही से पराये उप-कार में योग्य होताहै ऐसा जानकर हे मुनिश्रेष्ठ अपराध करनेवाले मुझको रक्षाकीजिये २७ तब मार्कंडेयजी बोले कि तूने सत्यही कहा है झूठनहीं कहा इससे कल्याण के देनेवाले व्रतका उपदेश तुझसे कहताहूं २८ कि आषाढ़ के कृष्णपक्षमें योगिनी एकादशी का व्रत तू कर इसव्रतके पुण्यसे निश्चय कोढ़ चलाजावेगा २९ इसप्रकार के ऋषिके वचन सुन वह पृथ्वीमें दण्डवत् करताभया तब तो मुनि ने उसको उठालिया तो अत्यन्त प्रसन्न होगया ३० और मार्कण्डे-यजी के उपदेश से उसने यथोचित व्रतकिया तो उसके सब अंगों से अठारहो कोढ़ जातेरहे ३१ मुनिकीवाणी से उसने जो अच्छेप्र-कार व्रतकिया तो वहसुखी होगया हे राजन् इसप्रकार का योगिनी व्रतकहा ३२ अठासी हज़ार ब्राह्मणोंको जो भोजन कराता है और जो मनुष्य योगिनी का व्रत करताहै तो उनदोनोंको समानही फल मिलताहै ३३ यह योगिनी का व्रत भारी पापोंका नाश करनेवाला और महापुण्य के फलको देनेहारा है इसके पढ़ने सुनने से मनुष्य सब पापों से छूटजाता है ३४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसं-वादेआषाढ़कृष्णयोगिन्येकादशीमाहात्म्यंनामद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

आषाढ़शुक्ल देवशयनी एकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे श्रीकृष्णजी आषाढ़के शुक्लपक्ष में कौन एकादशी होतीहै उसका नाम और विधि विस्तारसे कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि महापुण्यकारिणी, स्वर्ग्ग और मोक्ष की देनेवाली, सब पाप हरनेवाली, श्रेष्ठ शयनीनाम एकादशीको कहताहूं २ जिसके सुननेहीसे वाजपेय यज्ञका फल प्राप्त होताहै यह मैंने सत्य सत्य कहा है मनुष्यों को इससे बढ़कर कोई नहीं है ३ पापियों के पाप नाशनेकेलिये ब्रह्माने इसको सबसे उत्तमरचाहै हे राजेन्द्र इस से श्रेष्ठ मोक्ष देनेवाली नहीं वर्तमान है ४ हे राजन् इस कारणसे सुननेवाले मनुष्योंको कथाके सुननेहीसे उत्तमगति सुनो ५ ते सदाही वैष्णव हमारी भक्तिमें परायणहैं जिन्होंने आषाढ़में परमेश्वर वामनजी को पूजाहै ६ आषाढ़ के शुक्लपक्ष में कामिका एकादशी के दिन जिस मनुष्य ने कमलनयन वामनजी को कमलों से पूजा ७ उसने सब संसारको पूजा और सनातन ब्रह्मा विष्णु और महादेव इन तीनों देवोंको भी पूजा जिसने उत्तम एकादशीका व्रतकिया ८ तब युधिष्ठिर बोले कि हे पुरुषोत्तम मुझको भारी सन्देहहै कि भगवान् कैसे सोते और बलिके आश्रित कैसेहुए ९ भूमि में प्रवेश कैसे हुआ और दूसरे मनुष्य क्या करते हैं हे महाबुद्धिमान् इस में हमको भारी सन्देह है यह आप कहिये १० तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ पाप हरनेवाली श्रेष्ठ कथा को सुनो जिसके सुननेहीसे सब पाप नाश होजाते हैं ११ हे राजन् पहले त्रेतायुगमें बलिनामी दैत्यहुआ वह नित्यही हमको पूजता, हमारा भक्त और हमीं में परायणहुआ १२ और विधिपूर्वक यज्ञों से सनातन हमको पूजता और श्रेष्ठ भक्तिसे यज्ञ और व्रत करताथा १३ तब तो इंद्र ने बृहस्पति और देवताओं समेत हमको पूजा कि जिसमें बलि हमारा इन्द्रासन न लेलेवे १४ तो पांचवें अवतार में अत्यन्त घोर रूप, सर्व ब्रह्माण्डरूपी वामनरूप से १५ वाणी के छल से अर्थात्

तीनपैग मांगनेसे सत्यमें स्थित वह दैत्य जीतलिया गया तब तो शुक्र ने बलिको मना भी किया कि ये नारायण हैं १६ परन्तु उसने नहीं माना वामनजी ने साढ़ेतीनपैग पृथ्वी मांगी उसका उसने जललेकर संकल्प करदिया १७ तब तो हे राजन् वामनरूप मैंने तिस समय इसप्रकारका रूपकिया उसको सुनिये भूलोंक में चरण भुवर्लोकमें गांठें १८ स्वर्लोकमें करिहांव महर्लोक में पेट जनलोक में हृदय तपलोकमें कण्ठ १६ सत्यलोकमें मुख और उसके ऊपर मस्तक रक्खा चन्द्रमा,सूर्य्य, ग्रह, नक्षत्र २० इंद्र समेत देवता,नाग, यक्ष, गन्धर्व्व, किन्नर ये सब वेद से उत्पन्न अनेकप्रकारके सूक्तों से स्तुति करनेलगे २१ फिर बलिको हाथ पकड़कर तीनपैगोंसे पृथ्वी नाप ली और आधे पैगसे बलिकी पीठ नापली २२ तब तो हमारी पूजा करनेवाला दैत्य रसातल को चलागया जब भगवान् ने बलि को रसातल भेजा तो उसकी नम्रतासे भगवान् जनार्दनजी प्रसन्न होगये आषाढ़की शुक्लपक्षमें कामिका एकादशी में २३।२४ एकमूर्ति बलि के यहां स्थित रहनेलगी और दूसरी शेषजीकी पीठ में क्षीरसागरके बीच २५ आनेवाले कार्तिककी शुक्लपक्षकी एकादशी तक सोनेलगी इतने बीचमें सब धर्म्मोंसे उत्तमोत्तम धर्म्म होताहै २६ और जो व्रतकरताहै वह मनुष्य परमगतिको प्राप्त होताहै इसकारणसे हे राजन् यत्नसे यह करनीचाहिये २७ इससे बढ़कर कोई पवित्र पाप नाशनेवाली नहीं है कि जिसमें शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले भगवान् सोते हैं २८ तिसमें शंख,चक्र और गदा के धारण करनेहारे देवकोपूजे और विशेष भक्तिसे रात्रिमें जागरण करे २९ इसके पुण्यकी गिनती करनेको ब्रह्माभी नहीं समर्थ हैं इस प्रकार हे राजन् जो एकादशीके उत्तम व्रतको करताहै ३० तो उस के सब पाप नाश होजाते हैं और भुक्ति मुक्ति मिलती है और वह चाण्डालभीहो तो संसार में सदैव हमको प्याराहोताहै ३१ जे मनुष्य दीपदान करते ढाककेपत्ते में भोजन करते और व्रतसे चारों महीनोंको बिताते हैं वे मनुष्य हमको प्यारे होते हैं ३२ चारमहीना भगवान्के सोतेमें जो मनुष्य पृथ्वीमें सोताहै और श्रावणमें साग

भादोंमें दही ३३ कुंवारमें दूध और कार्त्तिकमें द्विदल को छोड़देता है अथवा ब्रह्मचर्य्य में स्थित होताहै वह परमगतिको प्राप्त होताहै ३४ एकादशीके व्रतसे मनुष्य पापोंसे छूट जाताहै इससे सदैव करनी चाहिये कभी बिसारनी न चाहिये ३५ हरिशयनी और प्रबोधिनीके बीचमें जो कृष्णपक्ष की एकादशी हो वही गृहस्थ को व्रत करनी चाहिये और कृष्णपक्ष की कोई नहीं ३६ और हे राजन् जो मनुष्य श्रेष्ठ, पाप हरनेवाली कथाको सुनताहै वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ३७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेदेवशयन्येकादशीनामत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

चौवनवां अध्याय॥

श्रावणकृष्ण कामिका एकादशी के व्रतका माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे गोविन्द हे वासुदेवजी श्रावण के कृष्ण पक्ष में किस नामकी एकादशी होती है यह हम से कहिये आप के नमस्कारहै १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् पाप नाशनेवाला आख्यान सुनिये जिसको नारद के पूछनेपर ब्रह्माजी ने पहले कहा था २ नारदजी बोले हे भगवन् ब्रह्माजी आपसे मैं यह सुनना चाहताहूं कि श्रावणके कृष्णपक्षमें किस नामकी एकादशीहोती है ३ हे प्रभो कौन देवताहै विधि क्याहै और पुण्य क्या होती है इसप्रकार के नारद के वचन सुन ब्रह्माजी बोले ४ कि हे नारद लोकोंकी हित की कामना से तुमसे कहताहूं सुनो श्रावणके कृष्णपक्षकी एकादशी का कामिका नामहै ५ इसके सुननेही से वाजपेय यज्ञकाफल मिलताहै इसमें शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले, देवोंके स्वामी ६ श्रीधरनाम, हरि, विष्णु और मधुदैत्यके मारनेवाले भगवान्को जो पूजता और ध्यान करताहै तिसके पुण्यका फलसुनो ७ गंगा, काशी, नैमिषारण्य और पुष्करमें जो फल नहीं मिलता वह कृष्णजीके पूजनसे मिलताहै ८ गोदावरी नदीमें सिंहकी बृहस्पति में व्यतीपात में दण्डकमें जो फल मिलताहै वह कृष्णजीके पूजनसे मिलताहै ९

समुद्र और वनसेयुक्त जो पृथ्वी को देता है और कामिका का व्रत
करनेवाला इनदोनों को समान फल मिलता है १० और सब सा
मग्रियों समेत ब्यानी गऊको जो देताहै वही फल कामिका के व्र
करनेवाले को मिलताहै ११ जो मनुष्यों में श्रेष्ठ मनुष्य श्रावण
श्रीधरदेवको पूजताहै उसने देवता, गंधर्व, सर्प, पन्नग सब पूजडाले
१२ तिससे सब यत्नोंसे कामिका के दिनमें पापसे डरेहुए मनुष्यों
करके यथाशक्ति भगवान् पूजने योग्य हैं १३ जे मनुष्य पापरूपी
कीचड़ से व्याकुल संसाररूपी समुद्र में डूबे हुए हैं तिनके उद्धा
के लिये कामिका व्रत बहुत उत्तमहै १४ इससे बढ़कर कोई पवित्र
और पाप नाशनेवाली नहीं है हे नारद यह जानो इसको भगवान्
ने अपने आप कहा है १५ अध्यात्मविद्या में निरत मनुष्यों करके
जो फल प्राप्तहोताहै उससे अधिक कामिकाके व्रतके सेवनेवालोंके
मिलताहै १६ कामिका का व्रत करनेवाला मनुष्य रात्रिमें जागरण
करै तो भयानक यमराजजीको नहीं देखताहै और दुर्गति को नहीं
प्राप्तहोताहै १७ और इसका व्रत सेवनेसे बुरी योनिको नहीं देखत
और योगी लोग इसीका व्रत करनेसे मोक्षको प्राप्तहुएहैं १८ तिस
से नियतात्माओं करके सब यत्नों से यह करने योग्यहै और तुलसी
के पत्तों से जो भगवान्को पूजताहै १९ वह पापसे लिप्त नहीं होता
जैसे जल से कमल का पत्र नहीं मूंदता और एकभार सोना और
चौगुना चांदी देनेसे २० जो फल मिलताहै वह तुलसीदलके पूजने
से मिलता है रत्न, मोती, वैडूर्य और मूंगा आदिकों से पूजित २१
भगवान् वैसा नहीं प्रसन्नहोते जैसा कि तुलसीदलसे होते हैं तुलसी
की मंजरियों से जिसने भगवान् को पूजा है उसके जन्मभरके पा
निश्चय नाश होजाते हैं २२ जो दर्शन करने से सब पापके समूह
को नाशती स्पर्श करनेसे देहको पवित्र करती वंदना करनेसे रोग
को नाश करदेती सींचनेसे यमराजको डरवाती प्रत्यासत्तिकी करने
वाली भगवान् कृष्णजीकी लगाईहुई मुक्तिके फलको देनेवाली ऐ
सी तुलसीके चरणों में मस्तक रखताहूं इसप्रकारकी तुलसी के न
मस्कारहै २३ और जो मनुष्य एकादशीमें दिन रात दीप जलाता

है उसके पुण्यकी गिनती करनेको अच्छीतरहसे चित्रगुप्त भी नहीं समर्थ हैं २४ और जिसका एकादशी के दिन कृष्णजी के आगे दीप जलताहै उसके स्वर्ग में स्थित पितर अमृतसे तृप्त होते हैं २५ जो घी या तिलके तेलसे दीप जलाताहै वह सौ करोड़ दीपों से पूजित सूर्यलोकको जाताहै २६ यह कामिकाकी महिमा मैंने तुम्हारे आगे कही इससे सब पापों की नाशनेवाली कामिका मनुष्यों को करनी योग्य है २७ यह ब्रह्महत्या और गर्भहत्या को नाशती वैष्णवों को स्थान देनेवाली और महापुण्यके फलको देनेहारी है २८ श्रद्धायुक्त मनुष्य इसका माहात्म्य सुनकर सब पापोंसे छूटकर विष्णुलोकको प्राप्तहोताहै २९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेश्रावणकृष्णैकादशीनामचतुष्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

श्रावणके शुक्लपक्षकी पवित्रारोपणी पुत्रदा एकादशीका माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिरबोले कि हे मधुसूदन श्रावणके शुक्लपक्षमें किसनामकी एकादशी होती है यह प्रसन्न होकर हमारे आगे कहिये १ तब श्रीकृष्णजीबोले कि हे राजन् पाप हरनेवाली श्रेष्ठ कथाको सुनो जिसके सुननेहीसे वाजपेय यज्ञका फल होताहै २ पूर्वसमयमें द्वापरयुगकी आदिमें माहिष्मतीपुर में महीजित् नाम राजा अपनी राज्यकी पालना करताथा ३ परंतु वह पुत्रहीन था इससे उसको राज्यसुखकी देनेवाली न थी क्योंकि पुत्रहीन को इसलोक और परलोक में सुख नहीं है ४ राजाको पुत्रकी चिन्ताही से बहुत काल बीतगया परन्तु मनुष्योंको सब सुखका देनेवाला पुत्र राजाने न प्राप्त किया ५ और अपनी वृद्धावस्था देखकर चिन्तासंयुक्त राजा हुआ फिर प्रजाओं के बीचमें प्राप्तहोकर यह वचन बोला ६ कि भो मनुष्यो इस जन्ममें मैंने पाप नहीं किये और अन्यायसे इकट्ठाकर द्रव्यको खजाने में नहीं छोड़ा ७ ब्राह्मण और देवताकी द्रव्यको मैंने कभी नहीं ग्रहण किया बहुत पाप के देनेवाले पराये चिह्नको कभी नहीं

हुरा प्रजाओंको पुत्रके बराबर पालन किया धर्मसे पृथ्वीको जीता ८ बन्धु और पुत्रोंके सदृशभी दुष्टों को दण्डदिया सज्जन मनुष्यों को नित्यही पूजा शत्रुओं को कभी नहीं पूजा ६ भो ब्राह्मणो इस प्रकार के धर्म्म मैंने किये वे आपलोगों से कहे परन्तु हमारे घरमें किस कारण से पुत्र नहीं हुआ यह आपलोग विचारिये १० इस प्रकारके राजाके वचन सुन प्रजा और पुरोहितों समेत ब्राह्मण राजाके हितकी सलाहकर गहनवनको गये ११ और राजाके हितकी इच्छा करनेवाले सबलोग ऋषियोंसे सेवित आश्रमोंको इधर उधर देखकर मुनियों में श्रेष्ठ एक मुनिको देखतेभये १२ जो कि घोरतपस्या कररहे आलंब, रोग और आहारसेहीन, आत्मा और क्रोध को जीते, सनातन १३ लोमशनामी, धर्म्मतत्त्वके जाननेवाले, सब शास्त्रमें निपुण, बड़ी उमरवाले, महात्मा, बालोंसेयुक्त, ब्रह्मके संमित १४ और कल्प कल्पमें एक लोम गिरनेसे लोमश नाम होनेवाले, भूत, भविष्य और वर्तमान के जाननेवाले महामुनि थे १५ उनके देखनेही से सबलोग प्रसन्नहोकर उनके समीप आगये और न्यायसमेत यथायोग्य जिसप्रकार कहाहुआहै उसीप्रकार नमस्कारकिया १६ और नम्रतासे युक्तहोकर सबलोग परस्परबोले कि हमींलोगों की भाग्यवश से ये मुनिश्रेष्ठ प्राप्त हुएहैं तिन सबको इसप्रकार के नम्र देखकर ऋषिश्रेष्ठ लोमश जी बोले १७ कि आप लोग किस लिये यहां आये हैं कारणसमेत कहिये और हमारे दर्शनसे प्रसन्नमनहोकर क्यों स्तुति कररहेहो १८ आपका जो हितहै उसको हम निस्संदेह करदेवेंगे क्योंकि निस्संदेहही हमलोगों का जन्म पराये उपकारके लिये है १६ तब तो सम्पूर्ण मनुष्य बोले कि हमलोग अपने आनेका कारण कहते हैं सुनिये एक सन्देह निवृत्त करनेके लिये आपके पास प्राप्तहुएहैं २० क्योंकि आपसे श्रेष्ठ कोई नहीं है इससे कार्यके वशसे आपके समीप हमलोग प्राप्त हुएहैं २१ महीजित्नाम राजा इस समयमें पुत्रहीन है हे ब्रह्मन् हमलोग तिसकी प्रजाहैं उसने हमको पुत्रकीतरह पालाहै २२ तिसको पुत्ररहित देखकर तिसी के दुःखसे दुःखित हमलोग नैष्ठिकी मति कर तपस्या

करनेकेलिये यहां आये हैं २३ हे द्विजोत्तम तिसी की भाग्यसे हम लोगोंको आपके दर्शनहुएहैं क्योंकि महात्माओंके दर्शनसे मनुष्यों के कार्य्यकी सिद्धि होती है २४ हे मुनि उपदेश कहिये जिसप्रकार राजाके पुत्रहोवे इसप्रकार तिनके वचन सुन मुनि मुहूर्तमात्र ध्यान में स्थितहोगये और राजाके पुराने जन्मको जानकर बोले २५ कि पूर्वजन्ममें यह क्रूर,धनहीन बनियांथा वाणिज्यकर्ममें युक्त इसगांव से उस गांवको जाया करताथा २६ कि ज्येष्ठके महीनाकी शुक्लपक्ष की दशमीको दोपहरमें प्यासमे व्याकुल २७सुंदर तालाब देखकर जलपीने में मन करताभया कि उसी समयमें बछवासमेत एक गऊ भी प्राप्तहोगई २८ जोकि प्यास और घामसे व्याकुलथी वहभी उस तालाब में जल पीने लगी तब तो बनियां जलपीतीहुई को खेदकर आप जल पीनेलगा २९ तिसी कर्मसे यहपुत्रहीन राजाहुआहै किसी जन्मकी पुण्यसे अकंटक राज्य तो मिली है ३० तब तो सब मनुष्य फिर बोले कि हे मुने पुण्यसे पाप नाश होजाते हैं यह पुराणमें सुना है इससे पुण्य का उपदेश कहिये जिससे पाप नाश होजावे और आपके प्रसाद से जिसप्रकार राजा के पुत्र हो ३१ तब लोमशजी बोले कि भो मनुष्यो श्रावण के शुक्लपक्ष में पुत्रदा नाम एकादशी वांछितकी देनेवाली सुनी जाती है उसका व्रत सबलोग कीजिये ३२ इसप्रकार के वचन सुन मुनिजी के नमस्कारकर सब मनुष्य पुरमें आये और विधिपूर्वक न्यायसंयुक्त जागरणयुक्त सब लोगों ने व्रत किया ३३ और व्रतकी निर्मल पुण्य सब मनुष्यों ने राजाको देदी तब तो पुण्यके देतेही रानी ने सुंदर गर्भको धारणकिया ३४ और पुत्र उत्पन्न होने के समयमें तेजस्वी पुत्रको उत्पन्नकिया अब श्रावणके शुक्लपक्षमें कर्कके सूर्यों में ३५ द्वादशी में भगवान्का पवित्रारोपण होताहै सोना, चांदी, तांबा, रेशमी सूत, कौशेयपद्मसे उत्पन्न ३६ कुश, काश, ब्राह्मणी के कातेहुए सुन्दर कपासों से पहले स्नानकर तिगुना सूत्रकरके शुद्धकरै ३७ और गऊके दोहनेके समयमें पहले दिन ब्राह्मणों और गुरुजी के चरणोंको प्रणामकर अधिवासन करै ३८ गीत और मंगलके शब्दोंसे तदनन्तर जागरणकरै और ब्रा-

ह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और भक्त शूद्र ३९ ये सब अपने अपने धर्म में स्थित भक्तिसे पवित्रककरैं तिसपीछे पवित्रको विधिपूर्व्वक गुरुजी कोदेवे ४० और ब्राह्मणों और वैष्णवोंको चन्दन और फूल आदि से पूजनकरै अतोदेवा इसमन्त्र से ब्राह्मण विष्णुजी में निवेदन करै ४१ और शूद्र मूलमन्त्रसे जैसे विष्णु तैसेही शिवजी में निवेदन करै इसप्रकार वर्षवर्षमें मनुष्योंको पवित्रारोपण करनाचाहिये ४२ जो कि शोकरूपी समुद्र संसारमें भुक्ति मुक्तिकी इच्छा मनुष्य करते हैं और जो मनुष्य विधिसे पवित्रारोपण नहीं करता ४३ तिस वैष्णव की वर्षकी पूजा निष्फल होती है और जो मनुष्य इसका माहात्म्य सुनता है वह पापों से छूटजाता इसलोकमें पुत्रका सुखपाकर परलोकमें स्वर्ग होताहै ४४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेश्रावणशुक्लापवित्रारोपणीपुत्रदैकादशीनामपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

छप्पनवां अध्याय॥

भाद्रपदके कृष्णपक्षकी अजा एकादशी का माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे जनार्दनजी भादों के कृष्णपक्षकी एकादशीका क्यानामहै यह हम सुनने की इच्छा करतेहैं आप कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् एकमन होकर सुनिये विस्तारसे मैं कहता हूं सब पापों की नाश करनेवाली अजा एकादशी इसका नाम है २ इसमें हृषीकेशजी की पूजनकर जो व्रत करता है व्रतको सुनताहै उनदोनों के पाप नाश होजाते हैं ३ हे राजन् दोनों लोकों के कल्याण के लिये इससे श्रेष्ठ कोईनहीं है यह हमने सत्यही कहा है हमारा कहना झूंठ नहीं है ४ पूर्वसमयमें सब पृथ्वीका राजा हरिश्चन्द्र हुआ जो कि चक्रवर्ती और सत्यप्रतिज्ञा करनेवाला था ५ किसी कर्म्मसे वह राज्यसे भ्रष्टहोगया तो उसने स्त्री पुत्र और अपनाको भी बेंचडाला ६ और वह पुण्यकारी राजा चाण्डालकादास होगया हे राजेन्द्र तबभी सत्यता नहींछोड़ी चांडालके यहां मुर्दोंके कपड़े लेलेताथा ७ इसप्रकार वह राजाओं में श्रेष्ठ राजा कर्मा भूं

नहीं बोला और यह काम करतेहुए उसको बहुत वर्ष बीतगये ८ तब तो चिन्तामें युक्तहोकर अत्यन्तदुःखित हुआ और कहनेलगा कि क्याकरूं कहांजाऊं किस प्रकार मेरी निष्कृति हो ९ इसप्रकार चिंताकरते दुःखरूपी समुद्रमें डूबेहुए राजाको आतुर जानकर कोई मुनि प्राप्तहुए १० क्योंकि ब्रह्माने ब्राह्मणों को पराये उपकारही के लिये बनायाहै तब तो राजाने ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मुनिजी को देखकर नमस्कार किया ११ और हाथ जोड़कर गौतमजी के आगे खड़ा होगया और अपनी आत्माका दुःखसंयुक्त हाल कहा १२ तब तो राजाके वचन सुन विस्मययुक्त गौतममुनि राजाको इसव्रतका उपदेश देतेभये १३ कि हे राजन् भादोंके कृष्णपक्षमें अत्यंत कल्याण देनेवाली अधिक पुण्य देनेहारी अजा नाम एकादशी प्राप्त होगी १४ हे राजन् इसका व्रतकरो तो तुम्हारे पापों का अन्त होजावेगा तुम्हारी भाग्यके वशसे सातवें दिन प्राप्तहोगी १५ उसका व्रतकर रात्रि में जागरणकरो इसप्रकार व्रत करनेसे तुम्हारा पाप निश्चय नाश होजावेगा १६ हे राजाओं में उत्तम तुम्हारी पुण्यके प्रभावसे मैं प्राप्त हुआहूं ऐसा कहकर मुनिजी अन्तर्द्धान होगये १७ और राजाने मुनिकेवचन सुनकर उत्तम व्रतकिया व्रतके करनेहीसे क्षणमात्रही में राजाके पापका अन्तहोगया १८ अब हे राजाओं में श्रेष्ठ इसव्रतका प्रभाव सुनो कि जो दुःख बहुत वर्षों में भोगने योग्यथा वह नाश होगया १९ इसव्रतके प्रभावही से राजाका दुःख नष्ट होगया और स्त्रीका संयोग हुआ और पुत्र भी जीगया २० तब तो आकाशमें नगारेबजे और फूलोंकी वर्षाहुई एकादशीही के प्रभाव से अकण्टक राज्य राजाने पाई २१ और पुर और परिच्छदसमेत हरिश्चन्द्रको स्वर्गभी मिला हे राजन् इसप्रकार का व्रत जे मनुष्य करते हैं २२ वे सब पापोंसे छूटकर स्वर्गको जातेहैं और पढ़ने सुनने से अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होताहै २३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेभाद्रपदकृष्णाजैकादशीनामषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

भाद्रपदके शुक्लपक्षकी पद्मा नाम एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे केशवजी भादों के शुक्लपक्षमें किसनामकी एकादशी होती है तिसका कौन देवता और क्या विधि है यह सब कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् आश्चर्य्य करनेवाली कथाको कहताहूं जिसको ब्रह्माने नारद महात्मासे कहाथा २ नारद जी बोले कि हे चारमुखयुक्त ब्रह्माजी प्रसन्न होकर कहिये आप को नमस्कार है भादोंके शुक्लपक्षमें किसनामकी एकादशी होती है यह विष्णुजी के आराधन के लिये हम निश्चय सुना चाहते हैं ३ तब ब्रह्माजी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ तुम वैष्णवहो इससे तुमने बहुत अच्छा प्रश्नकिया एकादशीसे पवित्र संसार में कोई नहीं है ४ भादों के शुक्लपक्षकी एकादशी का पद्मा नामहै इसमें हृषीकेशजी की पूजा और उत्तम व्रत करना चाहिये ५ अब तुम्हारे आगे पुराणकी सुंदर कथा को कहता हूं जिसके सुननेही से महापाप नाश होजाते हैं ६ सूर्यके वंशमें मांधाता नाम राजर्षि उत्पन्न हुआ यह चक्रवर्ती सत्य प्रतिज्ञावाला और प्रतापी हुआ ७ और प्रजाओंकी औरस पुत्रके समान धर्म्म से पालना करता भया उसकी राज्य में दुर्भिक्ष और आधि व्याधि न थीं ८ और उसके प्रजा आतंकरहित और धन धान्यसे वृद्धिको प्राप्तथे और उसके खज़ानेमें न्यायसे इकट्ठाकिया हुआ द्रव्यथा ९ सब वर्ण आश्रम अपने अपने धर्म्म में वर्तमान थे और उसकी राज्यमें पृथ्वी कामधेनुके समानथी १० तिसके इस प्रकार राज्य करते करते बहुत वर्ष बीतगये तदनन्तर एकसमय में कर्मका विपाक प्राप्तहुआ ११ कि तीन वर्षतक उसकी राज्यमें मेघ नहीं बरसा तिससे उसकी प्रजा भग्न और भूख से व्याकुल १२ और स्वाहा, स्वधा, वषट्कार और वेद के पढ़ने से वर्जित होगये और तिसकी अभाग्यसे दैवसे पीड़ित विषयहुआ तदनन्तर प्रजा मिलकर राजासे यह वचन बोले १३ कि हे राजाओं में श्रेष्ठ आप को प्रजाओं के वचन सुनने चाहिये पुराणोंमें बुद्धिमानोंने जलको

नारा कहाहै १४ और नारा भगवान्का अयन (स्थान) है तिसी से नारायण यह शब्द कहाता है और मेघरूप भगवान् विष्णु सब में प्राप्त स्थित हैं १५ वही बरसते हैं तो बरसनेही से अन्न होताहै और अन्नसे प्रजाओं को सुखहोताहै और जो मेघ नहीं बरसते हैं तो प्रजा नाशको प्राप्त होजाते हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ तैसा कीजिये जिसमें योग और कुशल होवे १६ तब राजा बोले कि आपलोगों ने सत्य कहा है कुछ झूठ नहीं कहा जिससे कि अन्न ब्रह्म कहा है और अन्नहीमें सब स्थितहै १७ अन्नसे प्राणी होते हैं और अन्नही से संसार वर्तमान है यह संसार और बहुत विस्तारयुक्त पुराण में सुनाहै १८ राजाओंके अपचारसे प्रजाओंको पीड़ा होती है परंतु मैं बुद्धि से विचारता हूं कि मैंने कुछ अपचार नहीं किया १९ तिस पर भी प्रजाओं के कल्याण की कामना से यत्न करूंगा ऐसा बुद्धि कर राजा थोड़ीसेनाले २० ब्रह्माके नमस्कारकर गहन वनको गया और वहां तापसों से सेवित मुनिश्रेष्ठों के आश्रमों में घूमता भया २१ तब तो उसने ब्रह्माकेपुत्र अंगिराऋषिको देखा जो कि तेजसे दूसरे ब्रह्मा की नाईं दिशाओं को प्रकाशित कर रहे हैं २२ तिनको देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और अपनी सवारी से उतर कर हाथ जोड़कर उनके चरणोंको नमस्कार किया २३ मुनिने राजाकी प्रशंसा कर स्वस्तिवाचनपूर्व्वक उसके सातों अंगों में कुशल पूंछी २४ तब राजा ने कुशल निवेदनकर मुनिकी आरोग्यता पूंछी मुनि ने राजा को आसन अर्घ्य दिया तब तो राजा मुनिके पास बैठकर २५ उनसे आगमनका कारण कहनेलगा २६ कि हे भगवन् धर्म की विधिसे पृथ्वी की पालना करतेहुए मेरे राज्य में मेघ क्यों नहीं बरसे इसमें कारण मैं नहीं जानता २७ आपके पास सन्देह निवृत्त करनेके लिये प्राप्तहुआहूं योगक्षेमके विधानसे प्रजाओंको निवृत्ति करो २८ तब ऋषि बोले कि हे राजन् यह युगों में उत्तम सतयुग है इसमें मनुष्य ब्रह्ममें परायण और धर्म चार पांवोंकाहै २९ इसमें ब्राह्मणही तपस्यासे युक्त होने चाहिये और मनुष्य नहीं हे राजेन्द्र तुम्हारी राज्यमें यह शूद्र तपस्या कर रहाहै ३० इसी कारणसे मेघ

नहीं वरसे इसके मारनेमें यत्नकीजिये तो दोष निवृत्तहोवे ३१ तब राजा बोले कि इस निरपराधी तपस्या करतेहुएको मैं नहीं मारूंगा आप धर्म्म का उपदेश कहिये जिससे दोष नाशहोवे ३२ फिर तो ऋषि बोले कि हे राजन् जो ऐसाही है तो भादोंके शुक्लपक्षकी पद्मा एकादशीका व्रत कीजिये ३३ तिसके व्रतके प्रभावसे निश्चय अच्छी वर्षाहोगी क्योंकि यह सब सिद्धियोंकी देनेवाली और सब उपद्रव नाशने हारी है ३४ हे राजन् परिच्छद और प्रजाओं समेत इसका व्रतकीजिये इसप्रकारके ऋषिके वचनसुन राजा अपने घर मेंआये ३५ और चारोंवर्ण और सब प्रजाओं समेत भादोंके शुक्लपक्षकी पद्मा एकादशीका व्रतकिया ३६ इसप्रकार व्रत करनेसे मेघ वरसे जलसे पृथ्वी भरगई और अन्न भी अच्छा उत्पन्न हुआ ३७ ऋषीश्वरके प्रभावसे मनुष्य सुखको प्राप्तहोगये इसीकारण से यह उत्तम व्रत इसीप्रकार करना चाहिये ३८ तिसमें दही भात से युक्त जलसेपूर्ण कलश कपड़ेसे लपेटकर छतुरी और जूतोंसमेत ब्राह्मण को देनाचाहिये ३९ हे बुध श्रवणसंज्ञक हेगोविन्द आपके नमस्कारहैं पापोंके समूहों को नाशकर सब सुखदीजिये ४० क्योंकि आप भुक्ति मुक्ति और मनुष्यों को सुखके देने वाले हैं और हेराजन् इस एकादशीके पढ़ने सुनने से मनुष्य सब पापों से छूटजाताहै ४१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेभाद्रपदशुक्लापद्मैकादशीनामसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

कुंवारके कृष्णपक्षकी इन्दिरा एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे मधुसूदनजी कुंवारके कृष्णपक्षमें किसनाम की एकादशी होती है यह आप प्रसन्नहोकर हमारे आगे कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि कुंवार के कृष्णपक्षमें इन्दिरा नाम एकादशी होती है तिसके व्रतके प्रभावसे भारी पाप नाश होजाता है २ और जो पितृ नरकमें हैं उनको गतिकी देनेवाली है हे राजन् अब एकमन होकर पाप नाशनेहारी श्रेष्ठ कथा सुनो ३ जिसके सुननेही

से वाजपेय यज्ञकाफल प्राप्तहोताहै पूर्वसमयमें सतयुगमें राजाओं को आनन्द देनेवाला ४ माहिष्मतीपुरी में इन्द्रसेन राजाहुआ था यह राजा धर्म और यशसेयुक्त प्रजाओंकी पालना करताथा ५ पुत्र, पौत्र, धन धान्यसेयुक्त विष्णुभक्तिमें परायण माहिष्मतीका राजाथा ६ यह मुक्तिके देनेवाले गोविन्दके नाम जपकर काल बिताता और विधिपूर्वक अध्यात्म ध्यानकी चिन्तना करताथा ७ एकदिन राजा सुखपूर्वक सभामें बैठेथे कि आकाशसे उतरकर नारदमुनि प्राप्तहोगये ८ तिनको आते देखकर राजा उठा और हाथ जोड़कर विधि से पूजनकर आसनमें बैठालताभया ९ और सुखसे बैठेहुए मुनिसे राजाबोला कि हे मुनियों में श्रेष्ठ आपके प्रसादसे हमारे सब कुशल हैं १० आपके दर्शन से यज्ञकी क्रिया इस समयमें सब सफलहोगईं अब हे नारदजी प्रसन्न होकर आनेका कारण कहिये ११ तब नारदमुनि बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ आश्चर्यदायक हमारे वचन सुनिये मैं ब्रह्माके लोकसे यमलोकमें प्राप्तहुआ १२ तो यमराज ने भक्तिसे पूजन किया और श्रेष्ठ आसन बैठने को दिया तब तो मैंने वहां यह देखा कि धर्मशील और सत्यवान् मनुष्य यमराजकी उपासना कर रहेहैं १३ और उन्हींकी सभामें व्रतके वैकल्यके दोषसे बहुत पुण्य के करनेवाले तुम्हारे पिताभी मैंने देखे १४ तो उन्होंने हमसे सन्देश कहा है तिसको हे राजन् सुनो कि माहिष्मती का स्वामी इन्द्रसेन राजाहै १५ तिसके आगे हे ब्रह्मन् किसी पूर्वजन्म के उत्पन्न विघ्नसे हमको यमराजकेपास स्थितकहो १६ कि हे पुत्र इन्दिरा एकादशी के पुण्यदान से हमको स्वर्ग भेजिये ऐसा हमसे आपके पिताने कहा है तब हे राजन् मैं आपके समीप प्राप्त हुआ हूं १७ पिताके स्वर्ग जानेकेलिये इंदिरा एकादशीका व्रतकरो तिसी व्रतके प्रभावसे तुम्हारे पिता स्वर्गको प्राप्तहोंगे १८ तब राजाबोले कि हे भगवन् प्रसन्नहोकर इन्दिराका व्रतकहिये किसपक्ष और तिथिमें किस विधिसे करनाचाहिये १९ तब नारदजी बोले कि हे राजेन्द्र इसव्रतकी सुन्दर विधि कहताहूं सुनिये कुंवारके कृष्णपक्षकी दशमीतिथिमें २० श्रद्धायुक्त चित्तसे सवेरे स्नानकरै तदनन्तर दो

पहरमें स्नानकरै २१ और श्रद्धायुक्त पितरों की प्रीतिकेलिये श्राद्ध करै और तिस पीछे एकबार भोजनकर भूमिमें रात्रिको सोवे और सवेरा होनेपर एकादशी के दिनमें २२ मुंह और दांतोंको धोवे परन्तु काठकी दतून नहीं करै और भक्तिभावसे व्रतके नियम ग्रहण करै २३ कि हे अच्युत हे पुण्डरीकाक्ष आज मैं निराहार सब भोगों से हीनहूं कल्हसवेरे भोजन करूंगा आप मुझको शरणमें लीजिये २४ इसप्रकार के नियमकर दोपहर के समय में शालग्रामकी मूर्त्ति के आगे यथाविधि स्नान करै २५ और हृषीकेशजी को धूप और चन्दन आदिकों से पूजनकर भगवान् के समीप रात्रि में जागरण करै २६ तिसपीछे द्वादशी के दिन सवेरे भक्तिसे भगवान्‌को पूजन कर विधिपूर्व्वक श्राद्धकरै २७ श्रद्धायुक्त पितरों की प्रीति के लिये गेहूं, यव, चावल, तिल, उर्द और चनेके आटेसे श्राद्ध पवित्र होती है फिर ब्राह्मणोंको भोजन कराकर दक्षिणादेवे २८। २९ तिसपीछे व्रत करने वाला मनुष्य वन्धु, नाती और पुत्रादिकों समेत आप भोजन करै हे राजन् इसविधिसे अच्छीप्रकार व्रतकीजिये ३० तो तुम्हारे पितर विष्णुलोकको चलेजावेंगे ऐसा राजासे कहकर मुनि तो अन्तर्द्धान होगये ३१ तब स्त्रियों और पुत्र और नौकरों समेत राजाने विधिपूर्व्वक उत्तम व्रतकिया ३२ व्रत करनेहीपर हे युधिष्ठिर आकाशसे फूलोंकी वर्षा हुई और राजाके पिता गरुड़पर चढ़कर भगवान् के स्थानको प्राप्तहुए ३३ और राजाओं में श्रेष्ठ इन्द्रसेन भी अकण्टक राज्यकर राज्यमें अपने पुत्रको स्थापितकर आपभी स्वर्गको चलागया ३४ यह इन्दिरा व्रतका माहात्म्य तुम्हारे आगे कहा हे राजन् इसके पढ़ने सुनने से मनुष्यों के सब पाप नाश होजातेहैं ३५ और इसलोकमें सब भोग भोगकर बहुतकाल विष्णुलोकमें बसताहै ३६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेआश्विनकृष्णेन्दिरैकादशीनामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

कुँवारके शुक्लपक्षकी पापांकुशा एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिरबोले कि हे मधुसूदनजी कुँवारके शुक्लपक्षमें किस नाम की एकादशी होती है यह प्रसन्नहोकर हमारे आगे कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजेन्द्र कुंवारके शुक्लपक्षमें जो एकादशीहोतीहै तिसका पाप नाशनेवाला माहात्म्य कहताहूं सुनिये २ इसका पापांकुशा नाम है यह सब पापोंके नाशनेवाली और श्रेष्ठ है इसमें मनुष्य पद्मनाभनाम हमको ३ सब अभीष्टके फलकी प्राप्तिके लिये पूजें जो कि मनुष्यों को स्वर्ग्ग और मोक्षके देनेवाले हैं और फिर बहुतकाल तीव्र तपस्या कर ४ जो फल मिलताहै वह भगवान् के नमस्कार करनेसे मिलताहै मोहयुक्त मनुष्य बहुत पापकरकेभी ५ सब पाप नाशनेवाले भगवान् को नमस्कार कर नरकको नहीं जाताहै पृथ्वीमें जितनेतीर्थ और पवित्र स्थानहैं ६ तिनसबको विष्णु जीके नामके अनुकीर्तनसे प्राप्तहोताहै देव शार्ङ्गधर विष्णु और जनार्दनकी जे शरण में प्राप्त हैं ७ तिनको यमलोककी यातना कभी नहीं होती मनुष्य प्रसंगसे एक एकादशी का व्रतकर घोर पापभी करने से यमराज की यातना को नहीं प्राप्त होता ८ जो मनुष्य वैष्णव होकर शिवकी निन्दा करताहै वह विष्णुलोक को नहीं जाता निश्चय नरकही को जाता है ९ और जो शिवजी का भक्त होकर विष्णुजीकी निन्दा करताहै वह जबतक चौदहों इन्द्र रहते हैं तब तक घोर रौरव नरक में पचता है १० जैसा कि पाप नाशनेवाला पद्मनाभजी का व्रतहै वैसा तीनोंलोकों में कोई पवित्र नहीं है ११ और तभीतक मनुष्यकी देहमें पाप रहते हैं जबतक वह पद्मनाभ जीके दिनको नहीं व्रत करताहै १२ अश्वमेध हजारयज्ञ और राजसूय सौ यज्ञ एकादशी के व्रतकी सोलहवीं कला को नहीं प्राप्त होते १३ एकादशी के व्रतके समान कोई व्रत संसारमें नहीं है बहानेसे भी जे मनुष्य इसको करते हैं वे यमराज के यहां नहीं जाते हैं १४ यह एकादशी स्वर्ग्ग, मोक्ष और शरीरके आरोग्य की देने

वाली है स्त्री, पुत्र, धन और मित्रके देनेहारीभी है १५ गंगा,गया, काशी, पुष्कर और कुरुक्षेत्र भी एकादशी के व्रतकी पुण्यको नहीं प्राप्त होते हैं १६ हे राजन् रात्रिमें जागरण कर एकादशी के दिन का व्रतकर मनुष्य विना परिश्रमही वैष्णवपद प्राप्त करता है १७ और दश माता,दश पिता और दश स्त्रीकी पीढ़ियोंको उद्धार करताहै १८ व्रत करनेवाले चार भुजाके सुन्दररूप धारणकर गरुड़ पर चढ़कर माला पहनकर पीताम्बर धारणकर भगवान्‌के मन्दिर को जाते हैं १९ बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्थामें भी एकादशी का व्रतकर मनुष्य दुर्गतिको नहीं प्राप्त होता २० कुंवारके शुक्लपक्ष में पापांकुशाका व्रतकर मनुष्य सब पापोंसे छूटकर भगवान् के लोकको प्राप्त होता है २१ सोना, तिल, पृथ्वी, गऊ, अन्न, जल, जूता, छतुरी और कपड़े आदिकों को देकर मनुष्य यमराज को नहीं देखताहै २२ जिसके पुण्यसे हीन दिन आते जाते हैं वह लोहारकी धौंकनीकी नाईं जीवतेहुए श्वासलेताहै २३ हे राजाओं में श्रेष्ठ दरिद्रभी यथाशक्ति स्नान दान आदिक क्रियाकरके दिनको अवन्ध्यकरै २४ होम, स्नान, जप, ध्यान और यज्ञादिक पुण्यकर्मों के कर्ता मनुष्य घोर यमराजकी यातनाको नहीं देखते हैं २५ और पुण्यके करनेवाले मनुष्य बड़ी उमरवाले, धनी, कुलीन और रोगसे हीन संसार में दिखलाई देते हैं २६ यहां बहुत कहनेसे क्या है अधर्म से वे दुर्गति को नहीं प्राप्त होते हैं और धर्मोंसे निस्सन्देह स्वर्गको जाते हैं २७ हे पाप रहित राजन् जो तुमने पापांकुशा का माहात्म्य पूंछा वह हमनेकहा अब और क्या सुननेकी इच्छाहै २८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्त्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेआश्विनशुक्लपापांकुशैकादशीमाहात्म्यंनामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

कार्तिकके कृष्णपक्षकी रमा एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दनजी कार्त्तिकके कृष्णपक्ष में किस नामकी एकादशी होतीहै यह हमारे स्नेहसे प्रसन्नहोकर कहिये १

तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ तुम्हारे आगे कहता हूं सुनिये कार्त्तिक के कृष्णपक्षमें रमानाम २ एकादशी महापापोंकी नाशनेवाली होगी हे राजन् इसके प्रसंगसे माहात्म्य तुमसे कहता हूं ३ पूर्व समय में मुचुकुन्दनाम प्रसिद्ध राजाहुये जिनकी इन्द्रसे बड़ीभारी मित्रताहुई ४ यमराज, वरुण, कुवेर और विभीषणसे भी जिसकी मित्रता होगई ५ यह राजा विष्णुजीका भक्त, सत्यप्रतिज्ञा वाला और श्रेष्ठहुआ और अकण्टक राज्य अच्छी प्रकारसे करता था उसके घर में नदियों में श्रेष्ठ चन्द्रभागानाम कन्या हुई उसको राजाने चन्द्रसेन के पुत्र शोभनको विवाहदिया ६।७ एकसमय में शोभन श्वशुरके घरमें आया तो उसदिन अच्छी पुण्यका देनेवाला एकादशी के व्रतका दिनथा ८ व्रतकादिन प्राप्तहोनेपर चन्द्रभागा चिन्तना करनेलगी कि हे देवेश क्याहोगा हमारा स्वामी तो बहुत दुर्बलहै ९ भूंखसहने के योग्य नहीं है और हमारे पिताकी घोरशा-सनहै जिसका नगारा दशमीके दिन बजजाताहै १० कि एकादशी के दिन कोई भोजन न करे नगारे का शब्द सुनकर शोभनने स्त्री से कहा ११ कि हे कान्ते हे श्रेष्ठ मुखवाली हमको क्या करना चाहिये तब चंद्रभागा बोली कि हे प्रभो हमारे पिताकेघरमें आज कोई नहीं भोजन करेगा १२ हाथी, घोड़े, हाथीके बच्चे और पशु ये भी तृण, अन्न और जलको एकादशीके दिनमें नहीं भोजन करने पाते १३ तो मनुष्य कहांसे पासक्तेहैं हे कान्त जो तुम भोजन करनाचाहो तो घरसे निकलजाओ १४ ऐसामनसे विचारकर पुष्ट मन करो तबतो शोभन बोले कि हे प्रिये यह सत्यवचन तूने कहा मैं भी व्रतकरूंगा १५ जो दैवकरेगा वही होगा इसप्रकार दृढ़ बुद्धि कर व्रतमें नियम करताभया १६ तो भूंखसे देह पीड़ितहोगई और वह अत्यन्त दुः-खित होगया इसप्रकार तिसके चिन्तना करतेही सूर्य्य तो अस्त होगये १७ और भगवान्की पूजामें रत, जागरणमें आसक्तचित्त-वाले, वैष्णव मनुष्योंको आनंद बढ़ानेवाली रात्रिप्राप्तहुई १८ और शोभन को अत्यन्त दुःखकी देनेहारी हुई सूर्य्य के उदयकी वेलामें शोभनकी मृत्युहोगई १९ तब तो राजाने राजाओं के योग्य काष्ठों

से जलवादिया परन्तु चन्द्रभागाने अपनी देहको पतिकेसाथ नहीं जलाया २० पतिकी षोड़शीसापिण्डी करके पिताके घर में स्थित रही और शोभन रमाएकादशीके व्रतके प्रभावसे २१ मंदराचलके कंगूड़ेपर सुन्दर देवपुरमें प्राप्तहुआ जोकि देवपुर अत्युत्तम, अनाधृष्य और अगणित गुणोंसे युक्तहै २२ और महलोंमें सोनेके खंभे लगेहुएहैं जो कि रत्न और वैडूर्य्य से शोभितहैं और अनेकप्रकारके विचित्र स्फाटिक मणियोंसे भी शोभितहैं २३ वहांपर शोभन सिंहासनपर बैठाथा और सुंदर सफ़ेद छत्र चामर, मुकुट और कुण्डल से युक्तथा हार और केयूरसे भूषित, गन्धर्वोंसे स्तुतिको प्राप्त और अप्सरागणों से सेवितथा २४ और दूसरे राजराजाकी तरह शोभितथा वहांपर मुचुकुन्दके पुरमें बसनेवाला सोमशर्मानामक ब्राह्मण तीर्थयात्रा के प्रसंगसे घूमता हुआ राजाके दामादको देखकर उनके पासगया २५।२६ और शोभनने सोमशर्माको आते जानकर शीघ्रही आसनसे उठकर उनको प्रणामकिया २७ और श्वशुर राजा, चन्द्रभागास्त्री और नगरकी कुशल प्रश्नपूंछा २८ तब सोमशर्मा बोला कि हेराजन् तुम्हारे श्वशुरके घरमें कुशलहै और पुरमें सबतरह से चन्द्रभागाभी कुशलयुक्तहै २९ अब हे राजन् अपना वृत्तांत कहिये क्योंकि हमको अद्भुत आश्चर्य समझपड़ताहै कि यह विचित्र सुंदरपुर कभी किसीने नहीं देखाथा ३० हे राजन् इसको तुमने कैसे पाया यहसब कहिये तब शोभनबोले कि कार्त्तिकके कृष्णपक्षमें जो रमाएकादशी होतीहै ३१ तिसका व्रतकर हे ब्राह्मण मैंने अनिश्चय पुरको प्राप्तकियाहै अब आप यह कीजिये कि जिससे यह निश्चय पुर होजावे ३२ तब ब्राह्मण बोले कि हे राजेन्द्र यह अनिश्चय निश्चय कैसे होगा यह आप कहिये तो मैं वही करूंगा और नहीं करूंगा ३३ तब शोभनबोले कि हेब्राह्मण मैंने यहउत्तम व्रत श्रद्धाहीन कियाथा तिसीसे इसको मैं अनिश्चय मानताहूं अब जिसप्रकार निश्चय होगा उसको सुनो ३४ मुचुकुंदकी कन्या चन्द्रभागासे यह वृत्तांत कहना तो यह निश्चय होजावेगा ३५ कृष्णजी बोले कि ब्राह्मणइसप्रकार शोभनके वचन सुनकर मुचुकुन्दके पुरमेंगया और

सब वृत्तांत चंद्रभागाके आगे कहा ३६ कि हे शुभे तुम्हारे पतिको मैंने प्रत्यक्ष देखाहै और इन्द्रके सदृश अनाधृष्य तिसके पुरको भी देखाहै उन्हों ने कहा है कि यह पुर हमको अनिश्चय प्राप्तहुआ है अब जिसप्रकार निश्चय होवे वह करो ३७ तब चन्द्रभागा बोली कि हे ब्राह्मण पतिके दर्शन की लालसा करनेवाली मुझको वहां लेचलो अपने व्रतके पुण्यसे पुरको निश्चय करदूंगी ३८ हे ब्राह्मण मेरा पतिके साथ संयोग जिसप्रकार होवे वह कीजिये क्योंकि वियोगियोंका संयोग करानेसे बहुत पुण्य प्राप्त होती है ३९ ऐसा सुन कर उसके साथ सोमशर्मा मन्दराचलके समीप वामदेवजीके स्थान को गया ४० और वामदेव ने सब दोनों का वृत्तान्त सुना तब तो वामदेवजी ने उज्ज्वल चन्द्रभागाको वेदके मंत्रोंसे अभिषेक किया ४१ तो ऋषिके मंत्रके प्रभाव और एकादशीके सेवनसे वह सुंदर देहयुक्त होगई और सुन्दरगति को भी प्राप्तहुई ४२ और पतिके समीपगई तो मारे आनन्द के उत्फुल्लनेत्र होगई और शोभन भी प्राप्तहुई स्त्रीको देखकर बहुत प्रसन्नहुआ ४३ और बुलाकर अपने बाईं ओर बैठाला तब तो चन्द्रभागा प्रियसे प्यारे वचन बोली ४४ कि हे कान्त हितकारीवचन सुनिये पिताके स्थानमें आठवर्षसे जब अधिकहुई तबसे मैंने एकादशी का व्रत किया वह जो पुण्य मुझ में विद्यमान है क्योंकि मैंने विधिपूर्वक श्रद्धायुक्त चित्तसे व्रत कियाथा तिसी पुण्यके प्रभावसे पुर निश्चय होगा ४५। ४६ जो कि सबकामना और ऐश्वर्ययुक्त जबतक प्रलय नहो तबतक रहनेवालाहोगा इसप्रकार कहकर पतिके साथ रमण करनेलगी ४७ जो कि सुन्दर भोग, रूप और गहनोंसे भूषितथी और सुन्दर देहयुक्त शोभनभी उसके साथ रमतेभये ४८ रमाके व्रतके प्रभावसे मन्दराचलके कंगूड़ेपर चन्द्रभागा चिन्तामणि अथवा कामधेनुके समान शोभित हुई ४९ अब हे राजन् रमाएकादशी का माहात्म्य तुम्हारे आगे मैंने कहा और सब तुमने सुना ५० क्योंकि दोनों पक्षोंकी एकादशी के व्रत का माहात्म्य पाप नाशनेवाला है ५१ जैसे कृष्णपक्ष तैसे शुक्लपक्षकी एकादशी है इसमें भेद नहीं करावै मनुष्यों को सेवनक-

रनेसे यह मुक्ति और मुक्ति देती है ५२ जैसे सफेद और कालीगऊ के बराबरही दूध होता है तैसेही दोनोंपक्षों की एकादशी समानही फल को देती हैं ५३ और जो मनुष्य एकादशी व्रतोंका माहात्म्य सुनता है वह सब पापोंसे छूटकर विष्णुलोक में जाताहै ५४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेकार्त्तिककृष्णारमैकादशीनामषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

कार्त्तिकके शुक्लपक्षकी प्रबोधिनी एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे मान के देनेवाले कृष्णजी आपसे रमा एकादशी का माहात्म्य सुना अब कार्त्तिकके शुक्लपक्ष में जो होती है उसको कहिये १ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हेराजन् कार्त्तिकके शुक्लपक्षकी एकादशी को जैसे संसारके करनेवाले ब्रह्माने नारदसे कहा है तैसेही कहताहूं २ नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी प्रबोधिनी एकादशीका माहात्म्य विस्तारपूर्वक हमसे कहिये जिसमें धर्म्म कर्म्मके प्रवर्त्त करनेवाले भगवान् जागतेहैं ३ तब ब्रह्माजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ नारद जी पाप नाशनेवाला, पुण्य बढ़ानेहारा और अच्छी बुद्धिवाले पुरुषों को मुक्तिका देनेवाला प्रबोधिनीका माहात्म्य सुनिये ४ तभीतक तीर्थ, समुद्र, तालाब और भगीरथकी लाई हुई गंगाजी पृथ्वी में गर्जती हैं जबतक कार्त्तिकके शुक्लपक्षकी विष्णु की तिथि प्रबोधिनी एकादशी नहीं आती ५ । ६ अश्वमेध हजार यज्ञ और राजसूय सौ यज्ञका फल एक प्रबोधिनी एकादशीके व्रत करने से मनुष्यको मिलता है ७ हे पुत्र जो दुर्लभ और तीनोंलोक में नहीं मिलनेवाली और दिखाई देनेहारी वस्तु है उसको भी प्रबोधिनी देती है ८ ऐश्वर्य, सम्पदा, बुद्धि, राज्य, सुख, सम्पदा ये सब भक्तिसे व्रत करनेवाले मनुष्योंको हरिबोधिनी देतीहै ९ मेरु और मन्दराचल के बराबर जो पाप कहे हुए हैं उनको भी पाप नाशनेवाली यह एकादशी एकहीव्रतसे जला देतीहै १० पहले के हजार जन्मों में जो पाप इकट्ठा किया हो उनकोभी इनका रात्रिका जाग-

रण रुईकी राशिकी नाईं जलादेता है ११ हे मुनिश्रेष्ठ जो मनुष्य स्वभावही से विधिपूर्वक प्रबोधिनी में व्रत करताहै वह यथोक्तफल को प्राप्त होताहै १२ और जो मनुष्य यथोक्त सुकृतको विधिपूर्वक करताहै वह थोड़ाभी फल मेरुपर्व्वतके बराबर होजाता है १३ हे नारद जो विधिहीन मेरुपर्वतके समानभी सुकृत करताहै वह धर्म के थोड़े फलको प्राप्त होता है १४ जे मनकी वृत्ति से ध्याते और बोधिनी एकादशीका व्रत करते हैं उनके पितर प्रसन्नहोकर विष्णु-लोकमें बसते हैं १५ और मनुष्य ब्रह्महत्या आदिक घोर पापकर भी नरक के दुःखों से छूटकर विष्णुके श्रेष्ठ पदको प्राप्तहोताहै १६ विष्णु का जागरण कर मनुष्य पापरहित होजाताहै और जो फल अश्वमेध आदिक यज्ञोंसे भी नहींमिलता १७ वह इसके जागरण में सुखसे प्राप्तहोताहै सब तीर्थोंमें स्नानकर सोना और पृथ्वी देने से जो फल मिलता है १८ वह भगवान् को जागरण करने से मि-लताहै वही सुकृती और कुल उसी ने पवित्र किया है १९ जिसने हे मुनिश्रेष्ठ कार्तिक में प्रबोधिनी का व्रत कियाहै जैसे मनुष्यों की मृत्यु निश्चयहै तैसेही धन और देहभी है २० ऐसा जानकर एका-दशीका व्रत करनेयोग्यहै जितने तीनोंलोक में तीर्थ हैं २१ वे सब उसके घरमें समझो जो कि अच्छेप्रकार से प्रबोधिनी को करताहै जिसने यह व्रतकिया उसके बहुत पुण्यों से क्याहै २२ कार्तिक में हरिबोधिनी पुत्र और पौत्रोंको देनेवाली है वही ज्ञानी, योगी, तप-स्वी और जितेन्द्रियहै २३ और भोग और मोक्षभी उसी के हैं जो हरिबोधिनी का व्रतकरताहै यह विष्णुके बहुत प्यारी है और धर्म-सारको सहायता देती है २४ जो मनुष्य भक्तिसे प्रबोधिनी का व्रत करताहै वह मुक्तिको प्राप्त होताहै गर्भ में फिर नहीं आता २५ हे नारद सब धर्म्मों को छोड़कर इसको करो कर्म्म, मन और वाणीसे जो इकठ्ठा किये पापहैं २६ उनको प्रबोधिनी का जागरण करने से भगवान् नाश करदेते हैं स्नान, दान, जप, पूजा को भगवान् का उद्देशकर २७ जो मनुष्य प्रबोधिनी में करताहै वह अक्षय होताहै और जे मनुष्य भक्तिसे माधव देवको पूजते हैं २८ और व्रत भी

करतेहैं वे सैकड़ोंजन्मों के पापोंसे छूटजातेहैं हे पुत्र नारद यह महा- व्रत बड़े पापोंका नाशनेवाला है २९ विष्णुकी प्रबोधिनी एकादशी को विधिपूर्व्वक जो व्रतकरता और इसीव्रतसे भगवान् को प्रसन्न करता ३० वह सब दिशाओं को प्रकाशित करताहुआ भगवान् के स्थानको जाताहै इससे कान्ति और धनकी इच्छा करनेवाले मनु ष्यों करके यह यत्न से करने योग्य है ३१ बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्थामें सौजन्मपर्यंत जो कुछ थोड़े या बहुत पाप किये हों ३२ उनको इससें पूजेहुए भगवान् नाश करदेते हैं क्योंकि यह एकादशी धनधान्य देनेवाली,पुण्य करनेहारी, श्रेष्ठ और सब पापों को नाशनेवाली है ३३ इसका भक्तिसे व्रत करने से कुछ दुर्लभनहीं है चन्द्रमा और सूर्यके ग्रहणमें जो फल कहाहै ३४ उसका हजार गुणा प्रबोधिनी के जागरणमें कहाहै स्नान, दान, जप, होम, पढ़ना और भगवान् का पूजन ये सब प्रबोधिनी में करने से करोड़ गुणा फल देते हैं और जन्मपर्य्यन्त जो मनुष्य ने पुण्य इकट्ठा की हो ३५। ३६ परन्तु कार्तिकमें व्रत न कियाहो तो सब वह पुण्य वृथा होजाती है और जो मनुष्य विष्णुके नियमों को न कर कार्तिक को विताता है ३७ वह जन्मपर्यन्त की इकट्ठा की हुई पुण्य के फलको नहीं प्राप्त होता है तिससे हे नारदजी सबयत्न से सबकामना और फलके देनेवाले देवदेव भगवान्को सेवनकरे और जो भगवान् में तत्पर मनुष्य कार्तिक में पराये अन्नको छोड़ देताहै ३८। ३९ तो अन्न छोड़नेसे चान्द्रायण व्रतके फलको प्राप्तहोताहै और जो नित्य शास्त्र के विनोदसे कार्तिक को विताताहै ४० वह सब पापोंको न- लाकर दशहज़ार यज्ञोंके फलको प्राप्तहोता है यज्ञ,दान और जपा- दिकोंसे वैसा भगवान् नहीं प्रसन्नहोते जैसा कि कार्तिकमें शास्त्रकी कथाओं के कहने से होते हैं जे कल्याणयुक्त मनुष्य विष्णुकी कथा का आधा श्लोक या चौथाई श्लोक कार्तिक में कहते या सुनते हैं उनको सौगऊ देनेका फल मिलता है इससे सब धर्मोंको छोड़कर कार्तिक में भगवान् के आगे ४१। ४२। ४३ शास्त्रको कहे या सुने जो मनुष्य कार्तिक में भगवान् की कथाको कल्याण की इच्छा या

लोभबुद्धिसे करताहै वह सौ पीढ़ियों को तार देता है और जो मनुष्य कार्तिकमें विशेष करके नियमसे भगवान्की कथाको सुनताहै वह हज़ार गऊ देनेके फल को प्राप्त होता है और जो प्रबोधिनी एकादशी में भगवान्की कथाको सुनता है ४४।४५।४६ उसको सातोंद्वीपयुक्त पृथ्वीके दान करनेका फल मिलता है और जे भगवान् की सुन्दर कथा को सुनकर अपनी शक्तिसे कथा बांचनेवाले को पूजते हैं उनको नाशरहित लोक मिलताहै और जो मनुष्य कार्तिक महीने को गीताशास्त्रके विनोदसे बिताता है ४७। ४८ उस का फिर आना मैंने नहीं देखा अर्थात् मोक्षही होजाता है और हे मुनिजी जो पुण्यात्मा मनुष्य गीत, नाच, बाजा और भगवान् की कथाको करता है वह तीनोंलोकके ऊपर स्थित होताहै बहुत पुष्प और फल, कपूर, अगुरु, केसरि ४९।५० इनसे कार्तिककी प्रबोधिनी एकादशी में भगवान्की पूजा करनी चाहिये जिससे कि अगणित पुण्य फल और अनेकप्रकारकी द्रव्यों से प्रबोधिनीमें जागरणकरनेसे प्राप्तहोती है और शङ्खमें जललेकर भगवान्को अर्घ देवे तो ५१।५२ सब तीर्थोंमें सब दानोंके करनेसे जो फल मिलता है तिसका करोड़गुणा प्रबोधिनी एकादशीको अर्घ देनेसे मिलताहै ५३ तिसपीछे हे नारदजी भोजन, कपड़ा इत्यादिक और दक्षिणाओंसे भगवान्की प्रसन्नता के लिये गुरुजी की पूजा करै ५४ जो मनुष्य भागवत पुराणको सुनता या पढ़ताहै उसको एक एक अक्षरमें कपिलाके दानका फल मिलता है ५५ और जो कार्तिक में अपनी शक्तिसे भगवान्का व्रत जैसा कहाहै उसके अनुसार करता है उसकी मुक्ति अचल होजाती है ५६ केतकीके एकपत्रसे जो भगवान्को पूजताहै उसकेऊपर भगवान् हज़ार वर्षतक प्रसन्न रहते हैं ५७ और अगस्तिके फूलोंसे जो भगवान्को पूजताहै तो उसके दर्शन से नरक की अग्नि नाश होजाती है ५८ कार्तिक में मुनिके फूलोंसे पूजन कियेगये पुरुषोत्तम विष्णुजी मनोवांछित कामनाको देते हैं जैसे कि चन्द्रमा और सूर्य्यके ग्रहणमें देते हैं ५९ इससे सब फूलोंको छोड़कर मुनिके फूलोंसे कार्तिकमें जो भक्तिसे भगवान्को

पूजताहै वह अश्वमेधके फलको प्राप्तहोताहै ६० और जो तुलसी-
दल और फूल कार्तिकमें भगवान् के चढ़ाता है उसने दशहजार
जन्मके सब पाप नाशकरदिये ६१ देखने, छूने अथवा ध्यानकरने,
नाम कहने, स्तुतिकरने, लगाने, सींचने और नित्यही शुभकारिणी
तुलसीका पूजन करनेसे ६२ इसप्रकार जे तुलसीकी नवप्रकारकी
भक्तिको दिन दिनमें करते हैं वे करोड़हजारयुग सुकृतको विस्तार
करते हैं ६३ और जितनी डालों और छोटीडालों बीज फूलदलों
पुरुषोंकी लगाईहुई तुलसी पृथ्वीमें बढ़ती है ६४ तो लगानेवालेके
वंशमें जे उत्पन्नहुए, होनेवाले और जो होगये हैं वे सब भगवान्के
घरमें कल्पपर्यन्त हजारवर्ष वासकरते हैं ६५ हे नारदमुनि जो फल
सबफूल और सबपत्रों में है वह कार्तिकमें एक तुलसीदलसे है ६६
प्राप्तहुए कार्तिकको देखकर नियमसे जनार्दन महाविष्णुजी कोमल
तुलसीदलों से पूजने चाहिये ६७ सैकड़ों यज्ञोंसे देवताओं को पू-
जन करने और अनेक प्रकारके दान देनेसे जो पुण्य होता है वह
कार्तिकमें तुलसीदलों से भगवान् को पूजन करनेसे होताहै ६८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारद-
संवादेकार्तिकशुक्लैकादशीमाहात्म्यंनामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

बासठवां अध्याय॥

मलमास के कृष्णपक्षकी कमलानाम एकादशी का माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन् व्रतों में उत्तम व्रत भगवान् के
सुनना चाहताहूं जो कि व्रत करनेवालों के सब पापनाशे और फल
को देवे १ और हे जनार्दन जी मलमास की कथा को भी कहिये
क्या विधि और फल है और कौन देवता उसमें पूजा जाता है २
और हे प्रभु जनार्दन जी मलमास प्राप्त होने में व्रत कहिये किस
दान का क्या पुण्य है और मनुष्योंको क्या करना योग्यहै ३ कैसे
स्नान चाहिये क्या जप करना योग्य है पूजाकी विधि कैसे है और
मलमास महीने में क्या उत्तम अन्न भोजन करने योग्य है ४ तब
श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजेन्द्र आपके स्नेहके कारण से मलमास

महीने के पाप नाशनेवाले माहात्म्यको कहताहूं ५ मलमास महीने के प्राप्त होनेमें जो एकादशी होती है वह तिथियोंमें उत्तम कमला नाम कहलाती है ६ तिस व्रतके प्रभावसे लक्ष्मी के सम्मुख मनुष्य होजाताहै व्रत करनेवाला ब्राह्म मुहूर्त्तमें उठकर भगवान्‌को स्मरण कर विधिपूर्व्वक स्नानकर नियम करावे घरमें एक गुणा जप और नदी में दुगुना ७। ८ गोशालामें हज़ार गुणा अग्निके स्थानमें सौ गुणा महादेवजी के क्षेत्रों, तीर्थों और देवताओं के समीपमें ६ लाख गुणा तुलसीजी और विष्णुजी के समीपमें अनन्तगुणा जप होता है अवन्ती में कोई ब्राह्मणों में श्रेष्ठ शिवशर्मा नाम ब्राह्मण हुए १० उनके पचासपुत्र हुए तिनमें छोटा दोषयुक्त हुआ तब तो पिता और स्वजन बान्धवों ने उसको छोड़दिया ११ क्योंकि वह बड़ा कुकर्मी था इसी से उसको सबों ने छोड़ा था तब तो वह दूर एक वनमें पहुँचा और दैवयोगसे एक समयमें वह प्रयागमें पहुँचा १२ वहांपर भूंखसे पीड़ित, दीनवदनने त्रिवेणीजी में स्नानकिया और अत्यन्त भूंखसे व्याकुल होकर मुनियों के स्थान ढूंढ़ता हुआ १३ हरि मित्र मुनिके उत्तम स्थानको देखता भया वहांपर मलमास महीने में कमला एकादशीकी कथा जो कि पापोंके नाशनेवाली है उसको बहुत से मनुष्य सुनरहे थे तब तो इसने भी श्रद्धा से ब्राह्मणों के मुख से वह कमलाकी कथा सुनी १४। १५ क्योंकि यह एकादशी अत्यन्त पुण्यकारिणी, भुक्ति और मुक्तिकी देनेवाली है इसको जयशर्मा ने विधिपूर्व्वक सुनकर १६ पुण्यकारिणी, भुक्ति मुक्तिकी देनेवाली का उन लोगों के साथ शून्य स्थानमें व्रत भी किया १७ तो कमला के प्रभावसे आधीरातमें लक्ष्मीजी प्राप्तहुई और बोलीं कि भो विप्र मैं वरदूंगी १८ तब तो जयशर्मा बोले कि हे रंभोरु आप कौन और किसकी स्त्री हैं और कैसे हमारे ऊपर प्रसन्नहुई हैं इन्द्रकी इन्द्राणी वा महादेवजीकी पार्वती १६ गंधर्वी वा किन्नरी वा चन्द्रमा या सूर्य कीस्त्री हैं हे श्रेष्ठ मुखवाली मैंने आपके सदृश किसीको नहीं देखा वा सुना २० तब तो लक्ष्मीजी बोलीं कि मैं वैकुण्ठ से आई हूं मुझको कमला एकादशीके प्रभावसे भगवान्‌ने भेजाहै इससमयमें व-

हुत प्रसन्नहूं २१ मलमास महीनेके कृष्णपक्षकी एकादशी का व्रत तुमने प्रयागमें मुनियों के समीप किया है २२ इस व्रतके प्रभावसे निस्सन्देह तुम्हारे वशमें प्राप्तहुई हूं हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तुम्हारे वंश में जो मनुष्य होंगे २३ वे हमारे प्रभावसे लक्ष्मीको प्राप्तहोंगे यह हम तुमसे सत्य कहती हैं तब ब्राह्मण बोला कि हे लक्ष्मीजी जो आप प्रसन्न हैं तो व्रतको विस्तार से कहिये २४ जिस कथाओं में साधु और ब्राह्मण मनुष्य वर्त्तमानहों तब लक्ष्मीजी बोलीं कि सुननेवालों को परम सुनने योग्य पवित्रोंको उत्तम २५ दुःस्वप्न नाशनेवाले पुण्यकारी को यत्नसे सुनना योग्य है उत्तम मनुष्य श्रद्धासे युक्त श्लोक या आधेही श्लोकको २६ पढ़कर शीघ्रही भारी भारी करोड़ों पापों से छूट जाताहै यह महीनों में श्रेष्ठ महीना है जैसे पक्षियों में गरुड़ २७ नदियों में गङ्गाजी और तिथियों में एकादशी श्रेष्ठहै अब तक सबदेवता भारतमें जन्म लेनेकी इच्छाकरते हैं २८ और रोगरहित नारायणको पूजते हैं जे भक्तिसे सदा देव नाराय प्रभुजी को पूजते हैं २९ तिनकी ब्रह्मादिकदेवतासमूह सदैव पूज करते हैं जे नाममें परायण, भगवान् के कीर्त्तन में तत्पर ३० औ भगवान्की पूजामें परायणहैं ते कलियुगमें कृतार्थ हैं शुक्ल वा कृष्ण पक्षमें मिलकर दो एकादशी होती हैं ३१ गृहस्थों की पूर्वकी और यतियों की अन्तकी है पहले कुछ एकादशी फिर द्वादशी और कुछ रात्रिरहे त्रयोदशी होजावे तो त्रयोदशी के पारणमें सौयज्ञका पुण्य होताहै ३२ एकादशी में निराहार रहकर दूसरे दिन हे कमलनयन हे अच्युत मैं भोजन करूंगा हमको शरण लीजिये ३३ यह देवदेव चक्रधारी भगवान् का मन्त्र उच्चारणकर भक्तिभावसे प्रसन्नआत्मा होकर व्रत करे ३४ फिर व्रत करनेवाला पुरुष गीत, बाजा, नाच और पुराणके पाठ इत्यादिकों से देवजी के आगे जागरणकरे ३५ तदनन्तर द्वादशीके दिनमें सबेरे उठकर स्नानकर इन्द्रियों को अपने वशकर विष्णुजीको पूजकर ३६ एकादशी में भगवान्को पंचामृत से स्नानकरावे और द्वादशी में दूधसे स्नानकरावे तो भगवान के सायुज्यको मांगकरै ३७ और व्रतकरनेवाला यह कहै कि हे के

शवजी अज्ञानरूपी तिमिर से अन्ध मुझको प्रसन्न होकर सम्मुख होके ज्ञानरूपी दृष्टि दीजिये ३८ इसप्रकार देवों के स्वामी देवदेव गदा धारण करनेवाले भगवान् से कहकर भक्तिसे ब्राह्मणोंको भोजन करावे और उनको दक्षिणा देवे ३९ तिसपीछे भगवान् में परायण व्रत करनेवाला मनुष्य बन्धुओंसमेत पंचमहायज्ञों को कर आपभी भोजन करै ४० इसप्रकार जो पुण्यकारी एकादशी के व्रत को करताहै वह पुनरावृत्तिदुर्लभ विष्णुजी के स्थान को प्राप्त होता है ४१ लक्ष्मीजी तिस ब्राह्मण से यह कह तिसको वरदे अन्तर्द्धान होगई और वह ब्राह्मण धनवान्होकर पिताके घरको प्राप्तहुआ ४२ श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् जो इसप्रकार कमला का उत्तम व्रत करताहै और एकादशी में सुनताहै वह सबपापोंसे छूटजाताहै ४३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेपुरुषोत्तममासस्यकृष्णकमलानामैकादशीनामद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय ॥

मलमास महीने के शुक्लपक्षकी कामदानाम एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे संसारके स्वामी जनार्दनजी बहुत धर्म और बहुत व्रतसुने परन्तु एकादशीके बराबर कुछनहीं सुना १ इस से फिर पापनाशनेवाली और पुण्य देनेहारी एकादशीही को कहिये जिसको संसार में मनुष्य करके परमपदको प्राप्तहोवे २ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् शुक्ल या कृष्णपक्षमें जब मोक्ष और सुख की बढ़ानेवाली एकादशी हो वह नहीं त्यागनी चाहिये ३ क्योंकि कलियुगमें एकादशी संसारके बन्धनको छुड़ानेवाली सब कामोंकी देनेहारी और पृथ्वी में पापोंकी नाश करनेवाली है ४ इतवार, मांगल्य वा संक्रान्तिमें भी एकादशी सदाही व्रत करनेयोग्यहै क्योंकि पुत्र और पौत्रोंके बढ़ानेवाली है ५ इसका व्रत विष्णुके प्यारे भक्तों करके कभी नहीं त्यागने योग्य है क्योंकि यह नित्यही उमर, यश, पुत्र, आरोग्य, द्रव्य, ६ मोक्ष और राज्यको देती है हे राजन् जे नित्यही श्रेष्ठ श्रद्धासेयुक्त एकादशीके व्रतको कहीहुई विधिसे करते हैं

वे मनुष्य विष्णुरूपी और जीवन्मुक्त निस्संदेह दिखलाई देते हैं ७। ८
तब युधिष्ठिरजी बोले कि हे कृष्णजी जीवन्मुक्त, विष्णुरूप और पापरूप किसप्रकार दिखलाई देतेहैं इसमें श्रेष्ठ कौतूहलहै ९ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे राजन् जे मनुष्य कलियुग में भक्तिसे विधिपूर्वक एकादशी के उत्तम व्रतको निर्जल करते हैं १० वे विष्णुरूप और जीवन्मुक्त कैसे नहीं हैं क्योंकि एकादशीका व्रत सबपाप नाशनेवाला और पुण्यकारी है इसके बराबर ११ मनुष्यों को सब कामना देनेवाला कोई नहीं है दशमी में एकबार भोजनकरैं एकादशी को निर्जल व्रतरहें १२ और द्वादशी को पारणकरें वे मनुष्य विष्णुजी के बराबर हैं और जो श्रद्धायुक्त मनुष्य कामदा के शुभव्रत को करताहै १३ वह इसलोक और परलोकमें वांछितको प्राप्त होता है क्योंकि एकादशी पवित्र, पावनहै भारी पापों के नाशनेवाली है १४ और हे राजन् करनेवालों को भुक्ति और मुक्तिकी देनेहारी है विधिपूर्वक कामदा में पुरुषोत्तमजी को फूल, धूपआदिक और अनेक प्रकारकी नैवेद्योंसे पूजै और वैष्णव व्रतकरनेवाला पुरुष कांस्य, मांस, मसूर, चना, कोदव, साग, मधु, पराया अन्न, दूसरी बार भोजन, मैथुन ये दशवस्तु दशमी में छोड़देवे १५। १६। १७ और जुआं खेलना, क्रीड़ा, नींद, पान, दतून, पराया कलङ्क, चुगली, चोरी, जीव मारना, मैथुन, १८ क्रोध, झूंठ वचन ये सब एकादशी में त्याग देवे और कांस्य, मांस, मसूर, तेल, झूंठ बोलना १९ कसरत, परदेशजाना, दूसरी बार भोजन, मैथुन, बैलकी पीठ, पराया अन्न और साग ये द्वादशी के दिनमें छोड़े २० हे राजन् इस विधिसे जेकामदा के व्रतको करते हैं और रात्रि में जागरणकर पुरुषोत्तमजी को पूजते हैं २१ वे सब पापोंसे छूटकर परमगतिको प्राप्तहोते हैं और हे राजन् इसके पढ़ने सुननेसे हजार गोदानका फल प्राप्तहोताहै २२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपद्मपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेपुरुषोत्तममासस्यशुक्लाकामदैकादशीनामनिषष्टितमोऽध्यायः ६२॥

चौंसठवां अध्याय ॥

चातुर्मास्य की महिमा वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे महादेवजी पृथ्वीमें चातुर्मास्यके जे नियम सुनाई देते हैं तिनको हम सुननेकी इच्छा करते हैं आप कहिये १ चातुर्मास्य में हरिजनार्दनजी के सोने में क्या करना चाहिये छवों रसोंका छोड़ना, नहँ और बालोंका धारण करना और भी नियमों से हे स्वामिन् जो फलहो वह मुझ से कहिये २ सूतजी बोले कि यह सुनकर उत्फुल्लनेत्र महादेवजी हँसकर तपस्या करनेवालों में निधिरूप ब्राह्मणों में श्रेष्ठ नारद जी से बोले ३ कि हे नारदजी मैं विस्तारपूर्वक कहताहूं सुनिये आषाढ़ के शुक्लपक्षकी एकादशी का व्रतकर ४ चातुर्मास्यके व्रतोंको भक्तिपूर्वक ग्रहणकरै जबतक चार महीने भगवान् सोवें तबतक भूमि में सोवे ५ इसीप्रकार चारमहीने बितावे कार्तिकी जबतक होजावे इन चार महीनों में प्रतिष्ठा, यज्ञ आदिक क्रिया, ६ विवाह, जनेऊ औरभी मंगलके कर्म्म, राजाकी यात्रा और मनुष्योंकी भी यात्रा और भी अनेक प्रकारकी क्रिया ७ श्रीमज्जगन्नाथ अच्युत गरुड़ध्वजजीके सोतेमें न करै और जो व्रत की क्रियाको करताहै उसके व्रतके फलको सुनो ८ हज़ार अश्वमेध यज्ञोंसे जो फल मनुष्यको मिलताहै वही चातुर्मास्य के व्रत करने से भी मिलता है ९ मिथुन के सूर्य्यों में भगवान्को सुलादेवे और तुलाराशिके सूर्य्यों में फिर जगादेवे १० मलमास के होनेमें इसविधि से करै कि विष्णुजीकी मूर्त्तिको स्थापितकरै जोकि शङ्ख, चक्र, गदा और पीताम्बर के धारण करनेवाली और सौम्य है उसको पवित्र शय्यामें स्थापितकरै सफ़ेद कपड़े उढ़ावे और तकियाभी देवे ११। १२ इतिहास पुराणका जाननेवाला अथवा विष्णुजीका भक्त दही, दूध, शहद, लाई और घीसे भगवान्को स्नान करावे १३ और सुन्दर चन्दन, धूप और मनोरम फूल और सुन्दर कुसुमोंसे इसमंत्र से पूजनकरै १४ कि जगत्के स्वामी आपके सोनेसे यह संसारभी सोजाताहै और जागनेसे सब चराचर संसार जगपड़ताहै १५ हे

नारदजी इसप्रकार विष्णुकी मूर्तिको स्थापितकर तिसके आगे अपने आप वाणी से नियमोंको ग्रहणकरै १६ स्त्री हो या पुरुष भगवान् का भक्त धर्म अधर्मके विभागसे भगवान् के उठनेकी अवधि तक चार वर्षा के महीनोंभर १७ इन नियमों को ग्रहणकर दन्तधावनपूर्व्वक निर्म्मल सवेरा होनेपर व्रतकरै १८ और आत्माको जीतकर विष्णुजी के आगे नित्यकर्म्म करै अब व्रत करनेवालों के अलग अलग फल कहते हैं १९ विद्वान् पुरुषको गुड़के छोड़नेसे मधुरत्व प्राप्तहोवे तेलके छोड़ने से दीर्घसन्तति मिलै २० घी के त्यागने से सुन्दर अङ्ग होवे करुये तेलका छोड़नेवाला वैरीके नाश को प्राप्तहोवे २१ सुगन्धित तेलके छोड़ने से अतुल सौभाग्य को प्राप्तहो पुष्प भोगका त्याग करनेवाला स्वर्ग्ग में विद्याधर हो २२ योगका अभ्यास करनेवाला ब्रह्मपदको प्राप्तहो करुआ, खट्टा, मीठा, खारी, तीखा और कसैला इन छवोंरसोंको २३ जो छोड़ दे वह मनुष्य कुरूपता और दुर्गन्धता को न प्राप्तहो पानके छोड़ने से लाल कण्ठ होजावे २४ घीके छोड़ने से लावण्य और सदा चिकनी देह होवे फलके छोड़नेसे वहुत पुत्रहोवें २५ ढाकके पत्तोंमें भोजन करने से रूपवान् और भोगवान्, दीप्तिमान्, प्रकाशित इन्द्रियवाला और साक्षात् द्रव्यकापतिहो २६ दही और दूधका छोड़नेवाला मनुष्य गोलोकको प्राप्तहो मौनव्रत करनेवाले की आज्ञा अस्खलितहो २७ वटुईकी पकाई हुई चीजके छोड़ने से इन्द्रासन को प्राप्तहो ऐसेही और भी वस्तुओंके छोड़नेसे फलहोताहै धर्ममेंस्थित धर्मका बढ़ाने वाला मनुष्य २८ नमोनारायणाय यह जपकर सौगुणे फलको प्राप्तहो और अकेलाही विद्याधरोंका स्वामी होकर स्वर्ग्गमें वसे २९ पुष्करके स्नानमात्र से गङ्गाके स्नानका फल मिले और जो सदा भूमिहीमें भोजन करताहै वह पृथ्वीका स्वामीहो और जो भगवान्के मन्दिर लीपै और वहारै ३०।३१ वह वैकुण्ठमें निस्सन्देह कल्पपर्य्यन्त स्थितरहै और जो मनुष्य एकसौआठवार प्रदक्षिणाकरै ३२ वह सुन्दर हंसयुक्त विमानपर चढ़कर चलै भगवान्के स्थानमें गीत गाने और वाजावजानेवाला गान्धर्वलोकको प्राप्तहो ३३ पञ्चगव्य

का भोजन करनेवाला चान्द्रायण के फलको प्राप्तहो और नित्यही शास्त्रके विनोदसे जो मनुष्योंको समझावे ३४ वह व्यासरूप होकर भगवान्के आगे जाकर विष्णुजी के पदको प्राप्तहो तुलसीदलसे जो पूजाकरै वह विष्णुजी के पुरको जावे ३५ दिव्य प्रोक्षणककर अप्सराओंके स्थानको प्राप्तहो ठण्ढेजलसे घरमें स्नान करनेसे निर्मलदेह मिले ३६ गर्मजल छोड़कर स्नानकरना पुष्करके स्नान के फलको देताहै और जो मनुष्य पत्तोंमें भोजन करताहै वह कुरुक्षेत्रके फल को प्राप्त होताहै ३७ जो नित्यही पत्थरमें भोजन करता है वह प्रयागके पुण्यको प्राप्तहोताहै धर्मोदय जलका छोड़नेवाला रोगहीन होताहै ३८ तांबेके बर्त्तनमें भोजन करनेवाला नैमिषारण्यके फल को प्राप्त होताहै कांसेका बर्त्तन छोड़कर बाक़ीके सब बर्त्तनोंमें भोजनादिक करना योग्यहै ३९ सब बर्त्तनोंके न मिलने में मट्टीका बर्त्तन उत्तमहै या अपने आप ढाकके पत्तों को तोड़कर पतरी दोना बनाकर भोजनकरना उत्तमहै ४० जो सालभर तक अग्निहोत्र करताहै और जो पात्रोंमें विद्वान् भोजनकरताहै उन दोनोंको बराबर फल होताहै ४१ ब्रह्मपात्रों में भोजन करनेसे चान्द्रायणके समान फलकहाहै अकेलाही ब्रह्मपत्रों में भोजनकरे तो भारी पापों के नाश करनेवाले त्रिरात्रके बराबर फलहै और एकादशीका व्रत करने से जो पुण्यकहाहै ४२। ४३ और सब दानों और सब तीर्थोंका फल उसको प्राप्त होताहै कमलके पत्तोंमें भोजन करनेसे नरकको नहीं देखता है ४४ ब्राह्मण वैकुण्ठमें जाता है और मनुष्यभी स्वर्गको प्राप्त होताहै यह ब्रह्म भारीवृक्ष पाप नाशकरनेवाला और सब कामना देनेहाराहै ४५ मध्यम शूद्रजातिका पत्र वर्जित है इसमें भोजन करनेसे जबतक चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक नरक प्राप्तहोता है ४६ इससे मध्यमपत्र वर्जितहै बाक़ी पत्रोंमें भोजन करना योग्य है और जो शूद्र होकर मध्यपत्र में भोजन करताहै ४७ उसकी शुद्धता ब्राह्मणको कपिलागऊ देनेसे होती है और तरहसे नहीं होती और जो शूद्र कपिला को अपने घरमें दुहता और दूधको खाताहै ४८ वह दशहज़ार वर्ष विष्ठामें कीड़ा होताहै और कीड़ेकी योनिसे

छूटकर पशुकी योनिको प्राप्तहोताहै ४६ और जो शूद्रहोकर कपिल
बैलको जोतता है तो जितने उसके रोम होते हैं उतनेही वर्ष ५०
निस्सन्देह कुम्भीपाक नरकमें पचताहै और जो तिस शूद्रके घरमें
बकरीहो तो विशेषकरके ५१ तिसके दूध पीनेसे शूद्र रौरवनरकको
प्राप्तहो और ब्राह्मणोंके साथ जिस शूद्रका व्यापार दिखाई पड़े ५२
वह ब्राह्मण वेदसे वाह्यहै और शूद्र कौलिक कहाताहै व्यापारमें जो
भेजाहुआ ब्राह्मण शूद्रकी आज्ञाकरताहै ५३ तो जितने पैगचलता
है उतनेही वर्ष नरकमें रहताहै और जल लानेके लिये जो शूद्र
ब्राह्मणको घर भेजाहो ५४ तो वह जल मदिराके बराबरहै उसको
पीकर निश्चय नरकमें जाताहै शूद्रकरके नित्यही ब्राह्मण को दान
देना योग्य है ५५ और विशेषकरके तिनकी भक्ति करने योग्य है
ऐसा करनेसे इसलोकमें सुख भोगकर परलोकको जाताहै ५६ यह
पांच भूतों से उत्पन्न शरीर अनर्थकहै इससे गुरुजीको देना योग्य
है जिससे अपार फल मिलताहै ५७ इस पापाचार घोर कलियुग
में दुरात्मामनुष्य पुण्यकर्म करनेवालोंकी निन्दा करते हैं ५८ और
निन्दाहीसे प्रलयपर्य्यन्त दुःखको प्राप्त होते हैं हे महाबुद्धिमान् ना
रदजी कलियुगमें अनेक प्रकारके धर्म प्रवृत्त होते हैं ५९ धर्म,काम
अर्थ और मोक्षका देनेवाला यह धर्म्म संसारमें दुर्लभ है जो कोई
मनुष्य पृथ्वीमें भूमिहीपर सोताहै ६० वह दशहजार वर्षतक रोगों
से नहीं पीड़ित होताहै बहुत पुत्र और धनसेयुक्त कोढ़रहित होता
है ६१ और जो मनुष्य रात्रिमें भोजन करता है वह तीर्थयात्राके
फलको प्राप्तहोताहै और बिना मांगेही बावली,और कुवाँ बनवाने
के फलको प्राप्तहोताहै ६२ और जो वैर और प्राणोंके मारनेसे अ
लगहै क्योंकि वेदोंमें जीवोंका न मारना परमधर्म है ६३ और दान
दया दम ये सर्वत्र मैंने सुनेहैं येभी परमधर्म्म हैं तिससे सब यत्नों
महात्माओंको भी करनाचाहिये ६४ और जो श्री गुरुजीको शरीर
पुत्र और पौत्रभी देदेते हैं तो इस दानके प्रभावसे श्री विष्णुजी के
प्यारे होते हैं ६५ जो शूद्र शूद्रहीसे दीक्षा लेता है वे दोनों प्रलय
पर्य्यन्त पापी कहाते हैं ६६ और जो पापियों में श्रेष्ठ शूद्र जीव

मारनेमें बुद्धि देताहै वह इक्कीस पीढ़ियोंको नरकमें गिराता है ६७ कलियुग में पृथिवी पर बहुत से पाखण्डी शूद्र दिखलाई देते हैं उनसे वार्त्तालाप करने से नरक होताहै ६८ जे शूद्र ब्रह्मज्ञानमें रत और गायत्री का जप करते हैं उनके दर्शनही से दिन दिनमें ब्रह्म-हत्या होती है ६९ शंख चक्रके धारणकरनेवाले ब्राह्मण, विष्णुधर्मों में संमत, वेदधर्म्म में रत नित्यही पंक्तिपावन के पावन होते हैं ७० तिन मनुष्यों करके यह चातुर्म्मास्य कर्म करना योग्यहै और वारं-वार बहुत कहनेसे क्या है ७१ जे पृथ्वी में वैष्णवहैं वे पृथ्वीके बीच में धन्य हैं उनका कुल और जाति भी धन्यहै ७२ जो जनार्दन देव के सोते में मधुभक्षण करता है उसको भारी पाप होताहै और छो-ड़ने में जो फल होताहै वह सुनिये ७३ अनेक प्रकारकी सब यज्ञों में जो फल होताहै वह उसको मिलता है अनार, नींबू और नारि-यलको भी छोड़देना चाहिये ७४ इनके छोड़ने से विमानपर चढ़ने वाला देव होकर विष्णुपदको प्राप्तहोताहै और अच्छे कुलमें द्रव्य-वान् और ऐश्वर्य्ययुक्त होताहै ७५ और जो मनुष्य एकबार भोजन से चार महीना बिताता है तो जितने सूर्य्यके उदय होने से मुहूर्त्त होते हैं ७६ उतने हज़ारवर्ष विष्णुलोक में प्राप्त होताहै व्रीहि यव और गेहुओं को जो मनुष्य वर्जित करताहै ७७ उसको विधिपूर्वक दक्षिणासमेत अश्वमेधादिक करनेसे जो फल मुनियोंने कहाहै वह फल प्राप्त होताहै ७८ और धन धान्यसे युक्त बहुत पुत्रभी उत्पन्न होते हैं और जे तुलसी, तिल और कुशोंसे तर्पण करते हैं ७९ तो चातुर्मास्यमें विशेषकरके उनको करोड़गुणाफल मिलताहै भगवान् के सोते में तुलसी, तिल और कुशोंसे तर्पणकरें ८० ते भगवान्ही के समीप हज़ारयुगतक आनन्दकरें पद वा आधापद ऋचा तथा आधीऋचा ८१ जे विष्णुजी के आगे गाते हैं वे निस्संदेह मुक्तहैं जो जनार्दनदेवजीके सोते में मैथुनको वर्जित करताहै ८२ वह एक मन्वन्तर विष्णुलोकमें प्राप्तहोताहै दही, दूध, माठा, गुड़ और साग के छोड़नेसे निस्सन्देह मुक्तिभागी होताहै और जे मनुष्य आंवले से स्नान करते हैं ८३।८४ वे हेनारदमुनि दिनदिनमें भारीपुण्यको प्राप्त

होते हैं क्योंकि विद्वान्लोग आंवलेको पाप नाश करनेवाला कहते हैं ८५ तीनोंलोकों के तारनेके लिये ब्रह्माजीने पहले रचाहै इससे जो मनुष्य सन्ध्या को मौन होकर करता है और चारमहीना एक वार भोजन करताहै ८६ वह चार मन्वंतर वैकुण्ठमें फिर आनन्द करता है और जो अपने आप भोजन बनाकर चारमहीना भोजन करताहै ८७ वह दशहज़ारवर्ष इन्द्रलोक में प्राप्त होताहै और जो चार वर्षाके महीने मौन रहताहै ८८ वह विष्णुपुर तिस पीछे ब्रह्मा के पुरको जाताहै मौन भोजन करनेवाला कभीकष्ट नहीं पाता ८६ मौन भोजन करनेवाले राक्षसभी स्वर्गको गये हैं कृमि और कीटसे युक्त पक्वान्नभी अपवित्र होताहै ९० हे द्विजोंमें उत्तम नारदमुनि वह अन्न गौवोंके मांसके समान जानना योग्यहै क्योंकि वह अन्न अपवित्र है उसको जो मनुष्य भोजन करताहै ९१ तो यह राक्षसोंको सदा प्रियभोजन कहाहै तिस महात्माने पहले ब्रह्माको प्रसन्न किया है ९२ मौन भोजन करनेवाले निस्सन्देह स्वर्गको प्राप्तहुए हैं और वात चीत करतेहुए भोजन करनेसे अन्न अपवित्र होजाता है ९३ और वह केवल पापही को भोजन करताहै तिससे मौनही भोजन करना हे नारदजी व्रतके समान जानने योग्य है ९४ और जो मनुष्यों में श्रेष्ठ मौनभोजन करनेवाला पांच प्राणाहुती करता है उसके निस्सन्देह पांचपाप नाशहोजाते हैं ९५ पितृके कर्म में सन्धित कपड़े न करै क्योंकि अपवित्र अंगमें कपड़े भी अपवित्रही होजाते हैं ९६ करिहाँव और पीठमें स्थित कपड़े में जो विष्ठा मूत्र और मैथुन करताहै उस वस्त्रको छोड़देना चाहिये ९७ पितृकर्म में विशेष करके वर्जने योग्यहै हे मुनिजी चक्रपाणि भगवान्की पूजा सर्व्वदा बुद्धिमान्, पवित्र और इन्द्रिय जीतनेवालों करके विशेष करके करने योग्यहै भगवान् के सोने में तृण, साग, कुसुंभिका ९८ । ९९ और सन्धित कपड़े यत्नसे वर्जित हैं चारमहीना भगवान् के सोनेमें जो इनको छोड़देताहै १०० वह प्रलयपर्यन्त नरकमें नहीं जाता और चारमास जनार्दनदेवके सोनेमें विशेषकरके मदिरा, मांस, चांगदा तथा सुअरकामांस न खावे जीव न मारनेवालाभी पुरुष देवताओं

के भावको प्राप्त होता है १०१। १०२ मिथ्या क्रोध तथा रूक्षता तथा पर्वों में मैथुन जो मनुष्य छोड़देताहै वह अश्वमेधके फलको प्राप्त होताहै १०३ क्योंकि ब्रह्मचर्य्य में प्रजा और आयुकी वृद्धि होती है फूल, पत्ते, फल, शय्या, उबटन, लेपन, १०४ तथा दूध, मांस और मदिरा ये चारमास भगवान् के सोतेमें छोड़देवे १०५ पहले धनको निस्सन्देह ब्राह्मणको देवे क्योंकि जो ब्राह्मणको दियाजाता है वह नाशरहित होता है १०६ और देनेवाला निस्सन्देह करोड़ गुणे फलको प्राप्त होताहै हे विप्रेन्द्र नारदजी जिस किसी नियमसे भगवान् पूजे जाते हैं १०७ तो विष्णुजी के स्थानको निस्सन्देह देते हैं और चारमहीने भगवान्के सोनेमें जो नियम नहीं करता १०८ वह नरकको प्राप्त होताहै और उसकाजन्म वृथा जाताहै और जो पुरुष नित्यही ब्राह्मणकी कही हुई उत्तमविधि को कराता है १०९ और कहेहुए नियमोंको भी करता है वह परमपदको प्राप्त होताहै धर्म, अर्थ और कामसे रहित दानदेना निष्फल होताहै ११० तिससे मनुष्यों में श्रेष्ठ सब यत्नों से यथाशक्ति नियम और दानों से देवदेव भगवान् को प्रसन्न करै १११ स्नान दान और ब्राह्मणोंका पूजन करने से जबतक चौदहों इन्द्र बीतते हैं तबतक उसका सब वृथाही होजाताहै ११२ तब नारदजी बोले कि हे विश्वेश्वर हे प्रभु जी ब्रह्मचर्य्य किस प्रकारकाहै वह कहिये जिसके करनेसे गोविन्द जी मनुष्योंपर प्रसन्न होते हैं ११३ तब महादेवजी बोले कि हे विद्वन् नारदजी जो अपनीही स्त्रीमें निरत है उसको पण्डितलोग ब्रह्मचारी कहते हैं और जो अपनी स्त्रीको छोड़देताहै वह चाण्डालसे भी अधिकहै ११४ ऋतुके समयमें स्त्रीकेपास गमनकरना ब्रह्मचर्य होताहै और जो दोषहीन भक्ता स्त्रीको छोड़ देताहै ११५ वह पापकर्म्म करनेवाला मनुष्य गर्भकी हत्याको प्राप्तहोताहै—अश्वमेधहजारयज्ञ राजसूय सौयज्ञ ११६ एकादशीके व्रतकी सोलहवीं कला कोभी नहीं प्राप्तहोते स्नान, दान, जप, होम, पढ़ना और देवताओं का पूजन ११७ ये सब चातुर्मास्यमें जो किये जाते हैं वे नाशरहित होजाते हैं और जो एककाल वा दो काल पुराणको सुनताहै ११८

वह सब पापोंसे छूटकर विष्णुलोकको प्राप्तहोताहै भगवान्‌के सों
में उनके नाम पढ़ने और जपनेसे ११९ हे द्विजोंमें श्रेष्ठ नारदज
वह फल करोड़गुणा प्राप्तहोताहै और जो वैष्णव ब्राह्मण पूजन क
रताहै १२० वही सब धर्म्मात्मा और निस्सन्देह पूज्यहै यह चातु
र्मास्य बड़ा पुण्यकारी पवित्र और पाप नाशनेवालाहै इसको सु
कर पुण्य और गंगाजी के स्नानका फल प्राप्त होताहै १२१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारद-
संवादेचातुर्मास्यमहिमानामचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४॥

पैंसठवां अध्याय॥

चातुर्मास्यका उद्यापन वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे विभुजी चातुर्मास्य व्रतका उद्यापन कहि
क्योंकि उद्यापन करने से व्रत निश्चय सम्पूर्ण होजाता है १ त
महादेव जी बोले कि हे महाभाग नारदजी व्रतकरके जो उद्याप
न करै तो जो कर्मोंका करनेवाला है वह अच्छीतरह से फलभाग
नहीं होता २ व्रत वैकल्य प्राप्त होकर कुष्ठी और अन्धा होजाता
इससे हे द्विज उद्यापन करै ३ इन नियमों को ग्रहणकर यथाविधि
पालनकर जगन्नाथजी के सोकर उठनेमें ब्राह्मणके समीप जाकर ४
विधिपूर्वक विस्तारसे देवदेवजी से क्षमाकरावै तेलके छोड़ने में घ
देवै घीके छोड़ने में दूधदेवै ५ मौन होनेमें पिण्डा तिल सोनेसमेत
ब्राह्मणको देवै भोजन छोड़नेमें दही भात समेत भोजन देवै ६ प
रन्तु सोने समेत अन्न विशेष करके देवै क्योंकि हे मुनिश्रेष्ठ नारद
जी अन्नके दानसे विष्णुलोक में जाता है ७ और जो मनुष्य चार
महीना ढाकके पत्ते में भोजन करताहै वह घीसेपूर्ण बर्तन उद्यापन
में देवै ८ रात्रिके भोजनमें ब्राह्मणको छवोंरसों के भोजनदेवै और
विना मांगे भोजनमें सोना समेत बैलदेवै ९ उर्दके छोड़नेमें बछवा
समेत गऊदेवै आंवले के स्नानमें माषिकभर सोनादेवै १० फलों
के नियम में फलदेवै धान्यों के नियममें धान्य अथवा शालिधान्य
देवै ११ पृथ्वीके सोनेमें तकिया और गेंडुकसमेत शय्या देवै और

हे द्विजोत्तम जिसने चारमहीना ब्रह्मचर्य्य कियाहो १२ वह स्त्री पुरुषोंको भक्तिपूर्वक भोजनदेवे भोग और दक्षिणासमेत और लोन समेत साग १३ नित्यके स्नान में मनुष्य देवे तेलके छोड़ने में घी और सत्तूदेवे नहँ और बालरखाने के व्रतमें आदेश कल्पनाकरै १४ जूतों के छोड़ने में जूते देवे मांसके छोड़ने में बछवासमेत कपिला गऊ देवे १५ और जो नित्यही दीप जलाताथा वह सोनेका दीप घीसमेत ब्राह्मण को देवे १६ जो कि ब्राह्मण विष्णुजी का भक्तहो तो व्रत परिपूर्ण होवे सागके नियम में सागही देवे उर्दके नियम में सोने का उर्द देवे १७ मैथुनों के नियममें ब्राह्मणको चांदी देवे नागवल्ली के नियम में सोनासमेत कपूर देवे १८ हे द्विजश्रेष्ठ काल कालमें नियमसे जो कियाहै वह परलोकके जानेकी इच्छासे विशेष करके देवे १९ पहले स्नानआदिक कर विष्णुजीके आगे प्रकाशित करै क्योंकि आदि और नाशरहित देव शंख चक्र और गदाके धारण करनेवाले पापके नाशनेहारे विष्णुजी हैं तिनके आगे कौन मनुष्य नियम न करेंगे २० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेचातुर्मास्योद्यापनंनामपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छाछठवां अध्याय ॥

यमराजका आराधन वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे देवताओं में उत्तम देव महादेवजी हमारे हितके लिये यमराजका आराधन कहिये कि किसप्रकारसे मनुष्य नरकके भीतर न जावे १ क्योंकि यमलोकमें वैतरणी नदी सदा अनाधृष्य, अपार, दुःखसे तरने योग्य, बहुत रक्तयुक्त २ और सब प्राणियोंको दुःखसे तरने योग्य है यह कैसे सुखसे तरने योग्य होवे हे महादेव हे प्रभुजी यह यमराज के लोकमें बड़ा डरहै ३ हे भगवन् हे देव हे देवताओंके स्वामी तिसके छुड़ानेकेलिये हमारेऊपर कृपा कर सब कृत्य कहिये ४ तब महादेवजी बोले कि हेविप्र नारद पूर्व्व समयमें मैं लवणसमुद्र में द्वारकापुरी में स्नान करचुकाथा कि आते

हुए मुद्गलनाम मुनिको देखा ५ जोकि सूर्यकी तरह प्रकाशित और तपस्या से सब अंगभी जिनका प्रकाशयुक्त होरहाथा उन्हों ने विस्मययुक्त होकर हमारे प्रणामकर पूंछा ६ कि हे देव अकस्मात् मूर्च्छायुक्त होकर पृथ्वी में मैं गिरपड़ाहूं हमारे अंग जलरहे हैं क्योंकि मुझको यमराजके दूतों ने पकड़ लियाथा ७ और जबर्दस्ती से अंगुष्ठमात्र पुरुष मुझ को खींचकर उन्हों ने अच्छी तरहसे बांधकर यमराज के पास प्राप्त कियाथा ८ क्षणमात्र सभामें मैंने इसप्रकार के यमराजको देखा कि जिनके पिंगलनेत्र, श्याममुंह, महाभयंकर, मृत्यु और व्याधि सैकड़ोंसे युक्त ९ वात,पित्त और कफ इन मूर्तिधारी दोषोंसेसेवित, देहसूखना, ज्वरकाआतंक, शीतला और लूतिका आदिक १० ज्वाला, अंगटूटना, मस्तकपीड़ा, भगन्दर, बलका नाश, कण्ठमाला, नेत्ररोग, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, घाव, ११ मूर्च्छा, गला धरजाना, हृदयकारोग, भूत, चोर इसीप्रकार अनेकप्रकार के भयानक रूप धारण करनेवाले १२ कपाल और शिर हाथमें लिये लड़ाई तथा नरकमें घोरराक्षस और दानव चारोंओर जिनके खड़े तिनके बीच में यमराजजी बैठेथे १३ और धर्म्मके अधिकारी चित्रगुप्त आदि लेखकभी विद्यमानथे व्याघ्र, सिंह, शूकर, बड़े घोर शिखा सर्प, १४ बीछी, डाढ़वाले जीव, मत्कुण आदिक कीड़े, भेड़िया, चीता आदिक, कुत्ते, कङ्क, गीदड़, सियार, १५ चोर, भूत, दारिद्र्य, महामारी, डाकिनी ग्रह ये सब बाल खोलेहुएथे दमा और खांसी कि जिनकी भौंहें और मुंह टेढ़ेथे १६ भारी प्रतापोंसे युक्त, नहीं डरनेवाले, पापियोंको दंड देनेवाले, परिग्रहों से सेवित यमराजजी सभामें शोभितथे १७ जैसे भयानक सांपोंके रहनेवाले जीवोंसे व्यालांजन पहाड़ शोभित है। तदनन्तर संसारके स्वामी यमराजजीने दूतों से कहा १८ तुम लोगोंने नामकीभ्रांतिसे मुनिको कैसे यहां प्राप्तकिया कोगिढ़ गांवमें भीमकका पुत्र मुद्गल नामी १९ क्षत्रिय रहताहै उसकी उम क्षीण होगईहै उसको लाइये और इनको छोड़दीजिये यह सुनकर दूतोंने मुझको छोड़दिया और वहांजाकर फिर लौटआये २० और धर्मराजजीसे सबोंने कहा कि हमलोग वहां गये परंतु क्षीण उमरवाले

वहमनुष्य नहीं दिखाईपड़ा हे यमराजजी कैसे हमलोग भ्रान्तचित्त होगये यह हम नहीं जानते २१ तब यमराजजी बोले कि बहुधा वे नर दूतोंको नहीं दिखाई देते जिन्होंने द्वादशी का व्रत कियाहो जो वैतरणी प्रसिद्धहै २२ उज्जैन, प्रयाग वा यमुना में जे मरेहों और जिन्होंने तिल,हाथी, सोना आदि और गऊको रोजका भोजनदिया हो २३ तब दूत बोले कि हे ब्रह्मन् हे देव यमराजजी वह व्रत कैसाहै संपूर्णकहिये और उसमें तुम्हारी प्रसन्नताका देनेवाला मनुष्योंको क्या करनाचाहिये २४ हे मनुष्योंमें श्रेष्ठ जिसने कृष्णपक्षकी द्वादशी का व्रत किया वह पापसे कैसे छूट जाता है २५ वह व्रत किस विधि से करनाचाहिये हे दयानिधि प्रसन्नहोकर दयाकर जैसाहो वह सब कहिये २६ श्रीमुद्गलजी बोले कि दूतोंके वचनसुन यमराजजी मीठे वचन बोले कि भो दूतो जैसा देखा और सुनाहूं वह सब कहताहूं २७ अगहन आदि महीने में जो ये कृष्णपक्ष की द्वादशी हैं तिन पहले वालियोंमें विधिपूर्वक हे दूतो वैतरणी का व्रत करने योग्यहै २८ सब महीनों में जबतक निश्चय वर्ष भरहो तबतक करना चाहिये जिसके करनेसे भो दूतो निस्संदेह छूट जाताहै २९ और भगवान् की प्रसन्नताका देनेवाला व्रतका नियम करना चाहिये कि हे देव हे देवोंके स्वामी आज हमारा व्रतहोगा ३० फिर द्वादशीमें भक्ति भावसे युक्त भगवान्को पूजकर स्वप्न इन्द्रियकी विकलता से भोजन और मैथुन को छोड़कर ३१ यह कहे कि हे देव हमारे ऊपर कृपाकर सब क्षमा कीजिये इसप्रकार निश्चय नियमकर दोपहरमें तीर्थको जावे ३२ वहांपर मट्टी, गोबर और तिलोंको भी लेताजावे और विधिपूर्वक व्रतके सम्पूर्ण होनेके कारण वहां स्नानकरना चाहिये ३३ अश्वक्रान्ते इस मन्त्रसे विशेषकर स्नानकरै कि हे घोड़से रथसे और विष्णुजीसे दबीहुई हे द्रव्यके धारण करनेवाली पृथ्वी ३४ हे मट्टी जो मैंने पहले इकट्ठे किये पाप हैं उनका नाश कीजिये मट्टीके पाप नाश करनेसे मनुष्य सब पापोंसे छूटजाताहै ३५ और विष्णुरूपी तिल काशीमें उत्पन्न हुएहैं तिलके स्नानसे गोविन्दजी सब पापोंको नाश करते हैं ३६ और हे देवि तू विष्णुकी देहसे उ-

त्पन्न महापापोंको नाश करनेवाली है निश्चय सबके सम्पूर्ण पापों को नाशकर तुम्हारे नमस्कार है ३७ तुलसीपत्र नामका उच्चारण पहलेकर धारणकरै यही सुकृतियों ने विधिपूर्वक स्नान करनेयोग्य कहे हैं ३८ इसप्रकार स्नानकर सुन्दरवस्त्र धारणकर पितर देवताओंको तर्पणकर तिस पीछे विष्णुजी का पूजनकरै ३९ और पांच पल्लवों और पांच रत्नोंयुक्त सुन्दरमाला और चन्दन से सुगन्धित पुष्ट कलशको स्थापितकरै ४० और उस में जल छोड़ै द्रव्य और तांबेके वर्तनसे युक्तकरै और तांबे के वर्तन में स्थित तपस्याके निधि, देवोंके देव श्रीधरदेवजी की ४१ पूर्ण विधिसे अच्छीतरह पूजा करै और मट्टी और गोबर आदि से रचित सुन्दर मण्डल बनवा ४२ और अच्छीतरह से धोयेहुए और जलसे पीसेहुए चावलों हाथ आदि अंगों से युक्त धर्म्मराजजी को बनावे ४३ और तिन आगे तांबेकी वैतरणी नदीको स्थापितकर आवाहन पहलेकर अलग अच्छीतरह से पूजन करै ४४ कि हे देवोंके स्वामी, विश्वरूप यमराज, मैं तुमको आवाहन करता हूं हे महाभाग यहां आइये केशवजी सांनिध्य कीजिये ४५ और हे लक्ष्मी के पति, हे हरि, प्रभुजी आसनसमेत इस पाद्य को ग्रहण कीजिये और संसाररूप वागमें रत मेरेऊपर नित्यही कृपाकीजिये ४६ ऐश्वर्य के देनेवाले नमस्कार इसको कहकर चरणों को पूजे शोकके नाशनेहारे के नमस्कार इससे गांठोंको पूजै शिवजी के नमस्कार इससे जंघाओंको पूजे विश्वमूर्ति के नमस्कार इससे करिहांव को पूजे ४७ कामदेवजी के नमस्कार इससे लिंग इन्द्रियकोपूजे सूर्य्यके नमस्कार इससे फलको पूजे दामोदरके नमस्कार इससे पेटको पूजे वासुदेवजी के नमस्कार इससे स्तनोंको पूजे ४८ श्रीधरके नमस्कार इससे मुखको पूजे केशवके नमस्कार इससे बालोंको पूजे शार्ङ्गनाम धनुषके धारण करनेवालेके नमस्कार इससे पीठको पूजे वर देनेहारे के नमस्कार इससे चरणोंको पूजे ४९ और अपने नामसे शंख, चक्र, तलवार, गदा और फरसा हाथमें लेनेवाले के नमस्कार है और सर्वात्माके नमस्कार इससे शिरको पूजे ५० मत्स्य, कूर्म्म, वाराह, नृसिंह, वामन,

परशुराम, रामचन्द्र, कृष्ण, बुद्ध और कल्कीजी के नमस्कार है ५१ सब पापसमूहोंके नाशनेके लिये मैं पूजन करताहूं आपके नमस्कार है इन सब मन्त्रोंसे विष्णुजीको ध्यानकर पूजनकरै ५२ हे धर्मराज, हे दक्षिणदिशाके स्वामी हे भैंसा सवारीवाले आपके नमस्कारहै ५३ हे चित्रगुप्त, हे विचित्र आपके नमस्कार है नरककी पीड़ाके शांति के लिये हमको मनोवांछित कामना दीजिये ५४ यमराज, धर्मराज, मृत्यु, अन्तक, वैवस्वत, काल, सब प्राणियों के नाशकरनेवाले ५५ भेड़ियेके समान पेटवाले चित्रगुप्तजीके नमस्कारहै नील और दध्न जी के नित्यही नमस्कारकरै ५६ इन बारहनामों से धर्म्मराज प्रभु पूजने योग्यहैं फिर हे दुःखसे पार होनेवाली, पाप नाशनेहारी, सब कामना देनेवाली हे महाभागे वैतरणी यहां आइये हमारे कियेहुए अर्घको ग्रहण कीजिये यमद्वार की घोर मार्ग्ग में वैतरणी नदी प्रसिद्धहै ५७। ५८ तिसमें उद्धार होने के लिये जन्म मृत्यु और बुढ़ापाका अनादर करनेवाली पापियोंको दुःखसे तरनेहारी सब प्राणियोंको भयदेनेवाली है ५९ जिसमें डरसे यातनामें परायण प्राणी डूबते हैं तरनेकी कामनासे तिस घोराको पूजे कि हे जयादेवि आपके नमस्कार है ६० तिसी वैतरणी नदीमें देवता स्थितहैं वह भगवान्की प्रीतिकेलिये भक्तिसे पूजनी चाहिये ६१ कि जिसके किनारे ऋषि और पितर प्रवेश करते हैं वह समुद्ररूप से पूजित पाप की नाश करनेवाली है ६२ तिसके तरने और सब पापों के छुटाने के लिये तिसको देते हैं और पुण्य के लिये तुम को वैतरणी नदी का वृत्तान्त भी कहताहूं ६३ कि भगवान् की प्रीति के लिये भक्ति से मैंने तुम्हारी पूजाकियाहै हे कृष्ण हे कृष्ण हे जगन्नाथ संसारसे हम को उद्धार कीजिये ६४ और नाम के ग्रहणमात्रही से हमारे सब पापों को नाश कीजिये और हे देवताओं के स्वामी नवीन डोरों से बनाया हुआ श्रेष्ठजनेऊ ग्रहण कीजिये और प्रसन्न होकर हमारे मनोवांछित को दीजिये और यथाशक्ति से सुन्दर इस पानको ६५। ६६ हे देवेशजी ग्रहण करिये और हमको संसाररूपी समुद्रसे उद्धार कीजिये और यह पांच वत्तीसेयुक्त दीपभी आपकी आरतियों

के लियेहै ६७ और हेमोहरूपी अन्धकारके सूर्य आप भक्तिसमेत संसाररूपी पीड़ा के नाश करनेवाले हैं और यह श्रेष्ठ अन्न सुन्दर पक्वान्न छओं रसोंसे युक्त ६८ भक्तिसे मैं देताहूं इसको हे भगवन् ग्रहण कीजिये और यथासंख्या द्वादशाक्षर मन्त्रके जपसे ६९ लक्ष्मीके पति हमारे ऊपर प्रसन्न हों और प्रसन्नहोकर मनोवाञ्छित को देवें और समुद्रके मथने में पांच गौवें उत्पन्न हुई हैं ७० तिनके वीचमें नन्दागऊके नमस्कार है इसतरह विधिपूर्व्वक गऊ को पूज कर एकाग्रचित्त होकर अर्घ्यदेवे ७१ कि हेसब कामनाओंकी पूर्ण करनेवाली सब अन्तकों के निवारण करनेहारी हे नन्दिनि हमको सदा आरोग्य और दीर्घ सन्तान दीजिये ७२ तुम वसिष्ठ और बुद्धिमान् विश्वामित्र से पूजनकीगई हो हेकपिले जो मैंने पूर्वसमयमें पाप इकट्ठे किये हैं उनको नाशकीजिये ७३ गौवें हमारे आगे और पीछेहों और सोनेके सींग और दूधयुक्त हमको स्वर्ग्ग में मिलें ७४ सुरभी और उनके सौरभेय नाम बछड़े इसप्रकार हैं जैसे नदियां और समुद्र हे सर्वदेवमये हे देवि हे सुभद्रे हे भक्तों के ऊपर कृपाकरनेवाली ७५ इसप्रकार नाम कहकर विधिपूर्वक पूजनकर गौवोंको प्रतिदिन का ग्रास देवे कि हे सुरभीकी पुत्री तुम सबके कल्याणकरतीहो पवित्र और पापनाशनेवाली हो ७६ तीनों लोकोंकी माता गऊहो हमारे ग्रास को ग्रहण कीजिये और सब पापनाशने और ऐश्वर्यके लिये गदाके नमस्कारहै ७७ इस मन्त्रसे पण्डित गदाको धारणकरे और पद्मनाभ भगवान् के नमस्कार इससे पद्मको बुद्धिमान् मनुष्य धारण करे ७८ और चक्ररूपी भगवान् के नमस्कार इससे भगवान्के चक्रका धारण कहाहै और सुखके करनेवाले शङ्खरूपी तुम्हारे नमस्कार है ७९ इसमन्त्रसे हे दूतो शंखका धारण है इसप्रकार चारों आयुधों का धारण मुनियोंने कहाहै ८० ब्राह्मणको जैसे नित्यही अग्निहोत्र और वेदका पढ़नाहै तैसे तप्तमुद्रा आदि का धारण है ८१ और वेदके पारजानेवाले ब्राह्मणों को विशेषकर सुगन्धित चन्दन और गोपीचन्दन का धारण करना कहाहै ८२ इनके धारण करनेसे चाण्डालभी शुद्ध होजाताहै इसमें संदेह नहीं

है और जो ऊर्ध्वपुण्ड्को सीधा सौम्य और चिह्नसमेत धारण करै ८३ तो चाण्डाल भी होतो वह भी शुद्धदेह और सदा ब्राह्मणों से पूज्य होजाताहै और हे दूतो चाण्डालों के घरमेंभी जो तुलसी दिखाई दे ८४ तो भक्तिभावयुक्त चित्तसे वहांकी तुलसी ग्रहण करनी चाहिये ८५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेउत्तरखण्डेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुमापतिनारदसंवादेयमाराधनंनामषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

गोपीचन्दनका माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे नारदमुनि द्विजों में श्रेष्ठ मुद्गलमुनि यह धर्मराजजी के मुखसे सुनकर और हमारे आगे कहकर इच्छापूर्वक चलेगये १ हे द्विजोत्तम नारदमुनि गोपीचन्दन जहां रहता है वह घर तीर्थरूप विष्णुजी ने कहाहै २ और जिस द्विजके घरमें गोपीचन्दन रहताहै वहां शोक मोह और अशुभ कुछ नहींहोते ३ और गोपीचन्दन जहां रात्रि दिन रहताहै उनके पितर सुखी रहते हैं और सन्तान सदा बढ़ती है ४ गोपीचन्दन और पुष्करकी मिट्टी पवित्र और देह शुद्धकरनेवाली है इसके लगाने से रोग और मानसीव्यथा नाश होजाती हैं ५ इससे पुरुषोंको देहमें धारण करनेसे मुक्ति और सब कामना देताहै तीर्थ और क्षेत्र सर्वदा तभीतक गर्जते हैं ६ जब तक हे द्विज गोपीचन्दन नहीं देखते और सुनते यह गोपीचन्दन ध्यान और पूजाके योग्यहै मलदोषोंका नाश करनेवालाहै ७ जिसके स्पर्श से मनुष्य पवित्र होताहै और अन्तकाल में मनुष्यों को मुक्तिदेताहै श्रेष्ठ और पवित्रहै ८ हे द्विजश्रेष्ठ मुक्तिके देनेवाले गोपीचन्दन को क्या कहें विष्णुजी की तुलसी, काष्ठ, जड़की मिट्टी, ९ गोपीचन्दन तथा हरिचन्दन ये चारों मिलाकर बुद्धिमान् मनुष्य देह में लगावे १० तो वह सदा जम्बूद्वीपों में सबको तीर्थकरदेताहै और जो गोपीचन्दन से तिलक करता है ११ वह सब पापों से छूटकर विष्णुजी के परम्पदको प्राप्त होताहै और उसने गयामें जाकर पि-

ताकी श्राद्धआदिक भी सबकरली १२ जिसने गोपीचन्दनको धारणकिया मदिरा पीनेवाला ब्राह्मण, गऊ और बालकका मारनेवाला भी गोपीचन्दनके धारण से तिसी क्षणमें पापसे छूट जाता है १३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्रयांसंहितायामुमापतिनारदसंवादे गोपीचन्दनमाहात्म्येसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अड़सठवां अध्याय॥

वैष्णवोंका माहात्म्य वर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे नारद वैष्णवों के लक्षण कहताहूं सुनिये १ जिसके सुननेसे मनुष्य ब्रह्महत्या आदिक पापोंसे छूटजाताहै तिनके लक्षण और स्वरूपको २ हे मुनियों में श्रेष्ठ इससमय में कहताहूं सुनिये जिससे ये लोग विष्णुजी के होतेहैं तिसीसे वैष्णव कहातेहैं ३ सब वर्णों में वैष्णव श्रेष्ठ कहाताहै जिनका अत्यन्त पुण्य है उनके वंशमें वैष्णव होताहै ४ जिनमें क्षमा, दया और सत्य स्थितहै उनके दर्शनही करने से पाप रुईकी नाईं नाश होजाता है ५ जिसकी हिंसा धर्म्म से छूटी विष्णुजी में बुद्धि स्थित होती है और शङ्ख, चक्र, गदा और पद्मको जो नित्यही धारण करताहै ६ तुलसी के काष्ठकी मालाको कण्ठ में धारण करताहै और जो बुद्धिमान् मनुष्य बारह प्रकारके तिलकोंको धारण करताहै ७ और जो धर्म और अधर्म्म को जानताहै वह वैष्णव कहाता है वेद शास्त्रमें नित्यही रत रहता और नित्यही यज्ञ कराता है ८ और चौबीस उत्सवों को बारंबार जो करते हैं उनका कुल अत्यन्त धन्यहै वही यशस्वी कहाते हैं ९ और वही भागवत मनुष्य संसार में अत्यन्त धन्य उत्पन्न हुए हैं जिसके कुलमें एकही भगवान् का भक्त मनुष्य होता है १० उसने बारंबार उस कुलको तारदिया अंडज, उद्भिज और जरायुज योनि वाले जे हैं ११ वे सब शङ्ख चक्र और गदाके धारण करनेवाले जानने योग्य हैं जिनके दर्शनही से सदा ब्राह्मण का मारनेवाला शुद्ध होजाताहै १२ हे नारदमहामुनि जे वैष्णव पृथ्वी में दिखाई देते हैं तिनसे धन्यको क्या कहैं अर्थात् कोई नहीं है १३ तत्त्व के जानने

वालों करके वेभी विष्णुजी के समान जानने योग्य हैं कलियुग में संसारमें वे अत्यन्त धन्यहैं यह निस्सन्देह हमने सुनाहै १४ जिसने वैष्णवोंकी पूजाकी है उसने विष्णुजी और सबका पूजन करलिया है और उसी ने भारी भारी दानभी दियेहैं १५ जे मनुष्य फल, पत्र, तथा साग, अन्न वा कपड़ों को वैष्णवों को देतेहैं वे पृथ्वी में सदा धन्यहैं १६ जिन्हों ने वैष्णवपूजा सबकी पूजा और विष्णुजीकी भी पूजाकी वे अत्यन्त धन्य हैं १७ तिनके दर्शनही से मनुष्य पापसे शुद्ध होजाताहै वारंवार और बहुत कहने से क्याहै १८ इससे तिन के स्पर्शमें सुख देनेवाले दर्शन करने योग्यहैं जैसे विष्णुजी तैसेही वैष्णवहैं कुछ अन्तर नहीं है १९ ऐसा जानकर हे वत्स नारदमुनि पण्डित सदा वैष्णवोंको पूजै जिसने पृथ्वी में एक वैष्णव ब्राह्मण भोजनकराया उसने निस्सन्देह हज़ारोंब्राह्मणोंको भोजनकराया २०॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेवैष्णवमाहात्म्यंनामाष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे देवताओं में श्रेष्ठ, पापरहित महादेव जी सदा व्रतकरनेमें असमर्थों को एकही जो द्वादशी पुण्यकारी हो तिसको कहिये १ तब महादेवजी बोले कि भादोंके शुक्लपक्षकी श्रवणयुक्त द्वादशी निश्चय सब वस्तु देनेवाली, पुण्यकारी और व्रतमें महाफल देनेहारी है २ नदीके संगममें स्नानकर तिसद्वादशीका व्रत करै तो विना यत्नही के बारह द्वादशी का फल प्राप्तहो ३ और जो बुधवार श्रवणनक्षत्रसमेत द्वादशीहो वह अत्यन्त श्रेष्ठहै उसमें कियाहुआ सब नाशरहित होता है ४ और हे नारद जो श्रवणनक्षत्र युक्त द्वादशीहो तो नदियों के संगम में स्नानकरने से गोदानका फल प्राप्तहो ५ और तिसी समय में बुद्धिमान् मनुष्य जलसे पूर्ण कलश को स्थापितकर तिसके ऊपर पात्ररख भगवान् को स्थापित करै ६ तदनन्तर तिनके आगे घीसे पकाईहुई नैवेद्य देवे और जलसमेत शक्ति से नवीन कलशको देवे ७ इसप्रकार भगवान् को पूजनकर

जिसका चन्द्रभागा नाम नदीसे पुण्ययुक्त संगमथा ४३ चंद्रभागा चन्द्रसुता तापी और यमुनाके ठंढे और गर्मजल में ब्राह्मणसमेत मैंभी प्रवेशकर गया ४४ और श्रवण और द्वादशीके योगमें और भी मनुष्य व्रतकर चन्द्रभागाके सुन्दरजलसे ब्राह्मणको वारिधानी देते भये ४५ सम्पूर्ण वर्द्धमानकों के साथ दही, भात, छतुरी, जूते और भगवान्‌की मूर्तिको ४६ महादेवजीके आगे ब्राह्मणों में श्रेष्ठों को देतेभये तब तो द्रव्यकी रक्षाकेलिये तिसी नदी के किनारे मैंने भी व्रतकर ४७ एकसुन्दर वारिधानी दी और यह कर्मकरके घरमें आगया तदनन्तर कुछ समयमें ४८ नाशको प्राप्तहोकर प्रेतभाव को नास्तिकता के कारणसे प्राप्तहुआ तो इस घोर वनमें सांपों के समूहोंकी नाईं आगया ४९ श्रवण और द्वादशीकेयोगमें जो हमने वारिधानी अर्थात् जल और भातको दहीसमेत दिया सोई वारिधानी दोपहरके समयमें नित्यदिन हमको मिलती है ५० और ये ब्रह्मस्वरूपी सब पापी हैं जो प्रेतभाव को प्राप्तहुए हैं इन में कोई पराई स्त्रीसे भोग करनेवाले और कोई स्वामी से वैर करनेवाले हैं ५१ ये सब मनुष्य इस मरुस्थल देशमें भूत प्रेतरूपसे उत्पन्नहुए और हमारे मित्रहुए हैं ५२ भगवान्, विष्णु, परमात्मा, सनातन नाशरहित हैं उनका उद्देशकर जो दियाजाताहै वह नाशरहित होता है ५३ और ये सब नाशहीन अन्नसे वारंवार तृप्त कियेजाते हैं परन्तु प्रेतत्वके भाव दुर्बलताको कभी नहीं छोड़ते ५४ अब मैंने प्राप्तहुए अतिथि आपकी अन्नोंसे पूजाकी है इससे प्रेतभाव से छूटकर परमगतिको जाऊंगा ५५ अब हमसे हीन ये सब प्रेत इसघोर वनमें कर्मयोनि से उत्पन्न घोरपीड़ाको प्राप्तहोंगे ५६ इससे हे महाभाग हमारेऊपर कृपाकी कामनासे प्रत्येक प्रेतके लिखेहुयेनाम और गोत्र ग्रहणकीजिये ५७ तुम्हारी कक्षामें सुंदर सम्पुटिका है इससे हिमवान् पर्व्वत में जाकर तुम निधिको प्राप्त होगे ५८ और तिसपीछे गयाशीर्ष में जाकर हे महामते श्राद्धकीजिये इसप्रकार वहप्रेत बनियेंको सुखपूर्व्वक आज्ञा देकर ५९ तिसीसमय में उनको भेजता भया तब तो उत्साहयुक्त बनियां पहले अपने घर में आया और

पीछेसे हिमालयपहाड़कोगया ६० और वहांपर निधि देखी तो उस को लेकर छठवां अंश ग्रहणकर गयाशीर्ष को गया ६१ और उस बुद्धिमान् ने वहांपर प्रेतों के प्रत्येक के नाम और गोत्र उच्चारणकर अच्छीविधि से श्राद्धकिया जिस जिसकी श्राद्ध दिनमें हो ६२।६३ वे वे स्वप्नमें अपने दर्शनदेवें और कहें कि हे महाभाग हे पापरहित आपही के प्रसादसे ६४ प्रेतभाव छोड़कर परमगतिको प्राप्तहुएहैं इसप्रकार बनियां विधिपूर्वक गयाशीर्ष कर पीछेसे वारंवार विष्णुको ध्यानकर अपने घरगया और भादों के शुक्लपक्ष में ६५।६६ श्रवण और द्वादशी के योगमें वह महाबुद्धिमान् सब सामग्रियोंसमेत नदियोंके संगममें जाकर स्नानकर द्वादशीका व्रतकर भगवान्की पूजा कर ६७।६८ तिसपीछे ब्राह्मणको शास्त्रकी कहीहुई विधि से उपहार देताभया ६९ और तिसपीछे वह बुद्धिमान् घरको भी लौटआया इसप्रकार वर्ष वर्ष में भादोंके महीने में ७० श्रवणद्वादशी के योगमें नदियों के संगम में फिर विष्णुजी का उद्देशकर सम्पूर्ण कर्म करता भया ७१ और बहुतकाल बीतनेपर नाशको प्राप्तहुआ तो सब मनुष्योंको दुर्लभ परमस्थानको प्राप्तभया ७२ और अबतक विष्णुदूतों से सेवित वैकुण्ठमें क्रीड़ाकररहाहै हे ब्रह्मन् इसीप्रकार श्रवणद्वादशी के व्रतकोकरो जोकि इसलोक और परलोक में सब सौभाग्यको देनेवाला अच्छी बुद्धिका पैदा करनेहारा और सबपाप नाश करनेवालाहै ७३।७४ श्रवणद्वादशी के योग में जो इसप्रकार व्रत करताहै वह इस व्रत के प्रभाव से विष्णुलोक को जाता है ७५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेश्रवणद्वादशीव्रतंनामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९॥

सत्तरवां अध्याय॥

त्रिरात्रव्रतका वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे देवदेव, हे जगन्नाथ, हे भुक्तिमुक्तिके देनेवाले, हे सुरश्रेष्ठ यह कहिये जिससे दुःखको न देखे १ तब महादेवजी बोले कि हे नारद नदीके शुभ त्रिरात्रको कहताहूं जिसके करने से मनुष्यों

को नरक न प्राप्तहोगा २ उमर, आरोग्य, अतुल सौभाग्य, सुखसंप
दा और नाशरहित सन्तानको प्राप्तहोकर स्वर्गलोकमें मनुष्य प्राप्त
होगा ३ आषाढ़ का महीना प्राप्तहोने में नदी पूरसे संयुक्त होती
सदैव जलके संस्थान पुराणमें यह सुनीगई है ४ वर्षाऋतुमें मेघ
से संपूर्ण होने में नदीका व्रतकरना चाहिये क्योंकि सब जलसमूह
से जब नदी परिपूर्ण हो ५ तब त्रिरात्रव्रतको यत्नसे करै और प्रति
पदा छन्ददर्शन तीनदिनकरै ६ जिसप्रकार किनारे के जलका नदी
पूर स्त्रियों करके प्राप्तहो अथवा उस जलको श्यामवर्ण घड़े में क
घरलावे ७ फिर बुद्धिमान् मनुष्य नदी में जाकर सवेरे स्नान क
पूजनकरै और जो तीनरात्र व्रतकरने में न समर्थहो ८ तो एकबा
भोजनकर व्रतकरै अविच्छिन्नदीप देवे और सवेरे और सन्ध्याके
पूजनकरै ९ महानदी और वरुणजी का नाम उच्चारणकर जलके
मूलमें जलमें शयन करनेवाले केशवभगवान् को स्थापितकरै १
गङ्गा, गौतमीनदी, सिन्धु, कावेरी, सरस्वती, ११ तापी, पयोष्णी, पूर्ण
महेन्द्रसुखदा, काश्यपी, गंडकी इन समुद्रकी नदियों के नमस्कार करै
१२ और फिर वरुणजी के नमस्कारकरै कि हे जल वास करनेवाले,
भगवान्केप्यारे, हे जलजन्तुओंकेनाथ, हे रसोंकेस्वामी हमको सदा
कल्याण दीजिये १३ कुम्हड़े, नारियल और ऋतुके उत्पन्न सुन्दर
फलोंसे हमारे दियेहुए अर्घको ग्रहण कीजिये और हमको वाञ्छित
फलदीजिये १४ तिसपीछे नदीको घीसेपकीहुई नैवेद्यदेवे फिर हे के
शव, हे अनंत, हे जलमें शयन करनेवाले भगवान्के नमस्कारकरै १५
कि हे ईश हमारी रक्षाकीजिये हे गोविंद वरदान दीजिये इसप्रकार
यथाकाल क्रमसे पूजाकरनी चाहिये १६ फिर प्रार्थना उपचारोंसे तीन
रात्र पवित्र होकर नियम करै और पारण से जलके वर्तनको फल
पुष्पोंसे पूजे फिर स्त्री पुरुष बालक नदी के कलशमें स्नानकर गीत
और बाजे बजावें १७। १८ फिर जल जलमें आस्थापितकर फल
पुष्प और अनेकप्रकारके धान्योंसे पूजनकर जलको छिनकते १९
हँसी, गीत और नाच करातेहुए चक्रमें चक्रमें आकर सातों धान्यों
से भरेहुए बांसके वर्तनोंको पूजे २० सात वा पांच वा तीनही वर्तन

यथाशक्तिसे भरै और हितकी इच्छाकरके तीनरात्र नदीका जल न पिये २१ पारण में हविष्यान्न या और ही जो कुछ मिले पारण करे स्नान और पूजनमें भी नदीका जल न लेवे २२ पवित्रअन्न भोजन करनाचाहिये और तीन या सात बांसे के बर्तन देदेवे २३ करुआ, खट्टा और मधुसे रहित हविष्यान्न भोजन करै और पत्थर से पीसे हुए उर्दोंको न खावे २४ इसप्रकार तीनवर्ष इस व्रतकोकरै जब तीन वर्ष इसीतरहसे समाप्त होजावें तो उद्यापनकरै २५ कालीगौ काले कपड़े तिल और शक्तिके अनुसार सोना स्त्री पुरुष ब्राह्मणको देवें २६ और नदी के रूपसे सोनेके वरुण बनवावे और वरुणका मण्डल सर्व्वतोभद्र भी बनवाकर २७ उपहारसमेत कलशको स्थापितकर भक्तिसे विधिपूर्व्वक पूजनकर ब्राह्मण को दे देवे २८ फिर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावे और अच्छे शीलयुक्त सब शास्त्रों में रत गुरुजी को भी द्रव्यके अनुसार पूजे २९ इसप्रकार करनेसे परिपूर्ण व्रत होताहै सौभाग्य, सुखसम्पत्ति और नाशरहित संतान होती है ३० और दुर्गतिको वह मनुष्य नहीं प्राप्तहोता बहुत काल तक स्वर्ग में रहताहै देवता, ऋषि, नाग और सिद्धों की स्त्रियों ने पहले इस व्रतको कियाहै यह नदीत्रिरात्रव्रत अतुल है अब और क्या सुनने की इच्छा है सौभाग्य और सन्तान इस व्रत से सदा निश्चय प्राप्त होती है ३१। ३२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेनदीत्रिरात्रव्रतंनामसप्ततितमोऽध्यायः ७०॥

इकहत्तरवां अध्याय॥

विष्णुजीके सहस्रनाम का वर्णन॥

ऋषिबोले कि हे साधु सूतजी आप बहुत समयतक जीवें क्योंकि अत्यन्त दयालु आपने नारद और महादेवजी का अद्भुत संवाद कहाहै १ अब हे गुरुजी नारद महात्माने श्रद्धासे भगवान् के नाम की महिमा किसप्रकार सुनी है यह कहिये २ सूतजीबोले कि हे सब मुनियो पूर्वके वृत्तान्त को कहताहूं सुनिये हे द्विजों में श्रेष्ठो जिसके

सुननेसे कृष्णमें भक्ति बढ़ती है ३ एक समय नारदजी पिता ब्रह्मा
जीके देखनेको सिद्ध चारणोंसेसेवित मेरुपर्वतके कँगूड़ेपर गये ४
वहांपर मुनियोंमें श्रेष्ठ नारदजी बैठेहुए, देव, संसारके स्वामी, ब्रह्मा
जीके नमस्कारकर बोले ५ कि हे संसारके ईश्वर प्रभुजी नाशरहित
महात्मा भगवान् के नाम की जितनी शक्ति है वह कहिये नामकी
महिमा किसतरहकी है ६ जो ये संसारके स्वामी साक्षात् नारायण
हरि परमात्मा हृषीकेश सवजीवोंमें मिलेहुए हैं ७ उन्हींकी मायासे
मोहित मूर्ख सब मनुष्य इस असार कलियुगमें अधोक्षज भगवान्
को नहीं जानते हैं ८ तब ब्रह्माजी बोले कि हे वत्स नारद इस क
लियुगमें विशेष कर जिसप्रकार नामके उच्चारणपूर्वक भक्ति करनी
चाहिये तैसेही तुम सुननेके योग्यहो ६ पराये नहीं कहेहुए पापोंका
विशोधन हमने देखाहै कि यत्नसे जिष्णु श्रीविष्णुजीका पाप नाश
नेवाला स्मरणकरै १० तदनन्तर सब को झूंठ जानकर हरि के
नामपढ़े जपे तो सबपापों से छूटकर विष्णुजी के श्रेष्ठपदको प्राप्त
हो ११ जे मनुष्य नित्यही हरि ये दोअक्षर कहते हैं वे हरि के
च्चारणही मात्रसे निस्सन्देह मुक्त होजाते हैं १२ सब प्रायश्चित्त
ष्णजीका श्रेष्ठ स्मरणहै प्रातःकाल, रात्रि, सायंकाल और दोप
आदिकों में स्मरणकरै तो मनुष्य के सबपाप छूटजावें और वह न
रायणको प्राप्तहोवे क्योंकि विष्णुजी के स्मरणही से सब क्लेशों
नाश होताहै १३।१४ तिन विष्णुजी के कीर्त्तन से मुक्ति और स्व
प्राप्तहोताहै जिस मनुष्यका जप होम और पूजनआदिकों में व
सुदेवमें मनहै १५ वह जबतक चौदहो इन्द्र बीतते हैं तबतक ना
रहित जानना कहां पुनरावृत्ति का लक्षण स्वर्गकागमन १६ अ
कहां अत्यन्त उत्तम भगवान् का जप वहमुख परमतीर्थ है जिस
मुखसे १७ नमोनारायणाय ऐसा निकलताहै तिससे दिन रात पु
षोंमें श्रेष्ठ मनुष्य विष्णुजीका स्मरणकरै १८ तो हे पुत्र अच्छे व्र
करनेवाले नारद उसके कलियुग के सबपाप नाशहों और नरक
वह न प्राप्तहो यह हमाराकहा वारंवार सत्यहै १९ नामके उच्चार
मात्रसे बड़ेभारी पापसे छूटजाताहै और जो राम राम यह वारंव

जपे २० तो वह चाण्डालभी हो तोभी पवित्र आत्मा निस्सन्देह हो जावे कुरुक्षेत्र, काशी, गया और द्वारिका २१ ये सब तीर्थ नामके उच्चारण मात्रहीसे उसने करलिये और जो कृष्णकृष्ण यह जपे वा पढ़े २२तो इसलोकको छोड़कर वह विष्णुजीके समीप आनन्दकरे और आनन्दसे नृसिंह यह सदैव जपे या पढ़े २३ तो कलियुग में वह भगवान् का भक्त मनुष्य महापापसे छूटजावे सतयुगमें ध्यान, त्रेतायुगमें यज्ञ,द्वापरमें पूजा २४करनेसे जो फल मिलताहै वह कलियुगमें भगवान्का नाम कहनेसे मिलताहै यह जानकर संसारके आत्मा भगवान्में जे निमग्नहों २५ वे सबपापोंसे हीन होकर विष्णुजी के श्रेष्ठ पदको प्राप्तहों और मत्स्य,कूर्म,वराह,नृसिंह, वामन, २६ परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्की ये दश अवतार पृथ्वी में कहेगये हैं २७ इनके नाममात्रही करनेसे सदा ब्राह्मणका मारने वाला भी शुद्ध होजावे सबेरे विष्णुजीका नाम पढ़े जपे और ध्यान करे २८ तो निस्सन्देह सब पापोंसे छूटकर वह नारायणही होजावे सूतजी बोले कि नारद यह सुनकर बड़ी विस्मय को प्राप्तहुए २९ और फिर पितासे बोले कि हे देवताओंमें श्रेष्ठआपने क्या कहा देवता और रुद्र हज़ारों हैं ३० पितर सैकड़ों हैं यक्ष, किन्नर, भूत, प्रेत, पिशाच और जो कोई देवताओं की योनिहैं ३१ तिनके नाम का माहात्म्य ऐसा सुना और नहीं देखा जैसा श्रीविष्णुजी के नाम का माहात्म्य मैंने सुना ३२ जिसके नाममात्रही से निस्सन्देह छूट जावे हे देव पृथ्वीमें घूमने तीर्थ करने से क्याहै ३३ जिन भगवान् के नामही की महिमा सुनकर मोक्ष को प्राप्तहों वह मुख भारीतीर्थ और क्षेत्रहै ३४ और सब कामना देनेवालाहै जिसमुखमें रामराम ऐसा निकलताहै—अब हे सुव्रत ब्रह्माजी भगवान्के नाम और पराक्रम कितने हैं ३५ यह सब विशेषकर हमसे कहिये तब ब्रह्माजी बोले कि सबमें व्यापक, विष्णु, परमात्मा, सनातन, ३६ आदि और अन्तरहित, श्रीमान्, प्राणियों की आत्मा, प्राणियों के रक्षा करने वाले जिनसे हम उत्पन्नहैं सो विष्णु सदा रक्षाकरें ३७ सोई कालके काल, हमारे पूर्वज, नाशरहित,कमलनयन, बुद्धिमान्, अव्ययपुरुष,

३८ शेषके ऊपर शयन करनेवाले, विष्णु, हजारों मस्तकवाले, म
हाप्रभु, सर्वभूतमय, साक्षात् संसारकेरूप, जनार्दन, ३९ कैटभ राक्ष
के वैरी, विष्णु, धाता, देव और संसारके स्वामी हैं हे पुरुषोंमें श्रे
नारद तिनके नाम गोत्र हम नहीं जानते हैं ४० हे तात वेदवा
भी मैंहूं तिसपरभी कुछ नहीं जानताहूं इससे तुम वहांजाओ ज
पर संसारके स्वामी महादेवजी हैं ४१ वह हे मुनिश्रेष्ठ तुमसे स
तत्त्व कहेंगे वे पुरुष श्रीमान् और सदा कैलासके स्वामी हैं ४२ औ
सब विष्णुभक्तों में ये श्रेष्ठ, परात्पर, पांच मुखवाले, पार्वतीके प
सब दुःखोंके नाश करनेवाले, ४३ विश्वेश्वर, विश्वनाथ, और स
भक्तोंके प्यारे हैं हे देवोंमें श्रेष्ठ नारद वहांजावो तो वे सब कहदें
४४ पिताके वचन सुन नामका माहात्म्य जानने के लिये कैला
जाने का प्रारम्भ करते भये ४५ कि जहां पर ऐश्वर्य के देनेवा
संसारके स्वामी देवहैं वहांपर जाकर नारद ने देवताओं से पूजि
महादेवजी को देखा ४६ जो कि कैलासके कँगूड़े में बैठे, देवदे
संसारके स्वामी, पांचमुँह दश भुजा तीननेत्र शूल हाथमेंलिये ४
मुण्डमाल, खट्वाङ्ग, तीक्ष्ण शूल, तलवार और पिनाकधारे, भी
वरकेदेनेवाले, बैलवाहन, ४८ भस्म अंगमें लगाये, सर्पोंके धार
करने से शोभायुक्त, चन्द्रमा मस्तकमें धारे, नील मेघोंके सदृश,
रोड़ सूर्य्यके समान दीप्तिवाले, ४९ क्रीड़ा करतेहुए और देवता
के स्वामी हैं इनको देखकर नारदने साष्टांग दण्डवत्किया तब
स्मयसे फूलेहुए नेत्रयुक्त वैष्णवों में परमश्रेष्ठ महादेवजी नारद
से बोले कि हे देवर्षियोंमें श्रेष्ठ तुम कहांसे यहां आयेहो ५० ५
तब नारदजी बोले कि हे महादेव जी एक समय में मैं ब्रह्माजी
समीपगया वहांपर मैंने विष्णुजीका उत्तम माहात्म्यसुना ५२ क
कि हे देवोंमें श्रेष्ठ ब्रह्माजी ने हमारे आगे नामकी जितनी शक्ति
वह सब कही उसको मैंने उनके मुखसे सुना ५३ तब मैंने विष्णु
के हजारनाम पूंछे तो ब्रह्माने हमसे कहा कि हे नारद मैं नहीं जा
नताहूं ५४ इनको महारुद्रजी जानते हैं वे सब कहेंगे तब तो मैं
आश्चर्य्य को प्राप्त होकर आपके पास आयाहूं ५५ कि इस वा

कलियुगमें मनुष्य थोड़ी उमरके होकर अधर्ममें नित्यही रत रहते हैं फिर उनकी नाम में निष्ठाभी नहीं होती ५६ और ब्राह्मण पाखण्डी, अधर्म्म में सदारत, सन्ध्यासे हीन, व्रतों से भ्रष्ट, दुष्ट और मलिनरूप रहते हैं ५७ जैसे ब्राह्मण वैसेही क्षत्रिय वैश्य शूद्र और अन्यभी हैं भगवान् के भक्त मनुष्य नहीं होते ५८ और हे विश्वेश्वर प्रभुजी शूद्र द्विजोंसे बाहर हैं कलियुग में धर्म्म अधर्म्म हित और अहित को वे नहीं जानते ५९ ऐसा जानकर हे स्वामिन् ब्रह्माजी के मुख से फिर नाम का माहात्म्य सुनकर मैं आपके पास आयाहूं ६० आप सब देवोंके देव, सदा हमारे स्वामी, त्रिपुरासुरके वैरी, संसारके आत्मा और धाताहैं ६१ इससे प्रसन्न होकर विष्णु जीके सहस्रनाम जो कि पुरुषों को सौभाग्य और श्रेष्ठ भक्ति करने वाले ६२ ब्राह्मणों को ब्रह्म देनेवाले क्षत्रियों को जय वैश्यों को धन और शूद्रोंको सुख देनेवाले हैं वे कहिये ६३ हे महादेवजी आपके सकाशसे हम सुनने की इच्छा करते हैं क्योंकि आप भगवान् के भक्तोंमें समर्थहैं ६४ इससे प्रसन्न होकर छिपेहुए परमपवित्र और सदा सर्वतीर्थमयको कहिये ६५ मैं सुनने की इच्छा करताहूं हे विश्वेश्वर प्रभु जी कहिये नारदजी के वाक्य सुनकर विस्मयसे फूले हुए नेत्र ६६ और विष्णुजीके नामों को स्मरणकर रोमावलीयुक्तहो महादेवजी बोले कि हे ब्रह्मन् विष्णुजीके हज़ारनाम परमगोप्य हैं ६७ ये सुनकर हेवत्स मनुष्य दुर्गतिको कभी नहीं प्राप्तहोता कुछ काल बीतनेपर पार्वतीजी हमसे बोलीं ६८ कि हे कैलासके स्वामी हे देवों के ईश आप परैश्वर्य्यसमाहित होकर क्या जपते हैं यह हमसे कहिये ६९ भस्म लगाये हुए मृगछाला बिछाये और आप जटा धारण कियेहुए क्यों रहते हैं यह हे विश्वेश्वर प्रभुजी कहिये ७० क्योंकि तुम सब देवताओं के देवता, सब कर्मोंके गुरु, हमारे स्वामी, संसारके ईश, संसारके नाथ और संसारके प्रभुहैं ७१ तब महादेवजी बोले कि हे ब्रह्मन् नारद पार्व्वती ने जब बारंबार पूछा तो मैंने उनके आगे विशेषकर सब कहा ७२ अब जो पार्व्वती से कहाथा वही तुमसे कहताहूं सुनिये जिससे मुक्तिके देनेवाले भग-

वान् निस्सन्देह प्रसन्न होते हैं ७३ क्योंकि हमारे साक्षात् पिता और सदाके हमारे बन्धु भगवान् हैं हम सदाके उनके भक्तहैं और ये सदाके हमारे स्वामी हैं ७४ अबहम सहस्रनाम कहते हैं सुनिये सूतजी बोले कि हे द्विजो नारदजी से ऐसा कहकर जो पार्वती से पहले विष्णुजीका सहस्रनाम कहाथा वह कहनेलगे महादेवजी से कैलासमें नारद ने सहस्रनाम सब सुनलिया ७५।७६ और कदाचित् दैवयोगसे कैलाससे नारदमुनि परमअद्भुत नैमिषारण्यतीर्थ में प्राप्तहुए ७७ तो वहांके सब ऋषि उन ऋषिश्रेष्ठको देखकर उन महात्मा की विशेषकर पूजा करतेभये ७८ और फूलेहुए नेत्रयुक्त, द्विजश्रेष्ठ वैष्णव ऋषि आतेहुए नारद को जानकर फूल बरसाते भये ७९ पाद्य, अर्घ, आचारकी आरती और फल मूलकी नैवेद्य लगाकर पृथ्वी में दण्डवत् करते भये ८० और बोले कि हे महामुनिजी इसदेशमें हमकृतकृत्यहैं क्योंकि पवित्र और पापनाशनेवाला आपका दर्शन हुआहै ८१ हे देवेश हे ब्रह्मन् तुम्हारे प्रसादसे पुराणसुने अब यह कहिये कि किस तरहसे सब पाप नाशहों ८२ दान, तपस्या, तीर्थ, तप, यज्ञ, दान, ध्यान, इन्द्रियनिग्रह और शास्त्रसमूहों के विना कैसे मुक्ति मिले ८३ नारदजी बोले कि कैलास के कँगूरे में बैठेहुए, देवदेव, संसारके गुरु, महादेवजी के नमस्कारकर पार्वतीजी उनसे बोलीं ८४ कि हे भगवन् तुम परदेव, सर्वज्ञ, सबसे पूजित इन्द्र और सूर्य्यादिक देवोंसे भी पूजितहो ८५ और सब लोग वर देनेवाले आपको पूजकर मनोवांछित सिद्धिको प्राप्तहोते हैं क्योंकि आप जन्म और मृत्युसे रहित, अपनेआप उत्पन्न और सर्वशक्तिमान् हैं ८६ हे स्वामिन् आपनंगे, कामदेवके नाश करनेवाले, जटा रखाये और भस्म धारेहुए सदा क्या ध्यान करतेहो और क्यों तपस्या करतेहो ८७ हे देवोंके स्वामी क्या जपतेहो हमारे बड़ा कौतूहल है जो आप कृपा करते हो तो अच्छे व्रतको कहिये ८८ तब महादेवजी बोले कि हे भद्रे यह किसीसे नहीं कहा हमारे छिपाहुआ है तुम भक्त और हमारी प्यारीहो इससे तुमसे कहता हूं ८९ पूर्वकालमें सतयुगमें हे देवि सम्पूर्ण मनुष्य शुद्धमतिवाले सब ईश्वरा-

के ईश्वर एक विष्णुही को जानकर पूजन करते थे ९० और इस लोक और परलोक की परमऋद्धिको प्राप्तहोते थे जिसको सब देवता और क्लेशसंयुक्त ऋषि नहीं प्राप्त होतेथे ९१ और हमारे मुख से भी विष्णुवहिर्मुख देवता सुनकर जे नाममें निश्चय करनेवाले हैं वे उस गतिको प्राप्तहोतेथे ९२ वेद, पुराण, सिद्धान्त ये जो भिन्न हैं तिनसे विभ्रान्तचित्तवाले तत्त्व और परम्पद क्या है इसके निश्चयको नहीं प्राप्तहोतेथे ९३ और हे प्रिये तुलापुरुषदान आदिक अश्वमेधआदिक यज्ञ और काशी प्रयाग आदिक तीर्थस्नान आदिकों से ९४ गयाश्राद्धआदिक पितृकर्म वेदपाठआदिक जप तपस्या घोर नियम यम प्राणियों के ऊपरदया आदिक ९५ गुरुकी सेवा वर्णाश्रम से युक्त सेवने योग्य धर्म और ज्ञान ध्यानआदिक करोड़ों जन्मके उत्तम चरित्रोंसे ९६ विष्णु सब ईश्वरोंके ईश्वर पुराणपुरुषोत्तमको सब भावोंसे आश्रित होकर श्रेष्ठ कल्याणको न प्राप्तहोते थे ९७ हे शत्रुओं को तापदेनेवाली पार्वती नहीं और में गतिवाले भोगी मनुष्य ज्ञान वैराग्यसे रहित ब्रह्मचर्य्य आदिसे वर्जित ९८ सब धर्म्मोंसे त्यागेहुए केवल विष्णुजीका नाममात्रही कहनेवाले जिस गतिको सुखसे प्राप्तहोतेहैं उसको सब धर्म्म करनेवाले नहीं प्राप्तहोते हैं ९९ विष्णुजी सदैव स्मरण करनेयोग्यहैं कभी बिसारने के योग्य नहीं हैं सब विधि निषेध इसीके विधि करनेवाले हैं १०० किन्तु पापरहित ब्रह्मादिक देवता और ऋषि विष्णुजी के नामही सें निर्भय यथेष्ट पदको प्राप्तहुए हैं १०१ अच्छी प्रकार से इससे श्रेष्ठकी वांछा करनेवाले अहंकारयुक्त आत्मा मुझसे आराधित भगवान् अपनी पूजाको न प्राप्तहोकर १०२ साक्षात् जगन्नाथ भक्तों के ऊपर दया करनेवाले केशव भगवान् करुणामय प्रसन्न होकर अंशांशसे देवता पितृ और ब्राह्मणों को हव्य और कव्य आदिक से पूजन करतेभये तबसे सचराचर तीनोंलोकमें ब्रह्मादिक सब देवता भगवान्के प्रसादसे पूजेजाते हैं और हमसे भगवान् बोले कि हमसे पूज्य और श्रेष्ठहोगे १०३। १०४। १०५ हेमहादेवजी द्वापर आदिक युगमें मानुष आदिकों में कला से तुम्हारी

कर सदा वरदान ग्रहणकरेंगे १०६ और रचेहुए अपने आगमोंसे मनुष्योंको हमसे विमुखकरो और हमारी रक्षाकरो जिससे यह उत्तरोत्तर सृष्टिहो १०७ और मोहको जल्द उत्पन्नकरो जो मनुष्यों को मोहितकरे हे महाबाहु महादेवजी मोहरूपी शास्त्रकीजिये १०८ और हे महाभुज अतथ्य वितथ्य दिखलाइये आत्माको प्रकाशित और हमको प्रकाशरहित कीजिये १०९ तदनन्तर महादेवजी परमेश्वरसे नमस्कारकर बोले कि ब्रह्महत्या हजारोंहोंगी तो पापकैसे नाशहोगा ११० और सैकड़ों करोड़ कल्पों में भी फिर तुम्हारा ज्ञान न होगा तिससे मैंने स्पर्द्धाकी हे हरिजी पवित्र कैसे हूंगा १११ हे गोविन्दजी जिस प्रायश्चित्तकी इच्छाकरतेहो वह हमसे कहिये तब तो प्रसन्नहोकर भगवान् अपने तत्त्वको कहनेलगे ११२ हे हिमाचल की पुत्री जिससे हम तिनसे अधिकहुए तिन्हीं को नित्यही तपस्यासे भजता स्तुति करता और चिन्तना करताहूं ११३ श्रेष्ठ विष्णुही एकहैं और तिनका ज्ञान मुक्तिका साधन करनेवाला है यह शास्त्रोंका निर्णयहै इससे और मोहन के लियेहै ११४ ज्ञान के विना जो मुक्तिहै वह हमारी और विष्णुजी की समता है और तीर्थादि मात्रसे ज्ञान विष्णुजीसे हमारे अधिकहै ११५ और मुक्त हमलोगों का हरिजीसे भेद नहीं है इत्यादिक सब मोहके लिये कहाहै और कामके लिये नहीं तिसीसे हे पार्वती हमारीसी दूसरेकी महिमा नहीं है मैं संसार में पूज्यहों ११६ तब पार्वतीजी बोलीं कि हे देवों के स्वामी हे शंकर हे प्रभुजी जिसप्रकार मैं भी सबकी ईश्वरी, उपमारहित और आपके सदृश होजाऊं वह आप कहिये ११७ तब महादेवजी बोले कि हे प्रिये तुमने अच्छा प्रश्न किया अब मुख्य विष्णु भगवान् के सहस्रनामको कहताहूं ११८ अस्य श्रीविष्णोर्नामसहस्रस्तोत्रस्य श्रीमहादेवऋषिरनुष्टुप्छंदः॥ ह्रींबीजं श्रींशक्तिः क्लींकीलकंचतुर्वर्गधर्मकामार्थमोक्षार्थेजपेविनियोगः॥ इस को पढ़कर विनियोग अर्थात् जल पृथ्वी में छोड़ देवे॥ वासुदेव और महाहंसको हम ध्यान करते हैं विष्णुजी हमको प्रेरणा करें॥ अंगन्यास और करन्यास विधिपूर्वक जो पढ़े तो वह फल निम्न-

देह करोड़ गुणाहो ११९ श्रीवासुदेवः परंब्रह्मइतिहृदये ॥ ऐसा पढ़कर हृदय को छुये ॥ मूलप्रकृतिरितिशिरः ॥ ऐसा पढ़कर शिर छुये ॥ महावराहइतिशिखा ॥ यह पढ़कर झोंटई को छुये ॥ सूर्य्यवंशध्वजइति कवचम् ॥ यह पढ़कर कवच को छुये ॥ ब्रह्मादिकाम्यललितजगदाश्चर्यशैशवइतिनेत्रम् ॥ यह पढ़कर नेत्रको छुये ॥ यथार्त्थखण्डिताशेषइत्यस्त्रम् ॥ यह पढ़कर अस्त्रको छुये ॥ नमोनारायणायेति न्यासंसर्वत्रकारयेत् ॥ यह पढ़कर सब अंगों को छुये ॥ नारायण, पुरुष, महात्मा, विशेषशुद्धधिष्ण्य और महाहंस को हम ध्यान करते हैं ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ क्लीं कृष्णाय विष्णवे ह्रीं रामायधीमहि तन्नोदेवःप्रचोदयात् ॥ श्रौंनृसिंहायविद्महे श्रींश्रीकण्ठायधीमहि तन्नोविष्णुःप्रचोदयात् ॥ ॐ वासुदेवायविद्महे देवकीसुतायधीमहि तन्नःकृष्णः प्रचोदयात् ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ क्लींकृष्णायगोविन्दाय गोपीजनवल्लभायस्वाहा ॥ यह मन्त्र उच्चारणकरै वा नाशरहित विष्णुजीको जपै और बुद्धिमान् मनुष्य लक्ष्मीके निवास संसारके स्वामीका स्तोत्रपढ़ै १२० वासुदेव, परंब्रह्म, परमात्मा, परात्पर, परंधाम, परंज्योति, परंतत्त्व, परंपद, १२१ पर,शिव, पर ध्यानके योग्य,परंज्ञान,परागति, परमार्थ, परंश्रेय, परानंद,परोदय,१२२ अव्यक्तसे पर, परंव्योम, परमर्द्धिः, परेश्वर, निरामय,निर्विकार, निर्विकल्प, निराश्रय, १२३ निरंजन, निरातंक, निर्लेप, निरवग्रह, निर्गुण, निष्कल, अनन्त, अभय, अचिन्त्य, अवलोचित, १२४ अतीन्द्रिय, अमित, अपार,अनीश, अनीह, अव्यय, अक्षय, सर्वज्ञ, सर्वग, सर्व, सर्वद, सर्वभावन, १२५ सर्वशास्ता, सर्वसाक्षी, सबके पूज्य, सर्वदृक्,सर्वशक्ति, सर्वसार, सर्वात्मा, सर्वतोमुख, १२६ सर्वावास,सर्वरूप,सर्वादि,सर्वदुःखहा, सर्वार्थ, सर्वतोभद्र,सर्वकारणकारण, १२७ सर्वातिशयित, सर्वाध्यक्ष, सर्वसुरेश्वर,षड्विंशक, महाविष्णु, महागुह्य, महाविभु, १२८ नित्योदित, नित्ययुक्त, नित्यानन्द,सनातन, मायापति,योगपति,कैवल्यपति,आत्मभू, १२९ जन्ममृत्युजरातीत, कालातीत, भवातिग, पूर्ण,सत्य, शुद्धबुद्धस्वरूप, नित्यचिन्मय,१३० योगप्रिय,योगगम्य, भवबन्धैकमोचक,पुराण

प्रत्यक्, चैतन्य, पुरुषोत्तम, १३१ वेदान्तवेद्य, दुर्ज्ञेय, तापत्रयविवर्जित, ब्रह्मविद्याश्रय, अनाद्य, स्वप्रकाश, स्वयंप्रभु, १३२ सर्वोपेय, उदासीन, प्रणव, सर्वतःसम, सर्वानवद्य, दुष्प्राप्य, तुरीय, तमसःपर, १३३ कूटस्थ, सर्वसंश्लिष्ट, वाङ्मनोगोचरातिग, संकर्षण, सर्वहर, काल, सर्वभयंकर, १३४ अनुल्लंघ्य, चित्रगति, महारुद्र, दुरासद, मूलप्रकृति, आनंद, प्रद्युम्न, विश्वमोहन, १३५ महामाय, विश्वबीज, परशक्ति, सुखैकभू, सर्वकाम्य, अनन्तलील, सर्वभूतवशंकर, १३६ अनिरुद्ध, सर्व्वजीव, हृषीकेश, मनःपति, निरुपाधिप्रिय, हंस, अक्षर सर्व्वनियोजक, १३७ ब्रह्मप्राणेश्वर, सर्व्वभूतभृत्, देहनायक, क्षेत्रज्ञ, प्रकृति, स्वामी, पुरुष, विश्वसूत्रधृक्, १३८ अंतर्यामी, त्रिधामांत, साक्षी, त्रिगुण, ईश्वर, योगिगम्य, पद्मनाभ, शेषशायी, श्रियःपति, १३९ श्रीसदोपास्यपादाब्ज, नित्यश्री, श्रीनिकेतन, नित्यंवक्षःस्थलस्थश्री, श्रीनिधि, श्रीधर, हरि, १४० वश्यश्री, निश्चल, श्रीद, विष्णु, क्षीराब्धिमंदिर, कौस्तुभोद्भासितोरस्क, माधव, जगदार्तिहा, १४१ श्रीवत्सवक्षा, निस्सीमकल्याणगुणभाजन, पीतांबर, जगन्नाथ, जगत्त्राता, जगत्पिता, १४२ जगद्बंधु, जगत्स्रष्टा, जगद्धाता, जगन्निधि, जगदेकस्फुरद्वीर्य, अनहंवादी, जगन्मय, १४३ सर्वाश्चर्यमय, सर्वसिद्धार्थ, सर्वरंजित, सर्वामोघोद्यम, ब्रह्मरुद्राद्युत्कृष्टचेतन, १४४ शंभो, पितामह, ब्रह्मपिता, शक्राद्यधीश्वर, सर्वदेवप्रिय, सर्वदेवमूर्ति, अनुत्तम, १४५ सर्वदेवैकशरण, सर्वदेवैकदैवत, यज्ञभुक्, यज्ञफलद, यज्ञेश, यज्ञभावन, १४६ यज्ञत्राता, यज्ञपुमान्, वनमाली, द्विजप्रिय, द्विजैकमानद, विप्रकुलदेव, असुरान्तक, १४७ सर्वदुष्टान्तकृत, सर्वसज्जनानन्यपालक, सप्तलोकैकजठर, सप्तलोकैकमण्डन, १४८ सृष्टिस्थित्यंतकृत्, चक्री, शार्ङ्गधन्वा, गदाधर, शङ्खभृत्, नन्दकी, पद्मपाणि, गरुड़वाहन, १४९ अनिर्देश्यवपु, सर्वपूज्य, त्रैलोक्यपावन, अनंतकीर्ति, निस्सीमपौरुष, सर्वमंगल, १५० सूर्यकोटिप्रतीकाश, यमकोटिदुरासद, मयकोटिजगत्स्रष्टा, वायुकोटिमहाबल, १५१ कोटीन्दुजगदानन्दी, शम्भुकोटिमहेश्वर, कन्दर्पकोटिलावण्य, दुर्गाकोट्यरिमर्दन, १५२ समुद्रकोटिगंभीर, तीर्थकोटिसमाह्वय, कुबेरकोटि

लक्ष्मीवान्, शक्रकोटिविलासवान्, १५३ हिमवत्कोटिनिष्कम्प, कोटिब्रह्माण्डविग्रह, कोट्यश्वमेधपापघ्न, यज्ञकोटिसमार्चन, १५४ सुधाकोटिस्वास्थ्यहेतु, कामधुक्, कोटिकामद, ब्रह्मविद्याकोटिरूप, शिपिविष्ट,शुचिश्रवा, १५५ विश्वंभर, तीर्थपाद, पुण्यश्रवणकीर्त्तन, आदिदेव, जगज्जैत्र,मुकुन्द, कालनेमिहा १५६ वैकुण्ठ, अनन्तमाहात्म्य, महायोगेश्वरोत्सव, नित्यतृप्त,लसद्भाव, निश्शंक,नरकांतक, १५७ दीनानाथैकशरण, विश्वैकव्यसनापह, जगत्कृपाक्षम,कृपालु, सज्जनाश्रय, १५८ योगेश्वर, सदोदीर्ण, वृद्धिक्षयविवर्जित, अधोक्षज, विश्वरेता, प्रजापतिशताधिप, १५९ शक्रब्रह्मार्चितपद, शम्भुब्रह्मोर्ध्वधामग,सूर्यसोमेक्षण,विश्वभोक्ता,सर्वस्यपारग, १६० जगत्सेतु, धर्मसेतुधर,विश्वधुरधर,निर्मम,अखिललोकेश,निःसंग,अद्भुतभोगवान्,१६१ वश्यमाय, वश्यविश्व, विष्वक्सेन,सुरोत्तम, सर्वश्रेयःपति दिव्यानर्घ्यभूषणभूषित, १६२ सर्वलक्षणलक्षण्य, सर्व्वदैत्येन्द्रदर्पहा, समस्तदेवसर्वस्व, सर्वदैवतनायक,१६३ समस्तदेवकवच, सर्वदेवशिरोमणि,समस्तदेवतादुर्ग, प्रपन्नाशनिपंजर, १६४ समस्तभयहन्नामा, भगवान्,विष्टरश्रवा,विभु, सर्वहितोदर्क,हतारि,स्वर्गतिप्रद, १६५ सर्वदैवतजीवेश, ब्राह्मणादिनियोजक, ब्रह्मशम्भु, परार्द्धायु, ब्रह्मज्येष्ठ, शिशु,स्वराट्,१६६ विराड्,भक्तपराधीन, स्तुत्य, स्तोत्रार्थसाधक, परार्थकर्त्ता, कृत्यज्ञ, स्वार्थकृत्यसदोज्झित, १६७ सदानंद, सदाभद्र, सदाशान्त, सदाशिव, सदाप्रिय, सदातुष्ट,सदापुष्ट, सदार्चित, १६८ सदापूत, पावनाग्र्य, वेदगुह्य, वृषाकपि, सहस्रनामा, त्रियुग,चतुर्मूर्ति,चतुर्भुज, १६९ भूतभव्यभवन्नाथ, महापुरुषपूर्वज, नारायण, मुंजकेश, सर्व्वयोगविनिस्सृत, १७० वेदसार, यज्ञसार, सामसार, तपोनिधि,साध्य,श्रेष्ठ,पुराणर्षि, निष्ठाशांति,परायण,१७१ शिवत्रिशूलविध्वंसी, श्रीकण्ठैकवरप्रद,नर,कृष्ण, हरि, धर्म्मनन्दन, धर्मजीवन,१७२ आदिकर्त्ता, सर्वसत्य, सर्वस्त्रीरत्नदर्पहा, त्रिकालजितकन्दर्पउर्वशीसृड्, मुनीश्वर, १७३ आद्य,कवि, हयग्रीव, सर्ववाक्, ईश्वरेश्वर, सर्व्वदेवमय, ब्रह्मा, गुरु, वागीश्वरीपति, १७४ अनन्तविद्याप्रभव, मूलाविद्याविनाशक, सर्व्वज्ञद, जगज्जाड्यना-

शक्र, मधुसूदन, १७५ अनेकमंत्रकोटीश, शब्दब्रह्मैकपारग, आदि विद्वान्, वेदकर्त्ता, वेदात्मा, श्रुतिसागर, १७६ ब्रह्मार्थवेदहरण सर्वविज्ञानजन्मभू, विद्याराज, ज्ञानमूर्ति, ज्ञानसिंधु, अखण्डधी, १७७ मत्स्यदेव, महाश्रृङ्ग, जगद्बीजवहित्रदृक्, लीलाव्याप्ताखिलांभोधि चतुर्वेदप्रवर्त्तक, १७८ आदिकूर्म, अखिलाधार, तृणीकृतजगद्भर अमरीकृतदेवौघ, पीयूषोत्पत्तिकारण, १७९ आत्माधार, धराधार अपज्ञांग, धरणीधर, हिरण्याक्षहर, पृथ्वीपति, श्राद्धादिकल्पक, १८० समस्तपितृभीतिघ्न, समस्तपितृजीवन, हव्यकव्यैकभुक्, हव्यकव्यैकफलदायक, १८१ रोमान्तर्लीनजलधि, क्षोभिताशेषसागर महावराह, यज्ञघ्नध्वंसक, याज्ञिकाश्रय, १८२ श्रीनृसिंह, दिव्यसिंह सर्व्वानिष्टार्थदुःखहा, एकवीर, अद्भुतबल, यंत्रमंत्रैकभंजन, १८३ ब्रह्मादिदुःसहज्योति, युगांताग्न्यतिभीषण, कोटिवज्राधिकनख, जगदुष्प्रेक्ष्यमूर्तिधृक् १८४ मातृचक्रप्रमथन, महामातृगणेश्वर, अचिंत्यामोघवीर्य्याढ्य, समस्तासुरघस्मर, १८५ हिरण्यकशिपुच्छेदी, काल, संकर्षणीपति, कृतान्तवाहनासह्य, समस्तभयनाशन, १८६ सर्वविघ्नांतक, सर्वसिद्धिद, सर्वपूरक, समस्तपातकध्वंसी, सिद्धमंत्राधिकाकय, १८७ भैरवेश, हरार्तिघ्न, कालकोटिदुरासद, दैत्यगर्भश्राविनामा, स्फुटद्ब्रह्मांडगर्जित, १८८ स्मृतमात्राखिलत्राता, अद्भुतरूप, महाहरि, ब्रह्मचर्यशिरःपिंडी, दिक्पाल, अर्द्धांगभूषण, १८९ द्वादशार्कशिरोदामा, रुद्रशीर्षैकनूपुर, योगिनीग्रस्तगिरिजात्राता, भैरवतर्जक, १९० वीरचक्रेश्वर, अत्युग्र, अपमारि, कालशंबर, क्रोधेश्वर, रुद्रचंडीपरिवारादिदुष्प्रभुक्, १९१ सर्वाक्षोभ्य, मृत्युमृत्यु, कालमृत्युनिवर्तक, असाध्यसर्वरोगघ्न, सर्वदुर्ग्रहसौम्यकृत्, १९२ गणेशकोटिदर्पघ्न, दुःसहाशेषगोत्रहा, देवदानवदुर्दर्शी, जगद्भयदभीषण १९३ समस्तदुर्गतित्राता, जगद्भक्षकभक्षक, उग्रशांबरमार्जार, कालमूषकभक्षक, अनन्तायुधदोर्दण्ड, नृसिंह, वीरभद्रजित, १९४ योगिनीचक्रगुह्येश, शक्रारिपशुमांसभुक्, रुद्र, नारायण, मेषरूपशंकरवाहन, १९५ मेषरूपशिवत्राता, दुष्टशक्तिसहस्रभुक्, तुलसीवल्लभ, वीर, वामाचार, अखिलेष्टद,

१९६ महाशिव, शिवारूढ़, भैरवैककपालधृक्, किल्लीचक्रेश्वर, शक्रादिव्यमोहनरूपद, १९७ गौरीसौभाग्यद, मायानिधि, मायाभयापह, ब्रह्मतेजोमय, ब्रह्मश्रीमय, त्रयीमय, १९८ सुब्रह्मण्य, बलिध्वंसी, वामन, अदितिदुःखहा, उपेन्द्र, नृपति, विष्णु, कश्यपान्वयमण्डन, १९९ बलिस्वराज्यद, सर्वदेवविप्रान्नद, अच्युत, उरुक्रम, तीर्थपाद, त्रिपदस्थ, त्रिविक्रम, २०० व्योमपाद, स्वपादाम्भःपवित्रितजगत्त्रय, ब्रह्मेशाद्यभिवंद्यांघ्रि, द्रुतधर्मा, अंघ्रिधावन, २०१ अचिंत्याद्भुतविस्तार, विश्ववृक्ष, महाबल, राहुमूर्धापरांगच्छिद, भृगुपत्नीशिरोहर, २०२ पापत्रस्त, सदापुण्य, दैत्याशानित्यखण्डन, पूरिताखिलदेवाश, विश्वार्थैकावतारकृत्, २०३ स्वमायानित्यगुप्तात्मा, सदाभक्तचिन्तामणि, वरद, कार्तवीर्य्यादिराजराज्यप्रद, अनघ, २०४ विश्वश्लाघ्यामिताचार, दत्तात्रेय, मुनीश्वर, पराशक्तिसदाश्लिष्ट, योगानन्द, सदोन्मद, २०५ समस्तेन्द्रारितेजोहृत्, परमामृतपद्मप, अनुसूयागर्भरत्न, भोगमोक्षसुखप्रद, २०६ जमदग्निकुलादित्य, रेणुकाद्भुतशक्तिकृत्, मातृहत्यादिनिर्लेप, स्कन्दजित्, विप्रराज्यद, २०७ सर्वक्षत्रांतकृत्, वीरदर्पहा, कार्त्तवीर्यजित्, सप्तद्वीपावतीदाता, शिवार्चक, यशप्रद, २०८ भीम, परशुराम, शिवाचार्यैकविश्वभुक्, शिवाखिलज्ञानकोश, भीष्माचार्य्य, अग्निदैवत, २०९ द्रोणाचार्यगुरु, विश्वजैत्रधन्वा, कृतान्तजित्, अद्वितीयतपोमूर्ति, ब्रह्मचर्यैकदक्षिण, २१० मनु, श्रेष्ठ, सतांसेतु, महीयान्, वृषभ, विराट्, आदिराज, क्षितिपिता, सर्वरत्नैकदोहकृत् २११ पृथु, जन्माद्येकदक्ष, गी, श्री, कीर्ति, जगद्वृत्तिप्रद, चक्रवर्त्तिश्रेष्ठ, अद्वयास्त्रधृक् २१२ सनकादिमुनिप्राप्यभगवद्भक्तिवर्द्धन, वर्णाश्रमादिधर्माणांकर्त्ता, वक्ता, प्रवर्तक, २१३ सूर्यवंशध्वज, राम, राघव, सद्गुणार्णव, काकुत्स्थ, वीरराट्, राजा, राजधर्म्मधुरन्धर २१४ नित्यस्वस्थाश्रय, सर्व्वभद्रग्राही, शुभैकदृक्, नररत्न, रत्नगर्भ, धर्माध्यक्ष, महानिधि, सर्व्वश्रेष्ठाश्रय, सर्वशास्त्रार्थग्रामवीर्यवान्, २१५ जगद्वश, दाशरथि, सर्व्वरत्नाश्रय, नृप, समस्तधर्मसू, सर्वधर्मद्रष्टा, अखिलाघहा, २१६ अतीन्द्र, ज्ञानविज्ञानपारद, क्षमांबुधि, सर्वप्रकृष्टशिष्टेष्ट, हर्षशोकाद्यनाकुल, पित्रा-

ज्ञात्यक्तसाम्राज्य, सपत्नोदयनिर्भय, २१७ गुहदेशार्पितैश्वर्य्य, शिवस्पर्द्धा, जटाधर, चित्रकूटाप्तरत्नाद्रि, जगदीश, वनेचर, २१८ यथेष्टामोघसर्व्वास्त्र, देवेन्द्रतनयाक्षिहा, ब्रह्मेन्द्रादिनतैषीक, मारीचघ्न, विराधहा, २१९ ब्रह्मशापहताशेषदण्डकारण्यपावन, चतुर्दशसहस्रोग्ररक्षोघ्नैकशरैकधृक्, २२० खरारि, त्रिशिरोहंता, दूषणघ्न, जनार्दन, जटायुषोग्निगतिद, अगस्त्यसर्वस्वमंत्रराट्, २२१ लीलाधनुःकोट्यपास्तदुन्दुभ्यस्थिमहाचय, सप्ततालव्यधाकृष्टध्वस्तपातालदानव, २२२ सुग्रीवराज्यद, हीनमनसैवअभयप्रद, हनुमद्रुद्रमुख्येशसमस्तकपिदेहभृत, २२३ सनागदैत्यबाणैकव्याकुलीकृतसागर, सम्लेच्छकोटिवाणैकशुष्कनिर्दग्धसागर, २२४ समुद्राद्भुतपूर्वैकबंधसेतु, यशोनिधि, असाध्यसाधक, लंकासमूलोत्कर्षदक्षिण, २२५ वरदृप्तजगच्छल्यपौलस्त्यकुलकृन्तन, रावणिघ्न, प्रहस्तच्छित्, कुम्भकर्णभित्, उग्रहा, २२६ रावणैकशिरच्छेत्ता, निःशंकेन्द्रैकराज्यद, स्वर्गास्वर्गात्वविच्छेदी, देवेन्द्रानिंद्रताहर, २२७ रक्षोदेवत्वहृत, धर्माधर्मत्वघ्न, पुरुष्टुत, नतिमात्रदशास्यारि, दत्तराज्यविभीषण, २२८ सुधावृष्टिमृताशेषस्वसैन्योज्जीवनैककृत्, देवब्राह्मणनामैकधाता, सर्वामरार्चित, २२९ ब्रह्मसूर्येन्द्ररुद्रादिवृन्दार्पितसतीप्रिय, अयोध्याखिलराजन्य, सर्वभूतमनोहर, २३० स्वामितुल्यकृपादण्ड, हीनोत्कृष्टैकसत्प्रिय, स्वपक्षादिन्यायदर्शी, हीनार्थाधिकसाधक, २३१ व्याधव्याजानुचितकृत, तारक, अखिलतुल्यकृत्, पार्वत्याधिक्यमुक्तात्मा, प्रियात्यक्तः, स्मरारिजित्, २३२ साक्षात्कुशलवच्छद्मेन्द्रादितात, अपराजित, कोशलेन्द्र, वीरबाहु, सत्यार्थत्यक्तसोदर, २३३ शरसंधाननिर्धूतधरणीमंडलोदय, ब्रह्मादिकाम्यसांनिध्यसनाथीकृतदैवत, २३४ ब्रह्मलोकाप्तचाण्डालाद्यशेषप्राणिसार्थक, स्वर्नीतगर्दभाश्वादि, चिरायोध्यावनैककृत, २३५ रामद्वितीय, सौमित्रि, लक्ष्मण, प्रहतेन्द्रजित, विष्णुभक्ताप्तरामांघ्रिपादुकाराज्यनिर्वृत, २३६ भरत, असह्यगन्धर्वकोटिघ्न, लवणान्तक, शत्रुघ्न, वैद्यराजायु, र्वेदगर्भौषधीपति, २३७ नित्यामृतकर, धन्वन्तरि, यज्ञ, जगद्धर, सूर्यारिघ्न, सुराजीव, दक्षिणेश, द्विजप्रिय, २३८ छिन्नमूर्द्धापदेशार्क, शेषांगस्थापितामर,

विश्वार्थाशेषकृद्रास्त्रशिरच्छेदाक्षताकृति, २३९ वाजपेयादिनामाग्नि, वेदधर्मपरायण, श्वेतद्वीपपति, सांख्यप्रणेता, सर्वसिद्धिराट्, २४० विश्वप्रकाशितज्ञानयोगमोहतमिस्रहा, देवहूत्यात्मज, सिद्ध, कपिल, कर्दमात्मज, २४१ योगस्वामी, ध्यानभंगसगरात्मजभस्मकृत्, धर्म, वृषेन्द्र, सुरभीपति, शुद्धात्मभावित, २४२ शम्भु, त्रिपुरदाहैकस्थैर्यविश्वरथोद्वह, भक्तशम्भुजित, दैत्यामृतवापी, समस्तप, २४३ महाप्रलयविश्वैकद्वितीयाखिलनागराट्, शेषदेव, सहस्राक्ष, सहस्रास्यशिरोभुज, २४४ फणामणिकणाकारयोजिताब्ध्यंबुदक्षिति, कालाग्निरुद्रजनक, मुशलास्त्र, हलायुध, २४५ नीलाम्बर, वारुणीश, मनोवाक्कायदोषहा, असन्तोष, दृष्टिमात्रपातितैकदशानन, २४६ बलिसंयमन, घोर, रौहिणेय, प्रलम्बहा, मुष्टिकघ्न, द्विविदहा, कालिन्दीकर्षण, बल, २४७ रेवतीरमण, पूर्वभक्तिखेदाच्युताग्रज, देवकीवसुदेवाह्वकश्यपादितिनन्दन, २४८ वार्ष्णेय, सात्वतांश्रेष्ठ, शौरि, यदुकुलोद्वह, नराकृति, परंब्रह्म, सव्यसाची, वरप्रद, २४९ ब्रह्मादिकाम्यलालित्य जगदाश्चर्यशैशव, पूतनाघ्न, शकटभित्, यमलार्जुनभंजन, २५० वातासुरारि, केशिघ्न, धेनुकारि, गवीश्वर दामोदर, गोपदेव, यशोदानन्ददायक, २५१ कालीयमर्दन, सर्वगोपगोपीजनप्रिय, लीलागोवर्द्धनधर, गोविन्द, गोकुलोत्सव, २५२ अरिष्टमथन, कामोन्मत्तगोपीविमुक्तिद, सद्यःकुवलयापीडघाती, चाणूरमर्दन, २५३ कंसारि, उग्रसेनादिराज्यव्यापारितापर, सुधर्म्मांकितभूर्लोक, जरासन्धबलान्तक, २५४ त्यक्तभग्नजरासन्ध, भीमसेनयशःप्रद, सान्दीपनमृतापत्यदाता, कालांतकादिजित्, २५५ समस्तनारकित्राता, सर्व्वभूपतिकोटिजित्, रुक्मिणीरमण, रुक्मिशासन, नरकांतक, २५६ समस्तसुन्दरीकान्त, मुरारि, गरुडध्वज, एकाकीजितरुद्रार्कमरुदाद्यखिलेश्वर, २५७ देवेन्द्रदर्पहा, कल्पद्रुमालंकृतभूतल, बाणबाहुसहाच्छिन्नं, नंद्यादिगणकोटिजित्, २५८ लीलाजितमहादेव, महादेवैकपूजित, इन्द्रार्थार्जुननिर्भंगजयद, पांडवैकधृक्, २५९ काशिराजशिरश्छेत्ता, रुद्रशक्त्यैकमर्दन, विश्वेश्वरप्रसादाक्ष, काशीराजसुतार्दन, २६० शम्भु

प्रतिज्ञाविध्वंसी, काशीनिर्दग्धनायक, काशीशगणकोटिघ्न, लोक शिक्षाद्विजार्चक २६१ युवतीव्रतय, वश्य, शिववरप्रद, शङ्करैकप्र तिष्ठाधृक्, स्वांशशङ्करपूजक, २६२ शिवकन्याव्रतपति, कृष्णरूप शिवारिहा, महालक्ष्मीवपु, गौरीत्राता, वैदलदैत्यहा, २६३ स्वधाममुचु कुन्दैकनिष्कालयवनेष्टकृत्, यमुनापति, आनीतपरिलीनद्विजात्म ज, २६४ श्रीदामरंकभक्तार्थभूम्यानीतेन्द्रवैभव, दुर्वृत्तशिशुपालैक मुक्तिद, द्वारकेश्वर, २६५ आचाण्डालादिकप्राप्यद्वारकानिधिकोटि कृत, अक्रूरोद्धवमुख्यैकभक्तस्वच्छन्दमुक्तिद, २६६ सबालस्त्रीज लक्रीडामृतवापीकृतार्णव, ब्रह्मास्त्रदग्धगर्भस्थपरीक्षिज्जीवनैककृत, २६७ परिलीनद्विजसुतानेता, अर्जुनमदापह, गूढमुद्राकृतिग्रस्त भीष्माद्यखिलकौरव, २६८ यथार्थखण्डिताशेषदिव्यास्त्रपार्थमो हकृत्, गर्भशापच्छलध्वस्तयादवोर्वीभयापह, २६९ जराव्याधारि गतिद, स्मृतिमात्राखिलेष्टद, कामदेव, रतिपति, मन्मथ, शम्ब रान्तक, २७० अनंग, जितगौरीश, रतिकान्त, सदेप्सित, पुष्पपु, विश्वविजयी, स्मर, कामेश्वरीप्रिय, २७१ ऊषापति, विश्वकेतु, विश्व दृप्त, अधिपूरुष, चतुरात्मा, चतुर्व्यूह, चतुर्युगविधायक, २७२ च तुर्वेदैकविश्वात्मा, सर्वोत्कृष्टांशकोटिश, आश्रमात्मा, पुराणर्षि, व्यास, शाखासहस्रकृत् २७३ महाभारतनिर्माता, कवीन्द्र, बादरायण, कृष्णद्वैपायन, सर्वपुरुषार्थैकबोधक, २७४ वेदान्तकर्त्ता, ब्रह्मैकव्यं जक, पुरुवंशकृत, बुद्ध, ध्यानजिताशेषदेवदेव, जगत्प्रिय, २७५ निरायुध, जगज्जैत्र, श्रीधर, दुष्टमोहन, दैत्यवेदबहिःकर्त्ता, वेदार्थ श्रुतिगोपक, २७६ शौद्धोदनि, दृष्टदृष्टि, सुखद, सदसस्पति, यथा योग्याखिलकृप, सर्वशून्य, अखिलेष्टद, २७७ चतुष्कोटिपृथक्तत्त्व, प्रज्ञापारमितेश्वर, पाखण्डवेदमार्गेश, पाखण्डश्रुतिगोपक, २७८ कल्की, विष्णुयशःपुत्र, कलिकालविलोपक, समस्तम्लेच्छदुष्टघ्न, सर्वशिष्टद्विजातिकृत, २७९ सत्यप्रवर्त्तक, देवद्विजदीर्घक्षुधापह, अ श्वचारादिरेवंत, पृथ्वीदुर्गतिनाशन, २८० सद्यःक्ष्माऽनन्तलक्ष्मीकृ त, नष्टनिःशेषधर्मवित्, अनन्तस्वर्णयोगैकहेमपूर्णाखिलद्विज, २८१ असाध्यैकजगच्छास्ता, विश्ववंद्य, जयध्वज, आत्मतत्त्वाधिप, कर्त्

ष्ठ, विधि, उमापति, २८२ भर्तृश्रेष्ठ, प्रजेशाग्र्य, मरीचि, जनकाग्र-
ी, कश्यप, देवराजेन्द्र, प्रह्लाद, दैत्यराट्, शशी, २८३ नक्षत्रेश, रवि,
जःश्रेष्ठ, शुक्र, कवीश्वर, महर्षिराट्, भृगु, विष्णु, आदित्येश, बलि,
वराट्, २८४ वायु, वह्नि, शुचि, श्रेष्ठ, शंकर, रुद्रराट्, गुरु, विद्वत्तम,
चत्ररथ, गन्धर्वाग्र्य, अक्षरोत्तम, २८५ वर्णादि, अग्र्यस्त्रीगौरीश-
त्याग्र्याशी, नारद, देवर्षिराट्, पांडवाग्र्य, अर्ज्जुन, वाद, प्रवादराट्,
२८६ पवन, पवनेशान, वरुण, यादसांपति, गंगातीर्थोत्तम, चूत, त्र-
कग्र्य, वरौषध, २८७ अन्न, सुदर्शन, अस्त्राग्र्य, वज्र, प्रहरणोत्तम,
च्चैःश्रवा, वाजिराज, ऐरावत, इभेश्वर, २८८ अरुंधत्येकपत्नीश,
श्वत्थ, अशेषवृक्षराट्, अध्यात्मविद्याविद्याग्र्य, प्रणव, छंदसांवर,
२८९ मेरु, गिरिपति, मार्ग, मासाग्र्य, कालसत्तम, दिनाद्यात्मा, पूर्व-
सेन्द्र, कपिल, सामवेदराट्, २९० तार्क्ष्य, खगेन्द्र, ऋत्वग्र्य, वसंत,
कल्पपादप, दातृश्रेष्ठ, कामधेनु, आर्तिघ्नाग्र्य, सुहृत्तम, २९१ चिन्ता
मणि, गुरुश्रेष्ठ, माताहिततम, पिता, सिंह, मृगेन्द्र, नागेन्द्र, वा-
सुकि, नृवर, २९२ वर्णेश, ब्राह्मण, चेत और करुणाग्र्यजी के न-
मस्कारहैं ये वासुदेव विष्णुजी के सहस्रनाम, २९३ सब अपराधों
के नाशकरनेवाले, श्रेष्ठ भक्ति के बढ़ानेहारे, नाशरहित ब्रह्मलोका-
दिक सब स्वर्ग के एक साधन, २९४ विष्णुलोक की एक सीढ़ी, सब
दुःख नाशकरनेहारे, सब सुखदेनेवाले, शीघ्रही श्रेष्ठ मोक्षके देनेहारे
२९५ कामक्रोधादि सब मनके मलों के शुद्धकरनेवाले, शान्तिदेने
हारे, महापापी भी मनुष्योंको पवित्र करनेवाले, २९६ सब प्राणियों
को शीघ्र सब अभीष्ट फल देनेवाले, सब विघ्न और सम्पूर्ण अरिष्टों
के नाशनेहारे, २९७ घोर दुःख और तीव्र दारिद्र्य के नाशनेवाले,
तीनों ऋण के दूरकरनेहारे, गुह्य, धनधान्य और यशके करनेवाले,
२९८ सब ऐश्वर्य सबसिद्धि और सबधर्मों के देनेहारे, तीर्थ, यज्ञ,
तप, दान और व्रत करोड़के फलके देनेवाले, २९९ संसार की ज-
ड़ताको नाशनेहारे, सबविद्या प्रवर्त्त करनेवाले, राज्य छूटेहुओं को
राज्य देनेहारे और रोगियोंके सब रोग नाश करनेवाले, ३०० व-
न्ध्या स्त्रियों को पुत्र देनेहारे, उमरसे क्षीणों को जीवन देनेवाले, भूत

ग्रह विषध्वंस करनेहारे और ग्रहपीड़ा नाश करनेवाले हैं ३०१ इस के सुनने,पढ़ने और जपने से मंगलहोताहै, पुण्य और उमरबढ़ती है अंगोंसमेत सब वेद, कोटिन मन्त्र, ३०२ पुराण, शास्त्र और स्मृतियां सब सुनी और पढ़ीहोजाती हैं महादेव कहते हैं कि हेप्रिये पार्वतीजी एक अक्षर जपकर इलोक या चौथाईही जो पढ़ताहै ३०३ तो उसके सब इष्ट शीघ्रही नित्य सिद्ध होजाते हैं और जो सब पढ़े तो उसका क्या कहनाहै इसके समान सब कामों में शीघ्र फल देने वाला कोई नहीं है, ३०४ हे भद्रे तुम इसको छिपाये रखना स्वार्थ की एक सिद्धि के लिये पढ़ना और वैष्णव से हीन, विकल्प से उपहत आत्मावाले भक्ति और श्रद्धासे रहित, विष्णुजी के सामान्य देखने वाले को न देना कल्याण की कामना से पुत्र, शिष्य और मित्रको देना ३०५।३०६ हमारी प्रसन्नता के विना इसको थोड़ी बुद्धिवाले नहीं ग्रहण करेंगे क्योंकि कलियुगमें यह शीघ्र फल देने वाला है इसके कल्प ग्रामों को नारदजी प्राप्तहुए हैं ३०७ भाग्यहीन मनुष्यों का इससे दुःख नाश होता है आर्य्यावर्त में दो तीन वैष्णवों में होगा ३०८ विष्णुजी के बराबर श्रेष्ठधाम श्रेष्ठतपस्या श्रेष्ठधर्म्म नहीं है और वैष्णव के समान मन्त्र भी नहीं है ३०९ विष्णुजी के तुल्य श्रेष्ठसत्य, श्रेष्ठयज्ञ, श्रेष्ठध्यान और श्रेष्ठगति नहीं है ३१० जिसकी जनार्दनजी में भक्तिहो उसको बहुत मंत्र और बहुत विस्तारवाले शास्त्र वा वाजपेय हज़ार यज्ञों के करने से क्या है इनके करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है ३११ क्योंकि विष्णुजी सर्व तीर्थमय सर्व्वशास्त्रमय और सर्व्वयज्ञमय हैं यह मैं सत्य सत्य कहताहूं आब्रह्मसारसर्वस्व यह सब मैंने तुमसे कहा ३१२ तब पार्वती जी बोलीं कि हे संसारके स्वामी महादेवजी मैं धन्यहूं आपने कृपा की है कृतार्थ हूं जो इस रहस्य दुर्लभ स्तोत्र को सुनाहै ३१३ बड़े आश्चर्यकी बातहै कि सब दुःखों के नाश करनेवाले देवों के स्वामी भगवान्के विद्यमान हुए भी मूर्ख लोग जन्म मरणमें क्लेश पाते हैं ३१४ जिन सदा नाथका उद्देश कर नग्न, जटाधारे, सब अंगों में भस्म लगाये, तपस्वी महादेवजी को मनुष्य देखते हैं ३१५ नि

ए लक्ष्मी के पति, मधु दैत्यके वैरी भगवान् से अधिक कौन देव है जिस तत्त्व को योगेश्वर आप नित्य चिन्तना करते हैं ३१६ तिन पुरुषोत्तम से अधिक कौन पदहै कि ज्ञानमें अभिमान करने वाले मूर्ख मनुष्य भगवान् को न जानकर किसको पूजते हैं ३१७ हे नाथ तुमने बहुत कालतक हमसे चुराया है जो ईश्वरको नहीं प्रकाशित किया हम तुम्हारी आद्य दिव्यशक्तिहैं ३१८ बड़े आश्चर्यकी बात है कि सबके ईश्वर, सब देवोंमें उत्तमोत्तम, आपके आदिगुरु विष्णुजी को मनुष्य सामान्य की तरह देखते हैं ३१९ महात्माओं का निश्चय माहात्म्यहै भजतेहुओंको वे भजतेहैं वैर करतेहुए पापोंको क्षमासेयुक्त मनुष्य वृथा उपेक्षा करते हैं ३२० मैंने बाल्यावस्थामें अपने पिता हिमाचलके प्रजा भूखोंमरते देखेथे परंतु दुःखसे लक्ष्मीजी को आराधनकर वे लोग बहुत धनवान् होगये ३२१ लक्ष्मीजीकी कृपायुक्त प्रजाओं से आप आदिक और सुहृत् मित्र बांधवोंसमेत इन्द्रादिक भी शोभित हैं ३२२ लक्ष्मी के बिना देवतापन, ऐश्वर्य और परिग्रह कहां है जीवतेहुये और यातनाओं में स्थित सब उसको भजते हैं ३२३ लक्ष्मी के बिना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भी नहीं होसक्ता जैसे भूंखसे व्याकुलों से योगसमाधि नहीं होसक्ती ३२४ और विष्णुजी संसारके एक साररूप सबलोकों के स्वामी हैं जिनके वश लक्ष्मीजी हैं उन लक्ष्मीको भी महादेवजी को छोड़कर ३२५ अनौद्धत पवित्ररूप, कोमल सम्पदा और पूर्ण महात्मा भगवान् के सबसे अधिक वीर्यसे रहते हैं ३२६ उन देवदेव विष्णुजी की बराबरी कौन देवता पासक्ता है जिनके अंशांश के अवतार के विना सबलीन होजाताहै ३२७ इससे विमोहित संसार को दोषके लिये कहते हैं इसका जन्म वा मृत्यु नहीं है नहीं प्राप्तहोने योग्य स्वार्थ भी नहीं है ३२८ किन्तु हे सर्वेश्वर हे प्रभुजी कामादिकमें आसक्तचित्त होनेसे तुममें प्राप्तहोनेसे वा प्रमादसे जो पढ़ने में प्रतिदिन असमर्थ हूं तो हे वृषभध्वज एकही नामसे जिसमें विष्णुजीके सहस्रनामोंका फलहो वह हे प्रभुजी कहिये ३२९ ३३०तब महादेवजी बोले कि हे रमे हे रामे हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्वती

रामराम यह हज़ार नामों के बराबर फल देनेवाला है ३३१

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारद
संवादेविष्णोर्नामसहस्रंसम्पूर्णनामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

विष्णुजीके सहस्रनामकी महिमा वर्णन ॥

श्रीमहादेवजी बोले कि हे गिरिकन्यके पार्वतीजी ब्राह्मण वा क्ष
त्रिय वा वैश्य वा शूद्रही विशेषकर जो विष्णुजी के सहस्रनाम क
प्रतिदिन पढ़ें १ तो धनधान्य से युक्त विष्णुजीके श्रेष्ठ पदको प्रा
हों श्लोक वा आधा श्लोक, चौथाई वा आधा चौथाई २ भी पढ़
से प्रलयपर्य्यंत मोक्षको प्राप्तहो और हे देवि विन्याससेयुक्त विष
जीके सहस्रनामको ३ जे मनुष्यों में श्रेष्ठ पढ़ते हैं वे नाशरहित प
को प्राप्तहोते हैं एक काल दो काल वा तीनकाल जो पढ़ताहै ४ उ
के जबतक चौदहों इन्द्र बीतते हैं तबतक धन और उमर बढ़ती
पुत्र,पौत्र, लक्ष्मी और विपुल सम्पदा को प्राप्तहोताहै ५ हे पार्वत
बारंबार और बहुत कहनेसे क्याहै विष्णुजी का सहस्रनाम श्रेष्ठ
मोक्षका देनेवालाहै ६ तिसका प्रथम पूजन जो मनुष्य करताहै व
सम्पूर्ण पूजन करचुका यह पूजन वर्ष वर्ष में होना अवश्यही चाहि
७ और पढ़नेमें व्यग्रता न करनी चाहिये जो पढ़ने में व्यग्रता क
रताहै उसकी उमर और द्रव्य नाश होजाती है ८ जंबूद्वीपमें पृथ्वी
में जितने तीर्थ हैं वे सब तीर्थ विष्णुजीके सहस्रनाम में हैं ९ गंगा
यमुना, त्रिवेणी, गोदावरी, सरस्वती नदी और सब तीर्थ वहां प
बसते हैं जहांपर विष्णुजीका सहस्रनाम स्थित होताहै १० यह स
हस्रनाम परमपवित्र और भक्तोंको सदा वल्लभ है दासभावसे भक्ति
भाव नित्यसे ध्यान करने योग्य है ११ इस श्रेष्ठ सहस्रनाम को जे
बुद्धिमान् पढ़ते हैं उनके सब पाप छूटजाते हैं और वे भगवान के
पास प्राप्तहोते हैं १२ अरुणोदयकालमें जे पढ़ते वा जपते हैं नि
की आयुर्बल वा लक्ष्मी दिनदिनमें बढ़ती है १३ रात्रिमें जागरण
प्राप्त होनेमें कलियुगमें भगवान्‌का भक्त मनुष्य इसको पढ़े तो अ

तक चौदहो इन्द्रबीतें तब तक मोक्षको प्राप्तहो १४ और एकएक नामसे भगवान् में तुलसी चढ़ावे तो वहपूजा करोड़ यज्ञसे अधिक फल देनेवाली है १५ और जे ब्राह्मण राहमें चलतेहुए पढ़ें तो उन को राहसे उत्पन्न कुछ दोष न हों १६ हे पार्वती देवी केशवजी का माहात्म्य कहताहूं जे मनुष्यों में श्रेष्ठ इसको सुनते हैं वे बड़े पुण्य रूपी होते हैं १७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति-नारदसंवादेसहस्रनाममहिमानामद्विसप्ततितमोध्यायः ७२॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

रामरक्षा स्तोत्र का वर्णन॥

महादेवजी बोले ॐ रामरक्षास्तोत्रस्य श्रीमहर्षिविश्वामित्रऋषिः श्रीरामोदेवता अनुष्टुप्छन्दः विष्णुप्रीत्यर्थे जपेविनियोगः॥ यह मन्त्र पढ़कर विनियोग का जल छोड़देवे १ फिर अलसीके फूलके समान दीप्तिवाले, पीताम्बर पहने, अच्युत, कमलके तुल्य नेत्र वाले, श्रीराम नाशरहित विष्णुजी को ध्यानकरै २ हृदय की राम रक्षाकरैं, श्रीकण्ठ कण्ठकी, यज्ञ रक्षाकरनेवाले नाभिकी, संसारके रक्षा करनेवाले करिहांवकी, ३ दशरथकेपुत्र रामजी हाथोंकी, विश्व-रूप धारण करनेवाले पांवोंकी, सबसे उत्तम देव सीतापतिजी नेत्रों की, ४ संसारके आत्मा शिखाकी, कामना देनेवाले कानोंकी, करोड़ कालसे भी दुरासद देवताओं की रक्षा करनेवाले पसलियों की, ५ संसारके नायक अनन्तजी सर्वदा शरीरकी, मनुष्यों की शिक्षा प्र-वर्त करनेवाले पापनाशक भगवान् जिह्वाकी, ६ राघवजी दांतोंकी, केशवजी बालोंकी और दत्तविजय, संसारके रचनेवाले भगवान् ह-मारे सक्थियों की रक्षाकरैं ७ इसरामके बलसेयुक्त रक्षाको जो पुरुष पढ़ता है वह बहुत उमरवाला, सुखी, विद्वान् मनुष्य सुन्दर संपदा को प्राप्तहो ८ यह वैष्णवी रक्षा सदा प्राणियोंकी रक्षाकरै राम, राम-भद्र और रामचन्द्र यह जो मनुष्य स्मरण करता है ९ वह पापसे छूटकर शाश्वती मुक्तिको प्राप्तहोताहै इस रक्षाको वसिष्ठजीने गुरु

विष्णुरूपी भगवान् से कहाथा १० तिसपीछे ब्रह्मासे महादेवजीने महादेवजी से नारदजी ने और नारदजी ने भूलोकमें अच्छे जनोंने प्राप्त कियाथा ११ सोतेहुए वा घरमें वा राहमें चलतेहुए जे मनुष्यों में श्रेष्ठ इसको पढ़ते हैं वे पुण्यभागी होते हैं १२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेरामरक्षास्तोत्रंनामत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

दानधर्म का वर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे देवि पार्वतीजी उत्तम धर्म के माहात्म्य को कहताहूं सुनिये जिसके सुननेसे फिर कभी पृथ्वी में जन्म नहीं होता १ धर्मसे अर्थ, काम और मोक्ष ये तीनों प्राप्तहोते हैं तिससे जो विद्वान् धर्म्मको करताहै वह बुध कहलाताहै २ तपस्या, दान, व्रत, नियम और सात्त्विक तपस्यासे स्वर्ग प्राप्तहोताहै ३ और इस लोक में आता तो क्रोध लोभसे वर्जित राज्यको प्राप्तहोता और दूसरे जन्ममें मुक्ति होती और वैष्णवपदको प्राप्त होता ४ राजस तपस्यासे राजस उत्पन्न होताहै और क्रूरकर्म करनेवाला निष्ठुर मनुष्य तामसभावसे तपस्या करताहै ५ तो वह राक्षसों का तप होताहै यह तामस आत्मावालों को मुक्ति देताहै और जो सात्त्विक तपस्या की जाती है वही निश्चय तपस्या होती है ६ रजोगुण और तमोगुणसे जे निर्जन वनमें तपस्या करते, हवाही खाते और धनादिकों की वांछा करते हैं उन रागी मनुष्यों को वनमें भी दोष होते हैं ७ और जो मनुष्य घरमें पांच इन्द्रियोंका निग्रह तपस्या करता है और बुरे कर्मों में वर्तमान नहीं होता उस रागसे निवृत्त मनुष्य का घर तपोवनहै इनसे अपना धर्म गृहाश्रम कहा ८ हे पार्वतीजी यह गृहाश्रम धर्म सतोगुण से इन्द्रिय जीतनेवालों को मुक्तिदायक है अत्यन्त श्रेष्ठ सुन्दर आश्रम नाश होजाताहै और ब्रह्मादिक देवताओं ने गृहाश्रम धर्मको बुद्धिमानों के करने के लिये श्रेष्ठ कहाहै तपस्वी वनमें तपस्या करताहुआ जब भूखसे व्याकुलहो तो अन्न

दाताके घरमें सदा आवे और वह उसको भक्तिसे अन्नदे तो तप-
स्वीके तपस्याका भाग उसको भी कुछ मिलताहै १० यह गृहाश्रम
आश्रमों में ज्येष्ठ है इसको जो मनुष्य अच्छीतरहसे पालताहै वह
इसलोकमें मनुष्यभोगों को भोगताहुआ निस्संदेह स्वर्ग को प्राप्त
होता है हे देवि पार्वतीजी गृहस्थाश्रम की पालना करनेवालों को
पाप कैसे प्राप्तहोगा ११ गृहाश्रम अत्यन्त पुण्यकारी है घर सदा
तीर्थके तुल्य होताहै इस पुण्यकारी गृहाश्रममें विशेषकर दानदेना
चाहिये १२ जिस गृहाश्रम में देवताओं का पूजन अतिथियों का
भोजन और राह चलनेवालों का भी शरण होताहै इससे अत्यन्त
धन्य कहाताहै १३ इस गृहस्थाश्रम का आश्रयकर जे मनुष्य ब्रा-
ह्मणों की पूजा करते हैं उनकी उमर, लक्ष्मी और पुत्र कभी हीन
नहीं होते १४ अब हे सुन्दरि पार्वतीजी महापापों के शुद्ध करने
वाले, सब संपदा देनेहारे, इसलोक और परलोकमें फल देनेवाले
दानको कहताहूं सुनिये १५ सुन्दर समय प्राप्तहोने में अपने देवता
को अच्छीतरह पूजकर नित्य नैमित्तिककर अपनी शक्तिके अनुसार
दानदेवे १६ और दूसरे की द्रव्य ग्रहणकर जो ब्राह्मणों को देताहै
वह नरक देखकर पीछेसे श्रेष्ठगति को प्राप्तहोताहै १७ जैसे पुत्र
समेत शतानीक दान से तारेगये हैं जोकि और ब्राह्मणों को देकर
धर्म से स्वर्गको गये हैं १८ धर्म के स्थानों में जिन्होंने दियाहै उ-
नका धर्म कहागया अब हे पार्वतीजी संक्षेप से द्रव्यके दानको क-
हताहूं सुनिये १९ यह दान देहकी शुद्धिकरनेवालाहै ऐसा न हुआ
है और न होगा जिससे मनुष्य निस्सन्देह पाप से हीन होजाता
है २० और भोगों को भोगकर सनातन विष्णुजी को प्राप्तहोताहै
इसको पहले ब्रह्माजीने भार्गवमहात्मा पापयुक्त परशुरामजी के अर्थ
तुलाका वैल कहाथा पापकर्म में रत और वन्धकीक्रिया करनेवाला
राजा २१। २२ नहीं खानेवाली वस्तुओं के खानेमें रत, गर्भहत्या
करनेवाला, गुरुकी स्त्रीसे भोगकरनेवाला और झूंठबोलनेवाला ये
सब कुयोनियों में उत्पन्न होते हैं २३ नहीं यज्ञ के योग्यों को यज्ञ
कराकर निन्दितों से याचनाकर सदा कोप से युक्त साधुओं के पी-

इनमें रत २४ और इनके विश्वासों से ताड़ित, पापी प्राणियों करके धर्मकी निन्दा करनेवाले पापों से युक्त, आत्मा को उमरहीन जान कर २५ हे देवि पार्वतीजी विशेषकर दानदेना चाहिये क्योंकि बहुत धर्म करनेवाले वैष्णव पृथ्वी में सुनाई पड़ते हैं २६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति-नारदसंवादेदानधर्मोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

गण्डिकातीर्थका माहात्म्यवर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे हिमाचल की कन्या पार्वतीजी गण्डिका का माहात्म्य विधिपूर्वक कहताहूं जैसे गङ्गा तैसेही वहभी कहीगई है १ शालग्रामजीकी मूर्त्ति जहांपर बहुत हैं और गण्डिकाका माहात्म्य मुनिश्रेष्ठों ने कहाहै २ अण्डज, उद्भिज, पिल्लुये और जरायुज भी जिसके दर्शनही करने से पुण्यरूप होजाते हैं ३ यह गण्डिका महानदी उत्तरमें उत्पन्नहै यह स्मरण करनेसे पापोंको नाशती है ४ जहांपर ऐश्वर्य के देनेवाले नारायणदेव नित्यही स्थितरहते हैं तिन के समीपमें जे शङ्ख और चक्रके धारणकरनेवाले बसते हैं ते मृत्यु को प्राप्तहोकर सुन्दररूप चारभुजायुक्त होजाते हैं ऋषि और विशेषकर देवता भी वहां स्थित रहते हैं ५।६ महादेव, नाग और यक्ष भी निस्सन्देह टिके रहते हैं तिसके समीप एकस्थल निश्चय विष्णुरूप धारण करनेवालाहै ७ इसस्थलमें बहुत मूर्त्ति सुखकी देने वाली वर्त्तमानहैं और चौबीस प्राणियों की जाति भी वहांपरहै ८ एक मत्स्यरूप और अत्यन्त मुक्तिदेनेवाली कृष्णरूप और जो पण्डितों ने विष्णुसंज्ञक स्थल में और मूर्त्ति कही है ९ पुण्यकारिणी कल्कीनाम और कपिल नामकी मूर्त्ति जो मैंने कही है और भी अनेक प्रकार की बहुत मूर्त्ति दिखलाई पड़ती हैं १० सब मूर्त्तियां नानाप्रकार की अनेकों जहांपरहैं वही बड़ी पुण्यकारिणी, धर्म, काम, अर्थ और मोक्षकी देनेवाली गङ्गाजी हैं ११ जिस पृथ्वी में नियम समेत हंससहित हृषीकेश भगवान् निस्सन्देह अबतक वर्त्तमानहैं

१२ गर्भहत्या, बालक और गऊकी हत्यावाला विशेषकर जिसके छूनेसे सबपापों से छूटजाताहै १३ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वा और जातिवाले गण्डिका के जलके दर्शन से पापों से छूटजाते हैं १४ यह विशेषकर पापियों को त्रिवेणी के बराबर पुण्यकारिणी है जहांपर ब्राह्मणका मारनेवाला छूटजाताहै तो औरों की क्या कथा है १५ हे पार्वतीजी सदैव सब समयमें मैं जाताहूं इसको ब्रह्माजी ने तीर्थों में तीर्थराज निश्चय कहाहै १६ वहांपर मुनियोंने स्नान और दानकरना कहाहै हे सुन्दरि पुण्यकाल आषाढ़में मैं वहां जाताहूं १७ और विधिपूर्वक एक महीना वहां स्नानकरताहूं और निरन्तर निर्मल तारकमन्त्रको जपकरताहूं १८ विष्णुके क्षेत्रमें जानेसे मैं वैष्णवहुआहूं इस श्रेष्ठ क्षेत्रको पहले विष्णुजी ने रचाथा १९ यह वैष्णवों को गति देनेवाला परमपवित्रहै हे देवि पार्वतीजी इस संसारमें सदा मनुष्यका जन्म दुर्लभहै २० गण्डिका और विष्णुक्षेत्र भी दुर्लभहै इससे ब्राह्मणश्रेष्ठोंको आषाढ़ के महीने में जाना चाहिये २१ और वहांजाकर विशेषकर शङ्ख चक्रादिका धारणकरना भी योग्यहै क्योंकि इसका धारणकरना परमपवित्रहै २२ बायेंहाथ में शङ्ख और दहिने में चक्रका चिह्न धारणकरना ब्राह्मणों को मुक्ति का देनेवाला कहाहै इससे यत्नसे धारणकरना चाहिये २३ ब्राह्मणों को विशेषकर शङ्ख चक्रादिका धारणकरना कहा है इनके धारण करनेवाले वैष्णव मनुष्य होतेहैं २४ हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्व्वती गण्डिकाके बराबर तीर्थ, द्वादशीके तुल्य व्रत और भगवान् के बराबर देवता कोई नहींहै यह मैं वारंवार कहता है २५ और जे उत्तम मनुष्य गण्डिका के माहात्म्य को सुनतेहैं वे इस लोकमें सुखभोग कर विष्णुलोकमें प्राप्त होते हैं २६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेगण्डिकातीर्थमाहात्म्यंनामपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

आभ्युदयिक और और्ध्वदैहिक स्तोत्र का वर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे सुन्दरि पार्व्वतीजी अभ्युदय स्तोत्र को कहताहूं सुनिये जिसके सुनने से ब्राह्मण का मारनेवाला पापी भी निस्सन्देह छूटजाताहै १ अपने आप होनेवाले, अपार प्रकाशवाले, देव ब्रह्माजी ने निश्चय जिसको नारदजी से कहा था वह मैं तुमसे कहताहूं २ सुन्दरभुजा ग्रहणकर भगवान्, नारायण, श्रीमान्, देव, चक्र हथियारवाले हरि और्ध्वदैहिक को स्मरण कराते हैं ३ जो कि भगवान् शार्ङ्गनामक धनुषको धारे, हृषीकेश, पुराणपुरुषोत्तम, अजित, तलवारको भी धारे, जिष्णु, कृष्ण सनातनहैं ४ ब्रह्मा कहते हैं कि आप एकसींगवाले शूकर, भूत, भविष्य और वर्तमानके आत्मा, अक्षर, ब्रह्म, सत्य आदि और अन्तमें रामचन्द्र, ५ लोकों के श्रेष्ठ धर्म्म, विष्वक्सेन, चारभुजाधारे, सेनानी, रक्षा करनेवाले, वैकुण्ठ, संसारकेस्वामी, ६ प्रभव, नाशरहित, उपेन्द्र, मधुदैत्य के मारनेवाले, पृश्निके गर्भसे उत्पन्न, दीप्तिधारे, पद्मनाभ, लड़ाई के अन्त करने वाले ७ शरणागतकी रक्षा करनेहारे और इन्द्रसमेत महर्षि आप को शरण भी कहते हैं ऋक् और सामवेद में श्रेष्ठ, वेदकी आत्मा, सौजिह्वावाले, महर्षि, ८ यज्ञ, वषट्कार, ओंकार, परंतप, शतधन्वा, पहलेकेवसु और वसुओं के प्रजापति ९ तीनों लोकोंके आदिकर्ता, अपने आप प्रभु, रुद्रोंमें आठवेंरुद्र और साध्योंमें पांचवें आपही हैं १० अश्विनीकुमार आपकेकान, सूर्य, चन्द्रमा नेत्रहैं अन्त आदि और मध्यमें परंतप आपही दिखाई देते हैं ११ आपकी उत्पत्ति और नाशनहीं जानेजाते आप कौनहैं जो कि सब लोकोंमें गऊ ब्राह्मण १२ सबदिशाओं आकाश पर्वत और गुहाओंमें दिखाई देतेहैं और आपके हजारों नेत्र, सैकड़ों मस्तक और हजारों चरणहैं १३ प्राणियोंको आप धारणकरते पर्वतोंसमेत पृथ्वीको भी धारते जल में से पृथ्वीको पीठमें धारण करलाते, शेषजी को सेवते १४ तीनों लोक, देवता, गंधर्व और दानवोंको धारण करतेहुए रहते हैं गर्व

मैं तुम्हारा हृदय हूं जिह्वा सरस्वती देवी १५ देहों में रोम देवता ये आपने अपनी मायासे रचे हैं पलक आपकी रात्रि उन्मेष दिन १६ और संस्कार आपकी देह है आपके विना कुछ नहीं है सम्पूर्ण संसार शरीरमें है स्थिर पृथ्वी भी है १७ अग्नि आपका क्रोध, श्रीमान्, शेष लक्ष्मणजी, प्रसन्नताहैं आपने तीनोंलोकोंको तीन पगों से नाप लियाथा १८ इन्द्रको राजा बनाया और महा असुर बलि को बांधा और कालरूप आपने लोकोंको संहार कर केवल अपनी आत्माही में प्रवेश करलिया १९ आप घोर एकही समुद्रको प्रलय में करते जो देखने और न देखनेमें एकही साथा और आपने परम दिव्य उत्तम नृसिंहका रूप धारा २० जोकि सब प्राणियों को भय देनेवालाथा उसी से हिरण्यकशिपुको मारा और घोड़ेका रूप धारणकर पातालतल में आश्रित हुए २१ और परम हव्य रहस्य को वारंवार हरलिया जो श्रेष्ठ ज्योति सुनाई पड़ती जो श्रेष्ठपर दिखाई पड़ता २२ जो श्रेष्ठ से श्रेष्ठ परमात्मा कहाते श्रेष्ठ मन्त्र श्रेष्ठ तेज तिसीको कहते २३ हव्य, कव्य, पवित्र, स्वर्ग और मोक्षकी प्राप्ति आपहैं पालन,उत्पत्ति और आपका नाश और प्रकृतिकेपरे आपही को कहते हैं २४ यज्ञ,यजमान, हवन करनेवाला, अध्वर्यु और यज्ञ के फलों के भोग करनेवाले आपही को वेद गान करते हैं २५ लक्ष्मीजी सीता और आप विष्णु, देव, कृष्ण, प्रजापति हैं रावण के मारनेके लिये मनुष्य देहमें प्रवेश किया है २६ हे धर्म्मधारियों में श्रेष्ठ राम यह काम आपने किया कि रावण को मारा और देवता प्रसन्नकिये २७ हे देव आपका सफल वीर्यहै और पराक्रम निष्फल नहीं है आपके दर्शन सफलहैं और आपका स्तोत्र भी निष्फल नहीं है २८ हे देव जे पुराण पुरुषोत्तम आपके अच्छे भक्त भक्तियुक्त मनुष्य पृथ्वी में हैं वे भी सफल होंगे २९ जे मनुष्य इस आर्षस्तोत्र, पुण्यकारी, पुराने इतिहास को कीर्त्तन करेंगे उनका अनादर नहीं होगा ३० जे पुरुषोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तमजीके भक्तहैं उनका अनादर कैसे होगा क्योंकि संसार में चतुर्भुज भगवान् के प्यारोंका देवता होना जोकि श्रेष्ठवरकोभी देते हैं यही सबसे उत्तमहै ३१ यह राम-

चन्द्र महात्माका स्तोत्रों में श्रेष्ठस्तोत्र महापापी भी जो नित्य
तीनोंकाल में पढ़े तो उसके सबपाप छूटजावें ३२ और भक्तिभाव
युक्त चित्तसे ब्राह्मणोंको संध्यासमय और विशेषकर श्राद्धसमय में
प्रयत्नसे पढ़ना योग्य है ३३ यह स्तोत्रश्रेष्ठ, कभी किसी से कहने
योग्य नहीं, छिपाने योग्य है इसके पढ़नेसे मनुष्य मुक्तिको प्राप्त
होताहै और निश्चय वह भगवान्का भक्तहोताहै ३४ श्रेष्ठ ब्राह्मणों
करके पहले पिण्डपूजाके अन्त में यह स्तोत्र पढ़ने योग्यहै इसके
पढ़नेसे श्राद्ध नाशरहित होता है ३५ यहस्तोत्र परमपवित्र और
मनुष्योंको मुक्तिका देनेवाला है इसको जो लिखकर घर में अच्छी
समाधि से धारण करै ३६ तो उमर,लक्ष्मी और बल उसका दिन
दिनमें वृद्धिको प्राप्तहो और जो बुद्धिमान् लिखकर ब्राह्मण को दे
३७ तो उसके पुरखे पापोंसे छूटकर विष्णुजीके श्रेष्ठपदको प्राप्तहों
चारोंवेदके पाठकरने में जो फलहै ३८ वह मनुष्यको इसस्तोत्रके
जापसे मिलताहै वेदमेंतत्पर ब्राह्मण स्तोत्रकोपाठ, जाप और श्रा
द्ध समयमें शंखचक्रादि धारणकरे तोनिश्चय वह नाशरहित होवे
कण्ठमें पद्माक्षकी माला और शंखचक्रादिको धारणकर ३९।४०
इस स्तोत्र को पाठ और जापकर तिस पीछे विधिपूर्वक भक्तिभाव
से युक्त श्राद्धकरे तो पूर्णहोजाता और प्रकार पूर्ण नहीं होता ४१
इससे भक्तिमान् पुरुषकरके यत्नसे पढ़ना योग्यहै पढ़नेसे सब कुछ
मिलता है और वह मनुष्य सुख को प्राप्तहोता है ४२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वर
संवादेआभ्युदयिकसूर्ध्वदैहिकस्तोत्रंनामपट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

सतहत्तरवां अध्याय॥

भादों के शुक्लपक्षकी ऋषिपंचमी व्रतका वर्णन॥

महादेवजी बोले कि मैं संसारके स्वामी भगवान् से व्रतों में उ
त्तमव्रत जो कि पुत्र और पौत्रोंकी वृद्धिके लिये सुख और सौभाग्य
का देनेवालाहै १ उसको हे सुन्दरि पार्वतीजी इससमय में तुम्हारे
आगे कहताहूं सुनिये यह ऋषियों की सुन्दरकथा और उत्तमव्रत

है २ रजस्वला जो स्त्री सहसा पापरूपिणी है वह इस व्रतके करने से महापापों से छूटजाती है यह व्रत पितरों को धर्म्म, काम और अर्थका साधन, नाशरहित देनेयोग्यहै ३ तब श्रीविष्णुजी बोले कि पहले महाबाहु, वेदका पारगामी, सदाही पढ़ने में शीलवाला देवशर्मानाम ब्राह्मण हुआथा ४ वह अग्निहोत्रकी क्रियामेंयुक्त, सदैव छओंकर्म में निरत, सब वर्णों में पूज्य, पुत्र, पशु और बांधवों समेत था ५ तिस श्रेष्ठ ब्राह्मणकी भग्ना स्त्री थी वह भादों के शुक्लपक्ष की पंचमी प्राप्तहोने में ६ यतात्मा और जितेन्द्रिय ब्राह्मण पिता की क्षयाह करता था रात्रि में सुख और सौभाग्य के देनेवाले ब्राह्मणों ो निमंत्रण देताथा ७ और निर्मल सबेरा होने में और बर्तन च-ाकर सब बर्तनों में स्त्री से पाक बनवाताथा ८ जो कि पाक अठारह सों से युक्त, पितरों को प्रीति देनेवाले थे उन पाकोंको अलग अ-ग ब्राह्मणोंको देताथा ९ सब नेवतेहुए वेदपाठ करनेवाले ब्राह्मण ोपहरके समय आतेथे उनकी वह श्रेष्ठब्राह्मण अर्घपाद्यादि विधि-र्वक पूजन करता था १० रजसे दूषित वह श्राद्ध में घरके बीचमें ाप्तहुए सब ब्राह्मणों के पांवधोकर आसन में बैठालता भया ११ और विशेषकर उनको मिष्टान्न भोजनदिये और विधिपूर्वक पिण्ड-ानपूर्वक श्राद्ध किया १२ पान, दक्षिणा और अनेक प्रकार के पड़े पितृध्यान में परायण होकर उसने सब ब्राह्मणोंको दिये १३ आशीर्व्वाद में परायण सब ब्राह्मणों को उसने विसर्ज्जन भी किया गोत्रवाले बांधव और अन्यभी भूखोंको १४ उसने अन्नदिया फिर विधिपूर्वक आपभी भोजन किया और रात्रि में कुटी के द्वारमें जब बैठा १५ तब ब्राह्मणी ने जल ग्रहणकर पांवधोये तिस समयमें कुतिया और बैल परस्पर बोले १६ कि हे कांत हमारे वचन सुनिये जिसप्रकार वधूने कियाहै वैसाही कहती हूं और तरह नहीं कहूंगी १७ कदाचित् दैवयोग से मैं पुत्रके स्थान में गईथी वहांपर स्थित दूध पीनेको था परन्तु वधूने नहीं देखाथा १८ उस दूधको ... पीलियाथा यह मैंने फिर देखाथा पीछे से वधूने भी देखा तो अच्छीतरह दूधको पीलिया १९ तिसके संपर्कके योगसे हमा

रिहांव सदा मग्न रहताहै और हे स्वामिन् तिसी दुःखसे मैं दुःख भागिनी उत्पन्नहुईहूं मग्न करिहांव हुआहै और भोजन नहीं रुच ताहै २० तब बैलबोला कि हे कुतिया मैंभी अपने दुःखका कारण कहता हूं सुनिये इसदिनके प्राप्तहोने में ब्राह्मणों का भोजन २१ हमारे पुत्रने कराया परन्तु हमारी चिन्ता नहीं किया न तो जलही और न तृणही किसीने कुछ दिया २२ भोजनहीन मैं पापी पापसे भावित हुआ बँधाहूं निस्सन्देह पूर्व पापके विशेषसे मैं उत्कृश हुआ हूं २३ महादेव कहते हैं कि हे देवि पार्वती तिस समय में बैलके वचनको बुद्धिमान् पुत्रने सुना कि हमारे पिता साक्षात् हमारे घरमें बैल हुएहैं २४ और निस्सन्देह यह साक्षात् हमारी माता दैवयोग से कुतिया हुईहै अब मैं क्या निश्चयकरूं २५ ऐसा विचारकर उस ब्राह्मणको नींद नहीं आई रात्रिमें चिन्तायुक्त होकर श्रेष्ठ विश्वेश्वर जीको स्मरणकर २६ कहनेलगा कि अनेक प्रकारके धर्म्ममें परा यण मैं रहताहूं मेरा इसप्रकारका कल्याण कैसे है ऐसा विचारकर रात्रिमें सोगया २७ और जब निर्म्मल सवेरा हुआ तो ऋषियों के आगे प्राप्तहुए तिनके मध्यमें वसिष्ठजी ने ब्राह्मणका अच्छीतरहसे सत्कारकिया कि आपका आना अच्छाहुआ २८ और बोले कि ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ अपने आनेका कारणकहिये जब इसप्रकार ब्राह्मण से पूछा तो ब्राह्मणने तिससमयमें भरद्वाजजीको प्रणाम किया २ और बोले कि इससमय में हमारा जन्म सफलहुआ क्रिया भी फलहुई और आपके दुर्लभ दर्शनसे हमारे पितर भी तृप्तहुए ३ मैंने यथोक्त श्राद्धकिया ब्राह्मण और कुटुम्बी सबको अच्छीतरह भोजन कराया ३१ भोजनके पीछे मेरे घरमें जो बैल रहताहै ३ पतिरूप बैलसे कुतियाने जो वचन कहे वे हे द्विज हमसे सुनिये। घरमें स्थित दूधके बर्तन को सर्परूप होकर मैंने पिया ३२। ३ वह देखकर मैं निस्सन्देह उस समयमें चिन्ताहुई कि इस दूध जो अन्न पकेगा ३४ तो यहांके सब ब्राह्मण भोजन करनेसे मर देंगे ऐसा विचारकर हे स्वामिन् तिस समयमें मैंने दूधपीलिया ३ तो वधूने देखा तब तो उसने हमको ऐसा मारा कि मेरा कटि

टूटगया अब मैं दुःखयुक्त क्याकरूं ३६ तिसका दुःख स्मरणकर बैल कुतियासे बोला कि हे कुतिया मैं भी अपने दुःखका कारण कहताहूं सुनिये ३७ कि पूर्वजन्मका मैं साक्षात् इसका पिताहूं इससमय में इसने ब्राह्मण भोजन कराये और बहुत सा अन्न दिया ३८ परन्तु हमारे आगे तृण और जल नहीं रक्खा तिस दुःखसे हमको अधिक दुःख प्राप्तहुआहै ३९ हे भरद्वाजजी यह दोनोंकी कथासुनकर रात्रि में मुझको निद्रा नहीं प्राप्तहुई और बहुत चिन्ताहुई ४० कि वेदके पढ़ने और वेदके कर्ममें मैं निपुणहूं परन्तु इन माता पितारूप कुतिया और बैलके बड़ा दुःख है क्या करूं ऐसी चिन्ता करताहुआ आपके पास आयाहूं हमारे कष्टको दूरकीजिये ४१ तब ऋषि बोले के हे उग्रजन्मन् पूर्वजन्ममें जो तुम्हारे माता पिताने कियाहै उसको सुनिये तुम्हारे पिता कुण्डिननाम श्रेष्ठ नगरके रहनेवाले ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ब्राह्मणथे ४२ भादोंके शुक्लपक्षकी पंचमी को पिताकी श्राद्ध आदि कारण से ऋषिपंचमी का व्रत नहीं जाना ४३ और उनकी स्त्री क्षयाह में स्त्रीधर्मसे प्राप्तथी उसने सब ब्राह्मणों का भोजन बनाया ४४ परन्तु उस दुरात्मा पापीने भी न जानकर भोजन किया पहलेदिन मासिकस्नान में स्त्री चाण्डालीके समान होती है दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी के तुल्य ४५ तीसरे दिन धोबिनके बराबर और चौथे दिन शुद्धहोती है तिसी पापसे स्त्री तो कुतिया हुई और उसी कर्म से यह बैलहुआहै ४६ तब उग्रजन्मा बोले कि हे सुव्रत व्रत, दान, यज्ञ वा तीर्थ विशेषकर हमसे कहिये जिससे हमारे माता पिताकी मुक्तिहो ४७ तब ऋषि बोले कि भादोंके शुक्लपक्ष में ऋषिपंचमी होती है उसका व्रत करनेसे रजका कियाहुआ पाप नाशहो जाताहै ४८ यह ऋषिपंचमी पुत्र पौत्र देनेवाली है और पितरोंको मुक्ति देनेवाली है इसमें नदी, कुआं, ताल वा ब्राह्मणहीके घर में ४९ गोबरका मण्डलकर कलश वहांपर रक्खे और उसके ऊपर बर्तन ऋषियों के धान्यसे पूरितकरे ५० उसमें सात ऋषि जो कि सुख और सौभाग्यके देनेवाले हैं उनको स्थापितकर जनेऊ, सोना और फलभी वहांपर धरे ५१ और व्रतमें स्थित मनुष्य सब ऋ-

षियोंका आवाहनकर पूजनकरे नैवेद्य ऋषियों के धान्य की और भोजनभी उसी का करे ५२ एक वार भोजनकर उस दिन श्रेष्ठभक्तिसे विधिपूर्वक ऋषियों का पूजनकरे ५३ घी और दक्षिणासमेत ऋषियों की प्रसन्नताके लिये विधिपूर्वक निर्वाप ब्राह्मणको देवे ५४ और विधि से कथा सुन प्रदक्षिणाकर धूप दीप नैवेद्य और अर्घ्य अलग अलग देवे ५५ कि ऋषि हमको नित्यहीहों जो कि व्रतके संपूर्ण करनेवाले हैं और हमारी दीहुई पूजाको ग्रहणकरें ऋषियोंके नमस्कारहै ५६ पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्राचेतस, वसिष्ठ, मरिच, आत्रेय ये सब ऋषि अर्घ ग्रहणकरें इनके नमस्कार है ५७ इस प्रकार मनोरम धूपदीपसे पूजा करने योग्यहै इसके करने से इसीके प्रभाव से पितरोंकी मुक्ति होती है ५८ पूर्व कर्मके विपाकसे रजके दोष के भावसे कियेहुए पापकी निस्संदेह मुक्ति होजाती है ५९ उग्रजन्मा ब्राह्मणने पिता माताकी मुक्तिके लिये तिस व्रतको किया तो उसके माता पिता आशीर्वाद देतेहुए मुक्तिकी मार्ग से चलेगये अर्थात् मोक्षको प्राप्त होगये ६० यह ऋषिपंचमी का व्रत ब्राह्मणसे कहा गया जे श्रेष्ठ मनुष्य इस व्रतको करते हैं वे पुण्य के भागी जानने चाहिये ६१ और जे श्रेष्ठ पुरुष इस उत्तम व्रतको करते हैं वे इस लोकमें सुन्दर भोगोंको भोगकर भगवान्के पदको प्राप्तहोते हैं ६२

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेऋषिपंचमीव्रतंनामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७॥

अठहत्तरवां अध्याय॥

अपामार्जनस्तोत्रका वर्णन॥

महादेवजी बोले कि अब उत्तम अपामार्जन को कहताहूं जिस प्रकार पुलस्त्यजीने दाल्भ्य महात्मासे कहाथा १ यह अपामार्जन सब रोग दोषोंका नाशनेवाला और मंगल देनेहाराहै हे पार्वतीजी उस व्रतको कहताहूं सुनिये २ श्रीदाल्भ्यजी बोले कि हे भगवन् पुलस्त्य जी सब प्राणी विष रोगआदि उपद्रवों और क्रूरग्रहों से पीड़ित और सब काल में उपद्रवयुक्त ३ आभिचारिककृत्य और

दिक बहुत घोररोग जिसमें हे मुनिश्रेष्ठ न हों वह हमसे आप कहने के योग्य हैं ४ तब पुलस्त्यजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ दालभ्य जी जेमनुष्य व्रत उपवास और नियमों से विष्णुजीको प्रसन्नकरते हैं वे हे मुनिसत्तम रोगसे पीड़ित नहीं होते हैं ५ और जे व्रत,पुण्य, दान, तपस्या, तीर्थपूजा नहीं करते और बहुत अन्न नहीं देते हैं ६ वे मनुष्य रोग और दोषों से पीड़ित जाननेयोग्य हैं आरोग्य, श्रेष्ठ ऋद्धि और मनसे जो जो इच्छाकरताहै ७ वह निस्संदेह विशेषकर भगवान्‌की सेवाकरनेवाला प्राप्तहोताहै मानसीव्यथा, व्याधि, विष ग्रह बंधन कृत्याके स्पर्शका डर ये भगवान् के प्रसन्न होने से नहीं होतेहैं सब दोषोंका नाश और सदा ग्रह अच्छेही रहते हैं ८। ९ भगवान्‌के प्रसन्न करनेसे देवताओंको भी अधृष्य होजाताहै और जो सब प्राणियों में जैसे अपनी आत्मा तैसेही दूसरे की भी जानता है १० उसने उपवास आदि से भगवान् को प्रसन्न किया है भगवान् के प्रसन्न करने से मनुष्य मनोरथों से पूर्ण ११ रोगहीन, सुखी और भोगोंके भोग करनेवाले होतेहैं और हे मुनियों में श्रेष्ठ दालभ्य तिनके वैरी और रोगोंके अभिचारिक नहीं होते १२ ग्रह रोग आदिक पापकार्य नहीं उत्पन्नहोते और कृष्णजी के अव्याहत चक्रआदिक हथियार सब आपदोंसे रक्षाकरते हैं जिसने विष्णुजी की उपासना कियाहै १३ तब श्री दालभ्यजी बोले कि हे पुलस्त्य जी जेदुःखभागी मनुष्य गोविन्दजीकी आराधना नहीं करते तिन दुःखों से पीड़ितों को जो दयालु, सब प्राणियों में स्थित वासुदेव सनातन को देखनेवाले, समदृष्टियों को जो करना चाहिये वह विशेषकर हमसे कहिये १४। १५ तब श्री पुलस्त्य जी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ दालभ्य जी रोग दोष अशुभ और ज्वरादिकों के नाश करनेवाले उसी को कहता हूं एकाग्रचित्त होकर सुनो १६ शिखामें श्रीधर भगवान्‌को शिखाके नीचे श्रीकरको बालोंमें हृषीकेशको मस्तकमें श्रेष्ठनारायण को १७ ऊपर कानमें विष्णुको माथे में जलमें शयन करनेवाले को दोनों भौंहों में विभुको भौंहोंके बीच हरिको १८ नाकके अग्रमें नरसिंहको कानोंमें समुद्रमें शयन करने

वाले भगवान् को नेत्रों में कमलनयन को और नेत्रोंकेनीचे पृथ्वी धारण करनेवालेको १९ कपोलों में कल्किनाथ को कानोंकी मूलमें वामनको शंखोंमें शंखधारी भगवान्को मुंहमें गोविन्दको २० दांतों की पंक्तिमें मुकुन्दको जिह्वामें वाणीके पतिको ठुड्ढी में रामको कंठ में वैकुण्ठ को २१ बलके नाश करनेवाले को भुजों के मूलकेनीचे कंसके मारनेवाले को दोनों कांधोंमें दोनोंभुजमें अजको दोनोंहाथों में शार्ङ्गधनुष हाथमें लेनेवालेको २२ हाथके अँगूठे में बलभद्र को अंगुलियोंकी पंक्तियों में गौवोंकी रक्षा करनेवालेको छाती में अधोक्षजको तिसके बीचमें भृगुकी लातके चिह्नवाले को २३ स्तनों में अनिरुद्धको पेटमें दामोदरको तोंदी में कमलनाभको तोंदी के नीचे केशवको २४ लिङ्गइन्द्रियमें शेषजीको गुदामें गदाग्रजको करिहांव में पीलेकपड़े धारण करनेवालेको दोनों जंघाओंमें मधुदैत्यके मारनेवालेको २५ पिण्डलियों में मुरदैत्यके मारनेवाले को दोनोंगांठों में जनार्दन को गुल्फों में सर्पों के स्वामी शेषको क्रमों से त्रिविक्रम को २६ पांवके अँगूठे में श्रीपतिको पांवोंकेनीचे धरणीधर को सब रोमकूपों में विष्वक्सेन को २७ मांसमें मत्स्य को मेदामें कूर्मको वसाके बीचमें वाराहको सब हाड़ों में अच्युतको २८ मज्जामें ब्राह्मणप्रियको वीर्य में श्वेतपतिको सब अंगमें यज्ञपुरुष को आत्मा में परमात्माको २९ इसप्रकार न्यासकी विधिको कर साक्षात् नारायण होजावे जबतक कुछ न बोले तबतक विष्णुमय स्थितरहे ३० जड़समेत अग्रवाले शुद्धकुशोंको लेकर उनसे शांति करनेवाला मनुष्य सब देहको शुद्धकरै ३१ विशेषकर भगवान्काभक्त रोग ग्रह विषसे पीड़ित में विषसे पीड़ित रोगियोंकी इस शुभशांति को करै ३२ भोविप्र तिसी शांति से सब रोग नाश होजावेंगे श्रीपरमार्थ पुरुष, महात्मा, रूपरहित और बहुत रूपवाले व्यापी परमात्मा के नमस्कारहै वाराह, नारसिंह, वामनजी जोकि सुखके देनेवाले हैं ३३ ३४ तिनके ध्यान और नमस्कार कर विष्णुजी के नाम अंगों में न्यास कर पापरहित, शुद्ध, व्याधि और पापके नाशनेवाले ३५ गोविन्द, कमलनाभ, वासुदेव और भूधरजी के नमस्कार कर बहुत

हूं हमारा वचन सिद्धहो ३६ त्रिविक्रम, राम, वैकुण्ठ, नर, श्रीवाराह, नृसिंह, महात्मा वामन, ३७ शुभ्रहयग्रीवजी के भी नमस्कार करें हे हृषीकेश हमारे अशुभको नाश कीजिये, पराये उपताप, अहित, प्रयुक्त, अभिचारिक ३८ विषस्पर्श महारोग प्रयोगको जरा से भस्म कीजिये वासुदेव,कृष्ण,खड्ग धारण करनेवाले ३९ कमलनयन, केशव आदि चक्र धारण करनेवाले, किंजल्क के वर्णके समान निर्मल पीले कपड़े धारण करनेहारे ४० महादेवकी देह और कंधेमें घिसाहै चक्र जिनका,चक्रधारी, डाढ़से पृथ्वी के उठानेवाले त्रिमूर्ति के पति ४१ महायज्ञवराह और विष्णुजी के नमस्कार है तपेहुए सोने के समान बालवाले, जलती हुई अग्नि के तुल्य नेत्र वाले ४२ वज्रसे अधिक नहोंके स्पर्शवाले सुन्दर सिंहके नमस्कार है, कश्यप, अत्यन्त छोटे ऋक् यजुः और सामवेदके लक्षणवाले ४३ पृथ्वी के नापनेवाले वामनजीके नमस्कारहै हे बड़ी डाढ़वाले वाराहजी सम्पूर्ण दुःख सब पापोंके फलोंको मर्दनकीजिये हे वज्रके स्पर्शके समान दांतोंवाले उज्ज्वल नहोंसेयुक्त नृसिंहजी ४४।४५ हे पीड़ाके नाश करनेवाले अपने शब्दसे इसके दुःखोंको नाश कीजिये कामरूप पृथ्वी आदिके धारण करनेवाले जनार्दन भगवान् ऋग् यजुः और सामवेदकी वाणियों से सब दुःखोंको नाशकीजिये एकाहिक, द्व्याहिक, तीनदिनके ज्वर, ४६।४७ चौथे दिनके घोर ज्वर, सदैव रहनेवाले ज्वर, दोषसे उठे और सन्निपातसे उठे ज्वर और आगन्तुकज्वरको ४८ गोविंदजी नाशकरें और मनुष्यके कष्ट को भी नाशकरें नेत्र शिर और पेटके दुःख, ४९ अनुश्वास, महाश्वास, कंपसमेतताप, गुदा, नासिका और पांवोंके रोग, कोढ़रोग, क्षय, ५० कामलादिक और प्रमेहादिक घोररोग, वातसे उत्पन्न रोग, लूता और विस्फोटक आदिक ५१ हे वासुदेवजी ये सब अपमार्जन करने से नाशको प्राप्तहों और विष्णुजी के उच्चारण से भी नाशहों ५२ भगवान् के चक्रसे ताड़ित सब रोग क्षयको प्राप्तहों अच्युत, अनन्त और गोविन्दके नाम उच्चारणरूप औषधसे रोग नाश होजाते हैं यह मैं सत्य सत्यकहताहूं स्थावर जंगम

कृत्रिम विष ५३।५४ दांत, नहँ, आकाश और भूतादिकों से उत्पन्न अत्यन्त दुःसह विष ५५ ये सब भगवान् का नाम उच्चारण होनेसे नाशको प्राप्तहों ग्रह, प्रेतग्रह, शाकिनीग्रह, ५६ क्रूर मुखमण्डलिका, रेवती, वृद्धिरेवती, घोर वृद्धिग्रह, मातृग्रह ५७ और बालग्रहों को बालकरूप विष्णुजीके चरित्र नाशकरें वृद्धों और बालकों के ग्रह ५८ नृसिंहजीके दर्शनसे उसी क्षणमें नाशहोजाते हैं क्योंकि दैत्योंको भय देनेवाले नृसिंहजीका डाढ़ोंसे बड़ा कराल मुखहै ५९ उनको देखकर विशेषकर सबग्रह दूर चलेजाते हैं हे नृसिंह हेमहासिंह हे अग्निकी मालाके समान उज्ज्वल मुखवाले ६० हे सर्वेश हे कुत्तेके मुखसमान नेत्रवाले आप सब ग्रहोंको नाशकीजिये रोग भारी उत्पात, वैरी, महाग्रह, ६१ क्रूरप्राणी, घोर ग्रहपीड़ा, शस्त्रके घावों के रोग ज्वालगर्दभिका आदिक ६२ विस्फोटक आदिक देहों में स्थित ग्रह इन सबको त्रैलोक्यकी रक्षा करनेवाले हे दुष्ट दैत्यों के नाशनेहारे ६३ हे सुदर्शन महाज्वरके महातेजको नाश कीजिये वातरोग लूता और घोर महाविषको भी नाशकरिये ६४ उद्दण्ड अमरशूल विषज्वाला सगर्दभ को ॐ हां हां हूं हूं श्रेष्ठधार वाले कुठारसे सब वैरियों को नाश कीजिये ६५ भगवान् सुदर्शन जीके नमस्कारहैं हे दुःखके नाश करनेवाले शरीरयुक्त दुष्ट, प्राणियों की पीड़ा करनेवाले सबको सबकी आत्मा, परमात्मा जनार्दन जी कुब्जरूप धारणकर नाशकरें हे वासुदेवजी आपके नमस्कार है ६६।६७ हे अच्युतजी हे देववर आप अग्निकी मालाके समान भयानक सुदर्शनचक्रको प्रेरणाकर सब दुष्टोंको नाशकीजिये ६८ हे सुदर्शन, हे महाचक्र, हे गोविन्दजी के श्रेष्ठ हथियार, हे तीक्ष्णधार, हे महावेग हे करोड़ सूर्य्य के समान प्रकाशवाले ६९ हे सुन्दर दर्शनवाले हे महाज्वाल हे महा शब्दवाले हे विभीषण सब दुःखों, राक्षसों और पापोंको नाश कीजिये ७० भीमदर्शन दुरितको नाश कीजिये आरोग्य करिये पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तरमें ७१ संसारके आत्मा नृसिंहजी अपनी गर्जन से रक्षाकरें पृथ्वी, आकाश, पीछे, समीप और आगे अनेक रूपवाले जनार्दन भगवान् रक्षाकरें ७२

जैसे देवता असुर और मनुष्य सब विष्णुमयहैं तिसी सत्यसे सब दुःख इसका नाशहो ७३ जैसे योगेश्वर विष्णु सब वेदों में गान कियेजाते हैं तिसी सत्यसे सब दुःख इसका नाशहो ७४ परमात्मा विष्णु जैसे वेदांगोंमें गानकियेजातेहैं तिसीसत्यसे संसारकी आत्मा केशव भगवान् इसको सुखदेनेवाले हों ७५ वासुदेवजी के शरीरसे उठेहुए कुशोंसे मैं सम्मार्जन करताहूं इससे शांति और कल्याण हो और दुःख नाश हो ७६ अपामार्जन करनेसे गोविन्द नरनारायण और भगवान् के वचनसे सबदुःखोंका नाशहो ७७ मधुदैत्यके मारनेवाले भगवान् का स्मरण करने से सबदोष, सम्पूर्णग्रह, विष और प्राणी शांति को प्राप्तहों ७८ येकुश विष्णुजीके शरीर से उत्पन्नहुए हैं और जनार्दन हम अपने आप आगेहैं मैंने सबदुःख इसका नाश करदिया जैसे भगवान् का वचन तैसे यह स्वस्थहो ७९ शांति और कल्याण हो दुःख सब नाशहो जो इसका कुछ दुरितहै वह लवणके समुद्रमें डालेदेताहूं ८० भगवान् के कीर्तनसे सदा इसके स्वास्थ्यहो और सब पाप इसका चलाजावे ८१ इनरोगों और पीड़ाओंमें प्राणियों के हितकी इच्छा करनेवाले भगवान् के भक्तोंकरके श्रेष्ठ अपामार्जनकरना चाहिये ८२ इससे सबदुःख नाशको प्राप्तहों सबपापों की शुद्धिकेलिये भगवान् का अपमार्जन है ८३ गीला, सूखा, थोड़ा, बहुत ब्रह्महत्या आदिक पाप सब इसप्रकार जल्द नाशहो जैसे सूर्य के दर्शन से अंधेरा नष्टहोता है ८४ और रोगदोष इसप्रकार नाश हों जैसे सिंहसे छोटेहरिण नष्टहोते हैं ग्रह भूत पिशाचआदिक सुननेही से नाशहों ८५ द्रव्यकेलिये कभी श्रेष्ठ मनुष्य लालच न करें और अपमार्जन करने के पीछे कल्याण की कामना से कुछ न ग्रहण करना चाहिये ८६ अपेक्षारहित, आदि मध्य और अन्तके बोध करनेवाले, सदैव शांत भगवान् के भक्तोंकरके करना चाहिये और प्रकार करने से सिद्धिनहीं होती ८७ यह अपमार्जन करने से मनुष्यों की अतुलसिद्धि और श्रेष्ठरक्षा होती है यह भगवान् का अपमार्जन श्रेष्ठ औषध है ८८ इसको ब्रह्माजीने पुलस्त्य पुत्र से कहाहै और पुलस्त्य मुनिने अपने आप दाल्भ्यजी से कहा है ८९ और

दाल्भ्यजीने सब प्राणियों के हितकेलिये तीनोंलोकमें इसको प्रक
शितकियाहै यहविष्णुजीका अपमार्जन समाप्तहुआ ६० महादेव
कहतेहैं कि हे पार्वती तुम हमारी सदाकी भक्तहौ इससे तुम्हारेअ
कहा इसको भक्तिसे सुननेसे सबरोग और दोष नाशहोजाते हैं ६

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापति
नारदसंवादेअपामार्जनस्तोत्रंनामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उन्नासीवां अध्याय॥

अपामार्जन की महिमाका वर्णन॥

महादेवजी बोले कि इस सुन्दर परम अद्भुत अपामार्जनक
विशेषकर पुत्र कामनाकी अर्थ सिद्धिके लिये पढ़ना चाहिये १ इ
स्तोत्रको बुद्धिमान् सबकामना की अर्थ सिद्धिके लिये पढ़े जे ब्राह्म
एककाल वा दोकाल पढ़ते हैं २ उनकीउमर लक्ष्मी और बल दि
दिन में बढ़ती है ब्राह्मण विद्याको क्षत्रिय राज्यको ३ बनियां धन अ
ऐश्वर्य को शूद्र भक्तिको प्राप्तहोताहै और को भी इसके पढ़ने सुन
और जपने से भक्तिही की प्राप्ति होती है ४ और सामवेदका फ
उसको प्राप्तहोताहै और उसी क्षणमें सब पापसमूह नाश होजा
है ५ ऐसाजानकर हे पार्वतीदेवी एकाग्रचित्त मनुष्योंको पढ़ना च
हिये इसके पढ़ने से निश्चय पुत्र और लक्ष्मी पूर्ण होती है ६ श्र
जो वैष्णव भोजपत्रमें लिखकर धारणकरताहै वह इसलोकमें सु
भोगकर भगवान् के श्रेष्ठपदको प्राप्तहोताहै ७ और एक श्लोक
ढ़कर जो तुलसी को अर्पण करताहै तो तुलसी के पूजनकरने
सब तीर्थकरनेका फल मिलताहै ८ यह मुक्तिदेनेवाला श्रेष्ठ वैष्ण
स्तोत्रहै मनुष्य को इसके पाठसे पृथ्वी के दानके बराबर फल मि
लताहै और विष्णुलोक को भी वह मनुष्य प्राप्तहोताहै ९ एकाग्र
चित्त मनुष्य विष्णुलोक की वांछा से विशेषकर इस स्तोत्रको न
और बालकों के जीवनेकेलिये पढ़ना भी योग्यहै १० यह स्तोत्र ग
और ग्रहों से पीड़ित बालकों को शान्ति करनेवालाहै इसके पढ़
से मूलग्रह विष नाशहोजाताहै ११ जो ब्राह्मण कण्ठमें तुलसी

मालाको धारणकर पढ़ताहै वही वैष्णव जानना चाहिये और वही विष्णुलोक को प्राप्तहोताहै १२ जो ब्राह्मण कण्ठमें माला धारण करता शङ्ख और चक्रादिकके चिह्न धारता और सदैव इस स्तोत्र को पाठकरताहै वही वैष्णव कहाताहै १३ वह इसलोकको छोड़कर विष्णुलोक को प्राप्तहोताहै मोह, माया, दम्भ और तृष्णा से हीन होकर १४ इस सुन्दर स्तोत्र को पढ़े तो श्रेष्ठ मोक्ष को प्राप्तहो जे वैष्णव ब्राह्मणहैं वे भूलोक में धन्यहैं १५ और कुलसमेत अपनी आत्माको उन्होंने तारदियाहै जे भगवान् में परायणहैं वही संसार में अत्यन्त धन्यहैं और भगवान् के भक्तभी वही मनुष्यहैं उनको सदैव भक्तिकरनी चाहिये १६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुमापतिनारदसंवादे अपामार्जनमहिमानामैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

विष्णुजी की महिमा का वर्णन ॥

श्रीपार्वतीजी बोलीं कि हे संसारकेस्वामी महादेवजी प्रभु विष्णुजीका माहात्म्य कहिये जिसको सुनकर फिर संसारमें न उत्पन्नहो १ तब महादेवजी बोले कि हे सुन्दरि पार्वतीजी उत्तम विष्णुजी का माहात्म्य कहताहूं सुनिये इसके सुननेसे पुण्य और अन्तमें मोक्षको प्राप्त होताहै २ देवव्रत, महाबुद्धिमान्, ध्यान और योगमें परायण, सबशास्त्रों के आश्रयवाले, इन्द्रिय जीतनेहारे, पापरहित, ३ महाभाग, इन्द्रादिक देवताओं करके भी अप्रधृष्य, सत्य प्रतिज्ञावाले, क्रोधजीतनेहारे, समभावमें निष्ठा करनेवाले, ४ शरणागत की रक्षा करनेवाले, भक्तोंके ऊपर दयाकरनेहारे, संसारके स्वामी, नारायणजी में वाणी मन देह और कर्मोंसे श्रेष्ठ निष्ठाकोप्राप्त ५ गुणोंके आश्रय, शान्त, भीष्म, कुरुवंशियों के पितामहजीसे युधिष्ठिरने पृथ्वीमें शिर से प्रणामकर यह पूछा ६ कि कोईधर्म को श्रेष्ठ कहते हैं कोई धनको कोई दानकी प्रशंसाकरते हैं कोई समुदायकी ७ कोई सांख्यकी कोई योगकी कोई ज्ञानकी कोई सुननेकी कोई ध्यानकी कोई वैराग्यकी ८

ष्टोम आदिक कर्म्मकी कोई लोष्ट, पत्थर और सोनेको समझनेवाले आत्मज्ञानकी ९ कोई बुद्धिमान् यम और नि॰ याकी कोई करुणाकी और कोई तपस्वी जीव न मारनेकी १० कोई शौचकी और कोई मनुष्य देवपूजन की प्रशंसा करते हैं पापकर्मों से व्यामुग्ध मनुष्य यहां पर मोहको प्राप्त होते हैं ११ हे धर्म्म जाननेवाले हे सबशास्त्र धारण करनेवालों में श्रेष्ठ जो इनमें श्रेष्ठ कृत्य महात्मोंकरके अनुष्ठान करने योग्यहो वह आप कहनेके योग्यहैं १ महादेवजी बोले कि भूर्लोकमें जो कथा भीष्मपितामहने युधिष्ठिर से कही है उसको मनुष्यों के हितकेलिये मैं कहताहूं इनप्रश्नोंको सुनकर भीष्मजी ने युधिष्ठिर से कहा १३ कि हे धर्म्मनन्दन युधिष्ठिर यह अत्यन्त गूढ़, संसार छुड़ानेवाला तुमको सुनना और जानना चाहिये १४ इसमें पुण्यकारी पुरातन इतिहासको कहते हैं कि जिसमें पुण्डरीक और महर्षि नारदजीका संवादहै १५ वेदमें सम्पन्न, महा बुद्धिमान् पुण्डरीकनाम ब्राह्मण पहले आश्रम में स्थितहुआ सदाही गुरुओं के वश में प्राप्तथा १६ यह जितेन्द्रिय, क्रोधजीते सन्ध्योपासनमें तत्पर, वेद वेदांग में निपुण और शास्त्रों में भी निपुण १७ समिधें और अच्छी हव्य से सांझ और सवेरे अग्नि में हवन करताथा और संसार के पति, विभु, विष्णुजी को ध्यानकर अच्छीतरह से आराधन करताथा १८ तपस्या और पढ़ने में निपुण साक्षात् ब्रह्मा के पुत्रकी नाईंथा जल इंधन और फूलआदि गुरुजीकेलिये लेआताथा १९ माता पिताकी सेवाकरता, भीखमांगकर भोजनकरता, मत्सररहित, ब्रह्मविद्या पढ़ता और प्राणायाम में परायणथा २० उस सबकी आत्मभूत, संसारमें निस्पृह महात्मा की संसाररूपी समुद्रके तारणेवाली बुद्धिहुई २१ माता, पिता, भाई सुहृद् जन, मित्र, मामा, सखा, सम्बन्धी, बान्धव, २२ धनधान्य से समृद्ध इन्द्रके समान घर, बड़े मोलके सबअन्न पैदाहोनेवाले खेत २३ इन सबको वह महासत्व, महासुखी तृणकीनाईं छोड़कर मूल और फलोंको भोजन करताहुआ सुन्दर पृथ्वी में भ्रमताभया २४ गङ्गा, यमुना, गोमती, गण्डकी, शतद्रु, पयोष्णी, सरयू, स

स्वती, २५ प्रयाग, नर्मदा, महानद शोण, प्रभास, विन्ध्य और हिमवान् से उत्पन्न तीर्थ, २६ नैमिषारण्य और पुष्कर आदि आश्रमों में, कुरुक्षेत्र और गोवर्द्धन आदिकों में, २७ वह महातेजवान्, महायोगी, समाहित होकर काल और विधिके अनुसार घूमताभया २८ कदाचित् वह आत्मवान्, धीर, तपस्वी, महाभाग, पूर्वकर्मों के वशानुग पुण्डरीक शालग्राम की सेवा करतेहुए तत्त्व जाननेवाले, तपस्वी मुनियों के साथ पुराणों में सुनेगये मुनियों के सुन्दर स्थानों में भी घूमताभया जोकि स्थान चक्रादिकों से भूषित और चक्रोंही से पत्थर भी जिन के चिह्नयुक्त, सुन्दर, विस्तारयुक्त और सदा विष्णुजीको प्रसन्न करनेवाले हैं २९।३०।३१ और चक्रके चिह्नयुक्त पुण्यदर्शन, पुण्यतीर्थों के दर्शन करनेवाले प्राणी भी इच्छापूर्वक जहांपर घूम रहेहैं ३२ तिस महापुण्यवान् शालग्रामक्षेत्र में महाबुद्धिमान् सुन्दर व्रत करनेवाला पुण्डरीक स्नानकर और देवह्रद तीर्थ, सरस्वती, ३३ जातिस्मर्य, चक्रकुण्ड, चक्र नदी के आश्रित आ और भी तीर्थोंमें स्नानकर घूमता भया ३४ तिस समयमें क्षेत्रों के प्रभाव और तीर्थों के तेज से उन महामन का मन प्रसन्न होता भया ३५ और तीर्थों से शुद्ध आत्मा, तपस्वी, ध्यानयोग में परायण पुण्डरीकजी वहीं पर बसनेलगे ३६ और वहीं पर सिद्धिकी आकांक्षाकर भगवान्की शास्त्रमें कहीहुई विधि और श्रेष्ठ भक्तिसे आराधना कर ३७ बहुत काल अकेले, निर्द्वंद्व, जितेन्द्रिय, साग, मूल और फलों का भोजनकर, संतुष्ट, सबको बराबर देखनेवाले बसते भये ३८ और यम, नियम, आसनबन्धन, प्राणायाम, तीर्थ, प्रत्याहार, संतत ३९ धारणा, ध्यान और समाधियों से अतंद्रित, पापरहित सदा अच्छी तरह से योगाभ्यास करते भये ४० और वैदिक, आंगिक तथा पौराणिकों से सबके स्वामी को आराधन कर तिस पीछे शुद्धिको प्राप्तहुए ४१ राग द्वेषसे छूटाहुआ रूपवान् अपने धर्मकी नाईं भगवान्में प्राप्त अंतरात्मासे भगवान् को आराधन किया तो भगवान् विष्णु कमलनयन बोले कि मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं ४२। ४३ फिर किसीसमयमें उसदेशमें परमार्थके जानने

वाले नारदजी जोकि महातेजवान्, साक्षात् सूर्य्य के सदृश, विष्णु
की भक्तिसे युक्त आत्मा और वैष्णवों के हितमें रतथे वे पुण्डरीक
तपोनिधिके देखने की कामनासे प्राप्तहुए ४४। ४५ महाबुद्धिमान्
महोदार पुण्डरीक ने तेजोमण्डलसे मण्डित, सब वेदके एक वर्त्त-
नरूप प्राप्त हुए नारदको देखकर ४६ प्रणत होकर प्रसन्न अंत-
रात्मा से हाथ जोड़कर विधिसे अर्घ देकर फिर प्रणाम किया ४७
और मनमें विचार किया कि अत्यन्त अद्भुत आकारवाले ये कौन
हैं जो कि तेजस्वी, मनोहर वेषधारे, वीणा हाथमें लिये, सुन्दरमुख
युक्त, जयमण्डलसे मंडित ४८ सूर्य अथवा अग्नि, इन्द्र वा वरुण
हैं यह चिन्तनाकर परमप्रकाशवाले नारदजी से बोले ४९ कि
आप कौनहैं श्रेष्ठ दीप्ति धारेहुए कहांसे यहां प्राप्तहुए हैं हे भगवन्
वहुधा पृथ्वी में आप का दर्शन दुर्लभ है ५० हे प्रभु हे पापरहित
मैंने आपके बराबर पुरुष नहीं देखाहै इससे आप सम्पूर्ण वृत्तान्त
कहने के योग्य हैं ५१ तब नारदजी बोले कि मैं नारद हूं आपके
दर्शनके कुतूहल से प्राप्त हुआहूं हे ब्राह्मण आपके समान भगवान्
के भक्तके प्रभावकी क्या प्रशंसाकरूं ५२ स्मरण, प्रसन्न और श्रेष्ठ
ब्राह्मण भगवान्के भक्तकी पूजाकरे तो वह भक्त चांडालभी हो तो
भी पवित्र करताहै ५३ और मैं वासुदेव, देवदेव, शार्ङ्गधनुषधारी
शंख चक्र और गदा हाथमें लेनेवाले, त्रैलोक्यके एकनेत्र भगवान्
का दासहूं ५४ इस प्रकार भक्तियुक्त आत्मावाले नारदजी ने जब
कहा तो नारदजी के दर्शन से विस्मययुक्त पुण्डरीक उन से मधुर
वचन बोले ५५ कि मैं देहधारियों के बीचमें धन्यहूं और देवता-
ओंसे भी पूज्यहूं मेरे पितर आज कृतार्थ हुए और जन्म का फल
भी मुझको प्राप्तहुआ ५६ हे देवर्षि नारदजी विशेषकर तुम्हारा
भक्तमैंहूं मेरेऊपर कृपाकीजिये हे विद्वन् अपने कर्मोंसे भ्रमताहुआ
मैं उसी को करूंगा ५७ इससे परमगुह्य उपदेश के आप योग्य हैं
और सब प्राणियों और विशेषकर वैष्णवोंकी गति हैं ५८ तब ना-
रदजी बोले कि हे पुण्डरीक ब्राह्मण अनेक शास्त्र तथा कर्म करने
हारोंमें अनेकानकारके नानाधर्मवर्त्ती ५९ और तिस में संशय

की वैलक्षण्य अन्यथा सब जीवोंका सुख वा दुःख ६० क्षणिक विज्ञानमात्र और यह संसार निरात्मक या कोई बाह्यार्थ निरपेक्षक जानते हैं ६१ अव्यक्तसे नित्य होताहै और नित्यसे नित्य यह संसार होताहै और उसी में लय होजाताहै यह कोई कोई कहते हैं ६२ आत्मा नित्य सबमें प्राप्त बहुत प्रकारकी कही हुईहै और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ तत्त्वके देखने में तत्पर ६३ जबतक शरीर आत्मा है तब तक हाथी और कीट आदिकी देह और महान् अंडमें प्राप्त हैं ६४ जैसे इस समय में संसारकी वृत्ति है तैसेही और समयों में भी थी नित्यही यह प्रवाहहै कोई कहते हैं इसमें कौन कर्त्ता है ६५ और जो जो प्रत्यक्ष विषयहै सो यहां नहीं विद्यमानहै और मानस जीतनेवाले कहते हैं कि स्वर्गआदिक कहांसे हैं ६६ अत्यन्त भिन्न बुद्धिवाले, परमार्थ से पराङ्मुख इसको ईश्वररहित और कोईकोई ईश्वरसहित कहते हैं ६७ इसीप्रकार और भी अपनी युक्ति स्थिति करनेवाले अपनी बुद्धि और सुननेके अनुसार अनेक भेदों से कहते हैं ६८ अब हे तपोधन तर्कोंमें अवहित होकर इस घोर, पुण्यकारी, संसार नाशनेवाले परमार्थको कहताहूं ६९ तिसकी मूल को देवादिक मनुष्य जानते हैं प्रमाणसे प्राप्तहोते हैं विसोहितों करके नहीं प्रमाणहै ७० नहीं प्राप्त, अतीत, अत्यन्त विप्रकृष्ट, शक्ति के अनुसार ग्रहण नहीं किया, वर्त्तमान अर्थ में निष्ठायुक्त, ७१ आगम मुनियों ने पूर्वरूप क्रमसे प्राप्त कहाहै परमार्थका साधन करने वाला सोई प्रमाण जानने योग्यहै ७२ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जो अभ्यासके बलसे रागद्वेष मलका नाश करनेवाला ज्ञान उत्पन्न होता है वही आगमसंज्ञकहै ७३ फल, कर्म, तत्त्व, विज्ञान, दर्शन, विभु, जात्यादिकी कल्पनासे हीन, द्वितीय आगमलक्षण, ७४ आत्मसंवेदन, नित्य, सनातन, अतीन्द्रिय, चिन्मात्र, अमृत, अनन्त, अज, नाशरहित, ७५ व्यक्त अव्यक्त स्वरूपसे व्यक्तस्थित, मायारहित, व्याप्त विष्णुही भिन्न स्थित हैं ७६ जो कि योगियों के ध्यान करने योग्य और परमार्थसे पराङ्मुखों करके नहीं जाननेयोग्यहैं बु[illegible] । भिन्न लक्षितहोते हैं और आत्मामें भिन्न नहीं हैं ७७ हे

पापरहित एकाग्रचित्तहोकर सुनो तुमसे कहता हूं हे अच्छेव्रत क
रनेवाले जिसको मैंने ब्रह्माजी से पहले पूछाथा तब उन्होंने कहाथा
७८ कदाचित् ब्रह्मलोकमें स्थित, पितामह, किसीसे न उत्पन्न होने
वाले, नाशरहित ब्रह्माजी से नमस्कारकर न्यायपूर्वक मैंनेपूछा ७९
कि हे पितामहजी कौन ज्ञान श्रेष्ठ कहाहै और योग कौनसा श्रेष्ठ
है यह हे ब्रह्मन् तत्त्वसे कहिये ८० तब ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र ए
काग्रचित्त होकर सबसे उत्तम, थोड़ा ग्रन्थ, बहुत अर्थवाला, विना
दुःखके उपासनाकी क्रिया जिसमें है वह ज्ञानयोग सुनिये ८१ जो
परंपरासे पच्चीस पुरुष कहागयाहै सोई सब प्राणियोंकी आत्म
होताहै वही नारायण, संसारके धाम, परमात्मा, सनातन, सं
रचने, नाशने और पालनेमें तत्पर, ८२।८३ तीन आत्माओंके
देवदेव, सनातनहैं हे ब्रह्मन् वे सदा आराधन करनेके योग्यहैं
सोई संसारके स्वामीको देखते हैं ८४ जैसे जगत् अवस्थानहै
जैसे फिर कुछ समयमें होगा भूत, वर्त्तमान, भविष्य, विप्रकृष्ट,
स्थूल, सूक्ष्म, तथा अन्यप्रकार ये सब भगवान्में चित्त और
लगानेवाले नारायणमें परायण ज्ञानरूपी नेत्रसे देखते हैं ८६
दुरात्मा, कुतर्कों से ज्ञान दुष्टवाले, विभक्त इन्द्रियवादी मन्दबु
को और प्रकार समझपड़ताहै ८७ नारदजी बोले कि हे पापर
पुण्डरीक संसारके कारण आत्मा ब्रह्माने जो पहले औरभी क
उसको भी मैं कहताहूं सुनिये ८८ हमारे पूछनेपर ब्रह्माजीने इ
दिक देवताओं और ऋषियोंके कल्याण करनेवाले कहेथे ८९
ह्माजी बोले कि धर्म नारायण में पर है शाश्वत लोक, यज्ञ,
अनेक प्रकारके, ९० अंगोंसमेत वेद, तथा और भी विष्णु, मं
के स्वामी, हरि, पृथिवी आदिक पांचोंभूत, देवता ये सब ना
हित ९१ विष्णुमय सम्पूर्ण संसार देवताओं करके जानने यो
तिसपर भी मोहयुक्त पापी मनुष्य नहीं जानते हैं ९२ तिसी प
श्वरकी मायासे यह चराचर संसार व्याप्तहै भगवान् में मन
प्राण लगानेवाला परमार्थ का जाननेहारा जानता है ९३ सब
णियोंके ईश्वर, त्रैलोक्यकी रक्षा करनेवाले विष्णुजी हैं उन्हीं में

संसार स्थित होता और उन्हीं से पैदाभी होता है ९४ संसार का नाश रुद्रजी करते हैं पालन विष्णुजी और उत्पन्न मैं करताहूं तथा और भी लोकपालहैं ९५ सबके आधार, निराधार, कलासमेत तथा कलारहित, अणु, महान् और तिससे भी और श्रेष्ठसे श्रेष्ठ हैं ९६ तिन सबके संहारके कर्म में प्राप्त परमेश्वरके शरणमें सब देवताओ जावो सोई हमारे उत्पन्न करनेवाले पिता मधुसूदन जी कहलाते हैं ९७ इसप्रकार कमलयोनि ब्रह्माजी के कहनेपर सब देवताओं ने जाकर सब लोकोंके स्वामी, देव, विष्णु जनार्दनजी को प्रणाम किया ९८ तिससे हे ब्राह्मणों में ऋषि आपभी भगवान् में परायण हूजिये भगवान्से दूसरा कोई अधिक उदार मनोवांछित देनेको योग्य नहीं है ९९ पिता, माता, लोकोंके स्वामी, देवदेव, संसारके स्वामी तिन्हीं पुरुषोत्तमजीको ग्रहण कीजिये १०० अग्निकार्य, भैक्ष्य, तपस्या, पढ़ना इन सबसे देवदेवेश गुरुजीको अतन्द्रितहोकर नित्यही प्रसन्नकरै तो स्वर्ग में नाशरहित, अनुष्ठान के योग्य भोगमिलैं तिससे हे विप्रर्षिजी तिन पुरुषोत्तमजी को ग्रहण कीजिये १०१। १०२ बहुत मंत्र और बहुत व्रतोंसे क्याहै ॐनमो नारायणाय यह मंत्र सब अर्थों का साधन करनेवाला है १०३ हे विप्रेन्द्र चीर वस्त्र धारण करना, जटा रखाना, दण्ड धारण करना वा मूड़ मुड़वाना या गहनों से शोभित होना ये सब चिह्न धर्म्म के कारण नहीं हैं १०४ जे क्रूर, दुरात्मा, और सदैव पापके आचार में परायणहैं परन्तु वे भी नारायणमें परायण होते हैं तो श्रेष्ठस्थान को प्राप्त होते हैं १०५ वैष्णवों के पाप जाते रहते हैं वे पापसमूहों से नहीं लिप्त होते हैं १०६ वे तो जीव न मारना इससे मानसों को जीते रहते हैं इस से सब लोकों को पवित्र करते हैं १०७ क्षत्रिय, राजा, प्राणियोंकी हिंसा न करनेवाला भी भगवान्के स्थानसे श्रेष्ठ धाम को प्राप्त हुआहै १०८ अंबरीष, महासत्व, परमतत्त्वका जाननेवाला राजा हृषीकेशजीका आराधनकर वैष्णवपदको प्राप्तहुआ है १०९ औरभी बहुतसे ब्रह्मर्षि, शांत, व्रत करनेवाले परमात्माका ध्यानकर परमसिद्धिको प्राप्तहुएहैं ११० परम आह्लादवाले प्रह्लाद

और प्रभविष्णु आपहैं जिस आपकी तपोमेय महिमाको ब्रह्मादिक देवता और देवताओंके ईश्वर नहीं जानते हैं आपकी महिमा वाणीके अगोचरहै इससे नहीं जानीजाती १४३। १४४ आप जाति आदिकों करके नहीं स्पर्श कियेजाते तत्त्वसे सदैव ध्यान करने के योग्यहैं तथापि भेदरूप और भक्तोंके ऊपर कृपाकर १४५ हे पुरुषोत्तम मत्स्य कूर्म आदि रूपसे दिखलाई पड़तेहो भीष्मजी बोले कि पुण्डरीक ने संसारके स्वामी पुरुषोत्तमकी स्तुति किया १४६ और वीरोंके बहुतकाल प्रार्थना करनेसे दर्शन देनेवाले भगवान्‌के दर्शन किया तब तो भगवान्, विष्णु, पद्मनाभ, त्रिविक्रमजी महाभाग पुण्डरीकसे गम्भीरवाणीसे बोले १४७। १४८ कि हे वत्स, हे पुण्डरीक, हे महाबुद्धिमान् तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं तुम्हारा कल्याणहो जो तुम्हारे मनमें वर्त्तमानहो वह वर मांगो मैं दूंगा १४९ देवदेवके कहेहुए वचन सुन महाबुद्धिमान् पुण्डरीक इसप्रकार उनसे बोला १५० कि हे लक्ष्मीके पति हे देवेश कहां मैं अत्यंत दुर्बुद्धि और कहां आप हितकी इच्छा करनेवाले जो हमारा हितहै उसको आप दीजिये १५१ जब इसप्रकार उसने कहा तो हाथ जोड़े खड़े हुए महाभाग पुण्डरीकसे भगवान् बोले १५२ कि हे सुव्रत तुम्हारी कुशलहो हमारे साथ आवो उपकारी, नित्यात्मा आप सदा हमारे साथ रहो १५३ भीष्मजी बोले कि प्रीतिसे श्रीधर, भक्तवत्सल भगवान् के इसप्रकार कहने पर आकाश में नगारे बजने लगे और फूलों की वर्षा हुई १५४ ब्रह्मादिक देवता साधु साधु बोलने लगे सिद्ध, गन्धर्व और विशेषकर किन्नरलोग गानेलगे १५५ और वहीं पर देवदेव, संसारके स्वामी,सब लोकोंके नमस्कार करनेयोग्य भगवान् पुण्डरीकको लेकर गरुड़पर चढ़कर चलेगये १५६ तिससे हे राजेन्द्र युधिष्ठिर तुमभी विष्णुकी भक्तिसे युक्त भगवान्‌में चित्त और प्राणलगाकर भगवान्‌के भक्तोंके हितमें रतहोकर १५७ यथायोग्य पूजनकर पुरुषोत्तमजी को भजो और सब पापोंके नाशकरनेवाली, पुण्यकारिणी भगवान्‌की कथाको सुनो १५८ विष्णुकी भक्तिसे युक्त जिस उपायसे संसारकी आत्मा भगवान् प्रसन्नहों वह विस्तारपूर्वक

रो १५९ भगवान् से पराङ्मुख मनुष्य सैकड़ों अश्वमेध और सै-
ड़ों वाजपेययज्ञों से भी नहीं प्राप्तहोते हैं १६० जिसने एकबार
ो हरि ये दो अक्षर उच्चारणकिये उसने मोक्षकेलिये जानेको फेंट
ांधाहै १६१ जिनके हृदय में कमल के समान श्यामवर्ण जनार्दन
गवान् हैं उन्हींको लाभ और जय मिलताहै उनकी पराजय हो-
ाही नहीं है १६२ और जो एकाग्रचित्त होकर इसको सुनता वा
ढ़ताहै वह सबपापों से छूटकर विष्णुलोकको जाताहै १६३ महा-
वजी बोले कि हे पार्वती ये नाममाहात्म्य सुनकर धर्म, अर्थ, काम
और मोक्ष ये निस्सन्देह होते हैं १६४ अच्छे कुलमें उत्पन्नहोकर
जो वेदमें तत्पर ब्राह्मण वैष्णव होताहै वह विष्णुरूपही है और ब्रा-
ह्मण कभी नहीं है १६५ हे विद्वन् जो मुखमें विष्णुजीका नाम उ-
च्चारण करताहै हृदयमें ध्यानमें तत्पर होताहै शङ्ख चक्र और तुलसी
की माला को धारण करताहै १६६ वह जीवन्मुक्त जानने योग्यहै
अनेक प्रकारके भोगोंको भोगकर इक्कीस पीढ़ियों समेत विष्णुलोक
में आनन्द करताहै १६७ पुण्डरीक यथाशक्ति से निस्सन्देह मुक्त
हुआ भक्तिभावसे गोविन्द शाश्वती तुष्टिको प्राप्तहोते हैं १६८ क-
लियुग में विशेषकर अपने घरमें देवपूजन समाधियों में भगवान्
का गीत सामवेदके गानके समान कहाहै १६९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे
विष्णुमहिमानामाशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

गङ्गाजीका माहात्म्य वर्णन ॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे महाबुद्धिमान् महादेवजी गङ्गाजीका मा-
हात्म्य फिर कहिये जिसको सुनकर सब मुनि वारंवार रागरहित
होगये हैं १ हे सबके स्वामी प्रभुजी तिस गंगाजीका माहात्म्य क्या
है पहले हमने उत्पत्ति तो सुनी है परन्तु महिमा नहीं सुनी आप
सब प्राणियों के आद्य, सनातन देवहैं २ तब महादेवजी बोले कि
बुद्धिमें बृहस्पतिके समान, पराक्रम में इन्द्रके तुल्य, बाणोंकी शय्या

में प्राप्त भीष्मजी के देखनेको ऋषिलोग प्राप्तहुए ३ अत्रि, वसि
भृगु, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा, गौतम, अगस्त्य, आत्मवा
सुमति, ४ विश्वामित्र, स्थूलशिरा, सर्वज्ञ, प्रमथाधिप, रैभ्य, बृहस्प
व्यास, पावन, कश्यप, ध्रुव, ५ दुर्वासा, जमदग्नि, मार्कण्डेय, गाल
उशना, भरद्वाज, क्रतु, आस्तीक, ६ स्थूलाक्ष, सर्वलोकाक्ष, क
मेधातिथि, कुश, नारद, पर्वत, सुधन्वा, च्यवनब्राह्मण, ७ मति
भुवन, धौम्य, शतानन्द, कृतव्रण, जामदग्न्य, राम, ऋचीक इत्या
८ इन सब तेजस्वी, संसार में पूज्यों की युधिष्ठिर ने भाइयोंसहि
न्यायपूर्वक प्रणामकर पूजाकी ९ तब तो पूजनहोने के पीछे वे
हात्मा तपस्वी सुखसे बैठे और सुन्दर धर्म्मों के आश्रित भीष्म
के भी आश्रित कथा कहनेलगे १० कथा के अन्त में उन भा
आत्मावाले ऋषियों के प्रणामकर और भीष्मजी के भी शिरसे
णामकर युधिष्ठिर ने भीष्मजी से यह पूछा ११ कि हे पितामह
महापुण्ययुक्त देश, पर्वत और आश्रम कौन कौनहैं जोकि धर्म
अर्थियों करके नित्यही सेवने योग्य हैं वह हमसे कहिये १२
भीष्मजी बोले कि हे मनुष्यों में उत्तम युधिष्ठिरजी इसमें शिलं
वृत्ति और सिद्ध के संवादको कहताहूं १३ कोई सिद्ध सम्पूर्ण
पृथ्वीकी परिक्रमाकर उंछवृत्ति, महात्मा शिविके घरमें प्राप्तहुआ १
जोकि शिवि आत्मविद्याओं में तत्त्वका जाननेवाला, सदैव जि
न्द्रिय, राग द्वेषसे हीन, ज्ञानकर्मों में कुशल, १५ वैष्णवों में सदा श्रे
विष्णुके धर्म में परायण, वैष्णवों की निन्दा न करनेवाला, सदा ध
में परायण, १६ नित्यही योगाभ्यासमें रत, शङ्ख चक्रका धारणवाल
तीनों कालकी पूजा के तत्त्वका जाननेहारा, भगवान् में सदैव र
१७ वेदकी विद्याओं में विद्वान्, धर्म, अधर्मका विचार करनेवाल
नित्यही वेदपाठका व्रत करनेहारा, नित्यही अतिथि पूजन क
वाला, १८ तीर्थसहित बुद्धियुक्त, सदैव शिलोंछमें स्थित, चारों व
में जो ध्यान ब्रह्माजी ने गायाहै १९ उस सबका जाननेवाला, ब्र
ह्मण, विष्णुजी के स्वरूपका धारण करनेहारा, अनेक प्रकारके श
अर्थ में निपुण, नाशरहित भगवान् में सदैव दृढ़ बुद्धिवाला २

वह एक समय में शिबि के घरमें प्राप्तहुआ तो उनको देखकर महामन शिबिजी ने विधिपूर्व्वक आतिथ्यकर २१ देशों के हितका कारण पूंछा २२ कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कौन देश, जनपद, पहाड़, आश्रम पुण्यकारी हैं वे प्रीति से हमसे आप कहने के योग्यहैं २३ तब सिद्धजी बोले कि ते देश, जनपद, पहाड़ और आश्रम पुण्यकारी हैं जिनके बीचमें नदियों में श्रेष्ठ श्रीगंगाजी नित्यही वर्त्तमान हैं २४ मनुष्य तपस्या, ब्रह्मचर्य, यज्ञ और दानसे उस गतिको नहीं प्राप्तहोता जिसको कि गंगाका सेवनकर प्राप्तहोताहै २५ नियत आत्मावाले पुरुषों की गंगाजी के जलमें स्नानकरने से जो तुष्टि होती है वह सैकड़ों यज्ञों के करने से भी नहीं होती २६ जैसे उदयके समय में सूर्यनारायण तीव्र अंधकार को दूरकर शोभित होते हैं तैसेही गंगाजी के जलमें स्नान करनेवाला मनुष्य पापोंको दूरकर शोभित होताहै २७ हे ब्राह्मण अग्नि को प्राप्त होकर जैसे रुई की राशि नाश होजाती है तैसेही गंगाजी के स्नान करनेवाला सब पापों को नाशताहै २८ जो सूर्य की किरणों से तपेहुए गंगाजी के जल को पीताहै वह गोनीहार से निर्मुक्त अग्निसे भी श्रेष्ठ होजाता है २९ जो पुरुष एक चरणसे हज़ार चान्द्रायण करताहै उससे श्रेष्ठ गंगाजी में स्नान करनेवाला होताहै ३० और जो मनुष्य दशहज़ार वर्ष नीचे का शिरकर लटकताहै और जो मनुष्यों में श्रेष्ठ एक महीना गङ्गाजी के जलको सेवताहै ३१ वह ब्रह्महत्या से छूटकर विष्णुजी के रोगरहित स्थानको प्राप्तहोताहै यह गंगाजी वेणीके बराबर पुण्यकारिणी, पवित्र और पाप नाशनेवाली हैं ३२ जिसके स्मरणमात्रही से बालकका मारनेवाला क्षणमात्रही में पापसे छूटजाता है प्रयाग तीर्थराज वैष्णवों को भी दुर्लभ है ३३ जिसमें स्नान करने से हे मनुष्यों में श्रेष्ठ शीघ्रही मनुष्य वैकुण्ठ में जाताहै प्रिय, अप्रिय, धर्म और अधर्म को जो नहीं जानता ३४ परन्तु गंगाजी में स्नानकर महापापों से छूटजाताहै ३५ और जो चारसौ कोसों से भी गंगा गंगा यह शब्द कहता है वह सब पापोंसे छूटकर विष्णुलोकको जाताहै ३६ ब्राह्मण और गऊका मारनेवाला, मदिरा पीने

हारा और बालकका मारनेवालाभी सब पापोंसे छूटकर शीघ्र स्वर्ग में जाताहै ३७ माधवजी तथा वरके दर्शन और वेणीमें स्नान करनेवाला ये वैकुण्ठको जाते हैं ३८ जैसे सूर्य के उदयमें अन्धकार नाश होजाताहै तैसेही गंगाजी में स्नान करने से पापनाश होजाते हैं ३९ गंगाद्वार, कुशावर्त, गल्लिक, नीलपर्व्वत और कनखल तीर्थ में स्नानकरनेसे फिर जन्म नहीं होताहै ४० ऐसा जानकर गंगाजी में स्नान करनेवाला मनुष्यों में श्रेष्ठ वारंवार स्नानही करनेसे हे राजन् पापों से छूट जाताहै ४१ देवताओंमें विष्णुजी, यज्ञों में अश्वमेध, सब वृक्षों में पीपल और नदियों में गंगाजी सदाश्रेष्ठहैं ४२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमापतिनारदसंवादेगंगामाहात्म्यंनामैकाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

बयासीवां अध्याय॥

दास वैष्णवों की महिमा वर्णन॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे संसारके स्वामी प्रभु महादेवजी वैष्णवों के लक्षण और महिमाको कहिये कि किस प्रकारकी है १ तब महादेवजी बोले कि विष्णुजीका भक्तहै इसी से वैष्णव कहाताहै ब्रह्मा का रूप धारण करनेवाला सबके आदि जानने योग्यहै २ जिसके सकाश से वेदके पारगामी ब्राह्मणहुए वेही वैष्णव जानने योग्य हैं और कोई नहीं हैं ३ पवित्रता, सत्य और सहनशीलता से युक्त रागद्वेषसे वर्जित और वेदकी विद्याके विचार का जाननेवाला जो होताहै वही वैष्णव कहाता है ४ नित्यही अग्निहोत्र में रत और नित्यदिन अतिथिकी पूजा करनेवाला, पिता और माताका जो भक्त होता है वही वैष्णव कहाता है ५ दया धर्म्म से युक्त तथा पापसे पराङ्मुख और शंख चक्रसे जो चिह्नितहोताहै सोई वैष्णव कहाता है ६ जो कण्ठमें माला धारता मुखमें सदा रामको उच्चारण करता और सदैव भक्तिसे गानकरताहै वहही मनुष्य वैष्णव कहाताहै ७ पुराणों में नित्यही रत और यज्ञों में सदैव रत, सब धर्मों में संमत मनुष्य वैष्णव जानने योग्य है ८ और जो पाप करनेवाले मनुष्य

तिनकी निन्दा करते हैं वे मरकर वारंवार बुरीयोनियों में प्राप्तहोते हैं ९ गोपालजी के नामकी मूर्तिको जे ब्राह्मण सदा धातुमात्र की चारहाथ की सुन्दरबनाके पूजते हैं वे पुण्यके सेवन करनेवाले जाननेयोग्य हैं और रूपमें सुन्दरी कृष्णजीकी पत्थरकी मूर्ति बनाकर १०।११ जे ब्राह्मण पूजाकरते हैं वे पुण्यकी मूर्ति जानने योग्यहैं जहांपर शालग्राम और द्वारका की मूर्ति है १२ और जहां दोनों मूर्तियोंका संगमहै वहां मुक्ति निस्सन्देहहै मंत्रसे मूर्तिको स्थापित कर जो पूजनकरै १३ तो वह पूजन कोटिगुणाफल देनेवाला धर्म, काम, अर्थ और मोक्षका देनेवाला है वहांपर जनार्दनजी में नवप्रकारकी भक्ति करनेयोग्य है इससे पत्थर तथा धातुकी मूर्ति बनवाकर १४ तिस मूर्ति में भक्तजन ध्यान पूजन और राजोपचार की पूजाकरें १५ सबके आत्मा, भगवान्, अधोक्षज, दीन अनाथों के एक शरण मनुष्योंकी जीविकाके कारण और भारीपापों के नाशनेवालेको नित्यही मूर्तिही में स्मरणकरै और गोपाल,कृष्ण और राम यहीहैं यह कहे १६।१७ जो मनुष्य अच्छीतरह से भगवान् की पूजाकरताहै वही भगवान्का भक्तहै जिसप्रकार भगवान्ने गोकुल में रूप धारण कियाहै वैसाही आत्मा की प्रसन्नताके लिये मनुष्यों में श्रेष्ठ वैष्णवजन बनावें १८।१९ जिससे निस्संदेह अधिकभक्ति उत्पन्न हो और शंख चक्र गदाआदिक भगवान् के हथियार २० तिस मूर्ति में विशेषकर प्रमाण से बनवावे चारभुजा, दोनेत्र, शंख चक्र गदाधारण करनेवाली २१ पीलेकपड़े पहने, शोभायुक्त, अत्यंत गरुई, वनमालाको धारे, प्रकाशित वैडूर्य और कुंडलों से युक्त २२ मुकुटमें मणियोंसे युक्त, सदैव कौस्तुभमणि से प्रकाशित, सोने, चांदी, तांबे वा पीतलहीकी २३ मूर्ति श्रेष्ठभक्ति से ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वैष्णव मनुष्य बनवावें और पुराणोंमें कहे और वेदके मंत्रों से विशेषकर प्रतिष्ठाकर २४ पीछे से शास्त्रके अनुसार षोडशोपचार मंत्रों से विधिपूर्वक पूजनकरें २५ संसारकेस्वामी भगवान्के पूजन होने से सब देवताओंका पूजन होजाताहै इससे इसीप्रकारसे महाप्रभुजी पूजनेकेयोग्यहैं २६ आदि और नाशरहित,देव,शंख,चक्र,

के धारण करनेवाले, सबकेस्वामी भगवान् पुण्यरूपी वैष्णवोंको स
कुछ देतेहैं २७ जैसे विष्णुजी हैं वैसेही महादेव मैंहूं कुछ बीच न
है ऐसाजानकर हे पार्वती दोनोंकी मूर्ति बनवावे २८ और जो शि
वकी पूजा करता और विष्णुजीकी निन्दाओं में तत्पर रहताहै व
निस्संदेह रौरव नरकों में पड़ताहै २९ मैंही विष्णु, रुद्र और पित
मह ब्रह्माहोकर वारंवार सब प्राणियों में सदैव बसता हूं ३० त
पार्वतीजी बोलीं कि हे महादेवजी कौनदास वैष्णव और कौनभ
पृथ्वी में कहेगयेहैं तिनकेलक्षण यथार्थ कहिये ३१ तब महादेवज
बोले कि हे पार्वती शूद्रदास होते हैं वैष्णव नारद इत्यादिक औ
प्रह्लाद और अम्बरीषआदिक भक्तहैं ३२ ब्रह्मक्रियामें नित्यही र
वेद, वेदोंके अंगकापाठ करनेवाला और जो शंख और चक्रसे चि
ह्नित होताहै सोई वैष्णव कहाताहै ३३ ब्राह्मणोंकी सेवामें नित्य
रत और नित्यादिन विष्णुकी पूजा करनेवाला और जो बहुधा वे
संमित पुराणको सुनताहै ३४ वह शूद्र भगवान्का दास कहात
पांचवर्ष से लेकर भगवान् में अनेक प्रकारकीभक्ति जो करताहै ३
वह सब साधुओंके सम्मतभक्त निश्चय कहाताहै तिनमें ध्रुव औ
अम्बरीषआदिक जाननेयोग्यहैं ३६ इनको मुनियोंने सब समय
में भक्त कहाहै कलियुग में भगवान् के ध्यानमें परायण शूद्र अत्य
न्त धन्य हैं ३७ वे इसलोकमें सुखको भोगकर भगवान् के सना
तन स्थानको प्राप्तहोते हैं और जो शंख चक्रसे चिह्नित भगवा
में भक्ति करताहै ३८ और विशेषकर चार प्रकारके भारी उत्सा
करताहै वह शूद्र भगवान् का दास कहाताहै ३९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वर
संवादेदासवैष्णवानांमहिमानामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२॥

तिरासीवां अध्याय ॥

दोलामहोत्सव का वर्णन ॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे महादेवजी सब महीनोंकी विधि कहिये
उनमें भारी उत्साह करना चाहिये तिसकी कौनसी विधिहै १ और

देवता, किसका पूजन,कैसी महिमा और किस तिथिमें करना चाहिये यह हमसे हे सुरेश्वरजी कहिये २ पुण्यकर्मवाले वैष्णवों को महीना महीनामें क्या कहाहै मैं पृथ्वी में धन्य, कृतकृत्य और सुभगाहूं आपके दर्शन और स्पर्श से भगवान् की कथाको सुनतीहूं ३ तब महादेवजी बोले कि हे पापरहित पार्वती देवी उत्सवोंकी विधि तुमसे कहताहूं जिसको सुनकर तुम गीत और बाजाओं से प्रसन्न होगी४ तिसमें चैत्रकेशुक्लपक्षकी एकादशीको विशेषकर दोलारूढ़ को पूजे ५ और भक्तिसे सदा विधिपूर्वक उत्सवकरै जे दोलापर चढ़े हुए कलियुग के पापों के नाश करनेवाले कृष्णजी को देखते हैं ६ वे हज़ारों अपराधोंसे छूटजाते हैं करोड़ जन्मके पाप तबतक रहते हैं ७ जबतक संसार के स्वामी और संसार के नायक देवको नहीं भुलाता है और कलियुग में जे दोलापर चढ़ेहुए जनार्दनजी को देखतेहैं ८ वे गऊ आदिके मारनेवाले भी हों तोभी छूटजाते हैं औरों की क्या कथाहै दोलाके उत्सव में महादेव समेत देवता प्रसन्नहोते हैं ९ ऋषि, गंधर्वों के समूह और रंभा आदिक अप्सराओं के झुण्ड प्रसन्न होकर आंगन में नाचते गीत और बाजा बजाते हैं१० वासुकि इत्यादिक नाग, देवता और देवों के ईश्वर ये भगवान् के दर्शनकी लालसावाले दोलामें प्राप्त होतेहैं ११ दोलायात्राके निमित्त दोलाकेदिन चैत्र वैशाखमें पृथ्वी के सब प्राणी और सब देवता १२ निश्चय भगवान् के दोलामें स्थित होने में प्राप्त होते हैं विष्णुजीको दोलामें स्थित देखकर तीनोंलोकमें उत्सव होताहै १३ तिससे सैकड़ोंकाम छोड़कर दोलाकेदिन उत्सवकरो क्योंकि दोला पर चढ़ेहुए भगवान्केपास प्रह्लाद विष्णुभी प्राप्तहोते हैं १४ और दोलाधिरोहण भगवान् वर देनेवालेको स्मरणकर करते हैं दोलामें स्थित कृष्णजीका जे जागरण करते हैं १५ उनको सब पुण्यों के फलकी प्राप्ति एकही पलमें होती है दोलामें स्थित विष्णुजीको जे चैत्र और वैशाख में देखते हैं १६ वे देवदेव से वंदित विष्णुजी के साथ क्रीड़ाकरते हैं दक्षिणमुख देव गोविन्दजीको एकवार भी देखकर मनुष्य ब्रह्महत्या से छूटजाता है दोलामें चढ़े भगवान्

लोग प्राप्तहों और माधवजी का हम ध्यान करते हैं वहीदेव हमको प्रेरितकरें १७। १८ यह गायत्री से पूजन है॥ लक्ष्मीजी के पति, गोविन्द, लक्ष्मीकण्ठवाले भगवान् के हम नमस्कार करते हैं मंत्र-पूर्वपूजन विधिपूर्वक करना चाहिये १९ फिर यथाशक्ति से एकाग्रचित्त होकर गुरुजीको दक्षिणादेवे और सदैव भक्तिसे विष्णुजीको गानकरे तो परिपूर्ण होजावे २० हे पार्वती वारंवार और बहुत कहने से क्याहै दोलामें स्थित विष्णुजी सब पापों के नाशनेवाले हैं २१ जिन मनुष्यों करके अच्छीतरह से पूजन किये जातेहैं उनको सदैव सबकुछ देतेहैं जहां देवता, गन्धर्व, किन्नर, ऋषि २२ बहुधा दोलामेंचढ़े भगवान्केपास निस्संदेह आतेहैं २३ ॐनमो भगवते वासुदेवाय--इसमंत्रसे पूजनकरावे॥ सोलह उपचारोंसे विधिपूर्वक पूजाकरनी चाहिये पूजन करने से धर्म्म, अर्थ मुख्य सबकाम निश्चय प्राप्त होते हैं २४ अंगन्यास, करन्यास और सब शारीरक न्यास इसमंत्र से करे २५ आगम में कहेहुए मंत्र से भारीउत्सव करनाचाहिये और श्रीलक्ष्मीजी समेत भगवान्को दोलामें चढ़ावे २६ भगवान् के आगे नारद आदिक सुरर्षि वैष्णव और विष्वक्सेनआदिक भक्त सदैव स्थापित करे २७ और पांच बाजाओं के शब्दों से बुद्धिमान् आरती करे और पहर पहर में यत्नसे पूजे २८ सुन्दर नारियल तथा केलाओंसे अर्घदेवे तिसपीछे यत्नसे पूजे २९ हे देवदेव, हे जगन्नाथ, हे शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले, हे देव, हमारे अर्घको ग्रहण कीजिये और हमारेऊपर दयाकीजिये ३० वैष्णव मनुष्य शेषअर्घको वैष्णवोंकोदेकर बाजाबजवावें और नाचकरावें ३१ तिसपीछे सबलोग विशेषकर झुलावें पृथ्वीमें जितनेतीर्थ और क्षेत्रहैं ३२ वे सब उसदिन में देखने को वहां प्राप्त होतेहैं ऐसाजानकर हे पार्व्वती देवी भारीउत्सव करनाचाहिये ३३ उत्सवके करने से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और दूसरीभी जाति शंख चक्र और गदाके धारण करनेवाले जानने चाहिये ३४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेदोलागमोत्सवोनामत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३॥

चौरासीवां अध्याय ॥

दमनकमहोत्सवका वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि इसी चैत्रमहीने की द्वादशी में दमनकोत्सव विशेषकर अच्छीविधि से करना चाहिये १ श्रद्धासे वैष्णवजन पुण्यकारी और मनुष्यसमूहों के आनन्द बढ़ानेवाले उत्सवको करें देवताओं के आनन्दसे उत्पन्न दिव्या दमनमंजरी है २ वह वैष्णव भक्तोंकरके सब पूजाके फलकी इच्छासे चैत्रके शुक्लपक्षकी द्वादशी में निवेदन करनी चाहिये ३ महोत्सव में मन लगानेवाला मनुष्य श्रेष्ठ भक्तिसे इस उत्सवको करावे तिसमें पहले उत्सव करानेवाला आपही खुद बगीचे में जावे ४ और गुरुजीकी आज्ञासे रतिसमेत पूजनकरै हे कामदेव हे संसारके मोहन करनेवाले आपके नमस्कार है ५ विष्णुजी के लिये मैं इकट्ठा करताहूं हमारे ऊपर कृपाकीजिये फिर गीत और बाजा के शब्दोंसमेत घरको लावे ६ हे पार्वतीजी एकादशी में रात्रि में भक्तिसे वैष्णव मनुष्य अधिवासनपूर्वक पूजन करें ७ और तिनके आगे सर्वतोभद्र मण्डलबनाकर रतिसमेत देवों के स्वामी को स्थापितकर ८ बुद्धिमान् मनुष्य सफेदवस्त्रों से आच्छादितकर दमनजीको स्थापितकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वैष्णव वहां पर पूजनकरें ९ कामदेव और रतिजी के अर्थ नमस्कारहै पूर्वआदि दिशामें स्थापितकर बुद्धिमान् कामदेवजीको पूजे १० चन्दन, फूल, धूप, दीप, आरती विधिपूर्वक भक्तिसे रात्रि में करनी चाहिये ११ मदनजी के अर्थ नमस्कारहै ऐसा पढ़कर पूर्व में मन्मथ के अर्थ नमस्कार है यह पढ़कर आग्नेयकोण में कंदर्प के अर्थ नमस्कारहै यह पढ़कर दक्षिणमें अनंग के अर्थ नमस्कारहै यह पढ़कर नैऋत्यकोणमें भस्म शरीरवालेके अर्थ नमस्कारहै ऐसा पढ़कर पश्चिम में स्मरके अर्थ नमस्कारहै यह पढ़कर वायव्यमें ईश्वर के अर्थ नमस्कारहै ऐसा पढ़कर उत्तर में पुष्पबाण के अर्थ नमस्कारहै ऐसा पढ़कर ईशान्य में ॥ इसभांति सब चारोंदिशाओं में पूजनकरावे भगवान् के पूजन होनेमें सब देवता अच्छीतरहसे पूजित हो०

हैं १२ अक्षत, चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य और पानों से दमनकको पूजनकरे ॥ तिस पुरुषको हम प्राप्तहों और कामदेवजीको हमलोग ध्यान करते हैं वे अनंग हमको प्रेरितकरें इस कामदेव की गायत्री से एकसौ आठवार दमनकजी को अभिमंत्रितकर नमस्कारकरे ॥ पुष्पवाणजी संसार के प्रकाशकरनेवाले मन्मथ, संसारकेनेता, रति की प्रीति के करनेवालेके अर्थ नमस्कारहै १३ हे देवदेव, हे श्रीनि इवेश, हे रतिके पति, हे संसारके मण्डनकरनेवाले आपके नमस्कार है १४ हे संसारके नाथ, हे सबके बीज आपके अर्थ नमस्कारहै इस आगम में कहेहुए अनेकप्रकार के मंत्रों से विशेषकर १५ यत्नसे लक्ष्मीसमेत भगवान् की पूजाकरै तदनन्तर बुद्धिमान् पुरुष अ कर्म को भगवान् में निवेदनकर जागरण करावे १६ हे देवदेव, हे संसारके स्वामी, हे वांछित अर्थ के देनेवाले, हे कामेश्वरी के प्रिय हे विष्णुजी हृदय में स्थित हमारी कामनाओं को पूरीकीजिये १७ इसप्रकार इन वहुत मंत्रों से यत्न से श्रीनिवास, संसार के स्वामी भक्तों के कल्याण की इच्छा करनेवाले भगवान् पूजने चाहिये १८ तदनन्तर दमनक मुष्टिको ग्रहणकर मूलमंत्र से लक्ष्मीजी और वि ष्णुआदि देवताओंको दमनकको निवेदितकरै फिर चन्दनआदिकों से महती पूजा और गीत वाजा और नाचों से भारी उत्सवकरे और देवजी के आगे स्थापित कलशके जलको देवजी के चरणों में छो ड़कर उसी दिन में जलक्रीड़ा करै फिर कपड़ा गहना और द्रव्य से श्रद्धापूर्वक अपने गुरुजी को पूजे तदनन्तर आप वैष्णव और वन्धुओंसमेत भोजनकरै १९ महादेवजी बोले कि दमनक मंजरी से जो विष्णुजी को पूजे तो संसारके स्वामी के पूजितहोने में मैं भी पूजित होताहूं २० और हे पार्वती ब्राह्मणका मारनेवाला, सोना चुरानेहारा, मदिरापीनेवाला और मांसखानेवाला भी दमनकको देखकर पापों से छूटजाताहै २१ इसप्रकार जिन वैष्णवों ने मंजरी से दमनकको पूजा तो उन्होंने सवतीर्थ करिलिये २२ वेदका पढ़ना और शास्त्रका भी पढ़ना और अग्निहोत्र भी उसने करलिया जि सने मंजरी से भगवान् को पूजा २३ और ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, और

और दूसरी जातियोंका भी कुल श्रेष्ठ और अत्यन्त धन्य होजाता है २४ जिस कुलमें उत्पन्नहोकर दमनक उत्सव कियागया वह कुल धन्यहै और जिसने विष्णुजीका पूजनकिया वह मनुष्य भी धन्य है २५ चैत्र वैशाखमें दमनकके उत्सव होनेमें मनुष्यको हजार गउओं के देनेका फल मिलताहै २६ वसन्तऋतु में मल्लिकाके फूलों से जो मनुष्य भगवान् को श्रेष्ठ भक्तिसे पूजताहै वह मुक्तिका भागी होताहै २७ मरुक और दमनक ये शीघ्रही भगवान् को प्रसन्न करनेवाले हैं इससे श्रेष्ठमनुष्य पूजा अवश्यकरे २८ हजारगऊ, कन्यादान और पृथ्वीकादान भी विष्णुके पूजन करने से होजाता है २९ और जो चैत्र वैशाख में दमन की एकएक मंजरी ग्रहणकर भगवान् को पूजताहै ३० उसकी पुण्यकी गिनती को हे पार्वतीजी में नहीं जानता वह निश्चय इसलोक और परलोक में धर्म अर्थ और कामको भोगकर भगवान् के पदको प्राप्तहोताहै ३१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेदमनकमहोत्सवोनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

पचासीवां अध्याय ॥

शयनमहोत्सवका वर्णन ॥

महादेव जी बोले कि आनन्दसमेत, उत्साह करनेवाला वैष्णव भक्तिसे वैशाख की पूर्णमासी में जलमें स्थित भगवान् को पूजे १ गीत, बाजा, नाच और पुण्यकारी भारी उत्साहकर प्रसन्नतासमेत एकादशी में भगवान्को देखे २ और भक्ति सेही भगवान् के गीत गाकर सुन्दर उत्साहकरे और भगवान् से यह कहे कि हे देवेश हे सुरेश्वर जी इस जलमें आप सोइये ३ आपके सोने से निस्संदेह संसार सो जाताहै और जे मनुष्य मेघोंके आगम वर्षाऋतुमें जलमें स्थित भगवान्को करते हैं उनका नरकमें दाह नहीं होता सोने, चांदी, तांबे ४।५ वा मट्टी के बर्तनमें भगवान् को सुलावे उस बर्तनमें ठण्ढा सुगन्धयुक्त जल रक्खे ६ बुद्धिमान् मनुष्य उस जलमें [भग]वान्को स्थापन करे गोपाल वा रामनाम ७ वा शालग्रामकी

वा मूर्त्तिको विशेषकर स्थापनकरै तो उसका अपारपुण्य होताहै ८
जबतक शेष, संसार, चन्द्रमा और सूर्य्य रहतेहैं तबतक उसके कुल
में कोई नरकमें नहीं जाताहै ९ तिससे हे पार्वती ज्येष्ठ में जल में
स्थित भगवान्को पूजै तो वह मनुष्य प्रलयपर्यन्त तापरहित हो
जाताहै १० सुन्दर ठण्ढे जलमें तुलसीदलसे वासित भगवान् को
आषाढ़ और ज्येष्ठमें पूजै ११ आषाढ़ और ज्येष्ठमें जे जलमें स्थित
भगवान्को अनेक प्रकारके फूलोंसे पूजते हैं वे यमराजकी पीड़ासे
छूट जातेहैं १२ भगवान्को जल अत्यन्त प्याराहै जलमें सोतेहैं
और जल प्रियहै तिससे विशेषकर जलमें स्थित भगवान् को पूजै
१३ जलके बीचमें स्थितकर शालग्रामकी मूर्तिको महाभक्तिसे जो
पूजता है वह कुलमें पवित्र होताहै १४ कर्कराशि और मिथुन के
सूर्यों में विशेषकर भक्तिसे जो जलके बीचमें भगवान् को पूजताहै
और विशेषकर द्वादशी में जलमें स्थित जल में शयन करनेवाले
भगवान्को पूजताहै तो वह सौ करोड़ यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै
१५। १६ जलके वर्तनमें रखकर जे मनुष्य वैशाख महीनेमें लक्ष्मी
के पति भगवान्को पूजते हैं वे पृथ्वीमें देवताहैं १७ वर्तनमें चन्दन
जल लेकर द्वादशीकी रात्रिमें जो भगवान् के चढ़ाकर पूजन करताहै
है वह मुक्तिका भागी होता है १८ श्रद्धारहित, पापात्मा, नास्तिक,
संदेहयुक्त और हेतुनिष्ठ ये पांच पूजाके फलके भागी नहीं हैं १९
और हे महादेवि तैसेही जलमें स्थित संसारके स्वामीको जो मनु-
ष्य नित्यही पूजताहै वह महापापों से छूटजाता है २० ॐ ह्रीं ह्रीं
रामायनमः॥ इस मंत्रसे पूजन कहा है॥ ॐ क्लींकृष्णायगोविन्दाय
गोपीजनवल्लभायनमः॥ इस मंत्रसे जल को अभिमंत्रण करै॥ हे
देवदेव हे महाभाग हे भृगुकी लात के चिह्नयुक्त २१ हे महादेव हे
विश्वभावन आपके नमस्कारहै हे देव अर्घ ग्रहण कीजिये और म-
देव हमको मुक्ति दीजिये २२ अनेक प्रकारके फूलोंसे जो भगवान्
को पूजताहै वह सब बाधाओंसे छूटकर भगवान् की सायुज्यताको
प्राप्त होताहै २३ एकाग्रचित्त होकर द्वादशी में रात्रिमें जागरण कर
नाशरहित देव विष्णुजी को भक्तिपूर्वक सेवन करै २४ इसनकार

भक्तिभाव से तत्पर, भक्तिकी इच्छा करनेवाले मनुष्य वैशाख संबन्धी विष्णुसंज्ञक उत्सव करें २५ आगम में कहेहुए मंत्रसे विधिको करावें हे महादेवि इसप्रकार करनेसे करोड़ यज्ञके करने के बराबर फल होताहै २६ रागद्वेष और महामोहसे छूटकर इसलोकमें मनुष्य सुख भोगकर भगवान्के सनातनको प्राप्तहोताहै २७ और जो ब्राह्मण भक्तिभावसे पृथ्वी में उत्सव करताहै वह सब पापों से छूटकर निश्चय वैकुण्ठको जाताहै २८ वेद और शास्त्रके पढ़नेसे हीन मनुष्यभी भगवान्में भक्तिको प्राप्तहोकर वैष्णव पदको प्राप्तहोताहै २९ आत्माराम, सदैवमुक्त और आत्मा जीतनेवाला होकर जबतक चन्द्रमा और सूर्य्य हैं तबतक विष्णुजी के पदको प्राप्तहोताहै ३० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेशयनमहोत्सवोनामपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

पवित्रारोपण का वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वतीजी श्रावण के महीने के प्राप्तहोने में पवित्रारोपण विधि करनी चाहिये जिसके करने से सुन्दर भक्ति उत्पन्न होती है १ बुद्धिमानों करके विष्णुजीका पवित्रारोपण श्रद्धा से करने योग्य है जो मनुष्य इसको करताहै उसकी वार्षिकी पूजा पूर्ण होजाती है २ विष्णुजीके पवित्रारोपणमें आत्माको सुख होता है और विष्णुजी के सदा पूजन करने से अनेक प्रकारके सुख को प्राप्तहोताहै ३ ब्राह्मणी के कातेहुए या अपनेही कातेहुए या अच्छी शूद्री के कातेहुए सूत्र वस्त्रसे या मोल लेनेमें जिसही के यहां मिले ४। ५ या क्षौम वस्त्र से पवित्रारोपण विधि करै चांदी या सोने या इनके न मिलनेमें बुद्धिमान् मनुष्य सब धातुओं का सूत्र ग्रहणकर विधिपूर्वक ६।७ त्रिवृतकर जलसे धोकर लिंगमें लिंग प्रमाण और मूर्तिमें जैसी विधि उसके अनुसार ८ बुद्धिमान् गांठों पर्यन्त चर तथा तोंदी के बराबर ज्येष्ठ, मध्य और कनिष्ठ पवित्र करावे ९ सा भर या छःमहीने या तीन महीने की गिनतीसे सूत्रसे एकसौ ८

ग्रन्थिका १० या उसकी आधी संख्या से युक्त बनावे लिंगमें लिंग-
संज्ञक गंगा नागोंसे संयुक्त ११ मूर्तिमें पवित्र वनमालक जिसप्र-
कार शोभाहो वैसा बनवावे जिससे विष्णुजी प्रसन्नहों १२ इसप्र-
कार गन्धनाम पवित्र सदा करावे तंतुनाम से संयुक्त एक पवित्र
वैष्णव मनुष्य करें १३ देवताओं का पवित्र विष्णुदैवत कहा है
अम्बरीष और ध्रुव आदिक भक्तोंको १४ पीछे से पवित्र देने योग्य
हैं पवित्रारोपण में कुबेरकी परेवा तिथि कही है १५ लक्ष्मी देवीकी
तिथियोंमें उत्तम द्वितीया कही है तृतीया आपकी चतुर्थी गणेशजी
की १६ पंचमी चन्द्रमाकी षष्ठी स्वामिकार्तिक की सप्तमी सूर्य की
अष्टमी दुर्गाकी १७ नवमी मातृकाओं की दशमी यमराज की ए
कादशी सबकी द्वादशी लक्ष्मीजीके पति भगवान्की १८ त्रयोदशी
कामदेवकी चतुर्दशी महादेवजीकी पूर्णमासी ब्रह्माकी पूजनमें १९
पवित्रारोपण के उचित ये सब तिथियां कही हैं कनिष्ठमें बारह म
ध्यममें चौबीस २० उत्तममें छत्तीस पवित्रकमें ग्रन्थियां हैं इनको
कपूर, केसर, चन्दन और हल्दी से २१ रंगकर सबको नवीन कर
डक में स्थापित करै देवता का पूजन जहांपर है वहांपर देवताओं
की तरह स्थापित करै २२ पहले देवपूजन कर पवित्रको अधिवा
सितकर तदनन्तर पूजनकरे २३ पवित्रों में जे देवताहैं तिनके स
मीप प्राप्तहोवे ब्रह्मा विष्णु और महादेव ये तीन सूत्रके देवताहैं २४
क्रिया, पौरुषी, वीरा, चौथी अपराजिता, जया, विजया, मुक्तिदा, सदा
शिवा २५ नवईं मनोन्मनी दशईं सर्वतोमुखी ये ग्रन्थियों के देवता
सूत्रों में प्रवेशयुक्त करावे २६ आवाहनमुद्रा और शास्त्रमें कहीहुई
विधि से सबको आवाहनकर सन्निधीकरण २७ सन्निधीकरणमुद्रा
से कर रक्ष्यामुद्रासे रक्षितकर धेनुमुद्रा से अमृतीकर भगवान् के
आगे लाकर कलशका जल लेकर आगममें कहेहुए मंत्रसे श्रीभग
वते कृष्णाय इस मंत्रसे कर चन्दन धूप दीप नैवेद्यादिक देकर पान
आदिक भी देकर सोलहो उपचार आदिसे पवित्र देवताको पूजन
कर नानाप्रकार वस्तुओं से पवित्रको धूपितकर भगवान् के सन्मुख हो
नमस्कार मुद्रा से भगवान्को अभिमंत्रण करे कि हे महादेव देव

ौर गण आदिकों समेत तुम नेवते जातेहो मंत्रोंसे परिवार और
ोकपालों समेत २८ हे भगवन् हे विष्णुजी विधिके सम्पूर्ण होने
 लिये आइये सवेरे आपका पूजन करूंगा नियत सांनिध्य की-
ये २९ फिर तिस गन्ध और पवित्रको देव, राघव श्री विष्णुजी
 चरणमें रख सवेरे अपनी क्रियाकर पुण्याह स्वस्तिवाचन जय
य शब्द घंटादिक बाजाओंके शब्द नगारा आदिके पवित्र शब्दों
 पूजाकरै तिस पीछे पहले ज्येष्ठ फिर मध्यम और कनिष्ठकी क्रम
 पूजाकरै ॐवासुदेवायविद्महे विष्णुदेवायधीमहि तन्नोदेवःप्रचो-
यात् इस मंत्रसे अथवा अपने मंत्रों से पवित्र दानकरै तदनन्तर
ारी,विष्णुजी के प्रसन्न करनेवाली पूजाकरै जिसके करनेसे हे देवि
ात्मा विष्णुजी प्रसन्न होते हैं ३० चारोंओर दीप माला विधि से
रै और बुद्धिमान् मनुष्य चार प्रकारकी अन्नकी नैवेद्य करावे ३१
ौर पूजेहुए पवित्रों को फिर देवे तदनन्तर भक्तिसे श्रीगुरुजी को
जे ३२ कपड़े और अलंकारकी विधिसे श्रीगुरुजीको अच्छीतरह
 पूजकर तिस पीछे पवित्रको धारणकरै ३३ और वैष्णवोंको पान
ादिक देकर अग्निको पूर्णाहुति दे श्रीनिवास श्रीकृष्णजीको कर्म
ंवेदन करै कि हे भगवन् केशवजी मंत्रहीन क्रियाहीन और भक्ति
 हीन मैंने आपकी अच्छीतरहसे पूजाकी है इससे निश्चय मेरा
ाव पूर्ण हो ३४ तदनन्तर इष्ट बन्धु और वैष्णव ब्राह्मणों समेत
ुद्ध अन्नको आप भोजनकरै इस सुन्दर पूजनको जे उत्तम ब्राह्मण
ानते हैं उनके सब पाप छूटकर विष्णुजी के श्रेष्ठ पदको प्राप्तहोते
 ३५ जबतक चन्द्रमा और सूर्य तपते हैं तबतक वैसेही पवित्रका
ारोपक निस्संदेह तपताहै ३६ पृथ्वी में जितने दान और नियम
 वे सब पवित्रारोपण करने से पूर्णता को प्राप्तहोते हैं ३७ यह प-
वित्रारोपणविधि उत्सवोंका राजाहै ब्राह्मण का मारनेवाला भी इस
े निस्संदेह शुद्ध होजाताहै ३८ हे पार्वतीजी सत्य सत्य मैं कहता
ूं पवित्रारोपणमें जो पुण्यहै वही दर्शनके करनेसे भी होती है ३९
और शूद्रभी जो भक्तिभावसे पवित्रारोपणविधि करते हैं वे अत्यंत
न्यहैं ४० और मैंने जो मुक्ति के देनेवाली श्रीविष्णुजीकी भक्तिकी

है इससे मैं धन्य, कृतकृत्य और सौभाग्ययुक्त पृथ्वी में हूं ४१

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसं देपवित्रारोपणंनामषडशीतितमोऽध्यायः ८६॥

सत्तासीवां अध्याय॥

महादेवजी बोले कि चैत्रमें चंपक या चमेली के फूलसे क्लेशके नाशनेवाले केशवजी पूजने चाहिये १ दमनक मरुक अथवा वेल के फूलोंसे संसारके स्वामी सब ईश्वरों के ईश्वर विष्णुजी को पूजे २ हे पार्वतीजी चैत्रके महीनेमें मनुष्य सुन्दर लाल कमलों से विष्णुजी को पूजते हैं ३ वैशाख में वृषके सूर्यों में भगवान् केतकीपत्र से पूजने चाहिये ४ जो भक्तिसे भगवान् को पूजताहै उसके ऊपर सैकड़ों मन्वन्तर भगवान् प्रसन्न रहते हैं ज्येष्ठ महीने के प्राप्त होने में अनेक प्रकारके फूलोंसे भगवान्को पूजै ५ उनके पूजन करनेसे सब देवताओं का पूजन होजाताहै हज़ारों पाप और सैकड़ों महापाप करके भी ६ मनुष्य लक्ष्मीसमेत विष्णुजी जहां रहते हैं तहां को प्राप्तहोते हैं आषाढ़के महीनेमें विशेषकर पूजा ७ करवीर लाल फूल और कमलोंसे सदा करनी चाहिये जे मनुष्य इनसे पूजा करते हैं वे पुण्यभागी जानने चाहिये ८ सुवर्णके समान कदंबके फूलों से जे विष्णु गोविन्दजी को पूजते हैं उनको शनैश्चर से उत्पन्न डर नहीं होताहै ९ मेघों के आगममें मेघों के समान श्यामवर्ण भगवान् कदम्ब के फूलों से पूजित हुए जबतक चौदहों इन्द्र बीतते हैं तबतक वांछित कामनाओंको देते हैं १० जैसे लक्ष्मीजीको प्राप्तहोकर भगवान् प्रसन्नहोते हैं वैसेही कदंबके फूलको प्राप्तहोकर भी प्रसन्न होते हैं ११ तुलसी और कृष्णतुलसीकी बंजुलोंसे सदा पूजन किये हुए भगवान् नित्यही कष्टको हरतेहैं १२ श्रावण के महीने के प्राप्त होनेमें अलसी के फूल तथा दूबके दल वा विशेषकर अनेक प्रकार के फूलों से जे भगवान् को पूजते हैं उनको भगवान् प्रलयपर्यन्त अनेक प्रकारकी कामना देतेहैं १३। १४ भादों के महीने के प्राप्त होनेमें चम्पक सफ़ेद फूल तथा लाल सिन्दूरक १५ वा कमलों से

पजा करनेसे सब कामनाओंका फल प्राप्तहोताहै शुभ कुंवारके म-
ानेमें भी भगवान् का पूजन करना चाहिये १६ जूही नवीन च-
ाली तथा अनेक प्रकारके सुन्दर फूलों से मनुष्य भक्तिपूर्वक यत्न
ा भगवान्की पूजन करें १७ जे मनुष्य कमलोंको लेकर जनार्दन
ीको पूजते हैं उनको पृथ्वी में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्तहोती
ं १८ कार्तिक के महीने के प्राप्तहोने में महेश्वरजी पूजने चाहिये
जितने ऋतुके फूलहैं वे सब भगवान्में चढ़ावे १६ तिल वा तिल
े फूलोंसे भी पूजनकरै इनके पूजन करने से अपार फल मिलता
ं २० कार्तिकमें बकुलके फूल, पुन्नाग वा चम्पकों से जे जनार्दन
ो पूजते हैं वे मनुष्य देवताहैं मनुष्य नहीं हैं २१ अगहनमें यत्नसे
अनेक प्रकारके फूल नैवेद्य धूप और आरती से भगवान् पूजने यो-
ग्यहैं २२ विशेषकर अगहन में सुन्दर फूलों से पूजै पौष महीने में
अनेक प्रकार के फूल और कस्तूरी के जल से भगवान् का पूजन
करना कल्याण देनेवालाहै माघ महीने में अनेक प्रकारके फूलों से
ूजे २३। २४ भगवान्के पूजन होनेसे मनुष्य निश्चय वांछितको
प्राप्त होताहै तथा कपूर से उत्पन्न पूजा और अनेक प्रकार नैवेद्य
और लड्डुओं से २५ फाल्गुनके प्राप्तहोने में भगवान्की फूल लेकर
बसंतऋतुकी पूजाकरै २६ वा सब नई वस्तुओं से पूजनकरै जग-
न्नाथजी के पूजन होने से श्रीविष्णुजी के प्रसाद से मनुष्य नित्यही
नाशरहित वैकुण्ठ पदको प्राप्तहोताहै २७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशतसहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे
मासिकपुष्पोनामसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७॥

अट्ठासीवां अध्याय॥

कार्त्तिकमाहात्म्यका वर्णन॥

सूतजीबोले कि एक समय में नारदमुनि कृष्णजी के देखने की
इच्छाकर सुन्दर कल्पवृक्ष के फूललेकर द्वारकापुरीको आये १ तो
कृष्णजी ने स्वागत से नारदजीका बड़ा आदर किया और अर्घ्य
पाद्य और आसनदिया २ तब नारदजी ने कल्पवृक्ष के फूलोंको

णजी को देदिया कृष्णजी ने सोलहहज़ार स्त्रियों में उन फूलों
बांटदिया ३ परन्तु सत्यभामा को भूलगये और सबको प्रभुजी
दिया तब तो सत्यभामाजी क्रोधयुक्त होकर कोपभवनमें चलीगई
कृष्णजीने यहहाल जानकर कोपभवन में जाकर सत्यभामा को स
मझाकर मनसे गरुड़जीको स्मरणकिया ५ स्मरणकरतेही गरु
जी आकर आगे खड़ेहुये तब वेगसे कृष्णजी गरुड़पर चढ़कर प्यारी
सत्यभामासे बोले ६ कि हे सत्यभामा तुम क्रोध न करो तुम्हारेलिये
देवताओंसमेत इन्द्र से विरोधकर तुम्हारे आंगन में कल्पवृक्ष
वहांसे लाकर लगाऊंगा हे महाभागे मेरे अपराधको क्षमाकरो ऐसी
प्रतिज्ञाकर कृष्णजी सत्यभामासमेत ७। ८ शीघ्र देवलोकको इन्द्र
के पासगये तब उनसे कल्पवृक्ष को मांगा तो इन्द्रने कृष्णजी से
कहा ९ कि हे प्रभुजी आपकरके यह कल्पवृक्ष पृथ्वी में प्राप्तहोने
योग्यनहीं है ये वचन सुनकर महाबाहु कृष्णजी क्रोधयुक्त होकर
कल्पवृक्ष को जड़ से उखाड़कर १० वेगसे गरुड़पर धरलेते भये
तब अत्यन्त बली, वीर्ययुक्त, वज्रके धारणकरनेवाले इन्द्रजी शी
घ्रतासे वज्रलेकर ११ गरुड़को मारतेभये और कहा कि कल्पवृक्ष
को छोड़दो तब तो कृष्णजी ने वज्रकी गौरव से एक पत्रको छोड़
और आप शीघ्रतासे द्वारकापुरी में प्राप्तहुए इन्द्रके वज्रके प्रहारसे
तीन वाहन मयूर, नकुल और चाषहोगये फिर कृष्णजीने सत्यभामा
के घरमें कल्पवृक्षको लगादिया तिसी समयमें नारदजी सत्यभामा
के स्थानमें आये तो उन्होंने नारदजीका बड़ा मानकिया और बोलीं
१२। १३। १४ कि इसप्रकारका कल्पवृक्ष और इसी प्रकारके पति
जन्म जन्म में कैसे हमको प्राप्तहोंगे यह आप हमसे कहिये १५
जब इसप्रकार सत्यभामाजी ने पूंछा तो मुनियों में श्रेष्ठ नारदजी
बोले कि हे सत्यभामाजी तुलापुरुषके दानसे तुमको प्राप्तहोंगे १६
तब तो सत्यभामाजी ने कल्पवृक्षसमेत कृष्णजीको विधिसे तौलकर
नारदजी को देदिया नारदजी सब सामग्री लेकर स्वर्गको चलेगये
१७ सूतजीबोले कि भगवान्की आज्ञालेकर जब नारदजी चलेगये
तो प्रसन्नतासे फूलेहुए मुखवाली सत्यभामा वामदेवजी से बोलीं १८

कि मैं धन्य और कृतकृत्यहूं मेरा जीवन सफलहै हमारे जन्म और
दानमें हमारे माता पिता भी धन्यहैं १९ जिन्होंने तीनों लोकसे अ-
धिक भाग्यवाली हमको निश्चय पैदाकियाहै जिससे सोलहहज़ार
स्त्रियों में मैं अधिक प्यारीहूं २० और मैंने कल्पवृक्षसंयुक्त आदि-
पुरुषको विधिपूर्वक नारदजीको समर्पित कियाहै २१ कल्पवृक्ष की
वार्त्ताको भी पृथ्वी के प्राणी नहीं जानते हैं सोई कल्पवृक्ष इससमय
में हमारे घरमें स्थितहै २२ और तीनों लोकों के स्वामी लक्ष्मी के
पतिकी मैं अत्यन्त प्यारीहूं इससे हे मधुसूदनजी आपसे कुछ पूं-
छना चाहतीहूं २३ कि जो आप हमारे प्रियकरनेवाले हैं तो विस्तार
से कहिये कि जिसको सुनकर फिर मैं अपना हितकरूं २४ और हे
[illegible]व कल्पमेंभी आपसे वियोग न हो सूतजीबोले कि इसप्रकार सु-
दरमुखयुक्त भगवान् ने प्यारी के वचनसुन २५ सत्यभामाके हाथ
[illegible]ं हाथकर कल्पवृक्षके नीचे विलाससमेत अनुचरोंको मनाकर स्त्री
[illegible]ाहित प्राप्तहुए २६ प्रकाशित पुलकावलीयुक्त अंगवाले संसारके
[illegible]ामी हँसकर सत्यभामासे उनकी प्रीतिके परितोष के अर्थ बोले
[illegible]७ कि हे प्रिये तुमसे अधिक प्यारी सोलहहज़ार स्त्रियों में कोई
[illegible]हीं है तुम हमारे प्राणों के बराबरहो २८ तुम्हारे लिये देवताओं
[illegible]मेत इन्द्र से विरोध किया तुमने थोड़ा बहुत जो कुछ मांगा २९
[illegible]नेके नहीं योग्य अथवा करने के योग्य और नहीं कहने के योग्य
[illegible]वको पूरा करताहूं तुम्हारे कियेहुए प्रश्नको कैसे नहीं कहूंगा जो
[illegible]म्हारे मनमें वर्त्तमानहो वह सबपूंछो मैं कहूंगा ३० तब सत्यभा-
[illegible] बोलीं कि दान, व्रत और तपस्या मैंने पूर्वकाल में क्या की है
[illegible]ससे मैं मानुषी सब मानुषियोंका तिरस्कारकर पार्वतीकी समान
[illegible]श्चय हुईहूं ३१ तुम्हारी अर्द्धाङ्गी, नित्यही गरुड़के ऊपर चढ़
[illegible] जानेवाली और आपके साथ इन्द्रादिक देवताओं के स्थानको
प्राप्त होचुकी हूं ३२ इससे आपसे यह पूंछना चाहती हूं कि
[illegible] क्या दूसरे जन्ममें शुभकियाहै कौन शील और किसकी कन्या
३३ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे कान्ते एकमन होकर सुनो जो
[illegible] पूर्व जन्ममें थी और पुण्यव्रत किया था वह सब तुमसे

हूं ३४ सतयुगके अन्त में मायापुरी में ब्राह्मणों में उत्तम आत्रे
देवशर्मानामक थे जो कि वेद और वेदांग के पारगामी ३५ अति
थियों का सत्कार करनेवाले अग्निकी सेवा करनेवाले सौरके व्रतों
परायण नित्यही सूर्यको आराधन करते साक्षात् दूसरे सूर्यकीनाईं
थे ३६ अधिक उमरवाले उनके गुणवती नाम कन्याहुई पुत्र नहीं
हुआ तब उन्होंने चन्द्रनाम अपने शिष्यको कन्या देदी ३७ और
दामादही को पुत्रके समान मानते भये और दामाद पिताके समान
जानता भया कदाचित् श्वशुर और दामाद कुश और लकड़ी लेने
के लिये वनको गये ३८ जो कि हिमालय पर्व्वतके समीपथा वहां
पर इधर उधर घूमनेलगे फिर उन दोनों ने भयानक राक्षसको आते
देखा ३९ तो डरके मारे सब अंग व्याकुल होगये और भागने
भी समर्थ न हुए फिर यमराजके समान रूपवाले राक्षसने उनका
नाश करदिया ४० तो वे दोनों क्षेत्रके प्रभाव और धर्मशीलता से
हमारे समीपवाले गणों करके वैकुण्ठस्थान को प्राप्त कियेगये ४१
जीवनपर्यंत जो उन्होंने सूर्यपूजा की थी तिसी कर्म से निश्चय हम
प्रसन्न हुए ४२ क्योंकि शैव, सौर, गाणेश, वैष्णव और शक्ति के
पूजनेवाले इसप्रकार हमको प्राप्तहोते हैं जैसे वर्षाका जल समुद्र को
प्राप्त होता है ४३ एक मैं निश्चय नामों से पांच प्रकारका हूं जैसे
देवदत्त कोई एक पुत्रहै परन्तु बुलाने के उसके कई नामहों इसप्र
कार मैं हूं ४४ तदनन्तर वे विमानपर चढ़कर सूर्यके समान प्रका
शितहुए हमारे स्थानमें बसनेलगे हमारेही तुल्य रूप होकर हमारे
समीप अप्सराओं के साथ भोग भोगनेलगे ४५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायांश्रीकृष्णसत्यभामा
संवादेअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्य में सत्यभामा के पूर्वजन्म का वर्णन ॥

श्रीकृष्णजी बोले कि गुणवती राक्षससे मारेहुए पिता और पति
को सुनकर उनके दुःखसे पीड़ितहोकर करुणाकर रोतीहुई बोली

कि हा नाथ हा पिताजी हमको छोड़कर कहां चले गये बाला मैं अनाथ आपके विना क्या करूं २ घर में स्थित, कुशलहीन और दुःखयुक्त मुझको भोजन और कपड़ा इत्यादिकों से कौन स्नेहसे पालना करेगा ३ भाग्य, सुख, स्वामी और जीविकाहीन, मूर्खा और जिसके आपही स्वामी थे वह अब किसकी शरण में जावे ४ श्रीकृष्णजी बोले कि इसप्रकार कुररीकी नाईंबहुत वारंवार रोकर पृथ्वी में विकल होकर पवन से गिरे हुए केले की नाईं गिर पड़ी ५ और बहुत समय तक ऊंची श्वास ले शोक से पीड़ित दुःखरूपी समुद्र में डूबसी गई फिर शुभकर्म्म करनेवालीने पिता और पतिकी पारलौकिक अच्छी क्रिया सब घरकी सामग्रियों को बेंचकर करदी ६।७ और उसी पुरमें विष्णुकी भक्तिमें परायण, शांत, सत्यपवित्र और जितेन्द्रिय उसने जीवनपर्यन्त वासकिया ८ और एकादशीका व्रत और कार्त्तिकका सेवन ये दो व्रत उसने जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त किये ९ ये दोनों व्रत हमको अत्यन्त प्यारे, भुक्ति, मुक्ति, पुत्र और संपत्ति के करनेवाले हैं १० कार्त्तिक के महीने में तुलाराशि के सूर्यों में जे मनुष्य प्रातःकाल स्नानकरते हैं वे महापापी भी मुक्तहोजाते हैं ११ विष्णुजी के घरको जे बहारते, स्वस्तिकादि निवेदन करते और विष्णुजीकी पूजाकरते वे जीवन्मुक्त मनुष्यहैं १२ और कार्त्तिक में सबेरे स्नान, जागरण, दीप, तुलसी के वनका सेवन जे मनुष्य करते हैं वे विष्णुजी की मूर्त्ति हैं १३ इसप्रकार जे कार्त्तिकमें तीन दिनभी करते हैं वे देवताओं के वंदनाके योग्य होते हैं और जे जन्मसे मरणपर्यन्त करते हैं उनका क्या कहना है १४ इस प्रकार गुणवती अच्छे प्रकारसे प्रतिवर्ष व्रत करतीभई नित्यही विष्णुजी के परिकरमें भक्त और भगवान्‌ही में मन लगादेतीभई १५ किसी समय में बुढ़ापासे दुर्बल अंग, ज्वरसे पीड़ित धीरेधीरे बड़े कष्टसे गंगाजी स्नान करनेको गई तो १६ जब तक जलके भीतर रही तब तक शीतसे पीड़ित होकर विह्वल होकर कँपतीरही फिर आकाशसे प्राप्तहुए विमानको देखा १७ कि शंख चक्र गदा पद्म हाथोंमें लिये हुए, भगवान्‌ का रूपधरे, गरुड़के ध्वजासे चिह्नित, आकाशसे

के दूत प्राप्तहुए १८ और अप्सराओं के समूहों से सेवित विमा
पर गुणवती को चढ़ालिया और चामरों से वीज्यमान को वैकुण्ठ
लेगये १९ तदनन्तर प्रकाशित अग्निकी शिखाके सदृश वह वि
मानपर स्थित होकर कार्त्तिक के व्रतके पुण्यसे हमारेसमीप प्रा
हुई २० फिर ब्रह्मादिक देवताओंकी प्रार्थनासे हम सहित सवग
पृथ्वी में प्राप्तहुए २१ हे स्त्री ये सब यादव हमारे गणहैं और तुम्हा
पिता देवशर्मा सत्राजित्, स्वामीहुए २२ और चन्द्रशर्मा अक्रूरहु
और तुम गुणवती हो कार्त्तिक के व्रतके पुण्यसे हमको बहुत प्री
बढ़ानेवाली हुईहो २३ पूर्व समयमें हमारे द्वारमें तुमने तुलसी क
बाग लगाई थी इससे यह कल्पवृक्ष तुम्हारे आंगनमें है २४ का
र्त्तिकमें पूर्वसमयमें तुमने दीप दियाथा इससे तुम्हारी यह देह घ
में स्थित, स्थिर लक्ष्मीको भी तुम प्राप्तहुई २५ और सब व्रत आ
दिक पतिरूप विष्णुजीको तुमने अर्पण करदिये इससे हमारी ...
हुईहो २६ और जन्मसे मरण पर्यन्त तुमने कार्त्तिक में व्रत किया
इससे हमारे वियोगको कभी नहीं देखती हो २७ इस प्रकार जे म
नुष्य कार्त्तिक में व्रत करते हैं वे हमारे समीप प्राप्तहोकर तुम्हारे
समान हमको प्रीति देते हैं २८ यज्ञ, दान, व्रत और तप के करने
वाले मनुष्य निश्चय कार्त्तिक के व्रतकी पुण्यकी कलाको भी नहीं
प्राप्तहोते २९ इस प्रकार तीनों भुवनके स्वामी से पूर्वपुण्यजन्ममें
उत्पन्न वैभव सुनकर प्रसन्नहुई सत्यभामा संसारके ईश्वर तीनों भु
वनके एक आदिकारणहुए भगवान्‌के नमस्कारकर बोली ३० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्त्तिकमाहात्म्येश्री
कृष्णसत्यभामासंवादेसत्यापूर्वजन्मवर्णनंनामैकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नव्वेका अध्याय ॥

कार्त्तिकमाहात्म्य में शंखासुर के मारने का उद्यम वर्णन ॥

सत्यभामाजी बोलीं कि हे नाथ कालस्वरूपी आपके सबकाल
के अंगहैं वे समान हैं परन्तु महीनोंमें कार्त्तिक का महीना श्रेष्ठ है
तिथियोंमें एकादशी और महीनों में कार्त्तिक क्यों नियत है हे दे

श इसमें कारण कहिये २ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे सत्यभामा
ी तुमने अच्छा प्रश्नकिया एकाग्रमन होकर पृथु वैन्य और देवर्षि
ारदका संवाद सुनिये ३ हे प्रिये पृथु ने पूर्वसमय में इसीप्रकार
श्न नारदजी से कियाथा तब सब जाननेवाले मुनि कार्तिककी अ-
धिकता में कारण कहनेलगे ४ कि शंखनाम असुर सागरका पुत्र
हले त्रिलोकी के मथने में समर्थ महाबली पराक्रमी था ५ वह म-
ासुर देवताओं को जीतकर स्वर्गलोक से निकाल देताभया और
न्द्रादिक लोकपालों के अधिकारों को हर लेताभया ६ उसके डर
े देवता सुमेरुपर्वतकी गुहामें प्राप्तहोगये और स्त्री पुत्रादिकों और
न्द्रसमेत बहुत वर्ष तक बसतेभये ७ जब देवता सुमेरुकी गुहामें
स्थितहोगये तो वे लोग उस राक्षसके वश न हुए तो दैत्य विचार क-
रनेलगा ८ कि यद्यपि मैंने देवताओंको जीतकर अधिकार हरलिया
परन्तु अबभी वे बलयुक्त हैं हमको यहां क्या करना चाहिये ९ इस
समय में मैंने देवताओं को वेदमंत्रबलसे युक्त जानाहै इससे वेदों
को हरलूंगा तो सब देवता बलहीन होजावेंगे १० ऐसा मानकर
वह प्रभु दैत्य निद्रायुक्त विष्णुजी को देखकर सत्यलोक से वेदों के
गणोंको हर लेताभया ११ जब उसने वेदों को हरलिया तो उसके
भयसे देवता निकलकर भागे और यज्ञमंत्र से युक्तहोकर जल में
प्रवेश करगये १२ तब शंखासुर भी देवताओं को ढूंढ़ताहुआ स-
मुद्रके भीतर घूमनेलगा परन्तु उसने कहीं एक जगह स्थित देव-
ाओं को न देखा १३ तदनन्तर देवताओं समेत ब्रह्माजी पूजाकी
ामग्री लेकर वैकुण्ठभवन में विष्णुजीकी शरण में प्राप्तहुए १४
और वहांपर देवताओं ने भगवान्के जगाने के लिये गीतगाये और
ाजा आदिक बजाये और चन्दन, पुष्प, धूप और दीपको बारंबार
दिया १५ तदनन्तर देवताओं की भक्तिसे प्रसन्नहुए भगवान् जगे
ो सब देवताओं ने हज़ार सूर्य के समान दीप्तिवाले भगवान् को
देखा १६ और तिसीसमयमें सोलहों उपचारों से पूजन किया और
पृथ्वी में गिरकर दण्डवत् प्रणाम किया तो भगवान् देवताओं से
बोले १७ कि हे देवताओ तुम्हारे गीत और बाजा आदिक

से प्रसन्नहूं वर देनेवाला में तुमको मनके अभिलाषकी सब कामना
दूंगा १८ कुंवार के शुक्लपक्ष की एकादशी जबतक उद्बोधिनी हो
तबतक रात्रि के चौथाई अंश शेष से गीत बाजा आदिक मंगल
से १९ जे मनुष्य नित्यही देवताओं की तरह ही उत्सव करते
वे नित्यही हमारे प्रिय करनेवाले होकर हमारे समीप प्राप्तहोते
२० पाद्य, अर्घ और आचमन आदिकों से तुमने पूजन कियाहै वह
अद्भुतगुणयुक्त सुखका कारण हुआ है २१ हे देवो शंखासुरने
सब वेदों को हरकर जल में स्थित कियाहै उनको मैं समुद्रपुत्र
मारकर लादूंगा २२ अबसे लेकर मंत्र बीज और यज्ञोंसेयुक्त
प्रतिवर्ष कार्तिकके महीने में सदैव जलमें विश्राम करेंगे २३ औ
अबसे लेकर मैंभी जलके बीचमें हूंगा आपलोग मुनीश्वरों सहि
हमारे संग आवें २४ इसकालमें जे उत्तम ब्राह्मण सबेरे स्नान
रते हैं ते सब यज्ञों के अन्त स्नानोंकरके अच्छीतरहसे निस्सन्दे
स्नान कियेहुए होजाते हैं २५ हे इन्द्र जे कार्तिकमें अच्छीतरह
नित्यही व्रत करते हैं तिनको देहके अंतमें सदैव हमारे स्थानमें
जना २६ और हमारी आज्ञासे उनकी विघ्नों से रक्षा करना औ
हे वरुण तुम उनको पुत्र और पौत्रादिक संतति देना २७ और
कुबेर तुम हमारी आज्ञासे उनके धनकी वृद्धि करना वे मनुष्य ह
मारे रूप को धारणकर साक्षात् जीवन्मुक्त होजाते हैं २८ जन्म
मरणपर्यन्त विधिपूर्वक जे इस उत्तम व्रतको करते हैं वे आपलो
के भी मान्य होजातेहैं २९ जिससे एकादशी में आपलोगों ने ज
गायाहै इससे यह तिथि मान्य और सदैव हमको प्रीति देनेवा
है ३० एकादशी और कार्तिकका व्रत ये दोनों अच्छीतरहसे कि
हुए भगवान्‌की समीपता को देते हैं दूसरी तरहसे नहीं—हे उत्त
देवताओ दान, तीर्थ, तपस्या और यज्ञ येभी स्वर्गलोक देतेहैं पर
इनसे भी इन दोनोंमें अधिक फल मिलताहै ३१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये
श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेशंखासुरवधोपाख्यानंनामनवतितमोऽध्यायः ९०॥

——:——

इक्यानवेका अध्याय ॥

वेदके आगममें शङ्खासुरवध और प्रयागमाहात्म्य वर्णन ॥

नारद जी बोले कि ऐसा कहकर भगवान् विष्णुजी मछली के बराबर रूप धारणकर विन्ध्यनिवासमें कश्यपकी अञ्जलीमेंगिरे १ तब मुनिने कृपाकर शीघ्रही कमण्डलुमें छोड़लिया तब तो वह मछली कमण्डलु में न अँबासकी तो मुनिने कुँयेंमें छोड़दिया २ परंतु उसमें भी न अँबासकी तो कासारमें छोड़ दिया जब उसमें भी न अँबासकी तो समुद्रमें छोड़दिया परन्तु समुद्रमेंभी बढ़गई ३ और मत्स्यका रूप धारकर भगवान् ने शङ्खासुर को मारा फिर उस को अपने हाथमें धरकर बदरीवन को प्राप्तहोगये ४ और वहांपर सब ऋषियोंको बुलाकर यह आज्ञादेतेहुए भगवान् बोले कि तुम सब लोग जलमें डूबेहुए वेदों को शुद्धकरलो ५ और रहस्यसमेत शीघ्रही जलके भीतरसे लेआवो तबतक मैं देवतागणों समेत प्रयाग में स्थितरहूंगा ६ नारदजी बोले कि तपस्याके बलसेयुक्त उन सब मुनियों ने यज्ञसंयुक्त षडंग वेदोंका उद्धार करदिया ७ तिनमें जितना जिसकरके लब्धहुआ सो सो तबसेलेकर ऋषिहुआ तदनंतर सब मुनि मिलकर प्रयागजी को प्राप्तहुए और ब्रह्मासमेत विष्णु जीको प्राप्तहुए वेदोंको निवेदन कर दिया ८।९ देवर्षिगणोंसे युक्त ब्रह्माजी आनन्दसमेत यज्ञोंसहित वेदों को प्राप्त होकर अश्वमेध से यज्ञ करतेभये १० यज्ञके अन्तमें देव देवेश सिद्ध पन्नग गुह्यक मिलकर पृथ्वी में गिरकर स्तुति करनेलगे ११ कि हे देवदेव हे संसारके नाथ हे प्रभुजी हमारी विज्ञप्ति सुनिये और यह हम लोगों की प्रसन्नताका समयहै इससे वरदान दीजिये १२ हे लक्ष्मीकेपति इसस्थानमें ऋषियोंने फिर अपने आप नष्टहुए वेदोंको पाया और आपके प्रसादसे यज्ञके भागोंको हम लोगोंनेपाया १३ यह स्थान पृथ्वी में श्रेष्ठ पुण्य बढ़ानेवाला और आपके प्रसादसे सदा भुक्ति और मुक्तिका देनेवालाहो १४ और यह काल

ह्मणके मारनेवाले इत्यादि पापियों को शुद्ध करनेवाला और दान को नाशरहित करनेहाराहो यह वर हम लोगों से कहिये १५ तब श्रीविष्णुजीबोले कि देवताओ जो आपलोगोंने कहाहै यही हमारा भी मत है यह ऐसाहीहो और यह प्रयाग ब्रह्मक्षेत्र ऐसी प्रथा को प्राप्तहो १६ सूर्य्यवंशमें उत्पन्न राजा यहांपर गंगाजीको लावेंगे और गंगाजी सूर्य्य की कन्या यमुनाजी से यहां मिलेंगी १७ ब्रह्मादिक आप सब लोग हमारे साथ यहीं निवास करो यह तीर्थ तीर्थराज ऐसा प्रसिद्ध होगा १८ दान, तपस्या, व्रत, होम, जप और पूजा आदिक क्रिया अपार फल देनेवाली और सदा हमारी समीपता देनेवाली होंगी १९ ब्रह्महत्या आदिक बहुत जन्मके पाप इस तीर्थके दर्शनसे उसी क्षणमें नाश होजावेंगे २० और धीरपुरुष हमारे समीप देह त्यागकरेंगे तो दूसरेजन्ममें हमारी देहमें प्रवेश करजावेंगे मनुष्य नहीं होंगे २१ और जे यहां आकर पितरोंके लिये श्राद्धकरेंगे उनके सब पितृगण हमारी सलोकताको प्राप्तहोंगे २२ मकरके सूर्य्यों में प्रातःकाल स्नान करनेवाले मनुष्यों को यह समय महापुण्यफल देनेवाला और पाप नाशनेहारा है २३ मकरके सूर्य्यामें माघमें सवेरे स्नानकरनेवालोंके दर्शनसे पाप इसप्रकार चलेजातेहैं जैसे सूर्य उदय होनेसे अन्धकार चलाजाताहै २४ माघमें मकरके सूर्य्यों में स्नान से मनुष्यों को सलोकत्व, सरूपत्व और समीपत्व ये तीनों क्रमसे मैं देताहूं २५ हे मुनीश्वरो तुम सबलोग सुनो आप लोगोंका वरदेनेवाला और सबमें प्राप्त मैं बदरीवनके बीचमें स्थित हूंगा २६ और जगह दशवर्षोंसे जो कुछ तपस्यामें फल मिलताहै वह यहां आपलोगों को सदा एक दिनमें प्राप्तहोगा २७ और जो उत्तम मनुष्य तिसस्थानका दर्शन करते हैं वे जीवन्मुक्त होतेहैं उनमें पाप नहीं स्थितहोता २८ सूतजी बोले कि देवताओं के देवता भगवान् इसप्रकार देवताओं से कहकर ब्रह्मासमेत वहींपर अन्तर्द्धान होगये और सब देवता अंशों से वहां स्थितरहे और इन्द्रादिक अन्तर्द्धान होगये २९ जो उत्तम मनुष्य इस कथाको सुनते और जो शुद्धचित्त इसको सुनाताहै वही तीर्थराज बदरीवनमें हमारे

दर्शनकरने से जो फल मिलताहै उसी फलको वह पाताहै ३० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिक-
माहात्म्येश्रीकृष्णसत्यभामासंवादेशङ्खासुरवधोवेदागमे
प्रयागमाहात्म्यंनामैकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेका अध्याय ॥

कार्त्तिकमाहात्म्यमें नियमवर्णन ॥

पृथुजी बोले कि हे नारदमुनि कार्त्तिक और माघका तुमने महाफलकहा अब तिनके स्नानकी विधि नियमोंको और उद्यापनविधिको अच्छीतरहसे आप कहने के योग्यहैं १ तब नारदजी बोले कि हे वेनके पुत्र पृथुजी आप विष्णुजी के अंशसे उत्पन्नहैं आप सब जानते हैं तिसपर भी मैं अच्छीतरहसे माहात्म्य कहताहूं सुनिये २ कुंवारके शुक्लपक्षकी जो एकादशी होती है उसमें अतन्द्रित मनुष्य कार्त्तिकके व्रतका नियमकरै ३ व्रतकरनेवाला मनुष्य चौथाई अंश बाकीरहे रात्रि में आनन्दसे सदा उठै और नैर्ऋत्यदिशामें गांवसे बाहर लोटेमें जललेकर जावे ४ दिनकी संध्याओं में कानमें जनेऊ चढ़ाकर शिरमें कपड़ा बांधकर भूमिमें तृणको बिछाकर उत्तरमुख होकर ५ यत्नसे मुँहको बन्दकर थूंक और श्वाससे वर्जितहोकर पेशाव और दिशाफिरे रात्रिमें दक्षिणमुँह होकर फिरे ६ फिर शिष्ण इन्द्रियको ग्रहणकर उठै और पवित्र मट्टीकोलेकर अतन्द्रित होकर गन्धलेपक्षयकरनेवाला शौचकरे ७ एक लिङ्गमें पांच गुदा में बायें हाथमें दश दोनों में सात तीन पांवों में ८ इसका दुगुना ब्रह्मचारी और तिगुना वानप्रस्थ और चौगुना संन्यासीको रात्रिमें शौचकरना चाहिये ९ तिसका आधामार्ग में स्थितको और तिसका आधा स्त्री और शूद्रोंकोहै शौचकर्मसे हीनकी सबक्रिया निष्फल होती हैं १० मुँहकी शुद्धतासे हीनके मंत्र फलदेनेवाले नहीं होतेहैं इससे दांत और जिह्वाकी शुद्धि यत्नसे करै ११ उमर, बल, यश, तेज,पशु, द्रव्य, ब्रह्मबुद्धि और मेधा को हे वनस्पति हमको दीजिये १२ इस मंत्रको उच्चारणकर सदा बारह अंगुलकी दतून दूधवाले वृक्षकीकरै

क्षयाह, व्रत, १३ परेवा, अमावस, नवमी, छठि, इतवार और चन्द्र
सूर्यके ग्रहणमें दतूनि न करै १४ कण्टकीवृक्ष, कपास, म्योड़ी, क्ष
वृक्ष, वेल, रेंड़ और दुर्गन्धसेयुक्त की दतूनि न करै १५ तदनन्त
प्रसन्न बुद्धिवाला मनुष्य विष्णु और शिवजी के मन्दिर को ज
और भक्तिमें तत्पर होकर चन्दन फूल और अच्छे पानोंको ले
१६ देवताकेपाद्य, अर्घआदिक उपचार अलग अलगकर स्तु
और नमस्कार कर गीत आदिक मङ्गल करै १७ ताल वेणु औ
मृदंग आदिकी ध्वनिसे युक्त नाचनेवाले और गानेवालों को फू
चन्दन और पानों से पूजन करै १८ देवता के स्थान में गाने
विष्णुजी की मूर्त्तिही हैं और तपस्या, यज्ञ, और दान भक्तिसे कि
हुए संसार के गुरु सज्जनों के पति देवजी के कलियुग में नित्य
प्रसन्नताके देनेवाले हैं नारदजी भगवान्से पूंछते हैं कि हे देवों
स्वामी आप कहां वसते हैं १९। २० तब उनकी भक्तिसे प्रसन्न
विष्णुजी तिस समयमें इस प्रकार बोले कि मैं वैकुंठ और योगि
के हृदयमें नहीं वसता २१ हे नारदजी हमारे भक्त जहां गान
हैं तहां पर वसताहूं अच्छी पुराणकी कथा सुनकर हमारे भक्तों
गान २२ जे मूर्ख मनुष्य नहीं सुननेकी इच्छा करते हैं वे हमारे श
होते हैं मनुष्य उनकी पूजा चन्दन और पुष्प आदिकोंसे करें २
तो इस से जिस प्रकार मैं प्रसन्न होताहूं वैसा अपने पूजनसे न
होताहूं शिरीष उन्मत्त गिरिजा मल्लिका शाल्मली २४ और म
के फूलोंकी कर्णिकार और अक्षतों से भगवान् नहीं पूजने चाहि
जपा, कुन्द, शिरीष, जूही, चमेली, २५ और केतकीके फूलों से मह
देवजी नहीं पूजने चाहिये तुलसीदलों से गणेश दूबसे दुर्गाजी
और मुनिके फूलोंसे सूर्यकी लक्ष्मीकी कामनावाला पुरुष नहीं पू
पूजामें सुगन्धित वस्तु सदैव श्रेष्ठ हैं २७ इसप्रकार पूजाकी विधि
कर भगवान्से क्षमाकरावे कि हे सुरेश्वर देवजी मंत्रहीन क्रियाहीन
और भक्तिसे हीन मैंने जो पूजाहै वह हमारा सब परिपूर्णहो तदन
तर प्रदक्षिणा और दण्डवत् नमस्कारकरै २८।२९ फिर देवताओं
गान आदिकी क्षमाकरावे जे मनुष्य अच्छीतरहसे कार्त्तिक महात्म

ात्रिमें विष्णु और शिवजीका पूजन करते हैं वे पहलेके पुरुषों
ा पापरहित होकर विष्णुजीके स्थानको प्राप्तहोते हैं ३० ॥

श्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशतसहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्त्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेनियमवर्णनंनामद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबेका अध्याय ॥

कार्त्तिकमाहात्म्य में स्नानकी विधिवर्णन ॥

ारदजी बोले कि दोनाड़ी शेषरहे रात्रिमें जलाशयको जावे तिल,
ा,अक्षत,फूल और दीपआदि लेताजावे और पवित्रहो १ मानुष,
ात, नदी और नदियोंके संगममें क्रमसे दशगुणा स्नानकाफल
है और तीर्थ में अपार फल होताहै २ विष्णुजीको स्मरणकर
नका संकल्पकरे और तीर्थादि देवोंको क्रमसे अर्घआदि देवै ३
लनाभ, जलमें सोनेवाले और हृषीकेश भगवान्के नमस्कारहै
ा को ग्रहणकीजिये आपके नमस्कारहै ४ वैकुण्ठ, प्रयाग और
रेकाश्रम में जहां विष्णुजी तीनरूप धारणकर तीनों स्थानों में
ण धारण कियेहुएहैं ५ इससे देवता हमारी रक्षाकरें जहांपर वि-
जी मुनि और देवताओंसमेत घूमरहेहैं ६ हे भगवन् देवताओं
त्तम हे देवदेवेश हे दामोदरजी मैं आपके साथ आपकी प्रीति
लिये सबेरे स्नानकरूंगा ७ हे देवेश हे दामोदरजी मैं आपको
नकर इस जलमें स्नानकरनेको उद्यतहूं आपके प्रसाद से मेरे
ा नाशहोजावें ८ नित्यनैमित्तिक कृष्ण पापनाशनेवालेमें कार्त्तिक
महीने में यहकहे कि हे राधासमेत हरिजी मेरे दियेहुए अर्घको
णकीजिये ९ हे राधासमेत हरिजी कार्त्तिकके महीनेमें व्रत और
धिपूर्वक स्नानकरनेवाले मेरेदियेहुए अर्घको ग्रहणकीजिये १०
करनेवाला गङ्गाजी, विष्णु, शिव और सूर्यको स्मरणकर नाभि-
न्त जलमें प्रवेशकर विधिपूर्वक स्नानकरे ११ गृहस्थ मनुष्य
ल और आंवलेके चूर्ण से स्नानकरे वानप्रस्थ और संन्यासी तु-
ीकी जड़की मट्टीसे स्नानकरे १२ सप्तमी, अमावस, नवमी, द्वि-
या, दशमी और त्रयोदशी में आंवला और तिलों के साथ स्नान

क्षयाह, व्रत, १३ परेवा, अमावस, नवमी, छठि, इतवार और च-
सूर्यके ग्रहणमें दतूनि न करै १४ कण्टकीवृक्ष, कपास, म्योड़ी,
वृक्ष, बेल, रँड़ और दुर्गन्धसेयुक्त की दतूनि न करै १५ त
प्रसन्न बुद्धिवाला मनुष्य विष्णु और शिवजी के मन्दिर को
और भक्तिमें तत्पर होकर चन्दन फूल और अच्छे पानोंको ले
१६ देवताकेपाद्य, अर्घआदिक उपचार अलग अलगकर स्तु
और नमस्कार कर गीत आदिक मङ्गल करै १७ ताल वेणु अ
मृदंग आदिकी ध्वनिसे युक्त नाचनेवाले और गानेवालों को फू
चन्दन और पानों से पूजन करै १८ देवता के स्थान में गानेवा
विष्णुजी की मूर्त्तिही हैं और तपस्या, यज्ञ, और दान भक्तिसे
हुए संसार के गुरु सज्जनों के पति देवजी के कलियुग में ।
प्रसन्नताके देनेवाले हैं नारदजी भगवान्से पूछते हैं कि हे देवों
स्वामी आप कहां बसते हैं १९। २० तब उनकी भक्तिसे प्र
विष्णुजी तिस समयमें इस प्रकार बोले कि मैं बैकुंठ और यो
के हृदयमें नहीं बसता २१ हे नारदजी हमारे भक्त जहां गानक
हैं तहां पर बसताहूं अच्छी पुराणकी कथा सुनकर हमारे भक्तों
गान २२ जे मूर्ख मनुष्य नहीं सुननेकी इच्छा करते हैं वे हमारे
होते हैं मनुष्य उनकी पूजा चन्दन और पुष्प आदिकोंसे करैं
तो इस से जिस प्रकार मैं प्रसन्न होताहूं वैसा अपने पूजनसे न
होताहूं शिरीष उन्मत्त गिरिजा मल्लिका शाल्मली २४ और म
के फूलोंकी कर्णिकार और अक्षतों से भगवान् नहीं पूजने च
जपा, कुन्द, शिरीष, जूही, चमेली, २५ और केतकीके फूलों से म
देवजी नहीं पूजने चाहिये तुलसीदलों से गणेश दूबसे दुर्गाजी
और मुनिके फूलोंसे सूर्यकी लक्ष्मीकी कामनावाला पुरुष नहीं
पूजामें सुगन्धित वस्तु सदैव श्रेष्ठ हैं २७ इसप्रकार पूजाकी वि
कर भगवान्से क्षमाकरावे कि हे सुरेश्वर देवजी मंत्रहीन क्रियाही
और भक्तिसे हीन मैंने जो पूजाहै वह हमारा सब परिपूर्णहो तद
तर प्रदक्षिणा और दण्डवत् नमस्कारकरै २८। २९ फिर देवज
गान आदिको क्षमाकरावे जे मनुष्य अच्छीतरहसे कार्त्तिक महि

रात्रिमें विष्णु और शिवजीका पूजन करते हैं वे पहलेके पुरुषों
त पापरहित होकर विष्णुजीके स्थानको प्राप्तहोते हैं ३० ॥
श्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशतसहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्त्तिकमाहात्म्ये
श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेनियमवर्णनंनामद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबेका अध्याय ॥

कार्त्तिकमाहात्म्य में स्नानकी विधिवर्णन ॥

नारदजी बोले कि दोनाड़ी शेषरहे रात्रिमें जलाशयको जावे तिल,
ग,अक्षत,फूल और दीपआदि लेताजावे और पवित्रहो १ मानुष,
खात, नदी और नदियोंके संगममें क्रमसे दशगुणा स्नानकाफल
ाहै और तीर्थ में अपार फल होताहै २ विष्णुजीको स्मरणाकर
ानका संकल्पकरै और तीर्थादि देवोंको क्रमसे अर्घआदि देवै ३
ालनाभ, जलमें सोनेवाले और हृषीकेश भगवान्के नमस्कारहै
र्घ को ग्रहणकीजिये आपके नमस्कारहै ४ वैकुण्ठ, प्रयाग और
रिकाश्रम में जहां विष्णुजी तीनरूप धारणकर तीनों स्थानों में
ण धारण कियेहुएहैं ५ इससे देवता हमारी रक्षाकरें जहांपर वि-
जी मुनि और देवताओंसमेत घूमरहेहैं ६ हे भगवन् देवताओं
उत्तम हे देवदेवेश हे दामोदरजी मैं आपके साथ आपकी प्रीति
लिये सवेरे स्नानकरूंगा ७ हे देवेश हे दामोदरजी मैं आपको
ानकर इस जलमें स्नानकरनेको उद्यतहूं आपके प्रसाद से मेरे
ा नाशहोजावें ८ नित्यनैमित्तिक कृष्ण पापनाशनेवालेमें कार्त्तिक
हीने में यहकहे कि हे राधासमेत हरिजी मेरे दियेहुए अर्घको
णकीजिये ९ हे राधासमेत हरिजी कार्त्तिकके महीनेमें व्रत और
धिपूर्वक स्नानकरनेवाले मेरेदियेहुए अर्घको ग्रहणकीजिये १०
करनेवाला गङ्गाजी, विष्णु, शिव और सूर्यको स्मरणकर नाभि-
त्त जलमें प्रवेशकर विधिपूर्वक स्नानकरे ११ गृहस्थ मनुष्य
ल और आंवलेके चूर्ण से स्नानकरे वानप्रस्थ और संन्यासी तु-
ीकी जड़की मट्टीसे स्नानकरे १२ सप्तमी, अमावस, नवमी, द्वि-
या, दशमी और त्रयोदशी में आंवला और तिलों के साथ स्नान

न करै १३ पहले मलस्नान और तिसपीछे मंत्रस्नान करै स्त्री
शूद्रोंको वेदके मंत्रों से स्नानकरना न चाहिये पुराणमंत्रों से
१४ स्नानमंत्राः॥ जो पहले भक्तिभावसे देवताओं के
तीनप्रकारके रूप धारताभया वह सबपापोंका नाशकरनेवाला
कृपाकर हमको पवित्रकरै १५ विष्णुजीकी आज्ञाको प्राप्तहोकर
र्त्तिकके व्रतके कारणसे सब देवता हमारी रक्षाकरैं और सदा
करैं १६ बीज, रहस्य और वीर्यसमेत वेदके मंत्र और
दिक मुनि हमको सदा पवित्रकरैं १७ गङ्गादिक सब नदियां,
जल देनेवाले नद, सातों समुद्र और सब जलाशय हमको
करैं १८ अदितिआदिक पतिव्रता स्त्रियां, यक्ष, सिद्ध, पन्नग,
और तीनों लोकमें उत्पन्न पर्वत ये सब हमको पवित्रकरैं १६
करनेवाला इन मंत्रों से स्नानकर हाथमें पैंतीपहनकर देवर्षि
और पितरोंको विधिपूर्वक तर्पणकरै २० जितने कार्त्तिकके
में पितरों के तर्पणमें तिल लगते हैं उतने वर्ष पितर स्वर्ग में
करते हैं २१ फिर व्रतकरनेवाला जलसे निकलकर पवित्र
धारणकर प्रातःकालके कहेहुए कर्मको समाप्तकर फिर
पूजे २२ चन्दन पुष्प और फलोंसेयुक्त भक्ति में तत्पर मन
मनुष्य तीर्थके आदि देवोंको स्मरणकर फिर पूजाको देवे २३
मंत्रः। हे श्रेष्ठ राक्षसों के नाशकरनेवाले कार्त्तिक के महीनामें
और विधिपूर्वक स्नानकरनेहारे मेरे दियेहुए अर्घको ग्रहण की
२४ तदनन्तर भक्तिसे वेदके पारगामी ब्राह्मणों को भोजन क
और चन्दन, फूल और पानों को देकर फिर नमस्कार करै
ब्राह्मणके दक्षिण चरणमें तीर्थ मुखमें वेद और सबअंगों में दे
स्थितरहते हैं इससे ब्राह्मणके पूजनसे सब पूजित होजाते हैं
पृथ्वीमें अव्यक्तरूपी भगवान् के स्वरूप ब्राह्मण हैं इससे कल्या
की इच्छा करनेवाला उनका अनादर और उनसे विरोध कर्म
करै २७ व्रतकरनेवाला एकाग्रमन होकर भगवान् की प्यारी तु
को पूजे और प्रदक्षिणा और नमस्कारकरै २८ कि हे हरिकी प्या
तुलसी तुम पहले देवोंसे रचीगई और मुनीश्वरों से पूजन की

हो तुम्हारे नमस्कारहैं पापको नाश कीजिये २९ तदनन्तर स्निग्ध-मनहोकर भक्तियुक्त व्रतकरनेवाला मनुष्य पुराणोंकी भगवान् की कथासुनै और ब्राह्मण, मुनिरूपको पूजै ३० इसप्रकार जो भक्तिमान् मनुष्य पूर्वोक्त पूर्णविधिको अच्छीतरहसे करै वह नारायण की स-लोकताको प्राप्तहो ३१ विष्णुजी के प्यारे कार्त्तिकके व्रतसे अधिक पृथ्वी में कोई व्रत नहीं है यहरोग और पापोंको नाशै श्रेष्ठ बुद्धिदेवे पुत्र धनआदिकोभी देवे और मुक्तिका आदिकारणहै ३२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखंडेकार्त्तिकमाहात्म्येश्री-कृष्णसत्यभामासंवादेस्नानविधिवर्णनोनामत्रिनवतितमोऽध्यायः९३॥

चौरानबेका अध्याय॥

कार्त्तिकमाहात्म्य में नियम वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजन् कार्त्तिकके व्रत करनेवाले पुरुषों के जो नियम कहेगये हैं तिनको मैं कहताहूं सुनिये १ कार्त्तिकका व्रत करनेवाला सब प्रकारके मांस, शहद, कांजी, उर्द आदिकको न भो-जन करै २ द्विदल, तिलका तेल, आंशुओं से दूषित अन्न, भावदुष्ट और शब्ददुष्ट को वर्जितकरै ३ पराया अन्न, दूसरे से द्रोह, दूसरेकी स्त्री से भोग और तीर्थ में दानलेना इनको न ग्रहणकरै ४ भगवान्, ब्राह्मण, गुरु, व्रत करनेवाला, स्त्री, राजा और महात्माओंकी निन्दा को वर्जितकरै ५ प्राणी के अंगका चूर्ण मांसहै फल में जंबीरी नींबू मांसहै धान्यमें मसुरी और बासी अन्न मांस कहाहै ६ बकरी, गऊ और भैंसके दूधको छोड़कर और दुग्ध मांस है ब्राह्मणके बेंचे हुए सब रस, पृथ्वी से उत्पन्न नमक ७ तांबेके बर्त्तन में स्थित गऊ का दूध, छोटी तलैयों का जल और अपने लिये पकाया अन्न इनको बुद्धिमान् लोग मांस कहते हैं ८ व्रत करनेवाला ब्रह्मचर्य, पृथ्वी में शयन, पत्तों में चौथेकाल में भोजन सदैवकरै ९ नरक चतुर्दशी में तेल लगावे और दिन कार्त्तिक स्नान करनेवाला तेल नहीं लगावे १० प्याज, लहसन, शिग्रु, छत्राक, गाजर, नाड़ीका साग, मूली और हींगको कार्त्तिक का व्रत करनेवाला छोडदेवे ११ वैष्णवव्रत

वाला अलाबु, बैंगन, कुम्हड़ा, बृहतीफल, श्लेष्मातक और कैथा को छोड़े १२ रजस्वला स्त्री म्लेच्छ, पतित, व्रात्यक, ब्राह्मणके वैरकर्त्ता और वेद बाह्यों से कार्त्तिक का व्रत कर्त्ता नहीं बोले १३ कुत्ते और कौवेका देखाहुआ अन्न, सूतकका अन्न, दूसरीबार पकायाहुआ और जलेहुए अन्नका छोड़ देवे १४ (तेललगाना, शय्या, परायाअन्न, कांसेके बर्त्तनमें भोजन ये सब कार्त्तिकमें जो छोड़ देता है उसका व्रत पूरा होताहै) सब व्रतों में भी व्रत करनेवाला इन सबको छोड़देवे और अपनी शक्तिके अनुसार भगवान्‌की प्रसन्नता के लिये कृच्छ्र आदिककरै १५ कुम्हड़ा, बैंगन, बृहती, मूली, श्रीफल, कलिंग, आंवला १६ नारियर, महालाबु, परवल, बेरके फल, चर्म, वैकतक, विस, कट्फल १७ इन सागों को परेवाआदि तिथियोंमें क्रमसे छोड़ देवे और गृहस्थ सदैव इतवार को आंवला छोड़ देवे १८ इन को वा और वस्तुओं को जो मनुष्य भगवान् की प्रीतिके लिये छोड़ता है उसको सदा फिर ब्राह्मणको देकर खावे १९ व्रत करनेवाला इसी प्रकार माघमें भी नियमों को करै और विधिपूर्वक कहेहुए जागरण को भी करै २० अच्छी तरह से कहेहुए कार्त्तिक के व्रत करनेवाले मनुष्यको देखकर यमराजके दूत इसप्रकार भागते हैं जैसे सिंहसे पीड़ित हाथी भागते हैं २१ यह कार्तिक का भगवान् का व्रत सौ यज्ञों से अधिकहै यज्ञ करनेवाला स्वर्गको जाताहै और कार्तिकका व्रत करनेवाला वैकुण्ठको जाताहै २२ कार्तिकके व्रत करनेवालेके घरमें जितने पृथ्वी में भुक्ति और मुक्तिके देनेवाले क्षेत्रहैं वे सब आकर निवास करते हैं २३ कार्तिकके व्रत करनेवाले को देखकर दुःस्वप्न और मन, देह और कर्म से उत्पन्न दुष्कृत ये सब तिसीक्षण में नाशहोजाते हैं २४ कार्तिकके व्रत करनेवाले पुरुषकी भगवान् के कहने के अनुसार इन्द्रादिक देवता इसप्रकार रक्षा करते हैं जैसे राजाकी उनके नौकर करते हैं २५ भगवान्‌के व्रत करनेवाले जहां पर पूजित होकर रहते हैं वहां पर ग्रह, भूत और पिशाच आदिक नहीं रहते हैं २६ जिसप्रकार कहा हुआहै उसीतरहसे कार्तिक के व्रत करनेवालेकी पुण्यको चारमुखवाले ब्रह्माजी भी कहनेको नहीं

समर्थ हैं २७ कार्तिकमें नियमसमेत जो मनुष्य व्रत करता है उस को तीर्थके सेवनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह व्रत भगवान्‌को प्यारा, सब पापोंको नाश करनेवाला, सब जगह पुत्र, धन, और धान्यकी वृद्धि करनेवाला है २८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेनियमवर्णनोनामचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबेका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्य में उद्यापन वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् कार्तिकके व्रत करनेवाले की उद्यापन विधिको संक्षेपसे कहताहूं सुनिये १ व्रत करनेवाला व्रतके सम्पूर्ण होने और विष्णुजी की प्रीति के लिये कार्तिकके शुक्लपक्षकी चतुर्दशीमें उद्यापन करै २ तुलाके ऊपर अच्छी मण्डपिका बनावै उसमें अच्छे बन्दनवार बांधै चार द्वार राखै फूल और चामरों से शोभित करै ३ द्वारोंमें मट्टी के द्वारपाल बनाकर अलग पूजन करे पुण्यशील, सुशील, जय और विजय ये द्वारपालों के नामहैं ४ तुलसी की जड़के पास चारोंवर्ण अच्छीतरह से शोभायुक्त और अलंकृत सर्वतोभद्रको लिखें ५ तिसके ऊपर मुंदने, पंचरत्न और महाफल से युक्त कलशको स्थापितकर ६ वहांपर लक्ष्मीसंयुक्त शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले रेशमी पीत कपड़े धारण करनेहारे देवों के स्वामी को पूजै ७ व्रत करनेवाला मण्डल में इन्द्रादि लोकपालोंको भी पूजै द्वादशी में भगवान् जगे हैं त्रयोदशी में देवताओंने ८ देखा और चतुर्दशी में भगवान्‌को पूजाहै तिससे चतुर्दशी में अधिक पूज्यहैं तिससे शान्त और प्रयतमानस होकर मनुष्य भक्तिसे चतुर्दशी में ९ गुरुजी की आज्ञासे अनेक प्रकारकी खाने की वस्तुओं संयुक्त सोलहों उपचारों से सोनेकी भगवान् की मूर्तिको पूजै १० गीत और बाजा आदि मंगलों से रात्रिमें जागरणकरै जे भगवान्‌के जागरणमें भक्तिसे गीत करते हैं ११ वे सैकड़ों जन्मोंके पापसमूहों से छूटजाते हैं भगवान् के जागरण के

गीत और नाच करनेवाले १२ और हजार गऊ देनेवाले को बरा- बर फलहोताहै गीत और नाचआदि करतेहुए आनन्दको देखे १३ और भगवान्के आगे उनके जागरणमें रात्रिको विष्णुजी के चरित्र पढ़तेहुए वैष्णवोंको जो रागयुक्त करै १४ मुखसे बाजा बजावे और अपनी इच्छाके आलापों को दिखलावे इन भावोंसे जो मनुष्य भ गवान्के जागरण को करताहै १५ उसकी दिन दिनमें पुण्य करो तीर्थ के बराबर होती है तदनन्तर पूर्णमासी में स्त्रियोंसमेत ब्राह्मणं में उत्तम १६ श्रेष्ठ तीस ब्राह्मणों वा अनेकों ब्राह्मणोंको अपनी शक्ति से नेवता दे इस दिन मत्स्यरूपी भगवान् हुए हैं १७ इसमें दान हवन और जप करना नाशरहित फलहोताहै इससे व्रत करनेवाल खीर अन्नादिक से तिन ब्राह्मणों को भोजन करावे १८ अतोदेव इस दो मन्त्र करके भगवान् और देवताओं की प्रसन्नता के लिये अलग अलग तिल और खीरको हवनकरै १९ फिर यथाशक्ति सं दक्षिणा देकर तिनको प्रणाम करै फिर भगवान् और देवता तथ तुलसीको पूजनकरै २० तदनन्तर व्रत करनेहारा विधिपूर्वक कपिल गऊ को पूजै फिर व्रत के उपदेश करनेवाले स्त्रीसहित गुरुजी को कपड़े और गहने आदिसे पूजनकर गऊको तिनको देदेवे और यह कहे कि आपके प्रसादसे भगवान् प्रसन्न हमारे ऊपरहों २१।२२ और इसी व्रतसे जो मैंने सात जन्ममें पाप किये हैं वे सब नाशहों और मेरे स्थिर संतानहो २३ हमारे पूजनसे मनोरथ सफल नित्यही हों और देहके अंतमें अत्यन्त दुर्लभ वैष्णव स्थानको प्राप्तहूं २४ इसीप्रकार तिन ब्राह्मणों से भी क्षमा कराकर उनको प्रसन्नकर विदा करे और रत्नयुक्त उस पूजाको गुरुजी को तिसीसमय में देवै २५ तदनन्तर मित्र और गुरुसमेत भक्तियुक्त व्रत करनेवाला आपभी भोजन करै कार्तिक वा माघमें इसीप्रकार विधिहै २६ इसप्रकार जो मनुष्य कार्तिकमें व्रत करताहै वह पापों से छूटकर विष्णुजी के स- मीप प्राप्तहोताहै २७ सब व्रत सब तीर्थ और सब दानों में जो फल होताहै तिसका करोड़गुणा अच्छीप्रकार विधिसे इस व्रतके करनेसे जानना चाहिये २८ जेकार्तिकमें व्रत करते हैं वे धन्य,महापुण्ययुक्त,

सब फलोंके उदय समेत और विष्णुजी की भक्तिमें रत हैं २९ जो यह मनुष्य व्रत करताहै तो उसके डरसे देहके स्थित पाप यह वितर्क करते और कहते हैं कि हम कहांजावें ३० जे भक्त इसप्रकार कार्तिकके व्रतके नियमोंको सुनते और जे वैष्णवों के आगे कहते हैं वे अच्छीप्रकार व्रतके करने के फलको प्राप्तहोते और उनके सब पाप नाश होजाते हैं ३१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेउद्यापनवर्णनोनामपंचनवतितमोऽध्यायः ९५॥

छानबेका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्य में जालंधरकी उत्पत्ति वर्णन ॥

पृथुजीबोले कि हे ब्रह्मन् नारदजी जो आपने कार्तिक का व्रत वेस्तार से कहा उसमें जो तुलसी की जड़में भगवान् की पूजाभी आपने कही १ तिससे मैं तुलसीजी के माहात्म्यको पूंछना चाहता हूं कि कि देवदेव शार्ङ्गधनुषधारी विष्णुजी को कैसे तुलसी अत्यन्त प्यारी हुई २ कैसे और किस स्थानमें यह उत्पन्न हुई यह संक्षेपसे कहिये। क्योंकि में आपको सर्व्वज्ञ जानताहूं ३ तब नारदजी बोले के पूर्वसमय में रुद्रने जब दैत्येन्द्र समुद्रपुत्र जालंधरको मारडाला तब ब्रह्मादिक देवता शिरसे महादेवजी को प्रणामकर बोले सो हे राजन् पृथु तुलसीसे उत्पन्न माहात्म्यको कहताहूं सुनिये ४ इसमें जो कुछ पूर्व्वसमय में इतिहास हुआ वह भी सब तुमसे कहता हूं पूर्वकालमें अप्सरागणों से सेवित और सब देवोंसे युक्त इन्द्र महादेवजी के देखने के लिये कैलासपर्वतमें गये ५ जबतक महादेवजी के स्थानको गये तबतक शीघ्रही यह देखा कि एक पुरुष भयंकर कर्म्मवाला डाढ़ और आंखोंसे भयानकहै ६ तब इन्द्रने उससे पूंछा कि तुम कौनहो संसार के स्वामी महादेवजी कहां गये हैं इसप्रकार वारंवार पूंछा परन्तु वह न बोला ७ तो इन्द्र क्रोधकर उसको डाट कर यह वचन बोले कि रे हमारे पूंछनेपर भी जवाब नहीं देताहै ८ इससे रे दुर्बुद्धी तुझको मैं वज्रसे मारताहूं तुम्हारी रक्षा करनेवाला

गीत और नाच करनेवाले १२ और हज़ार गऊ देनेवाले को बराबर फलहोताहै गीत और नाचआदि करतेहुए आनन्दको देखे १३ और भगवान्के आगे उनके जागरणमें रात्रिको विष्णुजी के चरित्र पढ़तेहुए वैष्णवोंको जो रागयुक्त करै १४ मुखसे बाजा बजावे और अपनी इच्छाके आलापों को दिखलावे इन भावोंसे जो मनुष्य भगवान्के जागरण को करताहै १५ उसकी दिन दिनमें पुण्य करोड़ तीर्थ के बराबर होती है तदनन्तर पूर्णमासी में स्त्रियोंसमेत ब्राह्मणों में उत्तम १६ श्रेष्ठ तीस ब्राह्मणों वा अनेकों ब्राह्मणोंको अपनी शक्ति से नेवता दे इस दिन मत्स्यरूपी भगवान् हुए हैं १७ इसमें दान, हवन और जप करना नाशरहित फलहोताहै इससे व्रत करनेवाला खीर अन्नादिक से तिन ब्राह्मणों को भोजन करावे १८ अतोदेवा इस दो मन्त्र करके भगवान् और देवताओं की प्रसन्नता के लिये अलग अलग तिल और खीरको हवनकरै १९ फिर यथाशक्ति से दक्षिणा देकर तिनको प्रणाम करै फिर भगवान् और देवता तथा तुलसीको पूजनकरै २० तदनन्तर व्रत करनेहारा विधिपूर्वक कपिला गऊ को पूजे फिर व्रत के उपदेश करनेवाले स्त्रीसहित गुरुजी को कपड़े और गहने आदिसे पूजनकर गऊको तिनको देदेवे और यह कहे कि आपके प्रसादसे भगवान् प्रसन्न हमारे ऊपरहों २१। २२ और इसी व्रतसे जो मैंने सात जन्ममें पाप किये हैं वे सब नाशहों और मेरे स्थिर संतानहो २३ हमारे पूजनसे मनोरथ सफल नित्यही हों और देहके अंतमें अत्यन्त दुर्लभ वैष्णव स्थानको प्राप्तहूं २४ इसीप्रकार तिन ब्राह्मणों से भी क्षमा कराकर उनको प्रसन्नकर बिदा करे और रत्नयुक्त उस पूजाको गुरुजी को तिसीसमय में देवे २५ तदनन्तर मित्र और गुरुसमेत भक्तियुक्त व्रत करनेवाला आपभी भोजन करै कार्तिक वा माघमें इसीप्रकार विधिहै २६ इसप्रकार जो मनुष्य कार्तिकमें व्रत करताहै वह पापों से छूटकर विष्णुजी के समीप प्राप्तहोताहै २७ सब व्रत सब तीर्थ और सब दानों में जो फल होताहै तिसका करोड़गुणा अच्छीप्रकार विधिसे इस व्रतके करनेसे जानना चाहिये २८ जेकार्तिकमें व्रत करते हैं वे धन्य, महापुण्ययुक्त,

सब फलोंके उदय समेत और विष्णुजी की भक्तिमें रत हैं २९ जो यह मनुष्य व्रत करताहै तो उसके डरसे देहके स्थित पाप यह वितर्क करते और कहतेहैं कि हम कहांजावें ३० जे भक्त इसप्रकार कार्तिकके व्रतके नियमोंको सुनते और जे वैष्णवों के आगे कहते हैं वे अच्छीप्रकार व्रतके करने के फलको प्राप्तहोते और उनके सब पाप नाश होजाते हैं ३१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेउद्यापनवर्णनोनामपंचनवतितमोऽध्यायः ९५॥

छानवेका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्य में जालंधरकी उत्पत्ति वर्णन॥

पृथुजीबोले कि हे ब्रह्मन् नारदजी जो आपने कार्तिक का व्रत विस्तार से कहा उसमें जो तुलसी की जड़में भगवान् की पूजाभी आपने कही १ तिससे मैं तुलसीजी के माहात्म्यको पूंछना चाहता हूं कि कि देवदेव शार्ङ्गधनुषधारी विष्णुजी को कैसे तुलसी अत्यन्त प्यारी हुई २ कैसे और किस स्थानमें यह उत्पन्न हुई यह संक्षेपसे कहिये। क्योंकि मैं आपको सर्व्वज्ञ जानताहूं ३ तब नारदजी बोले कि पूर्वसमय में रुद्रने जब दैत्येन्द्र समुद्रपुत्र जालंधरको मारडाला तब ब्रह्मादिक देवता शिरसे महादेवजी को प्रणामकर बोले सो हे राजन् पृथु तुलसीसे उत्पन्न माहात्म्यको कहताहूं सुनिये ४ इसमें जो कुछ पूर्व्वसमय में इतिहास हुआ वह भी सब तुमसे कहता हूं पूर्वकालमें अप्सरागणोंसे सेवित और सब देवोंसे युक्त इन्द्र महादेवजी के देखने के लिये कैलासपर्वतमें गये ५ जबतक महादेवजी के स्थानको गये तबतक शीघ्रही यह देखा कि एक पुरुष भयंकर कर्म्मवाला डाढ़ और आंखोंसे भयानकहै ६ तब इन्द्रने उससे पूंछा कि तुम कौनहौ संसार के स्वामी महादेवजी कहां गये हैं इसप्रकार वारंवार पूंछा परन्तु वह न बोला ७ तो इन्द्र क्रोधकर उसको डाट कर यह वचन बोले कि रे हमारे पूंछनेपर भी जवाब नहीं देताहै ८ इससे रे दुर्बुद्धी तुझको मैं वज्रसे मारताहूं तुम्हारी रक्षा करनेवाला

कौनहै यह कहकर इन्द्र वज्रसे दृढ़ करके मारतेभये ९ तिससे इनके कंठमें नीलापन होगया और वज्र भस्म होगया तदनन्तर तेजसे जलातेहुए महादेवजी प्रकाशित होगये १० तब तो बृहस्पतिजीने शीघ्र हाथ जोड़े और इन्द्र पृथ्वी में दण्डवत् कर स्तुति करनेलगे ११ बृहस्पतिजी बोले कि देवोंके अधिदेव, तीन नेत्रवाले, जटाओं के जूट धारण करनेहारे, त्रिपुरासुरके नाशनेवाले, शर्व, अंधक के नाश करनेवाले १२ विरूप, अतिरूप, बहुत रूपवाले, शंभु, यज्ञके विध्वंस करनेहारे,यज्ञोंके फल देनेवाले,१३ कालके अंत करनेवाले, काल, कालके भोग धरनेवाले, ब्रह्माके शिरके हरनेहारे ब्राह्मण महादेवजीके नमस्कारहै १४ इसप्रकार जब महादेवजी स्तुतिकिये गये तो ब्राह्मणों में श्रेष्ठ बृहस्पतिजी से तीनोंलोकों के जलाने के योग्य नेत्रोंकी अग्निको संहारकर बोले १५ कि भो ब्रह्मन् तुम्हारी इसस्तुति से मैं प्रसन्नहूं वरदान मांगो और इन्द्रका जीवदान तुमने करायाहै इससे तुम्हारा जीव यह नाम होगा १६ तब बृहस्पतिजी बोले कि हे देव जो आप प्रसन्नहैं तो शरणमें प्राप्त इन्द्रकेपास प्राप्त हूजिये माथे और नेत्रसे उत्पन्न यह अग्नि शान्तिको प्राप्तहो १७ तब महादेवजी बोले कि यह अग्नि माथे और नेत्रमें फिर कैसे प्रवेश होगी इसको मैं दूर छोड़दूंगा जिससे इन्द्रको पीड़ा नहीं देवे १८ तब नारदजी बोले कि ऐसा कहकर तिस अग्निको धरकर लवण समुद्रमें छोड़ देतेभये तब वह सिंधुगंगा और समुद्रके संगममें जाकर गिरा १९ तब तो वहबालकके रूपको प्राप्तहोकर वहां पर रोनेलगा उसके रोनेके शब्दसे पृथ्वी वारंवार कँपी २० स्वर्ग और सत्यलोक उसके शब्दसे बहिरे से करदियेगये तब ब्रह्माजी शब्द सुनकर बड़े विस्मययुक्त होकर वहां पहुंचे और विचारनेलगे कि किसका शब्द है २१ तबतक ब्रह्माजी ने समुद्रके कोड़ में बालक को देखा और समुद्र ने ब्रह्माजीको आते देखकर हाथ जोड़कर २२ शिरसे नमस्कार किया और बालक को ब्रह्माजीके कोड़ में बैठाल दिया तब ब्रह्माजी समुद्र से यह वचन बोले कि यह अद्भुत किसका बालकहै २३ हे नदियों के स्वामी तुमने इस महाबलवान् बालकको कहांपाया कि जिसके श-

:से देवता असुर और भारी भारी सर्प्प भी डरगये हैं २४ इस कारके ब्रह्माके वचन सुन समुद्र वचन बोला कि भो ब्रह्मन् सिंधुगामें यह हमारा पुत्र उत्पन्न हुआहै २५ हे संसारके गुरुजी इस जातकर्म्म आदिक संस्कारों को कीजिये नारदजी बोले कि इस कार समुद्र के कहते हुए वह सागरका पुत्र बालक २६ बारंबार पाते हुए ब्रह्माजी की कूर्च को पकड़लेता भया कूर्च कँपाते हुए ह्माजी के नेत्रोंसे जल निकल आया तब उसने बड़े कष्टसे कूर्च ो छोड़ा तब तो ब्रह्माजी समुद्रसे बोले २७ कि इसने हमारे नेत्रों : जलको धारण कियाहै तिससे इसका नाम जालन्धर हुआ २८ ग़ैर इसीसमय में यह जवान, सब शस्त्र और अस्त्रों के पार जाने ाला, महादेवजीको छोड़के और सब प्राणियों से नहीं मरनेवाला ोगा २९ जहां यह उत्पन्न हुआहै वहींपर इससमयमें जावेगा ३० ारदजी बोले कि ऐसा कहकर शुक्रजी को बुलाकर जालन्धर को ाज्यमें अभिषेक करादेतेभये और समुद्रसे सलाह लेकर ब्रह्माजी अन्तर्द्धान होगये ३१ तदनन्तर जालन्धर के दर्शन से फूले हुए ात्र होकर समुद्र कालनेमि की कन्या वृन्दाको उसकी स्त्री बनानेके लिये मांगताभया ३२ तब तो कालनेमि इत्यादिक राक्षसोंने वृन्दा कन्याको जालन्धरको देदिया और बड़े प्रसन्नहुए बली जालन्धर ें मित्रवरों को प्राप्तहोकर शुक्रकी सहायता समेत पृथ्वीकी अच्छी तरहसे राज्यकी ३३ ॥

:तिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेजालन्धरोत्पत्तिवर्णनंनामषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

सत्तानबेका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्य में जालन्धरका इन्द्रपुरी जीतलेना वर्णन ॥

नारदजी बोले कि जो दैत्य पूर्वसमयमें देवताओं से जीतलिये गये और पातालमें जाकर रहे वे सब निर्भय होकर पृथ्वीमें जालन्धरकी उपासना करने को प्राप्तहोगये १ किसी समयमें जालन्धर ने शिर कटेहुए राहुको देखकर ब्राह्मण शुक्रजी से पूंछा कि हे

जी इनकाशिर किसने काटाहै २ तब शुक्रजी राहुकेशिरका काटना अमृतके लिये देवताओंका समुद्र मथना रत्नोंका हरना और दैत्यों का हारना यह सबकहा तब तो अपने पिताका मथना सुनकर जालन्धरकी क्रोधसे आंखें लालहोगईं ३। ४ और घस्मरदूतको इन्द्र के पास भेजा दूत शीघ्रही स्वर्गमें जाकर सुधर्म्मा नाम इन्द्रकी सभामें प्राप्तहोगया ५ और अभिमानसे शिरभी न नवाकर इंद्रसे यह वचन बोला कि सब दैत्यों का स्वामी समुद्रपुत्र जालन्धर है ६ मैं उसका दूत उसीका भेजाहुआ आयाहूं उसने जो कहा है तिसको सुनिये कि समुद्र हमारे पिताको पर्वतसे क्यों तुमने मथाहै ७ सब रत्न जो लेलिये हैं उनको शीघ्रही हमको देदो इसप्रकारके दूत के वचन सुन भय और रोषसे युक्त इन्द्र विस्मययुक्त होकर भयानक घस्मरसे बोले ८ कि हे दूत जिसप्रकार मैंने समुद्र पूर्व्वसमय में मथाहै सो सुनो पर्वत हमारे डरसे डरेहुए थे उनको समुद्रने अपने भीतर रखलिया ९ और भी हमारे वैरी राक्षसों की उसने रक्षा किया तिसीसे उसके रत्नोंको मैंने भी हरलिया है १० पूर्वसमय में समुद्र का पुत्र शङ्ख दैत्यभी देवताओं का वैरी था वहभी समुद्र में प्रवेश करगया था उसको हमारे छोटे भाई भगवान्ने मारडालाथा ११ तिससे तुम जाकर जालन्धरसे सब मथनेका कारण कहो १२ नारदजी बोले कि इसप्रकार इन्द्र दूतको बिदाकर घरचलेगये और दूत इन्द्रके वचनों को जालन्धर के पास कहता भया १३ दूतके वचन सुनकर दैत्य के ओठ फरकते भये और शीघ्रही सब देवों के जीतने के लिये उपाय करने लगा १४ जालन्धरके उपाय करने में दिशाओं और पातालसे सैकड़ों करोड़ राक्षस प्राप्तहोगये १५ तदनन्तर बलवान् शुम्भ निशुम्भ आदि करोड़ों सेनापतियों समेत जालन्धर स्वर्ग में जाकर युद्धके लिये स्थित होताभया १६ तब तो इन्द्रपुरी से देवतालोग तैयार होकर युद्धके लिये निकले तो उन्होंने अपने पुरको दैत्यों की बड़ी भारी सेनासे आच्छादित देखा १७ तदनन्तर देवता और दैत्योंकी सेनाओंका मुशल,बेड़ना,बाण,गदा, फरसा और शक्तियों से युद्ध होने लगा १८ वे परस्पर सेनावाले

दौड़रहे हैं और आपसमें माररहे हैं क्षणमात्रही में सेना रक्तके समूह से डूबसी गई १९ हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सेना गिरती और गिराती है इसप्रकार लड़ाई में पृथ्वी संध्याके मेघोंकी नाईं शोभित हुई २० वहांपर युद्धमें मारे हुए दैत्यों को शुक्रजी अमृतजीविनी विद्यासे जिला देतेभये और बृहस्पतिजी युद्धमें मारेहुए देवताओं को मंत्र पढ़ेहुए जलके बिन्दुओं और द्रोणाचलसे उत्तम औषधी लाकर वारंवार जिला देतेभये २१ । २२ मरेहुए देवताओंको फिर लड़ाईमें उठे देखकर क्रोधवशहोकर जालंधर शुक्रजीसे बोला २३ कि युद्धमें मेरे मारेहुए देवता कैसे फिर उठ आते हैं यह हमने सुना है कि तुम्हारी संजीविनी विद्या और के पास नहीं है २४ तब शुक्रजी बोले कि बृहस्पतिजी द्रोणाचलसे उत्तम औषधी लाकर जिलादेते हैं इससे जल्द द्रोणाचल को छिपा रक्खो २५ नारदजी बोले कि जब शुक्रजी ने इसप्रकार कहा तो जालंधर उसीसमयमें द्रोणाचल को शीघ्रता से समुद्र में छोड़कर फिर लड़ाई में प्राप्त होगया २६ तदनन्तर मारेहुए देवताओंको देखकर देवों से पूजित बृहस्पतिजी द्रोणाचल को गये परन्तु वहां पर्वतको न देखा २७ तो जाना कि राक्षस हरलेगये यह जानकर विषण्ण और डरसे विकल और श्वासों से व्याकुल देह होकर देवों के यहां आकर दूरही से बोले २८ कि हे देवताओ तुम सब भागो यह महादेवजी के अंशसे उत्पन्न जीतनेमें तुम्हारे नहीं आसक्ताहै इन्द्रका चेष्टित तुम स्मरण करो २९ बृहस्पतिजी के वचन सुन तिस समयमें देवता भयसे विकल होकर तेन दैत्योंसे मारेहुए दशों दिशाओंको भागे ३० देवताओंको भागे हुए देखकर समुद्रका पुत्र जालंधर शंख, नगारा और जयके शब्दों से इन्द्रपुरी में प्रवेशकर जाताभया ३१ राक्षसके नगरमें प्रवेश करने से इन्द्रादिक देवता दैत्यसे तापयुक्त होकर सुमेरुपर्वत की कन्दरामें प्राप्तहोकर बसतेभये ३२ तदनन्तर जालंधर इन्द्र आदिकों के सब अधिकारों में शुंभादिक दैत्यश्रेष्ठोंको अलगअलग स्थापितकर आप फिर सुमेरुपर्वतकी कन्दरा को जाताभया ३३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकम ९ अमरावतीविजयोनामसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

अट्ठानबेका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्यमें जालन्धर का देवोंके अधिकारों में दैत्योंको स्थापितकर पृथ्वी में प्रवेशकरना वर्णन ॥

नारदजी बोले कि इन्द्रादिक सब देवता फिर दैत्यको आतेदेखकर भयसे कांपकर विष्णुजीकी स्तुति करनेलगे १ कि मत्स्य कूर्मआदि अनेक स्वरूपोंसे सदैव भक्तोंके कार्य्योंमें उद्यत,पीड़ा के नाशकरने वाले,ब्रह्माहोकर उत्पन्न विष्णुहोकर पालन और रुद्रहोकर संहार करनेहारे, गदा, शङ्ख,कमल, चक्रहाथमें लेनेवाले २ लक्ष्मीके पति, राक्षसोंके नाशकरनेवाले, सर्पादिकों के नाथ, पीताम्बर धारणकरने वाले, यज्ञआदि क्रिया के पवित्र करनेहारे, विकर्ता, शरणागत की रक्षाकरनेवाले ३ दैत्योंसे सन्तापयुक्त देवताओंके दुःखरूपी पहाड़के नाश करनेवाले,विष्णु, शेषकी शय्यामें सोनेहारे, सूर्य और चन्द्र इन दो नेत्रोंवाले आपके नमस्कारहै ४ नारदजी बोले कि संकष्टनाशन स्तोत्रको जो मनुष्य नित्यही पढ़ताहै वह भगवान्‌की कृपासे कभी कष्टोंसे नहीं पीड़ित होताहै ५ यह भगवान् की स्तुति जबतक देवताओं ने की तबतक देवताओं की आपत्ति विष्णुजी ने जानी ६ और सहसाही कृपासे खिन्नमन होकर दैत्योंके वैरी भगवान् वेगसे गरुड़पर चढ़कर लक्ष्मीजीसे वचनबोले ७ कि तुम्हाराभाई जालन्धर देवताओंको कष्टदेताहै इससमय में देवताओं के बुलानेसे मैं शीघ्र युद्धकरने के लिये जाऊंगा ८ तब लक्ष्मीजी बोलीं कि हे नाथ हे कृपानिधि मैं तुम्हारी प्यारी और सदैव भक्तहूं तो मेराभाई कैसे युद्धमें आपसे मारनेके योग्यहै ९ तब श्रीभगवान्‌बोले कि महादेवके अंशसे उत्पन्नहोने,ब्रह्माजी केवचन और तुम्हारी प्रीतिसे जालन्धर हमसे नहीं मारने योग्यहै १० नारदजी बोले कि ऐसा कहकर शंख, चक्र, गदा और तलवार के धारण करनेवाले विष्णुजी गरुड़पर चढ़कर जहांपर देवता स्तुति करतेथे वहांपर युद्धकरने के लिये शीघ्रतासे जातेभये ११ तदनन्तर गरुड़के घोर पंखोंकी पवनसे पीड़ित दैत्य इस प्रकार भागे जैसे हवासे आकाश के मेघ भगजाते

हैं १२ फिर तो जालन्धर दैत्योंको इसप्रकार गरुड़के पंखोंकी वायुसे पीड़ित देखकर क्रोधसे कुछ न कहकर विष्णुजी के पास युद्धकेलिये प्राप्तहुआ १३ तब तो विष्णुजी और दैत्यश्रेष्ठ जालन्धर का भारी युद्धहुआ कि बाणोंसे दोनों आकाशको निरवकाश की नाईं करदेते भये १४ विष्णुजी बाणसमूहों से जालन्धर के ध्वजा, छत्र, धनुष और घोड़ोंको मारतेभये और एकबाणसे उसके हृदयको काटा १५ तब तो दैत्य कूदकर शीघ्रतासे युक्त गदाहाथमें लेकर गरुड़के मस्तकमें मारकर पृथ्वी में गिरादिया १६ फिर विष्णुजी हँसकर तलवारसे गदाको काट देतेभये तब तो जालन्धरने मजबूत मुष्टि से भगवान् के हृदयमें मारा १७ तदनन्तर दोनों महाबली बाहुयुद्धसे युद्ध करनेलगे भुजा मुष्टि और गांठों से युद्ध होनेलगा और पृथ्वी को शब्दयुक्त करदिया १८ इसप्रकार प्रतापयुक्त विष्णुजी अत्यंत रुचिर युद्धकर मेघसदृश गम्भीरवाणीसे जालन्धरसे बोले १९ कि हे दैत्येन्द्र तुम्हारे पराक्रमसे प्रसन्नहुआ हूं वरमांगो जो तुम्हारे मन में वर्त्तमानहो वह न देनेयोग्य भी होगा तोभी दूंगा २० जालन्धर बोला कि हे कुशल भगवन् जो आप प्रसन्नहैं तो यह वरदान हम को दीजिये कि गणों और हमारी बहन लक्ष्मी सहित हमारे घरमें बसिये २१ नारदजी बोले कि भगवान्ने उसके वरको यहकहा कि हम ऐसाही करेंगे यह कहकर सब देवसमूहों और लक्ष्मीजी सहित जालन्धरके पुरको प्राप्तहोगये २२ और जालन्धर देवताओंके अधिकारों में दानवों को स्थापितकर प्रसन्नहोकर फिर पृथ्वीतलमें प्राप्तहोगया २३ देवता गंधर्व और सिद्धों में जो कुछ रत्नथे उनको भी अपने अधीन करके स्थितहुआ २४ और पाताल में महाबली निशुम्भको स्थापितकर बलवान् दैत्य शेषआदिकों को पृथ्वीमें प्राप्तकरताभया २५ देवता, गन्धर्व, सिद्धसमूह, यक्ष, राक्षस, और मनुष्यों को अपने नगरमें बसाकर तीनोंलोकों की रक्षा करनेलगा २६ इस प्रकार जालंधर देवताओं को अपने वशकर धर्म्म से प्रजाओं को औरसपुत्रकी नाईं पालनेलगा २७ उसके धर्म्म से राज्य कोई व्याधियुक्त, दुःखित, दुर्बल और दीन नहीं दिखाईपड़ा

इसप्रकार जालंधरके धर्मसे रक्षाकरतेहुए इच्छापूर्वक उसकी लक्ष्मी
देखने और भगवान्‌की सेवा करनेकेलिये मैंभी प्राप्तहुआ २६॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेजालंधरप्रवेशोनामाष्टनवतितमोऽध्यायः ६८॥

निन्नानवेका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्य में जालंधरका नारदजी के कहने से राहु दूतको शिव जीके पास पार्वती देदेने के लिये भेजना॥

नारदजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ जब मैं जालंधर के पास
प्राप्तहोगया तो उसने बड़ी भक्तिसे विधिपूर्वक पूजनकर यह वचन
हंसकर कहा १ हे ब्रह्मन् हे मुनिजी आप कहांसे आते हैं कुछ आ
पने देखाहै जिसलिये आपका आना हुआहै वह आज्ञा दीजिये
तब नारदजी बोले कि हे दैत्येन्द्र इच्छापूर्व्वक मैं कैलास पर्वत के
कँगूड़े पर गया तो वहां पर पार्व्वतीसमेत महादेवजी को देखा
और वहीं पर दशहज़ार योजनका लम्बा कल्पवृक्षका वनहै जिसमें
सैकड़ों कामधेनुहैं और चिन्तामणिसे प्रकाशितहै ४ यह बड़ा आ
श्चर्य देखकर तिस समय में मेरे यह वितर्क हुई कि कहीं पर तीनों
लोकों में ऐसी वृद्धिहै या नहीं ५ तबतक तुम्हारे ऐश्वर्य्य के देखने
की कामनासे तुम्हारे पास प्राप्त होगया क्योंकि तुमने भी बहुत ऐ
श्वर्य इकट्ठा किया है ६ तुम्हारी स्त्रीरहित समृद्धिको देखकर यह
तर्कणा करता हूं कि महादेवजी से अधिक दूसरा कोई तीनोंलोकों
में समृद्धियुक्त नहीं है ७ यद्यपि अप्सरा और नागोंकी कन्या भी
तुम्हारे वश में स्थित हैं तथापि वे निश्चय पार्व्वती के रूपके स
मान नहीं हैं ८ जिसकी लावण्यता के समुद्र में ब्रह्माजी डूबगये
और उन्होंने पूर्वसमय में अपने धैर्य्य को छोड़ दिया तो पार्वती
के समान कौन है ९ रागरहित, तपस्यासे संसार जिनके अधीन
ऐसे महादेवजी लीलाही से अपने वश में करलिया है १० सुन्द
रतारूपी वन में शवरीरूप पहले घूमती थी जिसके रूप को वि
जन में ब्रह्माजी वारंवार देखते थे ११ और कई अप्सराभी उन्हें

ने रचीं परन्तु पार्व्वतीजी के बराबर एकभी न हुई इससे स्त्रीरूपी रत्नके भोगविलास करनेवाले महादेव जी के यह सम्बद्धि श्रेष्ठहै १२ सब रत्नोंके स्वामी तुम्हारे वैसी नहीं है ऐसा कहकर तिससे सलाह लेकर हम चलेआये तो वह जालन्धर १३ पार्व्वती जीके रूप को सुनकर कामज्वर से पीड़ित होगया तदनन्तर राहुको दूत बनाकर महादेवजी के पास भगवान्की मायासे मोहितहोकर भेजा तो राहु पूर्ण शुक्लपक्षके चन्द्रमाके समान दीप्तिवाले या सम्पूर्णता करके कृष्णपक्षके चन्द्रमाके समान दीप्तिवाले कैलास पर्वतमें प्राप्तहुए और नन्दी बैलसे जाकर सबहाल कहा तो उसने महादेवजीके पास भेज दिया तब महादेवजी ने भौंहरूपी लताकी संज्ञासे प्रेरित किया तो राहु बोला १४।१५।१६ कि हे वृषध्वज महादेवजी सर्प्प सेवाकरनेवाले, तीनोंलोकों के स्वामी, प्रभु, सब रत्नों के ईश्वर जालन्धर की आज्ञा को सुनो १७ नित्यही श्मशान में बसनेवाले, मुण्डों की धारण करनेहारे, नग्न तुम्हारे यह सुन्दर पार्व्वती कैसे स्त्री है १८ मैं रत्नों का नाथ हूं और पार्व्वती स्त्रियों में रत्नरूपी है वह हमारे ही योग्य है भिक्षाभोजन करनेवाले तुम्हारे योग्य नहीं है १९ नारदजी बोले कि राहुके इस प्रकार कहते हुए श्रीमहादेवजी की भौंह के बीचसे बड़ा भयानक पुरुष उत्पन्न हुआ कि जिसका तीव्र वज्र के समान शब्द, २० सिंह के समान मुँह, चलायमान जीभसहित, प्रकाशित हुए नेत्र, महान्, ऊपरको बाल, सूखी देह दूसरे नरसिंह के समान था २१ वह पुरुष राहु के खाने को प्रारम्भ करता भया तब तो राहु उसको देखकर भयसे व्याकुल होकर अत्यन्त वेगसे भागे परन्तु उसने बाहर राहुको पकड़ लिया २२ तब तो महाबाहु राहु मेघोंके समान गंभीरवाणी से महादेवजी से बोले कि शरणमें आयेहुए मेरी आप रक्षाकीजिये २३ हे महादेवजी मैं ब्राह्मणहूं यह मेरे खानेको प्राप्त हुआहै इससे हे देवोंके स्वामी हे शरण आयेहुओं की रक्षा करनेवाले हमारी रक्षाकीजिये २४ ब्राह्मणके वचन सुनकर महादेवजी तिस समयमें उस पुरुषसे बोले कि यह दूत पराये आधीन है इससे यह मारा नहीं जावे २५ छोड़ो इसको—इसप्रकार के

वचन सुनकर वह पुरुष राहुको आकाशमें छोड़ देताभया और राहु को छोड़कर महादेवजीसे बोला २६ कि हे स्वामिन् हे देवोंके स्वामी हे प्रभुजी भूख हमको बहुत सतारही है सब तरहसे मैं भूखसे दुर्बल हूं हमको खानेके लिये आज्ञादीजिये २७ तब महादेवजी बोले कि अपने हाथ पांवों के मांसको तुम शीघ्र खाओ २८ नारदजी बोले कि महादेवजीकी आज्ञा पाकर वह पुरुष अपने आप हाथ पांवोंके मांसको खालेताभया जब शिर बाक़ी रहगया २९ तो उसको देख कर महादेवजी प्रसन्नहुए और विस्मयसहित उस भयानक कर्म वाले पुरुषसे बोले ३० कि तुम कीर्ति मुख संज्ञावालेहो सदैव हमारे द्वारमेंरहो जे तुम्हारी पूजानहीं करते हैं वे हमारे प्रिय करनेवाले नहीं हैं ३१ नारदजीबोले कि तबसे महादेवजी के द्वारमें कीर्तिमुख स्थित रहते हैं जे पहले उनको नहीं पूजते हैं उनकी पूजा वृथा होती है ३२ और राहुको जो उसने आकाश में छोड़ाथा तो राहु बर्बरस्थल में गिरा इससे पृथ्वीमें उसका बर्बरोद्भूत नामभी हुआ ३३ तदनन्तर राहु अपने को फिर उत्पन्न हुआसा मानताभया और जालन्धरके पास आकर महादेवजी का सब चरित्र सुनाया ३४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्येश्रीकृष्णसत्यभामासंवादेदूतसंवादोजालंधरोपाख्यानंनामनवनवतितमोऽध्यायः ९९

सौका अध्याय ॥

महादेव और जालन्धरके युद्धमें जालन्धरकी सेनाका नाशहोना वर्णन ॥

नारदजी बोले कि राहुसे सब वृत्तान्त सुनकर जालन्धरका दे[illegible] कोपसे व्याकुल होगया और शीघ्रही करोड़ों दैत्यों समेत निकल[illegible] १ शुक्रजी तो जालन्धरके आगेहुए और राहुभी दृष्टिमें स्थितहु[illegible] मारे वेगके उसका मुकुट पृथ्वी में गिरगया २ दैत्योंकी सेना संक[illegible] विमानों से इसप्रकार शोभितहुई जैसे मेघोंसे वर्षाऋतुमें आका[illegible] पूर्ण होजाता है ३ जालन्धर का यह उद्योग देखकर तिससमय [illegible] शीघ्रही इन्द्रादिक देवता अलक्षित होकर महादेवजी को जना[illegible] भये ४ कि हे स्वामिन् जालन्धर सेना लेकर आरहा है क्या आ[illegible]

नहीं जानते हैं आप तो सब जानतेही हैं परन्तु हमलोग भी आप को जनाते हैं इससे हमारी रक्षाकेलिये जालन्धरको मारिये ५ नारदजी बोले कि इसप्रकार के देवोंके वचन सुन हँसकर महादेवजी महाविष्णुजीको बुलाकर यह वचन बोले ६ कि हे विष्णुजी आपने लड़ाई में जालंधरको क्यों नहीं मारा और तिसके डरसे अपने वैकुण्ठको छोड़कर उसीके यहां आप प्राप्त हुएहैं ७ तब श्रीभगवान् बोले कि आपके अंशसे उत्पन्न और लक्ष्मीजीका भाई है इससे मैंने लड़ाई में इसको नहीं मारा आप इस राक्षसको मारिये ८ तब महादेवजी बोले कि यह महातेजस्वी इन शस्त्र अस्त्रोंसे हमसे नहीं मारा जासक्ताहै इससे सब देवता शस्त्रकेलिये अपने तेजका अंश हम को दीजिये ९ नारदजी बोले कि तदनन्तर विष्णु इत्यादिक देवता तिसी समयमें अपने तेजोंको देतेभये तब वह तेज एकजगह प्राप्त हुआ उस महान् तेजको देखकर १० महादेवजी सहसासे ज्वाला की मालाकी नाईं अत्यन्त भयानक उत्तम शस्त्र सुदर्शनचक्र बना लेते भये ११ और बाक़ी से वज्रबनाया तबतक जालन्धर कैलास के तलभूमियों में दिखाई पड़ा १२ जो कि हाथी, घोड़ा, रथ और पैदलों के करोड़ों से घिराहुआ था उसको देखकर सब देवता जहां से आयेथे वहांको प्रसन्नहोकरगये १३ और महादेवजी की आज्ञा से अत्यन्त वेगसे युक्त नन्दी, गणेश और स्वामिकार्त्तिक इत्यादि गण युद्धके लिये तैयारहुए १४ और युद्धमें दुर्मद सबगण कैलास से उतरे तदनन्तर कैलासके नीचेकी भूमिमें प्रमथों के स्वामी और दैत्यों का शस्त्र और अस्त्रों से संकुल घोरयुद्ध नगारा, मृदंग और शंखोंके बीरोंके आनन्द देनेवाले शब्दों और हाथी,घोड़ा और रथ के शब्दों से भी युक्त होने लगा तब तो सबके शब्दों से शब्दयुक्त पृथ्वीकँपी और शक्ति,तोमर, बाणसमूह,मुशल, प्रास और पट्टिशों से १५। १६। १७ आकाश इसप्रकार शोभितहुआ जैसे उल्काओंसे आच्छादित आकाश पूर्ण शोभित होताहै और नाशकियेहुए रथ, हाथी और घोड़ोंसे सब पृथ्वी शोभितहुई १८ वज्रसे चलायमान शिरकेखण्डों,प्रमथोंके मारेहुए दैत्यसमूह और

मारेहुए गणों से पृथ्वी आच्छादित होगई १९ बसा, रक्त, मांस और कीचड़ आदिसे पृथ्वी नहीं जानेके योग्य होगई प्रमथों के मारेहुए दैत्यसमूहों को शुक्रजी वारंवार मृतसंजीवनी के बलसे जिला देते भये तिन मरकर जियेहुए दैत्योंको देखकर सबगण व्याकुल होकर डरसे पीड़ितहुए २०।२१ और शुक्रजीके जिलानेका सब वृत्तांत महादेवजी से कहा तदनन्तर महादेवजी के मुखसे अत्यन्त भयानक कृत्याहुई २२ जिसके तालवृक्षके समान जंघा और पेट, टेढ़े, स्तनों से पीड़ित हैं वृक्ष, ऐसी होकर वह महाअसुरोंको खानेलगी २३ और शुक्रजीको अपने हाथमें लेकर अन्तर्द्धान होगई शुक्रजी को कृत्याके धारण कियेहुए देखकर दैत्योंकी सेनाओं के समूह तिस समय में २४ मलीनमुख होगये और युद्ध में दुर्मद राक्षस अभिमानसे मारने लगे तदनन्तर दैत्योंकी सेना गणों के भयसे पीड़ित मर्दितहुई २५ जिसप्रकार कि हवाके वेगसे मजबूत तृणोंका समूह होजाता है गणों के भयसे भग्न राक्षसों की सेनाको देखकर गण लोग आनन्दको प्राप्त होगये २६ सेनानी निशुंभ, शुंभ, और वीर्यवान् कालनेमि ये तीनों महाबली वीर गणों की सेनाको रोंकतेभये २७ और वर्षाकालके मेघोंकी नाईं बाणोंकी वर्षा करनेलगे तदनन्तर दैत्योंके बाणोंके समूह टीड़ियों के समूहकी नाईं छूटे २८ और आकाश और सब दिशाओंको आच्छादितकर गणोंकी सेनाको कँपादिया गणलोग दैत्योंके सैकड़ों बाणोंसे भिन्न रक्तके समूहोंको बरसतेहुए २९ वसन्तऋतुमें ढाकके फूलकी दीप्तिके समान दीप्तियुक्त कुछ न जानतेभये उससमय में गणगिरे गिरायेगये और छिन्नभिन्न भी होगये ३० और लड़ाईको छोड़कर सब विमुख होगये ३१ तदनन्तर गणेशजी, नन्दीश्वर और स्वामिकार्तिकजी कटीहुई अपनी सेना को देखकर क्रोधयुक्त होकर बहुतों को संगलेकर जबर्दस्ती दैत्यश्रेष्ठों को रोंकतेभये ३२ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्त्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेदैत्यसेनानिर्णयोनामशततमोऽध्यायः १०० ॥

एकसौ एकका अध्याय ॥

जालंधर दैत्यकी सेना और महादेवजीकी सेनाका द्वन्द्व युद्ध होना और महादेवजीकी सेनासे जालन्धरकी सेनाका हारना वर्णन ॥

नारदजी बोले कि राक्षसलोग नन्दीश्वर गणेशजी और स्वामिकार्तिकको गणोंके स्वामी देखकर अमर्षसे द्वन्द्वयुद्धकेलिये दौड़े १ नन्दीश्वर को कालनेमि,गणेशजीको शुम्भ,स्वामिकार्तिकको निशुम्भ वेगसे दौड़ा और द्वंद्वयुद्ध इन लोगों से होनेलगा २ निशुम्भ वेगसे स्वामिकार्तिकजी के मुरैलेके हृदयमें पांच बाणोंसे मारताभया तब तो मुरैला मूर्च्छित होकर गिरपड़ा ३ तदनन्तर शक्तिके धारण करनेवाले स्वामिकार्तिकजी रोषयुक्त होकर जबतक शक्तिको ग्रहण करें तबतक निशुम्भ वेगसे अपनी शक्तिसे तिनको गिरादेताभया ४ तदनन्तर नन्दीश्वर बाणोंसे कालनेमिको मारताभया सातबाणों से घोड़े और पताकाको तीन बाणोंसे सारथिकोमारा ५ तब क्रोधयुक्त कालनेमि नन्दीश्वर के धनुषको काटदेताभया फिर धनुष को छोड़कर नन्दीश्वरकी छातीमें अच्छीतरहसे मारा ६ तब तो नन्दीश्वरका शूलसे हृदय कटगया और घोड़ा और सारथी मरगये और वह पर्वतके कँगूड़ेको छोड़कर पहाड़को भी गिरादेताभया ७ तदनन्तर शुम्भ रथपर और गणेश मूसेपर चढ़ेहुए बाणसमूहोंसे युद्ध कर परस्पर मारतेभये ८ तदनन्तर गणेशजी ने शुम्भ के हृदय में बाणसे मारा और पांच बाणोंसे सारथी को मारकर पृथ्वी में गिरा दिया ९ तिसपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त शुम्भ साठ बाणोंसे गणेशजी और तीन बाणसे मूसेको मारकर मेघोंके बराबर शब्दकर गर्जा १० मूसेके बाण लगनेसे हृदय कटगया इससे उसको अधिक पीड़ाहुई तब गणेशजी उससे उतरकर पैदलहोगये ११ और शुम्भकी छाती में फरसासे मारकर पृथ्वी में गिरादिया और फिर आप मूसेपर चढ़ गये १२ तब तो कालनेमि और निशुंभ ये दोनों राक्षस क्रोधसे गणेशजीको अंकुशसे हाथीकीनाई बाणोंसे मारतेभये १३ गणेशजीको पीड़ित देखकर महाबलवान् वीरभद्र वेगसे करोड़ भूतोंसेयुक्तहो

दौड़े १४ और कूष्माण्ड, भैरव, वेताल, योगिनीगण पिशाच, यो
नियोंके समूह और गण भी तिनके पीछे धाये १५ तदनन्तर किल
किला शब्द और घुर्घुरसमेत सिंहनाद और डमरूके शब्दोंसे पृथ्वी
काँपने लगी १६ तिस पीछे भूत लोग दौड़े और दानवों को खाने
लगे और कूद कूदकर रणभूमिमें नाचनेलगे १७ फिर नन्दी और
स्वामिकार्तिक भी शीघ्रता समेत प्राप्त होगये और लड़ाई में नि
रन्तर बाणसमूहों से दैत्योंको मारनेलगे १८ गिराये, भर्त्सित और
नाश किये हुए दैत्यों से छिन्नभिन्न, विषममुख और व्याकुल सेना
होगई १९ तदनन्तर बली जालन्धर अपनी सेनाको विध्वस्त देख
कर भारी पताकावाले रथमें चढ़कर गणों के पास गया २० तिस
समयमें हाथी, घोड़ा,रथकाशब्द,शङ्ख, नगारे और सिंहनाद दोनों
सेनाओं में हुआ २१ जालन्धर के बाणसमूहों से नीहारके समूहों
की तरह आकाश और पृथ्वीका अन्तर आच्छादित होगया २२
पांच पांच बाणोंसे गणेशजी और शैलादिको और बीस बाणों से
वीरभद्र को मारकर मेघों के समान शब्दकर जालन्धर गर्जा २३
तदनन्तर वेगयुक्त कार्तिकेयजी ने शक्ति से जालन्धर को मारा तो
वह व्याघूर्ण, शक्ति से निर्भिन्न और कुछ व्याकुलमन होगया २४
तिस पीछे क्रोधयुक्त जालन्धर गदासे कार्तिकेयजी को मारताभया
तो कार्तिकेयजी पृथ्वी में गिरपड़े २५ तिसीतरह से वेगसे नन्दी-
श्वर को भी मारकर पृथ्वी में गिरादेता भया तदनन्तर क्रोधयुक्त
गणेशजी फरसासे जालन्धरकी गदाको काट देतेभये २६ और वीर-
भद्रने जालन्धरकी छाती में तीन बाणोंसे मारा और सात बाणोंसे
घोड़ा, पताका और धनुषको काटदिया २७ तदनन्तर अत्यन्त क्रो-
धयुक्त जालन्धर घोरशक्ति को लेकर गणेशजी को मारकर गिरा
देताभया और आप दूसरे रथ पर चढ़ गया २८ फिर क्रोधयुक्त
होकर शीघ्रता से वीरभद्रके पास पहुँचा तो वे दोनों सूर्य्यके सदृश
वीर परस्पर युद्ध करने लगे २९ वीरभद्र ने बाणों से जालन्धर
घोड़ों और धनुषको काटदिया फिर वेड़नाको लेकर जालन्धर ३०
शीघ्रतासे वीरभद्रके मस्तक में मारता भया और तब तो वीरभ-

भिन्न मस्तक होकर रुधिर गिराताहुआ पृथ्वी में गिरपड़ा ३१ ॥
इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्येश्री-
कृष्णसत्यभामासंवादेदैत्यसेनापराभवोनामैकाधिकशततमोऽध्यायः१०१ ॥

एकसौ दोका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्य में जालंधर राक्षस का कपट वर्णन ॥

नारदजी बोले कि वीरभद्रको गिराहुआ देखकर महादेवजी के
ण डरसे लड़ाई छोड़कर रोतेहुए महादेवजी के पास प्राप्त हुए १
ब तो महादेवजी गणों का शब्द सुन हँसतेहुए लड़ाई में बैलपर
ढ़कर प्राप्तहुए महादेवजीको आतेही देखकर गणों ने फिर सिंह-
ादकर २।३ लौटकर बाणोंकी वर्षासे दैत्योंको मारा तब तो सब
त्य भयंकर महादेवजीको देखकर इसप्रकारसे भागे जैसे कार्तिक
 व्रत करनेवाले को देखकर उसके भयसे पाप भागजाते हैं तद-
न्तर जालन्धर लड़ाई में दैत्योंको भगेहुए देखकर ४।५ क्रोधसे
ज़ारों बाण छोड़ताहुआ महादेवजीपर दौड़ा शुंभ, निशुम्भ, अश्व-
ुख, कालनेमि, बलाहक, ६ खड्गरोमा, प्रचण्ड और घस्मर ये भी
शिवजी के पास पहुँचे तब महादेवजी ने बाणों के अंधकारसे आ-
च्छादित गणों की सेनाको देखकर ७ उन बाणसमूहों को काटकर
अपने बाणों से आकाशको आच्छादित करदिया और तिसीसमय
में बाणकी पवनसे दैत्योंको पीड़ितभी करदिया ८ प्रचण्ड बाणस-
मूहों से क्रोधकर खड्गरोमा के शिर को काटकर पृथ्वी में गिराकर
फिर फरसासे काटडाला ९ बलाहक के शिरको खट्वांग से दो खण्ड
करदिया और घस्मर दैत्यको फसरी से बांधकर पृथ्वी में मारकर
गिराया १० कोई दैत्य नन्दीकरके मारेगये और कोई बाणों से ना-
शेगये दैत्य स्थित रहने में इसप्रकार न समर्थ हुए जैसे सिंह से
पीड़ित हाथी असमर्थ होजाते हैं ११ तदनंतर कोपयुक्त और तीव्र
वज्रके समान शब्दवाला जालंधर लड़ाई में महादेवजीको पुकारता
भया १२ कि हे जटाके धारण करनेवाले इससमय में हमारे साथ
यूद्ध करो इनके मारने से क्याहै जो कुछ तुम्हारे बलहै उसको

खाओ १३ तब नारदजी बोले कि ऐसा कहकर सत्तर बाणोंसे म-हादेवजी को मारा तब महादेवजी ने राहही में उनको तीक्ष्णबाणों से हँसकर काटडाला १४ और सत्तर बाणों से घोड़े, ध्वजा, छत्र और धनुषको काटा तब तो वह वीर्यवान् धनुष और रथहीन हुआ और गदा को लेकर १५ दौड़ा तब महादेवजी ने बाणों से गदा को दो खंड करडाला तथापि महादेवजी के मारने की इच्छासे मुष्टिको उ-ठाकर पहुँचा १६ तबतक महादेवजी ने बाणसमूहों से कोश भर फेंकदिया तदनन्तर जालन्धर राक्षसने महादेवजीको अधिक बल मानकर १७ महादेवजी के मोहन करनेवाली अद्भुत गांधर्वी माया रचा तब गंधर्व और अप्सरों के समूह गाने और नाचनेलगे १८ ताल वेणु और मृदंगों को परस्पर बजानेलगे तिस महाआश्चर्य को देखकर महादेवजी नादसे मोहित होगये १९ पतितहुए शस्त्रों को हाथों से न जाना तब जालन्धर दैत्य ने एकाग्रभूत महादेवजी को देखकर २० कामसे पीड़ित होकर जहां पार्वती स्थित थीं वहां को गमन किया और युद्धमें महाबलवान् शुम्भ और निशुम्भ को स्थापित करदिया २१ दशभुजा, पांचमुख, तीन नेत्र, जटाओं को धारे और भारी बैलपर चढ़कर जालन्धर पहुँचा २२ तदनन्तर पार्वतीजी महादेवजी को आते देखकर उनके दर्शनके लिये सखी के बीचसे उठीं २३ जबतक पवित्र अंगवाली पार्वतीको जालन्धर ने देखा और तबतक उसने वीर्य को छोड़दिया और जड़ अंगहो-गया तदनन्तर पार्व्वती राक्षस को जानकर भयसे व्याकुल होकर उत्तर मानस को अन्तर्द्धान होगईं २४।२५ तब तो क्षणमात्रही में पार्व्वतीजीको बिजली की लता की नाईं न देखकर जालन्धर शी-घ्रतासे युद्धमें महादेवजी के पास पहुँचा २६ और देवी पार्वतीजी ने मनसे महाविष्णुजी को स्मरण किया तो उन्हों ने पासही बैठे भ-गवान्को देखा २७ तो पार्वतीजी बोलीं कि हे विष्णुजी जालन्धर दैत्यने परमअद्भुत किया उस दुर्बुद्धिका चेष्टित क्या आपको विदित नहीं है २८ तब श्रीभगवान् बोले कि तिसने राह दिखलाया मैंभी उसी राहसे जाऊंगा और तरहसे वह नहींमारा जायगा अपनी सी

के पतिव्रता पनसे रक्षायुक्त रहाहै २९ तब नारदजी बोले कि भगवान् ऐसा कहकर फिर जालंधरपुरको गये और महादेवजी गन्धर्वों के पीछे लड़ाई में स्थितरहे ३० और तिस समयमें मायाका अन्तर्द्धान होगया यह भी महादेव जी ने जाना तो विस्मितमन होकर क्रोधसे फिर जालन्धरके पास पहुँचे ३१ तो जालन्धरदैत्यने महादेवजी को फिर आतेहुए देखकर लड़ाई में बाणसमूहों से आच्छादित करदिया ३२ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेदैत्यकपटवर्णनोनामद्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२ ॥

एकसौतीनका अध्याय ॥

वृन्दा का चिता की अग्नि में प्रवेश वर्णन ॥

नारदजी बोले कि विष्णुजी जालंधरपुर में जाकर जालंधर के मारनेकेलिये उसकीस्त्री वृन्दाके पातिव्रत भंगहोने के लिये मतिकरतेभये १ तदनन्तर वृन्दारका देवी स्वप्नमें क्या देखतीभई कि मेरा पति भैंसेपर चढ़ा, तेललगाये, नंगा २ कालेफूलोंके गहनोंसे युक्त, राक्षसगणों से सेवित, दक्षिण दिशामें प्राप्तमुण्ड, अन्धकारसे आच्छादित ३ और अपने पुरको अपने समेत समुद्रमें डूबाहुआ भी देखा तो वह स्त्री जगी और अपने स्वप्नको शोचनेलगी ४ और सूर्य के उदय को देखकर स्वप्नको अच्छा न जानकर भयसे विकल रोने लगी ५ और गोपुर और अट्टालकी भूमियों में कहींपर कल्याणको न प्राप्तहुई तदनन्तर दो सखियों संयुक्त नगरके पासके बनकोगई ६ तो वहांभी कुछ सुखको न प्राप्तहुई तो दूसरे बनकोगई और तिस समयमें अपनाको नहीं कुछ समझा ७ फिर घूमती हुई वृन्दा स्त्री ने अत्यन्त भयङ्कर, सिंहके समान मुखवाले, डाढ़ और आंखें भी जिनकी भयानक ऐसे दो राक्षसों को देखा तो देखतेही अत्यन्त विह्वल होकर तिसकाल में भागी और शांत तपस्वी को शिष्यसमेत मौन बैठेहुए देखा ८।९ तो डरकेमारे उनके कण्ठमें अपनी भुजाओं को डाल देतीभई कि हे मुनिजी शरणमें प्राप्तहुई मेरी रक्षाकीजि

यह वचन बोली १० तब मुनिने उसकेपीछे राक्षसों को आते देख
कर और विह्वलतायुक्त स्त्रीको भी देखकर क्रोधसे हुंकारकर उन
राक्षसों को लुप्तकरदिया ११ वे दोनों राक्षस तो हुंकारके भयसे डरे
हुए आकाश में प्राप्त होगये तब वृन्दा भूमिमें दण्डवत् ।। श
यह वचन बोली १२ कि हे कृपानिधिजी आपकरके तिस घोर डरसे
रक्षाकीगई अब कुछ जानने की इच्छाकरती हूं कृपाकरके वह
१३ हे प्रभुजी हे अच्छे व्रत करनेवाले हमारा स्वामी जालंधर महा
देवजी से युद्ध करनेको गयाथा वह युद्धमें कैसे है यह हमसे कहिये १४
नारदजी बोले कि मुनि तिसके वचनसुन कृपाकर ऊपर देखतेभये
तो दो वानर आये और मुनिके प्रणामकर आगे स्थितभये १५ त
मुनिने उनको आँखों का इसारा किया तो वे दोनों फिर आकाशमें
चलेगये और आधेक्षणमें आकर फिर आगे स्थित होगये १६ तब
तो वृन्दाने उन वानरोंके हाथोंमें जालंधर का शिर और कबंधदेख
तो पतिके व्यसनसे दुःखित मूर्च्छित होकर पृथ्वी में गिरपड़ी १७
तब तो मुनिने उसके कमण्डलुका जलसींचा और समझाया तब
वह अपने पतिके माथे में माथकर खिन्नहोकर रोनेलगी १८ कि हे
विभुजी जो आप पूर्व्वसमयमें सुखके संवादोंसे हमको विनोदकराते
थे सोई आप निरपराधिनी मुझ वल्लभा से क्यों नहीं बोलते हैं १९
आपने देवता गन्धर्व्वों को हरिजी समेत जीतलियाथा सोई तीनें
लोकोंके जीतनेवाले आप कैसे तपस्वीसे मारेगये २० नारदजी बोले
कि वृन्दा रोकर तिसमुनिसे यह वचन बोली कि हे कृपानिधि हे मुनि
श्रेष्ठ इनका जीना हमको अत्यन्त प्याराहै २१ आपही इनके जि
लानेमें समर्थहैं तदनन्तर वृन्दाके वचन सुनकर हँसके मुनि बोले
२२ कि यह युद्धमें महादेवजीसे मारागया जीनेमें समर्थ नहीं है ति
पर भी तुम्हारे ऊपर कृपाकर इसको में जिलाऊंगा २३ नारद
बोले कि ऐसा कहकर जबतक मुनि अन्तर्द्धान होगये तबतक
प्रसन्न जालंधर वृन्दाको लपटकर उसके मुखको चूंबनेलगा २
तदनन्तर वृन्दा स्वामी को देखकर प्रसन्नमन होकर तिस समे
तिसी वनके बीचमें बहुत दिनतक रमतीरही २५ कदाचित् मु

अन्तमें तिसको विष्णुही देखकर उनको नाराज होकर क्रोध स-
त वृन्दा यह वचन बोली २६ कि हे हरि पराई स्त्री के भोग करने
ाले तुम्हारे शीलको धिक्कारहै तुम हमकरके अच्छीतरहसे माया
; प्रत्यक्ष तपस्वी जानेगये २७ तुमने मायासे हमको दो द्वारपाल
ःखलाये थे वेही राक्षसहोकर तुम्हारी स्त्रीको हरें २८ और तुम स्त्री
; दुःखसे पीड़ित वनमें वानरों की सहायतायुक्त और जो तुम्हारा
ाण्य बनाथा उससमेत घूमोगे २९ ऐसा कहकर जालन्धरमें आ-
क्रमन होकर विष्णुजी ने मनाभी किया तब भी वृन्दा अग्नि में
वेश करगई ३० तदनन्तर भगवान् उसका वारंवार स्मरण कर
सके चिताके भस्मकी रजसे अवगुण्ठित वहींपर स्थितरहे मुनि
ौर सिद्धोंके समूहोंने समझाया परन्तु शान्तिको न प्राप्तहुए ३१॥

तिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्येश्री
ष्णसत्यभामासंवादेवृन्दाचिताग्निप्रवेशोनामत्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३॥

एकसौ चारका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्य में शिवजीका जालन्धर को मारना॥

नारदजी बोले कि तदनन्तर जालन्धर महादेवजी को अद्भुत
राक्रम देखकर माया की पार्वती बनाकर महादेवजी को मोहित
करता भया १ महादेवजी रथके ऊपर प्राप्त, रोतीहुई और शुंभ नि-
शुम्भ दैत्यों से मारीहुई पार्वती को देखते भये २ इसतरहकी गौरी
को देख कर महादेवजी उद्विग्नमन हो अपने पराक्रम को बिसार
कर नीचेका मुखकर चुपचाप स्थितरहे ३ तदनंतर वेगसे जालंधर
महादेवजीके शिर, छाती और पेटमें तीन बाणों से मारता भया ४
तिसपीछे विष्णुजीने महादेवजी को समझा दिया तो इसको माया
जानकर भयानकरूप धरकर ज्वालामालाकी तुल्य अत्यन्त भयङ्कर
होगये ५ महादेवजी का अत्यन्त भयानकरूप देखकर महाअसुर
भी उनके सम्मुख स्थित न होकर दशोंदिशाको भगगये ६ तब तो
महादेवजी ने शुम्भ निशुम्भको शापदिया कि हमारे युद्धसे भगेहो
इससे पार्वतीजी के हाथसे मारेजावो ७ फिर जालन्धर वेगसे तीक्ष्ण

बाणोंसे बर्सा जिससे बाणों के अन्धकार से आच्छादित अर्थात्
होगया ८ बेगयुक्त महादेवजीने जबतक उसके बाणोंको काटा
तक बली जालन्धर शीघ्रही बेड़नासे बैलको मारताभया ६ उसः
चोटसे बैल रणभूमिसे भगगया महादेवजी ने खींचाभी परन्तु र
भूमिमें स्थित न रहा १० तदनन्तर भयानक देहधारे महादेव
अत्यन्त क्रुद्ध होकर वेगसे सूर्य्य समान तेजवाले सुदर्शनचक्र
लेतेभये ११ और शीघ्रतासे आकाश और भूमिको जलाकर उ
चक्रसे भारी नेत्रों समेत जालन्धरके शिरको देहसे अलग करदे
भये १२ पृथ्वीको शब्दयुक्त करताहुआ उसका देह रथसे पृथ्वी
गिरपड़ा और तेज निकलकर महादेवजी में लीन होगया १३
के देहसे उत्पन्न तेजको पार्व्वती जी में लयहुए देखकर आदि
देवता हर्ष से उत्फुल्लनेत्र होगये १४ और शिरसे महादेवजी
प्रणामकर विष्णुजी के चेष्टितकी प्रशंसा करनेलगे देवता बोले
हे महादेव जी आपने वैरीके डरसे देवताओं की रक्षाकी १५
कुछ और दुःख उत्पन्न हुआहै तिससे हमलोग क्या करें कि
की सुन्दरतासे सम्भ्रान्त, मोहित होकर विष्णुजी वहीं स्थितहैं
तब महादेवजी बोले कि भो देवताओ विष्णुजी के मोह दूर कर
लिये शरणागतकी रक्षाकरनेवाली मोहिनी मायाकी शरणमें जा
वह आपकाकार्य्य करेंगी १७ नारदजी बोले कि ऐसा कहकर भू
गणों समेत महादेवजी अन्तर्द्धान होगये और देवता मूलप्रकृ
भक्तोंके ऊपर कृपाकरनेवाली देवीकी स्तुति करनेलगे १८ कि
ससे सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण उत्पन्न होकर संसारके र
पालने और संहारके आदिकारण होते हैं और जिसकी इच्छाहि
संसारका जन्म और नाश होताहै जो शुद्धप्रकृतिको विस्तारकर
तिसके हम नमस्कार करते हैं १९ जे तेईस भेदिसंज्ञित सम
संसारमें पूर्व्वही अधिष्ठितथे और जिसके रूप और कर्म्म जड़
और जिसकी प्रकृतिको ब्रह्मा, विष्णु और महादेव ये तीनों देव
नहीं जानते हैं तिसके हम नमस्कार करते हैं २० जिसकी भक्ति
पुरुष नित्यही दारिद्र्य, मोह और पराभव को नहीं प्राप्तहोते हैं

भक्तों के ऊपर कृपा करनेवाली विष्णुजी की प्रकृति को सदैव हम नमस्कार करते हैं २१ नारदजी बोले कि एकाग्रमन होकर जो मनुष्य इस स्तोत्रको तीनों सन्ध्याओं में पढ़ताहै उसके दारिद्र्य,मोह और दुःख कभी स्पर्श नहीं करते हैं २२ इसप्रकार स्तुतिकर देवता तेजोमण्डल में आस्थित, ज्वालाओं से व्याप्त दिगन्तर तिस देवी को आकाशमें देखतेभये २३ और तिनके मध्यसे आकाशचारिणी सरस्वती को सबोंने देखा और वे यह बोलीं कि मैंहीं तीन प्रकार के गुणोंसे स्थितहूं २४ गौरी, लक्ष्मी और सरस्वती ये तीन मेरे स्वरूपहैं रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण ये तीनगुणहैं हे देवताओ इनतीनों देवियों के पास जावो वे तुम्हारे कार्य्यको पूराकरेंगी २५ नारदजी बोले कि देवताओं के सुनतेही वह अन्तर्द्धान होगया और देवतों के विस्मयसे उत्फुल्लनेत्र होगये २६ तदनन्तर सब देवता तिनके वाक्यसे प्रेरित भक्तिमें तत्पर होकर गौरी, लक्ष्मी और सरस्वती देवी को प्रणाम करतेभये २७ तब भक्तोंके ऊपर कृपा करने वाली देवियों ने नमस्कार करते हुए देवताओं को बीज दिये और बोलीं २८ कि ये खेतों के बीज जहांपर विष्णुजी स्थित हैं वहांपर बोओ तो तुमलोगोंका कार्य्य सिद्धिको प्राप्तहोगा २९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेजालन्धरवधोनामचतुरधिकशततमोऽध्यायः१०४॥

एकसौपांचका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्यमें आँवला और तुलसीका माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् देवताओं ने बीज बोये तो उनसे तीन वनस्पति हुए आँवला, मालती और तुलसी १ सरस्वती से उत्पन्न आँवला लक्ष्मीसे उत्पन्न चँवेली और पार्वती से उत्पन्न तुलसीहुई ये तमोगुण, सतोगुण और रजोगुणहैं २ तब तो वृन्दाके रूपसे अत्यन्त मोहित विष्णुजी स्त्रीरूपिणी दो वनस्पति को देख कर सम्भ्रमसे उठे ३ और काममें आसक्तचित्त से मोहसे तिनको देखा तिनसे तुलसी और आँवला ये दोनों रागसे

तेभये ४ और जो लक्ष्मी ने पहले बीजको दिया उससे उत्पन्न स्त्री भगवान्में ईर्ष्यायुक्त होतीभई ५ इससे भगवान् को अत्यन्त निन्दित बर्बरी नामकी हुई आँवला और तुलसी ने भगवान् में राग किया इस से भगवान् को सदा प्रीति देनेवाली हुई ६ तदनन्तर विस्मृतदुःख भगवान् तिन दोनों समेत प्रसन्न और सब देवताओं से नमस्कार किये हुए वैकुण्ठ को प्राप्तहुए ७ तुलसी भगवान् को बहुत प्रियहै इससे कार्तिकके उद्यापन में भगवान् की पूजा तुलसी की जड़के पासहोवे ८ जिसके घरमें तुलसीका वन होताहै वहघर तीर्थरूपहै उसमें यमराजके दूत नहीं आतेहैं ९ क्योंकि तुलसीका वन सब पाप नाशनेवाला, पुण्यकारी और कामना देनेहारा है जे मनुष्यों में श्रेष्ठ इसको लगाते हैं वे यमराजको नहीं देखते हैं १० नर्म्मदाजी का दर्शन, गंगास्नान और तुलसी के वनका संसर्ग ये तीनों बराबर हैं ११ लगाने, पालने, सींचने, दर्शन और छूनेसे तुलसीजी मनुष्यों के वाणी मन और देहसे इकट्ठा कियेहुए पाप को जला देती है १२ और तुलसी की मञ्जरियों से जो भगवान् और महादेवजी का पूजन करताहै वह गर्भ के घरको नहीं जाता है निस्सन्देह मुक्तिका भागी होता है १३ तुलसीदल में पुष्करआदिक तीर्थ गंगाआदिक नदियां और वासुदेवआदिक देवता स्थितरहते हैं १४ और तुलसीकी मञ्जरीयुक्त जो प्राणोंको छोड़ताहै वह सत्य सत्य भगवान्की सायुज्य को प्राप्त होताहै १५ तुलसी की मिट्टीसे लिप्त जो प्राणोंको छोड़ताहै उस सैकड़ों पापसे युक्तकोभी यमराज देखने को नहीं समर्थ होते हैं १६ और जो मनुष्य तुलसीके काष्ठ से उत्पन्न चन्दनको धारणकरताहै उसकी देहमें कियेहुए पाप नहीं स्पर्श करते हैं १७ तुलसीके वनकी छाया जहां जहां होती है तहां पर श्राद्ध करना चाहिये उसमें देनेसे पितरोंको नाशरहित मिलता है १८ और आँवलाकी छायामें जो पिण्डदान करताहै उसके नरक में स्थित पितर तृप्तिको प्राप्त होजाते हैं १९ मस्तक, हाथ और देह में जो आँवले को धारण करता है वह भगवान् के समान जानने योग्यहै २० आँवला, तुलसी की मिट्टी और द्वारकाकी मिट्टी जिस

की देहमें नित्य स्थित रहती है वह जीवन्मुक्त कहाता है २१ आँवला और तुलसीदल मिलेहुए जलसे जो स्नान करताहै उस को गंगास्नान के समान फल होताहै २२ मनुष्य आँवलाके पत्ते और फलों से देवताओं की पूजन करै तो अनेक प्रकारके सोने के फूलों से पूजन करने का फल प्राप्त होता है २३ तुलाके सूर्य्यमें कार्तिक में तीर्थ, मुनि, देवता और सब यज्ञ नित्यही आँवले में आश्रित होकर रहते हैं २४ द्वादशी में तुलसीदल और कात्तिकमें आंवला जो काटता है वह मनुष्य अत्यंत निन्दित नरकों को जाताहै २५ कात्तिक में आंवले की छायामें जो अन्नको भोजन करताहै उसके वर्षपर्यन्तका अन्नके संसर्गका पाप नाश होजाताहै २६ और जो मनुष्य आंवले की जड़में कार्त्तिकमें विष्णुजीको पूजताहै उसने सदैव सब विष्णुके क्षेत्रों में पूजन किया २७ आंवला और तुलसीके माहात्म्यको निश्चय चारमुखवाले ब्रह्माजी भगवान्‌के माहात्म्यकी नाई कहने को नहीं समर्थ हैं २८ आंवला और तुलसी से उत्पन्न कारण को जो सुनता और भक्तिसे सुनाता है वहपाप नाश होकर पुरुषाओं समेत विमानपर चढ़कर स्वर्गको जाताहै २९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्येश्रीकृष्णसत्यभामासंवादेधात्रीतुलस्योर्माहात्म्यंनामपंचाधिकशततमोऽध्यायः १०५

एकसौ छ:का अध्याय ॥

कलहा का उपाख्यान वर्णन ॥

पृथु बोले कि हे ब्रह्मन् इतिहाससमेत अत्यन्त आश्चर्य्य करनेवाला तुलसीका माहात्म्य आपने कहा तिसको मैंने सुना १ और जो कार्त्तिकके व्रत करनेवाले पुरुषका महान्‌फल कहा उस माहात्म्यको फिर कहिये कि किसने किसप्रकार इसको किया २ नारदजी बोले कि सह्यपर्वतके विषय करवीरपुर में पूर्व्वहीं धर्म्म का जाननेवाला धर्म्मदत्तनाम ब्राह्मणहुआ ३ वह सदैव विष्णुजी के व्रत और उनकी पूजामें रत रहता था द्वादशाक्षरविद्यामें जपमें निष्ठ और अतिथियों को प्रियथा ४ कदाचित् कार्त्तिकके महीने में भगवान्‌के जा-

गरणके लिये चौथाई बाक़ीरहे रात्रिमें भगवान् के मंदिरकोचला ५ भगवान् के पूजाकी सामग्री लेकर जाताही था कि उसने भयानक शब्दवाली राक्षसी आती देखी ६ कि जिसके टेढ़ी डाढ़ और मुख, जीभ डूबीहुई, लालनेत्र, नंगी, मांससूखी, लंबे ओष्ठकी और घर्घर शब्दवाली थी ७ तिसको देखकर धर्म्मदत्त भयसे डरे और अंग कांपनेलगे भयसे शीघ्रही पूजाकी सामग्री और तुलसीयुक्त जलसे भगवान्का नाम स्मरणकर राक्षसीके मारा तो उसके सब पाप नाशहोगये ८। ९ तदनंतर वह कलहा पूर्व्वजन्मके कर्म्मके विपाकसे उत्पन्नको स्मरणकर दण्डवत् प्रणामकर धर्म्मदत्तजी से अपनीदशाको कहनेलगी १० कि हे विप्र पूर्वकर्म के विपाकसे इस दशाको प्राप्तहुई थी अब फिर कैसे उत्तमगति को प्राप्तहूंगी ११ नारदजी बोले कि तिसको आगे प्रणत और अपने कर्म्म कहतीहुई देखकर अत्यन्त विस्मित धर्मदत्त ब्राह्मण तिससमय में बोले १२ कि किस कर्मके विपाकसे तुम इसप्रकार की दशाको प्राप्तहुई थी, कहां, कौन हो, क्या शील है यह सब हमसे कहिये १३ तब कलहा बोली कि हे ब्रह्मन् सौराष्ट्रनगर में भिक्षुनाम ब्राह्मणहुआ तिसकी पहली स्त्री अत्यन्त निष्ठुर कलहानामथी १४ मैंने कभी वचनसेभी पतिकाशुभ न कियाथा स्वामीके वचनके भंगसे तिसको मिष्टान्नभी नहीं दियाथा १५ नित्यही मुझे लड़ाई प्यारी लगतीथी इससे मेरे डरसे ब्राह्मण उद्विग्न रहताथा तब उसने दूसरे विवाहका मन किया १६ तब तो मैंने विषखाकर अपने प्राण छोड़ दिये तो यमराज के दूत मुझको बांधकर यमलोकको लेगये १७ यमराजने हमको देखकर चित्रगुप्त से पूछा कि हे चित्रगुप्त देखो इसने क्या कर्म्म कियाहै १८ शुभ वा अशुभ कर्म्म फलको प्राप्तहोगी तब तो चित्रगुप्तजी भर्त्सन करतेहुए बोले १९ कि इसने कुछ अच्छा कर्म नहींकियाहै मिष्टान्नको आपखा लेती थी अपने पति को नहीं देती थी २० इससे वल्गुलीयोनि में विष्ठाखाती हुई स्थितहो यह अपने पतिसे वैरकरती और नित्यही लड़ाई करनेवाली थी २१ फिर शूकरीयोनिमें स्थितहोगी और पात्र के वर्तनमें सदैव यह भोजन करती थी २२ तिस दोषसे पुत्र भक्षण

करनेवाली यह बिल्लारिहोगी और पतिका उद्देशकर इसने विष खा-
कर आत्मघात किया है २३ इससे अत्यन्त निन्दित यहप्रेत पिशाचों
में स्थितहो वहां पर दूत मरुदेश को इसे प्राप्तकरें २४ और यह
बहुतकाल वहीं प्रेत शरीर में स्थितरहे इसप्रकार अशुभ करनेवाली
तीन योनियों को भोगकरे २५ कलहा बोली कि मैं प्रेतदेहमें पांच-
सौवर्ष स्थितरही भूंख और प्याससे व्याकुल नित्यही अपने कर्म
से दुःखितथी २६ तदनन्तर कृष्णा और वेणी के संगममें मैं दक्षिण
देशको आई तो भूंख प्याससे व्याकुल मैंने बनियें के देह को खाना
चाहा २७ तो महादेव और विष्णुके गणों ने मुझे नदियों के किनारें
से जबरदस्ती दूर करदिया २८ फिर घूमतीहुई भूंख प्याससे पी-
ड़ित मैंने आपको देखा आपने जो तुलसी मिलेहुए जलको मेरे
ऊपर छोड़ा तो मेरे पाप जाते रहे २९ तिससे हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ
कृपा कीजिये इस प्रेत देहसे कैसे मैं मुक्ति को प्राप्तहूंगी मैंने तीन
योनियों में भी बड़ा दुःख उठायाहै ३० इसप्रकार ब्राह्मण कलहाके
वचन सुन उसके कर्मके पाकसे उत्पन्न विस्मयदुःखयुक्त और उसके
ग्लानि करनेवाले दर्शनसे कृपाकरके चलायमान चित्तकी वृत्तिहो-
कर बहुत काल ध्यानकर दुःखसेबोले ३१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये
कलहोपाख्यानंनामषडधिकशततमोऽध्यायः १०६ ॥

एकसौ सातका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्य में कलहोपाख्यान वर्णन ॥

धर्मदत्तजी बोले कि तीर्थदान और व्रत आदिकों से पाप नाश
होजाते हैं परन्तु प्रेतकी देहमें स्थित तुमको इनके करने का अधि-
कार नहीं है १ तुम्हारे ग्लानि करनेवाले दर्शनसे हमारा मन खिन्न
है दुःखयुक्त तुमको उद्धार किये विना निर्वृतिको नहीं प्राप्तहोगा २
तीनों योनिमें विपाक देनेवाले तुम्हारे पाप बड़े घोरहैं इससे अत्य-
न्त निन्दित प्रेतपना और पुण्यों से नहीं क्षीणहोगा ३ तिससे जन्म-
पर्यन्त जो मैंने कार्तिकका व्रत कियाहै तिस पुण्यके आधे भागसे

तुम अच्छीगति को प्राप्तहो ४ कार्तिकके व्रतकी बराबरी यज्ञ,दान, तीर्थ और व्रत निश्चय नहीं प्राप्त होते हैं ५ नारदजी बोले कि धर्म-दत्तजी ने तुलसी मिलेहुए जलसे द्वादशाक्षर मंत्र सुनाकर जबतक अभिषेक किया ६ तभीतक वह प्रेतपनेसे छूटगई प्रकाशित अग्नि की शिखाके सदृश सुन्दर देह धारकर सुन्दरतासे दिशाओंको प्रकाशयुक्त किया ७ तदनन्तर वह भूमिमें गिरकर ब्राह्मण के दण्डवत् प्रणामकर आनन्दसे गद्गद कहतीहुई बोली ८ कि हे द्विजश्रेष्ठ तुम्हारे प्रसादसे मैं नरकसे छूटी पापरूपी समुद्र में डूबीहुई मुझको निश्चय आपने उद्धार करदिया ९ नारदजी बोले कि इसप्रकार ब्राह्मणसे कहतीहुई विष्णुरूप धारेहुए गणों से युक्त आकाशसे आते हुए सुन्दर विमान को देखती भई १० तदनन्तर पुण्यशील और सुशील द्वारपालों ने उसको श्रेष्ठ विमानपर चढ़ालिया और अप्सराओंके समूह उसकी सेवा करनेलगीं ११ तिस विमानको देखकर धर्मदत्त विस्मययुक्त होकर पुण्यरूपी गणोंके भूमिमें गिरकर दण्डवत् प्रणामकिया १२ तब पुण्यशील और सुशील जोकि बड़े धर्मात्माहैं वे ब्राह्मणकी प्रशंसाकर बोले १३ कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ तुमने बहुत अच्छा कामकिया क्योंकि आप सदाही भगवान्में रत, दीनोंके ऊपर कृपा करनेवाले, धर्म्म जाननेहारे और भगवान् के व्रतमें परायणरहे १४ और जन्मपर्यन्त जो उत्तम कार्तिकका व्रत किया उसके आधे दानसे इसके पहले के इकट्ठे कियेहुए १५ सैकड़ों जन्मों के पाप भगवान्के जागरण आदिकोंसे नाश होगये औरयह विमान प्राप्त होगया १६ विष्णुजीका वैकुंठस्थान, उनके समीप वास और उन्हींकी स्वरूपता प्राप्तहुई वेही धन्य और कृतकृत्यहैं और उनका जन्म सफलहुआहै १७ जिन्होंने भक्तिसे विष्णुकी आराधना धर्मदत्त की नाईंकी क्योंकि अच्छीतरहसे आराधन कियेहुए विष्णुजी देहधारियों को क्या नहीं देते हैं १८ उत्तानपादके पुत्रको जिन्हों ने ध्रुव के भावमें स्थापित कियाहै जिनके नामके स्मरणसे देहधारी पुरुष अच्छी गतिको प्राप्त होते हैं १९ ग्राहसे पकड़ाहुआ हाथी जिनके नामके स्मरणसे पूर्व्वसमयमें छूटकर भगवान् के समीप प्राप्तहुआ

ग्रौर वही जयनामी उत्पन्नहुआ है २० इससे तुमसे पूजेहुए भग-
ान् अपनी सांनिध्यदेंगे आप बहुत हज़ारवर्ष दो स्त्रियों से युक्त
हेंगे २१ तदनन्तर पुण्यनाश होनेमें जब पृथ्वी में उत्पन्नहोगे तो
र्यवंशमें उत्पन्न प्रसिद्ध राजादशरथनामी होगे वहांपर दो स्त्रियोंसे
ुक्त होगे और तीसरी पुण्यकी अर्द्धभागिनी यह स्त्री होगी २२।२३
ाहां भी तुम्हारे सांनिध्य पृथ्वी में विष्णुजी तुम्हारे पुत्र होकर देव-
ाओंके कार्य्य करेंगे २४ तुम्हारे जन्मपर्यन्त व्रत करने और भ-
ावान् की संतुष्टि करने से यज्ञ, दान और तीर्थभी तुमसे अधिक
ाहीं हैं २५ हे ब्राह्मण तुम धन्यहो जोकि तुमने भगवान् की प्रसन्नता
करनेवाला यह कार्तिकका व्रत कियाहै और जिस आधे भागके फल
े भगवान् प्रसन्नहुए और अपना लोकदेंगे २६ ॥

ति श्रीपाद्मे महापुराणे पंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेकलहोपाख्यानोनामसप्ताधिकशततमोऽध्यायः १०७॥

एकसौआठका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्य में कलहोपाख्यानमें भगवान् के गण और धर्म्मदत्त ब्राह्मण का वार्तालाप वर्णन॥

नारदजी बोले कि इसप्रकार के भगवान् के गणों के वचन सुन
विस्मयसमेत धर्म्मदत्त पृथ्वी में दण्डवत् प्रणामकर यह बोले १ कि
सब मनुष्य यज्ञ, दान, व्रत, तीर्थ और तपस्यासे विधिपूर्व्वक भक्तों
की पीड़ा नाशकरनेवाले विष्णुजीको आराधन करते हैं २ तिन में
भगवान् की प्रीति और सांनिध्य करनेवाला जिनके करनेसे हो वेही
सब कियेहुए होते हैं तिनको आप कहिये ३ तब दोनों भगवान्के
गण बोले कि हे ब्राह्मण तुमने अच्छा प्रश्न किया है इतिहाससमेत
पूर्व समयकी हुई कथाको कहताहूं एकाग्रमन होकर सुनो ४ कांति-
पुरी में चोलनाम चक्रवर्त्ती राजाहुआ जिसके नामसे निश्चय वेदेश
चोलनामक हुए ५ जिसके पृथ्वी में राज्य करतेहुए कोई मनुष्य द-
रिद्र, दुःखित, पापबुद्धि और रोगी नहीं था ६ अत्यन्त यज्ञ करनेवाले
जिसके दोनों ताम्रपर्णी नदी के किनारे सोने के यज्ञ के खम्भों से

इन्द्रके वनकी नाईं शोभासे युक्त थे ७ कदाचित् वह राजा अनन्त शयनको गया जहांपर संसार के स्वामी सोते हैं ८ वहांपर विधिसे राजा मणि, मोती, सुन्दर फल और सोनेके अच्छे फूलोंसे भगवान् की पूजनकर ९ जबतक दण्डवत् प्रणामकर बैठा तभीतक उसने भगवान्के पास आतेहुए ब्राह्मणको देखा १० कि भगवान्की पूजा के लिये तुलसीदल और जल हाथमें लियेहुए है और अपनी पुरी का रहनेवाला विष्णुदास नामहै ११ तब वह ब्राह्मण वहांपर आकर सहस्रशीर्षा इत्यादि मन्त्रों से भगवान् को स्नानकरा तुलसीकी मंजरी और दलों से भगवान् को पूजन करताभया १२ तुलसी की पूजा से राजाकी रत्नों की पूजा आच्छादित होगई तो क्रोधयुक्त राजा बोला १३ कि हे विष्णुदास माणिक्य और सोने से पूजा जो शोभायुक्त मैंने की थी उसको आपने तुलसीदलों से कैसे आच्छादित करदिया १४ भगवान् की भक्तिको तुम नहीं जानते हो श्रेष्ठ पूजा कौनहै जो तुमने अत्यन्त शोभासे युक्त पूजाको ढकाहै १५ ये राजाके वचन सुन वह उत्तम ब्राह्मण क्रोधयुक्त हुआ और राजाके गौरवको उल्लंघनकर तिस समयमें बोला १६ कि हे राजन् मुक्तिको नहीं जानतेहो राज्यलक्ष्मी से अभिमानयुक्तहो पहले कुछ विष्णुका व्रत जो तुमने कियाहो तो उसको कहिये १७ गण बोले कि हे द्विज वह उत्तम राजा ब्राह्मणके ये वचन सुन हँसकर अभिमानसे विष्णुदाससे बोला १८ कि हे ब्राह्मण भगवान् की भक्तिसे अत्यन्त अभिमानयुक्त जो तुमने इसप्रकार कहा तो दरिद्री धनहीन तुम्हारी भगवान् में कितनी भक्तिहै १९ यज्ञ दान आदिक और देवता के स्थान ये सब भगवान् की प्रसन्नता करनेवाले हैं सो तुमने कुछ नहीं कियेहैं २० इसप्रकार का अभिमान तिसपर भी भक्तिही से स्थित है तो सब ब्राह्मणो इससमयमें मेरे वचन सुनो २१ कि साक्षात्कार में भगवान्का हूं यह वाद होगा जिसप्रकार सब लोग हमारी और तुम्हारी भक्तिको जानें २२ गण बोले कि ऐसा कहकर राजा अपने घरको गया और मुद्गलको आचार्यकर वैष्णवयज्ञ का प्रारंभ किया २३ ऋषियों के समूहोंसे युक्त बहुत दक्षिणावाला यज्ञ जिसप्रकार

ब्रह्माजी ने पहले गयाक्षेत्रमें कियाथा वैसाहीहुआ २४ और विष्णुदास भी व्रत धारणकर वहीं देवस्थानमें स्थितहुए और सदैव भगवान् को प्रसन्न करनेवाले पांच नियमों को किया २५ माघ और कार्तिकका व्रत, तुलसीके वनकी रक्षा, एकादशी का व्रत और द्वादश अक्षर की विद्यासे जप २६ सोलहों उपचारों गीत नाच आदि मङ्गलों से नित्यही भगवान् की पूजा और इन व्रतोंको उन्हों ने किया और सबको बराबर देखनेवाला वह चलते भोजन करते और सोते हुए भी नित्यही भगवान्का स्मरण करताभया और सब प्राणियों में स्थित भगवान्ही को देखताभया २७। २८ माघ और कार्तिकके महीनोंमें भगवान् की प्रसन्नता के लिये विशेष नियम और उद्यापन की विधिको भी करताभया २९ इसप्रकार चोलेश्वर और विष्णुदासजी भगवान् को आराधन करते भये बहुत कालतक भगवान् के व्रतों में स्थितरहे और भगवान्ही में कर्मेन्द्रिय और कर्म्मों को निष्ठ करदिया ३० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेकलहोपाख्याने अष्टाधिकशततमोऽध्यायः १०८ ॥

एकसौनवका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्य में विष्णुदासजीका चरित्र वर्णन ॥

गण बोले कि कदाचित् विष्णुदास ब्राह्मण नित्यकी विधि कर जब रसोई बनाके तैयारकरें तो नहीं दिखाई देकर कोई चुरालेजावे १ तो ब्राह्मण रसोई को न देखकर सांझ में भगवान् के पूजन के व्रतके भङ्गहोने के डरसे फिर रसोई नहीं बनावें २ दूसरे दिनमेंभी रसोई बनाकर जबतक भगवान् के अर्पण करें तबतक कोई फिर चुरालेगया ३ इसप्रकार सातदिन उसकी पाकको कोई चुरालेगया तब तो ब्राह्मण विस्मयको प्राप्त होकर मनमें विचार करनेलगा ४ कि नित्यदिन कौन आकर मेरी रसोई को चुरा लेजाताहै मैंने क्षेत्र संन्यासियों के स्थानको सर्व्वथा नहीं त्याग कियाहै ५ फिर जो मैं रसोई बनाकर भोजन करूं तो सांझ का भगवान् का

होवे जिसको मैं किसीप्रकार छोड़ नहीं सक्ताहूं ६ कुछ भोजन बना कर हमको इससमयमें नहीं भोजन करना चाहिये क्योंकि वैष्णव सब विना भगवान् के अर्पण किये नहीं भोजन करते हैं ७ और विना कुछ भोजनकिये व्रतमें स्थित कैसेरहूं इससमयमें मैं अच्छी तरहसे रसोई की रक्षाकरूंगा ८ इसप्रकार कहकर वह रसोई बना कर वहीं पर छिपाहुआ स्थित रहा तबतक पाकके अन्न चुराने में चांडाल को देखा ६ कि भूंखसे दुर्बल, दीनमुख, हांड़ और चमड़ा जिसके बाक़ी रहगयाहै तिसको देखकर ब्राह्मणके मनमें बड़ी दया आई १० और अन्न चुरानेवालेसे कहा कि खड़ेहो खड़ेहो इसरूखे भोजनको कैसे भोजन करोगे इससे इस घीको भी लेलो ११ इस प्रकार कहते और आतेहुए ब्राह्मणको देखकर वह चाण्डाल डरके मारे वेग से दौड़ा और मूर्च्छित होकर गिरपड़ा १२ डरे हुए और मूर्च्छित चाण्डालको देखकर ब्राह्मण वेगसे आकर दया से अपने कपड़े से हवा करनेलगा १३ और तिसपीछे विष्णुदासजी ने उठे हुए उसको देखा कि साक्षात् नारायणदेव शंख चक्र गदा को धारणकिये १४ पीले कपड़े पहने चारभुजा धारण कियेहुए भृगुलता का चिह्न और मुकुटधारे अलसीके फूलके समान श्यामवर्ण कौस्तुभ मणि हृदयमें धारण कियेहुए ऐसे विभु भगवान्को देखकर सात्त्विक भावसे युक्त श्रेष्ठ ब्राह्मण स्तुति और नमस्कारभी करनेको न समर्थ हुआ १५।१६ तदनन्तर इन्द्रादिक देवता वहांपर प्राप्तहुए गन्धर्व और अप्सरा आनन्दसे गाने और नाचनेलगे १७ सैकड़ों विमानों में देवर्षिगण चढ़ेहुये गीत और बाजाका शब्द तिसस्थानमें करनेलगे १८ तब तो विष्णुजी सात्त्विक अपने भक्तको अपनीसायुज्य देकर वैकुण्ठ मन्दिर को प्राप्त करतेभये १६ दीक्षायुक्त चोलराजा श्रेष्ठविमानपर भगवान्के पास चढ़ेहुए विष्णुदासजीको देखताभया २० और वैकुंठ स्थानको भी जाते देखकर वेगसे अपनेगुरु मुद्गल जीको बुलाकर इसप्रकार बोला २१ कि जिसकी स्पर्धा से हमने यह यज्ञ और दानादिक कियाथा सोई ब्राह्मण विष्णुजी का रूप धारण कर वैकुंठमन्दिरको जाताहै २२ आपकरके अच्छी तरहसे इसयज्ञ

में दीक्षित मैंने अग्निमें हवनकिया और दानादिकों से ब्राह्मणों की मनसा पूरीकरदीं २३ परन्तु अबतक सो भगवान् निश्चय मेरेऊपर प्रसन्न नहीं हुए उस ब्राह्मणको भक्तिही से भगवान्ने साक्षात्कार दियाहै २४ तिससे दान और यज्ञोंसे भगवान् नहीं प्रसन्न होतेहैं उनके दर्शनमें आदिकारण श्रेष्ठ भक्तिही है २५ गण बोले कि ऐसा कहकर राज्य आसनमें अपने भानजेका अभिषेक करताभया क्योंकि बाल्यावस्था से यज्ञ करता था इससे पुत्रहीन था २६ तिससे अबतकभी तिस देश में उसके कियेहुए आचार में वर्तमान सदैव राज्यके अंशके भागी भानजेही होते हैं २७ फिर राजा यज्ञवाट में प्राप्तहोकर अग्निकुण्ड के आगे खड़ा होकर ऊंचे स्वरसे तीनबार शीघ्रही भगवान् को संबोधन करतेहुए यह बोला कि हे विष्णुजी मन, वाणी, देह और कर्मोंसे स्थिर भक्ति दीजिये ऐसा कहकर सब के देखतेही अग्निमें कूदपड़ा २८ और मुद्गलने तिससमयमें अपनी शिखा उखाड़डाली तिसीसे अबतक भी तिसके गोत्रमें मुद्गललोग शिखाहीन होते हैं २९। ३० तब तो कुंडकी अग्नि में भक्तवत्सल, अच्युत,विष्णुजी प्रकटहुए और राजाको आलिंगनकर श्रेष्ठ विमानपर चढ़ा लिया ३१ और अपना सारूप्य देकर देवताओं और राजासमेत वैकुण्ठ मन्दिर को प्राप्त होगये ३२ नारदजी बोले कि जो विष्णुदास था वह पुण्यशील और चोलराजा सुशील नामक हुए इन दोनोंको भगवान् ने बराबररूप देकर द्वारपाल बनाये ३३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेकलहोपाख्याननंनामनवाधिकशततमोऽध्यायः १०९॥

एकसौ दशका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्यमें गणों के पूर्वपुण्यका वर्णन॥

धर्म्मदत्त जी बोले कि जय और विजय को हमने भगवान् के द्वारपाल सुनेहैं सो उन्होंने पूर्वसमय में क्या कियाथा जिससे भगवान्के रूपको धारण कियाहै १ तब गण बोले कि हे ब्राह्मण तृणविन्दुकी कन्या देवहूती में कर्दमकी दृष्टिसे दो पुत्रहुए २ ज्येष्ठ जय

और छोटा विजय नामहुआ और स्त्रीमें पीछेसे योग और धर्मके जाननेवाले कपिलजी हुए ३ जय और विजय सदा भगवान् की भक्तिमें रतरहतेथे वे इन्द्रियसमूहों को अपने वशमेंकर धर्मशील होतेभये ४ नित्यही अष्टाक्षरी मन्त्रका जप और विष्णुजी का व्रत करतेभये तब तो विष्णुजी ने नित्यपूजनमें सदा साक्षात्कार दिया ५ कदाचित् उन दोनोंको मरुतने यज्ञकर्ममें बुलाया तो यज्ञमें निपुण वे दोनों देवर्षिगणोंसे सेवित जातेभये ६ तिनमें जय तो ब्रह्मा और विजय यज्ञ करानेवाला हुआ और दोनों मिलकर सम्पूर्ण यज्ञकी विधिको परिपूर्ण करतेभये ७ तब तो यज्ञके अन्तका स्नानकर राजा मरुतने उनको बहुत द्रव्य दिया उस द्रव्यको वे लेकर अपने स्थानको गये ८ और यज्ञ करनेकेलिये और विष्णुजीकी प्रसन्नता के लिये तिस धनके बांटनेमें परस्पर स्पर्द्धा करतेभये ९ जयबोला कि बराबर भागकीजिये विजय बोला कि जिसको जो राजासे मिला है वही उसका है १० तब तो क्षोभयुक्तमन होकर क्रोधसे जय विजयको शाप देताभया कि लेकर नहीं देताहै इससे ग्राह होजावे ११ तब विजय ने शाप सुनकर उसको भी शापदिया कि मदसे भ्रान्त होकर जिससे तूने शाप दियाहै इससे हाथी होजावे १२ इसप्रकार दोनोंने परस्पर शाप देकर नित्यपूजन में विभु विष्णुजी को देखकर शापकी निवृत्ति लक्ष्मीपतिजी से मांगी १३ कि हे देव हे कृपासिंधु जी हम दोनों आपके भक्तहैं इससे ग्राह और हाथीकी योनिमें कैसे प्राप्तहोंगे यह शाप निवृत्त कीजिये १४ तब श्रीभगवान् बोले कि हमारे भक्तों के वचन झूठ कभी न होंगे मैंभी झूठ करने को कभी नहीं समर्थहूं १५ प्रह्लादके वचनसे खम्भमें पूर्व्वसमयमें मैं प्रकट हुआ और तैसेही अम्बरीष के वचन से निश्चय राहही में उत्पन्न हुआ १६ तिससे परस्पर तुम्हीं दोनों के दियेहुए शाप हैं इन को निश्चय भोगकर नित्य हमारे पदको प्राप्तहोंगे इस प्रकार कहकर भगवान् अन्तर्द्धान होगये १७ गण बोले कि वे दोनों गण्डकी के किनारे ग्राह और हाथीहुए परन्तु निश्चय भगवान्के व्रतमें स्थित थे इससे तिस योनिमेंभी जातिका स्मरण उनको बनारहा १८ क

ाचित् वह हाथी कार्तिकमें स्नान करने के लिये गण्डकी नदी को ाया तो शापका कारण स्मरणकर ग्राहने उसको पकड़ लिया १९ ब तो हाथी ने तिससमय में भगवान् को स्मरण किया तो शङ्ख, क्र और गदाको धारणकर विष्णुजी प्रकट होगये २० और उन्हों े चक्रसे ग्राह और हाथी को उद्धारकर अपना सारूप्य देकर वैकुण्ठ को प्राप्त करदिया २१ तबसे लेकर वह स्थान हरिक्षेत्र नाम े सुना जाताहै चक्रके जिसमें संघर्षणसे पत्थरभी चिह्नयुक्त होता ै २२ और जिनको तुमने पूंछाहै वे संसारमें जय और विजय नामक भगवान्के द्वारपाल नित्यही उनको प्यारे हैं २३ इससे हे धर्म के जाननेवाले तुमभी नित्यही भगवान् के व्रतमें स्थितहो मात्सर्य और दम्भ को छोड़कर समदर्शनहो २४ तुला, मकर और मेषके सूर्य्यों में प्रातःकाल सदैव स्नानकरो एकादशी के व्रतमें स्थितहो तुलसी के वनकी पालना करो २५ ब्राह्मण, गऊ और वैष्णवों को सदासेवो मसूर, आरनाल और बैंगनको न खावो २६ इसीप्रकार हे धर्म्मदत्त तुमभी भगवान् की भक्तिसे हम लोगोंकी तरह देह के अन्तमें भगवान्के श्रेष्ठ पदको प्राप्तहोगे २७ तुम्हारे भगवान् के प्रसन्न करनेवाले जन्मपर्य्यन्त व्रतोंसे अधिक यज्ञ, दान और तीर्थ नहीं हैं २८ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तुम धन्यहो जिससे कि तुमने भगवान् को प्रसन्न करनेवाले व्रतकिये हैं जिसके पुण्यसे भगवान् की सलोकताको हमलोगों करके प्राप्तहोगे २९ नारदजी बोले कि इस प्रकार वे दोनों गण धर्मदत्त को उपदेशकर कलहासमेत विमानपर चढ़कर वैकुण्ठ स्थानको प्राप्त होगये ३० धर्म्मदत्तभी उत्पन्नबोध होकर उसीव्रतमें स्थितरहा और देहके अन्तमें स्त्रीसमेत भगवान् के स्थानको प्राप्तहुआ ३१ जो पुरुष इस पूर्वसमयके इतिहास को विधिपूर्वक सुनताहै वह भगवान्की कृपासे उनके समीप करनेवाली बुद्धिको प्राप्त होताहै ३२ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेकलहोपाख्यानेगणपूर्वपुण्यवर्णनोनामदशाधिकशततमोऽध्यायः ११० ॥

एकसौ ग्यारहका अध्याय ॥

कार्त्तिकमाहात्म्य में कृष्णावेण्या का माहात्म्य वर्णन ॥

राजापृथु बोले कि हे नारदमुनि आपने पहले यह कहा है कि महादेव और भगवान्के गणों ने कृष्णावेण्याके किनारेसे बनियेंके शरीरसे कलहाको निकालाहै १ इससे उन दोनों नदियोंका वा उस क्षेत्रका प्रभाव हमसे कहिये हे धर्मज्ञ इसमें हमको बड़ी विस्मयहै २ तब नारदजी बोले कि कृष्णा साक्षात् भगवान्की देह है और वेण्या महादेवजी की देहहै उसके संगमके प्रभावको ब्रह्मा भी कहने को नहीं समर्थहैं ३ तिसपर भी तिनकी उत्पत्तिको कहताहूं सुनिये पहले चाक्षुषमनु के अन्तर में देव ब्रह्माजी ४ सब देवसमूहों और हरि और महादेवजी से युक्तहोकर यज्ञकी सामग्रियों को कर सह्य पर्वत के सुन्दर कँगूड़े में यज्ञ करने के लिये उद्यत होकर प्राप्तहुए और भृगुआदिक मुनिसमूह ब्रह्मदैवत मुहूर्त में ब्रह्माजी की दीक्षा विधानके लिये समाज करते भये तदनंतर विष्णुजी ज्येष्ठस्वरा स्त्री को ब्राह्मणों से बुलाते भये ५।६।७ तो वह धीरे धीरे से प्राप्तहो गई तब भृगुजी विष्णुजी से बोले कि हे विष्णुजी आपकी बुलाई हुई स्वरा शीघ्र नहीं प्राप्तहुई ८ यह मुहूर्तका अतिक्रमहुआ इसमें दीक्षाकी विधि कैसे करनी चाहिये तब विष्णुजी बोले कि जो स्वरा शीघ्र नहीं आवे तो गायत्री से काम लियाजावे ९ यह क्या पुण्य कर्ममें ब्रह्माजी की स्त्री न होगी तब नारदजी बोले कि भगवान् के वचनको महादेवजी ने भी पसन्द किया १० यह सुनकर भृगुजी ने ब्रह्माजी के दक्षिणभाग में गायत्रीको बिठाकर दीक्षाविधि करने का प्रारम्भ किया ११ जबतक ब्रह्माजी की दीक्षाविधि किया तभीतक यज्ञस्थलमें स्वरा भी प्राप्त होगई १२ और ब्रह्माजी के साथ दीक्षित गायत्री को देखकर सौतिकी ईर्षासे युक्तहोकर स्वरा बोली १३ कि जहांपर पूजनेके नहीं योग्योंकी पूजा होती है और पूजनके योग्यों की नहीं पूजा होती है वहांपर दुर्भिक्ष,मरण और भय ये तीनोंहोते हैं १४ हमारे आसनमें इस छोटीको आप लोगोंने बैठालाहै इसमें

सब जड़ और नानाप्रकार के रूपवाले होवो १५ और यह दहिनी ओर हमारे आसनमें बैठी है इससे मनुष्यों करके सदैव इसकी देह दिखलाई न दे यह नदी होकर बहे १६ नारदजी बोले कि तदनन्तर स्वरा के शापको सुनकर गायत्री जी उठीं और देवताओं ने रोंका तिसपर भी स्वराको शाप दिया १७ कि तुम्हारे स्वामी और हमारे भी निश्चय ब्रह्माजीही स्वामी हैं जिस से कि तुमने हम को वृथाही शापदियाहै इससे तुम भी नदी हो १८ नारदजी बोले कि शिव और विष्णु इत्यादिक सब देवता हाहाकार करते भये और भूमिमें गिरकर दंडवत् प्रणामकर स्वरासे कहतेभये १९ कि हे देवि इससमय में तुमने सब ब्रह्मादिक देवताओं को शापदियाहै जो वे सब जड़ होकर नदी होजावेंगे २० तो तीनोंलोक निश्चय नाशको प्राप्त होंगे तुमने अज्ञान से यह कियाहै तिससे इस शापको निवृत्त करो २१ तब स्वराबोलीं कि हे उत्तम देवताओ यज्ञकी आदिमें तुम ने गणेशजी को जो नहीं पूजा तिससे निश्चय यह हमारे क्रोध से उत्पन्न विघ्नहुआहै २२ ये हमारे वचन निश्चय झूठनहीं होंगे तिस से अपने अंशों से जड़ होकर तुम सब नदीहोवो २३ और हमदोनों सौतें भी अपने अंशोंसे हे देवो नदी होकर पश्चिममुख बहेंगी २४ नारदजी बोले कि इसप्रकार स्वराके वचन सुन ब्रह्मा विष्णु और महादेवजी तिसीसमयमें अपने अंशों से जड़ होकर नदी होतेभये २५ विष्णुजी कृष्णा महादेवजी वेणया और ब्रह्माजी ककुद्मिनीगंगा ये अलग अलग तिसी समयमें होगये २६ और चतुर देवता भी सह्य पर्वतके कंगूड़ेमें अपने अपने अंशोंको जड़कर अलग अलग नदियांहुए २७ देवताओंके अंशोंसे पूर्व बहनेवाली श्रेष्ठनदियां हुईं गायत्री और स्वराभी तिसी समयमें पश्चिम बहनेवाली नदियां हुईं २८ ये योगसे नदियां हुईहैं और सावित्री ऐसा भी नाम स्वरा का प्रसिद्धहुआहै उसयज्ञमें ब्रह्माजी ने हरि और हरजीको भी स्थापित कियाथा २९ वे महाबल और अतिबलीनाम से देवहुएहैं तिन नदियोंके माहात्म्यको हे राजन् मैं कहनेको नहीं समर्थहूं जहांपर ब्रह्मादिक देवता अपने अंशोंसे नदियां होकर स्थितहैं ३० कृष्णाके पाप

नाशनेवाले माहात्म्यको जो सुनता वा भक्तिसे सुनाताहै तो उसकी पुण्यसे सब क्रिया होती हैं और तिसके दर्शन और स्नानसे उत्पन्न फल भी होताहै ३१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेकृष्णावेण्यामाहात्म्यवर्णनोनामैकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११॥

एकसौबारहका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्यमें पुण्य और पापके अंशका कथन वर्णन॥

श्रीकृष्णजी बोले कि हे प्रिये ये नारदजी के वचन सुन पृथुजी विस्मितमन होगये और भक्तिसे नारदजीको पूजनकर बिदाकिया १ तिससे ये तीनों व्रत अर्थात् माघ, कार्तिक और एकादशीका ये हम को अत्यन्त प्यारेहैं २ वनस्पतियों में तुलसीजी महीनोंमें कार्तिक तिथियों में एकादशी और क्षेत्रोंमें द्वारका हमको प्रियहै ३ जो जितेन्द्रिय इनका सेवन करताहै वह हमारा प्रिय होताहै यज्ञ आदिकों से भी वैसा हम नहीं प्रसन्न होते हैं ४ इन व्रतों के सेवन करतेहुए को नियमों से पापोंसे डर न करना चाहिये ५ सत्यभामाजी बोलीं कि हे नाथ जो आपने हमसे कहा कि पराई दीहुई पुण्यसे कलहा मुक्ति को प्राप्तहुई ६ इसप्रकार के प्रभाव का यह कार्तिक महीना आपका प्रिय करनेवाला है इसमें स्नान और दानों से स्वामिद्रोह आदिक पाप चलेजाते हैं ७ हे विभुजी दीहुई पुण्य तो मिलती है और दूसरेकी कीहुई नहीं दी किसराहसे मनुष्यको मिलती है ८ तब श्रीकृष्णजी बोले कि नहीं दियेहुए पुण्य और पाप जिसप्रकार जिन कर्म्मसे मनुष्योंको प्राप्त होते हैं वह यथावत् सुनिये ९ सतयुग आदिक तीन युगों में देश, गांव, और कुल क्रमसे पाप और पुण्य फलके भागी होते थे और कलियुग में केवल करनेवालाही भागी होताहै १० विना कियेहुए संसर्ग के यह व्यवस्था कहीहै संसर्ग से पुण्य और पाप जैसे प्राप्त होते हैं वह सुनो ११ एकत्र मैथुन और सवारी से एकपात्रमें भोजनसे मनुष्य यथावत् पुण्य और पापों

आधे फलको प्राप्त होता है १२ पढ़ाने, यज्ञ कराने और एकपांति में भोजन करने से चौथाई भाग पुण्य और पापका मनुष्य को नित्यही प्राप्त होताहै १३ एक आसन और एक सवारी से अंगों के संगकी श्वाससे छठवें भाग पुण्य और पापके फलका भागी मनुष्य होताहै १४ छूने बोलने और पराई स्तुतिसे मनुष्य पुण्य और पापों के दशवें भागको नित्यही प्राप्त होताहै १५ देखने सुनने और मनके ध्यानसे पराये पुण्य और पापों के सौवें भागको मनुष्य प्राप्त होताहै १६ पराई निन्दा, चुगली और धिक्कारको जो करताहै वह उसके कियेहुए पाप को प्राप्त होकर अपनी पुण्यको दे देता है १७ पुण्यकर्म्म करनेवाले मनुष्यकी जो मनुष्य सेवा करताहै उनमें स्त्री, नौकर और शिष्यको छोड़कर जो कोई दूसराही सेवा करनेवाला होताहै १८ और तिसको सेवाके अनुरूप द्रव्य नहीं दीजाती तो वह सेवाही के अनुरूप उसके पुण्य के फलका भागी होताहै एक पंक्तिमें भोजन करनेवालों के परिवेषणको जो लांघ जाताहै १९ तो तिसके पाप के छठवें अंश को परिवेषक प्राप्त होताहै और स्नान सन्ध्या आदिक करतेहुए जो छू लेता वा बोलताहै २० वह निश्चय अपने पुण्यकर्म्म के छठवें हिस्से को देताहै धर्म के उद्देशसे जो मनुष्य और द्रव्य को मांगता है २१ तो धन देनेवाला उसके पुण्य कर्मसे उत्पन्न फलको प्राप्त होताहै जो पराई द्रव्यको हरकर पुण्य कर्म करताहै २२ तो कर्म्म करनेवाला पापका भागी होताहै और धनी को वह फल मिलताहै और जो मनुष्य पराये ऋणको न देकर मरजाताहै २३ तो धनी अपने धनके अनुरूप उसके पुण्यको प्राप्त होताहै बुद्धि देनेवाला अनुमंता उपकरण देनेवाला २४ और बल करनेवाला ये पुण्य और पापके छठवें भागको प्राप्त होते हैं प्रजाओं के पुण्य पापोंके छठवें भागको राजा प्राप्त होताहै २५ शिष्य से गुरु, स्त्री से पति, पुत्रसे पिता और अपने पतिकी पुण्यका आधा स्त्रीको प्राप्त होताहै २६ क्योंकि स्त्री सदैव चित्तके पीछे चलती और प्रसन्न करनेवाली होती है पराये हाथसे पुण्यकर्म्म में दानआदिक करनेवाले को २७ नौकर और पुत्रोंको छोड़कर करनेवाले को छ-

ठवां भाग फल मिलता है और जीविका देनेवाला जीविका भोग करनेवाले की पुण्य के आठवें भागको प्राप्त होताहै २८ और अपनी वा पराई सेवाको जो नहीं कराताहै वहभी आठवें भागको प्राप्त होताहै २९ श्रीकृष्णजी बोले कि इसप्रकार नहीं दियेहुए पराये इकट्ठे कियेहुए पुण्य और पाप प्राप्त होते हैं अब पहलेके हुए अत्यन्त पुण्य देनेवाले श्रेष्ठ इतिहास को सुनो ३० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणे पंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेपुण्यपापांशकथनंनाम द्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ११२ ॥

एकसौ तेरहका अध्याय ॥

धनेश्वर ब्राह्मणका चरित्र वर्णन ॥

श्रीकृष्णजी बोले कि पूर्वसमयमें अवन्तीपुरमें बसनेवाला धनेश्वर ब्राह्मणथा वह ब्राह्मणोंके कर्म्मसे परिभ्रष्ट, पापमें निष्ठा करनेवाला अत्यन्तदुर्बुद्धि १ रस, कम्बल और चमड़ा आदिके बेंचने में झूंठ बोलनेवाला, चोरी, वेश्या, मदिराका पीना और जुयें में लगाहुआ मन रहताथा २ और अपने देशसे और देशोंमें खरीदने और बेंचने के कारणसे जायाकरताथा कदाचित् वह माहिष्मतीपुरीमें प्राप्तहुआ ३ जिसको पहले महिषजी ने बसायाथा तिसी से माहिष्मती नाम हुआ जिसमें रक्षवेके किनारे पाप नाशनेवाली नर्म्मदाजी शोभित थीं ४ वहांपर कार्तिक के व्रत करनेवाले अनेकों गांवों से आते और वे एकमहीने पर्यन्त रहतेथे उनको देखकर धनेश्वर भी बेंचताहुआ एकमहीने वसताथा ५ और नित्यही नर्मदा के किनारे बेंचने के कारणसे घूमताहुआ स्नान कियेहुए, जप, देवताओंके पूजा में रत ब्राह्मणोंको देखताथा ६ और कोइ कोईको पुराण पढ़ते और उनके सुनने में लगेहुए, नाचते, गाते, बाजाबजाते और विष्णुजी के स्तोत्र पाठकरनेमें तत्पर, ७ विष्णुमुद्राओं से चिह्नित और कमल की माला और तुलसी धारण करतेहुए देखताथा और कौतुकयुक्त तहां तहां ८ नित्यही घूमकर वैष्णवों के दर्शन, स्पर्श और

बोलने से नाम सुनने आदिककोभी प्राप्त होजाताथा ९ इसप्रकार महीनाभर स्थित होकर वह कार्तिकके उद्यापनकी विधि में भक्तोंके कियेहुए भगवान् के जागरण को भी देखताथा १० तदनन्तर पौर्णमासी में अनेकप्रकारके पूजन आदिक और व्रतमें स्थितों करके दक्षिणा भोजनादिक और दीपदान भी देखताथा ११ फिर सूर्य्यनारायणके अस्तहुए महादेवजीकी प्रसन्नताके लिये व्रत करनेवाले दीपोत्सवकी विधिको करतेथे उसको भी देखताथा १२ शिवजी ने इस तिथिमें त्रिपुरोंको जलायाहै इससे इसमें भक्तलोग बड़ा उत्सव करते हैं इसमें और महादेवजी में जो कोई बीचकल्पना करताहै १३ उसकी पुण्यकी क्रिया सब निस्संदेह निष्फल होती हैं वहांपर नाच आदिक देखताहुआ धनेश्वर घूमता था कि तबतक काले सांपने काटखाया तो विकलहोकर गिरपड़ा कृपायुक्त मनुष्य भी उसको गिरे हुए देखकर प्राप्त होगये १४ और तुलसी मिलेहुए जलसे तिसके मुखको सींचनेलगे देह छूटनेके पीछे यमराजके दूत उसको बांधकर १५ क्रोधसे कोड़ों को मारते हुए यमपुरी में लेगये चित्रगुप्तजी ने उसको देख कर निर्भर्त्सन कर यमराज से उसके बाल्यावस्था से सब बुरेकर्म्मों को कहा कि बाल्यावस्थासे मरणपर्यन्त इसका कुछ सुकृत नहीं दिखाई पड़ता १६। १७ और हे यमराजजी बुरे कर्म कहनेको तो सौ वर्षोंमेंभी नहीं कहसक्ताहूं हे विभुजी यह केवल पापमूर्ति दिखाई देताहै १८ तिससे कल्पपर्य्यन्त नरकमें पचायाजावे श्रीकृष्णजी बोले कि इसप्रकार के वचन सुन यमराज क्रोधसे अपने दूतों से बोले १९ और कालकी अग्नि के समान अपना रूप भी दिखाया कि भो प्रेतोंके पति अपने मुद्गरों से इसको मारतेहुए लेजाओ २० और तेल खौलनेके शब्दयुक्त कुंभीपाक नरकमें शीघ्रछोड़ो यमराजके वचन सुन दूतने जाकर छोड़ा तो कुम्भीपाक इसप्रकार ठण्ढा होगया कि जैसे प्रह्लादके आगपर छोड़नेसे पहले समय में आग ठण्ढी होगईथी यह भारी आश्चर्य देखकर विस्मययुक्त प्रेतों का पति २१। २२ शीघ्रतासे आकर सब हाल यमराजजी से कहने लगा प्रेतपतिसे कहेहुए कौतुकको सुनकर यमराज २३ यह क्याहै

यह कहकर अच्छीतरह से विचारनेलगे कि तबतक शीघ्रतासे हँसतेहुए नारदजी प्राप्त होगये २४ तब तो यमराजने उनकी अच्छी तरहसे पूजाकी फिर तिसको देखकर नारदजीबोले कि हे सूर्यपुत्र यह नरकोंके भोग करनेके योग्य नहींहै २५ क्योंकि इसने नरकोंके नाश करनेवाले कर्म्म कियेहैं जो मनुष्य पुण्यकर्म्मवालों के दर्शन स्पर्श और भाषण करता है २६ वह पुरुष उनके पुण्यके छठवें भागको प्राप्त होताहै इसने अगणित हरिके कार्तिकके व्रत करनेवालोंसे महीनाभर संसर्ग कियाहै तिससे यह पुण्य के अंशका भागी है उनकी सेवा करनेवाला सम्पूर्ण व्रतके पुण्यका भागी होताहै २७।२८ इससे इसकी कार्तिक के व्रतसे उत्पन्न पुण्य की गिनतीही नहीं है कार्तिक के व्रत करनेवालों के भारी पाप भी २९ सब अच्छे भक्तों के ऊपर कृपा करनेवाले विष्णुजी नाश करदेते हैं और अन्तसमय में भगवान्‌के नामों से तुलसी मिलाहुआ जल भी इसको मिलाहै ३० वैष्णवों की इसपर बड़ी कृपाथी तिससे नरक में नहीं पचाया जावे इसके सब पाप नाश होगये हैं यह अच्छीगति प्राप्त होने के योग्यहै ३१ जैसे गीले सूखे पापों से नरक भोग मिलता है तैसेही अच्छे कर्मों से स्वर्ग भोग भी मिलताहै ३२ तिससे अकामपुण्य यह यक्षकी योनिमें स्थित सब नरकोंको देखहीकर पापके भोगको प्राप्त होगया ३३ श्रीकृष्णजी बोले कि ऐसा कहकर नारदजी तो चलेगये तब तो यमराज ने उनके वचनों से उसको अच्छे कर्म करनेवाला समझा और उस ब्राह्मण को नौकरों से सब नरकसमूह दिखलानेको कहा कि इसको सब दिखलाके हमारे पास लाओ ३४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणे पञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डे कार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेधनेश्वरोपाख्यानेत्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः ११३॥

एकसौ चौदहका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्य में यमराजके दूतका धनेश्वरको सब नरक दिखलाना वर्णन॥

श्रीकृष्णजी बोले कि यमराजजी का दूत प्रेतों का स्वामी धनेश्वरजी को लेकर सब नरकों को दिखलाने का प्रारम्भ कर उनसे

ला १ कि हे धनेश्वर इन घोर नरकोंको देखो जोकि बड़े भयको
ते हैं जिनमें यमराज के दूतोंकरके पाप करनेवाले नित्यही पचाये
ाते हैं २ यह भयानक दर्शनवाला तप्तवालुक नाम नरकहै जिसमें
ापियोंकी देह जलजाती है तब वे रोते हैं ३ जे मनुष्य वैश्वदेव के
न्तमें भूखसे पीड़ित, घरमें आयेहुए अतिथियोंको नहीं पूजते हैं वे
प्रपने कर्म्म से पचते हैं ४ गुरु, अग्नि, ब्राह्मण, देवता तथा माथे
ं अभिषेकवालों को जे पांवोंसे मारते हैं उनके पांव जलादियेजाते
ैं वेही ये लोगहैं ५ यह नरक छः प्रकारका है जोकि अनेकप्रकार
ो पापोंसे मिलताहै और दूसराभारी अन्धतामिस्र नरकहै ६ देखो
ापकर्म्मसे सुईके मुखोंकरके देहविदारण कीगई है और हे ब्राह्मण
यानक मुखवाले कीड़े तिसी संपर्कसे प्राप्तहोकर काटते हैं ७ यह
रकभी कुत्ता, कौआ और हरिणपक्षियों से युक्त छःप्रकारकाहै इन
ं पराये मर्मके विदारण करनेवाले पापी मनुष्य पचायेजाते हैं ८
यानक दर्शनवाला तीसरा क्रकच नाम यह नरकहै जिसमें ये पाप
करनेवाले मनुष्य क्रकचोंसे विदारण कियेहुए हैं ९ तलवारकेसे प-
त्तोंसेयुक्त वनादिकों से यहभी छःप्रकारका स्थितहै जे स्त्री और पुत्र
आदिकोंसे वियोग करादेते हैं १० औरभी इष्टोंसे वियोग करादेते हैं
वेही ये मनुष्य पचरहे हैं तलवार केसे पत्तोंसे कटेहुए हैं और कटने
के डरसे भगेहुए हैं ११ पचतेहुए पापियों को देखो जोकि इधर उ-
धर रोरहे हैं और यह महाभयानक अर्गलनाम चौथा नरकहै १२
देखो यमराज के दूत अनेक प्रकार की फँसरियों से बांधकर मुद्गर
आदिकों से माररहे हैं वेही ये पापी रोरहे हैं १३ जे मनुष्य सज्जन
ब्राह्मण आदिकों से विरोध करते हैं उन पापियों के यमराजके दूत
गलेमें फँसरी आदिक डालकर पीड़ा देते हैं वेही पापी ये पचरहे हैं
१४ यहभी वध और भेदआदिकों से छः प्रकारका है और कूटशा-
ल्मलिनाम पांचवें नरकको देखो १५ जिसमें अङ्गारके सदृश शा-
ल्मली आदिक स्थितहैं जिसमें छःप्रकारकी यातनाओंसे ये मनुष्य
पचरहे हैं १६ जोकि पराई स्त्री पराया द्रव्य और सदैव पराये द्रोह
में रत रहतेहैं और इसअद्भुत रक्तपूयनाम छठवें नरकको दे-

जिसमें पाप करनेवाले मनुष्य नीचेको मुख कियेहुए पचरहे हैं जो कि नहीं खानेवाली वस्तुओंको खाते, निन्दा और चुगुली आदिमें रत रहते १८ वेही मारे और बांधेहुए भयानक शब्दोंसे शेरहे हैं अ प्रकारकी दुर्गन्ध आदिकों से यहभी स्थित है १९ और यह भयानक दर्शनवाला सातवां कुम्भीपाक नाम नरक है हे धनेश्वर देखो इसमें छःप्रकार की तेल आदिक वस्तु भरीहुई हैं २० जिसमें महापापी यमराजके दूतों से बहुत हज़ारवर्ष खौलतेहुए में डुबाये और उछालेजाते हैं २१ और छियालीस इन रौरव नरकों को देखो विना कामके सूखापाप और कामसे गीलापाप कहाताहै २२ गीले और सूखे आदिक पापोंसे दोप्रकार स्थित और अलग अलग भेदों से चौरासी प्रकारके नरकहैं २३ प्रकीर्ण, अपांक्तेय, मलिनीकरण, ज्ञातिभ्रंशकर, उपपातकसंज्ञक, २४ अतिपाप, महापाप ये सातप्रकार के पापहैं इनसे सात नरकों में क्रमसे पचते हैं २५ जिससे कि कार्त्तिकके व्रत करनेवालों का आपका संसर्ग हुआहै उसीके पुण्यकी वृद्धिसे निश्चय नरक आपको भोगना नहीं हुआ २६ श्रीकृष्णजी बोले कि प्रेतोंका पति धनेश्वरजी को नरक दिखलाकर यक्षलोकमें प्राप्त करता भया वहांपर २७ कुबेरजी के अनुगहुए हैं इससे धन यक्ष कहलाये हैं जिसके नाम से गाधिपुत्र ने अयोध्याजी में तीर्थ बनाया है २८ इसप्रकारके प्रभाववाला निश्चय कार्त्तिक है जोकि मुक्ति का देने और करनेवाला है अनेकों प्रकार के इकट्ठा कियेहुए पापोंवाला भी मनुष्य व्रतमें स्थितवाले के दर्शन करने से मुक्तिको प्राप्त होताहै २९॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्त्तिकमाहात्म्येधनेश्वरोपाख्यानेचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४॥

एकसौ पन्द्रहका अध्याय॥

कार्त्तिकमाहात्म्य में पीपल और बरगदके वृक्षकी प्रशंसा वर्णन॥

सूतजी बोले कि भगवान् अत्यन्तप्यारी सत्यभामासे यहचरित्र कहकर सायङ्कालकी संध्याआदिक करनेको माताकेघरमें जातेभये १

सप्रकारके प्रभाववाला, पाप नाशनेहारा, भगवान्‌को नित्यही प्रिय करनेवाला और सदैव भुक्ति और मुक्तिका देनेहारा कार्तिक महीना कहाहै २ भगवान् का जागरण, सवेरे स्नान, तुलसी का सेवन, उद्यापन और दीपदान ये व्रत कार्तिक में होने चाहिये ३ इन पांच व्रतों से सम्पूर्ण कार्तिकके व्रतके फलको प्राप्त होताहै यह व्रत भुक्ति और मुक्तिके फलका देनेवाला कहाहै ४ ऋषिलोग बोले कि हे सूत जी भगवान्‌को प्यारी, अत्यन्त फल देनेवाली, अत्यन्तपवित्र और पाप नाशनेहारी कार्तिककी विधि आपने कही ५ यह दुःख नाशनेवाला व्रत मोक्ष वा भोगकी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको अवश्यही करना चाहिये ६ और जो कोई व्रतमें स्थित मनुष्य संकटमें स्थित, क़िला वा वनमें स्थितहो और व्याधियों से पीड़ितहो तो वह शुभ कार्तिक के व्रतको कैसे करे ७ तब सूतजी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठो जिससे अत्यन्त फल देनेवाला यह व्रत जिसप्रकार मनुष्यों को करना चाहिये वह सब कहताहूं सुनिये ८ विष्णु वा शिवजी के स्थान में भगवान्‌का जागरण करे इन दोनों देवों के स्थान के न होने में सब देवों के स्थानों में करसक्ता है ९ जो मनुष्य क़िला वा वन में स्थितहो और कार्तिक का व्रत आनपड़े तो पीपरकी जड़ और तुलसी के वनमें करे १० भगवान् के समीप भगवान्‌ही के नाम के प्रबन्धोंके गानेसे मनुष्य हज़ार गोदानके फलको प्राप्त होताहै ११ बाजा बजानेवाला पुरुष वाजपेय के फल को प्राप्त होताहै नाचनेवाला सब तीर्थों के स्नानके फलको पाताहै १२ और तिनको द्रव्य देनेवाला पुरुष सब पुण्यको प्राप्त होताहै प्रशंसा और दर्शनसे तिसके छठवें अंशको प्राप्त होताहै १३ जो आपत्तिमें प्राप्त हो वा रोगयुक्तहो और स्नानके लिये जल न मिलसके तो भगवान्‌के नामसे अपमार्जन करै १४ और जो व्रतमें स्थित मनुष्य उद्यापनकी विधि करनेमें असमर्थ हो तो शक्तिके अनुसार व्रतके पूर्ण होने के लिये ब्राह्मणों को भोजन करावे १५ यह अत्यन्त फल देनेवाला व्रत सदैव मनुष्योंको नहीं छोड़ना चाहिये और पृथ्वीमें ब्राह्मण अव्यक्त रूपवाले भगवान्‌के स्वरूपहैं १६ ब्राह्मणोंकी प्रसन्नतासे भगवान्

निस्सन्देह प्रसन्न होतेहैं और जो दीपदानमें असमर्थ हो तो दूसरे से दीप जलवा देवे १७ और हवा आदिकों से यत्नपूर्वक दीपों की रक्षाकरै तुलसीके न होनेमें वैष्णव ब्राह्मणको पूजनकरै १८ जिस से विष्णुजी सदैव अपने भक्तोंमें संनिहितहैं इससे व्रत करनेवाला सबके अभावमें ब्राह्मणों गौवों १९ वा पीपल और बरगदकी सेवा व्रतके सम्पूर्ण होने के लिये करै २० ऋषि बोले कि हे सूतजी आपने पीपल और बरगदको कैसे ब्राह्मण के समान किया और सब वृक्षों से कैसे अत्यन्त पूज्य किया २१ तब सूतजी बोले कि पीपल निस्सन्देह भगवान् विष्णुजी का रूपहै बरगद महादेवजी का रूप है और ढाक ब्रह्माजी का रूप धारेहुए है २२ तिन सबका दर्शन, पूजन और सेवा पाप नाशनेवाली है और दुःख, आपदा, व्याधि दुष्टोंकी निश्चय नाशनेहारी है २३ तब ऋषि बोले कि ब्रह्मा विष्णु और महादेवजी कैसे वृक्षके भावको प्राप्तहुए हे सर्वज्ञ सूतजी यह कहिये इसमें हमको बड़ा सन्देह है २४ तब सूतजी बोले कि पार्वती और महादेवजी के भोग करतेहुए में देवताओं ने विघ्न करने वाले अग्निको पहले भेजाथा २५ तब तो पार्वतीजी रतिके उत्सव के सुखके भ्रंश होनेसे क्रोधसे कँपकर देवताओंको शाप देतीहुई २६ बोलीं कि कृमि और कीट आदिक भी रतिके सुखको जानते हैं तिसके विघ्नकरनेसे देवता वृक्ष होजावें २७ सूतजी बोले कि इसप्रकार क्रोधयुक्त पार्व्वतीजीने देवताओंको शापदिया तो सब देवसमूह निश्चय वृक्ष होगये २८ और तिसी शापसे विष्णुजी पीपल और महादेवजी वरगदहुए पीपल तो शनैश्चर के दिन छूनेके योग्य होताहै परन्तु शनैश्चर और विष्टिकेयोग होनेसे नहीं छूने योग्य होताहै २९॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये अश्वत्थवटप्रशंसनंनामपंचदशाधिकशततमोऽध्यायः ११५॥

एकसौ सोलहका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्य में अलक्ष्मीजीका उपाख्यान वर्णन॥

ऋषि बोले कि हे सूतजी पीपलका वृक्ष शनैश्चरके दिन छूने

छूनेयोग्य हुआ और नहीं छूने के योग्य भी कैसेहुआ यह सब विस्तारसे आप हम लोगोंसे कहनेके योग्यहैं १ तब सूतजी बोले कि समुद्र मथने से जिन रत्नोंको देवों के स्वामियों ने पायाथा उनमें से उन्होंने लक्ष्मी और कौस्तुभमणिको विष्णुजीको दिया २ जबतक विष्णुजी ने अपनी स्त्री बनानेके लिये लक्ष्मीजीको अंगीकारकिया तबतक लक्ष्मीजी चक्रधारी भगवान्से बोलीं ३ कि हे मधुसूदनजी हमारी ज्येठी बहिन अलक्ष्मी का अभी विवाह नहीं हुआहै छोटी बहन मुझे कैसे प्राप्त होतेहो ४ अलक्ष्मीको पहले विवाहकर पीछे से मुझको ले चलिये यही सनातन धर्म भी है ५ सूतजी बोले कि लक्ष्मीजी के ये वचन सुन संसारके रक्षा करनेवाले भगवान् बड़ी तपस्यावाले उद्दालक मुनिको ६ अपने वचन के अनुरोध से तिस अलक्ष्मी को देतेभये कि जिसका मोटा मुख,सुन्दर दांत,प्रकाशित देहको धारण किये ७ बड़े और लाल नयन, रूखे और पीले बाल मुनिजीने भगवान्के वचनसे तिसको अंगीकार किया और धर्म के जाननेवाले उन्हों ने वेदके शब्दोंसे युक्त, होमके धुयेंकी सुगन्धसमेत, विद्याके शब्दोंसे शब्दयुक्त अपने स्थानको प्राप्तकिया ८।९ तब तिस स्थानको देखकर पीड़ायुक्त अलक्ष्मी मुनिजीसे यह बोलीं कि भो ब्रह्मन् वेदके शब्दों से युक्त यह स्थान हमारे योग्य नहीं है इसमें मैं नहीं रहसक्ती शीघ्र और जगह ले चलो १० तब उद्दालकजी बोले कि कैसे नहीं रहसक्ती हो क्या तुम्हारी संमतमें वर्तता है तुम्हारे योग्य कौन स्थान होगा तिसको कहिये ११ तब ज्येष्ठा अलक्ष्मी बोली कि वेदका शब्द, अतिथियोंका पूजन और यज्ञ दान आदिक जहांहोंगे वहां मैं नहीं बसूंगी १२ परस्पर प्रेमसे स्त्री पुरुष जहां वर्तमान होंगे और पितर और देवताओंका पूजन जहां नहीं होगा वहां मैं रहूंगी १३ दुरोदर में रत, पराई द्रव्य के चुरानेवाले और पराई स्त्री में रत मनुष्य जहां होंगे उस स्थानमें हमारी प्रीति होगी १४ गऊका मारना, मदिरा का पान और ब्रह्महत्यादिक पाप जिस स्थानमें होंगे तिस स्थानमें हमारी प्रीति होगी १५ बूढ़ सज्जन ब्राह्मणों का अपमान और निठुर बोलना जहांपर होगा

पर मैं नित्य बसूंगी १६ सूतजी बोले कि इसप्रकारके अलक्ष्मीके वचन सुन उद्दालकमुनि खेदयुक्त मुखवाले होगये और विष्णुजीके वचन को स्मरणकर कुछ न बोले १७ फिर मुनि पूजाको प्राप्तहुये तो अलक्ष्मी इनकी जहां तहां पूजा देखकर इनसे बोली कि मैं नहीं यहां आऊंगी तब तो उद्दालकमुनि बहुत व्याकुल हुए और फिर तिस अलक्ष्मीसे बोले १८ कि हे अलक्ष्मि पीपलके पेड़की जड़में क्षणमात्र स्थितहो जबतक मैं रहनेके स्थानको देखकर आऊं १९ सूतजी बोले कि इसप्रकार तिसको स्थापितकर उद्दालकमुनि तिस समयमें चलेगये और अलक्ष्मी बहुत समयतक परखती भई जब तिनको न देखा २० तो पतिके त्यागसे दुःखित होकर करुणा कर रोनेलगी वहां उसके रोने को वैकुण्ठस्थानमें लक्ष्मीजी सुनकर उद्विग्नमन होकर विष्णुजी से बोलीं २१ कि हे स्वामिन् हे कृपालो हमारी बड़ी बहन पतिके त्यागनेसे दुःखितहै जो मैं आपकी प्यारी हूं तो तिसके समझाने के लिये जाइये २२ सूतजी बोले कि दयायुक्त भगवान् लक्ष्मीसमेत वहां गये और अलक्ष्मी को समझाकर ये वचन बोले २३ किहे अलक्ष्मि पीपल के वृक्षमें तुम सदा स्थित रहो यह वृक्ष हमारे अंश से उत्पन्न है इसी में तुम्हारा वास हमने कियाहै २४ जे गृहस्थ मनुष्य नित्यदिन ज्येष्ठा तुम्हारी पूजा करेंगे तिनके यहां तुम्हारी छोटी बहन लक्ष्मीजी निश्चलरहेंगी २५ सूतजी बोले कि यह कार्तिकका माहात्म्य जे सुनें और पढ़ेंगे उनका प्रलयपर्यन्त विष्णुजी के पुरमें वास होगा २६ विष्णुजी के प्यारे कार्तिक से अधिक पृथ्वी में मुक्तिका आदिकारण नहीं है यह रोग और पापोंको नाश करता वुद्धि और पुत्र धन आदिकको देता २७ विष्णुजी को प्रिय सब पापोंको नाश करता अच्छे पुत्र, पौत्र, धन, धान्य और ऐश्वर्य्यको करताहै जो मनुष्य नियमसमेत कार्तिक के व्रत को करताहै उसको तीर्थ के जाने और सेवा की कुछ आवश्यकता नहीं है २८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्येश्रीकृष्णसत्यभामासंवादेअलक्ष्म्युपाख्यानंनामषोडशाधिकशततमोऽध्यायः ११६॥

एकसौ सत्रहका अध्याय ॥

कार्तिकमाहात्म्यमें महादेवजी और स्वामिकार्तिकजीका संवाद वर्णन ॥

सूतजी बोले कि इसप्रकार सब भगवान्‌के वचन सुनकर महा-
भाग्ययुक्त सत्राजितकी कन्या सत्यभामाजी उनसे यह बोलीं १ कि
हे प्रभो कार्तिकका माहात्म्य विस्तारसे नहीं सुना सब महीनोंमें का-
र्तिक कैसे श्रेष्ठहै २ तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे सत्यभामाजी तुम
ने कार्तिकका व्रत जो आदरसे पूंछा यह अच्छा प्रश्नकिया इसीको
पूर्वसमय में महात्मा सूतजीने शौनकसे कहाथा ३ सूतजी बोले कि
इस प्रश्नका शुभ उत्तरसुनो पहले इसको स्वामिकार्तिकजी ने महा-
देवजी से पूंछाथा तब उन्हों ने कहाथा ४ कार्तिकेयजी बोले कि हे
प्रभो बहुत भगवान्‌के रहस्य वैष्णव आपने कहे तिनको हमने सुना
५ दुःखकी भरी लहरियोंसे युक्त संसाररूपी समुद्रमें हमप्राप्तहैं तिन
के उतारनेके लिये यत्नसे कहिये ६ हे वक्ताओं में श्रेष्ठ हे तात का-
र्तिक स्नानकी विधि कहिये जिससे मनुष्य दुःखरूपी समुद्रको तर
जावें ७ और वैष्णवधर्मका फल विस्तारपूर्वक कहिये जिस धर्म्मके
प्रभावसे वैष्णवपदको मनुष्य प्राप्तहोताहै ८ और हे सुव्रत हे विभो
दीपदान, मुनिपुष्प, गोपीचन्दन, तुलसी, ९ चमेलीके फूल, कमल,
आंवला, दमनक, १० केतकी के फूल, नैवेद्य और तीर्थ जल इन
सबका माहात्म्य,माघस्नानका फल, ११ ब्रह्मपत्रों में भोजनकरने
से फल,आरतीका फल,दूसरेसे दीपजलानेका फल,१२ पुष्करक्षेत्र,
शूकरक्षेत्र और शालग्रामजीका माहात्म्य,स्वस्तिकका विधान, १३
दानोंका फल, पराये अन्नके छोड़नेसे फल, महीनाभर व्रतका फल,
चारपाईके छोड़नेका फल १४ दीपावली, प्रबोधिनी नाम एकादशी
और पञ्चभीष्मका माहात्म्य विस्तारसे कहिये १५ तब महादेवजी
बोले कि हे वत्स लोकके उद्धारकेलिये तुमने अच्छा प्रश्नकिया अब
निस्संदेह कहताहूं तुम्हारे बराबर वैष्णव नहीं है १६ हे वत्स अच्छे
पुत्र तुमने निस्सन्देह हमको तार दिया केशव भगवान् में सदैव
निश्चल तुम्हारी भक्ति रहती है १७ जो उत्तम ब्राह्मण मनुष्योंको

वैष्णवधर्म्म देता है वह समुद्रपर्य्यन्त पृथ्वीदान के फलको प्राप्त होताहै १८ कार्तिक महीनेके करोड़ अंशकरके भी कोई और नहीं है एकओर सब तीर्थ और एकओर सब दान १९ एकओर गौवों के दान दक्षिणासमेत सब यज्ञ, एकओर पुष्कर, कुरुक्षेत्र, हिमालयमें वास, २० एकओर मथुरा तीर्थ, काशी और शूकरक्षेत्र में वास और एकओर सदैव भगवान् को प्रिय कार्तिकहै २१ सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनकजी ऐसा कहकर महादेवजी फिर बोले कि मैं कार्तिकस्नान के माहात्म्य को विस्तारसे कहताहूं २२ सतयुग ब्राह्मण, त्रेतायुग क्षत्रिय, द्वापर वैश्य और कलियुग शूद्रहै २३ हे वत्स कलियुग में मनुष्यों की स्नानकर्म्म में शिथिलता होती है तिसपरभी कार्तिक और माघके स्नानको कहताहूं २४ जिसके हाथ, पांव, वाणी, मन, विद्या, तपस्या और कीर्ति अच्छीतरहसे संयत हैं वह मनुष्य तीर्थ के फलका भागी होता है २५ श्रद्धारहित, पापी, नास्तिक, छिन्नमानस और हेतुवादी ये पांच तीर्थ के फलके भागी नहीं होतेहैं २६ जो ब्राह्मण प्रातःकाल उठकर सदैव तीर्थोंमें स्नान करता है वह सब पापों से छूटकर परंब्रह्म को प्राप्त होताहै २७ हे षड़ानन स्नानके जाननेवालों ने स्नान चारप्रकारके कहे हैं वायव्य, वारुण, दिव्य और ब्राह्म्य ये चारहैं २८ गौवों की धूलिका स्नान वायव्य है समुद्र आदिकों में स्नान वारुण है ब्राह्मण मंत्रोंसे हुआ ब्राह्म्यहै और मेघ जल सूर्य्य ये दिव्य स्नानहैं २९ सब नोंमें वारुणस्नान श्रेष्ठहै ब्राह्मण, क्षत्रिय और बनियां ये सब वत् स्नानकरें ३० हे षड़ानन शूद्र और स्त्रियां चुपचाप स्नान बाला, तरुणी, वृद्धा, मनुष्य, स्त्री और नपुंसक ३१ कार्तिक माघमें स्नान करनेसे सब पापोंसे छूटजाते हैं कार्तिकमें स्नान वाले मनुष्य मनोवाञ्छित फलको प्राप्त होते हैं ३२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहा श्रीशिवषडाननसंवादेसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७॥

एकसौअठारह का अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्यमें महादेवजी और स्वामिकार्तिकजीके संवादमें प्रश्न और उत्तर वर्णन॥

सूतजी बोले कि वृषध्वज, भगवान् महादेवजी भक्तियुक्त श्रोता कार्तिकेयजी को पाकर उनसे फिर बोले १ कि कार्तिक वैष्णव महीना सब महीनों में उत्तमहै कलियुगमें इस महीने में तेंतीस देवता सन्निहित रहते हैं २ हे महाभाग कार्तिक के महीने में ब्राह्मण को भोजन, तिलधेनु, सोना, चांदी, पृथ्वी, वस्त्र ३ और गौवोंके दान हे सुव्रत सब भावसे मनुष्य देते हैं सब दानोंमें कन्यादान श्रेष्ठ है ४ जे मनुष्य विधिपूर्वक ब्राह्मणको कन्या देते हैं उनका जबतक चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक वैकुण्ठ में निवास होता है ५ रोमकाल प्राप्त होने में कन्याको चन्द्रमा भोग करताहै ऋतुकाल में गन्धर्व, कुचोंके दर्शन में अग्नि भोग करताहै ६ जबतक कन्या ऋतुमती न हो तबतक उसका विवाह कर देना चाहिये और पण्डित लोग आठवर्ष की कन्या का विवाह उत्तम कहते हैं ७ श्रोत्रिय, ब्राह्मण, तपस्वी, विधिसे साक्षात् वेद पढ़हुए और कन्याके प्रमाण वर को कन्या देनी चाहिये यही विधि कही हुई है हे पुत्र कन्याकी देह में जितने रोम होते हैं ८। ९ उतनेही हज़ार वर्ष कन्याका देनेवाला महादेवजी के लोक में बसता है एक सहस्र गौ और सौ बैलों का दान समानहै १० दश बैलके समान यान, दशयान के सदृश घोड़ा, और हज़ार घोड़े के दानके समान हाथीका दान, ११ हज़ार हाथी के दानके समान सोने का दान, सोनेके हज़ार भारके समान विद्या का दान, १२ विद्यादान से करोड़गुणा पृथ्वी का दान, हज़ार पृथ्वी दानके सदृश गोदान, १३ और हज़ार गोदानसे श्रेष्ठ अन्नदान होता है यह सब स्थावर जंगम अन्नके आधारहै १४ तिससे हे मुरैलकी सवारीवाले कार्तिकेय कार्तिकमें यत्नसे अन्न देना चाहिये १५ तब कार्तिकेयजी बोले कि हे महादेवजी और भी धर्म हमसे कहने को आप योग्यहैं जिनको कर सब पापोंको धोकर देवता होजाताहै १६

सूतजी बोले कि इसप्रकार जब महादेवजी से पूछा तो महादे
फिर कहनेको प्रारम्भ करते भये हे तपस्वियो उसी को आप
भी सुनें १७ महादेवजी बोले कि कार्तिकके नियम करने में जो
राये अन्नको वर्जित करताहै तो इसके वर्जने से चान्द्रायण व्रत
फलको प्राप्त होताहै १८ प्राप्तहुए कार्तिकको देखकर जो पराये
को वर्जित करता है वह मनुष्य दिन दिनमें कृच्छ्र के फलको
होताहै १९ कार्तिकमें तेल, शहद, कांस्य और संघ अन्नको वि
कर छोड़देवे २० अकेले मांसही के खाने से राक्षसी योनिको
होताहै और साठहज़ार वर्ष विष्ठामें पचताहै २१ और तिससे
कर वह पापी मैला खानेवाला गांवका सुअर होताहै और जो
र्तिकके नियम करनेवाला खानेकी कहीहुई वस्तुओंको खाताहै
वह अवश्यही विष्णुरूप होकर मोक्ष देनेवाले पदको प्राप्त होत
कार्तिककेसमान महीना नहीं है भगवान्‌से श्रेष्ठदेवता नहीं है २३
केसमान शास्त्र नहीं है गंगाजीकेसमान तीर्थ नहीं है सत्यके स
वृत्त नहीं है सतयुगके समानयुग नहीं है २४ जीभके समान त
नहीं है दानके समान सुख नहीं है धर्मके बराबर मित्र नहीं है नेत्र
समान ज्योति नहीं है २५ जो मनुष्य भगवान्‌के प्यारे कार्तिक
हीनेको विना व्रत करनेके बिताताहै वह कर्म्मभ्रष्ट जानने योग्य
और हीन योनियोंमें भी पैदा होताहै २६ श्रेष्ठ कार्तिक का महीन
वैष्णवोंको सदा प्याराहै समुद्रमें जानेवाली नदी बड़ी पुण्यकारि
णी है स्नान करनेवालों को दुर्लभहै २७ कुलके शीलसे युक्त कन्
मनुष्योंको दुर्लभहै जोकि पतिसेयुक्तभी हो संसारमें विशेषकर मा
और पिता भी दुर्लभहैं २८ साधुओं का आदर, धर्मवान् पुत्र, द्वा
रिकाका वास, कृष्णाजी का दर्शन २९ गोमतीस्नान और कार्ति
का व्रत ये सब दुर्लभहैं चन्द्रमा और सूर्य्य के ग्रहणमें ब्राह्मणों
पृथ्वी देकर ३० हे वत्स जो फल मिलताहै वह पृथ्वी में शयन
रनेवालेको मिलताहै स्त्री और पुरुषको जोकि ब्राह्मणही हो उत्त
भोजन करावे और विलेपनोंसे भी पूजनकरे ३१ कम्मल, रत्न, अ
नेक प्रकारके वस्त्र और ऊपरके कपड़ों समेत तकिया भी देनी

हिये ३२ पवित्र कार्तिकमें जूता और छतुरी भी देवै और जो मनुष्य कार्तिकमें नित्यही पत्तोंमें भोजन करताहै ३३ वह जबतक चौदहों इन्द्रहैं तबतक दुर्गतिको नहीं प्राप्त होता सब कामनाओं और सब तीर्थोंका फल भी उसको मिलताहै और ढाकके पत्तोंमें भोजन करने से नरकको भी नहीं देखताहै सब कामनाओं का देनेवाला ढाकसाक्षात् ब्रह्माही है ३४। ३५ हे कार्तिकेय कार्तिक में बरगदके पत्तेको वर्जितकरै ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी ये तीनों देवता त्रिपत्रकमें हैं ३६ इससे महादेवके पत्ते बरगदकेहुए इनको वर्जितकरै ब्रह्माके पत्ते ढाकके और विष्णुजी के पत्ते पीपलके ये सबसे उत्तम हैं शेष पत्तोंमें भोजन करनेसे सब पुण्यको प्राप्त होताहै ३७ बरगदके पत्तों में भोजन करने और कपिलाके दूध खानेसे हे मुनियोंमें श्रेष्ठ शौनकजी मनुष्य नरकको प्राप्त होताहै ३८ और जो शूद्र अज्ञानसे कपिलाका दूध पीलेताहै वह कार्तिकमें ब्राह्मणको कपिला देकर शुद्ध होताहै ३९ कार्तिकमें तिलदान, नदी में स्नान, सदैव साधुओं का दर्शन और ढाकके पत्तों में भोजन करना ये मुक्ति देनेवाले हैं ४० मौनहोना, ढाकके पत्तोंमें भोजन करना, जलमें स्नान, सदैव क्षमा करना और कार्तिकमें पृथ्वी में सोना ये युगोंके इकट्ठे कियेहुए पापों को नाश करते हैं ४१ हे कार्तिकेय जो मनुष्य अरुणके उदयमें कार्तिकके महीने में भगवान् के आगे जागरण करता है वह हज़ार गोदानके फलको प्राप्त होताहै ४२ पितृपक्षमें अन्नदानसे ज्येष्ठ आषाढ़में जलसे और कार्तिकमें पराये दीपको जलाने से भी हज़ारही गोदानका फल होताहै ४३ पराये दीपके जलाने और कार्तिक में वैष्णवों के सेवन करनेसे राजसूय और अश्वमेध का फल मिलता है ४४ नदीमें स्नान, भगवान् की कथा और वैष्णवों का दर्शन ये कार्तिक में जिसके नहीं होते तो उसकी दशवर्षकी पुण्य नाश होजाती है ४५ जो बुद्धिमान् मनुष्य कार्तिकमें कर्म्म, मन और वाणी से पुष्करजीको स्मरण करताहै तो हे मुनिश्रेष्ठ शौनक उसको लाख करोड़गुणा फल होताहै ४६ माघमहीनेमें प्रयाग, कार्तिकमें पुष्कर और वैशाख में अवन्ती में स्नान ये सब युगों के इकट्ठा किये हुए

पापों को नाश करते हैं ४७ हे कार्त्तिकेय वे मनुष्य कलिकालमें विशेषकर धन्य हैं जे सर्वथा भगवान् का सेवन करते हैं ४८ हे शौनक गयाश्राद्ध आदिकरके बहुत पिण्ड देनेसे क्या है उसने निस्संदेह नरकसे पितरोंको तारदियाहै ४९ पितृके कारणसे भगवान्का दूध आदिकसे स्नान करानेसे भी मनुष्य करोड़ कल्प स्वर्ग में प्राप्त होकर देवताओंसमेत बसते हैं ५० जिन्होंने कार्त्तिकमें कमलनयन भगवान् को नहीं पूजा उनके घरमें हे विप्रेन्द्र शौनक करोड़ों जन्म तक लक्ष्मीजी नहीं जाती हैं ५१ वे कलियुगकी कन्दरामें चोर, नष्ट और पतित हैं जिन्हों ने काले और सफ़ेद कमलों से भक्तिपूर्वक भगवान् को नहीं पूजा ५२ जो देवों के स्वामी लक्ष्मीपतिजी को एकही कमलसे पूजताहै उसके दशहज़ार वर्ष के पापोंको भगवान् नाश करदेते हैं ५३ देवोंके स्वामी एक कमलसे नमस्कार किये और पूजन कियेहुए हज़ार तथा सातसौ अपराधों को भी क्षमा करते हैं ५४ लाख तुलसीदलसे जो कार्त्तिकमें भगवान्को पूजन करता है वह पत्र पत्रमें हे मुनिश्रेष्ठ शौनक मोतियों के फल को प्राप्त होता है ५५ हे कार्त्तिकेय तुलसीकी सुगन्धसे मिलाहुआ जो कुछ करता है उसके ऊपर भगवान् करोड़हज़ार कल्प प्रसन्न होते हैं ५६ जो मनुष्य भगवान्के ऊपरकी चढ़ीहुई तुलसी को मुँह, शिर और देह में धारण करता है उसको कलियुग नहीं स्पर्श करता है ५७ और भगवान्के उतारेहुए निर्माल्यों से जो देहको शुद्ध करताहै वह सब रोग और पापों से छूट जाताहै ५८ विष्णुजी के अंगार शेषसे जिसका अंग स्पर्श किया जाताहै उसके दुरित और व्याधियां नाशको प्राप्त होती हैं ५९ शंख में जल, भगवान् में भक्ति, निर्माल्य, गंगाजल, चन्दन और धूपका शेष ये सब ब्रह्महत्याको नाश करते हैं ६०

इतिश्रीपाद्मे महापुराणे पञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्त्तिकमाहात्म्ये श्रीशिवकार्त्तिकेयसंवादेप्रश्नोत्तरोनामाष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८॥

एकसौउन्नीसका अध्याय॥

कार्त्तिकमाहात्म्यमें महीनेभर व्रतका कथन॥

महादेवजी बोले कि हे भगवान् के भक्तों में उत्तम हे महाबु-

ान् कार्तिकेय माघस्नान का माहात्म्य सुनो तुम्हारे समान इस
ोकमें विष्णुजी का भक्त नहीं है १ चक्रतीर्थ में हरिजी और म-
ुरामें केशव भगवान्को देखकर जो फल मनुष्यको मिलताहै वही
ाघस्नानसे भी होता है २ जो जितेन्द्रिय, शान्तमन और अच्छे
आचारों से संयुक्त मनुष्य माघमें स्नान करता है वह फिर संसारी
नहीं होता है ३ श्रीकृष्ण जी बोले कि हे सत्यभामा जी शूकरक्षेत्र
का माहात्म्य तुम्हारे आगे कहूंगा जिसके जाननेही से तुम सदैव
हमारे समीप बसोगी ४ सूतजी बोले कि हे शौनकादि तपस्वियो
ऐसा कहकर भगवान् कृष्णजीने सत्यभामा से अच्छीतरहसे कहा
जिसको मैं कहता हूं सुनिये ५ श्रीकृष्ण जी बोले कि पांच योजन
के विस्तारयुक्त, भगवान्के मन्दिर शूकरक्षेत्र में जो गदहाभी जीव
बसताहै वहभी चारभुजावाले भगवान् के समान है ६ तीनहज़ार
तीनसौ तीन हाथका शूकरक्षेत्रका प्रमाणहै ७ जो मनुष्य और ज-
गह साठहज़ार वर्ष तपस्या करता है वह फल शूकरक्षेत्र में आधे
पहरसे मिलता है ८ और कुरुक्षेत्र में सूर्य्यग्रहण में तुलादान से
भी वही फल मिलताहै ९ काशीमें दशगुणा, वेणी में सौगुना, गंगा-
सागर के संगम में हज़ारगुणा १० और हरिमन्दिर शूकरक्षेत्र में
अनन्तगुणा फल होता है हे कार्तिकेय और तीर्थों में विधिपूर्वक
लाख रुपयादेना ११ और इस शूकरक्षेत्रमें एकरुपया देना बरा-
बर होताहै शूकरक्षेत्र, वेणी और गंगासागर के संगम में १२ एक
बारभी स्नानकर मनुष्य ब्रह्महत्या से छूटजाता है पहले अलर्कजी
ने सातों द्वीपवाली पृथ्वी पाईहै उन्होंने कार्तिकेय शूकरक्षेत्रका मा-
हात्म्य अगहनके शुक्लपक्षकी द्वादशीको सुनाथा १३ तब कार्तिकेय
जी बोले कि हे भगवन् व्रतोंमें उत्तम व्रत सुनने की इच्छाकरताहूं
महीनेभर व्रत करनेका फल और इसका यथोचित फल १४ जिस
विधिसे मनुष्योंको करनाचाहिये और जैसे व्रतचर्या होतीहै जिस
विधिसे प्रारम्भ पहलेहोता और जिस विधिसे समाप्त होता है
हे पापरहित महादेवजी सुख और लक्ष्मीका देनेवाला यह
तनी संख्या करना चाहिये वह सब बिस्तार से हमसे

तब श्रीमहादेवजी बोले कि हे बुद्धिमानोंमेंश्रेष्ठ पापरहित कार्तिकेय तुमने अच्छा प्रश्नकिया जो पूंछा वह सब कहताहूं सुनिये १७ देवताओं में विष्णुजी जैसे श्रेष्ठहैं तपतेहुओं में सूर्य्य, पर्वतों में मेरु, पक्षियों में गरुड़,१८ तीर्थों में गंगा, प्रजाओं में बनियां और तैसेही सब व्रतों में महीने भरका व्रतभी श्रेष्ठहै १९ सब व्रतों, सब तीर्थों और सब दानों में जो फल मिलताहै वह महीनेभर व्रत करनेसेभी मिलताहै २० अग्निष्टोम आदिक बड़े दक्षिणावाली अनेकप्रकार की यज्ञोंसे भी वह फल नहीं मिलता जो महीनाभर व्रत करने से मिलताहै २१ उसने जप, हवन, दान, तपस्या और स्वधा ये सब किये जो मनुष्य विधिपूर्व्वक महीनाभर व्रत करताहै २२ वैष्णवयज्ञ का उद्देश कर मुझ जनार्दन को पूजकर गुरुजी की आज्ञा लेकर महीने भर व्रतकरै २३ द्वादशीआदिक पुण्यकारी वैष्णव सब व्रत जिसप्रकार कहेहुए हैं तिनको करके फिर महीने भर व्रतकरै २४ अतिकृच्छ्, पाराक और चान्द्रायण व्रत करके गुरु और ब्राह्मण की आज्ञासे महीनेभर व्रतकरै २५ कुँवारके शुक्लपक्ष की एकादशी में व्रतकर फिर तीस दिनतक व्रतको करै २६ जो मनुष्य भगवान् को पूजनकर सब कार्तिकभर व्रतकरताहै वह मुक्तिके फलका भागी होताहै २७ भगवान् के स्थानमें भक्तिसे तीनोंकाल सुन्दर कुमुद, चमेली, इन्दीवर, अब्ज, सुगन्धितकमल, २८ कुसुम, खस, कपूर और श्रेष्ठ चन्दनके लेप, नैवेद्य पुओंकी और दीपादिकोंसे मनसा कर्मणा वाचा, जनार्दन गरुड़ध्वज भगवान्को पूजे मनुष्य स्त्री विधवा ये सब अच्छी भक्तियुक्त, जितेन्द्रिय होकर पूजन करें २९।३० और व्रत करनेवाला रात दिन विष्णुजीके नामोंका उच्चारण करै और भक्ति से झूंठ बोलनेसे वर्जित भगवान्की स्तुतिकरनी चाहिये ३१ सब जीवोंके ऊपर दयायुक्त, शान्तवृत्ति, हिंसारहित, सोताहुआ वा बाल्य आसनमें स्थितहुआ मनुष्य भगवान् का कीर्त्तन करै ३२ स्मरण, दर्शन, गन्धादिस्वादन, परिकीर्त्तन ये सब करै और अन्नआदि कायास, ग्रासोंका संप्रमोक्षण,३३ देहमें उबटन,शिरमें उबटन, पान लेपन ये सब व्रत करनेवाला छोड़देवे तथा और भी जो बुरे कर्म

उनको भी त्यागे ३४ कुछ लुये नहीं विकर्म्म में स्थितको न चलायमान करै देवताके स्थानमें स्थितरहे निश्चय घरही में न स्थित रहे ३५ मनुष्य, स्त्री, वा साध्वी विधवा स्त्री कहीहुई विधिसे महीने भर व्रतकर भगवान्को पूजनकरै ३६ इसप्रकार तीसदिनका व्रत होना चाहिये संयत आत्मा जितेन्द्रिय मनुष्य मासभर व्रतकर ३७ तिस पीछे पुण्यकारी, श्रीगरुड़ध्वजजी को फूलकी माला चन्दन, धूप और विलेपनों से पूजनकरै ३८ और कपड़े, अलङ्कार और बाजाओं से प्रसन्नकरै और तीर्थचन्दन और जलों से भक्ति से स्नान करावे ३९ चन्दनसे अंगोंको लिप्तकरै धूप देवे फूल चढ़ावे कपड़े और दान आदिकों से उत्तम ब्राह्मणों को प्रसन्नकरे और भोजन कराके ४० दक्षिणा देकर नमस्कार कर क्षमा करावे इस प्रकार एक महीने भर व्रतकर भगवान् को पूजन कर ४१ ब्राह्मणों को भोजन कराने से मनुष्य विष्णुलोक में प्राप्त होता है इस भांति महीना भरके व्रतके अन्तमें तेरह ब्राह्मणों को निर्यापन जिस विधि से करै वह सुनो एकादशी में व्रतकर वैष्णव यज्ञ करावे ४२।४३ आचार्यकी आज्ञासे देवेश हरिजीको यथाशक्तिसे पूजनकर गुरुजी को नमस्कार करे ४४ तिसके पीछे विशुद्धकुलचारित्र विष्णुपूजन में तत्पर तेरह ब्राह्मणों को पहले नमस्कारकर भोजन कराके पान, कपड़ों के जोड़े, भोजन, आच्छादन, ४५।४६ योगपट्ट, सूत्र और जनेऊ देवे और पूजनकर प्रणाम भी करै ४७ तदनन्तर आस्तरण, आच्छादन और तकियासमेत श्रेष्ठ शय्या को अलङ्कारयुक्त कर ४८ अपनी मूर्तिको शक्तिके अनुसार सोने की बनवाकर उसी शय्यामें धरे और माला आदिकों से पूजन कर ४९ आसन, खड़ाऊं, छतुरी, कपड़े के जोड़े, जूते और पवित्र फूल शय्यामें धरे ५० इस प्रकार शय्याको रचाके संकल्पकर तिन ब्राह्मणों को नमस्कार कर प्रसन्न करने के लिये प्रार्थनाकरै कि मैं विष्णुलोकको जाऊंगा ५१ फिर वह श्रेष्ठ मनुष्य रोगरहित विष्णुजी के स्थान को जावे और मंडपमें स्थित तिन विप्रों से वारंवार यहकहे ५२ कि हे द्विजोत्तमो मैं मंत्रहीन, क्रियाहीन और सबसेहीनहूं आपके वाक्यके प्रसादसे मास

भरके व्रतकी यथोचित कहीहुई विधि सब संपूर्णताको प्राप्तहो ४२

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेमासोपवासकथनंनामैकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ११९॥

एकसौ बीसका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्य में शालग्रामजीका माहात्म्य वर्णन॥

सूतजी बोले कि इसप्रकारके वचनसुन कार्तिकेयजीने फिर पूंछा कि शालग्रामजी का पूजन फिर कहिये तिसीको हे तपोधनो आप लोग भी सुनें १ कार्तिकेयजी बोले कि हे भगवन्, योगियों में श्रेष्ठ प्रभुजी सब धर्म मैंने सुने परन्तु शालग्रामजीका पूजन विस्तार से हमसे कहिये २ तब महादेवजी बोले कि हे महाप्राज्ञ, कृपालु, जो तुमने हमसे पूंछा यह बहुतही अच्छा प्रश्नकिया तिसको मैं कहता हूं सुनिये ३ हे महाशय, महासेन, शालग्रामजी की मूर्तिमें स्थावर जंगम तीनोंलोक स्थित रहते हैं ४ जिसने दर्शन, प्रणाम, स्नान और पूजन किये हैं वह यज्ञके करोड़गुण पुण्य और करोड़ गोदान के फलको प्राप्त होताहै ५ हे वत्स जो सदैव विष्णुजीके शालग्राम की मूर्तिका जल पीताहै उसने घोर गर्भवासको काट डालाहै ६ हे पुत्र जो काममें आसक्त और भक्तिभावसे वर्जितहै परन्तु नित्यही शालग्राम की मूर्तिको पूजताहै तो वह भी अच्युतही होताहै ७ शालग्रामजी की मूर्तिका बिम्बस्मरण, संकीर्तन, ध्यान, पूजन और नमस्कार करने से करोड़ हत्या नाश होजाती हैं ८ शालग्रामजी की मूर्तिको देखकर अनेक प्रकारके पाप इस भांति चले जाते हैं जैसे वनमें सिंह को देखकर डरसे हरिणसमूह चले जाते हैं ९ मनुष्य शालग्रामजीकी शिलाके पूजनमें भक्ति वा अभक्तिसे नमस्कारकर मुक्तिको प्राप्त होताहै १० और जो नित्यही शालग्रामजी की शिला का पूजन करताहै उसको यमराज और मरण जन्म का भय नहीं होताहै ११ और जो भक्तिमें परायण मनुष्य कलियुगमें शालग्राम जीकी शिलाका पूजन चन्दन, पाद्य, अर्घ, नैवेद्य, दीप, धूप, विले-

पन, गीत, बाजा और स्तोत्रों से करता है वह करोड़हज़ार कल्प विष्णुजी के मन्दिरमें रमताहै १२।१३ जिन मनुष्यों ने भावसे शालग्रामजीका नमस्कार कियाहै उनका मनुष्यजन्म फिर कैसेहोसक्ता है और जे पृथ्वीमें हमारे भक्तहैं १४ परन्तु हमारे प्रभु वासुदेवजी को नहीं नमस्कार करते हैं वे घोरपापी और पापमोहित हमारेभक्त जानिये १५ और हमारा भक्त भी होकर जो एकादशी के दिनमें भोजन करताहै वह हमारा घात करनेवाला अन्धतामिस्र नाम नरकमें जाताहै १६ हमारे लिंगका स्पर्श न करना चाहिये उसमें और शुद्धि नहीं है जो विष्णुजी को प्यारी तिथिहै वही हमकोभी प्यारी है १७ हे पुत्र जो उसमें व्रत नहीं करताहै वह पापी चाण्डालसेभी अधिकहै और शालग्रामजीकी मूर्तिमें तो मैं सदैव बसताहूं १८ भगवान् ने भक्तिसे प्रसन्नहोकर अपना स्थान हमकोभी दियाहै करोड़हज़ार कमलों से हमारा पूजन करने से जो फलहोताहै १९ उसका करोड़ गुणा शालग्रामजी की शिलाके पूजनसे होताहै तिन मनुष्यों ने हमारा पूजन और नमस्कार नहीं कियाहै २० जिन्होंने मनुष्यलोकमें शालग्रामजी की शिलाका पूजन नहीं किया शालग्रामजी की शिलाके आगे जो हमारा पूजनकरताहै २१ उसने हे कार्त्तिकेय इक्कीसयुग तक हमारा पूजन कियाहै और विष्णुजी की भक्तिसे वर्जित सैकड़ों मूर्त्तियों के पूजने से क्याहै २२ हे पुत्र शालग्रामजी की शिलाका बिम्ब जो नहीं पूजता वह हमारी नैवेद्य पत्र पुष्प फल और जल देने के भी योग्य नहीं होताहै २३ शालग्रामजी की शिलाके आगे सब पवित्र होजाताहै ब्राह्मण और देवता की नैवेद्य भोगकर चान्द्रायण करै २४ और केशवजी की नैवेद्य भोजनकर करोड़ यज्ञके फलको प्राप्तहो भगवान् के चरणजलसे करोड़ हत्याओं से युक्त निस्सन्देह शुद्धहोजाते हैं तैसेही शङ्खके जलसेभी शुद्धहोते हैं और जो महादेवजीका भक्तहोकर वैष्णवको नहीं पूजता २५।२६ और वैर करताहै वहजबतक चौदहों इन्द्र बीतते हैं तबतक नरकमें प्राप्त रहताहै और जिसके घरमें ज्येष्ठ आश्रमवाला मुहूर्त्तमात्र भी विश्राम करताहै २७ उसके पितामह आठयुगतक अमृत भोजन करते हैं और कृष्णजी

के आराधन से वर्जित अधम मनुष्य दुःखकान्तार संसारमें करोड़
हज़ारवर्षतक डूबते हैं और स्नेहसे शालग्रामजी की मूर्त्तिको जो अं
गसांख्यसे वर्जित भी मनुष्य पूजते हैं वे मुक्तिको प्राप्तहोते हैं करोड़
हमारी मूर्त्तियों के दर्शन, पूजन और स्तुतिकरने से जो फलहै २८
२९। ३० वह शालग्रामजी की एकही शिलामें होताहै और बारह
शालग्रामजी की मूर्त्तियोंको जो ३१ वैष्णव नित्यही पूजताहै तिसके
पुण्य हमसे सुनो कि गङ्गाजी के किनारे करोड़हज़ार लिङ्गों के पूजने
३२ और आठयुग काशीवासमें जो फलहै वह एकही दिनसे होताहै
और जो वैष्णव मनुष्य बहुत पूजताहै तो उसका क्याकहनाहै ३३
हम और ब्रह्मादिक देवता भी उसकी गिनती करनेको नहीं समर्थ
हैं तिससे हे पुत्र हमारे भक्तोंको हमारी प्रीतिके लिये ३४ शालग्राम
जी की मूर्त्तिका पूजन करनाचाहिये शालग्राम शिलारूपी केशव भ
गवान् जहां स्थितहैं ३५ वहांपर देवता, असुर, यक्ष और चौदहोंभुवन
हैं ३६ और देवताओं के करोड़ों सब कीर्त्तनों से जो फल मिलता
है वह कलियुग में सुकृत फल भगवान् के कीर्त्तन से मिलताहै ३७
शालग्रामजी की मूर्त्ति के आगे एकबार भी जो पिण्डसे पितरोंको
तृप्तकरताहै तो उसके पितर असंख्य वर्षोंतक वैकुण्ठमें बसते हैं ३८
और जो मनुष्य शालग्रामजी की शिलाका जल भक्तिसे पीते हैं उ
नको हज़ारों पंचगव्यों के खानेका कुछ प्रयोजन नहीं है ३९ प्रा
यश्चित्त के उत्पन्नहोने में दान, व्रत, चान्द्रायणों के करने से क्या है
भगवान्का चरणजल पीनाचाहिये ४० और जो तालावमें मूर्त्तिको
जलमें शयनकराताहै तो उसको करोड़ों और देवताओं के पूजन
से क्याहै ४१ हे पुत्र वहांपर विष्णुमुख्य देवता संगमें बोलते हैं इ
समें सब सुकृतका प्रमाणहै ४२ शालग्रामजी की शिलाके पूजनके
फलका प्रमाण नहीं है जो विष्णुजी की शालग्रामसे उत्पन्न शिलाको
विष्णुभक्त ब्राह्मणको देताहै तो उसने सैकड़ों यज्ञोंको और घरमें ब
सतेहुए उसको दिन दिनमें गङ्गाजी के स्नानकरनेका फल होताहै
४३। ४४ और जो शालग्रामजी की शिलाके जलसे अभिषेक करता
है वह सबतीर्थों में स्नान और सब यज्ञों में दीक्षित होजाताहै ४५

; कार्त्तिकेय स्वर्ग मर्त्य और पातालमें पत्थरहैं परन्तु शालग्रामजी
ी शिलाके समान नहीं हैं ४६ जो मनुष्य भक्तिसे दिन दिनमें सौ
रस्थ तिलदेताहै उसका इस मानुषदुर्लभ लोकमें जीना सफलहै ४७
और शालग्रामकी शिलाके पूजनमें जो फल होताहै वही उसको भी
ोताहै और पत्र, फूल, फल, जल, मूल और दूबके दल ४८ ये जो
ालग्रामजी में अर्पणकरे तो सुमेरुके समान होजाते हैं जो कोई
वेधि, क्रिया और मंत्रसे भी हीनहै ४९ वहभी चक्रसे चिह्नित भुज
ोकर अच्छीतरहसे शास्त्रमें कहेहुए फलको प्राप्त होताहै जो मैंने
कशवजी में पूर्वसमयमें क्लेशनाशनेवाला देखा ५० तिस सबको हे
ुत्र तुम्हारे स्नेहसे कहूंगा हे विष्णुजी आप कहां बसते हैं और क्या
आधार और आश्रय है ५१ और हे देव आप कैसे प्रसन्नहोते हैं
यहसब हमसे कहिये तब श्रीकृष्णजी बोले कि हे महादेवजी मैं सदा
ालग्रामसे उत्पन्न पत्थरमें बसताहूं ५२ वहांपर रथके चक्रके चिह्न
ं जो नामहैं वे सुनो द्वारदेशमें समचक्रमें जो अन्तर न दिखलाई दे
ो वह वासुदेव, शुक्ल, अत्यन्त सुन्दर जानना चाहिये ५३ प्रद्युम्न,
ूर्यवक्र, नीलदीप्ति, ये सुषिर, बहुत छिद्रवाले और दीर्घ आकारके
ोते हैं ५४ अनिरुद्ध पीली दीप्तिवाला, गोल, अत्यन्तसुन्दर, द्वारमें
ीन रेखासे चिह्नित और दृष्टकमलसे भी चिह्नित है ५५ श्याम,
ारायण, देव उन्नत नाभिचक्रमें दीर्घरेखा समसे युक्त और दक्षिण
ं सुषिरसंयुक्त है ५६ ऊपरका मुख, सुन्दर, कामना, मोक्ष और वि-
शेषकर द्रव्य देनेवाला हरिरूपीजानो ५७ परमेष्ठी, शुक्ल दीप्तिवाला,
पद्मचक्रसेयुक्त, विम्बकी आकृतिवाला, पीठमें सुषिर और अत्यन्त
पुष्कलहै ५८ सुन्दर मूलचक्रमें विष्णुजी कृष्णवर्ण हैं द्वारके ऊपर
मध्यदेश से रेखा दिखलाई देती है ५९ कपिल और नरसिंह यह
पृथुचक्र सुशोभित है और ब्रह्मचर्य्य से पूजने के योग्यहै और त-
रहसे विघ्न देनेवाला होताहै ६० वाराह और शक्ति लिंग ये विषम
चक्रहैं इन्द्रनीलके सदृश, स्थूल, नाभिसे तीन रेखावाला शुभहै ६१
और दीर्घ, सुवर्ण के वर्णवाली, तीन विन्दुओं से शोभित जोहै वह
भुक्ति मुक्ति और फलकी देनेवाली मत्स्यनाम शिला जानने

है ६२ कूर्मनामवाला ऊँचा, पीठमें गोल, चक्रसे पूरितहै वह श्री
वर्णको धारण कियेहै और कौस्तुभमणिसे चिह्नित है ६३
घोड़े के आकारवाला, पांचरेखाओंसे भूषित, बहुत विन्दुओंसे आ
च्छादित और पीठमें नीलरूप वालाहै ६४ वैकुण्ठचक्र तथा ध्व
के अंग भिन्न नहीं हैं द्वारके ऊपर सुन्दर गुञ्जाकार रेखाहै ६५ श्री
धरदेव वनमालासे चिह्नित, कदम्बके फूलके आकार पांच रेखाओं
से भूषितहै ६६ गोल, छोटा, अलसीके फूलके समान रंगयुक्त, वि
न्दुसे शोभित वामननाम कहाहुआ है ६७ सुदर्शनदेव श्यामवर्ण
महाद्युतियुक्त है बाईंओर और दक्षिणओर. गदा चक्रमें रेखाहै ६८
दामोदर स्थूलहै मध्य में चक्रभी प्रतिष्ठित है दूबके सदृश, द्वारसं
कीर्ण, पीली रेखाहैं ६९ और अनन्त अनेक वर्णवाला, अनेकों भो
गोंसे चिह्नित, अनेक मूर्तिवाला, भिन्न और सब कामना और फल
का देनेहारा है, ७० सब विदिशा और दिशाओं में जिसका ऊप
का मुख दिखलाई देताहै वह भुक्ति मुक्ति और फलका देनेहारा पु
रुषोत्तम जानने योग्यहै ७१ जिसके शिखरमें शालग्रामकी शिला
से उत्पन्न चिह्न दिखलाई देताहै उसकी योगेश्वर देव ब्रह्महत्याको
नाश करदेते हैं ७२ और पद्मनाभ रक्तवर्ण, कमलसदृश मुख से
संयुक्तहै तिसके नित्य पूजनसे दरिद्र भी ईश्वर होजाताहै ७३ चक्र
से अंकित हिरण्यांग है जिसमें रश्मियों के जाल, सुवर्ण की बहुत
रेखा और स्फाटिककी द्युतिसे शोभितहै ७४ कृष्णवर्णवाली अति
चिकनी सिद्धि करनेवाली है कीर्तिको देती है और पीले वर्णवाली
पाप जलानेहारी, पिता पुत्रको फल देनेहारी है ७५ नीलवर्णवाली
लक्ष्मीको देती लालवर्णवाली रोग देती, रूक्षवर्णवाली उद्वेगके पैदा
करनेहारी है वक्रा दारिद्र्यकी भागिनी है ७६ पहला सुदर्शन, दूसरा
लक्ष्मीनारायण, तीसरा अच्युत, चौथा जनार्दन, ७७ पांचवां वासु
देव, छठवां प्रद्युम्न, सातवां संकर्षण, आठवां पुरुषोत्तम, ७८ न
वांनवव्यूह, दशवां दशात्मक, ग्यारहवां अनिरुद्ध, बारहवां द्वा
दशात्मकहै, ७९ इसके उपरान्त अनंतसंज्ञक, खंडित, त्रुटित, भग्न
शालग्राममें दोषभागी नहीं होताहै ८० जिसकी जो मूर्ति इष्टहै व

उसको यत्नसे पूजै और शैलनायक को कांधेमें कर जो राह चलता है ८१ उसके वश में स्थावर जंगम सब त्रैलोक्य होता है जहांपर शालग्रामजीकी शिलाहै वहींपर भगवान् स्थितहैं ८२ वहांके दान, जप और स्नान काशीजी से सैकड़ोंगुणा अधिकहैं कुरुक्षेत्र,प्रयाग, नैमिषारण्य में कोटिगुणा फल है काशीजी में बड़े भारी पुण्यवाला फलहै ब्रह्महत्यादिक पापों को जो मनुष्य करताहै ८३।८४ तिस सबको शालग्रामजी की शिलाका पूजन शीघ्र जला देताहै जहांपर शालग्रामसे उत्पन्न और द्वारकासे उत्पन्न देवहैं ८५ और दोनोंका संगम जहांपर है वहां निस्संदेह मुक्तिहै ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासियों को ८६ विना विचारेही विष्णुजी का नैवेद्य खाना चाहिये शालग्रामजी के पूजनमें मंत्र,जप,भावना, ८७ स्तुति और आचार नहीं हैं शालग्रामजीकी शिलाके आगे आदरसे स्वस्तिक करै ८८ और कार्तिकमें तो विशेषकर करे तो वह सातपीढ़ियों को पवित्र करताहै और जो भगवान्के आगे छोटा भी मंडल मिट्टी और धातुके विकारोंसे करताहै वह करोड़ कल्प स्वर्ग में बसता है जो पूरासाल अग्निहोत्र करताहै ८९।९० और कार्तिकमें स्वस्तिक करताहै ये निस्सन्देह बराबरहैं नहीं भोग करनेवाली स्त्रीके भोग और नहीं खानेवाली वस्तुके भोजन ९१ का पाप भगवान्का स्थान मंडन करने से नाश होजाताहै और जो स्त्री भगवान्के आगे नित्यही मण्डल करती है वह सातों जन्ममें कभी विधवा नहींहोती ९२

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्येश्रीकृष्णसत्यभामासंवादेशालग्राममाहात्म्यंनाम विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२०॥

एकसौ इक्कीसका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्य में दीप, गन्ध और धात्रीका माहात्म्य वर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे कार्तिकेय जो मनुष्य आंवलेकी छायामें पिण्ड देताहै उसके पितर भगवान्के प्रसादसे मुक्तिको प्राप्त हैं १ हेवत्स आंवलोंसे विभूषित जो मनुष्य मस्तक,हाथ,मुँह

देहमें आंवलों को धारता २ और उन्हींको खाता है वह नारायण होताहै और जो कोई वैष्णव संसारमें आंवलों को धारण करताहै ३ वह देवताओं का प्रिय होता है मनुष्यों की क्या कथा है तुलसी और आंवलेकी मालाको विशेषकर न त्यागे ४ जबतक मनुष्यके कण्ठमें आंवले की माला स्थित रहती है तबतक उसके शरीर में भगवान् स्थित रहते हैं ५ आंवला,तुलसी और द्वारकाकी मिट्टी ये तीन वस्तु जिसके घरमें होती हैं उसका जीवन सफलहै ६ जितने दिन मनुष्य कलियुग में आंवलेकी माला धारण करताहै उतनेही हज़ारवर्ष उसका वैकुण्ठमें निवास होताहै ७ आंवले और तुलसी इन दोकी मालाओंको जो कण्ठदेश में धारण करता है वह करोड़ कल्प स्वर्ग्गमें बसताहै ८ इन्द्रिय समूहोंको अपने वशमेंकर शालग्रामजी की शिलाका पूजन जो मनुष्य भक्तिसे करताहै उसको फूल फूलमें अश्वमेधका फल होताहै ९ देवताओं में जैसे विष्णुजी श्रेष्ठ हैं तैसेही फूलोंमें तुलसी श्रेष्ठहै तुलसीसे जो देव गरुड़ध्वजजीको पूजता है १० वह जन्मदुःख, बुढ़ापा और रोगोंसे छूटकर मुक्तिको प्राप्त होता है और जिसने कार्तिकमें तुलसी की मालासे विष्णुजी का पूजन किया ११ उसके पापाक्षर की कीहुई माला को भगवान् शुद्ध कर देते हैं कपूरसमेत श्रीचन्दन, केसरिसहित अगुरु, १२ केतकी और दीपदान ये सदैव भगवान्‌को प्रियहैं जिसने कलियुग में कार्तिकमें केतकीका फूल और दीपदान दिया है वह सौपीढ़ियों को तारदेताहै कमल,तुलसी, केतकी, मुनिपुष्प १३ । १४ और पांचवें दीपदानको कार्तिकमें करनाचाहिये केतकीकी मालासे जिस कार्तिकमें भगवान् के फूल मण्डपको किया है उसका स्थान स्वर्ग में होताहै केतकीके फूलसे पूजेहुए भगवान् १५ । १६ मधुसूदनः हज़ार वर्षतक प्रसन्न रहते हैं केतकी के फूलों से हृषीकेशजी को जनकरें १७ तो पुण्य और कल्याणके करनेवाले भगवान्‌के स्थान को प्राप्तहो चैत्र और वैशाख में दमनकसे देवेशजी को पूजे तो मुनिश्रेष्ठ पूजनसे फलको प्राप्तहो और जो देव जनार्दनजी को अगस्तिके फूलों से पूजनकरै १८ । १९ तो भो विप्र उसके दर्शन

रककी अग्नि नाशहो और जो यह न करै तो तपस्यासे भगवान्
ो प्रसन्नकरै २० हे कार्तिकेय सब फूलोंको छोड़कर अगस्ति के फूलों
ा केशवजी को कार्तिक में भक्तिसे पूजता और आप भी अलंकृत
ोताहै वह अश्वमेधके फलको प्राप्त होताहै और जो अगस्ति के
ूलोंकीमाला बनाकर भगवान्को देताहै २१। २२ तो हे मुनिश्रेष्ठ
सकी अच्छी कथाको देवेन्द्र भी करते हैं हे कार्तिकेय दशहजार
ाऊके दानसे जो फल प्राप्तहोताहै २३ वह कार्तिकमें एक अगस्ति
े फूलसे मिलताहै जैसे भगवान् कौस्तुभमणि और वनमाला से
ासन्नहोते हैं २४ तैसेही कार्तिकमें तुलसीदलसे प्रसन्नहोते हैं सू-
ाजी बोले कि नम्रतायुक्त भक्ति में तत्पर कार्तिकेयजी को देखकर
ृषध्वज भगवान् महादेवजी फिर बोले कि हे कार्तिकेय कार्तिकमें
ीपके माहात्म्यको सुनो २५। २६ पितृगणों से युक्त पितर सदैव
च्छा करते हैं कि हमारे कुलमें पिताका भक्त सुन्दर पुत्रहो २७ और
ार्तिकमें दीपदानसे भगवान्को जो प्रसन्नकरै जिसका घी वा ति-
ळके तेलसे दीपक २८ जलता है उसको अश्वमेध करने से क्याहै
ासने सब यज्ञों से पूजनकिया और तीर्थोंका स्नान भी किया २९
जिसने कार्तिकमें भगवान् के आगे दीपदान किया हे पुत्र कृष्णपक्ष
ें विशेषकर पांचदिन ३० पुण्यकारी हैं तिनमें जो दीपदेताहै वह
ाशरहितको प्राप्त होताहै और मूषिका एकादशी में दूसरों से दीपक
जलवाकर ३१ दुर्लभ मनुष्य शरीरपाकर फिर श्रेष्ठगतिको प्राप्तहुई
थी और लुब्धक चतुर्दशी में भोजन न करके महादेवजीको पूजन
कर श्रेष्ठ विष्णुलोकको प्राप्त हुआथा और श्वपाकके आश्रयसे वेश्या
ने दूसरों से दीपजलवायाथा ३२। ३३ इससे वह शुद्धा लीलावती
होकर नाशरहित स्वर्गको प्राप्तहुई और कोई गोप अमावास्या में
भगवान् की पूजा देखकर ३४ वारंवार जय ऐसा कहकर राजरा-
जेश्वर होगया तिससे सूर्यअस्त होनेके पीछे रात्रि में दीपदेने चाहिये
३५ घरों में सब गोशालों और सब मन्दिरों में देवों के स्थानों में
श्मशानों और तालाबों में ३६ घीआदि से कल्याणकेलिये पांचदिन
दीपदानदेवे तो इसके पुण्य से पापी पितर जिनकी पिण्ड

जलकी क्रियाभी लुप्तहोगई है वेभी श्रेष्ठमुक्तिको प्राप्त होजावें ३७॥
इतिश्रीपाद्मेमहापुराणे पंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये दीपगन्धधात्रीमाहात्म्यवर्णनोनामैकविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२१॥

एकसौ बाइसका अध्याय॥

कार्तिकमाहात्म्यमें यमद्वितीयाके दिन यमुना स्नान और बहनके यहां भोजन और उसके दान आदिका फल वर्णन॥

कार्तिकेयजी बोले कि हे नाथ महादेवजी दीपावलिका फल विशेषकर इस समयमें कहिये यह किसलिये की जाती है और तिसका कौन देवता है १ हे प्रभो क्या इसमें देना और क्या नहीं देना चाहिये इसमें प्रहर्ष कौन और क्रीड़ा क्या कही है २ सूतजी बोले कि हे शौनकादिक ब्राह्मणो इसप्रकार के स्कन्दके वचन सुनकर कामदेवके शोषण करनेवाले भगवान् महादेवजी कार्तिकेयकी प्रशंसा कर साधु ऐसा कहकर हँसकर बोले ३ कि हे कार्तिकेय कार्तिकके कृष्णपक्षकी तेरसिमें यमराजको दीप बाहर देवे तो अपमृत्यु नाश हो ४ फँसरी हाथ में लियेहुए मृत्युकाल को स्त्रीसमेत त्रयोदशीमें दीप देनेसे यमराजजी प्रसन्न होते हैं ५ पापसे डरेहुए मनुष्यों को कार्तिकके कृष्णपक्षकी चतुर्दशीमें चन्द्रमाके उदय समयमें अवश्य ही स्नान करना चाहिये ६ कार्तिकके कृष्णपक्षकी पूर्वविद्धा चतुर्दशी में रात्रिके समय अतंद्रित होकर स्नान करै ७ क्योंकि तेलमें लक्ष्मी और जलमें गंगाजी रहती हैं इससे दीपावली में चतुर्दशी को प्राप्त होकर जो स्नान करताहै वह यमराजके लोकको नहीं देखताहै ८ लटजीरा, तुंबी, प्रपुन्नाट और वाकलको स्नानके बीच नरक के नाश करने के लिये घुमावे ९ कि हे सीता लोष्ठसमायुक्त हे कांटाके दलों से युक्त हे लटजीरे तुम वारंवार घुमायेहुए हो इससे पापको नाश कीजिये १० लटजीरे और प्रपुन्नाटको शिरके ऊपर घुमाकर तिसपीछे यमराज के नामोंसे तर्पण करना योग्यहै ११ यम, धर्मराज, मृत्यु, अंतक, वैवस्वत, काल, सर्वभूतक्षय, १२ औदुंबर, दध्न, नील, परमेष्ठी, वृकोदर, चित्र और चित्रगुप्तजी के न

स्कार है १३ फिर देवताओं को पूजकर नरकके लिये दीप देना
ग्यहै तदनन्तर रात्रिके समयमें मनोहर दीपोंको देवे १४ ब्रह्मा,
ष्णु और विशेष कर महादेव आदिकों के स्थानों, कूट के घरों,
त्यों, सभाओं, नदियों, १५ रकबा, बाग, बावली, प्रतोली, नि-
कुट, मंदुरा, विविक्ता और हाथियोंकी शालाओं में १६ इसीप्रकार
ीप देकर प्रातःकाल अमावास्या में स्नानकर भक्तिसे देवता और
ितरों को पूजन और प्रणामकर १७ दही, दूध और घी आदिकों
पार्वण श्राद्धकर अनेकप्रकार के खाने के योग्य अन्नों से ब्राह्मणों
ो भोजन कराकर क्षमा करावै १८ तदनन्तर तीसरे पहरमें नगर
निवासियों को प्रसन्नकरै फिर तिन वक्ताओंकी सभा, मान और
ातचीत राजाकरै तो वर्षभर प्रीति प्राप्त होती है भगवान्के पहले
ाहीं जागने में स्त्रियां लक्ष्मीजीको जगावें १९। २० पुरुष जगाने
समयमें अच्छी स्त्री से लक्ष्मीजी को जगावै तो सालभर लक्ष्मी
ी तिसको नहीं छोड़ती हैं २१ ब्राह्मणों से अभय पाकर विष्णुजी
े डरेहुए राक्षस क्षीरसमुद्र में कमलके आश्रित लक्ष्मीजीको सोती
ानकर २२ स्तुति करनेलगे कि तुम ज्योति, लक्ष्मी, सूर्य, चन्द्रमा,
बिजली, सौवर्णतारक, सब ज्योतियोंकी ज्योति और दीपज्योतिहो
२३ जो लक्ष्मी पृथ्वी में पुण्यकारी दीपावली में कार्तिक में गौवों
के शालामें स्थित है वह लक्ष्मी हमको वर देनेवाली हो २४ महा-
देव और पार्वतीजी क्रीड़ासे जुआं खेलनेलगे थे पार्वतीजी ने गऊ
रूपसे स्थित लक्ष्मीजी की पूजाकी थी २५ इससे पूर्वसमयमें उन्हों
ने जुआं में महादेवजीको जीतकर नग्न उनको छोड़दियाथा इससे
महादेवजी दुःखी और पार्वतीजी नित्यही सुखमें स्थित रहती हैं २६
जिसकी पहले जीत होती है तिसको सालभरतक सुख रहताहै इस
प्रकार अर्द्धरात्रि प्राप्त होने में मनुष्य जब सोजावें २७ तो प्रसन्न
हुई नगर की स्त्रियां नगारा और डिण्डिमके शब्दों से अलक्ष्मी को
घरके आंगनसे निकालदेवें २८ जुआंमें जिसकी पहले हार होती
है उसको सालभरतक सुख नहीं रहता परेवामें प्रातःकाल सूर्य के
उदय समयमें गोवर्द्धन की पूजा करनी चाहिये और रात्रिमें जुआं

का खेल होना चाहिये २९ फिर चलाने और दोहनेसे वर्जित गौवें भूषणयुक्त होनी चाहियें हे गोवर्द्धन, हे पृथ्वीके आधार, हे गोकुल की रक्षा करनेवाले ३० हे विष्णुजीकी भुजासे ऊंचे किये गये आप करोड़ गौवोंके देनेवाले हूजिये और जो लोकपालोंकी लक्ष्मी गऊ रूपसे स्थितहै ३१ और यज्ञके लिये घीको देती है वह हमारे पापों को नाश करे गौवें हमारे आगे, पीछे और हृदयमेंहों और गौवोंके वीचमें मैं वसूं ३२॥

इति गोवर्द्धनपूजा॥

फिर सद्भावसे देवता और सत्पुरुष मनुष्योंको प्रसन्नकर औरों को अन्नपानों से और पण्डितों को वाक्यके दानसे प्रसन्न करे ३३ और कपड़े, पान, दीप, फूल, कपूर, केसर और अनेकप्रकारके भोजनके पदार्थों से घरके वसनेवालों को ३४ दानों से ग्रामके श्रेष्ठों को राजा प्रसन्नकरै पैदल के जनसमूहों को धन, घींचके गहने और सुन्दर वहूटों से प्रसन्न करै ३५ अपने मंत्रियों और भैयाचारों को यथोचित प्रसन्नकर मल्ल, नटों को भी प्रसन्नतायुक्त करै ३६ फिर वैल और भैंसों को औरों से युद्धकरावे और दूसरे योधाओंको भी युद्ध कराकर पैदल को अलंकृत करै ३७ मंचानपर चढ़कर राजा नट नाचनेवाले और चारणों को देखे युद्धकरावे वसावे गऊ और भैंस आदिकको उनको देवे ३८ वछवों को गौवों से उक्ति प्रत्युक्ति वादनसे खिचावे तदनन्तर दिनके चौथे पहर में पूर्वदिशा में ३९ किलाके खम्भ या वृक्षमें मार्गपाली वँधावे जो कि कुशकाशोंकी वनी हो सुन्दर, वहुत लम्बकों से युक्तहो ४० फिर हाथी और घोड़ों को देखकर मार्गपाली के तले प्राप्त करै गौवोंसे वैल, भैंसा और घं वँधीहुई भैंसियोंको भी नीचे प्राप्तकरै ४१ होम करनेवाले द्विजश्रेष्ठ से मार्गपालिकाको वँधावे तदनन्तर इस मन्त्रसे नमस्कारकरै ४२ कि हे मार्गपालि तुम्हारे अर्थ नमस्कार है तुम सवलोकों को सुख देनेवाली हो तुम्हारे नीचे गौवें; वड़े वैल, ४३ राजा, राजाओं के पुत्र और विशेषकर ब्राह्मण लोग प्राप्त होते हैं मार्गपालीको अच्छीत रहसे उल्लंघन करनेवाले रोगरहित और सुखीहोते हैं ४४ इस म

को कर रात्रिमें दैत्योंके पति बलिजीकी पूजाकरै साक्षात् भूमिमें मण्डल बनाकर ४५ दैत्येन्द्र बलिजीको पांचरंगके वर्णोंसे लिखै जो कि सब गहनों से पूर्ण और विंध्यावलिसे युक्तहो ४६ और कूष्माण्ड, मय, जम्भ, उरु और मधुदानव से भी युक्तहो और सम्पूर्ण, प्रसन्नमुख,मुकुट और कुण्डल धारणकिये ४७ दो भुजाके दैत्यराज को अपने घरके मध्य सुन्दर शालामें बनवाकर पूजनकरै ४८ माता भ्रातृजन और बन्धुओं सहित संतुष्ट मनुष्य कमल,कुमुदके फूल, कह्लार, लालकमल,४९ चन्दन, पुष्प, दूधसमेत अन्नकी नैवेद्य, गुड़, खीर,मदिरा,मांस और देवताओं के स्वादलेने के योग्य चूसने और खानेकी वस्तुओं से ५० जो मनुष्य इस मंत्रसे मंत्री और पुरोहित समेत राजाबलि की पूजा करताहै उसको सालभरतक सुखहोताहै ५१ कि हे बलिराज, हे विरोचनके सुत, हे प्रभुजी, हे होनेवाले इन्द्र, हे देवताओं के शत्रु आपके नमस्कारहै यह पूजा ग्रहणकीजिये ५२ इसप्रकार पूजाकी विधिकर तिसपीछे रात्रि में जागरणकरै, नट, नाचनेवाले और गानेवाले मनुष्यों से नाच और गानकरावै ५३ और घरके अन्त, सपर्या में सफ़ेद चावलों से बलि राजाको स्थापितकर फल और फूलों से पूजनकरै ५४ हे कार्तिकेय राजाबलिहीका उद्देश कर सब करना चाहिये जिन जिनको तत्त्वदर्शी ऋषि अक्षय कहते हैं ५५ जो कुछ थोड़ा या बहुत यहांपर दान दियाजाता है वह सब नाशरहित, शुभ और विष्णुजीको प्रीतिकरनेवाला होताहै ५६ रात्रि में जे मनुष्य तुम्हारी बलिकी पूजा नहीं करते हैं उनका वेदरहित सबधर्म तुममें स्थितहो ५७ हे वत्स कार्तिकेय प्रसन्नहोकर विष्णुजी ने राजाबलिको असुरोंका उपकार करनेवाला भारी उत्सव दियाहै ५८ तबसे लेकर कौमुदी सदा प्रवृत्तहै जोकि सब उपद्रव और सब विघ्ननाशनेवाली ५९ मनुष्यों के शोकनाशनेहारी, कामना, धन, पुष्टि और सुखदेनेवाली है कुशब्दसे पृथ्वी जाननी चाहिये मुद शब्दसे आनन्द इन दो शब्दों से ६० धातुके भावमें निगमों करके यह कौमुदीहुई है जिससे पृथ्वी में अनेकभावों से मनुष्य परस्पर आनन्द को प्राप्तहों ६१ हृष्टपुष्ट, सुखसे युक्तभीहों तिसी से यह कौमुदी

हे षण्मुख जिसमें राजालोग पापनाशने के लिये बलिको कुमुद देते हैं तिसीसे यह कौमुदी कहाई कार्तिकमें वर्ष वर्ष में एकही दिन रात पृथ्वी में आदर्शकीनाईं राजाबलिको देना चाहिये जो राजाकरताहै तिसकी राज्यमें व्याधि और भय नहीं होता ६२।६३।६४ सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य और उत्तम सम्पत्ति भी तिसके होती है सम्पूर्ण मनुष्य रोगरहित और सब उपद्रवों से वर्जितहोते हैं ६५ कौमुदी पृथ्वी में भावकरनेको कीगई है इसमें जो जिसभावसे स्थितहोताहै ६६ प्रसन्नभावसे स्थितहोने में सालभरतक प्रसन्न, दुःखभाव से वर्षभर दुःख, रोनेमें सालभर रोना, हर्षभावसे वर्षभरहर्षित, ६७ भुक्तमें वर्षभर भोक्ता और स्वस्थमें एक सालतक स्वस्थ होगा तिससे अच्छे प्रसन्न मनुष्यों करके कौमुदी करनी चाहिये ६८ कार्तिकमें यह वैष्णवी और दानवी तिथि कही है ६९ जे मनुष्य अच्छे भाव से बलि राजाकी पूजा, दीपका उत्सव और इसी उत्सवसे उत्पन्न सब जनों को प्रसन्न करते हैं उनके दान उपभोग सुख और बुद्धिसेयुक्त कुलों का पूरावर्ष प्रसन्नतापूर्वक प्राप्त होता है ७० हे स्कन्द ये द्वितीय आदिक तिथि चारमहीनों से निश्चय सुनीगई हैं वर्षाकालमें शुभ की देनेवाली हैं ७१ श्रावणके महीने में परेवा, भादों में द्वितीया, कुंवारमें तीज और कार्तिकमें चौथिहै ७२ श्रावणके महीनेमें कलुषा, भादों में अमला, कुँवारमें प्रेतसंचारा और कार्तिक में याम्यका कहाती है ७३ कार्तिकेयजी बोले कि किस कारणसे कलुषा, निर्मला, प्रेतसंचारा और याम्या कहीगई है ७४ सूतजी बोले कि इसप्रकार के कार्तिकेयके वचन सुन भूतों के ऊपर कृपा करनेवाले वृषभध्वज भगवान् महादेवजी हँसकर मीठे वचन बोले ७५ कि पूर्वसमय में वृत्रासुरके मारडालने के पीछे इन्द्रकी राज्यमें ब्रह्महत्याके दूर करने के लिये अश्वमेधयज्ञ प्रवृत्तहुआ ७६ और इन्द्रने क्रोधसे वज्र से ब्रह्महत्या को मारा तो वह पृथ्वी में छःप्रकारकी हुई पेड़, जल, पृथ्वी, ७७ स्त्री, गर्भहत्यावाले और अग्नि में क्रम से बँटगई तिस पापके सुनने के पहले द्वितीयाके दिनसे ७८ स्त्री, पेड़, नदी, पृथ्वी, अग्नि और भ्रूणहत्यावाले का पापयुक्त घर हुआ इससे कलुषा

हाई ७९ मधु,कैटभ दैत्योंके रक्तमें पहले पृथ्वी डूबगई थी केवल
ाठ अंगुल पवित्र रहगई थी और स्त्रियोंका रज पाप होताहै ८०
दियां वर्षाकाल में सब पापयुक्त होती हैं अग्निके ऊपर मषीमल
ताहै पेड़ गोंदसे मलिनहोते हैं और गर्भहत्यावाले के संगसे पाप
ताहै ८१ परेवामें देवता, ऋषि और पितृधर्म्मों की निन्दा करने
ले, नास्तिक, मूर्ख पाप करते हैं तिससे यह कलुषा कहाई ८२
नके वाणी के मलसे द्वितीया पवित्र होती है तिससे यह निर्म्मला
हाई अनध्यायों में शास्त्रों को ८३ सांख्यक, तार्किक और वेद के
ाननेवाले पढ़ाते और पढ़ते हैं तिनके शब्द अपशब्द से उत्पन्न
लसे द्वितीयामें पवित्रता होती है इससे यह द्वितीया निर्मला क-
ाई ८४ हे वत्स भादों में कृष्णजी के जन्मसे तीनोंलोक पवित्रहुए
इससे पण्डितोंकरके यह निर्मला तिथि कहीगई ८५ अग्निष्वात्ता
र्हिषद आज्यप, सोमप, पितृ, पितामहोंका प्रेतसंचार होताहै इस
यह प्रेतसंचरा कहाई ८६ प्रेत पितर कहाते हैं उनका उसमें च-
ना होताहै पुत्र पौत्र और कन्याके पुत्र स्वधा मन्त्रों से पूजनभी
ितरोंका करतेहैं ८७ और श्राद्ध,दान और यज्ञों से पितर तृप्तहो
र जाते हैं इससे प्रेतसंचरा कहाई पितृपक्षों में प्रेतोंका संचार पृ-
ी में दिखाई देताहै ८८ तिससे यह प्रेतसंचारा कहाई और य-
राजका मनुष्यलोग इसीमें पूजनकरते हैं ८९ तिसीसे यह याम्य-
ा कहाई यह हमने सत्य सत्य कहा है इस कार्तिकमाहात्म्य को
ो उत्तम मनुष्य सुनते हैं ९० उनको कार्तिक स्नानसे उत्पन्न पुण्य
निश्चय होताहै ९१ कार्तिककी द्वितीयामें पहले पहरमें यमुनाजी में
नुष्य स्नानकर यमराजजी को पूजै तो यमलोकको नहीं देखे ९२
शौनक कार्तिककी शुक्लपक्षकी द्वितीयामें यमराज यमुनाजी करके
अपने घरमें पूजनकर भोजन कराये गये थे ९३ द्वितीयामें महान्
ान और नरकवाले तृप्त कियेजाते हैं पापों से छूटकर सब बन्धनों
े छूटजाते हैं ९४ जे आशंसित,संतुष्ट और इच्छापूर्वक स्थितहोते
ैं उनका महोत्सववृत्त यमराजके यहां सुख देनेवाला है ९५ ॰
त यह यमद्वितीया तीनोंलोकमें सुनीजाती है तिससे पण्डित ल

को अपने घरमें नहीं भोजन करनाचाहिये ९६ स्नेहसे बहनके हाथ
से भोजनकरना पुष्टिका बढ़ानेवालाहै और बहनोंको विधानसे दान
देने चाहिये ९७ सोने के गहने, कपड़े, पूजा और सत्कारसंयुक्त सगी
बहनके हाथ से भोजन करना चाहिये ९८ सबको बहनके हाथ से
भोजन करना योग्यहै क्योंकि यह भोजन बलका बढ़ानेहाराहै का
र्तिककी शुक्लपक्षकी द्वितीयामें यमुनाजी ने अपने भाई यमराजको
पूजा और तृप्तकियाथा ९९ भैंसेपर सवार, दण्ड और मुद्गरको धा
रण करनेवाले, प्रभु, प्रसन्न दूतोंसे आच्छादितहैं तिन यमराजजी
के नमस्कारहै १०० जिन्हों ने सुवासिनी बहनोंको कपड़े और दा
आदि से प्रसन्नकिया उनके सालभरतक लड़ाई और शत्रु से भ
नहीं होताहै १०१ हे पापरहित कार्तिकेय पुत्र यह धन, यश, उम
धर्म, काम और द्रव्यका देनेवाला सम्पूर्ण रहस्य समेत मैंने तुम
कहा १०२ जिस तिथिमें बहन की मित्रतासे यमुनाजी ने यमरा
जीको भोजन करायाथा उसी तिथि में बहन के हाथसे जो भोज
करताहै वह द्रव्य और उत्तम सम्पदाओंको प्राप्त होताहै १०३

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये
द्वाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः१२२॥

एकसौतेईसका अध्याय॥

महीनेभर व्रतकरनेका कथन॥

कार्तिकेयजी बोले कि हे भगवन् महादेवजी व्रतोंका उत्तम व्र
महीनेभर व्रतकीविधि और इसका जैसा कहाहुआ फल इन सबक
सुननेकी इच्छाकरताहूं १ जिसप्रकार मनुष्योंको करनी योग्यहै औ
जैसी व्रतचर्या होतीहै जिसप्रकार पहले आरम्भ और जैसे समा
होताहै २ हे पापरहित, देवताओं में श्रेष्ठ महादेवजी जितनी संख्
यह व्रतकरना चाहिये तिसको विस्तारसे हमसे कहिये ३ तब श्री
महादेवजी बोले कि हे पापरहित, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, कार्तिकेय तुमने
बहुतअच्छा प्रश्नकिया जो कुछ कि पूछा तिसको मैं कहताहूं मेरे क
हनेको भक्तिसे सुनिये ४ देवताओं में जैसे गङ्गाजी श्रेष्ठहैं, तपनेहा

में सूर्य, पर्वतों में सुमेरु, पक्षियों में गरुड़,५ तीर्थों में गंगा, प्रजाओं
में बनियां और तैसेही सबव्रतों में महीनेभरका व्रतश्रेष्ठहै ६ सबव्रतों
सबतीर्त्थों और सबदानों के उत्पन्न फलको महीने भर व्रत करने
वाला प्राप्तहोताहै ७ अग्निष्टोम आदिक अनेकप्रकार की बड़े द-
क्षिणावाली यज्ञों से वह फल नहीं मिलताहै जो महीनाभरके व्रतके
करने से मिलताहै ८ उसीने जप, हवन, दान, तपस्या और स्वधाकी
है जो मनुष्य विधिपूर्व्वक महीनाभर व्रतकरताहै ९ वैष्णव यज्ञका
उद्देशकर जनार्द्दनजीको पूजकर महीनेभर व्रतकरै १० जैसे कहेहुए
उसप्रकार वैष्णव द्वादशीआदिक पुण्यकारी सबव्रतकर तिसपीछे
महीने भर व्रतकरै ११ अतिकृच्छ्र, पाराक और चान्द्रायण करके
बकाबल, अबल जानकर महीनेभर व्रतकरै १२ हे मुनिजी वान-
प्रस्थ, संन्यासी, नारी, वा विधवास्त्री गुरु और ब्राह्मण की आज्ञासे
महीनेभर व्रतकरै १३ कुंवारके शुक्लपक्षकी एकादशी में व्रतकर ती-
स दिनके व्रतको ग्रहणकरै १४ वासुदेवजी को पूजनकर जो मनुष्य
व कार्तिकमहीनेभर व्रतकरताहै वह मुक्तिके फलका भागी होता
१५ भक्तिसे भगवान्के स्थानमें तीनकाल सुन्दरकुमुद, मालती,
इन्दीवर, पद्म, सुगन्धयुक्त कमल, १६ केसर, खस, कपूर, श्रेष्ठ च-
न्दनों के लेपन, नैवेद्य, धूप और दीपआदिकों से जनार्दनजी को
पूजन करै १७ मनसा, कर्मणा, वाचा गरुड़ध्वजजी को पूजन करै
मनुष्य स्त्री विधवा स्त्री बड़ी भक्ति से युक्त इन्द्रियजित होकर इस
व्रतको करतेहुए १८ विष्णुजी के नामोंका उच्चारण रातदिनकरै झूठ
बोलनेसे वर्जित भक्तिसे विष्णुजीकी स्तुति पढ़नी चाहिये १९ सब
प्राणियों के ऊपर दयायुक्त, शान्तवृत्ति, हिंसारहित, सोताहुआ वा
बाहरके आसनमें स्थित होकर वासुदेवजी का कीर्त्तनकरै २० आ-
लोकन गंधादि से स्वादित, परिकीर्तितको स्मरणकर अन्न के ग्रास
और ग्रासोंके संप्रमोक्षणको वर्जितकरै २१ देह और शिरमें उबटन,
लेपन समेत पान व्रतमें स्थित मनुष्य इन सबको और औरभी बुरी
वस्तुओंको छोड़देवे २२ व्रतमें स्थित पुरुष कुछ न छुवे विकर्म्म में
स्थितको न चलावे देवता के स्थान में स्थितहोकर गृहस्थ मनुष्य

व्रतको करै २३ मनुष्य, स्त्री, वा अच्छे चालचलन की विधवा
जिसप्रकार कहीहुई विधिहै उससे महीनेभर व्रतकर वासुदेवजी
पूजनकरै २४ इसप्रकार कम वा अधिक न होकर तीस दिनका म
का व्रतकर संयतआत्मा और जितेन्द्रिय मनुष्य २५ फिर द्वाद
में पुण्यकारी गरुड़ध्वजजी को फूलकेमाला, चन्दन, धूप और
लेपनों से पूजनकरै कपड़े गहने और बाजाओं से भी
को प्रसन्नकरै भक्तिसे हरिजीको तीर्थके चन्दन और जलोंसे स्ना
करावै २६। २७ चन्दन से अंगका लेपनकर धूप और फूलोंसे
लंकृतकरै फिर उत्तम ब्राह्मणों को भोजनकराकर कपड़े और दा
आदिक देकर २८ उनको दक्षिणा भी देवे और नमस्कारकर क्ष
करावे और पूजनकर बिदाकरै २९ इस प्रकार द्रव्यके अनुसार भ
युक्त होकर शक्तिसे महीने भरका व्रतकर जनार्दनजी को पूजन
३० ब्राह्मणों को भोजन करावे तो विष्णुलोक में प्राप्त होताहै
प्रकार महीने भरके व्रतके अन्त में तेरह ब्राह्मणोंको वरणकर
जिस विधिसे निर्यापनकरै तिसको सुनो एकादशी में व्रतकर वै
यज्ञ करावे ३२ और आचार्यकी आज्ञासे हरि देवेशजीको पूज
यथाशक्ति गुरुजीको भी पूजकर नमस्कार करै ३३ तदनन्तर
त्यन्तशुद्धकुलके चरित्रवाले और विष्णुजी के पूजनमें तत्पर
ब्राह्मणों के पहले नमस्कार कर भोजन करावे फिर पान, कप
जोड़े, भोजन, आच्छादन, ३४। ३५ योगपट्टसूत्र और जनेऊ
उनको पूजन और प्रणामकर ३६ तिसपीछे आस्तरण, आच्छ
और तकियासमेत श्रेष्ठ, अलंकृत शय्याको भक्तिसे पूजै ३७
अपनी शक्तिसे अपनी मूर्त्तिको सुवर्ण की बनवाकर तिस शय्य
धरकर माला आदिकोंसे पूजनकर ३८ आसन, खड़ाऊं, छतुर
कपड़े, जूते और पवित्र फूल शय्यामें धरै ३९ इसप्रकारकी श
को सङ्कल्पकर तिन ब्राह्मणोंके नमस्कारकर अनुमोदके लिये प्र
नाकरै कि मैं विष्णुलोक को जाता हूं ४० फिर मनुष्य रोगर
अत्यन्तप्रिय विष्णुजी के स्थानको जावै और मण्डपमें स्थित
ब्राह्मणोंसे वारंवार यह कहै ४१ कि हे उत्तम ब्राह्मणो में मन्त्र,

और क्रियासे हीनहूं आपके वचनके प्रसाद से जैसी कि महीने के
व्रतकी विधि कहीहुई है वह सब संपूर्ण होजावे ४२ ॥

तिश्रीपाद्मेमहापुराणे पञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेश्रीकृष्णसत्यभामा-
संवादेमासोपवासकथनंनामत्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३ ॥

एकसौचौबीसका अध्याय ॥

कार्तिकसुदी एकादशी से पूर्णमासीपर्य्यन्त भीष्मपञ्चकनाम व्रतका वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे देवताओं में श्रेष्ठ कार्तिकेय पाप नाशने
वाला, पुण्य बढ़ानेहारा और तत्त्वबुद्धियों को मुक्ति देनेवाला प्रबो-
धिनी एकादशी का माहात्म्य सुनो १ तबतक भगीरथकी लाईहुई
गंगाजी पृथ्वी में गर्जती हैं जबतक पाप नाशनेवाली कार्तिकमें हरि-
बोधिनी नहीं आती २ तीर्थ, समुद्र और तालाबभी तबतक गर्जते
हैं जबतक कार्तिकमें विष्णुजी की तिथि नहीं प्राप्तहोती ३ अश्व-
मेध हजारयज्ञ और राजसूय सौ यज्ञका फल प्रबोधिनी में एकही
व्रतसे होताहै ४ स्थावर जंगम तीनोंलोक में जो दुर्लभ और दुःख
से प्राप्तहै उसकोभी मांगनेसे प्रबोधिनी देती है ५ ऐश्वर्य्य,संतति,
ज्ञान, राज्य और सुख सम्पदाको हरिबोधिनी व्रत करनेसे देती है
६ मेरु और मन्दर पर्व्वतके बराबरभी इकट्ठे कियेहुए पापोंको ए-
कही व्रत से हरिबोधिनी जला देती है ७ हे नरशार्दूल जो मनुष्य
विधिपूर्वक स्वभावही से प्रबोधिनी में व्रत करताहै वह जैसा कहा
हुआहै वैसे फलको प्राप्त होताहै ८ पूर्व्वसमय के हजारों जन्मों में
जो पाप इकट्ठा किया हुआ है वह प्रबोधिनी में जागरणसे रुईकी
राशिकी नाईं जलजाताहै ९ हे कार्तिकेय जागरणका लक्षण कहता
हूं सुनो जिसके जाननेसे जनार्दनजी दुर्लभ नहीं हैं १० गीत,बाजा,
नाच, पुराणका पढ़ना, धूप, दीप, नैवेद्य, फूल, चन्दनका लेपन,११
फल, अर्घ्य, श्रद्धा, दान, इन्द्रियोंका संयम, सत्यसे युक्त, नींदरहित,
आनन्द और क्रिया से युक्त १२ आश्चर्य्य और उत्साहसहित,
आलस्य आदिकों से वर्जित, प्रदक्षिणा आदिसे संयुक्त, नमस्कार
आगेकर १३ आरतियों से युक्त अच्छी तरह से चित्त लगाकर हे

महाभाग पहर पहर में भगवान् की आरती करै १४ एकाग्र मन होकर इनगुणों से युक्त भगवान् के जागरणको जो करताहै उसका फिर जन्म नहीं होताहै १५ वित्तशाठ्यसे वर्जित जो मनुष्य भक्तिसे एकादशी में जागरण करताहै वह परमगति को प्राप्त होताहै १६ जो कार्तिकमें नित्यही पुरुषसूक्त से भगवान्को पूजताहै तो उसने करोड़हज़ार वर्ष भगवान् को पूजा १७ पञ्चरात्र में कहेहुए यथोक्त विधिसे कार्तिकमें नित्यही पूजता है तो वह मनुष्य मुक्तिका भागी होताहै १८ नमोनारायणाय इससे जो कार्तिकमें भगवान् को पूजता है वह नरकके दुःखोंसे छूटकर रोगरहित पदको प्राप्त होता है १९ भगवान्का सहस्रनाम और गजराजका मोक्षण जो कार्तिकमें पढ़ताहै तो उसका फिर जन्म नहीं होता है २० कार्तिककी द्वादशी में जागरण करनेवाला करोड़ हज़ारवर्ष और सौ मन्वन्तर स्वर्ग में वसताहै २१ और तिसके कुलमें सैकड़ों हज़ारों उत्पन्न होकर विष्णुजी के पदको प्राप्त होते हैं तिससे जागरण करै २२ कार्तिक में पिछले पहरमें जो स्तुति और गानकरता है वह पितरों समेत श्वेतद्वीप में बसता है २३ हे मुनिश्रेष्ठो कार्तिक में दिनके अन्तमें भगवान् को नैवेद्यदान करने से उतनेही युग मनुष्य स्वर्ग में बसता है २४ हे मुनिश्रेष्ठ मालती और कमल से पूजन नाशरहित इनसे जो देव देवताओं के स्वामी को पूजता है वह परमपद प्राप्त होताहै २५ कार्तिक के शुक्लपक्ष में मनुष्य एकादशी का कर सवेरे अच्छे घड़ोंको देवे तो हमारे स्थानको प्राप्तहो २६ स्वामिकार्तिकेय जी बोले कि हे भगवन् महादेवजी पुण्यकारी, व्रतोंमें श्रेष्ठव्रत, भीष्मपंचक कार्त्तिक महीने में करना चाहिये इसको कहिये २७ हे देवताओं में श्रेष्ठ, मुनियों के पितामह तिस व्रत विधान और फलभी हमारे ऊपर प्रसन्नहोकर हमसेकहिये २८ महादेवजी बोले कि हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ महापुण्यकारी व्रतको कहताहूं जिस कारण से इस पांचदिनवाले व्रतको भीष्मजी ने वासुदेवजीसे प्राप्त कियाथा तिसीसे यह भीष्मपञ्चक कहाताहै इसव्रत गुण कहनेको भगवान्को छोड़कर और कोई समर्थ नहीं है २९

कार्त्तिक के शुक्लपक्ष में पुराने धर्म्म को सुनो सतयुग आदियुगों में वसिष्ठ, भृगु और गर्गादिकों ने इस व्रतको कियाथा ३१ अम्बरीष ने भोगआदिकों से त्रेतायुग आदि में कियाथा ब्राह्मणोंने जप होम और क्रियाआदिकों से ब्रह्मचर्य से कियाथा ३२ सत्य और शौच में परायण क्षत्रिय और वैश्यों ने भी कियाथा सत्यसे हीन बालचेतों को यह दुःखसे करने योग्यहै वे नहीं करसक्ते हैं ३३ इसको मुनि-लोग दुष्कर भीष्म कहते हैं यह प्राकृत मनुष्यों के करनेयोग्य नहीं है वे नहीं करसक्ते हैं हे विप्रों में श्रेष्ठ जो इसको करताहै उसने सब कुछ किया है ३४ यह व्रत महापुण्यकारी और महापापों का नाश करनेवाला है इससे यत्नसे मनुष्यों को भीष्मपञ्चक करना चाहिये ३५ कार्त्तिक के शुक्लपक्ष की एकादशी में अच्छी विधिसे स्नानकर पांचदिनवाले व्रतको ग्रहणकरै ३६ प्रातःकाल स्नानकर तथा मध्याह्नही में व्रत करनेवाला विशेषकर नदी वा झरनेके गड़हेमें गोबरको प्राप्तहोकर स्नानकर ३७ यव, व्रीहि और तिलोंसे क्रमसे अच्छीप्रकार पितरोंको तर्पणकर मौनहोकर दृढ़ व्रत करनेवाला धोये कपड़े पहनकर ३८ भीष्मजी को जलदान, प्रयत्न से अर्घ्य और [भी]ष्मजी की पूजाकर यत्नसे दान देवे ३९ और विशेषकर यत्न से [ब्रा]ह्मण को पञ्चरत्नभी देवे और लक्ष्मीयुक्त, प्रभु वासुदेवजी की भी [पूज]ाकरे ४० भीष्मपञ्चक में भगवान् की पूजाकरे तो उसके ऊपर [क]ोड़ कल्पतक भगवान् प्रसन्न रहते हैं ४१ और सालभरके व्रतों [का] सम्पूर्ण फलभी उसको मिलताहै जलदान देकर अर्घ्यका दान [४]२ जो मनुष्य इस मंत्रसे करताहै वह मुक्तिका भागी होताहै ४३ [वैय]ाघ्रपदगोत्र, सांकृति में श्रेष्ठ, पुत्ररहित, भीष्मवर्मा को इस जल [को] देताहूं ४४ वसुओं के अवतार, शंतनु केपुत्र, जन्मसे ब्रह्मचारी [भी]ष्मजी को अर्घ्य देताहूं ४५ इति अर्घ्यमन्त्रः॥ इस विधिसे जो [पञ्च]वक को समाप्त करता है उसको निस्सन्देह अश्वमेध के समान [पु]ण्य प्राप्तहोती है ४६ हे पुत्र यत्नसे पांचदिन नियम करना चाहिये [न]ियमके विना व्रतके कर्म से कुछ नहीं होगा ४७ उत्तरायणसे [भी]ष्मजी को भगवान् ने दियाथा उत्तरायणसे हीन और लग्न

शुद्धिके विना भी सब शुभही है ४८ फिर सब पाप नाश करनेवाले हरि, देवजी को पूजे तदनन्तर यत्नसे भीष्मपञ्चक करना योग्य है ४९ और भक्तिसे जल, शहद, दूध, घी, पञ्चगव्य और गंध चन्दन जलसे विष्णुजी को स्नान करावे ५० सुगन्धयुक्त चन्दन, कपूर और खस मिलेहुए केसर से केशव गरुड़ध्वजजी को लेपनकरै ५१ सुन्दर फूल गंध और धूपसे युक्तकर पूजनकरै और भक्तिमान् मनुष्य घी सहित गुग्गुलुको कृष्णजी के अर्थ जलावे ५२ पांचदिनोंमें दिन रात्रि दीपक देवे और देवदेवजी को सुन्दर अन्नकी नैवेद्य देवे ५३ इसप्रकार देव भगवान्का स्मरण और प्रणामकर उनको पूजे और ॐनमोवासुदेवाय यह मन्त्र एकसौआठबार जपै ५४ घी मिलेहुए तिल ब्रीहि और यव आदिकों से स्वाहाकारसेयुक्त षडक्षर मन्त्र से हवनकरै ५५ पश्चिमकी संध्याकी उपासनाकर गरुड़ध्वजजी को प्रणामकर पूर्ववत् मंत्रको जपकर व्रत करनेवाला पृथ्वीमें सोवे ५६ यह सबविधि पांच दिनतक करनी चाहिये अब इस व्रतमें विशेष और अधिकको सुनिये ५७ पहलेदिन भगवान्के चरण व्रतकरने वाला कमलों से पूजे दूसरे दिन उनकी गांठको बिल्वपत्रसे पूजे ५८ तदनन्तर देवदेव चक्रपाणिजी के मस्तकको कार्तिकमें भक्तिसे मालतीसे पूजे और भगवान्ही में मन लगालेवे ५९ और समासमें एकादशी में भगवान् को पूजनकर गोबर को मुखमें खाकर अच्छी तरहसे एकादशीका व्रतकरै ६० और व्रत करनेवाला द्वादशी में मंत्र वत्भूमिमें गोमूत्रको खावे त्रयोदशी में दूध और चतुर्दशी में दही ६१ को खाकर देहकी शुद्धिके लिये चारदिन लंघनकर पांचवें दिन स्नानकर विधिपूर्वक केशवजीको पूजनकर ६२ भक्तिसे ब्राह्मणों को भोजन कराकर उनको दक्षिणादेवे और बुद्धियुक्तब्रह्मचर्यसे पापबुद्धि को त्यागकर ६३ मदिरा मांस और पाप करनेवाले मैथुनको भी त्यागे और सागके आहारसे मुनियोंके अन्नों से कृष्णजी के पूजनमें मनुष्य परायणहोवे ६४ तदनन्तर रात्रि में पहले पंचगव्य भोजनकर फिर भोजनकरै इसप्रकार अच्छीतरहसे समाप्तकर जैसा कहाहुआ है वैसे फलको प्राप्तहोवे ६५ मदिरापीनेवाला जो जन्मसे मरणपर्यंत भी

दिरापीवे तो वहभी इस भीष्मव्रतको करके परमपदको प्राप्तहोवे ६६ ब्राह्मणके वाक्यसे स्त्रियोंको धर्मका बढ़ानेवाला करना चाहिये और विधवास्त्रियोंको भी मोक्षसुखकी वृद्धिके लिये करना योग्यहै ६७ सब कामनाकी वृद्धि और पुण्यके अर्थ नित्यस्नान तथा दानमें जे कार्तिककी उपासना करते हैं ६८ उन विष्णुके ध्यानमें परायणों करके वैश्वदेव जोकि आरोग्य और पुत्रकादेनेवाला और महापापोंका नाशकरनेवालाहै वह करना चाहिये ६९ हे कार्तिकेय तीर्थों में सबयत्न से कार्तिकका व्रतादिककरै क्योंकि कार्तिकही में सालभरके व्रतोंकी समाप्ति कही है ७० पापकीमूर्ति भयानक कपड़ों से अत्यन्त भयंकर बनावे जो कि तलवार हाथमें लिये, विनिष्क्रान्ता, लोहकी डाढ़ों से युक्त, करालिनीहो ७१ वह तिलप्रस्थके ऊपर स्थापितकरै काले कपड़ोंसे उढ़ादेवे लालफूलोंका मुकुट और प्रकाशित सुवर्णका कुण्डल भी बनादेवे ७२ और श्रेष्ठभक्ति से धर्म्मराजके नामों से पूजनकर फूलोंकी अंजली लेकर इस मंत्रका उच्चारण करै ७३ कि जो अन्य जन्ममें वा इस जन्म में पापकियाहै वह आपके प्रसाद से नाशको प्राप्तहो ७४ इसप्रकार तिस सुवर्णकी मूर्तिको पूजकर यथाशक्तिसे वेदवादी ब्राह्मणोंकी भी पूजाकर ७५ अक्लिष्टकर्मवाले देवदेव कृष्णजी की प्रीतिके लिये ब्राह्मणको देदेवे कि धर्म हमारे ऊपर प्रसन्न हों ७६ और कथा बांचनेवालेको यथाशक्तिसे दक्षिणा, सोना और गऊदेवे कि कृष्णजी हमारे ऊपर प्रसन्नहों ७७ कृतकृत्य स्थितहोकर विरक्त और संयत भी होवे और अपनी शक्ति से औरोंको भी उत्तमदान देवे ७८ तो शान्तचित्त व्याधिरहित मनुष्य श्रेष्ठपदको प्राप्तहो फिर नीलकमलके दलों के समान श्यामवर्ण, चारडाढ़ें, चार भुजा, ७९ आठपांव, एक आंख, शंकुकर्ण, तीक्ष्णशब्द, जड़, दोजीभ, ताम्रवर्णनेत्र और सिंहकी खाल ओढ़ेहुए ८० महादेवजी की चिन्तनाकरै कि जिनका रूपही विद्यमान नहीं है इसको शरशय्या में प्राप्तहुए भीष्मजीने हमसे कहाहै ८१ हे युधिष्ठिर तिस दुष्कर भीष्मपंचकको मैंने तुमसे कहा जोकि धन और पुण्यका देनेवाला और पापका नाश करनेवाला महाव्रतहै ८२ जिसको भीष्मपंचक कहते

हैं यह पृथ्वी में प्रसिद्धहै एकादशीसे पूर्णमासी पर्यंत पांचदिन अ
हुएहैं इनमें दूसरे के यहांका भोजन निषिद्धहै और इस व्रतमें शु
फलको विष्णुजी देते हैं ८३ सूतजी बोले कि यह व्रत सबसे अ
धिक पुण्यकारी है संसार में इसका करना दुर्लभ है इस शास्त्रसा
समुच्चय, छिपेहुए को मैंने कहा है ८४ देवताओं का छिपानेवाल
सब अत्यन्त गुह्य और मोक्ष देनेवालाहै हे देवि एकपदमें सुन
नहीं गमन करनेवाली स्त्रियों में गमन करनेवाले ८५ कन्या औ
बहन के बेंचनेवाले भी पापसे छूटजाते हैं यह शास्त्र मोक्षदेनेवा
है और जनों में इसका प्रकाश नहीं होना चाहिये ८६ एकपद
सुनकर जो मनुष्य मोक्षको प्राप्त होताहै इससे यत्नसे छिपाना च
हिये और जे त्यागी मनुष्यहैं ८७ उनकी पुण्य हे कार्तिकेय स
सत्य नहीं कहसक्ते हैं यह सब कार्तिक का फल मैंने कहा ८८
विष्णुजी बोले कि महादेवजी ने हितकी कामनासे यह व्रत पुत्र
कहा तबतो पिताजी के वचन सुनकर कार्तिकेय आनन्द से पू
होगये ८९ और सब हाथ जोड़कर संसारकी आयु तिस महा
जीसे बोले कि हमलोग कार्तिकका फल सुनकर कृतकृत्य होगये
अब कुछ सुनने के योग्य नहीं है हमारे जन्मका फल प्राप्त हुआ
इस माहात्म्यको सुनकर जो पाठ करनेवाले को गऊ, पृथ्वी, से
और कपड़ों से पूजताहै तो कथा वांचनेवाले के पूजित होनेसे
ष्णुजी भी पूजित होजाते हैं क्योंकि कथा वांचनेवाला विष्णुजी के
तुल्यहै ९१।९२ तैसेही नित्य तिसको पूजन करै यदि सफल और
शुभकी इच्छाकरै और धर्मशास्त्र, पुराण और वेदविद्याआदिक ९३
की पुस्तक धर्मकी इच्छा करनेवाला कथा वांचनेवाले को देवे क्यों
कि पुराणविद्याके देनेवाले अपारफलके भोजी होते हैं ९४ जो भक्ति
से इसको पढ़ता और सुनकर धारण करताहै वह सब पापोंसे छूट
कर विष्णुलोक को प्राप्त होता है ९५ धन, धान्य, यश, पुत्र, उमर
और आरोग्य माहात्म्यके सुनने से निस्सन्देह प्राप्त होती हैं ९६॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकार्तिकमाहात्म्ये श्रीकृष्णसत्यभामासंवादेचतुर्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२४॥

एकसौ पचीसका अध्याय ॥

माघमाहात्म्य में भृगुजीका विद्याधर ब्राह्मणसे अनेक इतिहास कहकर उनकी कुरूपता नष्टकरना वर्णन ॥

ऋषि बोले कि हे सूतजी हे महाभाग संसार के हितकी इच्छा करनेवाले आपने कार्तिकका माहात्म्य जो कि भुक्ति और मुक्तिका देनेवालाहै वहकहा १ अब हे लोमहर्षणजी के पुत्र माघकामाहात्म्य कहिये जिसके सुनने से मनुष्यों का महान् सन्देह नाश होजाताहै २ हे महाभाग इस संसारमें पहले माघस्नान को किसने प्रकाशित कियाहै तिसके इतिहाससमेत माहात्म्य को कहिये ३ तब सूतजी बोले कि मुनिश्रेष्ठो तुम लोगों ने अच्छा प्रश्न किया है क्योंकि भगवान् में परायणहौ और आनन्दयुक्त भक्तिसे कृष्णकी कथा वारंवार पूंछतेहौ ४ मैं पुण्य बढ़ानेवाले और अरुणके उदयमें स्नान करनेवाले श्रोता पुरुषों के पाप नाशनेवाले माघ के माहात्म्य को कहताहूं ५ हे ब्राह्मणो एकसमय में नम्रतायुक्त पार्वतीजी संसारके कल्याण करनेवाले महादेवजी से उनके चरणकमलों को छूकर पूंछतीभई ६ कि हे देवदेव, महादेव, भक्तों के अभय देनेवाले, नाथ, संसारके स्वामी आप प्रसन्न हूजिये और जो कुछ पूंछतीहूं तिसको इसीसमय में कहिये ७ हे विभुजी आपसे पूर्वसमय में मैंने अनेक प्रकारके धर्म्म सुने हैं अब माघके माहात्म्य सुननेकी इच्छा करती हूं तिसको कहिये ८ इसको पहले किसने किया है क्या विधि और कौन देवता है यह सब विस्तारसे कहिये क्योंकि आप भक्तोंके ऊपर कृपा करनेवाले हैं ९ तब महादेव जी बोले कि यज्ञके अन्त के स्नान करनेवाले ऋषियों से मङ्गल कियेगये, सब नगरवासियों से पूजित, अपने पुरसे बाहर निकलेहुए १० राजाओं में श्रेष्ठ, शिकार खेलने में रसिक, राजा दिलीप कौतूहलसे युक्त, शिकारके व्यूह से युक्त, ११ जूतोंसे छिपेहुए पांवयुक्त, नीलपगड़ी धारे, हृदयमें बखतर से युक्त गोधा बँधेहुए अँगुलियों में भी बखतर धारे, धनुष हाथ में लिये, सरीसृप, १२ बँधीहुई छोटी तलवार और धनुषसमेत पैदलों

से सुन्दर कान्तार और वनों में १३ बड़े स्रोता नांघकर युवा सिंहके समान पराक्रमी राजा आनन्द से कुञ्जों में हरिणों को ढूंढ़ता हुआ तिन्हीं के साथ युद्धभी करताभया १४ और अपने नौकरों से यह कहताभया कि यह भागाहुआ हरिण मारिये२ फिर आपही कूदकर मारता१५ और इधर उधर वनस्थलीको देखताहुआ फिर प्राप्तहोता भया जोकि वनस्थली वृक्षोंमें उड्डीन डरेहुए लीन मयूरके समूहोंसे आकुल, हरिणियों के समूहोंसे वित्रस्त, दौड़तेहुए श्वापदों से दिङ्मुख, कहींपर फेर व फेत्कार तारा शब्दसे भयङ्कर,१६।१७ खड्गके समूहोंसे कहींपर हाथियोंकी शोभा धारण किये, कहींपर कोटरसंदष्ट घुग्घूके शब्दसे शब्दयुक्त, १८ कहीं कहींपर सिंहके पांवोंके चिह्नोंसे चिह्नयुक्त, कहींपर सिंहके नखसे निर्भिन्न रोहित रुधिरसे लाल,१९ कहींपर मोटेस्तनोंके भारसे पीड़ित चिकनी भैंसके समूहोंसे मनको जनाने मकानके आंगनकी पृथ्वीको सूचित करती हुई, २० कहींपर सघन वृक्षोंसे आच्छादित, वनके फूलोंसे सुगन्धयुक्त, कहींपर लता घरके द्वार होरहे, भँवरोंके शब्दोंसे अत्यन्त शोभायुक्त, २१ आधी निकली हुई केंचुलिवाले भयानक सांपों से बड़े विल भरेहुए और विलों में लीन अजगरोंसे भयानक, केंचुलि निकलीहुई नागिनियों से युक्त, २२ कहींपर दावानलकी ज्वाला और शिलाकी ज्योति से अत्यन्त सुन्दर, फूत्कार शब्दसे पूर्ण, हरिण और बाघों से आकुल २३ और कहीं कहींपर चौगड़ोंमें कुत्ताओंके समूह छूटेहुएहैं राजा छोटी तलैयों में विश्रामकर फिर दूसरे वनमें प्राप्तहुआ २४ इसप्रकार राजाके जाते और बहेलिया के समूहके कहतेहुए शब्दकरता हुआ हरिण वहींपर वन से निकला २५ जो कि स्फालवेग क्रम में आक्रान्त भयानक राह पृथ्वीकी जाता, कभी आकाश में चढ़जाता और कभी पृथ्वीमें दिखाई देता २६ टेढ़े स्रोतोंसे अत्यन्त गहरे, कांटेके वृक्षों से व्याप्त विषम वनमें प्रवेश करगया तब तो राजाभी उसके पीछे चला २७ दूरसे दूरदेशसे दूसरे देशमें जाताहुआ मनुष्यहीन वनमें पहुँचा तब राजाने हरिणको न देखा और वेगसे चलनेमें उसका गला और थोंच सूखगई २८ ताम्रवर्ण तालु और मुखहोगया पसीने

क्कभी होगया और उसकेसाथके भी पैदलवाले थकगये राजाके मुँह
। शब्दभी कष्टसे निकलताथा बड़ीभारी राह चलकर दोपहरमें वह
यासमे व्याकुलहुआ तो २९ आगे एकतालाब दिखलाईदिया जो
केसमुद्रकी स्पर्धा करताथा जिसके किनारे घनेवृक्षथे और वह निर्म-
। शुभ अच्छातीर्थथा ३० जिसमें सुंदरकमल फूलरहे थे मधुसे मत-
ाले भँवरेथे कमलिनीपत्रके पत्तोंसे इसप्रकार ढकेथे कि मानों मरकत
ाणिसे ढकेथे ३१ और स्वच्छन्द मछलियां उछलरही थीं जैसे साधु
ा मन स्वच्छ होताहै चलायमान जलचरों से मिलेहुए, लहरोंकी
ाक्तियोंसे शोभित, ३२ भीतर ग्राहगणों से क्रूर, दुष्टों के मनकी नाईं
। और कहींपर सेवारसे कृपणके मंदिरकी तरह नहीं जाने के यो-
यथा नानाप्रकारके पक्षी रात्रि दिन सब पीड़ा नाश कररहे थे ३३
ैसे सर्वस्वों से दाताको, शरणागतमें प्राप्तकी पीड़ा नाशकर रहा
ा और अपने जलोंसे श्वापदों को अपने पितरोंकी तरह तृप्तकर
हाथा ३४ जैसे चन्द्रमा दिन की संताप को हरता है तैसेही सब
ंतापको हरताथा ऐसे तालाब को देखकर राजा ग्लानिरहित हो
या जैसे पपीहा मेघको देखकर ग्लानिहीन होताहै ३५ वहां पर
ाजाने जल पिया और दोपहर की क्रिया की और सहायों समेत
शकारके मांसको भोजन किया ३६ और तालाबके किनारे सुन्दर
कथा कहते हुए धनुष में बाण लगाकर रात्रिमें स्थित होगये ३७
और बहेलिया संधान लगाकर पक्षियोंकी मार्ग रोकते भये इसप्र-
कार वीर वनमें हरिणों के बंधनको लगाकर भी स्थित होगये ३८
तो आधीरात में किनारे किनारे सुअरों का झुण्ड निकला जो कि
तालाबके कंदों में घूमताहुआ बहेलियों के समूह में गिरा ३९ तब
तो राजा ने सुअरों को मारा और बहुतों को बहेलियों ने भी मारा
क्षणमात्रहीमें सुअर मारकर पृथ्वी में गिरादिये गये ४० तिन को
देखकर अभिमानयुक्त बहेलिया घोरशब्द करनेलगे और आनन्द-
समेत दौड़कर राजाके पास आगये ४१ फिर वीरोंसे तिनको लेकर
तालाबके किनारे से अपने पुरके जानेकी कामनासे निकले तो राह
में तपस्वीको देखा ४२ जोकि ब्राह्मण, वृद्धहारीत नामवाले, शंख

और चक्र से अत्यन्त शोभित, दुष्कर और घोर नियमों से
देहवाले ४३ हाड़ही शेष रहनेवाले, बड़े दांत, प्रकाशित कठोर
चावाले, हरिणका चर्म धारणकिये, कोमलबल्कलसे आच्छादित
वेदका जप करतेहुए, नहँ, रोम और जटाको धारणकिये थे ऐसे
के स्थानवालेको देखकर संभ्रमसमेत राजाने मार्ग दिया ४५
शिरसे प्रणामकर हाथ जोड़कर खड़े होगये तब तो ब्राह्मणने
लंकारों से इनको ब्राह्मण निश्चयकर ४६ पराये उपकारकी वां
कल्याणके हेतु बोले कि हे राजन् इस शुभपुण्यकारी कालमें
लिये माघमहीने में तालाबमें सबेरेका स्नान छोड़कर जाते हो
तो राजा बोला कि हे ब्राह्मणोंमेंउत्तम मैं नहीं जानताहूं ४७।४८मा
स्नान का फल कैसाहै तिसको आप मुझसे विस्तारसे कहिये
प्रकार राजाके वचन सुन वैखानसमुनि बोले ४९ कि हे राजन्
गवान्, अंधकारके नाश करनेवाले, सूर्यनारायण जल्द उदय
चाहते हैं हमारा यह स्नानका समयहै कथाका अवसर नहींहै
स्नानकरके जाओ और अपने कुलके प्रभु वसिष्ठजी से पूंछो
कहकर तपस्वी मौनी सबेरे स्नानकेलिये निकलगये ५१ और
से पूरित, वीरदिलीप भी लौटकर यथाविधि स्नानकर फिर अ
नगरीमें प्राप्त होगया ५२ और अपने मन्दिरमें वानप्रस्थकी
को निवेदनकर फिर सफ़ेद घोड़ेवाले रथ में चढ़कर सुन्दर सं
छत्रचामरयुक्त ५३ गहनों समेत सुन्दर कपड़े पहनकर मंत्रियों
मेत वारंवार जय शब्दों को सुनताहुआ और मागध वन्दीजनों
स्तुति कियागया ५४ ऋषिके वचनको स्मरणकर वसिष्ठजीके स्थ
को प्राप्तहुआ और वहां पर विनयके आचारपूर्वक ब्रह्मर्षिको न
स्कार कर ५५ उनके दियेहुए आसनपर बैठा और अर्घ ग्रहण
लिया और आशीर्वादों से अलंकृतहुआ और जब मुनिने आन
समेत कुशलपूंछा ५६ तब राजा मुनिके मनको आनन्द करानेह
वचन बोला और मधुरआकृतियुक्त होकर वैखानस के कहेहुए
पूंछा ५७ कि हे भगवन् तुम्हारे प्रसादसे मैंने आचार, दण्ड
और राजधर्म विस्तारसे सुना ५८ चारोंवर्ण और आश्रमोंकी क्रि

स्नान और दानों की विधि, यज्ञ, विधि, ५९ व्रत और विष्णुजी का आराधन भी सुना अब हे ब्रह्मन् हे मुनिजी इससमयमें माघस्नान के फलको सुनना चाहताहूं जिस विधि से करना चाहिये तिसको कहिये ६० तब वसिष्ठजी बोले कि तिन वनवासी मुनि ने श्रेष्ठ कल्याण अच्छा कहाहै जो कि तीनोंलोकों के हितका देनेवाला और निर्मल करनेवालाहै ६१ स्त्रियोंकी कटाक्षोंसे प्रत्यासन्न नहीं खंडित हुए मनुष्य मृगशिराके सूर्यों में स्रोतमें स्नान करनेको इच्छा करते हैं ६२ हे प्रिये अग्नि, यज्ञ और इष्टापूर्तके विना प्रातःकाल माघमें बाहर जलमें स्नान करनेको सद्गतिकी इच्छा करते हैं ६३ हे राजन् जे माघ में स्नान करनेवाले गऊ, पृथ्वी, सोना, माणिक्य सुवर्ण की गऊ आदिक को नहीं देकर इच्छा करते हैं ६४ और जे तीनसप्ताह कृच्छ्र और पाराकव्रतों से अपनी देहको सुखाकर स्वर्ग की इच्छा करते हैं वे माघमें,सदैव स्नानकरें ६५ हरिजीकी पूजा वैशाख में, तपकी पूजा कार्तिक में, तप, होम और दान ये तीनों माघमें श्रेष्ठ होते हैं ६६ अनुबन्धसमेत अतिपर्यासका निश्चय पृथ्वी का स्वामी माघस्नान करनेवाला होता है जिसकरके फिर मोक्ष की उत्पादक बुद्धि नहीं होती ६७ दिव्यलोचनों करके पदध्या पूजा कही गई है और हे राजाओं में श्रेष्ठ माघमासमें अन्नहीन, तपस्या और दान होताहै ६८ कामनासमेत, पुत्रकेलिये, भगवान्के अर्थ वा भगवान् के विना व्रत करनेवाला देहको शुद्धकरे यह स्नान से उत्पन्न फल चारप्रकारका है ६९ अदितिजी ने विना अन्न भोजन किये माघमें बारह वर्ष स्नानकर तीनों लोकके प्रकाश करनेवाले बारह सूर्योंको पुत्रपाया ७० सुभगा रोहिणी ने तपस्या किया अरुन्धती ने दान दिया, सातभूमिक महलमें रूपयुक्त इन्द्राणी,७१ निर्म्मल शोभासे युक्त नर्तकी ललित आंगन में कि जो द्वीपवर्ण से समुच्छिन्न, रूपवान् स्त्रियोंसे आकुल ७२ गीत बाजाके शब्दयुक्त, मङ्गलाचार से शोभित, वेदकीध्वनिसे पवित्र, विद्वान् ब्राह्मणोंसे अलंकृत,७३ देवताओं के पूजनमें रत, सुन्दर, और सदा अतिथियोंसे सेवित इन जगहों में प्रसन्नतायुक्त वेही बसते हैं जोकि मकरके सूर्य्योंमें

७४ और बहुत दानदेते और भगवान्का पूजन और स्तुति करते हैं इष्टवस्तु के परित्याग और नियम के पालन करने से ७५ माघ सदैव धर्म्मका उत्पन्न करनेवाला और पापकी जड़को नाश करनेहारा है कामकी जड़; फलका द्वार, निष्काम और सदैव ज्ञान देनेवालाभी है ७६ ज्ञानशीलों, वनके स्थानवालों और विष्णुजीके भक्तोंको जो लोक मिलते हैं वेही माघ के स्नान करनेवालों को सदा प्राप्तहोते हैं ७७ हे शत्रुओं के ताप देनेवाले राजन् और पुण्यों से देवलोक से लौटभी आते हैं परन्तु माघस्नान में रत मनुष्य कभी नहीं लौटते हैं ७८ माघमें स्नानकर जो मनुष्य दूधवाली गऊको देताहै तो उसके सब अंगोंमें जितने रोम होते हैं ७९ उतनेही हजारवर्ष स्वर्गलोकमें दाता प्राप्त होताहै और जो माघस्नान करनेवाला गुड़समेत तिलों को देताहै ८० तो उसके पाप सब छूटजाते हैं और वह मनुष्य निर्म्मल शोभित होताहै क्योंकि सब धान्यकी राशियों में तिल पाप के नाशनेवाले हैं ८१ तिससे हे राजाओं में उत्तम माघमें यत्नसे तिल देने चाहिये माघस्नान करनेवाला ब्राह्मणोंको भोजन देवे ८२ और शुद्धआत्मा होकर पितरोंको तर्पणकरै तो विष्णुजी के श्रेष्ठ पदको प्राप्तहो तिससे सब यत्नसे माघ दानहीं से वितावे ८३ विना दानके सदैव न वितावे निश्चय अपनी द्रव्य के अनुसार जानकर सदैव दान देवे ८४ जो माघस्नान करता और जूता, कमण्डलु ब्राह्मणोंको देताहै वह स्वर्गमें निश्चय स्थित होता है ८५ माघस्नानमय उत्तम तप करता हुआ विना दान माघको न व्यतीत करै दानसे स्वर्ग प्राप्तहोताहै ८६ दानसे स्वर्ग सुख तो प्राप्त होतेही हैं परन्तु भारी पापोंसे उत्पन्न पापभी नाशहो जाते हैं ८७ विना दानके तप इसप्रकार शोभित नहींहोता जैसे आकाश विना सूर्य्यके नहीं शोभितहोवे पुत्रके विना कुल और आचार के विना घरभी नहीं शोभित होताहै ८८ इससे श्रेष्ठ पवित्र और पाप नाशनेवाला कोई नहीं है भृगुजी ने मणिपर्व्वतमें विद्याधर इसको गान कियाथा ८९ तव राजादिलीप बोले कि हे ब्रह्मन् वशिष्ठजी भृगुब्राह्मण ने पर्वतमें विद्याधरसे धर्म्मका उपदेश कवकिया

यह कुतूहलसे हमसे कहिये ९० तब वसिष्ठजी बोले कि हे राजन्
पूर्व्वसमय में बारह वर्षतक मेघ नहीं वर्षे तिस अवर्षणसे उद्विग्न,
क्षीणप्रजा सब दशोदिशा में भग गये ९१ तब तो हिमवान् और
विन्ध्याचलका बीच खालीहोगया स्वाहा, स्वधा,वषट्कार और वेद
के पढ़ने से हीन होगया ९२ संसार में बड़ा उपप्लवहुआ, पृथ्वीम-
ण्डलमें धर्मलुप्त होगया, दीप्ति जातीरही, फल, मूल, अन्न और ज-
लसेभी शून्य होगया ९३ विन्ध्याचल के समीपके वृक्षोंसे ढकेहुए
सुन्दर रेवानदीके किनारेके स्थानसे शिष्योंसमेत निकलकर भृगुजी
हिमवान् पर्व्वतको प्राप्तहुए ९४ वहांपर कैलासपर्व्वत के पश्चिम
मणिकूटनाम पर्व्वत था जोकि हेमरत्नशिलोच्चय, ९५ नीचे नीचे
स्फटिकमणिके समान सफेद, बीचमें नीलशिला पर्वत जोकि भूति-
योंसे सबओर शुक्ल महादेवजीकीनाईं शोभितहोताथा ९६ सब नील
शिलाओं से युक्त और भीतर भीतरमें सुवर्णकी रेखा थीं, प्रकाशित
बिजलीकी लताभी थीं जोकि कृष्णमेघकी नाईं शोभित होताथा ९७
मस्तकमें नीलशिलाका पहाड़ और नीचे सोनेकी मेखलाथी मानों
वस्त्र धारण कियेहुए नारायणही शोभित होतेथे ९८ अमेखलाओं
में नील दीप्ति और बीच बीचमें सफेद पत्थर थे इससे वह पहाड़
नक्षत्रोंसमेत आकाशकी नाईं शोभित होताथा ९९ प्रकाशित दि-
व्य औषधीका धारण करनेवाला अपनी सुन्दर तनुको प्राप्त होकर
बहुत प्रकाश करनेवाला दूसरे चन्द्रमाकी नाईं शोभितहुआ १००
पहाड़के ऊपर की भूमि में किन्नरियों के कीचकसमेत गीतों और
केलाके पत्रकी पताकाओं से वह पहाड़ सदा शोभित हुआ १०१
हरित पत्थर, वैडूर्य, पद्मराग और सफेद पत्थरोंकी दीप्तिरूपी कि-
रणमण्डलोंसे पहाड़ इन्द्रधनुषोंसे आच्छादितकी नाईं हुआ १०२
सब धातुमय, सोने और अनेकप्रकारके रत्नों से शोभित, अत्यन्त
ऊंचे शृंगोंसे अग्निकी ज्वालाकी नाईं वेष्टितथा १०३ तिस पहाड़
के नितम्बों में तृणसमेत शिलाओं में कामसे व्याकुल विद्याधरियां
अपने पतियोंको सेवतीथीं १०४ और सुन्दर कँगूड़ेकी
रुकेहुए भीतर के पवन के मार्ग, क्लेशजीते, रागरहित

दिन ब्रह्मको ध्यान करते हैं १०५ और सुन्दरी कन्दराओं में जप-माला और सूत्र हाथमें लियेहुए, सिद्धजन, आधे नेत्र मूंदेहुए महा-देवजीको आराधन करते हैं १०६ कल्पवृक्ष के फूल की आसवसे सुगन्धयुक्त दिशाओं के मुख करताहुआ यह निर्झरिणी का जल सदा झंकारमुखर है १०७ और पहाड़के नीचे की भूमि में वनके हाथियोंके बच्चे,हाथी और कस्तूरी हरिणोंके समूह और पवित्रचित्र हरिण खेल रहे हैं १०८ गौवों के समूहों से शोभित और विचित्र श्वापदों से भी शोभायमान पहाड़था कबूतर, चकोर और कोकिला जिसमें शब्द कररहीथीं १०९ और राजहंस और मुरैलोंसे वह प-र्वत सदा सुन्दरथा और देवता, गुह्यक और अप्सरागणों से सदैव सेवितथा ११० राजा बोले कि हे भगवन् बहुत आश्चर्यमय पर्वत सब सिद्धियों के आश्रय था वह कितना ऊंचा और लम्बा चौड़ा था १११ तब ऋषि बोले कि छत्तीस योजन का ऊंचा, मस्तक में दशयोजन का और मूलमें सोलहयोजन का चौड़ा और लम्बाथा ११२ हरिचन्दन, कल्पवृक्ष और आंबकी पंक्तियों से शोभित, देव-दारुके वृक्षोंसे आकीर्ण,सरल और अर्जुनसे शोभित ११३ काला-गरु, लवंग, निकुंज और लतागृहों से वह पर्व्वत श्रेष्ठ प्रकाशित और सदा पुष्प फलका देनेवाला था ११४ तिस सुन्दर पर्वत को देखकर दुर्भिक्षसे पीड़ित, प्रसन्नमन भृगुजी वहांपर निवास करते भये ११५ और तिस मनोहर पहाड़, पहाड़की कन्दरा और वनों में तपस्यामें निरत होकर बहुत कालतक तपस्या करतेभये हे रा-जेन्द्र इसप्रकार अपने आश्रम में वास करतेहुए ब्राह्मण स्थित थे ११६ कि पहाड़से दो विद्याधर जोकि स्त्री पुरुषथे वे उतरकर प्राप्त हुए और मुनिजी से मिलकर उनके नमस्कार कर अत्यन्त दुःख-युक्त दोनों बैठगये ११७ इसप्रकार के स्त्रीपुरुष दोनों को देखकर ब्राह्मण कोमल वचन बोले कि हे विद्याधर प्रीतिसे कहिये कि आप दोनों क्यों अत्यन्त दुःखित हो ११८ तिन मुनिजी के वचन सुन विद्याधर ब्राह्मण से बोले कि हे तपस्वियों में श्रेष्ठ हमारे दुःख का कारण सुनो ११९ सुकृतका फल प्राप्त होकर देवताओं के स्थानमें

प्राप्तहूं और देवताओंकी देह पाई है परन्तु मेरा मुँह बाघका हुआ है १२० नहीं जानताहूं कि किसकर्म का विपाक स्थितहुआहै ऐसा स्मरण कर मेरामन कल्याण को नहीं प्राप्त होताहै १२१ हे विप्र और भी सुनिये कि जिससे मेरामन व्याकुल है कि यह मेरी स्त्री कल्याणयुक्त, मधुर बोलनेवाली, स्वरूपवती, १२२ नाच गानकी कलाको जाननेवाली और सब अच्छे गुणों से युक्तहै जिससमयमें कुमारी थी तो मलहीन यह १२३ सात तंत्रियों से वीणा बजाकर वीणाके बाजाके रसके जाननेवाले नारदमुनिको प्रसन्न करती भई १२४ बाल्यावस्थामें गानेवाली इस लालकण्ठयुक्त ने विचित्रस्वर और नादके जाननेवाले इन्द्रको भी प्रसन्नकिया १२५ इस कौतुक से भिन्न अंगवाली, वीणाके बजानेवालेके अनेकप्रकारकी वक्रगति, स्निग्ध और पंचमध्वनि सुनकर १२६ रोमांचयुक्त, मस्तक कंपाते हुए महादेवजी प्रसन्न होगये शील, उदारता, गुणों के समूह, रूप और जवानीकी संपदावाली १२७ इसके सदृश कोई स्त्री स्वर्ग में नहीं है कहां यह देवताओंके सदृश मुखवाली सुन्दरी स्त्री और कहां मैं बाघ सदृश मुखवाला पुरुष १२८ हे ब्रह्मन् यह सदा चिन्तना कर मैं हृदयमें सर्वदा जलताहूं ये विद्याधरके वचन सुन इक्ष्वाकुके पुत्र १२९ त्रिकालके जाननेवाले, दिव्यलोचन भृगुजी हँसकर बोले कि हे विद्याधरों में श्रेष्ठ सुनिये कर्मों के फल विचित्रहैं १३० तिन को प्राप्त होकर बुद्धिमान् नहीं मोहते हैं अज्ञानचित्तवाले मोह को प्राप्त होते हैं जैसे माछीके पैरमात्र सांपका विषम विषहोताहै १३१ तैसेही थोड़ीभी क्रिया अविहित, विपाकमें घोर होती है तुमने माघ में एकादशीका व्रतकर द्वादशी में तेल पूर्वजन्ममें लगायाथा इसी से बाघकासा मुँह हुआहै पुण्यकारी एकादशी का व्रतकर द्वादशी में तेलके सेवनसे १३२।१३३ पूर्वसमयमें पुरूरवाभी कुरूप देहको प्राप्तहुआथा वह अपनी बुरीदेह देखकर तिसीदुःखसे दुःखित १३४ गिरिराज में आकर देवता के तालाब के किनारे स्थितहोकर परम प्रीतिसे पवित्रहो स्नानकर कुशासन में बैठकर १३५ नवीन नील मेघों के समान श्यामवर्ण, कमलके समान बड़े बड़े नेत्रयुक्त

चक्र, गदा और पद्मके धारण करनेवाले, पीताम्बरसे आच्छादित १३६ कौस्तुभमणिसे विराजित, वनमालाके धारण करनेवाले हरिजीको सब इन्द्रियवश करनेवाले राजाने हृदयमें चिन्तनाकर १३७ निराहार होकर तीनमहीना घोर तपस्याकिया तो सातजन्म पूजन करने के समान भगवान् थोड़ेही तप से प्रसन्न होगये १३८ और तिस राजाको स्मरणकर तिसीसमयमें आपही माघके शुक्लपक्षकी द्वादशी में मकरके सूर्यमें प्रकट होगये १३९ और आनन्दसे तिस चक्रवर्त्ती को शंखके जलोंसे शीघ्र अभिषेककर तेलका चेष्टित उस को स्मरण कराके १४० अत्यन्त सुन्दर, कमनीय, मनोहर रूपकर देतेभये जिससे देवनायिका, देवी, उर्वशी तिसकी इच्छाकरे १४१ इसप्रकार वरको पाकर राजा कृतकृत्य होकर पुरको चलागया यह कर्मकी गति जानकर हे विद्याधर तुम क्यों खेद करतेहो १४२ जो तुम भी राक्षसकी कुरूपता छोड़ना चाहतेहो तो शीघ्रही हमारे वचनसे पुराने पापों के नाश करनेवाले १४३ स्नान को माघमासमें मुनिसिद्ध और देवताओंसे सेवित मणिकूटनदीके जलमेंकरो तिस की विधिको कहूंगा १४४ तुम्हारे भाग्यके वशसे माघभी पासहीहै आजके पांचवेंदिनसे होगा स्थंडिलमें शयनकर पौषकी शुक्लपक्षकी एकादशी से लेकर १४५ एकमहीना निराहारहोकर तीनोंकाल स्नान करो भोगछोड़कर इन्द्रियोंको जीतकर तीनोंकाल विष्णुजीका पूजन भी करो १४६ हे विद्याधरोंमें उत्तम माघकी शुक्लपक्षकी एकादशी तकस्नानकरो तो तुम्हारे पाप जलजावेंगे तब पुण्यदिन द्वादशी में १४७ हे सुर पापरहित हम तुमको मन्त्रोंसेपवित्र, कल्याणयुक्त जलों से अभिषेक कर कामदेवजी के मुखकेसमान मुख करदेवेंगे १४८ हे विद्याधरोंमें श्रेष्ठ फिर तुम देवतोंकासा मुख होकर इस श्रेष्ठ स्त्रीके साथ सुखपूर्वक क्रीड़ाकरो १४९ माघका प्रभाव जानकर तुम माघमें सदा स्नानकरो जिससे तुमको मनोरथोंकी प्राप्ति सदैव हुआ करे १५० हे राजेन्द्र सर्वज्ञ, महात्मा भृगुजीने विद्याधरसे यह कह कर फिर गाथाको कहाहै १५१ माघस्नानों से विपत्ति और पाप नाश होजाते हैं माघका महीना सब यज्ञों से अधिक है और सब

ानके फलका देनेवालाहै १५२ भो विद्याधर माघका महीना यज्ञ,
ाग और तीव्र तपस्यासे गर्जताहै १५३ पुष्कर,कुरुक्षेत्र,ब्रह्मावर्त्त,
थूदक, अविमुक्त, प्रयाग और गंगासागर के संगममें १५४ जो
ल नियम करने से मनुष्यों को दशवर्ष में मिलता है वह माघमें
ोनदिन स्नान करनेसे निस्सन्देह मिलताहै १५५ जिनके मनमें
वर्गलोक में बहुतकाल राग वर्तमानहो उनको मकरके सूर्य्यों में
हांहींहो स्नान करनाचाहिये १५६ इससे उमर, आरोग्य,सम्पत्ति,
रूप, सौभाग्यता और गुण मिलते हैं जिनको मनोरथ कुछहो उन
ो माघका स्नान नहीं छोड़ना चाहिये १५७ जे नरक और इकट्ठे
कियेहुए दरिद्रसे डरते हैं उनको सर्वथा यत्नसे माघमें स्नान करना
ाहिये १५८ हे राजाओं में श्रेष्ठ दारिद्र्य, पाप और दौर्भाग्य रूप
ीचड़के धोनेकेलिये माघस्नानको छोड़कर और कोई उपाय नहीं
है १५६ श्रद्धाहीन कर्म तथा अत्यन्त थोड़े फलोंको माघकास्नान
सम्पूर्ण फलको देता है १६० कामनारहित या कामनासहित मा-
घका स्नान करनेवाला जहां कहीं बाहर जलमें स्नान करै तो इस
लोक और परलोक में दुःखको नहीं प्राप्त होताहै १६१ जैसे दोनों
पक्षोंमें चन्द्रमा बढ़ता तथा क्षीण होताहै तैसेही माघमें पाप नाश
होजाते हैं और पुण्यकी राशि बढ़ती है १६२ जैसे खानिसे अनेक
प्रकारके रत्न उत्पन्न होते हैं तैसेही मनुष्यों की माघस्नानसे पुण्य
उत्पन्न होती हैं उमर, द्रव्य, स्त्रीआदिक सम्पदाभी होती हैं १६३
जैसे कामधेनु कामना और चिन्तामणि चिन्तितको देताहै तैसेही
माघका स्नान सब मनोरथोंको भी देताहै १६४ सतयुगमें तपस्या
श्रेष्ठ ज्ञानहै, त्रेतामें यज्ञ, द्वापर और कलियुग में ज्ञान और माघ
सब युगोंमें इन सबको देताहै १६५ हे राजन् सब वर्ण और आ-
श्रमों को माघका स्नान धर्मकी धाराओं से वर्षता है १६६ वसिष्ठ
जी बोले कि तिस आश्रममें विद्याधर भृगुजी के ये वचन सुन भृगु
जी और अपनी स्त्रीसमेत माघ में पर्व्वत में निर्झरिणी के किनारे
जैसी कहीविधिहै उसके स्नानकरताभया तो भृगुजीकी कृपासे मन
के ईप्सितको पाकर १६७। १६८ देवताकासा मुखहोकर मणि

तमैं आनन्दको पाताभया तब तो प्रसन्नतायुक्त भृगुजी उसके आ
कृपाकर विंध्याचल को चलेआये १६९ मणिमय पर्वत में माघ
स्नानहीमात्र करनेसे विद्याधरका कामदेवकासा मुखकारूप होगया
और अच्छी प्रकारसे नियमोंकोकर विंध्याचलसे भी उतरकर शि
ष्योंसमेत भृगुजी रेवानदीको प्राप्तहुए १७० यह सम्पूर्ण भुवनोंक
सार,माघका माहात्म्य द्विजवर भृगुजीने हे राजन् विद्याधरसे कह
इसमें अनेकप्रकारके विचित्रफल होतेहैं जो इसको नित्यही सुनत
है वह देवताओंकी नाईं सम्पूर्ण कामनाओंको प्राप्तहोताहै १७१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणे पंचपंचाशतसाहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेमाघमाहात्म्ये
वसिष्ठदिलीपसंवादेपंचविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२५ ॥

एकसौ छब्बीसका अध्याय ॥

माघमाहात्म्यमें माघस्नानकी प्रशंसामें सुन्दउपसुन्द दैत्योंका वध वर्णन॥

वसिष्ठजी बोले कि हे राजाओं में उत्तम दिलीप इससमय में का
र्तवीर्य्य ने जो दत्तात्रेय से माघका माहात्म्य पूंछाथा तब उन्हों
कार्तवीर्य्य से कहाथा तिसीको मैंभी कहताहूं १ माहिष्मतीपुरी के
राजा सहस्रार्जुन, सह्यपर्वतमें बसतेहुए, साक्षात् हरिरूप दत्तात्रे
द्विजसे पूंछताभया २ कि हे भगवन्, योगियों में श्रेष्ठ, अच्छे व्रत
रनेवाले, सबधर्म्म तो मैंने सुने अब कृपाकरके आपमाघके स्ना
के फलको कहिये ३ तब दत्तात्रेयजी बोले कि हे राजाओं में श्रे
इस शुभ, प्रश्न के उत्तरको पूर्वसमय में नारद महात्मा से ब्रह्मा
ने कहाथा ४ तिससब माघस्नानके फलको देश, तीर्थ, विधि औ
क्रियाके अनुसार कहूंगा ५ इस कर्मभूमि भारतखण्डमें विधि
नहीं माघके स्नानकरनेवाले मनुष्योंका जन्म निष्फल कहाहै ६
सूर्यके विना आकाश और चन्द्रमाके विना नक्षत्रों का समूह न
शोभित होताहै तैसेही हे राजन् माघस्नानके विना अच्छा कर्म न
शोभित होताहै ७ व्रत,दान और तपस्यासे वैसा हरिजी नहीं प्र
होतेहैं जैसा कि माघके स्नानसे केशवजी प्रसन्न होतेहैं ८ जैसे सू
के तेजके समान कोई तेज नहीं विद्यमान है तैसेही माघस्नान

बराबर यज्ञोंसे उत्पन्न क्रियाभी नहीं हैं ९ वासुदेवजीकी प्रीति के लिये, सबपापोंके नाशनेके अर्थ,स्वर्गलाभके वास्ते मनुष्य माघका स्नानकरै १० रक्षित बलवान् पुष्टदेहसे क्याहै जोकि निश्चयरहित अपवित्रहै और माघस्नानके विनाहोती है ११ जिसमें हाड़ोंके खम्भे, स्नायुसे बँधेहुए होते हैं मांस और रक्त लेपनहै, चमड़ेसे बँधी हुई, दुर्गन्धयुक्त, मूत्र और विष्ठाका बर्तन १२ बुढ़ापा,शोक और विपत्तियोंसे व्याप्त, रोगका घर, आतुर, रजयुक्त, अनित्य, सब दोषोंके आश्रय, १३ दूसरेकी उपतापसे व्याकुल, पराये द्रोहमेंपर,विषरूप, लोलुप, चुगुल, क्रूर, उपकार न माननेवाली, क्षणमात्रहीमें नाशहोनेवाली, १४ दुष्पूर,दुर्धर, दुष्ट,तीनों दोषोंसेयुक्त, अपवित्र,बहनेवाली, अच्छे छिद्रोंसे युक्त, देहिक, दैविक, भौतिक इन तीनों तापोंसे विमोहित, १५ स्वभावही से अधर्म्म में रत, सैकड़ों तृष्णाओंसे आकुल, काम, क्रोध, महालोभ, नरकद्वारोंसे स्थित, १६ अन्तमें कीड़े वेष्ठाके याती खाते या भस्म होजाती या कुत्ता खाते हैं इसप्रकार की देह माघस्नानसे वर्जित व्यर्थही है १७ माघस्नानसे हीनदेह नलोंमें बुल्ले और जन्तुओं में पूतिकाकी नाईं मरणहीके लिये उत्पन्न होती हैं १८ वैष्णवहीन ब्राह्मण, योगीहीन श्राद्ध,ब्रह्मण्यहीन क्षेत्र, आचाररहित कुल, १९ दम्भसमेत धर्म्म, क्रोधसे तपस्या, दृढ़ताहीन ज्ञान, प्रमादसे सुनना, २० गुरुओंकी अभक्त स्त्री और उससे हत ब्रह्मचारी,अप्रकाशित अग्निमें होम,साक्षीरहित भुक्ति, २१ उपजीवी से कन्या, स्वार्थमें पाककी क्रिया, शूद्रकी भिक्षावाला यज्ञ, कृपणकाधन, २२ विना अभ्यासके विद्या, विरोध करनेवाला राजा, जीवनके अर्थ तीर्थ और व्रत, २३ चुगुली कहनेवाली, असत्यवाणी, सन्देहयुक्त मन्त्र, व्यग्रचित्त जप, २४ वेदहीन में दान, नास्तिक मनुष्य, विनाश्रद्धाके कियाहुआ सब परलोकके लिये २५ और दरिद्र मनुष्योंका जैसे यह लोक हतहोताहै तैसेही माघस्नान के विना मनुष्योंका जन्मभी हतहीहोताहै २६ मकरके सूर्य्यमें सूर्य के न उदय में जो नहीं स्नान करता वह पापोंसे कैसे छूटता और कैसे स्वर्गको प्राप्तहोताहै २७ ब्राह्मणका मारनेवाला,

हारा, मदिरा पीनेवाला, गुरुजीकी स्त्रीसे भोग करनेवाला और प
चवां उसका संसर्गी यहभी माघस्नान करनेसे पापरहित होजा
है २८ माघके महीने में कुछ सूर्य्यके उदयमें जल शब्द करता
कि ब्राह्मणके मारनेवाले और काँपतेहुए मदिराके पीनेवालेको
हम पवित्र करेंगे २९ सब उपपाप और भारी भारी पाप माघ
स्नान करनेवाले मनुष्यमें भस्म होजाते हैं ३० माघके स्नानके
मागममें सब पाप काँपते हैं कि जो यह जलमें स्नानकरे तो हमा
नाशकाल होजावे ३१ स्नानमें उद्यत मनुष्यको देखकर इसप्रक
पाप शब्द करते हैं और उत्तम मनुष्य माघके स्नानों से अग्नि
नाईं प्रकाशित होते हैं ३२ और मेघोंसे चन्द्रमाकी नाईं सब पा
से छूट जाते हैं गीले, सूखे, छोटे और बहुत, वाणी, मन और का
से कियेहुए ३३ पापको माघ का स्नान इसप्रकार जलाता है जै
अग्नि समिधों को जलाताहै प्रमादसे किये, ज्ञान वा अज्ञानसे
किये पाप ३४ मकरके सूर्यों में स्नानही मात्र करने से नाशहोजा
हैं पापरहित तो स्वर्ग्ग को जाते हैं और पापी शुद्धताको प्राप्तहो
हैं ३५ हे राजन् माघके स्नानमें संदेह नहीं करना चाहिये क्यों
माघमें इसप्रकार सब अधिकारी हैं जैसे विष्णुजी की भक्तिमें हो
हैं ३६ सबको माघ स्वर्ग देनेवाला और सबके पाप नाशनेहारा
यही श्रेष्ठ मंत्र, श्रेष्ठ तपस्या ३७ और श्रेष्ठ प्रायश्चित्त है जो
सबसे उत्तम माघका स्नान करताहै मनुष्यों के अनेक जन्मों के अ
भ्याससे माघके स्नानमें बुद्धि होती है ३८ हे राजन् अध्यात्मज्ञा
की कुशलता जैसे जन्म के अभ्यास से होती है जोकि संसार
कीचड़के लेपके धोने में कुशलहै ३९ माघस्नान श्रेष्ठ पवित्रों
पवित्रहै जे सब कामनाओं के फलके देनेवाले माघमें स्नान क
हैं ४० वे कैसे चन्द्रमा और सूर्य ग्रहों के सदृश भोगों को भोगते
अब हे राजन् महाआश्चर्य, माघ के स्नानके प्रभाव से उत्पन्न
सुनो ४१ कुब्जिका नाम कल्याणी, भृगुवंशमें उत्पन्न, ब्राह्मणी
ल्यावस्थामें विधवा होनेके दुःखसे व्याकुल होकर विंध्याचल
क्षेत्रमें रेवाकपिलके संगममें व्रत धारणकर नारायणमें परायण

कर घोर तपस्या करतीभई ४२।४३ जोकि अच्छे आचार से नित्यही रहे, संगसे वर्जित भी नित्यदिन रहे, इन्द्रिय और क्रोध को जीते, सत्यवाणी बोले, थोड़ाही बोले ४४ सुन्दर शीलयुक्त, दानमें शीलवाली और देह के सुखलानेहारी, पितर, देव और ब्राह्मण में देकर अग्निमें हवनकर ४५ उंछवृत्ति वह सदा छठवेंकालमें भोजन करती थी कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, पाराक और तप्तकृच्छ्र आदि व्रतों से ४६ नर्मदाके किनारे पुण्यमासों को व्यतीत करतीथी इसप्रकार तिस तपस्विनी, वल्कल धारण करनेवाली, सुशीला, ४७ सुन्दर महासत्वशालिनी, धीरज और सन्तोषयुक्तने नर्मदा और कपिलके संगममें साठ माघस्नान किये ४८ तदनन्तर वह तपस्यासे क्षीण तिस तीर्थमें मरगई तो माघस्नानकी पुण्यसे विष्णुजी के पुरमें ४९ आनन्दयुक्त हजार चौयुगी बसती भई तिसपीछे सुन्द उपसुन्द के नाशके लिये ब्रह्माजी ने फिर ५० तिलोत्तमा इसनामसे ब्रह्मलोक में उतारा तिस पुण्यकी शेषसे रूपके एक स्थानको प्राप्त हुई ५१ विना योनि के उत्पन्न, स्त्रियोंमें रत्नरूप, देवताओंको भी मोह करने वाली, सुन्दरताकी कुण्डरूप, पतले अंगवाली, अप्सराओं में श्रेष्ठ ५२ रचनेवाले,निपुण ब्रह्माजीको भी आश्चर्य करनेवाली हुई तिस को उत्पन्नकर ब्रह्माजी प्रसन्नहोकर तिसको तिसीसमय में आज्ञा देते भये ५३ कि हे मृगशावकनयनी दैत्यों के नाशने के लिये तुम शीघ्रजावो तब तो वह स्त्री वीणाको लेकर ब्रह्माजी के लोकसे ५४ पुष्कर मार्ग होकर जहांपर दोनों देवताओंके वैरी थे वहांको चली और नर्मदाके पवित्र निर्मल जलमें स्नानकर ५५ बन्धूक के फूल की दीप्तिवाले लाल कपड़े पहनकर कंकण, पवित्र जंजीर और बिछुवे जिनमें शब्द भी हो रहेहैं तिनसे युक्त ५६ चंचल मोतियोंकी माला कंठमें, चलायमान कुण्डलों से शोभायमान, चमेलीके फूलों से बनायेहुए मुकुटको धारणकिये, अशोकवनमें स्थित, ५७ अच्छे स्वर से गाती और वीणा को बजाती, स्वरषट्क को मूर्च्छयन्ती, जोकि स्वरषट्क अच्छे स्निग्ध, कोमल और मनोहरथे ५८ इस प्रकार तिलोत्तमा स्त्री को अशोकवनमें स्थित दैत्यके योद्धाओं ने

इसप्रकार देखा जैसे हृदयमें सुख देनेवाली चन्द्रमाकी कला हो ५९ तिसको देखकर विस्मययुक्त, आनन्दसमेत सेनापति शीघ्रही सुन्द उपसुन्दके पास गये ६० और संभ्रमसे वारंवार कहकर कहनेलगे कि हे दैत्यो हम नहीं जानते कि देवी वा दानवी वा नागोंकी स्त्री अथवा यक्षी है परन्तु सर्वथा वह स्त्रियों में रत्न है तुम दोनों संसारमें रत्नरूपहो और रत्नरूप स्त्री है ६२ थोड़ी दूर से आगे अशोकवन में वह शोक हरनेवाली वर्त्तमान है और कामदेवको भी मोह करानेवाली है ६३ इसप्रकार सेनापतियों के मनोहर वचन सुनकर शीघ्रही चषक और जल के सेचनको छोड़कर ६४ और हजार उत्तम स्त्रियोंको छोड़कर तिस तालाब से भार लोहेकी, क्रूर, कालदण्डके सदृश गदाको लेकर शीघ्रही दोनों निकले और जहांपर वह शृंगारयुक्त मारनेको चण्डीकी नाईं स्थित थी तहांको पहुँचे ६५।६६ और वह स्त्री दैत्योंकी कामदेवकी अग्निको प्रचण्ड करती भई और दोनों दैत्य उसके रूप से मोहित होकर तिसके आगे स्थित भये ६७ और विशेषकर मदिरासे मत्त होकर परस्पर बोले कि हे भाई यह श्रेष्ठ स्त्री हमारी होय तुम दूर रहो ६८ दूसरा बोला कि हे आर्य तुम इस मदिरा के समान नशे वाली हमारी स्त्रीको छोड़ो इसप्रकार हठकर मतवाले हाथीकी नाईं ६९ परस्पर कालसे प्रेरित तिससमयमें गदासे मारनेलगे तो परस्पर प्रहार से प्राणरहित होकर दोनों पृथिवी में गिरपड़े ७० तब सेनावालोंने दोनोंको मृतक देखकर बड़ा शब्दकिया कि कालरात्रि के समान यह क्या उपस्थितहुई ७१ इसप्रकार सेनावालोंके वकते हुए सुन्द उपसुन्द दैत्योंको पहाड़के कँगूड़ा में गिराकर हाथिनीकी नाईं तिलोत्तमा ७२ दशोदिशा प्रकाशित करती हुई शीघ्रही आकाशको प्रस्थानकर देवताओं का कार्यकर ब्रह्माके पुरको प्राप्तहुई ७३ तदनन्तर प्रसन्नहुए देव ब्रह्माजी ने बड़ी प्रशंसाकी और कहा कि हे चन्द्रवदनी मैंने सूर्य के रथमें तुमको स्थान दियाहै ७४ जब तक सूर्य आकाश में स्थितरहैं तबतक अनेकों भोगों को भोगो हे राजन् इसप्रकार वह ब्राह्मणी अप्सराओं में श्रेष्ठ होकर ७५

तक सूर्यलोकमें माघस्नान के भारी फलको भोग कररही है तिससे यत्नसे श्रद्धायुक्त और श्रेष्ठगतिकी वांछा करनेवाले मनुष्योंको म-करके सूर्यों में स्नान करना चाहिये इसमें कोई पुरुषार्थ ऐसा नहीं है जो न मिलसके ७६।७७ और कोई पाप ऐसा नहीं है जो न क्षीण होजावे जो मनुष्य माघ में स्नान करताहै तो उससे दक्षिणासमेत सब यज्ञ नहीं बराबरी करसक्तेहैं ७८ हे राजेन्द्र विशेषकर तीर्थ में माघस्नान से अधिक स्वर्ग देनेवाला, पाप नाशनेहारा और मोक्ष देनेवाला कोई नहीं है ७९।८० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेमाघ-माहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेमाघस्नानप्रशंसायांसुन्दोपसुन्द-दैत्यवधोनामषड्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२६ ॥

एकसौ सत्ताइसका अध्याय ॥

माघमाहात्म्य में राक्षसका मोक्ष वर्णन ॥

कार्तवीर्यजी बोले कि हे विप्रर्षे हे अच्छे व्रत करनेवाले दत्तात्रेय जी किसकारण से माघके स्नानमें महाअद्भुत प्रभाव वर्णनहै उस को निश्चयकर आप हमसे कहिये १ जिस एक माघस्नानसे यह मुनियां पापरहित हुआ और दूसरे से स्वर्ग को चलागया तिस कुतूहल को हमसे कहिये २ तब दत्तात्रेयजी बोले कि हे पुरुषों में व्याघ्ररूप स्वभावहीसे जलपवित्र, निर्म्मल, शुचि, सफेद और लाल, पाप नाश करनेवाला, द्रावक, दाह नाश करनेवाला, सब प्राणियों को तारनेहारा, पालनेवाला और जीवन देनेवालाहै ३ सब वेदोंमें यह पढ़ा जाताहै कि जल नारायणदेव है ग्रहों में सूर्य्य, नक्षत्रों में चन्द्रमा जैसे श्रेष्ठहै तैसेही सब कर्म्मोंमें महीनों में माघका महीना श्रेष्ठहै ४ मकरके सूर्य्यमें माघमें प्रातःकाल निर्म्मल गऊके चरण-मात्रभी जलमें स्नान करना पापियोंको भी स्वर्ग देनेवाला है ५ हे राजन् स्थावर जंगम तीनोंलोक में यह योग दुर्लभहै इस योग में अशक्तभी यदि तीनदिन स्नानकरै ६ और दरिद्रके अभावकी वांछासे कुछ दानभी देवे तो धनी और अधिक उमरवाला होवे ७

और पुण्यकारी मकरके सूर्य्यमें मनुष्योंको पांच वा सात दिनका
स्नान चन्द्रमाकी नाईं फलको बढ़ाताहै ८ सब तिथियां स्नानदान
आदि कर्मों में अच्छाही फल करने योग्यहैं ये कर्ताको नाशरहित
शाश्वत पदको देतीहैं ९ तिससे आत्माके हितकी कामनासे माघ
में बाहर स्नानकरै अब माघके स्नानकी श्रेष्ठ विधिको कहताहूं १०
उत्तम मनुष्योंको कुछ व्रतरूपी नियम करना चाहिये और अधिक
फलके कारण भोजनको भी कुछ बुद्धिमान् छोड़ देवे ११ पृथ्वीमें
सोवे, घी और तिल मिलाकर हवन करै तीनोंकाल वासुदेव सना
तन विष्णुजी को पूजे १२ माधवदेवजी का उद्देशकर अखण्ड दी
पक, इन्धन, कम्बल, कपड़ा, जूता, केसर, घी, १३ तेल, कपास, कोट
तूली और यथाशक्ति अन्न माघमें देना चाहिये १४ और रत्तीभर
सोना वेदके जाननेवाले को देवे तो यह दान नाशरहित और स
दैव समुद्रकी नाईं होताहै १५ हे राजन् दूसरेकी अग्निको न सं
दानको छोड़ै और माघके अन्तमें यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन
करावे १६ और अपने कल्याणकी इच्छा करनेवाला तिनको द
क्षिणाभी देवे विधिसे एकादशीका व्रत माघका उद्यापन १७ अक्ष
युक्त, नाशरहित स्वर्गकी वांछासे, अनन्तपुण्य की प्राप्ति और वि
ष्णुजीकी प्रीतिके लिये करना चाहिये १८ हे गोविन्द, अच्युत,
माधव, देव मकरके सूर्यमें माघमें इस स्नानसे यथोक्त फलके देने
वाले हूजिये १९ मौन धारणकर एकाग्रचित्त होकर इस मंत्रको उ
च्चारणकर वासुदेव, हरि, कृष्ण, माधवजी को फिर स्मरण करै २०
घरमें जलसमेत घड़ा जोकि पवनसे रात्रिमें पीड़ितहो उससे स्नान
करै तो तीर्थ के समान सब कामनाके फलको देनेवाला स्नानहो २१
तहां व्रतकर सामग्रियों से युक्त अन्नदेवे तो स्नानके प्रभावसे मनु
ष्य नरकको नहीं जावे २२ तप्त जलसे घरमें जो मनुष्य स्नानकरते
हैं तो मकरके सूर्यमें वही स्नान छःवर्ष फल देनेवाला होताहै २३
बावली आदिमें बाहर स्नान बारहवर्ष फल देताहै तालमें दूना, नद
में चौगुना, २४ देवखात और धातुके महानदमें सौसौगुणा और
महानदीके संगममें चारसौगुना २५ और मकरही के सूर्य में गंगा

जीमें स्नानहीमात्र करनेसे मनुष्यको हज़ारगुणा फलमिलताहै २६
हे राजन् माघकेमहीनेमें गंगाजीमें जे स्नानकरते हैं वे हज़ारचौयुगी
देवताके स्थानसे नहीं गिरते हैं २७ जो मनुष्य माघमें गंगाजी में
स्नानकरताहै वह दिनदिनमें सोनेके सहस्रको देताहै २८ और सौ-
गुणाफल होताहै और गंगा यमुनाके संगममें स्नानकरना ऋषियों
ने हज़ारगुणाफल कहाहै २९ प्रजाओंके हितमें स्थित,प्रजापतिजी
पापसमूहके बड़े भारके जलाने के लिये प्रयागजी को धारण करते
भये ३० अब इसस्थानको अच्छीतरह से सुनिये जोकि पहले पाप-
रूप पशुओंको ब्रह्माजीने बनायाथा जिसमें सफ़ेद और श्यामजल
है ३१ मकरके सूर्योंमें माघमें सैकड़ों पापोंसेयुक्त मनुष्य सफ़ेद और
श्याम गंगा और यमुनाजीके जलमें स्नानकरै तो गर्भोंमें नहींआवे
३२ सूनामेंरत जो मनुष्य प्रयागमें माघमासमें स्नानकरै वह परम-
पदको प्राप्तहो ३३ सफ़ेद और श्याम जो धारा सरस्वतीकी धारासे
युक्तहै उसको सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माजी ने विष्णुलोक का मार्गरचाहै ३४
हे राजन् वैष्णवीमाया दुस्तर और देवताओं कोभी जीतने योग्य
नहीं है वह माघके महीने में प्रयाग में जलजाती है ३५ तेजोमय
लोकोंमें अनेक भोगभोगकर प्रयागजीमें माघमें स्नानकरनेसे पीछे
से चक्रधारी भगवान्में लीनहोजाते हैं ३६ जो माघमें मकरके सूर्यों
में सफ़ेद और श्यामजलमें स्पर्शकरते हैं उनकी पुण्यकी गिनतीक-
रनेको चित्रगुप्तभी नहीं समर्थ होते हैं ३७ जो माघमें मकरके सूर्यों
में सफ़ेद और श्यामजलमें स्नानकरताहै उसकी पुण्यकी माहात्म्य
कहनेको ब्रह्माजीभी नहीं समर्थ हैं ३८ सौवर्ष निराहार रहनेसे जो
फलहै वह प्रयागमें माघमासमें तीनदिन स्नान करने से मिलताहै
३९ कुरुक्षेत्रमें सूर्य्य के ग्रहणमें हज़ारभार सोना देनेसे जो फलहै
वह माघमें वेणीके स्नानसे दिनदिनमें मिलताहै ४० हज़ार राज-
सूय यज्ञकाफल माघमें सफ़ेद और श्यामजल में स्नानकरनेवालों
का निश्चय होताहै ४१ पृथिवीके सबतीर्थ, सातोंपुरी माघमहीनेमें
वेणीमें स्नानकरने को प्राप्तहोते हैं ४२ पापियों के संग दोषसे सब
कृष्णवर्ण तीर्थ प्रयागमें माघमहीने में स्नानकरने से सफ़ेद वर्ण के

होजाते हैं ४३ जन्मोंमें कल्पपर्यन्त जो मनुष्यों ने पापइकट्ठे किये वे माघमें सफ़ेद और श्यामजलमें स्नानकरनेवालोंके भस्महोजाते हैं ४४ प्रयागजीमें माघमासमें तीनदिन स्नानकरनेवाले नरके वाणी, मन और देहसे उत्पन्न पाप निश्चय नाशको प्राप्तहोतेहैं ४५ जो मनुष्य प्रयागमें माघके महीने में तीनदिन स्नानकरताहै वह पाप छोड़कर इसप्रकार स्वर्गको जाताहै जैसे पुरानी खालको सर्प छोड़ देवे ४६ जहांकहीं भी गंगाजी में स्नानकरै तो कुरुक्षेत्र के समान फलदेती हैं और जहां विन्ध्यपर्व्वतसे मिलीहुई हैं वहां तिससे दशगुणा पुण्य देती हैं ४७ और काशीजी में उत्तरवहनेवाली गंगाजी तिससे सौगुणा,गंगा और यमुनाके संगममें काशी से सौगुणा ४८ पश्चिम बहनेवाली गंगा तिनके हज़ारगुणा फल देती हैं जो दर्शनहीसे ब्रह्महत्याको नाश करती है ४९ जो पश्चिम बहनेवाली गंगा यमुनाजीसे मिली है वह माघमें राजाओं को दुर्लभहै और करोड़ों कियेहुए पापको नाश करती है ५० और जो अमृत कहाजाता है वह पृथ्वी में वेणीही है तिसमें माघमहीने में मुहूर्तमात्र देवताओंको भी दुर्लभहै ५१ ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, रुद्र, सूर्य्य, मरुतोंके समूह, गन्धर्व्व, लोकपाल, यक्ष, किन्नर, सर्प्प, ५२ अणिमादि गुणोंसेसिद्ध, तत्त्ववादी, ब्रह्माणी, पार्व्वती, लक्ष्मी, इन्द्राणी, मेना, अदिति, दिति, ५३ सब देवों और नागोंकी स्त्रियां, घृताची, मेनका, रम्भा, उर्वशी, तिलोत्तमा, ५४ ये सब अप्सराओंके समूह और पितरोंकेसमूह माघ में वेणी में स्नान करनेको ५५ सतयुगमें अपने स्वरूपसे और कलियुगमेंरूपको छिपाकर आते हैं प्रयागजी में माघके महीने में तीन दिनस्नान करनेसे जो फल होताहै ५६ वह पृथ्वी में हज़ारअश्वमेध यज्ञसे मिलता है पूर्व्वसमयमें माघमें तीनदिनके स्नान के फलको कांचनमालिनी ने ५७ राक्षसको दियाथा तिससे वह पापी छूटजाता भया तब कार्त्तवीर्यजी बोले कि हे भगवन् वह राक्षस और कांचनमालिनी ये कौनथे ५८ कांचनमालिनी ने कैसे धर्मको दिया और कैसे तिसकी मुक्तिहुई हे योगीन्द्र, हे अत्रिके पुत्र सूर्यरूप, हमको बड़ा कौतूहल है यदि आप सुनने के योग्य मानते हो तो हमको

कहिये ५९ तब दत्तात्रेयजी बोले कि हे राजन् तुम पुराने विचित्र इतिहास को सुनो जिसके स्मरणहीमात्र से वाजपेययज्ञ का फल मिलताहै ६० रूपसे युक्त कांचनमालिनी नाम अप्सरा प्रयाग में माघमास में स्नानकर महादेवजी के स्थानको प्राप्तहुई ६१ गिरिराजके निकुञ्ज में पहाड़रूप वृद्ध राक्षसने आकाशमें चढ़तीहुई ६२ तेजस्विनी, सुवर्ण के समान दीप्तिवाली, सुन्दर करिहांवयुक्त, बड़े नेत्रोंवाली, चन्द्रवदनी, सुन्दर बालयुक्त, मोटे और ऊंचे स्तनवाली को देखा ६३ उस रूपयुक्त को देखकर तिस समय में राक्षस उस से बोला कि हे कमलनयनी तुम कौनहो, कहांसे आतीहो ६४ गीले कपड़े और जूड़ा तुम्हाराभी क्यों गीलाहै हे भीरु तुम्हारी आकाश में चलनेकी शक्ति कैसेहुई ६५ हे भद्रे किस पुण्यसे तुम्हारा तेजोमय शरीर, अत्यन्त रूपयुक्त और मनोहर हुआ है ६६ हे सुन्दर नेत्रवाली तुम्हारे कपड़े के विन्दु गिरनेसे हमारे मस्तकमें क्षणमात्रही में शान्ति प्राप्त हुईहै हमारा मानस सदा क्रूरहै ६७ जलकी महिमा क्याहै यह आप कहनेके योग्यहो क्योंकि हमको शीलयुक्त प्रकाशित होरहीहो और आकार निर्गुण नहीं है ६८ तब अप्सरा बोली कि भो राक्षस! सुनो मैं कामरूपिणी, कांचनमालिनी नाम अप्सराहूं प्रयागजी से आती हूं ६९ गीला जूड़ा इसकारण से है कि मैंने सफ़ेद और श्याम जल में स्नान कियाहै और पर्व्वतों में श्रेष्ठ कैलासको जारहीहूं ७० वहांपर देवता और असुरोंसे पूजित महादेवजी हैं हे राक्षस वेणीके जलके प्रभावसे तुम्हारी क्रूरता चलीगई है ७१ जिस पुण्य से सुमेधा गन्धर्व की सुन्दर रूपयुक्त कन्याहुईहूं तिस सबको तुमसे कहती हूं ७२ कलिङ्गदेश के अधिपति राजाकी मैं वेश्या, रूप लावण्यसेयुक्त, सौभाग्यके मदसे गर्वित, ७३ तिस पुरमें और स्त्रियों में शिरोमणि तिस जन्ममें मैंने इच्छापूर्व्वक भोग भोगकर ७४ सब पुरको यौवन की सम्पदासे मोहित करदिया विचित्र रत्न, गहने, धन, ७५ चित्र विचित्र कपड़े, कपूर, अगुरु, चन्दन ये सब मोहनरूप मैंने इकट्ठा किये ७६ हे राक्षस अपने स्थानमें मैंने सोनेका अन्त नहीं जाना कामसे पीड़ित युवा-

वस्थावाले पुरुष हमारे चरणोंकी सेवा करते थे ७७ सर्वस्व और मायासे मैंने सबको ठगा और कोई कोई कामी परस्पर स्पर्द्धा के भावसे मरभीगये ७८ इसप्रकार तिसरम्य सब नगरमें तिससमय में हमारी गति होतीभई जब वृद्धावस्था का समय आया तो हृदय में मैं शोच करनेलगी कि न दानदिया, न हवन किया, न जप और व्रतहीकिया ७९ और चतुर्वर्ग फलके देनेवाले भगवान्‌काभी आराधन नहीं किया दुर्गतिकी नाश करनेवाली दुर्गादेवीको भी नहीं पूजा भोगमें लुब्ध होकर मैंने सब पाप नाशनेवाले विष्णुजीका भी स्मरण नहीं किया ८० ब्राह्मणोंको भी नहीं तृप्त किया प्राणियों का हितभी नहीं किया प्रमादसे मैंने अणुमात्रभी पुण्य नहींकी ८१ कल्याणरूप! पापही मैंने किये तिसीसे मन मेरा जलाजाताहै इस प्रकार बहुत रोदनकर ब्राह्मणकी शरणमें गई ८२ जोकि ब्राह्मण वेदमें विद्वान् और तिसराजा का पुरोहित था हे राक्षस मैंने उनसे पूंछा कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ इसपापकी कैसे निष्कृतिहोगी और कैसे अच्छीगतिको प्राप्तहूंगी अपने कर्मसे मैं तपरही, बराकी और दीन मनयुक्तहूं ८३।८४ पापरूपी कीचड़ में डूबीहुई हमको बालपकड़ के उद्धारकीजिये हे ब्राह्मण हर्षदृष्टिसे हममें दयासे उत्पन्न जल वर्षातिये ८५ सज्जनमें तो सबसाधुहैं असज्जन में जो साधुहोताहै वहीसाधु है यह हमारे वचन सुन हममें कृपाकीजिये तब तो ब्राह्मण प्रीतिके करनेवाले सब धर्ममय वचनबोले ८६ हे श्रेष्ठमुखवाली तुम्हारे सब निषिद्ध आचरणको मैंनेजाना हमारेवचनको शीघ्रकीजिये प्रजापति के क्षेत्र प्रयागको जाइये ८७ और वहांजाकर स्नानकीजिये तिस से तुम्हारे पापका नाशहोगा हे भद्रे तुम्हारे सब मनोगत को मैंने शोचलियाहै ८८ और कुछ तुम्हारे पापका नाशकरनेवाला मैं नहीं देखताहूं ऋषियोंने तीर्थमें स्नानकरना श्रेष्ठ प्रायश्चित्त कहाहै ८९ हे भीरु तीर्थमें मनसे भी अशुभ कियेहुए को छोड़दो प्रयागमें स्नानसे शुद्धहोकर तुम निश्चय स्वर्ग को प्राप्तहोगी ९० क्योंकि प्रयागके स्नानही करनेसे मनुष्योंको निस्सन्देह स्वर्गहोताहै हे भद्रे और देशके कियेपाप तिसीक्षणमें ९१ प्रयागमें नाशहोजाते हैं

के किये नहीं नाशहोते हैं हे भीरु सुनो पूर्वसमयमें इन्द्र गौतममुनि की स्त्रीको देखकर कामके वशछिपकर गौतममुनिका वेष धारणकर उनकी स्त्री से भोग करतेभये तिस घोरपापसे तिसीसे उत्पन्नफल ९२। ९३ ऋषिकी स्त्रीसे भोग करनेवाले इन्द्रके हज़ार भग होजातीभई जिससे इन्द्रको लज्जा आतीभई ९४ तिसस्त्रीके पति गौतमजी के शापके माहात्म्य से हज़ारभगसे चिह्नित इन्द्रतलेको मुखकर निकलकर ९५ मेरुपर्व्वतके जलयुक्त, सौयोजन विस्तृत शिरमें प्राप्तहुए और लज्जायुक्त होकर अपनेकिये कर्मकी निन्दाकी ९६ और वहांपर सुवर्ण के कमलके कोरकमें प्रवेशकर वहीं स्थितहोकर नित्यही अपनी आत्मा और कामदेवकी निन्दा करतेभये ९७ कि तिसकामयुक्त आत्माको धिक्कारहै जोकि संसारमें शीघ्रही पापकी देनेवाली है जिससे सब मनुष्यों में निन्दितहोकर नरकको प्राप्तहोता है ९८ उमर, कीर्त्ति, यश, धर्म्म और धैर्यकोभी कामयुक्त आत्मा ध्वंस करती है और दुराचारी, आपदाओं के नियतपद कामदेवकोभी धिक्कारहै ९९ जोकि देहमें स्थित, दुर्दम, शत्रु, संतोषहीन और सदावशहै इसप्रकार कमल के स्थानमें छिपेहुए इन्द्रकहतेभये १०० और स्वर्गलोक इन्द्रके विना नहीं शोभितहुआ तब देवता, गंधर्व, लोकपाल, किन्नर १०१ इन्द्राणीसमेत बृहस्पतिजी के पास आकर उनसे पूंछतेभये कि हे भगवन् इन्द्रको हमलोग नहीं जानतेहैं १०२ कि कहांगये कहां स्थित हैं कहांपर ढूंढ़ें देवगणोंसमेत इन्द्रके विना स्वर्ग्ग नहीं शोभित होताहै १०३ जैसे अच्छेपुत्र के विना लक्ष्मी और गुणयुक्त कुलनहीं शोभताहै इससे शीघ्रही उपाय सोचिये जिससे स्वर्गलोक शोभित होवै १०४ इसमें विलम्ब न कीजिये जिसमें लक्ष्मी और नाथयुक्त स्वर्ग्गलोक होजावे ये देवताओं के वचन सुन बृहस्पति जी वचन बोले १०५ कि मैं जानताहूं अपने अपराध से लज्जासे इन्द्र जहां स्थितहैं और अपने कियेहुए फलको भोगरहे हैं १०६ क्योंकि मनुष्यों के नीतिके परित्याग से भयङ्कर विपाक होते हैं राज्यके मदों से मत्तहोकर करने और न करनेके योग्यकी न चिन्तनाकरे १०७ दृष्ट अदृष्ट के नाश करनेवाले निंदित कर्मको किया जिसको दैवसे

उपहतबुद्धि वाले मूर्खलोग करतेहैं १०८ जैसे अपराधसे इसलोक
और परलोक में जन्म निष्फल होताहै अब इससमय में जहां इन्द्र
स्थितहैं तहांको चलते हैं १०९ ऐसा कहकर सब देवताओं समेत
बृहस्पतिजी आगे होकर निकले और विस्तारयुक्त तालाबमें स्थित
के कमलवन को देखा ११० और उसमें जिससे इन्द्रको बोधहो
इससे उनकी स्तुति करनेलगे तब तो बृहस्पतिजीके प्रबोध से इन्द्र
कमलकी कलीसे निकले १११ जोकि दीनमुख, विरूप और लज्जा
से नेत्रों को नीचे कियेहुए हैं—इसप्रकार निकलकर अग्रजन्मा बृह-
स्पतिजी के चरण ग्रहण किये ११२ कि हे बृहस्पतिजी इस पापकी
निष्कृति हमसे कहिये और हमारी रक्षा कीजिये इन्द्रके वचन सु
ब्राह्मण बृहस्पतिजी बोले ११३ कि हे देवेन्द्र पापके नाशनेवाले
पायको कहताहूं सुनिये प्रयाग के स्नानही मात्र करनेसे तिसी क्ष
में पापसे ११४ तुम छूटजावोगे तुमसमेत हम वहीं को चलेंगे-
दनन्तर बृहस्पतिजीसमेत इन्द्र प्रयागको आये ११५ और सफ
और श्यामतीर्थ में स्नान किया तो शीघ्रही पापों से छूटगये ति
प्रसन्न होकर बृहस्पतिजी ने इन्द्र को वर दिया ११६ कि हे पा
रहित इन्द्र! प्रयागजी के स्नानही मात्रसे तुमने पाप क्षीणकरदि
अब पापरहित तुम्हारे हमारे प्रसाद से शीघ्रही ११७ हजार
नियोंकी हजार आंखें होजावें तब तो बृहस्पति ब्राह्मण के वचन
तिसीसमय में हजार आंखें होगईं तो इन्द्र शोभित होगया ११
जैसे कमलों से मानससरोवर शोभित होताहै तैसेही हजार आं
से इन्द्र शोभित हुए तदनन्तर सब देवता और ऋषियों से पूजि
११९ और गन्धर्वोंसे स्तुति कियेगये इन्द्र अपनी पुरीको प्राप्तहु
इसप्रकार शीघ्रही प्रयाग में इन्द्र पापरहित होगये हैं १२० इस
हे कल्याणि! पाप नाशने वा स्वर्ग्ग के जाने के लिये देवताओं
सेवित प्रयागको तुम भी शीघ्रही जावो १२१ इसप्रकार इतिहा
और मंगलसमेत तिनके वचन सुन तिसी समय में संभ्रम में यु
होकर ब्राह्मणके चरणोंको मैंने नमस्कार किया १२२ और बन्धुज
और सब दासदासी, वर और सब विषयोंको विषके ग्रासकी ना

छोड़दिया १२३ और क्षणमें विध्वंस होनेवाली देहको देखती हुई नेकली नरकरूपी समुद्र के गिरने के भीतरकी अग्नि से १२४ हे राक्षस! हृदयमें तापयुक्त होकर मैंने जाकर प्रयाग में माघमास में सफ़ेद और श्याम जलमें स्नान किया १२५ अब हे दृढ़राक्षस! तेस स्नान के माहात्म्यको सुनिये मेरे तीनदिनही के स्नानसे पाप नाश होगये हैं सत्ताइसदिन १२६ शेषोंसे जो पुण्यहुई तिससे देव-भावको प्राप्तहुई कैलासपर्व्वत में पार्वतीजी की प्यारी सखी होकर रमण करूंगी १२७ प्रयागजी के प्रभावसे मुझको जातिका स्मरण होनाहुआ है प्रयाग के माहात्म्यको जानकर हरसाल के माघ में मैं जाती रहीहूं १२८ हे राक्षस! विस्मितचित्त होकर तुमने जो पूंछा तिसको तुम्हारीही प्रीतिकेलिये मैंने सब कहा १२९ अब हे राक्षस! हमारी प्रीतिके लिये तुम अपने चरित्रको कहो किस पापसे विरूप, अत्यन्त भयंकर, डाढ़ीयुक्त और बड़ी डाढ़वाले राक्षस पहाड़के गह्वरमें हुएहो तब राक्षस बोला कि हे भद्रे! हे वामलोचने! सज्जन मनुष्य इष्टको देता, ग्रहण करता, छिपे हुएको कहता और पूंछता है यह सब तुम्हारेहीं में स्थित है यह निश्चय तुमसे मैं संभावित हुआ हूं १३०।१३१।१३२ अब बहुत शीघ्रही तुमसे इस क्रूर-कर्म्म की निष्कृति कहता हूं जो मैंने दुष्टकर्म्म अपने आप किये हैं १३३ क्योंकि सज्जन में दुःखको निवेदनकर तिस पीछे सब सुखयुक्त मनुष्य होताहै अब हे अच्छे करिहांव वाली स्त्री! सुनो मैं काशी में बहुत ऋचा जाननेवाला, वेदका पारगामी, १३४ निर्मल कुल में उत्पन्न श्रेष्ठ ब्राह्मणथा हे भीरु! राजा, दुष्टकर्म करनेवाले, शूद्र और वैश्यों से १३५ काशीजी में मैंने घोरदान लियेथे अनेकों बार इस निन्दित कर्मसे लोगोंने मुझे निषेधभी किया १३६ परन्तु मैंने चाण्डाल का भी दुष्टदान नहीं छोड़ा और भी मूढ़चित्तवाले मेरे वहांपर पापहुए ऐसा कोई दुष्टकर्म्म नहीं है जो मैंने वहांपर न कियाहो १३७ हे श्रेष्ठवर्णवाली स्त्री और क्षेत्रका दोष सुनो कि अविमुक्तमें अणुमात्र भी पाप सुमेरुके समान होजाता है—उस जन्म में मैंने कुछधर्म नहीं कियाथा १३८ हे शोभने तदनन्तर बहुत

मय बीतनेपर मैं वहीं मरगया तो अविमुक्त के प्रभाव से नरकको नहीं गया १३९ क्योंकि अविमुक्त में कोई पापी मरताहै तो नरक को नहीं जाताहै और कुछभी वहांपर पाप को करे तो वज्रलेप हो जाताहै १४० तिसी वज्रलेप पापसे हिमवान्पर्वत में मेराजन्म अत्यन्तक्रूर, भयानक, राक्षसका हुआ १४१ दूसराजन्म गृध्रकी योनि में,तीसरा बाघका, फिर मछलीका,फिर एकबार घुग्घूका, और तिसके पीछे विष्ठाके शूकरका हुआ १४२ हे स्त्री यह दशवां जन्म राक्षसका हुआहै हमारेजन्म के हजारवर्ष बीते हैं १४३ हेभद्रे इस दुःखरूपी समुद्र से निष्कृति नहींहै और हे सुभ्रू यहांपर तीनयोजन मैंने जन्तुरहित करदिया है १४४ अपराधरहित बहुत प्राणियों का नाश किया है तिसी कर्मसे हमारामन सदैव जलताहै १४५ तुम्हारे दर्शनरूपी अमृत से सींचाहुआ हमारामन शीतलता को प्राप्तहुआ है क्योंकि कालपाकर तीर्थफल देते हैं और साधुका समागम तो शीघ्रही फलदेताहै १४६ इससे बुद्धिमान् मनुष्य अच्छी संगति की प्रशंसा करतेहैं यह हृदयमें प्राप्त सबदुःख तुमसे कहा १४७ हे सुभ्रु विरला सज्जन होता है जिसकी आत्मा खेदको न प्राप्तहो इस उचितको तुम जानतीहो अब कुछनहीं कहूंगा १४८ हे सुन्दरांगयुक्त! इस दुःखरूपी समुद्र के पार कैसे जाऊंगा क्योंकि सज्जनों की समाभूति सबका उपजीवनहै १४९ क्षीरसमुद्र हंस और बगुलों को क्यादूध नहीं देताहै दत्तात्रेयजी बोले कि तिसराक्षसके ये वचन सुन दयासे गीलामनकर १५० कांचनमालिनी धर्म्मके दानमें बुद्धिकर बोली कि हे राक्षस मैं निष्कृति करूंगी इससमयमें निश्चय तुम शोचमतकरो १५१ दृढ़प्रतिज्ञा करके तुम्हारी मुक्तिकेलिये यत्न करूंगी क्योंकि विधिपूर्व्वक वर्ष वर्ष में श्रद्धायुक्त प्रयागजी में सफेद और श्याम जलमें बहुत माघमहीनोंमें स्नानकियाहै हे राक्षस तिस धर्मकी गिनती मैं नहीं कहसक्तीहूं १५२। १५३ पण्डितलोग भी कहतेहैं कि छिपाहुआ धर्म्म करनाचाहिये और वेदके जाननेवाले मुनि दुःखितमें दानकी प्रशंसाकरते हैं १५४ क्योंकि समुद्रमें बरसे हुए मेघको क्याफल होताहै हे राक्षस मैंने तिसपुण्यका फल

त किया है १५५ हे मित्र तिसपाप नाशनेवाले फलको मैं तुम्हें
गी तदनंतर वह स्त्री कपड़ेको निचोड़कर जलको कमलरूपी हाथ
लेकर १५६ तिस वृद्धराक्षसको माघका पुण्य देतीभई अब हे
जन् विचित्र, माघके धर्म्मसे उत्पन्न प्रभावको सुनो १५७ तिसी
मयमें राक्षस तिसपुण्यको प्राप्तहोकर राक्षसी देहको छोड़कर दे-
ताओंके आकार होगया और तेजमें सूर्य्यनारायणके शरीरके समान
आ १५८ देवताओं के विमानमें चढ़कर आनन्दसे उत्फुल्लनयन
गया और तिससमय में आकाश में प्रकाशितहुआ दीप्तिसे दशों
दिशाओंको प्रकाशित करताभया १५९ और सुन्दररूप धारणकर
सरे सूर्य्यकी नाईं शोभितहुआ तदनन्तर वह कांचनमालिनी की
शंसा करनेलगा १६० कि हे भद्रे ईश्वरदेव जोकि कर्मोंके फलका
नेवालाहै वही जानताहै तिससबको तुमने उपकार कियाहै जहां
र हमारी निष्कृति नहींथी १६१ इससमयमें भी दयासे प्रसन्नहो-
कर कृपाकर सबनीतिमयी शुभ शिक्षाको दीजिये १६२ जोकि सब
र्म करनेवाली निश्चयहो जिससे पाप मैं नहींकरूं और तिसशिक्षा
को सुनकर तुम्हारी आज्ञासे पीछे देवस्थान को जाऊं १६३ दत्ता-
त्रेयजी बोले कि हे राजन् ये तिसके कहेहुए प्रिय, धर्म्ममय वचन
सुनकर अतिप्रीति से काञ्चनमालिनी धर्म्म कहनेलगी १६४ कि
सदैव धर्म्म को सेवो, प्राणियों की हिंसाको छोड़ो, साधुपुरुषों को
सेवो, कामशत्रु को त्यागो, दूसरे के दोष और गुणों के कीर्त्तन को
जल्द छोड़ो, सत्यबोलो, भगवान्को पूजो, देवलोकको जावो १६५
हाड़, मांस और रक्तयुक्त देहमें अपनी मतिकोछोड़ो, स्त्री और पुत्र
आदिकों में ममताको सदैव छोड़ो, निरन्तर इस संसार को क्षणही
में नाशहुआ देखो वैराग्यभावमें रसिक और योगमें निष्ठहोवो १६६
मैंने प्रीति से तुमसे धर्मका मार्ग कहाहै इस सबको चित्तमें धारो,
शीलयुक्त होवो राक्षस की देह छोड़कर देवताओंकी देह धारणकर
ज्योतिर्मय होकर सुखपूर्वक शीघ्र स्वर्ग्गको जावो १६७ इस प्रकार
के धर्म सुनकर प्रसन्न और संतुष्टहुआ राक्षसबोला कि तुमनित्यही
प्रमुदित होवो सदैव तुम्हारा कल्याणहो १६८ हे श्रेष्ठवर्णवाली स्त्री!

मय बीतनेपर में वहीं मरगया तो अविमुक्त के प्रभाव से नरकको नहीं गया १३९ क्योंकि अविमुक्त में कोई पापी मरताहै तो नरक को नहीं जाताहै और कुछभी वहांपर पाप को करे तो वज्रलेप हो जाताहै १४० तिसी वज्रलेप पापसे हिमवान्पर्वत में मेराजन्म अत्यन्तक्रूर, भयानक, राक्षसका हुआ १४१ दूसराजन्म गृध्रकी योनि में, तीसरा बाघका, फिर मछलीका, फिर एकबार घुग्घूका, और तिस पीछे विष्ठाके शूकरका हुआ १४२ हे स्त्री यह दशवां जन्म राक्षसका हुआहै हमारेजन्म के हज़ारवर्ष बीते हैं १४३ हेभद्रे इस दुःखरूपी समुद्र से निष्कृति नहींहै और हे सुभ्रू यहांपर तीनयोजन मैंने जंतुरहित करदिया है १४४ अपराधरहित बहुत प्राणियों का नाश किया है तिसी कर्मसे हमारामन सदैव जलताहै १४५ तुम्हारे दर्शनरूपी अमृत से सींचाहुआ हमारामन शीतलता को प्राप्तहुआ है क्योंकि कालपाकर तीर्थफल देते हैं और साधुका समागम तो शीघ्रही फलदेताहै १४६ इससे बुद्धिमान् मनुष्य अच्छी संगति की प्रशंसा करतेहैं यह हृदयमें प्राप्त सबदुःख तुमसे कहा १४७ हे सुभ्रु विरला सज्जन होता है जिसकी आत्मा खेदको न प्राप्तहो इस के उचितको तुम जानतीहो अब कुछनहीं कहूंगा १४८ हे सुन्दरतेयुक्त ! इस दुःखरूपी समुद्र के पार कैसे जाऊंगा क्योंकि सज्जनों की समाभूति सबका उपजीवनहै १४९ क्षीरसमुद्र हंस और ब... को क्यादूध नहीं देताहै दत्तात्रेयजी बोले कि तिसराक्षसके ये सुन दयासे गीलामनकर १५० कांचनमालिनी धर्मके दानमें तुर कर बोली कि हे राक्षस मैं निष्कृति करूंगी इससमयमें निश्चय तुम शोचमतकरो १५१ दृढ़प्रतिज्ञा करके तुम्हारी मुक्तिकेलिये यत्न करूंगी क्योंकि विधिपूर्व्वक वर्ष वर्ष में श्रद्धायुक्त प्रयागजी में और श्याम जलमें बहुत माघमहीनोंमें स्नानकियाहै हे राक्षस तिस धर्मकी गिनती मैं नहीं कहसक्तीहूं १५२। १५३ पण्डितलोग यह कहतेहैं कि छिपाहुआ धर्म्म करनाचाहिये और वेदके जाननेवाले मुनिदुःखितमें दानकी प्रशंसाकरते हैं १५४क्योंकि समुद्रमें बरसे हुए मेघको क्याफल होताहै हे राक्षस मैंने तिसपुण्यका फल अब

ल किया है १५५ हे मित्र तिसपाप नाशनेवाले फलको मैं तुम्हें
गी तदनंतर वह स्त्री कपड़ेको निचोड़कर जलको कमलरूपी हाथ
लेकर १५६ तिस वृद्धराक्षसको माघका पुण्य देतीभई अब हे
जन् विचित्र, माघके धर्म्मसे उत्पन्न प्रभावको सुनो १५७ तिसी
मयमें राक्षस तिसपुण्यको प्राप्तहोकर राक्षसी देहको छोड़कर दे-
तोंके आकार होगया और तेजमें सूर्य्यनारायणके शरीरके समान
आ १५८ देवताओं के विमानमें चढ़कर आनन्दसे उत्फुल्लनयन
गया और तिससमय में आकाश में प्रकाशितहुआ दीप्तिसे दशों
शाओंको प्रकाशित करताभया १५९ और सुन्दररूप धारणकर
सरे सूर्य्यकी नाईं शोभितहुआ तदनन्तर वह कांचनमालिनी की
शंसा करनेलगा १६० कि हे भद्रे ईश्वरदेव जोकि कर्मोंके फलका
नेवालाहै वही जानताहै तिससबको तुमने उपकार कियाहै जहां
र हमारी निष्कृति नहींथी १६१ इससमयमें भी दयासे प्रसन्नहो-
र कृपाकर सबनीतिमयी शुभ शिक्षाको दीजिये १६२ जोकि सब
र्म करनेवाली निश्चयहो जिससे पाप मैं नहींकरूं और तिसशिक्षा
ो सुनकर तुम्हारी आज्ञासे पीछे देवस्थान को जाऊं १६३ दत्ता-
त्रेयजी बोले कि हे राजन् ये तिसके कहेहुए प्रिय, धर्म्ममय वचन
सुनकर अतिप्रीति से काञ्चनमालिनी धर्म्म कहनेलगी १६४ कि
सदैव धर्म्म को सेवो, प्राणियों की हिंसाको छोड़ो, साधुपुरुषों को
सेवो, कामशत्रु को त्यागो, दूसरे के दोष और गुणों के कीर्त्तन को
जल्द छोड़ो, सत्यबोलो, भगवान्‌को पूजो, देवलोकको जावो १६५
हाड़, मांस और रक्तयुक्त देहमें अपनी मतिकोछोड़ो, स्त्री और पुत्र
आदिकों में ममताको सदैव छोड़ो, निरन्तर इस संसार को क्षणही
में नाशहुआ देखो वैराग्यभावमें रसिक और योगमें निष्ठहोवो १६६
मैंने प्रीति से तुमसे धर्मका मार्ग कहाहै इस सबको चित्तमें धारो,
शीलयुक्त होके राक्षस की देह छोड़कर देवताओंकी देह धारणकर
ज्योतिर्मय होकर सुखपूर्वक शीघ्र स्वर्गको जावो १६७ इस प्रकार
के धर्म सुनकर प्रसन्न और संतुष्टहुआ राक्षसबोला कि तुमनित्यही
प्रमुदित होवो सदैव तुम्हारा कल्याणहो १६८ हे श्रेष्ठवर्णवाली स्त्री!

मय बीतनेपर में वहीं मरगया तो अविमुक्त के प्रभाव से नरक
नहीं गया १३९ क्योंकि अविमुक्त में कोई पापी मरताहै तो नर
को नहीं जाताहै और कुछभी वहांपर पाप को करे तो वज्रलेप
जाताहै १४० तिसी वज्रलेप पापसे हिमवान्पर्वत में मेराजन्म
त्यन्तक्रूर, भयानक, राक्षसका हुआ १४१ दूसराजन्म गृध्रकी यो
में, तीसरा बाघका, फिर मछलीका, फिर एकबार घुग्घूका, और ति
पीछे विष्ठाके शूकरका हुआ १४२ हे स्त्री यह दशवां जन्म
हुआहै हमारेजन्म के हजारवर्ष बीते हैं १४३ हेभद्रे इस दु
समुद्र से निष्कृति नहींहै और हे सुभ्रू यहांपर तीनयोजन मैंने
तुरहित करदिया है १४४ अपराधरहित बहुत प्राणियों का ना
किया है तिसी कर्मसे हमारामन सदैव जलताहै १४५ तुम्हारे
र्शनरूपी अमृत से सींचाहुआ हमारामन शीतलता को प्राप्तहु
है क्योंकि कालपाकर तीर्थफल देते हैं और साधुका समागम
शीघ्रही फलदेताहै १४६ इससे बुद्धिमान् मनुष्य अच्छी
प्रशंसा करतेहैं यह हृदयमें प्राप्त सबदुःख तुमसे कहा १४७
बिरला सज्जन होता है जिसकी आत्मा खेदको न प्राप्तहो इस
उचितको तुम जानतीहो अब कुछनहीं कहूंगा १४८ हे
युक्त! इस दुःखरूपी समुद्र के पार कैसे जाऊंगा क्योंकि
की समाभूति सबका उपजीवनहै १४९ क्षीरसमुद्र हंस और
को क्यादूध नहीं देताहै दत्तात्रेयजी बोले कि तिसराक्षसके ये
सुन दयासे गीलामनकर १५० कांचनमालिनी धर्म्मके दानमें बुद्धि
कर बोली कि हे राक्षस मैं निष्कृति करूंगी इससमयमें निश्चय तु
शोचमतकरो १५१ दृढ़प्रतिज्ञा करके तुम्हारी मुक्तिकेलिये यत्न
करूंगी क्योंकि विधिपूर्वक वर्ष वर्ष में श्रद्धायुक्त प्रयागजी में सफे
और श्याम जलमें बहुत माघमहीनोंमें स्नानकियाहै हे राक्षस ति
धर्मकी गिनती मैं नहीं कहसक्तीहूं १५२। १५३ पण्डितलोग
कहतेहैं कि छिपाहुआ धर्म्म करनाचाहिये और वेदके
मुनिदुःखितमें दानकी प्रशंसाकरते हैं १५४ क्योंकि समुद्रमें
हुए मेघको क्याफल होताहै हे राक्षस मैंने तिसपुण्यका फल

न किया है १५५ हे मित्र तिसपाप नाशनेवाले फलको मैं तुम्हें
गी तदनंतर वह स्त्री कपड़ेको निचोड़कर जलको कमलरूपी हाथ
लेकर १५६ तिस वृद्धराक्षसको माघका पुण्य देतीभई अब हे
जन् विचित्र, माघके धर्म्मसे उत्पन्न प्रभावको सुनो १५७ तिसी
मयमें राक्षस तिसपुण्यको प्राप्तहोकर राक्षसी देहको छोड़कर दे-
तोंके आकार होगया और तेजमें सूर्य्यनारायणके शरीरके समान
आ १५८ देवताओं के विमानमें चढ़कर आनन्दसे उत्फुल्लनयन
गया और तिससमय में आकाश में प्रकाशितहुआ दीप्तिसे दशों
शाओंको प्रकाशित करताभया १५९ और सुन्दररूप धारणकर
सरे सूर्य्यकी नाईं शोभितहुआ तदनन्तर वह कांचनमालिनी की
शंसा करनेलगा १६० कि हे भद्रे ईश्वरदेव जोकि कर्मोंके फलका
नेवालाहै वही जानताहै तिससबको तुमने उपकार कियाहै जहां
र हमारी निष्कृति नहींथी १६१ इससमयमें भी दयासे प्रसन्नहो-
र कृपाकर सबनीतिमयी शुभ शिक्षाको दीजिये १६२ जोकि सब
र्म करनेवाली निश्चयहो जिससे पाप मैं नहींकरूं और तिसशिक्षा
ो सुनकर तुम्हारी आज्ञासे पीछे देवस्थान को जाऊं १६३ दत्ता-
त्रेयजी बोले कि हे राजन् वे तिसके कहेहुए प्रिय, धर्म्ममय वचन
सुनकर अतिप्रीति से काञ्चनमालिनी धर्म्म कहनेलगी १६४ कि
सदैव धर्म्म को सेवो, प्राणियों की हिंसाको छोड़ो, साधुपुरुषों को
सेवो, कामशत्रु को त्यागो, दूसरे के दोष और गुणों के कीर्त्तन को
जल्द छोड़ो, सत्यबोलो, भगवान्‌को पूजो, देवलोकको जावो १६५
हाड़, मांस और रक्तयुक्त देहमें अपनी मतिकोछोड़ो, स्त्री और पुत्र
आदिकों में ममताको सदैव छोड़ो, निरन्तर इस संसार को क्षणही
में नाशहुआ देखो वैराग्यभावमें रसिक और योगमें निष्ठहोवो १६६
मैंने प्रीति से तुमसे धर्मका मार्ग कहाहै इस सबको चित्तमें धारो,
शीलयुक्त होवो राक्षस की देह छोड़कर देवताओंकी देह धारणकर
ज्योतिर्मय होकर सुखपूर्वक शीघ्र स्वर्ग्गको जावो १६७ इस प्रकार
के धर्म सुनकर प्रसन्न और संतुष्टहुआ राक्षसबोला कि तुमनित्यही
प्रमुदित होवो सदैव तुम्हारा कल्याणहो १६८ हे श्रेष्ठवर्णवाली स्त्री!

कैलास में महादेव जी के समीप पार्वती करके युक्त चन्द्रमा सूर्य पर्यन्त रमो और उनमें तुम्हारा अखण्डित प्रेम हो १६९ मातः! धर्म और तपस्यामें तुम्हारी सदैवनिष्ठाहो तुम्हारे शरीर लोभ न होवे, शरणागतमें आयेहुये दुःखीकी पीड़ा सदाहरो १७० ऐसा कहकर तिस कांचनमालिनी के प्रणामकर बहुत गन्धर्वों स्तुति कियाहुआ राक्षस स्वर्गको प्राप्तहुआ १७१ और तिसीसम में हर्षसेयुक्त देवताओंकी कन्या वहांआकर तिस कांचनमालिनी मस्तकमें फूलोंकीवर्षा करनेलगीं १७२ और तिसको आलिंगनक प्रियवचन बोलीं कि हे भद्रे तुमने राक्षस का मोक्षकिया यह बहु अच्छा किया १७३ इस दुष्टके भयसे कोई इस वन में नहीं प्रवे करता था अब निर्भय और सुखपूर्व्वक घूमेंगे १७४ तिनके वच सुनकर कांचनमालिनी तिसी दानसे प्रसन्न और कृतकृत्यहुई १७ और श्रेष्ठ वह गन्धर्वकी कन्या शीघ्रही तिस राक्षस का मोचनक देवकन्याओं समेत प्रीति और परोपकार से पूर्ण क्रीड़ा करतीहु महादेवजी के स्थानको प्राप्तहुई १७६ इसश्रेष्ठकन्या के कहेहुये वादको भक्तिसे जोमनुष्य सुनताहै वहकभी राक्षसोंसे नहीं बाधि होता और उसकी धर्म में बुद्धि होजाती है १७७॥

इतिश्री पाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेमाघमासमाहात्म्ये दिलीपवसिष्ठसंवादेराक्षसमोक्षोनामसप्तविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२७॥

एकसौअट्ठाइसका अध्याय॥

वसिष्ठजी बोले कि दत्तात्रेयसे भाषित माघमाहात्म्यको कहा अब माघस्नानके फलको कहताहूं १ हे शत्रुओंके ताप देनेवाले राजा! सब यज्ञोंमें श्रेष्ठ, सब दानके फलका देनेवाला, सब व्रत और तपस्याके तुल्य, माघका स्नान है २ तिसी माघके स्नानसे विशुद्धमन, उज्ज्वल मुखयुक्त होकर दोनोंकुलके पितरोंको स्वर्ग में स्थापितकर श्रेष्ठ विमानोंपर चढ़कर स्वर्ग्गको जाते हैं ३ जे मनुष्य सदैव पाप करते, सदा दुराचारमें रत रहते, कुमार्ग में गमन करते वेभी माघमें स्नानकर हरिजीका पूजन करते तो भारी पापसमूहोंसे छूटजाते ४

सत्यसेहीन, पिता और माताके दुःख देनेवाले, आश्रमों में नहीं
थत, कुलके धर्मसे वर्जित और दांभिकहैं वेभी माघके स्नानों से
ज्जनों की गतिको प्राप्त होते हैं ५ माघमासमें पुण्यतीर्थोंमें स्नान
थ्वी में मनुष्योंको अत्यन्त दुर्लभहै तिससे मनुष्य जिससे ब्रह्मके
ाननेवालों के पदको प्राप्तहो तो इसमें हमको कुछ विचारणा नहीं
६ माघमहीने में तपस्या,दान और जपका सेवन और भगवान्‌के
ान का पूजन नाशरहित होताहै तिससे यथाशक्ति मनुष्य स्नान
र कपड़ा, अन्न और सोनेकोदेवै ७ माघमें अन्नका देनेवाला देव-
ानमें अमृतका पीनेवाला होता, सोनेका देनेहारा इन्द्रके समीप
प्तहोता, दीप, अग्नि और कपड़ों का देनेवाला दीप्तियुक्त होकर
दैव सूर्य्य के लोकमें बसताहै ८ यज्ञ, दान, उज्ज्वल सुन्दर तप-
ा, ब्रह्मचर्य्य और पूजन के योगकी सेवासे तैसे पापी शुद्ध नहीं
तेहैं जैसे माघके पुण्यकारी स्नानोंसे शुद्ध होते हैं ९ दुःखसमूह
। संतप्ति और यमराजकी यातनाको वे पापी भी नहीं प्राप्त होते
जे माघमहीने में आधे सूर्यके मण्डलके उदय होने में श्रेष्ठ तीर्थ
। स्नानकरते हैं १० माघ में स्नानकर जे हरिको पूजते हैं वे स्व-
र्ग से च्युत राजा होते हैं जोकि कल्याणयुक्त, सुन्दर रूपवाले, सौ-
ाग्ययुक्त, प्रिय कहनेवाले, धर्म्मयुक्त, बड़े धनवाले और सौवर्ष
। उमरयुक्त होते हैं ११ दीप्तअग्नि में काष्ठसमूह होम करने से
ासीक्षणमें जैसे भस्म होजाताहै तैसेही माघके स्नानसे थोड़ा या
हुत पापकासमूह नाश होजाताहै १२ देह, वाणी और मनसे जो
ानकर या विना जानकर मनुष्य पापकरते हैं वे माघमें श्रेष्ठतीर्थ
स्नान करने से इसप्रकार जलजाते हैं जैसे हृदय में प्राप्तहोकर
ष्णुजी जल्द सब पापोंको जलादेते हैं १३ मनुष्य प्रमादसे पाप
फलों को भोगताहुआ भी जो माघके स्नानको करै तो निश्चय
सके पाप नाशहोजावें १४ पूर्व्वसमय में गन्धर्वकी कन्या राजाके
ापसे दुरत्यय पापके फलको भोगती हुई लोमशजी के वचन से
ाघमासमें स्नानकरने से पापोंसे छूटगई यह बड़ाही अद्भुतहुआहै
५ सूतजीबोले कि यह सुनकर राजाप्रीतिसे वसिष्ठजी के कमल-

रूपी चरणों में नमस्कार कर श्रेष्ठश्रद्धा से नम्रहोकर उनसे पूं
भये १६ कि हे भगवन् कन्याओं नेशाप कैसे पाया किसकी कन्या
उनके नाम क्या२ थे उमर कितनीथी १७ और लोमशजी के
से शापसे उत्पन्न विपाकसे कैसे छूटगईं और कहांपर उन्होंने
मासमें स्नानकिया और कितने माघ उन्होंने नहाये यह सब
कहिये १८ तब वसिष्ठजी बोले कि हे राजाओं में शार्दूलरूप!
युक्त श्रेष्ठकथा को सुनो जैसे अरणीअग्निको गर्भ में रखती है
धर्म और अग्नि को उत्पन्न करती है १९ सुखसंगीति नाम
हुआ तिसकी कन्या प्रमोदिनीहुई, सुशीलगन्धर्व के
हुई, स्वरवेदी गन्धर्व के सुस्वरा कन्याहुई २० चन्द्रकांतगंधर्व
सुताराकन्याहुई और सुप्रभगंधर्वके चन्द्रिका कन्याहुई ये
तिन अप्सराओं के हैं २१ और पांचों कुमारी उमरमें बराबर
और चन्द्रमा से मानो निकली हुई थीं चन्द्रिका की नाईं
उज्ज्वलथीं २२ चन्द्रमा कैसे मुख, सुन्दर बालोंसेयुक्त, चन्द्रमा
अमृतका रस ओष्ठों में था नेत्रों में आनन्द करनेवाली इसप्रकार
जैसे कुमुदों में कौमुदी होती है २३ लावण्यके पिण्डसे उत्पन्न,
रूपयुक्त, मनोहर, उद्भिन्नथे कुचरूपी कलश जैसे वैशाखमें
होजाती हैं तैसीथीं २४ और मनोहर यौवनको नवीनपत्तोंसे
कीनाईं उन्मीलनकर सुवर्ण के समान गोरी, सुवर्णही की
सुवर्णही के गहनों से भूषित २५ सुवर्ण के समान चंबेली के माल
धारणकिये, सुवर्णकीसी छवियुक्त सुन्दरकपड़े पहने, स्वरों के समूहों
पंक्तियुक्त, अनेकप्रकारके मूर्च्छनाओं सेभी युक्त २६ वंशी और
के बजाने में तालदानके विनोदों से युक्त, मृदंगके शब्दसे भिन्न
मार्गलवसेभी युक्तथीं २७ और चित्रादिक विनोद और
में निपुणथीं इसप्रकारकी वे कन्या क्रीडनवनमें मोहको प्राप्तहुई
२८ पिता और माताओं से प्यारकीहुई वे कुबेरके स्थानमें घूमती
भईं परन्तु कौतुकही से वे पांचों एकसमय में वैशाख महीने में
लकर कल्पवृक्ष के फूल ढूंढ़ती हुई कईएक वनों में जाती भईं
पार्वतीजी की आराधना करनेको वे श्रेष्ठ स्त्रियां कदाचित् अच्छा

सरोवरको गईं और वहांसे श्रेष्ठ सुवर्णके कमल श्रेष्ठ कमलों समेत ग्रहण करतीभईं ३० वैडूर्य शुद्ध स्फटिक और मूंगोंसे जड़ेहुए तड़ागमें स्नानकर कपड़े पहन मौन होकर सुवर्ण की बालुकाओं से स्थण्डिल पिण्डिकामयी पार्वतीजीकी मूर्त्ति बनातीभईं ३१ चन्दन, कपूर, केसरि और श्रेष्ठ कमल आदिके फूलों और अनेकप्रकार के उपचारों से अच्छी भक्तिमें भावित होकर वे कुमारिका तालके प्रयोगोंसे नाचने लगीं ३२ और वेही मृगनयनी गान्धार श्रेष्ठस्वरका आश्चयकर सुन्दर तारकी ध्वनियोंसे मूर्च्छित, मनोहर अक्षरोंवाले, चारुप्रबन्ध और गतियोंसे अच्छे स्वरसे गानेलगीं ३३ तिस रस कीवर्षा और आनन्दके देनेवाले शब्दमें निर्भर नृत्यकी वृत्तियोंमें युक्त होकर गातीहीथीं कि तिसीसमयमें अच्छोद तीर्थ श्रेष्ठमें वेदनिधिमुनि के पुत्र अग्निपनामी स्नानकरनेको प्राप्त होगये ३४ जो कि अत्यन्त रूपवान्, श्रेष्ठमुखयुक्त, कमलपत्र के समान बड़े नेत्रों वाले, युवावस्था से युक्त, विशालहृदय समेत, सुन्दर भुजायुक्त, अत्यन्त सुन्दर, श्यामवर्ण, दूसरे कामदेवके समानथे ३५ शिखा और दण्डसे युक्त वे ब्रह्मचारी इसप्रकार शोभित हुए जैसे धनुषसे कामदेव शोभित होताहै मृगछाला को धारे सुन्दर जनेऊ पहने सोने की दीप्तिके समान मौंजी और करिहांव में सूत्र मेखला धारे ३६ तिस ब्राह्मण को देखकर वे स्त्रियां कौतुकसे युक्त होकर तालाब के किनारे आकर आनन्द को प्राप्त होतीभईं और यह कहतीभईं कि हमारे नयनों के अतिथि ये कौन हैं ३७ ऐसा कहकर नाच और गानको छोड़दिया और तिनके देखनेमें तत्परहोगईं जैसे बहेलिया से बिद्ध हरिणीहों तैसेही कामके बाणोंसे वे स्त्रियां बिद्ध होगईं ३८ और पांचों यह कहतीभईं कि देखो देखो इसप्रकार कहकर तिस युवावस्थायुक्त श्रेष्ठ ब्राह्मण में कामदेव के भ्रमको प्राप्त होती भईं ३९ वारंवार कमलरूपी नयनोंसे तिनको पूजनकर पीछेसे वे कन्या परस्पर विचारकरनेलगीं ४० कि यदि ये कामदेवहैं तो रतिसे हीन कैसे प्राप्तहोते अश्विनीकुमार होते तो वे दोनों साथही चलते ४१ गन्धर्व, किन्नर, कामरूप धरनेवाला सिद्ध, ऋषिपुत्र वा

मे कोई उत्तमहों ४२ कोईहों परन्तु ब्रह्माजी ने हमारेहीलिये इनको इसप्रकार रचाहै जैसे भाग्यवानों के अर्थमें पूर्वके कर्मोंसे निधिरची होती है ४३ करुणाके जलके कल्लोलके प्लवसे गीला चित्तकर पार्वतीजी ने हम कुमारियों को उत्तम वर प्राप्त करदियाहै ४४ और पांचोंकन्या परस्पर कहनेलगीं कि मैंने और तुमने इनकोवर स्वीकार कियाहै तुमने तथा मैंने वर स्वीकार कियाहै ४५ तिनके वचन सुनकर वे मुनि दोपहर की क्रियाकर हृदयमें विचारतेभये कि यह विघ्न उपस्थित हुआ ४६ ब्रह्मा विष्णु महादेव आदिक देवता,सिद्ध और पुराने मुनि जोकि योग में बड़े बलवान् थे वेभी लीलाही से स्त्रियों करके मोहित करलियेगये हैं ४७ स्त्रियोंके नयनरूपी तीक्ष्ण बाण जोकि भ्रूरूपी लताओं में दृढ़ धनुष से निकले हुए हैं उनसे और धन्वी कामदेव से हत किसका मनरूपी हरिण नहीं गिरताहै ४८ तबतक नीतिकी बुद्धि शोभित होती है जनसमूहोंका भयभी तभीतक रहताहै तबतक चित्तकी दृढ़ता और तभीतक कुलकी गणना रहतीहै ४९ तबतक तपकी प्रगल्भता और तभीतक मनुष्यों का यम धारण होताहै जबतक मनुष्य भारी मदवाले स्त्रीके नयन रूप बाणोंसे नहीं मोहित होतेहैं ५० स्त्रियां ललित और मनोहरों से रागियोंको मोहित और मदयुक्त करदेती हैं और ये हमको भी मोह और मदयुक्त करदेंगी इससे किन गुणोंसे धर्मका रक्षण श्रेष्ठ है ५१ मांस, वीर्य्य, मल और मूत्रसे बनेहुए, निर्घृण, अपवित्र स्त्रियों के शरीर में मूढ़चित्तवाले कामी मनुष्य–चारुता परिकल्पित कर नहीं रमें ५२ क्योंकि निर्म्मल बुद्धिवाले पण्डितों ने स्त्रियों का समीप होनाही दारुण कहाहै जबतक ये समीप न आवेंगी तबतक मैं घरको चलाजाऊंगा ५३ ऐसा कहकर ब्राह्मण उन स्त्रियोंके समीप पहुँचने के पहलेही अन्तर्द्धानहोगये ५४ तिन बुद्धिमान् ऋषिपुत्रका योगबलसे अन्तर्द्धान होना यह अद्भुत कर्म देखकर ५५ स्त्रियोंके भययुक्त नयनहोगये, हरिणीकीनाईं कातर होगईं, सम्भ्रान्तनेत्र होकर दशोंदिशाओंको शून्य देखनेलगीं ५६ और परस्पर यह कहनेलगीं कि स्फुट इन्द्रजाल वा मायाको ये जानते थे जोकि

दिखलाई देकर फिर लुप्त होगये ५७ तिन स्त्रियोंका हृदय सदैव विरहकी अग्निसे व्याप्तथा जैसे जलती हुई दावानल से स्निग्ध, सघनवन होताहै ५८ अब सब शोचकर कहती हैं कि हे कान्त इन्द्रजाल की विद्याको छोड़कर जल्द अपनी आत्माको दिखलाइये जिसमें पूर्वग्रास में मक्षिकाके सदृश हमारा मनयुक्त है ५९ बड़े कष्टकी बात है कि ब्रह्माने क्यों तुमको हमें दिखलाया और फिर लुप्त करलिया अब यह हमलोगों ने जाना कि हमारेही महा सन्तापके हेतु तुमको रचाथा ६० हे कान्त क्या तुम्हारा दयारहित चित्तहै या हमलोगों में तुम्हारा मन नहीं है, या धूर्तहो, या हमारे मनको चुरायेहो ६१ हमलोगोंमें प्रत्यय नहीं है या हमारी परीक्षा कररहेहो कोई नर्मकी कलाके शीलवाले, कोई मायामें निपुण ६२ कोई चित्तमें प्रवेश करनेको विज्ञानकी लघुता जानते हैं कोई निकलने के उपाय को नहीं जानते ६३ आप विना अपराध के हम लोगोंमें क्रोध करगये कोई दूसरों के दुःखको विप्रलम्भ से उत्पन्न जानतेहैं ६४ हे हृदयके स्वामी तुम्हारे दर्शन के विना इससमयमें हमलोग न जीसकेंगी अभी आपके दर्शनकी आशासे जीरही हैं ६५ जहां आपशीघ्र चलेगये हैं वहीं हमको भी लेचलिये तुम्हारे दर्शनके हरनेवाले ब्रह्माजी ने अंकुरच्छिद को धारण किया है ६६ सर्वथा दर्शन आप दीजिये और दयाको सेवन कीजिये क्योंकि सज्जन मनुष्य सर्वथापर्यंतको नहीं देखते हैं ६७ इसप्रकार वे कन्या रोदनकर बहुत देरतक परखती भईं फिर पिताकेडरसे घरको शीघ्र चलीं ६८ जोकि तिन मुनिके पुत्रके प्रेमरूपी जञ्जीरोंसे बँधी, विरह से व्याकुलथीं वे बड़े कष्टसे धीरज धरकर अपने अपने घरमें प्राप्त होगईं ६९ और सब जलयन्त्र के समीप से आकर गिरगईं तब माताओं ने पूछा क्या है कहां इतना समय व्यतीत हुआ ७० तब कन्या बोलीं कि किन्नरियों के साथ आनन्द से क्रीड़ा करतीं और गीत गाती थीं और दिवसादि सरोवरही में स्थितरहीं परन्तु नहीं जानतीं कि क्या हुआहै ७१ हे मातः! हमलोग राहमें थकगई थीं तिसी से हमारी देह में सन्ताप है बड़े मोह से कहने को हम नहीं

समर्थ हैं ७२ ऐसा कहकर कुमारिका मणिभूमि में लोटगईं आकार को छिपाकर माताओं से बात कर रही हैं ७३ कोई क्रीड़ा के मयूरको आनन्द से न नचाती भई और कुमारिका कुतूहलसे पिंजरे में सुआको न पढ़ातीभई ७४ और कुमारिका न्यौलेको न दुलरातीभई, और सारिकाको भी न बुलाती भई और अत्यन्त संमुग्धाकुमारिका सारसोंसे क्रीड़ा न करतीभई ७५ वेसब विनोदोंको न सेवती, मन्दिरमें नहीं रमती, बांधवोंसे अच्छीतरह नहीं बोलती और वीणाके बाजेको न बजातीभई ७६ और कल्पवृक्षके फूल जो रसयुक्त अमृतके सदृश हैं मंदारके फूलोंके आमोदि, मीठेमधुको न पान करतीभई ७७ और योगिनियोंकी नाईं वे कन्या नाकके अग्र में नेत्रोंको रखकर अलक्ष्यहोकर ध्यान बढ़ातीभई और पुरुषोत्तम में मनलगाये ७८ चन्द्रकान्तमणि से छन्न,गिरतेहुए हैं जलके कणके द्रवजिसमें ऐसे झरोखे में क्षणमात्र स्थितहोकर फिर क्षणमात्र जलयंत्रको देखतीभई ७९ क्षणमात्र कमलिनीदलोंसे भारी शय्या रचती भई और सखियां ठण्ढेकेलेके पत्तों से पंखा करती भई ८० इसप्रकार वे श्रेष्ठस्त्रियां रात्रिको युगसमान मानतीभई और ज्वरयुक्तकी नाईं व्याकुल होकर बड़ेकष्ट से धीरज धरती भई ८१ प्रातःकाल आकाशके मणिरूपसूर्यको देखकर अपने जीवनको मानतीभई और अपनी२ माताओं से आज्ञालेकर पार्वतीजी के पूजनको गईं ८२ और तिसी विधान से स्नानकर फूल, धूपआदिकों से पार्वतीजी की पूजन कर वहींपर स्थितहोकर गानेलगीं ८३ इसी अवसर में वहीब्राह्मण पिताके स्थानसे अच्छोद सरोवरमें स्नान करने को प्राप्तहुआ ८४ तो वे कन्या रात्रिके अंतमें कमलिनीकी नाईं मित्र तिस ब्रह्मचारी को देखकर उत्फुल्लनेत्र होगईं ८५ और तिसीसमय में उनकेपास जाकर दोनों हाथों से पकड़ लेतीभईं ८६ और यह कहतीभईं कि हे धूर्त कल्हतुम चलेगयेथे आजनहीं जासक्तेहो निश्चय हमलोगों से तुम वरेगयेहो इसमें तुम्हारा कुछ विचारणा नहीं है ८७ ऐसा कहनेपर भुजाओंकी फँसरीमें प्राप्त ब्राह्मणहँसकर बोला कितुमलोग कल्याणयुक्त, अनुकूल और प्रियवचन कहतीहो ८८ प्रथम आश्रम

में निष्ठ और गुरुजी के कुलमें वेदके अभ्यास करने के शीलयुक्त इससमय में हमारा यह व्रत नहीं पारहोगा ८९ हे कन्याओ जिस आश्रममें जो धर्म्म है वही पण्डितों करके रक्षाकरने योग्यहै इससे विवाहको धर्म हम नहीं मानते हैं ९० तिसके वचन सुन वे कन्या वचन बोलीं जोकि मनोहरध्वनि और उत्कण्ठासमेत हैं वे वैशाखमें कोकिलाकी समान कहनेलगीं ९१ कि धर्म्मसे अर्थ, अर्थसे काम, और कामसे धर्म्मफलका उदय होताहै यह शास्त्रमें निश्चयहै विद्वान् लोग इसीको वर्णन करते हैं ९२ सोई कामधर्म की बाहुल्यता से तुम्हारे आगे प्राप्त हुआहै अनेकप्रकारके भोगोंसे सेवन कीजिये क्योंकि यही स्वर्गकी भूमिहै ९३ तिन कुमारियों के वचन सुन गम्भीरवाणी से मुनिपुत्र बोले कि तुम लोगों के वचन सत्यहैं अपने व्रतको समाप्तकर ९४ गुरुजी की आज्ञा पाकर सब विवाहकर्म्म करेंगे और रीतिसे नहीं करसक्ते हैं ऐसा कहकर वे फिर बोलीं कि हे सुन्दर तुम स्फुटमूढ़हो ९५ सुन्दर औषध, ब्रह्मरसायन, निधिकी सिद्धि, साधुकला श्रेष्ठ स्त्रियां हैं, मन्त्र तथा सिद्धि और रस ये धर्म से प्राप्तहुए बुद्धिमान् करके नहीं त्यागने योग्य हैं ९६ यदि दैवसे प्राप्त होजावे तो नीतिका जाननेवाला उपेक्षा को न प्राप्तहो क्योंकि उपेक्षा फलकी देनेवाली नहीं है तिससे विलम्ब करना नहीं अच्छा है ९७ अनुरागयुक्त, कुलजन्मकी निर्म्मल, स्नेहसे गीलेचित्तवाली, अच्छी वाणी बोलनेवाली, अपने आप बरनेवाली, कन्या, सुन्दररूपयुक्त, और युवावस्थावाली जिन मनुष्यों को मिलें वे धन्य हैं और धन्य नहीं हैं ९८ कहां हम श्रेष्ठ सुन्दरियां और कहां ये तपस्वी ब्रह्मचारी अत्यन्त पण्डित ब्रह्माजी ने दुर्घट विधान में यह रचाहै यह हम मानती हैं ९९ तिससे इससमयमें हमको गान्धर्व्व विवाहसे स्वीकार करो तुम्हारा कल्याण होगा नहीं तो हमलोग न जीसकेंगी १०० इसप्रकार के वचन सुनकर धर्म्म के जाननेवाले ब्राह्मण बोले कि भो मृगनयनियो मनुष्यों का धर्महो धनहै इससे धर्म कैसे त्यागनेयोग्यहै १०१ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों जैसे कहेहुएहैं वैसेही सफल जानने योग्यहैं उलटे निष्फलहैं १०२ व्रत

समर्थ हैं ७२ ऐसा कहकर कुमारिका मणिभूमि में लोटगईं आकार को छिपाकर माताओं से बात कर रही हैं ७३ कोई क्रीड़ा के मयूरको आनन्द से न नचाती भई और कुमारिका कुतूहलसे पिंजरे में सुआको न पढ़ातीभई ७४ और कुमारिका न्यौलेको न दुलरातीभई, और सारिकाको भी न बुलाती भई और अत्यन्त संमुग्धाकुमारिका सारसोंसे क्रीड़ा न करतीभई ७५ वेसब विनोदोंको न सेवती, मन्दिरमें नहीं रमती, बांधवोंसे अच्छीतरह नहीं बोलती और वीणाके बाजेको न बजातीभईं ७६ और कल्पवृक्षके फूल जो रसयुक्त अम्लके सदृश हैं मंदारके फूलोंके आमोदि, मीठेमधुको न पान करतीभईं ७७ और योगिनियोंकी नाईं वे कन्या नाकके अग्र में नेत्रोंको रखकर अलक्ष्यहोकर ध्यान बढ़ातीभईं और पुरुषोत्तम में मनलगाये ७८ चन्द्रकान्तमणि से छन्न,गिरतेहुए हैं जलके कणके द्रवजिसमें ऐसे झरोखे में क्षणमात्र स्थितहोकर फिर क्षणमात्र जलयंत्रको देखतीभईं ७९ क्षणमात्र कमलिनीदलोंसे भारी शय्या रचती भईं और सखियां ठण्ढेकेलेके पत्तों से पंखा करती भईं ८० इसप्रकार वे श्रेष्ठस्त्रियां रात्रिको युगसमान मानतीभईं और ज्वरयुक्तकी नाईं व्याकुल होकर बड़े कष्ट से धीरज धरतीभईं ८१ प्रातःकाल आकाशके मणिरूपसूर्यको देखकर अपने जीवनको मानतीभईं और अपनी२ माताओं से आज्ञालेकर पार्वतीजी के पूजनको गईं ८२ और तिसी विधान से स्नानकर फूल, धूपआदिकों से पार्वतीजी की पूजन कर वहींपर स्थितहोकर गानेलगीं ८३ इसी अवसर में वहीब्राह्मण पिताके स्थानसे अच्छोद सरोवरमें स्नान करने को प्राप्तहुआ ८४ तो वे कन्या रात्रिके अंतमें कमलिनीकी नाईं मित्र तिस ब्रह्मचारी को देखकर उत्फुल्लनेत्र होगईं ८५ और तिसीसमय में उनकेपास जाकर दोनों हाथों से पकड़ लेतीभईं ८६ और यह कहतीभईं कि हे धूर्त कलहतुम चलेगयेथे आजनहीं जासक्तेहो निश्चय हमलोगों से तुम वरेगयेहो इसमें तुम्हारा कुछ विचारणा नहीं है ८७ ऐसा कहनेपर भुजाओंकी फँसरीमें प्राप्त ब्राह्मणहँसकर बोला कि तुमलोग कल्याणयुक्त, अनुकूल और प्रियवचन कहतीहो ८८ प्रथम आश्रम

में निष्ठ और गुरुजी के कुलमें वेदके अभ्यास करने के शीलयुक्त इससमय में हमारा यह व्रत नहीं पारहोगा ८९ हे कन्याओ जिस आश्रममें जो धर्म्म है वही पण्डितों करके रक्षाकरने योग्यहै इससे विवाहको धर्म हम नहीं मानते हैं ९० तिसके वचन सुन वे कन्या वचन बोलीं जोकि मनोहरध्वनि और उत्कण्ठासमेत हैं वे वैशाखमें कोकिलाकी समान कहनेलगीं ९१ कि धर्म्मसे अर्थ, अर्थसे काम, और कामसे धर्म्मफलका उदय होताहै यह शास्त्रमें निश्चयहै वि-द्वान् लोग इसीको वर्णन करते हैं ९२ सोई कामधर्म की बाहुल्यता से तुम्हारे आगे प्राप्त हुआहै अनेकप्रकारके भोगोंसे सेवन कीजिये क्योंकि यही स्वर्गकी भूमिहै ९३ तिन कुमारियों के वचन सुन ग-म्भीरवाणी से मुनिपुत्र बोले कि तुम लोगों के वचन सत्यहैं अपने व्रतको समाप्तकर ९४ गुरुजी की आज्ञा पाकर सब विवाहकर्म्म करेंगे और रीतिसे नहीं करसक्ते हैं ऐसा कहकर वे फिर बोलीं कि हे सुन्दर तुम स्फुटमूढ़हो ९५ सुन्दर औषध, ब्रह्मरसायन, निधिकी सिद्धि, साधुकला श्रेष्ठ स्त्रियां हैं, मन्त्र तथा सिद्धि और रस ये धर्म से प्राप्तहुए बुद्धिमान् करके नहीं त्यागने योग्य हैं ९६ यदि दैवसे प्राप्त होजावे तो नीतिका जाननेवाला उपेक्षा को न प्राप्तहो क्योंकि उपेक्षा फलकी देनेवाली नहीं है तिससे विलम्ब करना नहीं अच्छा है ९७ अनुरागयुक्त, कुलजन्मकी निर्म्मल, स्नेहसे गीलेचित्तवाली, अच्छी वाणी बोलनेवाली, अपने आप बरनेवाली, कन्या, सुन्दर-रूपयुक्त, और युवावस्थावाली जिन मनुष्यों को मिलें वे धन्य हैं और धन्य नहीं हैं ९८ कहां हम श्रेष्ठ सुन्दरियां और कहां ये त-पस्वी ब्रह्मचारी अत्यन्त पण्डित ब्रह्माजी ने दुर्घट विधान में यह रचाहै यह हम मानती हैं ९९ तिससे इससमयमें हमको गान्धर्व्व विवाहसे स्वीकार करो तुम्हारा कल्याण होगा नहीं तो हमलोग न जीसकेंगी १०० इसप्रकार के वचन सुनकर धर्म्म के जाननेवाले ब्राह्मण बोले कि भो मृगनयनियो मनुष्यों का धर्मही धनहै इससे धर्म कैसे त्यागने योग्यहै १०१ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों जैसे कहेहुएहैं वैसेही सफल जानने योग्यहैं उलटे निष्फलहैं १०२ व्रत

धारण करनेवाला मैं अकालमें स्त्रीको नहीं ग्रहण करसक्ता क्योंकि जो क्रिया कालको नहीं जानता है तो उसकी क्रिया फलको नहीं प्राप्त होती है १०३ जिससे इस धर्मके विचार में हमारा मन लगा हुआहै तिससे हे कन्या हम स्वयंवरको नहीं स्वीकार करते हैं १०४ इसप्रकार तिनका आशय जानकर और परस्पर सब देखकर हाथ से हाथ छोड़कर प्रमोदिनी ने दोनों मुनि के पांव पकड़े १०५ सुशीला और सुस्वरा इन दोनोंने दोनों भुजागहे सुतारा आलिङ्गन करती भई चन्द्रिका मुख चूंबती भई १०६ तिसपरभी निर्विकार, प्रलयकी अग्निके सदृश, क्रोधसे अत्यन्त मूर्च्छित ब्रह्मचारी तिनको शाप देतेभये १०७ कि पिशाचिनीकी नाईं हममें लग्नहो इससे पिशाची होजावो इसप्रकार जब उन्होंने शाप दिया तो उनको छोड़कर वे आगे स्थित होगईं १०८ और कहनेलगीं कि हे पापी अपराधहीन हमलोगों में तुमने यह क्या किया प्रियकृत्य में अप्रिय किया तुम्हारी धर्मज्ञता को धिक्कारहै १०९ यह हमलोगों ने सुनाहै कि अनुरक्त भक्तों और मित्रोंमें जे द्रोह करनेवाले पुरुषहैं उनका दोनोंलोकों का सुख नाशको प्राप्त होजाता है ११० तिससे तुमभी हमारे शापसे शीघ्रही पिशाच होजावो ऐसा कहकर भूंखसे व्याकुल, श्वास लेतीहुई कन्या चुपहोरहीं १११ और तिसीसम में परस्पर क्रोधसे वे कन्या और ब्रह्मचारी ये सब पिशाच होग ११२ पिशाचिनी और पिशाच घोर रोदन करने लगे और पू जन्मके कर्मके विपाकको भोगनेलगे ११३ क्योंकि पूर्वजन्मके शु अशुभ फल अपने कालही में फलते हैं जैसे देवताओं को अप छाया दुर्वार होतीहै ११४ अब उन कन्याओं के माता और पित वहांपर बड़ा रोदन करनेलगे कि बालाओंका यह अप्रमादहै-दै बड़ा दुरतिक्रम करनेवाला है ११५ तदनन्तर वे पिशाच भूंख लिये अत्यन्त दुःखित इधरउधर दौड़तेहुए तालाबके किनारे बस नेलगे ११६ इसप्रकार बहुत काल बीतनेपर मुनियों में श्रेष्ठ लो मशजी पूसकी चतुर्दशीमें अच्छोदमें स्नान करनेको प्राप्तहुए ११ तिन ब्राह्मणको देखकर भूंखसे व्याकुल सब पिशाच झुण्डकेझुण

मिलकर मुनिके मारनेकी कामना से दौड़े ११८ परन्तु लोमशजी के तीव्रतेजसे जलनेलगे तो आगे स्थित होनेको भी न समर्थहुए सब दूरही स्थित रहे ११९ फिर तिसीसमय में वेदनिधि ब्राह्मण प्राप्तहुए और उन्होंने लोमशजी को देखकर साष्टांग प्रणाम किया १२० और शिरमें अञ्जली बांधकर सत्यवचन बोले कि हे ब्राह्मण बड़ी भाग्यके उदय में साधुओंकी संगति होती है १२१ गङ्गादिक सब तीर्थों में जो मनुष्य सदैव स्नान करताहै और जो सज्जनों की संगति करताहै तिन दोनों में सत्संगति श्रेष्ठ है १२२ गुरुओं का संगम पृथ्वी में दृष्ट अदृष्ट फल, स्वर्ग देनेवाला, रोग हरनेहारा किंतु उपद्रवयुक्त कहा है १२३ ऐसा कहकर पूर्वके अद्भुत वृत्तान्त को कहनेलगे कि ये गन्धर्वों की कन्या और यह ब्रह्मचारी हमारा पुत्र १२४ ये सब परस्पर शापदेकर पिशाचरूप होगये हैं और हे मुनिश्रेष्ठ दीनमुख होकर तुम्हारे आगे खड़े हैं १२५ आपके दर्शन से बालोंका निस्तार इससमयमें होगा सूर्य्यके उदयमें जैसे अन्धकार दूरहोजाताहै तैसेही इनकेपाप नाशहोजावेंगे १२६ यहसुन महातेजस्वी लोमशजी कृपासे मनकोगीलाकर पुत्रदुःखित मुनिजी से बोले १२७ कि हमारे प्रसादसे बालों को शीघ्रस्मरण होजावे क्योंकि मैं धर्मको कहूंगा जिससे परस्परका शाप नाशहोजावे १२८ तब वेदनिधिजी बोले कि हे महर्षि लोमशजी धर्मकहिये जिससे बालकछूट जावें यहकाल बिलम्बका नहीं है क्योंकि शापकी अग्नि भयानक है १२९ तब लोमशजी बोले कि हमारेसाथ विधानसे माघस्नानको करें माघके अन्तमें शापसे छूटजावेंगे और प्रकारसे निष्कृति न होगी १३० हे विप्र शाप पापकाफलहै मनुष्योंका पाप तीर्थमें माघमेंस्नान करनेसे नाशहोजाताहै यहहमारी निश्चितबुद्धि है १३१ पुण्यतीर्थ में माघका स्नान सातजन्मों के किये और वर्त्तमान जन्मके कियेहुये कोभी विशेषकर जलादेताहै १३२ जिस पापमें मुनीश्वर प्रायश्चित्त नहीं देखते हैं वेभी पाप माघस्नानसे नाशहोजाते हैं १३३ माघ का महीना मनमें ज्ञानका करनेवालाहै तिससे मोक्षफलका देनेवाला है हिमवत्पृष्ठतीर्थोंमें सबपाप नाशकरनेहारा है १३४ वेदके ज न

वालों ने अच्छोदमें स्नानकरना इन्द्रलोकका देनेवाला कहाहै बदरी वनमें माघकास्नान सबपाप हरनेवाला और मोक्षदेनेहाराहै १३५ नर्मदा में माघका स्नान पाप और दुःखोंका नाशनेवाला, सबकामनाओं के फलका देनेहारा और रुद्रलोक का देनेवालाहै १३६ यमुनाजी का स्नान पाप नाशता और सूर्यलोक देताहै सरस्वतीजी का स्नान पाप विध्वंस करता और ब्रह्मलोक को देता है १३७ हे द्विजोत्तम विशालामें माघका स्नान विशाल फल देता पापरूपी इंधन को दावानल और गर्भहेतुक्रिया को नाश करताहै १३८ गंगा जीका स्नान विष्णुलोक और मोक्षका देनेवाला है सरयू, गण्डकी, सिन्धु, चन्द्रभागा, कौशिकी १३९ तापी, गोदावरी, भीमा, पयोष्णी, कृष्णावेणिका, कावेरी, तुंगभद्रा और भी जो समुद्रके जानेवाली नदियां हैं १४० इनमें माघमें स्नान करने से शीघ्रही पापरहित होकर मनुष्य स्वर्गलोक को जाता है नैमिषारण्य में विष्णुसायुज्य, पुष्करमें ब्रह्माजी के समीप १४१ कुरुक्षेत्र में माघका स्नान आखण्डललोक देताहै देवह्रदमें योगसिद्धि फलको देताहै १४२ मकर के सूर्यों में प्रभासमें स्नान करने से मनुष्य महादेवजीका गण होजाताहै देवकी में माघस्नान करने से मनुष्य देवतादेह होजाता है १४३ भो ब्राह्मण गोमतीमें माघके स्नानसे फिर जन्म नहीं होता है हेमकूट, महाकाल, ॐङ्कार, अमरेश्वर, १४४ नीलकण्ठ और अर्बुदमें माघस्नान करने से रुद्रलोक में जाताहै मकरके सूर्य्यों में सब नदियों के संगम में १४५ स्नान करने से मनुष्यों को सब कामनाओं की प्राप्ति होजाती है प्रयागमें माघमें जे स्नान करते हैं वे धन्य मनुष्यहैं वहांका सफ़ेद और श्यामजल फिर जन्म नहीं होने देताहै १४६ आकाशमें स्थित देवता गाते हैं कि प्रयागमें माघ हम लोगोंका होवे कि जहां स्नानकर मनुष्य गर्भकी वेदनाको नहीं देखते हैं विष्णुजी के समीपही स्थित होते हैं १४७ जे मनुष्य अत्यन्त पापयुक्त होते हैं वेभी माघमें प्रयाग तीर्थ में स्नानकर नरकको नहीं जाते हैं और धर्मात्मा तो शुभ स्वर्गमें देवताओं के समान घूमतेही हैं १४८ तीर्थ, व्रत, दान, तपस्या, यज्ञ इनके संग पूर्वसमयमें ब्रह्मा

जीने तराजूमें धरकर प्रयागजीके माघकेस्नानको तौलाथा तिनमेंसे माघही गरुआहुआ इससे यही अधिकफल देनेवालाहै १४९ पवन, जल, पत्तोंका भोजन, देहका सुखलाना, बहुतकाल की इकट्ठा कीहुई घोर तपस्या और योगसे मनुष्य तिस गतिको नहीं प्राप्त होते हैं जिसको कि माघके स्नानसे प्राप्त होते हैं १५० जे मनुष्य मकरके सूर्यों में सूर्य के उदयमें प्रयाग तीर्थ में गंगा यमुनाके संगममें स्नान करते हैं तिनके घरके द्वारको हाथियों के कानों से ताड़ित भृंगोंकीपंक्ति शोभित करती है १५१ जो प्रयाग स्नानसे राजसूय और अश्वमेध यज्ञसे अधिक फलको देताहै लीलाही से सब पापोंको लोप करदेताहै वह कैसे न सेवन कियाजावे १५२ अवन्ती में राजावीरसेन पहले हुआथा वह नर्मदाके किनारे आकर राजसूययज्ञ करनेलगा १५३ सोलह अश्वमेधयज्ञ जोकि सोनेकीवाटसे शोभित, सोनेही के भूषण और यज्ञके खंभसे युक्तथीं उनसे यथाविधि वहयज्ञ करनेलगा १५४ ब्राह्मणों को पर्वतों के सदृश अन्नकी राशियों को देताभया, वदान्य, देवताओं का भक्त, गऊ और सोनेका देनेवाला हुआ १५५ और एकब्राह्मण भद्रकनामी हुए जोकि मूर्ख, कुलसेहीन, कृषीकरनेवाले, दुराचारी, सबधर्मों से बाहर कियेहुए १५६ खेतीके कर्मसे उद्विग्न, बन्धुओंसे असंस्कृत, इधर उधर घूमकर भूंखसे पीड़ित होकर निकलेथे १५७ भाग्यसे वह द्रव्यके लिये प्रयागजीको प्राप्तहोगये तो महामाघी से लेकर तीन दिनतक उन्होंने स्नान किया १५८ तो स्नानही करने से पापरहित उत्तम ब्राह्मण होगया फिर प्रयाग से वहींको चला जहांसे आयाथा १५९ तो वहराजा और यह ब्राह्मण एकही समय में मार्गही में भाग्यके वशसे मृतक होगये तिन दोनों की गति मैंने इन्द्रके समीपमें देखी १६० कि तेज, रूप, बल, स्त्रैण, विमान, गहने, कल्पवृक्ष की माला, नाच और गाना उनदोनों का बराबर है १६१ यह क्षेत्रका माहात्म्य देखा है कैसे इसको कहें हे विप्र माघमहीने में सफ़ेद और श्यामजल में स्नान करना राजसूय यज्ञोंके समान कहाहै १६२ तीनसौ धनुषके विस्तारमें सफ़ेद नीलजल का संगमहै वहांपर माघमें स्नान करनेसे फिर ज

होता है राजसूय यज्ञ करनेवाला होताहै १६३ माघमहीने की पवन भी सफ़ेद और श्यामजलको स्पर्श करती है निश्चय अधर्म्म को नहीं स्पर्श करती है महापापों की नाश करनेवाली है १६४ हे ब्राह्मण! बहुत कहनेसे क्याहै निश्चित सुनिये तीर्थ में माघस्नान करने से फलको देता है पापोंको नाश करता है १६५ यहांपर तुमसे पिशाचमोचन नाम प्राचीन इतिहास को कहता हूं सावधानमति होकर सुनो इसीको अप्सरा बाला सुनतीथीं और तुम्हारे पुत्रभी सुनतेथे हमारे प्रसाद से पिशाचयोनि से स्मृतिलाभ होकर मुक्तिकामी होगये हैं पूर्वसमय में देवद्युति ब्राह्मण वैष्णव और वेदके पारगामी हुये हैं १६६ उन्होंने दयायुक्तमन होकर पिशाचों को छुड़ायाहै १६७ तब राजादिलीप बोले कि वे ब्राह्मण कहां स्थितथे किसके पुत्रथे नियम वा जप क्याथा किसकरके वैष्णव हुये और वे पिशाच कौनथे जिनको उन्होंने छुड़ायाहै १६८ हे महामुनि वसिष्ठजी यह सब विस्तार से कहिये आपके प्रसाद से महापुण्यकारी कौतूहल को हम सुनेंगे १६९ तब वसिष्ठजी बोले कि शुभसरस्वती नदी के किनारे पुण्यकारी प्लक्षप्रस्रवणमें सुन्दर पर्वतका आश्रयकर तिसका स्थान था १७० शाल, ताल, तमाल, बिल्व, बकुल, पाटल, तिंतिड़ी, चिरिबिल्व, आम, चम्पक, कांचन, १७१ करंज, कोविदार, केसर, कुंजराशन, तिलक, कर्णिकार, कुंभ, खैर, तिन्दुक, १७२ वानीर, साल्व, जंबीरीनींबू, पीलू, गूलर, वेतस, शाकोट, श्लेष्मातक, करहाट, बरगद, १७३ घोंटा, कुरैया, ढाक, अशोक जोकि शोकको नाशकर देते हैं, जामुनि, नींब, कदम्ब, क्षीरिका, करमर्दक, १७४ बीजपूरनींबू, नारंगी, केलाकी पंक्तियोंसे शोभित कटहल, रसयुक्त नारियल, सदा फलनेवाले १७५ सप्तच्छद, त्रिपत्र, शिरीष, आंवला, बेर, लकुच, अक्ष, पारिभद्र, वचआदिक १७६ केतक, सिन्दुवार, तगर, कुन्दमल्लिका, कमल, इन्दीवर, कह्लार, मालती, जूहीआदिक १७७ चमेली मोगर, जायफल, पुन्नाग, किंशुक, बर्बरी, तुलसी के वृक्ष १७८ इन सब अनेक प्रकारके वृक्षोंसे वह स्थान रमणीय था और वनके मध्यमें पुण्यजलयुक्त सरस्वती नदी भी बहतीथी १७९ वहांपर स-

दैव सारस मदसे स्निग्ध और मनोहर शब्द करती थीं कोकिला शब्दोंको करतीं और भवरे गुञ्जार कररहे थे १८० हे राजन् वह वन सुआ और सारिका आदिकों से बहुत शब्दयुक्त था वहांपर अनेक प्रकार के जीव उत्तम वनमें घूमते थे १८१ और वह सब वन शहदके वृक्षोंसे आच्छादित था जिसमें फल और फूल सदा लगे रहतेथे फूलोंमें धूलिके कण भरेहुएथे १८२ और नये पल्लवों में उत्पन्न मञ्जरियोंके भारकी लताओं से इसभांति आलिंगन किये हुएथा जैसे स्त्रियों से पति आलिंगनयुक्त होता है १८३ तिस के शापके डरसे पवन चारोंओर चलतीथी मेघ पत्थर नहीं बरसतेथे सूर्य्यनारायण सुखाते नहींथे १८४ वह वन उपद्रवरहित, सदैव सिद्धोंसे सेवित, नित्यही प्रकाशका पैदाकरनेवाला इन्द्रके वनकी नाईं था १८५ तिसी वनमें धर्म्मात्मा, ब्राह्मणों में उत्तम देवद्युति बसते थे तिन ब्राह्मणके भगवान्‌के वरदानसे सुमित्र पुत्र प्राप्तहुआ १८६ सदैव नियतात्मा तिन ब्राह्मणके नियम सुनो गरमीमें नित्यही सूर्य कीओर आंखेंकर पञ्चाग्नितापते १८७ और वर्षाभर वर्षाकापानी सहते, अत्यन्त प्रचण्ड पवनमें न कांपते, हिमवान् पर्व्वतकी नाईं दुस्सहथे १८८ हेमन्तऋतु में सारस्वत कुण्डमें जलमें रहते, तीन वार निर्म्मल जलका स्पर्श करते १८९ पितर, देवता और ऋषियोंको श्रद्धासे नित्यही तर्प्पण करते, नित्यही ब्रह्मयज्ञ में परायण रहते, सत्य बोलते, जितेन्द्रिय, १९० पृथ्वी में विश्रामकर सोते, भगवान् का ध्यानकर उनकी प्रार्थनाकरते, वनकी वस्तुओंसे अग्निहोत्र करते, श्रद्धासे अतिथियोंको पूजते १९१ चांद्रायणके विधान से सदैव कालको विताते, गिरेहुए पत्ते और फलोंका भोजन करते १९२ उद्विग्नरहित, तपस्यामें निष्ठायुक्त, वेद और वेदके अंगों के पारगामी, भयङ्कर नाड़ियों से युक्त और हाड़ही मात्र देहमें शेष रहगयेथे १९३ इसप्रकार तिनको वनमें हजारवर्ष बीतगये तब तो उनकी तपस्याके तेजसे पर्वत प्रकाशित होगया १९४ तिन महात्माके तेजको प्राणी न सहसके ब्राह्मण तपस्या से अग्निकी नाईं शोभित हुए १९५ और प्राणी सब उस वन में वैररहित होगये

हरिण, बाघ, मूसा, बिलार ये परस्पर भयरहित क्रीड़ा करते भये १९६ और भी तिनका अत्यन्तदुर्लभ नियमसुनिये नित्यही तीनों काल नारायणजी को पूजन १९७ हज़ारों सुगन्धित पुष्पों और वेदसूक्तविधान से विष्णुजीके ध्यानमें परायण होकर करतेथे १९८ ब्राह्मण यह सब कर्म्म विष्णुजी की प्रीतिके लिये करतेथे दधीचि के वरदानसे श्रेष्ठ वैष्णव यहहुए १९९ एकसमय वैशाखकी एकादशी में महामुनि जी भगवान् की पूजाकर उनकी सुन्दर विचित्र स्तुति करतेभये २०० तो तिस स्तुति से अत्यन्त प्रसन्न देवदेव भगवान् आपही गरुड़ पर चढ़कर ब्राह्मण के आगे प्राप्त होगये २०१ गरुड़पर चढ़े, मेघोंके समान श्यामवर्ण, चारभुजायुक्त, सुन्दर नेत्रों समेत सब अलंकारोंसे भूषित प्रत्यक्ष भगवान् को देख कर २०२ ब्राह्मण पुलकित होगये आनन्द के आंशू नेत्रों में भर आये कृतकृत्य मनहोकर तिसीसमय में भूमिमें शिरसे प्राप्तहोगये २०३ और तिस प्रसन्नता से ब्रह्माण्ड के उदरमेंभी न अँबा सके अपनी देहकाभी स्मरण न रहा ब्रह्मभूतकी नाईं होगये २०४ तदनन्तर प्रीतिसे भगवान् वैष्णवमुनि से बोले कि हे देवद्युते! मैं जानताहूं कि तुम हमारे भक्तहो और हमारेही आश्रयहो २०५ सम्पूर्ण कर्म्म तुमने छोड़दिये हैं हमीं में तुम्हाराभाव और मनरहता है हे पापरहित! मैं इस तुम्हारे स्तोत्रसे प्रसन्नहूं वर मांगिये २०६ ये भगवान् के वचन सुनकर वह तपस्वी बोले कि हे देवोंके देव, कमलनयन, अपनी मायासे देहधारण करनेवाले २०७ हे देव आपके दर्शन से सदैव और वर दुर्लभ नहीं है ब्रह्मादिक सब देवता योगी सनकादिक २०८ सिद्ध कपिलादिक आप को साक्षात्करने की इच्छा करते हैं अहंमम फँसरीवाले, मोहलोभयुक्त, शुभाशुभ, २०९ हेतुयुक्त, सगुण निर्गुण आपमें जलजाते हैं और हमारा तो जन्म, कर्म्म और बुद्धिका फल प्रकट हुआ २१० कि हे जगन्नाथ जी आपके दर्शनहुए इससे अधिक क्या मांगें हे देवेश! और वर न चाहिये आपके चरणकमल अपने हृदय में २११ आपमें प्राप्त अन्तरात्मा और भक्तिसे सदा चिन्तन करूं इसी वरको मांगताहूं

कि आपकी भक्ति हममें अचलहो २१२ हे लक्ष्मीजीके पति! यही होवे दूसरा वर और नहीं मांगताहूं ये ब्राह्मणके वचन सुनकर प्रसन्न-मुख, भगवान्, २१३ प्रसन्नात्मा बोले कि हे द्विजोत्तम ! ऐसाही होवे और तुम्हारी तपस्यामें कोईविघ्न नहींहोवे २१४ इस तुम्हारे किये हुए स्तोत्र को जो मनुष्य पढ़ेंगे तिनकी हममें निश्चलभक्ति होगी २१५ और जो कुछ धर्म्मके कार्य्य हैं वे सब अंगोंसमेत होंगे ज्ञान में परमनिष्ठा निश्चल स्थितहोगी २१६ ऐसा कहकर देवदेव भगवान् अन्तर्द्धानहोगये तबसे लगाकर देवद्युति भगवान्में परायण होगये २१७ तब दिलीप बोले कि हे महर्षिजी आपने मेरे ऊपर बड़ी कृपाकी है इस विष्णुसंगति गंगारूप कथासे इससमयमें पवित्र करदियाहै २१८ तिस पापरहित ब्राह्मणका कौनसा स्तोत्रहै जिस से भगवान् प्रसन्न हुएहैं इसके सुनने में हमको बड़ा कौतूहलहै इससे आप कहिये २१९ हे ब्राह्मण आप के प्रसाद से मनोरथ को प्राप्तहुआ मानताहूं क्योंकि महात्माओं की संगति किसके महत्त्वके लिये नहीं कल्पितहै २२० प्रसन्न होकर अत्युत्तम भगवान्के स्तोत्रको कहिये जिससे प्रसन्न होकर भगवान् ब्राह्मण को दर्शन देते भये २२१ तब वशिष्ठजी बोले कि रहस्यको तुमसे कहताहूं जिस जपयोग्य उत्तम स्तोत्रको गरुड़ ने पहले ग्रहण कियाथा गरुड़से हमको प्राप्त हुआ है २२२ जोकि अध्यात्मगर्भसार, शुभ, महोदय करनेवाला, सब पाप हरनेहारा, अपनी आत्मामें ज्ञानका करनेवाला और श्रेष्ठहै २२३ वासुदेव, विश्व, चक्रधारी, भक्तों के प्रिय, कृष्ण, संसारके स्वामी और शार्ङ्ग धनुषधारी भगवान्के नमस्कारहैं २२४ स्तोता, स्तुत्य और स्तुति और सब संसार विष्णुमय है तब किस से स्तुति कीजावे मनुष्यों की भक्तिही आनन्द करनेवाली है २२५ जिस देवके निःश्वास अंग और सूत्रसमेत वेदहैं तिनकी प्रसन्नता के लिये कौन स्तुतिहै भक्तिही से मैं मुखरहूं २२६ सम्पूर्ण त्रैलोक्य स्थावर जंगम चक्रकीनाईं घूमरहाहै इससे हे चक्रपाणि! श्रेष्ठआयुध धारण करनेवाले! आपही गान कियेजाते हैं २२७ साक्षात् जिसको वेद नहीं कहते, वाणी और मन जिसको नहीं जानता हमारा साथी

तिसकी कैसे स्तुति करै वा भक्तियुक्त कैसे होवे २२८ ब्रह्मादिक, ब्रह्म विष्णु आप हौ सब के आश्रय भी आप हौ रचनेवाले, ब्रह्मनिदान, शुद्ध, ब्रह्म आपही हौ २२९ हे विभो ! कौन आपकी देहहै देहवाले को भेदनकर स्पर्श करती है देहके दोषों करके नहीं सूंघती है तिस योगी के अर्थ नमस्कार है ॥ देवभाव से जागती अपनी आत्मा में निद्रायुक्त नहींहोती ऐसी सुखसमूह जो बुद्धिहै सो हेविष्णु जी निस्सन्देह तुम्हीं हौ २३० महत्‌आदिक महाभाव तथा वैकारिक गुण हे नाथ ! ये सब तुम्हीं हौ नानात्व का होना मूढ़ कल्पना है २३१ केश केशवरूपा तीन कल्पनाओं से पुत्र आदिकोंसे पुरुष की नाईं ब्रह्म आपही कल्पितहौ २३२ विदोष, विगुण, एक, चिन्मूर्ति संपूर्ण संसार है कवियों का जो तत्त्व प्रकाशित होताहै तिन निर्मल विष्णुजीको हम नमस्कार करते हैं २३३ रीषणारहित, संसार के मित्रवाले जिसके ज्ञानसे वेदके कहेहुए कर्म करते हैं तिस शुद्ध ब्रह्मको नमस्कार है २३४ योगी जिसके प्रबोध से ध्वस्त से इतर सन्मात्रकी उपासना करते हैं सबभूतों में सद्रूप तिस हरि को हम नमस्कार करते हैं २३५ जिस एकको जानकर श्रेष्ठ ब्राह्मण ब्रह्म मैं हूं यह गान करतेहैं और आपकरके समान देखेजाते हैं तिस देव माधवजी को हम नमस्कार करते हैं २३६ मायासे मोहकी विचित्रता तथा मनुष्योंकी अहंममता को जो पापसमूह से नाशकरता है तिस चिदात्मा के अर्थ नमस्कार है २३७ यात्रा वा नहीं यात्रामें जिसका नाम स्मरण करनेवाले मनुष्यों के शीघ्रही पापसमूह नाशहोजाते हैं तिस चिदात्मा को नमस्कार है २३८ मोहरूपी अग्निकी प्रकाशित ज्वालाओं से मनुष्य सदैव जलते हैं परन्तु जो भगवान् के चरणकमल की छायामें प्रवेश कियेहुए हैं वह नहीं जलताहै २३९ जिसके स्मरणमात्रही से मोह, दुर्गति, रोग और दुःख नहीं रहते हैं तिस अनंतको हम नमस्कार करते हैं २४० बुद्धिसे उत्पन्न प्रजा नहीं कामना करते जिसको जानकर एकचर मनुष्य लोकको आत्माही देखते हैं २४१ शब्दार्थ, संविदर्थ ये विष्णुजी के नाममें जो परायणहौ तो हे माधव ! तिस सत्यसे संसार न स्पर्शहो २४२ ना:

रायण, संसार में व्यापी, यदि वेदआदि के सम्मतहै तो तिसी सत्य से निर्विघ्न भगवान्‌की भक्ति हमकोहो २४३ जो बीज नहीं है बीजके विनाहै और बीजमें बीज भावित है सो विष्णुजी हमारे संसारबीज को सित विद्यारूप तलवारसे काटें २४४ जो सृष्टि स्थिति और संहारमें नटकी नाईं तीनदेह धारता है गुणोंसे कार्य्यों में होताहै सो भगवान् हमारे ऊपर प्रसन्नहों २४५ जो सब देवताओं से प्रार्थना कियेगये केवल धर्मकी रक्षाके लिये इसलोकमें दशरूपसे अवतार लेतेभये हैं सो भगवान् हमारे ऊपर प्रसन्नहों २४६ ब्रह्मासे लेकर स्तम्बपर्य्यन्त प्राणियों के हृदयरूप मन्दिरमें अमल, एक, जो देव वसतेहैं सो हरि हमारे ऊपर प्रसन्नहों २४७ एकतथा बहुत जो देवों के अग्र में इच्छाकरता और प्रविष्ट हुआ है देवताओं का रचनेवालाहै सो हरि हमारे ऊपर प्रसन्नहों २४८ हृदयका पक्षी, आकाशगम आकाशआदि, आकाशअन्त, आकाशक्रिय, आकाशमें प्राप्त, आकाशका ब्रह्मा, आकाश का आदिभोक्ता, अन्त में आकाशमूर्ति और यज्ञका भोजन करनेवाला है २४९ जिसकी दीप्ति, प्रसन्नता और माया से संसार होताहै जोकि जड़ता, दुःख और असत्यरूप है सो तन्मय आपही हैं २५० आपका रचाहुआ संसार आनन्द करता है आपका छोड़ाहुआ अपवित्र हो जाता है आप संगयुक्त और संगरहित हैं आप में विकार नहीं है २५१ जिस भूतयोगसे उत्पन्न चैतन्य को चार्वाकजन उपासना करते हैं और सौगतलोग तर्कोंसे आपको क्षणमें नाश होनेवाली बुद्धि कहते हैं २५२ जिन देवता तुमको शरीर के परिमाण मानते हैं सांख्यवाले प्रकृति ते परे आपही पुरुषको ध्यान करते हैं २५३ उपनिषद् जन्मआदि से रहित, पूर्ण, चित्सत् आनन्दलक्षण, ब्रह्मआपही को परस्पर चिन्तन करते हैं २५४ अकाशआदिक भूत, देह, मन, बुद्धि, इन्द्रिय, विद्या, अविद्या ये सब आपही हैं आपसे और कुछभी नहींहै २५५ आपही सब प्राणियों के पालन करनेवाले, हमको शरण, अग्नि, हवि, इन्द्र, होता, मंत्र, और क्रियाके फलहैं २५६ हे वैकुंठ आपही, नहीं मीहो, आपकी शरण में मैं प्राप्त हूं आपही कर्म्मफल के देनेवाले

दीक्षितोंको क्रियाफल २५७ सब प्राणियोंको हेतु, और आपही ह
को शरण हैं जैसे स्त्रियोंको पुरुषमें और पुरुषों का स्त्रियोंमें २५
मन रमताहै तैसेही हमारी प्रीति आपमेंरमै निश्चय है हरिजी प
पी दुराचारी मनुष्यभी आपसें नमस्कार करें २५९ तो यमराज
दूत इसप्रकार न देखें जैसेघुग्घू सूर्यको नहीं देखतेहैं तीनोंतापै औ
पाप आदिकों से तबतक मनुष्यको पीड़ाहो २६० जबतक हे नाथ
भक्तिसे आपके चरणरूपी कमल को न स्मरणकरे २६१ जिस क
गुण, जाति, शरीरके धर्म और सब इंद्रियों की गतिनहीं स्पर्शकरते
हैं संग और मोहरहित मुनि स्पर्श करते हैं तिस हरिभगवान् के
नमस्कार करताहूं २६२ करणनिदान में स्थूलको विलापकर कर
णकारण वर्जित में तिसके कारणको विलापकर इसप्रकार से मुनि
लोग तिसमें प्रवेश करजाते हैं तिस मुनियोंसे सेवित हरिजीके न
मस्कार हैं २६३ आत्मसुख के एक वर्तनरूप जिसके ध्यानके संव
हनघूर्ण से वशीकृत, ऐश्वर्य चारुगुणयुक्त, सुखमोक्ष की लक्ष्मी के
आलिंगनकर शयन करते हैं तिस मुनियों से सेवित हरिजी के नम
स्कार हैं २६४ जन्मआदिक भावविकृति के विरहस्वभाव में यहष
ऊर्म्मिवर्ग्ग कँपाता है और कामदेवआदिक दोष जिसको तापयु
क्तनहीं करते हैं तिस निर्म्मल वासुदेव हरि के हम नमस्कार करते
हैं २६५ जिनके ध्यानसंगत अविद्याको त्याग करदेते हैं और जिन
के ध्यानकी अग्नि में गिराहुआ संसार नाशको प्राप्त होताहै जिन
के ज्ञानसे प्रकाशित तलवार संशयरूप वैरीको काटडालती है तिन
विशदिबोध घन हरिजीके हम नमस्कार करते हैं २६६ जैसे चरा-
चर सबप्राणी भगवान् के वशमें हैं तिसी सत्य से भगवान् हमारे
आगे स्थितहों २६७ जैसे नारायण सब स्थावरजंगम संसार में
तिसीसत्य से केशवजी हमकोरूप दिखलावें २६८ जैसे
क्ति हरि और गुरुजी में है तिसीसत्यसे भगवान् हम
लावें २६९ तिसकी इसप्रकार की सत्यसौगंदों से
चिन्तना कर प्रसन्न होकर भगवान् अपनी आत्मा
भये २७० तदनन्तर ब्राह्मणकी स्तुतिसे प्रसन्न लक्ष

तिस ब्राह्मण को वर और मनोरथ पूर्णकर जातेभये २७१ तब तो ब्राह्मण कृतकृत्य और वासुदेवजी में परायण होगया और शिष्यों समेत स्तोत्र जपताहुआ तिस तपोवन में रहनेलगा २७२ जो मनुष्य इस स्तोत्रको कीर्तनकरता और जो सुनता है वह अश्वमेध यज्ञके विपुलफल को प्राप्तहोता है २७३ ब्राह्मण आत्मविद्या के प्रबोधको सदैव प्राप्त होताहै पापमें बुद्धिनहीं प्राप्त होती है अमंगल कोभी नहींदेखताहै २७४ इसस्तोत्रके कीर्तनसे सबमनुष्योंकी बुद्धि, मन और इन्द्रिय स्वस्थयुक्त होती हैं २७५ जो श्रद्धामें तत्पर मनुष्य अर्थको विचारकर जपता है वह पापोंको दूरकर वैष्णवपद को प्राप्त होताहै २७६ और सदैव पढ़तेहुए वांछितकामना, पुत्र, पौत्र, पशु, बड़ीउमर, बल, वीर्यको प्राप्तहोता है २७७ तिलके हजार पात्र और हजार गोदानसे जो फलहै वहीफल इस स्तुतिके कीर्तनकरने से मिलता है २७८ और इसस्तोत्रसे मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्षों में जिस जिसकी कामना करता है वह शीघ्रही प्राप्त होती है २७९ इस स्तुतिके सुनतेहुए मनुष्यों की नित्यही बुद्धि आचार, विनय, धर्म, ज्ञान, तपस्या और अच्छी नीतिमें होजाती है २८० एकवार स्तोत्रके पढ़नेसे महापातक वा उपपातकोंसेयुक्तभी शीघ्रही शुद्धात्मा होजाताहै २८१ बुद्धि, लक्ष्मी, यश, कीर्ति, ज्ञान और धर्मका बढ़ानेवाला, दुष्ट ग्रहोंका नाशनेवाला, सब अशुभोंका भी नाशने हारा २८२ सब व्याधियों का हरनेवाला, पथ्य, सब अरिष्टोंका नाशनेवाला और दुर्गतिका तरनेवाला स्तोत्रहै यह ब्राह्मणोंको पढ़ना चाहिये २८३ नक्षत्र ग्रहपीड़ाओं, राजचोरभयों, और अग्निचोरों के निपातमें शीघ्रही इसको संकीर्तनकरै २८४ सिंहव्याघ्रका भय, अभिचारका भय, भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, २८५ पूतना, जृम्भक और विघ्नोंसे इसस्तोत्रके पढ़नेसे मनुष्योंको कुछडर नहींहो २८६ वासुदेवजी की पूजाकर जो स्तोत्रकोपढ़े वह इसप्रकार पापोंसे लिप्त नहींहोवै जैसे जलसे कमलका पत्र लीननहीं होवे २८७ गंगादिक पुण्यतीर्थों में स्नानकरने से जो गतिनहीं मिलती है वह इस पुण्यकारी स्तुतिके पढ़ने से मिलती है २८८ जो मनुष्य एककाल, दो

काल वा तीनकाल सदैव सबकालों में पढ़ताहै वह नाशरहित सुख को प्राप्त होताहै २८९ चारों वेदोंके तीनि आवृत्ति पाठकरने से जो फल मिलता है वह एकबार इस स्तोत्रके पढ़नेसे मिलता है २९० श्रद्धासे भगवान्‌को स्मरणकर अक्षय्यधन को पाता स्त्रियोंको प्यारा होता और इसलोक में पूजाको प्राप्तहोताहै २९१ और जो नित्यही स्तोत्रको कीर्तन करता है वहसदैव सम्पदाओं से युक्तहोता विपत्ति को नहीं प्राप्तहोता गौओंसेभी हीन नहीं होता है २९२ और इस स्तोत्र के सुननेवाले भक्तोंके शीघ्रही अलक्ष्मी, कालकर्णी, दुःस्वप्न, दुर्विचिंतित नाश होजाते हैं २९३ प्रातःकाल उठकर जो मनुष्य पवित्र और भगवान् में परायण होकर इसस्तोत्रको पढ़ताहै वह इस लोक और परलोक में नाशरहित सुखको प्राप्त होताहै २९४ देवद्युतिके कियेहुये, विष्णुजीकी प्रीतिके करनेवाले, शुभ, विष्णुप्रसाद उत्पन्न करनेवाले और विष्णुजी के दर्शन करानेवाले २९५ योगसार,नाम परमपवित्रस्तोत्रको जो मनुष्य भक्तिसे पढ़ताहै वहविष्णुलोकको प्राप्तहोता है २९६ यह स्तोत्र गुह्य और पापका नाशकरने वाला तुमसे कहा इसके पीछे पिशाचका मोचन कहताहूं २९७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेमाघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेयोगसारस्तोत्रकथनंनामाष्टाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२८॥

एकसौ उन्तीसका अध्याय॥

पांच गन्धर्वोंकी पांचकन्याओं का एक ब्रह्मचारीजी के साथ विवाह होना॥

वसिष्ठजी बोले कि हे राजन् सुनिये जिन पिशाचों को उन्होंने उसी वनमें छुड़ायाथा पूर्वसमयमें द्राविड़विषय में राजा चित्रनामी १ सोमवंशमें महावीर, शूर, शस्त्र और अस्त्रों का पारगामी, हाथी, घोड़ा और रथसमूहों से युक्त, सदैव विक्रमी २ सोना और अनेकप्रकारके रत्नों से पूर्ण ख़ज़ानेवाला और महाधनवान् था हज़ार स्त्रियों के बीचमें उनमें तत्पर होकर सदैव क्रीड़ा करताथा ३ स्त्रियों के वश, कामी, सदैव लुब्ध और प्रचण्डक्रोधयुक्त वह राजा था मंत्रियोंके कहेहुए धर्मयुक्त वचन नहीं करताथा ४ विष्णुजीकी अ-

धिक निंदा करता और वैष्णवों से सदैव वैर करताथा वह विष्णु कहां,कहां दिखाई देता, कहां रहता और किससे कीर्तन कियाजाता है ५ इसप्रकार दैवसे मोहित राजा विष्णुजी को न सहताथा और जे नारायण को भजते थे उनको क्रोधयुक्त होकर पीड़ा देताथा ६ पाखण्डस्थिति में संस्थित होकर ब्राह्मण, वेद, वैदिककर्म्म, व्रत, दान देना इन सबको नहीं मानताथा ७ अनीति, और घोर दण्डों से प्रजाओंको पीड़ा करताथा निष्ठुर, दयारहित, क्रूर, पुण्यके कार्य से बाहर, ८ आचारसेहीन, भगवान्‌का वैरी, अग्नि और क्रियासे हीन था वह राजा दूसरे कालरूप की नाईं मनुष्यको दण्ड देताथा ६ तदनन्तर बहुतकाल बीतने पर राजा मृत्युको प्राप्तहुआ तो वैदिक विधानसे ऊर्ध्वदैहिक कर्मको भी न प्राप्तहुआ १० फिर यमराज के दूतसमूहों ने अत्यन्त पीड़ित किया राह लोहेकी कीलों से युक्त और तपीहुई बालूसे पूरितथी ११ घोर सूर्यकी किरणसे तप्त, वृक्षकी छायासे वर्जित, तपेहुए अंगारों और अग्नि की ज्वालाओं से युक्त भी मार्गथी १२ घोर कौआ और उल्लू पक्षी लोहेकी चोंचों से मारते थे भयानक डाढ़वाले भेड़िया और घोर कुत्ते भक्षण कर लेतेथे १३ और पाप करनेवाले मनुष्योंका रोना सुनताहुआ राजा यमराज के भयानक लोक को प्राप्तहुआ १४ अब हे राजन् तिस लोकमें दुस्सह उसकी गति को सुनो कि पर्य्याय से नरक से दूसरे नरकको प्राप्तहुआ १५ पहले घोर तामिस्रनाम नरक बड़े दुःखदेने वाले में प्राप्तहुआ फिर अन्धतामिस्र नरक में कि जिसमें निरन्तर दुःखही रहता है उसमें १६ गया तिस पीछे अत्यन्त घोर महारौरव नरक में फिर कालसूत्र महानरक में १७ तिस पीछे दुःख से मूर्च्छित राजा दुस्तर सञ्जीवन, महावीचि, तापन और सम्प्रतापनमें गिरा १८ फिर दुःखकी अग्निसे दुष्टमनहोकर राजा प्रतापनरक, संपात, काकोल, कुड्मल, पूतिमृत्तिक, १९ लोहशंकु, मृगीयंत्रमार्ग, शाल्मलि नदी में प्रविष्टहुआ फिर महाभीम, दुर्दर्श, दुर्गम, २० असिपत्रवन और लोहचारकमें पापी राजा गिरायागया २१ घोरनरक में यातनामय संतापको प्राप्त हुआ और विष्णुजी के

वैरके शब्दसे इक्कीसयुग २२ यमराज की यातना भोगकर नरकसे राजा निकला तो समय पाकर मेरुपर्वतमें भारी पिशाचहुआ २३ सब दिशा घूमताहुआ तिस वनमें भूखसे व्याकुल और पहाड़में भी भोजन और जलको नहीं देखता भया २४ कदाचित् वह शोक से पीड़ित पिशाच घूमता घूमता प्लक्षप्रस्रवण वन में पैठा जहां कि अच्छा फल होनेवालाथा २५ वहांपर दुःखयुक्त होकर बहेड़े के पेड़ की छायामें बैठकर मैं मरा इसप्रकार वारंवार ऊंचे स्वरसे घोर रोदन करनेलगा २६ और बोला कि भूंख और प्यास से व्याकुल, सब प्राणियों से वैर करनेवाले मेरे दुःखसे अंत होनेवाले जन्मका कैसे अंतहोगा २७ पहले पापरूपी इस समुद्रमें जिसमें दुःखरूपी कल्लोलकी मालाहैं उसमें डूबेहुए मुझको हाथका अवलम्बन कौन देगा २८ इस प्रकार दीनचित्तवाले तिस पिशाच का करुणामय रोदन पढ़तेहुए देवद्युतिने सुना २९ और उसके पास आकर तिस पिशाच को कैसा देखा कि जिसका विकरालमुख, भयानक पिशंगवर्ण नेत्र, दुर्बल ३० ऊपरको बाल काले अंगका मानों दूसरा यमराजजी का दूतही है ललत्जिह्वायुक्त, लम्बे ओष्ठवाला, बड़ी जंघायुक्त, नाड़ियोंसे आकुल ३१ बड़े पैर, सूखी चोंच, आंखें गड़होंमें प्राप्त होगईं और पंजर सूखाहुआथा तिससे कौतुकसे युक्त मुनिश्रेष्ठ देवद्युतिजी पूंछतेभये ३२ कि भयानक आकारवाला तू कौनहै भयानक क्यों रोताहै यह अवस्था तुम्हारी कैसेहुई है यह सब कहिये हम तुम्हारा क्याकरें ३३ हमारे आश्रममें प्रविष्ट प्राणी दुःख सेवन करनेवाले नहीं हैं सब भगवान्के स्थानकी नाईं आनन्द करते हैं ३४ हे कल्याण! तुम जल्द इस दुःखका कारण कहो क्योंकि बुद्धिमान् द्रव्य प्राप्त होने में कालक्षेप नहीं करते हैं ३५ वसिष्ठजी बोले कि देवद्युतिके ये वचन सुनकर पिशाच प्रसन्नहुआ और रोना छोड़कर नम्रतासे युक्त होकर दीनवाणी से बोला ३६ कि आपका वचन हमारे सब अंगके व्यापी संताप को इसप्रकार हरलेता भया है जैसे गरमी में दावानल से उत्पन्नको पहाड़में बरसता हुआ मेघ हरलेता है ३७ हे द्विज! जोकुछ हमारा सुकृतथा तिसीसे आपके दर्शनहुये

हैं विना इकट्ठा पुण्यों के सज्जनों के साथ इकट्ठे समागम नहीं होता है ३८ ऐसा कहकर अपने पूर्वजन्म के वृत्तान्त को कहने लगा कि भगवान्के वैरके दोषसे इस दशाको मैं प्राप्त हुआहूं ३९ जिनका नाम प्राण छोड़नेके समय अत्यन्त पापी भी स्मरण करै तो विष्णुपद को प्राप्त होवे तिन भगवान् में हे द्विज ! हमारा वैर हुआ है ४० जो तीनोंलोक में प्राणियों को पालता और धर्म को प्राप्त होताहै और प्राणियोंका अंतरात्मा है तिन भगवान् में हमारावैर हुआहै ४१ जो सब वेदों में कर्मों के फलका देनेवाला गान किया जाताहै ब्राह्मणों करके तपस्याओं में पूजाजाता है सो भगवान् हमारे वैरके वशमें प्राप्त हुआहै ४२ क्रिया छोड़नेवाले, वनप्रिय, निस्संग अकेले चलनेवाले संन्यासियों से वेदान्तमें जो चिन्तना करने योग्य हैं वे भगवान् हमारे वैरी हुए ४३ ब्रह्मादिक सब देवता और योगी सनकादिक मुक्तिके लिये जिन भगवान्को पूजते हैं सो विष्णु हमसे द्वेषयुक्त हुये हैं ४४ आदि मध्य और अन्तमें जो संसारके धाता, सनातनहैं जिनका आदि, मध्य और अन्त नहीं है सो भगवान् हमारे द्वेषपद को प्राप्तहुए ४५ जो हमने पूर्वजन्म में सुकृतकर्म कियाथा वह सब भगवान्के द्वेषकी अग्निसे जलकर भस्म होगया ४६ जो मैं बड़ेकष्टसे इस पापकी सीमाको देखूंगा तो भगवान् को छोड़कर और देवताका पूजन न करूंगा ४७ विष्णुहीजी के वैर से मैंने नरकयातना भोगकी है नरकसे निकलकर पिशाचकी योनि को प्राप्त हुआहूं ४८ इस समयमें कर्मके मंत्रों से आपके आश्रमको प्राप्त हुआहूं जहां आपके दर्शनरूपी सूर्य्य से दुःखरूपी अन्धकार मेरा नष्ट हुआ है ४९ जहां मरण, बन्धन, लक्ष्मी, सुख और स्त्री प्राप्त होती है सो अपनेकर्म गलहस्ती से प्राप्त कीजाती है ५० इस समय में पिशाच नाशनेवाला उचितकर्म कहिये क्योंकि पराये उपकार के कार्य में मन्दगामी धन्य नहीं होतेहैं ५१ तब देवद्युति बोले कि आश्चर्य की बातहै कि यह माया देवता, असुर और मनुष्योंकी स्मृतिको भी चुरालेती है जिससे देवताओं में भी ...
नाशने वाला द्वेष उत्पन्न होता है ५२ जो संसार का ...

पालनेहारा और नाश करनेवाला महान् ईश्वर है और सब प्राणियोंका आत्मा है तिनसे को मूढ़ कैसे वैरकरे ५३ जिन भगवान् के अर्पणसे सब कर्म सफल होते हैं तिनकी भक्तिसे विमुख होकर कौन मनुष्य दुर्गतिको न प्राप्तहोवे ५४ वेद, स्मृति और सदाचार से विहित केवल कर्म चारोंवर्णों को नारायणका सदैव भजन करते हुए सेवन करना चाहिये ५५ विना शास्त्र सेवन से और प्रकार नरकको प्राप्त होते हैं इससे वेदके विरुद्ध अर्थ,शास्त्रके कहेहुएकर्म को त्याग करे ५६ अपने बुद्धिरचित शास्त्रों से इस लोकमें मूर्खों को अच्छी तरह तारकर केवल संसारके नाशके लिये कल्याण के मार्गको विघ्नयुक्त करते हैं ५७ विष्णुजी, वेद, तपस्या और अच्छे ब्राह्मणों की निन्दा करते हैं तिसी असत् शास्त्रके सेवन से नरक को प्राप्त होते हैं ५८ जैसे यह राजा द्रविड़ देवों के देव, संसार के प्रभु, देव, नारायणजी से वैरकर नरक को प्राप्त हुआ है ५९ तिस से पुण्य की कामना वाला मनुष्य, देवता और ब्राह्मणों में विशेष कर द्वेषको छोड़े और वेदसे बाहर वाली क्रिया को भी त्यागे ६० ऐसा कहकर मुनि पिशाच के लिये हितकी बात कहनेलगे कि भो कल्याण! माघमास को विचारकर प्रयागजी को जावो ६१ जहां पर निश्चित पिशाच से निस्सन्देह मुक्तिहोगी क्योंकि यह सनातनीश्रुति है कि वहां स्नान करनेसे स्वर्गको प्राप्त होते हैं ६२ वहां पर मनुष्य पुराने दुष्कृतकर्मको त्याग कर देताहै क्योंकि प्रयागके स्नानसे अधिक कोई नहीं है ६३ पापियों को प्रयाग प्रायश्चित्त, तपस्याका रूप, दानरूप, क्रियात्मक, यज्ञ और योग से अधिक जानिये ६४ पृथ्वीमें स्वर्ग और मोक्षका द्वार आच्छादित है सफेद और श्याम जलवाली वेणीको छोड़ पृथ्वी में और कोई नहींहै ६५ वेणीही पापरूपी जंजीरसे बँधेहुएके काटनेमें एक कुल्हाड़ीहै विष्णु, सूर्य्य, तेज और अग्नि कहांहैं गंगा और यमुनाजीका संगम भी कहांहै ६६ मनुष्योंका तुच्छ, वराकी, पापसमूह के तृणकी आहुति कहांहै मलीमस घन के नाशने में शरद्ऋतु के चन्द्रमा की नाईं है ६७ मनुष्य वेणीके जल में स्नानकर पाप नाशने के उपरान्त प्र

काशित होताहै सफ़ेद और श्याम जलवाले तीर्थके माहात्म्य कहनेको मैं तुमसे समर्थ नहींहूं ६८ जिसके जलके कणसे स्पर्शकर केरलकब्राह्मण मुक्त होगयाहै इस प्रकार ऋषिके वचनसुन पिशाच प्रसन्नमन होगया ६९ और छूटगये दुःखकी नाईं प्रणयसे मुनिसे पूछता भया कि हे महामुने! केरल देशवाला ब्राह्मण कैसे मुक्त होगया इस वृत्तान्तको हमारेऊपर दयाकर कहिये ७०।७१ तब देवद्युति बोले कि हे पिशाच पुण्यकारी, शुभकथाको मैं कहताहूं सुनिये केरलदेश में वसुनामी वेदके पारगामी ब्राह्मणहुए ७२ जोकि हिस्सेदारोंसे द्रव्यहीन लियेगये,धनहीन, भाइयों से वर्जित,जन्मभूमिको छोड़कर महादुःखसे दुःखित होकर ७३ देशसे देशको बड़े समय में घूमकर कुछ व्याधिसे पीड़ित होकर महावनमें प्रवेश करगये ७४ बहुतसे तीर्थोंमें भी जातेहुए जब थकगये और भूंखसे निर्बल होगये तो विन्ध्याचलमें मृत्युको प्राप्तहोगये परन्तु जलाये और और्ध्वदेहिक क्रिया कुछ नहीं हुई ७५ तिसी कर्म के विपाकसे वहीं पर्वत के गह्वर में मनुष्यरहित वनमें बहुत कालतक प्रेतहोकर बसतेभये ७६ जाड़ा और गर्मी से क्लेश को प्राप्त, भोजन और पानीसे भी हीन, नग्न, जूतारहित, हाहावाणी से श्वास लेतेहुए ७७ पवनहोकर इधर उधर घूमतेहुए केरलब्राह्मण कहींपर शरण और सुखको न प्राप्त होते भये ७८ तब तो दुःखसे पीड़ित होकर सद्गति को न देखकर शोच करनेलगे कि सदैव दान देनेवाले अपने कर्मका फल भोग करते हैं ७९ जे अग्निमें हवन नहीं करते, गोविन्द को नहीं पूजते, आत्मविद्या को नहीं सेवते, सुन्दर तीर्थों से विमुख हैं ८० सोना, कपड़ा, पान, मणि, अन्न, फल और जलको जे दुःखियों को नहीं देते हैं वे सब कृतहीनक हैं ८१ ब्राह्मणकी द्रव्य पराई द्रव्य और स्त्री के धन जे बल और कपटसे हरलेते हैं वे धूर्त, पराये छलनेवाले ८२ दांभिक, कपटी, चोर, आगकी जीविकावाले, बालक बूढ़े, आतुर और स्त्रियों में निर्दयी, सत्य से वर्जित, ८३ आगलगानेवाले, विष देनेवाले, झूठी गवाही देनेहारे, नहीं भोगकरनेवाली स्त्रियों से भोग करनेवाले, गांवमें यज्ञ करानेवाले, ८४ पिता,माता,

पतोहू, पुत्र और अपनी स्त्री के त्याग करनेवाले, कदर्य, लुब्ध, नास्तिक, धर्म्मके दूषण करनेवाले ८५ युद्धमें स्वामी के छोड़नेवाले और शरणागतके त्यागनेवाले गऊ और पृथ्वीके नाशनेवाले, रत्न के दूषक ८६ पराये कलंक लगानेवाले, पापी, देवता और गुरुओं की निन्दा करनेवाले, सब महाक्षेत्रों में दानके लेनेवाले ८७ पराये द्रोहमें रत और प्राणियों की हिंसा करनेवाले जे होते हैं वेही वारंवार बुरेदान लेते हैं ८८ प्रेत, राक्षस, पिशाच, तिर्य्यक्योनि, वृक्ष और बुरी योनियों में उनको इसलोक और परलोकमें सुखका लेश नहीं होताहै ८९ तिससे निषिद्ध अर्थको छोड़कर विहितकर्म्म को करै यज्ञ, दान, तपस्या, तीर्थ, मंत्र, देवता और गुरुजीको सेवनकरै ९० कर्मोंका विपाक करोड़ों योनियों में दुस्तर देखकर चारों वर्णों को निरन्तर धर्म्मही सेवन करनाचाहिये ९१ इस प्रकार पापके बीजसे उठीहुई प्रेतकी गति देखकर धर्म्मका उपदेशकर फिर ब्राह्मण तिनसे बोला ९२ इसतरह केरलप्रेत पहाड़में वर्त्तमान अतिबाह्य बहुत काल मार्ग में राह चलनेवालेको देखताभया ९३ कि वेणीके जल से युक्त दो करंडको लियेजाता है और मुख से पुण्यश्लोक, जनार्दन को गाता है ९४ तिसको देखकर सहसा से प्रेत राहरोंककर अपनी आत्माको दिखाकर बोला कि डरो नहीं ९५ हे कार्पटिकोत्तम! तुमसे जल पीनेकी इच्छा करताहूं यदि हमको जल न पिलावोगे तो हमारे प्राण निकल जावेंगे ९६ इसप्रकार प्रेतके वचनसुन राह चलनेवाला कौतुकसे बोला कि दुःखसे युक्त, दुर्बल, म्लान आप कौनहैं ९७ जोकि जीवही शेष, मरने की इच्छावाले, विकृत, भयके बढ़ानेवाले, नवीन धुयेंकी तुल्य आकारवाले, प्रचंड, चंचल नेत्रवाले ९८ पांवों से भूमिको न छूनेवाले, मांसहीन पेट और भुजावालेहो ये तिनके वचनसुन प्रेत वचन बोला ९९ कि हे धर्मिष्ठ! सुनो जिससे मैं इसप्रकारका हुआहूं नहीं दानदेनेवाला लोभी, मलिनक्रियावाला ब्राह्मण हूं १०० पराये अन्न का सदा भोजन करनेवाला और अकेलेही मीठा भोजन करनेवाला हूं मैं भिक्षा और पुष्कल कभी नहीं दिया १०१ वैश्वदेव नहीं किया बाह

बलि नहीं दी प्यासयुक्त प्राणियोंकी जलसे प्यास नहीं हरी १०२
कदाचित् पृथ्वी में घूमतेहुए मैंने पितरों को नहीं तर्पण किया कहीं
भी श्राद्ध नहीं की देवता नहीं पूजे १०३ वर्षा और घामकी रक्षा
के लिये जूता नहीं दिये जलका पात्र नहीं दिया पान औषध भी
नहीं दिया १०४ घरमें रहनेका स्थान नहीं दिया किसीकी आति-
थ्य नहीं की अन्ध, वृद्ध, निर्धन, अनाथ और दीनों को पान और
अन्नसे प्रसन्न नहीं किया है १०५ गौवोंको ग्रास नहीं दिया, रोगी
को नहीं छुड़ाया न दान किया न पवित्र तिलोंका हवन किया १०६
क्योंकि पृथ्वीमें तिल देनेवाले हमारे समान नहीं होतेहैं व्यतीपात
में महाफल देनेवाले सोनेको कुछभी नहीं दिया १०७ संक्रांति और
सूर्य चन्द्रके ग्रहणमें कुछ नहीं दिया हे द्विज! और भी सब पर्व ह-
मारी शून्य प्राप्त हुई हैं १०८ कार्त्तिक में मुख्य तिथियां हमारी
सदैव बंध्या प्राप्त भई हैं अष्टकाओं और मघा में पितरों को कुछ
नहीं दिया १०९ मन्वादिकों और युगादिकों में ब्राह्मणों से प्रीति
नहीं की, कार्त्तिक में तिल के तेल से दीप नहीं दिया ११० रूप
सौभाग्य और काम के देनेवाले माघके महीने में स्नानभी नहीं
किया गौतमी नदी में सिंहकी बृहस्पतिमें वेदके विद्वान् ब्राह्मणको
१११ पूर्वजन्ममें संकलिपत द्रव्य नहीं दिया कृष्णवेणी में कन्या
की बृहस्पति में स्नान नहीं किया ११२ पौष माघ में शीतसे पी-
ड़ित, स्नान करनेवाले ब्राह्मणों का काष्ठसमूहोंसे अग्नि जलाकर
जाड़ा दूर नहीं किया ११३ वैशाख आदिक महीनोंमें ठण्ढा जल
नहीं दिया, पीपलका वृक्ष नहीं लगाया और बरगदको नहींबढ़ाया
११४ वन्दीघरसे प्राणियों को कभी नहीं छुड़ाया, प्राणियोंके भयसे
डरेहुए शरणागतकी रक्षा नहींकी ११५ त्रिरात्रका व्रत नहीं किया,
भगवान् को प्रसन्न नहीं किया, कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, पाराक, चान्द्रायण
११६ तप्तकृच्छ्र और सांतपन ये पुण्यकारी व्रत इन्द्रादिक देवतों
के सेवन करनेवाले हैं ११७ इनको करके मैंने पूर्वसमयमें देह नहीं
सुखाई हे द्विजोत्तम! इसप्रकार पहले का जन्म हमारा बन्ध्य हुआ
है ११८ अब हे द्विज! इस जन्ममें महाक्रूर, अद्भुत, पूर्वके कर्म्म की

दूरसे बोधदेनेवाली गतिको देखो ११९ राहोंमें भेड़िया और बाघ के मारेहुए मांस हैं और इस पहाड़में सबओर सुओं से छोड़ेहुए और फलभी हैं १२० जोकि पुण्यकारी, सुगन्धित और रसयुक्त हैं और मूल सुन्दर भोजनके योग्य, कोमल, मीठे १२१ अनेकप्रकार के, मधु और बहुतायतसे हैं और स्रोतों झरनोंमें सबओर जलहै १२२ पर्वतमें ये सब पदार्थ सुलभहैं परन्तु सदैव दैवसे हत, भोजन को कभी नहीं देखताहूं १२३ पवनके भोजनसे सर्पोंकी नाईं जीवताहूं फिर भी विप्र! दैवयोनिके प्रभावसे जीवताहूं १२४ मनुष्य बल, बुद्धि, नित्यही मंत्र, पौरुष, पराक्रम, सहाय और मित्रोंसे नहीं मिलनेवाली वस्तुको भी प्राप्तहोताहै १२५ लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, विवाह, मृत्यु, जीवन, भोग, रोग और वियोगमें दैवहीकारण है १२६ कुरूप, बुरे कुलवाले, मूर्ख, बुरे आचारोंसे निन्दित, शूरता और विक्रमसे हीन मनुष्य दैवहीसे राज्योंको भोगतेहैं १२७ काने, लँगड़े, अकुशल, नीतिसे हीन, बुरेगुणवाले और नपुंसक दैवहीसे राज्यमें स्थितहुए दिखलाई पड़ते हैं १२८ जिन्होंने तिल, गौवें, सोना, कपड़ा, आठ वर्षकी कन्या का ब्याह, पृथ्वी १२९ शय्या, आसन, पान, मन्दिर, धन, भक्ष्य, भोज्य, चन्दन और अगरु को दिया है १३० उनको राह, पर्वतके आगे, गांव वा नगर में आगे आगे यत्नसे भोग स्थितरहते हैं १३१ इस पर्वतमें अत्यन्त घोर, बलवान्, राक्षस, पिशाच और पिशाची और भी हैं १३२ वे वनमें घूमतेहुए अपने कर्मसे अन्न और पानी को कभी कभी बड़े कष्टसे पाभी जातेहैं १३३ यह सुनकर तिनसे यहांपर आपको भय नहीं होवे क्योंकि वे राक्षस पवित्र और भगवान् के भक्त आपके देखने को भी योग्य नहींहैं १३४ राक्षस, प्रेत पूतना विष्णु भक्तिरूप व-स्तरवाले, नारायण में परायण को न स्पर्श करते और न देखते हैं १३५ भूत, वेताल, गन्धर्व, शाकिनी, आर्यकग्रह, रेवती, वृद्धरेवती, मुखमंडग्रह, ग्रह १३६ यक्ष, बालग्रह, क्रूर, दुष्ट, वृद्धग्रह, मातृग्रह, भ-यानक और विनायकग्रह १३७ कृत्या, सर्प, कूष्माण्ड और दुष्ट-जन्तु श्रेष्ठ, पवित्र वैष्णव ब्राह्मण को नहीं देखते हैं १३८ क्योंकि

पवित्र और धर्मिष्ठकी प्राणी रक्षाकरते पीड़ा नहीं देते हैं और प-वित्रकी नित्यहीग्रह,नक्षत्र और देवता रक्षाकरते हैं १३९ आपकी जीभके अग्र में गोविन्दजी का नाम और हृदयमें वेद स्थित हैं प-वित्र, दानमें शीलवाले और सब जगहसे आपको कहीं भय नहीं है १४० हे ब्राह्मण! इसप्रकार मैं कर्म का फल भोगताहुआ स्थित हूं यह मानके और वारंवार विचारकर नहीं शोचताहूं १४१ और तबतक नहीं कांपताहूं कि जबतक जंबालिनी के किनारे घूमतेहुए मैंने सारसों का कहाहुआ वचन सुनाहै १४२ तब ब्राह्मण बोले कि हे प्रेत! सारसका कहाहुआ कैसा वचन तुमने सुनाहै तिसके सुनने की मैं इच्छाकरताहूं शीघ्रही कहिये १४३ तब प्रेत बोला हे कार्पा-टिकोत्तम! सारसके वचनसुनो इसकक्ष में पहाड़से उत्पन्न धूसरा नाम नदीहै १४४ जिसमें सदैव जल भरारहताहै,मतवाले हाथियों के समूहोंसे आकुल, महाककुभ शोभासे युक्त, स्निग्ध जामुनों से मनोहर है १४५ इसके किनारे सघनवनको घूमताहुआ मैंभी प्राप्त हुआ फलके भोजनकी कामनासे हमारे वहां रहतेही १४६ लक्ष्म-णानाम स्त्रीसे युक्त सारस दूसरे वनोंसे उड़कर बहुत पक्षियोंसे सेवा करानेको नदी के किनारे प्राप्तहुआ १४७ और वहांपर पानी पीकर स्त्रीसमेत रमणकर बायें पखनाके पुटमें शिर और मुखको प्रवेशकर सो गया १४८ इसी अवसरमें वृक्षसे उतरकर लालमुख युक्त,लाल आंखवाला, दण्डी,मजबूत नहोंकी पंक्तियुक्त १४९ बड़ी पूंछवाला, चलायमान चेष्टायुत लोमशनाम वानर वेगसे सोते हुए सारसके पास प्राप्तहुआ १५० और आकर सारस के चरणको मजबूती से बहुत पक्षियों के देखते हुए हाथों से क्रूरबुद्धिसे ग्रहण करताभया १५१ तब तो सब पक्षी उड़ उड़कर और जगह भगगये सारसी डरतीहुई स्थित रहकर शब्दोंको करनेलगी १५२ सारसभी निद्रा-रहित और डरसे चलायमान नेत्रयुक्त होकर चोंचको ठीककर ज-ल्द देखनेलगा १५३ तो मारनेकी कामनावाले घोर दुष्ट वानरको देखकर मधुरवाणी से तिससमय में उससे बोला १५४ कि हे नर बिनाअपराध हमको क्यों बाधा करतेहो राजाओं से

युक्त मनुष्य बधेजाते हैं १५५ आपके समान उत्तमजन पीड़ा देनेके योग्य नहीं होते हैं हमलोग तो हिंसारहित,साधु,पराई वृत्तिसे पराङ्मुख १५६ जलके सेवारके खानेवाले, आकाशमें चलनेहारे, वनवासी,अपनी स्त्रियोंमें रतिके शीलवाले,पराईस्त्रीसे वर्जित १५७ हे वानरोंमें उत्तम! पराये कलङ्क और चुगुलीसे रहित परमसेवक हैं १५८ इससे हे वानर सबतरह से अपराध रहित हमको छोड़ो तुम्हारे पूर्वजन्मको मैं जानताहूं परन्तु तुम हमको नहीं जानतेहो १५९ इसप्रकार के तिसके वचन सुनकर चञ्चल वानर तिससमय में सारस को छोड़कर दूर स्थित होकर जल्द बोला १६० कि रे तू कह हमारे पूर्व्वजन्म को कैसे जानता है क्योंकि तू ज्ञानहीन पक्षी है और मैं वनचारी तिर्यक्योनिहूं १६१ तब सारसबोला कि हमको जाति का स्मरण अच्छी तरह से बना है हम तुम्हारे जन्म को जानते हैं कि तुम पूर्व्वजन्म में पर्व्वतों के ईश्वर विन्ध्याधिप राजा थे १६२ और मैं तुम्हारे वंश में पूज्य पुरोहित ब्राह्मण था तिसी से हे उत्तम वानर आपको मैं अच्छीतरह से जानताहूं १६३ ज्ञानहीन आपने इस पृथ्वी की पालना की सब प्रजाओं को पीड़ित किया और धन को इकट्ठा किया १६४ हे वानर प्रजापीड़ाकी तापसे उठीहुई अग्निकी ज्वालाओं से पहले तुम जलायेगये और फिर अत्यन्त घोर कुम्भीपाक नरक में डालेगये १६५ और फिर जलाये गये और नरकमें छोड़ेगये इसीतरह से नरकमें रहनेवाले शरीरसे तुमने तीस वर्ष बिताये १६६ भयानक शब्दकर बारंबार रोते थे कुम्भीपाककी अग्निमें तीव्र यातना सहीं १६७ फिर नरक से निकलकर शेष पापों से इससमय में वानरका जन्म पाया जिस से हमारे मारने की इच्छा करते हो १६८ ब्राह्मणकी बागसे तुमने पूर्व समयमें पकेहुए केले के फल पराक्रमसे हरकर खाये थे १६९ तिस कर्म्मका घोर विपाक फल रहाहै तिसको देखो कि तिसी से इससमयमें तुम वनवासी वानर हुएहो १७० पूर्व समयके अशुभ वा शुभकर्म के करनेका भोग प्राणियों में क्रीड़ा करताहै देवताओं से भी नहीं उल्लंघित होता है १७१ इसप्रकार यथावत् हेतुसमेत

तुम्हारे जन्मको जानताहूं सारस देह प्राप्त होकर भी ज्ञानसे युक्त हूं १७२ तब प्रेत बोला कि हे ब्राह्मण इसप्रकार की कथा सुनकर वानर सारससे बोला कि निश्चय तुम अच्छीतरहसे जानते हौ परन्तु तुम कैसे पक्षी हुएहौ १७३ तब सारस बोला कि तिस कर्म्मको कहताहूं जिससे मैं दुर्गतिको प्राप्तहुआ और पक्षी की योनि में प्राप्तभया तिस सबके आप सुनने के योग्य हैं १७४ पूर्व्व समय में आपने अग्रसमेत सौ खारि धान्य सूर्य्यग्रहण में चर्मदा में बहुत ब्राह्मणों को दान कियाथा १७५ पुरोहिती के कारण से हमीं को दियाथा तब हमने ब्राह्मणों को कुछ देकर उनको ठगलिया और सब मैंनेही ले लियाथा १७६ ब्राह्मणों की साधारण द्रव्यके ग्रहण से उत्पन्न पाप से मैं रक्तके कीचड़वाले कालसूत्र नरक में गिराया गया १७७ जो कि चलायमान कीड़ों से पूरित, दुर्गंधयुक्त, पीब के फेनासमेत था उसमें मैं नाभिपर्य्यन्त डुबायागया तो तलेका मुंह कर पीब भी खानापड़ा १७८ तिसके ऊपर भारी गृध्र और कौवे काटनेलगे और निरन्तर हमारी देह कृमियों से पीड़ितहुई १७९ तिस रक्तके कीचड़में तिससमयमें बड़ी श्वासें लेनेलगा और हमको एक मुहूर्त कल्पके समान बीता १८० हे वानर मैंने तीसहज़ार वर्ष बहुत दुःख सहे जिनके कहने को मैं समर्थ नहींहूं १८१ पुरोहिती का कर्म महाघोर और स्वभावही से पाप देनेवालाहै देवोंसे उपजीवन जिसमें ब्राह्मण का उपजीवनहै १८२ राजा का जो घोर प्रतिग्रह है तिससे ब्राह्मण दग्ध होजाते हैं तिनका भी द्रव्य पुरोहित हरताहै तिसीसे नारकी होताहै १८३ राजा जो पाप करताहै तिसको देहसे पुरा धारण करताहै तिसी से तत्त्वदर्शी लोग पुरोधा शब्द गाते हैं १८४ दैवसे किसीतरह जो नरकरूपी समुद्रसे उद्धार हुआ तो दैवयोगसे पक्षी के भावको मैं प्राप्तहुआ १८५ पूर्वसमय में बहनके घरसे कांसेके बर्तनको हरकर आक्षिक को मैंने दियाथा तिसीसे मेरी सारसकी गतिहुई है १८६ और यह घोरब्राह्मणी पूर्व समय में कांस्यकी चोरी करतीभई इससे धर्मयुक्त हमारी स्त्री सारसी हुई है १८७ हे वानर इस प्रकार मैंने सब कर्मकाफल भत

और वर्त्तमानकालका कहा है अब भविष्य को इससमय में सुनो १८८ हम और तुम हंसहोंगे और हमारी यहसारसी स्त्री हंसीहोगी १८९ कामरूप देश में सुखपूर्वक स्थितहोंगे तिस पीछे कल्याणी योगिनीको प्राप्तहोंगे १९० फिर दुर्लभ मनुष्यका जन्मप्राप्त करेंगे जिसमें कल्याण और नहीं कल्याण प्राणियों से साधेजातेहैं १९१ इस प्रकार शिवजी सब जंतुओंको अपनी मायासे मोहित कराकर सुख और दुःखोंसे भोग कराते हैं केवल हमींको नहीं भोग कराते हैं १९२ यह अनेक प्रकारसे रचाहुआ संसारमें मार्ग प्रवृत्तहै जो कि धर्म, अधर्ममय, अत्यर्थ में सुख और दुःखफलकी आत्मा १९३ देवता, असुर, मनुष्य श्रेष्ठ, कृमि, कीट और जलचर सब प्राणियोंसे सदैव वारंवार सेवित है १९४ यह दुःखकण्टकमार्ग किसी करके भी अतिक्रान्त नहीं है विरक्त, विना वेदान्तके पारगामियें को योगीजन ध्यान करतेहैं १९५ महादेवजी देश और कालके जानकर थोड़ी वा बहुत पुण्य अपुण्य की कर्म्म के फल को दे हैं १९६ इस प्रकार महाबुद्धिमान् मनुष्य विधिविधान की जानने वाली ईश्वरकी मायाको जानकर शोच, ताप और व्यथायुक्त नहीं होतेहैं १९७ हे वानर! देवता भी उपाय वा बुद्धि से पूर्वकर्म्मों के विपाक को औरतरह करने को नहीं समर्थ हैं १९८ पहले तुम राजा हुए पीछे से नरक में गये अब इस समय में फिर वानर के जन्म को प्राप्त हुये हो १९९ ऐसा मानकर सुखपूर्वक शोकरहित होवो इसी वन में रमते हुये कालको परखो २०० हमभी इसी प्रकार महादेवजी की माया से बँधकर सारसका जन्म लेकर धैर्य्य धारणकर वनवन में काल काटता हूं २०१ तब वानर बोला कि पूर्व समय में मैंने तुम्हारी पूजाकी है इससमय में भी तुमको नमस्कार करताहूं और यह जानता हूं कि आप हमारे सब पूर्वदेहके हाल कहते हैं इससे जाति स्मरहो २०२ हे सारस! सारसी करके युक्त स्थिरहो सदैव तुम्हारा कल्याण हो तुम्हारे वाक्यसे मोहरहित होकर मैंभी सदा विचरूंगा २०३ तब प्रेतबोला कि हे ब्राह्मण इस रहस्य, विचित्र और पवित्र सारस और वानरके संवादको जब तक

नदीके किनारे मैंने सुना २०४ तबतक हमको भी बोध हुआ और तिसी से शोक नाश होगया अब इस समय में गंगाजी के जलके परम अद्भुत माहात्म्यको २०५ देखकर हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! आप से गंगाजलको मांगताहूं मुझे प्रेतभावसे तरनेकी कामनाहै और तीव्र प्याससे पीड़ितहूं २०६ हे ब्राह्मण! इसी पर्वतमें मैंने गंगाजी के जलका आश्चर्य देखाहै तिसी से तिस जलको पानेकी इच्छा करता हूं २०७ पारियात्र पर्वतमें उत्पन्न कोई ब्राह्मण गांव में यज्ञ कराता था नहीं यज्ञके करनेके योग्योंको यज्ञ करानेके कारणसे विन्ध्याचलमें वह ब्रह्मराक्षस हुआ २०८ हमारे संगके लोभसे वह आठवर्ष यहीं स्थितरहा और तिसके अच्छे पुत्रने उसके हाँड़ इकट्ठेकरलिये थे २०९ उनको उसने गंगाजी में निर्मल कनखल तीर्थमें छोड़दिये तो तिसीक्षणसे वह घोर राक्षसपनेसे छूटगया २१० यह गंगाजी के जलकी स्नानकी महिमा बड़ी अद्भुत साक्षात् मैंने देखी तिसीसे गंगाजी के जलको मांगताहूं २११ पूर्वसमय में जो मैंने तीर्थ में बड़ा दानलिया और उसका प्रतीकार जपआदिक कुछ नहीं किया २१२ तिसीसे मुझ प्रेतरूपको जल और भोजन दुर्लभहोगये इस विन्ध्याचलमें सहस्र वर्ष बीतगये हैं २१३ यह सब आपसे भारी लाज छोड़कर मैंने कहा अब हे धर्मात्माओं में श्रेष्ठ इससमय में शीघ्रही जलदानसे २१४ कण्ठमात्रमें अवलंबित हमारे प्राणोंको तृप्तकरो क्योंकि प्राणियों को प्रेतभावमें भी जीवन दुर्लभ है २१५ मनुष्यों करके सदैव सर्वथा शरीर की रक्षा करनायोग्य है क्योंकि कोढ़ आदिके रोगी भी देहत्यागकी इच्छा नहीं करते हैं २१६ तब देवद्युति बोले कि इसप्रकारके प्रेतकेवचन सुन बड़े विस्मययुक्तहोकर राह चलनेवाला प्रेतके ऊपर कृपाकर चिन्तना करनेलगा २१७ कि संसारमें निश्चय पाप और पुण्यका फल प्रत्यक्ष दिखाई देता है देवता, दानव, मनुष्य, तिर्य्यक् योनिवाले, कृमि, कीट २१८ इत्यादि अनेक प्रकारकी योनियों में जन्महोते हैं और अनेक प्रकार की व्याधियों से पीड़ाभी होती है बालक और बूढ़ों का मरना, अंधा और कुबड़ा होना २१९ ऐश्वर्य्य, दरिद्र, पाण्डित्य और मूर्खता ये

संसारमें रचना कैसे और तरहकी होती हैं २२० वेही धन्य हैं जे कर्मभूमिमें न्यायकी राहसे इकट्ठे कियेहुए धनको सुपात्रोंको देतेहैं और अपने कल्याणको करतेहैं २२१ भूमि, रत्न, सोना, गऊ, धान्य, घर, हाथी, रथ, घोड़ा, वस्त्र, गांव, पकाहुआ अन्न, जल २२२ कन्या, सुन्दर औषध, अन्न, छतुरी, जूता, श्रेष्ठ आसन, शय्या, पान, माला तालवृंत, श्रेष्ठ आसन २२३ ये सब तीनोंलोक के जीतनेकी इच्छा करनेवालों को देना चाहिये क्योंकि दियाहुआ स्वर्गमें प्राप्तहोताहै और वही भोगकरना होताहै २२४ छतुरी, चामर, सवारी, श्रेष्ठ घोड़े, श्रेष्ठ हाथी, महल, श्रेष्ठ शय्या, गऊ, भैंस, श्रेष्ठ स्त्री २२५ अन्न, गहने, मोती, पुत्र, दासी, महाकुल, उमर, आरोग्य, ऐश्वर्य, कला, विद्याओं में कुशलता २२६ ये सब दानही का फल पृथ्वीमें मनुष्यों को प्राप्त होता है तिससे यत्नसे देना चाहिये नहीं दिया हुआ नहीं प्राप्त होताहै २२७ यह कथा धर्म्मवान् राह चलनेवाले ने गाई इसको सुनकर दुःखयुक्त मनवाला प्रेत फिर बोला २२८ कि हे राही मैं तुमको धर्म्म जाननेवालों के सदृश निस्सन्देह मानता हूं अब मुझ को इस भांति जीवन देनेवाला जल दीजिये जैसे मेघ पपीहेको देते हैं २२९ इसप्राणदानमें बहुत विलम्ब न कीजिये तदनन्तर राही न्याययुक्त वचन बोला २३० कि हे प्रेत! सुनो भृगुक्षेत्रमें हमारे माता पिता स्थितहैं तिनके लिये प्रयागजीका २३१ सफेद और श्यामजल लायाहूं तिसको बीचही में आपभी मांगते हैं मैं धर्म्म के सन्देह को नहीं जानताहूं कि यहां पर क्या मुझको युक्तहै २३२ बल और अबलके विचारके लिये प्रबलविधिको मैं वेद और धर्मशास्त्रों से करूंगा केवल मानहीसे नहीं करूंगा २३३ ऋषि और देवताओं ने अश्वमेध आदिक सब यज्ञोंसे प्राणियोंके प्राणों की रक्षा करना अधिक फल कहा है २३४ इससे इस श्रेष्ठ जलसे प्रेत की रक्षाकर पितरों के लिये फिर पवित्र जलको लाऊंगा। २३५ यही हमको शुद्ध धर्मके देनेवाली प्रबलविधि प्रकाशित होतीहै क्योंकि पण्डितोंने परोपकारसे और सबको थोड़ाही कहा है २३६ पराये उपकार करनेवाले मनुष्यों ने आनन्द से प्राण भी

देदिये हैं तो जलसे पराये उपकार को क्यों न करें २३७ पूर्वसमय में दधीचिका गायाहुआ श्लोक पृथ्वी में सुनाजाता है कि सब धर्म-युक्त, सार, सब धर्म्म जाननेवालों के सम्मत २३८ पराया उपकार प्राण और धनसे करना चाहिये पराये उपकारसे उत्पन्न पुण्य सौ यज्ञों के समान है २३९ ऐसा कहकर वह धर्म्मात्मा श्रेष्ठ ब्राह्मण गंगा और यमुना के जल को प्राणों की रक्षाके लिये प्रेत को देता भया २४० तब तो प्रेतने उस जलको पिया और शिरमें अभिषेक किया तो क्षणमात्रही में प्रेत देह को छोड़कर सुन्दर देहयुक्त हो-गया २४१ तिससमय में इस महान् आश्चर्य्य को देखकर केरल बोला कि आश्चर्य्यकी बातहै कि वेणीके जलके विन्दुओं से प्रेत-भावसे छूटगया २४२ अब मैं यह मानताहूं कि जलके गुणके कहने को ब्रह्माजी भी नहीं समर्थ हैं गंगाजी के जलको महादेवजी धा-रण किये हैं २४३ क्योंकि यह गंगाजल अचिन्त्य शक्तिहै इसको तिलमात्र भी जो पीताहै वह देवता वा सिद्ध होजाताहै गर्भ में नहीं प्रवेश होता है २४४ क्योंकि गंगाजी के सदृश सिद्धि, बुद्धि और मुक्ति नहीं है गंगाजी सबसे अधिक हैं २४५ हे धार्मिक! तिससे सब यत्न और महाभक्ति से जो गंगाजी को सदा सेवन करता है तो तिसके हाथमें मुक्ति रहतीहै २४६ हे राह चलनेवाले! तुम्हारी अधिक उमरहो धर्मसे रहित नहो, तुमने शीघ्रही गंगाजी केजल के कणके दानसे हमको तारदिया है २४७ ऐसा कहकर वह केरल पिशाच राही, बन्धुओं में श्रेष्ठ, मनुष्यकी आशीर्व्वादों से प्रशंसा कर स्वर्गको जाताभया २४८ और वह राही प्रेतको मोक्षकर फिर जलको लेकर तीर्थके जलके कौतुक को स्मरणकर तिसी मार्ग्ग से गया २४९ वसिष्ठजी बोले कि इसप्रकार प्रयागजी के माहात्म्यको सुनकर तिन मुनिके नमस्कार कर पिशाच सहसासे शीघ्रही माघ में प्रयागजी को जाताभया २५० और सफ़ेद और श्याम जल में स्नानकर हे द्विजोत्तम! पापरहित होकर पिशाचकी देह को त्याग कर २५१ तिसी समय में सुन्दर देहवाला द्राविड़ राजा होगया और दोषोंसे वर्जित होकर भक्तिसे नारायणदेव की स्तुतिकर २५२

गन्धर्वों से स्तुति कियाहुआ और स्वर्गकी स्त्रियोंसे अच्छी तरह पूजित होकर उत्तम विमानपर चढ़कर इन्द्र के पुर को जाताभया २५३ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! यह शीघ्रही पाप नाश करनेवाला कौतुकसमेत पूर्वसमय का वृत्तान्त तुमसे कहा २५४ जोकि सुनने से ज्ञान, मोक्षको तो देताहै और दुर्गति को नाश करताहै २५५ अब इसी समय में हमारे साथ ये कन्या और तुम्हारा पुत्र २५६ और तुम ये सब अच्छी गतिके इच्छा करनेवाले प्रयाग को चलो वहांपर देवताओं को भी दुर्लभ माघस्नान को करेंगे २५७ तो शीघ्रही पापसे उत्पन्न पिशाचभाव छूटजावेगा २५८ महादेवजी बोले कि इस प्रकार वसिष्ठजी के मुखकमल से कथारूपी मधुररस को आनन्दसे पानकर सब आनन्दयुक्त होगये और नरकरूपी समुद्रसे तरगये २५९ और तिनके साथ हर्षयुक्त होकर शीघ्रही आकाशमें प्रस्थान करते भये हे दिलीप ! तिस सब सफ़ेद और श्याम जल वाले तीर्थको सुनो २६० कि वे सब दुःसह, प्रसन्नहृदयहोकर तिसी समयमेंमिलकर आकाशमार्गसे शीघ्रही चलते भये २६१ तदनन्तर लोमशजी दयासमेत आकाश में बोले कि पृथ्वी में इस तीर्थराजको तुम सबलोग श्रद्धासे देखो २६२ इस प्रयागमें विना ज्ञानके सबप्राणी मुक्त होगये हैं और यहीं पर सृष्टि रचनेकी कामनासे प्रजापतिजी ने महायज्ञको करके २६३ सृष्टिकी सामर्थ्य प्राप्त होकर तिस पीछे सृष्टि कियाथा और स्त्रीकी कामनायुक्त नारायणजी सफ़ेद और श्याम जलमें स्नानकर २६४ अमृत मथने में लक्ष्मी स्त्रीको प्राप्तहुए और यहीं वेणी में इच्छा पूर्वक छः महीने बसकर स्नानकर २६५ त्रिशूलधारी महादेवजी तीनबाण से त्रिपुरासुरको मार डालतेभये ये तीन कुण्ड निरन्तर अग्नियोंसे प्रकाशित रहतेहैं २६६ यह अग्नि किसीकरके पुष्ट तृप्तिको प्राप्त हुईहै और तेंतीस देवताभी यहीं पर तृप्तहोकर अत्यन्त आनन्दको प्राप्तहुएहैं २६७ नीलकण्ठ, मुण्डोंकी माला धारण करनेवाले, निरन्तर देवताओंसेसेवित महादेवजी ब्रह्मचारीहोकर यहीं प्रकट होकर अंजलिके लिये आतेहैं २६८ और कल्पमें संसार अग्नि से जब व्याकुलहुआ तब मार्कण्डेयजी जिन

के मुखमें स्थित होगयेथे सोई योगरूपी जनार्दनजी हैं २६९ और सोई भगीरथ की लाईहुई महादेवजी के सब दुःखोंकी नाशकरने वाली, भुक्ति और मुक्तिफल को देनेवाली गंगाजी सिद्धिके लिये सिद्धोंसे सेवितहै २७० और निरन्तर जो स्वर्गकी राहमें ऐश्वर्यकी देनेवाली, सबसे उत्तम और स्वर्गकीहेतु जो देवीहै सोईभागीरथी नदीहै २७१ और यह यमुनानदी है जिसके जलके स्नानहीमात्रसे सबप्राणी विकर्तनसलोकताको प्राप्त होते हैं २७२ हे मुनिजी इनपुण्यनदियोंका संगम सुखका देनेवालाहै यहांपर ज्ञानभावित मनुष्य स्नानकर नरकमें नहीं पचतेहैं २७३ इसप्रयागमें सबप्राणी विना ज्ञानके मुक्त होजाते हैं हे ब्राह्मण! अब और प्राचीनइतिहास को सुनो २७४ जोकि सुननेवालोंके सबपाप और सबरोग नाशकरने वालाहै पूर्वसमयमें ऋचीकमुनिने गन्धर्वको शापदिया था तब वह कौआ होगयाथा २७५ और शीघ्रही सफ़ेद और श्याम जलमें स्नान किया तो उसका शाप छूटगया और इन्द्रके शापसे उर्वशी अप्सरा स्वर्गसे भ्रष्ट होगई थी २७६ तब उसने स्वर्गकी कामनाकर स्नान किया तो शीघ्रही स्वर्गको प्राप्तहोगई और नाहुष ययाति पुत्रकी कामनासे पुण्यकारी, सफ़ेद और श्यामजलवाले प्रयाग में स्नानकर कल्याण करनेवाले पुत्रको प्राप्तहुए और हे उत्तम ब्राह्मण! पूर्वसमय में इन्द्रधनकी कामना से यहीं पर स्नानकर २७७। २७८ मायासे इन्द्रकी सब निधियोंको हरलेताभया और महादेवजीके आराधनमें तत्पर कश्यपजी यहींपर तपस्या करतेभये २७९ और भरद्वाजजी इस तीर्थमें योगसिद्धिको प्राप्तहुये हे ब्राह्मण! पूर्वसमयमें इसी तीर्थ में योगेश, शांतमनवाले २८० सनकादिक योगकी फलभूमिको प्राप्त हुएहैं और इसमाघ में गंगा और यमुनाके संगममें जिन्हों ने स्नान कियाहै २८१ वेसब नक्षत्ररूप होगयेहैं उन्हींसे सब संसार व्याप्त है कामनावाले कामनाओं को प्राप्तहोते, मुक्तिकी इच्छा करनेवाले मुक्तिको प्राप्तहोते २८२ और हे उत्तमब्राह्मण प्रयाग में साधक सिद्धिको प्राप्त होतेहैं अब इससमयमें मुक्तिकी कामनावाली कन्या और तुम्हारा पुत्र २८३ येसब और तुम हमारे वचनसे सफ़ेद और

श्यामजल में स्नानकरें तो वेणीके जलकेबलसे पुराने पाप नाशहोकर २८४ प्राप्त शापसे महाफल, सम्पूर्ण लक्ष्मीको प्राप्तहोंगे इसप्रकार अतीन्द्रिय और नहीं लङ्घन करनेवाले ऋषिके सत्य वचन २८५ सुन सब उत्कण्ठचित्त और स्नानके लिये उद्यत होगये और दुःख से प्राप्त होनेवाले प्रयागको पाकर स्नानकर क्षणमात्रही में पिशाच देहको त्यागकर २८६ शापके दुःखसे छूटकर अपनी अपनी देह को प्राप्तहोगये तब वेदनिधि पुत्र और तिनकन्याओं को सुन्दररूप-युक्त देखकर २८७ प्रीति और प्रसन्न अंतरात्मा से लोमशजी की स्तुति करनेलगे कि तुम्हारी अनुग्रहमात्र से पापरूपी बड़ा समुद्र तरगये २८८ हे ऋषिसत्तम! इससमय में बालकों को उचित कहिये तब लोमशजी बोले कि यह कुमार वेद पढ़चुका नियम समाप्तकरचुका और जवान हुआहै २८९ इससे इन अप्रेम युक्तोंके हाथरूपी कमल को ग्रहण करै तबतो लोमशजी और अपने पिता के वचन से तिस समय में २९० ब्रह्मचारी, धर्म्मात्मा, शुभद्रव्य और मन्त्रोंसे ऋषियों करके मंगल कियेहुए शीघ्र विवाहकी विधि से २९१ धर्मसे पांचों कन्याओं का हाथ ग्रहण करतेभये तब सब कन्या पूर्णमनोरथ होकर आनन्दयुक्त होगईं और वह कुमार भी सन्तुष्ट होगया फिर लोमशमुनि उनको आज्ञाजानेकी देतेभये तब उन सबलोगों ने नमस्कार किया २९२। २९३ और लोमशमुनि देवताओं से सेवित, अपने स्थान मेरुपर्वत को जातेभये तदनन्तर हे राजन्! आनन्दयुक्त वेदनिधि पांचों पतोहू और पुत्र को आगे कर कुबेरजी के पुरको जातेभये २९४ हे राजाओं में श्रेष्ठ! इसप्रकार माघमें मुनिवर लोमशजीके वचनसे तीर्थराज प्रयागमें स्नान करने से पुण्य उत्पन्नहुई और सब पाप पांचों गन्धर्वोंकी कन्याओं के छूटगये और ब्रह्मचारीजी के संग विवाह होनेसे बड़ी प्रसन्नता को प्राप्त होगईं २९५ इसश्रेष्ठ, पवित्र, तीर्थभूत, कष्टोंके नाशके हेतु इतिहास को जो नित्यही सुनता है वह अभीष्ट सब कामों से निश्चय पूर्णहोकर दुर्लभ धर्मयुक्त हुआ देवलोक में प्राप्त होताहै २९६ इस इतिहास को सुनकर जो गऊ, सोना और कपड़ोंसे पाठ

करनेवाले को पूजता है क्योंकि पाठक ब्रह्मतुल्य है २९७ और बां-
चनेवाले के पूजन करने से विष्णुजीभी पूजित होजाते हैं तिससे जो
सफलजन्म की इच्छाकरै तो नित्यही बांचनेवालेकी पूजाकरै २९८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशतसहस्रसंहितायामुत्तरखण्डे
माघमाहात्म्येवसिष्ठदिलीपसंवादेगन्धर्वकन्यापरिणयो
नामैकोनत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १२९॥

एकसौतीसका अध्याय॥

विष्णुजी की भक्तिकी महिमाका वर्णन॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे विभो ! महादेवजी ! कार्त्तिक और माघ
का माहात्म्य तो मैंने सुना अब इससमय में मुक्तिके देनेवाले उ-
त्तम कर्मके सुननेकी इच्छाहै १ हे संसारके स्वामी, प्रभुजी ! श्रेष्ठ
भक्तिकौन कहाती है तिसको कहिये जिसके जाननेही मात्रसे मनुष्य
सुख को प्राप्तहोते हैं २ तब महादेवजी बोले कि भगवान् में चित्त
जिसका लीनहै वही पुरुष है और वही भक्ति श्रेष्ठ है मनुष्य दया
और धर्म्ममें नित्यही परायण विष्णुजी के धर्म्मों में तत्पर ३ फल,
मूल और जलका भोजनकर, शङ्ख चक्रको धारणकरके तीनों काल
विष्णुजी को पूजै तो वही सात्विकी भक्तिहै ४ सात्विकी भक्ति उ-
त्तम, राजसी मध्यम और तामसी कनिष्ठाहै इसतरहसे तीनप्रकार
की भक्ति कहीहै ५ मुक्तिकी कामना और फलकी इच्छा करनेवाले
मनुष्यों करके श्रीधरजी में भक्ति करनी चाहिये अहंकाररूप, दम्भ
और मात्सर्य्यकी मायासे ६ जे मनुष्य भक्ति करते हैं वह तामसी
भक्ति कहातीहै पराये उत्सादनके लिये अथवा दम्भका उद्देशकर७
जो भगवान् में भक्ति कीजाती है वह तामसी कहाती है विषयों वा
यश ऐश्वर्यको प्रतिसन्धानकर ८ पूजा आदिकमें जो हमको पूजता
है वह पृथग्भाव राजस है ज्ञानमें तत्पर ब्राह्मणों करके कर्म क्षयके
अर्थमें करनीचाहिये ९ विष्णुजी में आत्मा अर्पण करनेवाली बुद्धि
को सात्विकी भक्ति कहते हैं इससे हे पार्वती ! सर्वथा हरिभगवान्
सर्वदा सेवन करने योग्यहैं १० तामस भावसे तामसकाभाव प्राप्त

होताहै राजससे राजस और सात्विकसे सात्विक मिलताहै ११ वेद के पढ़नेमें रत, श्रीमान्, राग और द्वेषसे वर्जित, शङ्ख और चक्रका धारण करनेवाला ब्राह्मण सर्वदा पवित्र कहाताहै १२ जो कर्मकाण्डमें प्रवृत्त, सदैव विष्णुजी और उनके भक्तोंकी निन्दा करताहै वह महाचाण्डाल कहाताहै १३ हे पार्वती! वेदके पढ़ने में नित्यही रत, नित्यही यज्ञके करानेवाले, अग्निहोत्र में नित्यहीरतहैं परन्तु विष्णुजी के धर्मोंसे पराङ्मुखहैं विष्णुजीके धर्म्मोंकी निन्दाकरते हैं वे वेदसे बाह्यहैं १४ गोविन्दजी में भक्ति करनेवाले मनुष्यों की देवता शांतिकरते हैं प्रसन्नहुए पितामह आदिक कुशल करते हैं और मुनीन्द्रों में मुख्य कल्याण करते हैं १५ भूत और पिशाचों से युक्त ग्रह शुभ होते हैं ब्रह्मादिक देवसमूह प्रसन्न होते हैं घर में स्थिर लक्ष्मी स्थितहोती है १६ गंगा, गया, नैमिष, पुष्कर, काशी, प्रयाग और कुरुजांगल ये भगवान् में भक्ति करनेवाले मनुष्योंकी देह में स्थितहोते हैं १७ इसप्रकारसे विद्वान् मनुष्य लक्ष्मीसमेत भगवान् को आराधनकरै तो वह ब्राह्मण निस्सन्देह नित्यही कृतकृत्य होताहै १८ क्षत्रिय वा वैश्य वा शूद्रही मनुष्य भक्तिको करके विशेषकर मुक्तिको प्राप्तहोताहै १९॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेविष्णुभक्तिमहिमावर्णननामत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३०॥

एकसौइकतीसका अध्याय॥

शालग्रामकी मूर्तिके पूजन का माहात्म्य वर्णन॥

पार्वतीजी बोलीं कि शालग्राम पत्थरकी शुद्ध मूर्तियां पृथ्वी में हैं उनमूर्तियों का पूजन कितने प्रकारकाहै १ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और स्त्रियोंको कितने कितने प्रकारकी पूजनी चाहिये २ तब महादेवजी बोले कि शालग्रामकी शिला पुण्यकारिणी, पवित्र और धर्मकी करनेवालीहै जिसके दर्शनही मात्रसे ब्राह्मणका मारनेवाला मनुष्य शुद्ध होजाताहै ३ वहघर सब तीर्थोंमें श्रेष्ठ, वेदमें कहाहुआ है जहांपर शालग्रामकी सुन्दर शिला सर्वदा रहती है ४ ब्राह्मणों

को पांच, क्षत्रियों को चार, वैश्योंको तीन वा एक मूर्ति यत्नसे पूजनी चाहिये ५ और मूर्तिके दर्शनमात्रही से शूद्र मुक्तिको प्राप्त होता है हे पार्वती ! इसविधिसे जे मनुष्य पूजन करते हैं ६ वे सब भोगों को वहां भोगकर विष्णुजी के सनातनको प्राप्त होते हैं यह महती मूर्ति सर्वदा पाप हरनेवाली है ७ जिसके पूजनसे कैलास आदिकके पूजनका फल होताहै वहां पर गंगा, यमुना, गोदावरी और सरस्वती नदी निस्सन्देह स्थितहैं जहां शालग्रामजी की मूर्ति स्थित रहती है हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्वती ! वारंवार बहुत कहने से क्याहै ८।९ मुक्तिकी इच्छा करनेवाले मनुष्यों करके अच्छी तरहसे पूजनकरना चाहिये हे पार्वती ! जे जनार्दनजीको भक्तिभावसे पूजन करते हैं १० उनके दर्शनहीमात्र से ब्राह्मणका मारनेवाला मनुष्य शुद्ध होजाता है और जे शूद्र दासभावसे पूजन सदा करते हैं ११ उनकी पुण्य को ब्रह्मादिक देवताभी नहीं जानते हैं और जे ब्राह्मण भक्तिभावसे निश्चय भगवान् को पूजते हैं १२ वे तिन जन्मोंमें इक्कीस कुलोंको तारदेते हैं और शंख चक्रसे चिह्नित जो ब्राह्मण पूजन करताहै १३ उससे विष्णुजी के पूजन से सब संसार पूजित होजाता है और पितर कहते हैं कि हमारे कुलमें वैष्णव उत्पन्न हुए १४ ये हमारे कुल को प्रलयपर्य्यन्त तारदेंगे और हमको उद्धारकर विष्णुजी के स्थानको प्राप्त करेंगे १५ वही दिवस, माता, बान्धव, तिसकापिता और मित्र धन्य हैं १६ भगवान् की भक्तिमें परायण सब अत्यन्त धन्य जानने चाहिये उनके दर्शनही मात्र से मनुष्य बड़े पापों से छूटजाता है १७ सब उपपातक और बड़े पाप ये सब वैष्णवों के दर्शनसे नाश होजातेहैं १८ जे पृथ्वी में वैष्णव मनुष्यहैं वे अग्नि की नाईं प्रकाशित होते हैं और सब पापोंसे इसप्रकार छूटजाते हैं जैसे मेघोंसे चन्द्रमा छूटजाताहै १९ गीले, सूखे, पतले, मोटे, वाणी, मन और कर्म्मोंसे कियेहुए सब पाप वैष्णवोंके दर्शन से नाश हो-जाते हैं २० जीवके मारने आदिका पाप ज्ञान वा अज्ञानसे किया हुआ सब वैष्णव के दर्शन से नाश होजाता है २१ साधुओंके द-र्शन से पाप रहित मनुष्य तो स्वर्गको जाते हैं पापी शुद्ध होजाते

हैं यह मैंने तुमसे सत्यही कहाहै २२ भगवान् का भक्त निस्सन्देह संसार के कीचड़के लेपके धोनेमें निपुण और पवित्रों का पवित्रहै २३ और जे विष्णुजी के भक्त प्रतिदिन भगवान् को पूजते हैं वे विष्णुमय जानने चाहिये वहांपर निस्सन्देह विष्णुजी रहतेहैं २४ नवीन नीलमेघों के समान श्यामवर्ण, कमलके तुल्य बड़े नेत्रों से युक्त, शंख, चक्र, गदा और पद्मके धारण करनेवाले, पीताम्बर से आच्छादित २५ कौस्तुभमणि से प्रकाशित, बनमाला के धारण करनेवाले, हरि, कपोल और मुखकी शोभा से प्रकाशित कुण्डल की ज्योतिवाले २६ मुकुट, कङ्कण, बहूटा और नूपुरोंसे प्रकाशित, प्रसन्नमुखकमलवाले, चार भुजाओंसे युक्त और लक्ष्मीसहित २७ इसप्रकार जे ब्राह्मण विष्णुजी को ध्यान करते हैं वे निस्सन्देह विष्णुरूप और वैष्णवहैं २८ उनके दर्शनमात्र वा भक्तिसे भोजन वा पूजन करने से निश्चय वैकुण्ठ मिलताहै २९॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेशालग्राम शिलापूजनमाहात्म्यंनामैकत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३१॥

एकसौबत्तीसका अध्याय॥

विष्णुजीका स्मरण वर्णन॥

पार्वतीजी बोलीं कि अनन्त वासुदेवजी का किसप्रकारका स्मरण कहाहै जिसके सुननेसे मनुष्यों को फिर मोह नहीं होवे १ तब महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! दृष्टतत्त्वसे नित्यही विष्णुजी को स्मरण करते हैं जैसे प्याससे व्याकुल जलको स्मरण करताहै तैसेही विष्णुजीको मैं स्मरण करताहूं २ जाड़ेसे व्याकुल संसार जैसे अग्निको स्मरण करताहै तैसेही देवादिक विष्णुजी को स्मरण करते हैं ३ जैसे पतिव्रता स्त्री नित्यही पतिको स्मरण करती है तैसेही लोकेश, संसार के ईश्वरों के ईश्वर विष्णुजीको स्मरण करते हैं ४ भयसे व्याकुल जैसे शरणको, द्रव्यका लोभी धनको, पुत्रकी कामना वाला पुत्र को तैसेही विष्णुजीको मैं स्मरण करताहूं ५ दूरमें स्थित जैसे घरको, पपीहा वैशाखको, ब्रह्मका जाननेवाला ब्रह्मविद्याको तैसेही

विष्णुजी को मैं स्मरण करताहूं ६ हंस मानससरोवर की, ऋषि हरिजी के स्मरणकी और भक्त जैसे भक्तिकी इच्छा करते हैं तैसेही विष्णुजी को मैं स्मरण करताहूं ७ प्राणियों को देह बहुत प्रिय है जिसमें आत्मा स्थित होताहै और जे जीव उमरकी वाञ्छाकरते हैं तैसेही विष्णुजीको मैं स्मरण करताहूं ८ भँवरे जैसे फूलको, चकही चकहा सूर्य्यको और जैसे आत्माकी प्यारी भक्ति तैसेही विष्णुजी को मैं स्मरण करताहूं ९ अन्धकारसे व्याकुल मनुष्य जैसे दीपकी वाञ्छा करते हैं तैसेही पुरुष संसारमें भगवान् के स्मरणकी वाञ्छा करते हैं १० जैसे परिश्रम से व्याकुल विश्रामकी, व्यसनी निद्राकी, और आलस्यरहित विद्याकी जैसे इच्छा करते हैं तैसेही विष्णुजी को मैं स्मरण करताहूं ११ जैसे हाथी पर्व्वत की भूमिको और सिंह वन के हाथी आदिकों की इच्छाकरते हैं तैसेही पापसे डरे हुओं को विष्णुजी का स्मरण करना चाहिये १२ जैसे सूर्यनारायणके संयोग से सूर्य्यकान्तमणि में अग्नि उत्पन्न होजाती है तैसेही साधुओं के संयोगसे भगवान्में भक्ति उत्पन्न होतीहै १३ जैसे ठण्ढी किरण वाले चन्द्रमाके योगसे चन्द्रकान्तमणि जलको सेवन करती है तैसेही वैष्णवोंके संयोगसे शाश्वती मुक्तिहोतीहै १४ जैसे कोकाबेलि चन्द्रमाको देखकर फूलको फुलातीहै तैसेही भगवान्में कीहुई भक्ति सदैव मनुष्योंको मुक्ति देतीहै १५ जैसे नलासे डरीहुई भ्रमरी स्मरण करती और तिसी स्मरण के योगसे नला सारूप्यताको प्राप्त होतीहै १६ और जैसे गोपियों ने जारकी बुद्धिसे विष्णुजीका स्मरण किया और वे सायुज्यता को प्राप्तहुईं तैसेही विष्णुजी को मैं स्मरण करताहूं १७ कोई दुष्टभावसे, कोई कपटभावसे, कोई लोभ के भावसे, कोई विना वाञ्छाहीके १८ भक्ति से, वा स्नेहकेभाव वा वैरभाव वा कोई स्वामी के भाव वा बुद्धिसे बुद्धिपूर्व्वक १९ जिस किसी भावसे भगवान्की चिंतना करते हैं वे इस लोकमें सुख भोग कर विष्णुजी के सनातन को प्राप्तहोते हैं २० आश्चर्य्य की बातहै कि विष्णुजी का माहात्म्य अद्भुत और रोमोंको प्रसन्नता देनेवाला है इच्छापूर्वक स्मरण तीनप्रकार की मुक्ति देनेवालाहै २१ ऐश्वर्य

युक्त धन और सुन्दर विद्यासे वैसानहीं भगवान् दिखाई देते जैसा एक भक्तिही के योगसे क्षणमात्र में समीपही दिखाई देतेहैं २२ दूर में स्थित भी समीपमें नेत्रोंके अंजनकी नाईं स्थितहैं तैसेही भक्ती करके दृश्य भक्तिके योगसे सनातन भगवान् स्थितहैं २३ देवमाया से मोहित मनुष्य यहतत्त्वहै यहतत्त्वहै परन्तु जब भक्ति तत्त्व प्राप्त होता है तब विष्णुमय संसार होजाता है २४ हे सुन्दरि पार्व्वती जी! इन्द्रादिक देवताओं ने सुख के लिये अमृत प्राप्तकिया तिस परभी वे सब विष्णुजी की भक्तिके विना दुःखितही रहे २५ अमृतरूपी भक्तिहीको पाकर फिर दुःख नहींहोताहै वैकुण्ठपदको प्राप्त होकर विष्णुजीके समीपमें आनन्द करताहै २६ जैसे जलको छोड़कर हंस नित्यही जल पीताहै इसीप्रकार धर्म्मोंको छोड़कर विष्णुजीकी भक्तिको करै २७ और देवताकी भक्ति छोड़कर विष्णुजी की भक्तिका आश्रय करै जैसे कपड़ेसे जलको बांधकर किया कार्य कैसे होगा २८ तैसेही विना भक्तिके देहको प्राप्त होकर वृथा श्रम कियाजाता है और जे मनुष्य विष्णुजी की भक्तिके विना धर्म्मोंको उपदेश करते हैं ते निस्सन्देह सदैव घोरनरक में गिरते हैं २९ जैसे मूर्ख भुजाओं से समुद्र तरनेकी वाञ्छा करताहै तैसेही विष्णुभक्ति के विना मनुष्य संसाररूपी समुद्र तरने की वाञ्छा करता है ३० जो कर्म्म से गिरभी जावें तबभी विष्णुजीकी भक्ति रक्षा करती है जैसे दरिद्री, वाञ्छायुक्त, सुमेरु पर्व्वत में वाञ्छा धारण करताहै ३१ तैसेही हे देव! तुम्हारी भक्तिमें मैंने वाञ्छाकी है और जन्म में हमारी सो भक्ति जो करती है ३२ जैसे थोड़ी अग्नि अनेक प्रकारके वनको जलादेती है तैसेही थोड़ी भक्ति मैंने की है ३३ सैकड़ों से भक्ति सुनी जाती है हजारों से बोध कीजाती है तिनके बीचमें हे पार्व्वती! एकही भक्त उत्पन्न होता है ३४ संसार में अनेक प्रकारके मनुष्य दूसरों को बुद्धि देते हैं और जो आपही करता है ऐसा मनुष्य करोड़ों में दिखाई देता है ३५ पूजासे भक्ति हँसी जाती है जयसे भी हँसी जाती है भगवान् में इसप्रकार का भाव होतो तिसीसे भक्ति ग्रहण कीजाती है ३६ सागर में जैसे गिरना

और कुयें में रक्षाका उपवेशन है जिसका भाव तैसीही भक्ति सो तिसीसे ग्रहण कीजाती है ३७ जैसे जड़सींचे हुए वृक्षकी डालोंमें पत्ते दिखाई पड़ते हैं तैसेही भजनसे आगे फल स्थित होताहै ३८ जैसे पानी भरनेवाला घड़े में चित्तको धारण करता है तैसेही देव भगवान् में चित्तको धारणकर मोक्षको प्राप्त होताहै ३९ जैसे बाल्यावस्था में माता बालक को थोड़ा गुड़ देती है परन्तु लोभ के कारण से बालक फिर गुड़को मांगता है ४० जैसे जलमें जल, दूध में दूध और घीमें घी छोड़ाहुआ कुछभेद नहीं दिखाई देता तैसेही विष्णुजी की भक्ति के प्रसाद से मनुष्य भेद नहीं देखते हैं ४१ जैसे सूर्य्य और अग्नि सब में प्राप्त हैं तैसेही भक्तियुक्त मनुष्य कर्म्मोंसे नहीं बाधित होताहै ४२ जैसे अजामिल अपने धर्म्म को छोड़कर पापही करता था परन्तु अन्तसमय में नारायण पुत्र को स्मरणकर निश्चय मुक्तिको प्राप्त होगया ४३ और जे भक्त दिन रात्रि भगवान् के नाममात्रही से जीते हैं ते वैकुण्ठवासी तो होतेही हैं इस में वेदसाक्षी हैं ४४ अश्वमेध आदिक यज्ञोंका फल स्वर्ग में भी दिखाई पड़ताहै तिस सब फलको भोगकरके गिरजाते हैं ४४। ४५ परन्तु विष्णुजी के भक्त अनेकों भोगों को भोगकर वैकुण्ठ को प्राप्तहोकर फिर वहीं रहते हैं पृथ्वी में आगमन उनका कभी नहीं होताहै ४६ जिसने विष्णुजीमें भक्तिकीहै वह विष्णुलोकहीमें बसताहै हे पार्वती ! विष्णुजी की भक्तिके प्रसाद से दृष्टान्त कोदेखो ४७ कि तिससे जलके मध्यमेंस्थित सैकड़ों ग्रावाण तारदिये गयेहैं और विनाजलके सोमकान्तमणि विष्णुभक्त का मानसहै ४८ जैसे मेढ़क जलमें बसता है भँवरा वन में कोकावेलिकी सुगन्धको जानताहै तैसेही भक्तभगवान्की भक्तिको जानताहै ४९ कोई गंगा जीके किनारे बसतेहैं कोई सौयोजनमें बसतेहैं कोई गंगाजीके फल को जानताहै और कोई विष्णुजीकी भक्तिको जानताहै ५० जैसे ऊंट कपूर और अगुरुकेभारको नित्यही लेजाताहै और मध्यगंधको नहीं जानताहै तैसेही भगवान्से विमुख भगवान्को नहीं जानतेहैं ५१ कस्तूरी की सुगन्ध की इच्छा करनेवाले हरिण शालको सूंघते हैं

युक्त धन और सुन्दर विद्यासे वैसानहीं भगवान् दिखाई देते जैसा एक भक्तिही के योगसे क्षणमात्र में समीपही दिखाई देतेहैं २२ दूर में स्थित भी समीपमें नेत्रोंके अंजनकी नाईं स्थितहैं तैसेही भक्तों करके दृश्य भक्तिके योगसे सनातन भगवान् स्थितहैं २३ देवमाया से मोहित मनुष्य यहतत्त्वहै यहतत्त्वहै परन्तु जब भक्ति तत्त्व प्राप्त होता है तब विष्णुमय संसार होजाता है २४ हे सुन्दरि पार्व्वती जी! इन्द्रादिक देवताओं ने सुख के लिये अमृत प्राप्तकिया तिस परभी वे सब विष्णुजी की भक्तिके विना दुःखितही रहे २५ अमृतरूपी भक्तिहीको पाकर फिर दुःख नहींहोताहै वैकुण्ठपदको प्राप्त होकर विष्णुजीके समीपमें आनन्द करताहै २६ जैसे जलको छोड़कर हंस नित्यही जल पीताहै इसीप्रकार धर्म्मोंको छोड़कर विष्णुजीकी भक्तिको करै २७ और देवताकी भक्ति छोड़कर विष्णुजी की भक्तिका आश्रय करै जैसे कपड़ेसे जलको बांधकर किया कार्य कैसे होगा २८ तैसेही विना भक्तिके देहको प्राप्त होकर वृथा श्रम कियाजाता है और जे मनुष्य विष्णुजी की भक्तिके विना धर्म्मोंको उपदेश करते हैं ते निस्सन्देह सदैव घोरनरक में गिरते हैं २९ जैसे मूर्ख भुजाओं से समुद्र तरनेकी वाञ्छा करताहै तैसेही विष्णु-भक्ति के विना मनुष्य संसाररूपी समुद्र तरने की वाञ्छा करता है ३० जो कर्म्म से गिरभी जावें तबभी विष्णुजीकी भक्ति रक्षा करती है जैसे दरिद्री, वाञ्छायुक्त, सुमेरु पर्व्वत में वाञ्छा धारण करताहै ३१ तैसेही हे देव! तुम्हारी भक्तिमें मैंने वाञ्छाकी है और जन्म में हमारी सो भक्ति जो करती है ३२ जैसे थोड़ी अग्नि अनेक प्रकारके वनको जलादेतीहै तैसेही थोड़ी भक्ति मैंने कीहै३३ सैकड़ों से भक्ति सुनी जाती है हजारों से बोध कीजाती है तिनके बीचमें हे पार्व्वती! एकही भक्त उत्पन्न होता है ३४ संसार में अनेक प्रकारके मनुष्य दूसरों को बुद्धि देतेहैं और जो आपही करता है ऐसा मनुष्य करोड़ों में दिखाई देता है ३५ पूजासे भक्ति हँसी जाती है जयसे भी हँसी जाती है भगवान् में इसप्रकार का भाव होतो तिसीसे भक्ति ग्रहण कीजाती है ३६ सागर में जैसे गिरना

और कुँये में रक्षाका उपवेशन है जिसका भाव तैसीही भक्ति सो तिसीसे ग्रहण कीजाती है ३७ जैसे जड़सींचे हुए वृक्षकी डालोंमें पत्ते दिखाई पड़ते हैं तैसेही भजनसे आगे फल स्थित होताहै ३८ जैसे पानी भरनेवाला घड़े में चित्तको धारण करता है तैसेही देव भगवान् में चित्तको धारणकर मोक्षको प्राप्त होताहै ३९ जैसे बाल्यावस्था में माता बालक को थोड़ा गुड़ देती है परन्तु लोभ के कारण से बालक फिर गुड़को मांगता है ४० जैसे जलमें जल, दूध में दूध और घीमें घी छोड़ाहुआ कुछभेद नहीं दिखाई देता तैसेही विष्णुजी की भक्ति के प्रसाद से मनुष्य भेद नहीं देखते हैं ४१ जैसे सूर्य्य और अग्नि सब में प्राप्त हैं तैसेही भक्तियुक्त मनुष्य कर्म्मोंसे नहीं बाधित होताहै ४२ जैसे अजामिल अपने धर्म्म को छोड़कर पापही करता था परन्तु अन्तसमय में नारायण पुत्र को स्मरणकर निश्चय मुक्तिको प्राप्त होगया ४३ और जे भक्त दिन रात्रि भगवान् के नाममात्रही से जीते हैं ते वैकुण्ठवासी तो होतेही हैं इस में वेदसाक्षी हैं ४४ अश्वमेध आदिक यज्ञोंका फल स्वर्ग में भी दिखाई पड़ताहै तिस सब फलको भोगकरके गिरजाते हैं ४४ । ४५ परन्तु विष्णुजी के भक्त अनेकों भोगों को भोगकर वैकुण्ठ को प्राप्तहोकर फिर वहीं रहते हैं पृथ्वी में आगमन उनका कभी नहीं होताहै ४६ जिसने विष्णुजीमें भक्तिकीहै वह विष्णुलोकहीमें बसताहै हे पार्वती ! विष्णुजी की भक्तिके प्रसाद से दृष्टान्त कोदेखो ४७ कि तिससे जलके मध्यमेंस्थित सैकड़ों ग्रावाण तारदिये गयेहैं और विनाजलके सोमकान्तमणि विष्णुभक्त का मानसहै ४८ जैसे मेढ़क जलमें बसता है भँवरा वन में कोकाबेलिकी सुगन्धको जानताहै तैसेही भक्तभगवान्की भक्तिको जानताहै ४९ कोई गंगा जीके किनारे बसतेहैं कोई सौयोजनमें बसतेहैं कोई गंगाजीके फल को जानताहै और कोई विष्णुजीकी भक्तिको जानताहै ५० जैसे ऊंट कपूर और अगुरुकेभारको नित्यही लेजाताहै और मध्यगंधको नहीं जानताहै तैसेही भगवान्से विमुख भगवान्को नहीं जानतेहैं ५१ कस्तूरी की सुगन्ध की इच्छा करनेवाले हरिण शालको सूंघते हैं

परन्तु अपनीनाभिमें स्थित कस्तूरीको नहींजानतेहैं तैसेही विष्णु
जीसे विमुख भगवान् को नहीं जानतेहैं ५२ हे पार्वती ! जैसे मूर्खों
को उपदेश वृथाहै तैसेही विष्णुजीसे बिमुखमें विष्णुजीकी भक्तिका
उपदेश वृथाहै ५३ जैसे सांपकरके पियाहुआ दूध विषसदृशही हो
जाताहै तैसेही और देवताओंके भक्तोंको विष्णुजीकी भक्ति विषसमान
होतीहै ५४ जैसे नेत्रके विना दीप और दर्पण देखकर कुछनहीं देखते
हैं तैसेही समीपही स्थित, भगवान्से विमुख विष्णुजीको नहीं देखते
हैं ५५ जैसे धुँएँसे अग्नि,मलसेसीसा और उल्बसे गर्भ आच्छादित
रहताहै तैसेही देहमें कृष्णजी आच्छादित रहतेहैं ५६ जैसे दूधमें
घी और तिलमें तेल सदैव स्थित रहताहै तैसेही स्थावर जंगममें
विष्णुजी दिखाईदेते हैं ५७ जैसे एकसूतमें बहुतसी मणियां धारण
कीजाती हैं तैसेही ब्रह्मादिक देवताओं करके ब्रह्मचिन्मयमें संसार
बँधाहुआहै ५८ जैसे काष्ठमें स्थित अग्नि मथनेसे दिखाई देती है
तैसेही सबमें प्राप्त विष्णुजी ध्यानसे दिखाई देतेहैं ५९ जैसे आदि
में एकदीप होताहै फिर तिससे हजारों होजातेहैं तैसेही एकविष्णु
सबमें व्याप्तहोकर स्थित होते हैं ६० जैसे सूर्यके उदयमें ज्योति पुष्कर
में सदा स्थित रहतीहै और जलमें अनेक प्रकार की दिखाई देती
हैं तैसेही संसार में विष्णुजी हैं ६१ प्रकृति में स्थित पवन सदै
अनेक प्रकार की सुगन्ध बहता है और सब जीवमें स्थित ईश्व
प्रकृति से उत्पन्न गुणों को भोग करता है ६२ शक्कर और विष के
संयोग से जल जैसा होताहै आत्मा तैसाही होकर कर्मके फलके
भोग करताहै ६३ पृथ्वी और जलके संयोग से अनेक प्रकार के
वृक्ष उत्पन्न होते हैं प्रकृति और गुणके संयोग से अनेक योनिये
में उत्पन्न होताहै ६४ हाथी, मसा, देवता वा मनुष्यमें अधिक औ
कमनहीं है देहमें निष्ठ, निश्चलहै ६५ ब्रह्मासे लेकर स्तम्बपर्यन्त
जे पृथ्वी में मनुष्य, देवता, यक्ष, नाग, गन्धर्व और किन्नर आदिक
हैं ६६ तिन सबमें जलमें चन्द्रमा की नाईं दिखाई पड़तेहैं सो स
च्चिदानन्द, शिव, महेशजी दिखाई देतेहैं ६७ सोई निश्चय विष्णु
सबमें प्राप्त, हरि, वेदान्त से जानने योग्य, सबके स्वामी, काल

अतीत और रोगरहितहैं ६८ हे पार्वती! इसप्रकार जो भगवान् को जानता है वह निस्सन्देह भक्तहै अकेला तो अनेक प्रकार का और अनेक प्रकारका अकेलाही जानने योग्यहै ६९ नाम और रूप के भेदसे अनेक प्रकारका पृथ्वी में कहाजाता है जैसे नेत्रसे सूर्य्य की ज्योति नहींहै सूर्य्यही से नेत्रवृद्धि को प्राप्तहोता है ७० तैसेही परमात्मा और आत्मा प्रत्येक की देह में सदैव रहते हैं जैसे घट घटमें आकाश तिसके टूटनेमें भी स्थित रहताहै ७१ तैसेही रूप रूपमें तिसके टूटने में भी तुम निश्चल रहतेहो जैसे काठका रूप प्रभुके विना गिर जाताहै ७२ कृमिभेदमय देह आत्माके विना गिरजाताहै सोनेके जैसे वर्णहोतेहैं और अग्निसे पहलेकी नाईं प्राप्त होजाते हैं ७३ तैसेही भक्त, जीव पहले के रूप के भाव को प्राप्त होजाते हैं जैसे अपनेही मेघ से आच्छादित सूर्य्य को मूर्खदीप्तिरहित देखते हैं ७४ तैसेही अज्ञानबुद्धिवाले मूर्ख तिस ईश्वर को नहीं जानते हैं जो निर्विकल्प और निराकार हैं वेदान्तों से पाठ किये जाते हैं ७५ निराकारसे साकार अपनी इच्छाही से प्रकाशित होताहै तिससे निःशब्द,गुणोंसे वर्जित आकाश उत्पन्नहोताहै ७६ आकाशसे पवन उत्पन्न होताहै तिसमें शब्द भी होताहै पवन से ज्योति और ज्योतिसे जल होताहै ७७ तिसजल में सुवर्णगर्भ संसाररूप धारण करनेवाला विराट् होताहै तिसकी नाभि कमलमें ब्रह्माण्डों की कोटि होती हैं ७८ तिससे प्रकृतिपुरुष तीनप्रकार का संसार रचाजाताहै तिन दोनों के संयोगसे तत्त्वयोग उत्पन्न होताहै ७९ विष्णुजी की संभूति सात्विकी है,ब्रह्मा राजस और शिवजी तामस कहाते हैं इन करके सब प्रवर्तितहै ८० एक संसार में कर्मबीजके अनुसारसे ब्राह्मी स्थिति है तिससे विष्णुजी सब लोकों को संहार करदेतेहैं कोई शेष नहीं रहताहै ८१ तिससमयमें नाशरहित भगवान् विष्णुजी स्थित रहतेहैं इसप्रकार आदि मध्य और अन्त में सबमें प्राप्त विष्णुहीजी हैं ८२ कर्म में निश्चित मनुष्य अविद्यासे नहीं जानतेहैं जो कालों में वर्णोंके उचित कर्म्मोंको कराता है ८३ जो कर्म्म विष्णुदेव का है वह गर्भ का कारण नहीं है वेदा-

न्तशास्त्रमें मुनियों ने सदैव विचार कियाहै ८४ और यह जो देह
में ब्रह्मज्ञानहै तिसको हम कहते हैं शुभ और अशुभका कार्य और
कारण मनहीहै ८५ मनसे सब शुद्ध होजाताहै और तिससमय में
ब्रह्मसनातन भी पद मिलजाताहै मन सदैव बन्धु और मनही सदा
वैरी है ८६ कोई मनसे तारेगये हैं और कोई मनसे पीड़ाको प्राप्त
कियेगये हैं बाह्यमें कर्म्म करतेहुए बीचमें सबका परित्यागहै ८७
ऐसेही किये कर्म्मको करताहुआ इसप्रकार नहीं लिप्त होताहै जैसे
जलके लेशोंसे कमलका पत्ता नहीं लिप्तहोताहै ८८ जैसे अग्निमें
अग्नि छोड़ीहुई भक्तिसे कुछ प्रयोजन नहीं है और जब भक्तिकारस
जानागया तो तिससमय में मुक्ति नहीं प्रकाशित होतीहै ८९ इस
जन्ममें आठप्रकार के योगोंसे विष्णुजी नहीं प्राप्त होसक्ते हैं भक्तिही
से प्राप्तहोते हैं और सदैव सुलभ होते हैं ९० वेदान्तोंसे ज्ञानप्राप्तहो-
ताहै ज्ञानसे ज्ञेयप्राप्त होताहै और जब ज्ञेय प्राप्त होताहै तब यहसं-
सार शून्य दिखाई पड़ताहै ९१ बलसे विष्णुजी प्राप्त होते हैं आठप्र-
कार केयोगोंसे कुछ नहींहोताहै सबभावोंकी भावशुद्धिही श्रेष्ठहै ९२
जैसे स्त्री आलिंगन कीजाती है तो जैसा भाव वैसाही फल होताहै
जैसे जूते से युक्त चरणवाला चमड़े की पृथ्वीको भी जानताहै ९३
जिसकी जिसप्रकार की बुद्धिहै वह वैसेही संसारको मानताहै दूध
सेभी सींचाहुआ नींब करुआई को नहीं छोड़ता है ९४ प्राणी प्र
कृतिको प्राप्त होते हैं उपदेश अर्थरहित हैं जैसे आंबको काटकर
फिर फल और पत्ते कैसे लाभ होसक्ते हैं ९५ इन्द्रियों के सुख के
अर्थसे वृथा जन्म कैसे बितावे जैसे वैडूर्य्य की बटुई में औषध प-
काना वृथा होता है ९६ जैसे रोगरहित को जला देना वृथा है
तैसेही वृथा जन्म कैसे होताहै शुभ मनुष्य घरमें निधान को छोड़
कर सेवा कैसे करता है ९७ और भगवान् को छोड़कर और मा-
र्ग में कैसे रमता है भक्तिहीन चारों वेदोंके पढ़नेसे क्या प्रयोजन
है ९८ भक्तियुक्त चाण्डाल भी देवताओं से पूजित होताहै अपने
हाथ में कङ्कण बांधकर दर्पणों से कुछ प्रयोजन नहीं है ९९ ब्रह्म
रुद्र आदिक देवताओं करके दियेहुए ऐश्वर्य्य, सेवक, प्रभुके कुछ

अर्पित को नहीं ग्रहण करते हैं १०० दरिद्री भक्तके लिये वर देने को नहीं समर्थता को प्राप्त होताहूं शरीररहित कृष्णजी का ध्यान कैसे होता है १०१ बहुतसे साकार को देखकर भक्तिसे तिनके पद को प्राप्त हुए हैं शून्य, साकार में पूजाकी भक्ति पण्डितों ने कैसे कही है १०२ शून्य मार्ग्ग में आधार के विना मनुष्य कैसे प्राप्त होताहै जो साकार, अपने आप स्वामी है वह निराकार प्रभुभी है १०३ साकार सुखसे दिखाई पड़ताहै और निराकार नहीं दिखाई पड़ता है साकारमें सेवाका रस और निराकारसे रस होताहै १०४ साकारसे निराकार अपने आप जानाजाताहै जब भगवान्‌के स्मरण के प्रसाद से रोमांचयुक्त देह होताहै १०५ तब नेत्रोंसे आनन्दका जल बहताहै और मुक्ति दासी होजाती है बाल्यावस्थामें जो पाप कियाहै वह कैसे न नाश होगा १०६ पूजा, दान, व्रत, तीर्थ, जप, होम, ये सब आपके अर्प्पण करे और मनुष्य अपना धर्म्म छोड़कर घोर तपस्या कैसे करताहै १०७ अपने धर्म्म में मरजानाभी कल्याणहै पराया धर्म्म भयका देनेवाला है शास्त्रकी विधिको त्यागकर घोर तपस्या कैसे करताहै १०८ मूर्ख मनुष्य आश्रमके विना सिद्धिको नहीं प्राप्त होताहै ब्रह्माजी ने अपने अपने धर्म्म में नियोजित वर्ण रचे हैं १०९ अपने धर्म्म से प्राप्तहुई द्रव्यको शुद्धद्रव्य कहते हैं शुद्धद्रव्यसे श्रद्धायुक्त जो दान दियाजाता है ११० वह थोड़े दान से भी बहुत पुण्य देता तिसकी गिनती नहीं है और नीचके संगसे जो घरके कर्म्मों में द्रव्य प्राप्त कीजाती है १११ उसद्रव्यसे जो मनुष्य आदिक दान करते हैं तो उनको वह फलनहीं मिलताहै तिस के फलके भागी नहीं होते हैं ११२ मूर्ख, ज्ञानमें दुर्ब्बल मनुष्य इन्द्रियों के सुखकी इच्छासे जैसा कर्म्म करता है तैसीही योनि को प्राप्त होता है ११३ इस लोकमें जो कर्म्म करताहै वह परलोक में भोग करताहै पुण्य करतेहुए पुरुषको जो दुःख उत्पन्न होजाता है ११४ तो ताप न करना चाहिये वह कर्म्मपूर्व्वकी देहसे उत्पन्न है पाप करनेवाले पुरुष को दुःखही होताहै ११५ हे पार्व्वती! सुखमें हर्षभी न करना चाहिये जैसे प्रभुकरके रसरी में बांधेहुए पशु

पनी इच्छाही से प्राप्त करलिये जाते हैं तैसेही पृथ्वी में मनुष्य कर्म के बन्धसे प्राप्त करलिये जाते हैं वनका रहनेवाला बन्दर घर घरमें नाचता है ११६। ११७ ऐसेही कर्म्म से जीव सब योनियों में प्राप्त किये जाते हैं जैसे क्रीड़ा करतेहुए प्रभुसे इच्छापूर्वक गेंद फेंका जाताहै ११८ तैसेही प्राणी कर्म से सुख और दुःखोंको प्राप्तहोता है क्योंकि वह प्राणी कर्म्मों से बँधाहुआहै बन्धनिग्रहमें नहीं समर्थ है ११९ देवता और ऋषिभी कर्म्मों से बँधेहुए हैं कैलास पर्वतमें महादेवजीकी देहमें स्थित सांप विषका भोजनकरते हैं १२० अमृत भोग करने को असमर्थ हैं क्योंकि कर्म्मकी योनि बड़ी बलवान् है पण्डितों ने सूर्यनारायणको नीरोगदेह देनेवाला कहाहै १२१ परंतु तिन्हींके रथमें उन्हींका सारथी लँगड़ाहै तो कर्मकी योनिही बड़ी बलवान् है इंद्रद्युम्न राजर्षि कर्म से हाथी होगये १२२ समर्थ स्वामी ने तिसमें कर्मयोनि वृथाकीहै महादेव,ब्रह्मादिक देवता,मनुष्य और असुर १२३ये सब कर्मोंसे बँधेहुए पृथ्वी में घूमते हैं पूर्व समयमें विष्णुजी ने कर्म के अधीन सब संसारको रचाहै १२४ तिनकाकर्म भगवान्के अधीन है वह रामकेनामसे नाश होजाताहै सफ़ेद और श्यामजलवाले प्रयागतीर्थ में सब ओर स्थित जल मुक्तिका देने वालाहै १२५ इसप्रकार कर्म करनेवालों को भगवान्का पूजन मुक्ति का देनेवालाहै और इन्द्रियों के सुखके लिये जो मनुष्य मनसे कर्म को करता है १२६ और अहंकारसे केवल देहहीको मानता है और प्राणी मनसे स्मरणकर प्रायश्चित्त करताहै १२७ वह पूर्व कर्मका भोग करनेवाला होताहै आगे कर्म्म नहीं बढ़ताहै कोई ग्रहोंकी प्रशंसा करते हैं कोई प्रेत पिशाचोंकी १२८ कोई देवताओंकी, कोई ओषधोंकी, कोई मन्त्र, सिद्धि, कोई बुद्धि और पराक्रमकी प्रशंसा करते हैं १२९ कोई उद्यम, साहस, धीरजकी और कोई नीति बल की प्रशंसा करते हैं अहंकार और कर्म्मकी प्रशंसाओं से सबकाम पीछे वर्तमानहैं १३० यह हमारी बुद्धि निश्चितहै पहलेके विद्वानों ने भी कहाहै जब पुण्यमय प्राणीहो और पाप कुछ न विद्यमानहो १३१ तब दो प्रकारका ज्ञान और पुण्य सुख होताहै जिसके पाप

और पुण्य कर्म्मों में समान विद्यमानहों १३२ जब दोनों बराबर होतेहैं तो आनन्द पदको प्राप्त होताहै बाह्यमें सब परित्याग करने वाला मनसे वाञ्छायुक्त होताहै १३३ तिसी से तिस पापके भोग करनेवाले का यह वृथा आचरित है बाह्य में कर्म्म करता है मनसे वाञ्छा रहित होताहै १३४ यह त्याग मध्यम जानना चाहिये पूर्ण फल नहीं मिलताहै बाह्य मध्यमें त्यागकर बुद्धिसे शून्य का अवलंबन १३५ यह त्याग उत्तम जानना चाहिये योगियोंको भी दुर्लभ है कोई क्रोधसे सब त्याग करदेते हैं कोई वादके प्रभावसे १३६ और कोई कष्टसे सब त्यागदेते हैं सब त्याग मध्यमहै अच्छी बुद्धि श्रद्धा से युक्त, क्रोध आदिके वशमें नहीं प्राप्त १३७ कर्म्मोंको अवलिप्त मनुष्य अच्छी गतिको प्राप्तहोता है पवित्र, लक्ष्मीयुक्त, बुद्धिमान् और योगियों के घरमें १३८ योगसे भ्रष्ट होकर ब्राह्मण के कुलमें उत्पन्न होताहै और थोड़ेही कालसे पूर्ण योगको प्राप्त होताहै १३९ योगभक्तिके प्रसादसे चिदानन्द पदको जाताहै जैसे कीचड़से कीचड़, रक्तसे रक्त १४० और जीव मारनेके कर्म्म से कर्म्मको कैसे धोनेमें समर्थ होसक्ता है हिंसा कर्म्ममययज्ञ कैसे कर्म्मके क्षयमें समर्थहै १४१ स्वर्गकी कामना से कीहुई यज्ञ स्वर्ग में थोड़ा सुख देनेवाली है अनित्यसुख बहुत से होते हैं १४२ भगवान् की भक्ति के विना नित्यसुख कुछ नहीं है सब पृथ्वीभर की राज्य का सुख और स्वर्गसे सुख १४३ इनसे और वस्तुकी कुछ हम वाञ्छा नहीं करते हैं गर्भके वाससे मैं डरताहूं पत्थर लोहेसे कट जाताहै परन्तु माणिक्य नहीं कटताहै १४४ और अनेक प्रकारकी काममयी विष्णुजी की भक्ति बुद्धिसे नहीं कटती है जैसे बगुला जलकी रहने वाली मछलियों को भोजन करताहै और मेंढक आदिकों को छोड़ देताहै १४५ तैसेही यमराज सबको मारते हैं परन्तु कृष्णजीके सेवकोंको छोड़ देते हैं जोकि रक्षाकरते, नाशते और पालन करनेवाले कहाते हैं १४६ सैकड़ों अपराध से युक्तको अपने स्थानमें वासित करतेहैं जैसे अपराध करनेवाले के ऊपर कृष्णजी कृपा करते हैं १४७ और वह फलको प्राप्त होताहै ऐसेही इसदेहमें आत्मा

वश्य कृपा करनेवालाहै १४८ और मल्ललोग पार नहीं पासक्ते और पिता भी नहीं पार पासक्ता है परमेश्वर व्याधकी मुक्ति देनेवाले हैं कुबड़ी अपने आप तारी गई है १४९ और जोकि ब्रह्मादिकों को स्वप्नमें भी दुर्लभहैं वे गोपोंके मन्दिरमें सुलभहैं गोपोंका जूंठा जब भोजन उन्होंने किया तभी अपने आप गोपों को भगवान् ने तार दियाहै १५० जोकि भगवान् नित्यही योगियोंसे गान कियेजाते हैं परमात्मा, जनार्दन, नाशरहित, पुरुष और श्रीमान्हैं वे गोपादिकों को दर्शन देतेभये हैं १५१ इस स्मरणक को जे दिन दिन में पढ़ते हैं वे सब पापोंसे छूटकर विष्णुजी के सनातनको प्राप्तहोते हैं १५२ इस भावबुद्धिसे जो भगवान् के समीपमें पढ़ताहै वह इसलोक में सुख भोगकर परम्पदको प्राप्तहोताहै १५३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डे विष्णुस्मरणंनामद्वात्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३२ ॥

एकसौ तेंतीसका अध्याय ॥

जम्बूद्वीप के तीर्थोंका वर्णन ॥

पार्व्वतीजी बोलीं कि हे अच्छे व्रत करनेवाले ! स्वामी महादेव जी इस द्वीपमें जितने तीर्थ हैं तिनको हमसे कहिये क्योंकि पृथ्वी में सदैव द्वीपों में यह द्वीपराज रचागयाहै इससे हमारे ऊपर कृपा कर गिनतीकर कहिये १ तब महादेवजी बोले कि सबमें प्राप्त, सब ओर पृथ्वी में सब प्राणियों में देखने योग्य, सातोंलोकों में जो कुछ स्थावर जङ्गम दिखाई देताहै २ हे पार्व्वती जी तिसके विना तत्त्व न हमने देखा और न सुना है इससे विष्णुजी, महादेव, केशवजी क्लेशके नाशनेवाले इस द्वीपमें तीर्थके रूपसे वर्तमानहैं ३ तिन तीर्थोंको इससमय में निस्सन्देह कहताहूं पहला पुष्करक्षेत्र तीर्थों में श्रेष्ठ, शुभहै दूसरा मुक्तिका देनेवाला काशीक्षेत्र है ४ तीसरा ऋषियों को पवित्र करनेवाला नैमिष क्षेत्रहै चौथा तीर्थोंमें उत्तम प्रयागहै ५ पांचवां गन्धमादन में उत्पन्न कार्मुक है छठवां देवताओं को रम्य मानस है ६ सातवां अवर शुभ पर्व्वत में विश्वकाय है

आठवां पूर्वसमय का रचाहुआ मन्दराचलमें गौतम है ७ नववां मदोत्कट है दशवां रथचैत्रक ग्यारहवां कान्यकुब्ज है जिसमें वामनजी स्थितथे ८ बारहवां मलय है तिस पीछे कुब्जाम्रक, विश्वेश्वर, गिरिकर्ण, गति देनेवाला केदार ९ हिमवान् पर्व्वत के पीछे बाह्य, गोकर्ण में गोपक, हिमाचल में स्थानेश्वर, बिल्वक में बिल्वपत्रिक १० श्रीशैलमें माधव तीर्थ, भद्रेश्वरमें भद्र, वाराहमें विजय, वैष्णव पर्व्वत में वैष्णव ११ रुद्रकोट में रौद्र कालिञ्जर पर्व्वत में पैत्र्य, कम्पिल में कापिलतीर्थ, मुकुट में कर्कोटक १२ गण्डिका में शालग्राम से उत्पन्न तीर्थ, नर्म्मदामें शिव, मायामें विश्वरूपक १३ रैवत पर्व्वत में उत्पलाक्ष, सहस्राक्ष, गंगाजी में पितृतीर्थ, विष्णुपादोद्भव १४ विपाशा में विपापा, पाटल में पुण्ड्रवर्द्धन, सुपार्श्वमें नारायण, त्रिकूट पर्व्वत में विष्णुमन्दिर १५ विपुल में विपुल, मलयाचल में कल्याण, कोटितीर्थ में कौरव, गन्धमादन पर्व्वत में सुगन्ध १६ कुब्जाम्रक में त्रिसन्ध्य, गंगाद्वार में हरिप्रिय, विंध्याचलमें शैल, बदरी में सारस्वत १७ यमुनाजी में कालरूप, सह्य पर्व्वत में सायक, चन्द्रप्रदेशमें चान्द्र, तीर्थोंका नायक रमण १८ यमुनाजी में मृग, करवीरमें कुरूद्भव, विनायक पर्वतमें उमातीर्थ १९ भास्कर देशमें आरोग्य, महाकालमें महेश्वर, विन्ध्याचलमें अभयद और अमृतनाम तीर्थ २० मण्डपमें विश्वरूप, ईश्वरपुर में स्वाहा, प्रचण्डा में वैगलेय, मरकण्टक में चाण्डिक २१ प्रभासमें सोमेश्वर और पुष्कर, सरस्वती में पारावत के किनारे स्थित देवमात्र २२ महापद्ममें महालय, पयोष्णीमें पिंगलेश्वर, सिंहिका और सौरवमें रविसंज्ञक तीर्थ २३ कृत्तिकाक्षेत्र में कार्त्तिक, शंकर पर्वत में शांकर, सुभद्रा और सिंधुके संगममें सुन्दर, उत्पल नाम तीर्थ २४ विष्णुसंज्ञकपर्व्वत में गाणपत्य, जालन्धर में विष्णुमुखतीर्थ २५ तारविष्णुसंज्ञक पर्व्वत में तारक, देवदारुवनमें पौंड्र काश्मीर मण्डल में पौष्क २६ हिमाचल में भौम, हिम, तुष्टिक, पौष्टिक, मायापुरमें कपालमोचन तीर्थ २७ शंखोद्धार, देव, शंखधारक, पिण्डनाम, सिद्धमें वैखानस २८ अच्छोदमें विष्णुकाम

काम, अर्थ और मोक्षका देनेवालाहै उत्तरकूल में औषध्य,कुशद्वी
में कुशोदक २९ हेमकूटमें मन्मथ, कुसुदमें सत्यवादन,विन्ध्याचल
में आवाश्वक, मातृक ३० चित्तमें तीर्थों में पवित्र ब्रह्ममय तीर्थ
अब हे पार्व्वती ! इनसब तीर्थोंसे उत्तम को सुनो ३१ विष्णुजी के
नामके समान न कोई तीर्त्थ हुआहै और न होगा ब्राह्मणका मारने
वाला, सोनाचुरानेहारा, बालक और गऊका मारनेवाला भी ३
भगवान्के प्रसाद से नाममात्रही से छूटजाताहै कलियुगमें द्वारक
पुरी बहुत रम्यहै और जनार्दन देवजी धन्यहैं ३३ जे मनुष्य दे
वजी को देखते हैं उनकी निश्चल मुक्तिहोती है इसप्रकार अत्यन्त
धन्य, देव, विष्णु, सब के ईश्वर, प्रभु ३४ जनार्दनजी को विद्वा
नों में स्थित होकर चिन्तना करताहूं यह एकसौ आठ तीर्थों क
उदाहृत हैं ३५ जो इसको जपता वा सुनताहै वह सब पापोंसे छू
जाताहै और इन तीर्त्थों में स्नानकर जो नारायण हरिजीके दर्श
करता है ३६ वह सब पापोंसे छूटकर विष्णुजी के सनातनको प्रा
होताहै और लोकोंमें पवित्र, महातीर्थ जगन्नाथजीके दर्शनको ३
जे श्रेष्ठ मनुष्य जातेहैं वे श्रेष्ठगति को प्राप्त होते हैं इन महापुण
एकसौ आठतीर्थोंको जो पितृकर्म में सुनाताहै ३८ वह इसलोकमें
सुख भोगकर विष्णुजी के सनातनको प्राप्तहोता है और गोदान
श्राद्धदान में प्रतिदिन ३९ और जो विद्वान् देवताकी पूजनविधि
में भी नित्यदिन सुनता है वह परंब्रह्मको प्राप्त होताहै ४० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेजम्बूद्वीपतीर्थवर्णनंनामत्रयस्त्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३३ ॥

एकसौचौंतीसका अध्याय ॥

वेत्रमती का माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती वेत्रवती का माहात्म्य कहता
सुनिये जहां स्नानकर प्रलय पर्य्यन्त पापोंसे छूटजाते हैं १ वृत्रासु
ने कुँवाँ बहुत गहरा बनायाथा उसी कुँयेंसे महापापोंकी नाशकर
वाली देवीजी निकलीथीं २ जैसे गंगाजी हैं तैसेही येभी नदियों

श्रेष्ठहैं इनके दर्शनही मात्रसे पापसमूह नाश होजातेहैं ३ अब हे देवि ! पुराने इतिहासको कहता हूं सुनिये जिसको सुनकर पापी मनुष्य दोषों और कर्मबन्धनोंसे छूटजाते हैं ४ चम्पक नगरमें राजा राज्य करताथा जोकि सदैव दुष्ट,दुष्टरूप,मनुष्योंको पीड़ादेनेवाला ५ अधर्मी, अधर्मकारूप,विष्णुजीकी निन्दामें परायण, देवता और ब्राह्मणों का मारनेवाला, आश्रमों का दूषण करनेहारा ६ वेद की निन्दामें परायण, लक्ष्मीयुक्त, मूर्ख, निर्घृण, शठ,असत् शास्त्रोंमें निरत, पराई स्त्रीसे भोग करनेवाला ७ विदारुण नामवाला और मूर्ख था कदाचित् वह दैवयोगसे तिस नदीपर आया ८ जोकि शिकार खेलनेके लियेही युक्तथा और ब्राह्मणों की निन्दारूप भारी पापोंसे कुष्ठयुक्त होगया था ९ वृथावाद करनेवाला, दुरात्मा, शठ, निर्घृण, पशु,वेदकी निन्दामें रत,गऊ और शास्त्रों का दूषण करनेवाला १० इसप्रकार का वह होकर मित्रोंसेयुक्त वनमें घूमताहुआ प्याससे व्याकुल हुआ तबतो राजा घोड़ेसे उतरकर जलपीकर घर चलागया ११ तो उसी जलपानसे निस्सन्देह उसका कुष्ठ चलागया और विशेषकर बुद्धि निर्म्मल होगई १२ तिसीसमय में विष्णुजी में भक्ति भी होगई और तबसे लेकर वह सदैव स्नान करने लगा १३ तो निर्म्मल और बहुतरूपसे युक्त होगया इस लोकमें सुख भोगकर अनेकों यज्ञकर १४ ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर वैष्णवपद को प्राप्त होगया ऐसा जानकर विशेषकर वेत्रवती में १५ जे ब्राह्मण स्नान करते हैं वे पापों से छूटजाते हैं क्षत्रिय, वैश्य वा शूद्र भी १६ जो कार्तिक वा माघ में स्नान करते हैं वे पापके बन्धन से छूटजाते हैं बाह्य वा वेद की निन्दा करनेवाला भी १७ नदियों के संगम में स्नानकर पापसे छूटजाता है साभ्रमती के समान तिसका संग दिखलाई देताहै १८ वहां स्नानकर विशेषकर सदैव ब्राह्मण का मारनेवाला भी छूटजाता है तहांहीं दिव्य खेटकनगर स्वर्गरूप है १९ जहांपर ब्रह्माजी ने बहुत योग कियेहैं वहां स्नान और भोजनकर फिर जन्मनहीं होता है २० यह कलियुग में विशेषकर दूसरीगंगा है जे मनुष्य सुख, धन और स्वर्गकी इच्छा करते हैं वे वारंवार

स्नानकर इस लोकमें सुखभोगकर विष्णुजी के सनातन को प्राप्त होतेहैं २१।२२ सूर्य्य और चन्द्रवंश जो उत्पन्न हुयेहैं वे वेत्रवती में आकर स्नानकर निर्वृति को प्राप्त होगयेहैं २३ दर्शन से दुःखहरता है स्पर्शनसे मानसपाप नाशताहै स्नान और भोजनकरनिस्सन्देह मुक्तिका भागी मनुष्य होजाता है २४ स्नान, जप और होम से अनन्तफल भोग करताहै काशीतीर्थ में जाकर भक्तिसे चान्द्रायण करताहै २५ तो वहां जाकर तिसकी बड़ीभारी पुण्य होती है यदि विशेषकर वेत्रवती में जो देह छूटजाती है २६ तो वह चारभुजाओंका होकर विष्णुजी के श्रेष्ठपद को प्राप्त होताहै पृथ्वीमें जितने तीर्थ, देवता और पितर हैं २७ वे सब वेत्रवती में बसते हैं हे पार्वतीजी और वारंवार बहुत कहनेसे क्या है २८ वेत्रवती के समान पृथ्वी में तीर्थ नहीं है मैं, विष्णु, ब्रह्मा, देवता, श्रेष्ठऋषि २९ और सब देवता वेत्रवती में स्थित रहते हैं एककाल, दोकाल वा विशेष कर तीनकाल ३० जे वेत्रवती में स्नान करतेहैं वे निस्सन्देह पापों से छूटजाते हैं ३१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेवेत्रवती-माहात्म्येचतुस्त्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३४॥

एकसौपैंतीसका अध्याय॥

साभ्रमतीनाम नदीका माहात्म्य वर्णन॥

श्रीमहादेवजी बोले कि हे पार्वतीजी साभ्रमतीका माहात्म्य कहताहूं मुनियों में श्रेष्ठ कश्यपजी बड़ीभारी तपस्या करते भये १ सुन्दर, अनेक प्रकार के वृक्षों से युक्त अर्बुद पर्वत में अनेकों वर्ष पर्यन्त भारी तप उन्होंने किया २ जहां पर सुन्दर, पवित्र और पापों की नाश करनेवाली सरस्वती नदी वर्तमानथी ३ एक दिन कश्यपजी नैमिषारण्य को गये वहां पर सब ऋषि अनेकों प्रकार की कथा करतेभये ४ और तिसी समयमें सब ऋषियों ने कश्यपमुनिसे पूंछा कि हे प्रभु कश्यपजी हम लोगोंकी प्रीति के लिये यहां पर गंगाजी को लाइये ५ आपके नाम से वह नदियों में श्रेष्ठ गंगाहोगी तिनके

वचन सुन उनब्राह्मणों के कश्यपजी नमस्कार कर ६ अर्बुद वनमें सरस्वती नदीके किनारे बड़ीभारी तपस्या करतेभये ७ और उन ब्राह्मणने हमको भी आराधन किया तो हम उनकेपास प्रत्यक्ष प्राप्त होगये ८ और उनसे कहा कि तुम्हारा कल्याणहो जो मनमें वर्तमान हो वह वरमांगो ९ तब कश्यपजी बोले कि हे देवदेव, संसार के स्वामी, महादेवजी आपवरदेने में समर्थ हैं शिरमें स्थित इनपवित्र, पाप नाशनेवाली गंगाजी को विशेष करके हमको दीजिये आपके नमस्कार हैं तब तो मैंने उनसे कहा कि हे उत्तम ब्राह्मण! ग्रहण कीजिये १०।११ तब एकजटा छोड़कर मैंने गंगाजी को दिया तब तो श्रेष्ठ ब्राह्मण गंगाजीको ग्रहणकर हर्ष से अपने स्थानको जाते भये १२ तो कश्यपजीका वास केशरन्ध्र नाम तीर्थहुआ वहां पर मुनियों से युक्त जातेभये १३ और कश्यपसे लाईहुई नदियोंमें श्रेष्ठ, काश्यपी नाम गंगाजी कहाई जिसके दर्शनमात्रसे निश्चय ब्राह्मण का मारनेवाला छूटजाताहै १४ तब पार्वतीजी बोलीं कि हे संसार के स्वामी महादेवजी उस तीर्थ में स्नानमात्रसे क्या पुण्य है आप दयालु हैं हमारे ऊपर दयाकरके कहिये १५ हे देवताओं के राजा हे ब्रह्मन् दर्शन और स्नानमें क्या पुण्यहै और महिमा कैसी है सब को आप कहने के योग्यहैं १६ तब महादेवजी बोले कि श्रीविष्णु जी के प्रसादसे अनेक तीर्थ, स्थान और प्रभुजीकी सागरमें जाने वाली नदियां मैंनेसुनीं १७ गंगा, यमुना, नर्मदा, तापी,महानदी, गोदावरी, तुंगभद्रा, कौशिकी, गण्डिका १८ कावेरी, वेदिका, भद्रा, पाप हरनेवाली सरयू तथा और भी पृथ्वी में सब पाप नाशनेवाली अनेक प्रकारकी नदियां १९ तीर्थों का राजा प्रयाग, काशी,पुष्कर, नैमिषारण्य और अमरकण्टक तीर्थ २० उत्तम द्वारकाक्षेत्र और अर्बुदवन, इसप्रकार के सुन्दर अनेक प्रकार के क्षेत्रभी २१ माया-रूपी विष्णुजी के प्रसादसे सुने हैं हे पार्व्वती! विष्णुलोककी इच्छा करनेवाले भगीरथने पहले मुझसे मांगाथा तब मैंने इन गंगाजीको उनको दिया फिर ऋषियों के वचनसे कश्यपजी को दिया २२।२३ यह तो सदैव रोग और दोष हरनेवाली काश्यपीगंगा कहाई और

यह जो संसारमें गंगाजी हैं उनका युग युगमें नाम अलग अलग है २४ तिसको मैं कहताहूं हे सुन्दरि तत्त्वसे सुनिये सतयुगमें कृतवतीनाम, त्रेतामें गिरिकर्णिका २५ द्वापरमें चन्दना और कलियुगमें साभ्रमती नामहुआ दिन दिनमें विशेषकर स्नानके लिये जे मनुष्य २६ जाते हैं वे सब पापों से छूटकर विष्णुजी के सनातन को प्राप्त होते हैं प्लक्षावतरण तीर्थ, सरस्वती २७ केदार और कुरुक्षेत्रमें स्नानकरने से जोफल होताहै वह निश्चय साभ्रमती में दिन दिनमें २८ निस्सन्देह व्यासके वचन की नाईं होताहै श्रावण के शुक्लपक्षमें प्रतिदिन २९ और अमावसके दिन में अच्छीतरह से श्राद्ध देने में जो फलहै वह मनुष्य को साभ्रमती के स्नानसे मिलता है ३० कार्त्तिक में कृत्तिका के योग में श्रीस्थल में माधवजी के आगे जो फल मिलता है वह साभ्रमती के स्नान से भी मनुष्य को मिलता है ३१ हे पार्व्वती ! यह साभ्रमती अत्यन्त श्रेष्ठ, सब लोकों में पवित्र, अत्यन्त धन्य, पवित्र और पाप नाश करनेवाली है ३२ जिस साभ्रमती में पूर्व और उत्तर के सम्बन्धी ये सब नित्यही स्थित रहते हैं ३३ पश्चिम और दक्षिण के ये सब नित्यही तीर्त्थयात्रा के बहाने से ब्रह्मके समीप खेटक में प्राप्त होते हैं ३४ और कार्त्तिक में निस्सन्देह सब प्राप्त होते हैं वहां पर श्राद्ध ब्राह्मणों का भोजन ३५ अनेकप्रकार के धर्म्म, यज्ञ और दानोंको सदैव करते हैं ३६ ये सब चारों युगों में होतेआये हैं इसमें सन्देह न करना चाहिये यवक्रीत, रैभ्य, काक्षीवान्, उशिज ३७ भृगु, अङ्गिरा, कण्व, मेधावी, पुनर्वसु और गुणोंसे युक्त वन्दी ये पूर्वदिशाके रहनेवाले हैं ३८ उत्तरदिशा में महाभाग मधुव्रत इत्यादिक महाभाग सुबन्धु, वीर्य्ययुक्त दत्तात्रेय ३९ शिखी, दीर्घतमा, गौतम, कश्यप, श्वेतकेतु, कहोड, पुलह, देवल ४० विश्वामित्र, भरद्वाज, वीर्य्ययुक्त जमदग्नि, ऋचीकपुत्र, गर्ग्ग, उद्दालकऋषि ४१ देवशर्म्मा, धौम्य, आस्तीक, कश्यप, लोमश, नाभिकेतु, लोमहर्षण ४२ उग्रश्रवा ऋषि, भार्गव, च्यवन और बालखिल्य आदिक ये सब वहांपर प्राप्त होते हैं ४३ स्नानकर भोजनरहित, सदैव विष्णु में

परायण, शंख, चक्र और गदाको धारणकर नित्यही किनारे स्थित रहते हैं ४४ गयानाम पितरों का तीर्थ सब तीर्थों में श्रेष्ठ, शुभ है जहांपर देवदेवेश ब्रह्माजी आपही रहते हैं ४५ श्राद्धके भागों की इच्छा करनेवाले पितरों की यह गीताकी गाथा है कि बहुत से पुत्र यज्ञ करैं यदि एकभी गयाजी को जावे ४६ वा अश्वमेध से यज्ञकरै वा नील बैल छोड़े तैसेही पुण्यकारिणी काशीजी पितरों को सदैव प्यारीहै ४७ जो हमारी समीपतासे भुक्ति मुक्ति फलको देनेवाली है और हमारी आज्ञा से देवेश बिन्दुमाधवजी ४८ विशेषकर काशीजी में नित्यही स्थित रहते हैं इससे हमारी यह पुरी अत्यन्त धन्य और सर्वदा श्रेष्ठहै ४९ पुण्यकारी विमलेश्वर तीर्थ पितरों को प्यारा है और सब तीर्थों से युक्त पितरों का तीर्थ प्रयाग ये सब ५० हमारे वचन से साभ्रमती के जलमें प्राप्त होते हैं माधवजी से युक्त वटेश्वर भगवान् ५१ पुण्ययुक्त दशाश्वमेधक गंगाद्वार येभी हमारी आज्ञा से साभ्रमती में बसते हैं ५२ नंदा, ललिता देवी, सप्तधारक तीर्थ, मित्रपद, केदार, शंकरजीका स्थान ५३ ये गंगासागर कहाते हैं सब तीर्थों से श्रेष्ठ, शुभ, शतद्रु के जल और कुण्डमें ब्रह्मसर तीर्थ ५४ और नैमिषारण्य तीर्थ ये सबभी सदैव हमारी आज्ञासे साभ्रमती के जलमें निस्सन्देह बसते हैं ५५ श्वेता, पुण्यकारिणी वल्कलिनी, श्वेता, हिरण्मयी, हस्तिमती अथवा आर्तघ्नी, सागरगामिनी नदी ५६ ये सब पितरोंको प्यारी हैं इनमें श्राद्ध करनेसे करोड़ गुणा फलहोताहै वहांपर पितरों के कल्याण के लिये पुत्रोंकरके श्राद्धकरनी चाहिये ५७ वहीं पर पाटल और वाडव नगरहैं साभ्रमती में ये और विशेषकर नदियां सदैव प्राप्त रहती हैं ५८ वहांपर पृथ्वी में जे मनुष्य स्नान और दान करते हैं वे इसलोकमें सुख भोगकर विष्णुजी के सनातन को प्राप्त होते हैं ५९ महापुण्यकारी जम्बूद्वीप है! जहांपर पुण्य बढ़ती है महापुण्यकारी और सब कामना के फलको देने वाला आर्य्यनाम तीर्थ, ६० नीलकण्ठ तीर्थ, नन्दह्रद, रुद्रह्रद, पुण्यकारी रुद्रमहालय तीर्थ ६१ महापुण्यकारिणी गङ्गाजी, अ-

च्छोदा महानदी ये सब साभ्रमती में प्राप्त होते हैं और दर्शन क-रते हैं ६२ धूम्रा, मित्रपद, वैजनाथ, हषद्दर, क्षिप्रानदी, महाकाल, कालिंजरपर्व्वत ६३ गंगोद्भूत, हरोद्भेद, नर्म्मदाकार, इनसब को गंगाके पिण्डदान करने से बुद्धिमान् लोग समान कहते हैं ६४ ये ब्रह्मतीर्त्थ साभ्रमतीके उत्तर किनारेमें ब्रह्मा इत्यादिक देवताओंने गुप्तकर रक्खे हैं ६५ ये स्मरणही से मनुष्यों के पाप नाश करते हैं फिर श्राद्ध करनेवाले मनुष्योंके फलका क्या कहनाहै ६६ ओंकार, पितृतीर्त्थ, कावेरी, कपिलोदक, चण्डवेगाका सम्भेद, अमरकण्टक ६७ और कुरुक्षेत्र इनमें स्नान आदि करने से समान फलहोताहै परन्तु कुरुक्षेत्र का सौगुणा इस साभ्रमती में स्नान आदि करनेसे होताहै गणेश्वरपुरस्सर वार्तघ्नी के संगम में ६८ साभ्रमतीमें पूर्व समय में गणोंने तीर्त्थोंके समूहोंको प्राप्तकर दियाथा यह उद्देशसे तीर्त्थोंका संगम मैंने कहा ६९ तीर्त्थोंके तत्त्व विस्तारको सरस्वती भी नहीं समर्त्थ है सत्य, दया और इन्द्रियोंका निग्रहकरना ये सब तीर्त्थ हैं ७० तिस तीर्त्थ में यत्नसे निस्सन्देह स्नानकरै प्रातःकाल में तीन मुहूर्त्त संगवहै ७१ तिससमय में तीर्त्थ में स्नान आदि करना देवताओं को भी प्रीति देनेवाला है तीन मुहूर्त्त मध्याह्न और तिस पीछे अपराह्ण होताहै ७२ इस मध्याह्न से अपराह्णतक स्नान पिण्डादि और तर्पण करने से पितरों की प्रसन्नता होतीहै फिर तीनमुहूर्त सायाह्न होताहै उसमें श्राद्ध नहीं करावै ७३ क्योंकि यह वेलाराक्षसी नामहै सब कामों में निन्दितहै दिनके पन्द्रहमुहूर्त सदैव विख्यात हैं ७४ तिसमें आठवां मुहूर्त कुतुपकाल है सर्वदा मध्याह्नमें जिससे सूर्य्यनारायण मन्द होते हैं ७५ तिससे पितरोंको पिण्डदान देने से मध्याह्नकाल अनन्तफल देनेवाला है मध्याह्न, खड्गपात्र, नेपालकम्बल, ७६ चांदी, कुश, गऊ, कन्याकापुत्र और तिल ये कुतपा कहाते हैं कुत्सितको मुनिलोग पाप कहते हैं तिसके सन्ताप करनेवाले ७७ ये आठों हैं इसीसे कुतपा सुनाई देते हैं और कुतप मुहूर्तसे ऊपर चार मुहूर्त ७८ यह मुहूर्त पंचकश्राद्धकाल में श्रेष्ठहै भगवान् की देहसे कुशा और कालेतिल उत्पन्न हुए हैं ७९

देवतालोग कहते हैं कि ये दोनों श्राद्ध की रक्षा के लिये हुए हैं जलमें स्थित, कुश हाथ में लियेहुए तीर्थ के वासियों करके तिल संयुक्त जलकी अंजली देनी योग्यहै इसप्रकारके करने से साभ्रमती में श्राद्ध नहीं नष्ट होताहै इसप्रकार तीर्थमें प्रवेशन ८०।८१ करा कर मैंने कश्यपजीको गंगादी क्योंकि यह सदैवका मेराप्यारा भक्त है ८२ तिससे यह गङ्गा पवित्र और पाप नाशनेवाली है हे महा-भागे! साभ्रमती ब्रह्मचारिक तीर्थ में ८३ तिनके नामसे आत्मा को स्थापितकर लोकके कल्याण के लिये ब्रह्मचारी ईशसंज्ञक में स्थित हुआहूं ८४ साभ्रमती के समीप ब्रह्मचारी ईशसंज्ञक में कलियुग में भक्त जो विशेषकर पूजन करता है ८५ तो इसलो-कमें सुख भोगकर शिवजी के पदको प्राप्त होता है और जो भारी व्याधियों से पीड़ित जाता है ८६ तो उसकी दर्शनही से शीघ्रही व्याधि नाश होजाती है और जो उस जगह में जाकर जितेन्द्रिय होकर व्रतकरता ८७ और रात्रिमें निश्चल होकर भक्ति से पूजन करता है तब हम योगी के रूपसे तिसको दर्शन देतेहैं ८८ और हे श्रेष्ठमुखवाली पार्वती! सत्य सत्य वाञ्छितकामना को भी देतेहैं हमारे स्थानमें विशेषकर जे मनुष्य प्राप्त होतेहैं ८९ तिनकी व्या-धियोंका नाश मैं जल्द करताहूं और चौरासी व्याधि जो मैंने कही हैं ९० वे दर्शनही से नाश होजाती हैं वहां पर हमारा लिङ्ग नहीं वर्तमान है ९१ निस्सन्देह हमारा स्थानही मात्रहै एक समय इस भूमिमें महातपस्वी ९२ सूर्य्यवंशका पराक्रमी ब्रह्मदत्त राजा हुआ उसने बहुतकाल तक तपस्या की ९३ पंचाग्नि बहुत साधन किया और मासोपवास आदिक अनेक तपस्या भी की ९४ इस प्रकार बहुत काल राजाने जब तपस्या की तो वर देनेके लिये मैं प्रत्यक्ष प्राप्त होगया ९५ और बोला कि हे ब्रह्मदत्त राजन्! महत्वाक्य को तुम सुनो जिस जिसको तुम नित्यही वाञ्छा करतेहो तिसतिसको मैं निस्सन्देह देताहूं ९६ तब उन्होंने कहा कि हे देवेश! हे देव! यदि हमारे वाञ्छित को देतेहौ तौ एकही वर हमको सदैवके लिये दीजिये ९७ कि पृथ्वीमें हमारे नामसे ईश्वर उत्पन्न हूजिये तबतो

तिसके वचन से सन्तुष्ट होकर मैंने उसको वर देदिया ९८ और तिसी समय से तिसके साथ मैं भी बसनेलगा यहांपर स्थित होकर निराहार जो सम्पूर्णता से भक्ति करताहै ९९ तिसको जबतक चौदहों इन्द्र बीतते हैं तबतक वाञ्छित कामनाओं को मैं देताहूं और यहां आकर जे ब्राह्मण रुद्रजाप्य आदिक को १०० विशेष कर करतेहैं तिनको जो देताहूं तिसको सुनिये स्त्री और पुत्रसे सुख, लक्ष्मी की वृद्धि १०१ यश, ऐश्वर्य ये सब मिलते हैं रोगआदिक नाश होजाते हैं और सब वाञ्छित कलियुग में शीघ्र प्राप्त होते हैं १०२ हे पार्व्वती! पृथ्वीमें इस घोर कलियुग में हमारे भक्त यहां आकर स्नान दानआदिक क्रिया करेंगे १०३ तिनको मैं वाञ्छित अर्थों को सत्यसत्य दूंगा ब्रह्मदत्त दूसरे ब्रह्मचारी के नाम से १०४ राजा महादेवजी को स्थापितकर पांचदिन बसकर अपनी राज्यको जाताभया १०५ संसारमें यह ब्रह्मदत्तराजा श्रेष्ठ और धर्मका जाननेवाला प्रसिद्धहुआ और दश हज़ारवर्ष राज्य करताभया १०६ तदनन्तर कुछ कालमें राजा राज्यको भोगकर ब्रह्मपद, उत्तम, शिवलोक को जाताभया १०७ वहांपर हमारे नामके दो देवता वर्तमान हैं एक ब्रह्मचारीश और दूसरा गंगाधर के नामसे हैं १०८ हमारे स्थानमें विशेष कर जे मनुष्य पूजाकरते हैं तिनको निस्सन्देह सब वांछितको मैं देताहूं १०९ स्थान और हमारे लिङ्गमें मनुष्योंको सदैव जानाचाहिये तहांपर फूल, धूप और अनेकप्रकार की नैवेद्य ११० जो बुद्धिमान् मनुष्य करताहै वह निश्चय सबको प्राप्तहोताहै बेलपत्र, फूल और चन्दन आदिकोंसे १११ जे हमारे स्थानमें पूजा करेंगे तिनको मैं सब कुछ दूंगा और जो नित्यही इस ब्रह्मचारी की कथा को सुनताहै ११२ वह इस लोकमें सुख भोगकर महादेवजी के समीप प्राप्तहोताहै जहांपर ऐश्वर्य के देनेवाले गंगाधर देव नित्यही स्थित रहतेहैं ११३ और दूसरे ब्रह्मचारीश भी सदैव वर्त्तमान रहतेहैं तिनके ध्यानके योगसे निश्चय शिवजी के भावको प्राप्तहोजाताहै ११४ दर्शनसे रोगनाशताहै पूजनसे अमरप्राप्तहोती है और स्नानसे निस्सन्देह मुक्तिका भागी होताहै ११५ अब हे सुन्दरि!

परमअद्भुत विशेषकर साभ्रमती में राजखड्ग नाम तीर्थ को कह-
ताहूं सुनिये ११६ सूर्यवंश में उत्पन्न वैकर्तननाम राजा हुआ जोकि
दुराचारी, पापात्मा ब्राह्मणों का निन्दक ११७ गुरूका द्रोही, सदैव
दुष्ट,सब कर्मोंकी निन्दा करनेवाला, नित्यही पराई स्त्रीमें रत,नित्यही
विष्णुजी का दूषण करनेवाला ११८ और अनेकप्रकार से नित्यही
प्रजाको पीड़ा देताथा इसप्रकारका दुष्टात्मा सदैव पृथ्वीमें वर्तमान
था ११९ अब हे सुन्दरि ! तत्त्वसे सुनो कि कुछकाल बीतनेपर दै-
वयोगसे पापसे उसको कुष्ठ होगया १२० तो अपने शरीरको देख
कर वारंवार विचारकर क्या करना चाहिये यह ध्यानकर चिन्तासे
युक्त होगया १२१ कदाचित् दैवयोगसे क्रीड़ाके लिये वनमें गया
वहांपर साभ्रमती के किनारेपर स्थितहुआ १२२ और स्नानकर
उत्तम जलको पिया तो स्नानहीसे शीघ्र सुन्दर शरीर होगया १२३
और निस्सन्देह सोनेकीसी मूर्त्ति तिसी समयमें दिखाई देनेलगा
१२४ सुन्दर रूपको पाकर कुछकाल राज्य भोगकर राजा श्रेष्ठपद
को प्राप्त होगया १२५ तबसे इस तीर्थका नाम राजखड्गहोगया
इसमें जे स्नानकरते हैं और जो दानदेताहै १२६ वे इसलोकमें
सुख भोगकर विष्णुजीके सनातन को प्राप्तहोते हैं तिनके रोग और
शोक कुछ नहीं रहताहै १२७ और जो मनुष्य इस राजखड्गमें प्रति-
दिन स्नान करताहै वह स्वर्गको प्राप्तहोताहै और ब्रह्मादिक देव-
ताओंसे भी पूजित होताहै १२८ सतयुग में सत्येश्वर नाम त्रेतायुग
में भुवनेश्वर, द्वापर में राजेश्वर १२९ और इसघोर कलियुग में
ये हुए संसार के राजाहैं इससे यह राजखड्गनाम तीर्थहुआ है
१३० इसमें जे मनुष्य श्रद्धासे पितरों को तर्पण करते हैं वे पृथ्वी
में पुण्य कर्म्मवाले कहाते हैं १३१ ब्राह्मण के मारनेवाले और
गुरुक के मारनेवाले जे इसमें स्नान करते हैं वे तिन दोषों से र-
हित होकर महादेवजी के समीप प्राप्त होते हैं १३२ और जे म-
नुष्य साभ्रमती में नीलबैल छोड़ते हैं उनके पितर प्रलयपर्य्यन्त
तृप्त होजाते हैं १३३ हे पार्व्वती ! इस सुन्दर राजखड्ग आख्या-
नको जे मनुष्य सुनते हैं उनको डर नहीं होता है १३४ और

इसके सुनने और पढ़ने से रोग और दोष नाश होजाते हैं १३५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वर-संवादेसाभ्रमतीमाहात्म्यंनामपंचत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३५॥

एकसौछत्तीसका अध्याय॥

नन्दितीर्थकी महिमा वर्णन॥

पार्व्वतीजी बोलीं कि नन्दिकुण्डसे निकली साभ्रमती जाती हुई कौनकौन देशोंको पवित्र करतीभई और अर्बुद पर्वतको लांघ कर कौन तीर्थोंको करतीभई यह हमसे कहिये १ सूतजी बोले कि इसप्रकार पार्वतीजी के कहने पर संसार के राजा महादेवजी संसार की मोहिनी पार्व्वती से वचन बोले २ कि पहले परमपवित्र नन्दि-कुण्डसे मुनियों ने कपालमोचन नाम तीर्थको रचा ३ जो कि सब तेजोंसे अधिक, पवित्रों से पवित्र और श्रेष्ठहै यहांपर मैंने ब्रह्मसं-ज्ञक कपालको त्याग कियाथा ४ इसीसे हे पार्वती! इसका कपाल-मोचन तीर्थ नामहुआहै सब प्राणियों को पवित्र करनेवाला, संसार में प्रसिद्ध, प्रकट हुआ है ५ यह तीर्थोंका राजा कपालकुण्ड प्रसिद्ध है जहां पर देवता, नाग, गन्धर्व और किन्नर आदिक ६ महात्मा बसते हैं और तीर्थ बहुत शुभ और निर्मलहै जो कि तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध ज्ञान और मुक्तिका देनेवाला है ७ तहां स्नानकर पवित्र होकर कपालेशको पूजनकरै और एकरात व्रतकर ब्राह्मणों को भो-जन करावै ८ और वहांपर कपड़े के दान करने से अग्निहोत्रका फल मिलताहै और जो कोई तिस तीर्थ में दर्शन और व्रतमें स्थित होकर ९ अपनी देहको छोड़देताहै वह निश्चय शिवलोकको प्राप्त होताहै पूर्व्व समयमें इस तीर्थ में स्नानकर सौदास ब्रह्महत्यासे १० छूटगये और निर्मल ज्ञानको प्राप्तहुए भागीरथ्यके वंशमें महाबली सुदासनाम उत्पन्नहुआथा ११ तिसका पुत्र मित्रसह जो कि सौदास नाम प्रसिद्धहुआ था यह वसिष्ठजी के शापसे राक्षसी देहको प्राप्त हुआथा १२ और साभ्रमती में स्नान करने से शापसे उत्पन्न पापसे छूटगया था यहां पर गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती १३ ये पवित्र

और पुण्यकी देनेवाली सदा बसती हैं नन्दितीर्थ में गोदान, भूमिदान, शय्यादान १४ और कन्यादान ज्ञानी मनुष्यों को विशेषकर करना चाहिये इसी दानके बराबर साभ्रमती का स्नान कहा है १५ जहांपर पृथ्वी में सब पतित लोग जलके स्पर्शही मात्रसे शुद्धताको प्राप्त होजाते हैं १६ यहां जो भक्तिमें तत्पर होकर मनुष्य श्राद्ध करताहै तो उसके पितर संतुष्ट होकर परमपदको प्राप्त होजाते हैं १७ और जे मनुष्य सदैव इस सुन्दर आख्यानको सुनते हैं वे सब पापों से छूटकर विष्णुजीकी सायुज्यको प्राप्तहोते हैं १८ और कर्म, मन और वाणीसे जे महादेवजी की स्तुति करते हैं उनको प्रलयपर्यन्त दुःख नहीं विद्यमान होता है १९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डे उमामहेश्वरसंवादेनन्दितीर्थमाहिमानामषट्त्रिंशाधिक- शततमोऽध्यायः १३६ ॥

एकसौसैंतीसका अध्याय ॥

श्वेतातीर्थ का माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि नन्दिप्रदेश से जैसे साभ्रमती नदी ब्राह्मण और ऋषियोंसे सेवित विकीर्ण वनको प्राप्तहुई १ और बहुधा जलके वेगसे पर्वतोंके किनारों को काटतीहुई सातप्रकारसे विभाग होकर दक्षिण समुद्रको चलीगई है २ पहली पुण्यकारिणी साभ्रमती, दूसरी सेटिका, तीसरी पुण्यकारिणी वल्किनी, चौथी हिरण्मयी ३ पांचवीं सब पापोंकी हरनेवाली हस्तिमती छठवीं पूर्वसमय की वृत्रासुरकी रचीहुई वेत्रवती ४ यह श्रेष्ठ देवी वृत्रासुरके कुंयेंसे निकली है इसीसे इस महापापोंके नाशनेवाली का वेत्रमती नामहुआ है ५ और सातवीं लोकोंको पवित्र करती, कल्याणयुक्त, भद्रामुखी नाम है इनसातोंसे तिनतिन देशोंको ६ पवित्रकर एकसे सप्तस्रोता प्रतिष्ठित होगईहै इस विकीर्ण तीर्थमें जोपितरोंका उद्देशाकर श्राद्ध करताहै ७ उसको गयाजीमें पिण्ड देनेके समान फल मिलताहै अकीर्ण, च्युत, पिण्ड और जलकी क्रियाके लोपवाले ८ ये सब वि-

कीर्ण में पिण्ड और जल देनेसे छूटजाते हैं और जो तहांपर श्राद्ध करताहै वह निश्चय गाणपत्य होजाताहै ९ तिससे हे ब्राह्मणो इस तीर्थ में श्रद्धासे त्रयीके विधानसे विशेषकर सप्तनदी के उदय में श्राद्ध करनी योग्यहै १० और ऋषिलोकों की इच्छा करनेवाले आपलोग भी स्नानकरैं यह कश्यपजी ने विशेषकर ब्राह्मणों से कहाथा ११ इसमें जो सदैव स्नानकरै तो सब दुःख नाश होजावैं क्योंकि यह तीर्थोंमें श्रेष्ठ तीर्थ और क्षेत्रोंमें सबसे उत्तम क्षेत्रहै १२ विकीर्ण तीर्थ नामहै यह कल्याणका देनेवाला और रोग दोष नाशने हाराहै कलियुग में इसमें विशेषकर जे मनुष्य सर्व्वदा स्नान करते हैं १३ वे पुण्यभागी निस्सन्देह होते हैं गयातीर्थ के समान यह विकीर्ण तीर्थ बहुत पवित्रहै नित्यही पितरों को पुण्यदेनेवाला और मनुष्यों के दुःखका नाशने हाराहै १४ (इतिविकीर्णतीर्थम्)
विकीर्ण तीर्थसे श्रेष्ठतीर्थ, सबसे उत्तम श्वेतोद्भवहै जहांपर हमारी पीठ और पेटकी भस्मसे श्वेतानदी उत्पन्नहुईहै १५ जोकि तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध, सब पापोंके नाशकरनेवाली, महादेवजीके अंगकी भस्मके संयोगसे उत्पन्न और देवताओं से पूजितहै १६ तिसमें पुरुष स्नानकर पवित्र होकर तीनरात्र वासकर महाकालेश्वरजी के दर्शन करै तो रुद्रलोकमें प्राप्तहोजावे १७ और जो तिसके किनारे कुश और तिलोंसे पितरोंको पिण्ड देताहै तो उसके पितर निस्सन्देह तृप्त होजाते हैं १८ श्वेतगंगा महापुण्यकारिणी और दुःख और दारिद्य छुड़ानेवाली है हे पार्वती! जहांपर स्नानकरने से श्रेष्ठ सुख मिलताहै १९ हे सुन्दरि पार्वती! तिसके पुण्यकारी संगम में नित्यही मैं स्थित रहताहूं जे इसमें स्नान और दान करते हैं २० तो तिसका अनन्तफल उनको निस्सन्देह होताहै वहां संगममें भूतेश्वर देव निश्चय वसते हैं २१ जे श्रेष्ठ मनुष्य तहांपर धूप, दीप, फूल और आरती करते हैं वे पुण्यरूपी मनुष्य हैं २२ और श्वेता में बेलपत्रको लेकर जो महादेवजी के ऊपर चढ़ाताहै वह शिवजी के समीप नित्यही वाञ्छितको प्राप्तहोताहै २३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेश्वेतातीर्थनामसप्तत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३७॥

एकसौअड़तीसका अध्याय ॥

बकुलाके संगममें गणतीर्थ का माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि तीर्थकी यात्रामें परायण मनुष्य गणतीर्थ को जावे जोकि चन्दनाके किनारे परहै जिसको गणलोग त्रिविष्टप कहते हैं १ मनुष्य पूर्णमासी में त्रिविष्टप में स्नानकर ब्रह्महत्यासे छूटजाताहै इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये २ जिसकी वर्षाके चार महीनों में त्रिविष्टपमें स्थिति होती है तो वह पुण्ययुक्त मनुष्य महादेवजी के लोकमें प्राप्तहोताहै ३ गणतीर्थ में मनुष्य स्नानकर कृष्णाष्टमी में व्रतकर और बकुलाके संगममें स्नानकर स्वर्गको प्राप्त होजाताहै ४ तिसतीर्थ में मनुष्य स्नानकर बकुलेशजी के दर्शनकरै तो गणेशजी के प्रसाद से गणेशजी के लोकको प्राप्त होजाताहै ५ यह परमपवित्र, पुण्य और उमर बढ़ानेवालाहै इसको सुनकर मनुष्य गंगाजी के स्नानके समान पुण्यको प्राप्तहोताहै ६ यहांपर निराहार और इन्द्रिय जीतकर स्थितहो श्रेष्ठदेव,मनोरम गणेशजी को जपकरै ७ तो हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्व्वती ! वह सत्य सत्य सब भोगोंको प्राप्तहोवे यहांपर पराक्रमयुक्त, सोमवंशी, राजा विश्वदत्त ने ८ बहुत कालतक बड़ीभारी तपस्याकर श्रीगणेशजीके प्रसाद से गणेशजी के लोकको पायाथा ९ वसिष्ठ, वामदेव, होड, कौशीतकि मुनि,भरद्वाज,अंगिरा, विश्वामित्र, वामन १० येसब पुण्यरूपमुनि श्रीगणेशजी के प्रसादसे नित्यही सेवा करतेहैं ११ पुत्रहीन पुत्रों को, धनहीन धनको, विद्यारहित विद्याको और मोक्षका चाहनेवाला मोक्षको प्राप्तहोताहै १२ हे श्रेष्ठमुखयुक्त पार्वती ! वारंवार और बहुत कहने से क्याहै जो इसमें स्नान वा पूजन करता है १३ वहसब पापोंसे छूटकर विष्णुजी के परंपद को प्राप्त होताहै शिवजी विष्णुरूपहैं और विष्णुजी शिवरूप हैं १४ हे पार्वती ! श्रीविष्णुजी के प्रसादसे मैं अन्तर नहीं देखताहूं १५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे बकुलासंगमेगणतीर्थनामाष्टात्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३८ ॥

एकसौ उनतालीस का अध्याय॥

अग्निपालेश्वरनाम तीर्थकी महिमा वर्णन॥

महादेवजी बोले कि साभ्रमती के उत्तर किनारे पर अग्नितीर्थ है तिसके उत्तर पूर्व्व से थोड़ीही दूर कृतास्पद १ पालेश्वर नाम तीर्थ है जहां चण्डीजी स्थित हैं यह योगमातृओं का सब सिद्धि करनेवाला पीठ है २ जहां पर सब देवताओं के कार्य्य के लिये ते माता स्थित हैं श्रेष्ठ यत्नकर मनुष्यों के दयाके कारणसे ३ दृढ़ व्रत करनेवाला तिस तीर्थ में तीन रात्रि बसकर तिन ईशान, देवों के स्वामी, चण्डिकाजी के स्वामी के पास जावे ४ और समाधि विधि से युक्त, मातृतीर्थ के समीप साभ्रमती में स्नान करै तो मातृमण्डलको प्राप्त होवे ५ और अग्नि तीर्थ में मनुष्य स्नानकर चामुण्डाजी के दर्शनकरै तो हज़ार गोदानके फलको प्राप्तहो ६ राक्षस, भूत और पिशाचसे उत्पन्न डरभी तिसको न हो और जहां पर साभ्रमती में मिलीहुई गोखुरा नदी है वहां हे पार्व्वती! हजार तीर्थ स्थित हैं तहां पर तिलके आटेसे श्राद्ध करना चाहिये ७।८ और पिण्डोंको देकर ब्राह्मणों को भोजन करावे तो नाशरहित पदको प्राप्त होताहै जहां कुकर्दम राजा जो कि अत्यन्त पापी, दुर्बर, दुर्जन, ९ मूढ़, अहङ्कारसंयुक्त, ब्राह्मणों की निन्दा करनेवाला, गऊ और बालकों का मारनेवाला पापिष्ठ और सदैव दुर्दम था १० पिण्डारसंज्ञकपुर में राज्य करतेहुए अधर्म्म के योगमें उसकी मृत्यु होगई ११ तो मर कर प्रेतरूप होगया कि जिसका पीला मुख, सूखीतुण्ड पीलेरोयें, कठोर १२ ऊंचा, बहुत रोमों से युक्त, भूंख और प्यास से पीड़ित, पवन भक्षण करताहुआ इधर उधर घूमनेलगा १३ बहुत प्रेतोंसेयुक्त हाहाकार कर करुणासे रोताथा कि समीपके प्रेत उस से बोले कि क्या करना चाहिये १४ और भूंख और प्यास आदि से पीड़ित वे सब प्रेतभी तिस समय में रोनेलगे और अन्य दुरात्मा प्रेत राजाकी संगतिको प्राप्त होगये १५ और राजाहीके साथ मनुष्यहीन वहुतसे लोकोंको जातेभये परन्तु उनको मार्ग में जल

अथवा अन्न नहीं दिखलाई कभी पड़ा १६ वे दुष्टरूप प्रेत पृथ्वीतलमें घूमनेलगे मुर्देका मांस खाने और सदैव रक्त पीनेलगे १७ इस प्रकार कुकर्दम राजा सदा तिनसे युक्त रहता था कदाचित् दैवयोगसे गुरुजी के आश्रमको पूर्व्वजन्मकी पुण्यसे युक्तहोकर प्राप्त हुआ पार्वतीजी बोलीं कि हे विश्वेश्वर हे प्रभुजी तिसने क्यापुण्य किया था तिसको कहिये १८।१९ यह पापी दुरात्मा और ब्राह्मणोंको दुःख देनेवाला था उसकी अच्छीसङ्गति कैसे हुई यह हमसे विस्तार से कहिये २० तब महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसराजाने पूर्वजन्ममें जो किया था तिस सबको मैं कहताहूं सुनिये २१ पूर्वजन्ममें यह वेदका पाठकरनेवाला ब्राह्मण था महादेवजीकी पूजाकर अतिथियोंकाभी पूजनकर नित्यही भोजन करताथा तिसी पुण्यके प्रभाव से पिंडारसंज्ञकपुर में २२।२३ कुकर्दमनामराजा हुआ था परंतु राजा होने में कर्म और मनसेभी कुछ पुण्य नहीं करता था २४तिसीसे दैवयोगसे मरकर वह प्रेतोंका राजा होगया था जोकि सूखे मुख और रूपसेयुक्त, पीलेवर्णवाला और करालथा २५ परन्तु पूर्व्वजन्म की पुण्य उसकी नहीं नाशहुई थी तिसी पुण्यके संयोगसे गुरुजी के आश्रम में प्राप्त हुआथा २६ जहांपर कहोडजी वर्तमान थे उन्होंने प्रेतोंके राजाको देखा जोकि सूखामुख और सूखे रूपयुक्त, पीले वर्णवाला, कराल, २७ गहरी आंखोंसे युक्त, महापापी, दुष्ट प्रेतोंसे युक्त, ऊपरको रोमवाला, जटाओं से युक्त, कालरूप और भयंकर था २८ इसप्रकार के प्रेतराज को देखकर विह्वल कहोडजी उस से बोले कि हे राजन् इसपरमअद्भुत, मनोरमस्थान, अग्निपालेश्वर तीर्थ में मैं नित्यही स्थित रहताहूं और हमारे यजमान आप प्रेतोंके राजा कैसे होगये २९।३० जो कि दुरात्मा, दुष्टरूप, कालरूप और भयंकर प्रेतोंकी देहहै इसको आप किस कर्म्म के विपाक से शुभ पृथ्वीतल में प्राप्त हुए हैं ३१ तब प्रेत बोला कि हे ब्राह्मण! पूर्व्वजन्म के कियेहुए हमारे पापोंको सुनो मैं पिण्डारसंज्ञकपुर में कुकर्दमनाम राजा हुआथा ३२ वहांपर स्थितहोकर जो मैंने किया तिसको सुनिये ब्राह्मणों को मारता, झूंठआदि बोलता ३३ प्रजा-

ओंको पीड़ा देता, जीवोंको सदैव मारता, गौवोंको दुःख देता, ब्राह्मणोंके व्रत लोपकरता ३४ सदा स्नान नहीं करता, ब्राह्मण और सज्जनों को दुःख देता, नित्यही विष्णु और वैष्णवोंकी निन्दा करता ३५ दुराचारी, दुरात्मा, सदैव शूद्राओं से संयुक्त, इधर उधर भोजन करता और पवित्रता से रहित रहताथा ३६ तिसी कर्म्म के संयोग से हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! मैं मरकर प्रेतयोनि में अनेकों दुःखों से युक्त प्राप्त हुआ हूं ३७ जिसके माता, पिता, स्वजन, बांधव कोई नहीं हैं तिसके बन्धु, गुरु, माता, पिता और गुरु आपही हैं ३८ ऐसा जानकर भोब्रह्मन्! मुक्ति देने के आप योग्य हैं ३९ तब कहोडजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ! सुनो तुम्हारा वचन करूंगा आप यहांपर निस्सन्देह शीघ्रही मुक्ति को प्राप्त होगे ४० और जे तुम्हारे ग्यारह आगे चलनेवाले प्रेत संग हैं वेभी विशेषकर इस तीर्थ में मुक्तिको प्राप्त होंगे ४१ तब तो उसी समयमें उन ब्राह्मण ने तीर्थ में उन सब प्रेतों को लेजाकर सबोंसे तिलके पिण्ड और जलकी क्रिया करवाई ४२ ब्रह्माजी ने पूर्व्वसमय में हमसे यह कहा था कि न महीना और तिथिका विचार है तीर्थ में जाकर वारंवार श्राद्धकर्म्म आदि करना चाहिये ४३ हे पार्व्वती! कर्म्म करने के पीछे वे उसी तीर्थराज में मुक्त होगये और श्रेष्ठ विमानपर चढ़कर हमारी पुरीको प्राप्त होगये ४४ अभ्रमती और गोखुराके संगम में स्नान और दान करै तो करोड़यज्ञों के फलको प्राप्त होवे ४५ और जहांपर अग्नितीर्थ और कपालेश्वरसंज्ञक वर्तमान हैं वहां पर निश्चय सत्य सत्य मुक्ति कहीहुई है ४६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेअग्निपालेश्वरमहिमानामैकोनचत्वारिंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १३९॥

एकसौ चालीसका अध्याय॥

हिरण्यासंगम तीर्थकी महिमा वर्णन॥

श्रीमहादेवजी बोले कि हे पार्व्वती देवी! हिरण्यासंगम तीर्थ

को कहताहूं जब सात स्रोतावाली साभ्रमती गंगा पूर्व्व समय में हुईथी १ तब ब्रह्मपुत्री सप्तस्रोता इस नाम से प्रसिद्ध हुईथी सातवां हिरण्यनाम स्रोता कहाताहै २ तिस तीर्थमें पापीभी मनुष्य स्नानकर गतिको प्राप्त होजाता है ऋक्षु और मंजुमा के बीच में सत्यवान् नाम पर्व्वत है ३ तिसके पूर्व्व सुन्दर, महान्, शुभ, हिरण्यासंगम तीर्थ है वहां स्नान और पान करने से शुभगति को प्राप्त होताहै ४ तदनन्तर वनस्थली में जाकर नारायण हरिजी के दर्शनकर अप्सराओं के पुण्यकारी हिरण्यासंगमेश्वरतीर्थ में जावे ५ जहांपर पूर्व्वसमय में सब अप्सराओंमें श्रेष्ठ उर्वशी उत्पन्न हुई और नर नारायणजी उत्तम तपस्या करते थे ६ शुभ और महापापों के नाशनेवाले, सुन्दर हिरण्यासंगम में पापरहित सम्पूर्ण ऋषि स्नान करते थे ७ वसिष्ठादिक ब्राह्मण और बालखिल्यादिक भी जिस तीर्थ में स्नान करते थे ८ जहांपर स्नान करने से निश्चय सोनेकासा रूप होजाता था हज़ार कपिला गऊ के दान से जो फल मिलता है ९ वह हिरण्यासंगम में सदैव प्राप्त होता है दश अश्वमेध में चन्द्रमा और सूर्य्य के ग्रहण में जो पुण्य होता है १० तिससे अनन्तगुणा हिरण्यासंगम में कहाहै तुलापुरुष के दान में जो फल मिलता है ११ वही फल मनुष्य हिरण्यासंगम में सदैव पाता है हिरण्याक्ष महादैत्यने यहीं पर भारी तपस्याकी थी १२ तब उसका पूर्व्वकालमें सोने के समान शरीर होगया था यहीं पर राजा जनमेजय ने स्नान किया था १३ तब उनकी ब्रह्महत्या जातीरही थी और राजर्षि विश्वामित्र जी स्नान के लिये प्राप्तहुए थे १४ वे स्नानकर विशेष कर हमारी पुरी को प्राप्त होगये थे १५ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रलोगभी जो इसमें स्नान करेंगे वे सब हमारे स्थानको प्राप्त होजावेंगे १६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेहिरण्यासंगमतीर्थनामचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४० ॥

एकसौ इकतालीस का अध्याय॥

साभ्रमती नदी के माहात्म्यमें मधुरादित्यका माहात्म्य वर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! हिरण्यामंगम के पीछे धर्म्म
वती नदी गंगाजी के साथ मिलीहुई है उसको कहताहूं १ त
स्नान करनेवाला मनुष्य धन्य है वह निस्सन्देह स्वर्गको जाता
और जहां पर वह पुण्यात्मा धर्मकृत तीर्थ को देखताहै २ तहां प
जे श्राद्ध करते हैं वे पितरों के ऋणसे छूट जाते हैं फिर सब पापों
नाश करनेवाला मधुरा तीर्थ है ३ इसमें स्नान करना चाहिये औ
मधुदैत्य के नाशनेवाले हरिजी के दर्शन करने चाहिये यहीं पर ज
रासन्ध के डरसे व्याकुल कृष्णजी ने विश्राम किया था ४ कंसासु
के वधहोने के पीछे कुशस्थली के जानेकी कामनाकर भगवान् कृष
जी चन्दना के किनारे सातरात्रि बसकर ५ भोज, वृष्णि, अन्ध
और यादवों में श्रेष्ठ वीरोंसे युक्तहोकर मधुरा तीर्थ में आकर वि
से स्नानकर ६ मधुरादित्यनाम को हरिजी ने स्थापित किया औ
यज्ञशाली अठारह हजार ब्राह्मणों को ७ भी स्थापितकर उनक
अनेक प्रकारकी सवारियां दीं हे पार्व्वती वहांपर हजार तीर्थ स्थि
हैं ८ और पितरों के हितकी कामना से श्राद्ध भी वहांपर कर
चाहिये और हमारे तीर्थ में बसनेवालों को सदैव जरासन्धसे न
डरना चाहिये ९ ऐसा तिन ब्राह्मणों से कहकर कृष्णजी द्वारका
चलेगये तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर मधुर सूर्य्यको माघकेशु
पक्षकी सप्तमी में पूजनकरै कपिला गऊके दानसे बहुत काल इ
लोक में सुखभोगकर सूर्यजी के पदको प्राप्तहोवे १०।११ हे सुन्द
पार्वती! अब मैं पुराने इतिहास को कहताहूं सुनिये जिसको सुनक
मनुष्य ब्रह्महत्यादिक पापों से छूट जाताहै १२ एक समय में ऋ
षियों में श्रेष्ठ मांडव्यजी गंगाद्वार में महापुण्यकारी बहुत भा
तपस्या करते भये १३ पत्ते, फल और पवनही का सदैव भोज
करते रात दिन विष्णुजी के ध्यानमें परायण रहते १४ नित्य
योगाभ्यास में रत रहते और धर्म्ममें भी नित्यही परायण रहते

तिस देशमें संसारका मोहनेवाला राजा १५ हाथी, घोड़े, रथ और पैदलकी सेना अनेकोंसे युक्तथा सोमचन्द्रनामसे प्रसिद्ध भी था उस का पुत्र सुलक्षण था १६ एक समयमें वह आखेटकवनमें शिकार खेलनेको गया तो वहां जाकर उसने शिकारखेला १७ और अपने मनुष्योंसे युक्तहोकर क्रीड़ा करनेलगा तो राजाके क्रीड़ामें रतहोने से रात्रि होगई १८ तब तो रात्रिको उसी आखेटकवन में रहगया फिर रात्रि व्यतीत होनेपर ब्रह्मसंज्ञक मुहूर्त्तमें १९ विशेषकर दुरात्मा चोरने घोड़ा राजाका चुरालिया तब तो घोड़ा कहांगया कहां गया इसप्रकारसे तिससमयमें बड़ा हाहाकार शब्दहुआ २० फिर राजा के डरसे सब नौकरलोग यह कहनेलगे कि चोरने घोड़ा चुरा लियाहै ऐसा कहकर उत्साहयुक्त ढूंढ़नेकेलियेचले २१ और ढूंढ़ते हुए सब हरिद्वार को प्राप्तहोगये कि जहांपर मांडव्यऋषि नित्यही तपस्या करतेथे २२ तब तो राजाके वीरों ने ध्यानसे युक्त उनको देखकर यह कहा कि यही चोर, सदैव का पापी है इस समय में ध्यानकर स्थितहै २३ घोड़ेको बांधकर यहां आया है यह राजा के वीरोंने जानकर और सबोंने विचारकर तिन महामुनिजीको पकड़ कर २४ राजाके पास आकर कहनेलगे कि हे राजन् यह घोड़ेका चुरानेवाला है इसको हमलोग पकड़ लायेहैं सदैव का यह चोरहै २५ तब राजाने आज्ञादी किशूलीपर चढ़ादो तब तो सब वीरोंने मिलकर बांधलिया २६ पीछे से तिसीक्षणमें शूलीपर चढ़ाया परन्तु शूलीकी व्यथा और तिस कर्म्मको मुनिजी ने नहीं जाना २७ क्योंकि योग और भगवान् के ध्यानमें परायणथे कुछ समय बीतने के पीछे उन्होंने यह सब चरित्र जाना २८ तो विचार करनेलगे कि मैं ऋषियोंमें श्रेष्ठ, तीनोंकालकाज्ञानी, सब जाननेवाला, भगवान् मांडव्यहूं २९ यह कर्म्म धर्म्म काहै और किसी का नहीं है यह विचारकर योग में आरूढ़ होकर धर्मात्मा मुनि धर्म्म के पास पहुंचे ३० वहां जाकर उनसे बोले कि हे धर्म तुम इससमयमें सुनो कि सर्व्वदा लोक और वेदमें तुम धर्म्म इसनामसे प्रसिद्धहो ३१ शूलीपर चढ़ानेका कर्म्म तुमने कैसे किया है हे देव ! यह सब नि-

स्सन्देह आपसे सुनने की इच्छा करताहूं ३२ तब धर्म्म बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! पूर्व जन्ममें जो आपने पाप किये हैं तिनको मैं कहताहूं सुनिये और हमारे ऊपर कृपाकीजिये ३३ बालक अवस्था में पूर्वजन्ममें तुमने पापकियाथा उसीसे इसजन्ममें शूलीपर चढ़ाये गये हो तिसको हे महाबुद्धिमान्! आप सुनिये ३४ हे ब्राह्मण! एकसमयमें तुम मनुष्यहीन वनमें गये और वहांजाकर तुमने टीड़ी जीवको ३५ शूलीपर चढ़ादियाथा हे सुव्रत! इसी कर्म्म से राजाने शूलीपर तुमको चढ़ायाहै तिससे आपको बहुत दुःख मिलाहै ३६ हे प्रभुजी! सर्व्वथा शुभ अशुभ कियाहुआ कर्म्म भोगना पड़ताहै थोड़ासा तुमने पापकर्म्म कियाथा उसको भी निस्सन्देह आपभोग करचुके ३७ अब हे विप्रेन्द्र सुखी होकर इच्छापूर्वक जावो ये वचन सुनकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मांडव्यजी ३८ क्रोधसे लालनेत्र होकर वचन बोले कि रेपापिष्ठ! रे दुराचारी! क्या हमने बहुत पापकिया था ३९ जिससे हमको शूलीकी पीड़ा सहनी पड़ी हमारे क्रोधके वचनसे तू सर्व्वथा शूद्रहोजावे ४० कुछकाल बीतनेपर चन्द्रवंशमें भगवान् की भक्तिमें परायण विदुरनामसे उत्पन्नहुए ४१ और तीर्थ-यात्रा के बहाने से जहां पर धर्म्मावती का सङ्ग वर्तमानहै वहां पर साभ्रमती नदीमें ४२ धर्म्म के रूप विदुरजी ने स्नान किया तो नि-स्सन्देह धर्मावती में शूद्रता जातीरही ४३ इस कारणसे हे देवि! जे मनुष्य यहां स्नानकरते हैं वे पुण्यकर्म्म करनेवाले परमपदको प्राप्त होते हैं ४४ और जे मनुष्य पृथ्वी में यहांपर श्राद्ध और दान करते हैं वे इस लोकमें श्रेष्ठ ऐश्वर्य्यको पाकर अन्त में स्वर्ग में आनन्द करते हैं ४५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डे उमामहेश्वरसंवादेसाभ्रमतीमाहात्म्येमधुरादित्यमाहात्म्यं नामैकचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४१ ॥

एकसौबयालीसका अध्याय ॥

कपितीर्थका माहात्म्य वर्णन ॥

श्रीमहादेवजी बोले कि कम्बुतीर्थ में मनुष्य स्नानकर वा पि-

तरों को तर्पणकर रोगरहित, देवदेवेश, नारायणजीको पूजनकरै १ और विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दानदेवे तो इसतीर्थके प्रभावसे विष्णुलोकको प्राप्तहोवे २ हे सुन्दरि पार्व्वतीजी ! यहां पहले बुद्धिमान्, राजर्षि, विश्वामित्रजी ने प्रजाकी कामना से विशेषकर तपस्याकी थी ३ वायुका भक्षणकर, भोजनरहित, नित्यही विष्णुजी की पूजा और उनके ध्यान में परायण हो ४ इस तपस्यासे पुत्रकी कामना को प्राप्तहुए जो पुत्रकी कामना करनेवाला मनुष्य कम्बुतीर्थ को जाताहै ५ वह हे पार्व्वती ! सत्यसत्य पुत्रको प्राप्तहोगा ६ (इति कम्बुतीर्थमाहात्म्यम्) तदनन्तर हे पार्व्वती ! रक्तसिंहके समीप महापापों के नाश करनेवाले कपीश्वर नाम तीर्थको जावे ७ पूर्व्वसमयमें सेतु बँधने में राम और रावणकी लड़ाई में वानरों ने विशेष कर श्रेष्ठ पर्व्वतको ग्रहणकर ८ कपीश्वरादित्य नाम उत्तम तीर्थ को रचाथा जिसतीर्थ में मनुष्य स्नान वा पितरों को तर्पणकर ९ कपीश्वरादित्यजीके दर्शनकर ब्रह्महत्यासे छूटजाताहै उसमें विशेष कर चैत्रकी अष्टमी में स्नान करना चाहिये १० हनुमान् इत्यादिकों ने जहां पर तीनदिन स्नान कियाथा यह कपितीर्थ का प्रभाव तुमसे हमने कहा है ११ इसतीर्थ में मनुष्य स्नानकर कपीश्वरजी को पूजनकरै तो निस्सन्देह रूपवान् और बहुत भाग्यवाला हो जावे १२ और जो मनुष्य बल, धर्म्म वा पुत्रकी वाञ्छा करताहै वह कपितीर्थ के प्रभाव से सबको नित्यही प्राप्तहोताहै १३ ॥

इतिश्रीपद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डे उमामहेश्वरसंवादेकपितीर्थमाहात्म्यंनामद्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४२ ॥

एकसौतेंतालीसका अध्याय ॥

सप्तधार तीर्थकी महिमा वर्णन ॥

परमपवित्र एकधारनाम तीर्थ में फिर मनुष्यजावे और वहां स्नानकर एकरात्रि व्रत करै १ और स्वामि देवेशजी को पूजै तो सौ कुलोंको तारदेवे जिस तीर्थ में स्नान स्वामितीर्थ के समान

जानना चाहिये २ इस तीर्थके प्रभावसे मनुष्य रुद्रलोकमें जाता है इस तीर्थ में स्नान और पान करने से ब्रह्मलोक में जाता है ३ तीनोंलोकों के पुण्यकर्म्म करनेवाले इसके किनारे पर बसते हैं ४ तिनको खड्गधार आदिक डर कुछ नहीं विद्यमान होता है एक प्रधारकतीर्थ में वह सब जल्द नाश होजाता है ५ (इति एकधारतीर्थवर्णनम्) सप्तधार नाम उत्तम तीर्थ को फिर जावे जहांपर मुनियों ने सप्तसारस्वत नाम तीर्थको रचाथा ६ त्रेतायुग में मंकि महर्षिने मंकितीर्थ को बनाया था द्वापर में पाण्डुपुत्रों ने सप्तधार को रचा ७ यह महादेवजी के जटासे निकला हुआ सातधारों को प्राप्त हुआथा गंगाजी के सातरूप सातोलोकों में मैं प्राप्तहूं ८ वे पुण्यकारी तीर्थ इस सप्तधारक तीर्थ में प्राप्तहैं सप्तधार में श्राद्ध करने से पितरों की तृप्ति होजाती है ९ अब हे देवि! पुराने इतिहास को कहताहूं सुनिये जिसको सुनकर निश्चय ब्रह्मलोक प्राप्त होताहै १० कौषीतकिका पुत्र मङ्किनाम प्रसिद्ध था जोकि नित्यही विष्णुजी के ध्यानमें रत, विष्णुलोकको पूजनेवाला ११ वेद पढ़ने हारा और अग्निहोत्रमें परायण था उसके घरमें सुरूपा और विश्वरूपा नाम दो स्त्रियांथीं १२ हे पार्वती! तिन दोनों स्त्रियों को पुत्रहीन देखकर शङ्कायुक्त होकर क्या करना चाहिये यह ध्यान कर अत्यन्त चिन्तामें परायण हुआ १३ कि पुत्रसे वंश स्थिर होताहै और तरहसे नरक जाताहै इसप्रकार चिन्ता करताहुआ कहीं सुखको न प्राप्त हुआ १४ तब तो अपना घर छोड़कर गुरुजी के समीप गया और कहने लगा कि देवताओं के उपकार करनेवाले आप गुरुदेवजी के नमस्कार हैं १५ सब लोकोंके आप नाथ, ब्राह्मणोंकी रक्षा करनेवाले और यज्ञोंकेभी करनेहारे हैं हे द्विजराज! आपके नमस्कार हैं १६ हे ब्राह्मणों में ऋषि! हे प्रभुजी! मैं पुत्रहीनहूं मुझको क्या करना चाहिये जिसप्रकार मेरे निश्चय पुत्रहो वह सब कहिये १७ क्योंकि, पुत्रहीन की गति स्वर्ग में भी नहीं है जिस किसी उपाय से पुत्रका जन्म होना चाहिये १८ ये वचन स्मरणकर आपके समीप आयाहूं १९ तब गुरुजीबोले कि हे मुनि-

शार्दूल ! अभ्रमती नदी पर जावो वहां जाने से निश्चय पुत्रों को प्राप्त होगे २० तिनके वचन सुन वह श्रेष्ठ ब्राह्मण गुरुजी के दण्डवत् नमस्कार कर साभ्रमती नदी पर गया २१ जहांपर माङ्कि नाम विप्रर्षिने चौंसठ वर्षतक बड़ीभारी तपस्याकी २२ और उन्हीं ब्रह्मवादीने त्रेतायुगमें इस महाअद्भुत तीर्थको रचाथा २३ यह मङ्कितीर्थ निस्सन्देह पुत्र और सबकामना देनेवालाहै आजतक इसके समान कोई तीर्थ न हुआ और न होगा २४ ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ माङ्किजी सुखपूर्वक पुत्रोंको प्राप्तहोकर अनेकप्रकारके भोगोंको भोगकर हमारे स्थानको प्राप्तहोगये २५ यह आख्यान सुन्दर और परम पवित्रहै इसके सुननेसे पुत्रसुख आदिक सबको प्राप्तहोताहै २६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेसप्तधारतीर्थमहिमानामत्रिचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४३ ॥

एकसौचवालीसका अध्याय ॥

खण्डतीर्थकी महिमावर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! फिर महान् तीर्थ ब्रह्मवल्ली को जावे अब तिसके साक्षात् स्वरूपको सुनो १ जहांपर साभ्रमती का जल ब्रह्मवल्ली के जलसे युक्तहै वह ब्रह्मतीर्थ प्रयागजी के समान है २ तहांपर पिण्ड देने से पितरों की बारहवर्ष की तृप्ति निश्चय ब्रह्माजीके वचनकी नाईं होजाती है ३ ब्रह्मवल्ली में विशेषकर गयाजीके श्राद्धके समान पुण्य है वहांजाकर पिण्ड देनेसे पितर तृप्ति को प्राप्तहोजाते हैं ४ गोदान, पृथ्वी और अन्नका दान इनदानोंके समान विशेषकर ब्रह्मवल्लीमें पुण्यहै ५ यहींपर सनकादिक विधिपूर्वक स्नानकर परब्रह्मजीके चरणों के ध्यानसे विष्णुलोकको प्राप्त हुए हैं ६ पुष्कर, गंगा और अमरकण्टक क्षेत्रमें जाने से जो फल मनुष्य को मिलताहै ७ वह ब्रह्मवल्ली में विशेषकर मिलताहै चंद्रमा और सूर्यके ग्रहण में जे मनुष्य दानदेते हैं ८ तिसफलको ब्रह्मवल्ली में मनुष्य पाताहै सुन्दर रूपके धारण करनेवाले और शंख, चक्र और गदाके धारण करनेहारे ९ स्नानकर स्वर्ग में जाते हैं तुलसी

की मालाको मनुष्य धारणकर नारायणजी का स्मरणकर सुन्दर, आनन्दकारी और नाशरहित वैकुण्ठ पदको प्राप्तहोता है १० (इति ब्रह्मवल्लीतीर्थमाहात्म्यम्) फिर खण्डतीर्थ से प्रसिद्ध वृषतीर्थ को जावे तहां स्नानकर पूर्वसमयकी आश्रित गौवें स्वर्ग और गोलोक को प्राप्तहोगईथीं ११ जो संसारकी माता गौवें खण्डरूप धर्म्म से शाप से भ्रष्ट होगईथीं उनको इस तीर्थने रक्षाकिया तिसीसे खण्ड तीर्थ कहाताहै १२ तब पार्वतीजी बोलीं कि संसारकी माता गौवों को पूर्व्वसमय में किसका शापहुआ था कैसे संसार से भ्रष्ट होगई थीं और कैसे धर्म्मसे रक्षाकीगई थीं १३ तब महादेवजी बोले कि पूर्व्वसमय में गोलोकमें गौवों के साथ क्रीड़ा करतेहुए बैलने विष्ठा और मूत्रको छोड़ा तो वह महादेवजी के माथेमें गिरपड़ा १४ तब तो तिसी दोषसे महादेवजी ने गौवोंको शापदिया कि अपने लोक से संज्ञा नष्टहोकर तुम सब पृथ्वीको जावो १५ जब महादेवजी ने इसप्रकार शापदिया तो वे फिर महादेवजीको प्रसन्नकर फिर लोक को कैसे प्राप्तहूंगी यह उनसे मांगनेलगीं १६ तब महादेवजी ने कहा कि जब साभ्रमती तीर्थमें ब्रह्मवल्लीके समीप खण्डसंज्ञक ह्रद में स्नानकरोगी तब निश्चय स्वर्गको प्राप्तहोगी १७ तबतो गौवों ने शिवजी के कहनेके अनुसार बैलसमेत उस कुण्डमें स्नानकिया तो अत्यन्त शुद्धहोकर महादेवजी के समीपसे स्वर्गको प्राप्तहोगई १८ गौवोंके कुण्डमें मनुष्य स्नानकर पितरों को तर्पणकरे तो दाह और प्रलयसे वर्जित गौवोंके लोकको प्राप्तहोवे १९ वहांपर स्थित होकर जो मनुष्य निराहारहोकर गौवोंको पिण्ड देताहै वह जबतक चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक सुखको प्राप्तहोताहै २० गौवोंके क-रोड़ दानसे जो फल निश्चय प्राप्तहोताहै वह खण्डतीर्थमें निस्स-न्देह मिलताहै २१ बैलके मूत्रको लेकर जो मनुष्य तीर्थ में पीताहै तो तिसी क्षणसे शुद्धि होजाती है तैसेही खण्डतीर्थ में भी निस्स-न्देह शुद्धि होती है २२ खण्डतीर्थसे श्रेष्ठ तीर्थ न हुआहै और न होगा जे वहां जातेहैं ते मनुष्य पुण्य के भागी हैं २३ हे पार्व्वती! वहां जाकर गौवों और बैल को पूजन कर स्नान करै २४ पूजन

से निस्सन्देह बहुत कालतक गोलोकमें बसता है और वहां जाकर विशेषकर जे सोनेकी गऊ देतेहैं २५ वे मनुष्य जबतक चौदहोंइंद्र रहते हैं तबतक सुख भोगते हैं और दशधेनु को करके जो ब्राह्मण को खण्डतीर्थ में देताहै तो उसका अनंत फल होताहै वहां जाकर पण्डितों करके पीपलका पेड़ लगाना योग्यहै २६ । २७ इसके लगाने से पितृलोकको जाताहै और जे मनुष्य पांच आंवलेके सुन्दर पेड़ लगाते हैं २८ वे इस लोकमें सुख भोगकर हरिजीके लोकको प्राप्त होते हैं २९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेखण्डतीर्थनामचतुश्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४४ ॥

एकसौपैंतालीसका अध्याय ॥

सोमेश्वर तीर्थकी महिमा वर्णन ॥

श्रीमहादेवजी बोले कि महान् तीर्थ उत्तम संगमेश्वरजीको जावे जहांपर पुण्यकारिणी हस्तिमतीनदी साभ्रमती से मिलीहुई है १ और कौंडिन्यमुनिसे शाप पाकर नदी सूख जातीभई और बहिश्चर्या इसनामसे संसारमें प्रसिद्धता को प्राप्त होगई २ तिस पुण्यकारी, तीनों लोकमें प्रसिद्ध और सब पाप नाशने वाले तीर्थ को कहताहूं ३ जिस तीर्थमें मनुष्य स्नानकर महादेवजी के दर्शनकर सब पापों से छूटकर रुद्रलोक को जाताहै ४ हे देवि ! इस शापके कारणको कहताहूं सुनिये जिस प्रकारसे शापके कारणसे यह नदी सूखगईहै ५ जहांपर पुण्यकारिणी साभ्रमती गंगानाम महानदीहै तहांहीं हस्तिमती नदीभी गंगाजीहीसे मिलीहुई है ६ तहांपर कौंडिन्यमुनि ने बड़ीभारी तपस्याकीहै इसप्रकार बहुत समय बीतने पर परमात्मा ऋषिजी ने ७ हृषीकेश, नारायण, मायारहितको तिसी नदीके किनारे बहुत वर्षोंतक आराधन किया ८ बहुत वर्षोंके बीतने के पीछे तिन मुनिजी को कदाचित् दैवयोग से वर्षाकाल प्राप्त होगया ९ तब तो कालके योगसे नदी अच्छीतरह से भरगई कि रात्रिहीमें कौंडिन्यमुनिने स्थान छोड़दिया १० तो रात्रि में

दुःखहुआ हाहाकार कर करुणासे रोनेलगे और क्या करना चाहिये यह ध्यानकर अत्यन्त चिन्ता में परायण हुए ११ कि बड़ा सुन्दर हमारा स्थान ऋषिकरके युक्त रहता था वह जलके योगसे हस्तिमती में प्राप्त होगया १२ फल, मूल और बहुतसी पुस्तकेंभी जलके योगसे नदीही में प्राप्त होगईं १३ तब ऋषियों में श्रेष्ठ कौंडिन्यजी निश्चय तिस नदीको शाप देतेभये कि कलियुग में तुम विनाजलके होजावो १४ इसप्रकार ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ मुनिजी हस्तिमती नदीको शाप देकर सनातन विष्णुलोकको चलेगये १५ अब तक भी संगमेश्वरसंज्ञक तीर्थ वर्त्तमान है जिसको देखकर पापी ब्रह्महत्यादिक पापोंसे छूटजाताहै १६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेसोमेश्वरतीर्थमाहिमानामपंचचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४५॥

एकसौछियालीसका अध्याय ॥

रुद्रमहालयतीर्थकीमहिमावर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! फिर रुद्रमहालय नाम तीर्थको जावे जो कि केदारजी के सदृशहै और साक्षात् महादेवजीका रचा हुआहै १ वहांपर पितरों की तृप्तिका कारण श्राद्ध करनायोग्य है वहां के श्राद्ध करने से पितामहसमेत पितर २ तृप्त होकर रुद्रजी के श्रेष्ठपदको प्राप्त होतेहैं और जो मनुष्य रुद्रमहालय में कार्तिक वा वैशाखकी पूर्णमासी को बैल छोड़ता है वह महादेवजीसमेत आनन्द करताहै केदारजीमें जल पीकर फिर जन्म नहीं होताहै ३।४ और यहांपर स्नानहीमात्र से निस्सन्देह मुक्ति का भागी होता है हे पार्वती ! एकसमयमें मैं कैलासको छोड़कर यहां प्राप्तहोगया ५ तो साभ्रमती महागंगा को लोकके कल्याणके लिये जानकर स्नान और पानकर सबसे उत्तम तीर्थ करदिया ६ और फिर हम अपने स्थान कैलासको चलेआये तदनन्तर वह महापुण्यकारी महालय तीर्थ होगया ७ और संसारमें रुद्रमहालयके नामसे प्रसिद्धहुआ हे पार्वती ! कार्तिक वा वैशाखकी पूर्णमासी को जे मनुष्य वहांजाते

हैं उनको फिर सब संसार से उत्पन्न दुःख नहीं प्राप्त होता है ८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वर-संवादेरुद्रमहालयतीर्थंनामषट्चत्वारिंशाधिकशततमोऽध्यायः १४६॥

एकसौसैंतालीसका अध्याय॥

खड्गतीर्थकी महिमा वर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे देवि पार्वती! देवताओं को भी दुर्लभ, सब पापों के नाशकरनेवाले खड्गतीर्थ को सुनिये १ खड्गतीर्थ में मनुष्य स्नानकर खड्गेश्वर शिवजी के दर्शनकर दुर्गति को नहीं प्राप्तहोताहै स्वर्गलोकको चलाजाताहै २ हे पार्वती! खड्गधारेश्वर देवजी के जो दर्शन करता और कार्तिकमें विशेषकर पूजनकराता है ३ तो ये संसार के ईश्वर, सबके स्वामी और वांछित अर्थ के देनेवाले महादेवजी सबकुछ उसको देदेते हैं ४ वैशाखमें राज्य के कामनाकी इच्छा करनेवाला जो मनुष्य ईश्वरजी के दर्शन करता है तो विश्वनाथजी के प्रसादसे जल्द तिस अर्थको प्राप्त होताहै ५ फूल, धूप, नैवेद्य, दीप, फलके दान और बेलों से महादेव जीको पूजनकरै ६ तो श्री विश्वेश्वरजी के पूजनसे धनधान्य, पुत्र पौत्रादि सम्पदा जल्द निस्सन्देह प्राप्त होजाती हैं ७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वर-संवादेखड्गतीर्थंनामसप्तचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः१४७॥

एकसौअड़तालीसका अध्याय॥

मालार्कतीर्थकीमहिमावर्णन॥

महादेव जी बोले कि साभ्रमती के किनारे सबसे उत्तम गया तीर्थ है चित्रांगवदन नाम, शुभ मालार्क जी अधिष्ठित हैं १ जो कि कल्पवृक्ष, संतान, मन्दार, आम्र, नींब, कदंब, काश्मरी, पीपल और तिन्दुक के वृक्षों से शोभितहैं २ जिसके कोढ़ होगया हो तो मालार्कजी एक योजनसे भी जो स्मरण कियेगये हों तो भी उसके कुष्ठको नाश करदेते हैं ३ लड़का मरजानेवाली अथवा बांझ स्त्री

भी जो वेदकी कहीहुई विधिसे वहांपर अभिषेक कीजावे तो थोड़े ही समयमें पुत्रको प्राप्त होजावे ४ संध्या, स्नान, जप, होम, पढ़ना और देवताका पूजन जो सूर्यजीका भक्त मनुष्य मालार्क में करे तो नाशरहित होजावे ५ वहांजाकर श्रीसूर्यजीका व्रतकरै तो इसलोक में सुख भोगकर निश्चय सूर्यजी के लोकको प्राप्तहोवे ६ एकपुत्र मरजानेवाला श्रेष्ठराजा वहांजाकर तपस्या करताभया तो श्री मालार्कजी के प्रसादसे वह पुत्रको प्राप्त होगया ७ वहांजाकर विशेष कर व्रतकर जितेन्द्रिय जो मनुष्य मालार्कजी को पूजताहै वह निश्चय मुक्तिकाभागी होजाता है ८ वसिष्ठ इत्यादिक ब्राह्मण और इन्द्रादिक देवता सदैव मालार्क में सूर्यजी के समीप बसतेहैं ९॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे मालार्कतीर्थनामाष्टचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४८॥

एकसौउनचासका अध्याय॥

चन्दनेश्वरतीर्थका माहात्म्य वर्णन॥

महादेवजी बोले कि इस तीर्थ से श्रेष्ठ तीर्थ मालार्कके बीचही में स्थित, उत्तम, आमोदके स्थान, चन्दनेश्वर नाम तीर्थको जावे१ जहां पर महाबली भीमसेनजी ने दुश्शासन का रक्त पीकर अपनी घोर सब प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करलियाथा २ रक्तसे भरेहुए हाथों से भीमसेनजी द्रौपदी के जूड़ेको बांधकर ब्राह्मणों को दान देकर फिर तीर्थयात्राको चलेगये ३ साभ्रमती के सुन्दर किनारे भाइयों समेत भीमसेनजीगये और स्वर्ग्ग से भीमसेनजीने चन्दनके वृक्षको लाकर वहां पर प्राप्त करदिया ४ वह पुण्यतीर्थ के प्रभावसे लिंगता से उत्पन्न है वहां स्नान, पान और पितरों को तर्पणकर ५ मनुष्य नरक को नहीं जाताहै रुद्रलोकको प्राप्त होताहै संसार के स्वामी, लोकके कल्याण करनेवाले, चन्दनेशजी के दर्शनकर ६ यथाशक्ति से पूजनकरै तो जहां जाकर फिर शोच न करै वहांको प्राप्तहोवे जहां कैवर्तक राजा अनेक प्रकार से पूजाकर ७ शिवलोकको चलेगये जहां जाकर फिर शोच नहीं होताहै जहांपर ऋषि, स्नान करते हैं

और देव सनातन, साक्षात् विष्णु, ऐश्वर्य्य के देनेवाले परमात्मा नित्यही स्थित हैं यह साभ्रमती धन्यहै और संसारके स्वामी प्रभु जीभी धन्यहैं ८ । ९ हे पार्व्वती ! जहांपर अनेकों तीर्थ पृथ्वी उत्पन्नहैं यहांपर आमर्दकी के अनेकप्रकार के शुभ और पुण्यकारी फलोंसे १० विधिपूर्वक अर्घदान करना चाहिये ११ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेचन्दनेश्वरमाहात्म्यंनामैकोनपञ्चाधिकशततमोऽध्यायः १४९ ॥

एकसौपचासका अध्याय ॥

जाम्बवततीर्थ का माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले किस्नानके लिये फिर पापोंके नाश करनेवाले जम्बूद्वीप को जावे जो कलियुग में पुरुषों को स्वर्ग्ग की सीढ़ी के समान स्थितहै १ जहांपर पूर्व्वसमय में उत्तम पर्व्वत में जाम्बवान् ने दशों अंगोंसे देवसमूहोंसे पूजित ऋक्षराजेश लिंगको स्थापित कियाथा २ जब पूर्व्वकाल में रामचन्द्रजी ने रावण राक्षसको मारा था तब जाम्बवान् ने दिशाओं में नगारे के शब्दोंसे ढिंढोरा बजवा दियाथा ३ कि रामचन्द्रजी की जीतहुई उन्हों ने लड़ाई में रावण को मारडाला और सीताजी को प्राप्त होकर शुभ, श्रेष्ठ तीर्थ में स्नान कियाहै ४ वहींपर अपने नामसे जाम्बवान् ने मूर्ति स्थापन कियाहै तहांपर मनुष्य स्नानकर शीघ्रही राम लक्ष्मणजी को स्मरणकर ५ जाम्बवन्तेश्वरजीको भी स्नान कराकर रुद्रलोकमें प्राप्त होताहै हे पार्व्वती ! जहां जहांपर श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण किया जाताहै वहां वहांपर स्थावर जंगममें संसारके बन्धनका मोक्ष दिखाई देताहै ६ हमको रामचन्द्र और रामचन्द्रजीको रुद्र जानना चाहिये हे देवि ! ऐसा जानकर कुछ भी भेद नहीं है यह समझना चाहिये ७ और मनसे जे मनुष्य राम, राम, राम यह जप करते हैं तिनको युगयुगमें सब अर्थों की सिद्धि होती है ८ हे देवि ! मैं भी सदैव श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण करताहूं जिसको सुनकर फिर कहीं जन्म नहीं होताहै ९ और काशीजी में नित्यही बसकर सदैव भक्ति

से विधिपूर्व्वक कमलकेसमान नेत्रोंवाले श्रीरामचन्द्रजीको स्मरण करताहूं १० तिससमय जाम्बवान् ने पूर्व्वसमयमें अत्यन्त सुंद श्रीरामचन्द्रजी को स्मरणकर संसार के गुरु जाम्बवन्त नामसे प्र सिद्ध भगवान्को स्थापितकिया ११ तहां स्नान, भोजन और भग वान् का पूजनकर मनुष्य जब तक चौदहों इन्द्र रहते हैं तब त शिवलोकमें प्राप्तहोता है १२ यहां स्नानही मात्रसे जैसे जांबवा के बलहै वैसेही बलको भगवान् के प्रसाद से मनुष्य पाताहै १ यहां जाकर जो मनुष्य पृथ्वीका दान करताहै तो जांबवन्तेशजी दर्शनसे हज़ारगुणे फलको प्राप्त होताहै १४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवा जाम्बवततीर्थमाहात्म्यंनामपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५० ॥

एकसौइक्यावनका अध्याय ॥

धवलेश्वरतीर्थका माहात्म्यवर्णन ॥

महादेवजी बोले कि इस तीर्थसे श्रेष्ठतीर्थ इन्द्रग्रामहै जहांप पूर्वसमय में स्नानकर इन्द्र घोरपापसे छूटगयेथे १ तब पार्वतीज बोलीं कि किस कर्मसे इन्द्र घोर पापको प्राप्तहुएथे और पापरहि कैसे होगयेथे यह विस्तारसे कहिये २ तब महादेवजी बोले कि पू समयमें देवताओं के ईश्वर इन्द्रजी और असुरोंके स्वामी नमु ये दोनों मिलकर विनाशस्त्र के परस्पर मारनेकी प्रतिज्ञा करतेभ ३ तदनन्तर आकाशवाणी की आज्ञासे इन्द्रने नमुचिको तिसी मयमें मारडाला और फेनलेलिया तो तिसीसमयमें ब्रह्महत्या इं को लगगई ४ तब उन्हों ने बृहस्पतिजीसे पाप के नाशका कार पूछा तो बृहस्पतिजी की आज्ञासे साभ्रमती के उत्तर किनारे ५ आकर इन्द्रने स्थान बनाया और वहांके स्नानमात्रही से पापरहि होगये ६ देहमें पूर्ण चन्द्रमाके समान सफ़ेद दीप्तिहोगई तब इं ने धवलेश्वर ईशानजीको स्थापित किया ७ जोकि इन्द्रही के ना से वह लिंग पृथ्वीतलमें प्रसिद्ध हुआ पूर्णमासी तथा अमावास्य संक्रान्ति तथा ग्रहणमें ८ श्राद्धकरनेसे पितरोंकी बारहवर्षकी तृ

जाती है और धवलेश्वरमें जो ब्राह्मणोंको भोजन कराताहै ९ तो
क ब्राह्मणके भोजन कराने से हज़ारका भोजन होजाता है सोना,
थ्वी और कपड़ाभी अपनीशक्तिसे देनाचाहिये १० और दूध और
छवासमेत सफ़ेद गऊ ब्राह्मणको देनीचाहिये यहांआकर जो ब्रा-
ह्मण रुद्रजाप्य आदिक करताहै ११ तो श्रीमहादेवजी के प्रसादसे
ह कियाहुआ करोड़गुणा होजाताहै और इसतीर्थमें जो मनुष्य व्रत
आदिक करताहै १२ तो वह निस्सन्देह सब कामनाओंसेयुक्त होता
है बेलपत्रको लेकर जो प्रभुजीको पूजताहै १३ तो वह मनुष्य पृथ्वी
में धर्म,अर्थ और कामको प्राप्त होताहै और जे उत्तम मनुष्य सोम-
वारमें विशेषकर जाते हैं १४ तिनके रोग तथा दोषको धवलेश्वरजी
नाश करदेते हैं विशेषकर इतवारमें जे पूजन करते हैं १५ तिनकी म-
हिमाको हे देवि! मैंभी किसीतरहसे नहीं जानसक्ताहूं दूब, मदारके
फूल,कह्लार और कमलके फूलोंसे १६ जे मनुष्य इनकी पूजन करते हैं
वे पुण्यके भागी होते हैं सफ़ेदफूल लेकर धवलेशजीकी पूजाकरै १७
तो धवलेशजी के प्रसादसे वाञ्छितको नित्यही प्राप्तहोवे सतयुग में
नीलकण्ठजी सबके सदैव कल्याण करनेवाले हुए १८ त्रेतायुगमें
हर, भगवान्, प्रभुजी विख्यात हुए द्वापर में शर्व्वसंज्ञक हुए और
कलियुग में निश्चय धवलेश्वरजी हुएहैं १९ इस अर्थ में जो पूर्व
समयका वृत्तान्त है तिस को हे पार्व्वती! सुनिये पूर्व्वसमय में इ-
न्द्रग्राम में नन्दिनाम वैश्य बसताथा २० वह महादेवजी के ध्या-
नमें परायण होकर शिवजी की पूजा करताथा और नित्यही तपो-
वन में स्थित धवलसंज्ञक लिंगको २१ सबेरे सबेरे उठकर प्रति-
दिन वह शिवजी का प्यारा मनुष्य पूजन करता था और नन्दीके
पूजन में अत्यन्त रत था २२ और शास्त्रकी विधि से फूलोंसे पूज-
नमें परायण था एक समय में शिकार में लुब्ध, प्राणियों की हिंसा
करने वाला, किरात २३ पापी, पापही का आचार करनेवाला सा-
भ्रमती के किनारे में घूमताहुआ कि जहांपर अनेक जीव भरेहुए थे
वहांपर बाणों से हरिणों को मारता हुआ २४ इसी प्रकार से प्रा-
णियोंका मारने वाला किरात घूमता घूमता इच्छासे पूजीहुई मूर्ति

२५ धवलेश्वरजी की जोकि अनेक आश्चर्यों से शोभित और अनेक प्रकार के फूल और फलों से पूजितथी २६ इस प्रकार के लिंग को आलिंगनकर साभ्रमती के किनारे गया वहां अच्छी त-रहसे जल पीकर मुखमें जल भरलिया २७ एक हाथसे हरिण के मांसको लेकर और दूसरे से पूजाके लिये बेलपत्र लेकर २८ शी-घ्रही लिंगके समीप आकर पांव से पूजाको मारकर सब फूलों को इधर उधर फेंक देताभया २९ और मुंहके जलसे लिंगको स्नान कराकर एक हाथसे पूजाके लिये बेलपत्र चढ़ाकर ३० और दूसरे हाथ से हरिण के मांसको अर्पणकर दण्डप्रणाम कर मनसे संक-ल्प करताभया ३१ कि हे शङ्करजी! आजसे मैं यत्न से आप की पूजा करूंगा आजसे आप हमारे स्वामीहुए और मैं आपका भक्त हुआहूं ३२ इस प्रकार नियमयुक्त होकर किरात घर में प्राप्त हो-गया सवेरा होनेमें शिवजीके स्थानमें नन्दीगये तो उन्होंने किरात की कीहुई सब पूजाको देखा और महादेवजी के समीप अपवित्र मांसकोभी देखा ३३।३४ और पहलेके नन्दीके चढ़ायेहुए सबफूल आदिकोंको दुरात्माजीव मारनेवाले किरात करके इधर उधरफेंके देखकर नन्दी चिन्तायुक्त होगया और यह कहनेलगा कि इसस-मयमें हमको क्या चित्रउत्पन्न हुआहै ३५ महादेवजी की पूजा में रत हमको भाग्यकी हीनता से विघ्न उपस्थित हुएहैं ३६ इस प्र-कार बहुत कालतक विचारकर शिवजी के मन्दिरको धोकर जिस राहसे होकर आया था उसी से होकर नन्दी अपने घर को चला आया ३७ तदनन्तर पुरोहितजी नन्दीको उदासीन देखकर बोले कि तुम क्यों उदासहो ३८ तब नन्दी पुरोहितजी से बोले कि हे विप्र! इस समय में मैंने शिवजी के समीप मांस चढ़ने की अप-वित्रता देखीहै ३९ परन्तु यह नहीं जानताहूं कि किसने किया है तदनन्तर पुरोहितजी नन्दीसे बोले ४० कि जिसने फूल आदिकों का पूजन फेंक दियाहै वह निस्सन्देह मूर्खहै कार्य्य अकार्य्यमें मंद-बुद्धिहै ४१ तिससे हे प्रभुजी! आप चिन्ता न कीजिये प्रातःकाल हमारे साथ शिवजी के मन्दिर को ४२ दुष्टके देखनेके लिये चलिये

तिसको मैं दण्ड भी दूंगा ये पुरोहित के वचन सुनकर नन्दी ४३ कम्पते हुए चित्तसे रात्रिमें अपने घरमें रहा और रात्रि बीतजाने पर पुरोहितजी को बुलाकर ४४ उन्हीं महात्मा के साथ शिवजी के स्थानको गया और वहां अच्छीतरहसे धोकर अनेकप्रकार के रत्न-परिच्छद, पांच उपचारोंसे युक्त पूजन ब्राह्मणसमेत कर दो पहर नन्दी ने स्तुतिकी ४५।४६ तब महाकाल, भयंकर, महाबली, कालरूप, महारौद्र, प्रतापयुक्त, धनुष हाथ में लियेहुए किरात भी आगया ४७ तिसको देखकर भयसेडरेहुए नन्दी वहींपर छिपरहे और पुरोहितजी भी सहसासे तिससमय में भयभीत होगये ४८ फिर किरात ने पहले की नाईं पांवसे सब फूल आदिकोंको फेंकदिये और बेलपत्र चढ़ादिया ४९ मांसकी नैवेद्यसे शिवजीको पूजा और पृथ्वी में दण्डवत् गिर कर उठकर अपने घरको चलाआया ५० तिस महाआश्चर्य्य को देखकर व्याकुलचित्त पुरोहितसमेत नन्दी बहुत देरतक चिन्तना करनेलगे ५१ और नन्दी ने तिस समय में ब्राह्मणों से पूंछा कि आपलोग जैसाहो वह ठीकठीक कहिये तब तो सब ब्राह्मण मिल कर धर्म्मशास्त्र देखकर ५२ शङ्कायुक्त नन्दी से बोले कि महादेव जीमें विघ्न उत्पन्न हुआहै जो देवताओं से भी निवारण नहीं होसक्ताहै ५३ तिससे हे बनियोंमें श्रेष्ठ! तुम इस मूर्तिको अपने घर में लेजावो तब तो नन्दी ब्राह्मणों के वचन अंगीकार कर महादेव जीकी मूर्त्तिको उखाड़कर ५४ अपने घरलाकर विधिपूर्वक स्थापित कर नये केलाओं से शोभित सोनेकी पीठिका बनाकर ५५ अनेक उपहारों से तिससमय में पूजन करते भये तदनन्तर इसके दूसरे दिन किरात फिर शिवजी के मन्दिर में आया ५६ तो महादेवजी की मूर्त्तिको न देखकर मौनहोकर सहसासे छोड़कर रोकर यहबोला ५७ कि हे महादेवजी! आप कहां चलेगये निश्चय इससमयमें अपने दर्शन दीजिये यदि आप दर्शन नहीं देंगे तो इसी समय में मैं देहको छोड़दूंगा ५८ हे शम्भुजी! हे जगन्नाथ! हे त्रिपुरासुर के नाश करनेवाले! हे शंकर! हे रुद्र! हे महादेवजी! आप अपने दर्शन दीजिये ५९ इसप्रकार साक्षेप मीठे वचनों से सदाशिवजी को

क्षेपणकर वह धीरकिरात छूरीसे अपने पेटको ६० जल्द काटकर फिर भुजाकोभी प्राप्तहोगया और क्रोधसे ऊंचे स्वरसे बोला कि हेमहादेव जी अपने दर्शन दीजिये हमको छोड़कर आप कहांजाते हैं ६१ ऐसा क्षेपणकर फिर आंतों और मांसको सब ओर से इकट्ठाकर हाथसे तिस गढ़े में सहसासे फेंक देताभया ६२ और स्वच्छहृदयकर साभ्रमती में स्नानकर मुखमें जल भरकर शीघ्रतायुक्त होकर बेलपत्रको लेकर ६३ न्यायसंयुक्त पूजनकर पृथ्वी में दण्डवत् गिरताभया और शिवजी के समीप जब ध्यानसें स्थितहोगया ६४ तब प्रमथोंसे युक्त महादेवजी प्रकट होगये जो कि कपूरके समान गौर, दीप्तियुक्त, जटाकाजूट धारणकिये और चन्द्रमा माथे में है ६५ इसप्रकार के महादेवजी तिसका हाथ पकड़कर शांतकरतेहुए बोले कि हे वीर! हे महाबुद्धिमान्! हे महामति! तुम हमारे भक्तहो ६६ हे भक्त! जो तुम्हारे मनमें वर्तमानहो वह वरमांगो इसप्रकार जब महादेवजी ने कहा तब आनन्दयुक्त महाकाल ६७ श्रेष्ठभक्तिसे युक्त पृथ्वी में दण्डकीनाईं गिरताभया तदनन्तर महादेवजी से बोला कि मैं वरको नहीं मांगताहूं ६८ हे रुद्रजी मैं आपका दासहूं और आप निस्सन्देह हमारेस्वामी हैं यही संसार में सबसे अच्छा है इसको जन्म जन्म में दीजिये ६९ आपही माता, पिता, बंधु, मित्र, गुरु, महामंत्र और मंत्रों से सर्वदा जाननेयोग्यहैं ७० इसप्रकारके किरातके कामनारहित वचन सुनकर महादेवजी पार्षदों में मुख्य द्वारपालकता देतेभये ७१ तबतो तीनों भुवनों में डमरूका शब्द, भेरी भांकारका शब्द और शंखोंके शब्दसे बड़ाभारी शब्दहुआ ७२ और नगारा और पटह हज़ारों बजनेलगे नन्दी तिस शब्दको सुनकर विस्मय से शीघ्रही उस तपोवनको गये जहांपर प्रमथों से युक्त महादेवजी थे और वहांजाकर नन्दी ने अच्छीतरहसे किरातको देखा ७३।७४ और परनसमाधिसे किरातकी स्तुति करनेकी कामनाकर विस्मययुक्त होकर उनसे बोला ७५ कि आपने महादेवजी को यहां प्राप्त किया आप शिवजी के भक्त, शत्रुओंके ताप करानेवालेहैं आपका भक्त मैं यहां प्राप्तहुआ हूं मुझको महादेवजी में निवेदन करदी-

जिये ७६ नन्दी के ये वचन सुनकर शीघ्रतायुक्त किरात नन्दीका हाथ पकड़कर महादेवजी के पास प्राप्तहोगया ७७ तब भगवान् महादेवजी हँसकर किरातसे बोले कि कहिये गणों के समीप तुमने किसको प्राप्तकियाहै ७८ तब किरात बोला कि हे देव! यह आपका भक्तहै आपकी पूजामें प्रतिदिन रत्न और माणिक्य के छोटे बड़े फूलों से रत रहताहै ७९ और निस्सन्देह इसने जीवन और धन से आपको पूजाहै तिससे हे स्वामिन्! हे भक्तवत्सल! आप इस नन्दीको जानिये ८० तब महादेवजी बोले कि हे महाभाग! हे महाकाल! हे महाबुद्धिमान्! मैं इस नन्दी बनियें को जानता हूं तुम हमारे भक्त और सखाहो ८१ जे उपाधिरहित, निष्कपट मनवाले हैं वेहीप्रिय, हमारेभक्त, श्रेष्ठ और उत्तम मनुष्यहैं ऐसा कहकर महादेवजी ने नन्दी और किरात को पार्षद के भाव में स्वीकार कर लिया ८२ तदनन्तर बड़ी दीप्तिवाले बहुतसे विमान वहांपर प्राप्त होगये बड़ी दीप्तिवाले श्रेष्ठ किरातने बनियों में श्रेष्ठ नन्दी को उद्धार करदिया ८३ और किरात और नन्दी ये दोनोंभक्त अत्यन्त वेगवाले विमानोंपर चढ़कर कैलासलोक को प्राप्त होगये और ईश्वर महात्मा की सारूप्यता को भी प्राप्तहोगये ८४ तबतो हाथी कीसी मन्दचाल चलनेवाली पार्वतीजी पुत्रोंकीनाईं उन दोनोंगणों की आरतीकर हँसकर यह बोलीं कि हे महादेवजी! जैसे आपहैं वैसेही सारूप्य, गति और अच्छे हावभावों से ये दोनों निस्सन्देहहैं पार्वतीजी के ये वचन सुन किरात और बनियां ८५।८७ महादेवजी के देखतेही देखते शीघ्रही पराङ्मुखहोगये और दोनोंगण शीघ्रतायुक्त उनके देखतेही देखते बोले ८८ कि हे तीननेत्रवाले महादेव जी! आपकरके हम दोनों के ऊपर कृपाही करनी योग्यहै नित्यही हम आपके द्वारमें स्थितहोंगे आपके नमस्कारहैं ८९ तबतो भगवान् महादेवजी तिन दोनोंका भाव जानकर हँसकर श्रेष्ठ भक्तिसे बोले कि तुम दोनोंका वांछितहोवे ९० तबसे लेकर हे पार्वती! वे दोनों द्वारपाल होगये शिवजी के द्वारमें स्थित रहनेलगे मध्याह्नमें शिवजी के दर्शन करनेलगे ९१ पहलानन्दी और दूसरा महाकाल

ये दोनों शिवजी के प्यारेहुए—जेपापी अधर्मी अन्धे, बौरे, लँगड़े, ९२ कुलहीन, दुरात्मा, श्वपच आदिक मनुष्य हैं और जैसे तैसे और भीहैं वे सब धवलेश्वरजी को आराधन कर और वहां प्राप्तहो कर कैलासहीको चलेजाते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं करना चाहिये इसमें स्नान, दान और शंकरजी के समीप रहने से शिवलोकहीमिलताहै ९३।९४ साभ्रमती में जे स्नानकरते हैं और धवलेश्वरजी को पूजते हैं वे निस्सन्देह स्वर्गलोकको जाते हैं ९५ इसमें जे उत्तम मनुष्य स्नान और दान करते हैं वे धर्म, अर्थ, काम और भोगोंको भोगकर शिवजी के स्थानको जाते हैं ९६ चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहणमें, पिताकी श्राद्धमें जो फल मनुष्यको मिलताहै वह फल निश्चय यहां मिलताहै ९७ स्वर्ग से कामधेनुगऊ नित्यही यहां आती है और आकर तिन शिव, देवजीको अच्छीतरह से पूजनकर ९८ निस्सन्देह स्वर्गको चलीजाती है तिसी दूधके संयोगसे यह लिंग सफेद कियागयाहै ९९ इसीसे पृथ्वी में सदैव धवलेश्वरनाम हुआ है हे देवि! यहांपर जे प्राणी कालसे प्रेरित होकर मरजाते हैं वे जब तक चन्द्रमा और सूर्य्य रहते हैं तबतक शिवजी के पदको प्राप्त होते हैं १०० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे धवलेश्वरमाहात्म्यंनामैकपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५१ ॥

एकसौबावनका अध्याय ॥

वालार्कतीर्थकी महिमा वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ, साभ्रमती के किनारे पर स्थित, भुक्ति और मुक्तिका देनेवाला वालार्कनाम से प्रसिद्धहै १ जो कि तपस्वियों से धारित और देवताओं के आश्रय है वहां पर कण्वमुनिकी कन्याने वड़ीभारी तपस्याकीथी यह कन्या साध्वी, अत्यन्तरूपवती, बाला, कुमारी, ब्रह्मचारिणी और बालावती नाम वाली थी २।३ इसने बहुत नियमों से युक्त होकर सावित्रीजी का व्रतकियाथा कि हमारे स्वामी जिसमें सूर्यनारायण होवें यह निश्चय

कर ४ उसको साभ्रमती के किनारे दशवर्ष भक्ति से परमदुश्चर नियमकरतेहुए बीतगये ५ तिसके तिसव्रत, तपस्या, व्रतचर्य्या, भक्ति और श्रेष्ठ भक्तिकी संपदासे भगवान् सूर्य्यनारायण, देवों के देव,महामन, दिवाकरजी प्रसन्न होकर श्रेष्ठ ब्राह्मणकारूप धारणकर उसके आश्रममें प्रविष्टहोगये ६। ७ वह घोर तपस्या से अत्यन्त श्रेष्ठ, ब्रह्मके जाननेवाले तिन ब्राह्मणको देखकर वानप्रस्थकी विधि से उनकी पूजन करतीभई ८ और सूर्य्यजीकी भक्त, कल्याणी वह कन्या तिन तपस्वीजी से बोली कि हे भगवन्, हे मुनिशार्दूल ! हे प्रभुजी! क्या आज्ञाहै ९ अपनी देहके विना यथाशक्ति और सब तुमकोदूंगी सूर्य्यजीकी भक्तहूं इससे किसीतरहसे हाथ न दूंगी १० हे तपोधन ! व्रत, नियम और तपस्यासे देव ! तीनोंभुवन के ईश्वर सूर्य्यजी प्रसन्न करने के योग्यहैं ११ तिसके इसप्रकार के कहने को सुनकर तिसको देखकर सूर्य्यनारायणजी नियम में स्थित तिसको शांत करतेहुए बोले १२ कि हे कल्याणि! हे बाले ! तुम परमदुष्कर तपस्या करतीहौ जिसकेलिये तुम्हारा आरम्भहै वह तैसाही है १३ तपस्यासे सब मिलताहै तपस्यामें सब स्थितहोताहै हे भद्रे! तपस्या से देवतापन और मोक्ष प्राप्तहोता है १४ हे सुभगे ! इन पांच हमारे बेरों को परखो और इनको पकावो ऐसा कह बेरोंको देकर सूर्य्यजी चलेगये १५ महायशवाले ब्राह्मणकारूप धारण करनेवाले सूर्यजी तिस कल्याणी से न पूंछकर और तिसको छोड़कर समीपही इन्द्र-ग्राममें स्थितहोगये १६ ब्राह्मण, रवि,भास्करजी तिसकेभाव जानने की इच्छासे स्थितहोकर बेरोंका उपवन करावतेभये १७ तदनन्तर वह श्रमरहित, बाला हाथ जोड़कर बेरोंकेपकाने के लिये अग्निको जलातीभई १८ और महादीप्तिवाली वह कन्या बेरोंको पकातीभई बेरों के पकाने में उसका बहुत समय व्यतीतहोगया १९ बहुतसा भस्मका समूहहोगया, दिनभी व्यतीतहोगया और अग्निसे बहुत सा काष्ठसमूह जलगया २० तब पीछेसे वह बाला पांवधोकर पवित्र दर्शनवाले अग्निमें बेरोंकेलिये और ब्राह्मणके प्रसन्न करनेकी काम-नासे पांवोंको जलातीभई २१ वारंवार पांवोंको जला जलाकर अग्नि

के ऊपरही धरतीभई तदनन्तर इसका यह कर्म देखकर सूर्य्यदेवजी प्रसन्न होकर २२ कन्याको अपनारूप दिखलाकर तिस दृढ़व्रतवाली से परमप्रसन्न होकर बोले २३ कि हे बाले! तुम्हारी भक्ति, व्रतचर्य्या और तपस्या से मैं प्रसन्न हूं जिससे तुम्हारे जो अभीष्ट कामनाहो वह मांगिये २४ इस हमारे तीर्थ और घरमें तू बसेगी और यह श्रेष्ठ तीर्थ तुम्हारे नामसे लक्षित २५ बालापनामसे प्रसिद्ध, साभ्रमतीके किनारे स्थित, तीनोंलोकों में विख्यात और पूर्वसमय में ब्रह्मर्षियों से स्तुति कियाहुआ है २६ बालातीर्थ में मनुष्य स्नानकर पवित्र होकर तीनरात्रि बसे और सूर्य के उदयसमयमें रक्तादित्यजीके मुख के दर्शनकरे २७ तो निस्सन्देह सूर्य्यलोक को प्राप्तहोवे इतवार, संक्रान्ति, विशेषकर सप्तमी २८ विषुवति अयन, चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण में स्नानकर देवता पितृ और पितामहों को तर्पणकर २९ ब्राह्मणोंको गुड़धेनु और गुड़भातदेवे करवीर और जपाकेफूलोंसे रक्तादित्यका पूजन ३० जे मनुष्य करते हैं वे सूर्यलोकमें बसते हैं जो मनुष्य लालगऊ और एक बैलको देताहै ३१ वह यज्ञके फल को प्राप्त होताहै नरकको नहीं जाताहै रोगी रोगसे छूटजाताहै बँधाहुआ बंधनसे छूटजाताहै इस तीर्थमें पिण्डदान करनेसे पितामह तृप्तिको प्राप्त होजाते हैं ३२ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! और भी इस तीर्थका माहात्म्य सुनो पूर्वसमयका वृत्तांतहै इसको व्यासजीने कहाथा ३३ पूर्वसमय में यहांपर बूढ़ा भैंसा, बुढ़ापे से जर्जर कियाहुआ, भारधोने में असमर्थ होगयाथा तब उसके मालिक ने यहींपर छोड़दिया था ३४ वह गरमी में जलपीने को महानदी को गयाथा तो भाग्यवश से कीचड़में फँसकर मृत्युको प्राप्त होगयाथा ३५ पुण्यकारी जल में उसके हांड़ डूबगये थे इससे इस तीर्थ के प्रभावसे वह कान्यकुब्जेश्वर पुत्र, जातिका स्मरण बना रहनेवाला राजाहुआथा ३६ तब अपने वृत्तान्त को स्मरणकर और तीर्थ के प्रभावको भी स्मरणकर यहां आकर तिस जलमें स्नानकर अनेक प्रकारके दानदेकर ३७ वहांपर देवदेव महेश्वरजी को स्थापित कर देताभया—इस तीर्थमें मनुष्य स्नानकर महिषेश्वरजी को पूजनकर

३८ रक्तादित्यजी के दर्शनकरै तो सब पापों से छूटजावे जहांपर साभ्रमती का जल पूर्व्वसे पश्चिमको जाताहै ३९ वह प्रयागसे भी अधिक पुण्यकारी, सब कामनाका देनेवाला है यहांपर ब्राह्मणों में दान, अग्नि में हवन, श्राद्ध और जपकरना सब नाशरहित होता है ४० गऊ, पृथ्वी, तिल, सोना, कपड़ा, धान्य, शय्या, आसन, वाहन और छतुरी का दान करना भी नाशही नहीं होता है और मनुष्य जिस जिस कामनाकी इच्छा करताहै तिस तिसको श्रीमहादेवजी के प्रसाद और इस तीर्थ के प्रभावसे प्राप्त होताहै यह बालापेन्द्र तीर्थ सदैव पुण्यकारी और पाप नाशनेवाला है ४१। ४२ जिनके दर्शनकर सम्पूर्णमुनि सदैव रागरहित होते हैं जहांपर माहिषनाम श्वेताख्य अत्यन्त पुण्यका देनेवाला तीर्थ है ४३ हे पार्वती ! जहां स्नानकर फिर जन्म नहीं होताहै और गोदावरी में स्नान करनेसेजो फल मनुष्य को मिलताहै वह निस्संदेह इसतीर्थमें मिलताहै ४४॥

इतिश्रीपाद्ममहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वर-संवादेबालापेन्द्रतीर्थनामद्विपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५२॥

एकसौतिरपनका अध्याय॥

दुर्द्धर्षेश्वरजीका माहात्म्यवर्णन॥

महादेवजी बोले कि और उत्तम दुर्द्धर्षेश्वर तीर्थ को कहता हूं जिसके स्मरणहीमात्र से पापी भी पुण्यवान् होजाता है १ देवता और असुरों के युद्ध होने में दैत्यों के नाश होजाने पर शुक्रजी ने जहांपर दुर्द्धर्ष व्रतकर २ लोकोंके कारण दुर्द्धर्ष महादेवजी को आ-राधनकर जहांपर उनसे मृतसंजीवनी विद्या को प्राप्त हुए ३ यह दैत्योंके लिये शुक्रजी का तीर्थ पृथ्वीतल में विख्यातहै इस तीर्थ में स्नान कर दुर्द्धर्षेश्वर महादेवजी को पूजन करै तो मनुष्य सब पापों से छूटजावे हे पार्व्वती ! यहांपर तुमको वृत्तान्त सुनना चा-हिये ४। ५ पूर्व्वसमय में जब वृत्रासुर और इन्द्रका युद्धहुआ तब असुरों से देवता जीतलियेगये फिर देवताओं के ईश्वर इन्द्र क्या करना चाहिये यह ध्यानकर गुरु बृहस्पतिजी के पासगये ६ और

वहां जाकर उनसे बोले कि हे दयानिधिजी! हमारे तुम साक्षात् गुरु, सदैव देवोंके पालक, ऋषियों में श्रेष्ठ, श्रीयुक्त आपहैं इससे कृपा कीजिये ७ हे अच्छेव्रत करनेवाले! वृत्रासुर ने हमको जीत लिया है इसलिये हम कहा जावें ८ तब बृहस्पतिजी बोले कि हे इन्द्र! मैं कहताहूं सुनिये जिससे तुम सदैवरहो ऐसे हमारे वाक्य को करो यदि अपने कल्याणकी इच्छाहो ९ तो साभ्रमती में जावो और वहां जाकर सुखी होवो जहांहीं ऐश्वर्य्य के देनेवाले दुर्द्धर देवजी नित्यही स्थित हैं १० हे देवताओं के स्वामी! वे देव सत्य सत्य वाञ्छित कामनाओं को देतेहैं गुरुजी के वचन सुनकर इन्द्र नदीपरगये ११ और वहां स्नानकर महादेवजी को पूजन किया तो स्नान और पूजनसे प्रसन्नहोकर महादेवजी बोले कि जिसजिसको नित्यही चाहतेहो तिस सबको मैं दूंगा ये महादेवजी के वचन सुन कर इन्द्र श्रेष्ठ वचन बोले १२। १३ कि आप सब लोकों के नाथ कारण, पद, संसारके ईश्वर, देव सदैव हमकरके देखेजाते हैं १४ हे संसार और देवताओं के ईश्वर! महादेवजी! यदि आप हमारे ऊपर प्रसन्नहैं तो वृत्रासुर को मारिये यह हमारा भारी कामहै १५ तब महादेवजी बोले कि हे देवताओं के स्वामी इन्द्र! तुम्हारे वचन से वृत्रासुर को मैं मारूंगा अब मैं जो शस्त्र देताहूं तिनको ग्रहण करो १६ तिसीसे निस्सन्देह तुम्हीं मारडालोगे १७ तब इन्द्र बोले कि हे संसारके स्वामी महादेवजी! कौन अस्त्रहै जिससे मैं वृत्रासुर को मारूंगा तिसको कहिये क्या वज्रसेभी अधिकहै और कब आप ने रचाथा १८ तब महादेवजी बोले कि हे इन्द्र! इस पाशुपतअस्त्र को मैंने पूर्व्वसमयमें रचाथा इसको तुम्हारेहीलिये रक्षित रक्खाहै किसीको दिया नहीं है १९ यहांपर तुमने स्नान और पूजन किया है इससे हमसे शस्त्र को लो जिससे वृत्रासुर को मारोगे २० तब इन्द्रने श्रीमहादेवजी के प्रसादसे शस्त्रको प्राप्तकिया और तिसी पाशुपतअस्त्र से महाबली वृत्रासुर को मारडाला २१ यह सब यहां पर दुर्द्धर्षेशजी के प्रसादसे हुआहै हे पार्व्वती! स्नान और पूजन करने से शीघ्रही २२ तीर्थके प्रभावसे सत्य सत्य प्राप्त हुआहै एसा

जानकर वहांपर स्नान और सब पापों के नाश करनेवाले महादेव जीके दर्शन करै २३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेदुर्द्धर्षेश्वरमाहात्म्यंनामत्रिपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५३ ॥

एकसौचौवनका अध्याय ॥

खड्गधारेश्वर का माहात्म्यवर्णन ॥

साभ्रमती के किनारे परमपवित्र तीर्थ छिपाहुआहै जिसका खड्गधार नामहै यह कलियुग में गुप्तहोगा १ जहां स्नान और इच्छापूर्वक जलपान करनेसे मनुष्य सब पापोंसे छूटकर रुद्रलोकमें प्राप्त होताहै २ जहां पुण्यकारी,साभ्रमती, सती, कश्यपजी के अनुगतहै और पातालगामी महादेवजी ने जटाजूट में धारण की है ३ वहांपर खड्गधार नाम महादेवजी स्थितहैं हे पार्वती ! जहां स्नानकर पापी भी मनुष्य स्वर्गको जाते हैं ४ यहांपर पुराने इतिहास को कहताहूं जिस परमदुष्कर व्रतको किरातने कियाथा ५ तब पार्वतीजी बोलीं कि किरात का क्या नामथा उसने कौन व्रत कियाथा यह सब हमारे सुननेकी इच्छाहै ठीकठीक आपकहिये ६ हे महादेवजी संसार में आपके विना कहनेवालों में कोई श्रेष्ठ नहीं विद्यमान है तिससे सुनने में हित सबको कहिये ७ तब महादेवजी बोले कि पूर्वसमय में महाभयङ्कर, चण्ड नाम दुरात्मा, क्रूर, शठ, नैष्कृतिक, प्राणियों को भय देनेवाला था ८ यह दुष्टात्मा जालसे सदैव मछलियों को मारता, हरिण, श्वापद, कृष्णसार, शल्लक और अनेकप्रकार के पक्षियों को भालोंसे वेधनकर किसी किसीको गिराभी देताथा और क्रोधयुक्त होकर पक्षी और विशेषकर मुरैलों को मारडालता था ९। १० और लुब्धक, महापापी, दुष्टजनों का प्याराथा और तिसकी स्त्री महारोगयुक्त और पुंश्चलीथी ११ इसप्रकार विहार करतेहुए तिसके बहुतकाल बीतताभया एकसमय रात्रिमें वह पापी बेलवृक्ष के ऊपर स्थित होकर १२ धनुष हाथमें लेकर धनुष में बाणोंको युक्तकर शूकरके मारने के लिये उद्यतथा इसप्रकार उसके जागतेही

जागते रात्रि व्यतीत होगई माघमास के शुक्लपक्ष की चतुर्दशी में १३ वह क्रोधयुक्त होकर बहुतसे बेलवृक्षके पत्रों को तोड़डालता भया उस वृक्षकी जड़में महादेवजीकी मूर्त्तिथी इससे उसकी तोड़ी हुई बेलपत्र महादेवजी की मूर्त्तिही में गिरतीभई १४ तो दैवयोग से जो बेलपत्र गिरीं वहसब शिवजीका पूजनहोगया और गण्डूष के जलसे उस दुरात्मा अज्ञानी ने अच्छीतरहसे स्नानकिया १५। १६ तो माघमास के शुक्लपक्षकी चतुर्दशी में चन्द्रमाके उदयमें वह दुराचारी पापरहित होगया १७ तिसकी स्त्री प्रचण्डा तिसके समीपसे निराश और भोजनरहित होकर तिसके भोजनके लिये अन्न लेकर प्राप्तहोगई और उसदुराचारी पुरुषने सुअर,हरिण और भैंसे को नहीं पाया १८।१९ और क्रूर लोचनोंसे युक्त,प्रचण्ड अपनी स्त्रीको आतीहुई देखा और जलके बीचमें गिरतेहुए भी देखा २० फिर उसकी स्त्रीने अपने पतिसे कहा कि यहां जल्द आकर भोजन करो तुम्हारे लिये मैं इससमयमें मछली और मांसलाईहूं २१ रेमूढ़ तूने पूर्व्व के दिन में क्या कियाथा तेरे पास मांसभी नहीं दिखाई पड़ता है रेमूढ़ ! तूने कुटुम्ब को लंघन कराकर नाशकरडाला २२ ये प्रचण्डा के वचनसुन चण्ड, रूपयुक्त वह शिवरात्रिके व्रत और रात्रिमें जागरणसे २३ शुद्ध अन्तःकरण और पवित्र व्रतवाला होगया और नदीमें स्नान करनेको गया जबतक वह दुष्टात्मा स्नान करताही था कि तबतक कुत्ता वहां आगया २४ और उसने सब मांस को खालिया तब तो क्रोधयुक्त चण्डा कुत्तेके मारने को उपस्थित होगई २५ उससमयमें क्रोधयुक्त चण्डाको चण्डने निवारण किया और कहा कि यह तुमसे मारने के योग्यनहीं है इसने क्या अशुभ कियाहै २६ तब चण्डाने कहा कि इस दुरात्माने अन्न खालिया है रेमूढ़ ! क्या तू इस समयमें भूंखाहोकर खावेगा २७ तब पुक्कसबोला कि जो कुत्तेने अन्न खालियाहै उससे मैं प्रसन्न होगया हूं इस नश्वर, आयु बीतनेवाले शरीरसे क्याहै २८ हे स्त्री ! जे सब भावसे शरीरकोही पुष्ट करते हैं वे मूढ़, पापी दोनों लोकों से बाहर कियेहुए जानने चाहिये २९ तिससे मान, काम और दुरात्मताको

छोड़कर स्वस्थाभाव विमर्श और तत्त्वबुद्धि से स्थिरहोवो ३० मैं इस शरीर को खड्ग की धारके व्रतसे इसी समयमें त्याग करूंगा हमारे बहुतजीनेसे क्याहै ३१ ऐसा कहकर तलवार खींचकर जब तक अपने मस्तक को काटे तभीतक महादेवजी के प्रेरित बहुतसे उनके गण आगये ३२ और बहुतसे विमानभी तिसके समीप प्राप्त होगये तब तो पुष्कस विमानों और गणों को देखकर ३३ श्रेष्ठभक्तिसे उनसे बोला कि आप सब रुद्राक्षके धारण करनेवाले कहां से आयेहौ ३४ जोकि स्फटिक मणिके सदृश,चन्द्रमा आधामस्तकमें धारणकिये,जटाकाजूटधारे, चमड़ेसे आच्छादित कपड़ोंसेयुक्त, सांपोंकेहार धारणकिये ३५ शोभासेयुक्त, महादेवजीके समान वीर्य वालेहौ यह सब हमसे ठीकठीक कहिये जब पुष्कस ने इसप्रकार पूंछा तो महादेवजी के पार्षद उससे बोले ३६ कि हे चण्ड ! हम लोग परमेष्ठी शिवजीके भेजेहुए आये हैं स्त्रीसमेत तुम जल्द आकर विमानपर चढ़ो ३७ तुमने शिवजी की रात्रि में मूर्तिका पूजन कियाहै उसीके कर्मके विपाकसे श्रेष्ठगतिको प्राप्तहुएहौ ३८ जैसा गणोंने कहा वैसाही वीरभद्रजीने भी कहा तो हँसकर पुष्कसबोला कि मुझपापीने क्या सुकृत कियाहै ३९ मैं तो शिकारमें रसिक,मूढ़, दुरात्मा और पापके आचार नित्यही करनेवालाहूं मैं स्वर्गमें कैसे बसूंगा ४० कैसे लिंगका पूजन मैंने कियाहै यह कहिये श्रेष्ठ कौतुकसे युक्त पूंछताहूं कृपासे कहिये ४१ तब वीरभद्रजी बोले कि हे चण्ड ! इससमयमें देवोंकेदेव, गंगाधर, पार्वतीजीकेपति, स्त्रीसमेत तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहुएहैं ४२ शूकरको देखतेहुए तुमने इससमय में प्रासंगिक पूजन किया है और बेलपत्र ४३ जो तुमने तोड़ी है वह लिंगके मस्तकमें गिरी है तिसी से हे प्रभुजी ! तुम सुकृतीहुए हौ ४४ और बेलके पेड़के ऊपर तुमजगेहौ इसी जागरणसे महादेवजी प्रसन्न हुए हैं ४५ हे महाभाग ! छलसे, सूकरके दर्शन और शिवरात्रि के दिन बहेलिये के प्रसंगसेव्रत किया है ४६ तिसी व्रत और जागरणसे देवताओं में श्रेष्ठ, महात्मा, महानुभाव और वरके देनेवाले महादेवजी प्रसन्नहुए हैं तुम्हारे प्रसाद के लिये सब वरों

को देवेंगे ४७ जब बुद्धिमान् वीरभद्रने इसप्रकार कहा तो पुष्कसगण, देवता और सब प्राणियों के देखतेही देखते श्रेष्ठ विमान पर चढ़गया तिस समयमें नगारा, भेरी, तूर्य्य अनेक प्रकार के वीणा, वंशी, मृदङ्ग आदिक बाजेबजे नाचहोने लगा गन्धर्वोंके पति गाने और अप्सराओं के समूह नाचने लगीं ४८। ४९। ५० चामरों की हवा उस के ऊपर होतीहुई अनेक प्रकार के छत्र लगाये गये और भारी उत्साह से वह शिवजी के समीप प्राप्त कियागया ५१ पुष्कस भी तिस समय में तीर्थ के स्नान और शिवजी के पूजन से इस दशाको प्राप्त हुआ जे मनुष्य श्रद्धा, भक्ति से शिवपरमात्माजी को फूल आदिक, फल, चन्दन, पान और अक्षत चढ़ाते हैं वे निस्सन्देह महादेवही हैं ५२। ५३ महादेव जी बोले कि हे पार्वती! तब से लेकर यह तीर्थ खड्गधार नाम से प्रसिद्ध हुआ और कलियुगमें गुप्त होगा ५४ माघ, वैशाख और विशेषकर कार्तिक की पूर्णमासीमें जे स्नान करेंगे वे मुक्त होजावेंगे ५५ वसिष्ठ, वामदेव, भरद्वाज और गौतमजी स्नानके लिये और पिनाकी महादेवजी के दर्शन के लिये आते हैं ५६ हे पार्वती! तीनोंयुगों में लिङ्ग वर्तमान रहता कलियुग में नहीं रहताहै क्योंकि विश्वामित्र ऋषिने हमको शाप दे दियाहै ५७ तब पार्वतीबोलीं कि हे देवताओं के ईश्वर! देव! महादेवजी कैसे विश्वामित्र ऋषिने शापदिया यह आपसे मैं सुनना चाहतीहूं ५८ तब महादेवजी बोले कि हे पार्वतीदेवी! एक समयमें महातपस्वी, विश्वामित्रजी इस परमअद्भुत खड्गधार तीर्थ में प्राप्तहुए ५९ तब उन्हों ने साभ्रमती में स्नान कर हमारे दर्शनकिये और वहीं स्थित होकर नित्यही हमारी अनेक प्रकार से पूजा करते रहे ६० तहांपर कोई महादुष्ट, पापरूपधारी, कौलिकने आकर महादेवजी के ऊपर मांस चढ़ादिया ६१ तिस मांसको देखकर तिसी समय में विश्वामित्र जी बोले कि पापीने बुराकर्म किया ६२ परन्तु परमात्मा महादेवजीने तिसको दण्ड नहीं दिया तिससे मैं निश्चयकर निस्सन्देहही शापदूंगा ६३ इस प्रकार विचारकर तिसीसमय में उन्होंने हमको शाप दिया ६४ कि

इसघोर कलियुग में तुम सर्वथा गुप्तरहो इसप्रकार शाप देकर श्रेष्ठ मुनि चलेगये ६५ तबसे लेकर ऋषिजी के शापसे मैं गुप्तरहताहूं हमारे स्थान में विशेषकर जे पूजन करेंगे ६६ उनके सबपाप तिसी क्षण में नाश होजावेंगे और हमारी मूर्ति को मट्टीकी बनाकर जे विशेषकर इसी स्थान में पूजन करेंगे वे हमारे लोक में बसेंगे कलियुग में खड्गधारेश्वर नामसे मैं प्रसिद्ध हूंगा ६७। ६८ सतयुग में हमारा मन्दिर नाम, त्रेतामें गौरव, द्वापरमें विश्वविख्यात और कलियुग में खड्गधारेश्वर होगा ६९ हमारे स्थान के दक्षिण भाग में बुद्धिमान् मनुष्य सदैव मूर्ति बनाकर ७० नित्यही पूजन करेगा तो वह वाञ्छित फलको प्राप्तहोगा धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्षको भी पावेगा ७१ धूप, दीप, नैवेद्य और चन्दन आदिकको जे मनुष्य संसारके नाथ महादेवजी में अर्पण करेंगे उनको हे पार्वती! सत्य सत्य दुःख नहीं होवेगा ७२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेखड्गधारेश्वरमाहात्म्यंनामचतुष्पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५४॥

एकसौपचपनका अध्याय॥

दुग्धेश्वरका माहात्म्य वर्णन॥

महादेवजी बोले कि खड्गधारसे दक्षिण परमपवित्र और सब पापोंका नाश करनेवाला दुग्धेश्वर नाम तीर्थ कहाहै १ जिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर दुग्धेश्वर महादेवजी के दर्शनकर पापसे उत्पन्न दुःखसे छूटजाता है २ दधीचिजी ने साभ्रमती के शुभ किनारे बड़ी पुण्यकारी तपस्याकी थी और जहां गङ्गाजी में मिली हुई चन्द्रभागा नदी है ३ तहां स्नान, दान, जप, पूजा और तपस्या करनेसे दुग्धतीर्थ के प्रभावसे सब नाशरहित के भावको प्राप्त होजाता है ४ तब पार्व्वतीजी बोलीं कि हे देवताओं के ईश्वर, प्रभु, महादेव जी! दुग्धेश्वरकी उत्पत्ति और महिमा हमारे सुनने की इच्छा है तिसको कहिये ५ तब महादेवजी बोले कि पूर्वसमय में देवता और असुरों के युद्धमें दैत्योंसे देवता हारगये तो वे भागकर दधीचि के

आश्रम में प्राप्त होगये ६ और वहांपर हथियारों को छोड़कर द-
शोंदिशाओं को चलेगये और पीछेसे दधीचि दैत्योंसे उत्पन्न शब्द
सुनकर ७ तिन शस्त्रोंको जलसे डुबोकर पीलेतेभये फिर कालपा-
कर सब देवता उत्साहयुक्तहोकर अस्त्र लेनेकेलिये ८ गुरुजीसहित
परस्पर आनन्दसे युक्त न्योरोंसमेत सर्प परस्पर जिस आश्रम में
खेलरहे थे ९ औरभी इसीप्रकार के अनेकों आश्चर्य्य तिस आ-
श्रममें देखकर सब देवता परमविस्मय को प्राप्तहोगये १० और
जहां चन्द्रभागासे मिलीहुई साभ्रमती पुण्यकारिणी नदीहै वहांप
आसनके ऊपर स्थित श्रेष्ठ मुनिको देखतेभये ११ जो कि श्रेष्ठ ते
से सूर्य्य की नाईं प्रकाशित थे और सुवर्चा स्त्रीसमेत मानों दूस..
अग्निही हैं १२ सरस्वतीयुक्त जैसे ब्रह्मा तैसेही इन श्रेष्ठ मुनिको
सब देवताओं ने देखकर पहले तो दण्डवत् किया १३ तिस पीछे
बृहस्पति आदिक देवता मुनिसे बोले कि आप तीनोंलोकों में पह-
लेही विदित दाताहैं १४ हम सब भयभीतहुए आपकेपास मांगने
को आये हैं हमको अस्त्र आप देने के योग्य हैं १५ जब इसप्रका
दधीचिजी से देवताओं ने कहा तो महाबुद्धिमान् दधीचिजी उ
से बोले कि भोदेवताओ तिन अस्त्रोंको मैंने जलसे डुबोकर मन्त्रस
पीलिया है १६ तब देवता ब्राह्मण से बोले कि हे विप्र ! दैत्यों के
नाशनेके लिये जल्द अपने हाड़दीजिये तब दधीचिजीने कहा कि
देंगे १७ऐसा देवताओं से कहकर अपनी स्त्रीको स्थान भेज देतेभये
और फिर महाबुद्धिमान् और प्रसन्नहुए ब्राह्मण देवताओं से बोले
१८ कि भो देवताओ पियेहुए अस्त्रोंको जैसे के तैसेही ग्रहण करली-
जिये ऐसा कहकर योगका जाननेवाला ब्राह्मण योग में स्थित हुआ
१९ तब तो देवता विस्मययुक्त ब्राह्मणसे छलकी वाणीसे बोले किभ
ब्रह्मन् ! तुम्हारे जीतेहुए कैसे हाँड़ हमको मिलेंगे २० तब हँसक
विप्रर्षिजी बोले कि भो देवो ! एक क्षणमात्र ठहरो मैं इसी समय
देह छोड़ताहूं २१ ऐसा कहकर योगका जाननेवाला वह ब्राह्मण
योगमें स्थित होकर जहांसे फिर नहीं लौटसक्ता ऐसे ब्रह्मलोक को
जल्द चलागया २२ तदनन्तर सब देवता तिनको नष्टहुए जानक

चिन्तना करनेलगे कि कैसे प्रवेशकरें २३ तब तो कामधेनुको बुलाकर इन्द्र उससे बोले कि हमारे वचनसे इस श्रेष्ठ ब्राह्मणकी देह को खाजावो २४ तो कामधेनुने उनके वचनको अंगीकार कर तिसी क्षणसे शीघ्रही दधीचिकी देहको मांसरहित करदिया २५ तब देवताओंने हाँड़ ग्रहणकर शस्त्रबनाये तिसीके वंशसे उत्पन्न ब्रह्मशिर अस्त्र भी हुआथा २६ महाबल पराक्रमसे युक्त, शीघ्रतासमेत और वृत्रासुरके मारने में तत्पर देवतालोग शस्त्र अस्त्र बनाकर जातेभये २७ तदनन्तर दधीचिकी स्त्री सुवर्चा देवोंके कार्यकी सिद्धिके लिये भेजीगई तो वह वहां आकर अपने मृतकपतिको देखती भई और देह भी हाँड़ मांससे रहितहुई देखी २८ तो वह साध्वी श्रेष्ठऋषि की स्त्री सुवर्चा यह सब देवोंकी कृत्य जानकर तिस समय में क्रोध कर अत्यन्त रुष्टहोकर शाप देतीभई २९ कि हे देवताओ ! तुम सब अत्यन्त दुष्ट, अनेक शापोंसे युक्तहौ तिसपर भी लुब्धहीहौ तिससे इन्द्रादिक सब देवता पुत्रहीन होजावो ३० इसप्रकार तिन देवोंको शाप देकर वह तपस्विनी साभ्रमती के किनारे पीपल की जड़में बैठकर स्थित होगई ३१ परन्तु यह सती, साध्वी गर्भसमेत थी इससे उसने अपने पेटको फारडाला तो महात्मा दधीचिकागर्भ पेटसे निकलआया ३२ यह गर्भ साक्षात् महादेवजीका अवतारही पिप्पलाद, महाप्रभुथा तब तो हँसकर माता गर्भसे बोली ३३ कि इस पीपलकी जड़ में हे महाभाग ! तुम बहुतकाल स्थितरहो और सब को कल्याणके देनेवालेहोवो ३४ ऐसा अपने पुत्रसे कहकर सुवर्चा श्रेष्ठ समाधिसे पतिके पास गमन करतीभई ३५ इसप्रकार दधीचिजीकी स्त्री पतिकरके स्वर्ग्गमें स्थित कीगई और वे देवता शस्त्र अस्त्र बनाकर दैत्योंसे लड़नेको उत्साहयुक्त होगये ३६ और महाबल पराक्रमयुक्त इन्द्रादिक देव दैत्योंके पास प्राप्तहोगये और जहां पर ब्राह्मण दधीचिजी नष्टहुयेथे वहांपर कामधेनु गऊ दूध बहाती भई ३७ हे पार्वती देवी ! मुनिके प्रभावसे दूध लिंगरूप होगया तो साभ्रमतीके किनारे वह लिंग दुग्धेश्वर नामसे प्रसिद्ध होगया ३८ तबसे लेकर यह तीर्थ तिसीके नामसे पृथ्वीमें प्रसिद्धहुआ जिसकी

अतुल माहात्म्य सुननेसे पाप नाश होजाते हैं ३९ जे मनुष्य भक्ति से दुग्धेश्वरसे उत्पन्न माहात्म्यको सुनते हैं वे पापोंसे छूटकर श्रेष्ठ महादेवजीके पदको प्राप्तहोते हैं ४० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेदुग्धेश्वर-माहात्म्यंनामपंचपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५५ ॥

एकसौछप्पनका अध्याय ॥

चन्द्रेश्वर चन्द्रभागा की महिमा वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि दुग्धेश्वरके पूर्वमें परमपवित्र तीर्थहै जहांपर चन्द्रभागा नाम नदी मिलीहुई है १ तहांपर चन्द्रेश्वर देव, पुण्य के देनेवाले नित्यही स्थितहैं जो महादेव सर्वदा व्यापी और लोकों के सुख देनेवाले महान् हैं २ यहां स्नान और नित्यही जे ध्यानक-रते हैं वे साभ्रमती में शिवजी के पूजनके फलको प्राप्तहोते हैं ३ यहां पर चन्द्रमाने निश्चय बहुत कालतक तपस्या की थी तिसीसे च-न्द्रेश्वर नाम महादेवजी स्थापितहुए थे ४ और शुक्रजी ने भी च-न्द्रभागाके समीप तपस्याकी थी इससे तीर्थोंसे अधिकतीर्थ पृथ्वी में सर्वदा पवित्रहुआथा ५ हे पार्व्वती ! कलियुग में ऋषिने गुप्तकर दियाथा और जहांपर निस्सन्देह सुवर्णमय लिंग दिखाई देता है ६ यहांपर जे मनुष्य स्नान, पान और शिवजी का पूजनकर जाते हैं वे धर्म और अर्थों को प्राप्तहोते हैं ७ और जे विशेषकर वृषो-त्सर्ग आदिक कर्म करतेहैं वे स्वर्गपद को भोगकर पीछेसे महादेव जीके स्थानको जाते हैं ८ और जे मनुष्य प्रतिदिन चन्द्रभागाके समीपसे स्नानके लिये जातेहैं वे पुण्यभागी जानने योग्यहैं ९ और जो किनारेपर जाकर पापके नाश करनेवाले चन्द्रेश्वर नाम श्रीम-हादेवजी को पूजन करतेहैं १० और विशेषकर यहींजाकर जे श्रेष्ठ मनुष्य रुद्रजाप्य आदिक करतेहैं वे शिवरूपी जानने योग्यहैं ११ हे पार्वती ! जे सर्वदा यहांपर स्नान करते हैं वे मनुष्य निस्सन्देह विष्णुरूप जानने चाहिये १२ और जे यहां तिलके पिण्डसे श्राद्ध करतेहैं वे पिण्डदानके प्रभावसे विष्णुपद को प्राप्त होतेहैं १३ यहां

ज्ञान और स्नान विधिपूर्व्वक करना चाहिये जहां स्नानकर मनुष्य ब्रह्महत्यादि पापों से छूटजाते हैं १४ और जे इसके किनारे बरगद के पेड़को लगाते हैं वे मरकर जब तक चन्द्रमा और सूर्य्य रहते हैं तब तक शिवजी के पदको प्राप्तहोते हैं १५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेचन्द्रभागामहिमानामषट्पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५६ ॥

एकसौसत्तावनका अध्याय ॥

पिप्पलाद तीर्थका माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि दुग्धेश्वरके समीप अत्यन्त पवित्र, रम्य और पृथ्वी में पिप्पलादके नामसे प्रसिद्ध तीर्थ है १ जहांपर माता के वचन से मुनिने तपस्या पूर्व्व समयमें कर वड़वानलके समान कृत्याको उत्पन्न कियाथा २ इन्होंने महात्मा दधीचि अपने पिताके ऋणसे उद्धार होनेकी इच्छाकर यहां तपस्याकीथी ३ यहां स्नान और पानकरने से ब्रह्महत्या दूरहोजाती है साभ्रमती के किनारे पर देवताओं के ईश्वर पिप्पलादजी गुप्तहैं हे देवि ! तहां स्नानकर मनुष्य मुक्तिभागी होजाताहै ४ और यहां पीपलके वृक्षोंको विधिपूर्वक लगाना चाहिये इनके लगाने से कर्म्मबन्धनसे छूटजाता है ५ तब पार्वतीजी बोलीं कि हे प्रभुजी ! वह कृत्या किसलिये उत्पन्नहुई और उसने पहले क्या किया तिसको हमसे कहिये ६ जिस पुत्रने पिताके ऋणसे उद्धार होने के कारण कृत्याको उत्पन्न कियाथा ७ तब महादेवजी बोले कि ऋषियों में श्रेष्ठ दधीचिजी के पुत्र तपकरने के लिये यहां आयेथे और उन ऋषि परमात्माने यहां पर भारी तपस्याकी थी ८ तिसीसमयमें कोलासुर नाम विघ्न करने के लिये प्राप्तहुआ और निस्सन्देह उसने बहुत विघ्नकिये ९ उसको सुपुत्र, बुद्धिमान् कहोड ने देखकर उसके मारने के लिये कृत्याको उत्पन्न किया १०

तो उसने कोलनाम महाअसुरको मारडाला तिसी से हे पार्व्वती!
यह तीर्थ कलियुगमें गुप्त होगया है ११॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे पिप्पलादतीर्थनामसप्तपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५७॥

एकसौअट्ठावनका अध्याय॥

निम्बार्क देवतीर्थकी महिमा वर्णन॥

महादेवजी बोले कि पिप्पलाद तीर्थसे भी उत्तम पिचुमंदा तीर्थ है यह तीर्थ साभ्रमती के किनारे पर है जो कि रोग और दुर्ग का नाश करनेवाला है १ पूर्व्वसमयमें कोलाहल के युद्धमें दानवो ने देवताओंको जीतलिया तो देवता प्राण बचाने की इच्छासे सूक्ष्म होकर वृक्षों में प्रवेश करजातेभये २ तहां बेलके पेड़में महादेवजी, पीपल में नाशरहित हरिजी, सेरसामें इन्द्र और नींव में सूर्य्यनारायण स्थितहोगये ३ ऐसेही और भी देवता यथायोग्य वृक्षों में ठहरगये जब तक कोलाहल दैत्यको श्रीविष्णुजी ने ४ लड़ाई में मार तबतक वे वृक्षोंही में स्थितरहे और जिसजिस देवताने जो जो वृक्ष का आश्रयकिया ५ वह उन्हीं के समान होगया तिससे तिसवृक्षव न काटना चाहिये इसीप्रकार सूर्य्यजी के विश्राम करने से नींबव पेड़भी उत्तम ६ तीर्थ साभ्रमती के किनारे होगया यहांपर स्ना करने से रोग नाश होजाताहै और यहां जाकर विशेषकर तिन सूर्य जीको जो पूजताहै ७ वह वांछित फलको प्राप्त होता है और यहां जाकर सूर्यजी के बारह नाम जे पढ़ते हैं ८ वे मनुष्य जबतक जीते हैं तब तक निस्सन्देह पुण्यकर्म करनेवाले होते हैं आदित्य, भास्कर, भानु, रवि, विश्वप्रकाशक ९ तीक्ष्णांशु, मार्तण्ड, सूर्य्य, प्रभाकर, विभावसु, सहस्राक्ष और पूषण १० इसप्रकार जो बुद्धिमान् मनुष्य इनबारह सूर्य्य के नामोंको पढ़ताहै वह धन, पुत्र और पौत्रोंको प्राप्त होता है ११ और एकएक नामका आश्रयकर जो मनुष्य पृथ्वी में पूजन करताहै वह सातजन्मतक धनसंयुक्त और वेदका पारगामी ब्राह्मण होताहै १२ क्षत्रिय राज्यको, बनियां धनको और शूद्र भक्ति

प्राप्तहोताहै तिससे इस श्रेष्ठ सूक्तका जपना योग्यहै १३ निम्बार्क
श्रेष्ठ तीर्थ न हुआ है और न होगा यहां स्नान और पान करने
निश्चय मुक्तिका भागी मनुष्य होताहै १४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे निम्बार्कदेवतीर्थनामाष्टपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५८ ॥

एकसौउनसठका अध्याय ॥

कोटरातीर्थकी महिमा वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वतीदेवी ! तिस निम्बार्क से दूर सब
उत्तम सिद्धक्षेत्र है जहांपर ऊषाके लिये पूर्वसमयमें चित्रलेखाने
निरुद्धको छिपारक्खाथा १ वह पूर्वसमयमें घरमें स्थितथा फिर
णासुरके पुरमें प्राप्त कियागया और फसरी और बाणों से बांधे
होकर अनिरुद्धने कोटराक्षीदेवीको स्मरणकिया २ कि साक्षात्
वैष्णवीशक्तिहै जो कि सदैव रक्षाकरने में तत्पर है सोई देवी
ी के तीरमें कृष्णजी करके स्थापित कीगई है बाणासुरको संग्राम
जीतकर द्वारकाको जातेहुये कृष्णजी ने मूर्तिको प्रतिष्ठायुक्तकिया
और अनिरुद्धजी के स्तोत्रसे साक्षात् सांनिध्यको प्राप्त होगई
४ तिस तीर्थ में यत्नसे मनुष्य एकवर्ष स्नानकर कोटराक्षी के मुख
दर्शनकरै तो अचललक्ष्मी को प्राप्तहोवे ५ सिद्धतीर्थ में मनुष्य
ानकर कोटरमें बसनेवाली देवीजी के दर्शनकरै तो सिंहयुक्त स-
री में चढ़कर रुद्रलोकमें प्राप्तहोताहै ६ हे पार्वती ! जिसके स्म-
णही से मनुष्य छूटजाताहै इससे जे मनुष्य यहां प्राप्तहोंगे वे मुक्ति
भागी होजावेंगे ७ वहांजाकर विशेषकर स्नानकर बुद्धिपूर्वक
ोटराक्षी देवी का स्तोत्रपढ़ै ८ कोटराक्षी, विश्वरूपा, महामाया,
ळाधिका, त्रिपुरा, त्रिपुरघ्नी, शिवा, शिवरूपिणी ९ कन्या, सार-
वती, दुर्गा, दुर्गतिहारिणी, भैरवी, भैरवाक्षी, लक्ष्मी, देवी, जन-
या १० ये बहुधा कहेहुए नाम जे श्रेष्ठमनुष्य पढ़ते हैं वे शिवजी
समीप प्राप्त होते हैं ११ हे श्रेष्ठमुखवाली पार्वती ! जे बुद्धिमान्
नुष्य अनिरुद्धजी के कियेहुए स्तोत्र को जपते हैं वे कष्टबन्ध से

सत्य सत्य छूटजाते हैं १२ यह कोटराका रचाहुआ तीर्थ पृथ्वी। सबतीर्थोंसे श्रेष्ठहै इसकेदर्शनसे पापोंकीराशि नाशहोजातीहैं १३

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वर-संवादेकोटरातीर्थनामैकोनषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १५९॥

एकसौ साठका अध्याय॥

वामनतीर्थ की महिमा वर्णन॥

महादेवजी बोले कि इस तीर्थसे श्रेष्ठतीर्थ तीर्थराज नामसे प्रसिद्ध चन्दन और जलसे मिलाहुआहै यहांपर सातनदियां बहती हैं १ और तीर्थसे सौगुणा स्नान इसमें श्रेष्ठहै जहांपर देवताओंमें श्रेष्ठ वामनजी आपही रहतेथे २ यहांपर माघमहीने की द्वादशीमें जो तिलधेनु देताहै वह सब पापों से छूटकर सैकड़ों कुलों को तार देताहै ३ जो मनुष्य तिलोंसे मिलेहुए जलको पितरोंको देताहै तो पितरलोग इस रहस्यको कहते हैं कि इसने सैकड़ोंवर्ष श्राद्धकीहै ४ इस तीर्थमें जो मनुष्य ब्राह्मणों को गुड़ और खीर खिलाता है तो एकब्राह्मणके भोजनकरानेसे हजार ब्राह्मणोंका भोजन होजाताहै ५

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वर-संवादेवामनतीर्थनामषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६०॥

एकसौइकसठका अध्याय॥

सोमतीर्थकी महिमा वर्णन॥

महादेवजी बोले कि साभ्रमती के किनारे गुप्त सोमतीर्थको फिर मनुष्य जावे तहांहीं पातालसे निकलकर कालाग्नि महादेवजी हुए हैं १ सोमतीर्थ में मनुष्य स्नानकर सोमेश्वर महादेवजी के दर्शन करे तो निस्सन्देह साक्षात् सोमपान का फल होताहै २ रूपवान्, सुभग, भोगी, सब शास्त्रों में विशारद मनुष्य इसलोक में होता है और परलोक में शिवजी के पास जाता है ३ हे पार्व्वती! इस में इतिहास को कहताहूं तत्त्वसे सुनो जिसको सुनकर मनुष्य ब्रह्महत्यादि पापोंसे छूटजाताहै ४ यहांपर कौपीतकऋषि ने विशेषकर

तपस्याकी थी निराहार, पत्तों का भोजन ५ वायुका भोजन करके आत्मध्यान में परायण रहते थे इसप्रकार बहुत युगतक उन्हों ने भारी तपस्याकी ६ तो कदाचित् दैवयोगसे महादेवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे ब्राह्मण! जिस जिसको तुम चाहतेहौ तिस सबको मैं दूंगा ७ तब कौषीतकिजी बोले कि हे देवोंके स्वामी यहांपर लिंग उत्पन्न होजावे निश्चय सोमेश्वर देवके नामसे प्रसिद्ध होवे ८ जहां स्नान और भोजनकर वाञ्छित फलको मनुष्य पाताहै इस स्थान में विशेषकर जो रुद्रजाप्य आदिक को ९ श्रेष्ठ मनुष्य जपते हैं वे धर्म्म और अर्त्थोंको प्राप्तहोतेहैं पुत्रहीन पुत्रको, दरिद्री धनको १० और राज्यकी कामना करनेवाला निस्सन्देह राज्यको प्राप्त होताहै हे प्रभुजी! यदि आप प्रसन्नहैं तो हमको सब दीजिये ११ तब महादेवजी बोले कि तिसीसमय में देवोंके स्वामी ने ब्राह्मण को सब कुछ दे दिया तबसे लेकर वह तीर्त्थ सोमलिंग के नाम से प्रसिद्ध हुआ १२ चन्दन वा बेलपत्र से जे सदाशिवजी को पूजन करते हैं वे मनुष्यकी देहमें पुत्रादिकों से उत्पन्न सुखको प्राप्त होतेहैं १३ सोमवारके प्राप्त होने में जो महादेवजी के स्थान को जाता है वह सोमलिंगके प्रसादसे नित्यही वाञ्छितको प्राप्त होता है १४ यहां जाकर जो फलआदिक को जिस कामना से देता है तिस तिसको वह निश्चय प्राप्तहोताहै १५ सफेद करवीर तथा कल्पवृक्षके फूलों से जे मनुष्य पिनाकधारी, देव श्रीमहादेवजी को पूजतेहैं १६ वे हे पार्व्वती! शिवजी के बहुत उत्तमपदको प्राप्त होतेहैं १७ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेसोमतीर्त्थवर्णनंनामैकषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६१ ॥

एकसौबासठका अध्याय ॥

कपोततीर्त्थकी महिमा वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वतीदेवी! तिस पीछे कापोतिक तीर्थ को जावे जहांपर साभ्रमती का जल प्राचीन वर्तमान है १ और जो मनुष्य पितरों को तर्पण और पिण्ड सदा पर्व्व पर्व्व में वनके

फल और फूलों से देताहै २ कौआ और कुत्ता आदिकों को बलि जो देताहै वह मनुष्य यमराज की राहको सुखपूर्व्वक तरजाता है ३ तिस तीर्थमें मनुष्य स्नानकर वैशाख की पूर्णमासी को सफ़ेद सरसों से उत्तम, प्राचीनेश्वर, देव, ईशानजी को पूजता है ४ वह अपनी आत्मा और पितृपितामहों को तारदेता है जहांपर कपोत ने आनन्द से अपनी आत्मा को अतिथि को देकर ५ विमान से स्वर्ग्गको प्राप्त सब देवसमूहों से स्तुति कियागया है तबसे लेकर यह तीर्थ कापोतनाम से प्रसिद्ध है ६ तहां स्नानकर जलपीके मनुष्य ब्रह्महत्या को दूर करदेताहै तब पार्वतीजी बोलीं कि हे प्रभु, हे देव! हे देवोंके ईश्वर कपोतने कैसे शरीरको दिया क्या निमित्त था तिसको मैं नहीं जानतीहूं आप कहिये ७ तब महादेवजी बोले कि इस तीर्थमें बड़ाभारी श्रेष्ठबरगद का पेड़है तिसकी अनंतशाखा पृथ्वी में दिखाई देती हैं ८ वहांपर जीव और बहुत से पक्षी बसते हैं और कपोत ने वहांपर घर बनाया है ९ और उसीमें वह कबूतर विष्णुजी में परायण, कुटुम्ब से युक्त नित्यही डालमें बसताथा १० हे देवि! एक समयमें विष्णुजी के दिन द्वादशीमें कबूतरके पास अतिथि होकर बाजआया ११ और उसने कहा कि हे कबूतर! अपने शरीर का मांस हमको दो और जो नहीं दोगे तो शाप देदूंगा १२ हे प्रभुजी! इस समय विष्णुजी के दिन द्वादशीमें भूंखसे व्याकुल मैं प्राप्तहुआहूं तिससे मुझको मांस दीजिये १३ बाज का कहा सुनकर बड़ेभारी वैष्णव कबूतर ने निस्सन्देह तिसी समयमें अपना शरीर देदिया तिसी दानके प्रभाव से वह कापोतक पवित्रोंका पवित्र, श्रेष्ठतीर्थ होगया १४।१५ इस तीर्थमें मनुष्यस्नान और शिव पूजनकर अतिथियोंको मीठाअन्न देवे १६ तो इसलोक में सुख भोगकर विष्णुजी के सनातन पदको प्राप्त होवे कबूतर ने महात्मा बाज को अपना शरीर देकर १७ जबतक चन्द्रमा और सूर्यरहे तबतक विष्णुलोक में प्राप्त रहाथा इससे हे पार्व्वती! वहां जाकर अतिथिको सदैव पूजनकरे अतिथिके पूजन होनेमें निश्चय सब मिलता है १८॥

इतिश्रीपाद्मेउत्तरखण्डेकपोततीर्थंनामद्विषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६२॥

एकसौतिरसठका अध्याय ॥

साभ्रमतीमाहात्म्य में गोतीर्थकामाहात्म्यवर्णन ॥

महादेवजी बोले कि काश्यपकुण्ड के समीप तीर्थों में श्रेष्ठतीर्थ महापापोंका नाश करनेवाली गोतीर्थ के नामसे विख्यातहै १ जितने ब्रह्महत्या के समान पापहैं वे गोतीर्थ में स्नानकर निस्सन्देह नाश होजाते हैं २ गौवें पूर्व्वसमय के पापके योगसे कृष्णवर्ण देह को प्राप्त होगईथीं वे इस तीर्थमें स्नानकर शुक्लवर्ण फिर प्राप्त होगईहैं ३ तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर गौवों को गौवोंका नित्य का भोजन देकर गौमाताओं के प्रसादसे माताओं के ऋणसे छूट जाताहै ४ और गोतीर्थ में मनुष्य जाके स्नानकर दूधसमेत गऊ को श्रेष्ठ ब्राह्मणको देवे तो वह ब्रह्माजी के पदको प्राप्तहोवे ५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेसाभ्रमतीमाहात्म्येगोतीर्थनामत्रिषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६३ ॥

एकसौचौंसठका अध्याय ॥

कश्यप कुण्डका माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती ! यहीं पर कश्यप नाम महान् तीर्थ है जहांपर नगदेवका बनाया हुआ भारी कुण्ड है १ तहांहीं कुशेश्वर नाम देव विराजमान हैं जहांपर कश्यपजी का रचाहुआ सुन्दर कुण्डहै २ तहां स्नानकर मनुष्य नरक नहीं जाताहै जहांपर अग्निहोत्र के करनेवाले ब्राह्मण, नित्यही वेद में परायण ३ बहुत सुननेवाले बसते हैं जैसे काशी तैसे कश्यपऋषिकी बसाईहुई यह नगरी है ४ कश्यपजी ने यहांपर बहुत तपस्याकीथी और तपस्याही से महादेवजीके जटासे उत्पन्न गंगाजीको यहांपर प्राप्त कियाथा ५ यह महापापों के नाश करनेवाली काश्यपी गंगा है जिसके दर्शनमात्रही से दुष्टपापों से मनुष्य छूटजाते हैं ६ गोदान और रथका दान यहांपर श्रेष्ठहै यहांपर श्राद्धकरके प्रयत्नसे दान देना चाहिये ७ यह कश्यपतीर्थ घोर कलियुग में महापापोंका नाश करनेवाला है इस

तीर्थ के समान न तीर्थ हुआहै और न होगा ८ जहांपर सब देवता और पापरहित ऋषि तीर्थराजके प्रसादसे नित्यही स्थितरहते हैं ९

इतिश्रीपाद्मे महापुराणे पञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेसाभ्रमतीमाहात्म्ये कश्यपह्रदमाहात्म्यंनामचतुःषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६४॥

एकसौपैंसठका अध्याय॥

विजयीतीर्थ का माहात्म्यवर्णन॥

महादेवजी बोले कि पापके हरनेवाले भूतालयतीर्थ को फिर जावे जहांपर भूतालय बरगद और प्राचीचन्दनाहै १ भूतालयमें जो मनुष्य कृष्णपक्षकी अष्टमी में व्रतकर स्नानकर काले तिलोंको देताहै वह प्रेत नहीं होताहै २ और पितरोंका उद्देशकर जो तिलों समेत उदकुम्भको देताहै वह अपने प्रेतभावमें प्राप्त पुरुषोंको निस्सन्देह छुटादेताहै ३ और जिसके नामसे मनुष्य स्नान करताहै वह प्रेतभाव से छूटजाता है चतुर्दशी और अष्टमी में प्रातःकाल निर्मलजल में ४ भूतालय तीर्थमें स्नानकर भूतालय बरगदके दर्शनकरै तो भूतेश्वरजी के प्रसादसे भूतों से डरको न प्राप्तहोवे ५ (इतिश्रीभूतेश्वरतीर्थम्) इस तीर्थसे श्रेष्ठ तीर्थ घटेश्वरनामक है जहां स्नान और घटेश्वरजी के दर्शन करनेसे मनुष्य निश्चय मुक्तिकाभागी होजाताहै ६ जहांपर साभ्रमती तीर्थ और श्रेष्ठ भारी घटहै वहां महादेवजी के दर्शन करनेसे निस्सन्देह छूटजाता है ७ तहांजाकर विशेषकर जो बरगदकी पूजा करताहै वह पृथ्वीमें मन के वाञ्छित कामों को प्राप्त होताहै ८ (इतिघटेश्वरतीर्थम्) फिर मनुष्य भक्तिसे वैद्यनाथ नामसे प्रसिद्ध तीर्थको जावे तिस तीर्थ में शिवजी के पूजनमें तत्पर मनुष्य स्नानकर ९ विधिसे पितरोंको तर्पणकरै तौ सब यज्ञोंके फलको प्राप्तहोवे देवों से उत्पन्न विजयतीर्थ सब पापोंका नाश करनेवालाहै जिनके दर्शनकर मनुष्य सदैव अनेक प्रकार की कामनाओं को प्राप्त होते हैं १०॥

इतिश्रीपाद्ममहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेविजयतीर्थमाहात्म्यंनामपंचषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६५॥

एकसौछांसठका अध्याय ॥

पाण्डुरार्यातीर्थका माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि वैद्यनाथसे श्रेष्ठतीर्त्थ सब सिद्धियोंका देनेवाला तीर्त्थों में उत्तम तीर्त्थ, देवताओं का तीर्त्थ है १ जहांपर युधिष्ठिरजी ने राक्षसोंमें श्रेष्ठ विभीषणजी से बलकर करलेकर राजसूय नाम भारी यज्ञका प्रारम्भ कियाथा २ दक्षिण की दिशाके जीतने में पाण्डुपुत्र नकुलने साभ्रमती के किनारेपर पाण्डुरार्यानाम से प्रसिद्ध ३ भुक्तिमुक्ति की देनेवाली को श्रेष्ठ भक्ति से स्थापित कियाथा साभ्रमतीके जलमें स्नानकर पाण्डुरार्या को नमस्कारकरै ४ तो मनुष्य अणिमादिक आठों सिद्धि और श्रेष्ठबुद्धिको निश्चय निस्संदेह प्राप्तहोवे ५ शुद्धभावसे मनुष्य पांडुरार्याको नमस्कारकरै तौ तत्त्वबुद्धियों करके सालभरकी कीहुई पूजा जाननी योग्य है ६ तिस तीर्त्थमें पाण्डुरार्या के समीप देह छोड़कर मनुष्य कैलासपर्वतके कँगूड़े को प्राप्त होकर शिवजीका गण होजाता है ७ पूर्व्वसमय में हनुमान्‌जी ने यहांपर बड़ीभारी तपस्याकी थी तिसी से तीर्थ के प्रभावही से समुद्रके कूदने में शक्ति होगई थी ८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेपाण्डुरार्यातीर्थनामषट्षष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६६ ॥

एकसौसरसठका अध्याय ॥

गणतीर्थका माहात्म्य वर्णन ॥

इस तीर्त्थ से श्रेष्ठ तीर्त्थ चण्डेशनामसे प्रसिद्धहै जहांपर ऐश्वर्य के देनेवाले चण्डेश्वर देवजी नित्यही स्थित रहते हैं १ जिनके दर्शनकर मनुष्य अज्ञान या जानकर कियेहुए पापसे भी छूटजाताहै सब देवताओं ने मिलकर यहां पर चण्डेशनामसे प्रसिद्ध नगरको रचाहै २ (इतिचण्डेशतीर्त्थम्) इस तीर्त्थ से श्रेष्ठ तीर्त्थ पृथ्वी में गाणपत्य तीर्त्थ है यह साभ्रमती के समीप में देवों का रचाहुआ प्रसिद्धहै ३ हे पार्वती ! तहां स्नानकर मनुष्य निस्सन्देह छूटजाता

है इसको मैं यह जानताहूं कि साभ्रमती के किनारे मनुष्यों के कल्याणकी कामना से रचागयाथा ४ पृथ्वी में सागरपर्यन्त जितने तीर्थ हैं तिन सबको छोड़कर इस परम अद्भुत तीर्थमें ५ जो मनुष्य जितेन्द्रिय होकर महादेवजी की भक्तिसे श्राद्ध करताहै तो वह शुद्धात्मा मनुष्य सब यज्ञों से उत्पन्न फलको प्राप्त होताहै ६ पितरों का उद्देशकर जो कुछ गणतीर्थ में दियाजाता है वह सब गणनाथ जी के प्रसाद से शीघ्रही प्राप्त होजाता है ७ तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर ब्राह्मणको जो बैलदेताहै वह सब लोकोंको उल्लंघन कर परमगतिको जाता है ८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगणतीर्थ नामसप्तषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६७॥

एकसौअड़सठका अध्याय॥

वार्त्रघ्नीतीर्थका माहात्म्यवर्णन॥

श्रीमहादेवजी बोले कि हे पार्वती! तिसपीछे मनुष्य साध्वी वार्त्रघ्नीनाम पर्वतकी कन्यासे जहांपर इन्द्रका संगमहुआथा १ तहां पर शुद्धमन होकर जे मनुष्य स्नान करतेहैं तो दशअश्वमेध करनेका जो फल होताहै वह स्नान करनेवाले को मिलताहै २ तहां पर जो मनुष्य तिलके चूर्णों से पिण्ड देता है वह सातपीढ़ी पहले और सातही पीछेकी पवित्र करदेताहै ३ और विधिपूर्वक संगममें स्नानकर गणनायकजी को पूजै तो विघ्नोंसे युक्त कभी न होय और लक्ष्मीसे हीन नहीं होवे ४ तब पार्वतीजी बोलीं कि किसकार्य्य के प्रारम्भमें इन्द्र स्वर्गलोकसे मृत्युलोकको आयेथे यह आप कहनेके योग्यहैं ५ और किस निरुक्तसे वार्त्रघ्नीनदी कहाई इन्द्रकापुर हे महादेवजी! वेदके शब्दोंसे सदैव शब्दयुक्त रहताथा उसका संगम भी हमसे कहिये ६ तब महादेवजी बोले कि इस भूलोकमें पूर्वसमय में बड़े धर्मात्मा युधिष्ठिरनाम राजा हुएथे उन्होंने यहीप्रश्न ७ धर्मात्मा, ज्ञानरूप, भीष्मजी से पूछाथा तब भीष्मजी ने जो कहाथा तिसको तुम्हारेआगे कहताहूं वृत्रासुर और इन्द्रका लोमहर्षणयुद्ध

ग्यारहहज़ार वर्षतक हुआथा ८।९ तब इन्द्र हारकर वृत्रासुर से सलाहलेकर अद्रोहमें शरणछोड़कर हमारीशरण में प्राप्तहुए १० और वार्त्रघ्नी के पुण्यकारी संगममें हमको प्रसन्न करतेभये तद-नन्तर आकाशमें तिसीसमयमें मैं दर्शन देताभया ११ हमारीदेह से जो भस्म काश्यपीके किनारे गिरीथी तिससे अत्यन्त पुण्यकारी लिंग भूतेश्वर, भस्मगात्र ब्रह्माजी ने रचकर स्थापित कियाथा तिस के दर्शनसे ब्रह्महत्या नाश होजातीथी १२।१३ और युगादिकों में श्राद्धकरके मनुष्य सब पापों से छूटजाताथा और इन्द्र महात्मा के ऊपर प्रसन्नहोकर मैं यह बोला १४ कि हे देव इन्द्र! जो जो तुम चाहतेहो तिस सबको मैं दूंगा इस वज्रसे शीघ्रही तुम वृत्रासुरको मारोगे १५ तब इन्द्र बोले कि हे भगवन् महादेव! देवताओं में श्रेष्ठ! आपके प्रसादसे दुःखसे प्राप्तहोने योग्य वृत्रासुरको आपके देखतेही देखते वज्रसे मारूंगा १६ ऐसा कहकर इन्द्र वृत्रासुर के समीपको गये तिससमयमें विशेषकर देवताओं की सेनामें नगारे, मृदंग, डिण्डिम, भेरी और तूर्य्य अनेकप्रकार के बाजे बजते भये और सब असुरों को भारी वृत्तिका लोभहुआ १७।१८ क्षणमात्र में इन्द्र बलवान् होगये इन्द्रको सेनामें प्रविष्टजानकर ऋषि और सर्पस्वामी इन्द्रकी स्तुति से स्तुति करनेलगे और युद्धकी कामना कर समीप चलतेहुए इन्द्रकी जयजय करनेलगे और ऋषियों से स्तुति कियेहुए इन्द्रका सुन्दररूप होजाताभया १९।२० महादेव जी बोले कि हे पार्वतीदेवी! रणभूमि में सहसासे वृत्रासुरके देहमें जो चिह्न होतेभये तिनको हमसे सुनो २१ प्रकाशितमुख तो विवर्ण बहुत घोर होगया भारी देहमें कम्प, गरमश्वास २२ तीव्ररोमहर्ष, भारीउच्छ्वास और महाघोर उल्का समीप में प्राप्त होतीभई गृध्र, वट, बाज और कंकपक्षी घोरशब्द करतेहुए चक्रकीनाईं वृत्रासुर के ऊपर फिरनेलगे २३।२४ तदनन्तर हाथमें वज्रलेकर हाथीपर चढ़कर इन्द्र दैत्यकेपास पहुँचे २५ और उन सुरेश्वरजी ने बड़ा घोर शब्द जो कि मनुष्य नहीं करसक्ते हैं तिसको कर वृत्रासुर के वज्रमारा २६ वह महातेजस्वी, कालाग्निके समान भारीवज्र स-

मुद्रके किनारेपर वृत्रासुरको गिरा देताभया २७ तदनन्तर वृत्रासुरको नष्टहुआ देखकर सब देवताओंको भयकरनेवाला चारोंओर से फिर भारीशब्द हुआ २८ और भारी फूलोंकी वर्षा इन्द्रजी के मस्तकमें हुई भगवान् इन्द्रजी दानवों के स्वामी भयंकर वृत्रासुर को मारकर २९ देवताओं से स्तुति कियेगये और उन्हींके साथ अपनी पुरी को प्रवेश करते भये तदनन्तर वृत्रासुरके देह से उत्तम तेज निकलकर इन्द्रमें प्रवेश करगया ३० फिर महाघोर ब्रह्महत्या जो कि मनुष्यों को भय करनेवाली, भयंकर मुँहयुक्त, विकृत, काली पिंगलवर्ण ३१ मुण्डों का माला धारण करनेवाली, अत्यन्त दुर्बल, रक्तसे व्याप्त, पापिनी, मछली कीसी गन्धवाली और अति भयंकर थी ३२ वह निकलकर वृत्रासुरही कासा भयदेनेवाला रूपकर तिसी समय में इन्द्रको ढूंढ़ती भई ३३ और दौड़कर महापराक्रमी इन्द्रजी के कंठमें लगजाती भई ३४ तब इन्द्र ब्रह्महत्या के डरमें समुद्रांत कमल के बीच में बहुत वर्षतक छिपरहते भये ३५ तिस से पकड़े हुए इन्द्र चेष्टारहित होगये तिस के नाश करने में यत्न बहुत करतेभये ३६ परन्तु ब्रह्महत्या दूरकरने में न समर्थ भये ब्रह्महत्या से पकड़ेहुए अनिष्ट रूप को धारण करलेते भये ३७ और ब्रह्माजी के पास आकर शिरसे नमस्कार करतेभये इन्द्र को श्रेष्ठ ब्राह्मण की हत्यासे पकड़ेहुए जानकर ३८ ब्रह्माजी तिस समय में चिन्तना करते भये तब तो चिन्तायुक्त हत्या भी ब्रह्माजी के पास आकर बोली ३९ कि हे भगवन्! हे देव! हे मानके देनेवाले ब्रह्माजी में आपके पास प्राप्त हुआहूं जो हमको करना योग्यहै तिसको आप कहिये ४० तब ब्रह्माजी तिस ब्रह्महत्या से मीठेस्वर से संक्षेपकर यथायोग्य बोले कि हे महाभागे! ४१ हे स्त्री! इस देवोंके राजा इन्द्रको छोड़कर हमारा प्रियकरो और कहो इस समय में तुम्हारा हम क्या करें किस कामना की तुम इच्छा करतीहो ४२ तब हत्या बोली कि हे नरोत्तम! हे देवदेव ब्रह्माजी! इन्द्र से हम आपके वचन से अलग होजावेंगी आपके नमस्कार है हमको निवास दीजिये ४३ महादेवजी बोले कि ब्रह्महत्या के न-

न को स्वीकारकर इन्द्र के ब्रह्महत्या दूर होने में उपाय विचार
र ४४ अग्नि को बुलाकर यह बोले कि हे अग्निजी! इन्द्रकी ह-
याका चौथाई भाग ग्रहण कीजिये ४५ तब अग्निबोले कि हे प्रभु
ी ब्रह्महत्या करने में हमारे मोक्षका कौन हेतुहोगा हे संसार में
जित! ब्रह्माजी! यह मैं तत्त्वसे जाननेकी इच्छा करताहूं ४६ तब
ह्माजी बोले कि जो मनुष्य तुमको प्रकाशयुक्त पाकर बीज, ओ-
धि, तिल, फल, मूल, समिध और कुशोंको लेकर कभी हवन न करे-
ा ४७ तिसी समय में ब्रह्महत्या तुमको छोड़कर तहांहीं बसेगी
! अग्नि! तुम्हारे मनका ज्वरदूर होजावे ४८ तब तो अग्नि ने
ह्माजी के वचन को स्वीकार करलिया तो पितामह भगवान् ब-
ुत प्रसन्न होगये ४९ तदनन्तर हे पार्वती! ब्रह्माजी वृक्ष, ओषधि
ौर तृणोंको बुलाकर इस अर्थके कहनेको प्रारम्भ करतेभये ५०
क्ष, ओषधि और तृणों से जब हत्याके भाग लेनेको कहा तो उ-
होंने भी अग्निही की समान कहा और अग्निहीकी नाईं व्यथा-
ुक्त होकर ब्रह्माजी से बोले ५१ कि हे ब्रह्माजी हम को ब्रह्महत्या
े भाग लेनेको कहतेहो सो ब्रह्महत्या तो स्वभावसे निहितहै तिस
े फिर आप मारने के योग्य नहीं हैं ५२ हमलोग आग, जाड़ा
वन से प्रेरितवर्षा और काटने और तोड़ने को सहते हैं ५३ तब
ब्रह्माजी बोले कि विना कारणके जो मनुष्य तुमकोकाटे और तोड़े-
गा तो महामोह से यह ब्रह्महत्या तिसके पास चली जावेगी ५४
महादेवजी बोले कि फिर तो महौषधि और तृण ये महात्माओं ने
अंगीकार करलिया और ब्रह्माजीको पूजकर जिस प्रकार आये थे
उसी प्रकार चलेगये ५५ फिर लोकोंके पितामह ब्रह्माजी अप्सरा-
ओंको बुलाकर मीठी वाणी से शान्त करतेहुए से बोले ५६ कि हे
श्रेष्ठस्त्रियो यह ब्रह्महत्या वृत्रासुर से इन्द्र को प्राप्त हुई है इसका
हमारा कहाहुआ चौथाभाग ग्रहण कीजिये ५७ तब अप्सरा बोलीं
कि हे देवोंके स्वामी! ब्रह्माजी! आपकी आज्ञा से हमलोग ग्रहण
करनेमें बुद्धि कियेहुई हैं परन्तु हमारे छूटनेका समय चिन्तना कर-
ने योग्य है ५८ तब ब्रह्माजी बोले कि रजस्वला स्त्रियों में जो मै-

थुन करेगा तिसके पास यह ब्रह्महत्या जल्द चलीजावेगी तुम्हारे
मनका ज्वरदूर होजावे ५९ महादेवजी बोले कि तबतो प्रसन्नमन
होकर सब अप्सरा अंगीकार कर पर्वत में अपने अपने स्थानों
को प्राप्त होकर रमण करती भईं ६० तदनन्तर संसार के कर्ता
ब्रह्माजी जलको चिन्तना करते भये तो जलभी प्राप्त होगये ६१
और सब मिलकर अमितपराक्रमी ब्रह्माजी के नमस्कार कर यह
वचन बोले ६२ कि हे देव! हे शत्रुओं के नाश करनेवाले! हेप्रभु
जी! हे देवों के स्वामी! हमलोग आपकी आज्ञा से आपके समीप
प्राप्तहुए हैं जो आज्ञाहो वह कहिये ६३ तब ब्रह्माजी बोले कि यह
भयानक ब्रह्महत्या वृत्रासुरसे इन्द्रको प्राप्तहुई है इससे आप लोग
इसका चौथाई भाग ग्रहण कीजिये ६४ तब जलबोले कि हे लोकेश!
हे प्रभुजी! जैसा आप कहते हैं वैसाही होगा परन्तु हमारे मोक्षका
समय आप चिन्तना करने के योग्यहैं ६५ हे देवेन्द्र! आपही सब
संसारकी श्रेष्ठ गतिहैं औरोंसे कौनप्रसादहै जो क्लेशों से हमको उ-
द्धारकरै ६६ तब ब्रह्माजी बोले कि जो बुद्धिसे मोहित मनुष्य थोड़ी
बुद्धिकर ६७ तुममें कफ, मूत्र और विष्ठा छोड़ेगा तो जल्द उसके
पास हत्या जाकर वहीं बसेगी तब तुम्हारा मोक्षहोजायगा यह हम
सत्यही तुम लोगोंसे कहते हैं ६८ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती!
तब तो ब्रह्महत्या इन्द्रको छोड़कर ब्रह्माजीकी आज्ञासे चलीगई तो
इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न होगये ६९ इसप्रकार पूर्व्वयुगमें इन्द्रको ब्रह्म-
हत्या प्राप्त होगई थी इस तीर्थ में इन्द्र तपस्या कर शुद्ध आत्माहो-
कर फिर स्वर्ग्गको चलेगये ७० और अश्वमेध यज्ञकर पापरहित
होगये इसप्रकार साभ्रमती तीर्थ में वार्त्रघ्नी नामक तीर्थ है ७१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डे
वार्त्रघ्नीमाहात्म्यंनामाष्टषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६८॥

एकसौउनहत्तरका अध्याय॥

वाराहतीर्थका माहात्म्यवर्णन॥

महादेवजी बोले कि तदनन्तर वार्त्रघ्नी के संगमसे देवन-

नदीकेसाथ वरुण के स्थान समुद्रमें प्रवेश करगई है १ समुद्र
ती प्रियकरने की कामना से साभ्रमती के अनुरागसे प्रियमेलन
या है सुभद्राकी भद्रानदी वयस्या है वह साक्षात् लक्ष्मीजी का
धारण कियेहुए है उसने राहमें सहायताकी है २।३ तिन दोनों
समुद्रके उत्तर किनारेपर पुण्यकारी संगमहै तिस तीर्थ में स्नान
र जो शुद्धजल देता ४ और वराहजी के नमस्कार करताहै वह
रुणजी के स्थानको प्राप्तहोता है—भगवान् विष्णुजी उसी राहसे
समुद्रमें प्रवेशकर ५ देवताओं के वैरी सब दानवों को जीतकर वहीं
यज्ञवराहदेवजी समुद्र को क्षोभकराकर बहुत काल क्रीड़ाकर कर्दम
के स्थानसे निकलगये ६ तब पार्व्वतीजी बोलीं कि हे महादेवजी !
यज्ञवराहके साभ्रमती में प्रवेशन और कर्दमालय से निकलने को
हमसे विस्तार से कहिये ७ तब महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती व-
राहहरिजीका पूर्व्वसमय का यह अन्तर्भूक्रीड़ितहै तिस सबको मैं
कहताहूं सुनिये ८ जो भगवान् देवों के ईश्वर देवताओं के कार्य्य-
सिद्धिकेलिये शूकरजीका देहधारण कर पृथ्वी देवी को धरकर कर्द-
मजी के स्थानको निकलआये तो वहांपर महान् वराहजी के नाम
से तीर्थ होगया है ९।१० तहां पर जो मनुष्य स्नान करता है
वह निस्सन्देह मुक्तिकाभागी होजाताहै यहांपर पितरों की मुक्तिके
हेतु श्राद्धकरै तो पितरोंसमेत मुक्तहोकर सुख देनेवाले श्रेष्ठ लोक
को प्राप्त होवे ११ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डे
वाराहतीर्थनामैकोनसप्तत्याधिकशततमोऽध्यायः १६९ ॥

एकसौसत्तरका अध्याय ॥

संगमतीर्थ का माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि इस तीर्थ से श्रेष्ठ तीर्थ संगमनाम से प्र-
सिद्धहै यहांपर साभ्रमती गंगा समुद्रसे मिलीहुई है १ तहांपर स्नान
और दान विधिपूर्व्वक करना चाहिये जहां स्नानकर महापापी भी
मुक्तहोजाते हैं २ तहांपर अपने पितरों के हितकी इच्छाकरनेवाले

को श्राद्ध करना योग्यहै जहां के निश्चय श्राद्ध करने से निश्चयक पितृलोक में मनुष्य बसताहै ३ जहांपर सागरदेव गंगाजी से नित्यही मिलाहै तहांपर ब्राह्मण का मारनेवाला भी छूटजाता है और पापोंकी तो गिनतीही क्याहै ४ जहांपर मन्दबुद्धिवाले मनुष्य तीर्थ को नहीं जानते हैं तब हमारे नामसे उत्तम तीर्थ करना चाहिये ५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डे सङ्गमतीर्थनामसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७०॥

एकसौइकहत्तरका अध्याय॥

सत्तीर्थका माहात्म्यवर्णन॥

महादेवजी बोले कि सङ्गम तीर्थ के समीप में लोकमें प्रसिद्ध सत्तीर्थ,आदित्य नामहै इससे श्रेष्ठ तीर्थ न हुआहै और न होगा १ जिसके दर्शन, स्नान और कमल, मदार के फूल और करवीर के फूलों से पूजन करना चाहिये २ तहांपर मनुष्य सदैव श्राद्ध और दान करते हैं यह आदित्यक तीर्थ पवित्र, पाप नाशनेवाला ३ और दर्शनसे महापापियोंको भी पुण्य देनेवाला है ४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेसत्तीर्थमाहात्म्यंनामैकसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७१॥

एकसौबहत्तरका अध्याय॥

नीलकण्ठतीर्थका माहात्म्य वर्णन॥

महादेवजी बोले कि तिस तीर्थसे श्रेष्ठतीर्थ नीलकण्ठनाम से प्रसिद्धहै मुक्तिकी इच्छा करनेवाले को सदैव तिनके दर्शन करने चाहिये १ बेलपत्र,धूप और दीपोंको करके नीलकण्ठजीके दर्शन करने से मनुष्य वाञ्छितको प्राप्त होता है २ व्रतमें परायण होकर यह सदैव मनुष्यहीन वनमें स्थित रहते हैं और जे मनुष्य जिस जिसकी वाञ्छा करते हैं तिनको सोई देदेते हैं ३ हे पार्वती! कलियुग में कश्यपकी लाईहुई गंगाजी प्रसिद्धहैं ४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेनीलकण्ठमाहात्म्यंनामद्विसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७२॥

एकसौतिहत्तरका अध्याय ॥

साभ्रमतीका माहात्म्यवर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! दुर्गानदी से मिलीहुई जहांपर साभ्रमती नदी है जिसका समुद्रसे संगम है वहांपर स्नानकर १ कलियुग में निस्सन्देह मनुष्य दोषरहित होजाते हैं तहां दुर्गाजी के संगममें श्राद्धकरना चाहिये २ और वहां जाकर विशेषकर ब्राह्मणों का भोजन और विधिपूर्व्वक गऊ और भैंसों का दानकरना चाहिये ३ यह धन्य, अत्यन्तधन्य, पवित्र और पाप नाशनेवाली है जिसके दर्शनकर मनुष्य पापोंसे छूट जाता है ४ जैसे गंगा तैसेही साभ्रमती नदी जाननी चाहिये कलियुगमें विशेषकर बहुत काल फलके देनेवाली है ५ यदि हमारे मुंहमें सैकड़ों जिह्वाहों तब भी तिसके गुण कहने को कभी मैं समर्थ नहींहूं ६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे साभ्रमतीमाहात्म्यंनामत्रिसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७३ ॥

एकसौचौहत्तरका अध्याय ॥

नृसिंहजीकी उत्पत्तिका वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वतीदेवी ! तीनोंलोकमें दुर्लभ व्रतको कहताहूं सुनिये जिसको सुनकर मनुष्य ब्रह्महत्यादिक पापोंसे छूट जाताहै १ भक्तों के सुखके हेतु अपने प्रकाशकी उत्पत्ति, तिथिवास मास पुण्य करनेवाला उत्पन्न हुआ है २ जिसका नाम कहतेहुए शाश्वती मुक्ति मिलतीहै सोई परमात्मा, कारणोंके कारण ३ संसार की आत्मा, संसाररूपी, सबके भगवान् प्रभुहैं जिनमहात्मा नृसिंह जीने बारहों सूर्योंको धारण कियाहै सोई भक्तों के कल्याणकी इच्छा से प्रकट हुएहैं ४ तब पार्वतीजी बोलीं कि हे संसारके ईश्वर हे ! प्रभुजी ! हे देवताओं में श्रेष्ठ ! आपने अगणित अवतारकहेहैं अब श्रेष्ठधाम नृसिंह अवतारको कहिये जिसके जाननेही मात्रसे सुखलोकको मनुष्य प्राप्त होताहै ५ तब महादेवजी बोले कि हिरण्यकशिपुको मारकर देवों के देव, संसारके गुरु नृसिंहजी सुखपूर्वक

बैठेथे तब उनके समीपहीमें स्थित, ज्ञानियों में श्रेष्ठ प्रह्लाद उत्तम, पिताके मारनेवाले नृसिंहजीसे बोला ६।७ कि हे भगवन्! हेविष्णु! हे नृसिंहजी अद्भुतरूप आपको नमस्कारहै हे देवोंमें श्रेष्ठ! आपसे मैं तत्त्वसे पूछताहूं ८ हे स्वामिन्! हे प्रभुजी! आपमें हमारी अनेक प्रकारकी अभिन्न भक्ति हुई है और मैं आपको प्यारा कैसे हूं इसका कारण हमसे कहिये ९ तब नृसिंहजी बोले कि हे महाबुद्धिमान् हे वत्स! भक्तिका जो कारण और प्यारे होनेके कारण को मैं कहताहूं एकाग्रमन होकर सुनो १० पूर्वसमयमें तुम किसी ब्राह्मण के यहां वसुदेव नामसे उत्पन्न हुएथे वहां तुमने कुछ पढ़ानहीं और वेश्यामें अत्यन्त लम्पटथे ११ तिस जन्ममें तुमने कुछ भी अच्छा कर्म्म नहीं कियाथा शहद और घी भोजनकर वेश्या के साथकी लालसायुक्त थे १२ परन्तु हे पापरहित! हमारे व्रतके प्रभावसे तुम्हारे भक्ति उत्पन्नहुई थी तब प्रह्लादजी बोले कि हे देवोंके स्वामी! किसके पुत्रका क्या व्रत वेश्या में वर्तमान होकर कैसे मैंने किया इसको हमारे ऊपर कृपाकर सब इसी समय में विस्तार से कहिये १३। १४ तब नृसिंहजी बोले कि पूर्वसमयमें ब्रह्माजी यह सबसे उत्तम करतेभये कि हमारेही व्रतके प्रभावसे स्थावर जंगम संसार को रचा १५ और महादेवजी ने त्रिपुरासुरके मारने के लिये व्रत कियाथा तो उन्होंने इसी व्रतके प्रभावसे त्रिपुरासुरको गिरायाथा १६ और भी बहुतसे देवता, प्राचीनऋषि और महाबुद्धिमान् राजाओं ने भी इस उत्तमव्रत को किया १७ और इस व्रतके प्रभाव से सब सिद्धिको प्राप्तहुए और हमारे बहुत प्रियहुए स्वर्ग में अनेकों भोगोंको भोगकर हममें लीन होगये हैं इससे हे प्रह्लाद तुम भी हममें प्रवेशकरो कार्य्य के लिये हमारे शरीरसे अलग तुम्हारा अवतारहै १८। १९ तिनकी सैकड़ों महाकल्पों से भी पुनरावृत्ति नहीं होती है दरिद्री कुबेरकीसी लक्ष्मीको प्राप्त होताहै २० कामी कामनाको, राज्यकी इच्छावाला उत्तम राज्यको और उमरकी कामनावाला शिवजी के समान उमरको प्राप्त होता है २१ यह व्रत स्त्रियों को नहीं विधवाकरता, पुत्र और भाग्य को देता, धन और

धान्य करता और शोकनाश करताहै २२ स्त्री वा पुरुष उत्तम व्रत को करेंगे तो उनको मैं सुख, भुक्ति और मुक्तिफलको दूंगा २३ हे वत्स! इस व्रतके फलको बहुत कहनेसे क्या है हमारे व्रत के फल कहनेको मैं और महादेवजी भी समर्थ नहीं हैं २४ तब प्रह्लादजी बोले कि हे भगवन् तुम्हारे प्रसादसे इस उत्तम व्रतको सुना अब इस व्रतके फल सुननेको आपमें हमारा भक्तिका कारणहै २५ इस समयमें इस व्रतकी श्रेष्ठ विधि सुनना चाहताहूं हे प्रभुजी! किस महीने और किस दिनमें यह होताहै २६ हे देव! यह इस समयमें विस्तारसे कहनेको योग्यहौ हे स्वामिन्! जिस विधिसे सब फलका भागी होजाताहै २७ तब नृसिंहजी बोले कि हे प्रह्लाद! हे वत्स! तुम्हारा कल्याणहो एकमन होकर व्रतको सुनो वैशाखके शुक्लपक्ष की चतुर्दशी में व्रतको करै २८ हमारे प्रकटहोनेके भावसे युक्त, हमारी संतुष्टिका कारण हे पुत्र! भक्तों के सुखके हेतु हमारी उत्पत्ति को सुनो २९ पश्चिमदिशा में भक्तोंके कारणसे उत्पन्न मौलिस्तान नामक क्षेत्र पवित्र और पाप नाशनेवाला है ३० तिस क्षेत्रमें वेद का पारगामी, ज्ञान और ध्यान में परायण, हारीत नामसे प्रसिद्ध ब्राह्मणथा ३१ तिसकी स्त्री महापुण्यकारिणी, सदा सतीरूप, सदैव स्वामी के वशमें परायण और नामसे लीलावतीथी ३२ हेपुत्र! तिन दोनोंने बहुतकालतक भारी तपस्याकीथी निस्सन्देह इक्कीस युग उनको वहीं बीतगये थे तब हम प्रत्यक्ष होकर उनसे बोले थे ३३ कि हे ब्रह्मन्! जिस जिसको तुम वाञ्छा करतेहौ तिसको मैं निस्संदेह दूंगा तब उन दोनोंने कहा कि यदि हमको वरदेतेहौ ३४ तौ तुम्हारे समान हमारे पुत्र इसी समयमें होवे तब हमने कहा कि निस्सन्देह हमीं तुम्हारे पुत्रहैं ३५ मैं साक्षात् विश्वकर्मा, परमात्मा, श्रेष्ठसेश्रेष्ठ और सनातनहूं पेटमें नहींबसूंगा ३६ तब हारीतने कहा निस्सन्देह ऐसाही होवे तबसे लेकर भक्तों के कारणसे मैं इस क्षेत्र में स्थित रहताहूं ३७ यहां आकर जो श्रेष्ठभक्त दर्शन करेगा तिस की सब बाधा को मैं निरन्तर नाशकरदूंगा ३८ इस कारणसे जे श्रेष्ठ मनुष्य विधिपूर्वक व्रत करते हैं उनको डरनहीं विद्यमान होता

है ३९ तिन दोनों समेत बालरूपमय नृसिंहजी को ध्यानकर विशेषकर जो मनुष्य रात्रि में पूजन करता है वह नारायण होजाता है ४० चारभुजा वाले, भारी डाढ़ोंसेयुक्त, कालरूप, दुरासद, करोड़ सूर्य्य के समान प्रकाशित, करोड़ यमराजके तुल्य दुरासद, सिंहके समान मुख और मनुष्यों के तुल्य अंगों से युक्त ४१ सुन्दर सिंह, कालरूप श्री नृसिंहजी को सदैव भजै ऐसा जानकर विशेषकर हमारे स्थान को जावे ४२ और यह व्रत, परमपवित्र, लक्ष्मी के समूहका देनेवाला और भक्तों को अन्तकाल में निस्सन्देह मुक्तिका देने हारा है ४३ जिसने स्वाती नक्षत्रके संयोग, शनैश्चर, सिद्धियोग के संयोग, वणिजकरण में हमारा व्रत किया है उसको हज़ार द्वादशीका फलहोगा सब योगोंके संयोगमें यह व्रत करोड़हत्याका नाश करनेवालाहै ४४। ४५ इससे और योगों में भी हमारादिन पापका नाश करनेवालाहै हमारेव्रतको जानकर जो पापीव्रत नहीं करताहै ४६ वह जबतक चन्द्रमा और सूर्य रहतेहैं तबतक नरकमें प्राप्त रहताहै हे वत्स! हमारे दिनके प्राप्त होने में पहले दतूनिकर ४७ हमाराभक्त जितेन्द्रिय होकर हमारेआगे व्रत का संकल्पकरै कि इससमयमें मैं व्रत करताहूं इसको निर्विघ्न पूर्ण कीजिये ४८ व्रतमें स्थित मनुष्य दुष्टोंसे संभाषण आदिक न करै तदनन्तर मध्याह्नसमय नदीआदिक के निर्मलजल, ४९ घर वा देवखात वा सुन्दरतालाव में चतुरपुरुष वेदके मंत्रोंसे स्नानकरै ५० मट्टी, गोवर, आंवला और तिलों से सब पापसमूहों की शांति के लिये विधिपूर्व्वक स्नानकरै ५१ और सुन्दरकपड़े पहनकर नित्यकर्मको प्रारम्भकरै तदनन्तर घरकोलीपकर सुन्दर अष्टदलकरै ५२ तहांपर रत्नसंयुक्त तांबेके कलशको स्थापितकर तिसके ऊपर चावलोंसे भराहुआ पात्रधरै ५३ फिर शक्तिके अनुसार लक्ष्मीसंयुक्त हमारी मूर्तिको सोनेकी बनवाकर स्थापितकर पंचामृतसे स्नानकराय ५४ नहीं अत्यन्त चंचल, शास्त्रके जाननेवाले ब्राह्मण आचार्य को बुलाकर आगेकर तिस पीछे देवजीको पूजनकरै ५५ और फूल के गुच्छों से शोभित मण्डप बनवावै ऋतुकालके उत्पन्न फूलों से

विधिपूर्वक मैं पूज्यहूं ५६ सोलहों उपचार, हमारे मंत्र और नियमों से, तदनन्तर पुराणके मंत्रोंसे विशेषकर पूजने योग्यहूं ५७ कपूर-समेत चन्दन घनकेसरसे युक्त, कालके उत्पन्न फूल और तुलसी-दल ५८ श्रीनृसिंहजी को जो देताहै वह निस्सन्देह मुक्त होजाता है कृष्ण अगुरुमयधूप सदैव भगवान्को प्यारी है ५९ इसको सब कामनाओंके अर्थकी सिद्धिके लिये हरि और गुरुजीको देवे और अज्ञानरूपी अन्धकारका नाश करनेवाला महादीप बनाकर पहले घंटाको शब्दकर महानीराजनकरै ६० हे लक्ष्मीकेपति! भक्ष्यभोज्य संयुक्त शक्करकी नैवेद्य देताहूं हमारे सब पापोंको नाश कीजिये ६१ (नैवेद्यमंत्रः) हे नृसिंह! हे अच्युत! हे देवोंकेस्वामी! सब भोगों से वर्जित मैं आपके शुभ जन्मदिन में व्रतकरूंगा ६२ तिससे हे स्वामिन्! प्रसन्नहूजिये और जन्मभरके पापदूर कीजिये-गीत और बाजाके शब्दों से रात्रिमें जागरण करनाचाहिये ६३ और श्रीनृ-सिंहजी की कथाके आश्रय नित्यही पुराण पढ़नाभी योग्यहै फिर प्रातःकाल स्नानकर पीछेसे ६४ पहली कहीहुई विधिसे पूजनकर हमको तृप्तकरै और हमारेआगे स्वस्थमन होकर वैष्णवश्राद्ध क-रावै ६५ फिर दोनों लोकोंके जीतनेकी इच्छासे सुपात्र ब्राह्मणों को कहेहुए दानदेवे ६६ सोनेकी मूर्तिसमेत देव हमारे संतोषके करने वालेहैं गऊ, पृथ्वी, तिल और सोनाआदिक ब्राह्मण को देवे ६७ सप्तधान्य और तकियासमेत शय्या तथा और भी अपनी शक्तिके अनुसार देनेचाहिये ६८ जैसा फल कहाहै वैसे फलकी कांक्षा से वित्तशाठ्य न करना चाहिये पीछे से ब्राह्मणों को भोजन कराकर अच्छी दक्षिणादेवे ६९ निर्द्धन मनुष्य शक्ति के अनुसार दानकरें सब वर्णों का हमारे व्रत में अधिकार है हममें परायण हमारेभक्त विशेषकर व्रतकोकरें ७० (ततःप्रार्थनामंत्रः) हे देवोंके स्वामी! हमारे वंश में जे उत्पन्न हैं और जे होनेवाले मनुष्यहैं तिनको दुः-खरूपी संसारसागरसे उद्धारकीजिये ७१ पापरूपी समुद्र में डूबे, व्याधिरूप जलचारी जीवों से कष्टयुक्त और महादुःखमें प्राप्तहुए हमको ७२ हे शेष के ऊपर सोनेवाले! संसारकेपति! हमको

का अवलम्बन दीजिये और हे देवों के स्वामी! इस व्रतसे भुक्ति और मुक्तिके देनेवाले हूजिये ७३ इसप्रकार देवजीकी प्रार्थनाकर यथाविधि विसर्जनकर सब उपहार आदिक को आचार्य्यको देदेवे ७४ और दक्षिणाओं से ब्राह्मणों को प्रसन्नकर विसर्जनकरै और हमारे ध्यानसेयुक्त भाइयों समेत भोजनकरै ७५ दरिद्री भी चतुर्दशी का व्रतकर निस्सन्देह सातजन्मके पापों से छूटजाता है ७६ जो इस पाप नाशने वाले व्रत को सुनता है तो इसके सुननेही से ब्रह्महत्या नाश होजाती है ७७ और जो मनुष्य परमपवित्र, छिपे हुएको कीर्तनकरताहै वह सदैव सब कामना और इस व्रतके फल को प्राप्त होताहै ७८ और जो मनुष्य शक्तिसे दोपहरमें लीलावतीसमेत श्री नृसिंह ऋषि को ७९ श्रेष्ठभक्ति से पूजन करता है वह शाश्वती मुक्तिको प्राप्त होताहै तिस क्षेत्रमें जाकर जो मनुष्य श्रीनृसिंहजी को पूजन करताहै ८० वह श्रीनृसिंहजी के प्रसादसे नित्यही वाञ्छितको प्राप्त होताहै—हे श्रीनृसिंह! महद्रूप! हे कालकोटिदुरासद! ८१ हे भैरवेश! हे हरकी पीड़ाके नाश करनेवाले! हे बालरूप! आप के नमस्कार हैं श्रीनृसिंहरूप, बाल, बालरूपी ८२ व्यापक, सुनन्द, अपनी आत्मा के प्रकटरूपी, सब जीवों के आत्मा, संसार के स्वामी, स्वरात्मा ८३ सूर्य्यमण्डल में स्थित, हे दया के समुद्र! आपके नमस्कार है चौबीस स्वरूप, कालरुद्र अग्निरूपी ८४ संसार के एकस्वरूप श्रीनृसिंहजी के नमस्कार हैं जो देव, वीरभद्र के जीतने वाले नृसिंहजी बारहों, प्रमाण से अच्छी तरह तप्तसूर्य्य के बिम्बों को मस्तक में धारण करलेते भये तहांपर महापुण्यकारिणी, विशेषकर रम्यासिन्धुनदी है ८५। ८६ हे सुन्दरि! पार्वती! तिसके समीपमें अबतक सर्वदा देवोंका रचा हुआ मौलिस्तान नामसे प्रसिद्ध नगर वर्तमानहै ८७ तहांहीं हारीतमहात्मा के रहनेका स्थान वर्तमान है और निस्सन्देह लीलावती भी वहीं स्थितहै ८८ वहांपर सिन्धुनदी के समीप प्रतिशब्द होताहै और कलियुग के प्राप्त होने में पापचारी म्लेच्छ ८९ वहांपर निस्सन्देह बहुत बसते हैं जैसे नृसिंहजी के जन्ममें बड़ाभारी

अद्भुतशब्द हुआथा वैसेही वहां होताहै ९० नृसिंह नृसिंह यह जो मनुष्य ऊंचे स्वरसे शब्द करता है वैसाही प्रतिशब्द भी होता है ९१ ब्राह्मणका मारनेवाला, सोना चुराने वाला, मदिरा पीनेवाला, गुरुजी की स्त्रीसे भोग करनेवाला जे मनुष्य सिन्धुनदी में जाकर विशेषकर स्नान करतेहैं ९२ वे श्रीन्नसिंहजी के प्रसाद से निस्सन्देह जाते हैं दश रात्रिप्रमाण से जे मनुष्य बसतेहैं ९३ वे पुण्यकर्म करनेवाले जाननेचाहिये हमारा वचन झूंठनहीं है कलियुग में वहांपर ब्राह्मण आदिक जे वर्ण बसतेहैं ९४ वे म्लेच्छों के समान जानने योग्यहैं उत्तम देवताओं करके वे वेदबाह्य हैं वहांपर मांस खाते हैं और सदैव मदिरा पीतेहैं ९५ इससे अधर्म के रूप और निस्सन्देह पापी हैं जैसे संध्याहीन ब्राह्मण तैसेही वेदबाह्यहैं ९६ यहीलोग पश्चिमपुर में बसते हैं एकही श्रेष्ठ, विस्तारयुक्त, नृसिंहजी का तीर्थ है जिसको सुनकर मनुष्य जल्द पापसे निस्सन्देह छूटजाताहै ९७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेनृसिंहोत्पत्तिर्नामचतुःसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७४॥

एकसौपचहत्तरका अध्याय॥

सती और महादेवजी के संवादमें गीताका माहात्म्यवर्णन॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे भगवन्! हे सब तत्त्वके जाननेवाले! आपके प्रसाद से श्रीविष्णुजी के लोकके निस्तारके हेतु अनेक प्रकार के धर्म्म सुने १ इससमयमें गीताके माहात्म्यको सुनना चाहती हूं हे देवों के स्वामी! हे देव! जिसके सुनने से भगवान् में भक्ति बढ़ती है तिसको जो आपकी हम प्यारी होवें तो इसी समयमें कहिये २ तब महादेवजी बोले कि अलसी के फूलके सदृश दीप्तिवाले, गरुड़ आसनवाले, अच्युत, शेष शय्यामें सोतेहुए महाविष्णुजी को हम नमस्कार करते हैं ३ कदाचित् सुन्दर आसनमें सुखपूर्वक बैठेहुए, मुरदैत्य के वैरी भगवान् से लोकों के आनन्द देनेवाली लक्ष्मीजी आदरसमेत पूछतीभई ४ कि हे भगवन्! कौन हेतुसे दुग्धके

में आप शयनकरते हैं और लोकों में उदासीन की नाईं ऐश्वर्य्य को स्थापितसा करते हैं ५ महादेवजी बोले कि कमल के समान सुन्दर नेत्रवाले मुरारि भगवान् इसप्रकार ज्ञानसे गर्वित लक्ष्मीजी के वचन सुनकर मधुरवाणीसे बोले ६ कि हे सुन्दर मुखवाली! मैं सोता नहीं हूं अपने माहेश्वर शरीरको तत्त्वके अनुवर्तिनी, भीतर डूबीहुई दृष्टिसे देखताहूं ७ हे देवि! कुशाग्रबुद्धिसे जिसको योगीजन हृदय के भीतर देखते हैं और वेदों के सारको वारंवार विचारते हैं ८ वही अक्षर, ज्योति, आत्मरूप, रोगरहित, अखण्ड आनन्द के समूहको निष्पादन करनेवाली और द्वैतसे वर्जितहै ९ जिसके आश्रय संसार की वृत्तिहै जो हमभी धारण करते हैं और कुछ संसारका तत्त्व स्थावर जंगम नीतिसे रहितहै १० बुद्धिमान्, व्यासजी वेदशास्त्ररूपी समुद्रको मथकर बहुत प्रकारसे देखकर जिसको प्राप्तहोकर गीतारूपी शास्त्रको निकालते भये हैं ११ जिस महाआनन्द में स्थित होकर आनन्दयुक्त मनकर दूध के समुद्र में सोतेहुए के सदृश मैं शोभित होताहूं १२ इसप्रकार तिनमुरारिजी के थोड़े, आनन्दयुक्त वचन सुनकर आनन्दसे फूले और चंचल नेत्रवाली लक्ष्मीजी सुन कर विस्मय करतीभई १३ और बोलीं कि हे हृषीकेश! आप योगियोंके सदैव ध्यानकरनेके योग्यहैं तिससे आपसे मैं इस श्रेष्ठगीताके सुननेकी इच्छा करतीहूं इसमें हमको बड़ा कौतूहल है १४ स्थावर और जंगम लोकोंकेकर्त्ता और हर्त्ता आपही प्रभुहैं इससे हेअच्युत! हमको अच्छीतरह से गीताशास्त्रको समझाइये १५ तब श्रीभगवान् बोले कि हे देवि! यह मायामय मेरा शरीर है तत्त्वों से बना हुआ नहीं है सृष्टिरचना, पालन करना और नाश करनेकी क्रिया के समूहसे वृद्धिको प्राप्तहै १६ इससे दूसरा आत्माकारूप, द्वैत और अद्वैतसे वर्जित, भाव और अभावसे छूटाहुआ, आदि और अन्त से रहित १७ शुद्ध संवित् दीप्तिका लाभ, परानन्द में एक सुन्दर, ईश्वरकारूप, आत्मामें एकही जाने योग्य और गीताओं में कीर्तित कियाहै १८ हे पार्व्वती देवी! इसप्रकार अपार तेजवाले भगवान् के वचन सुन परस्पर विरोधी वचनों में शङ्कायुक्त होकर लक्ष्मीजी

बोलीं १९ कि आप यदि परमानन्द, वाणी और मनके गोचर नहीं हैं तो कैसे गीता को समुझावोगे इस हमारे सन्देह को दूर कीजिये २० महादेवजी बोले कि लक्ष्मीके इतिहास आगे चलनेवाले युक्त वचन सुन आत्मा की अनुगामिनी दृष्टि, गीताको भगवान् समझावते भये २१ किहे परेशानि ! लक्ष्मीजी ! पर और अपरके भेद से मैं आत्माहूं दो प्रकार का, श्रेष्ठ, साक्षी, निर्गुण, निष्फल, शिव २२ दूसरा पांच मुखवाला, दोप्रकार की तिसकी भी संस्थिति है शब्द और अर्थ भेदसे कहने योग्य जैसे मैं तैसेही महादेवजी हैं २३ गीताओं के वाक्यरूपसे जो दृढ़ काटदिया जाताहै यह हमारी संसारविषयात्मक पाशबन्ध है २४ जिसके अभ्यासके पराधीन पांच मुखवाले और महेश्वरजी हैं इस प्रकार गीताके साररूप समुद्रके वचन सुन २५ यह परके भेद से संसार से डरेहुओं करके जाना जाता है तिस अंग और प्रत्यंग से स्थित को लक्ष्मीजी पूंछतीभई हैं २६ तिसको इतिहाससमेत माहात्म्य सब लक्ष्मीजी से भगवान् कहनेलगे कि हे सुन्दर करिहांववाली स्त्री ! तुमसे गीतामें अपनी स्थिति को कहताहूं सुनिये २७ पांचों मुखोंको क्रमसे पांच अध्याय जानिये दश अध्याय भुजा, एकपेट, दो चरणकमल २८ इस प्रकार अठारह अध्याय वाङ्मयी ईश्वर की मूर्ति है यह मूर्ति ज्ञानमात्र से जानने योग्यहै महापापों के नाश करनेवाली है २९ इससे अध्याय भर या आधा अध्याय, श्लोक भर या आधा श्लोक वा चौथाईही श्लोकको जो बुद्धिमान् मनुष्य अभ्यास करताहै वह सुशर्मा की समान कहाताहै ३० तब लक्ष्मीजी बोलीं कि हे देव ! सुशर्मा नामवाला कौन जाति और आत्मकहुआ और किस हेतुसे कैसेउसकी मुक्तिहुई ३१ तब श्रीभगवान् बोले कि सुशर्मानामक बड़ाही दुष्टबुद्धि, पापियोंकी सीमा, आत्माके न जाननेवाले क्रूरकर्म करनेहारे ब्राह्मणोंके वंशमें उत्पन्नथा ३२ ध्यान, जप, होम और अतिथियों का पूजन कभी नहीं करताथा केवल विषयों में बलकी अधिकता से वर्तमान रहताथा ३३ नित्यही खेतीके कामों में रत, पत्तोंसे जीविका करनेवाला, मदिरा बहुत प्रिय और मांस

का भोजन करनेवाला था इसी प्रकारसे बहुत कालको वह बिताताभया ३४ एक समयमें वह मूढ़बुद्धि ब्राह्मण पत्तोंके लेनेकी कामनासे ऋषिकी बागको घूमताभया तो वहांपर उसको कालरूपी सांपने काटखाया ३५ तो मरकर बहुत से नरकों में जाकर फिर मर्त्यलोक में आकर बैलहुआ ३६ तो किसी लँगड़ेने उस बैलको अपने जीनेके हेतु मोललिया तो उसकी पीठपर सात आठ शरद लादा जाताभया तो उस बोझेको वह बड़े कष्टसे लेजाताभया ३७ कदाचित् वह लँगड़ा बहुतसमय में लौटा तो उसने बैलको जल्द जल्द हांका तो वह बैल वेगसे पृथ्वी में गिरगया और मूर्च्छा को प्राप्तहोगया ३८ विकलअंग होगये आंखें निकलआईं फेन मुंहसे बहनेलगा अपने कर्म्मसे न जीने में रहा और न मृत्युही को प्राप्त हुआ ३९ तो वहांपर बहुतसे मनुष्य इसका यह दुःख देखनेलगे तब तो एक सुकृतीने उसको कुछ पुण्यदिया ४० और अपने कर्मों को स्मरणकर और भी कोई मनुष्य देतेभये और मनुष्योंको बहुत देखकर वहांपर कोई वेश्या आगई ४१ वह अपनी पुण्यको नहीं जानतीथी कि कितनी है परन्तु उसने भी कुछ पुण्य दिया तो वह बैल मरकर कालके दूतोंकरके यमराजकी पुरी में प्राप्त कियागया ४२ तो वेश्याकी दीहुई पुण्यसे पुण्ययुक्त जानकर यमराजके यहां छोड़ दियागया तो फिर भूलोकमें आकर कुल और शीलयुक्त ब्राह्मणोंके घरमें जन्महुआ परन्तु अपनी जाति का स्मरणकर बहुत कालमें अपने अज्ञानको प्रेरण करनेवाले कल्याण के जानने की इच्छाकर ४३।४४ वेश्याकी दीहुई पुण्यको प्राप्तहोकर प्रसिद्ध कराकर सुआ पिंजरेमें स्थितहुआ ब्राह्मणही के घरमें पढ़ताथा ४५ उसीसे भीतरका आत्मा भी ब्राह्मण का पवित्र होगया और पुण्य अधिक होगई तिनने सुआसे पूर्वसमयकी उसकी जाति और सब वृत्तांत पूंछा तो सुआ सबको स्मरणकर कहनेका प्रारम्भ करताभया कि पूर्वसमय में मैं विद्वान् होकर वैदुष्यस्मयसे मोहित ४६।४७ गुणवान् विद्वानोंमें राग और द्वेषसे मत्सर करनेवाला था कालपाकर मरकर निन्दित लोकोंको प्राप्तहोकर ४८ सुआके कुलमेंहुआ अब

गुरुजी में अत्यन्त निन्दा करनेवाला, कालमें धर्म्ममें दुष्टकर्म करने हारा और पिता माताओंसे वियोगयुक्त हुआ ४९ गर्मीके दिनों में तपीहुई मार्ग में श्रेष्ठ ऋषियोंसे लायागया और स्थानमें पिंजरे में स्थितकरके टांग दियागया ५० वहांपर ऋषियोंके बालक गीताके पहले अध्याय का पाठकरते थे तिसको सुनकर मैंभी वारंवार पाठ करनेलगा ५१ इसी अवसरमें कोई चोरीका कर्म करनेवाला वागुरि हमको चुराकर बेंच डालताभया ५२ श्रीभगवान् बोले कि यह पहलेका अध्याय कहा जिससे पाप नाशहोकर उत्तम ब्राह्मण पवित्र भीतरकी आत्मावाला होकर छूटगया ५३ इसप्रकार परस्पर भाषण कर तिस अध्याय की प्रशंसाकर धीर लोग जपकर मुक्तिको घरही में प्राप्तहोजातेभये ५४ तिससे पहले गीताके अध्यायको जो पढ़ता, सुनता, स्मरण करता और अभ्यास करताहै तिसको दुःखसे तरने वाला संसाररूपी समुद्र नहीं प्राप्तहोताहै ५५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेसतीश्वर-संवादेगीतामाहात्म्येपंचसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७५ ॥

एकसौछिहत्तरका अध्याय ॥

गीताका माहात्म्यवर्णन ॥

श्रीभगवान् बोले कि हे लक्ष्मीजी ! पहले अध्याय का बहुत उत्तम आख्यान तो कहा अब और अध्यायोंका माहात्म्य सुनिये १ दक्षिणदिशा में वेद के पढ़नेवाले ब्राह्मणों के पुरन्दरपुरमें श्रीयुक्त देवशर्मानाम से प्रसिद्ध ब्राह्मण हुआथा २ यह अतिथियोंकी पूजा करता, वेद और शास्त्रमें निपुण, यज्ञसमूहों का करनेवाला और सदैव तापसों का प्रियथा ३ देवोंको और हव्यों से अग्निको बहुत कालतक तृप्तभी करताभया परन्तु तो भी वह धर्मात्मा एकांतिकी शान्तिको न प्राप्त होताभया ४ बहुत कल्पोंतक सत्यसंकल्पवाले तपस्वियोंको कल्याणके जानने की इच्छाकर सेवन करताभया ५ इस प्रकार तिसके आचरण करतेहुए बहुतकाल व्यतीत होगया तदनन्तर कोई मुक्तकर्म्मवाला प्राप्त होगया ६ जोकि कांक्षासे रहित,

नाकके अग्रमें नेत्रोंको लगाये, शान्तचित्त, आनन्दसे निर्भर, परब्रह्मजीका ध्यान करताथा ७ तब विद्वान् ब्राह्मणने उन अतिथिजी के प्रणत अन्तरात्मासे चरण ग्रहणकर विधिपूर्व्वक अतिथियोंकी जैसी पूजा चाहिये वैसीही पूजाकी ८ फिर शुद्धभावसे परितुष्ट तपस्वीजी से प्रणत होकर ब्राह्मण आत्माके निर्व्वाणकी स्थिति को पूंछता भया ९ तो आत्माका जाननेवाला अतिथि मित्रवन्तनामी अजापाल और उपदेश करनेवाला ब्राह्मणसे सौपुरनामपुरमें कहने का आरम्भ करताभया १० ब्राह्मण सौपुरनाम पुरमें आकर अतिथि जी के चरणोंकी वन्दनाकर तिसके उत्तरदिशामें बड़ाभारी वन देखते भये ११ जोकि पवनसे झूलेहुए अनेकप्रकारके फूलों के आमोदसे सुन्दर, मतवाले भौरों के गीत और शब्दसे दिशा सब पूर्ण होरहीथीं १२ तिसीवनमें नदी के तीर पत्थरपर बैठेहुए, आनन्दसे नेत्रमूंदेहुए, मित्रवन्तको देखताभया १३ यह वन परस्परविरोधी जीवोंसे आच्छादितथा इन विरोधी जीवोंने स्वाभाविक वैर छोड़ दियेथे और वनमें शीतल मन्द सुगन्धयुक्त पवन चल रहीथी १४ शान्त मृगके समूहों में दशानन्द मनोज्ञ और कृपासे अनुविद्धकरके पृथ्वी को अमृतकीनाईं सींचरहे रहेहैं १५ देवशर्मा प्रसन्नमन होकर नम्रता से मित्रवन्तजी के पास प्राप्त होकर कुछ शिरको नवाकर प्रणाम करताभया तबतो मित्रवन्तजी ने बड़ा आदरकिया १६ फिर विद्वान् देवशर्म्मा और में बुद्धि न लगाकर एकाग्रचित्त होकर बैठे और मित्रवन्तजी के ध्यानका काल जब समाप्त होगया तब उनसे पूछतेभये १७ कि आत्माके जाननेकी हम इच्छाकरते हैं तिससे हमारे मनोरथमें लब्धसिद्धिके उपाय को आप उपदेश करनेके योग्य हैं १८ श्री भगवान् बोले कि क्षणमात्र विचारकर मित्रवान् यह बोले कि हे विद्वन्! पूर्वसमयके वृत्तान्तको मैं कहताहूं तिसको समझो १९ गोदावरीनदी के किनारे प्रतिष्ठाननाम पुरहै वहांपर विद्वानोंके वंशमें दुर्दमनामी ब्राह्मण हुआथा २० और वहींपर विक्रम नाम राजाथा तिसके यहां दुर्दम ब्राह्मण प्रतिदिन दानों को लेकर अपनापेट भरताथा २१ जब दुर्दम ब्राह्मणकी समयपाकर मृत्युहुई

तो कालकरके कालकी फँसरी में बाँधकर यमराजजी के स्थान को प्राप्त कियागया तो वहांपर सब नरकोंमें कष्ट भोगकर २२ किसी दुर्वृत्त ब्राह्मणोंके कुलमें उत्पन्नहुआ और दूसरेजन्ममें वर्त्तमानहुई विद्यासे इस जन्ममें भी युक्तहुआ २३ और अधमकुलमें दुराधर्षा कन्याकेसाथ विवाहहुआ कालपाकर वह कन्या बाल्यावस्था छोड़कर युवावस्था को प्राप्त होगई २४ जिसके मोटेस्तन, सुन्दर करिहांव और मदसे विह्वल नेत्र थे यह स्त्री अपने पति को न सहकर दूसरे पतियोंकी इच्छा करती भई २५ और गांवसे बाहर निकलकर बहुतकाल एक कामी चाण्डाल के साथ रमण करतीभई २६ और चाण्डालही से गर्भ को धारणकर कन्या को पैदा करतीभई पहले के पापके प्रसंगसे यही उसकी स्त्रीहुई २७ कालपाकर जब बूढ़ीहुई तो डाकिनी होगई कुसंगसे दुष्टस्त्री के प्रसंगसे कुमति उत्पन्नहुई २८ तो रक्तके स्वाद में लालसायुक्त उस स्त्रीने व्याधियुक्त व्याघ्रको भक्षण करडाला फिर घोरवन में घूमनेलगी तो बहुत से मनुष्यों ने उसको देखकर बाहरकरदिया २९ और वह व्याघ्र यमराजके लोकमें जाकर जीवों के मारडालनेके प्रभावसे घोरनरकों को भोगकर व्याघ्रही हुआ ३० और कालपाकर यह दुष्टात्मा स्त्री भी मृत्युको प्राप्त होकर घोरनरकों को भोगकर हमारे घरमें बकरी हुई है ३१ हे विद्वन्! तिसको वा औरों को हम वनमें पालतेहुए घोरसिंहको इसप्रकार देखतेहैं मानोंसबको भक्षणही करलेगा ३२ तिस सिंहको आते देखकर डरसे बकरियोंके समूह भागतेहुओं को मरणसे डरनेवाले हमने छोड़दिया तो ३३ वह सिंह पहले के वैर को स्मरणकर प्राप्तहोगया तब यह बकरीभी नदीकेसमीप शीघ्रही सिंहके पास भय छोड़कर और वैरको भी त्यागकर प्राप्त होगई तो सिंहखड़ा होगया और मत्सरहीन चुप होरहा ३४। ३५ तिसको इसप्रकार देखकर बकरीबोली कि हे सिंह! आदरपूर्वक अभीप्सितमांसको खावो ३६ और जो तुम्हारी यहबुद्धि न होतो वैरकी बुद्धि को कैसे त्यागकरोगे इस प्रकार तिसके वचनसुन मत्सरहीन सिंह बोला ३७ कि इसस्थानमें हमारा वैर चलागया भूख और प्यास

तो प्राप्तहुईहै तिससे समीपहीमें स्थित तुम्हारी हम खानेकी इच्छा नहीं करतेहैं ३८ तब बकरी फिर बोली कि मैं निर्भय कैसेहूं इसमें जो कारण जानतेहो तो हमसे, कहने के योग्यहौ ३९ इसप्रकार जब उसने कहा तो सिंह उससे बोला कि मैं नहीं जानताहूं ऐसा कह कर दोनों इसके पूंछनेके लिये निकले ४० तो उन दोनोंने आकर बहुत विस्मययुक्त हमसेपूंछा तो हम उनदोनों समेत वानरोंके स्वामी के पास आकर पूंछा ४१ तो आदरपूर्वक वानरबोला कि हे बकरी के पालन करनेवाले ! इसजगह मैं प्राचीन इतिहासको कहताहूं सुनिये ४२ इस वन में आपके आगे प्राप्तहुए श्रेष्ठ स्थानको देखो यहांपर महादेवजी के लिंगको ब्रह्माजी ने स्थापित किया था ४३ और सुकर्म्मा नाम बड़े बुद्धिमान् यहींपर तपस्या करते थे वन के फूलोंको लाकर देवताओंके पूज्य महादेवजीको ४४ नदीके जलसे स्नान कराकर अच्छीतरह से फूल भी चढ़ाते थे इसप्रकार केवल कर्म्मसे वहां बसतेहुए बहुतकाल बीतगया तो कोई अतिथि उनके समीप प्राप्तहुआ ४५ तो वे उसको अच्छीतरह से फल भोजन कराते भये तो इस आतिथ्यसे वह प्रसन्न होकर सुकर्मा से बोला ४६ कि यह कर्म्म का मूल क्या है कि फलही भोजनकर आप स्थित रहते हैं या गत अनुगत वृत्ति से केवल स्थित रहते हैं ४७ जब इसप्रकार प्रसन्नहुए अतिथि ने कहा तो सुकर्म्माजी आत्माके कल्याणवाले, स्पष्ट, उत्तम वचन बोले ४८ कि हे विद्वन् ! तत्त्व से इस कर्म्म के फलको मैं नहीं जानताहूं जिसके जाननेकी इच्छासे केवल शंभुजीकी मैं सेवा करताहूं ४९ यहमहादेवजीकी सेवाका फलहै जो अपने मनोरथको स्मरण कराकर हमारे ऊपर आप कृपाकरतेहो ५० तिनके सत्यवचन सुनकर तपस्वीजी प्रसन्न होगये और पत्थर में दूसरे गीताके अध्यायको लिखदिया ५१ और पढ़ने के अभ्यास के लिये शीघ्र तिन ब्राह्मणको आज्ञादिया कि तुम्हारा मनोरथ सफल होगा ५२ ऐसा कहकर तिनके देखतेही देखते वह बुद्धिमान् विस्मितहोकर अन्तर्द्धान होगया और तिन्हीं की आज्ञासे देवशर्म्मा गीताके दूसरे अध्यायको पढ़नेलगे ५३ तदनन्तर बहुतकाल बीत-

ने पर वह देवशर्म्मा भावितात्मा और प्रसन्न बुद्धियुक्त होकर जिस जिसवनमें जाताभया वह वह शांत होजाताभया ५४ दूसरे गीता के अध्याय के जपकरनेवाले तिसकी तपस्यासे द्वन्द्वकी बाधा, भूख, प्यास और डरनहीं होतेभये ५५ मित्रवान् बोले कि तिससे इस प्रकार कहेगये और श्रेष्ठ कथाको प्रसिद्ध कराकर अनुज्ञातप्रसंग से बकरी और व्याघ्रयुक्त होकर चलेगये ५६ और जाकर पत्थर में लिखेहुए अध्यायको पढ़ा तिसके वारंवार पढ़ने से तपस्या का पार, उत्तम फल मिलताभया ५७ तिससे हे कल्याण! तुमभी नित्यही गीताके अध्यायके पढ़ने के योग्यहो तिसी से तुम्हारी मुक्ति समीपही स्थित होगी ५८ मित्रवान् की आज्ञासे देवशर्म्मा गीता के अध्यायका पाठकर पूजन और नमस्कारकर इन्द्रके पुरको प्राप्त होताभया ५९ तहांपर कोई देवताके स्थानमें आत्माके जाननेवाले को प्राप्तहोकर यह वृत्तांत निवेदनकर गीता के अध्यायको पढ़ता भया ६० मित्रवान् की शिक्षासे युक्त देवशर्मा आदरसे अध्यायको पढ़कर पवित्र आत्मायुक्त होकर दूसरे निरवद्य श्रेष्ठपद को प्राप्त होताभया ६१ हे लक्ष्मीजी! दूसरे गीताके अध्यायके माहात्म्यको वर्णनकिया अब इसीसमय में तीसरे अध्यायके माहात्म्य को कहताहूं सुनिये ६२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये सतीश्वरसंवादेषट्सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७६॥

एकसौसतहत्तरका अध्याय॥

गीताका माहात्म्य वर्णन॥

श्रीभगवान् बोले कि जनस्थान में कौशिकके वंश में जड़नाम ब्राह्मण हुआथा यह जाति के उचित धर्म्मको छोड़कर बनियों की वृत्तिमें मन लगाताभया १ और पराई स्त्रियोंमें व्यसनी, जुँआ खेलनेवाला, मदिरा पीनेहारा और नित्यही शिकारमें रतहोकर कालको इसीप्रकारसे बिताताभया २ जब उसका द्रव्यक्षीण होगया तो रात्रिमें चोरीको करनेलगा तो यज्ञ करनेवालोंके धनको प्राप्तहोकर ३

वाणिज्य करनेके लिये दूर उत्तरदिशा को गया वहांसे कस्तूरी, अगुरु कृष्ण और दीप्तिसे उज्ज्वल चामरों को ४ पांच छःयोजनसे लिये आताथा कि दूसरे दिन स्त्रीके देखनेकी अधिक चाहकर ५ बहुतदूर की राहको नांघ कर सूर्य्यनारायण के अस्त होनेके बाद दशो दिशाओं में अन्धकार छाजाने पर पेड़के नीचे ६ चोरोंके वश में प्राप्त होगया तब तो चोरोंने शीघ्रही उसको मारडाला तो धर्म के लोपसे यह घोर प्रेतहुआ ७ जो कि प्यास और भूखसे व्याकुल, दाढ़ोंको चाटता, ऊपरको बाल, भारी जंघाओं से युक्त, पीठमें लगे हुए पेट वाला ८ हाँड़ही मात्र बाक़ी रहे देह वाला और वारंवार दुर्वृत्तनेत्र था इसी अवसर में तिसका पुत्र धर्मात्मा, वेदका जानने वाला ६ तिसके देखने को नित्यही जाताभया परन्तु राहियोंसे कुछ ख़बर न पाताभया १० तदनन्तर कोई सहायी मनुष्य आये तो उनसे अपने पिताके नष्टहोजाने का हाल सुनकर बहुत पिता को शोच किया ११ तिस पीछे यह बुद्धिमान् पिताकी परलोककी क्रिया करने की इच्छाकर सामग्रीसमेत काशीजी के जानेको प्रस्थान करता भया १२ राहमें सात आठ निवासकर तिसी वृक्षके नीचे जहां पर इनका पिता मारागया था वहीं पर संध्या करनेको प्रारम्भ करता भया १३ और गीताके तीसरे अध्यायको जप करनेलगा तो आकाशके मध्यमें बड़ा घोर शब्दहुआ १४ और आकाशसे घोर पिताजी को गिरते हुए देखता भया तो विस्मय और डरसे विकलचित्त होगया १५ और आगे आकाशमें बड़े तेजसे व्याप्त, करोड़ किङ्किणियों से युक्त, तेजसे व्याप्त दिशाओं के मुखवाले १६ विमानको आगे देखताभया और सुन्दर स्त्रियोंसे युक्त, मुनियों से स्तुति किये गये, पीले कपड़े पहने अपने पिताको चढ़ेहुए देखताभया फिर उनके प्रणाम किया तो पिताने पुत्रको आशिष दिया १७। १८ फिर इस वृत्तान्त को पूंछा तो उसने सब कहसुनाया फिर पिताने पुत्रसे कहा कि हे वत्स! देहके नहीं पुण्यके कारणसे दुस्त्यज कर्मसे १६ हमारे समीप अध्यायको जपकर दैवसे तूने छुड़ादिया तिससे जप करतेहुए अब लौटजावो जिस लिये काशीजीको जातेथे वह सब

काम पूरा होगया श्रीभगवान् बोले कि जब पिताने पुत्रसे इसप्रकार कहा तो प्रकाशित तेजवाले पितासे पुत्र बोला २० । २१ कि आप हमारे हितकी कहिये जोकुछ और हमको करना चाहिये वह आज्ञादीजिये श्री भगवान् बोले कि तब तो पिता पुत्रसे बोला कि हे पापरहित ! यह तुमको करना चाहिये २२ जो हमने कर्म किये हैं वही हमारे भाई ने भी किये हैं इससे वह घोर नरकमें पड़ाहुआ है तिसके मोचन करने के तुम योग्यहो २३ और भी जे हमारे वंश में नरकमें प्राप्तहैं वे तुमसे मोचन करने के योग्यहैं यह हमारा मनोरथहै २४ जब इसप्रकार पिताने कहा तो पुत्र हाथ जोड़कर फिर बोला कि किस कर्म से तिन सबको मोचन कराऊंगा यह आप कहिये २५ जब इसप्रकार पुत्रने कहा तो पिता उससे बोला कि हे वत्स! जिससे हमको छुड़ाया है उसीके अनुष्ठान करनेके योग्यहो २६ उसका अनुष्ठानकर उससे उत्पन्न पुण्यको उन लोगोंको दे दीजिये तो हमारी नाईं वे सब पुरखे नरक दुःखको त्यागकर २७ थोड़ेही समय में विष्णुजी के परमपद को प्राप्त होजावेंगे जब इस प्रकार पिता ने आज्ञादिया तो पुत्र बोला कि हे पिताजी ! जो ऐसाही है तो नरक में पड़ेहुए २८ सबको मैं मोक्ष करादूंगा फिर पिता बोला जो आपको वचन रुचताहै तो ऐसाही हो कल्याणहो बहुत प्रिय प्राप्त हो २९ इसप्रकार पिता पुत्रको आज्ञा देकर विष्णुजीके श्रेष्ठ पदको जाताभया और पुत्र वहांसे लौटकर जनस्थानको प्राप्त होकर ३० सुन्दर पुरके विष्णुके स्थानमें कालको बितातामया और पिताकी कही हुई बातको करनेलगा ३१ भगवद्गीताके तीसरे अध्याय को पढ़कर उसकीपुण्य से नरकगामियों को छुड़ाकर विष्णुजीके पदको भेजताभया ३२ जब नरकवासियों को छुड़ानेलगा तो यमराजके दूत यमराजजीके पास प्राप्तहुए तो उन्हों ने अच्छी क्रियाओं से अनेकप्रकारसे सबको पूजा और कुशल पूंछा तो वे सब सुखपूर्वक बोलने का प्रारम्भ करनेलगे इसप्रकार बुद्धिमान् पितृलोकके महेश्वर यमराज इसप्रकार सबका सत्कारकर ३३।३४ आने का कारण पूंछनेलगे तो वे यमराजजी से कहनेलगे कि हे यमराज

जी! हम लोगों को शेषकी शय्यामें सोनेवाले भगवान्‌से पीड़ित समझो आपके पास कहनेको आये हैं देव भगवान् हमारेही मुखसे तुमसे कुशल पूछेंगे ३५। ३६ और सब नरकके प्राणियोंको मुक्ति देरहे हैं यह अमित तेजवाले विष्णुजीकी आज्ञा सुनकर ३७ मस्तक नवाकर कुछ चित्तसे ध्यान करते भये और नरकसे सब मदसे उत्कटों को विमुक्त देखकर ३८ तिन सब दूतोंसमेत दूध के समुद्रमें विष्णुजी के स्थानको श्रेष्ठ विमान से जातभये ३९ और समुद्रके बीचमें करोड़ों उदयहुए सूर्य के समान दीप्तियुक्त, कमलके दलोंके समान श्यामवर्ण संसारके गुरुजी को देखा ४० जोकि शेषजीकी पर रत्नोंकी किरणसे मिलेहुए तेजको देखरहे, आनन्दसे युक्त, प्रसन्नमन ४१ प्रेमपूर्वक लक्ष्मी करके वारंवार देखे जाते और भावयुक्त अच्छीतरह से ध्यान लगायेहुए योगियोंसे चारोंओर सेवित ४२ इन्द्रकरके दानवों के जीतनेके लिये स्तुति कियेगये और आम्नाय वचनों के अन्तमें ब्रह्माजीके मुखसे निकलेहुए ४३ मूर्त्तिमान् वचनोंसे गुण गायेहुए, सब योनियोंमें प्रसन्न, उदासीन ४४ योग से इकट्ठा कीगई पुण्यों के यौगपद्यसे जन्तुओं में सम्पूर्ण चराचर आत्माको देखरहे ४५ दीप्तिसे पूरित आलोकोंसे आत्माको प्रसन्न कररहे, शेषजी की दीप्तिसे प्रकाशित देहको धारण कियेहुए ४६ नील कमलदलोंके समान श्यामवर्ण और दीप्तिसे आकाशकी नाईं हैं तिन भगवान्‌को देखकर वहुत बुद्धिसे नमस्कार कर यमराजजी स्तुति करनेलगे ४७ कि सम्पूर्ण रचनासे निर्मलहुए चित्तवाले, मुखसे वेदको उत्पन्न करनेहारे, संसारके रूप, वेधा ४८ वलके वेगसे अत्यन्त दुर्द्धर्ष दानवेन्द्रों के मदके नाश करनेहारे, पालनमें सतोगुण धारण करनेवाले, संसारके आधार, विष्णुजी के नमस्कार हैं ४९ और सम्पूर्ण देहधारियों के पापसमूह के जीतने वाले और कुछ उँघारे ललाटनेत्रकी अग्निसे उत्पन्न ज्वालावाले आपके नमस्कारहैं ५० आप सब लोकके गुरु, आत्मा, महेश्वरहैं और सब वैष्णवोंको रचतेहैं इससे कृपा कीजिये ५१ मायासे वृद्धिको प्राप्त सम्पूर्ण संसारको व्याप्त करतेहुए तिससे और तिससे उत्पन्न गुणों

से परिभूत नहीं होतेहो ५२ अन्तश वर्तमानभी हो परन्तु तिनसे अभिभूत नहीं होतेहो और विषयवर्तिनी दृष्टिसे मन ग्रहणकरलियागया है ५३ और तिस फलकी अभिगामिनीसे आत्माहीमें लीन होजातेहो जैसे आप अवधिरहित हैं तैसेही आपकी महिमा का अन्त नहीं है ५४ यहांपर हमको मौनही युक्तहै क्योंकि आप वाणियों के विषय कैसे आसक्त हैं इसप्रकार स्तुतिकर हाथ जोड़कर यह बोले ५५ कि हे संसारके गुरुजी ! ये निर्गुण देहधारी मैंने विनियोगसे युक्तकिये हैं और भी जो कार्य्यहो वह आज्ञादीजिये ५६ इसप्रकार जब यमराजजीने स्तुति किया तो भगवान् तिनसे मेघों के समान गंभीर वाणीसे अमृतरसों से सींचतेहुएसे बोले ५७ कि समयमें वर्तमान मैंने पापसे लोकको उद्धारकिया और तुममें मैंने भारको भी रख दियाहै इससे देहधारी को मैं नहीं शोच करताहूं ५८ तिससे अपने स्थानको जाकर अपने कर्म्म को करो श्रीभगवान् बोले कि ऐसा कहकर देवजीतो अन्तर्द्धान होगये और यमराजजी अपने पुरको प्राप्त होतेभये ५९ और वह भगवद्गीता के तीसरे अध्यायका पाठ करनेवाला अपनी जातिके अनेकों प्राणियों को नरक से उद्धारकर श्रेष्ठ विमानपर चढ़कर आप भी विष्णुलोकको जाताभया ६० ॥

इतिश्रीपाद्ममहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्येसप्तसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७७ ॥

एकसौअठहत्तरका अध्याय ॥

गीताके चौथे अध्याय का माहात्म्यवर्णन ॥

श्रीभगवान् बोले कि चौथे अध्याय के माहात्म्यको कहताहूं सुनिये जिससे दोकन्या बेरके पेड़होगई थीं वे पेड़ोंको छोड़कर स्वर्ग को चलीगई १ तब लक्ष्मीजी बोलीं कि हे देव ! बेरके पेड़ोंको छोड़ कर कैसे कन्या स्वर्ग को चलीगईं वे पूर्वसमयकी कौन थीं और कैसे मुख्यताको प्राप्तहुईं २ हे नाथ ! यह जाननेकी मैं इच्छाकरती हूं आप कहने के योग्य हैं क्योंकि मैं इस श्रेष्ठ कथाको सुनकर नहीं

तृप्तहोती हूं ३ तब श्रीभगवान् बोले कि गंगाजी के किनारे काशी नाम पुरी है तहां विश्वेश्वरजी के स्थानमेंयुक्त आत्मा भरतनामहुए ४ ये दुष्ट आत्मा नहीं थे नित्यही आत्मा में रतहोकर आदरसे चौथे अध्याय का जप करतेथे और जपही के अभ्याससे द्वन्द्वों से पीड़ा नहीं पातेथे ५ यही तपस्वी भरतजी किसी समयमें समीपमें वर्तमान देवों के दर्शनोंकी इच्छाकर क्रीड़ा करतेहुए नगरसे बाहर निकलगये ६ और फल गिरनेवाली दो बेरियोंकी मूलमें एक में शिर रख और दूसरी में पांव लँबाकर विश्राम करतेभये ७ फिरतपस्वी के चलेजानेपर पांच छः दिनमें बेरीके दोनों वृक्षोंकीपत्ती और डालें सूखगईं ८ फिर कोई ब्राह्मणों के घरमें दोनों बेरके पेड़ दो कन्याहोकर उत्पन्नहुए और सातवर्षमें कन्या दोनों बढ़गईं ९ तो दूरदेशसे आतेहुए संन्यासीको दोनों देखतीभईं फिर उनकेचरण छूकर दोनों कन्या सत्यवचन बोलीं १० कि हे मुनिजी! आपकेप्रसाद से हम दोनोंका कष्ट छूटगया बेरके पेड़को छोड़कर मनुष्य जन्म प्राप्तहुआ है ११ इसप्रकार जब कन्याओं ने कहा तो विस्मित होकर मुनिजी उनसे बोले कि हे कन्याओ! किसहेतुसे कबमैंने तुमदोनों को छुड़ाया था १२ अपने बेरके वृक्षहोनेका कारणकहो इसको मैं नहीं जानता हूं तब दोनों कन्या मुनिजी से अपने बेरके वृक्षहोने के कारण १३ और तिससे पहले तिस दुस्त्यज से छूटजाने में कारण को कहने लगीं कि गोदावरी नदी के किनारे मनुष्यों को पुण्य का देनेवाला छिन्नपाप नामसे प्रसिद्ध तीर्थहै जो कि श्रेष्ठकोटिको प्राप्तहै तहांपर सत्यतपानाम तपस्वी घोरतपस्या करतेभयेहैं १४।१५ बड़ीगर्मीमें पंचाग्नि तापते वर्षाओं में मस्तकपर नित्यही जलकी धाराओं से सींचते १६ शिशिरऋतुमें जलमें बसकर कंटकयुक्त देहको धारण किये रहतेथे इसप्रकार संयमकरनेवाले मुनि सदैवकालमें तपस्या कर विशेष शुद्धरहतेथे १७ और श्रेष्ठ निर्वृतिको प्राप्त होकर आत्माहीमें वृद्धि करतेथे सदैव फल धारण करनेवाले, सघनछाया के वृक्षोंमें १८ और मत्सरहीन जीवोंमें तपस्याके फलके अनुसंधान में वैदुष्य से उपपादित श्रेष्ठ प्रीतिको बांधते थे १९ और तिनके

पास प्रतिदिन ब्रह्माजी आपही आकर उनके संकोचहीन होने से कुशल पूंछते और चलेजाते थे २० सत्यतपाजी तिन भगवान् का ध्यानकर बहुतही तपस्या बढ़ातेभये २१ तबतो डरकर इन्द्र सैकड़ों विघ्न करतेभये अप्सराओं के बीचसे हम दोनोंको बुलाकर आज्ञा देतेभये २२ कि तुम दोनोंजाकर तपस्यामें इनकी विघ्नकरो ये हमको इन्द्रासनसे उतारकर आपही राज्य भोगकी इच्छाकरते हैं २३ इसप्रकार इन्द्रकी आज्ञापाकर वे दोनों अप्सरा गोदावरी नदीके किनारे मुनिके पासको चलतीभईं २४ और मदसे गंभीर मृदंग और मनोहरशब्द करनेवाली बंशियों के बाजों के शब्दों से स्त्रियों संयुक्त मनका हरनेवाला गान प्रारंभ होगया २५ वे दोनों स्त्रियां मोटेनितम्बों को हिलाती हैं, सघन मोटेस्तनों से युक्तहैं कमल केसे सुन्दरमुखहैं कुछ आकुंचित अलकेंहैं २६ मणि और कुण्डलों से दिखलाई देते हैं कांधे, कमलकेसे उज्ज्वल नेत्रोंसे युक्तहैं, पतले करिहांववाली हैं, गोलजंघों से युक्तहैं २७ और यौवनके अर्थ में नाचरही हैं, स्वर, ताल और लयसे युक्त, भावके पीछे चलनेवाली सम्पूर्णगति को भी दिखलारही हैं २८ उन दोनों नाचरही अप्सरों का उत्पन्न हुआ कोमल उपक्रम धीरे धीरे बढ़ताभया और दिशाओं के चक्रको शब्दयुक्त करताभया २९ कुछ कपड़ों को उच्छ्वसित करती और स्तनोंको दिखलातीहुई अप्सराओंके अंगके हार के वेगसे कपड़ोंकी ठण्ढीहवा फैलतीभई ३० उन दोनोंकी चाल बहुत तीव्रथी जो कि कामदेवको बढ़ातीथी उसने विकाररहित आत्मावाले मुनिके क्रोधको उत्पन्न करदिया ३१ तबतो उन्होंने क्रोध से हाथमें जललेकर दोनों अप्सराओं को शापदिया कि तुम बेरीके पेड़ गंगाजी के किनारे होजावो ३२ तबतो उन अप्सराओं ने अत्यन्त नम्र होकर मुनिजीको प्रसन्नकर कहा कि हमलोगों ने पराधीन होकर जो यह अपराध कियाहै तिसको क्षमाकीजिये ३३ तब तो पुण्यबुद्धियुक्त मुनि सत्यता से उनके शापका विमोक्ष कल्पित करतेभये कि जब भरतजी तुम्हारे नीचे आवेंगे ३४ तो मर्त्यलोक में कन्याहोगी और बीतेहुए जन्मका स्मरण बनारहेगा इससे वेरि

के पेड़हुए हमलोगों के समीप आप ३५ भगवद्गीताके चौथेअध्याय को जप करतेहुए आये और हमलोगों का उद्धार करदिया इससे केवल शापहीसे हम आपको नमस्कार नहीं करती हैं ३६ किन्तु आपने घोर संसारसे हमलोगोंको छुड़ादियाहै श्रीभगवान् बोले कि तिन कन्याओं ने जब इसप्रकार कहा तो मुनि अत्यन्त प्रसन्नहो गये ३७ फिर कन्याओं ने मुनिजीकी पूजाकी तो मुनिजीकन्याओंके सलाहलेकर जिसतरहसे आयेथे वैसेही चलेजातेभये और वे दोनों कन्या आदरसे भगवद्गीताके चौथेअध्यायका जपकरनेलगीं ३८।

इतिश्रीपाझेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये अष्टसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७८॥

एकसौउनासीका अध्याय॥

भगवद्गीताके पांचयें अध्याय का वर्णन॥

श्रीभगवान् बोले कि हे देवि! हे प्रिये! लक्ष्मीजी! इससमयमें पांचयें भगवद्गीता के अध्यायके संसारमें पूजित माहात्म्यको संक्षेप से कहताहूं सावधान होकर सुनिये १ मद्रेषु पुरुकुत्सपुर में वेद के वादियोंके प्रसिद्ध कुलमें पिंगलनाम ब्राह्मण हुआथा २ यह कुलके उचित शास्त्र और वेदोंको छोड़कर मुरजआदिक बाजाको बजाता हुआ तौर्यत्रिकमें बुद्धि करताभया ३ गीत, नाच और बाजामें बहुत परिश्रमकर श्रेष्ठ प्रसिद्धताको प्राप्तहोकर राजाके स्थानमें प्रवेश करताभया ४ वहां राजाके साथ रहकर गान आदिक सुनानेलगा परन्तु स्त्रियोंमें बुद्धिकर वह पराई स्त्रियोंसे भोग करनेलगा ५ और अभिमान अधिक बढ़ा और पराये छिद्रोंको निरंतर कहनेलगा ६ और तिसकी हीन कुलसे उत्पन्न अरुणा नाम स्त्रीहुई ७ यह कामी पुरुषोंसे विहार करनेवाली घूमती और कामियों को ढूंढ़ती भई परन्तु पतिको विघ्नमानकर अर्द्धरात्रि में अपने स्थानमें ८ उसका शिर काटकर प्राणहीनकर पृथ्वीमें गाड़ देतीभई तब तो प्राणों से हीन होकर उसका पति यमराजजी के स्थानमें जाताभया ९ वहां पर दुर्जय नरकों को भोगकर मनुष्यहीन वनमें गृध्र होताभया

और यह स्त्रीभी भगन्दर रोगसे श्रेष्ठ देहको छोड़कर १० घोर न-
र्कों को प्राप्तहोकर तिसी वनमें सुई होतीभई तो कणों के ग्रहण
करनेकी कामनासे इधरउधर घूमनेलगी ११ तब गृध्रवैरको स्मरण
कर तीक्ष्ण नखोंसे उसको फाड़ डालताभया तो वह जलसे पूर्ण म-
नुष्यकी खोपड़ी में गिरतीभई १२ फिर गृध्र भागनेलगा तो जाल
वालोंने उसको मारडाला तो वह भी जहांपर उसकी पूर्वजन्म की
भी प्राणोंसे रहित होकर मनुष्य की खोपड़ीमें पड़ीथी १३ वहींपर
वह अत्यन्त क्रूरगृध्र भी आकर गिरा तब तो यमराजके दूत पितृ-
लोकको प्राप्त करतेभये वहांपर वे दोनों डरकर पहिलेके कियेहुए दुष्ट
कर्म्मोंको स्मरण करनेलगे १४ तब यमराज उन दोनोंके निन्दित
कर्म और अकस्मात् मरण में मनुष्य की खोपड़ी के जलमें स्नानसे
बहुत सुकृतको देखकर १५ उन दोनोंको ईप्सित लोक जानेको क-
हतेभये तब तो महापाप समूहोंसे दुर्द्धर्ष मन वे दोनों १६ अपने
दुष्कृतको स्मरणकर विस्मययुक्त होकर यमराजजी के नमस्कार
कर उनसे पूछतेभये १७ कि हम दोनोंने पूर्वजन्म में बड़े निन्दित
दुष्टकर्म इकट्ठे कियेथे अब हम दोनोंके ईप्सितलोक जानेका क्याहेतु
है तिसको आपकहिये १८ जब उनदोनोंने इसप्रकार कहा तो यम-
राजजीबोले कि गंगाके किनारे ब्रह्मके जाननेवाले उत्तम ब्रह्मचारी
हुएथे १९ वे अकेले ममतारहित, शांत, रागहीन और मत्सररहित
रहतेथे और सर्वदा गीताके पांचयें अध्यायका पाठकरतेथे २० तिसी
पुण्यसे वे ब्रह्मसनातनको जानकर पवित्र आत्मा होगयेथे जिसको
सुनकर पापीभी देह छोड़कर उत्तमलोक पाताहै २१ गीतासे निर्मल
देह और भावित आत्मा तिनकी खोपड़ीके जलको प्राप्तहोकर तुम
दोनों पवित्रता को प्राप्तहुएहो २२ तिससे तुम दोनों जिसलोककी
इच्छाहो तिसको जावो क्योंकि गीता के पांचयें अध्यायसे पवित्र
होचुकेहो २३ इसप्रकार समवर्त्ती यमराजसे समझायेगये वे दोनों
प्रसन्नहोकर विमानपर चढ़कर विष्णुजीके पदको जातेभये २४ ॥

इतिश्रीपाद्ममहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेगीता-
माहात्म्येएकोनाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १७९ ॥

एकसौअस्सीका अध्याय ॥

गीताके छठयें अध्यायका माहात्म्यवर्णन ॥

श्रीभगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ मुखवाली लक्ष्मीजी! गीताके छठयें अध्यायके माहात्म्य को कहताहूं जिसके सुननेवाले मनुष्योंकीहाथ में स्थित मुक्तिहोती है १ गोदावरीनदी के किनारे प्रतिष्ठानपुरनामक बड़ाभारी पुरहै जहांपर पिप्पलेशनामक मैं रहताहूं २ जहां गोदावरी के किनारे ठण्ढी शीकरों से हंस अपने पंखोंसे यम करनेवाले पुरुषोंके श्रमको हरलेते थे ३ और प्रकाशित कमलके पंक्तियोंकी कलियों की धूलिसे सुगन्धयुक्त सुन्दर गोदावरीजी का जहांपर जलहै जिससे वहांके मनुष्य देवतारूप हैं ४ विकृतके नाश करनेवाली चन्द्रमा की सुधाको धिक्कार वहांपर है और जहां मुनीश्वर स्नान करतीहुई महाराष्ट्रोंकी स्त्रियोंके ५ मुखों को फूले कमल की शङ्कासे स्पर्श करते हैं और शब्द करतेहुए कङ्कणों से सुन्दर महाराष्ट्रलोग जहांपर खेलरहे हैं ६ और भँवरों के शब्द तपस्वियों के मनको हरते हैं और अत्यन्त ऊंचे महलोंके कँगूड़ों पर विहार करतीहुई स्त्रियों के मुखको ७ प्रतिदिन देखकर चन्द्रमा जहांपर क्षीण रहता है और अत्यन्त ऊंचे महल की वलभी महामणि की किरणों ८ और दूब चन्दनसे चंचल मुनि और गन्धर्व्वों से चुम्बन कीजाती हैं और जहांपर फहराते हुए पताकाओं की पवनों से सूर्य्यके रथके घोड़े श्रमरहित होजाते हैं और राशि कियेहुए, मलयाचलसे उत्पन्न अगणित वनियों के समूहोंकरके १० जिसमें पत्थर शेष रहाहुआ यह मलयाचलही लक्षित होता है और जहांपर इकट्ठे किये हुए ढेरके ढेर मोती दिखलाई पड़ते हैं ११ और नगर देवताके हास्यके गुच्छेकी नाईं सब ओर हैं तहांपर ज्ञानश्रुतिनाम से राजा होताभया है १२ प्रतापरूपी सूर्य्यकी मण्डली के समान तीव्र तेजवाले जिस राजाके मणि सदृश पृथ्वी के धारण करने सबलोग शेषही समझते थे १३ जिसके नित्यही यज्ञके धुयें कल्पवृक्ष श्यामवर्ण होगये थे और असाधारण दान को लज्जा

देखते थे १४ और जिसके यज्ञकी पुरोडाशके चखाने के स्वाद में लम्पट सुन्दर पखनोंवाले पक्षी प्रतिष्ठानपुर को कभी न त्यागते भये १५ और जिसके दानरूपी जलकी धाराओं से, प्रतापकी दीप्ति से और यज्ञके धुवोंसे अत्यन्त पुष्टहुए मेघ समयमें वरसतेथे १६ और जिसके पृथ्वी में राज्य करतेहुए अत्यन्त वर्षा, नहीं वर्षा, टीड़ी, मूसा, सुआ, स्वचक्र और परचक्र ये सातोंईति कहींभी थोड़े पद को न प्राप्त होतीभई नीतिही फैलती भई १७ बावली, कुँवाँ और तालाबोंके छद्मसे जो प्रतिदिन पृथ्वीके हृदयमें स्थित निधानोंको देखताभया १८ और सफ़ेद और लाल पताकाओं से जिसका महल इस प्रकार शोभित होताथा जैसे आकाशगंगा की लहरों के समूहों से सानुमान् हिमाचल शोभित होता है १९ दान, तपस्या, यज्ञ और प्रजाओं के पालनसे देवतालोग प्रसन्न होकर राजा के वर देनेको प्राप्त होतेभये २० तदनन्तर आकाशमार्गसे कमलकी नालके समान उज्ज्वल देवी और पखनोंको कँपातेहुए देवोंके हंस निकलतेभये २१ शीघ्रतासे जातेहुए और परस्पर बातचीत करते हुए उन हंसों के पहले भद्राश्व इत्यादिक दो तीन वेगसे पहलेही निकल आये २२ तब पीछेवाले सब मिलकर आगे जानेवालों से बोले कि कैसे आपलोग वेगसे जातेहो २३ इस दुर्गम मार्ग में सब मिलकर जाना चाहिये आगे प्रकाशमान तेजका समूह पुण्य की मूर्ति ज्ञानश्रुति राजाका तुमलोग नहीं देखते हो ये पीछेवाले हंसोंके अच्छीतरह से वचन सुन आगेवाले २४।२५ हंस हँसकर ऊंचे स्वरसे बोले कि दुर्द्धर्ष तेजवाले ब्रह्मवादी रैक्यजीका २६ वा ज्ञानश्रुतिनाम इस राजाका तीव्रतेजहै ये हंसोंकी वाणी ज्ञानश्रुति राजा सुनता भया २७ जोकि अत्यन्त ऊंचे महल में सुखपूर्वक स्थितथा तब तो विस्मय युक्त इसराजाने सारथीको बुलाकर २८ आज्ञादिया कि महात्मा रैक्यजीको लेआवो तब अमृतगर्भित राजा के वचनसुन २९ आनन्दसमेत महोनाम सारथी चलताभया जहां मुक्तिकी देनेवाली काशीनाम नगरी है ३० और जहां उपदेश के देनेवाले संसारके पति विश्वेश्वरजी हैं वहांको गया तदनन्तर गया-

क्षेत्रको गया जहांपर गदाधर देवहैं ३१ जो कि उत्फुल्लनेत्र संपूर्ण लोकों के उद्धार करनेको बसते हैं फिर हिमाचल के समीपमें सब तीर्थोंसे अनेकोंबार ३२ घूमकर पाप नाशनेवाले केदारजीको गया जिनके एकबार दर्शनकर मनुष्य निस्सन्देह मुक्त होजाते हैं ३३ महापापों से छूटकर ईप्सित भोगोंको भोग करते हैं तदनंतर गौड़ों में प्राप्तहोगया जहां पुरुषोत्तमजी रहते हैं ३४ जिनके दर्शन से मनुष्य स्वर्गलोकमें बसते हैं तिसपीछे मुक्तिदेनेवाली द्वारका नगरी को गया ३५ जहां गोमती के किनारे रुक्मिणीजी के प्यारे हरिजी रहते हैं गोमतीतीर्थ में स्नानकर पांचकृष्णों को देखकर ३६ मनुष्य ईप्सितभोगों को भोगकर मुक्तिको प्राप्त होता है तदनन्तर समुद्रको प्राप्तहोकर वह बुद्धिमान् सारथी भुक्ति मुक्तिके देनेवाले देव सोमनाथजी के दर्शनको गया फिर भुक्ति मुक्तिकी देनेवाली अवंतिकापुरीक प्राप्तहोगया ३७।३८ जहांपर पार्वतीजी से सुखपूर्वक क्रीड़ा कर हुए महाकाल महादेवजी रहते हैं तदनन्तर नर्मदाके किनारे कल्या और भुक्ति मुक्तिके देनेवाले ॐकारजीको प्राप्तहोकर वहांसे शीघ्रनि कला ३९ और अश्वमेधकर नाम नगरको गया जहांपर शार्ङ्गना धनुषके धारण करनेवाले, लक्ष्मीजी के पति आपही रहते हैं ४० त नन्तर विष्णुगया, लोणारकुण्ड को प्राप्तहुआ जहांपर स्नान औ पानकर मनुष्य बन्धनसे छूटजाताहै ४१ फिर कोलहापुर और रु गयाको गया जहांपर भक्तिकी देनेवाली भगवती लक्ष्मीजी रहती ४२ पंचनदी में मनुष्य स्नानकर महालक्ष्मीजी के दर्शनकर मनोवा ञ्छित भोगोंको भोगकर भक्तिको प्राप्तहोताहै ४३ तदनन्तर अमल गिरिनास नगरीको प्राप्तहुआ जहां नन्दिकेश्वरपर चढ़ेहुए सोम नाथजी रहते हैं ४४ चारभुजाके देव, वरदानमें उद्यत, शिव सोमना जी के दर्शन करनेसे मनुष्यों की निस्सन्देह मुक्ति होजाती है ४ तुङ्गभद्रानदी के किनारे हरिहरजीको देखा जिनकी भुजा युगयुग पृथ्वी में गिरजाती हैं ४६ जिन सुन्दर हरिहरजी के दर्शनकर म मनुष्य मनोवाञ्छित भोगों को भोगकर बन्धन से छूट जातेहैं ४ और संसार के बन्धनों से छूटकर स्वर्ग में सौ कल्प स्थित रहते

दनन्तर लोकों के स्वामी विभुजी के दर्शन किया ४८ जिनके द-
नकर मनुष्य कभी नरक नहीं देखते हैं और संसार के बन्धनों से मुक्त
कर सौ कल्प तक स्वर्ग में स्थित रहते हैं ४९ और निस्सन्देह मुक्ति
को प्राप्त होते हैं तिस पीछे सिद्ध और गन्धर्वों से सेवित श्रीशैल
को प्राप्त हुआ ५० जहांपर मल्लिनाथ नाम महादेवजी संसाररूपी
समुद्र के मध्य से सम्पूर्ण लोकों के उद्धार करने के लिये रहते हैं ५१
जोकि कालकाल में आपही श्रेष्ठ ज्योति को दर्शन करनेवाले और स्म-
रण करनेवाले मनुष्यों को दिखलाते हैं और डरकर नरकयातना दूर
स्थित होती हैं ५२।५३ संसार के बन्धनों से छूटकर मनुष्य स्वर्गलोक
में सुख भोगकर निस्सन्देह मुक्ति को प्राप्त होते हैं ५४ फिर लक्ष्मण
और जानकीसमेत जहां रामचन्द्र जी हैं वहांको गया तहां स्नान
और पान करनेसे निश्चय नरक से छूटजाता है ५५ मनुष्य सौ करोड़
कल्प स्वर्गलोक के सुख को भोगकर संसार के मार्ग से मुक्त होकर नि-
स्सन्देह मुक्ति को प्राप्त होते हैं ५६ फिर वहां से भीमरथी के किनारे
आकर भुक्तिमुक्ति के देनेवाले विठ्ठलदेव दोभुजावाले के दर्शन करता
भया ५७ जहां गोदावरी नदी का जन्मस्थान बड़ाभारी ब्रह्मगिरि
है और गौतमजी के स्थानको प्राप्त होकर जहाँहीं तीन नेत्रके म-
हादेवजी रहते हैं ५८ और अरुणा और वरुणा के मध्य में जहांपर
गोदावरी नदी है तहां स्नान और पानकर ब्रह्महत्या नाश होजाती
है ५९ अगणित तीर्थों से युक्त ब्रह्मगिरि के मनुष्य दर्शनकर सं-
सार के दुःखों से छूटकर मुक्तिही को प्राप्त होते हैं ६० गौतमी के दोनों
किनारे स्थित होकर तीर्थों के ढूंढ़ने में कौतुकयुक्त सारथी फिर पाप
नाश करनेवाली मथुराजी को गया ६१ जहाँपर देवता और मनु-
ष्य स्वायंभुव देवजी को भजते हैं जोकि बड़ाभारी, मुक्तिका देने
वाला, आद्य, भगवान्का स्थानहै ६२ और वेद और शास्त्रमें प्र-
सिद्ध, तीनों लोकों के स्वामीका जन्मस्थानहै अनेक प्रकार के देव-
समूह, ब्राह्मण और ऋषिसमूहों से सेवितहै ६३ अर्द्धचन्द्रमा की
दीप्तिके आकार यमुनाजी के किनारेपर शोभितहैं सब तीर्थों के नि-
वाससे एक पूर्ण, आनन्द सुन्दर ६४ वृक्ष और लताओंसे आच्छ

दित गोवर्द्धन पर्वतहै और वेदकेसारके धारण करनेवाले,विश्रांति महापुण्यकारी बारह वन हैं ६५ तदनन्तर पश्चिम उत्तरमें काश्मीरनगरको देखताभया फिर कुरुक्षेत्रके समान धर्मधुरक्षेत्र के दर्शन किया ६६ जहांपर मेघोंके छूनेवाले घरोंकी शंखके समान सफ़ेद और लालपंक्तियां हैं वे महादेवजी की अस्पष्ट अट्टहास दशा की नाईं हैं ६७ भक्तिप्रसाद मालाओंकी सुवर्ण कलशों से युक्त, पवनों से स्वर्गसिन्धुमें गिरेहुए सुवर्ण के कलशहैं ६८ जहां महलके कँगूड़े में नीलरेशमी कपड़े के पताका शैवालके कंकण स्वर्गसिन्धुकी लताकीनाईं शोभित होतेहैं ६९ जहां काश्मीर को आश्रित होकर सरस्वती नित्यही बसती हैं यदि न बसें तो शास्त्र कैसे लिखें ७० और जहां मदसे आलसयुक्त सरस्वतीजी बहुतकाल विश्राम करतीभई हैं और मृणालकीसी चंचुवाले वाहन हंस घूमरहे हैं ७१ और जहां ब्रह्माकरके कलाविशेष जानने को भेजे हुए हंस चारों ओरहैं वे नक्षत्रोंकी नाईं शोभित होतेहैं ७२ और जिसमें दैत्यों के वैरी करके स्त्रीके शयनके लिये हाथोंके छूनेसे सुख देनेवाले स्थल के कमल दिखलाई देतेहैं ७३ और ब्राह्मणों के उपन्यासोंसे स्फुट नहीं सुनाई देताहै और गूंगाभी अच्छेअच्छे पदों में कल्लोल करताहै और वाणीसे देवता के समान होजाता है ७४ जिसमें यज्ञके धुयेंसे आकाशमण्डल व्याप्तहै वह मेघोंसे धोयाभी जाताहै परन्तु कालिमाको नहीं छोड़ताहै ७५ और जहांपर यज्ञकी महादीप्तिसे गलितअमृत का छद्मसे स्थान लांछितहै वह चन्द्रमा में दिखलाई देताहै ७६ और जहांपर गुरुदेवजी के समीप आश्रित होकर ब्रह्मचारी जन्मके अभ्यासके वशसे अपनेआप सम्पूर्ण कला पढ़तेहैं ७७ और जहांपर ब्राह्मणों की स्त्रियों के कंकणोंका शब्द प्रतिदिनघूमते हुए भौंरोंके शब्दको लोप करता है ७८ और जहांपर ब्राह्मणों की स्त्रियों के कपोलोंको स्पर्श करताहुआ पवन शापके डरसे मन्द मन्द चलताहै ७९ जहांपर माणिक्येश्वरनाम महादेवजी देहधारी पुरुषों के वरदेनेके लिये प्रतिदिन बसते हैं ८० जो पूजितहुए और राजाओं को जीतकर मणिकेश से आदर को प्राप्तहुए हैं तभीसे मा-

णिक्येश्वरनामको धारण करतेभये हैं ८१ काश्मीरके देवेशकी दिग्विजय के उत्सव करनेवाले राजाने माणिक्य और बहुत ऐश्वर्यों से जिससे महादेवजी को पूजाहै इससे भी माणिक्येश्वर नामहुआ है ८२ तहांपर गाड़ीके ऊपर तिसके जल और छायाको सेवन करतेहुए, अंगोंको खुजलातेहुए रैक्यजीको सारथी ने देखा ८३ और भी राजाके कहेहुए तिन तिन चिह्नों से युक्त रैक्यजी के दण्डवत् प्रणामकर सारथी बोला ८४ कि हे ब्रह्मन् आपका क्या नामहै निरन्तर आप स्वच्छन्द रहते हौ, किसलिये यहां विश्राम करते हौ और क्या करने की इच्छाहै ८५ इसप्रकार सारथीके वचनसुन परमानन्दसे निर्भर रैक्यजी स्मरणकर सारथी से बोले कि हम पूर्णमनोरथ हैं ८६ परन्तु किसी बहुत पूजासे हमारे जानतेहुए मनकी वृत्ति होने योग्यहै ८७ हृदयमें स्थित रैक्यके अभिप्रायको आदर से सारथी लेकर धीरे धीरे से लौटकर राजाके पासगया ८८ और राजाके प्रणामकर उनसे सब हाल हाथ जोड़कर कहा और स्वामी के दर्शनसे बहुत प्रसन्नहुआ ८९ तदनन्तर सारथी के वचन सुन विस्मयसे उत्तम लोचनयुक्त राजा रैक्यकी सम्भावनाविधिमें श्रद्धायुक्तहोकर ९० दो घोड़ियों से युक्तगाड़ी, मोतियों केहार, रेशमीकपड़े और सहस्रों गौवों को लेकर ९१ काश्मीर मण्डल में योगीजीके पास पहुंचा और सब सामग्रियों को आगे निवेदनकर पृथ्वी में दण्डवत् गिरताभया ९२ तब तो रैक्यराजा के ऊपर क्रोधकरता हुआ बोला कि रे शूद्र! दुरीश्वर! हमारे वृत्तान्तको नहीं जानताहै ९३ इस घोड़ियोंसे युक्त गाड़ी को उठालेजा कपड़े, मोती के हार और दूधयुक्त गौवोंको भी लेजा ९४ जब इसप्रकार रैक्य ने कहा तब तो राजारैक्य का डरकर शापके भयसे उनके कमलरूपी चरणों को ९५ भक्तिसे ग्रहणकर यह बोला कि हे ब्रह्मन् प्रसन्न हूजिये ९६ और हे भगवन्! आपका यहअत्यन्त अद्भुत माहात्म्य कहां से हुआ है प्रसन्न होकर हमसे तत्त्वसे कहिये ९७ तब रैक्यजी बोले किहे राजन्! मैं गीताके छठयें अध्याय को प्रतिदिन जपताहूं तिसी से देवताओं को भी दुःसह तेजकी राशि मैं हूं ९८

तदनन्तर गीताके छठयें अध्याय को यत्नसे बुद्धिमान् ज्ञानश्रुति राजारैक्यजीसे अभ्यासकर मुक्तिको प्राप्तहोगया ९९ और माणिक्येश्वरके समीप मोक्षके देनेवाले गीताके छठयें अध्याय को जप कर रैक्य भी सुखको प्राप्त होताभया १०० हंसके वेषको धारणकर वरदेनेकेलिये आयेहुए और विस्मयको प्राप्तहुए देवता लोगभी इच्छापूर्वक जातेभये १०१ इसएक छठयेंअध्यायको जो मनुष्य सदैव जपताहै वह निस्सन्देह विष्णुजीकी पदवीको प्राप्तहोताहै १०२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये अशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८०॥

एकसौइक्यासीका अध्याय॥

गीताके सातयेंअध्यायका माहात्म्यवर्णन॥

श्रीभगवान् बोले कि हे लक्ष्मीजी! अब तुमसे सातयें अध्याय के माहात्म्यको वर्णन करताहूं जिसको सुनकर कानों में अमृत के पूरसे पूर्तिहोजाती है १ पाटलिपुत्रनाम नगरहै जोकि क़िलारूप और ऊंचेगोपुरोंकाहै वहांपर दयाका समुद्र शंकुकर्णनाम ब्राह्मण होता भया २ यह बनियोंकी जीविकाकर बहुतधन इकट्ठाकरताभया परन्तु पितर और देवताओंको क्रमसे तर्पण और पूजन न करताभया ३ धनके इकट्ठा करने में परायण होकर राजाओं को भोजन कराता भया और घरके बीचमें मंगलके अर्थ चौथाविवाह करताभया ४ फिर लड़के और भाइयों समेत कभी रात्रिमें कहीं जाताभया वहां जब सोनेलगा तो भुजाके नीचे ५ किसी सांपने आकर काटखाया तो मणि मन्त्र और औषध आदिक होनेलगे परन्तु काटनेकेपीछे ही वह असाध्य होगया ६ कुछ क्षणों में प्राणरहितभी होगया तो नींबके दल नालोंसे देहको बांधकर ७ वृक्ष के शाखामें धरकर पुत्र लोग घरको प्राप्तहोतेभये तदनन्तर बहुतकाल बीतनेपर वह सर्प होताभया ८ और तिस वासनामें आत्मा बँधजातीभई तो पूर्वजन्मका स्मरणकर इन पुत्रों को छलकर घरसे बाहर ९ अपनी करोड़ संख्या जहांपर द्रव्य धरीथी वहांको गया फिर पुत्रलोग श्रेष्ठश्रद्धा

से युक्तहोकर नारायणबलि १० मरेहुये अपने बाप ब्राह्मण की क-रतेभये फिर एक समयमें वह सर्पके जन्मसे पीड़ित होकर स्वप्नमें आकर ११ पुत्रोंके आगे पिता अपने मनका वृत्तान्त कहता भया तब तो सबेरे उठकर पुत्रलोग विस्मयसे मोहयुक्त होकर १२ पर-स्पर कहतेभये एकपुत्र तो पिताके स्नेह से उद्धार करनेकी इच्छा करताभया १३ दूसरा द्रव्यके लोभसे सांपके मारनेकी इच्छाकरता भया और पुत्र पिताके स्नेहरससे मोहितमनहोकर १४ क्या हमारे पिता सर्प्प होगये हैं या नहीं इसप्रकार शोचकर केवल रोनेलगा तदनन्तर मध्यम पुत्र दोनों भाइयों को छलकर १५ किसी बहाने से उठकर अपने स्थानको गया और धीरेसे अपनी गुणशालिनी स्त्री को बुलाकर १६ कुदार हाथ में लेकर जहां सर्प्परूप पिता रहता था वहांको गया यह द्रव्य को नहीं जानता था इससे चिह्नों से सारांश से निश्चय कर १७ तिसी स्थान में आकर लोभ की बुद्धिसे तिस बेमौरि के खोदने की इच्छाकर आप कुदारसे खोदने लगा और उसकीस्त्री मिट्टी निकालनेलगी १८ तो खोदने में उस बेमौरिसे अत्यन्त घोरसांप निकला कि जिसके बहुत जहरथा १९ फिर वह फुफकारकी पवनों से बोला २० कि तू कौन है किसलिये यहां आया है कैसे बिलको खोदता है और रे मूर्ख ! किसने तुझे भेजाहै यह सब हमारे आगे कह २१ तब पुत्रबोला कि मैं शिवनाम आपकापुत्र सोना लेनेकी इच्छाकर रात्रिमें जो स्वप्न देखाथा उससे विस्मित होकर आयाहूं २२ महादेवजी बोले कि इसप्रकार लोक में निन्दित पुत्रकी वाणी सुन सर्प्पहँसकर स्पष्ट कहनेलगा २३ कि जो हमारा पुत्रहै तो सर्प्परूपहुए हमको शीघ्र बन्धन से छुड़ाओ पूर्व्वजन्मकी निक्षेप द्रव्यकेलिये हम सर्प्पहुए हैं २४ तब पुत्रबोला कि हे पिताजी ! कैसे आपकी मुक्तिहोगी यह हमारे आगे कहिये क्योंकि सम्पूर्ण लोकोंको छोड़कर जैसे रात्रिमें मैं आपकेपास प्राप्त हुआ हूं २५ तब पिताबोला कि हे पुत्र ! तीर्थ, दान, तपस्या, यज्ञ ये सर्व्वथा हमारे उद्धार करने में समर्थ नहीं हैं २६ गीताका सातवां अध्याय अमृतरूप और प्राणीके बुढ़ापा मृत्यु और दुःखके दूरकरने

का कारणहै २७ हमारी श्राद्धकेदिन सातवें अध्यायके जपकरनेवाले ब्राह्मण को श्रद्धासे भोजन कराओ तो इससे निस्सन्देह मुक्तिहोजावेगी २८ और भी वेदविद्यामें निपुण ब्राह्मणों को परमश्रद्धासे युक्त होकर यथाशक्ति भोजनकराओ २९ इसप्रकार सर्प्परूपहुए पिता के वचन सुन जो कुछ वे आज्ञा देतेभये उससे अधिक सब बालक करतेभये ३० तब तो श्रीमान् शंकुकर्ण सर्प्पकी देहछोड़कर पुत्रोंको द्रव्यमें विभागकर सुन्दर देहको धारण करतेभये ३१ पिताने जो करोड़ रुपया पुत्रोंको बांटदिया उससे अच्छी वृत्तिवाले सब पुत्र आनन्दको प्राप्त होतेभये ३२ और धर्म्ममें बुद्धिवाले वे पुत्र बावली, कुंवाँ, तालाब, यज्ञ और देवों के स्थान बनवाकर अन्नशाला करते भये ३३ और मोक्षमें बुद्धि अर्पणकर अत्यन्त इष्ट जानकर सातवें अध्यायका जपकरने से सब पुत्र भी मुक्तिको प्राप्त होजातेभये ३४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डे
गीतामाहात्म्येएकाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८१॥

एकसौबयासीका अध्याय॥

गीताके आठयें अध्याय का माहात्म्यवर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! आठयें अध्याय के माहात्म्य को कहताहूं सुनिये जिसके सुननेही से बड़े आनन्दको प्राप्तहोगी १ दक्षिण दिशामें आमर्दकपुर प्रसिद्ध है तहांपर भावशर्मा नाम वेश्याओंका पति ब्राह्मण होताभया २ यहमांस खाता, मदिरापीता, साधुओं की सम्पदा चुराता, पराई स्त्रियोंसे रमणकरता और शिकार में कुतूहलयुक्त रहताथा ३ इसी प्रकार वहघोर अत्यन्त भारी मनोरथ का करताभया एकसमयमें वह मित्रोंकी सभामें तालीफल के अमृतसमान रस को ४ कण्ठपर्यंत पीकर अजीर्ण से अत्यन्त पीड़ित होकर पापी कालसे मरजाताभया तो फिर वह बड़ाभारी तालीका पेड़ही होताभया ५ तब तिसकी घनी अत्यन्त ठण्डी छायामें दो स्त्री पुरुष जोकि ब्रह्मराक्षस होगयेथे वे आकर बैठतेभये ६ तब पार्वतीजी बोलीं कि हे महादेवजी! वे कौनजाति, क्यानाम,

क्या वृत्तान्त और किस कर्म से दोनों ब्रह्मराक्षस हुएथे ७ तब महादेवजी बोले कि वेद और वेदाङ्गके तत्त्वका जाननेवाला, सबशास्त्रों के अर्थ में निपुण अच्छे आचार करनेवाला कुशीवल ब्राह्मण कोई होताभया ८ और तिसकी स्त्री दुष्ट आशयवाली कुमति नामहुई यह स्त्रीसमेत ब्राह्मण तिलहीन होकर बड़े बड़े दानोंको ग्रहणकरते भये ९ भैंस, कालपुरुष और घोड़े आदिक को प्रतिदिन ब्राह्मणों को न देतेभये दानमें मिलीहुई कौड़ीको भी ले लेतेभये १० काल पाकर जब दोनों स्त्री पुरुष मरे तो ब्रह्मराक्षस का रूप होकर भूख और प्यास से व्याकुल होकर इस पृथ्वी में घूमने लगे ११ फिर तालीवृक्ष के नीचे आकर विश्राम करतेभये तो स्त्री कहतीभई कि हम दोनों का यह महादुःख कैसे जावेगा १२ और ब्रह्मराक्षस की योनि से कैसे मुक्ति होगी जब इसप्रकार स्त्री ने पूंछा तो ब्राह्मण बोला १३ कि विना ब्रह्मविद्या के उपदेश, अध्यात्मविचार के विना और कर्म्मविधि के ज्ञान के विना कैसे संकट से छूटेंगे १४ तब स्त्री बोली कि हे पुरुषोत्तमजी ! ब्रह्म, अध्यात्म और कर्म्म क्या है इतना स्त्री के कहतेही जो आश्चर्य्य हुआ तिसको सुनो १५ आठयें अध्यायके आधे श्लोकके सुननेहीसे वह पेड़ उसी समयमें ताली के रूपको छोड़कर श्रेष्ठब्राह्मण होजाता भया १६ शीघ्रही ज्ञानसे आत्मा शुद्धहोगई पापके कंचुकसे छूटगया और गीता के माहात्म्यसे वे स्त्री पुरुषभी मुक्त होजाते भये १७ देखो भाग्यही से तिनके मुखसे गीता के आठयें अध्याय का आधा श्लोक निकला तिसीसे तीनों मुक्तहोगये फिर आकाशसे आतेहुए, बजतीहुई किंकिणियों से शुभ १८ आकाशमें अप्सराओंके मुखरूपी चन्द्रमाके मण्डलसे शोभित,अप्सराओंके मुखरूपी कमलोंमें घूमतेहुए भौंरों से व्याप्त १९ मथेहुए दूधके समुद्रकी वेलाके डिंडिरकीनाईं सफ़ेद और लाल, गंगाकी लहरोंके समान सुन्दर चामरोंसे शोभायमान २० गातेहुए गन्धर्वों से सुभग और सैकड़ों देवों की स्त्रियोंके नाच से युक्त सुन्दर विमान आया तिसपर दोनों स्त्रीपुरुष चढ़कर [illegible] को जातेभये २१ यह सम्पूर्ण वृत्तांत विस्मय करानेवालाहै

न्तर वह बुद्धिमान् भावशर्मा आदरसे इसआधे श्लोकको लिखलेता भया २२ और देवदेव जनार्दनजी के आराधन करनेकी इच्छाकर मुक्तिकी देनेवाली काशीनाम नगरीकोगया २३ और वहां वहुउदार-बुद्धि श्रेष्ठतपस्या करने को प्रारम्भ करताभया इसीसमय में जगन्नाथ, देवदेव, जनार्दनजी से २४ हाथ जोड़कर लक्ष्मीजी ने पूंछा कि आप नींदको छोड़कर स्थितहैं यहसब वृत्तान्त कहिये २५ तब श्रीभगवान् बोले कि काशीजी में गंगाजीके किनारे बुद्धिमान्, हमारी भक्तिके रससे पूरित, भावशर्मानाम ब्राह्मण अत्यन्त तपस्या करताहै २६ जितेन्द्रिय होकर गीता के आठयें अध्याय के आधे श्लोकको जपकररहाहै हे लक्ष्मीजी ! तिसकी तपस्या से मैं वहुत प्रसन्न हुआहूं २७ हे प्रिये ! इससमयमें वड़ी देरसे विचार रहाहूं परन्तु तिसकी तपस्या के समान फलदेने को उत्कण्ठितमनहूं २८ पार्व्वतीजी वोलीं कि हे महादेवजी ! भगवान् प्रसन्न होकर यदि चिन्ताको प्राप्तहोगये तो भगवान्का भक्त भावशर्मा फिर किसफल को प्राप्त होताभया २९ तव श्रीमहादेवजी बोले कि प्रसन्नहुए मुरारिजी के प्रसादको प्राप्तहोकर भावशर्मा उत्तम ब्राह्मण अत्यन्त सुखको प्राप्त होजाताभया और तिसके सब वंशवाले पदवी को प्राप्तहोतेभये ३० जोकि तिसकर्म के वशसे पहले यातनाको प्राप्त होगयेथे हे हरिणके बच्चेके समान नेत्रवाली लक्ष्मीजी ! यह आठयें अध्यायका कुछमाहात्म्य कहा इसको सदैव देखना चाहिये ३१।३२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये द्व्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८२ ॥

एकसौतिरासीका अध्याय ॥

गीताके नवयें अध्यायका माहात्म्यवर्णन ॥

श्रीमहादेवजी बोले कि हे पार्वती ! इसके पीछे आदरसे नवयें अध्यायको कहताहूं स्थिर होकर सुनिये १ नर्मदानदी के किनारे माहिष्मतीनाम नगरीहै तहां कल्याणयुक्त माधवनाम ब्राह्मणहुआ २ वह वेद और वेदाङ्गके तत्त्वका जाननेवाला, समय समयमें अ-

तिथियोंको प्याराथा और शुद्धबुद्धि विद्याहीसे बहुत धनको इकट्ठा कर ३ कभी भारी यज्ञको प्रारम्भ करताभया तो आलम्भनके लिये बकरेको लाकर उसकी देहकी पूजा करताभया ४ फिर संसार के विस्मय करानेवाला बकरा हँसकर ऊंचेस्वरसे बोला कि विधिपूर्वक कीहुई इन बहुत यज्ञों से क्या है ५ ये नाश होनेवाले फलकी देने वाली हैं और जन्म, बुढ़ापा और मरणका कारणहैं हे ब्राह्मण! हमारी इस दशाको देखो ६ बकरेके अत्यन्त कुतूहलसे युक्त वचन सुनकर मंडपके बसनेवाले मनुष्य विस्मयको प्राप्तहोगये ७ तबतो हाथ जोड़कर आंखको बन्दकर श्रद्धायुक्त ब्राह्मण आदरसे बकरेके प्रणामकर तिससे पूंछनेलगा ८ कि आपकी जाति, आत्मा और वृत्तान्त क्याहै और किसकर्म से बकरेहुयेहो ९ तब बकरा बोला कि मैं ब्राह्मणों के निर्मलवंश में पूर्वकाल में उत्पन्नहोकर यज्ञसमूहों का करनेवाला वेदकी विद्यामें निपुणथा १० एकसमयमें हमारीस्त्री ने पुत्रकेरोग की शांतिके लिये देवीजीकी भक्तिमें नम्रहोकर बकरा मँगाया ११ जब चण्डिकाजीके मण्डपके स्थलमें बकरा काटाजाने लगा तो ब्रह्मके जाननेवाली बकरेकी माता हमको शाप देतीभई १२ कि रेपापी! ब्राह्मणों में अधम! विनाशास्त्रके मार्गसे हमारे पुत्र को जो तू मारताहै इससे बकरेकी योनिको प्राप्तहो १३ हे उत्तम ब्राह्मण! तबतो कालपाकर मैं मरकर अनेक प्रकारकी योनिके संताप करनेवाली यातना भोगकर बकराहुआ १४ और पशुकी योनि में भी मुझको जातिका स्मरण बनाहुआहै तब ब्राह्मण बोला कि तुम्हारे जन्मकी शुश्रूषाके कुतूहलके रसके उन्मुख १५ मनहै इससे सब ब्राह्मणोंसे संपूर्ण वृत्तांत कहिये तब बकरा बोला कि कदाचित् मैं आहितुण्डिककी शिक्षा से बन्दरहुआ सो प्रत्येकके घर के आंगन में नाचताहुआ क्रीड़ा करतेहुए डिम्भों से देखागया फिर उदार अपनी स्त्री और पुत्रोंको देखकर १६। १७ नाचनेको छोड़कर क्रिया से पराङ्मुख होगया तो दुःसहवर्तुलके दण्डोंसे आहितुण्डिक १८ क्रोधसे लालनेत्रकर हमको अच्छीतरहसे ताड़ना करनेलगा तबतो हम मूर्च्छितहोकर रक्त गिरानेलगे १९ और अन्न और जलको सूंघते

हुए कालधर्मके भाव अर्थात् मृत्युको प्राप्तहोगये तदनंतर कुत्ताहोकर घरघरमें घूमनेलगे २० फिर अपनेही पेटके भरनेवाले, राहमें छोड़े हुए उच्छिष्ट अन्नके भक्षण करनेवाले हम कदाचित् अपनेघरमें प्रवेश करगये २१ और भूखसे व्याकुलहोकर बटुई में रक्खेहुए भातके खा- नेकी इच्छाकर पृथ्वीको सूँघताहुआ और डरसे दशोंदिशा देखता हुआ २२ मनुष्यों के शब्दसे शंकायुक्त होकर समीप में स्वादसा लेताहुआ था कि आकर हमारे पुत्रों ने देखलिया २३ और हमारी स्त्रीने छड़ी आदिकों से हमको ताड़ित किया तो हमारा करिहांव टूटकर बहुत रक्त गिरने लगा २४ और मूर्च्छा से व्याकुल होकर बड़े कष्टसे घरसे बाहरनिकला फिर हमारे अंगों में पीब बहनेलगा और कीड़ेभी पड़गये कि जिससे मरगया २५ तदनन्तर शौंडिकके घरमें बुरा घोड़ाहुआ फिर कालके क्रमसे मरकर अच्छाघोड़ाहुआ २६ तो कदाचित् जब मैं बुड्ढाहुआ तो हमारी स्त्री द्वारका जानेके लिये उद्यत होकर थोड़े मोलसे भी हमारे बेंचने की इच्छाकर म- नुष्यों से व्याप्त चौराहे में लाकर २७। २८ थोड़ी रस्सीसे बांधकर हमको खड़ा करती भई फिर दो तीन हमारे पुत्र हमारे ऊपर सा- थहीं चढ़कर २९ धीरे धीरे हमको तालाबके किनारे लेचले तो हम सघनकीचड़में फँसगये ३० फिर हमारेपुत्र छड़ी, पत्थर और हाथोंसे ताड़नाकर बहुत प्रकारसे उठानेलगे तो मैंने वहींपर प्राणोंको छोड़ दिया ३१ तबतो हमको मराहुआ निश्चयकर हमारे पुत्र भग्नउद्यम होकर दुःखी मातासे रोकर कहके घरको जातेभये ३२ तदनन्तर मैं मरकर बहुत कालके पीछे अनेक प्रकारकी हीन और ऊंची यातना भोगकर बकरा हुआ ३३ तब ब्राह्मण बोला कि हे बकरे ! इस नित्यके उत्पन्न दुःखसे क्या है यथावत् हमको अत्यन्तसुख होता है ३४ तब बकरा बोला कि हे ब्राह्मण ! स्वस्थतापूर्वक पूंछतेहुए तुमको जो कौ- तुकहै तो फिर और आश्चर्यको कहताहूं ३५ मोक्षका देनेवाला कुरु- क्षेत्रनाम नगरहै तहांपर सूर्यवंशी चन्द्रशर्मानाम राजा हुआथा ३६ यह राजा बड़ी श्रद्धासेयुक्त सूर्य्यग्रहणके समयमें कालपुरुष दान देनेको प्रारम्भ करताभया ३७ वेद और वेदाङ्गके पारगामी ब्राह्म-

णको बुलाकर पुरोहित के साथ पुण्यकारी जलसे स्नान करने को जाताभया ३८ तदनन्तर कालपुरुष ऊंचेस्वर से हँसताहुआसा बोला कि और ब्राह्मण क्षेत्रमें कुछ थोड़ीसी भी वस्तु का दान नहीं लेते हैं ३९ हे ब्राह्मण ! सूर्य्यग्रहण के समयमें कुरुक्षेत्रमें कालपुरुष दानको आप कैसे ग्रहण करते हैं ४० इस सबको पापका करनेवाला निश्चय जानकर धनके लोभसे अन्ध बुद्धिहोकर कैसे करने को प्रवृत्तहो ४१ इसप्रकार कालपुरुष के संसार के विस्मय करानेवाले वचन सुन इस महादानके डरसे क्याहै यह ब्राह्मण बोलताभया ४२ इसप्रकार के महादानों के पापरूप अथाह समुद्रके तरनेका उपाय अच्छीतरहसे मैं हीं जानताहूं ४३ तदनन्तर राजा स्नानकर कपड़े पहनकर पवित्र, प्रसन्न हृदय होकर सफ़ेदमाला और चन्दनादि का लेपनकर ४४ समीपही में वर्त्तमान पुरोहित के करकमलको पकड़ कर तिसकालके उचित मनुष्यों से सेवित होकर आताभया ४५ और आकर यथोचित विधिसे भक्तिपूर्व्वक तिस ब्राह्मण को काल पुरुष देदिया ४६ फिर निर्दयी, पापी, लालनेत्रवाला कोई चाण्डाल कालपुरुष के हृदयको काटकर चलागया ४७ क्योंकि प्राप्तहुए काल-की पराई निन्दाके रसके उत्सवमें निन्दा चाण्डालकी देहके समीपही ब्राह्मण के पास पहुंची ४८ ये चाण्डालों के जोड़े लालनेत्र होकर ब्राह्मण के अंगमें जबर्दस्ती से चार प्रचार करतेभये ४९ गीताके नवयें अध्यायको ब्राह्मण जपहृदयमें करतेहुए स्थितथे और राजाके देखतेही हुए एक ब्राह्मण कँपते थे ५० भीतर तो गोविन्दजी का ध्यानकररहे थे और समुद्रकी नाईं पवनों से कँपरहेथे ५१ तदनन्तर गीताके अक्षरों से उत्पन्न, वैष्णवों से पीड़ित, निष्फल उद्यम वाले चांडालों के जोड़ेको भगेहुए देखकर ५२ ब्राह्मण के समीपमें जो ब्राह्मण बैठाथा वह जल्दी से भगजाताभया शरीर में वर्तमान पराई निन्दाके रसके उत्सवमें ५३ इसप्रकार कलितवृत्तांत होकर विस्मययुक्त स्मेरनेत्र होकर प्रत्यक्षही ब्राह्मण से पूंछताभया ५४ कि हे ब्राह्मण ! यह भारी घोर आपदा तुमने कैसेतरी किसमन्त्रको जपते और किसदेवताको स्मरण करतेहो ५५ यह पुरुष और यह

स्त्री ये दोनों कैसे उपस्थितहैं और कैसे शांतिको प्राप्त हुएहैं यह हम से कहिये ५६ तब ब्राह्मण बोला कि चाण्डालमूर्ति यह घोर पापकी मूर्तिहै और स्त्रीकारूप निन्दाहै इनदोनोंको मैं जानताहूं ५७ गीता के नवयें अध्यायकी मन्त्रमाला मैंने स्मरणकी है हे राजन्! तिस सब माहात्म्यको तुम जानो ५८ गीताके नवयें अध्यायको मैं प्रतिदिन जपताहूं तिसीसे बुरे दानसे उत्पन्न आपदाओं को तरगया हूं ५९ फिर राजा तिस ब्राह्मण से नवयें अध्याय का अभ्यासकर दोनों मनुष्य उत्तम और श्रेष्ठ निर्वृतिको प्राप्त होतेभये ६० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये त्र्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८३ ॥

एकसौचौरासीका अध्याय ॥

गीताके दशवें अध्यायका माहात्म्यवर्णन ॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे सर्वज्ञ! हे सर्वचैतन्य! हे सर्वेश्वर! हे वाणियों के गुरु! हे शिवजी! जो आप मान्य दिखलाई देते हैं तिनकरके मैं धन्यहूं १ यह जो आपने पुण्यकारी नवयें अध्यायका माहात्म्य निरूपणकिया जो कि अनेकप्रकार की विस्मय स्वादु, कथाओं से युक्त, मधुरूपहै जिसके २ सुनतेही हे देवेश! हे वृषभध्वजजी हम को तृप्ति नहीं होती है और अकुण्ठित सुननेकी उत्कण्ठा बढ़ती है ३ हमको महिमाके समुद्रमें गीताका सुननाही जीवनहै तिसमें भी मुनिलोग दशयें अध्याय को प्रधान कहतेहैं ४ तिसका उद्देश कर इस महाअध्याय की कथाको कहिये तब महादेवजी बोले कि हे सुन्दर कटिवाली पार्वती! स्वर्ग दुर्गकी दुर्लभ निश्रेणी जो कि प्रभावोंकी सीमाकी नाईं परम पवित्र कथाहै तिसको सुनो काशीपुरमें ब्राह्मण पुण्यकीर्ति में परायणहुआ ५। ६ जो कि शांतचित्त, हिंसारहित, साहसयुक्त, निवृत्ति में निरत और नित्यही जितेन्द्रिय रहताथा ७ और धीर बुद्धिवाला इसप्रकार विख्यात, हममें नन्दी की नाईं भक्तियुक्त, वेदोंका पारगामी और सब शास्त्रों के अर्थों में निपुणथा ८ और ध्यान में पराधीन चित्त होकर जातेहुए, अन्तर

आत्मामें डूबेहुए मनवाले और तत्त्वचक्षु ९ तिसको दौड़कर प्रीति से मैं हाथका अवलम्बन दूंगा कभी चमत्कारके करनेवाले हमारे यहां विमनामुनि १० आचमन कर नाकके अग्रमें परमानन्द से व्याप्त दृष्टिको प्राप्तकर सब इन्द्रियोंको निद्रायुक्त कर ११ द्वारकी सुन्दर देहली में शिर धरकर रात्रिमें निःशंक सोगया तबतो लम्बे नेत्रोंवाला १२ भृंगिरिटि हमारे चरण कमलोंको प्रणामकर हमसे पूछनेलगा कि इस विधिसे किसने तुम्हारे दर्शन कियेहैं १३ इस महात्माने तपस्या, हवन और क्या जप कियाहै जिसको देव आप प्रतिपदमें हाथका अवलम्बन देतेहैं १४ यह इस पुरसे क्यों बाहर नहीं जाता इच्छापूर्वक जब काशीकी सीमाको लांघकर जावेगा १५ तो सब समीपमें स्थित देहधारियोंको न देखेगा इसमें मैं स्वामीके कहेहुए हेतुके जाननेकी इच्छा करताहूं १६ जो आपने कृपा कियाहै और कहने के योग्य जो हो तो कहिये भृंगिरिटि के इस प्रश्न को सुनकर हम बोले १७ कि कदाचित् पुन्नागों के वनके समीप कैलासमें हमथे और पुन्नागों के वनमें पक्षी शब्द कररहे थे और गुच्छोंसे पूर्णथा १८ कोकिलाओंके समूहोंके शब्दोंसे कल्लोलयुक्त दिशाओंके अंतरथे और मुरैलेआदि पक्षियोंके समूहों के स्वरों से व्याप्तथा १९ और घूमतेहुए काष्ठ के घटीयंत्रों से प्रकाशित विन्दुओं से भी व्याप्तथा और प्रबुद्धसारणि के समीप केलाके कन्दों की लालसायुक्तथा २० कस्तूरीवाले हिरनोंसे युक्त, किन्नरोंके स्वरसे मोहित और कहींपर मृगों से सेवित था हरिण वहांपर मुंहके भोजनको चबाते थे २१ और सुओं में पांडित्य करतेहुए हंस और सुओं से व्याप्तथा और निर्ह्रादिकाणिनी रंध्रोंकी पवनसे विलोडित था २२ और माधवी के फूलोंके निर्यासकी मदिरासे मत्त भँवरे थे और उन्मीलत् त्रिवली के फूलों के गुच्छों की सुगन्ध से युक्तथा २३ और फूलेहुए वकुल के आमोद के मदसे आलसयुक्त भँवरेथे और चन्द्रमा से उत्पन्न अमृत से क्षालित पृथ्वीका मण्डलथा २४ और बड़े बड़े वृक्षोंके समूह थे तहांपर एक वेदिकापर बैठकर हम क्षणमात्र स्थित हुए २५ तो प्रचण्ड पवन बही जिससे कम्पयुक्त

चलायमान छायाहुई और पीछे से महाशब्दहुआ जिससे शब्दयुक्त कन्दराओं के किनारे हुए २६ तदनन्तर कोई पक्षी आकाश से उतरा जोकि शरद् ऋतु के कालेकमलों के समान काला, काजल के समूह के समान, २७ अन्धकार के समूहके तुल्य और पखने कटा हुआ पर्वत की नाईथा यह पक्षी पृथ्वीपर पांव रखकर हमारे नमस्कारकरता भया २८ और नहीं मलिनहुए कमलको लेकर हमारे चरणोंमें धरता भया तदनन्तर स्पष्टवाणी से स्तुति करनेलगा २९ कि हे देव आपकी जयहो आप चिदानन्द, अमृतके समुद्र, संसार के स्वामी, सदैव सद्भावनाके संग कल्लोल करनेवाले, अनंत शरीर ३० अद्वैत वासना मतिसे तीनों मलोंसे रहित, जितेन्द्रिय, पराधीन, समाधिसे प्राप्त शरीर ३१ उपाधि रहित, विनिर्मुक्त, आकार रहित, रोगहीन, सीमा रहित, अहंकार हीन, आवरण रहित, निर्गुण ३२ शरणागत की रक्षामें प्रवीण चरणकमलवाले, भारी सर्पों की भयानक माला धारण करनेहारे, अग्नि से कामदेव के जलानेवाले ३३ कुल्हाड़ेसे दैत्येन्द्र के भिन्न करनेहारे, महाविभु, त्रिपुरासुर की स्त्रीके माथेके सिन्दूररूप धूलिके धोनेवाले ३४ पार्वतीजी के स्तनरूपी कमलों की श्रेष्ठ केशर से चर्चित हैं प्रमाण से दूर, प्रमतिरूपी चैतन्यनाथ और त्रैलोक्यरूपी आपके नमस्कारहैं श्रेष्ठ योगियों से चुम्बन कियेहुए आपके चरण कमलों की हम वन्दना करते हैं ३५। ३६ और जो चरणकमल अपार भवसागर के पार के उतारने में अद्भुत हैं बृहस्पति जी भी आपके स्तोत्र में समर्थ नहीं होते हैं ३७ हे महादेवजी! आपके वर्णन में हज़ार मुख वाले शेषजी की भी चातुरी नहीं चलसक्ती तो थोड़ी बुद्धिवाले पक्षी की क्या गिनती है ३८ तिस पक्षीके कियेहुए इस स्तोत्रको सुनकर तिस से हम बोले कि हे पक्षी! तुम कौन और कहांके रहनेवाले हो ३९ हंसके समान देह और वर्ण कौवे के तुल्यहै और किस प्रयोजन के लिये यहां प्राप्तहुए हो यह सब कहिये ४० इस प्रकार जब मैंने पक्षी से पूछा तो नम्रतासे शिरझुकाकर वाक्यजाननेवालों में श्रेष्ठ वह मनोहरवाणी से बोला ४१ कि हे देवों के स्वामी! हे धूर्जटे!

हे विभुजी! हमको ब्रह्माजीके हंस समझो अब जिस कर्मसे हमारा देह काला हुआहै ४२ तिसको हे सर्वज्ञ! सुनिये और जो आपने पूछाहै तिसकोभी कहताहूं मानस तालाब से पृथ्वी में एकसमय आया तो बड़े संकटों में प्राप्तहुआ ४३ सौराष्ट्रनगरमें एक तालाबमें कमल फूलरहे थे वहांसे बालचन्द्रमा के खण्डके सदृश सफ़ेद कमल की नालके कौरको ४४ लेकर बलसे मैं आकाशको जाताथा तौ वहां से अकस्मात् पृथ्वी में गिरगया ४५ तो मूर्च्छायुक्त होगया सर्वथा विकल इन्द्रिय होगईं मूर्च्छासे देह काँपनेलगी और ठंढीहवासे स्पर्श कियागया ४६ जब मूर्च्छासे जगा तो अपने गिरनेका हेतु देखनेलगा कि बड़े आश्चर्यकी बातहै कि क्याहुआ इससमयमें हमारा गिरना कैसे हुआ ४७ और पकेहुए कूपरकेसमान सफ़ेद हमारी देहमें जिससे कालापन होगया इसप्रकार हम विस्मयसेयुक्त जबतक विचारकरते ही थे ४८ तबहीं कमलसे वाणी सुनाई दी कि हे हंस! उठो तुम्हारेगिरने और कालेहोनेका कारण कहताहूं ४९ तदनन्तर उठकर तालके बीच में आकर मैंने पांचकमलोंसेयुक्त सुन्दर कमलिनी देखी ५० और काले होने और गिरने के कारण पूछनेका प्रारम्भ किया तिसपीछे तहां पर मेघोंके समान श्यामवर्ण, पीले कपड़े धारणकिये ५१ चारभुजा वाले, गदा, शंख, चक्र और कमल इन आयुधोंसे युक्त, मुकुट, हार, केयूर और कुण्डलों की द्युति से चित्रित, आकाश में स्थित साठ हज़ार पुरुषोंको देखा तब तो मैंने पांच कमलोंसेयुक्त कमलिनी के नमस्कार और प्रदक्षिणा कर ५२। ५३ अपने गिरनेके कारण को आरम्भकर सब मैंने पूछा तब कमलिनी बोली कि हे कलहंस! तुम हमको लांघकर आकाशसे गये थे ५४ तिसी पापके योगसे पृथ्वी में गिरे और हे पक्षियोंमें श्रेष्ठ! तिसही से देहमें कालापनभी दिखाई देताहै ५५ तुमको गिरेहुए देखकर कृपापूर्णचित्त से सुगन्धयुक्त इस बीचके कमलसे हंस बोली ५६ अब ये जो तुमने नीलकमलके समान दीप्तिवाले साठहज़ार देखेहैं सब पक्षी हैं हमको सूंघकर स्वर्गको प्राप्त हुएहैं ५७ और सातवें बीतेहुए जन्ममें मुनिके पुत्र थे वे इसी तालाबके किनारे श्रेष्ठ तपस्या करतेभये हैं ५८ तो क-

दाचित् चम्पक के गुच्छे के समान स्तनवाली, चलायमान अपांग की कलाकान्त की तरङ्गयुक्त रस से आलससमेत, नाक में मोती की दीप्तिसे चुम्बन करती हुई मुसक्यानिकी किरणोंको और इसी वनमें कुचों में वीणाको लगाकर मीठे स्वरसे गान करनेलगी ५९ ६० उस गानेवाली का शब्द सुनकर सब ब्राह्मण हिरणोंकी नाईं तिसके पास आकर साथही देखने लगे ६१ और परस्पर कहने लगे कि मैंने इसे देखा है इससे मेरीही है इसप्रकार तिन भाइयों का मुष्ठियों से युद्ध होनेलगा ६२ परस्पर मुष्ठियों से छाती पीसती गई तो सब प्राणरहित होगये फिर घोरनरकों को भोगकर पृथ्वी में सारस होगये ६३ तो वनकी अग्निसे पक्षियोंको जलाकर नाश करनेलगे तिस पीछे हाथी होकर राहमें राहके चलनेवालोंको नष्ट करनेलगे ६४ फिर वनमें विष और जलकोपीकर यमराजके स्थान को गये तिस पीछे गधा, ऊंट, वानर के जन्मोंको क्रमसे प्राप्त होकर ६५ इस सरोवर में भौंरे होकर वर्तमान हुए फिर इससमय में हमारी सुगन्ध सूँघकर वे सब वैष्णवपद को प्राप्त हुएहैं ६६ हे हंस! सुनो जिससे हमारे विभवहैं इस जन्मसे पहले तीसरे जन्ममें पृथ्वी में ६७ सरोजवदनानाम ब्राह्मणकी कन्या मैं हुईथी जोकि पतिव्रताके धर्म्म में युक्त, गुरुजी के सेवने में रतथी ६८ कदाचित् एक सारिकाको पढ़ाया करती थी तब तो क्रोधकर मेरे पति ने मुझे शाप दिया कि हे पापे! तू सारिका होजावे ६९ तो मरकर मैं सारिका होगई और पतिव्रताधर्म्म के प्रसाद से मुनियों के स्थान में कोई कन्या हमारी पालना करती भई ७० और प्रातःकाल ब्राह्मण गीताके दशयें अध्यायको पढ़ते थे जोकि पापका नाश करनेवाला है और उसकी विभूति ऐसीहै तिस सबकोमैं सुनतीभई ७१ फिरकाल पाकर सारिकाकी देह छोड़कर दशयें अध्यायके माहात्म्य से आकाश में अप्सरा हुई ७२ पद्माकीप्यारी सखी पद्मावती नामसे प्रसिद्धहुई कभी मैं विमानपर चढ़कर आकाशसे जातीथी ७३ तो इस सुन्दर तालावको कमलफूलेहुयेदेखकर उतरतीभई और जबमैंने जलक्रीड़ा आरंभकी ७४ तो उसीसमयमें दुर्वासामुनि आनपहुंचे और उन्होंने

नग्न हमको देखलिया तबतो उनके डरसे मैंने अपनेआप कमलिनी का रूपधरलिया ७५ दोनों पावों से दो कमल, दोनों हाथोंसे दो कमल और मुखसे पांचयें कमलको धारण करतीभई इस प्रकार पांच कमलयुक्त हुईहूं ७६ फिर दुर्वासाजी देखकर क्रोधसे प्रकाशितनेत्र होकर बोले कि हे पापे! इसी स्वरूपसे सौवर्ष स्थित रह ७७ इस प्रकार शापदेकर दुर्वासामुनि तो क्षणमात्रहीमें अंतर्द्धान होगये और मेरी दशयें अध्यायके माहात्म्यसे वाणीनष्ट नहींहुई ७८ हमारे विलंघनमात्रसे तुम पृथ्वीमें गिरगयेहौ हे हंस! तुम्हारे स्थित रहतेही इस समयमें हमारे शापकी निवृत्ति होजावेगी ७९ हमारे गायेहुए उत्तम अध्यायको सुनो जिसके सुननेहीमात्रसे तुम इसी समय में मुक्त होजावोगे ८० ऐसा कहकर मनोहरवाणी से दशयें अध्याय को पाठ करनेलगी तिसको सुनकर और तिसके दियेहुए कमलको लेकर ८१ मैंने आपको समर्पणकिये ऐसा कहकर वह देहको त्याग करदेताभया तो यह महाअद्भुतसाहुआ ८२ तब भृंगिरिटि बोले कि पूर्व्वजन्मका यह कौन था, ब्रह्माजीका हंस कैसेहुआ और आपके आगे किसहेतुसे देहको छोड़ताभया ८३ ये भृंगिरिटिके वचन सुनकर तिस समयमें हम बोले कि पूर्वजन्ममें ब्राह्मणके स्थानमें यह उत्पन्न हुआथा ८४ सुतपा इस नामसे प्रसिद्ध;ब्रह्मचारी और जितेन्द्रिय था गुरुजी के कुल में बसकर प्रतिदिन वेद पढ़ताथा ८५ और भक्तिसे गुरुजीकी अच्छी तरहसे सेवाकरताथा एकदिन सोते हुए गुरुजी की शय्याको निद्रासे औंघाकर पांवसे छूताभया ८६ तिसी पापसे यह स्वर्ग्ग में भी तिर्य्यक्योनिको प्राप्त हुआथा हंसों के बीच में पद्मयोनि हंस हुआथा ८७ इसजन्म में हमारे आगे यह हमारे दर्शन करताभया और कमलिनी के कहेहुए गीता के दशयें अध्यायको सुनकर सबसेउत्तम ब्रह्मज्ञानको प्राप्तहोताभया फिर यह दशयेंअध्याय के माहात्म्यसे ब्राह्मणके कुलमें उत्पन्नहुआ ८८।८९ तो उसजन्मके गीताके अभ्यास से इसबालकके भी मुखरूपी कमल में सदैव गीताका दशवां अध्याय प्रकाशित होताहै ९० तिसी अर्थ के परिणामसे सब प्राणियों में स्थित, शङ्ख और चक्रके धारण करने

वाले देवजीको यह सदैव देखताहै ९१ जिस जिसमें इस शरीरधारी पुरुषकी मनोहर दृष्टि पड़ेगी वे चाहे मदिराके पीनेवाले वा ब्राह्मण के मारनेवालेही हों तो भी सब मुक्त होजावेंगे ९२ यह जानकर परमात्मा के स्वरूप मैंने इस ब्राह्मणको स्वभावही से मुक्तिकेक्षेत्र इस नगरमें प्राप्त कियाहै ९३ यहांके मनुष्यों की इसके दृष्टिके पड़नेसे मुक्ति हाथमेंही स्थितहै और कुछ विशेष नहीं है ९४ मैं इसको बाहरनहीं जानेदेताहूं क्योंकि इस मुनिने दशयें अध्यायके माहात्म्य से दुर्लभ तत्त्वज्ञान और जीवन्मुक्तिको प्राप्त कियाहै तिसी से इस के राहमें चलतेहुए हाथदे देताहूं ९५ । ९६ हे भृंगिरिटि ! यह दशयें अध्यायकी बड़ीभारी महिमाहै यह भृंगिरिटिके आगे जो कथा कहीगई ९७ सोई सब पापोंकी नाश करनेवाली तुमसे भी यहां कही मनुष्य वा स्त्री जो कोई ९८ इसको सुनै तो इसके सुननेही से सब आश्रमों के फलको प्राप्त होवै ९९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डे गीतामाहात्म्येचतुरशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८४॥

एकसौपच्चासीका अध्याय ॥

गीताके ग्यारहवें अध्याय का माहात्म्य वर्णन ॥

पार्व्वतीजी बोलीं कि हे ईशान ! हे दयासे पूर्ण ! महादेव जी ! यह इतिहास कल्याणोंका श्रेष्ठसाधनहै इसको सुनकर हमारे कांक्षा वर्तमानहै १ इससे हे विरूपाक्ष ! हे कहनेवालों में श्रेष्ठ ! प्रभुजी ग्यारहवें अध्यायके माहात्म्यको कहिये २ तब महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! गीताके वर्णनके आश्रय,कथा और भगवान् के नामकी पवित्र माहात्म्यको सुनो ३ हे सुन्दर नेत्रवाली ! पार्वती ! अध्याय के कहनेको समर्थ नहीं हैं हज़ारों कथा इसमें हैं तिसमें एक मैं कहताहूं ४ प्रणीता नदी के किनारे मेघंकर नाम नगर सुनाहै जो कि गरुच आधार ऊंचे कलशा और गोपुरों से युक्त ५ सुन्दर स्थानकी शालाओं में सोनेके खम्भोंसे विभूषित,श्रीमान्,सुखी,शान्त,अच्छे आचरणवाले,जितेन्द्रिय ६ और वेगयुक्त मनुष्यों से अधिष्ठित,न-

चित्र, मनोहर शृङ्गाटक युक्त मणियों के खम्भे प्रकाशयुक्त सोने के आपण और चत्वरोंसे शोभित ७ पताका किंकिणी क्वाणोंके समूहों से मनोहर स्वरयुक्त, वेदके पढ़ने के शब्दों से वाचालित दिशा हैं ८ नगारेके शब्दोंसे आच्छादित सुन्दर आकाश का मण्डल है पताकाके पल्लवों से उत्पन्न पवनसे जीतागयाहै शरीर ९ राजमार्ग में श्रेष्ठ द्वारपर स्त्रियोंके मंजीरों से सिंजित, वीणा और वंशीके बाजाओं से युक्त गीतों और श्रेष्ठ घोड़ोंके शब्दोंसे शोभितहै १० वारंवार दिक्पालों के पुरोंके साथ देखतासाहै और जहांपर संसारके स्वामी शार्ङ्गनाम धनुष हाथ में लेनेवाले भगवान् शोभित हैं ११ जोकि मूर्त्तिमान्, परमब्रह्म, संसारके नेत्र और जीवन हैं और लक्ष्मीजी के नेत्ररूपी कमलसे पूजितहै आकार का गौरव १२ और वामनजीका देह मेघोंके समान श्यामवर्ण,कोमल दीप्तियुक्त है भृगुजीकी लातका चिह्न छाती में है कमल और वनके फूलों के मालाओं से शोभितहैं १३ और अनेक भूषणों से युक्त रत्नोंसमेत समुद्र कीनांई हैं चलायमान सौदामिनी के दामहैं और जलसंयुक्त मेघों के समान दीप्तिहै १४ तिनके मुकुटमें साक्षात् शार्ङ्गधनुष हाथ में लेनेवाले श्रेष्ठ पुरुष भगवान्हैं तिनको देखकर प्राणी जन्म संसार के बन्धनसे छूटजाताहै १५ जिसपुरमें मेखलानाम महातीर्थ विद्यमानहै जिसमें स्नानकर मनुष्य वैष्णवपदको नित्यही प्राप्त होजाते हैं १६ और तहांपर मनुष्य संसारकेस्वामी, दयाकेसमुद्र नरसिंहजी को देखकर सातजन्मके इकट्ठे कियेहुए घोरपापों से छूटजाताहै १७ जो मनुष्य मेखला तीर्थ में गणेशजीके दर्शन करताहै वह ब्रह्मचर्य्य में परायण,दान्त,ममता और अहङ्कारसेरहित मनुष्य दुस्तर विघ्नों से तरजाताहै १८ तिसमेघंकरमें कोई ब्राह्मणों में श्रेष्ठ सुनन्द नामसे प्रसिद्ध हुआ जो कि वेदशास्त्रमें निपुण १९ इन्द्रियों के समूहों का वश करनेवाला और वासुदेवजी में परायण हुआ यह शार्ङ्गनाम धनुषके धारण करनेवाले भगवान् के समीपमें इस ग्यारहवें गीताके अध्यायको पढ़ताभया जो कि विश्वरूप का दिखलानेवाला है और अध्याय के प्रभावही से यह ब्रह्मज्ञानको प्राप्तहोगया २०। २१ पर-

सानन्दके समूहसे श्लाघ्यसंवित् समाधिसे पश्चिममुख इन्द्रियों के भावसे निश्चल स्थितिको भी प्राप्तहोगया २२ और यह जीवन्मुक्त योगी सदैव ऐसेही स्थित रहनेलगा एकसमयमें यह महायोगी सिंह राशिकी बृहस्पति में २३ गोदावरी तीर्थ के यात्रा करनेको प्रारम्भ करताभया पहले दिन उत्तम विरजनाम तीर्थ में प्राप्त हुआ २४ तो तीर्थों में नाभिको प्रारम्भकर देवताको पूजनकर स्नान करते करते संसारके पालन करनेवाली लक्ष्मीजीको देखताभया २५ और तिस सब कामफलकी देनेवाली महामाया को पूजताभया तदनन्तर कपिलाके संगममें तारातीर्थ में स्नानकर २६ अष्टतीर्थ करताभया और पितरों का तर्प्पणकर कुमारीश शिवजी के नमस्कार कर कपिलाद्वारको प्राप्तहुआ २७ और वहां स्नानकर पूर्व्वजन्मके पाप सब नष्टकरदिये और देवमधुसूदनजीको पूजन, नमस्कारादिककर २८ तिस रात्रि को बसकर प्रातःकाल ब्राह्मणोंसमेत चलकर नरसिंहवनमें जहांपर रामजी की दीर्घिका है और प्रह्लाद करके पूजित साक्षात्नृसिंहजी रहते हैं २९ तहां गये और तिन देवदेवेशजी को भक्ति से पूजनकर वह दिन वहीं बिताकर अम्बिकापुर को जाते भये ३० जहां भक्तों की कृपासे अम्बिकाजी स्थित हैं जो कि मनुष्योंके सम्पूर्ण वांछितोंको पूर्णकरती हैं३१ तहां भक्तिसे तिन अम्बिकाजी को फूल चन्दनादिक लेपन, अनेक प्रकारकी भेंट, स्तोत्र, प्रणमनसे पूजनकर ३२ वह ब्राह्मण तिस पुरसे कण्ठस्थान नाम पुरको प्राप्तहुआ जहांपर परमाशक्ति बड़ी दीप्तिवाली महालक्ष्मीजी रहती हैं ३३ तिन अमृतके सूर्यकीनाईं प्रकाशित दीप्तिमण्डलवाली और संसारके तापके काटनेवाली कमल और अमृतवाहिनीजी के दर्शनकर ३४ योगिराजों के हृदयरूप कमलों में राजहंसों से सेवित, ताड़नारहित महानादमयी, अद्वयरूपिणी ३५ भगवती, वांछित अर्थके देनेवाली महालक्ष्मीजी को भक्तिभावचित्तसे आराधनकर वे मुनीश्वर ३६ ब्राह्मणोंसमेत विवाहमण्डप नाम पुर को प्राप्तहुए और वहांपर प्रत्येक घरमें रहने के लिये घर मांगते भये ३७ परन्तु किसीघरमें भी रहनेको ब्राह्मण घर न पातेभये तब

तो ग्रामपालने सुन्दर रहने को स्थान ब्राह्मण को दिखलाया ३८ तो संगवालों समेत ब्राह्मणने स्थानमें प्रवेशकर निवास किया फिर अच्छीतरहसे सबेरा होने में उत्तम ब्राह्मण सुनन्दजी ३९ रहने के स्थानसे वाहर अपनी देहको और सब राह चलनेवालों को इच्छापूर्वक देखनेलगे ४० तबतो जातेहुए ब्राह्मण को समझकर ग्रामपालने देखकर उनसे कहा कि तुम सब ओरसे आयुष्मान्हो ४१ पुण्यवान् पुरुषों में पुण्यरूपहो हे वत्स! कोई संसारसे बाहर तुम्हारे प्रभाव विद्यमान है ४२ हे मुनियों में श्रेष्ठ! स्थान से बाहर तुम्हारे सहायक कहांजाते हैं तिसको देखो तुम्हारे आगे कहताहूं ४३ किन्तु तुम्हारे समान और तपस्वी को मैं यहां नहीं देखताहूं किस महामंत्रको तुम जानतेहो और कौन विद्यापढ़ेहुएहो ४४ किस देव की दयासे तुममें संसारभरसे अधिक शक्तिहै हे उत्तम ब्राह्मण! तिस की दयाकेवशसे इसगांवमें स्थितरहो ४५ हे भगवन्! सबप्रकारसे मैं तुम्हारी सेवाकरूंगा ऐसा कहकर तिसगांवमें मुनीश्वरको वसाताभया ४६ और रात्रिदिन भक्तिसे तिनकी सेवाकरनेलगा सात आठदिन इसीतरहसे व्यतीतहोगये ४७ तब प्रातःकाल अत्यन्त दुःखित ग्रामपाल मुनीश्वरके आगे आकर रोनेलगा कि इससमय में मुझ भाग्यहीन का गुणवान् और भक्तिमान् पुत्र ४८ रात्रि में प्रकाशित डाढ़ोंवाले राक्षसने खालियाहै जब इसप्रकार ग्रामपालने कहा तो मुनीश्वर तिससे पूछनेलगे ४९ कि वह राक्षस कहां रहता है और तुम्हारे पुत्रको कैसे खालिया यह सब कहिये तब ग्रामपाल बोला कि इस नगर में मनुष्यों का खानेवाला घोर राक्षस वर्तमान है ५० वह नित्यही आकर जो नगर में मनुष्य उसको दिखाई पड़ते हैं उनको वह खाजाता है पहले नगरके सब पुरुषों ने उसकी प्रार्थना किया ५१ कि हे राक्षस! हम सबकी रक्षाकीजिये तुम्हारे खानेकेलिये हम सब ग्रास कल्पित करते हैं जे राह चलनेवाले रात्रि में सोजावें तिनको तुम खाइये ५२ इस स्थानमें ग्रामपालके प्रवेश करायेहुए राह चलनेवालोंको अपने प्राणोंकी रक्षा करनेकेलिये भोजन कल्पित करतेभये ५३ हे उत्तम ब्राह्मण! तुम और कई मनुष्यों

समेत इसमें सोयेथे तिसमें आपही बचगये हैं और सबको राक्षस ने खालिया है ५४ हे द्विजोत्तम! तुम्हारे प्रभावको तुम्हीं जानतेहो हमारे पुत्रका आज एकमित्रभी आगयाथा ५५ उसको मैंने न जान कर और राहियोंकेसाथ तिसी घरमें प्रवेश करादिया ५६ उसको इसस्थानमें प्रवेशहुआ जानकर आधीरातको मेरापुत्र तिसके लेने कोगया तो तिसराक्षसने मेरेपुत्रको भी खालिया ५७ तब तो दुःखित होकर प्रातःकाल मैंने उसराक्षस से कहा कि हे दुष्टात्मन्! हमारे पुत्रको भी तूने रात्रि में खालिया है ५८ हे राक्षस! तुम्हारे पेट में निर्मग्न यह पुत्र जिस प्रकारसे जीवे ऐसा उपायहै तिसको मुझसे कहिये ५९ तब राक्षस बोला कि तुम्हारे पुत्रको मैंने नहीं जानकर और राहियों के साथ इस स्थानमें प्रविष्टको खालियाहै ६० अब जिसप्रकार हमारी कोखिमें जीवे और जिस प्रकारसे रक्षित होवै तैसा दैव परमेष्ठी ने रचाहै ६१ जो ब्राह्मण गीता के ग्यारहवें अ- ध्यायको निरन्तर पढ़ताहो तिसके प्रभावसे हमारी मुक्तिहोगी और मरेहुये फिर उत्पन्नहोजावेंगे ६२ तब ग्रामपाल बोला कि कैसे ग्या- रहवें अध्यायकी सामर्थ्यसे यह अद्भुतहोगा ६३ हे ब्राह्मण! जबमैंने इस प्रकार पूंछा तो वह राक्षस बोला ६४ कि पूर्वसमयमें आकाश की मार्गसे जातेहुए किसी गृध्रने हांड़के टुकड़े को अपनी चोंचसे कहीं पानी में डालदिया था ६५ तो उस जलाशयमें आकर कोई ज्ञानीश्वर इसको महातीर्थ जानकर पितरोंको तर्पण करताभया ६६ तब तो सम्पूर्ण मनुष्य तिससे पूंछनेलगे कि यह तीर्थ कैसे हुआ इसको कहिये तब ज्ञानीश्वरजी बोले कि यह जितेन्द्रिय तीनों सं- ध्याओं में ग्यारहवें अध्यायको जपताथा ६७ और मौन रहताथा इसी ब्राह्मणको राहमें चोरोंने मारडाला तो उसके हांड़ोंका टुकड़ा गृध्रके मुखसे जलमें गिरा ६८ तिसीसे यह पापोंका नाशकरनेवाला सुन्दरतीर्थ हुआहै तब तो सब मनुष्य यह सुनकर तिस जलाशय में स्नान करतेभये ६९ तो पापरहित होकर सब परमपदको प्राप्त होगये ग्यारहवें अध्यायकी सामर्थ्य से हमारी मुक्ति और राहियों का फिर उत्पन्नहोना होवेगा और जो मैंने किसी ब्राह्मणको उचित

दियाथा वह भी यहीं स्थितहै ७० । ७१ वह निरन्तर ग्यारहवें अध्यायको जपताहै उसी अध्यायके मंत्रसे सातबार अभिमंत्रित ७२ जलको जो हमारे ऊपर छोड़े तो हमारे शापकी निर्मुक्ति निस्संदेह होजावेगी इसप्रकार तिससे संदिष्ट तुम्हारे समीप प्राप्तहुआहूं ७३ तब ब्राह्मण बोले कि हे रक्षा करनेवाले! वह किसपापसे राक्षसहुआ है जिससे रात्रिमें तिस घरमें सोतेहुए मनुष्यों को खाजाता है इस को कहिये ७४ तब ग्रामपाल बोला कि पूर्व्वसमयमें इस गांव में खेतीका करनेवाला ब्राह्मण हुआथा वह एक समयमें धानके खेतों की रक्षा करने में व्याकुल होगयाथा ७५ वहांसे समीपही एक महागृध्र एकराह चलनेवाले को खानेलगा तो उसके छुड़ानेमें तपस्वी ने दूरहीसे दयाकी ७६ तबतक महागृध्र राहीको खाकर आकाशमार्गसे चलागया तब तो वह तपस्वी क्रोधसे खेती करनेवाले से बोला ७७ कि हे हालिक! हे दुर्बुद्धि! हे कठोरमति! हे निर्घृण! तुम को धिक्कारहै तू कोखिका भरनेवाला, पराई रक्षासे विमुख और जीवितसे हतहै ७८ चोर, डाढ़वाले, सांप, वैरी, अग्नि, विष, जल, गृध्र, राक्षस, भूत और वेताल आदिकों से ताड़ित ७९ मनुष्यों की जो समर्थहोकर रक्षा नहींकरताहै वह तिसके मारने के फलको प्राप्तहोता है और जो चोरआदिकों से पकड़े हुए ब्राह्मणको समर्थहोकर नहीं छुड़ाताहै ८० वह घोरनरक में जाताहै तिसपीछे फिर भेड़ियाहोताहै और वनमें गृध्र औरव्याघ्रसे पीड़ित मारतेहुए जानकर ८१ जो छोड़ो छोड़ो ऐसा कहताहै वह परमगतिको प्राप्त होताहै गौवों के अर्थ में व्याघ्र, बहेलिया और दुष्टराजाओं से जे मारेजाते हैं ८२ वे योगियों को दुःखसे प्राप्त होनेयोग्य विष्णुजी के पदको प्राप्तहोते हैं हजार अश्वमेध और सौ वाजपेययज्ञ ८३ शरणागतके रक्षाकी सोलहवीं कलाको नहीं प्राप्तहोते दीन, डरेहुए शरीरधारीकी रक्षा न करनेसे ८४ पुण्यवान् भी मनुष्य कालसे कुम्भीपाकनरक में पचताहै तुम दुष्टगृध्रसे भक्षण कियेहुए राहीको देखते रहे ८५ छुड़ाने में समर्थ होकर जो तुमने निवारण नहीं किया क्योंकि तुम दयारहितहो इस से राक्षस होवो ८६ इसप्रकार मुनिका शाप सुनकर हालिकका देह

कँपउठा और ब्राह्मण के नमस्कार कर करुणावचन बोला ८७ कि यहांपर मैं श्वेतकी रक्षामें बड़ी देर से नेत्र लगाये हुएथा समीपही में गृध्रसे मारेहुए इस मनुष्यको मैंने नहीं जाना ८८ तिससे मुझ कृपणके ऊपर आप दयाकरनेके योग्यहैं तब ब्राह्मण बोला कि जो ग्यारहवें अध्याय को जानता और प्रतिदिन जपताहो ८९ तिससे अभिमंत्रितजल जब तुम्हारे शिर में गिरेगा तब शापसे तुम्हारी मुक्तिहोगी ९० ऐसा कहकर तपस्वी चलेगये और हालिकराक्षस होगया तिससे हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! आप चलकर तिसी अध्याय से अभिमंत्रण कीजिये अपने हाथसे तीर्थके जलको तिसके शिर में छोड़िये ९१ महादेवजी बोले कि इस प्रकार ग्रामपाल की प्रार्थना सुन दयायुक्त होकर मुनिजी ग्रामपालसमेत राक्षस के पास जातेभये ९२ और वहांपर तिनयोगी ब्राह्मण ने विश्वरूप ग्यारहवें अध्याय से मंत्रितजल को तिसके शिरमें छोड़ा ९३ तो गीताके अध्याय के प्रभावसे शाप उसका छूटगया और राक्षस की देहको छोड़कर चारभुजा का होगया ९४ और जितने जन उसने भक्षण करलिये थे वे हज़ारों चारभुजा के शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले होगये ९५ और वे विमानोंपर सब चढ़गये तबतो ग्रामपाल राक्षससे बोला कि हे निशाचर! हमारा पुत्र कौनहै तिसको दिखलाइये ९६ जब ग्रामपाल ने इस प्रकार कहा तो सुन्दर बुद्धि वाला वह राक्षस बोला कि ऐसेही चारभुजायुक्त, तमालके समान श्यामवर्ण दीप्तिवाले ९७ माणिक्य के मुकुटयुक्त, सुन्दरमणि और कुण्डलोंसे मंडित, हार धारणकिये, बड़े कांधेवाले, सोनेके बहूटोंसे भूषित ९८ कमलनयन, स्निग्ध, हाथ में कमल धारे सुन्दर विमान पर चढ़ेहुए, देवभावको प्राप्तहुए अपने पुत्रको समझो ९९ इस प्रकार तिसके वचनसुन और पुत्रको तैसाही देखकर अपने घरले जाने की इच्छा करताभया तब तो वह पुत्र हँसा १०० कि हे रक्षा करनेवाले! आप कईबार हमारे पुत्रहुएहैं पहले आपका मैं पुत्रथा अब इस समयमें देवता होगयाहूं १०१ और ब्राह्मण के प्रसाद में वैष्णवधाम को जाताहूं और यह राक्षस भी चारभुजाओं को प्राप्त

ुआहै इसकी देहको देखिये १०२ ग्यारहवें अध्यायके माहात्म्यसे
नुष्यों के साथ स्वर्गको जाताहै इस ब्राह्मण से तिस अध्याय को
ुम भी पढ़ो और सदैव जपो १०३ तो निस्सन्देह तुम्हारी भी
ाति ऐसीही होजावेगी हे पिताजी! सज्जनों का संग मनुष्यों को
र्वथा दुर्लभहै १०४ सोई संग इस समयमें आपको प्राप्तहै तिस
े अपने ईप्सित को साधनकरो धन, भोग, दान, यज्ञ, तपस्या
१०५ और पूर्तोंसे क्याहै भगवद्गीता के ग्यारहवें अध्याय के पाठ
करने और सुनने से सबकुछ मिलता है १०६ जो अध्याय पूर्ण
आनन्द के समूह कृष्णब्रह्मके मुखसे कुरुक्षेत्रमें अर्जुन मित्रके उ-
देशके लिये निकलाहै वही मोक्षकी रसायनहै १०७ और संसार
डरेहुए मनुष्योंकी मानसीव्यथा और व्याधिके भयका दूरकरने
ालाहै अनेक जन्मके दुःखोंका नाश करनेवाला और किसीको मैं
हीं देखताहूं तिससे इसी अध्याय को स्मरण कीजिये महादेवजी
ोले कि ऐसा कहकर तिनसबके साथ विष्णुजीके परंपदको जाता
या १०८ तदनन्तर ग्रामपाल तिस अध्यायको ब्राह्मणसे पढ़ता
या तो वे दोनों तिसकी माहात्म्यसे वैष्णवपदको जातेभये १०९
ह ग्यारहवें अध्यायके माहात्म्यकी कथा तुमसे निरूपणकी जिस
सुननेही मात्रसे महापापोंका नाश होजाताहै ११० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये सतीश्वरसंवादेपंचाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८५॥

एकसौछियासीका अध्याय॥

गीताके बारहवें अध्यायका माहात्म्यवर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! दक्षिणमें कोल्हापुर नाम नगर
जहांपर सुख साधुओं के स्थान सिद्धिसे उत्पन्न हैं १ पर शक्तिका
ीपीठ, सब देवोंसे सेवित, पुराणों में प्रसिद्ध, भुक्ति और मुक्तिफल
ा देनेवालाहै २ वहांपर करोड़ों तीर्थ और महादेवजी के करोड़ों
ाङ्गहैं और रुद्रगया जहां परहै और लोकमें प्रसिद्ध विशालहै ३
ंचे पर्वतमें भारीरकबे और गोपुरोंसे प्रकाशित बन्दनवारहैं और

महलके कँगूड़े में ऊंचा सुवर्ण का ध्वजाहै ४ और चन्द्रकांति भारी महलों में है तिसकी वलभी की पंक्तियों से शोभित है और झरोखे के छेदों में प्राप्त धूप के धुयें से आमोदित दिशाओं के तट हैं ५ और चलायमान पताकाओं से देवों के स्थानों से युक्त विस्तारयुक्त छाया है और चतुर, सुन्दर, स्निग्ध, लक्ष्मीयुक्त, पवित्र मनवाले ६ अच्छे आचार करनेवाले, बहुत गहने पहननेवाले पुरुष लोग जिनमें रहते हैं और मृगनयनी, चन्द्रवदनी, टेढ़ी अलकोंवाली ७ फूलेहुए चम्पकोंकी छायावाली, मोटे ऊंचे स्तनोंसे युक्त, पतले क रिहांववाली, गहरी नाभि और त्रिवलियों से प्रकाशित ८ सुन्दर जघन, पवित्र जंघावाली, युग्मा, श्रेष्ठचरणोंसे युक्त, अत्यन्त बजने वाली जंजीर के दामसे शब्दयुक्त मणि और बिछिया होरही हैं ९ और शब्दयुक्त जो कङ्कण करकमलों में पहने हैं तिनसे प्रकाशित नखोंकी किरणें होरही हैं इसप्रकार की स्त्रियां वहां बसती हैं जोकि मुनियों को भी मोहित करनेवाली हैं १० और सम्पूर्ण वस्तुओं से संयुक्त, सबभोग संपूर्ण मङ्गल और महालक्ष्मीसे युक्तहै ११ तहांपर कोई पुरुष प्राप्तहुआ जोकि युवावस्थायुक्त, गोरे रङ्गवाला, सुन्दर नेत्रों से युक्त, सुन्दर कण्ठवाला, मोटे कांधे, चौड़ी छाती और बड़ी भुजाओंवाला १२ सम्पूर्ण लक्षणोंसेयुक्त और देखने में आसक्तमन वालाथा यह मनुष्य नगरमें प्रवेशकर महलों में सब ओर शोभा देखताहुआ १३ सुरेश्वरी महालक्ष्मीजीके देखने में उत्कण्ठायुक्त मन होगया तो मणिकुण्ड में स्नानकर पितरोंका तर्पणभी कर १४ महामाया महालक्ष्मीजी के नमस्कार कर भक्तिसे स्तुति करनेलगा कि अपार करुणावाली, शरणागतकी रक्षा करनेहारी, संसारकी माता आपकी जयहो १५ जोकि दृष्टिहीसे संसारका जन्म, पालन और नाश करती हैं जिस शक्तिकी आज्ञासे ब्रह्माजी संसारको रचते १६ अच्युतजी पालन करते और महादेवजी संहार करते हैं १७ तिस सृष्टि पालन और संहार करनेवाली श्रेष्ठशक्तिको मैं भजताहूं और हे लक्ष्मीजी आपके चरणकमलोंको योगीलोग ध्यानकरते हैं और कमल में आपका स्थान है १८ और अपने भाववाले, इन्द्रियगोचर सबके

तुम ग्रहण करतीहौ और आपही कल्पनाके समूह मनको तिसके स-दृश करतीहौ १९ और इच्छा ज्ञान क्रियाकारूप,पर संवित्स्वरूपिणी, निष्फला, निर्मला, नित्या, निराकारा, निरंजना २० निरन्तरा, निरा-तंका, आलंबरहित और रोगहीनहौ आपकी महिमा वर्णन करने में कोई समर्थनहीं है २१ निर्भिन्नषट्चक्रद्वादशांतविहारिणी अनाहतध्व-निमयी और विन्दुनादकलात्मिका आपकी मैं वन्दना करताहूं २२ हे मातः! आप पूर्णचन्द्रमासे गिरतेहुए अमृतको प्राप्तहौ और हे कृपा करनेवाली! आपनग्न सनकादिक बालकों की रक्षा करतीहौ २३ अनुस्यूता, शिवा और जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तियों में संवितरूप आप हौ और तुरीयामें वर्तमान, सून्तसंधियों में दयारूपहौ २४ और प्राणियोंको निरन्तर सब्रह्मसम्पदा देतीहौ तुरीयासे अतीत आप तत्त्व समूहको संहार करतीहौ २५ और निर्विकल्प आप योगियों के बिम्ब तादात्म्यको देतीहौ परा,पश्यन्ती,मध्यमा और वैखरीको मैं नमस्कार करताहूं २६ हे देवि! आप संसारके रक्षा करनेके हेतु रूपों को ग्रहण करती हौ ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, अम्बिका २७ वाराही, महालक्ष्मी, नारसिंही, ऐन्द्रिका, कौमारी, चण्डिका, लक्ष्मी, विश्वपावनी २८ सावित्री, जगन्माता, शशिनी, रोहिणी, स्वाहा, स्वधा, सुधा, परमेश्वरी, आपहीहौ २९ हे चण्डमुण्डके भुजारूप दण्डों के काटने से शोभित भुजावाली, हे रक्तबीजके चूतेहुए रक्त के पानसे घूर्णित नेत्रवाली ३० हे मतवाले महिषासुरकी ग्रीवा के उखाड़नेसे पुष्ट भुजोंवाली, हे शुम्भासुर महादैत्यके विदारण करने में पराक्रम धारण करनेवाली ३१ हे अनन्तचरितवाली तीनोंलोक की माता आपके नमस्कारहै हे भक्तोंकी कल्पवृक्ष हे परमेश्वरि ह-मारे ऊपर प्रसन्न हूजिये ३२ इस प्रकार तिनसे स्तुति कीगई म-हालक्ष्मी देवी अपने आप अपने रूपको धारणकर तिस पुरुषसे बोली ३३ कि हे राजपुत्र मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं उत्तमवर मांगिये तब राजपुत्र बोला कि हमारे पिता राजाजी अश्वमेध महायज्ञ को ३४ करतेहुए दैवयोगसे रोगसे व्याकुल होकर स्वर्ग को चलेगये तो उनकी देहको गर्मतैलसे सुखाकर मैंने ३५ रखछोड़ा और यज्ञ

हलेकी नाईं होनेलगा तदनन्तर यज्ञके घोड़ाको ३६ आधीरातमें न्धन छोड़कर कोई चुरालेगया और किसीने नहीं जाना तब मैंने ौकरों को भेजकर पता लगाया परन्तु सब लौटआये कहीं पता न लगा ३७ तब मैं सब ऋत्विजोंकी सलाह लेकर आपकी शरणमें प्राप्तहुआहूं हे देवि! जो आप प्रसन्नहों तो हमारे यज्ञका घोड़ा ३८ दिखलाई देवे जिससे यज्ञ यह सम्पूर्ण होजावे और हमारे पिता तिस राजाका आनृण्य होजावे ३९ हे जगद्धात्रि हे शरणागत के ऊपर कृपा करनेवाली आप यहकार्य करदीजिये तब देवीजी बोलीं कि हमारे द्वारपर ब्राह्मणों की सिद्धसमाधि है ४० हमारी आज्ञा से वह तुम्हारे सब कार्य को करदेगी जब श्रीमहालक्ष्मीजी ने इसप्रकार कहा तब तो राजपुत्र ४१ मुनियोंकी सिद्धसमाधि के पासपहुँचा और तिसके चरण कमलों के प्रणामकर हाथजोड़कर खड़ा होगया ४२ तब ब्राह्मण राजपुत्र से बोला कि तुमको देवीजी ने भेजा है तुम्हारे सब ईप्सित को साधन करूंगा देखिये ४३ ऐसा कहकर वह मंत्र जाननेवाला ब्राह्मण सब देवताओं को आकर्षण करताभया और राजपुत्र सब देवताओं को देखताभया ४४ कि वे हाथजोड़े खड़ेहैं और देहकँपरही हैं तदनन्तर वह द्विजोत्तम सब देवताओं से बोला ४५ कि इस राजपुत्र का यज्ञका घोड़ा रात्रि में इन्द्र चुराकर लेगयेहैं ४६ इससे इसके घोड़ेको तुम सब देवता ले आवो विलम्ब न करना तबतो मुनिजीके वचन सुनकर देवता यज्ञ के घोड़े को ४७ लाकर मुनिको दे देतेभये और सब स्वर्गको फिर लौट जातेभये तबतो देवताओं के आकर्षण को देखकर और घोड़े खोगये को पाकर ४८ राजपुत्र तिन मुनिजी के नमस्कारकर उनसे बोला कि हे ऋषियोंमें श्रेष्ठ! आश्चर्य करनेवाली यह आपकी सामर्थ्य है ४९ आपने जो क्षणमात्रमें देवताओं को आकर्षण किया यह बहुत आश्चर्य का काम किया और हमारे यज्ञका घोड़ा हाथ से खींच करादिया ५० जो कुछ देवता लोग नहीं करसके उसको आपही करसक्ते हैं दूसरा कोई नहीं करसक्ताहै ५१ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मुनिये हमारे पिता बृहद्रथजी हुएहैं उन्होंने अश्वमेधयज्ञ का

प्रारम्भ किया तो दैवयोगसे वे नाशको प्राप्त होगये ५२ अबतक मैंने गर्म्म तेलसे सुखाकर तिनकी देह रख छोड़ी है तिनका फिर जीवन आप करने के योग्यहैं ५३ इसप्रकार राजपुत्रके वचन सुन मुसकाकर महामुनि तिससे बोले कि जहांपर तुम्हारा पिताहै उस यज्ञके मण्डपको जाऊंगा ५४ तदनन्तर सिद्धजी राजपुत्र के साथ यज्ञके मण्डप को गये और तिस मृतक राजाके मस्तकमें जल अभिमंत्रणकर छोड़ा ५५ तो राजा संज्ञाको पाकर उठकर देखनेलगा और तिन श्रेष्ठ ब्राह्मण से पूंछने भी लगा कि क्या आप धर्म हैं ५६ तब तो राजपुत्र ने सब वृत्तान्त राजा से कहदिया तो राजा फिर जीवन देनेवाले ब्राह्मणके नमस्कारकर ५७ बोला कि किस पुण्य से आपमें यह संसारसे बाहर शक्तिहै जिससे हमको जिलाया और देवताओं को आकर्षण किया ५८ और यज्ञ फिर कराई हे ब्राह्मण यह हमसे कहिये जब इसप्रकार राजाने कहा तो ब्राह्मण मनोहर [illegible]ाणी से बोला ५९ कि गीताके बारहवें अध्यायको निरन्तर जपता [illegible] तिसी से हे राजन्! यह शक्तिहै जिससे आप जीवनको प्राप्त हो[illegible]ये ६० यह सुनकर राजा तिन श्रेष्ठ ब्राह्मण से ब्राह्मणों संयुक्त [illegible]त्तम बारहवें अध्यायको पढ़ा ६१ तो तिस अध्यायकी माहात्म्य [illegible] सब लोग सद्गतिको प्राप्तहोगये तथा और भी जीव पढ़कर श्रेष्ठ [illegible]ुक्तिको प्राप्त होजाते भये ६२ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये षडशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८६ ॥

एकसौ सत्तासीका अध्याय ॥

भगवद्गीताके तेरहवें अध्यायका माहात्म्य वर्णन ॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे महादेवजी आपने बारहवें अध्याय का माहात्म्य हमसे कहा अब अत्यन्त सुन्दर तेरहवें अध्याय का माहात्म्य कहिये १ तब महादेव जी बोले कि हे पार्वतीजी! तेरहवें अध्यायकी महिमारूपसमुद्र को सुनो जिसके सुननेहीसे परमआनन्दको प्राप्त होजावोगी २ दक्षिणदिशामें तुंगभद्रानाम महानदी

है तिसके किनारे हरिहरपुरनाम सुन्दरनगरहै ३ जहांपर भगवान् हरिहरदेवजी आपही रहते हैं जिनके दर्शनही मात्रसे श्रेष्ठकल्याण को प्राप्त होजाताहै ४ तिस पुरमें हरिदीक्षितनाम ब्राह्मण हुआ जो कि तपस्या, पढ़नेमें निरत, श्रोत्रिय, वेदका पारगामी था ५ और तिसकी स्त्री नाम और कर्मसे दुराचाराथी यह बुरेशब्द बोलती थी और कभी पतिके साथ नहीं सोतीथी ६ और स्वच्छन्द घूमतीथी क्षणभर भी अपने घरमें नहीं रहतीथी, ब्राह्मणके द्वारमें कण्ठ प- र्यन्त वारुणीनाम मदिराकेरसको पीतीथी ७ पतिके सब सम्बन्धि- यों को वारंवार डाटतीथी सदैव उन्मत्त रहकर वैश्योंके साथ निर- न्तर रमण करतीथी ८ कदाचित् पुरवासियों करके इधर उधर व्या- कुल पुरको देखकर मनुष्यरहित वन में सङ्केत घर अपने आप करतीभई ९ तदनन्तर वह धूर्त अपनी जवानी से अभिमानयुक्त होकर वैश्योंके साथ संकेत घरमें रमण करतीहुई बहुत समय [illegible] तातीभई १० और तिस सुन्दर पुरमें अच्छीतरहसे वसतीभई। इतनेमें कामदेवका मित्र वसन्तसमय आगया ११ जिसमें आंबप से आच्छादित होगये पपीहों के पंचम आलापों से कामदेव [illegible] जिलायेगये १२ और प्रकाशित चम्पकके हारोंसे युक्त मलया [illegible] की धीरे धीरे चलनेवाली पवनों से वनके वृक्ष कँपरहे हैं १३ [illegible] हुई चमेली के आसवसे मत्त कबूतर और भौंरोंके मनोहर शब्दों चारोंओर शब्द शोभित होरहाथा १४ प्रसन्न चारु तालावकी [illegible] गन्धियों से युक्त हंसों के समूह होरहेथे और तालावों से कामदे[illegible] प्रकट किया गया था १५ और घनीछाया में सुखसे बैठेहुए हिरणों बालकोंकी सेना और छेदरहित पत्तेवाले अनेकप्रकारके वृक्षोंसे [illegible] शोभित होरहीथी १६ तिस वसन्तसमयमें वह प्रसन्नतायुक्त [illegible] सारिका स्त्री रात्रिमें संसार के आनन्द देनेवाली चांदनीको [illegible] भई १७ जो कि चंचल चकोरोंकी चोंचों के अग्रभागों से गिरत[illegible] अमृतके सीकरोंसेयुक्त, द्रवरहे चन्द्रशिला में प्राप्त अमृतके [illegible] से निर्भर १८ फूलेहुए फूलों के कोड से सघन करोत्कर हैं और प्र[illegible] शित समुद्र के कल्लोलों मे आलिङ्गन कियाहुआ आकाशहै १९ [illegible]

देवरूपी महासिंह जोकि व्यभिचारिणी के कण्ठका कर्तरी है और चांदनी सघन अन्धकारके समूहके विदारण करनेमें प्रवीण है २० सफ़ेद करनेवाला और सती करने वाला जो पराया अर्थ तिसका हिम सो गर्भमें जिसके है और म्लानकमलोंके संकोचसे युवावस्था वालों को आनंद देनेवाली है २१ चकहेकी स्त्रीके मुखसे करुणापूर्वक रोनेकी साक्षिणी है मोतीकी पंक्तिमें विशुद्ध किरणों की दीप्ति से सफ़ेद दिशाओं के अन्तरयुक्त है २२ तदनन्तर महलों में विहार करनेवाली यह स्त्री तिस चांदनी रात्रिमें मार्गहीमें कामदेवसे अन्ध होगई २३ रात्रि में घररूप बेड़ीको काटकर व्यभिचारी पुरुषों को देखतीहुई नगर से वाहर निकलकर संकेत घरको प्राप्त होगई २४ तहां काम से मोहित मनवाली वह स्त्री कुंजकुंज और वृक्षवृक्षमें ढूंढ़तीहुई किसी प्रियतमको न देखतीभई २५ और पदपद में कांतके मन्द आलापोंको सुननेकी इच्छाकरती हुई खेलतीहुई संहारिशब्दजहां होताथा तहांको प्राप्तहोगई २६ और कांतके आलाप के भ्रमसे चकही चकहोंके शब्दोंको सुनकर सब तालावोंको वारंवार घूमनेलगी २७ और कान्तकी भ्रांतिसे वृक्षके नीचे सोतेहुए हरिणों को जगातीहुई आप श्वासऊंची लेकर यह बोली कि मैंआगई २८ फिर जीवनेश्वरकी शंकासे वनस्थाणुको आलिंगन करतीहुई तिस के मुखके भ्रमसे फूलेहुए कमलों को वारंवार चुम्बन करतीभई २९ परन्तु सब उसका परिश्रम व्यर्थ होगया तो प्रियको न देखकर वह अपने आप तिस वनमें रोनेलगी और अनेक प्रकार की उक्तियों से मूर्च्छायुक्त होकर बोली कि हा कान्त! हा गुणोंसेयुक्त! हा हमारे चैतन्यके नायक ३० हे मनके हरनेवाले! हेसौभाग्य भाग्य और लावण्यकी शेवधि! हा पूर्णचन्द्रमा के समान मुखवाले! हा कमलके तुल्य बड़े नेत्रोंसेयुक्त ३१ हा कान्त! हा तरुसौहित्य के श्रमरहित होनेके लिये कल्पवृक्ष! जो कोपसे आप छिपेहुए कहीं स्थितहो ३२ तो हे कान्त! तुमको प्यारे प्राणोंको भी देकर मैं प्रसन्नकरूंगी इस प्रकार वियोगसे ऊंचेस्वरसे सब दिशाओंमें रोनेलगी ३३ तो तिस के वचन सुनकर कोई सोताहुआ व्याघ्र जगपड़ा और क्रोधसे तम

दिशा देखताहुआ घुरघुरशब्दकरनेलगा ३४ नहोंसे पृथ्वीको खोदता और आकाशतक शब्द करता पीठमें पूंछको तोड़कर रखता और अत्यन्त वेगयुक्त होकर शीघ्र उठकर ३५ कूदकर जहांपर वह अभिसारिका स्त्रीथी वहांपर पहुंचा तदनन्तर स्त्रीने पतिकी शंका से तिसको आते देखकर ३६ प्रेमसे निर्भरमन होकर व्याघ्रके नहोंकी क्रीड़ासे क्रूरता से अन्धीसी कीगई होकर ३७ व्याघ्र के बड़ेभारी गर्जन को सुनकर अपने प्रियदेह की शंकाको छोड़ देतीभई और इस प्रकार की वह स्त्री शीघ्रही भ्रांतिको छोड़कर ३८ बोली कि हे व्याघ्र! किसलिये हमारे मारने को यहां आयेहो जिससे मारने की इच्छा करतेहो उस सबको हमसे कहो ३९ इस प्रकार तिसके वचनसुन अत्यन्त पराक्रमी व्याघ्र क्षणमात्र कौरको छोड़कर हँसकर बोला ४० कि दक्षिणदेशमें मलापहानाम नदीहै तिसके किनारे मुनिपर्णानाम नदी वर्तमानहै ४१ तहांपर भगवान् साक्षात् पंचलिङ्गमहादेवजीहैं तिस पुरी में मैं भी ब्राह्मणका पुत्रहोकर स्थित हुआथा ४२ नहीं यज्ञ करनेवालों को यज्ञकराकर जीविका करता और निरन्तर धनकी कांक्षासे वेदकेपाठके फलको बेंचता ४३ और दूसरे भिक्षुकों को लोभसे बुरी उक्तियोंसे तिरस्कार करता और प्रतिदिन नहीं देने योग्य और नहीं दीहुई द्रव्य को ग्रहण करता ४४ और क्षणग्रहण के कौतुकसे सब मनुष्यों को छलताथा तदनन्तर कुछकाल बीतने पर मैं वृद्धावस्थाको प्राप्तहोगया ४५ तो मांसमें भुर्री पड़गई बाल पकगये चलने में असमर्थ होगया दांतगिरगये तब भी दानलेनेमें परायणही रहा ४६ हाथमें कुशलेकर तीर्थके समीप जाकर धनके ग्रहण करनेकेलोभसे पर्वपर्व में घूमताभया ४७ तिसपीछे शिथिलअंग होकर किसीब्राह्मणके स्थानमें भोजन करनेकेलिये मांगनेकोजाताथा तो कुत्ताने बीच पाँवमें काटखाया ४८ तो मूर्च्छितहोकर पृथ्वीतलमें गिरगया तो क्षणमात्रहीमें प्राणरहितहोकर व्याघ्रकी योनिमें प्राप्तहोगया ४९ तबसेपहलेके पापोंको स्मरणकर इसी वनमें रहताहूं धर्मात्मा, मुनि, साधुजन और पतिव्रता स्त्रियोंको नहीं भक्षण करताहूं ५० किन्तु पापी, दुराचारी और दुष्टास्त्रियोंको भक्षण करताहूं इससे तू

तत्त्वसे दुष्टाहै तू हमारे भोजन के लिये है ५१ ऐसा कहकर क्रूर व्याघ्र अपने नखोंसे तिसके अंगों के खण्डखण्डकर तिस पापिनी की देहको भक्षण करगया ५२ तबतो यमराजके दूत शीघ्रही तिस को संयमिनीनाम यमराज की पुरीको लेगये और यमराज की आज्ञासे जल्द उसको विष्ठा मूत्र और रक्तसे पूर्ण घोरकुण्डों में गिरा देतेभये करोड़ कल्पतक वहांरही फिर यमराजजीकी आज्ञासे वहां से लाकर ५३।५४ सौ मन्वन्तरपर्य्यन्त रौरवनाम नरक में स्थापित करतेभये तदनन्तर दीन,सबओर मुख कियेहुई,रोतीहुई,खाल छूटीहुई, भग्न देहवाली को वहांसे खींचकर आगके मुँहमें छोड़देते भये इसप्रकार पापमेंपर,घोर, नरककी यातनाको भोगकर५५।५६ महापापसे फिर यहां चाण्डालकी योनियों में उत्पन्नहुई और दिन दिनमें चाण्डालके घरमें वृद्धिको प्राप्त हुई ५७ और पूर्व्वजन्म के वशसे जैसी पहलेथी वैसीही होगई तदनन्तर कुछकालमें फिर अपने घर को जाती भई ५८ जहांपर महादेवजी के घरकी ईश्वरी जृम्भका देवी रहती थीं तहांपर पवित्र वासुदेवनाम ब्राह्मणको देखतीभई ५९ जोकि गीताके तेरहवें अध्यायको निरन्तर पाठकरते थे तब तो वह गीताके तेरहवें अध्यायके सुननेसे चाण्डालकी देह से छूटकर ६० सुन्दर देह प्राप्त होकर देवताओं के स्थान स्वर्ग को प्राप्त होजाती भई ६१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये सप्ताशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८७ ॥

एकसौअट्ठासीका अध्याय ॥

गीताके चौदहवें अध्यायका वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती ! सुन्दर मुसिक्यानवाली! अब संसारके छूटनेके लिये गीताके चौदहवें अध्यायको सुनो १ पृथ्वी में स्थूल काश्मीरमण्डल है जोकि मनोहर, सरस्वतीकी राजधानी है २ जिसको अधिष्ठानकर सरस्वती देवी हंसपर चढ़कर ब्रह्मलोक को देती है ३ और जहांपर हंसके पखने के पुटसे उत्पन्न केसरसे

सरस्वती के चरणकमलकी सेवाकर ४ संस्कृत बोलनेवाले मनुष्यों को संस्कृत भाषा पलमात्रसें प्राप्त होजाती है ५ और सवेरे घरके आंगनसे उत्पन्न केसरकेसमान धूलियोंसे सबओर लालछायावाले चन्द्रमा और सूर्य्यके मण्डलहैं ६ तहांपर तेजकी राशि शौर्यवर्मा नाम राजाहुए जोकि प्रकाशित उज्ज्वल बाणसमूहोंसे शत्रुमण्डल को नष्टकरनेवाले थे ७ और सिंहलद्वीपमें सिंहकेसमान पराक्रमी, कलाओंकी शेवधि, विक्रम वेतालनाम राजाहुए ८ ये दोनों राजा क्रमसे परस्पर मैत्रीको तिन तिन देशोंसे उत्पन्न अपूर्व्व प्रचुर उत्करों से बढ़ाते भये ९ एकसमय में शौर्य्यवर्म्मा राजा प्रेमसे दो कुतियोंको विक्रम वेताल राजाकेपास भेजताभया तब उन कुतियों को देखकर विक्रमवेतालराजा १० अपने मित्र शौर्य्यवर्म्माकेपास मतवाले हाथी, घोड़ा, मणि, भूषण, चामर भेजताभया ११ एक समय में पीनसपर सवार, पवित्र चामर ढुरतेहुए, सोनेकी जञ्जीर में चढ़ेहुए, बाजा डिंडिम इत्यादि बजतेहुए १२ दोनों कुतियों को लेकर शिकारके कौतुकमें उत्साहयुक्त विक्रमवेताल राजा राजकुमारों के साथ वाह्याली को जाताभया १३ और वहांपर बाजी लगाकर चौगड़ेका मांस प्राप्त करताभया तब तो राजकुमारोंका बड़ा शब्द हुआ १४ तदनन्तर कौतुकयुक्त विक्रमवेताल राजा समान उमर वाले किसी राजपुत्रसे बहुत मूल्यकी बाजी लगाकर क्रीड़ा करता भया १५ और पीनससे उतरकर चौगड़े के पीछे विरुदावलि सं गर्व्वयुक्त कुतियाको छोड़ता भया १६ फिर महाभुजोंसे युक्त राजपुत्र प्रेमपात्र को छोड़ता भया और उच्चप्रकार से विरुदावली का कीर्तनकर कुतियाको निवृत्त करता भया १७ परन्तु दोनों कुतियां बड़े वेगसे ऐसा भगीं कि सब राजा देखतेही रहे और वे फिर न दिखलाई देनेलगीं १८ तब तो अत्यन्त परिश्रम से चौगड़ा बड़ खावें में गिरपड़ा परन्तु तब भी वह कुतिया के वश न हुआ १९ तदनन्तर धीरे से उठ कर दौड़ा तो राजा की कुतिया ने उसको क्रोधसे दौड़कर पकड़लिया तो चौगड़ेके कान बहनेलगा २० फिर बड़े कष्टसे चौगड़ा चलनेलगा तो राजाकी कुतियाने उसको बीच

पकड़लिया २१ तब तो मनुष्य अत्यन्त शब्दसे यह बोलनेलगे कि हमलोगजीते इसप्रकार बड़ा शब्दहुआ तो कुतियाके मुँहसे चौगड़ा निकलगया २२ तदनन्तर कुतियाकी दाढ़के लगनेसे चौगड़ेके घावहोगया था उससे रक्त बहताहुआ कहींपर पृथ्वी में छिप कर चौगड़ा स्थितहोगया २३ तब राजाकी कुतियाने धनके रोषसे पृथ्वी को सूंघकर चौगड़े को देखा तो वह बहुत डरा और डरके एक हाथ और गया २४ जहांपर कपूर, केला, सुअर और व्याघ्र कन्दरा में थे और चोली कपोलफलकों को चुम्बन कर पवन चलरहीथी २५ और खिलीहुई केतकीकी कलियोंकी धूलिसे मुकुलितनेत्र चौगड़ा होगयाथा और तिस छायाको विस्तारकरतेहुए विस्रब्धाहरणभी होगयाथा २६ और जहांपर नारियल के फल अपने आप नीचे गिररहेथे और पकेहुए आंबके फलोंसे वानर तृप्तहोरहे थे २७ और सिंह हाथियोंके बच्चोंके साथ खेलरहेथे और सांप मुरैलोंमें निश्शंक प्रवेश करजातेथे २८ उसी आश्रमके बीचमें जितेन्द्रिय शान्त वत्सनाम ब्राह्मण गीताके चौदहवें अध्यायको सदैव जपतेहुए रहतेथे २९ और तहांपर वत्सजीके शिष्यके चरण कमलके धोनेके जलसे कियेहुए कीचड़में जाकर वह चौगड़ा गिरा तो जीवही शेषरहगया वारंवार श्वासलेनेलगा ३० तदनन्तर कीचड़ के स्पर्शही मात्रसे जन्म मरणसे तरगया और सुन्दर विमानपर चढ़कर स्वर्गको प्राप्तहोगया ३१ तिस पीछे कुतिया बहुत कीचड़ की बिन्दुओंसे लिप्तअंग होकर भूंख और प्यासकी पीड़ासे रहित हुई कुतियाके रूपको छोड़कर ३२ सुन्दर स्त्री होकर गंधर्वोंसे शोभित सुन्दर विमानपर चढ़कर स्वर्ग को जातीभई ३३ तब तो मेधावी नाम शिष्य विस्मित होकर पूर्वजन्मके वैरका कारण विचार कर हँसा ३४ तो विस्मयसे स्मेरलोचन और नम्रतामें एकसमुद्ररूप राजा तिन शिष्यजीके श्रेष्ठभक्तिसे प्रणामकर पूंछनेलगा ३५ कि हे ब्राह्मण! हीनयोनि के सेवन करनेवाले, नहीं जाननेहारे कुतिया और चौगड़ेके बच्चे जो स्वर्गको चलेगये तो इसकी कथा हम से कहिये ३६ तब शिष्यबोला कि इसवनमें जितेन्द्रिय वत्सनाम

ब्राह्मण रहते हैं वे सदैव गीताके चौदहवें अध्यायको जपते हैं ३७ हे राजन्! तिन्हींका वेदविद्या में निपुण मैं शिष्यहूं मैंभी प्रतिदिन चौदहवें अध्यायको जपताहूं ३८ हमारे चरणकमल के धोनेके जलमें कुतियासमेत चौगड़ा गिरकर स्वर्गको प्राप्तहोगयाहै ३९ तब राजा बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण! यह किस कारणसे हुआहै इसको आप आदरसमेत कहिये ४० तब शिष्य बोला कि महाराष्ट्र देशमें प्रत्युदक नाम नगरहै तहांपर कपटियों में श्रेष्ठ केशवनाम ब्राह्मणहुआथा ४१ उसकी स्त्री इच्छापूर्व्वक विहारकरनेवाली विलोभना हुई उसको उसके पतिने जन्मका वैर चिन्तनकर क्रोधसे मारडाला ४२ तब तो स्त्रीके मारडालने के पापसे ब्राह्मण तो चौगड़ा हुआ और पापसे स्त्री कुतिया हुई ४३ पूर्व्वजन्म का वैर उन दोनों को बहुत योनियों में भी भूला नहीं है ४४ इस प्रकार श्रद्धायुक्त राजा सब वृत्तान्त सुनकर सम्पूर्ण गीता को अभ्यासकर श्रेष्ठगति को प्राप्त होजाता भया ४५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये अष्टाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८८॥

एकसौनवासीका अध्याय॥

गीताके पन्द्रहवें अध्यायका माहात्म्य वर्णन॥

महादेवजीबोले कि हे सुंदर नेत्रवाली हिमाचलकी कन्या पार्वती! गीताके पन्द्रहवें अध्यायको सुनिये १ गौड़ों में दयालु नरसिंहनाम राजाहुए थे जिनकी तलवार की धारसे लड़ाई में देवताओं के समूह नाश कियेगये थे २ जिसके मतवाले हाथियों के मदकी धारा के जलसे पृथ्वी ग्रीष्मऋतु में सूर्य्यके सन्तापकी वेदना को सहती भई ३ और संक्रन्दन से डरेहुए, जिसकी शरण में प्राप्त मतवाले हाथी चलतेहुए पर्वतकी नाईं शोभित होतेभये ४ जिस दयालु के रक्षा करतेहुए मतवाले हाथियोंके चीत्कार प्रतिशब्द की नाईं पर्वत शब्द करतेभये ५ और जिसके दौड़तेहुए घोड़ों के समूहों से जर्जर, खण्डहुई पृथ्वी किसीभी तरहसे चित्राविचित्र न हुई ६ जिस

इन्द्रके मित्र राजाके पृथ्वीमें राज्य करतेहुए शेषजी महाभाष्य को फिर उज्ज्वल करतेभये ७ और तिसका सेनापति बड़ा बुद्धिमान्, शस्त्रशास्त्र की कलाओं में निधिरूप, प्रचण्ड भुजाओं के मण्डल वाला सरभभेरुण्ड नामहुआ ८ यह भाण्डार, घोड़ा, वीररस से उत्पन्न योधा और अत्यन्त दुर्गम राजाके किलों से समान था ९ और यह पापी कभी बालकोंके साथ राजाके मारने का मनकर राज्य करनेकी इच्छा करताभया १० परन्तु इस कार्यकी इच्छा करने के थोड़ेही दिन बीतेथे कि आपही हैजेकी बीमारीसे मृतक होगया ११ तो यह पापी तिसी कर्म्मसे सिन्धुदेश में तेजस्वी घोड़ाहुआ १२ इसको घोड़े के तत्त्व जानने वाले, बहुत यत्न करनेहारे किसी बनियें के पुत्रने बहुत द्रव्यदेकर खरीदलिया १३ सरभभेरुण्ड के मरनेके पीछे अपने पौत्र और नातियोंसमेत राजा अपनी राज्यकी पालना करतेही करते कालपाकर बूढ़ाहोगया १४ फिर वह बनियें कापुत्र उसी घोड़े को राजाके देनेके लिये राजाके द्वारपर प्राप्त होकर राजाके समागम को परखने लगा १५ इस बनियें को राजा पहलेही से जानते थे तिसपर जब द्वारपालक ने दिखलाया तो राजाने उससे पूंछा कि किस प्रयोजन के लिये आयेहो तब बनियां राजासे स्पष्ट बोला १६ कि हे राजन्! यह अच्छे लक्षणका घोड़ा नियुतमूल्यसे मैंने आपकेलिये खरीदाहै १७ तबतो राजाने समीपवर्तियों के मुख देखकर बनियें से कहा कि घोड़े को यहां लेआवो १८ तब बनियां उस घोड़े को लेनेगया जोकि घोड़ेके लक्षण जाननेवाले मनुष्यों के शिरों को कँपाता, वीरों के चित्तों को वारंवार अत्यन्त उत्साह देता १९ और लारफेन के छलसे अखण्ड पृथ्वी के वेगके बहुत संक्रमण से इकट्ठे कियेहुए अत्यन्त सुन्दर यशको वमन करताथा २० उसके गुणों की समता से उच्चैःश्रवा तुलाको सेवन करताथा और अत्यन्त तेजस्वी वह लज्जासे गर्दनको नवायेहुएथा २१ और चन्द्रमा के समान सफ़ेद और दूधके समुद्र की नाईं चञ्चल चामरें ढुररही थीं मानों श्वासों से उच्चैःश्रवाही था २२ और नील छत्र के जोड़ेको घनछाया के तुल्य शोभासे मेघोंके छूने

वाले हिमालय के कँगूड़ेकी शोभाकी नाईं धारण कियेहुए था २३ और पृथ्वीमण्डलके स्पर्शसे संक्रान्त अग्निकी नाईंथा जोकि गर्दन को वारंवार उठाता और कँपाता था २४ और भारी हिनहिनाने के शब्द से दिशाओं में यशप्रसिद्ध करता, सम्पूर्ण वैरियों को विदारण करता और जयकी शोभाको मानोंकहही रहाथा २५ अत्यन्त ऊंची सत्वकी राशिसा, गतियों की शेवधिकी नाईं, साक्षात् रूपका स्थान और लक्षणों का समुद्ररूप था २६ तिसको वनियां लेगया तो राजाने घोड़ेको देखा और घोड़ेके लक्षण जाननेवाले मन्त्रियों ने बहुत घोड़ेकी प्रशंसाकी २७ तबतो राजाने अत्यन्त आनन्दसे युक्तहोकर वनियें ने जो कुछ सोनामांगा उतना सोना देकर शीघ्र घोड़ेको लेलिया २८ फिर घोड़ेके पालने वालेको बुलाकर यत्न से राजाने घोड़े को सौंपदिया और सभाके मनुष्यों को भी बिदाकर राजा भी घरमें आगया २९ इस राजाको जोकि शस्त्र व्रण किण श्रेणी का भूषण और सत्वसदृश था इसको रणभूमि में मनुष्यों ने अनेक प्रकार से पूंछा ३० तव राजा एकसमय में कुतूहलरस की आत्मा से शिकार खेलनेको उसी घोड़ेपर चढ़कर वनमें प्रवेशकर गया ३१ और चारोंओर दौड़तेहुए सेनावालों को पीछे छोड़कर हिरणों के पीछे पीछे गया तवतो वहां प्याससे व्याकुल होकर ३२ घोड़े से उतरकर वृक्षकी डालमें उसको बांधकर जल ढूंढ़ताहुआ पत्थर की शिलापर चढ़गया ३३ तो उस खण्डमें पवनसे गिराये हुए गीताके पन्द्रहवें अध्याय के आधे श्लोकको देखकर ३४ बांचनेलगा तो राजा से गीता के अक्षरों की पंक्तिको सुनकर घोड़ा शीघ्रता से गिरकर मुक्तिपदको प्राप्तहोगया ३५ तवतो राजा घोड़े की ग्रन्थि काटकर उसके ऊपरकी सव सामग्री उतारकर उसको उठानेलगे तो वह मृतकही होगया था नहीं उठसका ३६ तदनन्तर सरभभेरुण्डराजा से अच्छे स्वरसे संभाषण कर सुन्दर विमानपर चढ़कर स्वर्गको जाताभया ३७ तदनन्तर राजा पहाड़पर चढ़कर उत्तम आश्रम देखतेभये जोकि पुन्नाग, केला, आंव, नारियल ३८ दाख, ऊंखकी बाग, सुपारी, नागकेसर और चंबेली के वृक्षोंसे दु

है और हाथीके बच्चेखेल रहेहैं और मुरैलोंके समूह नाचरहे हैं तहां पर राजा ३९ ब्राह्मण जोकि पर्णशाला में स्थितथे और संसार की वासना से मुक्तथे उनसे श्रेष्ठभक्ति से पूंछता भया ४० कि घोड़ा हमारा किस हेतुसे स्वर्गको गया यह हमसे कहिये ये राजा के वचनसुन ब्राह्मणबोला ४१ कि यह तुम्हारा सेनापति होकर तुम्हारे मारने की इच्छा करताथा तिसी पापसे बहुत काल में मरकर फिर घोड़ाहुआ गीताके पन्द्रहवें अध्याय के आधे श्लोकको कहीं लिखे हुए ४२ तुम्हारे मुखसे सुनकर वह घोड़ा स्वर्गको गया है तदनन्तर आयेहुए परिवारके जनोंसेयुक्त राजा ४३ ब्राह्मणके नमस्कार कर प्रसन्न रोमांचयुक्त होकर पर्णशाला से निकलआये और गीताके पन्द्रहवें अध्याय के अक्षरोंको ४४ बांचकर प्रसन्नतासे नेत्र फूलेहुए होकर सलाहके जाननेवाले मंत्रियोंकेसाथ अपने पुत्रको अभिषेक कर ४५ सिंहासनमें बैठारकर विशुद्ध बुद्धिहोकर मुक्तिको प्राप्त होजाते भये ४६ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्ये एकोननवत्यधिकशततमोऽध्यायः १८९ ॥

एकसौनब्बेका अध्याय ॥

गीताके सोलहवें अध्यायका माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे मृगनयनी! हे आनन्दके उत्कण्ठकी वरसनेवाली पार्व्वती! अब गीताके सोलहवें अध्यायके माहात्म्यको सुनो १ गुजरातके मण्डलमें सौराष्ट्रिक नाम पुर है तहांपर दूसरे चन्द्रमाकी नाईं खड्गबाहुनाम राजाहुआ २ जिसके फूलोंके आमोदकी मालासे सुगन्धयुक्त पेटवाले समुद्र में भगवान् लक्ष्मीजी समेत स्वस्थतासे सोते हैं ३ जिसकी कीर्तिरूपी कपूरके कण आकाशके आंगनमें शोभित होतेहैं जोकि नक्षत्रोंके छलसे वैरियों के किये श्वासकी पवनों से आच्छादित हैं ४ और जिसकी तलवार की धारारूप तीर्थोंमें शत्रुराजा स्नानकर अबतक स्वर्ग में अप्सराओंकी वाणी से मोहित होकर वर्तमान हैं ५ तिसका अरिमर्द

नाम मदयुक्त हाथी था जिसके मदकी जलधाराके जलमें भौंरों के समूह गुञ्जार करते थे ६ और गण्डस्थल से उत्तीर्ण मदकी धारा के जलसे आविल अंजनके पहाड़की नाईं शोभित होताथा ७ और जिसके अंगोंमें उज्ज्वल दीप्तिवाले चामर इसप्रकार शोभित होते थे जैसे वनमें चन्द्रमाकी किरणें शोभित होती हैं ८ और सिन्दूर की धूलिकी पटलियों से प्रकाशित गण्डस्थलहोकर इसप्रकार शोभायमान स्थित था जैसे सन्ध्यासमय में मेघों से व्याप्त आकाश होताहै ९ यह हाथी किसीसमय में जञ्जीर इत्यादि अपने बन्धनों और लोहेके पुष्ट खम्भों को तोड़कर जबर्दस्ती से रात्रिमें निकला १० तो समीपही में स्थित महावतलोग उसको अंकुशों से मारने लगे परन्तु हाथी क्रोधसे मारको कुछ न गिनकर अपनी शालाको तोड़ने लगा ११ कितनाही महावतों ने तीक्ष्ण अंकुशके मुखवाले बाँसके दण्डोंसे मारा परन्तु कुछ उसने नहीं माना १२ तदनन्तर इस कुतूहलको सुनकर हाथीकी कलाके जाननेवाले राजकुमारोंके साथ राजा भी आनकर १३ देखनेलगा कि बलवान् हाथी वीरों को मोहयुक्त कर रहा है और अट्टालिकमालिक नष्ट करदी है १४ और इस भयंकर हाथी को दूरस्थित होकर पुरवासी और कुतूहलों से निवृत्त होकर देखरहे हैं और डरसे बालकों की रक्षा भी कर रहे हैं १५ भागने में परायण मनुष्यों करके राहैं हाथी के उग्रमद की धाराके जलके सीकरों से सुगन्धयुक्त हुई रुकगई हैं १६ तिसी मार्ग से कोई ब्राह्मण तालावमें स्नानकर गीताके सोलहवें अध्याय के कुछ श्लोक जपताहुआ प्राप्तहुआ १७ तो उसको उस राहसे जाने में महावतों ने बहुत रोंका १८ परन्तु हाथीका डर न कर ब्राह्मण चलाहीगया हाथी फुफकार छोड़ता था उससे और मनुष्य मर्दितसे होजाते थे १९ ब्राह्मण हाथी के मदरूपी कमलको स्पर्श कर कल्याणसमेत निकलगया तब तो बड़ाभारी वाणी के अगोचर राजाके मनमें विस्मय हुआ फिर फूलेहुए कमलके समान नेत्र वाले राजाने पुरवासियोंके देखतेही देखते ब्राह्मण को बुलाया २० । २१ फिर आपवाहनसे उतरकर ब्राह्मण के प्रणामकर पूछनेलगा

२२ कि हे ब्राह्मण! आपने इस समय में अलौकिक काम किया यमराज के समान इस हाथी के आगेसे कैसे निकलगये २३ हे प्रभुजी आप किस देवताको पूजते और किस मन्त्रको जपते हैं और क्या सिद्धि आपके है यह सबकहिये २४ तब ब्राह्मण बोला कि गीताके सोलहवें अध्यायके कुछ श्लोकोंको हे राजन्! मैं प्रतिदिन जपताहूं तिसी से ये सब सिद्धियां प्राप्त हुई हैं २५ तब तो राजा कौतूहलके रसयुक्त हाथीको छोड़कर ब्राह्मणको अपने स्थानमें ले आतेभये २६ और शुभ मुहूर्त देखकर ब्राह्मणको लाखअशरफियों से प्रसन्नकर गीताके मंत्रको ग्रहण करतेभये गीताके सोलहवें अध्यायके कुछ श्लोकों को २७। २८ सत्कार और कौतुकसमेत अभ्यास करके एक समय में सेनावालोंसमेत बाह्यालीको निकलगये २९ और तिसी मतवाले हाथीको महावतसे छुड़ाया स्पष्ट ये वचन हैं कि राजाने राज्य सुखको न मानकर ३० तृणसमान जीवन समझ कर हाथी के आगे प्रवेश किया मदपंक्तिसे निरंकुश गण्डफलक को लेकर ३१ मंत्रियों के विश्वास से साहसियों में आगे चलने वाला यह राजा इसप्रकार हाथी के आगेसे निकलगया जैसे राहुके मुखसे चन्द्रमा, कालके मुखसे धर्मात्मा ३२ और दुष्टके मुखसे साधु निकल जाता है फिर नगर में आकर कुमारको अभिषेक कर ३३ गीताके सोलहवें अध्यायसे परमगतिको प्राप्त होजाताभया ३४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीतामाहात्म्येनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९० ॥

एकसौइक्यानबेका अध्याय ॥

गीताके सत्रहवें अध्यायका माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! सोलहवें अध्याय की महिमा तौ कहचुके अब सत्रहवें अध्याय की महिमारूप समुद्र को स्पष्ट सुनिये १ खड्गबाहुके पुत्रका नौकर दुःशासननाम हुआथा यह तिस हाथीके पकड़नेके लिये आकर प्राप्तहुआ तो हाथीसे नाशको प्राप्त होकर नाशरहित पदको प्राप्त होगया २ तिस वासना से निबन्ध

आत्मा होकर हाथीकीयोनि प्राप्तहोकर गीताके सत्रहवें अध्यायको सुनकर परंपद को प्राप्त होगया ३ तब पार्वतीजी बोलीं कि हे कल्याण ! हे प्रभु महादेवजी ! दुःशासन हाथीके रूपको प्राप्त होकर मुक्त होगया यह हमने सुनाहै इसको आप विस्तार से कहिये ४ तब महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! कोई दुर्बुद्धि दुःशासन नाम था यह मण्डलीक बालकों के साथ बहुत मूल्यकी बाजी लगाकर हाथीपर चढ़ाथा ५ इस मूर्खको मनुष्यों ने मनाभी किया परन्तु उनका कहना न मानकर कई पैगचला और बड़े अभिमान के वचन बोला ६ तो हाथी तिसके वचन सुनकर क्रोधसे अन्धा होगया तो उस जगह के बालकलोग कांपनेलगे और हाथी पांवको झुकाकर गिरा ७ तबतो हाथी के गिरतेही दुःशासन भी गिरने लगा और कुछ ऊंचीश्वासें लेनेलगा फिर यमराज के समान हाथीने क्रोधसे ऊपर फेंककर पटकदिया ८ तो दुःशासन प्राणरहित होगया और फिर हाथीने मतवाले पनसे हाड़ोंके समूहों को अलग अलग करके फेंकदिया ९ तदनन्तर कालसे मरकर सिंहलद्वीपके राजाके यहां यह दुश्शासन हाथी होकर बहुतकाल बिताता भया १० सिंहलद्वीपके राजाकी खड्गबाहुराजासे अत्यन्त मित्रताथी इससे खड्गबाहु राजाके यहां जलकी राहसे उसने हाथी को भेजदिया ११ वहांपर हाथी अपनी जातिका स्मरणकर अपने सगेभाइयों को भी देखकर १२ बड़े दुःखसे उस खड्गबाहुराजा के घरमें चुपचाप बहुत दिन बिताताभया १३ कदाचित् खड्गबाहुराजा समस्या के श्लोक पूरण करने में किसी कविको भेंटमें हाथीही को देदेताभया १४ फिर रोग के उपद्रव से डरेहुए उस कविने मालवराजा के हाथ उसहाथीको बेंचडाला १५ कुछकाल बीतनेपर यत्नसे पालागया भी हाथी दुर्जर ज्वरसे मरने के समीप आगया १६ ठण्ढापानी नहीं पीता, कवल नहीं खाता सुखसे नहीं सोता केवल आंसूही छोड़ताथा तदनन्तर महावत ने राजासे हाथी का सब वृत्तान्त कहा १७ तो राजा ज्वर से पीड़ित हाथीके पासगया तब हाथी राजाको देखकर संसार के विस्मय करनेवाली १८ वाणीबोला कि हे सम्पूर्ण शास्त्र के जानने

वाले ! हे राजनीति के समुद्र ! १९ हे शत्रुसमूह के जीतनेवाले ! हे भगवान् के चरणों के प्यारे ! औषध, वैद्य, धान और जापसे क्याहै २० गीताके सत्रहवें अध्याय के जप करनेवाले ब्राह्मण को लाइये तिससे हमारा रोग निस्सन्देह निवृत्त होजावेगा २१ तब तो हाथीके कहनेके अनुसारही राजाने करदिया तो हाथीके रूपको छोड़कर दुश्शासन मुक्त होगया २२ ब्राह्मण के अभिमंत्रित उत्तम जल छोड़नेही से इन्द्रके समान तेजस्वी सुन्दर विमानपर सवार हुए दुःशासन को राजा देखकर उनसे बोला २३। २४ कि कौन जाति, क्याआत्मा, क्यावृत्तान्त है और किस कर्मसे हाथी होकर कैसे यहां प्राप्त हुएथे २५ जब इसप्रकार राजाने पूछा तो विमुक्त और विमानमें स्थित दुःशासन ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त अच्छी तरहसे कहदिया २६ तब तो मालवराजा नरवर्माभी गीताके सत्रहवें अध्याय को जपकर थोड़ेही कालसे मुक्तहोगया २७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेगीता माहात्म्येएकनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९१॥

एकसौबानवेका अध्याय॥

गीताके अठारहवें अध्यायका माहात्म्यवर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! चिदानन्दके निष्पादन करने वाले, वेदोत्तर, पुण्यकारी अठारहवें अध्यायके माहात्म्यको सुनिये १ जोकि सब शास्त्रों का सर्वस्व, कानों में प्राप्त, रसायन, संसार के पातनाजालके विदारण करने में परायण, २।३ सिद्धों का श्रेष्ठ रहस्य, अविद्याके उखाड़ने में योग्य, चैतन्य, भगवान्का आगे गिनतीवाला, परम्पद ४ ज्ञानकी वल्लरी का मूल, काम और क्रोधके मदका दूर करनेवाला, इन्द्रादिक देवताओंके चित्तका विश्राम करनेहारा ५ सनकादि महायोगियों के मनके रंजनका कारण पाठमात्रहीसे कालके दूतोंका गर्ज्जनेवाला ६ एकसौआठ व्याधियोंकी जड़ उखाड़नेवालाहै हे हंसके समान चलनेवाली पार्व्वती ! इससे श्रेष्ठ कुछ रहस्य नहीं है ७ यह तीनों उपतापों और महापापों का

नाश करनेवालाहै जैसे कालों में नित्य मैं श्रेष्ठहूं पशुओं में काम-
धेनु, ८ मुनीन्द्रों में व्यास, व्यासों में अधिक वेदका जाननेवाला,
देवताओं में इन्द्र, इन्द्रसे श्रेष्ठ बृहस्पति ९ रसों में संसार में प्रसिद्ध
अमृत, पर्व्वतों में कैलास, देवताओं में इन्द्र १० तीर्थों में पुष्कर
तीर्थ, फूलों में कमल, पतिव्रता स्त्रियों में संसार में अरुन्धती ११
यज्ञों में अश्वमेध, वनों में नन्दन, सब रुद्रों में हमारे अनुचर वीर-
भद्र १२ दानों में पृथ्वीका दान, नदियों में गौतमी, और संसारमें
धर्म्मके कामों में हरिक्षेत्र सबसे जैसे अच्छाहै १३ तैसेही अठारहों
अध्यायोंका माहात्म्य भुवनमें श्रेष्ठहै तहांपर हे पार्व्वती! इस पु-
ण्यकारी आख्यानको भक्तिसे सुनो १४ जिसके सुननेही मात्र से
प्राणी पापोंसे छूटजाताहै मेरुपर्व्वतके कँगूड़ेपर सुन्दर अमरावती
नाम पुरीहै १५ जिसको पूर्व्वसमयमें हमारे विनोदके लिये विश्व-
कर्म्मा ने रचा था यह निरन्तर गुणों से युक्त, करोड़ देवताओं से
सेवित १६ साक्षात् तेजका समूह, प्रसिद्ध ब्रह्मविद्याहै जहांपर चि-
न्तामणि के शिलाओं से बँधे, कामना के देनेवाले महल १७ मेरु
पर्व्वतके कँगूड़ेपर ब्रह्माके पुरकी अवधि जीतते थे और जहां कल्प-
वृक्षकी छायामें सुखसे बैठीहुई श्यामला इन्द्राणी गंधर्वोंकी स्त्रियों
के वाणियोंसे गीत सुनती थीं और देवों से दलित आयुवालों के
सबलारातिभी जहां परथे १८ । १९ और दैत्यों के रक्त कल्लोलों
से गंगाजी शोणताको प्राप्त होगईथीं और पूर्व्वकी अमृतके स्वादु
को देवतालोग वारंवार २० भूखसे निर्व्बल होकर और प्रतिदिन
चन्द्रमाकी कलाकोभी पान करते थे तिस मोक्षसदृश पुरी में पहले
सौ यज्ञके करनेवाले इन्द्र हुए २१ यह इन्द्राणीसे युक्त, श्रीमान्,
सब देवताओंसे सेवितथे ये किसीसमय में सुखसे बैठेथे तब विष्णु
जीके दूतोंसे सेवित २२ हज़ार नेत्रवाले किसी पुरुष को इन्होंने
आते देखा तो उसके तेजों से इन्द्र तिरस्कार को प्राप्त होकर २३
मणि सिंहासनसे शीघ्रही स्थानमण्डप में गिरे जब इन्द्र सिंहासन
से अलग होगये तब भगवान् के दूत २४ देवसमूहके साम्राज्यका
पट्टबन्ध विस्तारित करते भये तदनन्तर तिन महेन्द्रका अभिषेक

हुआ तब इन्द्राणी २५ शीघ्रही वामभागमें बैठतीभई और देवता नगारों के शब्दोंको स्त्रियोंसमेत बजातेभये २६ और सुन्दर रत्नों से आरतीभी करतेभये तदनन्तर ऋषि वेदों से आशीर्व्वाद देते भये २७ और तिसके आगे रम्भादिक अप्सराओंके समूह नाचने लगीं गन्धर्व सुन्दर गीतोंको मंगलके कौतुकमें गातेभये २८ इस प्रकार नवीन इन्द्रको बहुत उत्सवों से सेवित विना शतक्रतुके देख-कर इन्द्र विस्मयको प्राप्त होकर बोला २९ कि मैंने राहमें तालाब नहीं बनाये,राहियों के विश्राम करनेवाले महावृक्ष नहीं लगाये३० त्रिपुरभैरव देवके कभी दर्शन नहींकिये,निधिवासमें स्थित मदालसा देवीको नहीं पूजा ३१ मेघों के समान श्यामवर्ण शार्ङ्गधनुषधारी भगवान् के दर्शन नहीं किये विरजमें स्नान नहीं किया काशीपुरी को नहीं गया ३२ देववागके बसनेवाले नरहरिजी के दर्शन नहीं किये एरंड विष्णु हेरम्बजी की सेवा नहीं की ३३ पुरके बसनेवाली रेणुका माताके दर्शन नहीं किये दानापुरके बसनेवाली को भक्तिसे नहीं पूजा ३४ त्रिपुर में त्रिलिंग, त्र्यम्बक महादेवजी के भक्ति से दर्शन नहीं किये, शार्दूल तालाब में स्थित सोमनाथजी के दर्शन नहीं किये ३५ रेवापुरमें स्थित घुसृणेशदेव, नाग नागपुरमें प्रसिद्ध नागनाथ ३६ पर्णग्राममें स्थित महान् अमृतेश्वर, तुंगभद्रानदीके किनारे स्थित हरिहर ३७ वेंकट पहाड़ के स्थानवाले श्रीनिवास और कावेरीकर्णिकातीर में श्रीरंगजी के दर्शन नहीं किये ३८ रोते हुए दीन अनाथों को कारागारसे नहीं छुड़ाया दुर्भिक्ष में अन्नदान से प्राणियों को नहीं पूजा ३९ कहीं जलरहित देशमें रात्रि रात्रिमें पौशाला नहीं बनवाया ४० गौतमी में स्नान नहीं किये हरिणेश्वर जी के दर्शन नहीं किये कन्याकी वृहस्पति में कृष्णवेणी में स्नान नहीं किया ४१ पृथ्वीका टुकड़ा भी नहींदिया कवियों को नहींपूजा तीर्थों और गांवों में यज्ञ नहीं किये ४२ राहों में बहुत जलवाले तालाब नहीं बनवाये ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी के मन्दिर कहीं नहीं बनवाये ४३ और कभी भयसे व्याकुल शरणागतों की रक्षा नहीं की कैसे एक पुण्यसे देवोंका दियाहुआ यहां इकट्ठा हुआ ४४

इसप्रकार चिन्तासे व्याकुल इन्द्र भगवान्से पूंछने के लिये शीघ्रही खिन्न होकर क्षीरसमुद्र में जातेभये ४५ और वहां पर सोतेहुए भगवान् की नवीन स्तोत्रों से अकस्मात् अपने साम्राज्य के भ्रंशहोने के दुःखदूर होनेके लिये स्तुति करतेहुए बोले ४६ कि हे लक्ष्मीके पति! आपकी प्रीतिके लिये पूर्व समयमें मैंने सौयज्ञ कियेथे और तिसी पुण्यसे इन्द्रका पद पाया था ४७ इस समय में नवीन कोई इन्द्रहुआ है उसने धर्म और कुछयज्ञ नहींकी ४८ इससे हे अच्युत! हमारे दिव्य सिंहासनको कैसे लेलियाहै ४९ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार इन्द्रकी कहीहुई वाणी सुनकर नेत्रोंको खोलकर भगवान् मीठेवचन बोले ५० कि थोड़ेफल देनेवाले दान, तपस्या और यज्ञोंसे क्याहै पृथ्वीतल में वर्तमान होकर पूर्वसमय में तुमने प्रसन्न कियाथा ५१ तब इन्द्र बोले कि हे भगवन् किस कर्मसे ब्राह्मण ने आपको प्रसन्न कियाथा जिस प्रीतिसे आपने तिसको हमारापद दियाहै ५२ तब श्रीभगवान् बोले कि गीता के अठारहवें अध्याय में पांच श्लोक जपता है जिसकी पुण्यसे तुम्हारे उत्तम साम्राज्य को प्राप्त हुआहै ५३ सब पुण्यके शिरोरत्नभूत से तुम स्थिरहोगे इसप्रकार विष्णुजी के वचनसुन और उपाय जानकर इन्द्र ५४ ब्राह्मणका वेष धारणकर गोदावरी के किनारेगये और वहांपर पुण्यकारी पुर उत्तम कालिकागांव देखा ५५ जहांपर कालमर्दन कालेश्वरदेव वर्तमान रहतेहैं तहां गोदावरी के किनारेपर परमधर्मात्मा ५६ दयावन्त, वेदके पारगामी ब्राह्मणको स्थित देखा जो कि पवित्रचित्त हैं और नित्यही अठारहवें अध्याय को जपते थे ५७ तबतो इन्द्र अत्यन्त आनन्द से ब्राह्मण के दोनों चरणोंमें गिरताभया तो ब्राह्मण अठारहवें अध्याय को पढ़नेलगे ५८ तदनन्तर इन्द्र तिसी पुण्यसे इन्द्र आदिक देवताओं के छोटे पद को छोड़कर विष्णुजीके सायुज्यको प्राप्त होगये ५९ अत्यन्त आनन्दयुक्त जानकर वैकुण्ठपुर को प्राप्त होजाते भये इससे मुनियोंका यह परंतत्त्व, उत्तम ६० दिव्य अठारहवें अध्यायका माहात्म्य मैंने कहा ।। सुननेहीमात्रसे सब पापों से छूटजाता है ६१ यह गीताका

माहात्म्य, पाप नाशनेवाला, पुण्यकारी, पवित्र, उमर बढ़ानेहारा, स्वर्ग देनेवाला और महान् कल्याण का स्थान वर्णनकिया ६२ हे महाभागे पार्वती! जो मनुष्य श्रद्धायुक्तहोकर सुनताहै वह सब यज्ञों के फलको प्राप्तहोकर विष्णुजी के सायुज्यको प्राप्त होजाता है ६३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेसतीश्वरसंवादे गीतामाहात्म्येद्विनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९२॥

एकसौ तिरानबेका अध्याय॥

श्रीमद्भागवतपुराणके माहात्म्यमें भक्ति और नारदजीका समागम वर्णन॥

पार्व्वतीजी बोलीं कि हे देवदेव! हे महादेव! हे सर्वज्ञ! हे सकल अर्थके देनेवाले! हमारे ऊपर अत्यन्त कृपाकर जो मैं पूंछतीहूं तिस को मुझसे कहिये १ बहुत आश्चर्य की कथासे युक्त गीताका माहात्म्य मैंने सुना तिससे श्रेष्ठ कृष्णकी कथा सुनने को हमारे भक्ति उत्पन्न हुई २ सब पुराणों में श्रीमद्भागवतपुराण श्रेष्ठहै जिसमें बहुधा ऋषियों से प्रतिपद कृष्णजी गान कियेजाते हैं तिसका यथातत्त्व इतिहाससमेत माहात्म्य इससमय में कहिये ३ तब महादेव जी बोले कि नैमिषारण्य में बैठेहुए महाबुद्धिमान् सूतजी के प्रणाम कर कथारूपी अमृत रसके स्वादमें कुशल शौनक बोले ४ कि हे सूतजी! अज्ञानरूपी अँधेरे के नाश करनेवाले, कोटिजन्म के पाप नाशनेहारे ५ रसायन, श्रीमद्भागवत के आख्यानको कहिये भक्ति ज्ञान विरागसे युक्त विवेक कैसे बढ़ताहै ६ वैष्णवजन मायामोहको कैसे निकाल देतेहैं इस घोर कलियुग में बहुधाजीव असुरभावको प्राप्तहै ७ तिस क्लेशयुक्तके शोधनमें क्या रसायनहै कल्याणोंका जो कल्याण होताहै पवित्रोंका पवित्र ८ और कृष्णकी प्रीतिकरनेवाला साधनहै तिसको इससमयमें कहिये लोकोंके सुख देनेवाले चिन्तामणि, इन्द्रके स्थानकी सम्पदा ९ और अत्यन्त दुर्लभ वैकुण्ठको प्रसन्नहुए गुरुजी देते हैं १० सूतजी बोले कि भो श्रेष्ठब्राह्मणो! तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्नहूं जैसा सुनाहै तैसा कहूंगा जो सारसे अत्यन्त सार संसारके भयका नाश करनेवाला ११ भक्तिका बढ़ानेहारा और

कृष्णजी की संतुष्टिका हेतुहै तिसको मैं कहताहूं सावधान होकर सुनो १२ कालरूपी सर्पके मुखमें आलीढ तीनोंलोकों की रक्षा करनेवाले श्रीमद्भागवतशास्त्र को कलियुग में शुकदेवजी ने भाषण कियाहै १३ इससे दूसराकोई मनकी शुद्धि करनेवाला नहींहै और जन्मके कियेहुए पुण्योंसे साधुओंसे लाभ होताहै १४ ब्रह्माजीने राजापरीक्षित का मोक्ष जानकर शास्त्र और भारी पुराणोंको तौला १५ परन्तु श्रीमद्भागवतही पृथ्वी में गरुआरहा श्रीमद्भागवत की वार्ता देवताओं को भी दुर्लभहै १६ यह चिन्तनाकर बहुतसे मुनि, निर्मल, साधुजन पृथ्वी में श्रीमद्भागवतको भगवान्‌कारूप मानते भये १७ जिसके पढ़ने और सुनने से मनुष्य भगवान् के पदको प्राप्त होताहै एक वर्ष में तिसका सुनना बहुत सुखको देनेवालाहै १८ हे शौनक! एक महीने में उत्तमभक्ति मिलती है और सातदिन में इसका सुनना सर्वथा मुक्तिका देनेवालाहै १९ हे साधो! बहुत कहने से क्या है कृष्णलीला प्रकाश करनेवाला श्रीमद्भागवतरूपी अमृत सज्जनोंको नित्यही पान करनाचाहिये २० दयायुक्त सनकादिकों ने ब्रह्माजी से पहले सुननेवाले नारदजी से सप्ताह सुनने में विधि कहीहै २१ शौनकजी बोले कि लोकोंके तत्त्व जाननेवाले नारदजी अपने पिता ब्रह्माजी से श्रेष्ठज्ञान श्रीमद्भागवतनाम प्राप्त कर सर्वदा पृथ्वी में घूमतेथे २२ कहांपर तिन महात्माओं से नारदजीका संगमहुआ जहांपर नारदजी ने सप्ताह सुनने में विधि सुनी है २३ सूतजी बोले कि हे शौनक! यहांपर तुमसे भक्तियुक्त कथाको वर्णनकरूंगा जो पूर्वसमय में दयालु शुकदेवजी ने मुझसे कहाथा २४ एकसमय में सनकादिक विशालापुरी में नीचे का मुखकर बैठे हुए, दीनमनवाले नारदजी को देखते भये २५ और तिन नारद भाई को चिन्तायुक्त देखतेही विस्मययुक्त, तत्त्वकी चिन्तना करनेवाले मुनिलोग पूछतेभये २६ कि हे ब्रह्मन! अतिदीनकी नाईं आतुर तुम क्या चिन्तना करते हो मुक्तिसंगवाले तुमको यह उचित नहीं है इसका कारण कहिये २७ तब नारदजी बोले कि मैं सबमें उत्तमोत्तम, पुण्य देनेवाले अनेकप्रकारके तीर्थों से युक्त, पुण्यकी

रूपिणी पृथ्वीको जानकर २८ पुष्कर, प्रयाग, काशी, गोदावरी के किनारे, हरिक्षेत्र, कुरुक्षेत्र, श्रीरंग, सेतुबन्धन २९ तथा और तीर्थों में इधरउधर घूमनेलगा परन्तु कहींपर मनकेसन्तोषका करनेवाला कल्याण नहीं देखा ३० अधर्म्मके मित्र कलियुगने इस पृथ्वी को इससमयमें बाधित कियाहै सत्य, शौच, दया और दान कहीं पृथ्वी में नहीं है ३१ मनुष्य पेटके भरनेवाले, तुच्छ, झूठी गवाही के देनेवाले, मन्द, मन्दबुद्धि, महापाखण्डके सेवनेवाले ३२ गृहस्थोंके यहां स्त्रियां प्रधान, वर्ण, व्रतसे वर्जित, वानप्रस्थलोग पुरमें बसने वाले, संन्यासी भोगमें तत्पर, ३३ मनुष्य लोभसे कन्याके बेंचने वाले, खेतीके काममें परायण, भ्रष्ट आचारवाले, दम्भी, अपनी इच्छासे आचारके देखनेवाले ३४ मुसल्मानों से रुँकेहुए आश्रम, तीर्थ, नदियां, कुण्ड और देवताओं के स्थान दुष्टों करके गिराये हुएहैं ३५ योगी, सिद्ध अथवा ज्ञानी कोईभी अच्छी क्रियाका नहीं दिखाई पड़ता कलियुगरूप दावानलसे साधन भस्म होगयेहैं ३६ मनुष्य अन्न के बेंचनेवाले, ब्राह्मण वेद के बेंचनेवाले और स्त्रियां भग बेंचनेवाली पृथ्वी में सबओर दिखाई पड़ती हैं ३७ एकसमय में मैं यमुनाके किनारे प्राप्तहुआ तो वहांपर शुभ वृन्दावनको देखा जहां भगवान्की लीला हुई है ३८ तहां जो अद्भुत देखाहै तिसको हे मुनीश्वरो! सुनो एक बैठीहुई, खिन्नमनवाली जवान स्त्री देखी ३९ कि जिसके समीपमें दो वृद्ध गिरेपड़े, निःश्वास लेतेहुए, अचेतथे और वह स्त्री सेवा करती, समझाती और दोनों के आगे रोती थी ४० सब दिशाओं में अपने रक्षा करनेवाले को देखतीथी और बहुत स्त्रियां पङ्खा डुलाती और वारंवार समझाती थीं ४१ तिसको देखकर दूरसे मैं तिसके समीप गया तो हमको देखकर वह स्त्री ये वचन बोली ४२ कि भोसाधो! भोकल्याणरूप! यहांपर क्षणमात्र ठहरिये और हमारी चिन्ताको दूर कीजिये पुरुषोंका दर्शन सबपापसमूहोंका नाश करनेवाला है पूर्वजन्मकी पुण्यसे आपका दर्शन हुआहै ४३ इससे हेमानकेदेनेवाले! हमारे मनके दुःखके दूरकरने योग्यहो जब इसप्रकार उस स्त्रीने कहा तो कृपासे स्निग्धमन और

कौतुकसे युक्त होकर तिस श्रेष्ठ करिहांववाली से मैंने पूंछा ४४ कि हे भद्रे ! तू कौनहै ये दोनों कौनहैं और कमलके समान नेत्रोंवाली ये स्त्रियां कौन हैं हमारे आगे सब अपने दुःखका कारण कह ४५ इस प्रकार हमारे पूंछने पर वह दुःखयुक्त मनवाली स्त्री अपने सम्पूर्ण दुःखका कारण कहने लगी ४६ कि मैं भक्ति प्रसिद्धहूं और ये मेरे श्रेष्ठपुत्र ज्ञान, वैराग्यनामवाले कालके योगसे जर्जर होगये हैं ४७ और हमारी सेवाकेलिये ये गंगादिक नदियां आई हैं हे नारदजी ! सत्कारसे ये नदियां नित्यही हमारी सेवा करती हैं ४८ तिसपरभी सब ओरसे क्षीण मैं कुछ कल्याण को नहीं प्राप्त होती हे श्रेष्ठ ब्राह्मण मुनिजी ! हमारे पहलेके वृत्तान्तको सुनो ४९ जिससे दुःखित होकर कहीं कल्याणको नहीं प्राप्तहोती द्रविणमें मैं उत्पन्न हुई कर्णाट में वृद्धिको प्राप्तहुई ५० महाराष्ट्रमें कुछ स्थितरही और गुजरातमें जीर्ण होगई तहांपर घोर कलियुगके योगसे पाखण्डों से खण्डित अंगवाली होगई ५१ बहुतकालतक दुर्बलहीरही और पुत्रोंसमेत मन्दताको प्राप्त होगई ५२ फिर दैवयोगसे इस वृन्दावनको प्राप्त हुई तो फिर नई स्वरूपवती स्त्री होगई ५३ और ये सोतेहुये मेरे पुत्र क्लेशयुक्त मनवाले अतिवृद्धहैं इनको छोड़कर इससमय मैं नहीं जासक्तीहूं ५४ मैं जवानस्त्री कैसे होगई और ये पुत्र मेरे बुड्ढे कैसेहुए हम तीनों एकभावथे इसमें उलटा कैसेहुआ ५५ बुढ़िया माताको होना चाहिये और पुत्रोंको बालक होना चाहिये इससे विस्मययुक्त मन होकर आत्माको शोचकरतीहूं ५६ हे धर्म्मके जाननेवाले ! हे दयालु ! हे दीनोंके पालनेवाले ! यदि आपजानते हैं तो सब यथातत्त्व कारणको कहिये ५७ भक्तिके इसप्रकार पूंछनेपर हम क्षणमात्र विचारकर बहुत कालसे क्लेशयुक्त उससे बोले ५८ कि हे पापरहित ! बुद्धिमती भक्ति ! मैं ज्ञानसे सब तुम्हारे वृत्तान्तको देखताहूं कुछ कालको भगवान् तुम्हारा कल्याणकरेंगे ५९ हे बाले ! सब सत्कर्म हरनेवाला घोर कलियुग है इससे सब आचार, योगमार्ग, तप आदि लुप्त होगयेहैं ६० मनुष्य पापकर्म्म करते असुरोंकेसे आचार करते शाठ्य और दुष्कर्म करनेवाले होतेहैं इसमें सज्जनलोग दुः-

से व्याकुल और दुर्जनलोग प्रसन्नमन रहते हैं ६१ धीर चित्तवाला पण्डित कोई नहीं दिखाई पड़ता दुष्टोंके भारसे व्याकुल पृथ्वी छूने और देखने योग्य नहीं है ६२ साल साल क्रमसे प्रतिदिन मंगल-कर्म हीन होताजाताहै हे स्त्री! तुमको और तुम्हारे दोनोंपुत्रोंको कोई नहीं देखताहै ६३ बहुत रागोंसे छोड़ेहुए दोनोंपुत्र जर्जर होगये हैं और तुम वृन्दावनके संयोगसे फिर बाला होगईहौ ६४ यह वृन्दावन धन्यहै जहांपर तुम नवीन होगई और ये तुम्हारे दोनोंपुत्र ग्राहकके अभावसे नवीन नहीं हुएहैं ६५ कुछ आत्माके सुखसे सोते हुए दिखलाई पड़ते हैं तब भक्ति बोली कि परीक्षित्राजाने कैसे अपवित्र कलियुग स्थापित किया और दया में परायण भगवान् ने अधर्मको क्यों उपेक्षित किया ६६ इस मेरे सन्देहको दूरकरदीजिये तुम्हारी वाणीसे मैं सुखयुक्त हुईहूं तिसके वचन सुनकर हे सनकादिक ब्राह्मणो! फिर मैं बोला ६७ कि हे स्त्री! जो तुमने पूंछा तिसको प्रेमसे सुनिये जब मुकुन्दभगवान् पृथ्वीको छोड़कर अपने पदको गये ६८ तिसीदिनसे लेकर सत्यकी बाधा करनेवाला कलियुग प्रवृत्तहुआ दिग्विजयमें राजापरीक्षित ने इसको देखा तब तो कलियुग-दीनकी नाईं शरणमें प्राप्तहोगया ६९ तब इसके गुणके देखनेवाले राजाने सर्वसाधारण इसको नहीं मारा जो फल तपस्या,योग और समाधिसे नहीं मिलता ७० वह फल बुद्धिमान् मनुष्य कलियुगमें केशवजीके कीर्त्तनसे प्राप्त करताहै इस प्रकारके सारसे सारफलके देनेवाले कलियुगको देखकर ७१ परीक्षितने कलियुगके मनुष्योंके कल्याणके लिये स्थापित कियाहै कुकर्मके आचरणसे सारसब ओर से इस समयमें निकलगयाहै ७२ पदार्थ भूमिमें इसप्रकार स्थितहैं जैसे बीजहीन भूसी होती हैं ब्राह्मणों ने भागवतकी वार्ता घर घर और जन जनमें ७३ धनके लोभसे करदी है इससे कथाका सार चलागयाहै और अत्यन्तघोर बड़ेकर्म करनेवाले नास्तिक,दाम्भिक मनुष्य ७४ सब तीर्थों में स्थित रहते हैं इससे तीर्थकासार चला गयाहै काम, क्रोध, महालोभ और तृष्णासे व्याकुलचित्तवाले मनुष्य ७५ कर्मोंका प्रारम्भ करतेहैं इससे कर्म्मसार

के न जीतने, लोभ, दम्भ पाखण्ड के आश्रय ७६ और शास्त्र के विना अभ्याससे ध्यानयोग का फल चलागया है पण्डितजन स्त्रियोंमें भैंसेकी नाईं रमण करते हैं ७७ पुत्रके उत्पन्न करनेमें निपुण हैं परन्तु मुक्तिके साधन में निपुण नहीं हैं वैष्णवधर्म कहीं नहीं है संप्रदाय के आगे चलनेवाले ७८ सब देवताओं और साधुओं की निन्दा में परायण रहतेहैं यह युगका धर्म है किसका दूषण दिया जावे ७९ इससे तुम कमलनयन भगवान् का स्मरणकर सुखको प्राप्तहोगी ८० हे उत्तम ब्राह्मणो! इसप्रकार हमारे कहेहुए वचन सुन भक्ति विस्मय को प्राप्त होगई और हमारी प्रशंसाकर फिर बोली ८१ कि हे नारदजी! आप धन्यहैं हमारी भाग्य से प्राप्त होगयेहैं संसार में साधुओं के दर्शन सब सिद्धिके देनेवाले होते हैं ८२ हे मुनिजी! हे ब्रह्मन्! जिस प्रकार सुखका उपायहो तिसभांति इस समय में आज्ञा दीजिये क्योंकि सब जानने वाले आप को कुछ असाध्य नहीं है ८३ जिस आपकी केवल एक वचनरचना को सुन कर उद्धवजी ने नहीं जीतनेवाली भी मायाको जीतलिया है और आपही की कृपासे ध्रुवजी ध्रुवपद को प्राप्त होगये हैं तिस शरण देनेवाले ब्रह्माजी के पुत्र आपके मैं नमस्कार करतीहूं ८४॥

इतिश्रीपाद्मेउत्तरखण्डेभागवतमाहात्म्येरामविहारीसुकुलकृतभाषाटीकायां भक्तिनारदसमागमोनामत्रिनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९३॥

एकसौ चौरानवेका अध्याय॥

श्रीमद्भागवतमाहात्म्य में कुमारों और नारदजीका संवाद वर्णन॥

सूतजीबोले कि हे दयालु ब्राह्मणो! तिस अति दीनभक्ति ने नारदजीकी प्रार्थनाकी तब नारदजी बोले तिसको सुनिये १ हे बाले! वृथाखेद मतकरे हृदयमें मनधारणकर श्रीकृष्णजी के चरणकमलों का स्मरणकर सुखको प्राप्त होगी २ जिन्होंने कौरवोंके क्लेशसे द्रौपदीकी रक्षाकी और गोपियों की भी पालनाकी वे कृष्ण कहींनहीं गये हैं ३ तुम भक्ति सदैव भगवानकी प्राणों से अधिक प्यारी हो तुम्हारे बुलाये भगवान् नीचके घरमें भी जातेहैं ४ सतयुग, त्रेता

और द्वापरयुगमें बोध और विराग ये दोनों मुक्तिके साधक हैं और कलियुग में केवल भक्तिही ब्रह्मसायुज्य के करनेवाली है ५ यह निश्चयकर चिद्रूपी, परमानन्द चिन्मूर्त्ति भगवान् प्रसन्न मन होकर अपनी प्यारी तुमको अपने अंगसे रचतेभये ६ तब हाथजोड़कर तुमने भगवान् से पूंछा कि क्याकरें तब कृष्णजी ने कहा कि हमारे भक्तों को पालन कीजिये ७ तबतो तुमने अंगीकार करलिया तो भगवान् तिस समय में प्रसन्न होगये मुक्तिको दासी और ज्ञानवैराग्यको पुत्रदिया ८ वैकुण्ठ में स्थित होकर नित्यही भक्तोंका पालन करोगी और पृथ्वी में भक्तोंके पालन के लिये छायारूप का आश्रयकर रहोगी ९ विमुक्ति, ज्ञान और वैराग्योंसमेत तब तुम यहां आगई सतयुग से लेकर द्वापर के अन्ततक मुक्ति आनन्दसे स्थित रही १० कलियुग में पाखण्डरूपी रोग से पीड़ित होकर नाशको प्राप्तहोगई फिर तुम्हारी आज्ञासे फिर वैकुण्ठ में चली गई तुम्हारे स्मरण करनेही से अबतक भी जल्द आजाती है ११ और इनदोनोंको पुत्रकर अपने समीप रक्षाकिये रहती है कलियुग में तुम्हारे पुत्र मन्द और वृद्ध होगये हैं तिनको देखतीहो १२ तिसपरभी तुम चिन्ताको छोड़दो मैं उपाय चिन्तना करताहूं हे पार्वती! कलियुग के सदृश कोई युग नहीं है १३ तिसमें तुम भक्तिको घरघर जनजन में और धर्मोंको छोड़कर महोत्सवों को आगे कर प्रसिद्ध करूंगा १४ जो तुमको प्रवृत्त न करूं तो भगवान् का दास मैं नहींहूं तुमसे युक्त जे जीव इस कलियुग में पापी भी होंगे वे निर्भय भगवान्के मन्दिरको जावेंगे और जिनके चित्तमें सर्वदा प्रेमरूपिणी भक्ति होती है १५। १६ वे निर्मलमूर्त्ति स्वप्नमें भी यमराज को नहीं देखते हैं प्रेत, पिशाच, राक्षस वा असुर १७ भक्तियुक्त मनवाले पुरुषोंके छूने और देखने में समर्थ नहीं हैं तपस्या, वेद और ज्ञानकर्म्मसे १८ भगवान् नहीं प्रसन्न होते केवल भक्तिही से प्रसन्न होते हैं इसमें गोपियां प्रमाण हैं सुकृती मनुष्यों के हज़ार जन्मसे भक्तिहोती है १९ कलियुगमें भक्तिही मुख्यहै इसीसे कृ जी आगे स्थित रहते हैं जे भक्तिसे द्रोह करनेवाले हैं वे न न

में कष्टपाते हैं २० पूर्वकालमें भक्तिकी निन्दाकरनेवाले दुर्व्वासाजी दुःखको प्राप्तहुए हैं व्रत, तीर्थ, योग, यज्ञ २१ और ज्ञानकी कथा के आलापोंसे क्याहै एक भक्तिही मुक्तिकी देनेवाली है इसप्रकार हमारे कहेहुए अपने माहात्म्य को सुनकर २२ सब अंगोंमें आनन्द संयुक्तहोकर भक्ति फिर वचनबोली कि हे नारदजी! आप धन्य हैं आपकी हम में निश्चल प्रीतिहै २३ मुझमें संगत तुम्हारे चित्त को कभी नहीं छोड़ूंगा हे साधो! दयालु आपने हमारी बाधा क्षणमात्रमें ध्वंस करदी है २४ अब हमारे पुत्रोंके चेतना नहीं रही इसमें इनको चेतनायुक्त कीजिये भक्तिके ये वचन सुन कृपायुक्त होकर २५ हाथसे छूकर मुंहको कान में लगाकर ऊंचे स्वरसे शब्दको उच्चारणकर तिनके प्रबोधन करने में प्रवृत्त होगया २६ कि हे ज्ञान! हे वैराग्य! जल्द चेतनासमेत दोनों होवो फिर वेद और वेदांतके शब्दों और गीताके पाठोंसे वारंवार २७ चेतनायुक्त कियेगये परन्तु कुछही चेतनाहुई आलससमेत दोनों नेत्रोंसे नहीं देखते हैं जँभाई लेतेहैं २८ बहुधा बगुलेकी नाईं पलित हैं सूखे काष्ठके समान अंग होरहेहैं और भूंखसे दुर्बल हैं वे मुझको देखकर फिर सोरहे २९ तो मेरे चिन्ताहुई कि हमको क्या करना चाहिये इनकी नींद और वृद्धता कैसे जावेगी ३० हे उत्तम ब्राह्मणो! इसप्रकार गोविन्दजी की चिन्तना करताही था कि तिसीसमयमें आकाशवाणी हुई कि ऋषिजी खेदमतकरो ३१ तुम्हारा उद्यम निस्सन्देह सफल होगा इसीके लिये तुम सत्कर्म करो ३२ साधु, साधुभूषण तिसकर्म तुमसे कहेंगे अच्छा कर्म्म करने से उनकी निद्रा और वृद्धता क्षणमात्र में चलीजावेगी भक्ति सबओर फैल जावेगी ये आकाशवाणी के स्पष्ट वचन सुनकर भी ३४ जो उसने गुप्तहोकर निरूपण किया तिसको मैंने नहीं जाना कौन कर्म्म है जिसमे ज्ञानसंयुक्त होवेंगे ३५ वे सन्त कब होंगे और कैसे सत्कर्म कहेंगे जो आकाशवाणी ने कहाहै उसमें हमको यहां क्या करना चाहिये ३६ तदनन्तर उनको वहीं छोड़कर हम बाहर निकलकर वृन्दावन में आकर तहां उत्तम ब्राह्मणों से पूछने लगे ३७ तो सबलोग वृत्तान्त न

कर विस्मितमन, आकाशवाणी के न जाननेवाले होकर कुछ उत्तर न देतेभये ३८ फिर कोई असाध्य कहनेलगे कोई नहीं जाननेयोग्य बोले कोई वारंवार चिन्तना करतेहुए बौरे से होगये ३९ वेद और वेदान्तके शब्दों और वारंवार गीताके पाठोंसे त्रिक अर्थात् तिगड को बोधयुक्त करतेहुएभी थे परन्तु वह नहीं उठताभया तब वे बोले ४० कि योगी नारद जिसको अपने आप नहीं जानते तिसको और मनुष्य करनेको कैसे समर्थ होसक्ता है तबतो चिन्तासे व्याकुलहोकर हम बदरीवनमें प्राप्तहोगये ४१ और तिसी कार्य को निश्चय कर तपस्या करनेलगे फिर आगे करोड़ सूर्य्योंके समान दीप्तिवाले, मुनियों में श्रेष्ठ सनकादिकों को देखकर उनसे बोले ४२ कि इससमयमें बड़े भागसे आपलोगोंके दर्शन हुएहैं हे महाभागवाले प्रसन्नमन होकर तिस उपायको कहिये ४३ आपलोग योगियों में श्रेष्ठ, बुद्धिमान्, बहुत सुननेवाले, पांचहीपांच वर्षके कुमार, पुरखाओंकेभी पुरखा ४४ सदैव वैकुण्ठ में स्थानवाले, भगवान्के कीर्त्तन में तत्पर, लीलाअमृत कथा में उन्मत्त, भगवान् के स्मरण में तत्परहो ४५ इससे वृद्धावस्था आपलोगोंको बाधा नहीं देतीहै जिनआपके भौंहके टेढ़ी करनेसे पूर्वसमयमें भगवान्के द्वारपाल ४६ तीनजन्म तक दैत्यहोकर फिर तिसस्थानको प्राप्तहोगये हैं अब आकाशवाणी ने जो कहाहै तिसका साधनकहिये ४७ जहां जैसा अनुष्ठान करना चाहिये तिसको दयालु आपलोग कहें और भक्ति ज्ञान और वैराग्योंको जिसप्रकार सुख उत्पन्नहो और आपलोगोंकी सब लोकोंमें प्रसिद्धि जैसेहो तिसप्रकार बुध आपकहें ४८ तब कुमार बोले कि हे नारद! चिन्तामत करो अपने चित्तमें प्रसन्नहोवो इसका उपाय संसार का सुख देनेवाला सुखसे साध्यहै ४९ हे नारद! तुम धन्य हो विरक्तोंके शिरोमणि, श्रीकृष्णके प्रेमपात्रोंके अग्रणी, कहनेवालों में श्रेष्ठहो ५० हे देवर्षि! भक्तिसाधन में तत्पर आपमें कुछ चित्र नहीं है क्योंकि पृथ्वी में कृष्णके दासोंको भक्तिका सञ्चारण उचित ही है ५१ ऋषियों ने बहुधा लोकमें सिद्धिकेलिये उपाय किये हैं वे सब श्रमसे साध्य हैं और प्रायः स्वर्गफलके देनेवाले हैं ५२ और

में कष्टपाते हैं २० पूर्वकालमें भक्तिकी निन्दाकरनेवाले दुर्व्वास
दुःखको प्राप्तहुए हैं व्रत, तीर्थ, योग, यज्ञ २१ और ज्ञानकी क
के आलापोंसे क्याहै एक भक्तिही मुक्तिकी देनेवाली है इसप्रक
हमारे कहेहुए अपने माहात्म्य को सुनकर २२ सब अंगोंमें आन
न्द संयुक्तहोकर भक्ति फिर वचनबोली कि हे नारदजी ! आप ध
हैं आपकी हम में निश्चल प्रीतिहै २३ मुझमें संगत तुम्हारे चि
को कभी नहीं छोडूंगा हे साधो ! दयालु आपने हमारी बाधा क्षण
मात्रमें ध्वंस करदी है २४ अब हमारे पुत्रोंके चेतना नहीं रही इससे
इनको चेतनायुक्त कीजिये भक्तिके ये वचन सुन कृपायुक्त होकर मैं
२५ हाथसे छूकर मुंहको कान में लगाकर ऊंचे स्वरसे शब्दको
धारणकर तिनके प्रबोधन करने में प्रवृत्त होगया २६ कि हे ज्ञा
हे वैराग्य ! जल्द चेतनासमेत दोनों होवो फिर वेद और वेदांत
शब्दों और गीताके पाठोंसे वारंवार २७ चेतनायुक्त कियेगये परन्तु
कुछही चेतनाहुई आलससमेत दोनों नेत्रोंसे नहीं देखते हैं जँभ
लेतेहैं २८ बहुधा बगुलेकी नाईं पलित हैं सूखे काष्ठके समान अं
होरहेहैं और भूंखसे दुर्बल हैं वे मुझको देखकर फिर सोरहे २९ तब
तो मेरे चिन्ताहुई कि हमको क्या करना चाहिये इनकी नींद और
वृद्धता कैसे जावेगी ३० हे उत्तम ब्राह्मणो ! इसप्रकार गोविन्दजी
की चिन्तना करताही था कि तिसीसमयमें आकाशवाणी हुई कि हे
ऋषिजी खेदमतकरो ३१ तुम्हारा उद्यम निस्सन्देह सफल होग
इसीके लिये तुम सत्कर्म करो ३२ साधु, साधुभूषण तिसकर्म्म को
तुमसे कहेंगे अच्छा कर्म्म करने से उनकी निद्रा और वृद्धता ३३
क्षणमात्र में चलीजावेगी भक्ति सबओर फैल जावेगी ये आकाश
वाणी के स्पष्ट वचन सुनकर भी ३४ जो उसने गुप्तहोकर निरूपण
किया तिसको मैंने नहीं जाना कौन कर्म्म है जिससे ज्ञानसंयुक्त ये
होवेंगे ३५ वे सन्त कब होंगे और कैसे सत्कर्म कहेंगे जो आकाश
वाणी ने कहाहै उसमें हमको यहां क्या करना चाहिये ३६ तदन
न्तर उनको वहीं छोड़कर हम बाहर निकलकर वृन्दावन में ज
तहां उत्तम ब्राह्मणों से पूंछने लगे ३७ तो सबलोग वृत्तान्त सु

कर विस्मितमन, आकाशवाणी के न जाननेवाले होकर कुछ उत्तर न देतेभये ३८ फिर कोई असाध्य कहनेलगे कोई नहीं जाननेयोग्य बोले कोई वारंवार चिन्तना करतेहुए बौरे से होगये ३९ वेद और वेदान्तके शब्दों और वारंवार गीताके पाठोंसे त्रिक अर्थात् तिगड को बोधयुक्त करतेहुएभी थे परन्तु वह नहीं उठताभया तब वे बोले ४० कि योगी नारद जिसको अपने आप नहीं जानते तिसको और मनुष्य करनेको कैसे समर्थ होसक्ता है तबतो चिन्तासे व्याकुलहोकर हम बदरीवनमें प्राप्तहोगये ४१ और तिसी कार्य को निश्चय कर तपस्या करनेलगे फिर आगे करोड़ सूर्य्योंके समान दीप्तिवाले, मुनियों में श्रेष्ठ सनकादिकों को देखकर उनसे बोले ४२ कि इससमयमें बड़े भागसे आपलोगोंके दर्शन हुएहैं हे महाभागवाले प्रसन्नमन होकर तिस उपायको कहिये ४३ आपलोग योगियों में श्रेष्ठ, बुद्धिमान्, बहुत सुननेवाले, पांचहीपांच वर्षके कुमार, पुरखाओंकेभी पुरखा ४४ सदैव वैकुण्ठ में स्थानवाले, भगवान्के कीर्त्तन में तत्पर, लीलाअमृत कथा में उन्मत्त, भगवान् के स्मरण में तत्परहो ४५ इससे वृद्धावस्था आपलोगोंको बाधा नहीं देती है जिनआपके भौंहके टेढ़ी करनेसे पूर्वसमयमें भगवान्के द्वारपाल ४६ तीनजन्म तक दैत्यहोकर फिर तिसस्थानको प्राप्तहोगये हैं अब आकाशवाणी ने जो कहाहै तिसका साधनकहिये ४७ जहां जैसा अनुष्ठान करना चाहिये तिसको दयालु आपलोग कहें और भक्ति ज्ञान और वैराग्योंको जिसप्रकार सुख उत्पन्नहो और आपलोगोंकी सब लोकोंमें प्रसिद्धि जैसेहो तिसप्रकार बुध आपकहें ४८ तब कुमार बोले कि हे नारद ! चिन्तामत करो अपने चित्तमें प्रसन्नहोवो इसका उपाय संसार का सुख देनेवाला सुखसे साध्यहै ४९ हे नारद ! तुम धन्य हो विरक्तोंके शिरोमणि, श्रीकृष्णके प्रेमपात्रोंके अग्रणी, कहनेवालों में श्रेष्ठहो ५० हे देवर्षि ! भक्तिसाधन में तत्पर आपमें कुछ चित्र नहीं है क्योंकि पृथ्वी में कृष्णके दासोंको भक्तिका सञ्चारण उचितही है ५१ ऋषियों ने बहुधा लोकमें सिद्धिकेलिये उपाय किये हैं वे सब श्रमसे साध्य हैं और प्रायः स्वर्गफलके देनेवाले हैं ५२ और

वैकुण्ठसाधक मार्गलोकों में छिपाहुआ वर्त्तमान है तिसका उपदेश
करनेवाला साधु बहुधा भाग्यही से प्राप्तहोताहै ५३ हे मुनीश्व
आकाशवाणी ने जो तुमसे सत्कर्म कहाहै वह ज्ञानरूपी यज्ञ सर्वज्ञ
पुरातन मुनियोंसे यहां जानने योग्यहै ५४ श्रीमद्भागवत का आ
लापरूपी ज्ञानयज्ञ शुकदेवजी ने कहा है यह भक्ति, ज्ञान और वि
रागों का सुख देनेवाला हम लोगोंको प्रकाशित होताहै ५५ श्रीम
द्भागवत के शब्दसे सब कलियुग के ये दोष डरकर इसप्रकार भाग
जातेहैं जैसे सिंहके शब्दसे भेड़िया भागजाताहै ५६ ज्ञान वैराग्य
संयुक्त प्रेमरसके देनेवाली भक्ति प्रत्येक घरमें और प्रत्येक मनुष्
में सुखपूर्व्वक क्रीड़ा करैगी ५७ सूतजी बोले कि हे शौनकादिको
भगवान् नारदजी कुमारों का कहा सुनकर प्रसन्नमन होगये औ
तिस उत्कर्ष को बढ़ाते हुए फिर बोले ५८ कि कलियुग के दोषं
तिरस्कार कियाहुआ त्रिक वेद वेदान्तके शब्दों और गीताके पाठ
से प्रबोधित नहीं उठा ५९ वह कैसे भागवत के आलाप से बो
को प्राप्त होगा सफल दर्शनवाले आपलोग इस संदेह को दूरकी
जिये ६० इसमें विलम्ब नहीं करना चाहिये क्योंकि शरणागतव
त्सलहौ तदनन्तर सनकादिक विरक्त, ऊर्ध्वरेता ६१ सिद्ध सनात
ब्राह्मण आदर से नारदजीसे बोले ६२ कि वेद और उपनिषदों
सारसे भागवतकी कथा उत्पन्न हुईहै यह अत्युत्तम, पृथग्भूत, फ
की उन्नति शोभित होती है ६३ इसमें आंबके फलकी नाईं आमू
लाग्ररस है पीनेसे संसार का मनोहर पृथग्भूत है ६४ जैसे दूधमें
स्थित घी स्वादुके लिये नहीं उपकल्पितहै तैसेही पृथग्भूत, सुंद
भागवतरूपी रस देवताओं को प्रीति बढ़ाने वालाहै ६५ जैसे ईख
में आदि मध्य और अन्तमें शक्कर व्याप्तहोकर स्थितहै और अलग
होनेसे अधिक मीठीहै तैसेही भागवतकी कथाहै ६६ श्रीमद्भागवत
नाम पुराण रसरूप है यह भक्ति,ज्ञान और वैराग्यों के सुखके लिये
प्रकाशित भयाहै ६७ श्रीकृष्णजीने नाभिरूपी कमलमें स्थित ब्रह्म
जीसे मनहीसे चार श्लोक बतायेथे वे ब्रह्मरूपही सब शोभित होते
हैं ६८ ब्रह्माजीने वह सब चरित्र तुमसे कहा तुमने व्यासदेवसे उ

के तापकी हानिके लिये कहा ६९ जिसके स्मरणसे शीघ्रही व्यासजी निर्विस होकर आत्माराम मनोहर बहुत कहनेके लिये कर देते भये ७० अब तुमको क्या विस्मयहै जिससे वारंवार पूंछतेहौ श्रीमद्भागवतशास्त्र कृष्णजीके अनुकर्षणमें योग्यहै ७१ सूतजी बोले कि हे शौनकादिको! सनकादिक योगीश्वरोंके कहेहुये अशोच्छ ये वचन सुन कर नारदमुनि भक्तिसे उनके चरण छूकर भक्तिसे मस्तकसे प्रणामकर प्रसन्न होकर संसार की मानसीव्यथा दूर करनेवाले तिनसे बोले ७२ कि आपलोगों के दर्शन पापसमूहोंके नाश करनेवाले हैं संसारके दुःखरूपी दावानल से पीड़ित मनुष्योंका कल्याणकरते हैं संपूर्ण शेषजीके मुखसे गानहुई कथाके एक पीनेसे प्रेमके प्रकाशन करनेवाले आपकी शरणमें हम प्राप्तहैं ७३ कुशली मनुष्यका बहुत जन्मकी इकट्ठा कीहुई पुण्यके उदय से जो सज्जनों का संगमहोवे तो अज्ञान हेतुसे कियाहुआ मोहरूपी भारीअंधकार नाश होजाता और तिसी समय में महान्ज्ञान उदयको प्राप्त होजाता है ७४॥

इतिश्रीपाद्मेउत्तरखण्डेश्रीभागवतमाहात्म्येरासबिहारीशुक्लकृतभाषाटीकायां कुमारनारदसंवादोनामचतुर्नवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९४॥

एकसौपंचानबेका अध्याय॥

श्रीभागवतमाहात्म्य में भक्तिके कष्टका निवर्त्तन वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे शौनकादिको! ज्ञानयज्ञसे आदर कियेहुए नारदजी कुमारों के नमस्कार कर बोले १ कि शुकदेवजी के शास्त्र भागवत की कथासे उज्ज्वल ज्ञानयज्ञ को यत्नसे भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के स्थापनके लिये करूंगा २ हे ब्राह्मणो! जहां हमको यज्ञ करना योग्य है तिस स्थानको कहिये चारयज्ञवाह आप लोगोंको मैंने वरण किया ३ हे ज्ञानयज्ञ में विशारदो! कितने दिन में श्रीमद्भागवत की कथा सुननी चाहिये और तिसमें क्या विधि करनी योग्यहै ४ तब कुमारबोले कि हे नारदमुनि! तुमसे कथा कहताहूं सुनिये जोकि सुननेवालोंके पापरूपी राशिकी नाश करनेवाली और पुण्य के बढ़ाने हारी है ५ हरिद्वार के समीप में आनंदनाम भा॰

पुरहै ६ आकाशगंगाके पुण्यकारी उत्तरमें आनन्दनामक किनारा है जोकि अनेक ऋषिसमूहों देव और सिद्धोंसे सेवित ७ अनेकप्रकार के वृक्ष और लताओंसे आच्छादित, स्वच्छ कोमल बालूयुक्त, सुन्दर, एकान्त देशमें स्थित, सोनेके कमलोंसे शोभित है ८ जिसके समीप में स्थित जीवोंके क्षेत्रही के प्रभावसे चित्तमें वैरनहीं रहताथा परस्पर स्निग्धचित्त रहते थे ६ तहांपर यत्नसे ज्ञानरूपी यज्ञकीजिये और अपूर्व रसके देनेवाली कथा भी वहीं होगी १० वृन्दावन में स्थित, बुढ़ापेसे जीर्णदेहवाले दोनों पुत्रों को आगे कर भक्तिभी तहांपर आवेगी ११ जहांपर भागवतकी वार्त्ताहोतीहै तहांपर पुत्रोंसमेत भक्ति कृष्णके यशरूप अमृतकोपीकर युवावस्थायुक्त होजावेगी १२ सूतजीबोले कि हे शौनकादिको! इसप्रकार कुमार कहकर नारदमुनि के साथ शीघ्रतायुक्त ज्ञानके लिये हरिद्वार में प्राप्त होतेभये १३ जब ये सबलोग गंगाजी के किनारे प्राप्तहुए तब भूलोक आदिक सातलोकों में कोलाहल हुआ १४ और प्राचीन, वैष्णव, श्रीमद्भागवत के स्वादमें लंपट, सातोंलोकों के बहुत शीघ्र दौड़कर प्राप्त होगये १५ भृगु, वसिष्ठ, च्यवन, गौतम, मेधातिथि, देवल, देवरात, परशुराम, विश्वामित्र, शाकल, मार्कण्डेय, अत्रिज, पिप्पलाद १६ योगेश्वर व्यास और पराशर, भागवतों में श्रेष्ठ शुकदेवजी आदिक शिष्योंसे युक्त, बहुत शास्त्रों के जाननेवाले, कृष्णजी के अमृतके स्वादकी कृतिमें प्रधान १७ वेदान्त, वेद, मंत्र, तंत्र, संहिता, सत्रहपुराण १८ गंगादिक नदियां, पुष्कर आदिक तालाव, क्षेत्र, सब दिशा, दण्डकादिकवन १६ हिमवान् आदिक पर्व्वत, देवता, गंधर्व, किन्नर, द्वीप, समुद्र, दिक्पाल, पातालके रहनेवाले प्राप्त होगये २० इन सबको दीक्षामें नारदमुनिने उत्तम आसनदिये और कृष्णमें तत्पर सब कुमारोंकी वन्दनाकर आसनमें बैठाला २१ वैष्णव, विरक्त, संन्यासी, ब्रह्मचारी ये सब मुख्य मुख्य आगे स्थितहुए और तिनकेआगे नारदजी स्थितहुए २२ बाईं ओर तो मुनियोंके समूह, दहिनी ओर देवता, वेद उपनिषद और तीर्थ स्थितहुए २३ जय शब्द, नमः शब्द और शंखकाशब्द दशोंदिशाओं में शब्दयुक्त होता

हुआ आकाशका छूनेवालाहुआ २४ और प्रसन्नहुए देवता विमानों पर चढ़कर कल्पवृक्ष के फूलों से तिस सभाको आच्छादित करते भये २५ सूतजी बोले कि हे शौनकादिको! इसप्रकार भृगुआदिकों के यथायोग्य बैठजानेपर कुमार नारदमुनि से श्रीभागवतमाहात्म्य कहतेहुये २६ बोले कि हे नारद! श्रीमद्भागवतशास्त्रकी विधिपूर्वक महाअद्भुत महिमाको कहताहूं सुनिये २७ सुकृती मनुष्योंकरके सदैव भागवतकी कथा सेवनीचाहिये जिसके सुननेहीमात्रसे वे कृतार्थ होजाते हैं २८ श्रीमद्भागवतनाम ग्रन्थ अठारहहज़ार श्लोकवाला है बारहस्कन्धों से युक्त और परीक्षित और शुकदेवजी के संवाद-समेत है २९ अज्ञान से मोहित मनुष्य तबतक इस संसारचक्र में घूमताहै जबतक शुकदेवजीकाशास्त्र अर्थात् भागवत कानों में नहीं प्राप्त होताहै ३० जो भक्तिभावन पुरुषोंकरके भागवत न सुनाजावे तो बहुत शास्त्र, पुराण, संहिता और आगमके सुननेसे क्याहै ३१ भागवतकी कथा नित्यही जिस घरमें होती है वह घर तीर्थरूप, मनुष्योंके पापोंका नाश करनेवालाहै ३२ अश्वमेध हज़ारयज्ञ और राजसूय सौयज्ञ भागवतके कथाकी सोलहवीं कलाको नहीं प्राप्तहोते हैं ३३ इस देहमें तबतक पाप स्थित होते हैं जबतक श्रीमद्भागवत मनुष्य अच्छी तरहसे नहीं सुनते हैं ३४ गंगा, गया, काशी, प्रतिष्ठान और पुष्कर भागवतकी कथाके पुण्यफलमें समाननहीं हैं ३५ भागवतका आधाश्लोक वा चौथाई श्लोक नित्यही अपनेमुखसे पढ़ो यदि संसार के नाशकी इच्छा करतेहो ३६ वेदादि, वेदमाता, पौरुपसूत्र, त्रयी, भागवत, द्वादश अष्टाक्षर मनु ३७ द्वादशात्मा, प्रयाग, काल, संवत्सरात्मक, ब्राह्मण, अग्निहोत्र, कामधेनु, द्वादशी तिथि ३८ तुलसी, वसन्तऋतु, पुरुषोत्तम इनसबका वस्तुतः पृथग्भाव नहीं है ३९ हे द्विज! नारद! जो भागवतशास्त्रको प्रतिदिन पढ़ता है तिसके करोड़ जन्मकेकियेहुए पाप नाशहोजाते हैं ४० जो मनुष्य श्रीमद्भागवत को सुनते, पढ़ते और ध्यानकरते हैं और तुलसी और अग्निका सेवन करते हैं उनको श्रीमद्भागवत भुक्ति वा मुक्ति को देती है ४१ और जो अन्तकाल प्राप्तहोने में दूरहीसे डरको छो-

ड़कर श्रीमद्भागवतको भक्तिसे सुनता है वह मुक्तिका भागी होता है ४२ भादोंकी पूर्णमासी में सोनेके सिंहासनपर रखकर अलंकारयुक्त कर श्रीमद्भागवतको श्रेष्ठ ब्राह्मणको देवे ४३ भक्तियुक्त, अभिमान-रहित, थोड़ा भोजन करनेवाला इन्द्रियजीतनेहारा मनुष्य आदिसे कृष्णजी की कथा सुनकर सायुज्यलोक को प्राप्तहोता है ४४ जिस मूर्खने अच्छीतरह से चित्तलगाकर जन्मपर्यन्त पृथ्वी में कृष्णजी की कथानहीं सुनी उसने चाण्डाल और पशुकी नाईं भूंठही अपना जन्म बिताया और माताको अत्यन्त कष्टदियाहै ४५ जिन मनुष्योंने भागवतपुराण नहीं सुना पुराणपुरुषको नहीं आराधन किया ब्राह्मणों को भोजन नहींकराया तिनका जन्म वृथाही चलागया ४६ जिसमनुष्य का चित्त भगवान्की कथामें नहीं प्रसन्न होताहै उसको धिक्कार है पूर्व्वके सिद्ध मुनिलोग पशुकेसमान पृथ्वी में भारही रूप उसको कहते हैं ४७ श्रीमद्भागवतकी कथा संसारमें दुर्लभहै करोड़ जन्मकी पुण्यसे प्राप्त होती है ४८ हे योगके निधि साधु द्विज! तिससे प्रतिदिन भागवतकी कथा सुननीचाहिये दिनोंका नियम नहीं है ४९ सत्य और ब्रह्मचर्य्य से इसका सुनना योग्यहै इसी से कलियुगमें विशेष कर सातही दिनकी विधि है ५० मनके न जीतने से, रोगसे, पुरुषों की उमर के नाशसे तथा कलियुगके बहुत दोषों से सातही दिन में सुनना योग्य है ५१ मनका निग्रह, नियम आचरण और नियम कल्पना सातही दिन करने को मनुष्य समर्थ है ५२ श्रद्धासे नित्यही सुनने में आदिसे अंतकी अवधि तक जो फलहै वह फल शुकदेवजी ने सप्ताहके सुनने में कियाहै ५३ जो फल तपस्या, योग और समाधिसे नहीं है वह सब विना परिश्रम सातदिनके सुनने से प्राप्त होताहै ५४ यज्ञ, व्रत, तपस्या, ध्यान, ज्ञान और तीर्थ से श्रीभागवत के सप्ताहका नियम उत्तम कहाहै ५५ जब श्रीकृष्णजी पृथ्वीको छोड़कर अपने पदके जानेको उद्यतहुए तब यह हाल जानकर बुद्धिमान् उद्धवजी कृष्णजी से बोले ५६ कि हे भगवन्! आपने सब देवकार्य पूरा करदिया अब इस समय में तमसेपर अपने पद जाने की इच्छा करते हो ५७ इससे हे विभुजी! आपके वियोगके डरसे

हमारे चिन्ता उत्पन्न हुई है तिसको हे देवों के स्वामी ! दूर कीजिये आपकी शरणमें मैं प्राप्तहूं ५८ हे नाथ ! यह घोर कलियुग प्राप्त हुआ है इसमें सब मनुष्य दुष्टही होंगे इसमें क्या करना चाहिये तिसको कहिये ५९ हे यदुनन्दन ! यह भारयुक्त पृथ्वी किसकी शरणमें जावे आपसे और दूसरा इसका रक्षा करनेवाला नहीं दिखाई देता है ६० हे दयानिधि प्रभुजी ! इससे हम लोगों के ऊपर दया-कर यहीं रहिये क्योंकि साधुओं की रक्षा के लिये आप प्रकट हुए हैं ६१ निर्गुण, निराकार और सच्चिदानन्द शरीर आपका है आप के वियोगसे वेभक्त कैसे पृथ्वी में रहेंगे ६२ निर्गुण उपासनामें कष्ट है इससे हमारे हितको करिये सूतजी बोले कि हे शौनकादिको ! ये उद्धव के वचन सुन दयायुक्त भगवान् क्षणमात्र चिन्तनाकर श्रीमद्भागवत में अपना तेज स्थापित कर उद्धवजी को देतेभये ६३।६४ और भगवान् अपने पदमें प्रवेश करगये तिससे श्रीहरिजीकी यह भागवत वाङ्मयी मूर्ति वर्तमान है ६५ इसके निरन्तर सेवनसे मनुष्यों के क्षणमात्रही में पाप नाश होजाते हैं तिसी से सप्ताह का सुनना सबसे अधिक कहा है ६६ हे द्विज ! सुननेवाला, पूछनेहारा और बांचनेवाला तन्मय होजाते हैं दुःख, दारिद्र्य, दौर्भाग्य पापके दूर करने के लिये ६७ और काम क्रोधके जयके लिये कलियुग में भागवत समर्थ है और प्रकार से वैष्णवीमाया देवताओं को भी दुर्जय है यह श्रीमद्भागवत के विना कैसे निवृत्त होसक्ताहै ६८ सूतजी बोले कि हे शौनकादिको ! कुमार इसप्रकार श्रीमद्भागवत का माहात्म्य कहकर भागवतकी सुन्दर कथा कहने का प्रारम्भ करते भये ६९ वेद उपनिषदों के सार श्रीमद्भागवत को जब कुमार प्रारंभ करतेभये उसी समय में क्षणमात्रही में भक्ति प्रकट होगई ७० जो कि प्रेमसे युक्त, पवित्र देहवाली और श्रीकृष्ण, गोविन्द, हरे, मुरारे, नाथ येनाम वारंवार कहतीथी आनन्दसेयुक्त जवान पुत्रोंको अपने भुजाओं से ग्रहणभी किये थी ७१ सब विस्मययुक्त नेत्रवाले सभासद लोग भागवतके अर्थसे भूषित, पवित्र वेषयुक्त तिस भक्तिको आती देखकर यह तर्कणा करतेभये कि यह स्त्री कौनहै और कहां

छूकर श्रीमद्भागवतको भक्तिसे सुनता है वह मुक्तिका भागी होताहै ४२ भादौंकी पूर्णमासी में सोनेके सिंहासनपर रखकर अलंकारयुक्त कर श्रीमद्भागवतको श्रेष्ठब्राह्मणको देवे ४३ भक्तियुक्त, अभिमान-रहित, थोड़ा भोजन करनेवाला इन्द्रियजीतनेहारा मनुष्य आदिसे कृष्णजी की कथा सुनकर सायुज्यलोक को प्राप्तहोता है ४४ जिस मूर्खने अच्छीतरह से चित्तलगाकर जन्मपर्यन्त पृथ्वी में कृष्णजी की कथानहीं सुनी उसने चाण्डाल और पशुकी नाईं झूठही अपना जन्म बिताया और माताको अत्यन्त कष्टदियाहै ४५ जिन मनुष्योंने भागवतपुराण नहीं सुना पुराणपुरुषको नहीं आराधन किया ब्राह्मणों को भोजन नहींकराया तिनका जन्म वृथाही चलागया ४६ जिसमनुष्य का चित्त भगवान्की कथामें नहीं प्रसन्न होताहै उसको धिक्कार है पूर्व्वके सिद्ध मुनिलोग पशुकेसमान पृथ्वी में भारही रूप उसको कहते हैं ४७ श्रीमद्भागवतकी कथा संसारमें दुर्लभहै करोड़ जन्मकी पुण्यसे प्राप्त होती है ४८ हे योगके निधि साधु द्विज! तिससे प्रति-दिन भागवतकी कथा सुननीचाहिये दिनोंका नियम नहीं है ४९ सत्य और ब्रह्मचर्य्य से इसका सुनना योग्यहै इसी से कलियुगमें विशेष कर सातही दिनकी विधि है ५० मनके न जीतने से, रोगसे, पुरुषों की उमर के नाशसे तथा कलियुगके बहुत दोषों से सातही दिन में सुनना योग्य है ५१ मनका निग्रह, नियम आचरण और नियम कल्पना सातही दिन करनेको मनुष्य समर्थ है ५२ श्रद्धासे नित्य-ही सुनने में आदिसे अंतकी अवधि तक जो फलहै वह फल शुक-देवजी ने सप्ताहके सुनने में कियाहै ५३ जो फल तपस्या, योग और समाधिसे नहीं है वह सब विना परिश्रम सातदिनके सुनने से प्राप्त होताहै ५४ यज्ञ, व्रत, तपस्या, ध्यान, ज्ञान और तीर्थ से श्रीभाग-वत के सप्ताहका नियम उत्तम कहाहै ५५ जब श्रीकृष्णजी पृथ्वीको छोड़कर अपने पदके जानेको उद्यतहुए तब यह हाल जानकर बु-द्धिमान् उद्धवजी कृष्णजी से बोले ५६ कि हे भगवन्! आपने सब देवकार्य पूरा करदिया अब इस समय में तमसेपर अपने पद जाने की इच्छा करते हो ५७ इससे हे विभुजी! आपके वियोगके डरसे

हमारे चिन्ता उत्पन्न हुई है तिसको हे देवों के स्वामी ! दूर कीजिये आपकी शरणमें मैं प्राप्तहूं ५८ हे नाथ ! यह घोर कलियुग प्राप्त हुआ है इसमें सब मनुष्य दुष्टही होंगे इसमें क्या करना चाहिये तिसको कहिये ५९ हे यदुनन्दन ! यह भारयुक्त पृथ्वी किसकी शरणमें जावे आपसे और दूसरा इसका रक्षा करनेवाला नहीं दिखाई देता है ६० हे दयानिधि प्रभुजी ! इससे हम लोगों के ऊपर दयाकर यहीं रहिये क्योंकि साधुओं की रक्षा के लिये आप प्रकट हुए हैं ६१ निर्गुण, निराकार और सच्चिदानन्द शरीर आपका है आप के वियोगसे वेभक्त कैसे पृथ्वी में रहेंगे ६२ निर्गुण उपासनामें कष्ट है इससे हमारे हितको करिये सूतजी बोले कि हे शौनकादिको ! ये उद्धव के वचन सुन दयायुक्त भगवान् क्षणमात्र चिन्तनाकर श्रीमद्भागवत में अपना तेज स्थापित कर उद्धवजी को देतेभये ६३।६४ और भगवान् अपने पदमें प्रवेश करगये तिससे श्रीहरिजीकी यह भागवत वाङ्मयी मूर्ति वर्तमान है ६५ इसके निरन्तर सेवनसे मनुष्यों के क्षणमात्रही में पाप नाश होजाते हैं तिसी से सप्ताह का सुनना सबसे अधिक कहा है ६६ हे द्विज ! सुननेवाला, पूंछनेहारा और बांचनेवाला तन्मय होजाते हैं दुःख, दारिद्र्य, दौर्भाग्य पापके दूर करने के लिये ६७ और काम क्रोधके जयके लिये कलियुग में भागवत समर्थ है और प्रकार से वैष्णवीमाया देवताओं को भी दुर्जय है यह श्रीमद्भागवत के विना कैसे निवृत्त होसक्ताहै ६८ सूत जी बोले कि हे शौनकादिको ! कुमार इसप्रकार श्रीमद्भागवत का माहात्म्य कहकर भागवतकी सुन्दर कथा कहने का प्रारम्भ करते भये ६९ वेद उपनिषदों के सार श्रीमद्भागवत को जब कुमार प्रारंभ करतेभये उसी समय में क्षणमात्रही में भक्ति प्रकट होगई ७० जो कि प्रेमसे युक्त, पवित्र देहवाली और श्रीकृष्ण, गोविन्द, हरे, मुरारे, नाथ येनाम वारंवार कहतीथी आनन्दसेयुक्त जवान पुत्रोंको अपने भुजाओं से ग्रहणभी किये थी ७१ सब विस्मययुक्त नेत्रवाले सभासद लोग भागवतके अर्थसे भूषित, पवित्र वेषयुक्त तिस भक्तिको आती देखकर यह तर्कणा करतेभये कि यह स्त्री कौनहै और कहां

से आई है ७२ तदनन्तर कुमार लोग बोले कि यह भक्ति है कथा के अर्थ से कृतार्थ, इसी समयमें आई है इस प्रकारकी वाणी पुत्रों समेत नम्रहुई भक्ति सुनकर कुमार से बोली ७३ कि आप लोगों करके कथाके रससे इसी समय में मैं पुष्ट कीगई हूं पहले कलियुग में नष्ट होगई थी अब मुझको यह आज्ञा दीजिये कि पुत्रोंसमेत कहां बैठूं ७४ सूतजी बोले कि हे शौनकादिको! भक्तिके ये वचन सुन कुमार लोग अच्छीतरहसे विचारकर चित्तमें धारण कर संसार-रूपी रोगके हरनेवाली भगवान् की भक्ति सेवने वालोंको प्रेम देने वाली भक्तिसे बोले ७५ कि गोविन्दजी में परायण, साधु और दीनों के ऊपर दया करनेवाले भक्तों में उत्पथ में प्रवृत्त मनको नियमनकरो और भगवान् के चरणकमल में एकता न करो ७६ तो कलियुगसे उत्पन्न ये दोष जो कि संसारमें समर्थहैं वे तुम्हारे देखने को न समर्थहोंगे और नारद करके प्राप्त कीगई तुम्हीं कलियुग में अकेली संसारके कल्याण के लिये होगी ७७ तीनों लोकों में दरिद्री अत्यन्त धन्य हैं जिनके हृदय में श्रीहरिजीकी एक भक्तिही बसतीहै प्रेमरूपी सूत्रसे बँधेहुये भगवान् शीघ्रही अपना लोक छोड़कर जिनके हृदय में प्रवेश करतेहैं ७८॥

इतिश्रीपाद्मेउत्तरखण्डेश्रीभागवतमाहात्म्येरामविहारीसुकुलकृतभाषाटीकायां भक्तिकष्टनिवर्तननामपंचनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९५॥

एकसौछानबेका अध्याय॥

श्रीभागवतमाहात्म्यमें आत्मदेव ब्राह्मणका मोक्ष वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे शौनकादिको! वैष्णवों के चित्तमें अलौकिकी भक्ति देखकर भगवान् अपना लोक छोड़कर पृथ्वीको जातेभये १ जोकि वनके पुष्पोंका मालाधारे, मेघों के समान श्यामवर्ण, पीताम्बर पहने, मुकुट और क्षुद्रघंटिकाधारे, मकराकृतकुण्डल प्रकाशित होरहे २ त्रिभंगललित, पवित्र कौस्तुभमणिसे विराजित, करोड़काम के समान सुन्दर, हरिचन्दन से चर्चित ३ परमानन्द चिन्मूर्ति, मुरलीधरजी हैं वे अपने भक्तों के निर्मल हृदयमें प्रवेशकरगये ४

और वैकुण्ठवासी, वैष्णव, शान्तमानस, गूढ़रूप भगवान्‌की कथा सुनने के लिये प्राप्त होगये ५ तिससमय में जयजय और शंखका शब्दहुआ जिससे कलियुगके अत्यन्तघोर अमंगल नाश होगये ६ तहां के मनुष्योंका घर और आत्माका विस्मरण देखकर अध्यात्म तत्त्वके जाननेवाले नारदजी कुमारोंसे बोले ७ कि हे मुनीश्वरो ! यह सप्ताहकी महिमा इस समयमें अलौकिक मैंने देखी ८ कि मूढ़ शठ पशु पक्षी भी श्रेष्ठगति को प्राप्त होते हैं इससे मनुष्यों के लोकमें चित्तकी शुद्धिके लिये और शास्त्र पवित्र नहीं है ९ पापसमूहों का नाश करनेवाला, कृतार्थता देनेहारा भागवतही है-हे कुमारो ! दोषों के निधि कलियुग में कथामय सप्ताह यज्ञसे कौन कौन शुद्ध नहीं होतेहैं यह हमसे कहिये १० क्योंकि दयालु आप लोगों ने संसार का कल्याण करनेवाला कोई नवीन मार्ग प्रकाशित कियाहै तब कुमार बोले कि जे मनुष्य पाप करनेवाले, दुष्ट, सदैव दुराचार में रत, मत्सरसमेत ११ क्रोधरूपी आगसे जलेहुए, कुटिल और कामी हैं वे सप्ताहयज्ञ से भगवान् को प्राप्त होते हैं १२ सत्यसे हीन, पिता माताके दूषक, तृष्णासे आकुल, आश्रम और वर्णों से बाह्य, दाम्भिक और जीवोंकी हिंसा करनेवाले हैं वे सप्ताहकी यज्ञसे भगवान् को प्राप्त होतेहैं १३ पांच प्रकारके घोरपाप करनेवाले, छल करनेहारे, क्रूर, पिशाचकी नाईं निर्दय, ब्राह्मणकी द्रव्यसे पुष्ट और व्यभिचारी हैं वे सप्ताह की यज्ञसे भगवान्‌को प्राप्त होते हैं १४ जे शठ मनुष्य काय, वाणी और मनसे नित्यही हठकरके पाप करतेहैं, नीच, कृतघ्न, मलिन और दुष्ट अन्तःकरणवाले हैं वे सप्ताहकी यज्ञसे भगवान्‌को प्राप्त होते हैं १५ सूतजी बोले कि हे शौनकादिको ! तदनंतर इस प्रकार प्रसन्नचित्त, देवों में पूजित, नारदमुनि से प्रसन्न हुए कुमार फिर बोले १६ कि यहांपर तुमसे प्राचीन इतिहासको कहते हैं जिसके सुननेही से पापोंकी हानि होजाती है १७ पूर्वसमयमें तुङ्गभद्रानदी के किनारे वर्ण आश्रम के आचार से युक्त, धन धान्य संयुक्त कोहलनाम गांवमें १८ आत्मदेव नामसे प्रसिद्ध श्रेष्ठ ब्राह्मण हुआ जो कि वेद विद्याकी विधि में बुद्धिमान् और नित्य कर्म

में परायण था १९ और तिसकी प्यारी स्त्री धुंधुली नाम थी यह नित्यही अपने हितमें रत, अपने वाक्यके स्थापन करनेवाली, सुन्दरी, अच्छेकुलमें उत्पन्न २० पूर्वसमय के कर्म के विपाक से बहुधा बहुत बकनेवाली, घरके कृत्य में शूर, क्रूर और लड़ाई बहुत प्रिय थी २१ इसप्रकार दोनों स्त्री पुरुषों के बसते हुए पचास वर्ष बीत गये परन्तु पुत्र नहीं हुआ २२ तब तो घरमें स्थित वे दोनों बहुत दुःखित हुए पुत्रकी उत्पत्तिके लिये उन्हों ने धन आदिक दिया २३ गऊ, पृथ्वी, सोना और कपड़ा भी बहुतसा दिया परन्तु पूर्व के कर्म से पुत्र और कन्या नहीं हुए २४ तब एक समय में विना पुत्रके दुःखित आत्मदेव ब्राह्मण घर छोड़कर वनमें चलेगये २५ तो जहां तहां भ्रांत, दुःखसे व्याकुल मन होकर घूमनेलगे फिर भूंखसे दुःखित और प्यास से युक्तहोकर दैवयोगसे एक तालाब में प्राप्तहुए २६ तब तो द्विजोत्तम जी उस तालाब में जल पीकर पेड़की छाया में बैठगये २७ तदनन्तर कोई सिद्ध पृथ्वी में घूमतेहुए उसी तालाब में जल पीकर उसी वृक्षकी छाया में आये २८ तो उदारबुद्धि आत्मदेव तिन शान्त संन्यासीजी को देखकर उठके आदर कर तिनके चरण अपने गुरुजी की नाईं ग्रहण करते भये २९ और उनको बैठाल कर आप भी बैठे फिर सुस्निग्ध मन होकर स्थान में गुरु और शिष्यकी नाईं परस्पर प्रश्न करनेलगे ३० तिस पीछे दया के समुद्र संन्यासी जी श्वास लेतेहुए, दुःखित, आगे स्थित आत्मदेवसे बोले ३१ कि हे द्विजश्रेष्ठ! हे धर्मज्ञ! दुःख देनेके लिये क्या तुम्हारे चिन्ता हृदयमें वर्तमानहै तिस ताप देनेवालीको हम से कहिये ३२ तिस महात्मा सिद्धके ये वचन सुन आत्मदेव अपने दुःखका कारण कहनेलगे ३३ कि हे मुनिजी! पूर्वकर्मसे इकट्ठे किये हुए दुःखको क्याकहें हमारे पितर जलदियेहुए को कुछ गर्म भोजन करते हैं ३४ पितर और देवता हमारी दीहुई बलिको नहीं ग्रहण करते हैं तिस दुःखसे निर्विण्ण होकर प्राण छोड़नेको मैं यहां आया हूं ३५ पुत्र हीन जीनेको धिक्कार, घर, धन और कुलकोभी धिक्कार है जो मैंने गऊ पालीहै वह भी बांझ है ३६ और जो वृक्ष लगाया

है वह भी बांझही है भाग्य और पुत्र रहित मेरे जीनेसे क्याहै ३७ कुमार बोले कि हे नारदमुनि ! आत्मदेव दुःखसे पीड़ित होकर ये वचन कहके ऊंचे स्वरसे रोनेलगे तब तो संन्यासीके चित्तमें बड़ी भारी दयाआई ३८ फिर योगी, बुद्धिमान् आत्मदेव ब्राह्मणके माथे की अक्षरमाला को देखकर विस्तारपूर्वक बोले ३९ कि हे ब्राह्मण मैंने तुम्हारी इस समय में प्रारब्ध देखी है सात जन्मतक पुत्रकी प्राप्ति नहीं दिखाई पड़ती है ४० हे महामति ! पुत्र हेतु आग्रहको छोड़ो कर्म्मकी गति अत्यन्त बलवान् है ज्ञानको प्राप्तहोकर सुखी होवो ४१ इसप्रकार सिद्धका कहा सुनकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, पुत्रकी आशामें बंधेहुए चित्तवाले अत्यन्त दुःखित आत्मदेव सिद्धजी से बोले ४२ कि ज्ञानसे हमारे क्या होगा जबरदस्तीसे पुत्रको दीजिये जो आप पुत्र नहींदेंगे तो शोकसे मूर्च्छित होकर मैं आपके आगेही प्राणों को छोड़दूंगा ४३ यह ब्राह्मणका आग्रह देखकर तपस्वी बोले कि सगर पुत्रके दुःखको प्राप्तहुए अंगप्रजापति ४४ चित्रकेतु ब्रह्माके लेखकेवि- मार्जनसे कष्टको प्राप्तहुए इससे हे धर्म्मज्ञ ! तुमभी जो पुत्रको प्राप्त होगे ४५ तो पुत्रसे सुखी न होगे क्योंकि दैव अत्यन्त बलवान् होताहै साधुओं के सम्मत सिद्धजी ब्राह्मण से यह कहकर ४६ उस पुत्र चाहनेवाले को एक फल देतेभये कि हे ब्राह्मण ! पुत्रकी प्राप्तिकेलिये यह फल मैं तुमको देताहूं ४७ इसको स्त्रीको दीजिये तुम्हारे पुत्र निस्सन्देह होगा और सत्य, शौच, दया, दान और एकबार भोजन ४८ वर्ष पर्य्यन्त स्त्रीको करना चाहिये तिससे शुद्धपुत्र होगा ऐसा कहकर योगीजी चलेगये तब तो ब्राह्मणभी अपने घरको आये ४९ और तिस फल को स्त्री को देकर सिद्धका कहा हुआ सब वृत्तान्त कहा तो उनकी क्रूर स्त्री धुंधुली अपने वचनके स्थापनमें उत्साह वालीने ५० सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनी सखीसे कहा कि जो इस सिद्ध के दियेहुए फलको मैं खाऊंगी ५१ तो मेरे गर्भ रहजावेगा उसको मैं कैसे सहसकूंगी थोड़ा खाना होगा चलने और घरके काममें शक्ति नहीं रहेगी ५२ जो गर्भ तिरछा आगया तो मेरा मरणाही होजायगा और पुत्र उत्पन्न होने में घोर दुःख होते हैं उनको सुकुमारी मैं कैसे स-

दूंगी और मुझ मन्दका सब द्रव्य ननंद सदा उठालेजावेगी ५३ हे पवित्र मुसिक्यानिवाली! मेरे चिन्ता प्राप्तहुई है क्या करूं तब उसके वचन सुन स्नेहके भंगके भयसे ५४ वह स्त्रीभी प्रीतिसे हँसकर बोली कि ऐसाही करो इसप्रकारके कुतर्क के योग से वह फल स्त्री नहीं खाती भई ५५ पतिने पूंछा कि फल तूने खालिया तब स्त्रीने कहा कि खालिया एकसमय में तिस स्त्रीकी बहन अपनी इच्छाही से तिसके घरको आई ५६ तो उसके आगे सब हालकहा कि यह मेरे बड़ी चिन्ताहै क्याकरूं तुम यथोचित कहो ५७ तब उसकी बहन धुंधुलीसे बोली कि मेरे गर्भ है उत्पन्न होनेपर तुमको दूंगी तब तक गर्भवती की नाईं छिपकर घरमें सुखपूर्व्वक स्थितरहो ५८ हे शुभ मुखवाली! तिस बालकको नित्यही तुम्हारे घरही पालन करूंगी परीक्षाके लिये गऊको फल दीजिये ५९ ऐसा कहकर प्रसन्न मन वह स्त्री अपने घरको चलीगई और धुंधुली ने बहनका कहा हुआ सब किया ६० तदनन्तर धुंधुली की बहन बालक उत्पन्न कर अपनी बहन धुंधुली को देगई तब धुंधुली ने अपने पति से कहा कि सुखपूर्वक बालक उत्पन्न होगया ६१ तब तो आत्मदेवजी के पुत्र के उत्पन्न होने से बड़ा सुख हुआ ब्राह्मणों को दान देकर उन्हों ने जातकर्मकिया ६२ और महाबुद्धिमान् ने बहुत आनन्द प्राप्त किया और उनके घरमें गीत और बाजाओंके शब्द और अत्यन्तमंगल हुए ६३ तदनन्तर धुंधुली अपने पतिसे बोली कि हे प्रभुजी हमारे स्तनों में दूध नहीं है शीघ्रके उत्पन्नहुए बालकको कैसे पालनकरूंगी ६४ हमारी बहनके पहले लड़काहोकर मरगयाहै तिसको लाकर घर में रक्षाकीजिये वह बालकको पालनकरदेगी ६५ ये धुंधुली के वचन सुनकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, श्रान्त, आनन्दयुक्त आत्मदेवजी तैसाही करदेते भये ६६ फिर धुंधुली ने अपने पुत्रका यथार्थ से धुंधुकारी नाम रक्खा यह बालक नित्यही मौसीके दूधसे पुष्ट होनेलगा ६७ तीन महीनेके पीछे गऊने बालकको उत्पन्न किया जोकि सब अंगों से सुन्दर, दिव्य, निर्मल और सोनेकीसी दीप्तिवालाथा ६८ तिस बालकको देखकर प्रसन्न होकर आत्मदेव ब्राह्मण आपही संस्कार

करतेभये और सब मनुष्य अत्यन्त विस्मित होकर तिस बालक के देखनेके लिये आतेभये ६९ और यह कहतेभये कि आत्मदेव ब्राह्मण की महाभाग्यके उदय से गऊने अति कौतुक के साथ देवरूप बालकको उत्पन्न कियाहै ७० विधिके योगसे किसीने इसरहस्यको नहीं जाना गऊके समान कान उत्पन्न होनेके कारण से गोकर्ण ऐसा नाम धरागया ७१ कुछ कालमें गोकर्ण और धुंधकारी दोनों जवान होगये उनमें गोकर्ण तो पण्डित और ज्ञानीहुए और धुंधकारी महादुष्ट ७२ स्नान और पवित्रताकी क्रियासे हीन,भक्ष्य और अभक्ष्य का भोजन करनेवाला, क्रोधसे युक्त, चोर, सबजनों का वैरी, दुष्ट चाण्डालों के साथ रहनेवाला था ७३ यह खेलतेहुए बालकोंको जबर्दस्तीसे पकड़कर कुंयेमें गिरा देताथा और इसने वेश्याके प्रसंग से पिताकी द्रव्यको नाश करदिया ७४ तो उसका पिता द्रव्यरहित होकर कृपणकी नाईं रोतेहुए बोला कि विना पुत्र के नित्यही सुखी रहताथा कुपुत्र दुःख देनेवालाहुआ ७५ सिद्धजी ने सत्य वचन कहेथे वे इससमय में मैंने अनुभूत किये कहां जाऊं कहां टिकूं मेरे दुःखको कौन निवारण करेगा ७६ जल वा आगमें मैं प्राणोंको त्याग करूंगा इसप्रकार नीचेका मुखकर चिन्ता करतेही थे कि उनकेपास ज्ञानीगोकर्ण आगये और पिताको तत्त्वसे समझातेहुए बोले कि हे पिताजी! संसार दुःख और मोहका देनेवाला, साररहित है ७७। ७८ कौन पुत्र, धन, स्त्री, पति और पिताहै मोह से बँधाहुआ, दीनात्मा मनुष्य क्लेश पाताहै औरप्रकारसे नहीं क्लेश पाताहै ७९ इन्द्र और चक्रवर्त्ती राजाको भी कुछ सुख नहीं है विरक्त, एकान्त में रहनेवाले मुनिको सुखहै ८० पुत्ररूप अज्ञान और नरकके कारण मोहको छोड़ो निर्द्वन्द्व और अभिमान रहित होकर सब छोड़कर वनको जावो ८१ तब गोकर्णके ये वचन सुनकर आत्मदेव ब्राह्मण उनसे बोले कि हे साधो ! जो वनमें करना चाहिये तिसको हमसे विस्तार से कहिये ८२ हे दयानिधे ! मोहकी फँसरी में बँधेहुए, शठ, कृपण मनयुक्त, संसाररूपी गढ़ेमें गिरेहुए हमको उद्धार कीजिये ८३ पिताके इसप्रकारके वचनसुन ज्ञानमें

प्रसन्नमन, गोकर्णदीन, निर्विघ्न अपने पितासे बोले ८४ कि मांस, हाड़ और रक्तके समूह अपने इस शरीर में जल्द स्वत्व छोड़ो स्त्री और पुत्र आदिमें ममता छोड़ो, निरन्तर इससंसारको क्षणमात्रमें नष्टहुआदेखो और ज्ञानी विरागमें रसिक और भक्तिमें निष्ठा करने वालेहोवो ८५ निरन्तर धर्म्मको सेवो लोकधर्म्मोंको छोड़ो साधु पुरुषोंको सेवो काम तृष्णाको छोड़ो औरके दोष गुण चिन्तनको जल्द छोड़कर निरन्तर विष्णुजीके कथारसको पियो ८६ कुमारबोले कि इसप्रकार गोकर्ण पुत्रके कहे से विदित अनुभव, चेष्टारहित आत्मदेवजी स्थिरमति, साठवर्ष की अवस्थावाले नित्यही भगवान्के प्यारेजनोंके पीछे चलनेवाले, महात्मा, वनमें स्थितहोकर भगवान् के दुःखसे प्राप्तहोनेवाले पदको प्राप्तहोते भये ८७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेश्रीभागवत माहात्म्येरामविहारीसुकुलकृतभाषाटीकायांविप्रमोक्षोनामषण्णत्र्यधिकशततमोऽध्यायः १९६॥

एकसौसत्तानबेका अध्याय॥

श्रीभागवत माहात्म्यमें गोकर्ण वर्णन॥

कुमार बोले कि हे नारद! पिताके इसप्रकार वनमें प्राप्तहोनेके पीछे धुंधुकारी महादुष्ट आकर माताको डाटनेलगा १ कि द्रव्य कहां है हमसे बतला जो नहीं बतलावेगी तो तुझको मारडालूंगा २ तब तो धुंधुली तिसके वचनसे डरकर दुःखित मनहोकर रात्रि में कुयें में गिरकर मरगई उसको मनुष्योंने जानकर कुंयेसे बाहर निकाल दिया ३ फिर गोकर्णने उसकी जातिके बान्धव ब्राह्मणों से उसका दाह कर्म्मादि कराया और समान दुःख सुखवाले बुद्धिमान् आप तीर्थयात्राको चलेगये ४ और धुंधुकारी अपने घरमें रहकर वेश्याओं समेत बड़े घोर कर्माचारसे वेश्याओंके पालनकरनेमें मूढ़ बुद्धिरहा ५ फिर गहनेकी इच्छाकर वेश्या धुंधुकारीसे बोलीं कि भोभोप्रिय! हमसब आप स्वामी करके एकजगह में प्राप्तकीगई हैं ६ हे मानके देनेवाले यहांपर कोई दूसरा धनका देनेवाला नहीं है तिससे सूक्ष्म

कपड़े और प्रकाशित गहने ७ हम लोगोंको दीजिये नहीं तो आ-
पके पाससे दूसरे मनुष्यके पास चलीजावेंगी ये वेश्याओंके वचन
सुनकर धुंधुकारी क्षणमात्र चिन्तनाकर ८ कामसे अंध होकर मृत्यु
का स्मरण न कर रात्रि में अपने घरसे निकलकर किसी के घरसे
कपड़े और गहने चुराकर ९ आनन्द समेत वेश्याओंकी प्रसन्नता
के लिये लाकर उनको देताभया तब तो वेश्या अमूल्य कपड़े और
गहने देखकर १० परस्पर चिन्तनाकर सलाह करतीभईं कि इस
ने चोरीसे ये कपड़े और गहने लाकर दिये हैं ११ और नित्यही
चोरी करनेवाला है इसको राजा पकड़कर द्रव्य छीनकर निश्चय
मारडालेंगे १२ इससे एकान्तमें हम लोग इसचोरी करनेवाले को
मारकर बहुत द्रव्य लेकर और जगह क्यों न जावें १३ इसप्रकार
क्रूर हृदयवाली वेश्या तिसीसमय में सोतेहुए धुंधुकारी को तीक्ष्ण
फँसरियों से गला फाँसकर मारने को उद्यतहुईं १४ जब वारंवार
गला फाँसनेसे वह न मरा तब तो बहुतसे अंगार जलतेहुए उसके
मुखमें छोड़तीभईं १५ तो आगकी ज्वालाके अति दुःखसे व्याकुल
होकर वह मरगया फिर वे साहसिक स्त्रियां उसकी देहको गड्ढे में
फेंकदेती भईं १६ हे मुनि श्रेष्ठ! इसचरित्रको किसी ने नहीं जाना
जब मनुष्य वेश्याओंसे धुंधुकारीको पूंछतेथे तब वे यह कहती थीं
कि हमारा पति दूर चलागयाहै १७ धन लेकर बहुतकालमें आवेगा
इससे श्रेष्ठ विद्वानोंकरके स्त्रियोंका विश्वास नहींकरना योग्यहै १८
वे विश्वास करनेवालेको सर्वथा मारती हैं और नयेनयेको चाहती हैं
जिनके कामियोंके रसके बढ़ानेवाले अमृतसमान वचन होते हैं १९
और हृदय छूरेकी धाराके तुल्यहोताहै स्त्रियों के कोई प्यारा नहीं हो
ताहै तदनन्तर वे वेश्या बहुत द्रव्यलेकर २० राजाके भयसे अत्यन्त
विह्वल होकर और गांवको चलीगईं और कुकर्मी धुन्धुकारी महाप्रेत
हुआ २१ पवनका रूप धरकर दुर्मृत्युसे नित्यही दिशाओं में घूम
कर जाड़ा और घामके क्लेशसहता भूंख और प्याससे व्याकुल हो-
ताथा २२ और हाहा यह शब्द वारंवार कहताहुआ कहीं सुखको
न प्राप्त होता था कुछ कालमें धुन्धुकारी को मृतक समझकर २३

गोकर्ण तीर्थयात्रा में गया श्राद्ध करदेते भये फिर तीर्थयात्रा को समाप्तकर अपने पुरमें आये २४ तो पुरवासी और स्वजन बांधवों ने बड़ा सत्कारकिया तब तो गोकर्णजी अपने घरमें कुछ दिनबसे २५ एक रात्रिमें मकानके आंगनमें सोतेहुए जानकर महादुष्ट धुन्धुकारी घोररूप दिखलाताभया २६ क्षणमें हाथी, ऊंट, भैंसा, अग्नि, सांप होगया और क्षणमात्रही में पुरुष होगया २७ यह विपरीत भाव देखकर धैर्यसंयुक्त, बुद्धिमान् गोकर्ण चिन्तनाकर यह क्याहै इसप्रकार विस्मित हुए बोले २८ कि यह दुर्गतिको प्राप्त कौन अधम पुरुष है यह मनमें निश्चयकर दयायुक्त गोकर्ण तिससे बोले २९ कि अत्यन्त घोर तू कौनहै रात्रिमें डरवानेके लिये हमारे पास आयाहै प्रेत वा पिशाचहै और कैसे इस दशाको प्राप्त हुआहै ३० हे महाभाग ! तू सबहाल कह घोररूपहोकर जिससे रात्रिमें हमारे पास आयाहै इससे इससमयमें हमको तुम्हारा क्या कार्य्य करना है ३१ ये भाई के वचन सुन प्रेतभावमें प्राप्त महा दुष्ट धुन्धुकारी व्याकुल होकर वारंवार रोने लगे ३२ प्रेतभावसे विमोहित होकर वाणीसे कहनेको न समर्थ हुए संज्ञासे प्यासयुक्त होकर जल पीने को जनातेभये ३३ तदनन्तर महाभाग, साधुओंके सम्मत गोकर्ण जी अपनी अंजलीमें जललेकर तिसको देतेभये ३४ भाई महात्मा गोकर्णका दियाहुआ जल धुन्धुकारी प्रेतकी तृप्तिके लिये उपस्थित हुआ ३५ तदनन्तर पुण्यात्मा भाई गोकर्ण के दियेहुए जलसे ज्ञान प्राप्त होकर प्रेत बोला ३६ कि मैं धुन्धुकारी नामक तुम्हारा भाई हूं अपने कर्म्म दोषसे प्रेत हुआहूं ३७ माता को मैंने बहुत दुःख दियाथा इससे वह कुँयें में गिरकर मरगई थी तिस पीछे वेश्याओं के पालन करने में उत्साहयुक्त होकर द्रव्यके हेतु ३८ धनके लोभ से चोरी आदिक निषिद्ध कर्म्म मैंने किये थे एकसमयमें वेश्याओं ने गहने और उत्तम कपड़े मांगेथे ३९ तब मैं धनी मनुष्योंके घर से रात्रिमें चोरीसे लाकर देताभयाथा तदनन्तर वेश्या धनके लोभ से जबर्दस्तीसे सोतेमें मेरे गलेमें फँसरी बांधके ४० अंगार मुँहमें छोड़कर मुझको मारडालती भई और मेरे बहुत धनको ग्रहणकर

सब राजाकेडरसे ४१ इसपुरसे निकल जातीभई यह अपने स्वार्थ के लिये मित्रको भी नाश करदेती हैं इससे हे भाई! मैं प्रेतभाव को प्राप्तहुआहूं आपने इससमय में जलसे ४२ सींचदिया है अत्यन्त पुण्यकारी और दयालु आपके सींचतेही मैं संज्ञा को प्राप्त होगयाहूं पवनके भोजनसे मैं जीताहूं अब भाग्यसे इष्टफलका उदय हुआहै ४३ भाई आपको अपने घरके आंगनमें सोते देखकर और आपको न जानकर धर्षणकेलिये मैं उद्यम करताभया ४४ हे साधो! हे दीनबन्धो! हे दयासिन्धो! हे भाई! सहसाहीसे आपने मुझे जानलिया इससे जल्द मुझको इसप्रेतभावसे छुटाइये आप निस्सन्देह कृतार्थ हैं ये भाईके वचनसुन ज्ञानवान् और बुद्धिमान् गोकर्णजी ४५। ४६ खिन्न आत्मा होकर दुःखित धुंधुकारी भाई से बोले कि तुमको मैंने मनुष्यों के मुखसे मृतक हुआ सुनकर गयाजी में पिण्ड दिया था तुम प्रेत कैसे होगये गयाजी में पिण्ड के देने से दुर्गति भी शुभ गतिको ४७। ४८ निस्सन्देह प्राप्त होताहै तुम कैसे स्वर्ग को नहीं गये हो भाई गोकर्ण महात्मा के ये वचन सुन ४९ दुःखित आत्मा, आगे स्थित धुंधुकारी बोला कि सौगया के श्राद्धसे भी मेरी मुक्ति न होगी ५० हमारे उद्धारके लिये आपको दूसरा उपाय चिन्तना करने योग्य है ये तिसके वचन सुन गोकर्ण विस्मय को प्राप्त होकर ५१ बोले कि श्राद्धों से मुक्ति नहीं है तो तुम्हारी असाध्य गति है हे प्रेत! इस समय में तुम निर्भय होकर अपने स्थान में जावो ५२ विचार कर मैं तुम्हारी मुक्तिका उपाय करूंगा गोकर्ण के ये वचन सुनकर धुन्धुकारी श्मशान में स्थित कलिद्रुम नाम अपने स्थान को जाताभया और गोकर्ण शेष रात्रिमें चिन्तनाकर ५३। ५४ तिसकी मुक्ति का उपाय न प्राप्त करसके तो सवेरे अपनी जाति और कुल बांधवों में से ५५ धर्मशास्त्र के जानने वाले ब्राह्मणों से रात्रिका वृत्तान्त कहते भये तब वे ब्राह्मण शास्त्रों में बहुत विचार कर ५६ जब उपाय न जानसकेभये तब तो सब सूर्यकी स्तुति करनेलगे कि हे भास्कर, आदित्य, अंधकारके नाशकरनेवाले, किरणों से युक्त ५७ लोकों के साक्षी, संसारके धाम देवता और असुरोंसे

नमस्कार कियेगये बारह आत्मावाले हरि नाम घोड़ेवाले भास्वान्, लोकोंके प्रबोध करनेवाले ५८ आप धर्म शील सब लोकों की निरंतरगति हैं ब्रह्माहोकर सृष्टि रचते हरि होकर रक्षाकरते व महादेव होकर विनाश करते हैं ५९ हे विभो ! आपको छोड़कर इस संसार में प्राणियों को शरण कोई नहीं है आप शर्व पृथ्वीरूप जलरूप धारण करनेवाले भव, ६० अग्निरूप, रुद्र, उग्ररूप धारण करनेवाले वायु, भीम, आकाश देह, यज्वा, पशुपति, ६१ महादेव, सोममूर्ति ईशान, और सूर्य्य हैं आपकी दिव्य आठ मूर्ति वेद आदियों करके पूजीजाती हैं ६२ सब कामकी समृद्धि के लिये व्याप्त तीनों लोक के वेदके धारण करनेवाले मत्स्यरूप हैं, पहाड़के धारण करनेवाले श्रेष्ठ कच्छपरूप हैं ६३ पृथ्वी के धारण करनेवाले शूकर रूपहैं, संसार के धारण करनेवाले बामनरूप हैं, क्षत्रियों के नाशनेवाले परशुराम रूपहैं, रावण के नाश करनेवाले रामचन्द्ररूप हैं ६४ पृथ्वी के भारके नाश करनेवाले कृष्णरूप हैं, असुरों के मोह करनेवाले बुद्धरूपहैं, म्लेच्छों के नाश करनेवाले कल्कीरूप हैं, धर्मकी ग्लानि में युग युगमें ६५ देवता,असुर, मनुष्य, पशु,पक्षी, और जलचारी अनेकप्रकार के जीवों के ब्रह्मारूप धारण कर रचनेवाले हैं ६६ हे गोसमूहों के ईश्वर ! आप इन्द्र, धर्मराज, वरुण और कुबेरहैं लोकपालों के स्वरूपसे वर्तमान हैं ६७ त्रयीमूर्ति, त्रिकालज्य, त्रिधामा और त्रिगुणात्मक आपही लोकोंसे पूजेजाते हैं तीन प्रकारसे भिन्न दिवाकर आपहैं ६८ हे जगत्के पति ! पद्मप्रबोधन करनेवाले आपहीं हैं हे मुनीश्वर ! इसप्रकार श्रेष्ठ ब्राह्मण स्तुति कर जब तक स्थित होगये ६९ तब तक श्रीसूर्यजी आकाशसे ब्राह्मणों के सुनते ही सुनते स्फुट बोले कि भो श्रेष्ठ ब्राह्मणो ! मैं वर्णन करता हूं सुनिये ७० आपलोगों करके धुंधुकारी के महापापकी शांति के लिये आत्मदेवजी के पुण्यसे गोकर्ण हैं ७१ श्रीभागवत का सप्ताह धुंधुकारी का उद्धार करेगा और जो आप लोगों ने हमारे वैभव का वर्णन करनेवाला स्तोत्र कियाहै ७२ तिससे स्तुतिकर मनुष्य विमानको प्राप्त होगा पुत्र, धन, धर्म और मोक्ष के चाहनेवाले ७३

वाञ्छा चिन्तामणि स्तोत्र को पढ़कर इनकी अत्यन्तता को प्राप्त होते हैं ऐसा कहकर आकाश में स्थित सूर्यदेवजी चुप होरहे ७४ और प्रसन्नमन वे ब्राह्मण गोकर्णजी से सब वृत्तान्त कहतेभये त-दनन्तर तुंगभद्रा नदीके शुभ किनारे ब्राह्मणोंकी समाजमें ७५ सु-न्दर बहुतभारी कौतुक देखनेकेलिये नगरकी प्रजा आतीभई तत्त्व अर्थके जाननेवाले वक्ता गोकर्णजी होकर आसनपर बैठे ७६ और नारायण आदिक देवोंके नमस्कारकर सप्ताहका प्रारम्भ करतेहुये बोले कि श्रीहरिजीके वचनरूप शास्त्र, चरण कमलसे उत्पन्न तीर्थ रूप ७७ जो सत्यहै तो धुंधकारी गतिको प्राप्त होजावें इसप्रकार मनसे श्रीमद्भागवत नामका संकल्पकर ७८ "जन्माद्यस्ययतः" यहां से लेकर "धीमहि" के अन्ततक अर्थात् पहला श्लोक पूरा पढ़चुके हैं कि तिसीसमय में धुंधुकारी प्रेत आकर इधर उधर जगह बैठनेकी ढूंढ़कर ७९ सातगांठसे युक्त बांसमें पवनका रूप धारणकर प्रवेश करगया और श्रेष्ठ वैष्णव ब्राह्मणोंके सुनतेहुए ८० प्रतिदिन उसी बांसकी गांठके छिद्रमें स्थित होकर आपभी सुनने लगा जब पहले दिन कथा बन्दहुई ८१ तब बांसकी एक गांठफटगई यह अत्यंत-ही अद्भुतहुआ दूसरे दिनसे दूसरी गांठफटी इसप्रकार एक एक गांठ फटतीरही ८२ सातवीं गांठके भिन्न होनेमें धुंधुकारी शीघ्रही प्रेतभाव को छोड़कर सुन्दररूप धारणकर तुलसीदामसे शोभित ८३ पीताम्बर धारणकर मेघोंके समान श्यामवर्ण और भूषणों से युक्त होकर प्रकाशित होगया और सम्पूर्ण तत्त्वदृष्टि होकर गो-कर्ण भाई के नमस्कार कर बोला ८४ कि हेभाई! आपने दयाकर प्रेतके कष्टसे हमको छुटादिया भागवतकी वार्ता धन्यहै और प्रेत भावको छुड़ानेवाली है ८५ तैसेही विष्णुलोककी गतिका देनेवाला सप्ताह भी धन्यहै जिसके प्रभावसे प्रेतभाव से अत्यन्त व्याकुल मैं विमुक्त होगया ८६ गीले, सूखे, लघु, स्थूलवाणी, मन और कर्मों से कियेहुए पापको सप्ताह इसप्रकार भस्म करता है जैसे अग्नि इंधनको भस्मकर डालताहै ८७ इस देवताओंके इच्छा करनेवाले भारतवर्ष में भगवत् शास्त्रके सुननेवालों की अत्युत्तम गति होती

है ८८ नस, हाड़, मज्जा, मांस और रक्तका समूह देह कहाता है पवित्र भागवत के स्वादसे अपवित्र और प्रकार मत है ८९ कर्म्म की मूर्च्छासे दुष्टहुआ देह नरकका बर्तनहै इससे दोषकी निवृत्तिके लिये यही साधन है ९० भगवान् के शास्त्रसे वर्जित जल में बुल्ले और जन्तुओं में मसाकी नाईं मरणही के लिये उत्पन्न होते हैं ९१ हे ब्राह्मणो! भागवतके सुननेमें हृदयकी गांठ कटजातीहै सब संदेह दूर होजाते हैं और उसके कर्म्म क्षीण होजाते हैं ९२ इसप्रकार तिसके कहतेही कहते वैकुण्ठ से श्रेष्ठ विमान आगया धुंधुकारी तिसपर चढ़कर विष्णु मन्दिर को चलेगये ९३ इनके विष्णुलोक जानेमें सब उत्तम ब्राह्मण विस्मित मन होकर गोकर्णजी से पूंछने लगे ९४ कि हे महाभाग! हम सबलोगोंने मिलकर भागवत सुनी है परन्तु क्या कारणहै कि आपका भाईही अकेला भगवान् के पास पहुंचगया ९५ तब गोकर्णजी बोले कि भाईकी सद्गति में कारण कहताहूं सुनिये जिसको सुनकर आपलोग भी गोलोकको जावोगे ९६ व्रतमें परायण, कृष्णजी का नाम बुद्धिमें रहनेवालों करके सप्ताह का श्रवण योग्य है यह गोलोक की गति देनेवाला है ९७ हे ब्राह्मणो! निरन्तर एकाग्र चित्त होकर कृष्ण के प्रेमरूप अमृत के देनेवाले श्रीमद्भागवत के सप्ताह को फिर सुनो ९८ ये गोकर्ण के वचन सुनकर उत्तम ब्राह्मण फिर भागवतके सप्ताह सुननेको बसते भये ९९ और कृष्णजीमें एकतान बुद्धिलगाकर नियमसे श्रीमद्भागवतको फिर सुनतेभये १०० कथाके अंतमें हे मुनि श्रेष्ठ! भगवान् कमलसमान नेत्रवाले शंख, चक्र, गदा और कमलके धारण करने वाले प्रकटहोगये १०१ जोकि मुकुट और कुण्डलके धारण करने वाले, वनके पुष्पों का माला धारण करनेहारे, विभूषित, पीताम्बर धारण करनेवाले, मेघों के समान श्यामवर्ण, पहुँची और बहूटासे भूषितथे १०२ पार्षदोंमें श्रेष्ठ विष्वक्सेन आदिकोंसेयुक्त भगवान् को देखकर सब मिलकर ब्राह्मण पृथ्वी में प्रणाम करतेभये १०३ हे नारद! तिससमयमें सबओर जय और नमः यह शब्द होनेलगा तदनन्तर हरिजी ब्राह्मणोंको प्रसन्न करतेहुए शंखका शब्द करते

भये १०४ और तिससमयमें श्रेष्ठ पार्षदों से युक्त अनेक विमान वैकुण्ठसे ब्राह्मणों के देखतेही देखते प्राप्त होगये १०५ भगवान् गोकर्णको आलिंगनकर अपनी सारूप्य देतेभये तथा और श्रोता मेघसम श्यामवर्ण, पीले रेशमी कपड़े धारण किये १०६ मुकुट, कुण्डल, हार और वनमालाभी धारण कियेहुओंको भी सारूप्य देते भये तिससमय में तहांपर बड़ा आश्चर्य्य होताभया १०७ तिस गांवमें जे चाण्डाल मनुष्यथे वेभी कृष्णजीकी आज्ञासे विमानोंपर चढ़कर स्वर्ग्ग को जाते भये १०८ गोप और गोपीजनों के प्रिय कृष्णजी गोकर्ण सहित सबलोकोंके ऊपर स्थित गोलोकको प्राप्त होगये जहांपर सौ कँगूड़ोंसे आच्छादित सुन्दर वृन्दावन है १०९ तिसके बाहर चारोंओर विजयासेयुक्त अत्यन्त अद्भुत वन शोभित है जहांपर बहुतसे मण्डप, अच्छोद, बावली और कुण्डहैं, कामधेनु गौवें कल्पवृक्षों की छायामें बैठीहुई हैं तहांपर क्रीड़ामें तत्पर मन वाले गोपोंसे युक्त श्रीकृष्णजी क्रीड़ा करते हैं ११० और इस सुन्दर वनके बीचमें कृष्णजीकी इच्छासे सुन्दर रत्नसमूहोंसे जड़ित रकबा रचाहुआ प्रकाशित होरहाहै और बरगदका वृक्ष बड़ाभारी है जिसके सब दिशाओं में गोपियां बैठीहुई हैं और वस्त्रों से अलंकृतहै ऐसा अद्भुत आकारवाला बड़ाभारी श्रीगोकुल प्रकाशित होरहाहै १११ तिसके बीचमें कृष्णजीका स्थान अत्यन्त प्रकाशित शोभित होरहा है जिसमें राधाजी से आराधित नंदरानीजी प्रसन्नतायुक्तहैं जिनकी भाग्य महादेव इत्यादिकों से चिन्तनीयहै तहां पर मधुर आकृतिवाले कृष्णजीका अण्डसमूहोंसे प्रकाशित किरणों करके स्थान प्रकाशित होरहाहै ११२ पवन, जल और पत्तोंका भोजनकर देह सुखानेवालों करके, घोरतपस्या जप और यज्ञकर्मोंसे जो असाध्यलोकहै तिसको गोकर्णजी सप्ताहरूपी यज्ञके प्रवर्तन से प्राप्त होतेभये ११३ इस पुण्यकारी इतिहासको जो पढ़ता वा सुनता है सोभी गोलोकको प्राप्त होताहै फिर भागवतका तो क्या कहनाहै इसका पढ़ने और सुननेवाला तो गोलोकको प्राप्तही होगा ११४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपण्डितरामविहारिसुकुलकृतभाषाटीकायांगोकर्णवर्णनन्नामसप्तनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १६७ ॥

एकसौ अट्ठानवेका अध्याय॥

श्रीमद्भागवतमाहात्म्यमें सुननेकी विधिका वर्णन॥

कुमारबोले कि हे नारदमुनि! सप्ताह सुनने में विधि तुमसे कहताहूं जिससे कृष्णमेंअर्पित आत्मावाले पुरुषोंका भागवत सिद्धि को प्राप्तहो १ पहले भक्तिमान् मनुष्य शास्त्रमें कुशल ज्योतिषीको बुलाके धन और कपड़ों से पूजनकर मुहूर्त पूछै २ ज्योतिषी जिस मुहूर्तको बतावे उसी में आरम्भ श्रेष्ठहै श्रावण,भादों,कुँवार,कार्तिक ज्येष्ठ, और आषाढ़ ३ महीने कथाके आरम्भमें श्रेष्ठहैं पञ्चमी,दशमी और पूर्णमासी ये तिथियां शुभ हैं मंगल और शनैश्चर के दिन वर्जितहैं उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा ये नक्षत्र शुभहैं ४ शुभयोग और शुभलग्न में सदैव प्रारम्भ श्रेष्ठहै पुराणोंकी नित्यकी कथामें ५ बुद्धिमान् मनुष्य सूतजीके सूतककी उत्पत्तिसे द्वादशीको वर्जितकरै श्रीमद्भागवतके सप्ताहमें ६ निषेध द्वादशी का पूर्व के आचार्य्य लोग नहीं कहते हैं पण्डितों ने श्रीभागवत सप्ताह महायज्ञ कहाहै ७ इससे चारोंओर वैष्णवोंका निमन्त्रण करना चाहिये कि हे उत्तम वैष्णवो! सप्ताहमें सज्जनोंका समाज होगा ८ इससे सुननेकी इच्छा करनेवाले आपलोगोंको आना चाहिये फिर आयेहुए तिनलोगोंका निवास परिकल्पित करै ९ तीर्थ वा वन वा गांवमें यत्नसे संशोधित पृथ्वी में मण्डप रचै १० केलेके खम्भसे संयुक्त चारों दिशाओं में ध्वजाओंसे युक्तकरै और तिसके आगे ऊंचाआसन कथा बांचनेवाले का कहाहै ११ और दोनों किनारे सुननेवालोंके आसन कहेहैं इस समाजमें जाननेवालों में श्रेष्ठ वक्ता उत्तरमुखहोवे १२ यह वेद शास्त्र के अर्थका तत्त्व जाननेवाला, वैष्णव, ब्राह्मणों में उत्तम, दृष्टान्त में कुशल, धीर और निस्पृहहो १३ सब सन्देहों का हरनेवाला वक्ता करना चाहिये वक्ताके समीपमें सहायताके लिये और बुद्धिमान् पंडित स्थापन करना चाहिये १४ जोकि श्रोताओं के संशयका दूर करने वाला और नहीं जाननेवालोंके बोधका देनेवालाहो कथाके विघ्न

नाशनेके लिये पहले गणेशजी को पूजन करै १५ तदनन्तर दुर्गा, महादेव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य्य और ब्राह्मणोंको विधिपूर्व्वक पूजनकर भक्ति से देवता और पितरों को तर्प्पण करै १६ तदनन्तर मुख्य श्रोता पुस्तकमें भगवान्का पूजनकर द्रव्य कपड़े और फल हाथ में धरकर प्रदक्षिणाकर पुस्तकमें स्थित भगवान् की प्रार्त्थना करै कि हे भागवत! आप इस संसार में कृष्णरूप स्थितहौ १७।१८ हे नाथ! मुझकरके भवसागरमें मुक्तिके लिये आप समाश्रित हैं हमारा मनोरथ सर्व्वथा आप सफल १९ निर्विघ्न होकर कीजिये हे केशव! मैं आपका दासहूं यह उच्चारणकर पुस्तकके आगे द्रव्य समर्प्पणकर २० हाथ जोड़कर नमस्कारकर वक्ताकी प्रार्त्थना करै कि हे शुकदेवजीके रूप! हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! हे सब शास्त्रमें चतुर! २१ श्रीभागवतके व्याख्यानसे हमारे अज्ञानको नाश कीजिये इस प्रकार वक्ताकी प्रार्त्थनाकर पांच पण्डितों को द्वादशाक्षर मन्त्र के जपके लिये वरणकरै और गीत और बाजाकी विधिके जाननेवालों को द्रव्य और कपड़े आदिकोंसे पूजनकर २२।२३ कीर्तनकेलिये बैठावे और कथाके अन्तमें विधिपूर्व्वक कीर्तन करावे जो मनुष्य स्त्री, धन, घर और पुत्रकी चिन्ताको छोड़कर २४ एकचित्त होकर सुनताहै वह सम्पूर्ण फलको प्राप्त होताहै सूर्य्योदयसे लेकर साढ़े तीनपहर २५ वाक्य वा अध्याय पढ़कर वक्ताको अर्त्थ करना चाहिये दोपहरमें दोघड़ी बन्द करदेना योग्यहै २६ कथाके अन्त में भगवान्का कीर्तन करना चाहिये और तिस फलकी इच्छा करने वाले श्रोताओंको व्रत करना योग्यहै २७ व्रत करने में जो अशक्त श्रोताहो तो थोड़ा हविष्यान्न खावे जल, फल, दूध वा घीहीसे २८ केवल देहका धारण करना चाहिये हे नारदजी! सप्ताहके व्रत करने वाले पुरुषों के नियम सुनिये २९ विष्णु दीक्षासे हीन मनुष्यों का इसमें अधिकार नहीं कहाहै ब्रह्मचर्य्य रहे पृथ्वीमें सोवे पत्तल में भोजन करे ३० यह सप्ताह में नित्यहीकरे द्विदल, मधु, तैल, पराया अन्न, ऊंखका रस ३१ भावदुष्ट, क्रियादुष्ट और बासी अन्नको छोड़ देवे प्यास, लहसुन, हींग, मूली, गाजर ३२ नारीका साग और कु-

म्हड़ेको कथाका व्रत करनेवाला नहीं खावे काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, मात्सर्य्य ३३ मोह,द्वेष और हिंसा को नहीं करे ३४ वेद, वैष्णव,ब्राह्मण,गुरु, गऊ,व्रत करनेवाले, स्त्री, राजा और महात्माओं की निन्दाको छोड़देवे ३५ सत्य,शौच,दया,मौन,कोमलता, नम्रता और मनकी प्रसन्नताको बुद्धिमान् कथाका व्रत करनेवालाकरै ३६ लक्ष्मीकी कामना करनेवाला,पुत्र,जय और मोक्ष चाहनेवाला भागवतको सुनै निष्काम मनुष्य श्रीहरिजीको प्राप्त होताहै ३७ कथाके समाप्तिमें सातवें दिनमें लंघनकरै गऊ, पृथ्वी, सोना और कपड़ा आदिकों से वक्ताकी पूजा करनी चाहिये ३८ प्रसाद और तुलसी की माला श्रोताओंकोदेवे और गीत और बाजामें निपुण मनुष्यों करके उत्सव करना योग्यहै ३९ गीता केलिये चतुर मनुष्य दूसरे दिन सुनै और यथाविधि गायत्री से प्रति श्लोकका हवनकरै ४० खीर, मधु, घी, तिल, चावल, यव, शक्कर, प्रियाल, दाख, ताम,खजूर ४१ कमल, कपूर, चन्दन,अगुरु, गूगल,लवंग और बेलपत्र ये हज़ारों अलग अलग लेकर हवनकरै ४२ विघ्नके नाशकेलिये न्यूनाधिक्यकी निवृत्ति केलिये और आत्माकी पवित्रताके अर्थ सहस्र नाम पढ़ै ४३ बारह वा अठारह वा अधिक ब्राह्मणोंको श्रद्धा से खीरसे भोजन करावै सोना, गऊ और दक्षिणादेवे ४४ वा व्रत की सिद्धिकेलिये भादोंकी पूर्णमासीमें सोनेका सिंहासन बनवाकर उसकी पीठपर श्रीमद्भागवतको धरकर मुखमें लिखाकर ब्राह्मणको देदेवे इस विधानके करने से सब पाप नाश होजाते हैं ४५। ४६ और श्रोताको श्रीमद्भागवत का सुनना सुन्दर फल देनेवाला होता है धर्म, काम,अर्थ और मोक्षोंका साधन भक्ति देनेहारा होताहै ४७ कोई कार्य संसार में ऐसा नहीं है जो इससे नहीं सिद्ध होताहै संसारमें सब पुराणोंसे अधिक भागवत कहाहै ४८ अठारह दोषोंसे छूटाहुआ वक्ता कहाहै और बत्तीस अपराधों से छूटाहुआ श्रोता कहाहै ४९ श्रीमद्भागवत नाम पुराण मनुष्योंको कामना देनेवाला है तिसपर भी इस निष्कामका सुनना भक्तिका देनेहाराहै ५० श्रीमद्भागवतरूपी कल्पवृक्ष सबके ऊपर वर्त्तमानहै ओंकार तो अंकुर

है सज्जनों से उत्पत्ति है बारह स्कन्ध कांधे हैं, प्रकाशित भक्तिही थाल्हाहै तीनसौ बत्तीस अध्याय प्रकाशित डालें हैं अठारह हज़ार श्लोक पत्ते हैं यह पुराण इष्टका देनेवाला और सुलभ है ५१ यह सब ईप्सित कियाहुआ तुमसे कहा यह ज्ञान वैराग्य और भक्तिको तरुणता देनेवाला और मनुष्योंको मोक्षदेनेहाराहै ५२ सूतजीबोले कि हे शौनकादिको ! ऐसा कहकर कृष्णजी के चरणों के अमृत में डूबेहुए, भगवद्भक्त, दीनोंके उद्धार करनेमें तत्पर कुमार चुप होगये ५३ तिनके वचन सुन भगवान् के प्यारे नारदजी हाथ जोड़कर प्रेमसे गद्गदवाणी से तिनसे बोले ५४ कि दयामें परायण आपलोगों से हम धन्य और कृपायुक्त कियेगये हैं जो भागवत के सप्ताह से भगवान् समीपही दिखला दियेगये हैं ५५ इसप्रकार वैष्णवोत्तम नारदजी के कहतेही कहते घूमतेहुए योगेश्वर शुकदेवजी तहांपर कथाके अन्तमें प्राप्त होगये जिनकी सोलह वर्षकी उमर, कमलके समान नेत्र, व्यासजी के पुत्र, ज्ञानरूपी समुद्र के चन्द्रमा, अपने लाभसे प्रसन्न और मनसे निरन्तर भागवतको पढ़रहेहैं ५६।५७ सभावाले बड़े तेजस्वी शुकदेवजीको देखकर शीघ्रही उठकर श्रेष्ठ आसन देतेभये जब शुकदेवजी सुखपूर्वक आसन में बैठे तिसीसमयमें कमलके समान नेत्रवाले भगवान् प्रकट होगये ५८ पार्वतीजी समेत महादेवजी और पुत्रोंसहित ब्रह्माजी भी कीर्तनके दर्शन के लिये तहां पर आगये और इन्द्रादिक देवता भी विमानों पर चढ़कर आये तिनसे आकाश आच्छादित होगया ५९ प्रह्लादजी तालके धारण करनेवालेहुए चंचलगतिसे कांस्यधारी उद्धवजीहुए स्वरकी कुशलता से वीणाके धारण करनेवाले नारदजीहुए रागके कर्ता अर्जुन हुए इन्द्र मृदंग बजाते भये जय जय वचन कहनेवाले कुमार हुए अत्यन्त गुणी सद्भाव के कहनेवाले शुकदेव जी हुए ६० और बीच में ज्ञान आदिकों का त्रिक अर्थात् तिगड्ड नवीन रूपसे युक्त होकर नाचनेलगा यह अलौकिक कीर्तन देखकर प्रसन्न चित्त भगवान् यह बोले ६१ कि हे भागवतो ! तुम्हारी कथा के कीर्तन से मैं बहुत प्रसन्न हुआहूं मुझसे वरमांगिये भग-

वान् के ये वचन सुन प्रेम से आर्द्रचित्त, अत्यन्त प्रसन्न कुमार भगवान् से बोले ६२ कि हे भगवन्! अत्यन्त घोर कलियुग में सैकड़ों विघ्नोंसे व्याकुल, थोड़ी उमरवाले मनुष्यों के ऊपर सप्ताह-रूपी विस्तृत यज्ञसे शीघ्रही आप प्रसन्नहुआकरें ६३ हे विभुजी! संसारके रचने पालने और नाशनेके हेतु, सबके आत्मा आपसे यही वरमांगते हैं आपके चरणकमल सेवनेवाले हमलोगोंको और म-नोरथ नहीं है ६४ तब भगवान् ऐसाही होवे यह कहकर तहांहीं अ-न्तर्द्धान होगये तब तो प्रसन्न आत्मा नारदजी कुमारों की वन्दना करतेभये ६५ तदनन्तर सनकादिक, भृग्वादिक और शुकादिक प्रसन्न होकर कथारूपी अमृत को पीकर अपने अपने स्थानों को जातेभये ६६ तबसे लेकर पुत्रोंसमेत भक्ति सब इसपृथ्वीमें नारद करके प्रवर्तित कीगई ६७ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसभारी आख्यान को सुनकर प्रसन्न आत्मा शौनक सब सन्देह के नाशने वाले सूतजीसे फिर पूंछतेभये ६८ कि हे मानके देनेवाले! शुकदेव जीने राजापरीक्षितसे कब कहा फिर गोकर्ण ने कब कहा और कु-मारों ने नारदजीसे कब कहा यह सब कहिये ६९ तब सूतजी बोले कि श्रीकृष्णजी के परमधाम जानेसे कलियुगके तीसवर्ष बीतने में भादों के शुक्लपक्षकी नवमी में शुकदेवजी कथाका आरम्भ करतेभये ७० परीक्षित्के सुनने के अन्तसे दोसौवर्ष बीतने में आषाढ़के शु-क्लपक्षकी नवमी में गोकर्णजी कथा कहतेभये ७१ परीक्षित्जी के जन्मकालसे एक हज़ारवर्ष कलियुगके बीतनेमें चैत्रमहीने में यज्ञ समाप्त हुआ ७२ महादेवजी बोले कि ये सूतजी के वचन सुन मुनियों में श्रेष्ठ शौनकजी हज़ारवर्ष वाले तिस यज्ञको पूरा करतेभये ७३ ब्राह्म, पाद्म, वैष्णव, कौर्म्य, मात्स्य, वामन, वाराह, ब्रह्मवैवर्त, नार-दीय, भविष्य ७४ और आधा अग्निपुराण ये पुराण द्वापरके अन्तमें लोमहर्षण सूतजीसे शौनकादिक मुनिवर यज्ञ आरम्भ के पहलेही सुनतेभये जब कि तीर्थयात्रामें मुनीश्वरों के बुलाये हुए बलदेवजी नैमिष मिश्रिकनाम तीर्थमें प्राप्तहुए और वहांपर आसन के ऊपर सूतजीको बैठेहुए देखकर ७५। ७६। ७७ भगवान् बलदेवजी पर्व

ं समुद्रकी नाईं क्षोभको प्राप्तहुए आषाढ़के शुक्लपक्षकी द्वादशी में
ारणके दिन ७८ पूर्वाह्न के एकपहर दिनचढ़े होनेवाली कृष्ण की
ायासे उन्होंने कुशहाथमें लेकर सूतजीको मारडाला ७९ तब तो
ब मुनि समूह हाहाकार करनेलगे और शोकदुःखसे अत्यंत व्या-
कुल होगये ८० और क्षमामें परायण होकर नम्रता से संसार के
स्वामी बलदेवजीसे ऋषिलोग बोले कि हे राम! हे राम! हे महाबाहो!
संसारके करनेवाले आपने ८१ नहीं जाननेवालेकी नाईं ब्राह्मणके
वधसे अधिक हिंसाकी यह व्यासजी के शिष्य साक्षात् पुराणऋषि
महातपस्वी थे ८२ इनको हमलोगों ने यज्ञकर्म में अठारहों पुराणों
के बांचने के लिये यह आसन दियाथा ८३ कि भगवान्की कथामें
अधिक अवस्था इनकी होनी चाहिये थी सो आप लोककी रक्षा के
लिये धर्मरूपी सेतुके प्रवृत्त करनेवाले ८४ संसारके स्वामी, दण्ड
और कृपाकरने में योग्य प्रकटहोगये ऐसा कहकर वे मुनि बलदेव
जी के आगे ८५ सहसासे उनके बलको स्मरणकर चुपहोगये तद-
नन्तर शत्रुओं के नाश करनेवाले, लोक और वेदकी मार्ग के पीछे
चलनेवाले भगवान् बलदेवजी ब्राह्मणों को प्रसन्न करतेहुये बोले
कि भो ब्राह्मणो! दूरहीसे कोप छोड़कर सुनो आपलोगोंका कल्याण
हो ८६। ८७ जिसको हम आपलोगों का अभीष्ट और कार्य्य की
सिद्धिका देनेवाला जानते हैं कि हमारे वरसे इसकापुत्र महाज्ञानी
होगा ८८ वह आपलोगोंके ईप्सित सब शास्त्रको कहेगा अब जिस
लिये मैं बुलायागयाहूं तिस कार्य्यको कहिये ८९ महादेवजी बोले
कि हे पार्वती! ये महात्मा बलदेवजीके वचन सुनकर मुनिलोग उन
से वल्वल राक्षसके मारनेके लिये कहतेभये ९० तब तो बलदेवजी
बल्वलको मारकर मुनिश्रेष्ठोंको प्रसन्नकर हाथजोड़ नमस्कारकर
उनकी आज्ञा लेकर तीर्थयात्राको चलेगये ९१ उनके चलेजानेपर
शौनकादिक मुनीश्वर लोमहर्षण सूतके पुत्रको बुलाकर सत्कारकर
९२ शेष पुराणों के बांचनेके लिये तिसी पदमें बैठालतेभये अग्नि-
पुराणका उत्तर माहात्म्य और श्रीमद्भागवत का अन्त ९३ साढ़े
सात पुराणों को प्रसन्नमन होकर सुनतेभये व्यासजी सत्रह पुराणों

को बनाके ९४ और महाभारतको भी रचके मनकी प्रसन्नताको न प्राप्तहुए तब तो देवदर्शन नारदजी व्यासजी के हृदयको खेदयुक्त जानकर ९५ व्यासजी के उत्तम स्थानको जातेभये व्यासजीने नारदजीको देखकर सत्कारकर आसनपर बैठालकर ९६ विधिपूर्वक उनका पूजन किया तदनन्तर नारदजी व्यासजीसे बोले कि आप क्यों मन में क्लेशयुक्त रहते हैं ९७ सब सन्देह का कारण कहो इस प्रकार नारदजी के पूंछनेपर व्यासजी बोले ९८ कि हे ब्रह्मन्! नहीं जानते हैं क्या कारणहै कि हमाराचित्त मोहयुक्त होरहाहै तिसकोमैं नहीं जानताहूं आप विज्ञानमें कुशलहैं जानकर हमसे कहिये ९९ जब इसप्रकार व्यासजी ने अध्यात्ममें निपुण नारदजी से कहा तब जो ब्रह्माजीने इनसे कहाथा उसी परमतत्त्वको नारदजी कहनेलगे १०० कि हे व्यासजी! हमसे कारण सुनो जिससे शास्त्रकी योनि और प्रभु आपका मन असम्पन्न प्रकाशित होरहाहै १०१ हे पाप रहित! आपने इस लोकमें अवतार लेकर वेदों के विभागकिये और इतिहाससमेत पुराण रचे १०२ जहां वर्णाश्रम निवासियोंका सबत्रयी धर्म कहाहै कलियुगमें मनुष्यों को थोड़ी उमरके देखके १०३ जिनमें सबके सुनने आदिमेंअधिकार दिखलाई देताहै स्त्री, शूद्र, ब्राह्मण, बंधु और साधुओंका संगम १०४ और धर्म आदिक उनमें आपने वर्णन किये हैं परंतु प्रधानतासे भगवान्‌की महिमा नहीं वर्णनकी हे मुनिजी! सब धर्म्मक्रियासे शून्य दोषनिधि कलियुगमें १०५ पाप करनेवालों को विना कृष्णजीकी कथारूप अमृतके गति नहींहै यही इसघोर कलियुगमें गुणहै कि मनुष्य १०६ कृष्णजीके कीर्त्तनहीसे कर्मबन्धन से छूट जातेहैं यज्ञ, दान, तपस्या, कर्म, ज्ञान और ध्यान सतयुग आदिकों में १०७ सिद्धिके देनेवाले होते थे कलियुग में नाम का कीर्त्तनही सिद्धि देनेवाला है इससे कलियुगके मनुष्यों के उद्धारके लिये आप १०८ श्रीमद्भागवतनाम पुराणको वर्णन कीजिये जिस के प्रवृत्त होने से आपका मन निश्चय १०९ प्रसन्न होजावेगा और लोक कृतकृत्यता को प्राप्त होंगे ११० महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! इस प्रकार नारदमुनि अमित तेजस्वी व्यासजी को

आज्ञा देकर भगवान् के गुण गातेहुए इच्छापूर्वक जातेभये १११ नारदजी के चलेजाने के पीछे सबअर्थके देखनेवाले व्यासजी इस श्रेष्ठ भागवती संहिता को करतेभये ११२ पैलआदिकों को विधि पूर्वक चारोंवेद पढ़ाकर व्यासजी सूतजीसे सब पुराणसंहिता कहते भये ११३ फिर वेदके सदृश श्रीमद्भागतनाम पुराणको लोक और वेदसे विरत शुकदेवजी को पढ़ाते भये ११४ तिसी भागवती संहिताको लोमहर्षणके पुत्र सूतजी ने शुकदेवजी से राजापरीक्षित से कहनेमें सुनीथी ११५ और सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से यथार्थसे कहीथी यह पुराणों के ऊपर वर्तमान पुराण है ११६ इसमें चित्तलगेहुए मनुष्यों की और में प्रीति नहीं होती है नन्दके पुत्र कृष्णजी मनमें उत्पन्न होकर प्रकाशित होतेहैं ११७ हे पार्वती! जो तुमने लोकके निस्तारके हेतु श्रीभागवत माहात्म्यको हम से यह कहाथा कि इसमाहात्म्य को हमसे कहो ११८ तिस सबको हे पार्वती ! मैंने तुमसे नानाप्रकार के इतिहास समेत भक्ति मुक्ति के देनेवालेको अच्छीतरह से कहा ११९ जो मनुष्य भक्तिसे माहात्म्य को सुनता वा पढ़ता वा अनुमोदन करताहै वह परमगति को प्राप्त होताहै १२० ब्राह्मण पढ़कर वेदोंको, क्षत्रियजीतको, वैश्य धनको और शूद्र सुनहीकर गतिको प्राप्त होताहै १२१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशतसाहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेश्रीमद्भागवतमाहात्म्येरामविहारीसुकुलकृतभाषाटीकायांश्रवणविधिकथनं नामाष्टनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९८ ॥

एकसौनिन्नानबेका अध्याय ॥

यमुनाजीका माहात्म्य वर्णन ॥

ऋषि लोग बोले कि हे सूतजी ! यमुनाजी के माहात्म्य को जिसने जिससे प्रकाशित कियाहो तिस आख्यान संयुक्त विस्तार समेत कहिये १ तब सूतजीबोले कि एकसमय में युधिष्ठिरजी सौभरि ऋषिकी सेवा करनेके लिये उनके शुभ आश्रम ज्ञानरूपी में जाकर ऋषिके नमस्कारकर यह पूछतेभये २ कि हे ब्रह्मन्! यमुनाजीके किनारेके तीर्थोंमें वैकुण्ठ जन्मभूमिसे अत्यन्त श्रेष्ठ जो शुभ

तीर्थ हैं तिनको कहिये ३ तब सौभरिजीबोले कि एकसमयमें आकाश मार्ग से मुनियों में श्रेष्ठ नारदजी और पर्वतजी मनोहर खाण्डव वनके देखनेको जातेथे ४ तो आकाश मार्ग से यमुनाजी के सुन्दर किनारे पर उतरकर बैठकर क्षणमात्र विश्रामकर स्नानकरनेको जलमें प्रवेश करगये ५ उसीसमयमें औशीनर राजा शिबि शिकार खेलनेको वनमें घूमताहुआ दोनों मुनियोंको देखकर तिनके निकलनेकी इच्छाकर नदीके किनारे बैठगया ६ फिर दोनों मुनि विधिपूर्वक स्नानकर कपड़े पहनतेभये तब राजा शिबिने दोनोंमुनियोंको शिरसे नमस्कार कर किनारे बैठाललिया ७ और तहांपर सोनेके हज़ारों यज्ञके खम्भ देखकर अभिमान रहित होकर नारदजी और पर्वतजी से बोला ८ कि हे मुनियों में शार्दूलरूप! आप लोग यह कहें कि किसकी यज्ञके खम्भहैं किसने यहांपर यज्ञकियाहै देवता वा मनुष्यने ९ काशी आदिक तीर्थोंको छोड़कर यज्ञोंसे यहांपर किस पुरुषने पूजन कियाहै तिन तीर्थोंसे यहां क्या विशेषताहै १० तब नारदजीबोले कि पूर्वसमय में हिरण्यकशिपु इन्द्रादिक देवताओंको जीतकर तीनोंलोकोंकी राज्य प्राप्त होकर अखर्व अभिमानको ग्रहण करताभया ११ तिसके पुत्र नारायणमें परायण प्रह्लादजी हुए तिनसे नष्ट मंगलवाला पापी हिरण्यकशिपु अत्यन्त वैर करताभया १२ तिसी वैरसे नृसिंहजीकी देह धारणकर विष्णुजीने हिरण्यकशिपुको मारकर स्वर्ग्ग की राज्य इन्द्रको देदी १३ तब इन्द्र अपने पद को पाकर नारायणजी के गुणों को स्मरणकर ब्रहस्पतिजी के मस्तकसे वन्दनाकर उनसे बोले १४ कि हे गुरो! लोकोंके धारण करनेवाले नृसिंहरूप हरिजी ने हमको देवताओंकी राज्य देदी है अब मैं तिनकी यज्ञों से पूजन करना चाहताहूं १५ पवित्र स्थानको बतलाइये और ब्राह्मणोंकोभी बतलादीजिये आप हमारे बड़े हितकारी हैं इसमें विलम्ब न कीजिये १६ तब ब्रहस्पतिजीबोले कि तुम्हारा खाण्डव वन रम्य, परमपवित्रहै जिसमें केतकी अशोक और बकुलोंके मधुसे मत्त भँवरे रहते हैं १७ तहांहीं पुण्यकारिणी, धन्या, तीनोंलोकों के पवित्र करनेवाली यमुनाजी हैं जोकि

स्मरण करनेसे स्वर्ग और मरनेमें ब्रह्माजीके पदको देती है १८ हे इन्द्र! तिसीके किनारे भगवान् को बहुत यज्ञोंसे पूजनकरो यदि तुम अपने देवताओं के कल्याणकी निरन्तर इच्छा करते हो १९ नारदजी बोले कि हे शिवि! इन्द्र गुरुजी के वचन सुनकर शीघ्रही वाहनपर चढ़कर कल्याणके देनेवाले अपने वनमें प्राप्त होगये२० और गुरुजी, देवता और यज्ञकी सब सामग्रियोंको भी अपने साथही लाये यहां आकर वनको देखकर बड़े आनन्दको प्राप्तहुए२१ तब इन्द्रसे बृहस्पतिजी बोलेकिसप्तर्षि ब्रह्माजीके पुत्र वशिष्ठ आदिक ब्राह्मणोंको वरणकर भगवान्को पूजन करो तब तो इन्द्र वैसाही करते भये २२ तदनन्तर भगवान्, ब्रह्मा और महादेवजी समेत इन्द्रकी यज्ञ में जहांपर भारी उत्सव होरहाथा प्राप्त होगये २३ तब इन्द्र मुनियों समेत, तीनों देवोंको देखकर आसनसे शीघ्रही उठकर वन्दना करताभया २४ वाहनों से शीघ्रही उतर कर तिनके समीपमें ब्रह्मादिक तीनों देवता सुन्दर सोनेके आसनों में बैठकर बेदियोंमें अग्नियोंकी नाईं शोभित हुए २५ सफेद अंगके महादेवजी, लाल अंगके ब्रह्माजी और नीलछवि के पीताम्बर धारण कियेहुए विष्णुजी शृङ्गोंमें बिजुली की नाईं शोभित हुए २६ इन्द्र तिनके चरणोंको धोकर तिस जलको माथेमें लगातेभये और आनन्दयुक्त होकर मीठे वचनबोले २७ कि हे देव! मैंने इससमय में यज्ञ कियाथा वह सफल होगया २८ जोकि योगियोंकोभी दुःख [illegible] दर्शन होनेवाले आपके दर्शन होगये हे विष्णो! एकही आपने [illegible]ीन मूर्तियां कीहैं २९ गुणोंसे तैसेही अनेक प्रकारके स्फटिककी [illegible]ाईं भूठहो हे विभो! काष्ठोंमें छिपीहुई अग्नि घिसने के विना ३० [illegible]हीं प्रकट होती है तैसेही प्राणियोंके हृदयोंमें भक्तिहीसे आप प्रकट होते हैं विना भक्तिके नहीं प्रकट होते हैं आप में एककी सब [illegible]ाणियों के उपकार करनेवाली भक्ति होती है ३१ तिस प्रह्लादकी [illegible]क्तिसे देवता सुखीहुए हे देव! हम तो विषयी और आपकी माया [illegible]े आच्छादित चित्तवाले हैं ३२ यथावत् चरणसेवकभी हैं परन्तु आपके स्वरूपको नहीं जानते हैं भो ब्रह्मन्! भो महादेव! आपभी

संसारके गुरु हैं ३३ इसी के गुरुत्वसे जिससे इससे अलग आप दोनोंजन नहीं हैं जो कुछ वाणीसे कहाजाताहै और मनसे चिंतना कियाजाताहै वह सब इन्हींकी माया है ३४ और जो यह प्रपञ्च जात दिखलाई पड़ता है वह सत्य नहीं है इसप्रकार वह चिन्तना नहीं करताहै और जे विष्णुजीके चरणको भजतेहैं ते तरजाते हैं हे महादेवजी! जिनका जल आप मस्तकमें धारण करते हैं ३५ हे ब्रह्माजी! इनके चरणकमलोंमें हमारी जन्म जन्म रतिहोवे जिनके नेत्रके क्षोभित होनेसे यह सब संसार महदादि उत्पन्न होताहै ३६ हे नृसिंहजी! आपके समान दयावान् कोई नहीं है क्योंकि शत्रुके पक्षमें भी आप सुखको विस्तार करते हैं अपने लोकके शोक दूर करनेमें जो कृपालुता कहीजातीहै वह मूर्खताहै ३७ नारदजीबोले कि हे शिबि! इसप्रकार इन्द्र देवोंके स्वामी केशवजी की स्तुतिकर आगे प्रणामकर तिनके वाक्यकी शुश्रूषामें चित्त देकर स्थित हो- जातेभये ३८ इसप्रकार सभामें मुनिलोग इन्द्रकी कीहुई भगवान् की स्तुति सुन साधु साधु यह बोलतेभये ३९ कि हे इन्द्र! जे सौवर्ष भारी तपस्या करते हैं तिनकी इसप्रकार भक्ति नहीं होती है जैसी कि तुम्हारी भगवान्में है ४० अष्टांग योग सुलभ नहीं है जिससे प्रसिद्धता प्राप्त होती है समत्वसे त्याग वही मनुष्योंको शरणभक्ति है ४१ अपने धर्म्मसे इकट्ठा कियेहुए द्रव्योंसे जैसी विधि कहीहै कर्म तिसका अर्पण विष्णुजीमें यही कल्याणके देनेवाली भक्ति है ४२ जो और देवताकी निन्दा नहीं करताहै विष्णुहीको बुद्धिसे नमस्कार करताहै और वेदके वाक्योंको नहीं छोड़ताहै सोई भक्त भगवान्को प्याराहै ४३ जे प्रतिदिन भगवान्के गुणोंको सुनतेहैं जे कीर्तन करते हैं जे स्मरण करते हैं जे भजन करते हैं जे पूजन करते हैं ४४ जे दासभावसे नमस्कार करते हैं जे मित्रता करते हैं और जे अपना द्रव्य निवेदन करदेते हैं वे मुक्ति आदिककी वाञ्छा नहीं करते हैं ४५ हे इन्द्र! भक्तिसे तुमभी इन संसारके गुरु भगवान् को आराधनकरो और इनसे कुछभी कामना न करो तो कृतकृत्य होजावोगे ४६ नारदजी बोले कि हे शिबि! मुनियों करके इसप्रकार

शोक्षित समाजमें भगवान् सबके सेवनेवाली त्रिभुवनके पारपदकी
ेहारी कीहुई अपनी भक्ति सुनकर इन्द्रसे मीठे वचन बोले ४७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येइन्द्रयागविधिर्नामएकोनद्विशततमोऽध्यायः १९९॥

दोसौका अध्याय॥

हे इन्द्र! यह आश्चर्य नहीं है क्योंकि अत्यन्त ज्ञानी मुनिलोग
हमारी पदवी गुर्वीभक्तिको सत्कारयुक्त करते हैं १ ये ज्ञानके उपदेश
करनेवाले त्रिलोकतलवासियों के नष्टहुए वेदके मार्ग को सदैव प्र-
वर्त करते हैं २ भक्तिसे आप स्वर्गके भोगमें आसक्त रहते हैं क्योंकि
हमारी शरणमें प्राप्तहो जिससे कि मैं तुम्हारे गुरुओंका गुरुहों ३
हे देवताओं में शार्दूल! निष्काम होकर बहुत दक्षिणावाली यज्ञों
से हमारी पूजन करो तो शीघ्रही समीप में स्थित हमारे पदको
प्राप्तहोगे ४ प्रत्येक यज्ञमें अनेकों रत्नों के प्रस्थदेवोतो नामसे यह
स्थान इन्द्रप्रस्थ होजावेगा ५ हे ब्रह्माजी! आप यहांपर तीर्थों में
श्रेष्ठ प्रयागको रचिये सरस्वती और मनुष्योंके पवित्र करनेवाली
गंगाजी को भी लाइये ६ हे महादेवजी! काशी काञ्ची और गो-
कर्णजी को यहां स्थापित कीजिये और पार्व्वती जी समेत आप
सदैव निवास कीजिये ७ भो भो ब्रह्माके पुत्रो आप ज्ञान और वि-
ज्ञानमें निपुण हैं इससे अपने योगबल से यहांपर साततीर्थ की-
जिये ८ हे बृहस्पतिजी! निगमोद्बोधक तीर्थको आप रचिये जिस
के स्नान करनेसे पढ़ेविना वेदों का बोध होजावे ९ और पूर्वजन्म
का स्मरण होजावे मैं मनोहर द्वारकाजीको यहां लाताहूं १० जहां
समुद्रके साथ गोमतीनदीका संगम हुआहै अयोध्या और मधुवन
को भी यहीं रचूंगा ११ जहां रामचन्द्र और कृष्णजी के देहों से
अवतार लूंगा नरनारायणजी के स्थान बदरिकाश्रमकोभी यहींपर
१२ रचूंगा जहांपर सदैव मैं बसूंगा हरिद्वार और पुष्कर इन दो
उत्तम तीर्थों को १३ तुम्हारे कल्याण की कामना से तहांहीं स्था-
पित करूंगा नैमिषारण्य, कालंजरपर्वत १४ और सरस्वतीके कि-

नारे जो तीर्थ हैं तिनको भी मैं यहीं स्थापित करूंगा नारदजी बोले कि हे शिबि! अत्यन्त कल्याणकारी भगवान् के वचनसुन और जो उन्होंने कहा तिस सबको रचभी दिया १५ यह देखकर ब्रह्मा और महादेव आदिक भी उनके कहेहुए को रच देतेभये तब सब तीर्थमय इस स्थानमें इन्द्र १६ सोने के खम्भवाली बहुत यज्ञोंसे फिर लक्ष्मीपति को पूजन करताभया और कृष्णजी के आगेही रत्नोंके प्रस्थ ब्राह्मणों को देताभया १७ कि सबके आत्मा नारायणजी हमाराही यहहै इसप्रकार प्रसन्नहोवें तबसे लेकर यह इन्द्रप्रस्थ तीर्थ कहाताहै १८ इस सब तीर्थमय में मरकर फिर जन्म नहीं होता। ब्राह्मणलोग इन्द्रके दियेहुए रत्नके प्रस्थोंको पाकर १९ तिसीसभ में इन्द्रको अवितथ आशिषा देतेभये कि गोविन्द भगवान् इसदा से तुम्हारे ऊपर प्रसन्न होवें २० और भगवान् में तुम्हारी भक्ति अचल होवे हे विभो! पूर्वसमय में इस कर्मभूमि में तुमने सौयज्ञ कियेथे २१ तिसी सकामपुण्य से देवताओं का स्थान प्राप्त हुआ था इससमय में निःकाम होकर तुमने विष्णुजी को पूजन यज्ञों से कियाहै २२ इससे अपने पदसे विच्युत होकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठहोगे और वहांभी अपने धर्मसे विष्णुजीका आराधन करोगे २३ अपने कियेहुए यहांके यज्ञ आदिक स्मरण करोगे और तिसी स्मरणसे घर छोड़कर तीर्थों में घूमते घूमते २४ इसीतीर्थ में राजाजनकके साथ प्राप्तहोगे और संन्यास आश्रमको लेकर यहीं देह छोड़ोगे २५ तो सुन्दर देह धारणकर गणोंके लायेहुए सूर्यकी दीप्तिके समान विमान पर चढ़कर श्रीहरिजी के पदको प्राप्तहोगे २६ नारदजी बोले कि हे शिबि! इन्द्र इसप्रकार ब्राह्मणों की आशिषा और भविष्यवार्ताको सुनकर अत्यन्त आनन्द को प्राप्तहुआ २७ विधिपूर्वक यज्ञों को समाप्तकर सोनेके खम्भों को नहीं उखाड़ा और माधव इत्यादिक पूजेहुए देवोंको भी विसर्जन किया २८ ऋत्विज ब्रह्माजी के पुत्रों को धनआदिकों से पूजनकर बृहस्पति जी को आगेकर स्वर्ग को जाताभया वहांपर भगवान् की भक्तियुक्त होकर राज्य कर पुण्य क्षीण होने में पृथ्वी में इसी हस्तिनापुर में २९। ३० किसी वेदवे

दाङ्ग के पारगामी शिवशर्मा ब्राह्मण की गुणवती नाम स्त्री में ३१ सुन्दर समयमें भगवान्का सेवक इन्द्र उत्पन्नहुआ तब शिवशर्मा जीने ज्योतिषियों को बुलाया तो वे लग्न देखकर बोले ३२ कि हे शिवशर्मन्! यह बालक भगवान् को प्रिय होगा तुम्हारे वंश को उद्धार करेगा यह हमलोग सत्यही कहते हैं झूंठ नहीं है ३३ और तेरहवर्ष की देहहोने में अंगोंसमेत चारों वेदोंको पढ़कर ज्ञानयुक्त होकर विवाह करेगा ३४ फिर अच्छे पुत्रको उत्पन्नकर वानप्रस्थ आश्रम धारणकर धीरहोकर तीर्थों में घूमताहुआ पीछेसे संन्यास आश्रम को धारणकर ३५ इन्द्रके खांडववन में नदियोंमें श्रेष्ठ यमुनाजी के किनारे हरिप्रस्थ तीर्थमें मरण को प्राप्तहोगा ३६ नारदजी बोले कि हे शिबि! शिवशर्मा ब्राह्मण ज्योतिषियों के कहेहुए कल्याणकारी वचन सुन तिसी समय में अपने पुत्रका विष्णुशर्मा नाम रखता भया ३७ और ज्योतिषियों को द्रव्य देकर बिदाकर बुद्धिमान् आप चिन्तना करताभया कि मैं धन्यहूं कि जिसके विष्णुभक्त पुत्रहोगा ३८ और चारों आश्रमों को साधनकर अच्छे तीर्थ में मरेगा इससे मुझसे दूसरा कौन भाग्यवान् है ३९ इसप्रकार शिवशर्मा मनसे चिन्तनाकर शुभ दिनमें श्रेष्ठ ब्राह्मणों से बालक के जातकर्म आदि संस्कार कराताभया ४० फिर श्रेष्ठ ब्राह्मण सात वर्ष बीतने के पीछे आठवें वर्ष चैत्रमहीने में पुत्रका जनेऊ करता भया और बारह वर्षके भीतरही वेदोंको पढ़ाकर तेरहवींवर्ष में विवाहकर देताभया ४१।४२ तब बुद्धिमान् विष्णुशर्मा अपनी स्त्री में पुत्रको उत्पन्नकर तीर्थयात्रामें निर्विषय अपनामन करताभया ४३ फिर पिताके पासआकर उनके दोनों चरणों को नमस्कारकर महा बुद्धिमान् यह मुनिवाक्यको स्मरणकर बोला ४४ कि हे तात! मुझ को आज्ञा दीजिये मैं तीसरे आश्रमको प्राप्त होकर सत्संगति विधायक विष्णुजी को आराधन करूंगा ४५ स्त्री, घर, धन, पुत्र और मित्र लोग जलमें बुल्लेकी नाईं क्षणमात्र में नाश होजाते हैं इससे बुद्धिमान्मनुष्य तिनमें संगनहीं करताहै ४६ पढ़ने और पुत्रसे मैंने दो ऋणोंसे उद्धार पायाहै अब कामना रहित होकर तीर्थोंमें भग-

वालूको पूजन करना चाहताहूं ४७ गुण और रागरहित होकर पीछे से किसी उत्तम तीर्थमें जबतक मेरी प्रारब्धहै तबतक स्थितहोने की इच्छा करताहूं ४८ जब तिस पुत्रने इसप्रकार कहा तो अत्यन्त बुद्धिमान् पिता संसारसे वाञ्छारहित शिवशर्मा ज्योतिषियोंकेवाक्य को स्मरणकर बोला ४९ कि अहंकार रहित मेराभी चौथे आश्रम का समय है विषयों को विषकी नाईं छोड़कर मैं भी केशवरूप अमृतको सेवन करूंगा ५० हे पुत्र! इससमय वृद्धावस्था में घरमें मेरा मन इस प्रकार नहीं रमता है जैसे वनसे बांधकर लाये हुए हाथीका मन राजाके स्थानमें नहीं रमताहै ५१ तुम्हारा छोटाभाई यह सुशर्मा कुटुम्ब को जब हम दोनोंजन छोड़देंगे तो पालन कर लेगा ५२ परन्तु हमारे जातेहुए तुम्हारी पतिव्रता माता इसप्रकार पीछे चलेगी जैसे दिनके अन्तमें दीप्ति सूर्यके पीछे चलती है ५३ तिससे हे तात! तुम्हारी माता नहीं जाने और हम तुम दोनों मनुष्य श्रीहरिजी के चरण कमलोंका स्मरण करतेहुए चलें ५४ नारदजी बोले कि हे शिबि! इसप्रकार दोनों मोक्ष होनेकी इच्छावाले सलाह कर अन्धकारयुक्त आधीरात में सोतेहुये कुटुम्ब को छोड़कर घर से चलतेभये ५५ और अभिमान रहित दोनों अच्छे तीर्थ में घूमतेहुए कल्याण के देनेवाले इन्द्रप्रस्थ तीर्थमें जातेभये ५६ यहां पर आके विष्णुशर्मा ने अपने रचेहुए पूर्वजन्मके यज्ञके खम्भोंको देखकर भगवान् के संगमका स्मरण किया ५७ तदनन्तर यह बुद्धिमान् पितासे बोला कि मैं पूर्व्वसमय में इन्द्रथा मैंने भगवान् के प्रसन्नता की इच्छासे यहांपर यज्ञ कीथीं ५८ यहीं पर भक्तवत्सल केशवजी प्रसन्नहुएथे ब्राह्मण और सप्तर्षि मणिप्रस्थोंसे मैंने प्रसन्न कियेथे ५९ तब उन्होंने वैष्णवी भक्तिदी और इसजन्ममें मोक्षदिया और सम्पूर्ण विष्णु आदिक देवों ने यहांपर तीर्थ रचे हैं ६० और इस इन्द्रप्रस्थ तीर्थको सब तीर्थमय करदियाहै और तिनश्रेष्ठ मुनियों ने यहीं पर हमारा मरण कहाथा ६१ तदनन्तर भगवान् के पदकी प्राप्ति कहीथी इस सबको मैं स्मरण करताहूं इन गंगा और सरस्वती को अपने लोकसे ब्रह्माजी ६२ लाये थे जिनके योग में

यह प्रयाग कहाता है और यह शिवजी की पुरी काशी प्रयाग से पूर्व देशमें ६३ बावन धनुषके प्रमाणपर है जिस में मरकर फिर जन्म नहीं होताहै काशीके पश्चिम भागमें इक्कीस धनुष पर ६४ शिवकांची शिवजी ने स्थापितकीथी यह मरेहुओंको मुक्तिकी देने वाली है और गोकर्ण नाम यह क्षेत्र महादेव को अत्यन्त प्यारा है ६५ दो धनुष प्रमाण पृथ्वी के भागमें स्थित है और प्रयागके पश्चिममें यह पुण्यकारी द्वारका ६६ सत्तरि धनुषपर स्थितहै जहां मरकर चार भुजाका मनुष्य होजाता है और इसके पूर्व दिशामें मनुष्योंको प्यारी अयोध्याहै ६७ यह पुण्यदर्शनापुरी अठारह धनुषमात्रमें दिखाई देती है और हे तात! यह मधुवन विष्णुजी ने स्थापित कियाथा ६८ अयोध्या के पश्चिम भाग में दश धनुष के प्रमाणसे है इसके उत्तरमें नरनारायणजीका स्थानहै ६९ यह ग्यारह धनुषप्रमाण पृथ्वी में स्थितहै और इसके दक्षिण हरिद्वारनामक यह तीर्थ स्थितहै ७० यह देवताओं को दुर्लभ तीर्थ तीसधनुष प्रमाण पृथ्वी में है और तीर्थों में शिरोमणि यह पुष्कर नाम तीर्थ ७१ बारह धनुष पृथ्वी में स्थितहै और प्रयाग आदिकसे दो कोस सप्तर्षि महात्माओंके ७२ पूर्व दिशामें सात तीर्थ हैं ये तीर्थ सप्तक कहाते हैं इनमें अनेकों तीर्थ हैं ७३ जिनमें पद पदमें मरकर चार भुजाका मनुष्य होजाता है और प्रयाग से दो कोस पश्चिम भूमिमें ७४ बृहस्पतिजी का रचाहुआ निगमोद्बोधक नाम तीर्थ है तीर्थसप्तक और निगमोद्बोधके बीच बड़ाभारी ७५ यह इन्द्रप्रस्थ क्षेत्रहै इसको पूर्वसमयमें देवताओं ने स्थापित कियाथा यह पूर्व पश्चिम चार कोस लम्बा है ७६ यमुनाजी के दक्षिण सोलह कोस इन्द्रप्रस्थकी मर्यादा महर्षियों ने कही है ७७ जो इस देवत्रयी में देह छोड़ता है वह अज होजाता है नारदजी बोले कि हे शिबि! पुत्रके ये वचन सुन शिवशर्मा ब्राह्मण ७८ सन्देह युक्त होकर सत्यवादी अपने पुत्रसे बोला कि हम कैसे जानें तुम पूर्वसमयमें इन्द्र हुए थे ७९ और यहां यज्ञ कियाथा और मणियों से ब्राह्मणों को प्रसन्न किया था हे पुत्र! तुम्हारे कहने से जैसे ज्ञानवान् हूं तैसे

कीजिये ८० इन्द्रप्रस्थकी मर्यादा कैसे यह तुमने सुनी जबसे लेकर तुम्हारी यह बुद्धिहुई परन्तु घर नहीं छोड़दिया ८१ हमींसे तुमने अंगों समेत चारों वेद पढ़े परन्तु पूर्वजन्मके कियेहुए कृत्यमें तुमको ज्ञान कहांसेहुआ ८२ तब विष्णुशर्मा बोले कि हे पिताजी! ऋषियों ने हमको पूर्व्वजन्मके स्मरणका देनेवाला वरदियाथा तिसीसे इस तीर्त्थकी यह स्मृति मैंने सुनी है ८३ निगमोद्बोधक तीर्त्थमें यहींप आप स्नान कीजिये तो पूर्वजन्मके स्मरण देनेवाले दुर्लभ ज्ञानको प्राप्त होजावोगे ८४ और इस तीर्त्थके जलके स्पर्श से हमारेभी पूर्व जन्मकी प्रवृत्तिको स्मरण करोगे यह मैं सत्यही कहताहूं ८५ नारद जी बोले कि हे शिबि! शिवशर्मा ब्राह्मण पूर्वजन्मके स्मरणके लिये निगमोद्बोधक तीर्थ की यह महिमा सुन स्नान करनेके लिये उद्यत हुएही थे ८६ कि सिंह ने किसी भिल्लका पीछा किया तब अत्यन्त त्राससेयुक्त अंग, श्वास लेताहुआ, परिश्रमसे विह्वल ८७ जीव मारनेवाला, मार्ग्ग में घात करनेहारा, सदैव बनियोंका लूटनेवाला, काले अंग, पिंग बालवाला, ह्रस्व अंगयुक्त, बिलारकेसे नेत्रवाला ८८ भाला हाथ में लियेहुए, भयानक मूर्ति, देहधारी भिल्ल भागा और सिंह कुछदूर पीछे रहता हुआ पीछे २ चलाही आया तब तो समीपही में स्थित पिता और पुत्र सिंहको निकटही देखकर हा कृष्ण इसअपमृत्युसे बचाइये ऐसा कहतेहुए पेड़में चढ़कर बैठरहे ८९।९० और वह भिल्लभी अत्यन्त वेगवान् सिंहको पीछे पकड़ने के लिये आता देखकर डरकर वृक्षपर चढ़नेलगा ९१ तब वेगयुक्त सिंहने चढ़तेहुए भिल्लके पावोंको पकड़कर उसको पृथ्वीमें गिरादिया ९२ तो पृथ्वीमें गिरकर भी भिल्लने भालेसे सिंहके पेटमें मारा तो रक्त के समूहसे युक्त आंतोंके समूह उसके निकलनेलगे ९३ तब व्यथा युक्त सिंह होकर परमदारुण शब्दकर भिल्लका शिर पीस देताभया तो भिल्ल शीघ्रही मरजाताभया ९४ और सिंह भी पीछेसे मरगया तब तो विष्णुजी के लोकसे गणों समेत दो विमान उतरतेभये ९५ जिनमें गण नवीन मेघोंके वर्णवाले, स्फटिकमणिसे बनेहुए मणि प्रकरों से मण्डित सुन्दर कुण्डल कानोंमें धारण कियेहुए ९६ शंख

चक्र, गदा और कमल हाथमें लियेहुए, सुन्दर चित्रधारे, सोनेकी भित्तिसे विभूषित पीले कपड़े पहनेहुए ९७ फूले कमल के समान नेत्रोंसे पद्मराग गवाक्षको धारणकिये धीर शब्दवाली मंजीर पांवों में धारेहुए हैं तिनसे शब्दयुक्त किंकिणी होरही है ९८ मणिके बांधने केस्थान में कंकणकी श्रेणीको धारण कियेहुए हैं पवित्र वेदिका हैं मोतियों के हारोंसे मनके हरनेवाले वक्षस्स्थलोंसे चंदोवासे तने हैं ९९ कुटिल अलकयुक्त मुखों से ऊंची ध्वजियों से प्रकाशित हैं दोनों भौंहोंसे आक्षिप्त कामदेवके धनुषोंसे ऊंचे बन्दनवारहैं १०० नासिकासे लज्जित कीरोंसे सैकड़ों निर्व्यूह शोभित हैं नवीन मूंगे की सतृच्छाय तलोंसे दर्पणकीनाईं निर्मलहैं १०१ भिल्ल और सिंह इस तीर्थके प्रभावसे प्राण निलतेही प्राकृत अंगोंको छोड़कर सुंदर अंगयुक्त होगये १०२ तब भगवान्‌के गण रूप वेष और आकृति को धारणकर विमान लेकर तिनके समीप आकर बोले १०३ कि भो मनुष्यों में श्रेष्ठ किरात! और भो मृगों के स्वामी सिंह! आप लोग हमको वैकुण्ठसे आयेहुए श्रीहरिजी के गण समझिये १०४ सत्य तिस पदको हम लेचलेंगे जहांपर उर्मी नहीं हैं अपने अपने विमानपर चढ़कर शीघ्र चलिये देर न कीजिये १०५ तब किरात और सिंह अपने अपने विमानपर चढ़कर विस्मययुक्त होकर भगवान्‌के गणों से बोले १०६ कि भो भो देवताओं में शार्दूलरूप! आप लोग हमारे वचन सुनें आपके दर्शनसे पारमार्थिक ज्ञान हमारे उत्पन्न हुआहै १०७ इस जन्म में हमलोगों ने थोड़ा भी सुकृत नहीं कियाहै आपलोगोंके प्रसाद से हमलोगों के पूर्व्वकर्म्मों की स्मृति होगई है १०८ हमलोग तो मांसके खानेवाले, प्राणियोंकी हिंसामें रत, क्रूर अन्तरकी इन्द्रियवाले, पापके आचार करनेवालों के कुल में उत्पन्न, दर्शनसे भयके देनेवाले हैं १०९ हमलोगोंका इसप्रकार के लोकमें जाना होताहै इससे हम पापियोंको किस पुण्यसे आपके दर्शनहुए ११० सारूप्य कैसेहुई और किस पुण्यसे श्रीहरिजी के पदको जाते हैं तब गण बोले कि पूर्व्व समयके बृहस्पतिजीके किये हुए इस तीर्थके मरने से निश्चय १११ तुम लोगोंको हमलोगों के

दर्शनहुए अद्भुत सारूप्यहुई और बहुतकाल लक्ष्मीपतिजी के पद की प्राप्ति होगी ११२ तभीतक ब्रह्महत्या आदिक पाप गर्जते हैं जबतक इस बृहस्पतिजी के तीर्थके दर्शन नहीं होते हैं ११३ जैसे सूर्य के उदयसे अंधकार नाश होजाते हैं तैसेही निगमोद्बोधक नाम इस तीर्थके दर्शनसे पाप नाश होजाते हैं ११४ इन्द्रप्रस्थ नामयह इन्द्र का पवित्र क्षेत्र है इन्द्रने बहुत दक्षिणावाली यज्ञों से यहींपर विष्णुजी को पूजाथा ११५ तब प्रसन्न होकर विष्णुजी ने इन्द्रको वर दियाथा तिसको सुनिये कि भो इन्द्र! सब तीर्थमय तुम्हारे क्षेत्र में मनुष्य ११६ जे देहको छोड़ेंगे वे जीव मारनेवाले भी होंगे तो हमारे सदृश होजावेंगे ११७ नारदजीबोले कि हे शिबि! ऐसाकह कर वे श्रेष्ठगण उनदोनोंको भगवान्के पदको लेजातेभये जहां प्राप्त होकर फिर संसाररूपी समुद्रमें नहीं निमज्जन करना पड़ताहै ११८॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येभिल्लसिंहवैकुण्ठारोहणंनामद्विशततमोऽध्यायः२०० ॥

दोसौएकका अध्याय ॥

यमुनाजी का माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे शिबि! पिता पुत्र दोनों वृक्षसे उतरकर पापियोंकी भी भगवान्के पदकी प्राप्ति देखकर विस्मित होगये १ तदनन्तर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ शिवशर्मा गणोंकी कहीहुई तीर्त्थकी स्तुति सुन विष्णुशर्मा नाम अपने पुत्रसे बोले २ कि जो पद ब्राह्मणोंको लीलापूर्वक तपस्या करनेसे सुलभ नहीं होताहै तिसको भिल्ल और सिंह प्राप्त होगये तिस तीर्त्थराज की महिमा देखिये ३ जन्म से मरण पर्यन्त भिल्ल और सिंह पापी जिसतीर्त्थके प्रभावसे भगवान् की सरूपताको प्राप्त होगये तिस तीर्त्थश्रेष्ठ की क्या स्तुति कीजावे ४ ब्रह्मा और अन्य देवोंको दुर्लभ शुद्ध सतोगुणी भगवान् के रूप को सिंह और भिल्ल प्राप्त होगये तो यह अद्भुत क्रियाका तीर्त्थ है ५ भो पुत्र! प्राणी ब्रह्माजीके पदसे भी कर्मोंके अन्तको प्राप्त होकर गिरजाता है परन्तु इस बृहस्पति जी के रचे हुए में मरण पाकर

भगवान्‌के पदसे नहीं गिरताहै ६ नारदजीबोले कि हे शिबि! इसप्र-
कार प्रत्यक्ष माहात्म्य बृहस्पतिजी के तीर्थका श्रेष्ठब्राह्मण देखकर
स्नान करनेको प्रारम्भ करतेभये ७ मुंह, दांत, पांव और चित्तकी
शुद्धिकर पंचकच्छहो शिखा बांधकर उपग्रहीहो भगवान् का स्म-
रणकर ८ अश्वक्रान्ता इस श्लोकके पाठसे किनारेकी मट्टीका स्पर्श
कर मट्टीही से तिलक लगाय जल में प्रवेशकर जातेभये ९ तहां
धाराके सन्मुख डुबकी लगाकर ऊपर उठआये और फिरडुबकी मार
भगवान्‌का स्मरणकर मनुष्यों के पवित्र करनेवाली गंगा १० और
अयोध्या आदिक सातों पुरियोंका फिर उठकर स्मरणकर भगवान्
में मन लगाकर फिर जलमें डुबकी मारतेभये ११ इसप्रकार विधि
पूर्वक स्नानकर धोयेकपड़े पहन बाहरआकर श्रेष्ठ ब्राह्मण तिलक
लगाते भये १२ हाथ, पांव, शिखा और सूत्रोंसे दर्भोंको धारणकर
विधिपूर्वक संध्या और तीन प्रकार के तर्पणको करतेभये १३ फिर
द्विजोत्तमजी फूल और जलसमेत सूर्यजी को आदर से अर्घदेकर
हाथ जोड़कर नमस्कार करतेभये १४ और संसार में पूज्य चरण
कमलवाले विष्णुजी की आवाहन से लेकर नैवेद्य पर्यन्त पूजा क-
रतेभये १५ फिर क्रिया समाप्तकर अच्छीतरह से बैठकर पूर्वजन्म
कर्ममें सम्पूर्णता से स्मरणकर अपने पुत्रसे बोले १६ कि हे विष्णु-
शर्मन्! हे पुत्र! तुम्हारे वचन झूठ नहीं हैं जिससे यहांके स्नानसे
हमारे पूर्वजन्मों के कर्मों का स्मरण होगया है १७ हे महाभाग!
सुनो तुम्हारे आगे कहताहूं पूर्वसमयमें मैं धनवान् और धर्मात्मा
वैश्योंके वंशमें उत्पन्न हुआथा १८ पिता हमारे शरभनाम थे येका-
न्यकुब्जपुर में बसतेथे और वाणिज्य से द्रव्य इकट्ठाकर बड़े धर्म्म
और धनसे आश्रित थे १९ फिर बुढ़ापेसे देहयुक्त होगई और ब-
हुतकाल बीतनेपर तिनके पुत्र न हुआ तो पुत्रकी चिन्तासे व्याकुल
चित्त होगये २० और दिन रात यह चिन्तना करनेलगे कि विना
पुत्रके बहुत इकट्ठा कियाहुआ भी मेराधन व्यर्थहै २१ पुत्रके विना
धनवान् भी संसार में पितरों का ऋणी रहता है जैसे जल समेत
मेघ विना वर्षाके पपीहों को कुछनहीं सुख देसक्तेहैं २२ पुरुष धर्म-

धुरीण सन्तानसे संसारको जीत लेताहै जैसे तीन प्रकारकी शक्ति से राजादुर्जय शत्रु को जीतलेता है २३ शुद्धसन्तान सुन्दर मन वाले पितर और मनुष्योंको प्रसन्न करतीहै जैसे कहीहुई सत्यवाणी मित्र प्रत्यर्थी और उदासीनों को प्रसन्न करती है २४ औ उदय में स्थित पुत्रसे पिताका यश बढ़ता है जैसे चन्द्रमा से समुद्र का जल निर्मल होजाताहै २५ तिससे शरीर वा धनसे पुत्रकी उत्पत्ति केलिये यत्नकरै पुत्रके विना बिजलीकेसमान उमरवाले मनुष्योंको शरीर वा धन दोनों व्यर्थहैं २६ इसप्रकार चिन्तना करतेहुए तिनके घरमें अत्यन्त ज्ञानी देवलमुनिवर वरदेनेके लिये प्राप्त होजातेभये २७ तिन मुनिजीको आते देखकर हमारे पिताजी आसनसे उठकर अर्घपाद्य देकर शिरसे वन्दना करते भये २८ और अपने हाथ दियेहुए आसनमें बैठाकर देवोंके दर्शनकरनेवाले देवलजीसे पूछ भये २९ कि हे मुनि श्रेष्ठ! आपका आगमन बहुत अच्छा हुअ आपके कुलमें कुशल है तपस्या, पढ़ना और नियम निर्विघ्न होते ३० कालमें अतिथिलोग आपके आश्रममें आते हैं आश्रमके पे अच्छीतरहसे फलते हैं ३१ व्याघ्र आदिक हरिणों से वैर तो नह करते हैं तुम्हारे आश्रम में आकर व्याघ्र और मृग भाई भाई व तरहसे रहते हैं ३२ पृथ्वीमें आपका घूमना गृहस्थोंके आनन्द लियेहै क्योंकि घरोंमें वे लोग फँसे रहते हैं तिनको आपके सदृश मुनिके दर्शन कैसे होसक्ते हैं ३३ आपकी भगवान्‌के चरणकी धूरि में बुद्धिहै कुछ कामना नहीं है तिसपरभी हे मुनिजी! शीघ्रही अ पने आनेका कारण कहिये ३४ जब वैश्यने देवपूजित देवलजी इसप्रकार कहा तो मुनिजी वैश्यकेमनके भावकी जाननेकी कामन कर उनसे बोले ३५ कि हे वैश्योंमें श्रेष्ठ! हे धर्म्मके जाननेवाले तुमने धर्म्म से बहुत धन इकट्ठा किया है जिससे नित्यनैमित्तिक क्रिया करतेहो ३६ मनुष्य धनसे राजसभा में आदरको प्राप्त होत है जैसे वीर वैरीकी लड़ाईमें पराक्रमसे जयको प्राप्त होता है ३७ गृहस्थ धन पाकर अत्यन्त पुष्टिको प्राप्त होताहै जैसे शरद्ऋतुके परिपात अन्नको पाकर बैल पुष्ट होताहै ३८ धनी मनुष्योंको वन्

लोग और अन्य मनुष्य नहीं छोड़ते हैं जैसे मधुयुक्त फूलवाले वृक्ष को भौंरे नहीं छोड़ते हैं ३९ धनके अभावसे गृहस्थ लोग दुर्बल होजाते हैं जैसे गरमी के समयमें सबओर तालाब सूखजाते हैं ४० हे वैश्यों में श्रेष्ठ! धन तो आपके घर में बहुत वर्तमान है परन्तु अंगोंकी दुर्बलता कैसे है क्या इससमय में छिपा रक्खेंगे हमसे न कहेंगे ४१ तब वैश्य बोले कि हितके उपदेश में युक्त आप पिता के समानहैं हमारे सदृश आपके पुत्रकेतुल्यहैं इससे हमको आपसे क्या छिपाना योग्य है ४२ हे मुनिश्रेष्ठ! आपके प्रसाद से हमारे सबओर कल्याण है परन्तु वृद्धावस्थामें भी पुत्रका अभाव है यही एक हमारे दुःखहै ४३ तिसीसे अंगोंकी दुर्बलताजानिये मैं पितरों के ऋणसे डरताहूं जिससे मनुष्योंका नरकमें पात होताहै ४४ हे मुनिजी तिस उपायको कीजिये जिससे मैं पुत्रवान् होजाऊं आपके सदृश मुनियोंको पृथ्वीमें कुछभी करनेको अशक्य नहीं है सब कुछ करसक्ते हैं ४५ शिवशर्मा बोले कि इसप्रकार तिस वैश्य श्रेष्ठके वचन सुन देवलमुनि क्षणमात्र मन स्थिरकर आंख मूंदकर ध्यान करनेलगे ४६ फिर हमारे पिताके सन्तान बन्द होनेका कारण देखकर अत्यन्त ज्ञानी देवलमुनि स्मरण करातेहुए बोले ४७ कि हे वैश्य! पूर्वकालमें एकसमय तुम्हारी धर्मचारिणी स्त्री जिसको अपने चित्तमें कियेहो तिसी मनोरथको मैं कहताहूं ४८ उसने पार्वती जीसे कहा कि हे गौरि! हे महादेवजी की प्यारी जो मैं गर्भवतीहूंगी तो तिसीसमयमें छवोंरसोंसे युक्त भोजनोंसे आपको प्रसन्नकरूंगी ४९ धूप, दीप, माला, पान, नाच, वीणाके मुखसे निकले हुए गीत और अनेकप्रकारके लेप लगाऊंगी ५० इसप्रकार सखियोंके आगे तुम्हारी स्त्री सुनाकर पार्वतीजी की भक्तिसेयुक्त होकर तिससमय को परखनेलगी ५१ तो उसी महीनेमें तुम्हारी स्त्रीके गर्भ रहगया तब स्नेह सहित चित्तवाली सब सखियां उनसे बोलीं ५२ कि जो तुमने पार्वतीजी से गर्भ मांगा था वह हुआ अब पार्वतीजी को जो सुना आईथी तिस पूजनको कीजिये ५३ नहीं तो तिस अनुष्ठित विकारसे विघ्नहोगा क्योंकि प्रसन्नहुई देवी वरको और क्रोधित

हुई शापको देतीहैं ५४ इसप्रकार सखियों ने तुम्हारी स्त्रीसे कहा तो वह आनन्दयुक्त, महाभाग्यवाली, पतिव्रता स्त्री नम्रतासे तुमसे बोली ५५ कि हे नाथ! हे प्रभो! सब कामना देनेवाली पार्व्वतीजी को मैं पूजनकरना चाहतीहूं जिनके प्रसादसे मैं वाञ्छित अर्थयुक्त हुईहूं ५६ हे वैश्यवर्य! तुमने ये स्त्रीके शुभ वचन सुन अपनी घर की स्वामिनीको गर्भवती मानकर ५७ परम उत्साहसे प्रसन्नहोकर शीघ्रही नौकरोंको पूजाकी वस्तुओंके इकट्ठा करने के लिये आज्ञा दिया ५८ तो नौकरों ने सम्पूर्ण वस्तु इकट्ठा करदीं तब तुमने अपनी स्त्रीको मधु, अन्न, दाख और गन्ध आदिक दिये ५९ तब तुम्हारी स्त्री ने सब अपनी सखियों को बुलाकर यह कहा कि तुम सब पार्व्वतीजी के पूजनमें सामग्रीको लेलेकर ६० पार्व्वतीजी के स्थानमें जाकर विधिपूर्व्वक पूजा व सन्मानसे देवीजीको प्रसन्न कर आवो ६१ हमारे कुल में गर्भवती घर से बाहर नहीं निकलती इससे मैं नहीं जाऊंगी तुम सब सखियां पार्वती के पूजन में जावो ६२ जब इसप्रकार सखियोंको आज्ञादिया तोवे सब सामग्री लेलेकर पार्व्वतीजी के स्थानको जातीभईं जोकि मतवाले घूमतेहुए भौंरों के स्थानों से युक्त ६३ कोकिलाओं के समूह केलि कररहे हैं आंबके भुंडों से व्याप्तहै हंस, सारस, चकही चकहोंसे मण्डित है स्वच्छ सारस हैं ६४ महादेवजी के गुण कहनेवाले शुक और सारिकाओं से आच्छादितहै हारपूरा लता सेकमें तत्पर उमासखी धारण कियेहै ६५ महादेव और पार्वतीजीके चरणोंके चिह्नोंसे पवित्र पृथ्वी होरही है स्फटिकमणियों से बँधेहुए कुंयें और कल्पवृक्ष के पेड़हैं ६६ महादेवजी नाच कररहेहैं गातेहुए गन्धर्वों से शब्दयुक्त हैं मन्द पवन से कुछ कँपेहुए आम, चम्पक और कोरक के वृक्षहैं ६७ नाचतेहुए मुरैलोंके शब्दों से शब्दयुक्त लता घरहैं और तिन की लीलासे चलायमान प्रकाशितहैं रत्नोंसे प्रकाशित दीप्तिहै ६८ तहांपर पतियों समेत सखियां जाकर पार्व्वतीजी को प्रणाम और प्रदक्षिणाकर भक्तिसे तिनसे बोलीं ६९ कि हे जगन्मातः! हे शिवप्रिये! आपके अर्थ नमस्कारहै हमको कल्याण दीजिये और आप

ी पूजाके लिये बलिलाई हूं तिसको ग्रहण कीजिये ७० शरभ नाम
इय की ललिता स्त्री ने आपसे गर्भ रहनेके लिये यह कहाथा कि
ो मेरे गर्भ रहेगा तब आपकी पूजाकरूंगी ७१ सो आपके प्रसाद
े तिसके गर्भ रहगयाहै तिससे उसने आपकी पूजाकेलिये हमारे
ाथ यह सब भेजी है ७२ क्योंकि तिसके कुल में गर्भवती स्त्री
रसे बाहर नहीं निकलती है इससे हे देवि! वह नहीं आई है प्र-
न्न होकर बलिको ग्रहणकर लीजिये ७३ हे वैश्य! ऐसा कहकर
आपकी स्त्रीकी सखियां तिस बलिको विधिपूर्वक समर्पणकर चंदन
आदिकों से पूजनेलगीं ७४ फिर पार्व्वतीजी से प्रतिवाक्य को न
ाकर घर आकर अपनी सखीसे विषण्ण पार्व्वतीजी को कहतीभई
७५ तिनके वचनसुनकर तुम्हारी स्त्री विमनहोकर चिन्तना करने
लगी कि पार्व्वतीजी क्यों प्रसन्न नहीं हुईं ७६ वे तो जो मैंने पूजन
किया और जैसी मेरे भक्तिहै तिसको जानती हैं क्या पार्वतीजी के
सदृश देवियों को मनुष्यों के बाहर भीतरका हाल नहीं ज़ाना हो-
ताहै ७७ जिससे मैं नहीं गईहूं तिस कारणको जानती हैं फिर मेरी
दीहुई बलिसे क्यों प्रसन्न नहीं हुईं ७८ मैं तो तिनकी अप्रसन्नता
का और कारण नहीं जानती हूं सुन्दर तिनके स्थानमें मेरे न जा-
नेनही का कारणहै ७९ अब जो बीतगया तिसके और तरह करने
को इससमय में समर्थ नहीं हूं गर्भ से मुक्त होकर तिनकी पूजाके
लिये तिन्हीं के स्थानमें जाऊंगी ८० पार्व्वतीजी के अर्थ नमस्कारहै
वे कल्याण को करें ऐसा कहकर तुम्हारी स्त्री गर्भ धारण कियेहुए
स्थितरही ८१ शिवशर्माबोले कि हे विष्णुशर्मन्! इस पहलेके वृ-
त्तान्तको जानकर हमारे पिता मुनियोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त ज्ञानी देवल
जीसे बोले ८२ कि हे मुनिजी! आपकी पतोहूने जो पूजामानीथी
वह करादी फिर पार्व्वतीजी के क्रोध होनेके कारणको कहिये ८३
और जिस कारणसे नहीं गई तिसको पार्वतीजी आपही जानती हैं
सखियोंने भी कहाथा तो पार्व्वतीजी कैसे अप्रसन्न होगईं ८४ तब
देवलजी बोले कि हे वैश्यों में श्रेष्ठ! इस कारणको तुमसे कहताहूं
सुनिये जिससे पार्व्वतीजी के गर्भ का नाश करनेवाला क्लेश

है ८५ सखियां जब पार्व्वतीजी का पूजनकर लौटगईं तब कौतूहल संयुक्त विजया पार्व्वतीजी से बोलीं ८६ कि हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्व्वतीजी! इन मानुषी स्त्रियों ने श्रद्धासे आपको यह बलिदी तिस पर आप क्यों प्रसन्न नहीं हुईं ८७ आपकी प्रसन्नताके लिये उन्होंने धूप, दीप और नैवेद्यसे पूजन किया फिर विना कारणके आप क्यों क्लेशको प्राप्तहुई हैं ८८ देवलजी बोले कि हे वैश्य! ये सखीके वचन सुन श्रेष्ठ देवोंसे पूजित पार्वतीजी विजया सखी से विषादमें कारण को कहनेलगीं ८९ कि हे विजये सखि! वैश्यकी स्त्रीको अज्ञानसे घरसे बाहर निकलने में गर्भ धारण के कारण असमर्थको मैं जानती हूं ९० हमारी पूजाकेलिये उसकी भेजीहुई सखियां आईं परन्तु हमारी सदृशवाली देवी पराये हाथकी कीहुई बलिको नहीं ग्रहण करती हैं ९१ जो उसका पतिही चलाआता तो कल्याणहोता अब हमारे अनादर होनेसे तिसका गर्भ गिरजावेगा ९२ व्रत और पूजन करने में जो स्त्री असमर्थहो तो उसको अपने पतिसे करादेना चाहिये तो भंग नहीं होगा ९३ अथवा पतिसे पूंछकर श्रेष्ठ ब्राह्मण से करादेवे जिससे अपने आप न आकर पूजन किया ९४ और न अपने पतिही से पूजन कराया इससे वैश्यकी स्त्री का गर्भ निष्फल होगया यदि स्त्री पुरुष आकर श्रद्धासे ९५ हमारी पूजन करते तो पुत्र उनके होता देवलजी बोले कि हे वैश्य! यह शाप तुमने और तुम्हारी स्त्रीने भी नहीं ९६ सुना और सखियों ने प्रसाद नहीं दिया तुम्हारे स्त्री पुरुषोंके न जाननेही से पुत्र नहीं हुआ ९७ न जानने की प्रतिविधि परलोक और इसलोक में सुख देनेवाली है हे वैश्य! यह तुमसे सन्तान के अभाव का कारण कहा ९८ जैसे वसिष्ठजी से दिलीपराजाने पुत्र न होनेका कारण सुनकर नन्दिनी गऊको प्रसन्न कियाथा ९९ तैसेही स्त्री समेत तुम कामना देनेवाली पार्वतीजी को प्रसन्नकरो जैसे पूजितहुई नन्दिनी ने राजा दिलीपको पुत्र दियाथा १०० तैसेही तुम पार्व्वतीजी को आराधनकरो वे तुमको पुत्र देंगी तब वैश्यबोला कि हे मुनिजी! राजा दिलीप कौनथे और नन्दिनी कौनथीं १०१ राजा धर्म, अर्थ और कामके फल देनेवा

हादेव आदिक देवताओंको छोड़कर जिन नन्दिनी का आराधन र पुत्रको प्राप्त हुएथे १०२ तिस राजाने पुत्रके लिये कैसे नन्दिनी ा आराधन किया यह सब जो मैंने पूंछा तिसको आप कहिये इस ो सुनकर स्त्री समेत मैं पार्व्वतीजी की सेवा करूंगा १०३ शिव- र्म्मा बोले कि हे विष्णुशर्म्मन्! नम्रतायुक्त हमारे पिता वैश्यका हाहुआ सुनकर मुनिजी पृथ्वी में अत्यन्त पवित्र दिलीपके वृत्तांत हने का प्रारम्भ करनेलगे १०४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येएकाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०१॥

दोसौदोका अध्याय ॥

देवलमुनि बोले कि हे महा बुद्धिमान् वैश्य! राजादिलीप की ुन्दर विचित्र और पाप नाशनेवाली कथा को सुनो १ वैवस्वत- नुके वंश में राजाओं में श्रेष्ठ दिलीपहुए जैसे स्वायम्भुव मनुके ाचीनवर्हि हुएथे २ ये धर्मधारियों में श्रेष्ठ धर्मसे पृथ्वीकी पालना करते और अच्छे गुणोंसे मनुष्यों को प्रसन्न करतेथे ३ तिस राजा े मगधदेश के राजाकी पुत्री सुदक्षिणानाम स्त्रीहुई जैसे इन्द्र के न्द्राणी हुई ४ इस स्त्रीके बहुतकाल बीतनेपर भी पुत्र न हुआ तब अयोध्याके राजादिलीप अपने मनमें यह ध्यान करने लगे ५ कि त्नोंकी खानि सुमेरुपर्वत आदिक नगरत्नोंसे विराजित पृथ्वीरूपी कंकण मैंने धारण कियाहै परन्तु पुत्रहीन मुझको कुछ भूषित नहीं करते दोषही समझ पड़ताहै ६ धर्म, अर्थ और कामको समय पा- कर सेवन किया विरोधित नहीं किया तिसपर भी पुत्र रहित मेरे हृदय में सुखनहीं विद्यमान होता है ७ यज्ञों से विष्णुजी और इ- न्द्रादिक उत्तम देवताओं को आराधन किया बावली बगीचे और कुयें पृथ्वीमें सब ओर बनवाये ८ गऊ, पृथ्वी, सोना, कपड़ा और छःओंरसों से युक्त भोजनों से ब्राह्मण और अतिथियों को भक्तिसे मैंने सन्तोषयुक्त किया ९ और वृत्तिके लिये राजाओं को लड़ाईमें धर्म से जीतकर बड़ेधन से खज़ाने को मैंने बढ़ाया १० उन्मार्ग-

गामी, मतवाले, अपने धर्म्मके लंघन करनेहारे, पितर और देवताओंसे विमुखों को दण्ड दिया ११ वैष्णवी पांचपर्वों में रविवार, पितृकर्म, दशमी और एकादशी तिथिमें स्त्री सेवन नहीं किया १२ ऋतुकालकी अवधिमें स्नान कीहुई अपनी स्त्रीको नहींछोड़ा और विना ऋतुमें तिसके योग्यकालमें जो स्त्रीने प्रार्थना किया १३ तो तिस स्त्रीमें सकाम रमणकिया है इसप्रकार धर्म, अर्थ और काम यथाकाल सेवन कियेहैं १४ तिसपर भी हमारी स्त्रीमें किस दोषसे पुत्र नहींहुआ भूत और भविष्य के जानने वाले हमारे गुरुवसिष्ठ जीहैं १५ उनसे तिस दोषको कहूंगा जिससे मेरे पुत्रनहीं होताहै देवलजी बोले कि इसप्रकार गुरुजीके आश्रम जानेका विचारकर राजा अयोध्याकी ऐश्वर्ययुक्त राज्यको मंत्रियोंके सिपुर्द करताभया १६ तिस पीछे ब्रह्माजीको पूजनकर पुत्रकी कामनायुक्त राजा रानी शुभदिनमें गुरुजीके आश्रमको चलतेभये १७ राजा रानी एकही रथमें स्थितथे वे कुछ दिनोंमें राहको उल्लंघनकर संध्या समयमें वसिष्ठजीके शुभआश्रमको प्राप्तहुए १८ वैश्वदेव के अन्तमें प्राप्तहुए अतिथियों के सत्कार करनेवाले राजा मुनिके स्थानको किस प्रकार देखा कि अग्नि में हवन कीहुई द्रव्योंसे फैलेहुए धुयेंकी मालासे १९ वहांके और आयेहुए मुनियों को पवित्र कररहाहै मृग दूबके समूहोंको खा खाकर पागुरि कररहेहैं २० चारोंओर से मण्डप में आतीहुई हरिणियों को आश्रमके पेड़ोंके पक्षी मिल मिलकर बड़ा शब्द कर रहेहैं जिस शब्दसे स्थान आकुलहै २१ परस्पर व्याघ्र और हरिण आदिक वैर छोड़ेहुएहैं जपके ध्यानमें परायण ऋषियों का क्षणमात्र वेदका शब्द बन्दहै २२ जब पढ़नेका कालनहीं होता है तब बालकलोग खेलरहे हैं ऐसे स्थानमें राजा रानीने क्रिया समाप्त कियेहुए वसिष्ठजीको देखा २३ जोकि पर्णशालामें शांतचित्त बैठेहुएहैं और अरुंधती उनकी स्त्री सेवा कररहीहैं तब राजाने गुरुजीके चरणों को और रानी ने अरुंधतीजी के चरणों को वन्दना किया २४ उससमय में दोनोंने उनको आशीर्वाद दिये तिस पीछे पूजा करनेवालों में श्रेष्ठ गुरुजी राजाकी मधुपर्क आदिकोंसे पूजा

कर यह बोले कि हे राजाओंमें श्रेष्ठ तुम्हारी राज्यमें कुशलहै २५। २६ कुल और अपने धर्मके अनुवर्तीलोक में भी कुशलहै हे वीर तुमने धर्मसे पृथ्वीकी रक्षाकीहै २७ और पृथ्वी सात्विकी धर्मबुद्धि की नाईं तुम्हारे खज़ाने को बढ़ाती है तुम्हारे देशवासी और पुरवासी अपना अपना पालन करलेतेहैं २८ सारयुक्त मेघ स्नेह, साहचर्य्य और सहवास के भावसे जल अच्छी तरह बरसते हैं २९ लक्ष्मीनारायणके भक्त जे तुम्हारे पुरमें स्त्री पुरुषहैं उनके काम्यव्रत उन्हींके वाञ्छितको स्वर्गमें हरिचन्दनकी नाईं फलयुक्त करतेहैं ३० देवलजी बोले कि मुनियोंमें श्रेष्ठ वसिष्ठमुनि इसप्रकार पूछकर योग के प्रभावसे प्राप्तहुए भोजनों से राजा को भोजन कराते भये ३१ और बहुत आदर संयुक्त उदारबुद्धि अरुंधतीजी अनेकप्रकार के व्यंजन और पक्वान्नोंसे रानीको भोजन करातीभईं ३२ फिर स्वस्थ मुनि भोजन करके स्वस्थनम्र बैठेहुए राजाका हाथ अपने हाथसे पकड़कर बोलनेलगे ३३ कि सातों अंग संयुत राज्य, अपने धर्म में रत प्रजा, प्रसन्नहुए बन्धुजन और मंत्री, शस्त्र अस्त्रकी विधिमें निपुण वीर ३४ मित्र अपने वश, शत्रुनाश, और कृष्णजीकी पूजा में परायण मन ये सब जिस राजाकी राज्यमें हों उसको स्वर्ग के राज्यसे कुछ नहींहै ३५ इक्ष्वाकुवंशके धर्म्मात्मा राजा पुत्रोंको उत्पन्नकर उनमें राज्यका भार अर्पणकर तपस्या करने चलेजाते थे ३६ तुम तो जवानहो और पुत्रकामुख नहीं देखाहै इससे तपस्या करनेके अधिकारी नहींहो फिर इसप्रकारकी राज्य छोड़कर किस लिये यहां आये हो ३७ तब राजा बोले कि हे ब्रह्मन्! मैं तपस्या करने को आपके स्थानमें नहीं आया किन्तु स्वर्ग की कामनासे इसप्रकारकी राज्य छोड़कर आयाहूं ३८ हे ब्रह्मन् आपने सत्यही कहाहै कि इक्ष्वाकुके वंशवाले राज्य पुत्रोंमें देकर तपोवनको प्राप्त होतेथे ३९ और फिर स्वर्ग में प्राप्त होकरभी वे पृथ्वी का राज्य नहीं छोड़ते थे क्योंकि पिताकी विमलमूर्ति पुत्रमें स्थितही रहती है ४० हे तात! जैसे बाल्यअवस्था बीतकर जवानी, बुढ़ापा निश्चय प्राप्त होते हैं फिर बुढ़ापाके पीछे पुरुषकी निस्सन्देह मृत्यु होती है

इससे हे ब्रह्मन् पुत्रकी उत्पत्तिके विना हमारे मरने के पीछे ४१।४२ पृथ्वीका राज्य किसका होगा यह हे गुरुजी बतलाइये और तिसी से पुत्रहीन राज्यमें स्थितमेरे ४३ ममता विद्यमान नहीं है हे गुरुजी आप भूत भविष्य और वर्तमान के अच्छी तरहसे जाननेवाले हैं ४४ हे तपोनिधि गुरुजी! किस दोषसे मेरे पुत्र नहीं होताहै आप ध्यानसे दोषको देखकर शीघ्रही मुझसे कहिये ४५ तो सन्तानकी प्राप्तिके लिये तिसकी प्रतिक्रिया करूंगा देवलजी बोले कि वसिष्ठ मुनि तिस राजाके वचन सुन ४६ समाधिसे पुत्रके न होनेका हेतु देखकर राजासे बोले कि हे राजशार्दूल! तुम पूर्व्वसमयमें इन्द्रका सेवनकर ४७ स्नान कीहुई इस स्त्रीको स्मरणकर अपने स्थानको चले तो सन्तानकी उत्कण्ठायुक्त शीघ्रतासे चलतेहुए ४८ तुम्हारी राहमें कल्पवृक्षकी जड़में बैठीहुई कामधेनु स्थितथी उस पूज्य चरणोंकी धूलिवालीको तुमने अत्यन्त क्रोध उत्पन्न कराया ४९ प्रदक्षिणा नमस्कार और अच्छेआचार नहीं किये तब कामधेनुने अत्यंत क्रोधसे तुमको शापदिया कि तुम्हारे पुत्र नहीं उत्पन्नहोवे ५० जब तक हमारी सन्तानकी सेवा न करो पुत्रकी कामनायुक्त ऋतुदानके लिये तुम जल्द जारहेहो तब स्त्रीहीमें मनहोकर तुमने और पहिये के शब्दसे सारथी ने भी शाप नहीं सुना अब तुम कामधेनुकी सुता की सुता इस सुतासमेत नन्दिनीको ५१।५२ इस स्त्री समेत आराधन करो तो वह पुत्रको देगी देवलजी बोले कि वसिष्ठऋषि के इसप्रकार कहतेही वह नन्दिनी ५३ वत्सके स्नेहसे दूध चुवाती हुई तपोवनसे प्राप्त होगई तिसको देखकर मुनियों में श्रेष्ठ वसिष्ठ मुनि प्रसन्न हृदय होकर नन्दिनीको दिखलाकर राजासे फिर बोले ५४ कि हे राजन्! यह स्मरणमात्रही से प्राप्त होगई है इससे अपनी कार्य्यसिद्धि को समीपही स्थित जानो ५५ वनमें तुम इसके पीछे पीछे चलकर आराधना करो और स्थान में तुम्हारी स्त्री आराधना करे तो प्रसन्न होकर नन्दिनी निस्सन्देह पुत्र देगी ५६ हे धनुर्द्धर! हे राजेन्द्र! जिस प्रकारसे वनका उत्पन्न कोई जीव इसका तिरस्कार न करसके तैसेही वनमेंचराइये ५७ तबतो थोड़ा

बोलनेवाले राजा ने नन्दिनी की सेवा स्वीकार करली तदनन्तर तापस वसिष्ठमुनि राजा और रानीको रात्रिमें सोनेके लिये अच्छा पर्णशाला देतेभये जहांपर नियत मानस, राजाओं में श्रेष्ठ दिलीप स्त्री समेत कुश बिछीहुई पृथ्वीमें रात्रिको व्यतीत करतेभये ५८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्सहस्रसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येद्व्यधिकशततमोऽध्यायः २०२॥

दोसौतीनका अध्याय॥

यमुनाजीका माहात्म्य वर्णन॥

देवलजी बोले कि प्रातःकाल राजा स्त्रीसे फूल आदिकोंसे पूजित नन्दिनी गऊकोलेकर वनको चलतेभये १ तिस देवीके चलतेहुए छायाकीनाईं राजाभी चलताभया जब वह घास खानेलगे तो राजा भी मूल आदिक खानेलगे २ वृक्षकी छायामें बैठे तो पीछेसे राजा भी बैठजावे जब वह जल पीनेलगे तो राजाभी जल पीने लगजावे ३ और कोमल घासके कवल देवे डांसोंको दूरकरे और खुजलावे इसप्रकार गुरुजीकी कामधेनुको सेवनकरे ४ जब नन्दिनी सन्ध्याको लौटे तो खुरकी उठीहुई धूलिसे राजाके अंगोंको पवित्र करे ५ और भारी नीचेके भारसे धीरे धीरेचले तब तो यह नन्दिनी राजाके भारी कार्यके भारसे दबीहुईकी नाईं धीरे चलनेमें शोभितहुई ६ जब मुनिके आश्रम के समीप आवे तो रानी चन्दन, अक्षत, नैवेद्य और धूप आदिकों को लेकरजावे ७ और उसको विधिपूर्वक पूजनकर वारंवार प्रणामकर प्रदक्षिणा भी कर हाथजोड़कर आगे खड़ी होजावे ८ तब नन्दिनी श्रद्धासे रानीकी कीहुई पूजाको ग्रहण कर राजा और रानी समेत आश्रम को जावे ९ इसप्रकार दृढ़व्रत करनेवाले दिलीप के नन्दिनी गऊकी आराधना करते हुए इक्कीस दिन व्यतीत हुए १० तदनन्तर तिस राजाके प्रभावके जानने की इच्छासे नन्दिनी निर्भय अन्तःकरण समेत होकर घासयुक्त हिमवान्की गुहामें प्रवेश करगई ११ तब तो राजाहिमवान् के कँगूड़े की शोभा देखनेलगे उससमय में एक सिंह कि जिसके आगमन

को राजाने नहीं देखा वह जबर्दस्तीसे नन्दिनीको पकड़ लेताभया १२ तबतो नन्दिनी दुःखितकीनाईं होकर धनुर्द्धारी राजाके चित्तमें दयाके उदयको उत्पन्न करती हुई अत्यन्त रोनेलगी १३ तिसके रोनेको सुनकर तिससमय में राजा हिमवान् के कँगूड़े में लगीहुई अपनी दृष्टि को वहांसे हटालेते भये १४ और आंशू बहाती हुई गऊ के ऊपर तीक्ष्ण डाढ़ और नहवाले सिंहको देखकर क्लेशयुक्त होगये १५ और सिंहसे पकड़ीहुई को देखकर धनुर्द्धारी राजा तरकस से बाण निकालने को दहिना भुजा निकालते भये १६ और गुणसे पूरित बाणको तरकससे निकालकर सिंहके मारने को खींचते भये १७ तब तो सिंह के देखने से राजाका सब अंग जड़ होगया बाण छोड़ने में समर्थ न हुए उस समय में राजा बड़े विस्मित हुए १८ इस प्रकार विस्मित राजाको देखकर सिंह मनुष्यों की वाणी से फिर विस्मय कराताहुआ यह वचन बोला १९ कि हे राजन्! आपको सूर्य्यवंशमें उत्पन्न दिलीप जानताहूं तुम मुझको महादेवजी के गण कुम्भोदर नाम जानिये २० यह जो आपकी दृष्टिगोचर देवदारु वर्त्तमान है इसको हे वीर! स्निग्धचित्त पार्वतीजी ने पुत्रकी नाईं पालाहै २१ एकसमयमें हे महाराज! वनके हाथी ने अपना गण्डस्थल खुजलाकर इसकी कोमल त्वचाको उखाड़ डालाथा २२ तब इसप्रकार देवदारुको देखकर करुणायुक्त पार्व्वतीजी इसकी रक्षामें सिंह बनाकर हमको यहां स्थापित करती भई २३ और यह कहतीभई कि हे कुम्भोदर सुनिये जो प्राणी यहां आवे तिसको तुम यहीं बसतेहुए खाजाना २४ हे राजेन्द्र! तबसे लेकर सब देवताओं से पालित तिनकी आज्ञाको पालताहुआ मैं इस कन्दरा में बसताहूं २५ अपनी देहके जड़ होजाने में तुमको विस्मय न करना चाहिये क्योंकि इस हिमाचल पर्व्वतमें बहुतसी महादेवजी की माया वर्तमानहै २६ और सिंहकी नाईं आप हमारे मारनेमें योग्य नहीं हैं जिससे कि हमारी पीठपर चढ़कर महादेवजी बैलपर चढ़तेथे २७ हे वीर! आप लौटजाओ सब अर्त्थ के साधन करनेवाली अपनी देहकी रक्षाकरो दैवने इसगऊको हमारे खानेके

लिये भेजाहै २८ देवलजी बोले कि इसप्रकार वीर संबोधनसे युक्त सिंहके वचन सुन जड़हुई देहवाले दिलीप तिससे बोले २९ कि हे सिंह ! संसारकी सृष्टि पालन और संहारके कारण शिवजी और संसारकी माता पार्व्वती को मैं नमस्कार करताहूं ३० हे मृगों के स्वामी तुम भी उनके सेवक होनेसे हमारे मान्यहो इससे जो मैं वचन कहताहूं तिसको सुनकर आज्ञा दीजिये कि मैं क्याकरूं ३१ ब्रह्माजी के पुत्र वसिष्ठजी हमारे गुरु हैं यह आपको विदितही है तिनकी यह सब अर्थके साधन करनेवाली नन्दिनीनाम गऊहै ३२ उन्होंने सन्तानकी उत्पत्तिके लिये हमको आराधन करनेको दीथी जिसको मैंने अच्छीतरह से कईदिन आराधनभी कियाहै ३३ फिर लघुतर्णक माता यह पहाड़की कन्दरा में तुमने पकड़ली है इससे महादेवजी के सेवक होनेसे बलसे हम तुमसे छुटाने में असमर्थ हैं ३४ हम वसिष्ठमुनिके आगे नन्दिनीकेविना कैसे जावेंगे क्योंकि नन्दिनी कामधेनुकी कन्याकी कन्याहै यह संसारमें सेवने योग्य और यशस्विनी है ३५ इसके समान और गऊ नहीं है जिससे वसिष्ठजी को मैं प्रसन्नकरूंगा तिससे इसपूज्य गऊको छोड़कर अपना भोजन कीजिये ३६ अयश से मलीन अपनी देहको मैं देदूंगा इसप्रकार करनेसे ऋषिके धर्मकी हानि नहींहोगी और तुम्हारा भोजन होजायगा गऊ के अर्थ में प्राण छोड़तेहुए हमारी भी उत्तमगति होगी ३७ देवलजी बोले कि इसप्रकार सुनकर सिंह चुपहोरहा और धर्मका जाननेवाला राजा तिसके आगे नीचे का मुखकर गिरगया ३८ और सुदुःसह सिंहके पातको परखनेलगा कि उसके ऊपर श्रेष्ठ देवताओं की छोड़ीहुई फूलोंकी वर्षाहुई ३९ और गऊने कहा कि हे पुत्र उठो ये गऊके वचन सुनकर राजा उठा और माताकी नाईं तिसगऊ को देखा सिंहको नहीं देखा ४० तब तो नन्दिनी विस्मय युक्त श्रेष्ठ राजासे बोली कि सिंहरूपिणी मायासे तुम्हारी मैंने परीक्षा लीहै ४१ हे राजन् मुनिके प्रभावसे यमराज मनसे भी हमारे पकड़नेको समर्थ नहीं हैं फिर और जीवोंकी हमारे पकड़नेमें कैसे शक्ति होसक्ती है ४२ अपने शरीरके दानसे तुम हमारी रक्षाकरनेमें उद्यत

हुएहौ इससे मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं मनोवाञ्छित वरदानको मांगिये४३ तब राजाबोले कि आपके सदृशोंको देहधारियोंके भीतरका कुछहाल छिपा नहींहै इससे हे मातः! आपजानतीहौ उसी हमारे वांछितको दीजिये ४४ मगधदेशके राजाकी कन्यामें वंशकरनेवाला पुत्र दीजिये क्योंकि आपके सदृश स्वच्छों को कुछ असाध्य नहीं है ४५ ऐसा कहकर हाथजोड़कर चुपचाप नेत्रबन्दकर तिसके उत्तर की अपेक्षा करताहुआ राजा गऊके आगे खड़ाहोगया ४६ देवलजीबोले कि तिसराजाके ये वचनसुन पितृ, देव, ऋषि, मनुष्य और भूतोंके अर्थकी साधनेवाली नन्दिनी राजासे ये वचनबोली ४७ कि हे पुत्र! पत्तोंके दोनामें दुहकर ईप्सित हमारेदूधको तुम पिवो और स्थानमें गुरुजीकी आज्ञासे शेष दूधको फिर पिवो ४८ तो वंशका करनेवाला और शस्त्रअस्त्रके तत्त्वका जाननेवाला पुत्र तुम्हारेहोगा देवलजीबोले कि जब गऊने इसप्रकार कहा तो राजा नम्रतासे उन से बोला ४९ कि हे मातः! सबक्रियाकी विधिसे बचेहुए आपके दूध को पिऊंगा आपके वचनरूप मीठे अमृतको पाकर मैं तृप्त होगया हूं ५० जैसे सारङ्गकादम्बिनी के जलको पाकर और नहीं इच्छा करताहै तैसेही मैं हुआहूं आपकी शुश्रूषासे सब मेरे उत्पन्नहोगया ५१ जैसे मूढ़ बुद्धिवाले के सब मनुष्यों में पूज्यविद्या आजावे आप की नानीने जो शापदियाथा वह हमको वरदान होगया ५२ तिन को छोड़कर हमारे पुत्रका लाभ और आपके दर्शन कैसे होते तिस पर भी हे मातः! आपके सदृश वरही के लिये आराधना कीजाती हैं मोक्षके देनेवाले महादेवजीसे कोई विषकी आकांक्षा नहीं करताहै ५३ देवलजी बोले कि राजाके ये वचनसुन गऊप्रसन्न होकर साधु साधु ये वचन कहकर तिनके साथ आश्रमको चली ५४ और पहले दिनकी नाईं तहांपर राजाकी स्त्रीने पूजनकिया फिर अङ्गधारण कियेहुई कार्यकी सिद्धिकी नाईं वह गऊ शोभितहुई ५५ कमलनयनी रानी राजा के मुखको प्रसन्न देखकर तिस अपने कार्य्य को सिद्ध जानतीभई जिसके लिये यत्न होरहाथा ५६ तदनन्तर राजा रानी विधिपूर्वक गऊ की पूजाकर उन्हीं के साथ कृतकृत्यहुए गुरु

जी के आगे जातेभये ५७ तब इन्द्रियों को अतिक्रान्तकर ज्ञानके निधि मुनिवरजी राजा रानी के मुखरूपी कमलोंको प्रसन्न देखकर आनन्द करातेहुए यह बोले ५८ कि हे राजन्! निश्चय तुम्हारे दोनों के ऊपर यह गऊ प्रसन्नहुई है क्योंकि इस समयमें तुम दोनों की अपूर्व मुखकी कान्ति दिखलाई देती है ५९ कामधेनु और कल्पवृक्ष कामके पूरण करनेमें प्रसिद्धहैं तिसके अपत्यकी आराधनाकर अर्थ सिद्धहुआ तो क्या अद्भुतहै ६० जो पापरहित दूरहीसे कीर्त्तनहोने में सब मनोरथों को देती है वह निकटही श्रद्धासे सेवनकीहुई सुर-तरंगिणीकी नाईं क्यों न देवेगी ६१ ज्ञानसे मैंने इस अद्भुत चरित्र को विदित करलिया है जो गऊने आपकी परीक्षाकी है हे राजन्! तुम भी अपने धर्मकी यथोचित रक्षा करतेहो ६२ तुममें यहहमारा मन प्रसन्नताके भावको बोधकरताहै जैसे लक्ष्मीजी हरिजी के और पार्वतीजी महादेवजी के स्थानमें प्रसन्नहैं ६३ तैसेही स्त्रीसमेत गऊ की पूजनमें परायण होकर रात्रिको बिताइये और प्रातःकाल स-माप्त विधिसे अपनी पुरीको जाइये ६४ देवलजी बोले कि हे वैश्य! इसप्रकार गऊकी आराधनाकर प्रातःकाल वांछित प्राप्तहुए राजा स्त्री समेत गुरुजीकी आज्ञापाकर रथपर चढ़कर घरको जातेभये ६५ कुछदिनों में दिलीपजी के रघुपुत्र उत्पन्न हुए जिनके नाम से पृथ्वी में रघुकावंश प्रसिद्ध हुआहै ६६ जो मनुष्य राजादिलीपकी इस कथाको पढ़ेगा वह धन, धान्य और पुत्रको प्राप्तहोगा ६७ हे वैश्या श्रेष्ठ पुत्रकी प्राप्तिके लिये इस अपनी बुद्धिकेसाथ शीघ्रही पार्वतीजीको प्रसन्नकरो तो निश्चय वहतुमको कुलमें श्रेष्ठ गुणयुक्त और पापरहित पुत्रको देवेंगी ६८ शिवशर्माजी बोले कि देवलमुनि राजादिलीपका अत्यन्त ललित पुण्यकारी चरित कहकर और पार्वतीजी के पूजनकी विधि उपदेशकर अपने स्थानको प्राप्तहो-जातेभये ६९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहा-त्म्येत्र्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २०३ ॥

दोसौचारका अध्याय ॥

शिवशर्माजी बोले कि हे विष्णुशर्मन् ! तदनन्तर शरभ वैश्य
स्त्री समेत पूजाकी सामग्री लेकर श्रीपार्वतीजी के स्थानको गये १
और वहां दोनों विधिपूर्वक स्नानकर भक्तियुक्त होकर पुत्रकी का-
मनासे पार्वतीजी को फूल, धूप और दीपसे पूजन करतेभये २ इस
प्रकार श्रद्धासे जब उन्हों ने सातदिन पूजन किया तो पार्वती जी
निर्मल मनयुक्त हुई वाणी से प्रत्यक्ष बोलीं ३ कि हे साधो ! भो वैश्य!
मैं तुम्हारी दृढ़भक्ति से प्रसन्नहुई हूं जिसलिये तुम यत्न करते हो
तिससे पुत्रको दूंगी ४ तुम इन्द्रके खाण्डव वनको जावो विलम्ब
मतकरो तहांपर महापुण्यकारी उत्तम इन्द्रप्रस्थ नाम तीर्थ है ५
और सब कामना देनेवाला बृहस्पतिजी का कियाहुआ निगमो-
द्बोधकनाम तीर्थभीहै वहांपर पुत्रकी वाञ्छासे स्नानकरो ६ हे तात!
तहांके स्नानसे तुम्हारे पुत्र होगा तहांहीं स्नानकर मैंनेभी राक्षसों
के मारनेवाले स्वामिकार्तिक पुत्रको पायाहै ७ शिवशर्माजी बोले
कि ये पार्वतीजी के वचन सुन हमारे पिता स्त्री समेत पुत्रकी वाञ्छा
से इस सत्तीर्थमें आये और स्नान किया ८ फिर सौ सामग्रीयुत
गौवें ब्राह्मणों को दीं देवता और पितरोंको यथाविधि तर्पण कर
यतमानस दोनों स्त्री पुरुष इष्टके लाभसे मुखरूपी कमल फूलकर
अपने घरको चलेआये १० तबतो हमारी माताके तिसी महीने में
गर्भहुआ नव महीने बीतनेके पीछे शुभ दशवें महीने में मैं उत्पन्न
हुआ ११ हे विष्णुशर्मन् ! जो मैंने पूर्वकाहाल तुमसे कहा यही
सब बीसवर्ष तक पिताजी के मुखसे सुना १२ एकसमय में पिता
जी घरके काममें हमको समर्थ देखकर घर हमको अर्पण कर सं-
सारसे वैराग्य को प्राप्तहुए १३ गोविन्द में आसक्तमन धर्मात्मा
पिताजी विषयकी आसक्तिकी निन्दा और विष्णुजी की भक्ति को
वारंवार स्तुति करतेहुए हमसे बोले १४ कि हे सुमते ! वृद्धावस्था
प्राप्तहुई और हमारे बाल पकगये अब साधुओं के सेवित गोविन्द
जी के चरणकमल को मैं सेवन करूंगा १५ तिनकी सेवासे जिसक

मन स्वच्छ और स्थिर होताहै वह पुरुष आत्मसन्तुष्ट हुआ कुछ वाञ्छा नहीं करताहै १६ सुख दुःखों से निष्काम होकर सुकृत और दुष्कृत भोग करताहुआ प्राकृत और तिसकी समाप्ति में देह छोड़ताहुआ अज होजाता है १७ तबतक द्रव्यगुण सुखहैं जबतक चित्सुख नहीं है चित्सुखकी प्राप्तिमें द्रव्यगुण सुख इसप्रकार तुच्छ होजाते हैं जैसे अमृतका माठा तुच्छ होजाताहै १८ भगवान् की माया बलवान्है जो देहधारी पुरुषोंको मोह कराती है हित अहित को मदिरा के मदकीनाईं नहीं जानती है १९ बाललीला करनेवाले प्रभु अपनी इच्छासे कालमें विद्या और अविद्या से प्रवृत्ति और निवृत्तिको करते हैं २० हे तात! फलकीइच्छा करनेवाले करके जब वेदका कहाहुआ कर्म कियाजाता है वह परा प्रवृत्तिहै तिनका ईश्वरमें अर्पण होताहै २१ जैसे जलेहुए बीज यत्नसे नहीं जगते हैं और जैसे निष्काम भगवान्में अर्पितहुए कर्म भी नहीं जगतेहैं २२ सुख और दुःख देनेवाले कर्म्मोंका लयहोना मोक्षहै और तिसकी उत्पत्ति होना बन्धहै यही शास्त्रका निर्णयहै २३ इससे मैं वेदोक्त कर्म करता फलकी अभिलाष नहींकरता और भगवान्की भक्ति हृदयमें धारण करताहुआ तीर्थोंमें घूमूंगा २४ इसप्रकार प्रारब्धकर्म भोगता और औरोंको तर्जना करताहुआ सत्संगरूपी औषधको पीकर संसाररूपी रोगको नाश करूंगा २५ शिवशर्माजी बोले कि हे विष्णुशर्मन्! इस प्रकार तिन अपने पिता के वचन सुन जो हम बोलते भये तिसको तत्त्वसे तुमसुनो २६ यहजन दुराराध्य हमारा यश कहेगा इससे दुष्टकुटुम्बसे निकलकर चलागया २७ हे तात! यह विष्णुपदी त्रिभुवन को पवित्र करनेवाली है दूरही से स्मरण कीहुई पापको हरती है इससे इसको तुम क्यों छोड़तेहो २८ पापी मनुष्य भी जो मगध में मरताहै वह भी गंगाजीमें पापअस्तहोकर अशुभको छोड़कर स्वर्गको जाताहै २९ सगरमहात्माके साठहजार पुत्र कपिलजीके क्रोधसे जलगयेथे वह जिसकेस्पर्शनहीसे स्वर्गको चलेगये ३० इस स्वर्गकी श्रेणी, मुक्तिकी भी करनेवाली और मोक्ष चाहनेवालों से सेवित तिसको छोड़कर और जगह न जाइये ३१

समीप में देवताओं से पूजित गंगाजी को अनादर न करो हे महाभाग ! जो तुम इच्छा करोगे वह सेवन करनेसे गंगाजी देंगी ३२ तिर्यक्योनि वाले विना ज्ञानहीके जो जलमें मरजाते हैं तो वे ब्रह्महोजाते हैं यह कथा तुमने छोड़दीहै ३३ शिवशर्माजी बोले कि ये वचन सुनकर हमारे पिता सब विषयोंसे पराङ्मुख होकर घरमें बसतेभये ३४ प्रतिदिन गंगाजी में तीनोंकाल स्नानकर जिसघर में पुराण होताथा वहां नित्यही जातेथे ३५ हे पुत्र ! एक समय में वह धीरपुरुष यमुनाजी के माहात्म्य को सुनकर इस तीर्थके माहात्म्य को सुनतेभये ३६ अविमुक्त, हरिद्वार, प्रयाग, पुष्कर, अयोध्या, द्वारिका, काञ्ची, मथुरा तथा और तीर्थोंसे ३७ सब तीर्थमय इसकी पुण्य सौगुणा अधिक विद्वान् ने कही तिसको सुनकर हमारे पिता ३८ घर छोड़कर सबसे अलक्षित होकर इसी तीर्थमें हमारी तुम्हारी नाईं आगये और गोविन्दजी के चरणों की सेवा करनेलगे ३९ और मोक्षकी वाञ्छासे हमारे पिताजी यहां आकर निगमोद्बोधक तीर्थमें तीनोंकाल स्नान करतेहुए ४० कुछ महीना इस उत्तम तीर्थमें बसतेभये ४१ वहींपर ब्रह्माजी के स्थानमें वह बुद्धिमान् निस्पृह होकर अपनी क्रिया करनेलगे एक समयमें सहसासे तिनके अत्यन्त घोरज्वरहुआ ४२ तो ज्वरकी भारी पीड़ासे बेहोश होकर मोहयुक्त होगये मुहूर्त्तमात्र बेहोशही पड़ेरहे ४३ फिर पीछेसे होशमें आकर यह चिन्तना करनेलगे कि हमको बड़ाकष्ट प्राप्तहुआ मेरा धर्मात्मापुत्र दूरहै ४४ जो बुद्धिमान् ज्वरसे तप्तअंग वाले हमको समझाता अगम्यागमन जो घोरपाप हमने किया ४५ तिसका प्रायश्चित्त भी नहीं कियाहै तो क्या मेरीगति होगी हमारा पुत्र आवेगा तो उसको द्रव्यदूंगा ४६ जो मैंने घरमें छिपा रक्खीहै जिसको देखाही नहीं है तिसको भी दूंगा शिवशर्माजी बोले कि इसप्रकार तिनके चिन्तना करतेही वर्षासे पीड़ित राह चलने वाला शीतसे पीड़ित होकर देह कँपाताहुआ तिस समय में पर्णशालामें प्रवेश करताभया और जो पर्णशालामें बैठेथे उनके पास जाकर ४७।४८ मुनि समझकर शिरसे उसने वन्दनाकिया तिस

पीछे उनसे बोला कि हे मुने ! संध्याप्राप्त होगई अब क्यों सोरहेहो ४९ सूर्य्य अस्त होरहेहैं यह सोनेका समय नहींहै इसप्रकार जब राहीने हमारे पितासे कहा ५० तो ज्वरसे तप्तअंगहुए शरभनाम हमारे पिता बड़ेकष्ट से उससे बोले कि हे राही ! जो तुम्हारे आगे वचन कहताहूं तिस को सुनो ५१ और सुनकर वैसाही करो तुम हमारी भाग्य से प्राप्तहोगयेहो शरभनाम मैं वैश्यहूं कान्यकुब्ज में मेरा घरहै ५२ पुत्रकेमुखसे इसतीर्थकी माहात्म्य सुनकर स्त्री मित्र और पुत्रोंसे रोंकागया भी यहां प्राप्त होगयाहूं ५३ हे साधो ! कई महीना हमको यहां आयेहुए बीतचुकेहैं परन्तु तीनदिनसे हमको ज्वरकी पीड़ा होरहीहै प्राण हमारे निकलकर फिर प्राप्तहोगयेहैं कुछ अभी उमर बाक़ी रहगईहै ५४।५५ जो यमराजका घर देखकर फिर प्राप्त होगया कुछ भाग्यके उदयसे तुम हमको प्राप्त होगयेहो ५६ हे मित्र! हमको हमारेघर लेचलो तो बहुत द्रव्य घरजातेही तुमको दूंगा इससे हे कृपानिधि ! दयाकरो ५७ यहांपर पृथ्वी खोदकर हमारा धन ग्रहणकरो शिवशर्माजी बोले कि ऐसासुनकर वह दुर्बुद्धि, गांव का आदमी, विषयमें लम्पट और धनकालोभी बोला कि तुम्हारे कहनेको मैं करूंगा ऐसा कहकर तिस पृथ्वीके भागसे धन निकालकर ५८।५९ शरभके आगे रखकर बोला कि हे वैश्योंके स्वामी! यह तुम्हारा धन पृथ्वीके भागसे मैंने ६० निकालाहै इससे जल्द हमको पालकी लानेके लिये दीजिये जिसपर ज्वरसे पीड़ित आप को चढ़ाकर तुम्हारे स्थानको लेचलूंगा ६१ शिवशर्माजीबोले कि जब उसने इसप्रकार कहा तो उन्हों ने तीनपल सोना दिया तब वह हमारे पिताकी द्रव्य लेकर लवणपत्तनको गया ६२ वहां एक रात्रि बसकर दोपल सोना देकर सब सामग्रियों और कहारों समेत पालकीको ले आताभया उस अधर्मबुद्धिने एकपल सोना उसमेंसे आपही लेलिया फिर शरभ वैश्यको पालकीपर चढ़ाकर ६३।६४ कहारोंको जल्द चलाताहुआ कान्यकुब्जको चला इस श्रेष्ठ तीर्थ का जल उसने कमण्डलुमें रखलियाथा ६५ वही प्याससे व्याकुल वैश्यको थोड़ा थोड़ा पिलाताथा तदनन्तर राहही में तालाब के कि-

नारे भोजन करनेको सब उतरे ६६ वहां स्नान भोजनकर शीघ्रही चले कुछ भूमि चलकर सब प्यासे हुए तो कमण्डलुका ६७ जल पीकर शरभको भी पिलातेभये तदनन्तर महाभयानक विकट नाम राक्षस ६८ निर्जन वनमें घूमताहुआ तिन सबको देखताभया और तिनको देखतेही वह वेगवान् भूखसे व्याकुल, मुख फैलाकर ६९ चरणों के आघात से पृथ्वीको कँपाताहुआ दौड़ा और वेगसे समीप आकर कहारों और राही को ७० कोशों में पकड़कर घुमाता भया तो घुमातेही वे सब प्राणरहित होगये तब पृथ्वी में पटक देता भया ७१ फिर तिनके मांसको खाकर कोशसे रक्त पीकर बोला कि हमारे आगेसे यह रोगसे पीड़ित मनुष्य कहां जावेगा ७२ जल पीकर पीछेसे इसको भी खाऊंगा ऐसा बुद्धिकर कमण्डलु में धरेहुए तीर्थके जलको ७३ वह श्रेष्ठ राक्षस मुखमें छोड़ताभया जलके छोड़तेही तिसको पहले जन्मका स्मरण होआया ७४ तो शरभके मारने से निवृत्त होगया और पूर्वजन्मके कियेहुए पाप भी स्मरण आगये ७५ जिससे ब्राह्मण से उत्पन्न होनेसे भी राक्षसही होनापड़ा फिर वह पापको स्मरणकर ज्ञानयुक्त होकर जल्द शरभके समीप जाकर उनसे बोला ७६ कि हे मनुष्यों में शार्दूल ! आप कौनहैं और ये मनुष्य कौनथे जिनको घोररूप अधम राक्षस मैंने खालियाहै ७७ और किस श्रेष्ठ तीर्थका यह जलहै जिसके प्रभावसे मुझ पापीको भी पूर्व्वजन्मका स्मरण होगयाहै ७८ तब वैश्य बोले कि हे राक्षसों में श्रेष्ठ ! कान्यकुब्ज में मेरा घरहै तीर्थों में घूमताहुआ इन्द्रप्रस्थ में मैं प्राप्त होगया ७९ तो वहांपर विधिके योगसे ज्वर आगया तो उससे बहुत दुःखी होकर हमारी बुद्धि असत्मार्ग घर जानेको उत्पन्न हुई तब कोई राही वर्षसे पीड़ित प्राप्त होगया ८० तो मैंने उससे प्रार्थनाकी कि पालकी लेआकर हमको हमारे घरभेजो तब वह राही शीघ्रही पालकी लेआकर ८१ हमको उसीमें बैठाकर हमारे घरको चलाथा उसको और कहारोंको इससमय में तुमने खालिया है ८२ अब तुमने जिस तीर्थके जलको पियाहै तिसको सुनो इन्द्र के खाण्डव वनमें नदियों में श्रेष्ठ यमुनाजी हैं ८३ तिसके किनारे

तीर्थों में उत्तम इन्द्रप्रस्थ नाम तीर्थ है तहांही सब अर्थ साधन करनेवाला बृहस्पतिजी का तीर्थ ८४ निगमोद्बोधक नाम है जिसके जल खानेसे तुमको स्मरण होगया जो तुमने यहांपर पूंछा वह सब तुमसे कहा ८५ हे निशाचर ! अब मैं कुछ तुमसे पूंछताहूं तिसको जल्द कहिये पूर्व्वजन्मके किये कर्मको इससमय में यहां तुम स्मरण करतेहो इससे यह कहो कि क्या तुमने पाप कियाथा जिससे राक्षस हुएहो ८६ तब राक्षसबोला कि पूर्व्व समयमें मैं पुण्यकारी वेद जाननेवालों के कुलमें ब्राह्मण हुआथा जोकि दुराचारी और अधर्म्मात्माथा यह सब चरित तुमसे मैं कहताहूं सुनिये ८७ नित्य ही जुआड़ियों से मैं अपनी वा पिता की द्रव्य बहुत हार जाताथा ८८ तब हमारे पिताने मेरे कर्म्मको राजासे कहकर द्रव्यहीन मुझको पुरसे निकालदिया तब मैं गांवके समीपही गांवमें चलागया ८९ तहांपर मेरा मित्र ब्राह्मणोंमें उत्तम देवक नामथा उसने बड़ा आदर कर अपने घरमें रक्षाकिया ९० और तहां सुखसे बसनेकोदिया एक दिन मित्रके कहीं चलेजानेपर कामातुर मैंने तिसकी अत्यन्त रूपवती स्त्री से जबर्दस्ती भोगकिया ९१ तब वह पतिव्रता स्त्री उसी क्षणमें महाविष खाकर मरगई तिसको मृतक देखकर अंधकारयुक्त आधीरातमें मैं भागा ९२ तब तो जल्द भागतेहुए मुझको राजाके दूतोंने चोर समझकर पकड़कर शिर काटलिया ९३ फिर यमराज के दूतोंने मुझे लेजाकर यमराजकी आज्ञासे घोर रौरव नरक में डाल दिया ९४ वहांपर साठहजार वर्ष तीव्र यातना को भोगकर तिसी पापसे राक्षस होगया ९५ हे वैश्यों के स्वामी ! राक्षसभाव में भी सौवर्ष बीतचुकेहैं अब मुझसे तिसउपाय को कहिये जिससे मुक्तिपाजाऊं ९६ हे साधो ! पुण्य अर्पितहोने मैं कहताहूं तिसको आदरसे सुनो जिससे श्रेष्ठ तीर्थ का यह जल मेरेमुखमें प्राप्तहुआ ९७ तिसीजन्म में मैंने एकादशी का व्रत संसर्ग से कुछ अपनी इच्छासे न करके रात्रिमें जागरण किया ९८ तदनन्तर द्वादशी में स्नानकर भोजन करनेको उद्यतथा कि मेरे घरमें कोई वैष्णव विष्णु जीका रूपधारण कियेहुए प्राप्तहुआ ९९ तिसको देखकर कोपकर

मैं उसके आगे दुर्वचन कहनेलगा कि हे दुराचार ! हे दाम्भिक! स्त्रियों के बीचमें कहांजाताहै १००, ऐसा कहनेपर वह धीर, मान और अपमानमें तुल्य, चुपचाप मेरे घरसे निकलकर जो चला १०१ तो सम्मुख आतीहुई मेरी पतिव्रता स्त्री तिससाधुके चरणों में गिर कर तिसको घर लातीभई १०२ मैंने उन महात्माका अपमान भी कियाथा तिसपर उनके क्रोध न हुआ मेरी स्त्री के आदर करनेसे आनन्दही में रहे क्योंकि शत्रु और मित्र उनके समान होते हैं १०३ फिर मेरी स्त्रीने विधिपूर्वक पूजनकर बिछौनेपर बैठाकर मुझसे कहा कि हे जीवेश ! भोजन कराइये और तीनों भुवनोंको जीत लीजिये १०४ तिस पतिव्रताने जब मुझसे ऐसा कहा तो म्लानमुख मैं तिन प्रसन्नमुख महाशयसे बोला कि आप उठकर भूंखको शान्त कीजिये १०५ ऐसाकहकर स्त्री की प्रेरणासे तिनके चरणको फिर धोकर उत्तम आसनपर बैठाकर १०६ अन्नसे पूर्णपात्रको तिस ज्ञानीको मैंने दिया और जलभी तिनके हाथमें दिया १०७ तब वह धर्मात्मा इच्छापूर्वक भोजनकर विकाररहित हुआ हरेराम हरेकृष्ण जपता हुआ चलागया १०८ हे वैश्य! स्त्रीके कहनेपर पूर्वजन्ममें मैंने यह पुण्य कियाहै जिससे मुझको तीर्थका जल प्राप्तहुआहै १०९ शिवशर्माजी बोले कि हे विष्णुशर्मन् ! ये वचन कहकर राक्षसके स्थित हुएही राही और कहार सुन्दर देह होकर आकाशमें बोले ११० कि हे वैश्योंके स्वामी अपमृत्युको तो प्राप्तहुए परन्तु आपके प्रसादसे यहजल पीकर देवभावको प्राप्तहोगये १११ तुम्हारे संगमें धनके लोभसे जो मैं चलाथा तिससे मरणके अवसर में धनकी आकांक्षा नहीं प्राप्तहुई ११२ हमारे पेटमें तीर्थराजका जल स्थितहै उसीके प्रभावसे मरणमें कुबेरजीसे मित्रता होगईहै ११३ हे प्रभो! सबलोग आपके नमस्कार करते हैं और कुबेरजी के गणोंके लायेहुए नानाप्रकारकी मणियों से विभूषित विमानोंपर चढ़कर कुबेरजीकी नगरी को जाते हैं ११४ हे साधो! आप इसराक्षसके साथ निगमबोधक तीर्थ में जाइये देर न कीजिये शीघ्रही इसकोभी तारिये ११५ शिवशर्माजी बोले कि हे तात! ऐसा कहकर वे विमान किंकिणी शब्दोंसे आकाश और

भूमिको शब्दयुक्त करतेहुए गणोंके साथ उत्तरदिशाको जातेभये ११६ तदनन्तर हमारे पिता शरभजी तिस राक्षससे बोले कि उठो और शीघ्रही हमको निगमबोधकतीर्थ में प्राप्तकरो ११७ ज्वरसे पीड़ित हम वहां पांवोंसे नहीं चलसक्ते हैं जो तुम हमको उस तीर्थ में ले चलोगे तो तुमसे अन्य कोई नहीं है ११८ शिवशर्माजी बोले कि राक्षससे वैश्यने जब इसप्रकार कहा तो वह वैश्यके वचन स्वीकारकर कांधेपर चढ़ाकर शीघ्रतासे पवित्र तीर्थको जाताभया ११९ वहांपर वैश्य और राक्षस सब तीर्थोंसे उत्तमतीर्थ में स्नानमात्र करतेहुए बसतेभये १२० तदनन्तर हम पिताको बहुत कष्टयुक्त सुनकर माता की प्रेरणासे अपने स्थानसे चले १२१ और यहां आकर महाज्वरसे पीड़ित पिताजी को देखकर मस्तक से वन्दना किया तो पिताजी हमको आशिष देकर बोले १२२ कि हे तात ! इस मार्ग में कईदिन राहमें टिकतेहुए यहां अपनी क्रिया करतेहुए किसलिये आयेहो १२३ विकटनाम राक्षस हमारामित्र प्राप्तहै तुम उठकर देहसे उसके चरणों में दण्डवत्करो १२४ हिंसादिक कर्म्म छोड़ेहुये उससे तुम न डरना इस समयमें तीर्थ में प्राप्तहोकर हमारे ही पास वह स्थितहै १२५ शिवशर्माजी बोले कि जब हमारे पिता शरभमहात्माने यह कहा तो हम उठकर राक्षसके चरणों में दण्डवत् करतेभये १२६ तब वह दोनों हाथोंसे हमको उठाकर अच्छीतरह लेपटकर आशिष देताहुआ बोला कि हे मित्रके पुत्र! तुम्हारा आना अच्छाहुआ १२७ हे तात ! तुम भाग्यवान्हो जोकि धर्मात्मा पिता की घोरपीड़ा सुनकर यहां आयेहो १२८ तीर्थ में तिलोदक करके पितासे उऋण होजावोगे स्नानकरके अपनी क्रियाकरो पूर्व्वजन्म का स्मरण भी तुमको होजावेगा १२९ शिवशर्माजी बोले कि जब राक्षसने इसप्रकार कहा तो तीर्थ के श्रेष्ठ जलमें स्नान करने को मैं बैठा और पूर्वजन्मके शुभ अशुभको स्मरण करनेलगा १३० फिर विधि से स्नानकर पिताजी के समीप आकर मैंने राक्षसका हाल पूछा कि यह धर्मबुद्धि कैसेहुए १३१ तब पिताजीने कहारों और राहीका सब हालकहा तब तो हम सुनकर इस तीर्थराजकी स्तुति

करनेलगे १३२ कि हमारे पिता जब रोगसे छूटजावेंगे तब दशदिन यहां बसकर घरजाऊंगा १३३ हे तात! दशदिनके भीतरही हमारे पिताका मरण देखतेही देखते इस तीर्थराजके जलमें होगया १३४ तब गरुड़पर चढ़ेहुए हृदयमें लक्ष्मीजी को धारण करतेहुए नवीन मेघों के समान देहवाले विष्णुजी आपही प्राप्तहोगये १३५ जोकि पीताम्बर धारणकिये चारभुजायुक्त लालकमलके समान नेत्रवाले ब्रह्मा इन्द्रादिक देवता और महादेवजीसे सेवित गुणोंके समूहोंको गातेहुए किन्नरोंसेयुक्त और हाहा हूहू इत्यादिकोंसे सबओरसे स्तुतिको प्राप्तथे १३६।१३७ वे हमारे पिताजी को अपनी सारूप्य देकर गरुड़पर चढ़ाकर ब्रह्मादिकोंसेयुक्त वैकुंठको लेजातेभये १३८ तबतो मैं पिताजीकी विष्णुजीकी सारूप्य देखकर उत्पन्नहुए तत्त्वके उदयवाले चित्तमें यह चिन्तना करताभया १३९ कि इस तीर्थोंके शिरोमणिकी महिमा वर्णन करनेको मैं नहीं समर्थहूं जिसके आधे जलमें मरकर प्राणी चारभुजाका होगया १४० हमको दृढ़माहात्म्य वाला यह तीर्थराज धन रोगादिक तृष्णासे सर्वथा नहीं त्यागना चाहिये १४१ इस पिताजी के पर्णशाला में तबतक हमें रहना चाहिये जबतक पृथ्वी में प्रारब्धकर्मों की भुक्ति न होजावे १४२ इस प्रकार चिन्तनाकर पिताकी अच्छी क्रियाकर तिस राक्षससमेत मैं मोक्षकी वाञ्छासे वहीं स्थित होगया १४३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येचतुरधिकद्विशततमोऽध्यायः २०४॥

दोसौ पांचका अध्याय॥

यमुनाजीके माहात्म्य में निगमबोधोपाख्यान वर्णन॥

शिवशर्माजी बोले कि एकसमय में महातीर्थ में कीचड़में फँसी हुई गऊको देखकर राक्षसश्रेष्ठ तिसके निकालने को प्रवेश करता भया १ कि गऊकी रक्षा करने में बड़ाधर्म होताहै रक्षा करनेवाले का स्वर्ग होताहै यहबीचमें चिन्तना करताहीथा कि इसको मगर पकड़ लिया २ और जलके नीचे लेगया तो जलसे पूर्ण पेट ति

समय में होगया तबतो पीड़ायुक्त देह होने से उसने प्राण त्याग दिये ३ तो सुन्दररूप को धारणकर इन्द्रादिक देवताओं से युक्त गणों के लायेहुए विमानपर चढ़कर स्वर्गको चलताभया ४ चलते हुए उस श्रेष्ठ राक्षस से मैंने पूंछा कि महामति ! इस मुक्तिके देने-वाले दुर्लभ महातीर्थ में मृत्युपाकर कैसे देवताओं के पदकी प्राप्ति तुम्हारी हुई ऐसा कहनेपर उसने हमसे कहा कि हे पापरहित ! यहां पर मेरी वाञ्छा थी ५ । ६ फिर तिस पुण्यजनके पुण्यवानों के पद स्वर्ग चलेजाने पर अकेलेही मैंने विष्णुजी की आराधना की कि तिसीसमयमें अच्छीगति प्राप्त होगई ७ चलते बैठते सोते जागते और नित्यही स्नान करतेहुये और देवमें बुद्धि न लगाकर तिन्हीं कमलनयनजी को ध्यान करताहुआ बोला ८ कि हरे ! आपके चरण कमलकी मैं शरणमें प्राप्तहुआहूं ब्रह्मा महादेव और इन्द्रमें मेरा मननहीं है ९ हे तात ! तिन पुरुषोत्तमजीकी इसप्रकार प्रार्थनाकरता हुआ निर्विषय मनकर इसमहातीर्थमें बसताभया १० तब विष्णु-शर्माजी बोले कि इस महातीर्थमें बसतेहुए जब आपका मरणहुआ तो फिर कैसे जन्म आपने पाया यह हमारे संदेहहै ११ कि जिस तीर्थकी मर्यादा को छोड़कर धनके लोभसे राही ने राक्षससे मरण और कहारों ने भी पाया १२ परन्तु जिस श्रेष्ठ तीर्थ के जलपान से वे सब स्वर्ग चलेगये तैसेही राक्षस भी इसीमें मगरसे अपमृत्यु पा-कर अपनी इच्छाहीसे तुम्हारे देखतेहुए स्वर्गको चलागया तहांके मरण होनेसे निश्चय जन्म नहीं होताहै १३ । १४ नारदजी बोले कि हे शिवि ! शिवशर्माजी पुत्रके शुभ वचन सुनकर अपने जन्म के पूर्ववृत्तांत कारण को कहनेलगा १५ कि हे विष्णुशर्मन् ! हमारे जन्मके कारण को सुनो तुम्हारे आगे मैं कहताहूं जिसको सुनकर निस्सन्देह हो १६ एकसमय विष्णुजी की पूजामें मैं ध्यानमें स्थित था कि प्रकृति से क्रोधी दुर्वासाजी हमारे स्थानको आये १७ तब विष्णुजी के ध्यानमें परायणहुआ उनके आनेको न जानकर मैं वै-सेही बहुतसमयतक भगवान् के नामको स्मरण करताहुआ स्थित रहा १८ फिर क्रोधसे मूर्च्छित लालनेत्रवाले मुनि मुहूर्तमात्र हमारे

आगे स्थित होकर ऊंचे स्वरसे बोले १९ कि मैं अत्रिजीका पु॰
अनसूयाजीके गर्भसे उत्पन्न महादेवजी का अंशहूं तिसका इसम
नुष्य ने अनादर किया २० जिस मैंने त्रिलोकीकी राज्यसे इन्द्रके
गिरादिया था तिसका यह दुर्बुद्धि अनादर करताहै २१ जो तीनों
देवताओं को छोड़कर कालाग्निकी नाई मत्तहोकर किसीको नहीं
डरताहै तीनोंदेवता तो हमारेभी अत्यन्त पूज्यहैं २२ यहमूढ़ ध्यान
में स्थितहोकर जिस देवता को ध्यान करताहै वह मूर्त्तिमें स्थित य
मराजरूप इसको कैसे नहीं समझातेहैं २३ निश्चय यह संसारके
गुरु नारायण देवजी को ध्यान करता है जिनके ध्यानरूप अमृतसे
तृप्तहोकर बाहर का ज्ञान नहींरहा २४ हरि वा ब्रह्मा वा महादेव वा
और देवता का ध्यान करताहुआ सर्वथा मुझसे यह दण्डपाने यो॰
ग्यहै क्योंकि हमारे अनादर को कियाहै २५ शिवशर्माजी बोले कि
इसप्रकार चिन्तनाकर क्रोध से लालनेत्रवाले मुनि मुझ सुमतिको
बोधकराकर शाप देतेभये २६ कि हमारा अनादरकर जो तुम्हारे
चित्तमें ध्यानकालमें मनोरथहै वह इसजन्म में नहींहोगा २७ ऐसा
कहकर अत्रिके पुत्र मुनि जब चले तबतो भयसे डरकर मैंने उनके
दोनों चरण पकड़े २८ और यह कहा कि हे मुनिश्रेष्ठ! क्षमाकी॰
जिये क्रोध दूर करदीजिये हमारे समानवाले आपके सदृश मुनियों
के अच्छीतरह से कर्म्म नहींजानते हैं २९ इससमय में निरपराधी
मुझको आपने घोर शाप दियाहै अब नम्रहुए मुझपर प्रसन्नहूजिये
और शापके अन्त में कृपाकीजिये ३० इसप्रकारके कहनेसे दुर्वासा
जी शीतल होगये हे तात! क्या दुर्व्वासाजी जोकि महादेवजी का
अवतारहैं तिनको यह उचित नहीं है ३१ फिर बुद्धिमान् दुर्वासाजी
हमसे बोले कि तुम उत्तम ब्राह्मण होकर यहींमरणपाकर फिर जन्म
को न प्राप्तहोगे ३२ यह हमारे ऊपर कृपाकर नग्नमुनि मुझसे स॰
त्कारसे पूजितहोकर उस दिन वहीं निवासकर चलेगये ३३ तबमैं
मुनिका भाषण झूंठ नहींहोगा यह चिन्तनाकर ३४ चित्तमें पश्च
त्ताप करताहुआ अपने घरकोचला कि मुझ तीर्थके आश्रमीको नि
त्यही ध्यान करतेहुए ३५ इसजन्ममें भगवान्के दर्शन दुर्लभहोंगे

जैसे तापकरनेवाले आषाढ़ महीने में पपीहेको मेघके दर्शन दुर्लभ होजाते हैं ३६ वैकुण्ठकीगति रोंकनेवाला कैसे मुझको प्राप्तहोगया जैसे प्रस्थित मनुष्य को कालरूपी जलके छोड़नेवाले मेघ होजाते हैं ३७ निश्चयमुनिका दोष नहीं है तिनभगवान्ही की यह इच्छाथी सुन्दर दर्शन देकर भी हमारा दूसरा जन्मकिया ३८ संसारसे डरे हुए मुझको भगवान् के चरणकमल ग्रहण करने चाहिये जैसे गर्मी के घामसे तपेहुए राही को वृक्ष ग्रहण करनाचाहिये ३९ धन, पुत्र, स्त्री और अनित्य बन्धुओंसे मुझको क्याहै गोविन्द परमानन्द और रामका नाम कहना चाहिये ४० कुटुम्बों में उदासीन की नाईं बैठ कर भगवान् का भजन करताहुआ प्रारब्धही को भोगकरूंगा और कर्मोंको नहीं करूंगा ४१ हे तात! यह चिन्तनाकर गंगाजी में स्नान कर कुछ दिनों में मैं अपने घरको प्राप्तहोगया ४२ तब मैंने माता और भाइयों से पिताका मरण कहा वे सुनकर शोच करतेभये ४३ और मैं घरमें बसताहुआ सत्यलोक आदि लोकों में निस्पृह रहा फिर गंगा और यमुनाजीके सेवित किनारे मेरा मरणहुआ ४४ तो दुर्वासा मुनिके शापसे वैष्णव कुल में उत्पन्नहुआ अब इस अच्छे तीर्थ में मरणपाकर भगवान् के पदको पाऊंगा ४५ नारदजी बोले कि हे शिवि इसप्रकार बृहस्पतिजी के रचे तीर्थमें दोनों द्विजोत्तम परस्पर वार्तालापकर भगवान् के चरणकमलों को चिन्तना करते हुए स्थित होतेभये ४६ कमलनयन, चतुर्भुज, मेघोंके समान नील शरीर, अपने हथियार और गहनों से प्रकाशित भगवान् को स्मरणकर भगवान्की सारूप्यको प्राप्तहोगये ४७ यह पुण्यकारी इन्द्रप्रस्थनाम जिसका क्षेत्रहै तिसका उपाख्यान कहा अब हे शिवि! इसका फल सुनिये ४८ गंगास्नानसे जो पुण्य और कन्यादानसे जो पुण्यहै तिसपुण्य को मनुष्य इसके श्रद्धासे सुननेसे प्राप्तहोता है ४९ पुत्र उत्पन्न होनेमें सिंहकी बृहस्पतिमें गोदानसे और गोदावरी के जलमें स्नान करनेसे जो फल पृथ्वी में होताहै ५० वह फल इसके सुननेसे निस्सन्देह होताहै इससे इस उत्तम तीर्थ से दूसरा सम्पूर्ण अर्थ का देनेवाला कोई तीर्थ नहीं है जिसमें मरण होनेसे

निश्चय तिर्य्यक्योनिवाले भी चतुर्भुजरूप होजाते हैं ॥ ५१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येनिगमबोधोपाख्याननामपंचाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०५ ॥

दोसौछःका अध्याय ॥

यमुनाजी के माहात्म्यमें द्वारका का वर्णन ॥

सौभरिजी बोले कि धर्मराज श्रीमान् शिवि नारदमुनिके वचन सुन प्रसन्नमन होकर तिन उत्तम मुनिजी से बोले कि १ कि हे मुने! इस तीर्थों में श्रेष्ठ निगमोद्बोधककी माहात्म्य अच्छीतरह से आपने कही और तिस पापवाले माहात्म्यको मैंने सुना २ इस इन्द्रप्रस्थ में सैकड़ों तीर्थ हैं तिनमें किसी और का माहात्म्य जो विद्यमान हो तो कहिये ३ तब नारदजी बोले कि हे राजन् इन्द्रप्रस्थ के भीतर जो यह द्वारकाहै इसमें पूर्वसमयमें जो चरित्र हुआहै वह मैं तुमसे कहताहूं सुनिये ४ काम्पिल्यमें कोई ब्राह्मण मूर्तिमान् कामदेवकी नाईं बसतेथे वे अग्रविभ्रमोंसे सब स्त्रियों के चित्तहरनेवाले ५ गानविद्यामें कुशल और कोकिलाकी नाईं मीठे शब्दवालेथे एकसमय में वह हाथमें वीणा धारणकर वारंवार बजाकर ६ कोकिला के शब्दकी नाईं मीठे कण्ठसे गाताहुआ नगरमें प्रत्येक राहमें घूमा ७ तब मूर्च्छना तानसंयुक्त तिसके गानेकी ध्वनिको सुनकर पुरवासियों की स्त्रियां अपने अपने घरके कार्य्यों को छोड़कर तिसके पासको प्राप्तहुईं ८ और तिस के रूपसे मोहित होकर कामदेवके वेगको न सहसकीं प्रत्यक्षगीत सुनकर स्खलितवीर्य होगईं ९ जिस कामदेव ने सरस्वती के ऊपर ब्रह्माजीके मनको लुभाया और पार्वतीजीको शिवजीका आधा शरीरदिया १० तिन दोनों देवोंसे दूसरा मनुष्य संसारमें वशी वा ज्ञानवान् कौन होगा जो कामदेवके जीतने में समर्थहोगा स्त्रियां तो प्रकृतिही से चञ्चल होती हैं ११ वे कामदेव के वेगको नहीं सहसक्ती हैं हे राजन् क्याकहें संसारमें कामदेव दुःख से जीतने योग्यहै १२ तदनन्तर वे सब स्त्रियां जहां जहां वह मनुष्य वीणा बजाकर गाताभया तहां तहां जातीभईं १३ तब उनके

पति, पुत्र, भाई, वा पिता डाट डाटकर उसके पाससे अपने अपने घरोंको ले आये १४ तो फिर वे उसको ढूंढ़कर तिसके समीप में चलीगईं जब पुरवासियों ने यह चरित्र फिर देखा तो राजासे सब वृत्तान्त उन्होंने जाकर कहा १५ तब राजाने उस गानेवाले ब्राह्मण को एकान्तमें बुलाकर पूंछा कि हे विप्र! किस मंत्र से तिन पुरकी स्त्रियोंको मोहित कियाहै १६ यह हमसे कहो तुमको बहुत धनदूंगा और जो नहीं कहोगे तो तुमको निस्संदेह अपनी राज्यसे निकाल दूंगा १७ नारदजी बोले कि ये राजाके वचनसुन रूप और गुणोंका समुद्र वह द्विजोत्तम राजाके आगे सत्य वचन बोला १८ हे राजन् हमारे भिक्षुकके पास मंत्र और औषध कुछ नहीं है किन्तु आपके नगरमें सब स्त्रियां अजितेन्द्रियहैं १९ मेरेरूप और गीत की ध्वनि को सुनकर आपके पुरमें स्त्रियां कामदेवके वेगको नहीं सहसक्तीहैं २० हे महाराज! हे विभो! हे महीपते! मैं क्याकरूं मेरा क्या अपराध है पूर्व्वसमयके कियेहुएकी नाईं शासन उल्लंघ्य नहीं है २१ नारदजी बोले कि हे उशीनर! हे शिवे! हे राजन्! इसप्रकार ब्राह्मणके कहतेही कहते सब पुरवासी मिलकर यह राजासे बोले २२ कि हेराजन्! इस ब्राह्मणसे मोहित पुरकी स्त्रियां हमलोगोंकी रोंकी हुई भी घरोंमें नहीं ठहरती हैं २३ हे प्रभो! जो यह स्त्रियोंका मोहन करनेवाला नगरमें बसेगा तो हम सबलोग इसी समय में और देश को चलेजावेंगे हमारा हव्यकव्यक्रियात्मक वृषदेव चलागया है २४ तिसके पीछे क्षेत्रसे पापियोंकी गऊकी नाईं चलेजावेंगे उस के विना किसकी शरणमें प्राप्तहोवें २५ तदनन्तर स्त्रियां इसकेपीछे चलीजावेंगी तोशून्यघरमें यत्नसे भी लक्ष्मी कैसेटिकेगी २६ क्योंकि धर्म्म, अर्थ और घर ये तीनों स्त्रियों के वशमें प्राप्त रहते हैं स्त्री धर्म्म और धनके अधीन है धर्म्म और धनके नाशमें नहीं स्थित रहती है २७ नारदजी बोले कि इस प्रकार पुरवासियों के कहतेही उनकी स्त्रियां भी आनपहुंचीं और राजा के समीपही बैठकर परस्पर बोलनेलगीं २८ कि स्त्रीकी आकृति कामदेवरूप इस विप्रको पाकर हमारे मन इसप्रकार प्रकाशित होते हैं जैसे कमल जलमें सूर्यको

पाकर प्रकाशित होते हैं २९ और तिनके विना संकुचित रहते हैं जैसे चन्द्रमासे कोकाबेलि संकुचित रहती है आवो सब इसब्राह्मण को मिलकर राजाके आगेही धारणकरें ३० यह ब्राह्मण और हम सब स्त्रियां मारने योग्य नहीं हैं राजा क्याकरेगा नारदजी बोले कि ऐसा कहकर वे सब शीघ्रतायुक्त स्त्रियां तिन द्विजोत्तमको अपनेपति और राजाके आगेही ग्रहण करनेलगीं और उनसे बोलीं कि हे मन के नाथ! हमारे घरों में आकर कामदेवको ३१। ३२ जल्द शान्त कीजिये तुम्हारे विना इस समयमें स्थित होनेको नहीं समर्थ हैं ये तिन स्त्रियों के वचन सुन वह ब्राह्मण बोला ३३ कि आप लोगों का मैं पुत्रहूं आप सब हमारी माताहैं इससे किसलिये घरोंको छोड़ कर आपलोग घूमरही हैं ३४ अपने अपने पतियों की आराधना करो जिससे निश्चय दोनोंलोक होते हैं पतियों के आराधनहोने में सब देवताओं के स्वामी विष्णुजी ३५ प्रसन्न होते हैं उनके प्रसन्न होने में कुछ दुर्लभ नहीं होताहै और जो स्त्री अपने पतिको छोड़ कर सुखकी इच्छासे दूसरे पुरुषको सेवती है ३६ वह कलङ्क और घोर दुर्गतिको पाती है और नरकमें पतिके छलनेवाली कल्पपर्यंत बसकर ३७ फिर तिससे निकली तो स्थावरभावको प्राप्त होजाती है तिस पीछे पशुयोनि बहुत जन्मों में प्राप्त होती है ३८ तदनन्तर मनुष्य योनि में अङ्गहीन होती है इसप्रकार पापकीगति जानकर मनुष्यों से लौटजावो ३९ नहीं तो देहके अन्तमें घोरनरकको जावोगी और जो तुम हमसे सुखकी इच्छा करतीहो तो वह यहां नहीं लाभहोगा तुम लोगोंको पापही होगा जिससे मनुष्योंको नरक में गिरना होताहै ४० नारदजी बोले कि इसप्रकार ब्राह्मण के वचन सुनकर पतियों में सुख देखकर सब स्त्रियां लज्जासे नम्रमुखकर पवनके लगनेसे लताकी नाईं होगईं ४१ और उनकी घोर कामदेव की अग्नि तिस ब्रह्मचारी के ठण्ढे वचनरूप जलसे शान्त होगई ४२ तब सब उठकर ब्रह्मा और इन्द्रादिक देवताओं के भी मोह करनेवाले कामदेवकी निन्दा करतीहुई चलीं ४३ कि इस पापकर्म करनेवाले, शीलरूप लकड़ी के कुल्हाड़े रूप कामदेवको धिक्कार है

जिन महादेवजीने स्त्रियोंकी प्रीतिकेलिये कामदेवको भस्म करदिया वे धन्यहैं ४४ संसारकी पूज्य रुक्मिणीजी को क्याकहें जिन्हों ने अपने पेटमें प्रद्युम्ननाम इस राहुको धारण किया जो स्त्रियोंके शील रूप चन्द्रमाका भोग करनेवालाहै ४५ सोई अधमदेव जो हमलोगों को दिखाई देवे तो फिर ध्यान कियेहुए महादेवजीकी दृष्टिरूप अग्निमें छोड़देवें ४६ जिन आत्माराम विष्णुजी ने इस पापीको उत्पन्न कियाहै उन्होंने सोलहहज़ार स्त्रियोंका प्यारा उसको करदिया तो हम लोगोंकी क्या कथाहै ४७ इसप्रकार स्त्रियां तिस कामदेव की निन्दाकर द्विजोत्तमजी की स्तुति करती भईं कि जिसने अपने और हमलोगों के शीलकी रक्षाकी ४८ इसकीमाता धन्यहै जिसने इस उत्तम ब्राह्मण कामदेवके जीतनेवाले और परायेधर्म्मकी रक्षा करनेवाले को उत्पन्न कियाहै ४९ हम सबको धिक्कारहै जोकि राजा और मनुष्यों से हँसी और कामदेवसे जीतीगई वाणी और मनसे घोरपापकिये ५० नारदजी बोले कि एक मतियुक्त सब स्त्रियां ब्राह्मण के वाक्यसे बोधितहोकर इसप्रकार चिन्तनाकर अपने अपने घरको जातीभईं ५१ तदनन्तर काम्पिल्यराजा तिन जितेन्द्रिय ब्राह्मणको कपड़े और गहनेदेकर अच्छेघरमें भेजदेतेभये ५२ फिर कालपाकर कारूषदेशका स्वामी जोकि बहुतबली है वह काम्पिल्यराजाके नगर को सेनाओंसे घेरलेताभया ५३ तब काम्पिल्य राजाने सेनालेकर घोरयुद्धकिया परन्तु उससे युद्धमें मारागया और सब शूर मारेगये और सबनगर लूटलियागया ५४ और वे स्त्रियां विष खाकर मरगईं और उन्होंने तिसपाप का प्रायश्चित्तभी न किया ५५ जिसपापसे सब भीषणनाम राक्षसके नगरमें बड़ी देहयुक्त भयानक राक्षसियां हुईं ५६ तो सबोंको अर्जुनकी यज्ञमें विघ्न करते देखकर अर्जुनही के रथके पताके में स्थित हनुमान्‌जी ने मारडाला ५७ तो फिर वे मारवमार्ग्गमें राक्षसियांहुईं जोकि भूख और प्याससे व्याकुल और देखने से भयकी देनेवाली थीं ५८ इसप्रकार वाणी और मनसे कियेहुए पापकर्मोंसे उन स्त्रियों ने दो जन्मतक राक्षसियों के जन्म पाये ५९ और उन्हीं के पापसे राजा और उसके दो नगर नाश

होगये इससे पापसे डरीहुई स्त्रियों को वाणी और मनसे भी पराये पतिका सेवन न चाहिये रोगी, जड़, दरिद्री और अन्धा भी पति अच्छीगति की इच्छा करनेवाली स्त्रियों को छोड़देने योग्य नहीं है ६०।६१ नारदजी कहते हैं कि हे शिवि! जो दूसरे पतिकी भक्तिसे मन और वचनसे उन स्त्रियों ने पाप किया वह मैंने कहा अब जो उन्होंने फल प्राप्तकिये तिसको भी विस्तार से तुमसे कहताहूं ६२ इन्द्रप्रस्थ में जाकर जो द्वारका दिखलाई देती है वहांपर उनस्त्रियों की देहके ऊपर जलके बूंद गिरनेसे उन्होंने चित्त और वचनसे दूसरे पतिके सेवनसे उत्पन्न घोर राक्षसीभाव छोड़कर देवताओं के आनन्द देनेवाली स्त्रीभावको प्राप्तकिया ६३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येद्वारकावर्णनंनामषष्ठाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०६॥

दोसौसातका अध्याय॥

यमुनाजी के माहात्म्यमें राक्षसियोंका द्वारकाके जलसे मोक्षवर्णन॥

सौभरिजी बोले कि हे धर्मपुत्र! महात्मा नारदजी के वचनसुन नम्रतायुक्त राजाशिवि यह पूंछनेलगे १ कि हे मुनिश्रेष्ठ! मरुमार्ग में स्थितहुई राक्षसियों ने इसद्वारका का जल कैसेपाया २ तव नारदजी बोले कि हे राजन्! विमलनाम ब्राह्मण हिमवान् पर्वतकी कन्दरा में रहनेवाले की दिव्य पवित्र और पापनाशनेवाली कथाको सुनिये ३ हिमवान्की कन्दरामें एकविमलनाम ब्राह्मणथे वे देवता, ऋषि, पितृ, अग्नि और अतिथियोंकी पूजाकरनेवाले ४ भगवान् के चरणपूजन में रत, वेद और वेदांगके धर्म्मके जाननेवाले और भगवान् के गुणोंके समूह पुराण सुननेमें मनवाले थे ५ तिनके भगवान्के प्रसादसे वृद्धावस्था में पुत्रहुआ तो पिताने हरिदत्त नाम रक्खा ६ और विधिपूर्वक उसके क्षौरकर्म्म आदिक कराये तव हरिदत्त गुरुजीके पास वेद पढ़नेलगे ७ विधिपूर्वक वेदोंको पढ़कर गुरुदक्षिणादे विरक्तहो मूलसमेत दूसरे आश्रम को चलनेलगे ८ तब तो तिसका कर्म माता जानकर पुत्रके प्यारसे रोनेलगी और

पुत्रके विश्लेषसे उत्पन्न आंशुओं से दोनों स्तनोंको स्नान कराती हुई बोली ९ कि हे पुत्र! मुझ अनाथ और बुढ़ापेसे ग्रस्त पिताको छोड़कर कहांजाते हो जैसे भौंरा बल्वज को छोड़कर जाताहै तैसे तुम जातेहो १० भगवान्के चरणोंकी सेवासे वृद्धावस्थामें मैंने तुम को पायाहै इससे हमको छोड़कर मुक्तिके लिये भगवान्के चरण सेवन करतेहो ११ मैं निश्चय मूर्खहूं कि निश्चय भगवान्को आराधनकर अनिश्चय तुमको सुखकी प्राप्तिके लिये इच्छाकरतीभई १२ हे वत्स! तुम बड़े बुद्धिमान्हो जो सर्वार्थ विष्णुजीको भजतेहो इस संसार को अनिश्चय मानकर तुम निश्चयहोतेहो १३ मैं क्याकरूं कहांजाऊं माया हमारे ज्ञानको काटती है जैसे घोरचाकू सुन्दर फल के उत्पन्न करनेवाली केलाकी जड़को काटडाले है १४ दशरथराजा धन्यहुए हैं जोकि रामजीके शोकसे मृतक होगये हैं मुझको धिक्कार है जो पुत्रके वियोगसे अपने प्राणोंको धारणकियेहों १५ हे गुणोंके समुद्र पुत्र! आकर दर्शनदो मुझकोतारो पिताजीके आगे वेदमयी वाणीको कहो १६ नारदजी बोले कि हे राजन्! इसप्रकार तिसकी माता रोकर पृथ्वीमें गिरपड़ी जैसे दलनसे राहुकीदीहुई चन्द्रमाकी लेखा गिरपड़ती है १७ तदनन्तर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ विमलजी आन पहुँचे और स्त्रीको पृथ्वी में गिरीहुई देखकर क्याहै क्याहै यह बोलतेभये १८ कि क्यों यहबालछोड़े वस्त्र और गहनोंको त्यागे पृथ्वी में पड़ीहै हरिदत्त का कल्याणहै १९ तब ये वचन सुन तिसकी सब बराबर उमरवाली स्त्रियां विमलजी से बोलीं कि तुम्हारा पुत्र वेदों को पढ़कर गुरुदक्षिणा दे २० नारायण में परायण होकर चला गयाहै तिसके वियोग के शोकसे यह पृथ्वी में गिरीहुई है २१ नारदजी बोले कि तिन स्त्रियोंके वचनसुन अत्यन्त बुद्धिमान् विमल वाणी रूपअमृत से अपनी स्त्रीको समझाते हुए बोले २२ कि हे स्त्री! उठो हमारे कहेहुए वचनोंको सुनो किसलिये गिरकर खेदकर रहीहो तुम्हारा पुत्र धन्यहै जो इस देहको नाशवान् जानकर भगवान् के चरणरूपी पल्लवोंको सेवताहै २३ हे शुभे! इसके उत्पन्न करने वाली तुमभी धन्यहो जिसका पुत्र भगवान् के चरण सेवने

वालाहुआ और निस्सन्देह हमको कुलको और कुलके पहलेके पुरुषोंको तारदेगा २४ कहां यह संसार चंचल और कहां शाश्वत लोक देनेवाला भगवान् का सेवन है यह मानकर जैसे भरत आदिक राजा भगवान्‌को सेवतेभये तैसेही तुम्हारा पुत्रहुआ २५ स्त्री, धन, घर, शरीर और बांधव ये प्रत्येक जन्म में जबतक दुःख देने वालेहैं तबतक सब कामनाओं से वर्जित धीर मनुष्य भगवान् के चरणपल्लवोंको नहीं भजताहै २६ नारदजी बोले कि इस प्रकार तिन धीर विमलने स्त्रीको समझाया तो वह पृथ्वी से उठकर दीनवाणी से अपने स्वामीसे बोली २७ कि हे कान्त! जो आपने कहा वह सब मैं जानतीहूं परन्तु कुलधुर्य को नहीं देखतीहूं जिससे बारंवार ताप करतीहूं २८ महत्तीर्थ पुत्र वा भगवान्‌की सेवासे हमारी और आपकी जो घरहीमें मृत्युहोजावे तो तिस समयमें दोनोंलोक होते हैं २९ मनुष्यों करके अच्छेपुत्रके उत्पन्न होनेमें यत्नकरना चाहिये जिससे कि पुत्र पितरोंको संसाररूपसमुद्रसे तारदेते हैं ३० हे महामते! सब जन्तुओं के रचनेवाले ब्रह्माजीको पुत्रकी कामनासे सेवन करो जो कुलधुर्य पुत्रकीवाञ्छा करतेहो ३१ नारदजीबोले कि तिसके ये वचनसुन विमलब्राह्मण बोले कि ब्रह्मक्षेत्र प्रयागको पुत्रकी, कामनासे मैं जाऊंगा ३२ ऐसा कहकर चलकर ब्राह्मण हरिद्वार को गये वहां विधिपूर्वक स्नानकर इन्द्रप्रस्थको चले ३३ तो कईदिनों में सम्पूर्ण अर्थके देनेवाले इन्द्रप्रस्थ में संध्याके समय पहुंचे वहां पर रात्रिमें स्नान भोजनकर यमुनाजीके किनारे सोनेलगे ३४ तब सोतेहुए विमलके पास आधीरात में सब तीर्थों से युक्त ब्रह्माजी हंसपर चढ़कर ३५ आकर पुत्र की वाञ्छायुक्त उससे मीठे वचन बोले ३६ कि समीहितचित्त तुम्हारे मन में स्थित को मैं जानताहूं तिसके पूर्ण करने को मैं जिससे नहीं समर्थ तिस कारणको सुनिये ३७ एक समय मेरुपर्वत के कँगूड़ेमें हम और रुद्र इत्यादिक सब देवता मिलकर कार्य्यकी सिद्धिके लिये श्रीभगवान् की स्तुति करनेलगे ३८ जब हम इत्यादिक देवताओं ने स्तुति किया तब तो भगवान् हरि विष्णुजी कृपाकर वरदान मांगिये ये वचन

बोले ३९ जब भगवान् ने देवताओं से इसप्रकार कहा तब देवता लोग अपनी अपनी अभिलाषाके वर श्रीपतिजी से मांगकर पाके सब अपने अपने स्थानको गये ४० फिर मैंने भगवान्से कहा कि हे देवोंके स्वामी मुझको भी उत्तम वर दीजिये प्रयागनाम हमारा क्षेत्र सम्पूर्ण कामना का देनेवाला होवे ४१ और तिससे सौगुणा दूसरा हमारा क्षेत्र इन्द्रप्रस्थ होवे वहांपर अच्छीतरहसे वृत्त प्राप्त रहें ४२ ये हमारे वचन सुनकर तिसी समय भगवान् हमसे बोले कि तैसाही होगा फिर हमसेबोले कि मेरेवचन भी सुनिये ४३ इंद्र के खाण्डववन में इन्द्रप्रस्थ नाम शुभक्षेत्र यमुनाजी के किनारे है तहांके जे मरते हैं वे हमारे समान होतेहैं ४४ हे ब्रह्माजी! वहींपर अपनी द्वारकापुरी भी मैंने रचीहै जोकि समुद्रके किनारे की द्वारका से सौगुणा गुणोंमें अधिक है ४५ जो मनुष्य तिसका उल्लङ्घनकर और तीर्थ सेवताहै वह तीर्थके फलको नहींपाताहै यह मैंने झूठ नहीं कहाहै ४६ सब तीर्थोंका कहा पुण्य इन्द्रतीर्थ में मनुष्य पाता है द्वारका मायापुरी और अन्यतीर्थ उसकी रक्षा करते हैं ४७ जो और तीर्थोंमें स्नानकर अनेक प्रकारकी क्रियाकरके यहां आताहै वह ध्रुवफल को प्राप्त होताहै ४८ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! ऐसा कहकर विष्णुजी अन्तर्द्धान होगये तब मैंभी वैकुण्ठसे नीचेभाग में स्थित अपने लोकको चलाआया ४९ हमारे क्षेत्र प्रयागसे काशीसौगुणा है काशीसे भी सौगुणा निगमोद्बोधक तीर्थहै५०यह तीर्थसप्तकहे ये तीनों बराबर फल देनेवाले कहे हैं इनतीनोंका उल्लङ्घनकरके जो यमुनाजी में जाताहै५१ तिसके वाञ्छितको मैं देताहूं यह निश्चयही है झूठ नहीं है कोई कोई महर्षि सातपुरी अयोध्यादिकों को समान पुण्य कहते हैं अयोध्यासे सौगुणा इन्द्रप्रस्थ कहाहै हे विप्रेन्द्र! तुम भी यहांआकर सब कामना और फलके देनेवाले ५२।५३ श्रीद्वारकातीर्थमें पुत्रकी इच्छासे स्नानकरो ब्रह्माण्डकलशके पेट में जितने सब तीर्थ हैं ५४ तिनसे अधिक पुण्य द्वारकामेंहै यह तीर्थ कुलमें श्रेष्ठ पुत्रको तुम्हें देगा ५५ स्नानकरने से तुम्हारे ऊ-पर गोविन्दजी प्रसन्नहोंगे नारदजी बोले कि देवोंकेस्वामी ब्रह्माजी

ऐसा कहकर अन्तर्द्धान होगये ५६ तिस समयमें विमल धर्मात्म
स्नानकर देवादिकों को तर्पणकर कृष्णजीकी प्यारी द्वारकासे बोल
५७ कि मुझ भक्तको वंश करनेवाला पुत्र दीजिये आपके नमस्का
है जब उस ब्राह्मण ने यह कहा तब तो देववाणी हुई ५८ कि स
तीर्थों के शिरोमणि इस तीर्थ के प्रसादसे धर्म्मतत्त्वका जाननेवाल
और वंशका कर्ता तुम्हारे पुत्रहोगा ५९ अब घरको जावो देरमत
करो तुम्हारा स्नान सुकृतहुआ नारदजी बोले कि देववाणी सुनक
पुत्रके जन्ममें विश्वासयुक्त होकर ब्राह्मण ६० द्वारकाका जल क
मण्डलुमें लेकर चले तो राहमें तिसका मित्र मलयाचलकेतननाम
ब्राह्मण ६१ मिला वह सबओरके तीर्थोंको करके घरजाताथा तब
तो विमलने ब्रह्माके संवादवाले अपने वृत्तान्तको तिनसे कहा ६२
जोकि द्वारकातीर्थ में हुआथा तिसको सुनकर वह धर्मात्मा भी वि
स्मयकर विमल से बोले कि हे मित्र! हमारे वचनसुनो कि जितने
भारतक्षेत्रमें मैंने तीर्थ कियेहैं तितने करनेकी इच्छा करताहूं परन्तु
तुम्हारा कहा तीर्थ उत्तमहै ६३। ६४ हेसखे! सब कामना देनेवाले
तिस तीर्थ में हमको लेचलो क्योंकि पृथ्वी में वही श्रेष्ठ मित्रहैं जो
मित्रों का उपकार करते हैं ६५ तिनके समान पिता, माता अथवा
पुत्र नहीं है क्योंकि संसारमें धनहीन पुरुषको सब बान्धव छोड़
देते हैं ६६ परन्तु तिसके दुःखसे दुःखित मित्रलोग नहीं छोड़ते हैं
मित्र संसाररूपी समुद्रमें डूबेहुए मित्रों को भगवान् की भक्तिमार्ग
जोकि जन्मरूपी इन्धनके लिये अग्निरूपहै तिसका उपदेशकर उ-
द्धारही करताहै इससे तुम हमारे श्रेष्ठमित्र होकर उपकार कीजिये
६७। ६८ और हेब्राह्मण! उसश्रेष्ठ द्वारकातीर्थको दिखलाइये ६९॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दी-
माहात्म्येसप्ताधिकद्विशततमोऽध्यायः २०७॥

दोसौआठका अध्याय॥

यमुनाजीके माहात्म्यमें द्वारकाका आख्यान वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे शिवि! विमल ब्राह्मण तिस ब्राह्मण को

लेकर द्वारकामें प्राप्तहुए और वहांपर वे दोनों धीरपुरुष श्रीपतिजी की भक्तिकी कामनासे स्नान करतेभये तब तो आकाशमें मेघों के समान गम्भीरवाणी फिरहुई १ कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठो! सुनो यह शुभभगवान्का तीर्थ है इसी तीर्थ के प्रसादसे तुम दोनों के विष्णु जी में भक्तिहोगी जिससे यह लोक अविद्यारूपी घोरमोहको छोड़ देताहै २ नारदजी बोले कि वे श्रेष्ठ ब्राह्मण तिस आकाशवाणीको सुनकर यह परस्पर बोले कि यह भगवान्का प्रसादहुआहै ३ फिर दोनों भगवान्की पराभक्तिको पाकर विधिपूर्वक स्नानकर नमस्कार कर परस्पर यह वार्तालाप करतेहुए चले ४ कि जैसे राहमें हमलोगों का संयोग हुआहै और जैसे पृथ्वी में घर और स्त्री आदिका संयोग होताहै अब इसी समयमें राह चलनेवाले हम दोनों का विरह होजायगा ५ तैसेही कालरूपी सर्पके मुखमें वर्तमान स्त्री और पत्र आदिकोंका विरह होजाताहै वहपुरुष संसारमें धन्यहै जो स्त्री और पुत्रके संगमको ६ नित्य क्षणमात्रहीका जानकर भगवान्को भजता है नारदजी बोले कि हमको स्मरण करना चाहिये क्योंकि आपके चरणों का आश्रय दासहूं ७ संदेश हमको भेजियेगा ऐसाकहकर दोनों अपने घरको चलेगये अब हे राजन्! सुनिये जैसे तिस मित्र ने विमलका ८ और राहमें चलते हुये राक्षसियोंका मोक्षण किया और चलतेही में उसने जलहीन देशको पाया ९ जहांपर पापयुक्त भूंख और प्यास से व्याकुल राक्षसियां थीं उन्हों ने मार्ग में जाते हुए द्विजोत्तमजी को इसप्रकार देखा १० कि जलका भराहुआ बर्तन हाथ में लिये हुए हैं तब तो राक्षसियां परस्पर बोलीं कि कोई राही जलका बर्तन हाथ में रक्खेहुए आता है ११ कुछ हम लोगों की भूंख और प्यासकी शांतिहोगी इसको भक्षण करजावेंगी और इसके हाथमें स्थित जलको पीलेंगी क्योंकि सौवर्ष से भूंख और प्याससे व्याकुल हैं नारदजी बोले कि कोई राक्षसी यह बोली कि पहले मैं इसके गर्म कालखण्डकको १२।१३ भक्षणकर तिस पीछे रक्तपीकर जीवन को प्राप्तहूंगी फिर और बोली कि हे हाथीकेसे मुखवाली कुछ द्रव्य इसके पास विद्यमान है १४ मुझ व्याघ्रकेसे

मुखवालीके पीनेके लिये नहीं दिखाई पड़ता तबतो रथचक्रा नाम वाली और राक्षसी बोली कि मेरेवचनसुनो १५ मैं इसकी आंतोंसे जंजीर और कुण्डल बनाऊंगी फिर और बोली कि मैं एकओरसे श्यामवर्ण इसके सोलह दांतोंसे द्यूतशालामें खेलूंगी ऐसा सब परस्पर कहकर तिस ब्राह्मणको दौड़ीं १६।१७ जोकि मुख फैलायेहुए जीभ चाटतीहुई प्रकाशित एकभारी भुजासेयुक्त हैं तिनको आती देखकर ब्राह्मण भयसे व्याकुल होकर १८ अपने देहके चारोंओर वेदकी कहीहुई रक्षा करनेलगे और वे भीमविक्रमवाली राक्षसियां आकर दूर स्थितहुईं १९ क्योंकि ब्राह्मण के तेज और मंत्रोंसे समीप नहीं जासकीं फिर सब ब्राह्मणसे बोलीं कि आपकौन हैं और यहां कैसे प्राप्तहुए हैं यहसब कहिये २० आपके दर्शनसे हमलोगों का मन प्रसन्नहुआहै हे विप्र! आपके चरणस्पर्शनसे क्याफल नहीं होगा इससे हम लोगोंके मस्तकों में अपने चरणकमलको दीजिये २१ नारदजी बोले कि ये तिनके वचन सुन हरिदत्तजीकेपुत्र बोले कि मैं ब्राह्मणहूं पवित्र तीर्थोंको करके यहां प्राप्तहुआहूं २२ अब इससमय में पुष्कर जाताहूं आपलोग क्या इच्छा करती हैं उसको कहिये जो देनेमें समर्थहूंगा तो दूंगा २३ तब राक्षसियां बोलीं कि हे विप्रेन्द्र! जिन तीर्थों में आपने स्नान कियेहैं तिनसब पुण्यकारियोंको हमसेकहिये और इस बुरेजन्मसे छुड़ाइये जिसमें हमलोगों को अत्यन्त प्यास और भूख दुःखदेरही है २४ तब ब्राह्मण बोले कि अवन्ती, हरिपुरी द्वारका में मैं गया फिर सोमोद्भवाके जलमें स्नान कर २५ समुद्रके तीर में प्राप्त प्रभासनाम तीर्थ में प्राप्तहुआ तिसपीछे परमपवित्र सेतुनिबन्धमें स्नानकिया २६ तदनन्तर महापुण्यकारी किष्किन्धाको प्राप्तहुआ जहांपर रामजीने वानरसमूहों केस्वामी बाली को माराथा २७ तिसपीछे नर्म्मदाके किनारे स्थित सरस्वती के मठको प्राप्तहुआ जहांपर सबसे सेवित सरस्वतीजी हैं २८ तदनन्तर वेणीकोप्रवेशकर तिसको दक्षिणापथमें नमस्कारकर शिवकांची और विष्णुकांची पुरी देखी २९ जहांके मरणसे प्राणी शिव और विष्णु होजाताहै तिसपीछे उत्कलको प्राप्तहुआ जहांपर हरि

ईश्वर चतुर्वर्ग के देनेवाले साक्षात् भक्तोंकी कांक्षाको पूर्ण करनेवाले रहते हैं तिन हरिजीको पूजनकर विधिपूर्वक तिनकी प्रसादभूत नैवेद्य खाकर गंगासागरसंगमको प्राप्तहुआ तहांपर देवता, ऋषि और पितरोंको यथाविधि तर्पणकर ३०।३१।३२ जहांपर गंगाजी सौमुखकी हैं तहांपर प्राप्तहुआ तदनन्तर गयामें आकर विधिपूर्वक पितरोंको पिण्डादे तुलसी, फूल, चन्दन और जलसे पूजनकर अयोध्याजी में सरयूके जलसें स्नानकिया ३३।३४ जो सरयू स्पर्शनहीसे सबजनोंको पवित्र करती है तहांपर देवताओं को भी दुर्लभ गोप्रतार नाम तीर्थ है ३५ वहांपर स्नानआदिक कर्म मैंने किये फिर महादेवजीकी राजधानी काशीजीको प्राप्तहुआ ३६ तो विश्वेश्वरदेव विन्दुमाधवके नमस्कारकर मणिकर्णिका और ज्ञानवापीमें भक्तिसे स्नानकर ३७ तीन रात्रि वहांबसा फिर पौषशुक्लचतुर्दशी में प्रयागजीमें प्राप्तहुआ जहांपर साक्षात् प्रजापतिजी रहते हैं ३८ वहां एक माघमहीने में अरुण के उदय में स्नानकर फिर तहांसे गोमती के किनारे नैमिषारण्यमें आया ३९ जहांपर अपनी मायासे सब तीर्थ वसते हैं तिसपीछे मथुरा में प्राप्तहुआ जहांपर विश्रांतिसंज्ञक ४० तीर्थ और तिसीके समीप उत्तम असिकुण्ड, कृष्णगङ्गा, ध्रुव अक्रूर केशिकालीय तीर्थके धारण करनेवाली ४१ और महापुण्यकारिणी सब अर्थ के देनेवाली यमुनाजी हैं तिनके दोनों किनारे बारह वन शोभासे ४२ प्रकाशित और सब अर्थके करनेवाले हैं तिनमें मनुष्य स्नान और जलपान करनेसे फिर उत्पन्न नहीं होताहै ४३ तदनन्तर पुण्यकारी उत्तम हस्तिनापुर को आया जहांपर भगवान् के चरणकमल से नदियोंमें श्रेष्ठ गंगाजी हुई हैं ४४ फिर हिमवान् की भूमि में स्थित नारायणजी के स्थानमें आकर माधवजी के दर्शनकर केदारको आया ४५ तहांपर विश्वेशजी को पूजनकर जल पानकर गंगाजी के किनारे महापुण्यकारी हरिद्वार को आगया ४६ तहां स्नानकर पितृ, देवता और ऋषियों को तर्पणकर कुरुक्षेत्रमें प्राप्तहुआ जहांपर प्राची सरस्वती हैं ४७ तहांपर नियतेन्द्रिय मैंने सब क्रिया की और भगवान् के चरणकमल को पूजन

कर पुष्करको ४८ चला तो राह में मेरामित्र विमलनाम इन्द्रप्रस्थतीर्थ से घर जातेहुए मिला ४९ फिर तिस ब्राह्मण ने सम्पूर्ण अर्थ के देनेवाले इन्द्रप्रस्थ तीर्थ में मुझे प्राप्तकिया ५० तहांपर विष्णुजी की रचीहुई पुण्यकारी द्वारका है वहां साक्षात् विष्णुजी को वाक्यसे देखा रूपसे नहीं ५१ तहां विष्णुजीकी भक्तिके लाभके लिये स्नान किया तो कृष्णमूर्ति विष्णुजीने हमको और विमलजीको भक्तिदिया ५२ तहांपर भगवान् की वाणीसुनी रूप नहीं देखा वहां से भक्ति पाकर पुष्कर को जाताहूं ५३ तिसी तीर्थोंके स्वामी द्वारकाका पुण्यकारी जल मेरे कमण्डलु में है हे राक्षसियो मैंने जो कुछ कि तुम लोगोंने पूंछा वह सबकहा तुमलोगों की इस दुर्दशा को देखकर हमारे हृदयमें दयाउत्पन्न हुईहै ५४। ५५ अब कहिये कि तुम लोगों के वश होकर तुम्हारा क्याकरूं तुमलोगों को ज्ञान होवे ऐसा कहकर तिन सबको जलसे सींचदिया ५६ तो उसजल के स्पर्शहीसे सब राक्षसियों के जन्मकर्मका स्मरण होआया और घोर राक्षस देहको त्यागकर ५७ देवता देहको पाकर अप्सरा हो विमानपर चढ़कर ब्राह्मण के नमस्कारकर ५८ बोलीं कि भोद्विज श्रेष्ठ! द्वारकाके जलके संगमसे हमलोग राक्षसभाव से छूटकर देवों के स्थानको जातीहैं ५९ हे द्विज! इन्द्रप्रस्थ के भीतर जो द्वारका है उससे श्रेष्ठतीर्थ सबअर्थका देनेवाला और नहींहै ६० नारदजी बोले कि ऐसा कहकर ब्राह्मण की आज्ञाले विमानों पर चढ़कर वे सब पूर्वदिशा को चलीगई ६१ हे राजन्! यमुनाजी के किनारे की वर्तमान द्वारका का माहात्म्य सुनकर मनुष्य पापों से छूटजाता है ६२ वेद के जाननेवाले सौ ब्राह्मणों को इच्छापूर्वक सुन्दर भोजन करानेसे जो फल मिलताहै वह द्वारकाकी महिमा सुननेसे मिलता है ६३ गोविन्दजी के अच्छी प्रकार आराधन में जैसे इन्द्रियों को सुख होताहै तैसेही इस द्वारकाके माहात्म्य सुनने में होता है ६४ सूर्य्य और चन्द्रग्रहण में बीसपल सोनाके देनेसे जोफल मिलता है वही इसके माहात्म्य सुननेसे मिलताहै ६५ विमलजीकी पुत्रप्राप्तिसुनकर मनुष्य को इसलोक में पुत्र मिलताहै और विमलजीके

मित्रको भक्तिलाभ सुनकर उत्तमभक्ति मिलती है ६६ और राक्षसियोंका मोक्ष जो सुनता है वह उन्हींकी नाईं विमानपर चढ़कर श्रेष्ठ देवस्थानको जाताहै ६७ हे राजाओं में श्रेष्ठ! इन्द्रके तीर्थकी स्थित द्वारकाकी तीनों भुवनोंके मनुष्योंके सेवनेयोग्य महिमा तुमसे वर्णनकी अब तुम्हारेआगे और अत्यन्त पुण्यकारी क्या वर्णन करें तिसको कहिये अपने कल्याण में विलंब न कीजिये ६८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येद्वारकाख्याननंनामाष्टाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०८॥

दोसौनवका अध्याय॥

यमुनाजीके माहात्म्यमें चण्डकनाईसे मुकुन्दब्राह्मणका नाशहोना वर्णन॥

युधिष्ठिर बोले कि हे सौभरिजी नारदमुनि इन्द्रके तीर्थ में प्राप्त किस तीर्थकी माहात्म्य को शिबिसे वर्णन किया १ हे मुनियों में श्रेष्ठ! इससे हमारे सुनने की इच्छाहुई है नमस्कार करतेहुए मुझसे पुण्यकारी शिबि और नारदजी के संवाद को कहिये २ तब सौभरिजी बोले कि हे धर्मराज! राजाशिबि नारदजीसे वर्णित द्वारकाकी माहात्म्य सुनकर तिन्हीं से आदरपूर्वक पूछताभया ३ कि हे ब्रह्माजीके अंगसे उत्पन्न! हे देवताओं में श्रेष्ठ! मैंने इन्द्रप्रस्थ के किनारे स्थित द्वारकाका उत्तम अद्भुत माहात्म्य सुना ४ हे मुनिजी! अयोध्याजी में जो कुछ पवित्र चरित्रहो वह आपके वचनरूप अमृतके प्यासे मुझसे कहिये ५ तब नारदजी बोले कि पापयुक्तनाई और मुकुन्द ब्राह्मणका पुण्यकारी और महापापों का नाश करने वाला चरित्रहै ६ ब्राह्मणका मारनेवाला नाई और अपमृत्युको प्राप्त ब्राह्मण ये दोनों अयोध्याजी के प्रसादसे स्वर्गको चलेगये ७ चन्द्रभागा नदी के किनारे एकपुरी है तहांपर चण्डकनामपापी निंदित नाई रहताथा ८ यह पापी चोरीसे पराये द्रव्योंका चुरानेवाला शस्त्र और फँसरी आदिकोंसे घातकरनेवाला राहियोंका लूटनेवाला ९ नित्यही जुवां और मदिरामें रत पराई स्त्री में लम्पट इन्द्रियवाला और

देवताओं के स्थान गिराकर उसकी ईंट बेचनेहाराथा १० उसी
समीपमें ब्रह्मके कर्मका जाननेवाला लक्ष्मीसंयुक्त मुकुन्दनाम ब्रा
ह्मण बसताथा ११ यह ब्राह्मण एकसमयमें अपनी जवान स्त्रीको
आलिंगन और भोगकर शिथिल अंगहोकर रात्रिमें निर्भय सोर
थे १२ कि आधीरातमें चण्डक नाई मुकुन्दजी के स्थानमें गह
आदिक वस्तुओंके चुरानेको प्रवेश करता भया १३ तो बाहर
वस्तुओंको लेकर अपने घर रखआया और फिर ब्राह्मणके घर
आया तब तो बड़े यत्नसे किवाड़े उतारने लगा परन्तु वे किवाड़
लोहेसे बहुत ढकेहुएथे इससे इसकाममें समर्त्थ न हुआ १४।१५
तो फिर वह क्रूर पापी चोर नाई जिस स्थानमें ब्राह्मण स्त्री पुरुष
रतिसे विह्वल सोते थे वहां प्रवेशकर सोते हुए देखकर १६।१७
सोनेके गहने ग्रहण करनेकी इच्छासे तिनके समीप गया और श-
य्याके एकओर बहुत गहने रक्खेहुओंको लेलिया १८ फिर ब्राह्मण
के अंगका गहना चुरानेको उसने हाथ फैलाया तो चोरके छूनेही
से भयसे व्याकुल ब्राह्मण जगपड़े १९ परन्तु कुछ नहीं बोले नेत्रों
को बन्दकर वहीं स्थितरहे जब वह पापी चोर उनकी देहके गहने
लेकर २० चला तो द्रव्यका नाश न सहनेवाले ब्राह्मणने उसीस-
मय पीछेसे आकर दोनों भुजाओं से उसको पकड़ लिया २१ तब
चोरने तलवारसे ब्राह्मणके मारा तो ब्राह्मणके पेटका बीच फटगया
तब तो ब्राह्मण हे पिता! हे माता! ऐसा शब्द करने लगे २२ तब
तो मनुष्य क्याहै क्याहै यह कहते हुए मुकुन्द के समीप गये तो
आंतें निकली हुई रक्तसे लिप्त शरीर हुआ उनको देखा २३ तब
मनुष्य पूंछनेलगे कि हे मुकुन्द! यह कर्म्म किसने किया है तब मु-
कुन्दजी बड़े क्लेशसे अपने बान्धवोंसे बोले २४ कि हमारेही पूर्व-
समयके इकट्ठे किये हुए कर्म्मोंका परिपाक यहहै कोई किसी देह-
धारीको सुख और दुःखका देनेवाला नहीं है २५ धर्म्म अधर्म्म ये
दोनों पूर्वही तिनकी जड़ की हैं नारदजी बोले कि ऐसा कहकर मु-
कुन्दजी बड़ीपीड़ासे अत्यन्त पीड़ितहोकर २६ सुहृदोंके देखतेही
देखते तिसीसमयमें प्राणोंको छोड़देतेभये तब तो ब्राह्मणकी सती

माता तिसकालमें कुण्डलोंसे अलंकृत तिसके शिरको अपने कोड़े में धरकर रोतीहुई बोली कि हे वत्स! अन्त्य दशाको प्राप्तहुए तुमने हमको मारडाला २७। २८ जैसे पश्चिम पर्वतपर लम्बी सूर्य से दिनकी शोभा नष्ट होजाती है हे महामते! जो तुम्हारा अंग चन्दनके लेपके योग्यथा वही धूलिसे भराहुआ है और पीड़ा और शोकके समुद्रमें हमको तुम डुबा रहेहो २९। ३० और जो तुमने पान खाने में अभ्यास कियाथा वहीरक्तके उद्गारसे मिलाहुआ किया है और जे तुम्हारे नेत्र पहले कमलकी शोभाको जीतते थे ३१ वही इससमयमें अन्धकारकेसमूहसे आच्छादितसे हैं हेवत्स! उठोउठो अपने शिष्योंको पढ़ावो ३२ यथावत् वैश्वदेवके अन्तमें आयेहुए अतिथिको पूजो तुम्हारी उमरवाले द्वारपर स्थितहुए तुमको बुला रहेहैं तिनके पास जावो ३३ जिसको जो देना चाहिये उसको दीजिये और जो लेना चाहिये वह लीजियेमैंतुम्हारे चरणों में गिरती हूं उत्तर दीजिये ३४ नहीं तो मैं तुम्हारेहीपास प्राणोंको छोड़दूंगी नारदजी बोले कि ऐसा कहकर तिससमय में मुकुन्दकी माता मूर्च्छित होगई ३५ तब मुकुन्दकी स्त्री उनका शिर अपने कोड़े में लेकर रोती हुई बोली कि हे नाथ! हे गुणोंके समुद्र! हमारे वचन सुनिये ३६ जो आप माता से रुष्ट हुएहो तो हमारे आगे कारण कहिये हे साधो! पूर्वसमयमें कभी ऐसे मौन नहीं हुएहो किसी छोटे भाई ने आपका अपमान किया है ३७ पिंजरे में बैठा हुआ यह सुआ आपके विना अन्न नहीं खाताहै इसको सुन्दर अन्नपकाहुआ खिलाइये और मीठे वचन बोलनेवाली सारिका भी खिलाकर ३८ रामराम हरेकृष्ण इत्यादिक विष्णुजी की नामावलीको पढ़ाइये उठिये दोनों ये सारिका और सुये आपके निपुणहैं ३९ मैंने आपका क्या अपराध किया है जो मुझसे नहीं बोलतेहो जो आपने मुझे धन दियाहै उसको मैंने अच्छीतरहसे रक्षा कियाहै ४० हेनाथ! जो आपने अपना तेज मेरे पेटमें अर्पित किया है तिसकी मैं उत्पत्ति समयतक अपेक्षा न करूंगी आपके पीछेही चलूंगी ४१ नारदजी बोले कि इस प्रकार मुकुन्द की स्त्री तिस समय में रोकर फिर न

रोतीभई अपने स्वामी के साथ सतीहोने का मन करती भई ४२ तदनन्तर मुकुन्दका गुरु वेदायन नाम संन्यासी पृथ्वी में पर्य्यटन करताहुआ तिसके घर जाताभया ४३ और यह पूछता भया कि मुकुन्द कहांगया और उस बुद्धिमान् की माता और स्त्री भी नहीं दिखाई देती हैं तब तो चेटिका बोली ४४ कि हे स्वामिन्! किसी चोरने रातमें हमारे स्वामीको मारकर उनकी स्त्रीके सब गहने और रेशमी कपड़े हरलियेहैं ४५ वह मराहुआ पृथ्वी में महल के ऊपर पड़ाहै हे गुरो! तिसकी माता, स्त्री और भाई तिसी के समीप महा शोकसागर में गिरेहुए रोरहे हैं नारदजी बोले कि संन्यासी चेटिका के कहेहुए वचनों को इसप्रकार सुन ४६। ४७ महलपर चढ़कर मुकुन्दको मराहुआ और उसके बन्धुओंको उसीके समीप रोतेहुए देखकर ४८ शोकरूपी समुद्रसे उनको उद्धार करतेहुए बोले कि हे मातः! देह वा आत्माका उद्देशकर तुम यह शोक करतीहो सत्य सत्य मुझसे कहिये दोनोंका सो योग नहीं है यह देह भूतोंकासमूह है प्रारब्धोंसे इकट्ठा कियाहुआहै ४६। ५० तिनके क्षीणहुए भूतों का पृथक्भाव होजाता है कर्म्मों से तिनका एक में होना मनुष्यों का जन्महै ५१ तिनके नाशमें तिनका अलग अलगहोना मरण कहाताहै पण्डितोंने भूतोंको एकमें होना अलगअलग होना कर्म के अधीन कहा है ५२ इससे पराये वश और जड़देह में अनाथ विद्यासे जीवमें मरणजन्म देखकर शोक न करनाचाहिये ५३ देहकी आत्मामें अहङ्कारकी बुद्धिसे वे तहां नहीं मानते हैं तिसकी निवृत्ति में सोई तद्ब्रह्महै जो शुद्धरूप वर्जित ५४ स्वप्रकाश जगद्धेतु हेतुसे अतीत गुणोर्जित नित्यविज्ञान और आनन्दरूप अपनी दीप्तिसे संसारको प्रकाशित करताहै ५५ जिह्वास्वाद नहीं लेती नेत्र नहीं देखते कान नहीं सुनते नाक नहीं सूंघती और त्वचा कभी स्पर्श नहीं करती है ५६ इन्द्रियों से अतीत स्वप्रकाशक आत्मदृक् अविषय मनोदूर और बुद्धिके भी गोचर नहीं है ५७ तिसके शुद्धसतोगुणी अवतार रूपोंको देवतालोग सेवनकरतेहैं और सत् असत से परेरूपको नहींजानते हैं ५८ इसप्रकारके स्वरूपको जो आत्मा

है तिसका समुद्देशकर कौन कुबुद्धी है जो क्रोधकरै जिससे तिसकी उत्पत्ति और नाश नहीं है ५९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येनवाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०९ ॥

दोसौदशका अध्याय ॥

कालिन्दीजी के माहात्म्यमें मुकुन्दजीका उपाख्यान ॥

नारदजी बोले कि हे शिबि ! इसप्रकार वेदायनजी पारमार्थिक बचनोंसे तिनसबको समझाकर मुकुन्दकी आत्मसंभव क्रिया करातेभये १ और तिन्हींविद्वान्ने मुकुन्दकी स्त्रीको अपने पतिके साथ सतीहोनेसे निषेधकिया २ मुकुन्दका भाई मुकुन्दजीके हाड़ लेकर गंगाजी के जलमें छोड़नेको वेदायन संन्यासीके साथचला ३ तब तो ब्राह्मण और संन्यासी कई दिनों में सत्पद इन्द्रप्रस्थमें सार्थलोकवशसे प्राप्तहुए ४ तो इन्द्रप्रस्थके भीतर जो अयोध्या है तहां पर दोनों मनुष्य यमुनाजी के किनारे पृथ्वीमें रातको सोनेलगे ५ और बीचमें हाड़ बंधेहुए कपड़े के संपुटको इन्हों ने रखलिया था परन्तु राहके खेदसे परिक्रान्त होकर सोगये ६ तबतो आधीरातमें दोनों मनुष्य सोतेहीथे कि पक्कान्न आदिकके हरनेकी इच्छासे एक कुत्ता वहांप्राप्त होगया ७ जोकि वारंवार पाकस्थलीको सूंघता सब डेरे में घूमता भाजनोंका स्वादलेता और कहीं मस्तक में दण्डे की मारको सहताहुआ था ८ किसी ने मस्तक में जो कुत्ते के मारा तो वह शब्द करताहुआ भगा कहनेको तो इसप्रकार अशक्त कुत्ताहोगया जैसे अपनीही स्त्रीसे जीताहुआ पुरुष होजाताहै ९ जहांपर कुत्ता मारागया था वहींपर अन्नके पात्रके चाटने की इच्छासे फिर पहुँचा १० जैसे स्नेहवान् निर्द्धन मनुष्य वेश्याके भोगकी इच्छासे पहुँचताहै यहकुत्ता इसीप्रकार घूमताहुआ दोनों सोतेहुए मनुष्यों के पास आया ११ और उनके बीचसे हाड़ोंकी संपुटको लेकर कुछ दूर जाकर दांतोंसे १२ हाड़ों को निकाला परन्तु मांसरहित देखा तो अयोध्या के जलके बीचमें छोड़दिया १३ इसजल में हाड़ों के

छोड़तेही सुन्दर विमानपर चढ़कर मुकुन्दजी वहां प्राप्तहोगये १४ तो गुरुजी और छोटेभाई को सोते देखकर तिससमय में धीरेसे जगातेहुए नमस्कारकर बोले १५ कि हे वेदायन हे गुरुजी आपके नमस्कार हैं हे छोटे भाई तुमको आशीर्वाद है आपलोगोंके प्रसाद से मेरे हाड़ इस तीर्थमें गिराये गयेहैं १६ मैं अपमृत्युको प्राप्तहुआ था इससे तिसके फल नरकको पाया परन्तु इसी तीर्थके प्रसादसे दैवीगतिको प्राप्तहोगया १७ और दिव्यविमानपर चढ़कर देवोंके स्थानों को जाताहुआ तीर्थभूत आप गुरुजीके नमस्कार करनेको यहां प्राप्तहुआ हूं १८ आपके नमस्कार किये और इस तीर्थ के भी नमस्कार किये इस छोटेभाई को देखा अब मुझको आज्ञा दीजिये कि सुखके उदयरूप स्वर्गको जाऊं १९ नारदजी बोले कि इस प्रकार मुकुन्दजी के वचनसुन उनके गुरु विस्मयरहित वेदायनजी विमानपर चढ़हुए मुकुन्दसे बोले २० कि हे मुकुन्द! मुझसे सत्य कहो तुम मरणपाकर किसलोक में गये जिससे इससमय में स्वर्ग को जातेहौ २१ हे पुत्र! वहां तुम्हारा क्याहालहुआ तिसलोकका स्वामी कौनहै किसप्रकारकी प्रजा और धर्म है यह सब कहिये २२ तब मुकुन्द बोले कि हे गुरुजी! मरणके पीछे जो हालहुआ वह आपसे कहताहूं इस तीर्थके प्रसादसे इससमयमें मुझको स्मरण हुआहै २३ जब मैं दुरात्मा चण्डकनाई से मारागया तब तो यमराज के भयानक दूत प्राप्तहोगये २४ जोकि पिंगनेत्र, लालबार, श्यामदेह नहँ और ओष्ठवाले, ह्रस्वदेहधारे, बड़े पांववाले, ह्रस्वनाक और दांतोंसे युक्त थे २५ वे परस्पर बोले कि यह धर्मराजकी आज्ञा से संयमनीपुरी को प्राप्त होनेयोग्यहै २६ ऐसा कहकर बड़े क्रोधसे यातनाकी देहमें हमको प्रवेश कराकर घोरफँसरियोंसे बांधकर लोह के मुद्गरों से मारतेहुए २७ तपती हुई बालूवाली राहमें हमें लेचलतेभये तबतो बड़े दुःखसे पीड़ितहोकर मैं रोनेलगा तो फिर उन्होंने मारा २८ और मुझको बहुत डाटकर निश्चयकर बोले कि निश्चलब्रह्म कहनेवाले तूने जिससे गुरुको लुप्तकिया है २९ इससे यमराजजीके आगे क्याकरेगा उनका घोरमुख देखना पड़ेगा और

तिस घोरपापका फल तुमको भोगनाहोगा ३० हे पापिन् ! तिसी पापसे अपमृत्युको प्राप्तहुआ है ऐसा कहकर मुहूर्त्तमात्र में बहुत योजन संस्थित ३१ संयमनीपुरीको लेगये जहांकेराजा यमराजजी हैं तहां धर्म्मराजजी के प्रणामकर हमको आगे स्थापितकर उनसे बोले ३२ कि यह पापी ब्राह्मण लायागया है तबतो धर्म्मराजजी हमको देखकर अपने सभासदों से बोले ३३ कि हे सभ्यो अच्छी तरहसे हमारी वाणी सुनिये जब ब्रह्माजीने इस अधिकारमें हमको निवेशित किया ३४ तब लोकके पितामह ने यह हमसे कहा कि अधर्मी मनुष्यों के तुम दण्ड देनेवाले संयमनीपुरी के पतिहुए३५ हे सूर्यके पुत्र ! जैसा अपराधहो वैसा दण्डकरना जो समर्थ होकर पिता और माताकी पालना न करे और जो गुरुजीसे वैरकरै येमहा-पापी सब नरकोंमें डालेजावें दशदशहज़ार वर्ष एकएक नरकमें रहें इन दोनोंप्रकारके पापियों में कभी दया न करना ३६।३७ तब य-मराजजी बोले कि हे सभ्यो ! ये ब्रह्माजीके वचन सुनकर अपने गुरु के वैरी मनुष्य तथा पिता और माताके न पालनेवालेमें क्रिया नहीं करताहूं ३८ यहब्राह्मण गुरुका वैरी है उसी वैरसे अपमृत्युको प्राप्त हुआहे हमारी आज्ञासे इसदेखनेके अयोग्य को दूतों ने यहां प्राप्त कियाहै ३९ भोदूतो ! पहले घोररौरवमें इसको दशहज़ार वर्षतक डालिये फिर तिससे निकालकर और जगह डालना ४० यह गुरु-लोपकपापी जितनेही समयतक सब नरकों में स्थितरहे ४१ मुकुन्द बोले हे वेदायनगुरो ! हे स्वामिन् ! वे दूत यमराजकी आज्ञासे फँस-रियोंसे बांधकर हमको घोररौरवनरक में गिरा देतेभये ४२ तो हे तात ! तहांपर मैं तिस अत्यन्तघोर भारीव्यथा को प्राप्तहुआ और एक एक क्षण युगके समान व्यतीतहुआ ४३ वहां स्थितहोकर मैंने तीसदिन दुःख उठाया और इस इकतीसवें दिनमें वहां से निकल आया ४४ इस उत्तमोत्तम तीर्थ में हाड़ोंके गिरने से गुरुलोप से उत्पन्न पाप शीघ्रही मेरानष्ट होगया ४५ इसी तीर्थ के प्रसाद से मुझको स्वर्ग प्राप्तहुआहै अब जबतक चौदहों इन्द्ररहेंगे तबतक स्वर्गमें सुखपूर्वक बसूंगा ४६ यमराज के नगरमें जो प्रजा बसती

हैं वे पापियोंको भय देनेवाली और धर्मियों को मनोहरहैं ४७ सिंह, हाथी और सुअरके समान मुखवाली बड़ीडाढ़ोंवाली ऊंचेपेटवाली बिलार के समान मुखवाली पिंग बालोंवाली दीर्घपांव और हाथों वाली वहांकी स्त्रियां हैं ४८ जब मैं इस तीर्थके प्रसादसे पापरहित हुआ तब तो मैंने यमराजके स्थानमें सुन्दर रूपवाली प्रजा देखी ४९ सब सत्य बोलनेवाली विनय आचार से संचित सुन्दर गहने धारण करनेवाली और सुन्दर कपड़ों से विभूषित थीं ५० हे तात! हे पापरहित! जो आपने पूंछा वह मैंने सबकहा अब इन्द्रपुरी जानेकेलिये हमको आज्ञा दीजिये ५१ नारदजी बोले किवह संन्यासी धर्मात्मा तिस समयमें अपने शिष्यके कहेहुए वचन सुन फिर मुकुन्दब्राह्मण से पूंछनेलगे ५२ कि बाल्यावधि गुरुका स्नेह कर हमसे तुमने सब पढ़ा है पदक्रमसमेत शब्दशास्त्रसंयुक्त वेद भी पढ़ाहै ५३ भावसे तुमने हमारी सेवाभी कीहै हे साधो! तुममें सज्जनों के गुण शम दम आदिक हैं ५४ परन्तु गुरुलोपकृत पाप कैसे होगया हे तात! यह कहिये जिससे मैं तत्त्वसे जानजाऊं ५५ तब मुकुन्द बोले कि जन्म यज्ञोपवीत, कन्या और वेदों के धारण करनेवाले और यज्ञोपवीत देनेवाले की मैंने आज्ञाभंग नहीं की ५६ सास और श्वशुरकी सेवा नौकरकी नाईं मैंने कीहै शास्त्र पढ़ानेवाले आपकी भी आज्ञाभंग मैंने नहींकी ५७ पुरोधा...

से इस तीर्थ में तुम्हारे हाँड़ गिरायेगये हैं इसका स्मरण तुमको है ६४ तबमुकुन्द बोले कि एककोई ब्राह्मण सांझको मेरेघर आया था तिसको मैंने स्थान और विधिपूर्वक भोजन दिये ६५ जब वह इच्छापूर्वक भोजनकर सुन्दर शयनमें सोनेलगा तब आधीरात में तिसके सब अंगमें अत्यन्त घोरज्वर हुआ ६६ उससे सब अंग पीड़ित होकर रात्रिमें उसको नींदनहीं आई प्रातःकाल मृत्युके उ-पस्थित होनेमें उस ब्राह्मणने प्राण छोड़दिये ६७ हेगुरो! तिसके दाह आदिक कर्म मैंने किये और विधिपूर्वक तिसके हाँड़ोंको गंगा जीमें छोड़ा ६८ तिसीपुण्यसे मेरे हाँड़ कल्याण देनेवाले इस ब्रह्मा जीके रचेहुए अयोध्यानाम तीर्थ में गिरायेगये हैं ६९ नारदजी बोले कि हे राजन् शिवि! वह मुकुन्दब्राह्मण अपने चरित्रोंको अप-ने गुरुजीसे कहकर शीघ्रही देवताओंकेसमान सुन्दर शरीरहोकर विमान पर चढ़कर स्वर्ग्ग को जाताभया यह मैंने तुमसे कहा कि चोरसे मृत्यु को प्राप्त होकर इसी तीर्थराज के प्रसादसे स्वर्ग्गको प्राप्तहुआहै ७० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दी-माहात्म्येमुकुन्दोपाख्यानेदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१० ॥

दोसौग्यारहका अध्याय ॥

यमुनाजीके माहात्म्य में मुकुन्दब्राह्मणका चरित्र वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे शिवि! तुम्हारे आगे मुकुन्दजीका सबउत्तम आख्यान कहा अब चण्डकनाई का मुझसे चरित्र सुनिये १ हे रा-जन्! जिसदिन चण्डक ने मुकुन्दब्राह्मणको मारा तिसी समयमें यह हाल नगरवासियोंने सुना २ तो सुनकर उन्होंने राजासे स्फुट नि-वेदन किया कि हे राजन्! चण्डकने उत्तमब्राह्मण मुकुन्दको मार डाला ३ और उसका बहुत धन लेलिया है इसमें जो युक्तहो वह की-जिये क्योंकि आप हम सबप्रजाओंकी रक्षा करनेवाले और दुष्टों के दण्ड देनेवाले हैं ४ नारदजी बोले कि ये वचनसुन कोपसे रक्तनेत्र होकर राजा समीपही वर्तमान मंत्रीसे बोला कि ये लोग क्या कहते

हैं तिसको सुनो ५ और शीघ्रही तिस पापी को लेआओ जो नहीं लावोगे तो तुमको मैं मारडालूंगा हे पापिष्ठ! उठो उठो साधुओंका कल्याणकरो ६ जिसकी राज्यमें प्रजा घोर चोरों से पीड़ित होतेहैं और चोरोंसे प्रजाओंकी रक्षा राजा नहीं करताहै वह राजा नरक को जाताहै ७ नारदजी बोले कि हे शिबि! ये राजा के वचन सुन मंत्री शीघ्रतासे सौ सिपाहियों को लेकर घोड़ेपर चढ़कर ८ मुकुन्द के घरमें गया और तिसके बन्धुओं से पूछनेलगा कि मुकुन्द को किसने माराहै यह हमारे आगे सत्य सत्य कहिये ९ राजाकी आज्ञा से मैं तिस पापीको मारडालूंगा नारदजी बोले कि ये मंत्री के वचन सुन ब्राह्मणके बान्धव बोले १० कि हे मंत्रिन्! चण्डक नाईने मुकुन्दको माराहै और भागते में उसकी पगड़ी यह गिरपड़ीहै ११ मुकुन्दका मारनेवाला वही है यह मुकुन्द की स्त्री ने अपने नेत्र से देखाहै हमलोग क्याकरें तिसी पापीने शोकरूपी समुद्रमें हमलोगों को डुबायाहै १२ नारदजी बोले कि ब्राह्मणके बन्धुओं के ये वचन सुन मंत्री तिस पापीनाई के घर चलताभया १३ और घोड़ासे शीघ्रही उतरकर कुछ सिपाहियों समेत उसके घरमें आपही प्रवेशकर उसको सोतेहुए देखा १४ मंत्रीकी आज्ञापाकर सिपाहीलोग तिसी क्षणमें उसके बाल पकड़ कर तिस पापी अधम नाई को शय्यासे उठातेभये १५ तब वहपापी नाई जबतक क्याहै क्याहै यह कहता हुआ आंखेंखोले तबतक तिनको आगे देखताभया १६ फिर रात्रि में जो पाप कियाथा उस अपने कर्मको स्मरणकर मस्तकमें स्थित यमराजको देखताहुआ नीचेको मुखकर क्षणमात्र स्थितहुआ १७ फिर मन्त्री अपने सिपाहियों से तिस पापी को पकड़ाकर राजाके समीप लाकर उनसे यह बोला १८ कि हे राजन्! इस ब्राह्मण के मारनेवाले चण्डक नाईको लायाहूं हे स्वामिन्! जो आज्ञा दीजिये शीघ्रही तिसको करूं १९ तब राजा बोले कि हे धर्म्म जाननेवाले, हे मन्त्रियों में श्रेष्ठ! मेरे वचन सुनो यहांपर निर्म्मल, नदियों में श्रेष्ठ चन्द्रभागा नदी है २० जे यहांपर प्राणोंको छोड़ते हैं वे देवों के स्थानको प्राप्त होते हैं इससे यह पापी नाई यहां मारने योग्य

नहींहै २१ पांचकोशके भीतर इस नदीकी मर्य्यादाहै इससे बाहर इसको मारिये तो यह ब्राह्मणका मारनेवाला शीघ्रही घोर नरकोंको जावे २२ नारदजी बोले कि हे राजन् शिबि! राजाने श्रेष्ठ मन्त्रीसे इसप्रकार कहा तो मन्त्री राजाकी आज्ञासे श्वपचोंसे कहता भया २३ तब तो श्वपचलोग नाईको लेकर चन्द्रभागा नदीके आठकोस पर जाकर उसका शिर काटलेतेभये २४ तो वह पापी मारवदेशमें कालकादेह सर्पहुआ जोकि धववृक्षके कोटरके मध्यमें स्थित और विषकी ज्वालाकी खानिसे युक्त मुखवाला था २५ उसकी फूत्कार की आगसे इसप्रकार धवका पेड़ सूखगया जैसे सूर्य्य की तापसे कुण्ड सूखजाता है २६ तिस पापीके जानेसे सबओर वृक्ष ऊसर होगया तृणजात आदिक कटकर पशुओं के अहित तिससमय में होगया २७ तहांपर दक्षिणदेशसे सार्थ बदरीनारायणको जाताथा २८ यह सार्थ ब्राह्मणथा और छेदरहित काष्ठकी सन्दूकमें पिता और माताके हाँड़ लियेहुएथा २९ हे महाभाग! उन हाड़ोंकी सन्दूकको कांधेपर रखकर पापियोंके भी कामना देनेवाले गंगाजीके जलमें छोड़नेको जाताथा ३० यह ब्राह्मण भी उसी सर्प्पके वनमें पहुँचा तो एकान्तमें शलाका लोहसे बनीहुई सन्दूकको उतार देता भया ३१ तदनन्तर वह सांप सन्दूकके पास आकर फणासे शलाका को हटाकर कुछही शलाकाके हटनेपर सन्दूकमें घुसगया ३२ और शलाका फिर अपनी जगह पर आगई और चेष्टारहित घोर विष वाला सांप वहीं रहगया ३३ तिस पीछे सबलोग उस स्थानसे चले तो कम्बलसे आच्छादित सन्दूकको ब्राह्मणभी ३४ शिरमें रखकर गंगाजीको चला कई दिनोंमें यह सार्थ तीर्थगामियों की ३५ पवित्र अयोध्याजीमें पहुँचा तो शीतसे व्याकुलहोकर सन्दूकमें लपेटेहुए कम्बलको निकालकर ओढ़ताभया और तिसी अयोध्याके शुभ किनारे वह निराहार सांप पवनके भोजनको पाकर ३६। ३७ शलाकाको अलग हटाकर सन्दूकसे बाहर निकला तिसको निकलते देखकर सांप सांप यह क्रोधसे ३८ कहकर ढेला हाथमें लेकर उस के पास दौड़े जबतक सर्प्प भागे तबतक एक मनुष्यने मारडाला

३९ तब तो तीर्त्थगामियों के देखतेही देखते उसने प्राण छोड़दिये तो सांपकी देहको छोड़कर दुर्लभ देवदेह पाकर ४० सुन्दर विमान पर चढ़कर यह मनुष्योंसे बोलताभया कि भो दक्षिणी ब्राह्मणो! हमारे वचन सुनो ४१ पूर्वसमयका चण्डकनाम नाई, अधम, ब्राह्मण का मारनेवाला मैंथा ब्रह्महत्याके दोषसे मरुस्थल में सर्प्पहुआथा ४२ पांचलाख वर्ष नरकके दुःखोंको भोगकर बीसहज़ार वर्ष सर्प्प की योनिमें भी बीते थे ४३ कि इस तीर्त्थ के प्रसादसे देवभाव को प्राप्त होगया तिससे सब अर्त्थ का देनेवाला यह अयोध्या तीर्त्थ नहीं त्यागना चाहिये जिससे कि मुझ पापीनेभी स्वर्ग प्राप्त किय ४४ नारदजी बोले कि इसप्रकार वह पापी नाई निन्दित योनि पाकरभी इस तीर्त्थके प्रसादसे विमानपर चढ़कर स्वर्गको गया ४५ तब तो उस तीर्त्थकी महिमा देखकर दक्षिणी ब्राह्मण उसी तीर्थमें संन्यासी होकर गोविन्दजी के चरणकमल में मन लगाकर बसते भये ४६ और वह उत्तम ब्राह्मणभी इस तीर्त्थ की माहात्म्य देखकर इसी में श्रद्धायुक्त होकर पिता और माताके हाँड़ों को छोड़ता भया ४७ हाँड़ोंके छोड़तेही उसकी माता और पिता तिसी क्षणमें सुन्दररूपयुक्त होकर श्रेष्ठ विमानपर चढ़कर वहां प्राप्तहोगये ४८ और सब मनुष्योंके सुनतेही अपने पुत्रसेबोले कि हे वत्स! संसार में बहुतकालतक जीवो धन धान्यसे युक्त होकर सुखी होवो ४९ हम दोनोंके मुक्ति देनेसे तुमभी मुक्तिको प्राप्त होगे यह झूठ नहीं होगा पुत्रका गंगाजी में पिण्ड देनेसे जो फल होताहै और पितरों की जो गति यहां होती है ये दोनों हाँड़ोंके छोड़नेसे होतेहैं ५०॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येमुकुन्दोपाख्यानंनामैकादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २११॥

दोसौ बारहका अध्याय॥

यमुनाजी के माहात्म्य में अयोध्याजीकी महिमा वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे शिवि! यह कहकर तिस ब्राह्मणके माता और पिता सुन्दर रूपयुक्त होकर श्रेष्ठ विमानपर चढ़कर भगवान

के पुरको जाते भये १ तब तो उनका पुत्र उसी अयोध्या में तीन दिन बसकर तीर्थका माहात्म्य चिन्तना करताहुआ अपने घरको चलाआया २ हे राजन्! यही अयोध्या पण्डितलोगों करके कही जाती है सुननेकी उत्साहयुक्त चित्तवाले तुमसे उसी को कहूंगा ३ वे दक्षिणी ब्रह्मचारी मरनेकी इच्छाकर समर्त्थ अर्त्थकी देनेवाली तिस अयोध्यामें बसनेलगे ४ तिन दक्षिणियों में एक दक्षिणी अयोध्याको अनादरकर नारायणजी के स्थानमें जाताथा उसको वृद्ध ब्राह्मण का रूपकर भगवान् राहमें निवारण करतेहुए बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इस शुभ अयोध्याको छोड़कर कहां जातेहौ ५।६ हे द्विज! हे पुत्र! यह इन्द्रप्रस्थ तीर्थ सब तीर्त्थोंसे उत्तम है अयोध्या यहांपर मुक्तिकी देनेवाली और विष्णुजीकी प्यारी है ७ निष्काम पदकी देनेवाली इसको छोड़कर जहांजातेहौ वहांपर सिद्धि न होगी क्योंकि विष्णुजी तुमसे पराङ्मुखहैं ८ हे विप्र! जो मुक्ति चाहतेहो तो तीर्थमें संन्यासलो जिसजिसकी इच्छासे तुम स्नानकरोगे तिस तिस वर्गको अयोध्यादेगी ९ तुम्हारेही आंखोंके आगे सर्प देवता होगयाहै और अयोध्याही के प्रसादसे स्त्रीपुरुष ब्राह्मण मुक्तहोकर स्वर्गमें स्थित होगये हैं १० इसके माहात्म्यके दर्शन से संजातप्रत्ययभी समभाग्य के उदयसे इसको पाकर कैसे छोड़तेहौ ११ हे मूढ़! जैसे कोई प्यासा अमृत के समुद्रको पाकर उसको छोड़कर कीचड़ के जलको जाताहै तैसेही तुम दिखलाई देतेहौ १२ जैसे कोई हाथमें स्थित चिन्तामणिको मोहित होकर कुंयेंमें छोड़देताहै तो जो गति उसकीहै सोई तुम्हारीभी देखाई देती है १३ और जैसे कोई कुबुद्धी पुरुष संसारके स्वामी विष्णुजी को आराधनकर इंद्रिय के तुच्छ सुखको मांगताहै वही गति तुम्हारीहै १४ इससे सबअर्थ के देनेवाली इस अयोध्याको छोड़कर न जावो स्नान करनेवाले की यहांपर स्वर्गकी प्राप्ति और मरनेवालेका मोक्षहोताहै १५ नारदजी बोले कि हे राजन्! वहब्राह्मण कल्याण करनेवाले भगवान्के वचन सुन उनसे वदरिकाश्रम को श्रेष्ठ कहताहुआ बोला १६ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! आपके वचनसे श्रद्धा उत्पन्नहुई है मैंने पहले तो छोटे गांव

का माहात्म्य सुनाथा १७ इस इन्द्रप्रस्थ तीर्थ को कभी मैंने नहीं सुनाथा फिर इसके भीतर वर्तमान वृद्ध अयोध्या को कैसे सुनता १८ जहांपर साक्षात् नारायण और योगी मुक्तहोगये हैं तिसपुण्यकारी आश्रमको छोड़कर यहां कैसे ठहरूं १९ जैसे विष्णुजी आपही आकर यह कहकर हमको निवारण करें कि हे द्विज! यह इन्द्रप्रस्थतीर्थ वदरिकाश्रमसे अधिक क्षेत्रहै २० तब भी तिसआश्रम को अपने स्थानसे मुक्तिकी कामनाकर चलाहुआ मैं यहां न ठहरूंगा और तरहसे मेरी स्थिति कैसे होसक्ती है २१ नारदजी बोले कि तिसब्राह्मणके ऐसाकहनेपर प्राकृतरूप छोड़कर सुन्दररूप धारणकर चारभुजाके भगवान् होगये २२ और मोक्षकी कामनावाले तिस महाभाग ब्राह्मण से बोले कि हे विप्र! यहइन्द्रप्रस्थ तीर्थ सब तीर्थोंसे उत्तमहै जैसे सबब्रह्मयज्ञोंमें महादेवजी, नदियोंमें गंगाजी २३ पर्वतों में हिमवान्, पक्षियोंमें गरुड़, देवताओंमें इन्द्र, वैष्णवों में नारद २४ तेजस्वियोंमें सूर्य, समुद्रोंमें क्षीरसमुद्र, वर्णोंमें ब्राह्मण, सृष्टियों में ब्रह्माजी २५ और विष्णुजी के अवतारों में रामचन्द्रजी श्रेष्ठहैं तैसेही सब तीर्थों में यह इन्द्रप्रस्थ तीर्थ श्रेष्ठहै २६ निष्काम वा सकामहोकर कोई मनुष्य तीर्थ में प्राप्तहोताहै तो तहां तहांपर सब का आत्मा मैं फलका देनेवाला होताहूं २७ इन्द्रप्रस्थ के अन्तर्गत अयोध्याजी को छोड़कर जो चलाजाताहै वह भक्तफलको नहीं प्राप्तहोताहै २८ नारदजी बोले कि ब्राह्मण भगवान् के इस प्रकार वचन सुनकर और उनका उत्तमरूप देखकर उनके प्रणाम कर अयोध्याजी में चलागया २९ संसारके आत्मा भगवान् तिस ब्राह्मण को तत्त्व उद्देशकर तिससे भावसे पूजितहोकर शीघ्रही अन्तर्द्धान होगये ३० वह ब्राह्मण अयोध्यामें जाकर तिस वृत्तान्त को सब अपने साथियोंसे कहताभया ३१ तब तो वे महाभाग दक्षिणीब्राह्मण यह माहात्म्य सुनकर अयोध्याही में अनशनव्रत कर प्राकृत शरीर छोड़तेभये ३२ उससमय में श्रीविष्णुजी गरुड़पर चढ़कर प्रकाशित विमान और गणों को साथ लेकर प्राप्त होगये ३३ तब गणसंयुक्त विमान और सुन्दररूप धारण कियेहुए त्रि-

ष्णुजी को आते देखकर वे सब ब्राह्मण पृथ्वी में दण्डकी तरह गि-
रते भये ३४ और सुन्दररूप और ज्ञान धारणकर सुन्दररूप धा-
रण कियेहुए, देव, देवताओं से वन्दित कियेहुए चरण कमलवाले
भगवान्की स्तुति करतेहुए बोले ३५ कि अलसी के फूलकी दीप्ति
के समान प्रकाशित देह धारण करनेवाले, पीताम्बर धारण करने
हारे, कुण्डलोंसे प्रकाशित, कानोंमें चंचलाव्यापि नीलमेघों के स-
मान आपके नमस्कारहै ३६ कल्पवृक्षरूप आपकी भक्ति आश्रित
होनेसे चित्तके वांछितको देती है जैसे हे विभुजी यह आपकी अ-
योध्या आपकी कृपासे मनुष्योंको प्राप्तहोती है ३७ ईश्वर आदिक
देवताओंसे वंदित आपके चरणकमलको हम लोग वंदना करते हैं
जोकि योगियोंके समूहों से हृदयमें चिन्तना कियेजाते हैं और प-
रानन्दसे उत्पन्न मुक्तिके कन्दरूपहैं ३८ हे श्रीपतिजी ! भृगुलता
आदिक पवित्र चिह्नोंसे लक्षित आपके स्वरूपको हमलोग प्राप्तभी
भये हैं तिसपर भी नारदआदिक सबसे आदर कियेहुए और प्राप्त
हुए आपके दासभावकी हमलोग वाञ्छा करते हैं ३९ आपके दा-
सभाव प्राप्तहुओंको जो सुखहै वह हृदयकेबीच बसनेवाली लक्ष्मी
जीको नहीं है इसको श्रीमहादेवजी जानते हैं जोकि दासभाव को
प्राप्तहैं और संसारमें कोई नहीं जानताहै ४० रागरहित हम सब
सेवकोंके बीचमें यह पूजनीयहै इनसे फिर नारद आदिक मुनीश
आपकी भक्तिकी प्राप्ति से संसारके स्वामीको भजते हैं ४१ अन्त-
रात्मा महादेवजी ब्रह्मानन्दको प्राप्तहोकर भी आपके दासभावसे
तृप्त नहीं होते हैं वारंवार आपके गुण ग्रहण करनेको आपमें परा-
यण, भावयुक्त होकर उच्चप्रकारसे नाचते हैं ४२ इस हेतुसे देहधारी
पुरुषको अपनी दास्य प्राप्तहुए उर्मी नहींहोती हैं आपके चिह्नयुक्त
अंगवाले तिनके द्वारपाल मोहसे अपने धामको प्राप्तहोगये हैं ४३
इसलोकके अन्तरसे आपकी इच्छा आपके लोकोंको नहीं होती है
शीघ्रही पात होजाताहै ब्रह्मा और महादेव आदिक देवताओं से
भी दुःखसे जानने योग्य आपकी मायाको कौनजानता है ४४ अ-
पने पद के उन्मुख भगवान् इसप्रकार तिनसे स्तुति कियेगये तो

मेघों केसमान गम्भीर वाणीसे तिन दक्षिणियोंसे बोले ४५ कि हे ब्रा
ह्मणो! तुमलोगोंने इस अयोध्याके प्रसादसे हमारी सारूप्य प्राप्तकी
है दासभाव को भी प्राप्त होजावोगे ४६ आजसे लेकर मेरा यह
अत्युत्तम तीर्थ दक्षिणकोशला के नाम से प्रसिद्धहोगा ४७ और
जहांपर रामचन्द्रजी उत्पन्न होकर रावणको मारेंगे उसको सबमुनि
वरलोग उत्तरकोशला कहेंगे ४८ जो ज्ञानवान् उत्तरकोशला में
बसेगा वह वैकुण्ठ को प्राप्तहोगा और जो उत्तरकोशला के विना
दक्षिणकोशलामें बसेगा तो वह भी स्वर्गको जावेगा ४९ कोई मु
नीश्वर उत्तरकोशला से दशगुणा दक्षिणकोशला को और कोई
ग्यारहगुणा अधिक कहते हैं ५० हमारी यह बुद्धिहै कि उत्तरको-
शला में मरनेवाले को हमारे गण वैकुण्ठ लेजाते हैं और दक्षिण
कोशलाके मरनेवालेको मैं गरुड़पर चढ़ाकर सारूप्य प्राप्त करताहूं
इतनाही इसमें विशेषहै ५१।५२ नारदजी बोले कि हे राजन्! तिन
ब्राह्मणोंसे ऐसा कहकर अपने तीर्थकी महिमाकी स्तुति करतेहुए
भगवान् उनको वैकुण्ठमें लेजातेभये ५३ यह कारण मैंने तुमसे
सब कहा जिससे विज्ञोंकरके यह दक्षिणकोशला कहाती है ५४ यह
सुननेवाले मनुष्यों के कलियुगके पापसमूहों की नाश करनेवाली,
कमलनयन के चरणोंकी प्राप्तिके लिये वाञ्छित अयोध्याजीकी म-
हिमा तुमसे वर्णन की अब सुननेवाले आपसे मधुवनके उत्पन्न वृ-
त्तान्तों को कहूंगा ५५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्ये
कोशलामहिमावर्णनंनामद्वादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१२॥

दोसौतेरहका अध्याय ॥

यमुनाजीके माहात्म्यमें एकदरिद्रीब्राह्मण और उसकी व्यभिचारिणी
स्त्री का चरित्रवर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन्शिवि! यह मधुवन परमपवित्र है
देवराज के ऊपर प्रसन्नहुए विष्णुने पुरीस्थापित की है १ यहांपर

विश्रांतिनाम तीर्थ तीनों भुवनोंसे उत्तमहै ज्ञानी पुरुषों को मुक्ति का देने वाला, पवित्र और साधुओं से सेवित है २ इस पुण्यकारी उत्तम विश्रांति तीर्थ में विश्वात्मा शूकररूप धारण करनेवाले विष्णु जी नित्यही बसते हैं ३ बहुत जन्मोंसे जिन्होंने विष्णुजी का सदा आराधन कियाहै तिसका इस तीर्थ में निश्चय मरण होता है ४ और यमुनाजी के किनारे भगवान्का कियाहुआ दूसरा विश्रांति-संज्ञकतीर्थ है जहांपर कंस डालागया है ५ वैकुण्ठ देनेवाले गुणों से ये दोनों समान हैं किसी भाग्यके उदय से यह सम्पूर्ण अर्थका देनेवाला प्राप्त होताहै ६ अब तीर्थका माहात्म्य तुम्हारे आगे कहताहूं जिसको सुनकर सब तीर्थोंमें स्नानसे फलको प्राप्तहोगे ७ हिमाचलके समीपकी भूमि में किरातनाम शुभनगरमें एक ब्राह्मण दरिद्री रहतेथे ८ तिनकी स्त्री दुराचारिणीथी यह दुराचारी मनुष्यों में रतरहती थी और कर्मसे पतिको मोहित कियेहुए थी ९ इसका पति तिससे मोहित होकर निषेध करनेको भी समर्थ न था स्त्रीही की आज्ञा में तत्पर, दीन, मोलकासा लियाहुआ होगया था १० इस व्यभिचारिणी के पति तिस ब्राह्मण को मनुष्य हँसतेथे परन्तु यह कुबुद्धी हँसनेके डरसे कभी घरहीसे न निकलता था ११ और इसकी व्यभिचारिणी स्त्री दुष्टात्मा तो व्यभिचारी मनुष्यों के दिये हुए बड़े मोलके रेशमी कपड़े और गहने धारणकर हँसनेसेभी न लज्जित होतीथी १२ और अपनी देहके उतारेहुए पुराने कपड़ों को अनादरसे अपने पतिको देतीथी १३ इसप्रकार तिस व्यभिचारिणी ने अपने पतिका अनादर किया तो अत्यन्त दुःखसे युक्त होकर इसका पति विष खाकर रात्रिमें मरगया १४ तो यह व्यभिचारिणी पापिनी तिस समयमें राजा से डरकर यह झूठ वचन बोली कि मैं अपने पतिके साथ सती होजाऊंगी १५ और इसी ने अपने समीप जानेवाली सखियोंसे सिखला दियाथा कि तुमलोग राजासे कहकर हमको सती होनेसे निवारण करना १६ तब सखियां उस से बोलीं कि भो मृगनयनी! किसलिये इसप्रकार का अनर्थ करती हो सुवर्ण के समान अपनी देहके नाश करने में उद्यत हुईहो १७

इस रोजगारहीन, दरिद्री, असमर्थ और अपनेही पेटके पूरणकरनेवाले से तुमने क्या सुख देखाहै १८ इस बालकको पालो तुमको छोड़कर इसका पालनेवाला कौनहै हे सुन्दरि! तुम्हारे मरने में हम सब मरजावेंगी १९ हे श्रेष्ठ मुखवाली! उठो इस घरको देखो यह तुम्हारा पुत्रजीवे जो सुखका देनेवाला होगा २० और सबतुम्हारे बान्धव तुम्हारे जीनेकी वाञ्छा करते हैं इससे उठो और अपने बन्धुओं के चित्तको प्रसन्नकरो २१ हे सति! तुम्हारे रागसे सब बराबर उमरवाले रोरहे हैं इससे इन दुःखयुक्तों को अपने वाक्य के दान से निवारण करो २२ नारदजी बोले कि वह दुष्टा तिन स्त्रियों के धर्मविश्रुति वचनसुन मुखकोनवाकर अपने बान्धवोंको सुनाती हुई बोली २३ कि तुमलोगोंने जो धर्मके वचन कहेहैं उनको मैं सत्यजानतीहूं तिसपर भी स्त्रियों को दोनोंलोक का देनेवाला अपना पति पूज्यहै २४ हे सखियो! धर्म्मशास्त्रसंयुक्त मैं जो वाक्य कहती हूं तिनको सुनिये और जो युक्तहो वह आज्ञा दीजिये २५ जो स्त्री मरण को प्राप्तहुए पतिमें परायण होकर सती होजाती है वह जो पापिनी भी हो तौभी पतिके साथ बहुत कालतक स्वर्ग में बसती है २६ स्त्रियों को जीताहुआ निर्धन और रोगीभी पति त्यागनेयोग्यनहीं है और मरने में सती होनाचाहिये यह सनातनीश्रुति है २७ यह अपने मनमें चिन्तना कर अपने पतिके साथ सतीहोना चाहतीहूं अपनी भाग्यसे वर्तमान होगा मैं इसका क्याकरूंगी २८ नारदजी बोले कि तिसने जब ऐसा कहा तो वे दुष्टा दुष्टमति की देनेवाली सखियां सब जनोंके मोहन करनेवाली तिस सखीसे धर्मके वाक्यसे बोलीं २९ कि हे प्यारी! हमलोगोंको पहले त्यागकरो पीछेसे सती होजाना हम सब तुम्हारे वियोग के सहने में न समर्थहोंगे ३० तुमको हमलोगोंके मारने में और अपने पतिकेसंग सतीहोने में थोड़ा धर्महोगा और पाप बहुत होगा फिर स्वर्गकी प्राप्ति कैसे होगी ३१ हे सखि! जीतेहुए अपने पतिको तुम ने अच्छीतरहसे पालाहै जो कुछ पति और स्त्रीके लिये कहाहुआ है वह सब तुमने कियाहै ३२ जबतक यह तुम्हारापति अपने जीवनके उपाय करने में

असमर्थ होगा तबतक तुम्हारीही भाग्य से जीवेगा ३३ नारदजी बोले कि सखियों के इस प्रकार कहनेमें वह स्त्री अपने पतिके संग सती होने से निवृत्त होगई और तिसी समय में पुत्रसे सब क्रिया करादेती भई ३४ तदनन्तर कुछकाल बीतने में वह पुत्रके जनेऊ करने में बुद्धि करतीभई तो व्यभिचारियों के दियेहुए धनको ब्राह्मणोंको देकर जनेऊ करादेतीभई ३५ तब जनेऊ कियेके पीछे वह कुण्ड, तत्त्वज्ञानी बालक शीघ्रही घरसे निकलकर नारायण में परायण होगया ३६ सज्जनोंकी संगति पाकर अपने प्राकृत देहको छोड़कर योगियों के भी न प्राप्त होनेवाले निजलोक को चलागया ३७ तदनन्तर वह स्त्री पुत्रके निकलजानेमें मनमें दुःख करतीभई परन्तु तिस दिनभी उसने व्यभिचारियों के साथ रमणकिया ३८ इसप्रकार जार पतियों के साथ रमणकरते करते समय पाकर लावण्यमद के नाश करनेवाली वृद्धावस्था आगई ३९ तबतो बुढ़ापे से ग्रस्तदेह देखकर उपपतियों ने त्याग करदिया तो और स्त्रियोंके कुलशील के नाश करनेवाली दूती होगई ४० तिस समय में एक ब्राह्मण की बछवा समेत गऊको चुराकर कुछ द्रव्यसे उसको बेंच लेतीभई ४१ इस प्रकार दूतीके भाव में कुछकाल उसने व्यतीत किया तिसपीछे गुणरहित सूखाशरीर होगया ४२ और कुष्ठउत्पन्न होकर पांचअंग गलगये दोनों हाथ दोनों पांव और पांचवीं नाक गलगई ४३ जब इसप्रकार की होगई तो भोजन कहीं न मिलने लगा तबतो दासीसे कहकर उसीके द्वारा बाजारको चलीआई ४४ और वहांपर यह पापिनी गिरकर दीनवाणी से मनुष्योंसे मांगकर अपना पेट पूरण करनेलगी और अपनाको धिक्कार देतीभई ४५ तब तो उसीके समीप का रहनेवाला सब शास्त्रों के अर्थका जाननेहारा ब्राह्मण महावाग्मी तिसको देखकर ये वचन बोला ४६ कि इसलोक और परलोकमें भी पाप मनुष्योंको दुःख देतेहैं तिससे दुःखसे डरे हुए मनुष्यों को पाप न करना चाहिये ४७ पाप करके जो मनुष्य प्रायश्चित्त करताहै तो प्रायश्चित्तके करनेसे फिर तिस पापकेफल को नहीं प्राप्त होताहै ४८ और जो वारंवार पापकर प्रायश्चित्तनहीं

करता है तिसकी इस पापिनी की नाईं इसलोक और परलोक मे
गति होती है ४९ इसने इस संसार में पापसमूह इकट्ठा किया
तिसका फल इसलोक में भोग कररहीहै और नरकमें भी भोगक
रेगी ५० सब शास्त्रोंमें सब पापकर्मोंका प्रायश्चित्त मैंने देखाहै प
रन्तु मुखसेभंग स्त्रियों का प्रायश्चित्तही नहींहै ५१ नारदजी बो
कि ऐसा कहकर वह श्रेष्ठब्राह्मण तिसके देखने से डरकर सूर्य्यजे
के नमस्कार कर विष्णुजीका स्मरणकर चलेगये ५२ फिर वह पा
पिनी इकट्ठे कियेहुए कर्म के फलको भोग करतीहुई इसप्रकार वे
दुःखको प्राप्त होकर कुछदिनोंमें मरगई ५३ तो इस पापकर्म कर
वालीका अग्निसंस्कार भी न हुआ श्वपचों ने बालोंको पकड़क
खींचकर नगरके बाहर डालदिया ५४ फिर मरण के अवसरहीमे
यमराजके दूत आगये तो उन्होंने यातनाकी देहमें प्राप्तकर इसको
यमराजकी पुरीमें प्राप्त करदिया ५५ यमराजजी धर्मात्माओंकेलिये
तो सीधे और पापियोंके लिये अत्यन्त कठिनहैं यमराजजीभी तिसके
देखने से फिर पराङ्मुखहोकर ५६ दूतोंको आज्ञा देतेभये कि इसको
रौरवनरकमें डालदीजिये ५७ उनके ऐसा कहनेपर दूत नीचेका मुख
कर किये हुए कर्म्मों का स्मरण करती हुई उसको घोररौरव नरक
में डालदेतेभये ५८ तो एक मन्वंतरपर्यन्त वह वहां रहकर पीछे
से श्मशानमें मुर्दोंके मांसके भोजन करनेवाली गोधायोनिमें उत्पन्न
हुई ५९ तहांपर भी अपने कर्मका फल सौवर्षतक दुःख प्राप्तकिया
और मुर्दों के मांससे उत्कट भोजन करनेलगी ६० एक समयमें
वही मुनिका पुत्र जो इसकी कोखिमें उत्पन्न हुआथा वह ब्राह्मणकी
योनि में उत्पन्नहुआ और श्मशानमें घूमताहुआ ६१ मुर्दों के मांस
भोजन करनेवाली को देखा तब तो इसने क्षणमात्र अपने मनमें
ध्यानकर अपनी माताको समझा ६२ और यह समझकर अपना
ही अपनेसे बोला कि इसको दुस्तर दुःखरूपी समुद्रसे मैं तारदूंगा
६३ प्राणी अपने इकट्ठे कियेहुए पापकर्म से भोगकालकी अवधि
के विना नहीं छूटता है ६४ इसका नरक में मन्वन्तरपर्य्यन्तकाल
बीताहै और इस समयमें भी मनुष्यों के सौवर्ष बीतचुकेहैं ६५ और

कुछ आगे भी घोरपाप भोगने होंगे नारदजी बोले कि ऐसा कहकर ज्ञानसे फिर नेत्र बन्दकर उसने ध्यान किया ६६ तो तिस पापिनी की दिव्य नेत्रसे घोरगति देखा तब तो यह श्रेष्ठब्राह्मण फिर अपने आपही बोला ६७ कि सौकल्पमें भी इसका निस्तार नहीं दिखाई पड़ताहै अच्छे तीर्थके मरणके विना वा भगवान् की शरण के विना ६८ अथवा हमारे कियेहुए गयाजी में पिण्डदान के विना सैकड़ों करोड़ कल्पों में भी इसकी सद्गति नहीं है ६९ परन्तु इस योनिमें कभी ये दोनों नहीं होसक्ती हैं कि अच्छे तीर्थमें मृत्युहो वा भगवान् की सेवामें रतिहो ७० पापरूपी समुद्रमें डूबीहुई इसका उद्धारहेतु हमसे कियाहुआ गयाजी में पिण्डही होगा ७१ नारद जी बोले कि ऐसा विचारकर वह धर्मात्मा अपने पिताके स्थानको आया और पिताजीसे सब अपनी माताके दुःखका कारण कहा ७२ तो माताके दुःखके निवेदन करनेवाले पुत्रकेबचन सुनकर वह श्रेष्ठ मुनि शिर झुकायेहुए अपने पुत्रसे बोले ७३ कि हे तात! अपनी माताको शीघ्रही इसप्रकार दुर्गतिसे निकालिये जैसे नीतिका जाननेवाला राजा शत्रुकी जयलक्ष्मीको लड़ाईमें निकाल लेताहै ७४ जो पुत्र अपनी माता और पिताको दुःखसे नहीं तारताहै वह जो तारने में समर्थ हो तो नरकको जाताहै ७५ पितरलोग अपने पुत्र से श्रेष्ठ तीर्थ में पानी और पिण्डापाकर नरकसे स्वर्ग को जाते हैं और स्वर्गसे हरिजीके पदको प्राप्त होते हैं ७६ तिससे जल्द उठकर खाण्डववन में जावो वहांपर श्रेष्ठ मुनियों से सेवित पुण्यकारिणी यमुनाजी हैं और तिन्हीं के किनारे सर्व्वतीर्थमय इन्द्रप्रस्थ है तहांहीं विष्णुजीने पुण्यकारी मधुवन स्थापित कियाहै ७७। ७८ तहांपर विधिपूर्वक स्नान और नित्यकी अपनी क्रियाकर तिस अपनी माताका उद्देशकर श्राद्ध और क्रियाकरो ७९ तिसकी सद्गति की इच्छा करनेवाले तुम्हारे वहांके श्राद्ध करने से तुम्हारी माता घोर गोधाके अंगको छोड़कर भगवान् के लोकको प्राप्त होगी ८० हे तात! गयाजी में पिण्डदान करनेसे जो फल होताहै तिसका सौगुणा पुण्य सज्जनों ने मधुवन में कहाहै ८१ हेपुत्र! इससमय में

कन्याराशि का सूर्य वर्तमान है इससे वहांजाकर पूर्वके बांधवों का उद्देशकर श्राद्धकरो ८२॥

इतिश्रीपाझेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्त्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येत्रयोदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१३॥

दोसौचौदहका अध्याय॥

यमुनाजी के माहात्म्यमें मधुवनका माहात्म्य वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजन् शिबि! ये पिताके वचनसुन शीघ्रतायुक्त पुत्र गयाजीसे सौगुणे अधिक पुण्यकारी मधुवनको गया १ और वहां पर तिस तीर्थ के बसनेवाले ब्राह्मणों को संध्यासमय में निमंत्रण दे समयमें फिर बुलाकर स्वागत वचन बोला २ तदनन्तर तिनके चरणोंको चन्दन आदिकोंसे पूजनकर प्रीतिसे पादार्घ देताभया फिर आप आचमन करताभया ३ तिस पीछे तिन ब्राह्मणों को लेजाकर श्राद्धके स्थान में बैठालकर कुश, जल, तुलसी, फूल, चन्दन, अक्षत और तिलोंसमेत ४ कर्मपात्रको पूर्णकर पुण्डरीकाक्ष भगवान्का स्मरण करताभया फिर तीनबार ब्राह्मण देवताभ्यः इस श्लोकको पढ़ताभया ५ फिर पूर्वादिक दिशाओंके क्रमसे अग्निष्वात्ता इस मन्त्रसे तिलसमेत शोधित कुशोंसे बन्धन करताभया ६ और रक्षोभूत इस मन्त्रसे नीवीबन्धन करताभया तदनन्तर संकल्पकर ब्राह्मणको कुशासन देकर ७ उत्तम ब्राह्मण तिससमयमें पितरोंको आवाहन करताभया तदनन्तर हस्तार्घ्य देकर पात्रको औंधा देता भया ८ फिर गन्धादि दानकर सव्यहोकर आचमन करताभया और तिसीसमयमें सव्य अपसव्यसे पात्रोंको देकर ९ तिन ब्राह्मणों की आज्ञासे अग्नौकरण करताभया फिर आज्यादि हविसे तिनअमत्रोंको पूर्णकर १० नहीं उताने और उताने हाथसे पात्रावलम्बन कर ब्राह्मणों से पढ़ायेहुए पृथ्वीत्वेतिद्विजन्मनाम् यह पढ़ताभया ११ फिर असंस्कृतप्रणीतानां इस मन्त्रसे दक्षिणाग्र कुशों में विकिरका आसन देताभया १२ और अग्निदग्धा इस मन्त्रसे घी मिलेहुए अन्न को जल समेत कुशके रचेहुए विष्टरमें देताभया १३ फिर सव्यहोकर

आचमनकर चुलकजीवन देताभया और तृप्तास्थः यह पूछकर तृप्तास्मः इसप्रकार कहेगये १४ फिर शेष अन्नके भोजनमें तिन ब्राह्मणोंकी आज्ञा ग्रहणकर पिण्डोंके लिये एक बालिश्तभरकी वेदी बनाकर १५ कुशासे दक्षिणाभिमुखरेखा करताभया येरूपाणि इसमंत्र से आग्नेयकोणमें उल्मुक धरताभया १६ फिर पूर्वजन्ममें जो माता और पिताहुएहैं और माता और पिताके पिता और पितामह १७ और जो प्रमातामह हुआहै उसकेभी माता और पिता और पिता आदिक छः स्त्रीसंयुक्त पितरों को विधिपूर्व्वक उद्देशकर १८ कुशासन देकर छः पिण्डों को देताभया फिर चन्दनादिकों से पूजनकर बीचके पिण्डसे विसर्जनकर बायें कांधेमें लेजाकर सूंघकर पिण्डपात्रको धरदेताभया फिर जलकेपात्रको लेकर वाजे वाजे यह मन्त्र पढ़कर १९। २० फिर पादार्घ देकर दक्षिणादिकों से ब्राह्मणों को प्रसन्नकर द्वारपर्यन्त उनको भेजकर उनकी आज्ञा लेकर २१ बान्धवोंसमेत आप भोजन ब्राह्मण करताभया इसप्रकार शुभ मधुवन तीर्थमें पूर्वके सम्बन्धियोंकी श्राद्ध समाप्तकर जब शान्तात्मा श्रेष्ठ ब्राह्मण पिताके स्थानको चला २२। २३ तब सब श्राद्धके भोजन करनेवाले राहमें मिले जोकि छः विमानोंपर चढ़ेहुए सुन्दर गहनों से भूषित और सुन्दर कपड़े पहनेहुए थे ये सब पितर तिस द्विजोत्तमसे बोले २४ कि हे वत्स! हे विप्रोंमें शार्दूल! उत्तम वर मांगिये इस तीर्थमें श्राद्धकर तूने हमलोगोंको तारदियाहै २५ तुम्हारेही प्रसादसे हमलोग भगवान्के गणहुएहैं इससे हे महाबुद्धे! जो तुम्हारे चित्तमेंहो वह मांगिये २६ तब मुनिकापुत्रबोला कि आपलोग कौनहैं कहांसे आतेहैं और गण कैसेहोगयेहो उपकारकेविना कैसे हमको वर देतेहो २७ नारदजीबोले कि पूर्वजन्मके पुत्रके ये वचन सुन इन्हींका पिता जो दुःखसे विष खाकर मरगया था वह बोला २८ कि हे विप्र! पूर्व्वजन्म का तुम्हारा पिता ब्राह्मण हूं तुम्हारी व्यभिचारिणी माताने हमको अत्यन्त पीड़ादीथी २९ इससे अत्यंत दुःखको प्राप्तहोकर रात्रिमें विषखाकर अपमृत्युको प्राप्तहोकर राक्षस होगयाथा ३० हे तात! एकमन्वन्तर और एकसौपन्द्रह

हमको राक्षसभावमें व्यतीत होगयेथे ३१ इससमय सोलहवेंवर्षमें तुमने पुण्यकारी मधुवन तीर्थमें श्राद्धकियाहै इससे मैं देवताओंके रूपको प्राप्तहुआहूं ३२ ये स्वर्गसे विमान इन्द्रके भेजेहुए गण और अप्सराओं के वृन्दोंसमेत हमारे चढ़नेके लिये आये हैं ३३ इससे गण और अप्सराओंसमेत श्रेष्ठ विमानपर चढ़कर स्वर्ग में जाता हुआ यहां तुमको वरदेनेके लिये आयाहूं ३४ वरको मांगिये तुम्हारा कल्याणहो विलम्ब न कीजिये ऐरावतहाथीपर सवार इन्द्र हमको देखरहे हैं ३५ नारदजी बोले कि अपने वृत्तांत को इस प्रकार कहकर अपने पुत्रको उसकी मांगीहुई भगवान्की भक्ति देकर वे ब्राह्मण स्वर्ग्ग को चलेगये ३६ तदनन्तर पूर्व्वजन्म के पुत्र से उसकी माताबोली कि तुम्हारे प्रसादसे मैं पापसे छूटकर देवीहोकर ३७ इन्द्राणीकी सखीहुईहूं क्योंकि तुमने इस विश्रांतिसंज्ञक तीर्थ में श्राद्धकियाहै ३८ इससे हे महाभाग ! अपने चित्तमें जो चाहतेहो उस वरको मांगो मैं तुमको दूंगी हम देवियों के वचन झूंठ नहीं होंगे ३९ हे द्विजोत्तम ! जिस पापसे मैं बहुतकाल नरकमें रहकर पितृवन में गोधाहुईहूं वह तुम जानतेहो ४० हे पुत्र ! मुझको जाने की आज्ञादीजिये क्योंकि स्वर्गमें देवताओं की स्त्रियों के समूहों से युक्त इन्द्राणी हमको देखरहीहैं ४१ नारदजी बोले कि हे राजन् ! निष्काम अपने पुत्रसे ऐसा कहकर और तिससे शिरसे वन्दित होकर तिसकी माता स्वर्गको चलीगई ४२ तदनन्तर तिसका पितामह भगवान् के स्वरूपको धारणकर तिसद्विजोत्तमसे बोला ४३ कि हे वत्स ! चिरंजीव रहो अपने वाञ्छितको प्राप्तहो तुम्हारे प्रसादसे हम दुस्तर भवसागरसे तरगयेहैं ४४ मैं तुम्हारा पितामह हूं और यह तुम्हारी पितामही है हमारे मरनेपर यह साध्वी सती होकर थोड़े कालतक सालोक्य को प्राप्तहुई है ४५ इससमयमें तुमने विश्रांतितीर्थ में श्राद्ध की इससे हम दोनोंको भगवान्के लोकमें उनकी स्वरूपता मिली है ४६ नारदजी बोले कि हे श्रेष्ठ राजन् ! ऐसा कहकर ब्राह्मण अपनी स्त्रीसमेत ब्रह्मलोकको नांघकर वैकुंठको चलेगये ४७ तदनन्तर तिनका प्रपितामह बोला कि हे द्विज ! एक-

नहोकर सुनो मैं तुमसे अपना वृत्तान्त कहताहूं ४८ भोवत्स! भो महाभाग! तुम्हारा मैं प्रपितामहहूं गर्भहत्या के फलसे सुअर की योनिको प्राप्तहुआथा ४९ फिर पापसे पीड़ित होकर कुत्ताहोगया तिस पीछे पर्वतों में श्रेष्ठ विन्ध्याचल में पेड़ होगया ५० तो बहुत कालतक पेड़ही होकर स्थितरहा फिर किसी हाथीने जबर्दस्ती से जड़से उखाड़ डाला ५१ और तिसीसमय में इस उत्तम तीर्थ में तुमने श्राद्धकिया तो वृक्षकी योनिसे छूटकर ५२ कुबेरकी नगरी में उत्तमवास प्राप्तहुआहे इससे हे द्विजश्रेष्ठ! आज्ञादीजिये तो तुम्हारे प्रसादसे उस नगरीको जाऊं ५३ तुम्हारे देखनेके लिये यहां आया था इससे पुण्यदर्शन तुमको देखा और सब तीर्थों में श्रेष्ठ मधुवन कोभी देखा ५४ नारदजी बोले कि हे राजेन्द्र! जब उसने इसप्रकार कहा तो धर्म्मका जाननेवाला मुनिपुत्र शिरसे अपने प्रपितामह के नमस्कारकर पूंछनेलगा ५५ कि हे तात! हे गुरुजी! आपने श्रेष्ठ ब्राह्मणके कुलमें उत्पन्नहोकर कैसे गर्भहत्याके पापकिये ५६ जिससे निन्दित योनियों को प्राप्तहुए हे महाभाग! जो आपको स्मरणहो तो कहिये ५७ तब प्रपितामह बोले कि हे द्विजशार्दूल! पूर्वसमय में मैं ब्राह्मण के जन्म में मन्त्रयन्त्र की विधिसे अपनी जीविका करताथा ५८ धनके लोभसे स्त्रियोंके गर्भ रहनेके लिये और दैवसे उपहतचित्त होकर गर्भनाशके लियेभी औषध देताथा ५९ क्योंकि धनहीन मनुष्योंके ज्ञानको लोभ हरलेताहै जैसे शुचिकालमें सूर्य्य कुल्याओंके जीवनको हरलेते हैं ६० हे तात! ज्ञानके नष्टहुएपर मनुष्य निश्चय पापकरताहै पापसे नरकको पाता और कुयोनियोंको भी पाताहै ६१ कोई एकगर्भवती स्त्री हमसे पूंछतीभई कि हे विप्र! मैं पुत्रको अथवा कन्याको पैदा करूंगी ६२ तब मैं उससे बोला कि तुम्हारे कन्याहोगी पुत्रकी उत्पत्ति के लिये तुमको श्रेष्ठ औषध मैं दूंगा ६३ जब मैंने उसस्त्रीसे यह कहा तो वह दुर्बुद्धि स्त्रियोंकी शिरोमणि हमारे चरणछूकर एकपल सोना देतीभई ६४ और हमसे बोलीभी तबतो मैंने छःकन्या उत्पन्नकीं और सातवींभी गर्भमें आई तो वहस्त्री बोली कि इसके जन्ममें मैं न जीऊंगी ६५ हे महाबुद्धे! ऐसा

कीजिये जिससे मैं अपने प्राणकी नाश करनेवाली कन्या दूसरीको न पैदाकरूं ६६ ये तिस स्त्रीके वचन सुनकर तिससे फिर मैं बोला कि उत्पत्तिके समय में पुत्रके उत्पन्न करनेवाली औषधको मैं दूंगा ६७ तब वह स्त्री ये वचन स्वीकारकर घर चलीगई और तिस समय की अपेक्षा करतीहुई ब्राह्मणके वचनमें प्रतीतिकर स्थित रही ६८ हे तात! हे द्विजशार्दूल! तिसके चलेजानेपर इस चिन्तासे मैं व्याकुल होगया तिसको तुमसे कहताहूं सुनिये ६९ वह स्त्री पुत्रके उत्पत्तिमें प्रतीतिकर मुझे एकपल सोनेकादेगईहै परन्तु मैं नहींजानता हूं कि इसके क्याहोगा ७० इसमें मुझको क्या करना चाहिये मुझ दरिद्री के घरमें एकपल सोना कैसे स्थित रहेगा ७१ इस प्रकार शोचकर तिसकी दासीके हाथमें मैंने गर्भ गिरानेवाली घोर औषध देदी ७२ तो तिस औषध से तिसी समय में गर्भ तीसरे महीने में गिरगया पुरुष और कन्याके चिह्नभी न जानेगये ७३ तब तो वह स्त्री गर्भके गिरनेसे पीड़ितहुई और पुत्रके जन्ममें निराशहुई मुझ से तिस सोने को मांगने लगी ७४ तिससमय में मैंने ईंटका चूर्ण, भस्म, हलदीका चूर्ण इनमें जलमिलाकर तिसको दिखलाया ७५ कि हे मातः! तुम्हारे पुत्रकी उत्पत्तिके लिये इसचूर्णको मैंने बनाया है इसके बनाने में तुम्हारी दीहुई द्रव्यसे दूना द्रव्य लगगया है ७६ यह मेरे कहनेपर वह चूर्णको छोड़कर घर चलीगई और मुझ से यह कहगई कि हे द्विजोत्तम! समयपर तुमसे लेलूंगी ७७ हे तात! इसप्रकार मैंने घोरगर्भहत्या कीथी जिससे अत्यन्त निन्दित तीन योनियों में भ्रमाहूं ७८ हे मुनिश्रेष्ठ! इससमय में तुम्हारे प्रसादसे वृक्षकी योनिसे छूटाहूं अब आज्ञा दीजिये तो शुभ अलकापुरी को जाऊं ७९ नारदजी बोले कि हे राजेन्द्र! ऐसा कहकर तिनके प्रपितामह तिनसे मस्तक से वन्दित होकर उत्तरदिशा को विचित्र, किंकिणीजाल के मालायुक्त, नाचतेहुए गन्धर्वों से सेवित, मणियों के प्राकारसे शोभित विमानपर चढ़कर जातेभये ८०। ८१ हे महाराज! तिस पीछे ब्राह्मण की प्रपितामही श्रेष्ठ विमान पर स्थित अपने प्रपौत्र से बोली ८२ कि हे सुव्रत! इस पुण्यसे भगवान् के

चरणकमलों से चिह्नित मंदिरके विना और कहींनहीं जावोगे ८३ हे मुने! यह पापी मेरापति तुम्हारा प्रतिमाभङ्ग था इस दुष्टबुद्धिको पाप करतेहुए मैंने रोका भी था परन्तु इसने नहीं माना था ८४ उस अत्यन्त पापीको भी दुःखसमुद्रसे तुमने तारदिया इससे कौन तुम्हारे गुणोंका वर्णन करसक्ताहै ८५ नारदजीबोले कि हे राजेन्द्र! ऐसा कहकर वह स्त्रीभी अलकामें चलीगई और तिसीपतिके साथ बहुत कालतक आनन्दितरही ८६ तदनन्तर मुनिपुत्र के सब नानाआदिक स्त्रियोंसमेत विमानोंपर चढ़कर स्वर्ग को चलेगये ८७ तब वह श्रेष्ठ ब्राह्मणभी तिस तीर्थसे अपने पिताके स्थानमें जाकर सब वृत्तान्त को पितासे वर्णन करताभया ८८ तब तो वह भी कुटुम्बसमेत मधुवनमें जाकर विश्रांति के समीप पर्णशाला बनाकर रहा ८९ और उसमुनिसत्तम ने विश्रांति तीर्थमें तीनोंकाल स्नान कर विष्णुलोककी भी वाञ्छा नहींकी ९० एकसमयमें मुनि जल के मध्यमें स्नानकर यह काङ्क्षा करतेभये कि मुझको कब भगवान्के दर्शनहोंगे ९१ इसप्रकार मुनिश्रेष्ठ कामनायुक्त हुएहीथे कि गरुड़पर चढ़कर शीघ्रतासमेत भगवान् प्राप्त होगये ९२ जोकि वक्षःस्थलमें स्थित लक्ष्मीजी संयुक्त, चारभुजाओं को धारणकिये,नवीन मेघोंके वर्णकेसमान अंगयुक्त,बिजली के वर्णके समान कपड़े पहने ९३ कौस्तुभमणिसे प्रकाशित हृदययुक्त,शंख,चक्र,गदा और पद्मको धारण किये,वनमालासे प्रकाशित कण्ठयुक्त,मकराकृति कुण्डलधारे ९४ फूले कमलके पत्रके समान नेत्रवाले,अपनी अलकोंसे अलंकृतमुखयुक्त मूंगेके आकार नहँवाले,हाथ और पांवके तरवे लाल थे ९५ ऐसे भगवान् दांतकी दीप्तिसे प्रकाशकरते और शरद ऋतुके चन्द्रमाके समान दिशाओं के अन्धकार को दूर करतेहुए तिसश्रेष्ठ ब्राह्मणसे बोले ९६ कि हे द्विजवर! यह मेरा शुभ मधुवन तीर्थ विश्रांति तीर्थ स्नानकरनेसे सब कामनाओं को देताहै ९७ इसमें तुमने स्नानकालमें हमारे दर्शनोंकी वाञ्छाकी इससे तुमको ब्रह्मादिक देवताओंके भी दुर्लभ दर्शन मैंने दिये ९८ अब हे विप्र! इस मनुष्य देहको त्यागकर देवताओंकी प्राप्तहो और मेरे साथ गरुड़

पर चढ़कर मेरे स्थानको प्राप्तहो ९९ नारदजी बोले कि हे राजन्! ये भगवान्के वचन सुनकर मुनीश्वर जलही में नमस्कार कर भगवान् की स्तुति करतेहुए बोले १०० कि हे श्रीपतिजी! संसारकी तापके नाश करनेवाले, देवताओं से वन्दना कियेहुए और कमल के मर्दन करनेवाले आपके चरणकमलोंकी मैं वन्दना करताहूं १०१ हे नाथ! तुम्हारी मायासे जेप्राणी यहांपर मोहित होगयेहैं तिनका निस्तार आपकी कृपाके विना कभी नहीं होसक्ताहै १०२ हे ईश! अच्छे तीर्थों के सेवन तथा सज्जनों के संगम से जिन पुरुषों को तुम्हारी कृपासे भक्ति उत्पन्न होजाती है १०३ हे हरे! बहुतसाधुओं से कहेहुए, सब पापोंके नाश करनेवाले आपके गुणों के कीर्त्तन को सुनकर जो मनुष्य कीर्त्तन करताहै वह माताके गर्भमें नहीं गिरता है १०४ हे श्रीपतिजी! आपके जनकामान सदैवसे महारणमें गिरा हुआ, रजसे गुंठितभी हुआ उत्तम रत्नकी नाईं निर्म्मलता को नहीं छोड़ताहै १०५ जो पुरुष आपके चरणकमलमें दण्डकीनाईं गिरता और अंगमें पुलकावली धारणकरताहै वह सम्पूर्ण योगियोंसे वाञ्छित आपके पदमें वंशकोभी प्राप्तकरताहै १०६ हे विभो! जीवही आपकी मायासे मोहित होकर संसारके मार्गोंमें घूमताहै परन्तु आपकी कृपासे तिसीक्षणमें संसाररूपी समुद्रसे तरजाताहै १०७ नारदजी बोले कि इसप्रकार गोविन्दजी की स्तुतिकर वह मुनिश्रेष्ठ वारंवार जयजय ऐसा कहकर तिनके चरणोंमें गिरपड़े १०८ तब श्रीपतिजी दण्डवत् पृथ्वी में गिरेहुए तिन मुनिश्रेष्ठ को भुजाओं से जल्द उठाकर गरुड़पर चढ़ा लेतेभये १०९ और विश्वात्माजी मुनिश्रेष्ठ के कुटुम्ब को भी चढ़ाकर वैकुण्ठ को चलेगये हे राजन् शिवे! मधुवनका यह सब पापोंका नाशकरनेवाला माहात्म्य तुमसे कहा अब और क्या सुननेकी इच्छाहै जो मनुष्य यहचरित्र सुनता है वह सबपापोंसे छूटजाताहै ११०।१११॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येमधुवनमाहात्म्यंनामचतुर्दशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१४॥

दोसौपन्द्रहका अध्याय ॥

यमुनाजीके माहात्म्यमें मधुवनका माहात्म्य वर्णन ॥

सौभरिजी बोले कि हे युधिष्ठिर! ये नारदजी के शुभ वचन सुन कर शिबि औशीनर राजा नम्रहोकर नारदजीसे बोले १ कि हेमुनि जी! मैंने मधुवनका माहात्म्य आपके मुखसे सुना इसमें मेरे मनमें एक सन्देहहै २ जिन धर्म्मात्माने दो जन्मोंके सब अपने बान्धवों को तारदियाहै वह कैसे व्यभिचारिणी स्त्रीके पुत्रहुए थे ३ हे भग- वन्! नारदजी! यह सब चरित्र कहिये क्योंकि आप भूत, वर्तमान और भविष्य सबको तत्त्वसे जानते हैं ४ नारदजी बोले कि एक समयमें हरिद्वार में सब पर्व्वोंसेयुक्त ज्येष्ठशुक्ल दशमी में सब मुनि प्राप्तहुएथे ५ तहांपर वे लोग विधिपूर्वक स्नान और अपनी शुभ क्रियाकर हिमाचलकीपीठमें स्वस्थचित्त होकर बैठतेभये ६ तहांहीं मुनियोंके संगमें ताराकेपुत्र बुधभी आये जोकि अत्यन्त सुन्दर दू- सरे कामही के समानथे ७ बुधको आते देखकर मुनीश्वरलोग उठ खड़ेहुए तब तो बुधने मस्तकसे मुनियों की वन्दनाकी तो फिर वे लोग बैठगये ८ श्रेष्ठ मुनियोंसे किये हुए बुधके आदरको देखकर मुनिपुत्र अपने पितासे पूंछनेलगे ९ कि हे तात! सुन्दरतामें दूसरे कामदेवकी नाईं यह कौन है जिसका व्यास आदिक मुनिवरों ने बहुत आदर किया है १० नारदजी बोले कि धर्म्मात्मा श्रेष्ठ मुनि अपने पुत्रके ये वचन सुनकर निर्बन्धसंयुक्त पुत्रसे बोले ११ कि देवताओं के गुरु बृहस्पतिजी का पुत्र ताराके पेटसे उत्पन्न हुआहै यह बुद्धिमान्, श्रेष्ठ, चन्द्रमाके वंशका करनेवाला बुधनामकहै १२ तब पुत्र बोला कि हे तात! आपने निःसम्बन्धमें परायण वचन क्यों कहे जो बृहस्पतिजी का पुत्रहोगा वह चन्द्रमाके वंशका करनेवाला कैसेहोगा १३ अत्रिमुनीश्वरसे अनसूयाने चन्द्रमाको उत्पन्न किया है तिस चन्द्रमाके वंशका कर्ता बृहस्पतिजीका पुत्र कैसे होसक्ताहै १४ हे तात! हे विप्रेन्द्र! यह हमारे मनमें महान् सन्देह वर्तमानहै इससे सन्देहयुक्त बालकके सन्देह को दूर कीजिये १५ तब पिता

बोला कि हे तात! पूर्व्वसमयमें बृहस्पतिजीकी स्त्री यशस्विनी तारा नामको बलवान् चन्द्रमाने जबर्दस्तीसे हरलिया १६ और हरकर विधिसे अपने घरको लेगया और उसकेसाथ बहुत कालतक भोग करता रहा १७ तो कुछ कालमें ताराके गर्भ रहगया तब तो बृहस्पतिजी अपनी स्त्रीको चन्द्रमासे मांगने लगे १८ तो मदसे युक्त, बलसे दर्प्पित चन्द्रमा न देताभया तब बृहस्पतिजी इन्द्रादिक देवताओं समेत १९ बलवान् चन्द्रमाके साथ युद्ध करने को तैयार हुए और चन्द्रमाकी सहायताके लिये दैत्योंसमेत शुक्रजी २० तिस रणभूमि में आगये तदनन्तर ताराके निमित्त घोरयुद्ध प्रवृत्तहुआ २१ सबजनों से प्रधान तारकामय कियागया तिस महाघोरयुद्धमें देवता और दैत्य दोनों नाशहुए २२ परन्तु किसी की जीत वा हार न हुई तब तो ब्रह्माजी आपहुँचे उन्हों ने घोरलड़ाईको निवारणकिया २३ और चन्द्रमा को समझाकर बृहस्पतिजी को तारा दे दिया तिससमयमें उन्हों ने ताराको गर्भवती देखा तो क्रोधितहोकर देवता और दैत्यों की सभामें ब्रह्माजी के प्रत्यक्ष उससे बोले २४ कि हे चञ्चलनयनी! हमारे वचनसुनो तूने हमारा अथवा चन्द्रमा इनमें से किसका गर्भ धारणकियाहै २५ पिता बोले कि हे पुत्र! इसप्रकार वारंवार बृहस्पति जी ने तारासे पूछा तो वह लज्जायुक्त कल्याण करनेवाली तिनके आगे जब कुछ न बोली २६ तब तो देवता और दैत्यों के देखतेही देखते क्रोधयुक्त बुधजी उत्पन्न होकर मातासे बोले २७ कि रे दुष्टे! तू लज्जा छोड़कर क्यों मेरेपिताको नहीं बतलाती है मेरेशापके वैभवको देख २८ पिता बोले कि हे पुत्र! ऐसा कहकर जललेकर जब बुधजी शापदेने को उद्यतहुए तब तारा धीरे से बोली कि तुम्हारे पिता चन्द्रमाहैं २९ जब उस साध्वी ने इसप्रकार कहा तो चन्द्रमा अपने पुत्र बुधको लेकर आनन्दसहित अपने मन्दिरको चलेगये ३० बृहस्पतिजी ताराको लेकर अपने घरको गये ब्रह्मा देवता और दैत्य भी अपने अपने स्थानोंको चलेगये ३१ यह जो तुमने हमसे पूछा वह सब मैंने कहा जिसप्रकार बृहस्पतिजी की स्त्री में उत्पन्न होकर बुध चन्द्रमाके वंशके कर्त्ताहुए ३२ नारदजी बोले कि हे शिवि!

ये पिता के वचन सुनकर मुनिका पुत्र ऊंचे स्वरसे हँसकर अपने पितासे बोला कि यह कुण्ड व्यभिचारिणी स्त्री के पुत्रहैं ३३ तब तो पिता पुत्रसे बोला कि हापुत्र! यह न कहो सब जीवों के अन्तरकी जाननेवाले तुम्हारे कहनेके भी जाननेवाले ये तुमको शापदेदेंगे ३४ नारदजी बोले कि हे राजन्! तिन मुनिके इसप्रकार कहनेपर बुध मुनिपुत्रका कहना जानकर सब मुनियों के सुनतेहुए यह बोला ३५ कि हे मुनिशार्दूलो! आपलोग मेरे कहने को सुनें उसमें जो अच्छा अथवा बुराहो तिसको शीघ्र विचारें ३६ तत्त्वबुद्धी आपलोगों के दर्शनके लिये मैं यहां आयाहूं किसी का कुछ भी मैंने अपराध नहीं कियाहै ३७ अपने जन्मके सफल होनेके लिये आपलोगों के दर्शन की लालसासे आयाहूं इसमें असूयासे दुर्मदलोग क्यों मेराअनादर करतेहैं ३८ दुष्टोंका स्वभावही है कि निरपराधी साधुओंको पीड़ा देतेहैं जैसे पपीहोंकी मीठीवाणी पीड़ादेती है ३९ सज्जनों के सङ्गम से भी दुष्टलोग दुःस्वभावको नहीं छोड़ते हैं जैसे गंगाजी के जलके संगमसे समुद्र खारीपनको नहीं छोड़ताहै ४० और व्याधकी दुष्टताहै कि मुनियोंकीसी वृत्तिवालेभी मृगोंको वनमें मारताहै मृगलोग उसके गानको जानते भी हैं तब भी वह मारताही है ४१ दुरात्मा मछली मारनेवालों का मछलियों ने क्याअपराध कियाहै जो तीर्थ के भी जलमें चरतेहुए मारडालता है यह उसकी प्रकृतिही है ४२ साधुलोग दुष्टों के संगसे भी स्वभावको नहीं छोड़ते हैं जैसे विषकी अग्निसेयुक्त सर्पोंसे लिपटेहुए चन्दनशीतताको नहीं छोड़ते हैं ४३ साधुलोग अपने पक्षकी तो क्या शत्रुके उदयमें भी नाचते हैं जैसे मुनिवरों के मुरैले मेघों के बरसने में नाचते हैं ४४ साधुजन दूसरे के अर्थ अपने अङ्गोंको धारण करतेहैं जैसे पितृ, देवता और मनुष्यों के अर्थ हमारे पिता चन्द्रमा कलाओंको धारण करते हैं ४५ साधुओंका अपना उदय स्वच्छका आनन्दहेतुहै जैसे कोकावेलिके फूलोंको हमारे पिताकी शीतलकिरणें होती हैं ४६ नारदजी बोले कि बुध क्रोधसे ये वचन कहकर तिस मुनिके बालकको शापदेता भया कि तूभी जल्द पृथ्वीमें कुण्डहो ४७ इसप्रकारके बुधके दिये

हुए शापको सुनकर। पिता अपने पुत्रको तिनके चरणोंमें गिराताभया कि क्षमाकीजिये ४८ और बुधसे यह बोले कि यह बालक आपके वैभवको नहीं जानताहै आपके सदृशोंको इस बालकमें क्रोधकरना उचित नहींहै ४९ किसीकारणसे क्रुद्धहुए साधुकी प्रकृति क्षमाहोनी चाहिये जैसे अग्निसे तप्तहुएको जलकी शीतता होतीहै ५० इससे ज्ञानरहित बालक में क्षमाकरके कृपाकीजिये क्योंकि साधुलोग क्षमासारही होते हैं ५१ नारदजी बोले कि तिन मुनिने जब इसप्रकार कहा तो शांतात्मा बुधजी क्रोध छोड़कर तिसमें कृपा करतेहुए बोले ५२ कि हे मुनिजी! यह तुम्हारा बालक पृथ्वी में कुण्डभावको प्राप्तहोकर जनेऊ देनेकेपीछे अपने स्थानको प्राप्तहोजावेगा ५३ इसप्रकार मुनिका पुत्र बुधके शापसे पृथ्वी में कुण्डभावको प्राप्तहोगया जिसने पितरोंको तारदियाहै ५४ मनुष्य इस पवित्र मधुवन के माहात्म्यको सुनकर सब अश्वमेधके फलको प्राप्तहोताहै ५५ जे मनुष्य इसमाहात्म्यके उत्तम अर्थको हृदयमें धारणकरते हैं उनका विषयोंसे अनादर नहीं होताहै ५६ जे महाबुद्धिमान् इस माहात्म्य को पढ़ते वा सुनते हैं वे निस्संदेह देहके अन्तमें विष्णुसालोक्यको जाते हैं ५७ यह निरन्तर पवित्र, भगवान्के प्रीतिका करनेवाला, कलियुग के पापसमूहों के नाशकरने में दक्ष, अक्षोत्पथगमननिरासमें पुण्यमूर्ति में कारण, मधुवन के सुन्दर चरित्रों को तुमसे मैंने वर्णन किया ५८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येमधुवनवर्णनोनामपञ्चदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१५॥

दोसौसोलहका अध्याय ॥

यमुनाजीके माहात्म्यमें वदरिकाश्रमका वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् शिवि! इस मधुवनसे यह बदरिकाश्रम ग्यारह धनुषमात्र पृथ्वीके भागमें स्थितहै १ इस श्रेष्ठ तीर्थ की वड़ी अद्भुत महिमा को तुम्हारे आगे वर्णन करताहूं जिस को सुनकर भयसे छूटजाताहै २ मगधमें एक देवदासनाम ब्राह्मणहुए

हैं यह सत्य बोलनेवाले, दांत, साक्षात् दूसरे धर्म्मके समान ३ सब विद्याओं में दूसरे बृहस्पतिकी नाईं निपुण, भक्तिसे दैत्यराज प्रह्लाद की नाईं भगवान् के सन्तोष करनेवाले ४ स्त्रीसमेत भी परन्तु महादेवजी की तरह कामदेवके जीतनेवाले, नित्यही अच्छे आचारों में विश्वामित्रमुनिकी नाईं परायण ५ मगधके राजाके यहां इसप्रकारसे पूज्य जैसे कुरुके घरमें द्रोणाचार्य्य और सुपात्रों में राजा बलिकी नाईं दान देनेवाले थे ६ तिनकी स्त्री गुणों में उत्तम उत्तमा नाम लक्ष्मीजीकी नाईं थी और पतिकी सेवामें जानकीजीकी समान परायणथी ७ तिसके बुद्धिमान् एकपुत्र अंगदनाम हुआ और अच्छे लक्षणोंसे युक्त एक बलयानाम कन्याहुई ८ तिनमें पुत्र बड़ाहुआ और कन्या तिससे छोटी हुई ब्राह्मण क्रमसे उन दोनों का विवाह करतेभये ९ तब कुछकालमें शुभ लक्षणोंसे युक्त विवाहिता कन्या श्वशुरके घरको जातीभई १० और महाबुद्धिमान्, पिताकीनाईं सब शास्त्रोंका जाननेवाला, युवावस्थाकी शोभासे विभूषित अंगद घर के भारको धारण करताभया ११ एकसमयमें ब्राह्मणों में श्रेष्ठ देवदासजी अपने पुत्रको घरके काममें समर्थ जानकर अपनी स्त्रीसे बोले १२ कि हे साध्वि! हे भद्रे! इससमय में हमारे उचित वचनसुनो फिर जो उचितहो वह करना १३ यह वृद्धावस्था अंगोंको कँपाती हुईसी आती है यह शरीरको इसप्रकार गिरावेगी जैसे पवनसे पका हुआ फल गिरजाताहै १४ हे सुव्रते! नेत्रोंकी दीप्तिकोभी वृद्धावस्था इसप्रकार मन्द करदेगी जैसे प्रातःकाल की वेला चन्द्रमासमेत नक्षत्रोंको मन्द करदेती है १५ और पांवों की चाल को भी मन्द करदेतीहै जैसे पांवोंकी जंजीर मन्द करदेती है १६ तिससे हे शुभे! जबतक यह वृद्धावस्था नहींआवे तबतक शीघ्रही अपना कल्याण करना चाहिये १७ हे सुभगे! घर, पुत्र, मित्र, भाई, पिता और द्रव्यआदिक नाश होजाते हैं तिनमें बुद्धिमान् न लीनहोवे १८ इस से इन्द्रियजित होकर वानप्रस्थकी विधिसे मैं सब तीर्थों में घूमता हुआ ईश्वर हरिजी को देखूंगा १९ तदनन्तर किसी शुभ उत्तम तीर्थ में संन्यास लेकर प्रारब्ध कर्म्मों के अन्त में अपनी देह

छोड़दूंगा २० इसप्रकार श्रीभगवान्‌जी के चरणकमल में अच्छी तरह से स्थापित चित्त करनेवाले मेरे जो प्राण छूट जावेंगे तो निस्सन्देह मुक्ति होजावेगी २१ तब उत्तमा बोली कि अचेतन पुरुष वा स्त्री कौन ऐसी होगी जो नाशयुक्त संसार में नित्य आश्रम माधवजी को छोड़करस्मै २२ तिससे हे जीवेश! तुम्हारे चरणकमलकी सेवा करनेवाली मुझको भी संगलेकर इस संसाररूपी समुद्रसे शीघ्रतारिये २३ यह श्रीमान् अंगदपुत्र घरके भारके धारण करनेमें समर्थहुआहै और यह कल्याणी उसकीस्त्री उसको सहायता देगी २४ समर्थ पुत्रमें जो मूढ़ पुरुष वा स्त्री नहीं विरक्त होजाता है वह कल्याण से छलागया है २५ नारदजीबोले कि हे शिवि! इस प्रकार स्त्री पुरुष तिससमय में एकान्तमें सलाहकर अंगद पुत्रको बुलाकर यह कहनेलगे २६ कि हे अंगद! वृद्धावस्था के आगमसे शिथिल देह हम दोनों को तुम समझो इससे किसी पुण्यभूमि में अपने कल्याणकेलिये यत्न करेंगे २७ भक्तिसे भगवान् का आराधन परम कल्याण कहाता है तिसीके लिये निष्काम होकर साधुजन पृथ्वी में यत्न करते हैं २८ विषयों में संग न होना सब जन्तुओं में समता होनी और सुख दुःखमें जिनके हर्ष और क्लेश नहीं होता २९ वही गोविन्दजी के चरण सेवन करनेवाले साधु संसारमें हैं तिनके दर्शन से मनुष्य कृतार्थ होजाताहै ३० धीर मनुष्य भगवान्‌के दर्शनमें उत्साहयुक्त होकर तीर्थोंमें घूमताहुआ किसी भाग्यके उदय से तिनके दर्शनको प्राप्त होजाताहै ३१ तिससे दीर्घ दोनों भुजोंमें कुटुम्ब के भारको लेकर हम दोनों को तीर्थयात्राकेलिये छोड़ दीजिये ३२ हे पुत्र! तीर्थयात्रा के प्रसंग से जो कभी साधुके दर्शन होगये तो हम दोनोंकी कृतार्थता होगई ३३ नारदजी बोले कि हे शिवि! इसप्रकार पिता और मातासे कहागया पुत्र साधुवाद को कहताभया कि आप दोनों जनोंने सब कुलका यह निस्तार कहाहै ३४ अब मुझको शीघ्रही आज्ञा दीजिये कि आप लोगों का क्या हितकरूं क्योंकि मैं पूज्यचरण आपलोगों का नित्यही आज्ञा करने वालाहूं ३५ पुण्यतीर्थों में दानके लिये उत्तम धन लेलीजिये

और मुझ दासको भी सेवाकेलिये लेचलिये ३६ नारदजी बोले कि ऐसा कहकर धन लेकर तिनके संग में दो कोस गया फिर माता पिताने बड़े कष्ट से उसको लौटा दिया ३७ और आप दोनों कुछ धन लेकर कन्दमूल फलका भोजनकर हमलोगों के ऊपर विष्णुजी प्रसन्नहों ऐसा कहकर वहींपर तीन दिन बसे ३८ जब स्त्री पुरुष तिस स्थानसे चले तो राहमें कोई महान् सिद्ध उनको मिला ३९ तब उनदोनों ने शिरसे सिद्धकी वन्दनाकी तो सिद्धजी बैठगये तब तो उन दोनों ने सिद्धजी से पूंछा ४० कि आप कौन हैं कहां से आते हैं और क्या करने की इच्छा है तिसको कहिये तब सिद्धजी बोले कि हे तपस्वियों में श्रेष्ठ! मैं सिद्ध हूं कल्पगांव में मेरा घर है ४१ इन्द्रप्रस्थसे आताहूं तहांपर मैंने बड़ाअद्भुतदेखाहै कि गुणों में नारायणजीके समान सिद्ध कपिलजी वहांहैं ४२ तिनसे मैं सांख्य पढ़ताहुआ उन्हीं के आश्रम में बसताहूं एकसमय में श्रीमान् हमारे गुरु कपिलजी बदरिकाश्रम महापुण्यकारी को यमुनाजल में स्नानकरने को गये तहांपर एक वनका भैंसा प्याससे व्याकुल यमुनाजी के जलमें ४३। ४४ पैठा तो जलपीकर उसको पूर्व्वजन्म का स्मरण होगया पूर्वके कर्मों को स्मरणकर वनका भैंसा ४५ शीघ्रही जलसे निकलकर कपिल गुरुजीकी वन्दनाकर हमारे सुनतेही सुनते मनुष्यवाणी से जो बोला तिसपरमअद्भुत को मैं इससमयमें तुमसे कहताहूं सुनिये ४६ भैंसा बोला कि हे विष्णुकलाभूत सिद्धों के कपिल ईश्वर! इस महातीर्थका क्या नामहै नमस्कार करतेहुए मुझसे कहिये ४७ हे महाभाग! इसश्रेष्ठ तीर्थ के जलके स्पर्श से मुझ पापीकोभी पूर्वजन्मके कर्मोंका स्मरण होआया है ४८ सिद्धजी बोले कि इसप्रकार भैंसे के वचन सुन महामुनि कपिलजी तिस वृत्तान्तको जानतेहुएभी हँसकर यहबोले ४९ कि हे भैंसोंमें शार्दूल! तुम पूर्वयोनि में कौनथे और तहांपर क्याकर्म कियाथा जिससे भैंसे की योनिको प्राप्तहुए ५० तब भैंसा बोला कि हे मुनिशार्दूल! पूर्व्वजन्मके वृत्तान्त को सुनिये मैं पूर्व्वसमयमें बलवान् कलिंग देशका राजाथा ५१ कामसे मोहितहोकर अपनी और पराई स्त्रीको नहीं

जानताथा और निरपराधी साधुवृत्ती बनियों के धनका हरनेवाला था ५२ आधीरातमें डरहीन होकर पराई सुन्दरी स्त्रियोंसे रतिकी लीलासे क्रीड़ा करनेको घूमताथा ५३ कामसे मोहित होकर जिस घरमें सुन्दरी स्त्रीको देखताथा रात्रिमें वहींपर बसताथा जैसे खेत के बीचमें हाथी बसताहै ५४ तहांपर निश्शंक क्रीड़ाकर उसघरसे धन लेकर कुछ दिनोंमें अपने घरको आताथा ५५ और सभा में बैठकर दिनमें दोपुरके बालकोंको अपने आगे कुश्तीलड़ाताथा५६ हे मुनि! जो बालक जीतजाताथा उसको धनी समझकर जबर्दस्तीसे उसके पिताके थोड़े वा बहुत धनको लेलेताथा५७ और जो कायरपनेसे हारजाताथा उसको मारडालताथा कि यह मेरे पुरमें स्थित होनेके योग्यनहीं है ५८ इसप्रकार पापका आरम्भ मैं करताथाकि वर्तमान राजाकी राज्य में पुरवासी नगर छोड़कर और राजा की राज्यमें कुछ चलेगये ५९ एकसमय में मुनियों में शार्दूलरूप महादेवसे उत्पन्न दुर्वासाजी पृथ्वीमें घूमतेहुए मेरे पुरमें आये ६० तो सब नगरवासी मिलकर तिनके समीप जाकर नमस्कारकर अपने दुःखके ज्ञापक वचन बोले ६१ कि हे आत्रेय! हे मुनिशार्दूल! हे कृपानिधे! कृपाकीजिये और इस अधर्म में निरत राजाको धर्मसे युक्त कीजिये ६२ हमलोगोंकी किसी भाग्यके उदयसे आप यहां आये हैं इससे राजाके दुःखरूप समुद्रकी उद्वेलासे नावकीनाईं हमलोगोंको तार दीजिये ६३ हे मुनिश्रेष्ठ! लोभ दिखलाकर इसने धन हरलिया कामसहित होकर साध्वी स्त्रियोंको दूषित करदिया ६४ हे महामुने! दशवर्षकी उमरवाले बहुत बालकोंको मारडाला यह अगणित अवगुणोंका निधिहै ६५ भैंसा बोला कि इसप्रकार पुरवासियोंके वचन सुनकर अत्रिके पुत्र दुर्वासामुनि यह चिन्तनाकर कि यहराजा दण्ड के योग्यहै सभामें स्थित मेरे पासको चले ६६ अहित, अवधूत, नग्न मुनिको आते देखकर नौकरोंसे मैंने कहा कि यह दर्शनके उचित नहीं हैं इनको रोको ६७ धूलिसे सब अंग लिप्तहैं भैंसेके आकारहैं यह समीपवर्त्तियों से मैंने कहा कि इनको निषेधकरो ६८ तब तो नौकर लोग शीघ्रही तिनके रोंकनेको गये तो मुनिने हुंकारहीसे

सबको भस्म करदिया ६९ मुनिजीके तेजसे सब नौकरोंको भस्म हुए देखकर सहसासे उठकर मैं घरमें प्रवेशकरने को उद्यतहुआ तबतो मुनिश्रेष्ठ रेरे पापी इसप्रकार मुझको बोधितकर ७०।७१ यहशाप देतेभये कि महावनमें इसीसमय में भैंसा होजाय तिनके इसप्रकार शाप देनेपर मैं तिसीसमयमें राजदेह छोड़कर ७२ मरुदेशके महावन में भैंसा होगया हे मुनिश्रेष्ठ! बहुतकालतक मैं वहां बसतारहा अब यहां किसपुण्यसे आयाहूं तिसको सुनिये बावली, कुंवां और ताल मैंने बहुत बनवाये ७३।७४ आंब आदिक पेड़ों को राहमें लगवाया इसीपुण्यसे हे देव! मेरा नरक में पात नहींहुआहै ७५ और इसतीर्थ के जलका संगमभी प्राप्तहुआ यह आपसे सब पूर्वजन्म का शुभ अशुभकहा ७६ जिससे तीर्थ मैंनेपाया और यह भैंसेकीयोनि मिली इस श्रेष्ठतीर्थके जलके स्पर्शसे मुझे जातिका स्मरण होगयाहै अब हे मुनिजी! यह कहिये कि कैसे इस असत्योनि से मुक्तिहोगी ७७ तब कपिलजी बोले कि यह भगवान्का महापुण्यकारी बदरिकाश्रम तीर्थ है यहां स्नानकरो तो शीघ्रही अपने चित्तमें स्थित कामनाको प्राप्तहोगे ७८ सिद्धजी बोले कि हे महामुनि! ये तिनके वचन सुनकर भैंसा स्वर्गकी वाञ्छासे तिस श्रेष्ठतीर्थ में स्नान करनेको पैठा ७९ और स्नानकर जलसे किनारे प्राप्तहुआ कि तिसीक्षणमें स्वर्गसे हाथी पर चढ़कर इन्द्रजी आकर उससे बोले ८० कि हे कलिंगदेशके पति! अपनी भैंसेकी देहको छोड़कर सुन्दर देह धारणकर हमारेसाथ स्वर्गको चलो तुमने स्वर्ग की इच्छासे स्नान कियाहै इससे देवस्थानको प्राप्तहोगे ८१ सिद्धजी बोले कि इन्द्रके ऐसा कहनेपर उसने भैंसेकी देह छोड़कर सुन्दर देह प्राप्तकी और हाथीके ऊपर चढ़गया ८२ हाथीपर चढ़कर क्षणमात्र आकाश में स्थित होकर शिरसे देव कपिलमुनिके प्रणामकर स्तुति करनेलगा ८३ कि हे परमेशान! केवल ज्ञानके हेतु, वेदविद्याओं के सेतुरूप और वेदविद्याके विरोधियोंके वैरी आपके नमस्कारहै ८४ हे विभुजी! माया से ग्रस्त चित्तवाले देहधारियों को तत्त्वके बोध करनेवाली सांख्यकी प्रवृत्ति आपहीसे हुईहै ८५ हे मुनिजी! जे वेदके विहित

को छोड़कर अपनी इच्छासे वर्तते हैं तिन दण्डके योग्योंको आप दण्ड देते हैं और तिर्य्यक् आदिकों में मज्जन करतेहौ ८६ इन्द्र आदिक सब लोकपाल आपके अधिकारी हैं डरकर दण्ड करनेवाले आपकी इच्छाके पीछे वर्तमान होते हैं ८७ सर्व्वात्मा आप उत्पन्न होकर त्रयीधर्म्म के विरोधी राक्षसोंको नाश करते हैं ८८ चक्रधारी आपने जिन राक्षसोंको मारा वे तमोमयी देह छोड़कर वैकुण्ठ को चलेगये ८९ हे जगन्नाथ! मुझको देवस्थान जानेको आज्ञा दीजिये और अमृतकी दृष्टियोंसे नमस्कार करतेहुए इन्द्रके ऊपर भी कृपा कीजिये ९० हे देवोंके स्वामी! हे प्रभुजी! आप और बदरिकाश्रम तीर्थ के प्रसादसे अपनी तामसी देह छोड़कर सात्विकी देहको प्राप्त हुआहूं ९१ हे नाथ! हे कृपानिधि! आपकी कृपासे इन्द्रकेसाथ हाथी पर चढ़कर अपनी इच्छासे देवस्थानको जाताहूं ९२ सिद्धजीबोले कि कलिंगदेशका राजा इसप्रकार देवेश कपिलजी की स्तुतिकर तिनके चरणों में नमस्कारकर देवस्थानको चलागया ९३ हे ब्राह्मण! गुरुजीकी सेवा करतेहुए मैंने बदरिकाश्रममें यह अद्भुत देखाहै कि पापीकाभी मोक्ष होगया ९४ इससे श्रेष्ठ तीनोंलोकमें सब अर्थका देनेवाला कोई तीर्थ नहीं है जो श्रेष्ठ कल्याणकी इच्छा करतेहो तो स्त्रीसमेत तहांही जाइये ९५ मैं अपने घरको जाताहूं वहांसे वृद्ध, निस्पृह, मोक्ष की कामनावाले अपने पिताको बदरिकाश्रम में ले आऊंगा ९६ नारदजी बोले कि हे राजन् शिवि! यह बदरिकाश्रम श्रेष्ठ तीर्थकी महिमा कहकर सिद्धजी अपने घरको चलेगये ९७ तदनन्तर धीर ब्राह्मण कुछकालमें तीर्थोंमें घूमतेहुए इन्द्रप्रस्थमें प्राप्त हुए ९८ तो तिसी देहसे तिन दोनों को निज स्थानको प्राप्त कर दिया और वह सिद्ध शीघ्रतासे अपने पिता को घरसे लाकर ९९ तिसी तीर्थ में मोक्षकी कामनावाले पिताको स्नानकराताभया तो वह सिद्धका पिता वृद्ध श्री वासुदेवजी से तिसीसमय में १०० देवताओंसे वन्दितहोकर अपने घरको प्राप्त कियागया इन्द्रप्रस्थके अन्तर्गत बदरिकाश्रमके स्नान करने से भगवान् सम्पूर्ण मनके इष्टपदार्थको देतेहैं हेराजन् शिवि! नमस्कार करतेहुए आपसे बद-

रिकाश्रमका पवित्र माहात्म्य वर्णन किया जिसको सुनकर मनुष्य माताके गर्भमें कभी नहीं गिरताहै १०१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येवदरिकाश्रमवर्णनंनामषोडशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१६ ॥

दोसौसत्रहका अध्याय ॥

इन्द्रप्रस्थमाहात्म्य में हरिद्वारका माहात्म्य वर्णन ॥

राजाशिवि बोले कि हे साधो हे मुने हे नारदजी! आपने वदरिकाश्रमका माहात्म्य वर्णनकिया जिसको सुनकर मेरामन निर्मलता को प्राप्तहुआहै १ हे मुनिशार्दूल! यह अद्भुत इन्द्रप्रस्थ का उत्तम माहात्म्य सम्पूर्ण धर्म, अर्थ, काम और मोक्षका देनेवालाहै २ हे नारदजी! पृथ्वी में इससे श्रेष्ठतीर्थ नहीं है यह तिर्यक्योनिवालोंको भी मुक्तिका देनेवाला श्रेष्ठ और दर्शनहीसे सब पापोंका नाशकरनेवालाहै ३ अब संतोष करनेवाले आपसे इसके अन्तर्गत हरिद्वार का माहात्म्य सुनना चाहताहूं ४ हे मुनिजी! इन्द्रप्रस्थमें प्राप्त हरिद्वार तीर्थके वर्णनसे अविद्या कामकर्म्मों से दीन मुझको उद्धार कीजिये ५ तब नारदजी बोले कि हे महाभाग! अश्वमेधके फलका देनेवाला हरिद्वारका माहात्म्य तुम्हारे आगे वर्णन करताहूं सुनिये ६ हे प्रभो! यहांपर जैसे एकपापी चाण्डाल स्वर्गको प्राप्तहुआहै वह तुमसे कहताहूं एकमन होकर सुनो ७ धर्मके क्षेत्र कुरुक्षेत्र में कालिंगनाम पापकर्म करनेवाला चाण्डाल पुरसे बाहर वसताथा ८ यह नगरवासियों के पांच छःवर्ष के बालकोंको जबर्दस्तीसे छलकर वनमें लेजाकर मारडालताथा ९ और उनकी देहके चांदी सोने के गहने और रत्नादिक लेलेताथा १० और रात्रिमें धन हरनेकी इच्छा से साधुके स्थानमें उसने प्रवेश किया और मनुष्यहीन वनमें राहियों को धनयुक्त देखकर मारा ११ एक समय कुरुक्षेत्रमें सूर्य्यग्रहणमें सब दिशाओंसे मनुष्य अनेक प्रकारके दानकरने की इच्छा से प्राप्तहुए १२ और कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहण में विधिपूर्वक स्नानकर यथायोग्य दानदेकर मनुष्य अपने अपने घरकोचले १३ उनमेंसे

कोई एक श्रेष्ठ बनियां बड़े धनसेयुक्त सब मनुष्योंसे पीछे अपने घर को चला १४ जोकि घोड़ेपर सवारथा और बीससिपाही पैदलआगे चलेजाते थे तब महापापी कालिंग धनके लिये तिनके पीछे पीछे चला १५ यह अधम उनके साथ कई मंजिल चलागया परन्तु उन का धन हरने को समय न पाताभया १६ जबर्दस्तीसे तिसका धन हरने को समर्थ न था क्योंकि बनियां बीस मनुष्यों से युक्तथा और यह अकेलाही था १७ फिर यहपापी बनियां के द्रव्यलेने के लिये आधीरातमें उसके डेरेमें प्रवेश करताभया १८ तब बनियां के पहरा देनेवाले एक नौकर ने उस पापीको घुसतेही जानलिया १९ और समीपहीमें स्थित उसके दोनोंपांवोंको लेटेही लेटे पकड़लिया २० और दूसरे मनुष्योंको जगाया तब पापी चोरने हाथहीसे उस को मारडाला २१ और आपभागा तो और मनुष्योंने पकड़लिया तब चोर पकड़नेवालेको मारकर सहसासे भागा २२ तो किसीधनुषधारी सेवकने दूरहीसे बाणसे जल्द उस अधमको मारडाला २३ बाणसे माराहुआ वह जल्द प्राणोंको छोड़देताभया और इसचोर के मारेहुए बनियेंके दोनों नौकरों ने भी प्राण छोड़दिये २४ तो ये तीनों गणों के लायेहुए श्रेष्ठ विमानोंपर चढ़कर आकाशमें स्थित होकर बनियेंसे यह बोले २५ भो वैश्योंके स्वामी! हे साधो! इन्द्रप्रस्थमें हरिद्वारतीर्थ सबसे उत्तम और पापियों के भी कल्याणका कर्त्ता है २६ हे वैश्य! हम तीनोंमनुष्य इस सुन्दर तीर्थ में अपमृत्यु को प्राप्तहोकर भी इस समयमें स्वर्ग को जाते हैं तुम्हारा कल्याण होवे २७ नारदजी बोले कि हेशिबि! ऐसाकहकर वे कल्याणकर्त्ताओं के पद स्वर्गको चलेगये जहांपर इच्छाहीसे अनेकों भोगकी वस्तु मिलती हैं २८ तदनन्तर वैश्य रात्रिबीतनेके पीछे प्रातःकाल अपने दोनों नौकरोंका दाहकर हाँड़ोंको २९ इस तीर्थ में छोड़देतेभये जब हाँड़ तीर्थ में छोड़ेगये तो वे दोनोंबनियें के नौकर स्वर्गसे फिर यहांआकर बनियेंसे बोले ३० कि हे वैश्यों के स्वामी हेसाधो! पृथ्वी में इस तीर्थ में मरनेसे पापी प्राणियोंकीभी निस्सन्देह स्वर्गकी प्राप्ति होजाती है ३१ और जो प्राणी स्थल में मराहो और उसके हाँड़

जलमें डालेजावें तो इसतीर्थ के जलके प्रभावसे सत्यलोकमें निवास होवे ३२ स्थलमें मरेहुए हम दोनों के जलमें हाँड़छोड़नेसे ब्रह्माजी की स्थितिपर्य्यंत उन्हीं के लोकमें वासहोगा ३३ और स्थलमें मरेहुए चोरके हाँड़ जलमें नहीं डालेगये इससे वह देवों के स्थानमेंही स्थित है ३४ हे वैश्यों के स्वामी! तिसकी देह ढूंढ़कर इस तीर्थ में जल्द छोड़दीजिये जिससे वहभी हमारी श्रेष्ठगतिको प्राप्तहोजावे ३५ साधुओंको शत्रुओं मेंभी सदा उपकारही करनाचाहिये और असज्जनों के वारंवार अपकार करने को न मानना चाहिये ३६ नारदजी बोले कि ऐसा कह वे दोनों महाभाग हरिद्वारतीर्थ के जलमें हाँड़ छोड़ने से हरिपुर को चलेगये ३७ तब वह महाभाग बनियां तिस चोरके शरीरको जलानेके लिये ढुंढ़वाताभया परन्तु वह नहीं मिला ३८ तो फिर वहीं आकर सबतीर्थों के शिरोमणि हरिद्वार में इस वाञ्छासे स्नान करताभया ३९ कि मैं अच्छे पुत्रोंको उत्पन्नकर धर्मसे इकट्ठे कियेहुए धनसे ब्राह्मण और बन्धुओंको प्रसन्नकर सेवासे विष्णुजी को आराधनकर ४० तुम्हीं में मरणपाकर भगवान् के मन्दिर को जाऊं हे तीर्थराज! तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै यह तुमको करनायोग्यहै ४१ इसकामना से वह वैश्य वहांपर कामना देनेवाले तीर्थ में सब नौकरों समेत स्नानकर अपने घरको चलागया ४२ तहांजाकर यह बुद्धिमान् बनियां अपनी स्त्रीमें पुत्रों को उत्पन्नकर धर्म्म से इकट्ठे कियेहुए द्रव्यसे बान्धवों को प्रसन्नकर ४३ श्रेष्ठ भक्तिसे भगवान् को आराधनकर इसी तीर्थमें मरणको प्राप्तहोगया जिससे वैकुण्ठको पागया ४४ हे राजन्! यह पुण्यकारी हरिद्वारकी महिमा तुमसे कही अब इसके सुननेके फलको सुनिये ४५ मनुष्य माघमहीनेमें द्रोणभर तिलके दानसे जो फलपाताहै वह इसकी माहात्म्य सुननेसे पाताहै ४६ गोपीचन्दनके दानसे और ब्रह्मपत्रों में भोजन से जो फलहोताहै वह कार्त्तिक में इसकी महिमा सुनने से होताहै ४७ कार्त्तिकमहीने के शुक्लपक्षकी प्रबोधिनी नाम एकादशी के पिछले पहर में जागरणसे जो फल होता है वह इस तीर्थकी महिमासुनने से होता है ४८ इन्द्रप्रस्थ में प्राप्त हरिद्वार के सदृश तीर्थ धर्म्म,

अर्थ, काम और मोक्षके फलका देनेवाला पृथ्वी में नहीं है ४९॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेइन्द्रप्रस्थमाहात्म्येहरिद्वारवर्णनंनामसप्ताधिकद्विशततमोऽध्यायः २१७॥

दोसौअठारहका अध्याय॥

यमुनाजी के माहात्म्यमें पुष्करजी का माहात्म्य वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे महाभाग शिबि! इसीतीर्थमें स्थित पुष्करजी के कल्याण देनेवाले परम अद्भुत माहात्म्य को फिर सुनिये १ तिसी तीर्थ के प्रसाद से सब देवताओं के ईश्वर विष्णुजी प्रसन्न होकर पुण्डरीकके घरमें एक महीना बसतेभये और पापमें रत पुण्डरीक का छोटा भाईभी यहीं पर मुक्ति को प्राप्त हुआ है २ तब राजा शिबिबोले कि धर्म्मात्मा पुण्डरीक कौनथा और तिसने क्या कर्म कियेथे जिससे प्रसन्न होकर भगवान् तिसके घरमें एकमहीना बसतेभये ३ हे मुनिजी! तिसका छोटाभाई पापी इसतीर्थके प्रसाद से कैसे श्रीहरिजी के पदको प्राप्तहुआ यह सब मुझसे कहिये ४ इस तीर्थकी माहात्म्य सुनतेहुए मेरे संतोष नहीं हुआहै ५ तब नारदजीबोले कि हे राजन्! मालव नाम विदर्भनगर में महायशस्वी, ब्राह्मण, ब्रह्मके जाननेवाले शांत, विद्वान्, विष्णुजी में परायण ६ देवता, ऋषि, पितृ, भूत और मनुष्यों के पालन करनेवाले, विषयों में संसक्त नहीं और लोभ मोह आदिसे वर्जितथे ७ हे महाभाग! वही ब्राह्मण एकसमय में सिंहकी बृहस्पति में महापुण्यकारी गोदावरी नदी स्नान करनेकेलिये चले ८ और वहांपर दशहज़ार पल सोना देनेकेलिये घरसे लेचले तब धर्मात्मा मालव राहमें चलतेहुए मन में यह चिन्तना करतेहुए बोले ९ कि घरसे दानकेलिये मैंने दश हज़ार पल सोना लियाहै यह हरएकको न देना चाहिये पूज्य साधु को देना चाहिये १० क्योंकि दरिद्री, ब्राह्मण, सुपात्र, उपकार न करनेवाले और देशकालमें पूज्य के देनेसे नाशरहित होता है ११ उञ्छवृत्तिसे प्राप्त अन्नको धर्मात्मा शिलोञ्छवृत्ति मुनि दुर्वासाजी को देकर अपनी देह छोड़कर परंपद को प्राप्त हुआ है १२ और

दानवोंमें श्रेष्ठ राजाबलि शत्रु भी वामनजीको पात्र जानकर अपने भुजाओं से इकट्ठाकी हुई त्रिलोकी को उनको देतेभये १३ तिससे गोविन्दजीकी प्रसन्नताके लिये धर्म्मसे इकट्ठा कियाहुआ धन हम को पात्रही को देना चाहिये और तिसके फलकी वाञ्छा न करनी चाहिये १४ धर्मात्मा पुण्डरीक मेरा भानजा सब पात्रोंमें शिरोमणि भी मेरा बुलायाहुआ हस्तिनापुर से आवेगा १५ तब लायेहुए धन के आधेको तिस पात्र बालकको देकर शेष धनको विधिपूर्वक वेद के जानने वालोंको दूंगा १६ नारदजीबोले कि इसप्रकार धर्मात्मा मालव ब्राह्मण चिन्तनाकर कुछ दिनोंमें पुण्यकारी गोदावरी नदी को प्राप्तहुआ १७ तो तिसके पहले आयाहुआ धर्मात्मा, भानजा पुण्डरीक भी वहींपर मिलगया १८ तब मालव ब्राह्मण सिंहकी संक्रान्तिके दिन गोदावरी में विधिपूर्वक स्नानकर पुण्डरीकको द्रव्य का आधा देतेभये कि भगवान् मेरे ऊपर प्रसन्नहों १९ और धर्मात्मा पुण्डरीक भी गोदावरी के जलमें स्नानकर अपने द्रव्यका चौथाई भाग आनन्दसे वेदके पढ़नेवालोंको देतेभये २० विधिपूर्वक स्नान और शक्तिके अनुसार दानदेकर जब पुंडरीकजी अपने घरोंकोचले तो मालव अपने भानजे पुण्डरीकहीसे यह बोले २१ कि गुरुओं से नमस्कार और छोटोंसे आशीर्वाद कहना जैसे हमारा तुम्हारा यह संयोग क्षणमात्रका हुआ है २२ इसीप्रकार सब प्राणियों का पुत्र और स्त्री आदिकों से होताहै तिससे क्षणमात्र के संयोगवाले संसारसे जो बुद्धिमान् मनुष्य २३ विरक्त होताहै वह भगवान् का निश्चय कृपापात्र है भगवान् की कृपासेही प्राणी अच्छे संगम में रत होता है २४ फिर तिसकी भगवान् की लीला सुनने में इच्छा होजाती है सज्जनोंसे कीर्तित हुई भगवान्की लीला सुनकर आप भी २५ अच्छी वाञ्छायुक्त होकर कीर्तनकरता और केवल स्मरण को पीछे करता है तो उसके गोविन्दजी के चरणसेवन में प्रेम होजाताहै २६ तदनन्तर मनुष्य नावसे जैसे महासमुद्र तराजाताहै तैसेही जल्द तरजाताहै हे धर्मात्मन्! इसीलिये साधु ज्ञानी और कर्मोंका यत्नहोताहै इससे तुम यत्नवान्होवो २७ नारदजी बोले कि

इसप्रकार मालव कहकर बड़े कष्टसे भानजे को बिदाकर आंशू बहातेहुए प्राप्तहोगये २८ और धर्म्मात्मा पुण्डरीक अपने घर को चले तो कईदिनों में शुभ स्थानमें प्राप्तहुए २९ तब पुण्डरीक ने भरतनाम छोटेभाई को पृथ्वी में गिराहुआ श्वासलेता रुधिर बहता और रक्तसे व्याप्तदेखा ३० और ऊंचेस्वरसे रोकर पूंछा कि हे भाई! किसने इसदशाको तुम्हें प्राप्तकिया तुम किसलिये घरसे यहां प्राप्त हुए ३१ इसप्रकार पुण्डरीकके पूंछनेपर बड़ीपीड़ासे पीड़ित होकर भरतशीघ्रही आंशुओंको छोड़नेलगे ३२ तिसकालमें मनुष्यों और पुण्डरीकके देखतेही देखते आकाशसे गणसमेत एक अद्भुत विमान उतरताभया ३३ तिसपर पापकरनेवाला भरत सुन्दर अंगयुक्त होकर चढ़कर ज्येष्ठ भाई के नमस्कारकर यहवचन बोला ३४ कि हे पुण्डरीक! हे महाबुद्धे! इस पुष्करतीर्थके प्रसादसे मुझपापीने भी स्वर्ग में निवास प्राप्तकिया ३५ हे भाई! यद्यपि हमारे दारुण कर्मको जानतेभीहो तथापि कुछ न जाननेवालोंको इससमयमें आपसे कहता हूं ३६ जैसे मैंने प्रभावती वेश्या से भोगकिया और उसके घरमें बहुतसा धन खर्च किया ३७ चोरीसे जो इकट्ठाकिया वहजुंएंसे हारा शिवरात्रिमें मैंने महादेवजीका निर्माल्य खाया ३८ ये मैंने कर्म किये तिनको हे पुण्डरीक आपने विदितकिया ३९ अब हे भाई! गोदावरी के आपके जाने में जो मैंने किया है वह आपको विदित नहीं है तिसकोभी कहताहूं ४० आपके चले जानेपर जब पन्द्रहदिन वीत गये तब मैंने मनुष्योंसे ये वचनसुने ४१ कि मामाने धन देनेकेलिये पुण्डरीक को बुलायाहै अब मैं अपने भाईको मारकर ४२ मालवके दियेहुए बहुत धनको ग्रहणकर उसीद्रव्यसे प्रभावती को प्रसन्नकरूंगा ४३ और इच्छापूर्व्वक जुंएंके जाननेवालोंके साथ जुंआं खेलूंगा यह विचारकर आपकी राह रोंककर यहांपर स्थितहुआथा ४४ कि हे महामते! तुमको मारकर बहुतधन ग्रहणकरूं परन्तु धन तो नहीं मिला कोई बनियों का सार्थ यहांपर आया जब कि रात्रिमें मैं यहीं पर सोताथा तदनन्तर आधीरातमें कोई चोर बनियोंके धन ४५।४६ हरनेके लिये मनुष्योंसे युक्त सार्थ में घुसा जबकुछ धन लेकर वह

चोर भागा तो उसकेपीछे सहसासे पुकारतेहुए सेवकलोग दौड़े ४७ कि इसको पकड़ो पकड़ो यह चोर जल्दीसे भागाजाताहै बहुतों के बीचसे हमारे धनको भी लिये जाताहै ४८ भरतजी बोले कि ये तिन के वचनसुन आगेसे तिस चोरके पीछे धन लेनेकी इच्छासे चोरके पकड़नेको सहसासे मैंभी दौड़ा ४९ तब तलवार हाथ में लियेहुए बनियोंके सेवकोंने हमको चोरका रक्षक जानकर सबोंने शीघ्रतासे तलवार चलाई ५० उनमें से कोई श्रेष्ठ ब्राह्मणथा उसने मुझसे कहा भी कि मैं ब्राह्मणहूं तबभी मुझपापी ने तीक्ष्णधारवाले खड्गसे मारही डाला ५१ और उन सेवकोंने खड्गकीधारों से मुझे मारा फिर वे बनियां प्रातःकाल अपने अपने स्थानोंको चलेगये ५२ तदनन्तर आपने आकर मुझे श्वास लेताहुआ चलतेहुए रक्तसे लिप्त अङ्गवाला और पीड़ा मोहसे विचेतन हुआ देखा ५३ हे भाई! यह आप से कहा जिसलिये मैं आया और जैसे अपमृत्यु को प्राप्तहुआ वहभी मैंने कहदिया ५४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येऽष्टादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१८ ॥

दोसौउन्नीसका अध्याय ॥

यमुनाजीके माहात्म्य में पुष्करकी महिमा का वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् शिबि! ये भरत के वचन सुनकर महामन पुण्डरीक अपने संगियोंके सुनतेही सुनते अपने भाई भरतसे बोले १ कि हे भरत! किस पुण्यसे इसतीर्थमें तुम्हारी मृत्यु हुई है जो जानतेहो तो कहो पाप तो तुम्हारा प्रसिद्धही है २ तब भरत बोले कि हे पुण्डरीक! इसको तुम्हारे आगे कहताहूं सुनिये जो इस जन्ममें कियाजावे तो यह तीर्थ पुण्यका देनेवाला है ३ एक समय धन जीतकर अपने घरको जाताथा कि बाजार में एक अनाथ मरेहुए बालकको देखा ४ तो उसको अपने शिरमें रखकर शुभ गंगाजी के किनारे लेजाकर कपड़ा आदिकों से अलङ्कारकर उस की दाह आदिक सत्क्रिया करताभया ५ जुएँसे इकट्ठा कियाहुआ

वह सब द्रव्य मैंने उस कर्म्ममें खर्च करडालाथा तिसी पुण्यसे यह शुभका देनेवाला तीर्थ मुझको प्राप्तहुआ है ६ अब हमारी देहके दाहपूर्व्वक संस्कार आप कीजिये ७ नारदजी बोले कि हे राजन्! संस्कार करनेसे पापीभी भरत इस पुष्कर तीर्थके प्रसादसे स्वर्ग को चलागया अब एक महीना जिसप्रकार भगवान् पुण्डरीक के घरमें ८ इस तीर्थके प्रसादसे बसे हैं तिसको इससमयमें सुनिये धर्म्मात्मा पुण्डरीक इस तीर्थमें भरतकी भी अच्छीगति देखकर हृदयमें इसको कामना देनेवाला तीर्थ मानतेभये ९ और पण्डित होकर वह माघमासमें इस वाञ्छासे स्नान करतेभये कि अपनेरूप से भगवान् मेरे घरमें बसें १० इस प्रकार कामनासमेत सम्पूर्ण अर्थके देनेवाले इस तीर्थमें स्नानकर अपने घरको जातेभये ११ और बन्धुओंसे भरत भाईका मरण कहतेभये मायासे आच्छादित बुद्धिवाले वे लोगभी सुनकर शोक करतेभये १२ और बड़े आनंद-युक्त पुण्डरीक तिससमय में अपने घरमें अपनी क्रिया करते हुए बसतेभये कि माघ महीनेमें भगवान् आवेंगे १३ पूसकी पौर्णमासी में वह परमउत्सव यह मानकर करतेभये कि कल्ह मेरे घर में नि-श्चय भगवान् आवेंगे १४ चन्दनके जलके सींचने और गोबरके लीपनेसे मोतियोंके चूर्णचतुष्कसे केतनको करते भये १५ अनेक प्रकारके भोजनोंसे दोसौ ब्राह्मणोंको भोजन कराकर बहुत दक्षिणा-ओंसे तिनको प्रसन्न करतेभये १६ अनेकप्रकारके बाजाओंमें नि-पुण और मीठी वाणीके गानेवालों और अपने बन्धुओंसे रात्रिमें गाना और जागरण करतेभये १७ तदनन्तर प्रातःकाल सब गाने वालोंको बिदाकर भगवान्के आनेकी कांक्षाकर घरके बीचमें बैठते भये १८ तब तो भगवान् तिसके घरके पास अपने वाहनको खड़ा कर अपने जनकी वाञ्छा पूर्ण करने को उसके घरमें प्रवेश करतेभये १९ तो पुण्डरीक आतेहुए भगवान् को देखकर आसनसे उठकर जल्द शिरसे वन्दना करतेभये २० और धर्म्मात्मा, गोविन्दजी के दर्शनसे निर्वृत होकर अर्घादि दानसे पूजनकर बिछौनेपर भगवान् को बैठाकर बोले २१ कि हे विष्णुजी ! मैंने संसारकी ताप नाश क-

रनेवाला अनुष्ठान कियाहै इससे संसारके पालन करनेवाले आप तबतक यहां स्थितरहैं २२ जबतक इस पवित्र माघकी समाप्तिहो जहांपर आप और आपके सेवक परिचर्या से बसते हैं २३ तहांहीं सब दोषोंसे वर्जित निश्चय वैकुण्ठहै हे विभो! जिस घरमें आपके कर्म साधुलोग वर्णन करते हैं २४ तहां सन्मुखसे आप बसते हैं यह मैंने सुनाहै जिनके वचन में आपका नाम, हृदयमें सुन्दररूप २५ और कानोंमें गुणोंका आरोप रहताहै वेही निश्चय साधुहैं हे विभुजी! जिनके सुनने में जिनका अन्तःकरण २६ और शिरमें निर्माल्यहै वेही निश्चय साधुहैं हे लक्ष्मी के पति! जिनकी बुद्धि शत्रु और मित्रमें बराबर है २७ हानि और लाभमें भी समान है वेही निश्चय साधुहैं और जिनका चित्त विकारके कारण में विकारयुक्त नहीं होताहै २८ वेही निश्चय साधुहैं जहां आपहैं वहीं संतहैं और जहां संतहैं वहीं आपहैं इससे तिनको साधु जानकर माघ महीने में मेरे घरमें बसिये २९ नारदजी बोले कि हे राजन्! ये पुण्डरीक के वचन सुनकर भगवान् दांतोंकी दीप्तिसे दिशाओंको प्रकाशित करतेहुए वचन बोले ३० कि हे महामते! तुम साधुओं में उत्तम साधुहो जिस तुमने हमारे संगकी वाञ्छा से पुण्य तीर्थ में स्नान कियाहै ३१ इससे उठो माघमास में गंगाजीके जलमें स्नानकरो माघके अन्त पौर्णमासी में तुमको पुष्कर में स्नान कराऊंगा ३२ प्रयागमें माघमास भरमें जो स्नानसे फल होताहै वह सब पुष्कर तीर्थमें एकदिनके स्नानसे होताहै ३३ नारदजी बोले कि हे राजन्! जब भगवान्ने विप्रेन्द्र पुण्डरीक से इसप्रकार कहा तो पुण्डरीक कुछ सूर्यके उदयमें गंगाजलमें स्नान करतेभये ३४ और प्रत्यक्षही भगवान् का तुलसी, फूलेहुए फूल, यव, चन्दन, केसर अगरु की धूप,कपूर और पांच बत्तियों की आरती से पूजनकर ३५। ३६ चारोंप्रकारके भोजनोंसे संसारके गुरु भगवान् को भोजन कराकर मणियोंकी शय्यामें पौढ़ाकर आप चामर डुलातेभये ३७ और पैर चापकर कपूरसमेत पानका बीरा देतेभये ३८ जब भगवान् पगड़ी बांधें तो उनके आगे पुण्डरीक हाथमें सीसालेकर खड़ेहों ३९ इस

प्रकार अपनेघरमें बसतेहुए भगवान्‌की पूजनकर ब्राह्मण सब माघमहीने को बिताते भये ४० तदनन्तर माघमहीने के अन्त पौर्णमासी में भगवान् के स्मरण करतेही गरुड़को आगे स्थित देखते भये ४१ भगवान् भी गरुड़ को देखकर पुण्डरीक से बोले कि हे द्विजश्रेष्ठ! जो वचन मैं तुमसे कहताहूं तिसको सुनिये ४२ इन्द्रप्रस्थ में प्राप्त पुष्कर तीर्थ इच्छाहीसे तुम्हारे स्नानके लिये मैंने दियाहै जो महीनाभर मैंने यहां निवास कियाहै ४३ हे महामते! इससमय में गरुड़पर चढ़कर मेरेसाथ तीर्थोंके शिरोमणि पुष्कर तीर्थ को चलो ४४ हे द्विज! धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले तिस तीर्थ में स्नानकर जो इच्छा करोगे तिसको मैं दूंगा क्योंकि तुम्हारे वश हूं ४५ जहांपर पापी भरतभी स्वर्ग्ग सुखकी आकांक्षाकर मरकर चलागया अब क्या और तिसका वर्णन करूं ४६ नारदजी बोले कि हे राजन्! इसप्रकार ब्राह्मणेन्द्र से भगवान् कहकर गरुड़पर चढ़ाकर सब तीर्थों में श्रेष्ठ पुष्कर को प्राप्त होगये ४७ तिस सत प्राण वायुसे पुण्डरीक की देहसे ज्योति निकलकर भगवान्‌के पद में प्रवेश करगई ४८ इसप्रकार इन्द्रप्रस्थमें प्राप्त इस पुष्करतीर्थ में स्नान करनेसे पुण्डरीक ईश्वर में सायुज्य को प्राप्त होगया ४९ इसप्रकार तीर्थके अनुरोधसे गोविन्दजी पुण्डरीकके घरमें सुखपूर्वक अपने भाईकी तरह एक महीना बसतेभये ५० इन्द्रप्रस्थ में प्राप्त पुष्करतीर्थ की महिमा कौन वर्णन करसक्ता है मैंने करोड़वां अंश वर्णन कियाहै ५१ मनुष्य श्रद्धा से इसका माहात्म्य सुनने और पढ़ने से अश्वमेधयज्ञके फलको पाताहै ५२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्ये पुष्करमहिमावर्णनोनामैकोनविंशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१९॥

दोसौबीसका अध्याय॥

यमुनाजीके माहात्म्यमें इन्द्रप्रस्थका माहात्म्य वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजन्! शिवि! महादेवजी के तीर्थराज प्रयाग की महापुण्यकारी महिमा को तुम्हारे आगे तुमसे श्रद्धासे

वर्णन करताहूं १ संसार में प्रसिद्ध विश्वावसु गन्धर्व एक समयमें सुमेरुपर्वत में ब्रह्माजी की सभामें गानेकेलिये गया २ तहांपर उसने देवगणोंसे सेवित सुन्दर बिछौनेपर बैठेहुए देवताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजी को देखा ३ और ब्रह्माजी के आसनके पास श्रेष्ठ आसन पर प्राप्त दूसरे लोकेशकी नाईं इन्द्रप्रस्थकोभी देखा ४ और ब्रह्मा और इन्द्रप्रस्थ के मस्तक में इन्द्र और प्रयाग को चामर डोलाते हुए देखा ५ और देवतीर्थों को तिनके दूरमें स्थित हाथजोड़े हुए देखा ६ तिनके आगे उत्तमगान्धर्वरागको विश्वावसुने गाया और देवताओं को छोड़कर तीर्थों के साथ सत्यलोक को चलागया ७ तदनन्तर बुद्धिमान् विश्वावसु इन्द्रप्रस्थ तीर्थ की वैभव देखकर यह बोले ८ कि हे गन्धर्वशार्दूल! इस संसारमें तीर्थके समूहों में इन्द्रप्रस्थ तीर्थ महाअद्भुतहै ९ कि चराचर के गुरु ब्रह्मा जिनके चरणकमल को देवता वन्दना करतेहैं वेभी तिसके समीप आसनपर बैठे थे १० और प्रयाग तिसके पीछे स्थित होकर जिसके मस्तक में इससमय चामर डुलातेथे जब तीर्थराज सेवककी नाईं उसके हुए तो और तीर्थों की क्याकथाहै ११ पृथ्वी में जितने तीर्थहैं वे धर्म,अर्थ और कामके फलदाताहैं और यह इन्द्रप्रस्थ तीर्थ धर्म,अर्थ,काम और मोक्षके फलकादाताहै १२ यहांके स्थित तीर्थ गुणोंसे तिसीके समान हैं तिनके महागुणों की स्तुति करनेको शेषजी भी नहीं समर्थहैं १३ नारदजी बोले कि हे राजन्! बुद्धिमान् विश्वावसु इन्द्रप्रस्थ का वैभव देखकर तिसके पवित्र सब कामनादेते वाले घरको गया १४ जैसे सब देवताओंमें शचीके पति इन्द्र श्रेष्ठ हैं तिनसे ब्रह्मा श्रेष्ठ हैं तीर्थों में प्रयागश्रेष्ठ है १५ प्रयाग से भी यह इन्द्रप्रस्थ श्रेष्ठ है इसके बीचमें जो यह प्रयाग दिखाई देताहै १६ उसमें मोहिनीनाम वेश्याके वृत्तान्त को कहताहूं नर्मदानदी के किनारे माहिष्मतीपुरी है १७ तहांपर बहुत धन रूप और युवावस्था से युक्त नाच और गानमें निपुण मोहिनीनाम वेश्याहुई १८ तिस धनकी लोभिनी ने बहुत पाप किये सात ब्रह्महत्या की बहुत दासियां मारीं १९ और उनके बहुत से गर्भ गिराये इसप्रकार

पापिनी ने पापकर्मों से युवावस्था बिताई २० तदनन्तर कुछकाल में तिसकी देह में वृद्धावस्था प्राप्त होगई तो बुढ़ापे से ग्रस्तशरीर होकर विषयकी वाञ्छासे निवृत्त होगई २१ जवान मनुष्योंको मन न करतीभई और जवान पुरुष भी इसपर मन न करतेभये अपने पापसे इकट्ठे कियेहुए धनपर किसी का विश्वास न करतीभई २२ न किसीको देती और न आपही अच्छीतरहसे भोजनकरती और न कहीं रखने को देतीभई एकसमय आधीरात में यह समझकर चिन्तना करतीभई २३ मेरे मरनेपर मेरा पापसे इकट्ठा कियाहुआ धन किसकाहोगा मुझको तो घोरनरक होगा २४ दासी और तिन के पति मेरे धनको भोग करेंगे इससमयमें मैंही तिसकी सद्गतिको क्यों न करडालूं २५ इसप्रकार चिन्तनाकर धर्म में उत्तमबुद्धिकर रामसरमें बावली, कुवां और देवस्थानोंको बनवाती भई २६ और पुरके चारोंओर वारसियों में राहियों के लिये पौशाला बनवातीभई और राहियों को अन्न देतीभई २७ और घरके पास परदेशियोंके बसने के लिये धर्म्मशाला बनवाती भई और परदेशियों को उत्तम भोजन देतीभई २८ इसप्रकार धर्ममें वर्त्तमान होकर एकसमय में ज्वरसे व्याकुल होगई तो यह चिन्तना करती भई २९ कि धर्म्मके अर्थमें मैंने यद्यपि बहुतधन खर्चकियाहै तथापि सोना और चांदी आदिक बहुत मेरे वर्तमान है ३० इनको वेदके जाननेवालों को दूंगी यह ज्ञानसे चिन्तनाकर उसने नगरके ब्राह्मणों को बुलवाया ३१ तो वे लोग घोर प्रतिग्रह जानकर नहींआये तब उसने अपने धनके दोभाग करडाले ३२ एकभाग तो दासियों को दिया और दूसरा भाग विदेशियों को दिया और आप धनहीन होगई ३३ तब दासियां समीप में मृत्युको जानकर उसको छोड़कर धनलेकर जहां मनमाना तहां चलीगईं ३४ कि ऐसा न हो कि जब यह ज्वरसे छूटे तो जो धनदियाहै वह लेलेवे ३५ तदनन्तर मोहिनी अठारह लङ्घनकर अपनी आयुके बाकी रहने से ज्वरसे अच्छी होगई ३६ तो तिसकी जरद्वानाम सखी जल्द उसको पथ्य आदिकसे सेवा करती भई ३७ कुछ दिनों में मोहिनी पूरा भोजन करनेलगी तो

जरद्गवा के घरमें लज्जासे भोजन करती भई ३८ कि मैंने सुखही देखाहै अब इससमयमें दारिद्र्यसे दुःखप्राप्त हुआहै इससे मुझको यहां नहीं रहना चाहिये ऐसी चिन्तनाकर और जगहको चली३९ तो वनमें जारहीथी कि पुरके चोरोंने यह समझा कि यह धन लेकर जारही है ऐसा समझकर मोहिनी को मारा ४० परन्तु उसके पास धन नहीं पाया तो श्वास लेती हुई उसको उसी वनमें छोड़ दिया ४१ तदनन्तर कोई साधु इस प्रयागका जल कमण्डलुमें लिये हुए इसी वनमें आया ४२ तो उसने गिरीहुई, शस्त्रके घाव देह में लगे हुए और हाथकी संज्ञासे पानी मांगती हुई इसको देखा ४३ तब साधु बोला कि तू कौनहै किसने तीक्ष्ण शस्त्रोंसे तेरी देहमें घाव किये हैं और किसलिये अकेली मनुष्यहीन वनमें आईथी ४४ इन्द्रप्रस्थमें प्राप्त प्रयागके शुभजलको प्रियकी कामनासे किसभाग्य के उदयसे प्राप्त होगी ४५ जब उसने यह कहा तो मोहिनी कहने को असमर्थ होगई थी इससे स्त्री होनेकी वाञ्छासे तिस जल पीने को मुखही फैलाती भई ४६ तब साधुने इस प्रयागका जल उसके मुँहमें छोड़ दिया तो जल छोड़तेही प्राणों को छोड़देती भई ४७ प्राणोंके निकलनेके समयमें जो स्त्री होना चाहतीथी इससे द्राविड़ में वीरवर्माकी स्त्री हुई ४८ केरलाधीशके घरमें उत्पन्न होकर तीर्थ के जलके पीनेसे कुलशील धन और ऐश्वर्य्य संयुक्त राजाके ४९ सोनेके समान गोरे अंगको कमलनयनी पोषण करतीभई इसी से तिसके पिताने हेमाङ्गी नाम रक्खा ५० एकसमय सोनेके गहनोंसे भूषित हेमांगी मन्त्री की पुत्री अपनी उमर के बराबर उमरवाली कलाके यहां गई ५१ तो वहां महावर और तेलसे स्नान कराकर अनेक प्रकारके अन्नोंसे भोजन कराकर श्रेष्ठ बिछौनेपर बैठालीगई ५२ फूलोंसे बाल गुहे रेशमी वस्त्रोंसे शोभित पानकी वीरी चाबती हुई कलासे बोली ५३ कि हे कला! हे कोकिलाके समान मीठे वचन बोलनेवाली! तुम्हारे घरमें जो अद्भुतवस्तुहो वह मुझेदिखाइये ५४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येइन्द्रप्रस्थवर्णनोनामविंशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २२०॥

दोसौइक्कीसका अध्याय ॥

इन्द्रप्रस्थ माहात्म्यमें प्रयागका माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् ! शिबि ! तिसराजाकी स्त्रीने कलासे जब यहकहा तो वह अपने खज़ाने से सोनेकी सन्दूक़ मँगाकर आगे धर देतीभई १ और यह बोली कि हे महाराज की स्त्री ! इसमें बड़ी अद्भुत पुस्तक वर्त्तमानहै तिसमें चित्रहैं २ उघड़वाकर देखिये इस पुस्तक में क्या क्या है निश्चय आपका मन चित्रोंके देखने में रमता है ३ जब कलाने राजाकी स्त्रीसे यहकहा तो वह दासी से सन्दूक़ उघड़वाकर तिसमें स्थित पुस्तकको हाथमें लेकर ४ संक्षेपसे अवतारोंको देखनेलगी पहले पचाशकरोड़ योजन भूगोल ५ तिसमें अन्धकार समेत सुवर्णकी पृथ्वी देखी और इनदोनोंके बीचमें लोकालोक पर्वत ६ सातों समुद्रोंसेयुक्त सातों द्वीप और इनमें नदी, पर्वत, खण्ड ७ यह भारतखण्ड, यमुनानदी, मुख्यनदियां ८ और यमुनातीर में प्राप्त यह शुभ इन्द्रप्रस्थ व्रजसहित देखा ९ यहांपर ब्रह्माजी के रचेहुए प्रयाग को देखकर मनस्विनी राजाकी स्त्री पूर्व जन्मके कियेहुए कर्मको स्मरणकर वहांसे चुपचाप उठकर शीघ्रही यह निश्चयकर कि तीर्थको प्रस्थान विना किये मैं भोजन न करूंगी ऐसा निश्चयकर अपने घरको जातीभई १०।११ तदनन्तर सती हेमांगी स्त्री तिसीसमयमें प्रयाग जानेके लिये अपने साथको प्राण प्यारे वीरवर्मा से बोली १२ कि हे प्राणपते ! हे महाभाग ! हमारे धर्मके देनेवाले वचन सुनकर शीघ्रही वैसा कीजिये तो पूर्णहोजायगा १३ पूर्वसमयमें मैं युवावस्थामें बहुतपाप करनेवाली मोहिनी नाम वेश्याथी मेरी बुढ़ापेमें कुछ धर्ममें बुद्धिहुई थी १४ तो पापसे इकट्ठे कियेहुए धनको मैंने धर्म में खर्च कर दिया था जब धनहीन होगई तो अपने शहरसे निकलकर १५ मनुष्यहीन वनमें जारही थी कि पापी चोर धन हरनेकी इच्छासे वृथाही मुझको मारतेभये १६ तीक्ष्णशस्त्र के घावयुक्त अंगकर बेहोश श्वास लेतीहुई मुझे छोड़कर नष्ट मनोरथवाले चोर चलेगये १७ तदनन्तर एकसाधु

न्द्रप्रस्थमें प्राप्त प्रयागजीके जलको लियेहुए उसीवन में प्राप्तहो
गया १८ और उसतपस्वी ने इसदशा में पड़ीहुई मुझे देखकर यह
पूछा कि तू कौनहै और किसलिये किसीसे मारीगई है १९ तब तो
मैं कुछ न कहसकी पुण्यकारी जलको मांगनेलगी तो उसने जल
को मेरे मुखमें छोड़दिया तब मैं प्राणोंको छोड़देतीभई २० हे प्रभो!
प्राणोंके प्रयाण समयमें जलको मैंने सबकामना देनेवाला सुना तो
यह वाञ्छाकरती भई कि मैं स्त्री होऊं २१ तब तो तिसतीर्थ के जलके
प्रसादसे हे राजन्! अच्छेकुल, आचार और शीलयुक्त होकर तु-
म्हारी स्त्रीहुईहूं २२ इससमय में आपके साथ इन्द्रप्रस्थ में प्राप्त,
कामना देनेवाले तीर्थराज प्रयागके दर्शनकी इच्छा करतीहूं २३ हे
राजन्! जबमैं तीर्थराजको प्रस्थान करलूंगी तभी अन्नको भोजन
करूंगी यह मैंने प्रण करलियाहै २४ तबराजा बोले कि हे चञ्चल
नयनवाली! हे भद्रे! यह मैं कैसे जानूं मुझे प्रतीत कीजिये तो तेरे
कहेहुए को मैं करूंगा २५ नारदजी बोले कि हे राजन् शिबि! जब
राजाने रानी से इसप्रकार कहा तो उसीसमय में आकाशवाणीहुई
कि हे राजन्! इस तुम्हारी स्त्रीने सत्यवचन कहे हैं २६ इन्द्रप्रस्थमें
प्राप्त पुण्यकारी तीर्थ श्रेष्ठ प्रयागजी में जाकर स्नान कीजिये तो
जो जो इच्छा होगी उसको प्राप्त होगे २७ नारदजी बोले कि हे रा-
जन्! यह आकाशवाणी सुनकर राजा पृथ्वी में दण्डवत् गिरता
भया कि वाणीके कहनेवाले को मैं नमस्कार करताहूं २८ तदनन्तर
वह मंत्रीको बुलाकर उसको राज्य सौंपकर स्त्रीसमेत रथपर चढ़-
कर श्रेष्ठतीर्थ को चला २९ तो कई दिनों में हेमांगीसमेत तीर्थराज
में प्राप्त होकर उसके जलमें स्नान किया कल्याणकारी कामना देने-
वाले प्रयागमें इस इच्छासे स्नान किया कि तिसी शरीरसे मेरी वै-
कुण्ठमें प्राप्ति हो ३०।३१ दोनोंके इस इच्छासे स्नान करतेही हंस
पक्षीपर चढ़कर ब्रह्माजी और गरुड़पर चढ़कर हरिजी ये दोनों
देवोंमें शार्दूलरूप प्राप्त होगये ३२ तिनको आते देखकर एकाग्र
मनहोकर वीरवर्मा राजा दोनों देवों के शिरसे प्रणामकर स्तुति करने
लगा ३३ कि हे देवों में शार्दूल! आप दोनों देवों के नमस्कारहै आप

श्याम और लालशरीर धारणकर सोने और सिंदूरकेसमान रेशमी वस्त्र धारण करते हो ३४ सतोगुण और रजोगुणमें प्रधान आपकी वन्दना करते हैं जो कि चराचरके पालन और उत्पत्ति के हेतु आप वैकुण्ठ और अद्भुत सत्यलोकके नाथहैं चार और दो भुजा धारण कर गरुड़ और हंसपर चढ़ते हैं ३५ वैराग्यसे प्रेम करनेवाले मनुष्योंकी मुक्ति और भुक्तिके देनेवालेहैं और देवताओंसे चरणकमल वन्दना किये जाते हैं तिनको अच्छे भावसे नम्र मस्तकसे मैं नमस्कार करताहूं ३६ हे गोविन्दजी! हे देवताओंसे वन्दना कियेगये चरणकमलवाले! आपके स्वरूपको कोई नहीं जानताहै जिससे कि आप प्रकृतिसे परे और पुरुषको मन और वचनोंसे भी दूर वर्तमान हौ ३७ हे परात्मन्! वह पुरुष संसारमें धन्यहै जो इस संसारको क्षणमात्र में नाश होनेवाला चिन्तनाकर और में चित्त न लगाकर मुनिसमूहों से वन्दना कियेहुए आपके चरणकमलको भजताहै आपका चरणसेवन नाम यह दुर्लभतीर्थ भजतेहुए मनुष्योंको वांछित अर्थ फलका देनेवालाहै ३८ तिसपर भी ये दोनों मुक्तिकेलि सेवने योग्यहैं औरकी प्राप्ति के लिये नहीं हैं औरकी कामनासे सेवताहै वह ठगाजाताहै ४० सब लोकों के जीतनेकी इच्छाकरनेवा सन्तजन आपकेसेवनेयोग्य, मुक्तिदेनेवाले तीर्थको छोड़कर औ तीर्थकी नहीं इच्छा करते हैं ४१ नारदजी बोले कि हे राजन् शिवि इसप्रकार देवों और लोकों के स्वामियों की स्तुतिकर जब राज स्थित होगये तो हेमांगी बोली ४२ कि हे लक्ष्मी के पति! हे कम के पत्रसमान नेत्रवाले! विष्णुजी और हे कराल आसनवाले, स स्वती के गुरु ब्रह्माजी आपलोगों के अर्थ नमस्कार है संसाररू समुद्रसे तारनेवाले आप दीनचित्त के ऊपर प्रसन्न हूजिये ४३ प्रभो! इस तीर्थके प्रसादसे मैं स्त्री हुईहूं और देवताओंको भी दु र्लभ आपलोगोंके दर्शनहुएहैं ४४ आपलोग सबके चित्तकी जान वालेहैं स्नान समयमें जब हम दोनोंने पारमार्थिक किया तो हम मनके वांछितको आपने देदिया ४५ इसप्रकार दोनों ने जब दो देवोंकी स्तुतिकी तो प्रसन्नमुख होकर ब्रह्मा और भगवान् दोनों

बोले ४६ कि हे हेमांगि ! तू धन्यहै जिससे राज्य सुख में आसक्त चित्तवाले राजाको इस समागम से तूने तारदिया है ४७ विषयी राजाओंको इसप्रकारकी मुक्ति दुर्लभ है जैसी इस तीर्थ के प्रसाद से तुम्हारे पतिकी हुई है ४८ नारदजी बोले कि हे राजन् शिवि ! ऐसाकहकर तिनको पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड़पर चढ़ाकर भगवान् और ब्रह्माजी सत्यलोक को चलेगये ४९ वहांपर ब्रह्माजी ने विधिपूर्वक सबकी पूजाकिया तो उनके चित्तके अनुरोधसे एक मुहूर्त्त सब वहां स्थितरहे ५० तदनन्तर भगवान् राजा और रानी समेत गरुड़पर चढ़कर वैकुण्ठको चलेगये ५१ हे राजन् यह तुमसे तीर्थराजका पुण्यकारी, सब पापोंका नाश करनेवाला, यश और पुत्र देनेवाला माहात्म्य कहा ५२ जो मनुष्य इसको सुनता वा पढ़ताहै वह वाञ्छित स्थानको जाताहै यह मैंने सत्यही कहाहै ५३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेइन्द्रप्रस्थमाहात्म्ये प्रयागवर्णनंनामैकविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२१ ॥

दोसौबाईसका अध्याय ॥

काशी, गोकर्ण, शिवकांची, तीर्थसप्तक भीमकुण्डका माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् शिवि ! तुम्हारे आगे पुण्यकारी, यश और आयुके बढ़ानेहारे उत्तम काशीजी के माहात्म्यको वर्णन करताहूं सुनिये १ इन्द्रप्रस्थ के किनारे स्थित काशीजी में पूर्व्वसमय सतयुगमें शिंशपानाम एक वृक्षथा २ तहांपर एक कौवा वनस्पति में खोलखल बनाकर रहताथा और तिसके नीचे कोटरमें बड़ाभारी सर्प्प बसताथा ३ एकसमय तिस कौवेकी स्त्री दो अण्डोंको खोलखलमें छोड़कर कहीं चलीगई अपने खोलखलमें नहींआई ४ तब वह कौवा आपही दोनों अण्डों को पालताहुआ तिसी शिंशपा में स्थितरहा ५ तदनन्तर एकसमयमें आधीरातमें बड़ी आंधीआई जिससे दृढ़जड़से भी शिंशपाका पेड़ उखड़पड़ा ६ आंधीसे गिरे हुए शिंशपा के नीचे कौवा और सर्प्प चूर्ण होगये और प्राणहीन भी होगये ७ तब शिंशपा, कौवा और सर्प्प सुन्दर अंग होकर

विमानोंपर चढ़कर भगवान् के स्थानको चलेगये ८ तब राजाशिवि बोले कि हे देवर्षि! हे नारदजी! किस पुण्यसे तिन्हों ने मुक्ति देने-वाली पुरी प्राप्तकी वे तीनों पहलेके कौनथे यह सब कहिये ९ तब नारदजी बोले कि हे राजन्! कुरु जांगलदेशका ब्राह्मण श्रवणनाम था तिसकी स्त्री कुडानामथी और भाईका कुरंटकनामथा १० श्रव-ण तो विना स्नान किये नित्यही खाता और एकान्तमें मीठा भोजन करताथा तिसी दोषसे गांवका कौवा हुआ ११ और तिसका भाई कुरंटक घोर नास्तिकथा वेद और स्मृति के मार्ग्गका काटनेवाला और देवताओं की निन्दा करताथा १२ तिसी दोषसे मरकर वह सर्पहुआ और श्रवणकी स्त्री कुण्डा दोनों के दोष सेवती थी १३ इससे दोनों के आश्रयवाली वृक्षहुई हे राजन्! यह तुमसे उनके पूर्व्वजन्मका वृत्तान्त कहा १४ अब तिनकी पुण्यको कहताहूं जिस से तीनों ने सुन्दर महादेवजीकी पुरी काशीजी को प्राप्त किया १५ एकसमय दोनों भाई और गांवसे अपने स्थानको आतेथे तब उ-न्होंने किसी राही मनुष्यकी कुएँमें गिरीहुई गऊ १६ देखकर राही के कहनेपर तिसको निकालदियाथा और सब हाल कुण्डासे गऊ के निकालने का कहाथा तब उसने कहा कि आप लोगों ने बहुत अच्छा काम किया है १७ तिसी पुण्यसे तीनों इन्द्रप्रस्थके किनारे स्थित काशीजी में दुर्लभ मरणपाकर वैकुण्ठको प्राप्त होगये हैं १८ हे राजन् यद्यपि यह काशी महादेवजीकी पुरी है तथापि इसमें मर-कर प्राणी भगवान्के वैकुण्ठमें सुखी होताहै १९ यह तुमसे काशी जीका उत्तम माहात्म्य कहा अब तुम्हारे और क्या सुननेकी इच्छाहै सो हमसे कहिये २० तब राजा शिवि बोले कि हे मुनि! आपने म-हादेवजी के तीन क्षेत्र कहे हैं काशी, शिवकाञ्ची और गोकर्ण २१ तिनमें से हे महामुनिजी! आपने काशीजीकी महिमा तो कही अब गोकर्ण और शिवकाञ्चीजीकी जो विद्यमान महिमा हो तो कहिये २२ तब नारदजी बोले कि हे राजन्! गोकर्ण केवल शिवजी का परम पवित्र क्षेत्रहै तिसमें मरकर मनुष्य निस्सन्देह शिवही होजाताहै २३ स्थल, जल और आकाशमें भी वहां जो प्राणी मरजाताहै तो

तिसीसमयमें कैलासके कँगूड़ेपर शिवजी होकर क्रीड़ा करताहै २४ इस गोकर्ण तीर्थ में मरनेवालेका फिर जन्म नहीं होता है शिवजी के साथ मुक्ति को प्राप्त होजाता है २५ हे महामते ! हे प्रभो ! इस गोकर्णका माहात्म्य जो मैंने ब्रह्माजी के मुखसे सुना है वह वर्णन करताहूं २६ प्रयागसे दो कोस गुरुतीर्थ के समीपमें जो यह पुण्य-दर्शन मर्यादाका पर्व्वत दिखाई देताहै २७ तहांपर एक कर्कटनाम घोर भिल्ल रहताथा तिसकी स्त्रीका जरानामथा यह पांचपतियोंको मारडालतीभई २८ फिर छठवें कर्कटकको पतिकर विषसमेत लड्डू बनातीभई तब तो उसने अपनी बहनसे लड्डुओंका हाल सुना तो अत्यन्त घोर वह तिस स्त्रीके मारनेको प्रारम्भ करताभया २९। ३० जबतक यह भिल्ल तलवार हाथ में लेकर तिसके मारने को जावे तबतक वह अपने मारनेका उद्यम जानकर डरकर अपने प्राणके बचानेकी इच्छाकर वनको चलीगई तब तो कर्कट भी पीछे दौड़ा ३१। ३२ तो इस गोकर्णतीर्थमें उसको पकड़पाया और तलवारसे उसका शिर काटकर गोकर्ण तीर्थके जलमें उसकी देहको फेंक कर अपने स्थानको चलाआया तिस गोकर्ण में यह जरा पापिनी नाश होकर ३३। ३४ कैलासके कँगूड़ेपर पार्व्वतीजी की सखी होगई हे राजन् ! मैंने तुमसे गोकर्णका माहात्म्य यह कहा ३५ अब पवित्र शिवकाञ्ची के माहात्म्यको वर्णन करताहूं हे प्रभो ! इन्द्रप्रस्थ के किनारे स्थित शिवकाञ्ची में भी ३६ पुरुषोंकी सोई परमगति होती है जो गोकर्ण में मैंने कही है यहांपर श्रीमहादेवजी सब देवताओं के ईश्वर विष्णुजी को ३७ आराधनकर भक्तराज हुए और तात्विक ज्ञानकोभी प्राप्तहुए इससे सब हम लोग ब्रह्माजीकेपुत्र तिन महादेव जीको ३८ अच्छीभक्ति और ज्ञानके लाभकी इच्छासे आराधनकरते हैं यहींपर बाणासुरने महादेवजीको निराहार सौ वर्षतक उनकेगण होने की इच्छा से आराधन कियाथा तब प्रसन्नहोकर महादेवजी अपना गणभाव देतेभये थे ३९। ४० और सदैव आप तिसके पुर के पालनेवाले हुएथे हे राजन् ! यह महात्मा विष्णुजीकी पुरी पूर्वकी है ४१ महादेवजीकी तपस्यासे प्रसन्नहोकर विष्णुजीने उनकोदी है

इसमें पूर्वसमय में एक महान् आश्चर्यकारक वृत्तान्त हुआहै ४२ शिवजी के भक्त ब्राह्मणको जिसमें वैकुण्ठ मिलाहै एकब्राह्मण हेरंब नाम धार्मिक हुआथा ४३ यह काय, मन और वाणीसे सदैव शिवजीकी पूजामें रतरहताथा एक समय यह महाभाग शिवभक्त शिव तीर्थों में घूमताहुआ इस शिवकांची में प्राप्तहोगया तो उस बुद्धिमान् ने इस मनोहर पुरीको नहीं छोड़ा ४४।४५ पीछेसे तहांहै इसके जलके बीचमें प्राणोंको भी छोड़दिया तब तो महादेवजी के गण तहांसे तिस उत्तम ब्राह्मणको ४६ लेकर शिवजीकी आज्ञासे कैलासपर्वतको चले तदनन्तर बीचमें वैकुण्ठसे भगवान्के गणभी आनपहुंचे ४७ और जबर्दस्तीसे श्रेष्ठ ब्राह्मणके लेनेमें उद्यतहोगये तो हरि और महादेवजी के गणोंका महायुद्ध हुआ ४८ तिसयुद्धमें किसीकी जीत और हार नहींहुई तब तो गरुड़पर चढ़कर वैकुण्ठ से विष्णुजी ४९ और कैलाससे बैलपर चढ़कर त्रिलोक के धारण करनेवाले शिवजीभी प्राप्तहोगये वे संसारके स्वामी परस्पर मुख देखकर गणोंको युद्धदेखकर हँसनेलगे तदनन्तर विष्णुजी आकाश में युद्ध करतेहुए अपने और शिवजी के गणोंको ५०।५१ निवारण कर गरुड़पर चढ़ाकर शिवजी के स्थानको चले शिवजी उनकेगण और अपने गणोंसमेत भगवान् ५२ राहमें चलतेहुए देवताओंसे वंदितहुए और महादेवजीको आगेकर कैलासपर्वतपर प्रवेशकरते भये ५३ और तिस ब्राह्मणको कैलासकी रमणीयता दिखाकर तिस कैलाससे श्रेष्ठ भक्तिसे महादेवजीसे वंदित होकर वैकुण्ठको तिस समयमें चलेगये तब वह महाभाग ब्राह्मण इस तीर्थके प्रसादसे ५४।५५ गोविन्दजी के दर्शनपाकर उन्हीं के समीप आनन्दयुक्त होगया हे राजन्! यह शिवकांचीकी महिमा तुमसे कही ५६ अ हे महाराज! अच्छीतरहसे तीर्थसप्तकनामको सुनिये यह तीर्थ धर्म्म अर्थ, काम और मोक्षफलको दर्शन, स्पर्शन, ध्यान और स्मरणसे देताहै वसिष्ठादिक महर्षियों ने इसमें सृष्टिकेलिये
इससे उनके मनोरथ सिद्धहुएहैं समर्थहोगयेहैं धर
के लिये स्नानकर ५७।५८।५९ इसमें उस महा

पुत्रको पायाहै अत्रिजी यहांपर तपस्यासे देवश्रेष्ठों को प्रसन्नकर६० सोम, दुर्वासा और दत्त इन तीन पुत्रोंको प्राप्तहुए हैं धर्मात्मा अंगिराजी इसतीर्थ के प्रसादसे ६१ पुत्रोंको प्राप्तभये हैं इनके वंशके आंगिरस ब्राह्मणहुए हैं पुलहजी अत्यन्त गुणवान् दंभोलि पुत्रको प्राप्तहुए हैं ६२ जो पूर्वसमयमें अगस्त्य हुएहैं वे इसीतीर्थमें स्नान से हुएहैं और इसी तीर्थ में तपस्याकर पुलस्त्यजी ने पुत्र पाया है ६३ कुबेरजी महाभागहुये और महादेवजी के मित्रहुए हैं क्रतुके हज़ार बालखिल्या पुत्र हुएहैं ६४ वे सब इसतीर्थके प्रसादसे ऊर्ध्वरेताहुए हैं महातपस्वी वसिष्ठजी रजआदिक पुत्रोंको प्राप्तहुएहैं६५ हे राजाओं में शार्दूल! हे राजन् शिबि! यह सप्तकतीर्थ की महिमा वर्णनकी और भी अनेकोंतीर्थ ६६ कपिलाश्रम, केदार और प्रभास आदिकहैं तिनकी महिमा लाखोंवर्ष में शेषजी भी वर्णन करने को समर्थ नहीं हैं हमारे सदृशों की क्याकथाहै ६७ सौभरिजी बोले कि हे युधिष्ठिर इसप्रकार कहकर मुनिश्रेष्ठ नारदजी नारायण के गुणों को स्मरण करतेहुए आकाश से शिवजी के पासको चलेगये ६८ तब शिबि औशीनर राजा इन्द्रप्रस्थ की महिमा मुनिजी के मुखसे सुनकर अपनाको कृतार्थ मानताभया ६९ और तिस इन्द्रप्रस्थ में विधिपूर्वक स्नानकर सम्पूर्ण अच्छी क्रियाकर अपने देशको चला गया ७० हे विभो! यमुनाजीके तीरके तीर्थ, मनुष्योंके पवित्रकरने वाले इन्द्रप्रस्थकी यह महिमा तुमसे वर्णनकी ७१ कलियुगमें श्रद्धा से वर्जित मनुष्य सब तीर्थों के शिरोमणि इस इन्द्रप्रस्थ तीर्थ का आदर नहीं करेंगे ७२ अठारहोंपुराण और महाभारत के सुनने से जो फल होताहै वह इन्द्रप्रस्थकी महिमा सुननेसे होताहै ७३ अरुणोदय की वेलामें लाखमाघके स्नानसे जो फलहोताहै वह श्रद्धा से इसकी महिमा सुननेसे होताहै ७४ हे राजन्! जो श्रद्धासे इसकी माहात्म्य सुनताहै सो पितर, देवता और मुनियोंको तर्पित करदेता है ७५ कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, पाराक और चान्द्रायणके व्रत आदिकों से जो फल होताहै वह श्रद्धासे इसकी महिमा सुननेसे होताहै ७६ अश्वमेध आदिक सब यज्ञों का जो फलहोताहै वह श्रद्धासे इसकी

महिमा सुननेसे होताहै ७७ सूतजी बोले कि हे शौनक! इसप्रकार राजायुधिष्ठिर सौभरिजी से इन्द्रप्रस्थका माहात्म्य सुनकर हस्तिनापुर को प्राप्तहुए ७८ और दुर्य्योधन इत्यादिक सब भाइयों को लेकर राजसूय यज्ञकरने की इच्छासे पुण्यकारी इन्द्रप्रस्थको चले गये ७६ द्वारकापुरी से कुलदेव गोविन्दजी को भी बुलाकर राजा युधिष्ठिर राजसूययज्ञ से पूजन करनेलगे ८० यह मुक्ति देनेवाला तीर्थहै ऐसा मानकर गाली देतेहुए शिशुपाल को भगवान् मारते भये हैं ८१ शिशुपाल भी पृथ्वी में तिसीतीर्थ के मरने से सम्पूर्ण अर्थ के देनेवाले कृष्णजी में सायुज्य को प्राप्तहुए ८२ जहांपर शिशुपाल मारागया और जहां यज्ञहुआ है वहां भीमसेन ने बड़े विस्तार का गदासे कुण्ड बनादियाहै ८३ यह पृथ्वी में पवित्र और भीमकुण्ड नामसे विज्ञातहुआ है यमुनाजी के दक्षिणभाग में एक कोस पृथ्वी में है ८४ इन्द्रप्रस्थ में प्राप्त यमुनाजी के स्नानसे जो फल होता है वह निस्सन्देह भीमकुण्ड में भी होता है ८५ सूतजी बोले कि हे शौनक! जिस क्षेत्रमें प्राणी स्थितहै तिस क्षेत्रको प्रत्येक वर्ष प्रदक्षिणा आदिक धर्मोंसे अपने अपराधों को क्षमाकरावे ८६ जो मनुष्य प्रतिवर्ष परिक्रमा करताहै वह क्षेत्रके अपराध दोष पापों से लिप्त नहीं होताहै ८७ प्रदक्षिणा विनाकिये क्षेत्रकी सिद्धिको नहीं पाता है तिससे फलके इच्छा करनेवालों को तीर्थ में प्रदक्षिणा देनी चाहिये ८८ भगवान्के नाम कहकहकर जो प्रदक्षिणा करताहै वह पदपद में कपिलादानके फलको प्राप्तहोताहै ८६ चैत्रके कृष्णपक्षकी चतुर्दशी में जो इन्द्रप्रस्थ की प्रदक्षिणा करताहै वह मनुष्य धन्यहै और सब पापोंसे भी छूटजाताहै ६० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेकालिन्दीमाहात्म्येइन्द्रप्रस्थगतकाशीगोकर्णशिवकांचीतीर्थसप्तकभीमकुण्डवर्णनोनामद्वाविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२२ ॥

दोसौतेईसका अध्याय ॥

वसिष्ठमुनि और राजादिलीपके संवादमें विद्योपदेश वर्णन ॥

शौनक बोले कि हे सूत ! हे महाभाग ! आप धन्यहैं संसाररूपी समुद्रमें अत्यन्त डूबेहुए हमको अमृत पिलाइये १ हे साधो ! यहां पर संसारसे निस्तार वाञ्छा करनेवाले हमसे मन्त्ररत्न जोकि भाव शुद्ध और यन्मय स्थावर जंगम है तिसको कहिये २ तब सूतजी बोले कि हे शौनक ! मन्त्ररत्न महाअद्भुत को कहताहूं सुनिये इसी को वसिष्ठ महात्माने दिलीपसे कहाथा ३ एक समय दिलीपने ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ गुरु वसिष्ठजी के नमस्कारकर तुम्हारीतरह यह पूंछा४ कि हे भगवन् आपनेसबधर्म विशेषकर वर्ण आश्रमयुक्त धर्म, नित्य नैमित्तिक क्रिया, ५ राजधर्म्म, यज्ञ, तीर्थ, दान और व्रत आदिक कहे वे अक्षय स्वर्ग भोग देनेवाले मैंने सुने ६ अब हे ब्रह्मन् ! इस समयमें सनातन मोक्षमार्ग्ग के सुननेकी इच्छाहै जिससे बड़ीभाग्य से मोक्षमार्ग्गको मैं चलाजाऊं तिसको आप कहने के योग्य हैं ७ सब मन्त्रों का संसाररूपी रोग का एक औषधरूप कौनमन्त्र है सब देहधारियोंका मोक्ष देनेवाला श्रेष्ठ कौन है ८ तिसको तत्त्वसे मुझमें प्यार की अधिकतासे कहिये ९ तब वसिष्ठजी बोले कि हे राजन् ! सब लोकों के हितकारी तुमने अच्छा प्रश्न कियाहै परम-गुह्य एक संसारके तारनेवाले को कहताहूं १० पूर्व्वसमय में यज्ञ दान में परायण, शुभ सब महर्षि ब्रह्माजी के पुत्र मुनियों में श्रेष्ठ नारदजी से पूंछनेलगे ११ कि हे भगवन् ! हे महाभाग ! किस मंत्र से परमपदको हमलोग जावेंगे तिसको प्रसन्नहोकर कहिये१२तब नारदजी बोले कि पूर्व्वसमयमें सनकादिक सब योगी ब्रह्माजी से एकान्तमें दुर्लभ मोक्षमार्ग्ग को पूंछते भये १३ तब ब्रह्माजी बोले कि हे सब योगियो सुनो यह रहस्य अद्भुत है १४ सबदेवता ऋषि तपस्वी नहींजानते हैं सृष्टिकी आदि में नाशरहित नारायण देवने मुझसे कहाहै १५ ईश्वरी देवी समेत मैंने अच्छीतरहसे उन्हें तब तो नाशहीन नारायण भगवान् मेरे ऊपर प्रसन्न होकर

वेदसे उत्पन्न, सब वाङ्मय प्राजापत्य, व्यापक, अव्यापक, प्रकाश करनेवाले मन्त्र देतेभये १७ तदनन्तर तिन देव पुराणपुरुषोत्तम जीसे मैं बोला कि हे भगवन्! मनुष्यों का किस मन्त्रसे संसारसे तरना होताहै १८ वह सब मनुष्यों के हितके लिये मुझसे कहिये पुरश्चरणवर्जित सब मन्त्रों का कौन मन्त्र है १९ मनुष्यों के एक वार उच्चारण से जो परमपद को देताहो तब भगवान् बोले कि हे महाभाग! सब लोकोंके हितकारी आपने अच्छा प्रश्न कियाहै२० गुह्यकोभी कहताहूं जिससे मनुष्य मुझको प्राप्त होजावें २१ सब मन्त्रोंका मन्त्ररत्न शुभ देनेवालाहै जो एकवार स्मरण करने से प- रमपदको देता है २२ मन्त्ररत्नद्वयन्यास प्रयतिशरणागति लक्ष्मी- नारायण यह मन्त्र सब फल देनेवाला है २३ मन्त्ररत्नके नाम प- र्याय से समझ लेना तिसके उच्चारणही मात्र से मैं नित्यही प्रसन्न होताहूं २४ कुलसे उत्पन्न वा तपस्वी वा वेदवेदांगका पारगामी वा यज्ञ दान में परायण वा सब तीर्थों की सेवा करनेवाला २५ व्रती वा सत्यवादी वा यति वा ज्ञानवान्भीहो और मन्त्रका अधिकारी नहो तिसको यत्न से वर्जित करै २६ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, स्त्री, शूद्र तथा औरभी जो हमारे भक्तहों तो तिसके सब अधिकारी हैं २७ औरकी शरण नहों हमारी ही मेंहों औरकी सेवा न करते हों औरके साधक नहों तिनसे उत्तम मन्त्र कहना चाहिये २८ दुःखी पुरुषों का एकवार भी कियाहुआ शीघ्र फल देताहै अभिमानी भी प्राणियों के औरदेहका निवारण करनेवाला है २९ आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, ज्ञानी वा प्रजापतिहो और एकवारभी मेरी शरणमें प्राप्त हो तो कामनाओं को प्राप्त होवे ३० विना दीक्षा लियेहुए, अभक्त, अभिमानी, नास्तिक, लोभी, श्रद्धासे विमुख और सालभर नहीं ब- सनेवालेसे नहीं कहनाचाहिये काम क्रोध दम्भ और लोभसे वर्जित जो मनुष्य ३१।३२ अतिचार भक्तियोगसे मुझको सेवताहै तिससे यह सबसे उत्तम मन्त्ररत्न कहनाचाहिये ३३ देशकाल आदिक नि- यम वैरी और मित्र आदिका शोधन, पुरश्चरणसमेत तिसके न्यास मुद्रादिक ३४ हमारे चक्रसे चिह्नयुक्त देह, मेरा आराधन, मुझ में

संन्यस्तकर्म, मुझसे नहीं औरदेवकी शरण ३५ महाविश्वासपूर्वक मुझमें सब फलका न्यास नहीं और की साधनाका यत्न, आत्मा का अकिंचनत्व ३६ अवैष्णवोंसे बोलना और वन्दनादिका वर्जन, नहीं और देवताओंका वन्दन तथा पूजन ३७ इसप्रकारके सब नियम शरणागत के कहेगये हैं इत्यादि गुणों से युक्तसे उत्तम मंत्र कहना चाहिये ३८ तिसके नारायण, ऋषि, विष्णु सनातन, लक्ष्मीसमेत व देवतासमेत कृपाकासमुद्र मैंहूं ३९ सब लोकोंके ईश्वर, श्रीमान्, सुशील, सुभग, सर्वज्ञ, सर्वशक्ति, सदापूर्णमनोरथ ४० सर्वग, सर्वबन्धु, कृपारूपी अमृतके समुद्र, श्रीमन्नारायण मैं देवता कहाहुआहूं ४१ छन्द पच्चीस अक्षरकी देवीगायत्री, दो, सात, छः, तीन, पांच, और दो इन छओं अङ्गोंको नियोजितकरै ४२ मदनपायिनी लक्ष्मीसमेत विश्वरूपी चक्र, शंख, गदा और पद्महाथवाले, दिव्यरूपी, ४३ वाम अंकमें स्थित लक्ष्मीसमेत मुझको प्रयत, पवित्र होकर इस मंत्ररत्न से चन्दन, फूल आदिकोंसे पूजन करताहै तो एकवारभी पूजाहुआ मैं संतुष्ट होजाताहूं ४४ ब्रह्माजी बोले कि हे नाथ! आपने इस उत्तम रहस्य को अच्छीतरह से कहा मंत्ररत्नका प्रभाव मनुष्यों को सब सिद्धिका देनेवालाहै ४५ आप सब लोकोंके पिता, माता, गुरु, स्वामी, मित्र, भाई, गति, शरण और सुहृत्हैं ४६ हे देवेश! मैं दास, शिष्य और सुहृत् हूं तिससे हे दयाके समुद्र हमसे इस उत्तम को आपने कहाहै ४७ इस समयमें अच्छीविधि से मनुष्यों के हितकी कामना से मंत्ररत्नकी दीक्षा को सर्वत्र तत्वसे कहिये ४८ तब श्री भगवान् बोले कि हे वत्स! मंत्र दीक्षाकी विधि श्रेष्ठ कहताहूं सुनिये पहले हमारे आश्रयणकी सिद्धिके लिये आचार्य को सेवनकरै ४९ आचार्य वेदमें संपन्न, विष्णुभक्त, मत्सरहीन, मंत्र जाननेवाला, मंत्र काभक्त, सदैव मंत्रके आश्रय, पवित्र ५० सत् संप्रदायसंयुक्त, ब्रह्मविद्यामें निपुण, अनन्यसाधन, अनन्यप्रयोजन ५१ ब्राह्मण, रागरहित, क्रोध लोभसे वर्जित, अच्छीवृत्ति में शासिता, मुमुक्षु, परमात्मवेत्ता ५२ इन सब गुणोंसे युक्त आचार्य कहाताहै आचारों को जो शासनकरै वह आचार्य कहाताहै ५३ जो आचार्य अच्छी

में सिखलावे उस आचार्य पराधीन, शासनमें स्थिरवृत्त जो शिष्य हो वह सज्जनों करके शिष्य कहाजाताहै ५४ इसप्रकारके लक्षण संयुक्त सब गुणों से युक्त शिष्यको विधिपूर्वक उत्तम मंत्ररत्नको पढ़ावे ५५ द्वादशी वा श्रवणनक्षत्र वा कोई वैष्णवदिनमें वा सदैवके आचार्यकी प्रीतिमें दीक्षालेवे ५६ सुदर्शनचक्र, पांचजन्यशंख सोने से बनवावे चांदी, तांबा वा कांसेहीसे बनवावे ५७ शुद्ध पंचामृतसे स्नानकर मेरेआगे पूजनकरै चन्दन और फूल आदिकों से तिनके मंत्रोंसे विधिपूर्वक पूजनकरै ५८ तहांपर स्वगृह्योक्त विधानसे अग्नि स्थापन कर ब्राह्मण आचार्य मंत्रसे घीका हवनकरै ५९ एकहजार आठ वा एकसौआठ मंत्ररत्नसे हवनकरै तथा और वैष्णव शुभ ६० पुरुषसूक्तआदिक मंत्रोंसे घी और खीरका हवनकरै ब्राह्मण तिस अग्निमें चक्र और शंखको छोड़देवे ६१ बीसवार षडक्षरमंत्रसे घीका हवनकरै फिरमंत्रसे गुरुजी तपेहुए चक्रको लेकर ६२ दहिनी और बाईभुजाओं में शंखसे चिह्नकरदेवे फिर होमशेषको समाप्तकर फिर पूजाकरै ६३ तदनन्तर पवित्रजलसे पूरित कलशको लेकर मंत्रसे अभिमंत्रितकर तिसके मस्तक में अभिषेककरै ६४ फिर गुरुजी सफेद कपड़े पहनेहुए अच्छीतरह से आचमन किये नम्रतायुक्त ऊर्ध्वपुंड्र धारण करनेवाले शिष्यको मंत्र पढ़ावें ६५ मंत्रका अर्थ और विशेषकर वृत्ति भी कहनी चाहिये फिर मंत्रपाकर शिष्य आचार्य्यको गहने आदिकों से पूजनकरै ६६ इस विधिसे जो वैष्णव गुरुसे मंत्रपढ़ता है तो विष्णुलोक को प्राप्तहोता है औरप्रकार से नहीं प्राप्त होता है ६७ नारदजी बोले कि इसप्रकार देवों के देव, पिता, हरिजी ब्रह्माजी से कहकर अपने चक्रसे चिह्नितकर तिसको देतेभये ६८ सब लोकोंके ईश्वर, देव, हमारे पिता, प्रभु, ब्रह्माजी हमको विधिपूर्वक मंत्रदेतेभये ६९ तिससे हे ब्राह्मणो श्रेष्ठमुनियो! तुम लोग भी सुदर्शनचक्र धारणकर नारायणजी के दोनों चरणोंकी शरणजावो ७० वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! नारदसुरर्षि ने जब सब मुनियों से इसप्रकार कहा तो दोनोंके अधिकारी सबमुनि विष्णुजी के परंपदको प्राप्त होगये ७१ तिससे हे राजर्षि! तुम भी जा

विष्णुसायुज्यकी इच्छाकरतेहोतो दीक्षामार्गके विधानसे सुदर्शनचक्र धारणकर ७२ नारायणजी के चरणोंकी शरणमें जावो सबलोकोंके ईश्वर, त्रिलोकी के स्वामी साक्षात् ब्रह्माजी ७३ मुझसे भी उत्तम मंत्रको कहतेभये शौनकादिक नैमिषारण्यवासी महर्षियों को ७४ नारदजी मंत्रप्रपत्ति शरणागति देतेभये इस अत्यन्तगुह्यको महर्षि, ७५ देवता, सिद्ध, साध्य और दानव नहीं जानते हैं शक्तिपुत्र पराशरको मैंने मंत्रदियाहै ७६ इस रहस्य, परम, लक्ष्मीनारायणद्वय,प्रपत्ति शरणागतिको हेराजन्! तुमसे कहताहूं ७७ द्वयसे श्रेष्ठ मंत्र नहीं है यह तुमसे सत्यही कहताहूं इससे श्रेष्ठ धर्म्म लोकों में कुछ नहीं है ७८ पूर्वसमयमें ब्रह्माजी ने सत्य सत्य कहाहै नारायण से पर देव मनुष्योंको मुक्तिका देनेवाला नहीं है ७९ तिनकी सेवाही से सब कर्मोंका नाश करनेवाला मोक्ष होताहै ८० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेवसिष्ठदिलीपसंवादेविद्योपदेशोनामत्रयोविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२३॥

दोसौचौबीसका अध्याय ॥

सुदर्शनचक्र आदिका माहात्म्य वर्णन ॥

दिलीप बोले कि हे भगवन् वसिष्ठजी ! हरिभक्ति अमृतमय सब को कहिये सुखकी देनेवाली विष्णुभक्ति सुनतेहुए मुझको तृप्ति नहीं हुईहै १ हेमुनिश्रेष्ठ ! तीनोंप्रकारकी तापरूप महाज्वाला वाली अग्नियोंसे निरन्तर तपेहुए मनुष्यों को विष्णुभक्तिरूप अमृत के समुद्र के २ विना संसाररूप भयानक वनमें और क्याशरणहै हे महामुनिजी विस्तारसे भक्तिभेदों को कहिये जोकि मुनियों करके परमात्माके निरन्तर उपासना के योग्यहैं ३ तब वसिष्ठजी बोले कि हे राजेन्द्र ! मनुष्यों को संसारसे तारनेवाली वैकुण्ठ परेश भगवान्‌की नित्यही सुखदेनेवाली भक्तिको तुमने अच्छा प्रश्न कियाहै ४ इसी महाप्रश्नको पूर्वसमयमें कैलासके कँगूड़ेपर पार्वती देवीजी ने संसार में पूजित महादेवजी से पूछाथा ५ हे देवदेव ! हे महादेव ! हे त्रिपुरासुरके मारनेवाले ! हे सुरेश्वर ! सब देहधारियोंको मुक्ति देनेवाली

विष्णुभक्ति हमसे कहिये ६ भेद, मंत्र, तिनकी पूजा विधि, तिनविष्णु जीके स्वरूप, तिनकी विभूति, गुणआदिक ७ और तिनके लोक स्वरूपकी उपासनाकर जिसको प्राप्तहोकर निवृत्त नहीं होताहै जिससे भगवान् हरि सृष्टि रचते पालन और संहार भी करते हैं ८ जहांजाकर निवृत्त नहीं होते हैं सोई हरिका परमधामहै जिसकिसी कृत्यके साधनसे ९ पापी विषयों में आसक्तचित्तवाले मनुष्य प्राप्त होते हैं यहसब हमारे ऊपर प्रसन्नहोकर विस्तारसे कहिये १० व सिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! तिससमय में महादेवीजी ने त्रिपुरासु के मारनेवाले महादेवजी से इसप्रकार पूंछा तो वे परमप्रीतिसे भ गवान्के नमस्कारकर बोले ११ कि हे महादेवि! हे सब लोकों वे हितकारिणी! हे देवि! तुमने उत्तम भगवान् का माहात्म्य अच्छ प्रश्नकियाहै १२ हे पार्वती! हे भद्रे! तुम धन्य, पुण्यकरनेवाली औ विष्णुजीकी भक्तहौ तुम्हारे शील, रूप और गुणोंसे मैं सदा प्रसन्न रहताहूं १३ हे पार्व्वती! उत्तम भगवान्की भक्ति, तिनके मन्त्रों के विधि और भगवान् के स्वरूपको कहताहूं १४ तत्त्व नारायण, विष्णु वासुदेव, सनातन, परमात्मा, परंब्रह्म, परंज्योति, परात्पर १५ अच्युत पुरुष, कृष्ण, शाश्वत, शिव, ईश्वर, नित्य, सर्वगत, स्थाणु, रुद्र, साक्षी प्रजापति १६ यज्ञ, यज्ञपति, साक्षात् ब्रह्माजी के पति, हिरण्य गर्भ, सविता, लोककृत्, लोकभृत्, विभु १७ अकारवाच्य, भगवान् श्रीभूनीलापति, प्रभु, अमृत के ईशान, जो अन्न से अतिरोह के प्राप्त, १८ सहस्रमूर्द्धा, विश्वात्मा, सहस्राक्ष, सहस्रपात्, भगवान् पृथ्वी को सबओर से आच्छादितकर दशअंगुल के स्थित हैं १९ अनन्त, श्रीपति, राम, गुणभृत्, निर्गुण, महान्, सर्वलोकेश्वर, श्रीमान्, सर्व्वज्ञ, सर्वतोमुख २० तिन लोकमें प्रधान वासुदेवजी के माहात्म्यको जोकुछ मैं कहसक्ताहूं वह तुमसे कहताहूं २१ सब उपनिषदोंका अर्थ वेदांतमें परिनिश्चित तिसको ब्रह्मा और देवताओं समेत मैं कहने को असमर्थ हूं २२ तिसके उपासनभेदों को फिर अलग कहताहूं सुनिये पहले वैष्णव कहाहै भगवान्के शंख और चक्रका चिह्न २३ ऊर्ध्वपुण्ड्रों का धारण, तिसके मन्त्रोंका परिग्रह,

अर्चन, जप, ध्यान, तिनके नामका स्मरण २४ कीर्तन, श्रवण, वन्दन, चरणसेवन, तिनके चरणजलकी सेवा, तिनसे निवेदित भोजन, २५ तिनके भक्तों की सेवा, द्वादशीव्रत निष्ठित, तुलसी का लगाना यह देवदेव शार्ङ्गधनुषधारी विष्णुजीकी २६ संसारबन्ध की मुक्तिके लिये सोलहप्रकारकी भक्ति कहीगईहै सब देवता और हमको भी पुरुषोत्तम हरिजी पूजनेयोग्यहैं ब्राह्मणों को तो विशेष कर पूजने चाहिये तिससे ब्राह्मण नित्यही विधिपूर्वक भगवान् को पूजनकरै २७। २८ भगवान्के चिह्नोंसे चिह्नयुक्त होकर निस्सन्देह भगवान्के पदको प्राप्त होताहै ब्राह्मण भुजाओं में शंख और चक्र का चिह्न २९ सब पापों के नाश होने के लिये अग्निसे तपाकर करै चक्र वा शंख चक्र तथा पांचों आयुध ३० धारणकर विधिपूर्वक ब्राह्मणके कर्म्मका प्रारंभकरै अग्नि से तपेहुए पवित्र शंख चक्रको भुजाओं में धारणकर ३१ घोर यमराजके पुरको छोड़कर विष्णुजी के परंपदको प्राप्त होताहैं चक्रके चिह्नसे हीनहोकर जो भगवान्को पूजता है तो सब पूजा मंत्र और जप आदिक निष्फल होजाते हैं अग्निसे तपेहुए चक्रसे ब्राह्मण भुजाओं में ३२।३३ चिह्न कराकर मंत्र जपकर संसारसे मोक्षको प्राप्त होताहै उत्तम ब्राह्मण अग्निसे तपेहुए चक्रको धारणकर ३४ विधानसे जनेऊपहन पीछे से कर्मों में लगजावे जो मनुष्य विष्णुजी के चक्रसे हीनको श्राद्धमें भोजन कराता है ३५ तो सबव्यर्थ होजाताहै पितर निराशहोकर चलेजाते हैं श्राद्ध के कर्म में विष्णुजी के चक्रसे चिह्नित ब्राह्मणको पूजनकरै ३६ चक्रहीनको यत्नसे वर्जितकरै चक्रसे चिह्नित भुजावालेको गऊ, पृथ्वी और सोना आदिक देवै ३७ चक्रहीनको जो दियाजाताहै वह सबअसुरको दियाजाताहै अग्निसे तपेहुए चक्रसे भुजाओं में चिह्नितहोकर ३८ सब पापोंसे छूटकर विष्णुजी के परम्पदको ब्राह्मण जाते हैं अग्नि से तपेहुए चक्रसे जिसका शरीर चिह्नित होताहै ३९ तिसको तीर्थ और यज्ञ निस्सन्देह प्राप्तहोते हैं विधिसे चक्रको न धारणकर ब्राह्मण प्राकृत होताहै ४० तिस सहस्र यज्ञ करनेवाले भी प्राकृतका कुछ भोजन न करै ज्ञानदुर्लभ ब्राह्मण विधिसे चक्रको न धारणकरै

४१ तो सब लोकों में निन्दित होकर ब्राह्मणत्वसे च्युत होजाता है शंख और चक्रधारी देव हरिजी जैसे पूज्यहैं ४२ तैसेही चक्रादिकों से चिह्नित ब्राह्मण सबसे पूजने योग्य है सब वेदका जाननेवाला सब शास्त्रमें निपुण ४३ ब्राह्मण विधिसे चक्र न धारणकरै तो पतित होजाताहै ऊर्ध्वपुण्ड्रसे हीन और शंख चक्रसे वर्जितको ४४ गदहे पर चढ़ाकर अपने गांवसे वाहरकरदेवै जैसे प्रकृतिके स्पर्शसे रहित वासुदेव जनार्दनजी हैं ४५ तैसेही विष्णुचक्रसे चिह्नित ब्राह्मण है तिससे भगवान् के प्रकृति संसर्ग के पापसमूह के जलानेवाले ४६ तपेहुए चक्र और शंखको भुजाओं में धारणकरै स्त्री और शूद्रोंको सुगन्धित चन्दनसे सदैव धारणकरना चाहिये ४७ ब्राह्मणकी भुजा में तपेहुए चक्रसे विधिपूर्व्वक चिह्नकरै ४८ श्रौतस्मार्त आदिकी सिद्धि तथा मन्त्रसिद्धि और भगवान्की पूजाके अधिकार के लिये विधिसे चक्र धारणकरना चाहिये ४९ वैष्णवत्व और ज्ञान सिद्धि के लिये चक्र और शंखोंसे तपाकर विधिपूर्वक होमकरै ५० ब्राह्मण शंख, चक्र, गदा, खड्ग और शार्ङ्गधनुष इन भगवान्के आयुधोंको छोड़कर औरोंसे देहको न जलवावे ५१ भगवान्के चिह्नसे देहको जलवावे औरसे जलाहुआ क्रियाके योग्य नहीं होताहै विना चक्र धारेहुए ब्राह्मणको दूरही से त्याग करदेवै ५२ संसारमें वैष्णवहीन ब्राह्मणको चाण्डालकी नाईं नहीं देखे वर्णसे वाह्यभी वैष्णव त्रिभुवनको पवित्र करताहै ५३ तिससे ब्राह्मणोंको विधिपूर्वक चक्र धारण करनाचाहिये ब्राह्मण महात्मा अप्राकृतमंत्र तथा ज्ञानकीसिद्धि औ मुक्तिके लिये ५४ विष्णुजी के चक्रसे चिह्नयुक्त होवे क्योंकि विष्णुज के चक्रसे हीन ब्राह्मण प्राकृत कहाते हैं ५५ सब आश्रमों में वसत हुए ब्राह्मणोंको वेदके लिखने के अनुसार विशेषकर विधिपूर्वक वैष्ण चक्र धारण करनाचाहिये ५६ ब्राह्मण दहने भुजामें चक्र और बायें शंखको धारण करै यह ब्रह्मके जाननेवाले कहते हैं ५७ इसप्रका महोपनिषत् तथा साम और यजुर्वेद में चक्र आदिका धारण कह है ५८ चर्षणीन्द्रजन्मरूपी समुद्रके तरनेकी इच्छासे विष्णुजी पवित्र कमलचक्र में भुजाओं में पुराने शंखचक्रादिक चिह्नोंको धा

रण करते भये हैं ५९ चरण विस्तृत पवित्र पुराण वाङ्मय शुभ हैं तिस चक्र से तपेहुए पापरूपी समुद्र को तरजाते हैं ६० भगवान् का पवित्र ब्राह्मणरुपत्य सदैव संसार में व्याप्त है तिससे जिनकी देह नहीं तपी है वे परंपद को नहीं जाते हैं ६१ और जिनकी देह तपी है वे परंपदको प्राप्त होते हैं भगवान् के सुदर्शनचक्र के पवित्र, चरण, नेमि, ६२ सहस्रार, प्राकृतघ्न, लोकद्वार, महौजस ये नामहैं और भी पर्यायसे समझलेना ६३ शुद्ध अग्निसे तपेहुए ब्रह्मत्वसे हमको पवित्र कीजिये हे अग्नि! जो तुम्हारी ज्वालाकेसमान पवित्रहै तिससे हमको पवित्र कीजिये ६४ जिस पवित्रसे देवता सदैवआत्मा को पवित्रकरते रहेहैं तिसी सहस्रधारसे हमको पवित्र कीजिये ६५ प्राजापत्य, पवित्र, शतोद्याम, हिरण्मय से पवित्रब्रह्म ब्रह्मके जानने वालेहमको पवित्रकरै ६६ नेमिसमेत अजरचक्र इन महात्माका नेत्र है इसके धारण करनेसे देवता बड़ेऊंचे पदको प्राप्त हुएहैं ६७ तिस से ब्राह्मणों और वैष्णवों को विशेषकर विधिपूर्व्वक शंख चक्रादि धारणकरना चाहिये ६८ जोशुद्धचित्त महात्मा ऊर्ध्वपुण्ड्र और चक्र धारणकर स्वर और मन्त्रसे सदैव हृदयमें स्थित विष्णुजीके चरण को ध्यान करताहै वह श्रेष्ठसे श्रेष्ठपदको प्राप्त होताहै ६९ जिनके कण्ठ में तुलसी और रुद्राक्षका मालाहै और जे भुजाओं में शंख चक्र के चिह्न धारेहुएहैं और जिनके माथे में ऊर्ध्वपुण्ड्र प्रकाशित होताहै ते वैष्णव शीघ्रही लोकको पवित्र करते हैं ७० जे भगवान्के विस्तृत पवित्र चक्रको अच्छी प्रकार भुजामें नहीं धारण करते हैं उनको प्राणी शोचनहीं करतेहैं ७१ और जे भुजामें सुस्थिर चक्र को विधिपूर्वक धारण करते हैं वे तेजसे आकाश में श्रेष्ठ स्थान में स्थित होतेहैं ७२ भुजाओं में परमात्मा हरिजीके, होमकी अग्निसे तपेहुए चक्रसे चिह्नित मनुष्य भवसागर को तारकर बड़ेशुद्ध पर भगवान् के लोकको जाता है ७३ तपेहुए चक्रआदिकों से अपनी भुजाओं में चिह्न करावै स्त्री, पुत्र, नौकर और पशुआदिकों में भी चिह्न करावै ७४ हे पार्वती सब श्रुति इसी प्रकार कहती हैं तैसेही इतिहास पुराणोंमेंभी कहाहुआहै ७५ वैष्णव दो प्रकारके कहेहुए,

हैं वाह्य तथा आभ्यंतर, शङ्ख चक्र आदिकों से वाह्य और रागहीन से आंतरहै ७६ वाह्य और आभ्यन्तर से जो साम्यहै वह वैष्णव कहाहुआहै तिससे चक्र आदिक चिह्न प्रथम वैष्णव कहाताहै ७७ आंतर कामदोष आदिकों से विमुक्त स्वात्मदर्शन, सब प्राणियों में दया शांति इन्द्रियके अर्थों में नहीं चंचलता होना ७८ पुत्र और स्त्री आदि का संग नहीं होना योगाभ्यास में प्रीतिहोना अनन्यभक्ति-योगसे भगवान् का अभिषेकहै ७९ तिससे चक्र आदिकों से चिह्न होना वैष्णव कहाता है चक्र आदिकों के चिह्नहीन होने से वैष्णव-भाव नहीं मिलता है ८० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वर-संवादेसुदर्शनादिमाहात्म्यंनामचतुर्विंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२४॥

दोसौपचीसका अध्याय ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्रका माहात्म्य वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे शुभदर्शनवाली पार्वती! ऊर्ध्वपुण्ड्र का माहात्म्य कहताहूं जिसके धारण करनेसे उत्तम ब्राह्मण संसार के बन्धनसे छूटजाताहै १ सुन्दर मनोहर ऊर्ध्वपुण्ड्रके बीच में लक्ष्मी जी समेत देवदेव जनार्दनजी बैठे रहते हैं २ तिससे जिसके शरीर में ऊर्ध्वपुण्ड्र होता है तिसकी देह भगवान् का निर्म्मल शुभ मंदिर है ३ जो वैष्णव सुन्दर मिट्टीसे ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करताहै वह सब तीर्थोंमें स्नान करचुका और सब यज्ञों में दीक्षित होचुकाहै ४ ऊर्ध्व-पुण्ड्रका धारण करनेवाला ब्राह्मण सब लोकोंमें पूजितहोकर श्रेष्ठ विमानपर चढ़कर विष्णुजी के परमपदको प्राप्तहोताहै ५ श्रेष्ठ ब्राह्मण सब पापोंकी शुद्धिकेलिये और इष्टापूर्तके फलकी प्राप्तिके अर्थ तीनों संध्याओं में ऊर्ध्वपुण्ड्रको धारणकरै ६ ऊर्ध्वपुण्ड्र धारणकरने वालेको देखकर मनुष्य सबपापों से छूटजाताहै अथवा भक्तिसे नम-स्कारकरै तो सब दानों के फलको प्राप्तहोताहै ७ ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करनेवाले ब्राह्मणको जो श्राद्धमें भोजनकराताहै उसकेपितर करोड़ कल्पतक निस्सन्देह तृप्तरहते हैं ८ ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करनेवाला जो

श्राद्धकरताहै तो करोड़हज़ार कल्प गयाश्राद्धके फलको प्राप्तहोता है ९ ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करनेवाला यज्ञ,दान,तपस्या और जप होम आदिक जो कुछ करता है तिसकी अनन्तपुण्य होती है १० और ऊर्ध्वपुण्ड्रसे विहीन इष्टापूर्त आदिक कुछकर्म्म करताहै तो निस्सन्देह सब निष्फल होजाताहै ११ मनुष्यों का जो शरीर ऊर्ध्वपुण्ड्रसे वर्जितहै वह श्मशानके सदृशहै कभी देखने योग्य नहीं है १२ऊर्ध्वपुण्ड्रसे हीन सन्ध्याकर्म्म आदिक करता है तो सब राक्षसों करके प्राप्त करलिया जाताहै और कर्ता नरकको जाताहै १३ वैदिक ऊर्ध्वपुण्ड्रका धारण करनेवाला ब्राह्मण सुन्दर मिट्टीसे आपदामें भी कभी तिरछा तिलक नहीं धारणकरे १४ ब्राह्मणोंका ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलकहै क्षत्रियका पट्टाकार वैश्य और शूद्रोंका त्रिपुण्ड्र है १५ मिट्टी तथा कस्तूरीका तिलक ऊर्ध्वपुण्ड्र करना चाहिये चन्दनसे पट्टाकार भस्मसे त्रिपुण्ड्र करना चाहिये १६ क्षत्रिय आदिकभी जो विष्णुभक्तहों तो ऊर्ध्वपुण्ड्र धारणकरें यहतिलक कभी निषिद्ध नहींहै१७ ब्राह्मणों को तिरछा पट्टादि धारण नहींहै और नारायण परेशानसे औरोंका पूजन नहीं है १८ ब्राह्मण, कुलसे उत्पन्न, विद्वान्,जो भस्म धारण करनेवालाहो तो उसको मदिरासे उच्छिष्ट घड़ेकी नाईं वर्जितकरै १९ शूद्रोंके सदृशोंको त्रिपुण्ड्र तथा उसकी विधि चाहिये और ब्राह्मण त्रिपुण्ड्रधारणकरनेसे निस्सन्देह पतित होजाताहै२० एकांती, महाभाग, सब प्राणियोंके हितमें रत,सान्तराल हरिजी के पद के आकार पुण्ड्रकरें २१ विधिपूर्वक ऊर्ध्वपुण्ड्रको भगवच्चरणकी आकारकरैमध्यछिद्रसेसंयुक्त जो होताहै वहीभगवान्‌का मंदिरहै२२ ऊर्ध्वपुण्ड्र ऋजु, सौम्य,सुपार्श्व, मनोहर,दण्डाकार,अच्छा शोभायुक्त और बीचमें छेदयुक्त बनावै २३ तिससे ब्राह्मण और स्त्रियोंको छेद युक्त,दण्डाकार सुन्दरपुण्ड्र सदैव करना चाहिये २४सुन्दर, मनोहर, सान्तराल, ऊर्ध्वपुण्ड्र के मध्य में लक्ष्मीजी समेत भगवान् बैठे रहते हैं २५ जो अधम ब्राह्मण ऊर्ध्वपुण्ड्र को निरन्तराल करता है वह उसमें स्थित विष्णु और लक्ष्मीजी को नाश करता है २६ जे अधम ब्राह्मण छेदरहित ऊर्ध्वपुण्ड्र करते हैं उनके माथे में निरन्तर

निस्सन्देह कुत्ते का चरण है २७ तिससे छेद, हरदी और शुभयुक्त पुण्ड्र को भगवान् के सालोक्य की सिद्धिके लिये ब्राह्मण नित्यही धारणकरै २८ श्रेष्ठ भक्तिसे वेङ्कटाद्रिकुण्डमें मिट्टीलेकर हरिजी के सायुज्यकी सिद्धिके लिये ऊर्ध्वपुण्ड्र धारणकरै २९ श्रीकृष्णजी की तुलसीकी जड़ में भक्तिमान् मनुष्य मिट्टी लेकर ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करै तो भगवान् प्रसन्न होते हैं ३० शुभ, रम्य द्वारका तथा वासुदेवकुण्डकी रम्य मिट्टीलेकर श्रेष्ठ ब्राह्मण ३१ सब कामनाओंके फल की प्राप्तिके लिये ऊर्ध्वपुण्ड्र धारणकरै और श्रेष्ठ भक्तिसे गंगातीर की मिट्टीलेकर ३२ तिससे ऊर्ध्वपुण्ड्र धारणकरै तो सब यज्ञों के फलको प्राप्तहोताहै चन्दन, हरदी तथा अग्निहोत्रकी भस्म ये ३३ ऊर्ध्वपुण्ड्रके धारण करनेसे सबको वश करनेवाली कही हैं जहां पुण्यकारी हरिजीका क्षेत्रहै तहां की मिट्टीलेवे ३४ पर्व्वतके अग्र, नदीके किनारे, बेलकीजड़, जलाशय, सिंधुके तीर, बांबी और हरिक्षेत्र में विशेषकर मिट्टीलेवै ३५ और जहांपर नित्यही विष्णुजीके स्नान का जल बहताहै तहांकी मिट्टी पुण्ड्रोंके धारण करने के लिये ग्रहण करै ३६ श्रीरङ्ग, वेङ्कटपर्वत, श्रीकूर्म, शुभद्वारका, प्रयाग, नारसिंह वन, वाराह और तुलसीवनमें ३७ विष्णुजीके चरण के जलसमेत मिट्टी भक्तिसे ग्रहणकर अंगों में पुण्ड्र धारणकरै तो विष्णुजी की सायुज्यको प्राप्तहोवे ३८ जिस किसी में महाभाग वैष्णव मिट्टीधारण करनेके लिये लेते हों उसकी मिट्टी ऊर्ध्वपुण्ड्रके धारण करने में ग्रहण करै ३९ श्यामपुण्ड्र, शांति करनेवाला, लालवश करनेहारा पीला लक्ष्मी करनेवाला, सफेद मोक्षकरनेहाराहै ये सबशुभहैं ४० वर्तुल, तिरछे छेदवाला, ह्रस्व, दीर्घ, विस्तृत, सूक्ष्म, टेढ़ा, विरूप, अग्र बँधाहुआ, मूल कटाहुआ, पदसे च्युत ४१ ये सब अशुभ हैं रूखा, आसक्त, विना अँगुलीके रचाहुआ, विगंध और अवसह्य ये सब पुण्ड्र अनर्थ करनेवाले कहाते हैं ४२ नाककी मूलसे लेकर माथे के अन्ततक मिट्टीसे लिखै और भौंहके बीचसे लेकर अन्तरालरचै ४३ अंतराल दो अंगुलहोवे पार्श्व अंगुलिमात्रहो और सुन्दरमिट्टी से अत्यन्त ऋजु, शुभ पुण्ड्र लिखे ४४ माथे में केशवजी को ध्यान

करै पेटमें नारायणको छाती में माधवको कंठकूबर में गोविन्द को ४५ दहिनी कोखिमें विष्णुजी को भुजामें मधुसूदनको गर्दनमें त्रिविक्रमको बायेंपार्श्व में वामनको ४६ बायें भुजासें श्रीधरको गर्दन में हृषीकेशको पीठमें पद्मनाभको त्रिकमें दामोदरको ४७ तिन के धोये जलसे मस्तकमें वासुदेवको ध्यानकरै माथा, दोनोंभुजा, पीठ और कण्ठकूबरमें ४८ चार अंगुलका ऊर्ध्वपुण्ड्र धारणकरै कोखि और तिन के किनारोंमें दश अंगुलका ४९ भुजा और छातीमें आठ अंगुलका इसप्रकार बारहपुण्ड्र ब्राह्मण निरन्तर धारणकरै ५० तिन तिन पुण्ड्र और तिनकी मूर्त्तियोंको ध्यानकर मंत्रसे धारणकरै सब अन्तरालों में कल्याणकारिणी हलदी को धारणकरै ५१ चारपुण्ड्र क्षत्रियोंके दो वैश्यों के स्त्री और शूद्रोंको एक एक पुण्ड्र कहाहै ५२ माथा,हृदय और भुजाओंमें चारपुण्ड्र धारणकरै माथा और हृदयमें दो फालमें एक धारणकरै ५३ सबका पहला ऊर्ध्वपुण्ड्र माथेमें कहा है माथेसे आदि क्रमसे धारण करना कहाहै ५४ वासुदेवआदिक मूर्त्तियां चारोंपुण्ड्रों में धारणकरै गोविन्द और कृष्णको दो पुण्ड्रों में नारायणको एक पुण्ड्रमें धारणकरै ५५ हे पार्वती ! इसप्रकार पुण्ड्र की विधि सबकी मैंने कही पीपलके पत्तेके सदृश तथा बांसकी पत्ती के आकार ५६ कमलकी कलीके समान ये तीनों पुण्ड्र मोहन कहाते हैं महाभागवत शुद्धमनुष्य पुण्ड्रको भगवान्‌के चरणके आकार ५७ अथवा दण्डके आकार धारण करै चक्रसे चिह्नित भुजावाले तथा ऊर्ध्वपुण्ड्रसे चिह्नित सब देहवाले ५८ और रुद्राक्ष धारण करनेहारे शुद्ध मनुष्य पापसमूहों से लोकोंकी रक्षा करते हैं ५९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेऊर्ध्वपुण्ड्रमाहात्म्यंनामपंचविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२५ ॥

दोसौ छब्बीसका अध्याय ॥

मंत्र के अर्थका उपदेश वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! न्यास वा पूजनसे एकान्तीका मन्त्र सेवन करै विना वैष्णवके उपदेश कियेहुए मन्त्रसे श्रेष्ठ गति

नहीं होती है १ जो विना वैष्णवके उपदेश कियेहुए दो पूर्व्वके मंत्र श्रेष्ठहों तो फिर अच्छी विधिसे वैष्णव गुरुसे मन्त्र ग्रहण करावे२ सहस्रशाखाका पढ़नेवाला वा सब यज्ञोंमें दीक्षित और महात्माओं के कुलमें उत्पन्न हुआभी वैष्णवहीन गुरु नहीं होना चाहिये ३ जो वैष्णव दो मन्त्रोंको अच्छीतरह पढ़ाता है वह संसारके बन्धन का नाश करनेवाला आचार्य्य जानना चाहिये ४ ब्राह्मण आचार्य्यका सेवन कर एक वर्षपर्यन्त उनकी शुश्रूषा करे तब ब्राह्मणकी वृत्ति जानकर गुरुमन्त्र को पढ़ावें ५ गुरुजी विधिपूर्व्वक पुण्ड्र आदिक संस्कारोंको करके पीछेसे मन्त्रपढ़ावें ६ निर्मलचित्तवाले शिष्यको पहले विधिपूर्व्वक चक्रसे चिह्नितकर मंत्रदेवें ७ वैष्णवोंका तिलक ऊर्ध्वपुण्ड्र कहाहै तिससे इसको धारणकर गुरुजी शिष्यको विधिपूर्व्वक मन्त्रपढ़ावें ८ अष्टाक्षर मन्त्रको न्यासकहते हैं व वैष्णव मनुभी कहते हैं वैष्णवों को यहांपर न्यासही श्रेष्ठ कहा है ९ तिससे न्यासविद्या में जो परायण होताहै सोई श्रेष्ठब्राह्मण कहाताहै १० न्याससे श्रेष्ठ मन्त्रनहीं है यह मैं तुमसे सत्यही कहताहूं न्यास द्वय प्रपत्ति ये नाम पर्यायसे समझ लीजिये ११ द्वयका उपदेश पहलेकर सब कर्म करे द्वयका अधिकारी न होवे तो सब कर्म्मों में योग्य नहीं होवे १२ तिससे श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वयको पढ़कर पीछेसे श्रीमत् अष्टाक्षर अत्युत्तम मन्त्रका अच्छीतरहसे अभ्यास करै १३ ओंकार के संग्रह से अष्टाक्षरमन्त्र कहाहै परिडत लोगों ने यह कहाहै कि स्वभावही से मन्त्रके आदिमें ओंकार कहना चाहिये १४ सब मन्त्रों में और जगह नहीं कहना चाहिये पहलेही सबके ओंकार को कहै १५ ओंकार प्रणवब्रह्म सब मन्त्रों में श्रेष्ठ है इससे सब मन्त्रोंकी आदि में इसको युक्तकरै १६ स्वभावहीसे ओंकार तिस मूलमंत्रमें प्रतिष्ठितहै पहले ओं यह एक अक्षर फिर नमः ये दो अक्षर १७ और तिस पीछे नारायणाय ये पांच अक्षर क्रमसे कहै इसप्रकार ओंनमः नारायणाय यह अष्टाक्षर मन्त्र सब अर्थका साधन करनेवाला १८ सब दुःख हरनेहारा, श्रीमान्, सर्वमन्त्रात्मक, शुभ, ऋषि, नारायण हैं तिसके देवता भगवान् हैं १९ छंददेवी गायत्री है ओंकार बीजहै मनुकी

नित्या, अनपायिनी, देवी,शक्ति, श्रीकहाती है २० पहलापद ओंकार है दूसरा नमः तीसरा नारायणाय ये तीनपद मिलकर ओंनमः नारायणाय बना है २१ अकार, उकार और मकार ये वेदत्रयात्मक, ब्रह्माजी का पद ओंकार कहाता है २२ अकार से विष्णु कहाते हैं उकारसे श्री कहाती हैं और मकार इनदोनोंका दास पञ्चीसवां कहाताहै २३ पण्डित लोग अकारसे वासुदेवजी का स्वरूप कहते हैं मुनिलोग उकारसे लक्ष्मी देवीका स्वरूप कहते हैं २४ मकारसे पञ्चीसवांपुरुष जीव कहाताहै कवर्गसे भूत चवर्गसे इन्द्रिय २५ टवर्ग और तवर्ग से ज्ञानंधादिक पकार से मन फकारसे अहङ्कार २६ बकार और भकार से महान्प्रकृति मकार पञ्चीसवां आत्मा २७ जोकि देह, इन्द्रिय,मन और प्राणआदिकोंसे अन्य, अनन्यसाधन, भगवच्छेषभूतसचेतन कहाता है २८ इसी प्रकार कोईकोई उकार को अवधारणवाची कहतेहैं तिसपक्ष में वकारसे श्रीतत्त्व कहते हैं २९ सूर्यकी दीप्तिकी नाईं तिसकी नित्या अनपायिनी है आकार से विष्णुजी कहाते हैं जोकि कल्याणगुणों के समुद्र ३० लक्ष्मीजी के स्वामी, सब आत्माओं के शेष, जगद्बीज, पर, पुरुष, जगत्के कर्ता, जगत्के भर्ता, ईश्वर और लोकके बान्धवहैं ३१ जगत्की ईश्वरी, नित्या, विष्णुजी की अनपगामिनी, सब संसारकी माता, विष्णुजी की स्त्री, मनोरमा ३२ जगत्की आधारभूता और श्री ये उकार से कहाती हैं मकारसे तिनका दास, क्षेत्रज्ञ पण्डितलोग कहते हैं ३३ ज्ञान के आश्रय, ज्ञानगुण, चेतन, प्रकृतिसेपर, अजड़, निर्विकार, एकरूप स्वरूप का सेवनेवाला ३४ अणु, नित्य, व्याप्तिशील, चिदानन्दात्मक, अहमर्थ, अव्यय, क्षेत्री, भिन्नरूप, सनातन ३५ नहीं जलाने वाला, नहीं काटनेहारा, अक्लेद्य, नहीं शोषनेवाला, अक्षर ऐसेही आदिगुणोंसे युक्त, परका शेषभूत है ३६ मकारसे जीव कहाता है जोकि क्षेत्रज्ञ, सदैव पराधीन, भगवान्ही का दासहै और किसी का नहीं है ३७ हे पापरहित पार्व्वती! इसप्रकार मकार ने दासभाव विष्णुजी में किया है इस तरह से ओंकार का अर्थ मैंने कहाहै वह जानने योग्यहै ३८ हे शुभे! ओंकारके अर्थ मन्त्रशेष

से क्षितिपरके दासभूतकी स्वतन्त्रता यहां विद्यमान नहीं है ३९ तिससे महत् और अहंकारको मनसे निवृत्त कर दे स्वोपायबुद्धि से जो कृत्य है तिसकोभी प्रतिषेध करे ४० मकार अहंकार है नकार तिसका निषेध करनेवाला है तिससे मनहीसे इसके अहंकार को छोड़ देवे ४१ मनही से सब सिद्धि होती है और तरहसे नाश को प्राप्त होताहै मनसमेत कुछ अहंकार कहाता है ४२ अहंकारसे युक्तको कुछ सुख नहीं प्राप्तहोताहै अहंकारसेविमूढ़ आत्मा अन्धकारयुक्त नरकमें डूबताहै ४३ तिससे मनसे यहांपर स्वातन्त्र्यका नहीं प्रतिषेधहै भगवान्के पराधीन यह तदायत्त होकर जीवताहै ४४ तिससे चेतनका साधनकर्त्तृत्व विद्यमान नहीं है ईश्वरही के संकल्पसे चराचर वर्त्तमान है ४५ तिससे सम्पूर्णतासे अपनी सब सामर्थ्यविधिको छोड़ देवे ईश्वरकी सामर्थ्यसे तिसका नहीं लाभ होना नहीं विद्यमानहै ४६ तिस भगवान्में भारस्थापितकर तिसकर्मको करे परमात्मा हरिस्वामी हैं मैं सदैव ४७ आत्माके ईश्वरकी इच्छा में युक्त होनेवाला हूं इसप्रकार ममतासे वृद्धिको प्राप्त अहंकारको छोड़देवे ४८ देहोंमें अहंकारकी बुद्धि जन्म मरण कर्मबन्धनमें मूलहै तिससे पण्डित महत् और अहंकारको मनसे वर्जितकरै ४९ हे शुभे हे पार्वती! अब नारायणपदको कहताहूं आत्माओंके समूहोंको नारा कहते हैं तिनकी गति यह पुरुषहै ५० सोई तिसके अयननाम स्थान हैं तिससे नारा और अयन मिलकर नारायण कहाते हैं सब चित् अचित् वस्तु संसार सुना और देखा जाताहै ५१ जो यह व्याप्त होकर नित्यही स्थितहै सोई नारायणकहाताहै सब पुरुषोंकेसमूह नारा कहाते हैं ५२ तिनकी गति आलम्बनहै तिससे नारायण कहाताहै नरसे तत्त्व उत्पन्न होते हैं उनको पण्डित लोग नारा कहते हैं ५३ सोई तिसके अयनहैं तिससे नारायण कहाताहै कल्पके अन्तमें सब जगत् ग्रासकर जिसकरके धारणकियाजाताहै ५४ फिर जिसकरके रचाजाताहै सोई नारायण कहाताहै चराचर सब संसार नारकहाता है ५५ तिसकी जिससे संगति है तिसीसे नारायण कहाताहै मनुष्यों का संघात नारहै तिसकी यह अयन गति है ५६ तिसीसे यह मुनियों

करके नित्यही नारायण कहाताहै जिससे लोक महासमुद्रमें बड़े फेन के समान होते हैं ५७ फिर जिससे लीन होजाते हैं तिससे नारायण कहाताहै जो नित्यपदमें नित्य, नित्यमुक्त एकभोगवान् ५८ सब संसारका ईशहै सोई नारायण कहाताहै नारायणही परंब्रह्म,तत्त्व, पर है ५९ इस संसारमें भीतरबाहर जो कुछदिखाई और सुनाई पड़ताहै तिस सबको व्याप्तहोकर नारायणही स्थितहै ६० पापरहित,पुरुष,सब प्राणियों के भीतर स्थित,दिव्य,एक, सदानित्य, हरिअच्युत नारायणही हैं ६१ जो देखने वाला और देखने योग्य सुननेवाला और सुनने योग्य छूनेवाला और छूनेयोग्य ध्यान करनेवाला और ध्यान करने योग्य ६२ वक्ता और वाच्य जाननेवाला और जानने योग्य चित् अचित् संसार है वह सब हरि, लक्ष्मीके स्वामी नारायणही हैं ६३ हज़ारों मस्तकवाला, पुरुष, हज़ारों नेत्र और चरण वालाहै वह सबओरसे लोकोंमें व्याप्तहोकर दशअंगुल का स्थित है ६४ जो भूत और भविष्यहै वह सब नारायणहरि हैं उतामृतत्व का पति जो अन्यसे विराट् पुरुषहै ६५ सोई पुरुष, विष्णु, वासुदेव, अच्युत, हरि, हिरण्मय, भगवान्, अमृत, शाश्वत शिव, ६६ संसार के पति, सब लोकोंके ईश्वर, प्रभु, हिरण्यगर्भ, सविता, अनन्त, महेश्वर है ६७ भगवान् तथा पुरुष यह निरुपाधि वर्तमान हैं वासुदेव जी सबकी आत्मा में वर्तमान हैं ६८ ईश्वर, भगवान्, विष्णु, परमात्मा, जगत्, सुहृत्, चराचर के सिखलानेवाले, पतियों की श्रेष्ठगति हैं ६९ जो वेदकी आदिमें स्वर कहाहुआ है और वेदान्त में स्थित है तिसकी प्रकृतिलीन का जो पर है सोई महेश्वर है ७० जो यह अकार विष्णु है और जो यह नारायणहरि है सोई पुरुष, नित्य, परमात्मा, महेश्वर है ७१ जिससे ऐश्वर्य उत्पन्न है और जिसकिसीमें वर्तमानहै तिसीमें ईश्वरशब्द भी मुनियोंने कहा है निरुपाधि ईश्वरत्व वासुदेवमें प्रतिष्ठितहै ७२ वेदवाद सनातनों करके आत्मेश्वर कहाताहै तिससे महेश्वरत्व वासुदेव में प्रतिष्ठित है ७३ यह यज्ञका ईश्वर, यज्ञ, यज्ञका भोक्ता, यज्ञका कर्ता, विभु, यज्ञभुक्, यज्ञपुरुष है सोई परमेश्वर ७४ यज्ञेश्वर, हव्यसमस्तक-

व्यकाभोक्ता, अव्ययात्मा, हरि, ईश्वरहै यहांपर तिनके संनिधानसे शीघ्रही सबराक्षस और असुर भागजाते हैं ७५ जो यह विराट्केभावकोप्राप्त हरिजनार्दन होकर तीनोंलोकोंको संतर्पण करताहै सोई परमेश्वरहै ७६ जिस करके पूर्णहविसे देवता यज्ञको विस्तार करते हैं तिस यज्ञसे उत्पन्न ७७ सर्व्वहुत ऋच साम घोड़ा गऊ और पुरुष आदिकहैं ७८ इस पुरुषकी देह सर्वयज्ञमय है हरिजीसे सबस्थावर जंगम संसार उत्पन्नहै ७९ ब्राह्मण मुखसे क्षत्रिय भुजासे वैश्य जंघा से शूद्र चरणसे उत्पन्नहैं चरणोंसे पृथ्वी शिरसे आकाश ८० मन से चन्द्रमा नेत्रों से सूर्य्य मुख से अग्नि सहस्रनयन वायु प्राणसे सदागति ८१ नाभि से ब्रह्मा, आकाश, सब चराचर संसार और जिस सनातन विष्णुजीसे सब संसार उत्पन्नहै ८२ तिससे सर्वमय विष्णुही नारायण कहाते हैं इसप्रकार हरिजी सब संसारको रचकर फिर संहार करदेते हैं ८३ जैसे अपनेही लीलासे उत्पन्न तान्तव को ऊर्णनाभि रचकर नाशकरदेती है ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, यमराज, वरुण ८४ को भी ग्रहणकर जो संहार करदेते हैं तिसी से हरिकहाते हैं और यह पुरुष एक समुद्रहुए प्रलयमें माया के बरगदके नीचे ८५ संसारको अपने पेटमें कर तिसीमें सनातन आप सोते हैं वह एकही विष्णु, नारायण, अच्युतहैं ८६ ब्रह्मा, महादेव, देवता, महर्षि आकाश, पृथ्वी, चन्द्रमा, सूर्य ८७ नक्षत्र, लोक, अण्डमहद्से आच्छादित ये कोई नहीं हैं जिससे तिन हरिजी ने सब संसारको व्रत कियाहै ८८ फिर सृष्टिमें रचाहै तिसीसे नारायण कहाते हैं हे पार्वती! तिनकी दास्य चतुर्थ्यानुमंत्र में कही है ८९ ब्रह्मा आदिक सब संसार भगवान् का दासहै इसप्रकार अर्थ जानकर पीछेसे मंत्रको युक्तकरै ९० मंत्रके अर्थको न जानकर सिद्धिको नहीं प्राप्तहोताहै भुक्ति, भक्ति और मुक्तिको भी नहीं प्राप्त होताहै ९१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे मंत्रार्थोपदेशोनामषड्विंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२६ ॥

दोसौसत्ताइसका अध्याय ॥

त्रिपाद्विभूतिका वर्णन ॥

पार्व्वतीजी बोलीं कि हे महादेवजी ! हमसे विस्तारसे मन्त्रार्थ पदका गौरव, ईश्वरका स्वरूप, तिनकी विभूतियोंके गुण १ विष्णु जी का परमधाम तथा हरिजी के व्यूहभेद ये सब तत्त्वसे कहिये २ तब महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती ! परमात्माका स्वरूप, विभूति, गुणोंका समूह हरिजीके तिस अवस्थात्मक को कहताहूं सुनिये ३ जो पर पुरुष नारायण कहाते हैं सोई संसारके ईश्वर, परमात्मा, सनातन ४ विश्वतःपाणिपाद, चक्षुष्मान्, विश्वतःप्रभु हैं विश्वभुवन के इन्हींमें श्रेष्ठ धामहैं ५ भुवनों को धारते और बुद्धिमानोंके मन को भी धारतेहुए भगवान् स्थितहोते हैं इसप्रकार अनेक स्वरूप होतेहुए श्रीपति पुरुषोत्तमजी ईश्वरी के संग भोगके लिये सुन्दर मंगलरूपयुक्त होते हैं ६ बृहत्शरीर, अग्निके समान रूप, युवा और कुमारभावको प्राप्तहोकर भगवान् संसारकी माता लक्ष्मीजी के संग रमणकरते हैं जैसे अपनी ज्योत्स्नासे अमृतकी किरणोंवाला चन्द्रमा रमणकरताहै ७ यहकुमार, नित्यही युवावस्थावाले, करोड़ कामदेवके समान सुन्दर भगवान् संसारकी स्वामिनी के संग परमपदमें स्थित होते हैं ८ भोगकेलिये श्रेष्ठआकाश और लीलाकेलिये सब संसार उनको है भोग और क्रीड़ासे दोविभूतिकी संस्थितिहै ९ भोगमें तिनकी नित्यही स्थितिहै लीलाको कबसंहार करते हैं तो भोग और लीला तिनकी शक्तिमत्तासे दोनों धारणकरते हैं १० परधाममें त्रिपाद्व्याप्ति है इन भगवान् का यहांपर फिर चरणहुआ त्रिपाद् विभूति तो नित्यहै और भगवान्का चरण अनित्यहै ११ भगवान् का वह नित्यरूप परधाम में स्थितहै जोकि शुभ, अच्युत, शाश्वत, दिव्य, सदैव यौवनमें आश्रित १२ नित्य, ईश्वरी लक्ष्मीके संगभोग करनेवाली, भूमिसे आच्छादित है यह नित्या संसारकी माता विष्णु जीकी नाशरहित लक्ष्मीजी हैं १३ जैसे सबमें प्राप्त विष्णुजी हैं तैसेही लक्ष्मीजी हैं ये विष्णुजीकी स्त्री सब संसारकी स्वामिनी सदा

कल्याणकारिणी हैं १४ सबजगह हाथ,पांव,नेत्र,शिर और मुखवाली हैं नारायणी, संसारकी माता और सब संसारके आश्रयहैं १५ जिनके कटाक्षके आश्रित सबस्थावर जंगम संसारहै संसारका पालन और संहार जिनके उन्मीलन और निमीलनसे होताहै १६ सबकी आद्या,महालक्ष्मी, त्रिगुणा, परमेश्वरी, लक्ष्यअलक्ष्यकी स्वरूप यह सम्पूर्ण संसारमें व्याप्तहोकर स्थित रहती हैं १७ परमेश्वरीजी सब संसारको शून्यदेखकर अपने तेजसे पूरितकरतीभई १८ सो लक्ष्मी, धरणी,नीलादेवी नामसे प्रसिद्ध,संसारकी आधारभूत, पृथ्वीके रूप में आश्रितहैं १९ जल आदि रसरूपसे सोई नीलादेहहुई हैं लक्ष्मी जीके रूपको प्राप्त,धनवाक्रूपिणीभी हुई हैं २० इसप्रकार देवीस्वरूप, संसारकी लक्ष्मी, हरिजीकी सेवा करनेवाली, सब विद्याकाभेद, लक्ष्मीरूपहैं २१ सब श्रीकारूप तिनका सम्पूर्ण देह कहाताहै सुंदरता, शीलवृत्त और सौभाग्य स्त्रियों में स्थित है तिनका रूप सब स्त्रियोंके मस्तकमें है २२ जिनकी प्रसन्नतासे ब्रह्मा, शिव, स्वर्गके पति इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य, कुबेर,यमराज और अग्नि अत्यन्त ऐश्वर्य को प्राप्त होतेहैं २३ लक्ष्मी,श्री, कमला, विद्या, माता, विष्णुप्रिया, सती, पद्मालया, पद्महस्ता, पद्माक्षी, लोकसुन्दरी २४ भूतोंकी ईश्वरी, नित्या,सद्या, सर्वगता, शुभा, विष्णुपत्नी,महादेवी,क्षीरोदतनया, रमा, २५ अनन्ता, लोकमाता, भू, नीला, सर्व्वसुखप्रदा, रुक्मिणी, सीता, सर्ववेदवती, शुभा २६ सती, सरस्वती, गौरी,शान्ति,स्वाहा, स्वधा, रति, नारायणी, वरारोहा, विष्णुजी की नित्या, अनपायिनी, २७ ये लक्ष्मीजीके पुण्यकारी नामहैं इनको सवेरे उठकर जो पढ़ता है वह महालक्ष्मी, धन धान्यको पाता और पापरहित होता है २८ हिरण्यवर्णा, हरिणी, सोने और चांदीकी माला धारण करनेवाली, चन्द्रा, हिरण्मयी, लक्ष्मी, विष्णुजी की अनपगामिनी २९ गन्धद्वारा,दुराधर्षा,नित्यपुष्टा, करीषिणी, सब प्राणियोंकी ईश्वरी श्रीजी को मैं यहांपर आवाहन करताहूं ३० इसप्रकार ऋक्संहितामें स्तुति को प्राप्त महेश्वरी जी महादेव आदिक देवताओं को सब ऐश्वर्य्य सुखको देतीहैं ३१ इससंसारकी स्वामिनी, विष्णुजीकी स्त्री, सना-

तनीहैं जिनके कटाक्ष के आश्रित स्थावर जंगम सब संसारहै ३२ जिन भगवान् की छातीमें यह देवी इसप्रकार स्थितहैं जैसे अग्नि में दीप्ति होती है सोई सबके ईश्वर, साक्षात्, अक्षर, पुरुष, नाशरहित ३३ नारायण, श्रीमान्, वात्सल्य गुणोंकेसमुद्र, स्वामी, सुशील, सुभग, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् ३४ नित्यही सम्पूर्णकाल, स्वभावहीसे मित्र, सखा, दयारूपी अमृतके समुद्र, सब देहधारियोंको शरणदेनेवाले ३५ स्वर्ग और मोक्षसुख के देनेवाले, भक्तोंके ऊपर दयाकरनेहारे हैं तिन श्रीमान् विष्णुजीकी सबदास्य मैं करूंगा ३६ भगवान्की देश कालआदिक सब अवस्थाओं में स्वरूपसे सिद्ध सुखकारी दास्य को मनुष्य प्राप्तहोवे ३७ इसप्रकार मंत्रके अर्थको जानकर अच्छी तरहसे भगवान् में भक्तिको करै तिनके यह स्थावर जंगम सबसंसारदासहैं ३८ श्रीमन्नारायणजी स्वामी, जगत्के प्रभु, ईश्वर, माता, पिता, पुत्र, बन्धु, निवास, शरण, गति ३९ कल्याणकारी गुणों से युक्त, लक्ष्मीके स्वामी, सब कामनाओं के फलके देनेवाले हैं और जो शास्त्रों में निर्गुण कहेजाते, संसारकेस्वामी ४० हैं यसंयुक्त प्राकृत गुणोंसे हीनभाव कहेजाते जहांपर वेदान्तगोचर वाक्यों से मिथ्या प्रपंचहै ४१ और जो यहसब दिखलाई देताहै सो अनित्य कहाता है यहांभी प्राकृतरूप मण्डका नाश करनेवालाहै ४२ तैसेही प्राकृत रूपोंका अनित्यत्व कहाजाताहै हे पार्वती! यहअर्थ हरिजीकी प्रकृति से उत्पन्न है ४३ देवदेव, लीलाके अधिकारी विष्णुजीकी क्रीड़ाके लियेहैं चौदहों लोक, द्वीपोंसहित समुद्र ४४ चारप्रकारके प्राणी और बड़े ऊंचे पहाड़ोंसे यह सुन्दर प्रकृतिसे उत्पन्न मण्डपरिपूर्ण है ४५ और दशोत्तरगुणों से युक्त सातआवरणोंसे आच्छादित है कलाकाष्ठादिरूपसे जो कालपरिवर्त्तन करताहै ४६ उसी से संसारकी उत्पत्ति, पालन और संहारहोताहै चारोंयुग हजार हजार बार जबबीत जाते हैं तब ब्रह्माजीका दिन होताहै ४७ और इतनीही रात्रिहोती है ऐसेही जब सौवर्ष अव्यक्तजन्मवाले ब्रह्माजीके वीतजाते हैं तब उनका नाशहोताहै और सबके संहार करनेवाली प्रलय होजाती है ४८ अण्डमण्डमें प्राप्त लोक कालकी अग्निसे जलजाते हैं तथा सब

के आत्मा विष्णुजीकी प्रकृति में प्रवेशहोजाते हैं ४९ अण्डावरण प्राणी प्रकृतिमें लयको प्राप्तहोजाते हैं और सब संसारकी आधार प्रकृति हरिजीकी सेवाकरती है ५० तिससे भगवान् सदैव संसार की उत्पत्ति और संहार करते हैं भगवान्ने क्रीड़ाहीके लिये जगन्मयीमाया रची है ५१ अविद्या प्रकृति, माया सदैव तीनों गुणोंसे युक्त है उत्पत्ति, पालन और संहारकी हेतु, सनातनी ५२ योगनिद्रा, महामाया, प्रकृति, तीनोंगुणोंसे युक्त अव्यक्त और प्रधानहैं यहलीलाके अधिकारी विष्णुजी की है ५३ इसी प्रकृतिसे सदैव संसार की उत्पत्ति और नाशहोताहै प्रकृतिके अगणित स्थान हैं जो कि निविडध्वान्त और नाशरहित हैं ५४ सीमा के ऊपर और नीचे सनातनी विरजाहैं तिनकरके स्थूल और सूक्ष्म आदिक अवस्थासे सब संसार आदरको प्राप्तहै ५५ विकास और संकोचकी अवस्थाहैं तिनमें उत्पत्ति और नाश कहाहै इसप्रकार सबप्राणी प्रकृतिके अन्तर्गतहैं ५६ तदनन्तर यह सब महत्प्रकृतिके अंतर्गत शून्यहोजाताहै इस प्रकार प्रकृतिरूपा विभूति के उत्तमरूप ५७ और त्रिपाद्विभूति के रूपको हे पार्वतीजी सुनिये प्रधान परमआकाशके अंतरमें विरजा नदी है ५८ यह वेदके अंगके पसीने से उत्पन्न जलसे बही है इस शुभनदी के पार श्रेष्ठ आकाश में त्रिपाद्भूति सनातनी है ५९ अमृत, शाश्वत, नित्य, अनन्त, परमपद, शुद्ध, सत्वमय, दिव्य, अक्षर, ब्रह्माकापद ६० अनेक करोड़ सूर्य और अग्निके तुल्य तेज, नाशरहित, सब वेदमय, शुद्ध, उत्पत्ति और संहारसे वर्जित ६१ अगणित, अजर, नित्य, जाग्रत् और स्वप्न आदिसे वर्जित, हिरण्मय मोक्षपद, ब्रह्मानन्द सुखका देनेवाला ६२ समानाधिक्यसे रहित आदि और अन्तसे भी रहित, शुभ, तेजसे अत्यन्त अद्भुत, रम्य नित्य और आनन्दका सागर है ६३ इसप्रकार के गुणोंसेयुक्त विष्णुजी का परमपद है तिसको सूर्य्य चन्द्रमा और अग्नि नहीं प्रकाश करसक्ते हैं ६४ जहां जाकर फिर नहीं लौटताहै सोई हरिजी का परमधामहै सो विष्णुजीका परमधाम, शाश्वत, नित्य, अच्युत और सैकड़ों करोड़ कल्पोंसे भी वर्णन करने को समर्थ कोई नहीं

के आत्मा विष्णुजीकी प्रकृतिमें प्रवेशहोजाते हैं ४६ अण्डाव
प्राणी प्रकृतिमें लयको प्राप्तहोजाते हैं और सब संसारकी आ
प्रकृति हरिजीकी सेवाकरती है ५० तिससे भगवान् सदैव सं
की उत्पत्ति और संहार करते हैं भगवान्ने क्रीड़ाहीके लिये ज
न्मयीमाया रची है ५१ अविद्या प्रकृति, माया सदैव तीनों गुण
युक्त है उत्पत्ति, पालन और संहारकी हेतु, सनातनी ५२ योगनि
महामाया, प्रकृति, तीनोंगुणोंसे युक्त अव्यक्त और प्रधानहै यह
लाके अधिकारी विष्णुजी की है ५३ इसी प्रकृतिसे सदैव संस
की उत्पत्ति और नाशहोताहै प्रकृतिके अगणित स्थान हैं जो
निविडध्वान्त और नाशरहित हैं ५४ सीमा के ऊपर और न
सनातनी विरजाहैं तिनकरके स्थूल और सूक्ष्म आदिक अवस्थ
सब संसार आदरको प्राप्तहै ५५ विकास और संकोचकी अवस्थ
तिनमें उत्पत्ति और नाश कहाहै इसप्रकार सब प्राणी प्रकृतिके अन्
र्गतहैं ५६ तदनन्तर यह सब महत्प्रकृतिके अंतर्गत शून्यहोजात
इस प्रकार प्रकृतिरूपा विभूति के उत्तमरूप ५७ और त्रिपाद्विभू
के रूपको हे पार्वतीजी सुनिये प्रधान परमआकाशके अंतरमें विर
नदी है ५८ यह वेदके अंगके पसीने से उत्पन्न जलसे बही है
शुभनदी के पार श्रेष्ठ आकाश में त्रिपाद्भूति सनातनी है ५९ अमृ
शाश्वत, नित्य, अनन्त, परमपद, शुद्ध, सत्वमय, दिव्य, अक्ष
ब्रह्माकापद ६० अनेक करोड़ सूर्य और अग्निके तुल्य तेज, नाश
रहित, सब वेदमय, शुद्ध, उत्पत्ति और संहारसे वर्जित ६१ अग
णित, अजर, नित्य, जाग्रत् और स्वप्न आदिसे वर्जित, हिरण्मय
मोक्षपद, ब्रह्मानन्द सुखका देनेवाला ६२ समानाधिक्यसे रहित
आदि और अन्तसे भी रहित, शुभ, तेजसे अत्यन्त अद्भुत, रम्य
नित्य और आनन्दका सागर है ६३ इसप्रकार के गुणोंसेयुक्त
विष्णुजी का परमपद है तिसको सूर्य्य चन्द्रमा और अग्नि नहीं
प्रकाश करसक्ते हैं ६४ जहां जाकर फिर नहीं लौटताहै सोई हरिजी
का परमधामहै सो विष्णुजीका परमधाम, शाश्वत, नित्य, अच्यु
और सैकड़ों करोड़ कल्पोंसे भी वर्णन करने को समर्थ कोई नहीं

दोसौअट्ठाइसका अध्याय॥

परम आकाश आदिका वर्णन॥

श्रीमहादेवजी बोले कि हे पार्वती! त्रिपाद्विभूतिके लोक अगणित कहे हुए हैं जो कि सब शुद्धसत्त्वमय, ब्रह्मानन्दसुखके नाम १ नित्य, निर्विकार, हेय राग आदिसे वर्जित, हिरण्मय, शुद्ध, करोड़ सूर्य के समान दीप्तिवाले २ वेदमय, दिव्य, काम और क्रोधसे वर्जित नारायणके चरणकमल की भक्तिरूप एकरससे सेवित ३ निरन्तर सामवेदके गानसे परिपूर्ण सुखको प्राप्त, पांचों उपनिषदों के स्वरूप, वेदके समान तेजवाले ४ वेदमय सुन्दर पुरुष और स्त्रियों से आच्छादित, वेद के एक रसरूप जल से युक्त तालाबों से शोभित ५ और वेदस्मृति पुराणादि रूप स्थावरों से संयुक्तहै लोकमें विस्तृत सबके वर्णन करने को मैं समर्थ नहीं हूं ६ विरजा और परम व्योम का केवल अन्तर कहाताहै यह स्थान अव्यक्त ब्रह्मसेवियों के भोगने योग्यहै ७ जो कि अपने आत्मानुभवसे उत्पन्न आनन्द सुख का देनेवाला, केवलपद, निश्श्रेयस निर्वाण, कैवल्य और मोक्षकहाता है ८ भगवान्के चरणों में भक्तिरूप सेवाके एकरस भोगसे तृप्तिको प्राप्त अल्प बुद्धिवाले सुखसे वर्जित मोक्षकी इच्छाकरते हैं महात्मा, महाभागवत, भगवान्के चरणसेवक ९ तिस विष्णुजी के परमधाम को प्राप्तहोते हैं जो कि ब्रह्मसुखका देनेवाला, अनेक प्रकारके देशों से आच्छादित, वैकुण्ठ, हरिजी का पद, १० रक्षवा, विमान और रत्नमय महलों से युक्त है तिसके बीच में सुन्दर नगरी है जो कि अयोध्या कहाती है ११ यह नगरी मणि, सोनाके चित्रों से युक्त रक्षवा और वन्दनवारों से आच्छादित, चारद्वारसे युक्त, रत्नके गोपुरों से आच्छादित १२ चण्डादिक और कुमुदआदिक द्वारपालों से रक्षितहै पूर्व के द्वारमें चण्ड और प्रचंड द्वारपालकहैं दक्षिणमें भद्र और सुभद्रक हैं १३ पश्चिम में जय और विजय हैं उत्तर में धातृ और विधातृ हैं कुमुद, कुमुदाक्ष, पुण्डरीक, वामन, १४ शंकुकर्ण, सर्वनेत्र, सुमुख और सुप्रतिष्ठित ये इसपुरी में दिशाओं

दोसौअट्ठाइसका अध्याय॥

परम आकाश आदिका वर्णन॥

श्रीमहादेवजी बोले कि हे पार्वती! त्रिपाद्विभूतिके लोक अगणित कहे हुए हैं जो कि सब शुद्धसत्वमय, ब्रह्मानन्दसुखके नाम १ नित्य, निर्विकार, हेय राग आदिसे वर्जित, हिरण्मय, शुद्ध, करोड़ सूर्य के समान दीप्तिवाले २ वेदमय, दिव्य, काम और क्रोधसे वर्जित नारायणके चरणकमल की भक्तिरूप एकरससे सेवित ३ निरन्तर सामवेदके गानसे परिपूर्ण सुखको प्राप्त, पांचों उपनिषदों के स्वरूप, वेदके समान तेजवाले ४ वेदमय सुन्दर पुरुष और स्त्रियों से आच्छादित, वेद के एक रसरूप जल से युक्त तालाओं से शोभित ५ और वेदस्मृति पुराणादि रूप स्थावरों से संयुक्तहै लोकमें विस्तृत सबके वर्णन करने को मैं समर्थ नहीं हूं ६ विरजा और परम व्योम का केवल अन्तर कहाताहै यह स्थान अव्यक्त ब्रह्मसेवियों के भोगने योग्यहै ७ जो कि अपने आत्मानुभवसे उत्पन्न आनन्द सुख का देनेवाला, केवलपद, निश्रेयस निर्वाण, कैवल्य और मोक्षकहाता है ८ भगवान्के चरणों में भक्तिरूप सेवाके एकरस भोगसे तृप्तिको प्राप्त अल्प बुद्धिवाले सुखसे वर्जित मोक्षकी इच्छाकरते हैं महात्मा महाभागवत, भगवान्के चरणसेवक ९ तिस विष्णुजी के परमधाम को प्राप्तहोते हैं जो कि ब्रह्मसुखका देनेवाला, अनेक प्रकारके देशों से आच्छादित, वैकुण्ठ, हरिजी का पद, १० रक्षवा, विमान और रत्नमय महलों से युक्त है तिसके बीच में सुन्दर नगरी है जो कि अयोध्या कहाती है ११ यह नगरी मणि, सोनाके चित्रों से युक्त रक्षवा और वन्दनवारों से आच्छादित, चारद्वारसे युक्त, रत्नके गोपुरों से आच्छादित १२ चण्डादिक और कुमुदआदिक द्वारपालों से रक्षितहै पूर्व के द्वारमें चण्ड और प्रचंड द्वारपालकहैं दक्षिण में भद्र और सुभद्रक हैं १३ पश्चिम में जय और विजय हैं उत्तर में धात और विधात हैं कुमुद, कुमुदाक्ष, पुण्डरीक, वामन, १४ शंकुकर्ण, सर्व्वनेत्र, सुमुख और सुप्रतिष्ठित ये इसपुरी में दिशाओं

के पति कहाते हैं १५ करोड़ अग्नि के सदृश घरकी पंक्तियों से आच्छादित और नवजवान सुन्दर स्त्री पुरुषों से युक्त १६ इसपुरी के बीच में भगवान् का मन्दिरहै जोकि मनोहर, मणियों के रकत्रों से युक्त, रत्नों के बन्दनवारों से शोभित १७ विमान मुख्यघर और बहुत महलों से युक्त, सुन्दर अप्सराओं के समूह और स्त्रियों से सब ओर अलंकृत है १८ बीच में सुन्दर मण्डपवाला बड़ा ऊंचा राजाका स्थान है वहं माणिक्य के हजार खम्भों से युक्त, रत्नमय, शुभ १९ सुन्दर मुक्तों से आच्छादित और सामवेदके गानसे शोभितहै बीचमें सिंहासनहै यह सुन्दर, सब वेदमय, शुभ २० धर्मादिक नित्य वेदमयात्मक देवों से युक्त, धर्म्म, ज्ञान, महाऐश्वर्य, वैराग्य ये पादविग्रह २१ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्व्वरूपोंसे क्रमसे नित्यही युक्त है शक्ति, आधारशक्ति, चिच्छक्ति और सदाशिवा २२ ये धर्म्मादिक देवताओंकी शक्तियां कहीगई हैं तहां पर अग्नि, सूर्य्य और चन्द्रमा बसतेहैं २३ कूर्म्म, नागराज, वैनतेय, त्रयीश्वर, छन्द और सबमंत्र पीठरूपके भावमें स्थित हैं २४ सर्वाक्षरमय, दिव्य, योगपीठ यह कहाहै तिसके बीच में अष्टदल कमल उदयके सूर्य्यकी समान दीप्तिवाला है २५ तिसके मध्य कर्णिका,सावित्री, शुभदर्शनमें ईश्वरीसमेत देवोंके स्वामी, परपुरुष बैठेहुए हैं २६ यह नीलकमलदलकेसमान श्याम, करोड़ सूर्य्य के तुल्य प्रकाशवान्, युवा, कुमार, स्निग्ध, कोमल अंगों से युक्त २७ फूले लालकमलके सदृश, कोमल कमलकेसमान चरणयुक्त, प्रबुद्ध, कमलनयन, सुन्दर दो भौंहरूप लता से चिह्नित २८ सुन्दर नाक, कपोल, कान और कमलके समान मुखसे युक्त, मोतियों के सदृश दांतोंसे युक्त, मुसिकानिसमेत मूंगे के समान ओष्ठोंवाले २९ पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान, सुन्दर मुसिकानियुक्त मुखकमल वाले, तरुण सूर्य्यके वर्ण समान कुण्डलोंसे विराजमान ३० सुन्दर चिकनी नील टेढ़ी कुन्तलों से शोभित, मन्दार और पारिजात से युक्त जूड़ा बनेहुए बालोंसेभी युक्त ३१ प्रातःकालके उदयहुए सूर्य के सदृश कौस्तुभमणि से शोभित, सोने के हारमें मालासे आसक्त

शंखके समान गर्दनसे युक्त, प्रकाशित ३२ सिंहके कांधे के समान ऊंचे मोटे कांधोंसे विराजित, मोटे गोल और लम्बे चारभुजाओंसे शोभित ३३ अंगूठी, वहूटा और केयूरसे मण्डित, वाल करोड़ सूर्य के समान दीप्तिवाले कौस्तुभमणि आदि सुन्दर गहनोंसे ३४ शोभित हृदय, वनमाला से विभूषित, ब्रह्मा के जन्मस्थान नाभिरूप कमलसे शोभित ३५ वाल घामके समान मनोहर पीले कपड़ों से युक्त, अनेक प्रकारके रत्नों से विचित्र चरणवाले, वहूटोंसे शोभित ३६ दीप्तिसमेत चन्द्रमाकेसमान नहँकी पंक्तिसे युक्त, करोड़ कामदेव के समान लावण्य और सुन्दरताकी निधि, अच्युत ३७ सुन्दर चन्दनसेलिप्त अंगवाले, सुन्दर मालासे विभूषित, शंख और चक्रको ग्रहण कियेहुई दो भुजाओंसे विराजित ३८ वरदान और अभय देनेवाले दो और भुजाओंसे भी विराजितहैं उनके बायें अंक में महालक्ष्मी,महेश्वरी देवीजी स्थितहैं ३९ यह सोनेके वर्णवाली, हरिणी, सोने और चांदीके माला धारेहुई, सब लक्षणोंसेयुक्त,युवावस्थाके प्रारम्भ की देहवाली ४० रत्नोंके कुण्डलोंसे युक्त, नीले और बांधेहुए बालोंसे युक्त,सुन्दर चन्दनसेलिप्त अंगवाली, सुन्दर फूलों से शोभित ४१ कल्पवृक्ष, केतकी और चमेली के फूलोंसे युक्त कुन्तलवाली, सुन्दर भौंहँ, नाक और करिहांववाली, मोटे और उन्नत स्तनोंसे युक्त ४२ पूर्ण चन्द्रमाके समान प्रकाशित, सुन्दर मुसिकानिसमेत मुख कमलवाली, तरुण सूर्य्य के वर्णवाले कुण्डलों से विराजित ४३ तपेहुए सोनेके समान वर्णवाली, तपेहुए सोनेके गहने पहनेहुई, चार हाथोंसे संयुक्त, सोने के कमलसे भूषित ४४ अनेक प्रकारके विचित्र रत्नों से युक्त, सोने की कमलमाला, हार, केयूर, वहूटा और अंगूठियों से शोभित ४५ दोनों भुजाओं में दो कमल धारण करने से शोभित, ग्रहण किये मातुलुंग और सोना हाथमें रखनेसे आश्रित हैं ४६ इसप्रकार नित्यही नाशरहित महालक्ष्मीजी के साथ शाश्वत, परम, आकाशमें महेश्वर प्रभुजी सदैव आनन्द करते हैं ४७ दोनों पार्श्वों में शुभ आसनपर धरणी और नीला बैठीहुई हैं आठों दिशाओं में दलोंके अग्रमें विमला आदिक

शक्तियां हैं ४८ विमला, उत्कर्षिणी, ज्ञाना, क्रिया, योगा, प्रह्वी, सत्या और ईशाना ये परमात्माकी शक्तियां हैं ४९ ये सब लक्षणों से सम्पन्न हुई चन्द्रमाके समान दीप्तिवाले सुन्दर चामरों को ग्रहणकर अच्युत पति को आनन्दित करती हैं ५० सुन्दर अप्सराओं के समूह और मन्दिरके बसनेवाली, सब गहनों से भूषित पांच सौ स्त्रियां ५१ कमल हाथमें लिये हुई, सब करोड़ अग्नि के समान दीप्तिवाली, सब लक्षणोंसेयुक्त, चन्द्रमाकेसमान मुखवाली हैं ५२ तिनसेयुक्त राजा, परमपुरुष शोभित हैं अनन्त विहगों के स्वामी सेनानी आदिक देवताओं के ईश्वर ५३ और नित्यही मुक्त अन्य परिजनों से युक्त भोग ऐश्वर्य्य में रत पुरुष भगवान् लक्ष्मी जी के संग आनन्द करते हैं ५४ हे शुभे! पार्वती! इस प्रकार वैकुण्ठनाथजी परमपद में शोभित होते हैं तिनके व्यूहभेद और लोकोंको कहता हूं ५५ वैकुण्ठलोक के पूर्व में वासुदेवजी का मन्दिर है आग्नेय में लक्ष्मीजी का लोकहै दक्षिण में बलदेवजी का स्थान है ५६ नैर्ऋत्य में सारस्वत का पश्चिम में प्रद्युम्नजी का वायव्य में रतिका उत्तर में अनिरुद्धजी का ५७ ईशान में शांतिलोक है यह प्रथम आवरण है भगवान् से आदि लेकर चौबीस ये लोक क्रमसे हैं ५८ वैकुण्ठ का शुभनाम द्वितीय आवरण कहाता है मत्स्य कूर्मादिलोक तीसरे शुभ आवरण कहाते हैं ५९ सत्य, अच्युत, अनंत, दुर्गा, विष्वक्सेन, गजानन, शंखपद्मनिधी लोक ये चौथे शुभआवरण कहाते हैं ६० ऋग्, यजुः, साम और अथर्ववेद ये महान् दिशाओंमें हैं सावित्री, गरुड़, धर्म और यज्ञके लोक ६१ ये नाशरहित सर्ववाङ्मय पंचमावरण कहाते हैं शंख, चक्र, गदा, पद्म, खड्ग, शार्ङ्ग हल ६२ और मौशलके लोक सब शस्त्र और अस्त्रों से संयुक्तहैं ये मन्त्रास्त्रमय, अक्षर षष्ठ आवरण कहाते हैं ६३ ऐन्द्र, पावक, यमराज, नैर्ऋत, वारुण, वायव्य, सौम्य, ऐशान ये मुनियों करके सप्तम आवरण कहाते हैं ६४ साध्य, मरुद्गण, विश्वेदेवा ये सब नित्य हैं और परधाम में बसते हैं और जो देवता हैं ६५ वे अनित्य हैं और इस प्राकृत लोक में वसकर इसीको स्वर्ग मानरहे हैं यह श्रुति है

६६ इसप्रकार का परंपद है तहांपर नित्य, मुक्त, भोगमें परायण, सुन्दर स्त्रियोंसे ईश्वर विभुजी प्रकाशित होते हैं ६७ सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि तिसको प्रकाशित नहीं करते हैं जहां जाकर व्रत करनेवाले योगीजन नहीं लौटते हैं ६८ जे परमपद में एक मंत्रनिष्ठ हैं वेही नाशरहित इसपदको प्राप्त होते हैं वेद, यज्ञ, पढ़ना, दान, व्रत उत्तम ६९ तपस्या, निराहार और साधन कर्म्मों से कुछ नहीं होताहै एकही परमपद मन्त्र तथा अनन्य भक्ति ७० और प्रपत्ति से सनातन, शाश्वत स्थान जाने योग्यहै पार्व्वतीजी बोलीं कि हे प्रभो! आपने परमस्वर्गकास्वरूप अच्छीतरहसे कहा ७१ भगवान् परमव्योम प्रकृतिमण्डल में नित्यहीं कैसे स्थित रहते हैं किस निमित्तसे और लीलासे क्या प्रयोजनहै ७२ शुद्धसत्वमय लोकमें प्रभु परमेश्वर रजोगुण और तमोगुण मिलीहुई विभूति से कैसे स्थित रहते हैं ७३ तब महादेवजी बोले कि त्रिपाद्विभूतिमें विभु, नित्यमुक्तही एक भोग्य, परमेश्वर ईश्वरी से निरन्तर आनन्दको प्राप्त होते हैं ७४ प्रकृति, संसारके आश्रयवाली महामाया हाथ जोड़कर तिन ईश्वर परमेश्वर की स्तुति करतीभई ७५ कि तीनों लोकके धाम, विश्वरूपी, पुराण, संसारकी उत्पत्तिके हेतु ७६ लक्ष्मी, पृथ्वी और लीलाके स्वामी, नारायण, भगवान्, वासुदेव, शार्ङ्गधनुषधारी ७७ सब देवों के स्वरूप, विष्णु, जिष्णु, सहस्रमूर्त्ति, अनन्त ७८ अच्युत, विकार, शुद्ध सतोगुणके स्वरूप, आदि, मध्य और अन्त के स्वरूप ७९ हिरण्यगर्भ, ज्ञान, परमात्मा, सब भूतोंकी आत्मा, सब प्राणियों के आश्रय ८० ब्रह्मा, ज्योतिः, विश्वरूपी, शुचिपद, हंस, परम ८१ संकर्षण, रुद्र, सब प्राणियों के धारणकरनेवाले, हयग्रीव, दीप्त, काल, हरि, यज्ञपुरुष, हव्यकव्यस्वरूपी ८२ प्रजापति, सूर्य, शुभ तेजवाले, अग्नि, हव्य के भोजन करनेवाले, यज्ञात्मा ८३ प्रसवित्, उत्पत्ति, पालन और नाशके हेतु, वेदान्तसे जानने योग्य, चार अपने स्वरूपवाले ८४ ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, त्रिगुण, उत्पत्ति, पालन और नाशके हेतु ८५ निर्गुण, सर्वात्मा, अन्तरवर्त्ती, अव्यक्त, विष्णु, लोकसाक्षी ८६ नारायण, लक्ष्मीकेस्वामी, पूर्णपाड़·

गुणयकी मूर्ति, अनन्तगुणोंसे पूर्ण, सब अर्थ के देनेवाले ८७ वासुदेव, पञ्चावस्थस्वरूपी, पञ्चनवव्यूह भेदरूप ८८ यज्ञवराह, गोविन्द, अविकार, शुद्ध, हेय प्रतिभट ८९ रामचन्द्र, कृष्ण, नरसिंह, केशव,संसारके क्लेश हरनेवाले भगवान् के नमस्कार हैं ९० आपही सब लोकों के आश्रय पुरुषोत्तम हैं हे देवदेवेश! सब लोकों के कल्याणके लिये प्रसन्न हूजिये ९१ हममें स्थित सब चेतन, निराधार, निराश्रय, हीनदेह, निराकार, सब इन्द्रियोंसे वर्जित ९२ सब अनुष्ठानरहित, निरन्तर दुःख भोगनेवाले हैं तिनको हे केशवजी! लोक और देह देनेके योग्यहैं ९३ हे सर्वज्ञ! पूर्वकी नाईं लीलाविभूतिको रचिये, चेतन, अचेतन सम्पूर्ण स्थावर जंगम संसारको ९४ हे परमेश्वरजी! लीलाके लिये मैंने मोहित कियाहै तिसको देखिये हे पुरुषोत्तमजी! मुझसहित होकर प्राकृतअण्डको रचिये ९५ धर्म अधर्म,सुख और दुःखको तिस जन्म मरणमें स्थापितकर हमको अधिष्ठानकर शीघ्रही लीला करनेके आपयोग्यहैं ९६ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तिस देवी मायाने भगवान्से जब इसप्रकार कहा तो परमेश्वरजी तिस मायामें प्रवेश कर संसार रचनेको प्रारम्भ करते भये ९७ जो यह प्रकृतिपुरुषहै सोई अच्युत और भगवान् विष्णुजी कहाते हैं सो प्रकृतिमें प्रवेश करजाते भये ९८ और प्रकृतिमें ब्रह्मभूत आदि महदाश्रयको रचते भये इस महत् पुरुषसे अहंकार उत्पन्न हुआ ९९ तिस अहङ्कारसे तीनों गुण हुए तीनों गुणोंसे भगवान् तन्मात्राको रचते भये १०० तन्मात्राओंसे तिसी क्षणमें महाभूत उत्पन्न किये त्रिगुणात्मा ब्रह्मासे पहले ॐकार उत्पन्न हुआ १०१ आकाशसे वायु उत्पन्न हुए वायुसे अग्नि हुई अग्निसे जल उत्पन्न हुआ और जलसे पृथ्वी उत्पन्नहुई १०२ आकाशआदिक भूत एकसौएक रचेगये हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ये तिसके गुणहैं १०३ एकसौएक गुणोंको रचकर महाप्रभुजी तिनको लेकर तिनको मिलाकर अत्यन्त बड़े जगदण्डको रचते भये तहां पर चौदहों लोकोंको रचकर १०४ पुरुषोत्तमजी तिनमें ब्रह्मा आदिक देवताओंको रचतेभये देवता, तिर्यक् तथा मनुष्य और स्था-

६६ इसप्रकार का परंपद है तहांपर नित्य, मुक्त, भोगमें परायण, सुन्दर स्त्रियोंसे ईश्वर विभुजी प्रकाशित होते हैं ६७ सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि तिसको प्रकाशित नहीं करते हैं जहां जाकर व्रत करनेवाले योगीजन नहीं लौटते हैं ६८ जे परमपद में एक मंत्रनिष्ठ हैं वेही नाशरहित इसपदको प्राप्त होते हैं वेद, यज्ञ, पढ़ना, दान, व्रत उत्तम ६९ तपस्या, निराहार और साधन कर्म्मों से कुछ नहीं होताहै एकही परमपद मन्त्र तथा अनन्य भक्ति ७० और प्रपत्ति से सनातन, शाश्वत स्थान जाने योग्यहै पार्व्वतीजी बोलीं कि हे प्रभो! आपने परमस्वर्गकास्वरूप अच्छीतरहसे कहा ७१ भगवान् परमव्योम प्रकृतिमण्डल में नित्यही कैसे स्थित रहते हैं किस निमित्तसे और लीलासे क्या प्रयोजनहै ७२ शुद्धसत्वमय लोकमें प्रभु परमेश्वर रजोगुण और तमोगुण मिलीहुई विभूति से कैसे स्थित रहते हैं ७३ तब महादेवजी बोले कि त्रिपाद्विभूतिमें विभु, नित्यमुक्तही एक भोग्य, परमेश्वर ईश्वरी से निरन्तर आनन्दको प्राप्त होते हैं ७४ प्रकृति, संसारके आश्रयवाली महामाया हाथ जोड़कर तिन ईश्वर परमेश्वर की स्तुति करतीभई ७५ कि तीनों लोकके धाम, विश्वरूपी, पुराण, संसारकी उत्पत्तिके हेतु ७६ लक्ष्मी, पृथ्वी और लीलाके स्वामी, नारायण, भगवान्, वासुदेव, शार्ङ्गधनुषधारी ७७ सब देवों के स्वरूप, विष्णु, जिष्णु, सहस्रमूर्त्ति, अनन्त ७८ अच्युत, बिकार, शुद्ध सतोगुणके स्वरूप, आदि, मध्य और अन्त के स्वरूप ७९ हिरण्यगर्भ, ज्ञान, परमात्मा, सब भूतोंकी आत्मा, सब प्राणियों के आश्रय ८० ब्रह्मा, ज्योतिः, विश्वरूपी, शुचिपद, हंस, परम ८१ संकर्षण, रुद्र, सब प्राणियोंके धारणकरनेवाले, हयग्रीव, दीप्त, काल, हरि, यज्ञपुरुष, हव्यकव्यस्वरूपी ८२ प्रजापति, सूर्य, शुभ तेजवाले, अग्नि, हव्य के भोजन करनेवाले, यज्ञात्मा ८३ प्रसवित्, उत्पत्ति, पालन और नाशके हेतु, वेदान्तसे जानने योग्य, चार अपने स्वरूपवाले ८४ ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, त्रिगुण, उत्पत्ति, पालन और नाशके हेतु ८५ निर्गुण, सर्वात्मा, अन्तरवर्त्ती, ... क्त, विष्णु, लोकसाक्षी ८६ नारायण, लक्ष्मीकेस्वामी, पूर्णपाड़

गुण्यकी मूर्ति, अनन्तगुणोंसे पूर्ण, सब अर्थ के देनेवाले ८७ वासुदेव, पञ्चावस्थस्वरूपी, पञ्चनवव्यूह भेदरूप ८८ यज्ञवराह, गोविन्द, अविकार, शुद्ध, हेय प्रतिभट ८९ रामचन्द्र, कृष्ण, नरसिंह, केशव, संसारके क्लेश हरनेवाले भगवान् के नमस्कार हैं ९० आपही सब लोकों के आश्रय पुरुषोत्तम हैं हे देवदेवेश! सब लोकों के कल्याणके लिये प्रसन्न हूजिये ९१ हममें स्थित सब चेतन, निराधार, निराश्रय, हीनदेह, निराकार, सब इन्द्रियोंसे वर्जित ९२ सब अनुष्ठानरहित, निरन्तर दुःख भोगनेवाले हैं तिनको हे केशवजी! लोक और देह देनेके योग्यहैं ९३ हे सर्वज्ञ! पूर्वकी नाईं लीलाविभूतिको रचिये, चेतन, अचेतन सम्पूर्ण स्थावर जंगम संसारको ९४ हे परमेश्वरजी! लीलाके लिये मैंने मोहित कियाहै तिसको देखिये हे पुरुषोत्तमजी! मुझसहित होकर प्राकृतअण्डको रचिये ९५ धर्म अधर्म, सुख और दुःखको तिस जन्म मरणमें स्थापितकर हमको अधिष्ठानकर शीघ्रही लीला करनेके आपयोग्यहैं ९६ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तिस देवी मायाने भगवान्से जब इसप्रकार कहा तो परमेश्वरजी तिस मायामें प्रवेश कर संसार रचनेको प्रारम्भ करते भये ९७ जो यह प्रकृतिपुरुषहै सोई अच्युत और भगवान् विष्णुजी कहाते हैं सो प्रकृतिमें प्रवेश करजाते भये ९८ और प्रकृतिमें ब्रह्मभूत आदि महदाश्रयको रचते भये इस महत् पुरुषसे अहंकार उत्पन्न हुआ ९९ तिस अहङ्कारसे तीनों गुण हुए तीनों गुणोंसे भगवान् तन्मात्राको रचते भये १०० तन्मात्राओंसे तिसी क्षणमें महाभूत उत्पन्न किये त्रिगुणात्मा ब्रह्मासे पहले ॐकार उत्पन्न हुआ १०१ आकाशसे वायु उत्पन्न हुए वायुसे अग्नि हुई अग्निसे जल उत्पन्न हुआ और जलसे पृथ्वी उत्पन्नहुई १०२ आकाशआदिक भूत एकसौएक रचेगये हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ये तिसके गुणहैं १०३ एकसौएक गुणोंको रचकर महाप्रभुजी तिनको लेकर तिनको मिलाकर अत्यन्त बड़े जगदण्डको रचते भये तहां पर चौदहों लोकोंको रचकर १०४ पुरुषोत्तमजी तिनमें ब्रह्मा आदिक देवताओंको रचतेभये देवता, तिर्यक् तथा मनुष्य और स्था-

वरोंको रचते भये १०५ तैसेही तिन्होंने महासर्गको रचा तहांपर कर्मके अनुरूप देवतादिक योनियोंमें १०६ अपनी प्रकृतिमें स्थित होकर उत्पन्न होते हैं १०७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेपरमव्योमादिवर्णनन्नामाष्टाविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२८॥

दोसौउनतीसका अध्याय॥

विष्णुव्यूहभेदवर्णन॥

पार्वती जी बोलीं कि हे महादेवजी! अत्युत्तम देवसृष्टिको विस्तारसे हमसे कहिये सनातन ब्रह्मादिक श्रेष्ठदेवता कैसे उत्पन्नहुए हैं और ईश्वरके अवतारों को भी विस्तार से मुझसे कहिये १ तवमहादेवजी बोले कि हे पार्वती! आकाश, वायु, तेज, जल और पृथिवी ये यथाक्रमसे रचे गये तिनके बीचमें ब्रह्माजी अथाह जलवाले समुद्र को रचते भये २ इस एक समुद्र हुए जलमायाके बरगदके पत्ते में सबप्राणियों को लेकर भगवान् योगनिद्रा को प्राप्त होते भये ३ जब मधुसूदन जीके संसार रचनेकी कामना हुई तो योगनिद्रा को प्राप्त होकर तिसमाया से बहुत काल रमणकर ४ तिसमें अत्युत्तम कालात्मा को उत्पन्नकर कला काष्ठा, पक्ष और महीनों कोभी उत्पन्न करते भये ५ तिस कालमें भगवान् की नाभिकमल, कर्त्ताके आकार, सबसंसार का बीज और अच्छे तेजवाला ६ हुआ तिस नाभिके कमलसे महामति ब्रह्माजी उत्पन्न हुए और रजोगुणसे प्रेरित होकर ब्रह्माजी योगनिद्रामें सोते हुए परमेश्वरजीकी स्तुति करतेभये ७ कि विष्णु, संसारकी उत्पत्ति, पालन और नाशकेहेतु, जगद्भूषणभूषित, श्रीमान्, विश्वरूपी ८ ब्रह्मण्यदेव, गऊ और ब्राह्मणके हितकारी, संसारके कल्याणकर्त्ता कृष्ण, गोविन्द ९ प्रधान कालरूप, पुरुष, ईश्वर, प्रपंचरूप, निष्प्रपंचस्वरूपी १० नारायण, विश्व, विश्वेश, लक्ष्मी, पृथ्वी और नीलाके स्वामी, ब्रह्म, परमात्मा ११ वासुदेव, विश्वरूप, शार्ङ्गधनुषधारी त्रयीनाथ, हरि, विश्वनाथस्वरूपी १२ अपार कल्याणकारी गुणोंसे परिपूर्ण आप के नमस्कार हैं संसारमय आपके सोजानेमें सब संसार सोजाताहै १३

हे संसारके नाथ! प्रपंचमें सचराचर सबव्याप्तहे आपही कारण, कर्ता, कार्य, त्रिगुणसे उत्पन्न १४ संसार रचनेवाले, ध्यान करनेवाले और विधाताहैं शुद्ध सतोगुण में स्थितहोकर जागते हैं हे प्रभुजी! आप के निद्रा कहां है और हे देव! आपमें समाधिमें स्थित सनातन लोक स्थितहैं १५ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ब्रह्माजीने जब हृषीकेश परमेश्वरजी से इसप्रकार कहा तो योगनिद्रा से विमुक्त होकर भगवान् तिस शय्यासे उठे १६ और तिस योगनिद्रा को छोड़तेही संसार रचनेका प्रारंभ करतेभये अचिन्त्य, देव, संसारके प्रभु, अच्युत, पुरुष भगवान् तिसक्षणसे चिन्तनाकर सब संसार रचतेभये सबलोक, जलमें प्राप्त हिरण्मय अण्ड १७।१८ समुद्रपर्यन्त, पृथ्वी और पहाड़ोंसे युक्त सातों द्वीप इनको प्रभुजी अण्डकटाहसमेत नाभिकमल में उत्पन्न करतेभये १९ और ईश्वर हरिजी तिस अंड के मध्य में स्थान करतेभये तदनन्तर ब्रह्माजी अध्यात्मचित्त से नारायणजीको ध्यान करतेभये २० तब तो ध्यानके अन्तमें उनके मस्तकसे पसीने का बूंद उत्पन्नहुआ और बुल्लेके आकार यह बूंद तिसीक्षणमें पृथ्वी में गिरपड़ा २१ हे पार्वती! तिसबुल्लेसे तीननेत्र, त्रिशूल हाथमें लिये, जटाओं के मुकुटसे शोभित होकर मैं उत्पन्न हुआ २२ और नम्रता से युक्त होकर देवेशजी से यह बोला कि मैं क्या करूं तब आनन्दयुक्त नारायण देव हमसे बोले २३ कि हे रुद्र! आप संसारके भीमदर्शन संहार के करनेवाले साक्षात् संकर्षणके अंशसे नाशही के लियेहुएहैं २४ हे पार्वती! तिस नारायण से भयंकर मैं उत्पन्न हुआहूं मुझको संहारमें युक्तकर फिर जनार्दनजी २५ नेत्रों से अन्धकारके नाशकरनेवाले चन्द्रमा और सूर्य्य को रचते भये कानोंसेवायु और दिशाओंको मुखसे इन्द्र और अग्निको २६ नासिकासे वरुण और मित्रको भुजाओंसे साध्य और मरुद्गणों समेत सब देवताओं को २७ सब रोमों से रत्न और औषधों को त्वचासे पहाड़, समुद्र और गऊआदिक पशुओं को २८ मुखसे ब्राह्मण भुजाओं से क्षत्रिय जंघा से वैश्य और पांव से शूद्रों को उत्पन्न करते भये २९ इसप्रकार देवेशजी जिस के अन्तर में

स्थित हैं तिस विश्वरूप से अचेतन, स्थित सब संसार को रचते भये ३० भगवान् की शक्तिके विना जिससे उन्मेष नहीं विद्यमान होता तिससे सब संसारका प्राण सनातन विष्णुजीहीहैं ३१ सोई परमात्मा अव्यक्तरूप होकर स्थित हैं और ब्रह्माजी सृष्टि, पालन और संहारको आपही करते हैं ३२ यह वासुदेव सनातन छःगुणों से परिपूर्ण हैं त्रिगुण से अपने रूपको संसार में चार प्रकारका करतेहैं ३३ प्रद्युम्नमूर्ति भगवान् सब ऐश्वर्य से युक्त, ब्रह्मा, प्रजापति, काल और जनके ३४ अन्तर्यामी भावको प्राप्त होकर अच्छी तरहसे सृष्टि करते हैं तिस महात्मा को भगवान् इतिहासोंसमेत वेदोंको देतेभये ३५ प्रद्युम्नजी के अंशभाग लोकके पितामह यह ब्रह्माजी हैं अंशसे उत्पन्न होकर यही संसार की उत्पत्ति और पालन सब करते हैं ३६ शक्ति तेजसे युक्त अनिरुद्ध भगवान्, मनु, राजा, काल और जनके ३७ अन्तर्यामीभावमें स्थित होकर पालन करतेहैं विद्या और बलसेयुक्त महाविष्णु बलदेवजी ३८ काल सब प्राणी, महादेव और यमराज के अन्तर्यामी भाव में स्थित होकर संसारको प्रभुजी संहार कर देते हैं ३९ ये अन्तर्यामी अवस्थामें आत्माका अन्तर्यामी भावहै मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह वामन ४० परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्की ये दश ब्रह्म परमात्मा की विभवावस्था हैं ४१ नृसिंह, राम और कृष्णजीमें छः गुण परिपूरित हैं देवजी की परावस्था दीप से उत्पन्न दीपही की नाईं है ४२ हे शुभे! पार्वती! इन भगवान् की अवस्था सुनो वैकुण्ठलोक सबसे उत्तम विष्णुजीका लोकहै ४३ उत्तम क्षीरसागर श्वेतद्वीप का स्वरूप है इसप्रकार महर्षियोंने चार प्रकारका व्यूह कहाहै ४४ जलके आवरण के बीचमें वैकुण्ठ है यह कारण, शुभ, करोड़ अग्निकेसमान, सब धर्मवान्, नाशरहित ४५ आमोद, कल्पवृक्ष और करनामवृक्ष और अग्नियों से युक्त, अनेक प्रकारके मणिमय, सुन्दर, करोड़ विमानों से युक्त ४६ और जो परमधाम कहाहै तिसीके से लक्षणों से स्थितहै तिस अनेक प्रकार के रत्नों उज्ज्वल वैकुण्ठनगर ४७ के बीच में देवजयनाम बगीचा औ

सबसे उत्तमपुर है यह चारद्वारों से युक्त, सोने के खांवां और बन्द-नवारोंसेयुक्त है ४८ चण्डआदिक और कुमुदआदिक द्वारपालोंसे रक्षित, और अनेक प्रकारके मणिमय सुन्दर स्थानों की पंक्तियों से आच्छादित ४९ चारोंओर पांचपद्म योजन से विस्तृत, हजारयो-जन ऊंचे करोड़ महलों से युक्त ५० सुन्दर नवजवान पुरुष और स्त्रियोंसे शोभित है इसमें स्त्री और पुरुष सब लक्षणों से शोभित ५१ समानरूप, श्रीविष्णुजीके सबगहनों से भूषित, सुन्दर माला और कपड़ोंसे आच्छादित, सुन्दर चन्दन से भूषित हैं ५२ देवेश की भक्तिसे आत्ममनोरम में आनन्द करते हैं अष्टाक्षरमन्त्र सिद्ध कियेहुये, सोलहरूपवाली भक्तिसे युक्त होकर मनोवांछित देनेवाले पदमें प्रवेशकर आनन्द करते हैं और विष्णुजी के साथ स्थितहो-कर इसपद में जाकर फिर नहीं लौटते हैं ५३। ५४ और आत्मा से अविच्छिन्न, शुभ, विष्णुजी के साथ वे बुद्धिमान् भगवान्ही के समान सुख को नित्यही प्राप्त होते हैं ५५ फिर शुभचित्तवाले वे भगवान् के लोकों में प्रवेशकर फिर स्वर्गमें स्थित प्राणियोंकीनाईं फिर स्वर्ग को प्राप्त होते हैं ५६ जैसे लक्ष्मण और भरत और ब-लदेवजी आदिक हैं तैसेही वेभी इच्छापूर्वक सत्यलोक में उत्पन्न होतेहैं ५७ फिर तिसीसे तिसपद, शाश्वत, पर को जाते हैं वैष्णवों का कर्म्मबन्धन, जन्म नहीं होता है ५८ बुद्धिमान् लोग विष्णुजी के दासभाव होनेकोही मोक्ष कहते हैं उनकी दास्य बन्धन नहीं कहाती है ५९ भगवान् के दास सब बन्धनों से छूटेहुए, निर्मुक्त, रोगरहित, पुनरावृत्ति के लक्षणवाले, ब्रह्मा के लोक से लेकर सब लोकों में रहनेवाले ६० कर्म्मबन्धमय, दुःख मित्रासख्य भय के देनेवाले, बहुत परिश्रम के फलवाले, जन्म के नाश करनेवाले हेतु होतेहैं ६१ जो मनुष्यों को सुख भोग है वह विष मिलेहुए भो-जनकी नाईं है देवता क्षीणकर्म्म में स्वर्ग में स्थित मनुष्योंको दे-खकर ६२ क्रोधयुक्त होकर कार्य्यबन्धनवाले जन्म मरण में गिरा देतेहैं तिससे बहुधा परिश्रम से सिद्धवाले, अनित्य, कुटिल, दुःख मिलेहुए स्वर्ग के सुखको योगी त्यागदेवे नित्यही सब दुःखसमूहों

के नाश करनेवाले विष्णुजी को स्मरणकरै ६३।६४ नामही के उ-च्चारण करने से परमपद को प्राप्तहोते हैं तिससे बुद्धिमान् वैष्णव लोककी इच्छाकरै ६५ अनन्यभक्ति से करुणाके समुद्र देवजी को भजै तो वहसब ज्ञान और गुणयुक्त मनुष्य निस्सन्देह रक्षाकरता है ६६ तिससे अत्यन्त सुख देनेवाले, शुभअष्टाक्षर मंत्रको जपकर श्रेष्ठ, सबकामना देनेवाले वैष्णव लोकको प्राप्तहोवे ६७ तिसमणि-मय खम्भ लगेहुए, हज़ार सूर्य कीसी किरणोंवाले, शुभ, सुन्दर वि-मानमें स्थितहोकर हरि भगवान् शोभितहुए ६८ तहां आधारशक्ति आदिसे धारण कियेगये, सुवर्णके पीठवाले, अनेक रत्नमय, सुन्दर, अनेकवर्णयुक्त ६९ तिस अष्टदलकमल, मंत्राक्षरपद, शुभ, सुन्दर कर्णिका, लक्ष्मीबीज शुभाक्षर ७० तिसबाल हज़ारकरोड़ सूर्यके समान दीप्तिवाले, दिव्य कमलके आसनमें बैठेहुए श्रीमान् नारा-यणजी हैं ७१ तिनके दहिने किनारे हिरण्मयी, सुन्दरमाला और गहने पहनेहुई संसारकीमाता लक्ष्मीजी सुन्दर चामरोंको ग्रहणकर ७२ वसुपात्र, मातुलुंग और सोने के कमल को धारण कियेहुई हैं और बाईंओर पृथ्वी देवी नीलकमलके दलके समान दीप्तिवाली ७३ अनेक गहनेसंयुक्त, विचित्र कपड़ोंसे भूषितहैं यह ऊर्ध्वभुजाओं से सुन्दर दो लालकमल धारणकिये ७४ और दो शेषभुजाओं से लक्ष्मीजीके दो धान्यके पात्र ग्रहणकियेहुई हैं और विमल आदिक शक्तियां सुंदर चामरोंको ग्रहणकर ७५ सर्वलक्षणोंसे शोभितहोकर दलके अग्रोंमें बैठीहुई हैं तिनके बीचमें भगवान् अच्युत हरिजी बैठे हुएहैं ७६ जोकि शंख, चक्र, गदा और कमल हाथमें लियेहुए, के-यूर, बहूटा और हार आदिक गहनोंसे शोभित ७७ प्रातःकाल के उदयहुए सूर्यके समान कुण्डलोंसे विराजित, पहले कहेहुए, नित्य, देवताओं से सेवित परमेश्वरजी ७८ भोगयुक्त होकर नित्य, सत्य वैकुण्ठ नगरमें रहते हैं श्रीमत् अष्टाक्षरमन्त्र जपनेवाले बुद्धिमान सिद्धोंको ७९ वैष्णवलोक जाने योग्यहै औरोंको नहीं है हे पार्वती! इसप्रकार पहला व्यूह कहा ८० अब दूसरे वैष्णवलोकको कहताहूं सुनिये जो यह नित्य, लोकोंमें श्रेष्ठ, वैष्णवलोक कहाताहै ८१ वह

लोक, सुन्दर, पुण्यकारी, शुद्ध, सत्वमय, शुभ, मध्याह्नके हज़ारसूर्यों के समान प्रकाशित ८२ अत्यन्त भारी है और कल्पके अन्तमें भी लीन नहींहोताहै में और ब्रह्मा आदिक देवताओं की भी देखने में सामर्थ्य नहीं है ८३ चारोंओर कल्पवृक्षके वनोंसे सबलोक परिपूर्ण है अमृतके समान जलसे परिपूर्ण बावलियोंसेयुक्तहै ८४ सोना और रत्नमय सुन्दर कमलोंसे शोभितहै प्रकाशित अग्निके सदृश सुन्दर करोड़ों भूषणों से युक्तहै ८५ निरन्तर सामवेद और कोकिला के शब्द, सुगन्धित पेड़ और फूलोंसे शोभितहै ८६ सबलक्षण और शोभासेयुक्त, सुन्दर गहने धारण कियेहुए, पन्द्रहवर्ष के पुरुष और सुन्दर स्त्रियोंसेयुक्तहै ८७ तहां सुन्दरदेशों में प्रसन्न, पतियोंसमेत स्त्रियां भगवान्को पूजती हैं ८८ तिनके प्रसादसे प्राप्त सुखको सदैव भोगती हैं और परमानन्द, महान् कृष्णजीके चरित्रकोगातीहैं ८९ कमलनयनी, कमल हाथमें लियेहुई, लक्ष्मीजीके समान, शुभ, सुन्दर माला और वस्त्रोंसेयुक्त स्त्रियां क्रीड़ा करती हैं ९० शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करनेवाले, गहनों से भूषित, माला और पीताम्बर धारेहुए पुरुष वहांपर स्थितहैं ९१ तहांपर क्रीड़ाकरतेहुए स्त्रीपुरुषोंके परस्पर छूनेसे प्रतिदिन हरिभक्तिका सुखरूप रसबढ़ताहै ९२ तिसके बीचमें वासुदेवजीका सुन्दर मंदिर शोभितहै यह चन्दन, अगुरु, कपूर और कुंकुमके जलसे युक्त, अनेकप्रकारके पुष्प विमानादिकों से सब्र और अलंकृतहै तिसके बीचमें कल्पवृक्षकी छायामें कमलासन पर ९३।९४ विचित्र मनोहरशय्या शुभ बिछौनोंसे युक्त, सुन्दर सुगंध और शोभासेयुक्त अनेक प्रकारके फूलों के परिच्छदों से भी युक्तहै ९५ तिस मनोरम सुन्दर शय्यामें ईश्वरी लक्ष्मीजी समेत देवेश वासुदेव, सनातन बैठेहुएहैं ९६ यह करोड़ चन्द्रमाके समान प्रकाशित, सुन्दर गहनों से भूषित, सोनेके समान सुन्दर दो मनोहर नासिकों से शोभित मुखवाले ९७ चिकने, विस्तारयुक्त अच्छी लावण्यवाले कपोलों से विराजित, नीले कुंचितबालोंसे युक्त, लाल कमलदलके समान नेत्रोंवाले ९८ कल्पवृक्ष, केतकी, चमेली के मस्तकमें फूल धारेहुए चिकने, कुँदुरूके फलकी दीप्तिके समान ओष्ठोंवाले,

कान्ति युक्त मुख कमलके तुल्य ९९ बड़े मोलकी मोतीकी दीप्ति के समान दांतोंकी पंक्तियों से प्रकाशित, हरिचन्दनसे लिप्त अंगवाले, कस्तूरीका तिलकधारे १०० ऊंचा कांधा और लम्बी चारभुजाओं से शोभित, जपाके फूलके सदृश हाथों से भी शोभित १०१ भृगु-लता कौस्तुभमणि और चौड़ी छाती से शोभित १०२ सुन्दर शोभा से युक्त मोतियों के सुन्दर मालाओं से अलंकृत, बाल सूर्यके समान दीप्तिवाले पीले कपड़ों से आच्छादित १०३ माणिक्यकी नूपुरों से युक्त कमलपत्रसे विराजित, विना कलङ्कवाले चन्द्रमाकी दीप्ति के सदृश दीप्तिवाली नहों की पंक्तिसे विराजित १०४ लाल कमल के समान चिकने सुन्दर चरण और कमलही के तुल्य हाथवाले, शंख और चक्रसे दोनोंभुजा विराजित १०५ और दो भुजोंसे लक्ष्मीजी की देहको अपनी छाती में आलिङ्गन करते हैं तब तो बिजलीसेयुक्त शित मेघकी नाईं प्रकाशित होते हैं १०६ यहांपर तपेहुए सोने के समान चिकने सुन्दर दो चरणवाले देवेश, वासुदेव सनातन क्रीड़ा करते हैं १०७ तपे हुए सोने के समान दीप्तिवाली, सब गहनों से भूषित, सुन्दर चिकनी नील टेढ़ी चन्द्ररावसे विराजित १०८ क-ल्पवृक्ष पारिजात आदि के सुन्दर फूलों से भी विराजित, कानों के गहनों की शोभासे युक्त, चिकुरान्तालिके सदृश १०९ मोटे, ऊंचे स्तनोंसे हरिजीकी छाती में पीड़ा देती हुई, केयूर, बहूटा और हार आदिक भूषणों से शोभित ११० नित्यही युवावस्थाको प्राप्त, सब लोकोंके स्वामीकी सुन्दरी तहांपर लोकोंके स्वामी पतिके साथ नि-रन्तर क्रीड़ा करती हैं १११ सोई वासुदेवजी सब प्राणियों के मन के हरनेवाले, मनुष्यों को सब कामना देनेवाले इससर्वलोकमें क्रीड़ा करते हैं ११२ और यहींपर लक्ष्मीजी की देह आठ शक्तियां चारों ओर स्थित रहती हैं रमा, रुक्मिणी, सीता, पद्मा, पद्मालया, शिवा, ११३ सुलक्षणा और सुशीला ये शक्तियोंके नामहैं ये रति कामकी देनेवाली हैं और शंख, चक्र, गदा, पद्म और शार्ङ्गधनुष आदिक ११४ जोकि पुष्कर के आकार हैं तिनसे चारोंओर तिस लोककी रक्षा करती हैं हे शुभदर्शनवाली पार्वती! इसप्रकार दूसरारूप अच्छी

तरहसे ११५ संक्षेपसे मैंने कहा है विस्तारसे नहीं कहसक्काहूं जे सुखनामवाले द्वादशाक्षर मन्त्रको जपते हैं ११६ ते निरन्तर शाश्वत, शुभ और नाशरहित लोकको प्राप्त होते हैं वेदके पढ़ने, यज्ञ, व्रत और उपवाससे ११७ वैष्णवलोक नहीं मिलताहै दासभावही से मिलताहै तिससे और में मन न लगाकर हरिकी भक्तिरूप दासभाव को भजै ११८ तो कर्म्मबन्धकी छुड़ानेवाली परमसिद्धि को प्राप्तहोवे इसप्रकार हे देवि पार्व्वती! दूसरा व्यूह मैंने कहा ११९ अब तीसरे श्रेष्ठ व्यूहको कहताहूं सुनिये हे महामते! जलके समुद्र के उत्तर किनारे श्वेतद्वीपमें १२० सनकादिक महात्मा योगियों के दर्शनकेलिये आगेकेलिखे देव बसतेथे सनक, सनन्द, सनातन १२१ सनत्कुमार, जात, वोढु और पञ्चशिख ये सात ब्रह्माजी के महातेजस्वी योगी पुत्रथे १२२ ये सब भोगों में विरक्त, शुद्ध, सदैव सत्वगुणी और भगवान् के दर्शन से उत्पन्न सुखरूप एकरस के सेवने वालेथे १२३ और नर नारायण आदिक जे श्वेतद्वीप में बसते हैं तिनके दर्शनके लिये श्रीभगवानूजी तहांपर रहते हैं १२४ करोड़ चन्द्रमाकी दीप्तिके समान अनेकप्रकारके रत्नमयसे उज्ज्वल, महायोगियों से सेवाको प्राप्त, भयसे रहित श्वेतद्वीपमें १२५ कल्पवृक्ष के समान सुन्दर बगीचे हैं यह कल्पवृक्ष और चन्दनके वृक्षोंसे अति शोभायमान १२६ फूले हुए कमल और अनेक प्रकार के जलाशयोंसे युक्त है तिसके बीच में शुभ, सुन्दर ऐरावती नाम नगरी है १२७ यह अनेकप्रकारके रत्नमय सुन्दर विमानोंसे शोभित, सुंदर स्त्री और पुरुषोंसे युक्त, बहुत महलोंसे व्याप्त १२८ तिसके बीचमें सुन्दर मन्दिरहै यह रत्नके वृक्षोंसे आकुल, बालसूर्यके सदृश ऊंचे बहुत महलों से युक्त है १२९ तिसके बीचमें सुन्दर मण्डप है यह मणि और सोनेसे शोभित, चन्दन, अगुरु, कपूर और केसरिके आमोदसे सुगन्धित १३० अनेकप्रकारकी फूलोंकी शोभासे युक्त चँदोवोंसे अलंकृत सुन्दर अप्सराओंसे व्याप्त, सामवेदके गानसे शोभित है १३१ तहांपर बीचमें सूर्य्य और अग्निकी दीप्ति के समान सिंहासन है तिसके बीचमें दूसरे चन्द्रमाके बिम्बकी नाईं अष्टदल

कान्ति युक्त मुख कमलके तुल्य ९९ बड़े मोलकी मोतीकी दीप्ति के समान दांतोंकी पंक्तियों से प्रकाशित, हरिचन्दनसे लिप्त अंगवाले, कस्तूरीका तिलकधारे १०० ऊंचा कांधा और लम्बी चारभुजाओं से शोभित, जपाके फूलके सदृश हाथों से भी शोभित १०१ भृगुलता कौस्तुभमणि और चौड़ी छाती से शोभित १०२ सुन्दर शोभा से युक्त मोतियों के सुन्दर मालाओं से अलंकृत, बाल सूर्यके समान दीप्तिवाले पीले कपड़ों से आच्छादित १०३ माणिक्यकी नूपुरों से युक्त कमलपत्रसे विराजित, विना कलङ्कवाले चन्द्रमाकी दीप्ति के सदृश दीप्तिवाली नहों की पंक्तिसे विराजित १०४ लाल कमल के समान चिकने सुन्दर चरण और कमलही के तुल्य हाथवाले, शंख और चक्रसे दोनोंभुजा विराजित १०५ और दो भुजोंसे लक्ष्मीजी की देहको अपनी छाती में आलिङ्गन करते हैं तब तो बिजलीसेयुक्त शित मेघकी नाईं प्रकाशित होते हैं १०६ यहांपर तपेहुए सोने के समान चिकने सुन्दर दो चरणवाले देवेश, वासुदेव सनातन क्रीड़ा करते हैं १०७ तपे हुए सोने के समान दीप्तिवाली, सब गहनों से भूषित, सुन्दर चिकनी नील टेढ़ी चन्द्रराविसे विराजित १०८ कल्पवृक्ष पारिजात आदि के सुन्दर फूलों से भी विराजित, कानें के गहनों की शोभासे युक्त, चिकुरान्तालिके सदृश १०९ मोटे, ऊंचे स्तनोंसे हरिजीकी छाती में पीड़ा देती हुई, केयूर, बहूटा और हार आदिक भूषणों से शोभित ११० नित्यही युवावस्थाको प्राप्त, सब लोकोंके स्वामीकी सुन्दरी तहांपर लोकोंके स्वामी पतिके साथ निरन्तर क्रीड़ा करती हैं १११ सोई वासुदेवजी सब प्राणियों के मन के हरनेवाले, मनुष्यों को सब कामना देनेवाले इससर्वलोकमें क्रीड़ा करते हैं ११२ और यहींपर लक्ष्मीजी की देह आठ शक्तियां चारों ओर स्थित रहती हैं रमा, रुक्मिणी, सीता, पद्मा, पद्मालया, शिवा, ११३ सुलक्षणा और सुशीला ये शक्तियोंके नामहैं ये रति कामकी देनेवाली हैं और शंख, चक्र, गदा, पद्म और शार्ङ्गधनुष आदिक ११४ जोकि पुष्कर के आकार हैं तिनसे चारोंओर तिस लोककी रक्षा करती हैं हे शुभदर्शनवाली पार्वती। इसप्रकार दूसरारूप अच्छी

तरहसे ११५ संक्षेपसे मैंने कहा है विस्तारसे नहीं कहसक्ताहूं जे सुखनामवाले द्वादशाक्षर मन्त्रको जपते हैं ११६ ते निरन्तर शाश्वत, शुभ और नाशरहित लोकको प्राप्त होतेहैं वेदके पढ़ने, यज्ञ, व्रत और उपवाससे ११७ वैष्णवलोक नहीं मिलताहै दासभावही से मिलताहै तिससे और में मन न लगाकर हरिकी भक्तिरूप दासभाव को भजै ११८ तौ कर्म्मबन्धकी छुड़ानेवाली परमसिद्धि को प्राप्तहोवै इसप्रकार हे देवि पार्व्वती! दूसरा व्यूह मैंने कहा ११९ अब तीसरे श्रेष्ठ व्यूहको कहताहूं सुनिये हे महामते! जलके समुद्र के उत्तर किनारे श्वेतद्वीपमें १२० सनकादिक महात्मा योगियों के दर्शनकेलिये आगेकेलिखे देव बसतेथे सनक, सनन्द, सनातन १२१ सनत्कुमार, जात, वोढु और पञ्चशिख ये सात ब्रह्माजी के महातेजस्वी योगी पुत्रथे १२२ ये सब भोगों में विरक्त, शुद्ध, सदैव सत्वगुणी और भगवान् के दर्शन से उत्पन्न सुखरूप एकरस के सेवने वालेथे १२३ और नर नारायण आदिक जे श्वेतद्वीप में बसते हैं तिनके दर्शनके लिये श्रीभगवान्‌जी तहांपर रहते हैं १२४ करोड़ चन्द्रमाकी दीप्तिके समान अनेकप्रकारके रत्नमयसे उज्ज्वल, महायोगियों से सेवाको प्राप्त, भयसे रहित श्वेतद्वीपमें १२५ कल्पवृक्ष के समान सुन्दर बगीचे हैं यह कल्पवृक्ष और चन्दनके वृक्षोंसे अति शोभायमान १२६ फूले हुए कमल और अनेक प्रकार के जलाशयोंसे युक्त है तिसके बीच में शुभ, सुन्दर ऐरावती नाम नगरी है १२७ यह अनेकप्रकारके रत्नमय सुन्दर विमानोंसे शोभित, सुंदर स्त्री और पुरुषोंसे युक्त, बहुत महलोंसे व्याप्त १२८ तिसके बीचमें सुन्दर मन्दिरहै यह रत्नके वृक्षोंसे आकुल, बालसूर्यके सदृश ऊंचे बहुत महलों से युक्त है १२९ तिसके बीचमें सुन्दर मण्डप है यह मणि और सोनेसे शोभित, चन्दन, अगुरु, कपूर और केसरिके आमोदसे सुगन्धित १३० अनेकप्रकारकी फूलोंकी शोभासे युक्त चँदोवोंसे अलंकृत सुन्दर अप्सराओंसे व्याप्त, सामवेदके गानसे शोभित है १३१ तहांपर बीचमें सूर्य्य और अग्निकी दीप्ति के समान सिंहासन है तिसके बीचमें दूसरे चन्द्रमाके बिम्बकी नाईं अष्टदल

कमलहै १३२ और तिसके बीच कर्णिकामें भगवान् बैठेहुएहैं ये शुद्ध सुवर्णकेसमान, मोतियोंके हारसे विभूषित १३३ शंख,चक्र,गदा,पद्म और शक्तिको चारों हाथोंमें धारे, हार, केयूर, बहूटा और अँगूठीसे शोभित १३४ सोनेके कमलके समान, दो चरणोंसे विराजित, कल्पवृक्षके सदृश सुन्दर नखकी पंक्तिसे विराजित १३५ सोलहवर्ष की अवस्थावाले, रूप और युवावस्थासे विराजित, सुन्दर माथेमें सुगन्धित केसरिसे १३६ रचेहुये ऊर्ध्वपुण्ड्र और सीमन्तसे शोभित, मथे हुए अमृतके फेनाकी दीप्तिके समान सफ़ेद कपड़ोंसे आच्छादित १३७ मोतियोंके सुन्दर कुण्डलोंसे विराजित, कमलके आसन पर बैठेहुए और संसारके मोहन करनेवाली देहसे युक्तहैं १३८ और बायें अंकमें सुन्दर स्वरूपवाली देवी लक्ष्मीजी स्थित हैं यह शील और सुन्दर गुण आदिकों से भगवान्ही के समान १३९ कमलकी किंजल्क के सदृश, युवावस्थाके आरंभसे शोभित, सब लक्षणों से युक्त, तपेहुए सोने के गहनेधारे १४० सुन्दरमाला और कपड़ों से युक्त, नीले कुंचित बालवाली, चारभुजोंसे विराजित,केयूर और बहूटासे भूषित १४१ मोतियों के हारोंसे विराजित, कल्पवृक्षके फूल से अंचित बालवाली,चिकनी नासिकाके पुटसेयुक्त, प्रकाशित दांतों से विराजित १४२ कस्तूरीके तिलकसेयुक्त, नासिकाके अग्रमें मोतियोंसे अंचित, सोने के घड़ेके समान मोटे और ऊंचे स्तनवाली १४३ सुन्दर केसरिसे लिप्त अंगोंवाली, कमलके मालासे शोभित, कपड़ेका पात्र, मातुलिङ्ग,दर्पण और सुवर्णका कमल १४४ इन सब को कमलरूपी हाथमें धारण करनेवाली देवी चित्तसे अभीष्टके देने वाली हैं भगवान्के चारोंओर उन्हींके समान ये शक्तियां हैं १४५ ईशावास्या, महादेवी, जाह्नवी, कमलालया, सावित्री, सर्वगा और पद्मा नामवाली हैं १४६। १४७ ये सबकार्य करनेवाली लक्ष्मीजी की दासी कहाती हैं और अनन्त और गरुड़ आदिक देवता नित्य के दासहैं १४८ साध्य और मरुद्गण देवता महल, विमान, वन और नगर में १४९ तिनके प्रसादसे प्राप्तहुए भोगों से अनुरञ्जितहुए, त्यागनेयोग्य निष्फलसे वर्जितहोकर सेवनकरते हैं और वह नित्य

देवी निरन्तर क्रीड़ाकरती हैं १५० जे विष्णुजीके मंत्रके जपनेवाले, नित्यही श्रद्धासेयुक्त और जे द्वादशी के व्रतमें युक्तहैं सोई नाशरहित तिसपदको प्राप्तहोते हैं १५१ हे पार्वती! वेद, दान, यज्ञ और व्रतोंसे सनातन विष्णुलोक नहीं प्राप्तहोसक्काहै १५२ मनुष्यों को अनन्यभक्ति से विष्णुपद प्राप्त होसक्काहै तिससे नित्यही भक्तिसे देव जनार्दनजी को पूजनकरै १५३ नाममात्रका कीर्तन और ध्यान कर सदैव मन्त्रकोजपै हवन और सबमें प्राप्त, सबकामना देनेवाले भगवान्का भक्तिसे तर्पणकरै १५४ हे सुन्दर करिहांववाली पार्वती! इसप्रकारसे परमात्माजीके तीसरेव्यूहका स्वरूप तुमसे पुराने आचार्योंकीनाईं कहा १५५ अब उत्तम चौथे व्यूहको कहताहूं देवताओंकी रक्षाकेलिये करोड़ चन्द्रमाकी दीप्तिकेसमान परमेश्वर इन्द्र से शोभित और इन्हींके यूथोंसे आच्छादित दूधके समुद्रमें १५६। १५७ विस्तारयुक्त शुभ, शेषजीकी शय्यामें सोतेहैं और पद्मनाभ, अच्युत, हरिजी सुन्दर आसनपर बैठते हैं १५८ यह नीलमेघ के सदृश, कमलपत्रकेसमान बड़े नेत्रवाले, करोड़सूर्य्यकेसदृश मुकुट से विराजित १५९ अनेकप्रकारके रत्नोंसेप्रकाशित सुन्दर कुण्डलों से भी विराजित, बाल सूर्य्यकेसमान दीप्तिवाले पीले कपड़े से आच्छादित १६० प्रकाशित लालकमल की दीप्तिकेसमान हाथ और चरणके तरवोंसे शोभित,हार,केयूर, बहूटा और अँगूठियोंसे विराजित १६१ शंख,चक्र,गदा,शार्ङ्ग धनुष और तलवार हाथमें रखने से विभूषित, सुन्दर फूल, फल और डालीसेयुक्त कल्पवृक्षोंसे विराजित १६२ संसारका जन्म मरण नाभि में कमलसे शोभित, हरिचन्दन से लिप्त अंगवाले, सब गहनों से भूषित १६३ कल्पवृक्ष पारिजात आदिके मनोरम सुन्दर फूलोंसे चिकने नीलटेढ़े कवरीकृत बालों से युक्त १६४ चिकनी, ऊंची, सुन्दरनाक, कांधा और दो गांठियोंसे विराजित, मणि, मूंगाकी शाखासेयुक्त चरणों में नूपुरों से विराजित १६५ विना कलंकके चन्द्रमा की दीप्तिके समान नहों की पंक्तिसे भी विराजित, अशोक के फूलकी दीप्तिके समान लाल ओठ और कमलकेसमान मुखवाले १६६ बड़ेमोल की मो-

तियोंकी दीप्तिसदृश दांतोंकी पंक्तियों से विराजित, सम्पूर्ण चंद्रमा के सदृश मुसिक्यानियुक्त मुखसेशोभित १६७ नवजवान, श्रीमान्, कोमल उज्ज्वल अंगयुक्त,सबलोकोंको शरणमें रखनेवाले,सबलोकों को फलके देनेवालेहैं १६८ रूप शील और गुणआदिकोंमें तिन्हीं के सदृश देवीजी हैं यह तपेहुए सोनेकेसदृश, तपेहुए सोनेके गहने धारे १६९ युवावस्था वाली, रूप लावण्य, कान्ति, शील और गुणों से युक्त, दूधके समुद्रके फेनाके सदृश शुभ कपड़ों से आच्छादित १७० कल्पवृक्ष, केतकी और चमेली के फूलोंसे पूजित बालवाली, कस्तूरी के तिलक से युक्त, रत्नोंके सीमंतसे शोभित १७१ अनेक वर्णकी शोभासे युक्त, कर्णभूषणों से भूषित, मूंगे के समान दीप्तिवाले रत्नधारसे विस्मययुक्त १७२ मतवाले भँवरोंके सदृश चिकनी अलकोंसे विराजित, सूक्ष्म करिहांववाली, सुन्दर नेत्रयुक्त, मोटे और ऊंचे स्तनवाली १७३ चारहाथोंसे विराजित, सब गहनोंसे भूषित, दो भुजाओंसे शुभ, सोनेके दोकमलोंको धारे १७४ और दोभुजाओंसे अपने स्वामीको अच्छीतरह आलिंगनकर स्थितहैं निरन्तर कटाक्षोंसे देवताओंको देखनेवाली हैं १७५ हे पार्वती ! तिनदेवी के निरन्तर देखेहुए देवतालोग धन्यहैं तहांपर विमानों में स्थित देवता, सिद्ध, चारण, किन्नर १७६ आनन्दके आंशुओंसेयुक्त निरन्तर देवीजी को गान करते हैं दैत्यों से बाध्यमान, ब्रह्मा रुद्रआदिक देवताओं से १७७ स्तुति कियेहुए भगवान् देवताओं को अभय देतेभये देवताओं को अभय देकर सबदेवों के ईश्वर हरिजी १७८ संसारकी रक्षाकेलिये राक्षसों के मारनेका प्रारम्भ करतेभये हे पापरहित ! श्रेष्ठ मुखवाली पार्वती ! इसप्रकार से भगवान् का चौथा व्यूहकहा १७९ अब कथा सुननेकी तुम्हारे इच्छाहै तिसको कहूंगा क्योंकि तुमधन्य, कृत्यकृत्य और पुरुषोत्तमजीकी भक्तहो १८० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेविष्णुव्यूहभेदवर्णननामैकोनत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २२९ ॥

दोसौतीसका अध्याय ॥

मत्स्य अवतार लेकर समुद्रसे राक्षसको मारकर वेदोंका लाना ॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे भगवन् महादेवजी! जहांपर देवोंके स्वामी मधुसूदनजी राक्षसों को मारतेभये सो किसरूपसे उन्होंने राक्षसों को मारा यह आप यथावत् कहनेके योग्यहैं १ हे महेश्वरजी! भगवान् का वैभव मत्स्य कूर्म आदिरूप धारणकरना हमारी प्रीतिसे विस्तारसे कहिये २ तब महादेवजी बोले कि हे देवि! भगवान् के मत्स्यकूर्मादि अवतारों के वैभव को कहताहूं तुम स्वस्थमन होकर सुनो ३ जैसे दीपकसे दीपक वैसाही उत्पन्न होजाताहै तैसेही भगवान् की परावस्था व्यूहसहित और विभवआदिक होजाते हैं ४ अनेक आकारके शुभ देवताओं के अवतार देवपरमात्माजी के अर्चावतार और वैभव कहेगये हैं ५ परमउत्साहयुक्त सम्राट्ब्रह्माजी प्राजापत्यसे भृगु, मरीचि, अत्रि, दक्ष, कर्दम ६ पुलस्त्य, पुलह, गिरिश और क्रतु इननव प्रजाओंके पतियोंको क्रमसे उत्पन्न करतेभये ७ मरीचिभगवान् कश्यपजीको उत्पन्न करतेभये इनकश्यपजी की चार स्त्रियां होतीभई ८ अदिति, दिति, कद्रु और विनता जिनके नामहुए अदितिजी शुभदर्शनवाले देवताओं को उत्पन्न करतीभई ९ और दितिजी तामस, महाअसुर पुत्रोंको उत्पन्न करतीभई शंखक, हयग्रीव, महाबलवान् हिरण्याक्ष १० हिरण्यकशिपु, जम्भ और मयआदिक महातपस्वी हुए महापराक्रमी मकर ब्रह्मलोकको प्राप्त होगया ११ और वहांपर ब्रह्माजी को मोहितकर वेदोंको ग्रहणकर वेदको ग्रसकर महासमुद्रमें प्रवेशकरगया १२ तब सबसंसार शून्य होगया और धर्म्मसंकट होनेलगा वर्णआश्रम से वर्जित वषट्कार नहीं पढ़ाजानेलगा १३ तदनन्तर प्रजापति देव सबगणों से युक्त होकर दूधके समुद्रमें जाकर भगवान्की शरणमेंहोकर उनकी स्तुति करतेभये १४ कि हे देव! हे नाथ! हे नागकी शय्यामें स्थित! हे सब के स्वामी! हे सबदेवोंकी आत्मा! हे सर्ववेदमय! हे अच्युत! आप मेरे ऊपर प्रसन्न हूजिये १५ पहले संसाररूप वृक्षका बीज, म

बढ़ानेवाला जल और अन्तमें कुल्हाड़ीरूप नाथ स्वेच्छाचार आपहीहैं १६ आपही चिद्रूप सनातन सब संसारको धारण करतेहैं और अव्यक्त, प्राणियों की आदि, प्रधानपुरुष, नाशरहित १७ संसारके आदि, मध्य और अन्तकी देह, परमेश्वर, सब लोकोंके आश्रय, पुरुषोत्तम १८ प्राणियोंकी आदि, महद्भूत, प्राणियोंके समूहके कारण, कारणको आश्रितकर रमनेवाले, धाम, आत्मवान् १९ आदिभूत, अन्त, सबमें प्राप्त महान्वायु, आदि, अनादि, अग्नि, तेजों की निधि २० सबसंसारका जीवन जल, परमेश्वर, भूमि, संसारका आधार, पर्वत २१ नदियां, समुद्र, सबके आदि, देवर्षि और सब प्राणी आपही हैं २२ आपहीसे प्रेरित मनुष्य साधु और असाधुओं में चेष्टाकरतेहैं दैत्यसे उपद्रुत वेद महासमुद्रमें प्रवेश करगयेहैं२३ और यह सब स्थावरजंगम संसार वेदहीके आधारहै सब धर्मोंकी स्थिति वेदही हैं २४ वेदोंमें सब देवताओंकी नित्य तृप्तिहोती है तिससे हे केशवजी! वेदोंके लानेके आपही योग्यहैं २५ श्रीमहादेवजी बोले कि हे पार्वती! ब्रह्माजी ने हृषीकेश परमेश्वरजीसे जब इसप्रकार कहा तो भगवान् मछलीका रूप धारणकर महासमुद्रमें प्रवेश करगये २६ और देवताओं से पूजित उन्हों ने मछलीके रूपही में स्थितहोकर महाघोर दैत्य को तुण्डके अग्रसे फारडाला २७ फिर महादीप्तिवान् भगवान् तिसको मारकर साङ्गोपाङ्गयुक्त सब वेदों को लेकर ब्रह्माजी को देतेभये २८ परस्पर मिलेहुए, तिस राक्षस से ग्रसेहुए और तिन्बुद्धिमान् व्यासरूपसे प्रकट कियेहुए वेद२९ व्यासही महात्मा ने सब अलग अलग करडाले इसप्रकार मत्स्य अवतारसे सब देवता रक्षा कियेगये ३० भगवान् तीनोंलोकों को वेदके दानसे आतंकरहितकर देवता और सिद्धोंके समूहोंसे स्तुति को प्राप्त और योगियों से पूजित चरण होकर अन्तर्द्धान होजाते भये वासुदेवही भगवान् सर्वदेवमय हरि हैं ३१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेमत्स्यावतारवर्णनन्नामत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३०॥

दोसौइकतीसका अध्याय॥

दुर्वासाजीका इन्द्रको त्रैलोक्यकी लक्ष्मी नष्टहोनेका शापदेना॥

महादेवजी बोले कि हे प्रिये पार्वती! विष्णुजी के कच्छपरूपका सब मनुष्योंसे नमस्कार कियाहुआ वैभव कहताहूं तिसको एकाग्रमनहोकर सुनिये १ अत्रिकेपुत्र महातेजस्वी दुर्वासाजी प्रसिद्धहुए हैं यह प्रचण्ड,सब लोकोंको क्षोभ करनेवाले,महातपस्वी २ ब्रह्मर्षि, तपस्याके निधि, हमारे अंशसे उत्पन्न, सबको सदैव भयदेनेवालेथे एकसमय में यह हिमवत्पृष्ठको गये ३ वहांपर किन्नरियों से पूजित होकर वर्षभरतक बसे फिर मुनिजी इन्द्र के देखने की कामना से स्वर्गलोकको गये ४ तिस समयमें महातेजस्वी दुर्वासाजी हाथीपर चढ़ेहुए, सब देवताओंसे पूज्यमान, इन्द्राणी के पति इन्द्रजीको देखतेभये ५ और तिनको देखकर प्रसन्नआत्मा, महातपस्वी, नम्रता से युक्त दुर्वासाजी कल्पवृक्षका माला उनको देतेभये ६ तब देवताओंके स्वामी इन्द्रजी तिस मालाको हाथी के मस्तकमें पहनाकर नन्दन वनको चलतेभये ७ तो मतवाला हाथी सूंड़से तिस माला को लेकर पृथ्वी में गिराकर पांवसे तोड़कर फेंक देताभया ८ तब महातेजस्वी, लालनेत्रवाले दुर्वासाजी क्रोधकर तपीहुई क्रोधहीकी अग्निसे इन्द्रको शाप देतेभये ९ कि त्रैलोक्यकी एक लक्ष्मीसेयुक्त होकर जिससे मेरा अपमान कियाहै तिससे निस्सन्देह त्रैलोक्यकी लक्ष्मी नष्ट होजावे १० महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इस प्रकार शाप को पाकर इन्द्रजी फिर अपने पुरको चलेगये तो संसार की पालन करनेवाली लक्ष्मी क्षणमात्र में अन्तर्द्धान होगई ११ जब लक्ष्मीजी अन्तर्द्धान होगई तब तीनोंलोक नष्ट होनेलगे क्योंकि लक्ष्मीजीही के कटाक्षके आश्रित सब स्थावरजंगम संसार है १२ लक्ष्मीजी के अन्तर्द्धान होतेही सब अत्यन्त नष्टहोगये ब्रह्मादिक सब देवता, गन्धर्व, यक्ष,किन्नर १३ दैत्य, दानव, नाग, मनुष्य, राक्षस, पशु, पक्षी, कीट, सब स्थावर और जंगम १४ तिस संसारकी माता लक्ष्मीजी करके नहीं देखेगये तो दारिद्र्यसे सब दुःखभागी

होगये १५ भूंख और प्याससे पीड़ित देवता बेहोशहोकर रोनेलग मेघ नहीं बरसतेभये तब तो सब जलाशय सूखगये १६ सब वृक्ष फल और फूलसे वर्जित होकर सूखगये तब देवता, गन्धर्व, दैत्य, दानव, राक्षस १७ भूंख और प्याससे व्याकुल होकर अपारपराक्रमी ब्रह्माजी के पासगये और तिन देवदेवेश, कमलयोनि पितामहसे देवताबोले १८ कि हे भगवन्! भूंख और प्याससे तीनोंलोक पीड़ितहैं हवन, वषट्कार और सबधर्मसे वर्जित संसारहै १९ भूंख और प्याससे पीड़ित सब देवता, दानव और मनुष्य रक्षाकरनेवाले, सबलोकों के स्वामी आपकी शरणमें प्राप्तहैं २० हे देवोंके स्वामी! आप भूंख व प्याससे पीड़ित जनोंकी रक्षाकरनेको योग्य हैं महादेवजीबोले कि हे पार्वती! ये देवताओं के वचन सुनकर सबलोकके पितामह २१ सबके मानदेनेवाले, अत्यन्त प्रसन्नहोकर सबसे बोले कि हे सब देवताओ, गन्धर्व, मनुष्यो सुनो २२ इन्द्रके अपचारसे यहसब उपस्थित हुआहै घोर, संसारके नाश करनेको महान् संवर्तकनाम अग्नि उत्पन्न हुआहै २३ महात्मा दुर्वासाजी क्रोधको जिससे प्राप्त हुए तिसी क्रोधसे हे देवताओ! उन्हींने तीनोंलोक नष्ट करदिये २४ यह दुर्मति रोषसे युक्त आत्मा और क्रोधसे कलुषीकृत होकर यह बोलतेभये कि तीनोंलोककी लक्ष्मी नष्ट होजावे २५ तिन्हींके शाप से लोकोंकी माता, नारायणजीकी प्रिया, संसारकी माता, महेश्वरी लक्ष्मीजी अन्तर्द्धानको प्राप्त होगई हैं २६ जिनके कटाक्षके देखने से संसार सुखी होजाते हैं और संसारकी माताके न देखनेसे दुःखभागी होजाते हैं २७ तिससे हम सब जाकर दूधके समुद्रमें स्थित, उत्तम, सनातन, नारायणजी को पूजन करें २८ तिन देवोंके स्वामी के प्रसन्न हुए यह कल्याण होजावेगा यह मनसे निश्चयकर देवगणोंसे युक्त २९ और भृगुआदिक मुनियोंको साथ लेकर ब्रह्माजी क्षीरसागरकोगये और क्षीरसागरके उत्तर किनारेमें ब्रह्मा और महादेव आदिक देवता ३० पौरुषविधानसे विष्णुजी को पूजन करतेभये अष्टाक्षरमन्त्र और पौरुषसूक्त को जपकर ३१ अनन्यमन होकर ध्यानकर परमेश्वर को हवन, सुन्दर स्तोत्रों से स्तुति और

विचित्र प्रकारसे नमस्कार करते भये ३२ तब तो भगवान् प्रसन्न होगये और महर्षियों से स्तुति को प्राप्त होकर सब देवताओं को गरुड़पर चढ़कर दर्शन देतेभये सर्वदेवमय, विभु, संसारकेस्वामी, शंख, चक्र, गदा धारण करनेवाले ३३। ३४ पीले कपड़े धारे, चार भुजावाले, कमल के समान नेत्रवाले, भृगुलता और कौस्तुभमणि हृदयमें धारे, वनमालासे विभूषित ३५ मुकुट, हार, केयूर और नूपुरोंसे शोभित भगवान्को देखकर सब देवता जयशब्द से स्तुति और निरन्तर नमस्कार करतेभये ३६ तब कृपाकर भगवान् सब देवताओं से बोले कि हे देवताओ! मैं वर देनेवालाहूं वर मांगिये ३७ यह सुनकर ब्रह्मादिक सब देवता हाथ जोड़कर देव ईश्वरजी से ये वचन बोले ३८ कि हे भगवन्! मुनिके शापसे इससमय देवता, असुर और मनुष्योंसमेत तीनोंलोक सब भूंख और प्यास से पीड़ित हैं ३९ तिससे हे पुरुषोत्तमजी! आपकी शरणमें प्राप्त हुएहैं सब लोकोंकी रक्षा कीजिये और कोई समर्थ नहीं है ४० महादेवजी बोले कि हे पार्वती! सब देवताओं ने जब अच्युत परमेश्वरजी से यह कहा तो यह विचारकर भगवान् ब्रह्मादिक देवताओं से बोले ४१ कि अत्रिके पुत्र दुर्वासामुनिके शापसे लक्ष्मी अन्तर्द्धान को प्राप्त होगई है अब तिसके कटाक्षके दर्शनसे संसार ऐश्वर्य्य संयुक्त होजायगा ४२ तिससे महादेव और ब्रह्मादिक तुम सब देवता मन्दराचल पर्वतको उखाड़कर क्षीरसागरके पास रक्खो ४३ फिर सर्पराजसे लपेटकर मन्दराचलको मथानी बनाकर दैत्य, गन्धर्व और दानवोंसे समुद्रको मथो ४४ तो संसारकी रक्षा करनेके लिये वही लक्ष्मी प्राप्त होगी तिससे निस्सन्देह आपलोग प्रसन्न होजावेंगे ४५ हम कच्छपरूपसे पर्वतको धारण करेंगे हमारी शक्ति से सब देवता बलवानोंको वहां प्रवेश कराओ ४६ महादेवजीबोले कि हे कमलसमान नयनवाली पार्वती! हरि ने जब सब देवताओं से इसप्रकार कहा तो ब्रह्मादिक सब देवता भगवान्से साधु साधु यह बोलते भये ४७ श्रेष्ठ देवताओं से स्तुति किये गये अच्युत, श्रीमान्, सब मनुष्यों से नमस्कार किये हुये, सबके आधार, सर्व-

देव, सर्वत्र समदर्शनवाले श्रीभगवान् जी अन्तर्द्धान होगये ४८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेदुर्वाससःशापकथनंनामैकत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३१ ॥

दोसौबत्तीसका अध्याय ॥

लक्ष्मीजीकी उत्पत्ति वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! सब देवता और महाबली दानव आदिक मन्दराचल को उखाड़ कर समुद्र में फेंक देते भये १ तब श्रीमान्, नारायण, भगवान्, प्राणियों की रक्षा करनेवाले, अपार पराक्रमी कच्छपरूपसे तिस पर्वतको धारण करलेतेभये २ अनादि मध्य अन्त शरीर, विश्वरूप, सनातन, संपूज्य, संसार के ईश्वर, सबमें प्राप्त, नाशरहित भगवान् एक भुजा से जब मन्दराचल को धारण करतेभये तब देवता और सब असुर सर्प्पराजसे मन्दराचल को लपेटकर क्षीरसागरको मथनेलगे महाबली देवताओं से क्षीरसमुद्र मथने में ३ । ४ । ५ लक्ष्मीजी के प्राप्त होनेकेलिये सब महर्षि व्रत और नियमकर श्रीसूक्तको जपतेभये ६ और श्रेष्ठ ब्राह्मण सहस्रनाम पाठ करतेभये शुद्ध एकादशी में समुद्रके मथने के समय ७ सब ऋषि व्रतकर उत्तम श्रीमन्त्र जपतेभये जे लक्ष्मीनारायण हरि जीके जपकी कांक्षावाले ८ श्रेष्ठ मुनि थे वे ध्यानकर भगवान् को पूजन करतेभये तदनन्तर तिस मुहूर्त्त में समुद्रके मथने में ९ पहले महापीड, महाघोर, संवर्त अग्नि के समान दीप्तिवाला, महाविष कालकूट निकला १० कालकूट को देखकर भयसे पीड़ित सब देवता और दानव भागतेभये तब भयसे पीड़ित श्रेष्ठ देवताओं को भागते देखकर ११ तिनसे मैं बोला कि हे सब देवताओ विष में मतडरो १२ कालकूट महाविषको मैं पीलूंगा जब मैंने इन्द्रादिक सब देवताओं से यह कहा १३ तो वे वारंवार नमस्कारकर साधु २ इन वाक्योंसे हमारी स्तुति करतेभये फिर मैं मेघों के समान महाविषको प्रकट हुए देखकर १४ हृदयमें नारायण, देव, गरुड़ध्वज, उदय के सूर्य्यसदृश, शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाले १५

लक्ष्मी और भूमिसहित, देव, तपेहुए सोनेके कुण्डल धारण किये, सब दुःख हरनेहारे, प्रभुजीको एकाग्रमनसे ध्यानकर १६ लक्ष्मी-संयुक्त नामरूप महामन्त्र को जपकर तिस महाघोर, आद्य, सबके भय करनेवाले विषकोभी जपताभया १७ सबमेंप्राप्त विष्णुजीकेतीन नामके प्रभावसे लोकके संहार करनेवाला विष जीर्ण होगया १८ अच्युत,अनन्त और गोविन्द इन हरिजी के तीन नामोंको ओंकार आदिमें और नमः अन्तमें कर भक्तिसे प्रयतहोकर जो जपताहै १९ तिसको मृत्युका भय विष, रोग और अग्निसे उत्पन्न नहीं होताहै जो प्रयतात्मवान्‌मनुष्य महामन्त्ररूप नाम तीनोंकोजपताहै २० तिसको कालमृत्युका भय नहीं होताहै औरसे होना क्याहै हे देवि! इसप्रकार तीन नामोंसे मैंने विष पीलिया २१ तब विस्मितहोकर देवता प्रसन्नतासे हमारी स्तुति और प्रणामकर फिर क्षीरसागरको मथनेलगे हम और देवताओंके समुद्र मथनेमें २२ रत्नोंके माला और वस्त्रोंसे आच्छादित ज्येष्ठा देवी उत्पन्नहुई और उत्पन्न होकर देवताओं से बोलीं किमुझको क्या करनाचाहिये २३ तब सब देवसमूह तिनदेवी जीसे बोले कि जिनके सुन्दरघरमें लड़ाई होतीहो २४ तिस स्थान को तुम्हें देंगे अशुभसंयुक्त होकर तहां बसना नित्यही कठोरभाषण झूठे बोलते हों २५ और जे पापी मलचित्तवाले सन्ध्या समय में सोतेहों तिनके घरमें दुःख और दारिद्र्यके देनेवाली आप ठहरें २६ मूड़, बाल, भस्म, हाँड़, तुष और अंगार जहां हों तहां निस्सन्देह निरन्तर तुम्हारा स्थान होगा २७ जिसका घर मूड़, हाँड़, भस्म और बाल आदिकों से चिह्नितहो तहांपर हे अशुभे! लड़ाईसमेत नित्यही बसो २८ जो दुर्बुद्धि विना चरण धोये आचमन करताहै हे महादेवि! तिस पापयुक्तको भजो २९ तुष, अंगार, मूड़, पत्थर, बालू, कपड़ा और चमड़े से दांत धोनेवाले मनुष्यों में अधम होंगे ३० हे देवि! लड़ाईसमेत तिनके घरों में नित्यही रमणकरो, तिल-पिष्ट, कलंज, कलिंग, सहँजन, गाजर ३१ छत्राक, विष्ठाकाशूकर, बेल, कोशातकी का फल, अलाबु और प्याजको जे अधम मनुष्य खाते हैं हे दारिद्र्य देनेवाली देवी तिनके घरमें स्थान कीजिये ३२

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती ! इसप्रकार सब देवता लड़ाई का प्यार करनेवाली ज्येष्ठाको समझाकर फिर एकाग्रचित्तसे क्षीरसागरको मथनेलगे ३३ तो वारुणी देवी उत्पन्नहुई इस सुन्दर लोचनवालीको नागराज अनन्तग्रहण करतेभये ३४ तदनन्तर सब गहनों से भूषित और सब लक्षणों से शोभित सुरा उत्पन्नहुई यह गरुड़की स्त्री हुई ३५ फिर सुन्दर अप्सराओं के समूह और महापराक्रमी, मीठे गानमें तत्पर, रूपसे युक्त गन्धर्व उत्पन्नहुए ३६ तदनन्तर ऐरावतहाथी, उच्चैःश्रवा घोड़ा, धन्वन्तरि, कल्पवृक्ष और सब कामना पूर्ण करनेवाली कामधेनु उत्पन्नहुई ३७ इन सबको प्रसन्नमन इन्द्र ग्रहण करतेभये तदनन्तर प्रातःकाल द्वादशी में सूर्य के उदय समय ३८ इन्द्रादिक देवताओं के समुद्र मथने में प्रसन्नमुख महर्षियों से स्तुतिको प्राप्त ३९ महालक्ष्मीजी उत्पन्नहुई यह सब लोक की ईश्वरी, शुभा, करोड़ बाल सूर्यों के समान, सोने के बहूटों से भूषित ४० सोने के कमलपर बैठीहुई, सब लक्षणों से शोभित, कमलपत्रके समान सुन्दर नेत्रवाली, नीलकुञ्चित बालवाली ४१ सुन्दर चन्दनसे लिप्त अङ्गवाली, सुन्दर फूलों से अलंकृत, अनेकप्रकारके रत्नमय, सुन्दर, सब गहनों से युक्त ४२ पतले करिहांववाली, संसारकी माता, मोटे और ऊंचे स्तनवाली, चार हाथों से युक्त, सुन्दर नेत्रवाली, पूर्णचन्द्रमा के समान मुखसे युक्त ४३ वसुपात्र, मातुलुंग और सोने के दो सुन्दर कमलोंको सब गहनों से भूषित कमलरूपी हाथों में धारण किये ४४ मलिनतारहित कमलकी मालाको छाती में धारेहुई थीं तिन महादेवी, सबलोककी हितकारिणी ४५ सब प्राणियों की ईश्वरी, माता, कमलकी माला धारण करनेवाली, नारायणी, संसार की माता और नारायणजी के हृदय में स्थानवाली को सब देवता देखतेभये ४६ तिन महालक्ष्मीजी को देखकर सब देवता प्रसन्न हुए आकाश में देवसमूह वारंवार नगारों को बजातेभये ४७ वनदेवी निरन्तर फूलों की वर्षा करती भई गन्धर्वों के पति गानेलगे अप्सराओं के समूह नाचनेलगे ४८ पुण्यकारी पवन चलनेलगी, सूर्यनारायण सुन्दर दीप्तियुक्त होगये शान्तहुई अग्नि फिर प्रका-

शितहुई दशोंदिशा प्रसन्नहुईं ४९ तदनन्तर क्षीरसागरमें चन्द्रमा उत्पन्न हुए यह अमृतकी किरणयुक्त, माता और भाईको सुख देने वाले ५० लोक मातुल और नक्षत्रों के स्वामीहुए तिस पीछे भगवान्‌की स्त्री, लोकों को पवित्र करनेवाली, पुण्यकारिणी तुलसी संसारकी माता शार्ङ्गधनुषधारी भगवान् की पूजाके लिये उत्पन्न हुईं तबतो सब स्वर्गवासी देवता प्रसन्नमन होगये५१।५२ और परिपूर्णमनोरथ होकर शिव और ब्रह्मादिक सब देवता तिस मन्दराचल को पहले की तरह स्थापितकर लक्ष्मीजी के पास आकर ५३ सहस्रनामसे स्तुतिकर श्रीसूक्तसंहिता जपतेभये तब प्रसन्न होकर लक्ष्मीजी सब देवताओं से बोलीं ५४ कि हे सुरोत्तमो ! वरदान मांगो तुम लोगोंका कल्याणहो महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! हाथजोड़े हुए, नम्रहोकर देवता लक्ष्मीजी से बोले ५५ कि हे कमले! हे देवि! हे सब लोकों के ईश्वरकी प्यारी! आप विष्णुजी के हृदयमें नित्यही नाशरहित होवो ५६ त्रैलोक्यके पालन करनेवाली, देवी, नित्या, परमेश्वरी आपहैं जिन आपके कटाक्षके आश्रित सब स्थावर जंगम संसारहै ५७ आपके देखनेही से सब देवता होते हैं महादेव आदिक देवताओं की आप माताहैं आपही के कटाक्षसे ऐश्वर्य्य होता है ५८ हे देवि ! हे जगन्मातः ! यही हम लोग इच्छा करते हैं आप के नमस्कारहै महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! सब देवताओंसे इस प्रकार कहीगई लोकमाता महेश्वरी ५९ नारायणजीकी प्यारी तिन देवताओं से बोलीं कि ऐसाही होगा तदनन्तर लक्ष्मीजी के स्वामी शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले नारायण ६० और तैसेही पूर्व की नाईं ब्रह्माजी क्षीरसागरमें प्रकटहुए तब जनार्दनजी के नमस्कारकर देवता स्तुति करतेभये ६१ और प्रसन्नमुख, शुभ, सब हाथ जोड़कर बोले कि हे सबके स्वामी ! अपनी प्यारी, स्त्री, देवी, लक्ष्मीजी को संसारकी रक्षा करने के लिये ग्रहण कीजिये महादेव जी बोले कि हे पार्वती ! सब ब्रह्मादिक देवता ऐसा कहकर मुनियों से ६२।६३ अनेक प्रकार के रत्नमय, सुन्दर, बाल सूर्य के समान पीठमें देवी और देवजी को बैठाकर आनन्दसे युक्तहोकर ६४ सु-

सुन्दर वस्त्र, माला और अनेकप्रकारके रत्नों के गहनों से लक्ष्मीजी समेत बैठेहुए अच्युत भगवान् को पूजन करतेभये ६५ और चन्दन, धूप, दीप और अमृतके समान नैवेद्य और अप्राकृत सुन्दर फलों से लक्ष्मीजी की पूजा करते भये ६६ अमृतसे उठीहुई, कोमल, शुभ, तुलसी देवी से लक्ष्मीजी के दोनों चरणों को पूजते भये ६७ आनन्दके आंशुओं से पूर्ण देवता तीन प्रदक्षिणा और वारंवार नमस्कारकर स्तुतियों से स्तुति करतेभये ६८ तब सब देवों के ईश्वर, देवीसमेत हरि प्रभु भगवान् प्रसन्न होकर देवताओं को अभीष्टवर देतेभये ६९ तबतो प्रसन्न हुए, देवता और मनुष्य आदिक, लक्ष्मीजी की कटाक्षके अर्पण करने से पवित्रदृष्टि हुए, उत्पन्न धान्य और द्रव्य से युक्त, रोगरहित होकर निरन्तर श्रेष्ठ सुखको प्राप्त होतेभये ७० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे लक्ष्म्युत्पत्तिर्नामद्वात्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३२ ॥

दोसौतेंतीसका अध्याय ॥

एकादशी के व्रतका वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! देवीसमेत प्रसन्नआत्मा भगवान् सब लोकों के हितकेलिये देवता और महामुनियोंसे बोले १ कि हे सब मुनियो और महाबली देवताओ सुनिये एकादशी महापुण्यकारिणी और सब उपद्रवों के नाश करनेवाली है २ लक्ष्मीजी के दर्शनके लिये आपलोगों ने व्रतकिया है तिससे सदैव पुण्यकारिणी द्वादशी मेरी प्यारी है ३ अबसेलेकर जेमनुष्य पहले दिनमें व्रतकर श्रेष्ठ श्रद्धासेयुक्त होकर द्वादशी में सूर्य के उदय समय ४ लक्ष्मीसमेत भक्ति से तुलसी करके हमारी पूजा करते हैं वे सब बन्धन से छूटकर हमारे पदको प्राप्तहोतेहैं ५ और जे मनुष्य द्वादशी में मुझ पुरुषोत्तम को नहीं पूजते हैं वे हमारी मायासे विमोहित पापकर्म्म करनेवाले हैं ६ जेपापी,नरकगामी मुझको नहीं पूजते हैं तिनपापी, विषयों से बँधेहुए और मेरी पूजामें पराङ्मुखों को ७ दुरत्यय मेरी

माया संसारमें फेंकदेती है महादेवजी बोले कि हे पार्वती! भगवान् परमात्मा सनातनजी ऐसाकहकर ८ मुनियोंसे स्तुतिको प्राप्तहोकर क्षीरसागरमें शेषकी शय्यापर सूर्य्यके सदृश विमानमें चढ़कर लक्ष्मीजी के स्थानको जातेभये ६ और सुन्दर नेत्रवाली लक्ष्मीदेवीसमेत देवताओं के दर्शन के लिये तहांपर स्थित होगये १० तब प्रसन्नमन सब देवसमूह सनातन कच्छपरूपकी पूजनकर स्तुति करतेभये ११ तब तो कूर्मरूपी जनार्दन भगवान् प्रसन्न होकर बोले कि हे देवों के स्वामियो जो तुमलोगों के मनमें वर्तमानहो वह वर मांगिये महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब सब देवसमूह जनार्दन कूर्मरूपसे १२ आनन्दसे निर्भरमन होकर हाथ जोड़कर बोले कि हे महाबल! हे देवों के स्वामी! आप शेष और दिग्गजोंकी सहायता के लिये सातोंद्वीपवाली पृथ्वी के धारण करनेके योग्यहैं महादेवजी बोले कि हे पार्वती! प्रसन्नआत्मा, लोकके भावन भगवान् बोले कि ऐसाही होगा ऐसा कहकर १३। १४ सातोंद्वीपसे युक्त पृथ्वी को धारण करतेभये तब तो देवता, गंधर्व, दैत्य, दानव और मनुष्य १५ महर्षियोंसे आज्ञापाकर स्वर्गलोकको प्राप्तहुए तबसे लेकर सब ब्रह्मादिक देवता १६ सिद्ध, मनुष्य, योगी और श्रेष्ठमुनि श्रेष्ठभक्ति से युक्तहोकर विष्णुजीकी आज्ञाको आगेकर १७ एकादशी में व्रत कर भक्तिसे विधिपूर्वक द्वादशी में जनार्दनजी को पूजन करतेभये १८ हे पार्वती! यह सब लक्ष्मीजीका जन्म और विष्णुजी के कूर्म अवतारका वैभव कहा अब और क्या सुननेकी इच्छाहै १९॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे एकादश्युपवासकथनंनामत्रयस्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३३॥

दोसौचौंतीसका अध्याय॥

द्वादशीका माहात्म्य वर्णन॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे प्रभु महादेवजी हे भगवन्! द्वादशी और विष्णुजीके पूजाका विधान सुनना चाहताहूं द्वादशी में विष्णुजीकी

पूजाका विधान करनाचाहिये १ हे महेश्वर ! एकादशी का प्रभाव मनुष्यों के सबपाप हरनेवालाहै इससे हममें प्रीतिसे विस्तारपूर्वक कहिये २ महादेवजी बोले कि हे देवि ! द्वादशीका विधान कहताहूं सुनिये तिसके स्मरण मात्रहीसे जनार्दनजी संतुष्ट होतेहैं ३ एकादशी के प्राप्तहोने में मनुष्य व्रतकरैं तो इसलोकमें सब पापोंसे छूट कर अंतमें विष्णुजी के परमपदको प्राप्तहोतेहैं ४ द्वादशीमें भगवान् के पूजनसें ज्ञान वा अज्ञानसे कियेहुए सातजन्मकेपाप क्षणमात्रही में लयको प्राप्तहोजाते हैं ५ अश्वमेध हजार यज्ञ और वाजपेय सौ यज्ञ एकादशीके व्रतकी सोलहवीं कलाको नहीं प्राप्त होते हैं ६ द्वादशी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और मनुष्योंकी सबकामना पूर्ण करने वाली, श्रेष्ठवर्णकी है ७ हे शुभ नेत्रवाली पार्वती ! एकादशी के समान कोई पापसे रक्षा करनेवाला विद्यमान नहीं है और कोई व्रत भी नहींहै ८ इसको छोड़कर जो और व्रतकरताहै वहहाथमें स्थित महाराज्य को छोड़कर भिक्षा मांगताहै ९ ग्यारह इन्द्रियोंसे जो पाप किया होताहै वह सब एकादशीके व्रतसे नाश होजाताहै १० हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्वती ! वारंवार पुराण रटते हैं कि एकादशीमें न भोजन करना चाहिये ११ एकादशी सब वर्ण और आश्रमोंको सदैव नहीं भोजनके योग्य कही है शुक्ल और कृष्णपक्ष का क्याकहना है १२ एकादशी का व्रत निस्सन्देह करना चाहिये एकादशी में माता और पिताका मृतकदिनहो १३ तो द्वादशी में देना चाहिये व्रतके दिनमें कभी नहीं देना चाहिये स्वर्गवासी पितर निन्दित अन्नका भोजन नहीं करते हैं १४ एकादशी में भोजन न करना चाहिये कभी मदिरा न पीनी चाहिये और ब्राह्मण को न मारना चाहिये ये तीनों बराबर हैं १५ अवस्थात्रितय में जो वाणी, देह और कर्मोंसे यत्न है तिससे शुद्ध एकादशीका व्रतकरै १६ दशमी मिली हुई को यत्नसे छोड़देवै अरुण के उदयकी वेला में दशमी मिली हुईहोती है १७ तिसको छोड़कर विना विचारे द्वादशी का व्रतकरै सूर्य्य के उदय समय कलाभर भी एकादशी विद्यमान हो १८ तो त्रयोदशी में द्वादशी विद्यमान होती है शुद्ध द्वादशीव्रत में करना

चाहिये १९ अरुण के उदय की वेलामें सब कृत्यकरै कलाभर भी द्वादशी में पारण कहा है २० शुद्धा एकादशी को निस्सन्देह छोड़ देवे जो द्वादशी में सूर्य्यके उदय में कलामात्र भी एकादशीहो २१ तो सब एकादशी को छोड़कर तिसी में व्रतकरै इसप्रकार की विधि निश्चयकर एकादशीका व्रत करना चाहिये २२ दिनके सायंकाल आदि अन्त में, सायंकाल और प्रातःकाल भुक्तिचतुष्टय को छोड़ कर व्रतकरै २३ दशमी में एकवार भोजनकर स्त्री के संगम से वर्जितहोकर परदिन में पृथ्वी में बिछाकर पवित्रहोकर बसै २४ आंवलेका उबटनकर संध्यासमय स्नानकर व्रतमें परायण होकर रात्रि में भगवान्को पूजै २५ वैष्णव मनुष्य, पाखण्डी, विकर्ममें स्थित, पतित और चाण्डाल को न देखै, न बोलै और न छुवै २६ वैष्णवहीन जो ब्राह्मण है सो पाखण्डी कहाता है शिखा और जनेऊ का त्यागनेवाला विकर्ममें स्थित कहाताहै २७ महापाप और उपपापों से युक्त पतित कहाताहै और चाण्डाल श्वपच कहाताहै यह वेदों में निर्णयहै २८ रात्रिमें भगवान्को पूजनकर जागरण करै चन्दन, फूल, दीप, कपड़े, सुन्दर गहने २९ जप स्तोत्र और नमस्कारों से रात्रिमें भक्तिसे पूजै फिर प्रातः काल तुलसी मिलेहुए जलसे ३० अच्छी विधि से स्नानकर पितर और देवताओं को तर्पण कर संसारके स्वामी, लक्ष्मीसमेत जनार्दनजी को ३१ कोमल तुलसीपत्र और सुगन्धित फूलोंसे पूजनकर एकसौ आठबार आरतीकरै ३२ कमलकी माला अच्छीतरह से भगवान् और लक्ष्मीजी के चढ़ावै धूप, दीप, नैवेद्य, पान ३३ शक्करसमेत सुन्दरखीर, और कपूरसहित पानदेवै ३४ प्रदक्षिणा नमस्कारकर भक्तिसेयुक्त होकर घी से अग्नि में एकसौ आठबार हवन करै ३५ फिर पुरुषसूक्त और लक्ष्मीसूक्त से प्रति ऋचा में खीर छोड़ कर भक्ति से ब्राह्मणों को भोजन कराकर आपभी मौन होकर भोजनकरै ३६ पुराणआदिक के पाठ से वहदिन बिताकर रात्रि में ब्रह्मचारी पृथ्वी में शयन करै ३७ इस प्रकार द्वादशी में पूजित हुए लक्ष्मीपति श्रीभगवान् जी क्षणमात्र में प्रसन्न होकर निश्चय सब अभीष्टके देनेवाले होते हैं

३८ हे देवि! यह उत्तम द्वादशीका व्रत तुमसे कहा अब और अन्य सुननेकी इच्छा है तिसको कहिये मैं कहूंगा ३९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेद्वादशीमाहात्म्यंनामचतुस्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३४॥

दोसौपैंतीसका अध्याय ॥

पाखण्डकी उत्पत्तिका वर्णन ॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे महादेवजी! जो आपने हमसे कहा कि पाखण्डोंके संवादको वर्जित करै यह चाण्डालोंसेभी निन्दितहै १ तो यह कहिये कि किन चिह्नोंसे पाखण्डी चिह्नितहैं तब महादेवजी बोले कि जे अज्ञानसे मोहित मनुष्य नारायण जगन्नाथसे अन्य देवको परत्वसे कहते हैं वही पाखण्डी कहाते हैं मुण्ड, भस्म और हाड़ोंके धारण करनेवाले, वेदसे रहित चिह्नवाले २। ३ वानप्रस्थ आश्रमसे अलग जटा और वल्कलके धारणकरनेवाले और वेदहीन क्रियासे जे युक्तहैं वही पाखण्डीकहाते हैं ४ हे देवि! जे ब्राह्मण भगवान्के शंख, चक्र और ऊर्ध्वपुण्ड्र आदिक प्यारे चिह्नोंसे रहित हैं वही पाखण्डी कहाते हैं ५ जो ब्राह्मण वेद और स्मृतिके कहेहुए आचारको नहीं करताहै वह सब लोकोंमें निन्दित पाखण्डी जानने योग्यहै ६ भगवान्की प्रीतिसे विना जे हैं वही पाखण्डी कहाते हैं सम्पूर्ण यज्ञके भोक्ता ब्रह्मदैवत विष्णुजीको ७ देवता उद्देशकर जो हवन करता वा देताहै वह सब कर्म्मोंमें स्वतन्त्र पाखण्डी जानने योग्यहै ८ जो वेदमें कहेहुए महत्कर्मको स्वतन्त्रतासे करताहै और जो नारायणदेवको ब्रह्मा और महादेवआदिक और देवताओंके समान देखताहै वह सदैव पाखण्डी होताहै जो तीनों अवस्थामें मन, वचन, देह और कर्म्मोंसे ९।१० वासुदेवजीको नहीं जानताहै वह पाखण्डी ब्राह्मण होता है यहांपर बहुत कहनेसे क्याहै जे वैष्णव ब्राह्मण नहीं हैं ११ वे छूने, बातकरने और देखनेके योग्य कभी नहीं हैं पार्वतीजी बोलीं कि हे भगवन्! हे देवताओंमें श्रेष्ठ! महादेवजी परमगुह्यको मैं पूंछती हूं १२ हममें प्रीतिसे कहा मैं

बड़ा सन्देह है मुण्ड, भस्म, चमड़ा और हाड़ों का धारण करना वेद में निन्दित है १३ हे देव! तिनको आप धारण करते हैं तो वे किसहेतुसे निन्दित हैं हे देवेश! हे महाबुद्धिमान्! यह मैं आप से स्त्रीकी चपलतासे पूंछतीहूं १४ हे महाप्रभुजी! महाप्रभावसे कथित कहीं नहीं करनेयोग्य होताहै यह आपने पहले विस्तारसे नहीं कहाहै १५ नहीं करनेयोग्य इस प्रश्नके करनेसे मुझपर क्षमाकरनेके आप योग्यहैं वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! इसप्रकार मनुष्यहीन एकान्त में पार्वतीजी नें महादेवजी से पूंछा १६ तो जो जो अपना परमगुह्य आचरितहै तिसको महादेवजीसे कहतेभये कि हे देवि! जो परमअद्भुत गुह्य है तिसको कहताहूं सुनिये १७ मेरे कहेहुएको तुम मनुष्यों में नहीं कहना हे सुन्दर व्रत करनेवाली! शरीरके पृथक् न होनेसे तुमसे कहताहूं १८ पूर्वसमय में स्वायंभुवमनु के अन्तरमें नमुचि आदिक महादैत्य महाबली, महावीर्यवान्, महाबीर और महौजस १९ सब विष्णुजीमें रत, शुद्ध, सब पापों से वर्जित और त्रयीधर्मसे युक्तथे इन्होंने इन्द्रादिकोंको भग्न करदियाथा २० तब भयसे पीड़ित देवता विष्णुजी के समीप आकर उनकी शरण में प्राप्त होकर उनसे बोले कि हे केशवजी! सब देवताओं के नहीं जीतने योग्य, तपस्यासे पापहीन इन महादैत्यों के जीतनेके आपही योग्यहैं महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ये देवताओं के भयानक वचन सुन २१। २२ तिन दिक्पालों को समाधानकर पुरुषोत्तमजी हमसे बोले कि हे महाबाहो! हे रुद्रजी! दैत्यों के मोहनकेलिये आप २३ पाखण्डाचरण धर्म्म को करिये हे देवताओं में श्रेष्ठ! तिनसे तामस पुराणों को कहिये २४ हे महामते! मोहन शास्त्रोंको कीजिये हममें मुक्त ब्राह्मण महर्षिहोंगे २५ हमारी भक्तिसे तिनमें प्रवेशकर तामसपुराणों को कहिये कणाद, गौतम, शक्ति, उपमन्यु, जैमिनि २६ कपिल, दुर्वासा, मृकंडु, बृहस्पति, भार्गव परशुरामजी ये दश तामसऋषि हैं २७ इनमें भावशक्तिसे प्रवेशकर संसारका कल्याण कीजिये तमससे उद्रिक्त तुम्हारी शक्तिसे निविष्ट वे २८ निस्सन्देह क्षणमात्रहीमें तामस होजावेंगे और वेही ब्राह्मण तीनोंलोकमें ता-

मस पुराणोंको कहेंगे २९ पुराण और शास्त्र तुम्हारे सत्वसे दृद्धिके आसहोंगे मुण्ड, चर्म, भस्म और हाँड़के चिह्नोंको ३० आप धारण कर तीनोंलोकमें मनुष्यों को मोहित कीजिये तैसेही सत्कारयुक्तहो कर आपही पाशुपतशास्त्रको कीजिये ३१ कंकाल,शैव, पाखण्ड और महाशैव आदि भेदसे वेदसे बाहर नहीं देखने योग्य मत है अधम मनुष्य ३२ भस्म और हाँड़ों के धारण करनेवाले सबअचेतस होंगे और तामस आपको सब शास्त्रों में परत्वसे कहेंगे ३३ तिनका मत अधिष्ठानकर सबसनातन दैत्य क्षणमात्रमें निस्सन्देह हमसे विमुख होजावेंगे ३४ हे महाबलवान् रुद्रजी! मैंभी अवतारों में तामसों के मोहनकेलिये आपको युगयुगमें पूजनकरूंगा ३५ इसमतमें स्थित होकर दैत्य निस्सन्देह गिरजावेंगे महादेवजी बोले कि हे पार्वती! वासुदेवजीका कहाहुआ हम अच्छीतरहसे सुनकर ३६ महानमुख युक्तभी मैं दीन होगया और तिन परमेश्वर देवजी के नमस्कार कर बोला ३७ कि हे देव! हे नाथ! आपका कहाहुआ जो पृथ्वीमें करूंगा तो मेरे नाशके लिये निस्सन्देह होगा ३८ हे हरे! यह कृत्य करने को मैं समर्थ हूं क्योंकि आपकी आज्ञाभी उल्लंघन करने के योग्य नहीं है यह महान् दुःखहै ३९ हे देवि! इसप्रकार मेरे कहने पर हरिजी फिर हमको समझाकर बोले कि आपकी आत्माके नाशके लिये नहीं होगा ४० हे देवताओं में उत्तम! देवताओं के हित के लिये हमारे वचन कीजिये आपके भी जीवन का उपाय कहता हूं ४१ कृपाकरके हमको अपने सहस्रनाम देतेभये कि हृदयमें हम को धारणकर मेरे नाशरहित मंत्रका जप कीजिये ४२ षडक्षर महामंत्र तारकब्रह्म कहाता है जे भक्तिसे मुझको जपते हैं तिनके निस्सन्देह मुक्ति होगी ४३ कमलदलके समान श्यामवर्ण, कमलपत्र के समान नेत्रवाले, शंखांग शार्ङ्गधनुष और बाण धारण करनेहारे, सब गहनोंसे भूषित ४४ पीले कपड़े धारण करनेवाले, चारबाहुयुक्त, रामचन्द्रजीके प्यारे, श्रीरामायनमः इसप्रकार से यह उत्तम मंत्र उच्चारण करने योग्यहै ४५ यह मंत्र सब दुःख हरनेवाला और पापियोंको भी मुक्ति देनेहारा है इस मंत्रको तुम नित्यही जप करने

हुए निर्म्मल होजावोगे ४६ भस्म और हाँड़के धारण करनेसे जो आपमें पाप उत्पन्न होगा वह हमारे शुभमंत्रके उच्चारण करनेसे मंगल होजावेगा ४७ हे सुरोत्तम! हे सुव्रत! तर्पित होकर मैं सब पापों को नाश करदूंगा हमसे और देवताकीभक्ति आपके नहीं उत्पन्नहोगी ४८ हृदयमें नाथ पुरुषोत्तम मुझको पूजनकीजिये और हमारी आज्ञाकरिये हमारी प्रीतिसे यह सब आपको शुभहोगा ४९ यह हम को आज्ञादेकर मरुद्गणों को छोड़ देतेभये फिर वे देव निवृत्तहोकर अपने स्थानको चलेगये ५० तब इन्द्रादिक देवता हमारी प्रार्थना करतेभये कि हे देव! हरिजी ने जो कहाहै उस हितको शीघ्रही कीजिये ५१ महादेवजी बोले कि हे शुभे पार्व्वती! देवताओं के हित के लिये पाखण्डियों की वृत्ति, मुण्ड, चर्म्म, भस्म और हाँड़ों का धारण मैंने किया ५२ विष्णुजी के कहनेके अनुसार तामसपुराण, पाखण्ड शैवशास्त्रों को भी मैंने किया ५३ हमारी शक्तिसे गौतम आदिक ब्राह्मणोंको भी प्रवेशकर मैंने वेदबाह्य शास्त्र अच्छेप्रकार से कहे ५४ इस मतको धारणकर दुष्ट, सब राक्षस, तामससे आच्छादित होकर भगवान् से विमुख होगये ५५ महान् उग्र तपस्या से युक्त भस्मआदिक धारणकर मांस, रक्त और चन्दन आदिकों से हमारीही पूजन करते भये ५६ हमसे वरदान पाकर मदबलसे उद्धत, अत्यन्त विषयमें आसक्त, काम क्रोधसे युक्त ५७ सत्वहीन और वीर्य्यरहित होगये तब उनको देवसमूहों ने जीतलिया सब धर्म्म से भ्रष्ट होकर राक्षस कालपाकर अधमगतिको प्राप्त होते हैं ५८ जे हमारे मतको धारणकर पृथ्वीतलमें घूमते हैं वे सब धर्मों से रहित होकर सदैव नरकको देखते हैं ५९ हे देवि! इसप्रकार देवताओं के हितके लिये हमारी वृत्ति निन्दितहै विष्णुजीकी आज्ञा से मैंने भस्म और हाँड़ोंका धारण कियाहै ६० ये बाह्यचिह्न वैरियों के मोहनके लिये हैं नित्यही हृदयके बीचमें जनार्दन देवको ध्यान कर ६१ तिनके मन्त्रतारक, ब्रह्मवाचक विष्णु नारायणजी के सहस्रनाम के समान ६२ रघुवंशियों के कुल के बढ़ानेवाले षडक्षर महामन्त्रको सदा जपकर सदैव आनन्द के अमृत से युक्त होकर

आत्यन्तिक ब्रह्मसुखको निरन्तर भोगताहूं ६३ हे सुन्दर मुखवाली पार्वती ! तुम्हारे पूंछे हुए इस सबको मैंने कहा अब तुम्हारे क्या सुननेकी इच्छाहै प्रीतिसे तिसको हमसे पूंछिये ६४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेपाखण्डोत्पत्तिवर्णननामपंचत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३५ ॥

दोसौछत्तीसका अध्याय ॥

तामसशास्त्रोंका वर्णन ॥

पार्वतीजीबोलीं कि हे पापरहित देवताओं के ईश्वर महादेवजी! भगवान् की भक्तिसे वर्जित तिन ब्राह्मणोंके कहेहुए तामस शास्त्रों को और क्रमसे तिनके नामों को हमसे कहिये १ तब महादेवजी बोले कि हे पार्वती देवी! क्रमसे तामसशास्त्रों को कहता हूं सुनिये २ तिनके स्मरणमात्रसे ज्ञानियोंकोभी मोह होताहै पहले मेराकहा हुआ शैव और पाशुपत आदिकहै ३ हमारी शक्तिसे आवेशित ब्राह्मणों के कहेहुओं को अब सुनिये कणाद का कहाहुआ वैशेषिक महत्शास्त्रहै ४ गौतमका न्याय, कपिलका सांख्य और धिषणका कहाहुआ अत्यन्त निन्दित चार्वाक है ५ दैत्यों के नाशने के लिये बुद्धरूपी विष्णुजी ने नग्ननीलपट आदिक असत् बौद्धशास्त्र कहा है ६ मायावाद असत्शास्त्र है प्रच्छन्नबौद्ध कहाता है कलियुग में ब्राह्मणरूपी मैंनेही कहाहै ७ वेदके वाक्योंका लोकनिन्दित अपार्थ दिखलाया है यहींपर अपना कर्मरूप त्याज्यत्व प्रतिपादनहै ८ सब कर्मसे परिभ्रष्टों ने तिसको वैधर्मत्व कहाहै मैंने परेशजीव पारैक्य प्रतिपादन कियाहै ९ और इनब्रह्माकारूप निर्गुण कहाहै कलियुग में सब संसार के मोहने के लिये १० मायासे जो अवैदिक वेदके अर्थकी नाईं महाशास्त्र है तिसको संसारके नाश होने के कारण से मैंनेही कल्पित कियाहै ११ हमारी आज्ञा से पहले जैमिनिजी ने अपार्थकवेद निरीश्वरवाद से बहुतभारी शास्त्र कियाहै १२ हे पार्वती! तामसशास्त्रोंको मैंनेकहा तिनको जानलेना अब क्रमसे तामस पुराणों को कहताहूं १३ ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारदीय,

सातवां मार्कण्डेय १४ आठवां अग्नि, नववां भविष्य, दशवां ब्रह्म-वैवर्त्त, ग्यारहवां लिंग १५ बारहवां वराह, तेरहवां वामन, चौदहवां कौर्म, पन्द्रहवां मत्स्य १६ सोलहवां गरुड़, सत्रहवां स्कन्द और अठारहवां ब्रह्माण्डपुराणहै ये क्रमसे हैं १७ मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कन्द और अग्निपुराण ये छः तामस हैं १८ विष्णु, नारदीय, भागवत, गरुड़, पद्म, वाराह १९ ये शुभसात्विक पुराण जानने चाहिये ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त्त, मार्कण्डेय २० भविष्य, वामन, ब्रह्म ये राजस पुराण जानिये तिनमेंसे सात्विक मोक्षदेनेवाले राजस सदैव शुभ २१ और तामस नरककी प्राप्ति के हेतुहैं तैसेही ऋषियों ने तीनों गुणसे युक्त स्मृतियां कही हैं २२ सात्विक, राजस और तामस, वासिष्ठ, हारीत, व्यास, पाराशर २३ भारद्वाज और काश्यप ये स्मृतियां सात्विक, मुक्तिदेनेवाली और शुभहैं याज्ञवल्क्य, आत्रेय, तैत्तिर, दाक्ष २४ कात्यायन और वैष्णव ये राजस स्मृतियां स्वर्ग देनेवाली और शुभ हैं गौतम, बार्हस्पत्य, सांवर्त, यम २५ सांख्य और औशनस ये तामस स्मृतियां नरक देनेवाली हैं यहांपर पुराणों और स्मृतियों में बहुत कहनेसे क्याहै २६ तामसनरकही के लिये है तिनको चतुर मनुष्य वर्जितकरै हे पार्वती! यहप्रसंगसे शुभदर्शन सबतुमसे वर्णन किया अब हरिजीकी शेष प्रभव अवस्थाको कहताहूं सुनिये २७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेतामसशास्त्र-कथनंनामषट्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३६॥

दोसौ सैंतीसका अध्याय॥

वराहजी के अवतार का वर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष ये दो कश्यपकी स्त्री दितिके पुत्र महाबली, महावीर्यवान् सबदैत्यों के पतिथे १ ये श्वेतद्वीप में जय, विजय द्वारपालक भगवान् के थे इन दोनों महाबली द्वारपालोंने योगीन्द्र सनकादिकोंको २ रोंकदिया था तब भगवान्‌के दर्शनकी उत्साहवाले सनकादिकों ने महावीर्य्य-वान्, देवताओं में उत्तम द्वारपालोंको शापदियाथा ३ कि तुम भग-

वान्के किंकरहुएहौ तुम दोनों पृथ्वीमें उत्पन्नहोवो महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार मुनीश्वर तिनको शापदेकर वहीं स्थितरहे ४ तब देव, भूतभावन, भगवान् तिस अर्थको जानकर द्वारपालोंको उठाकर और सनकादिकों को बुलाकर बोले कि इन महावीर्य्योंने महात्माओं का अपराध कियाहै ५। ६ ये आपलोगोंसे अतिक्रमण के योग्य नहीं हैं तुम दोनों मेरे द्वारपालक, सातजन्मतक दास, भक्त और पापरहितहौ ७ वैरसे तीन जन्मतक पृथ्वी में रहो महादेवजी बोले कि जब भगवान्ने इसप्रकार कहा तो जय, विजय परमेश्वर जीसे बोले ८ कि हे मान देनेवाले! बहुत समयतक पृथ्वी में जानेको हमदोनों समर्थ नहीं हैं तिससे आपसे वैरकेलिये जन्मोंको जानिये हमलोग जावेंगे ९ और हे देव! आपही से मृत्युको पाकर आपके समीप प्राप्तहोवें महादेवजी बोले कि ऐसा कहकर वे दोनों द्वारपाल पहले महाबली १० महावीर्य्यवान् महाअसुर, कश्यपजीकी स्त्री दिति के गर्भसे उत्पन्नहुए हिरण्यकशिपु ज्येष्ठ और हिरण्याक्ष छोटाहुआ ११ ये दोनों संसारमें प्रसिद्ध, महावीर्य बलसे उद्धतहुए उनमेंसे हिरण्याक्ष अप्रमाण देहवाला और महाउद्धत हुआ १२ यह हजार भुजाओंसे पर्व्वत, समुद्र, द्वीप और सबप्राणियोंसेयुक्त पृथ्वी को उखाड़कर १३ शिरमें धरकर रसातलको प्रवेश करगया तब सब देवसमूह भयसे पीड़ितहो पुकार मचाकर १४ रोगरहित नारायणजीकी शरणमें प्राप्तहोगये तब तो शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले भगवान् १५ विश्वरूप वाराहरूप को धारण करतेभये ये जनार्दन, अनादि मध्य और अन्त देहवाले, सर्वदेवमय, विभु १६ विश्वतः हाथ पांव और नेत्रवाले, बड़ीडाढ़ और भुजावाले परमेश्वरजी एकडाढ़से तिस दैत्यको मारतेभये १७ तब वह दैत्यों में अधम हिरण्याक्ष चूर्ण बड़ी देह होकर मरगया तब वाराहरूप भगवान् पतितधरणीको देखकर डाढ़से पूर्व्वकी नाईं उठाकर १८ शेषजी में स्थापित कर देतेभये तिन शूकररूप महाहरिजी को देखकर सब देवता और भक्ति से नम्रमूर्त्तिवाले मुनि स्तुति करतेभये १९ कि यज्ञ के शूकर, सैकड़ों भुजावाले, देवदेव, विश्वरूपी २० पालन के स्वरूप, सब यज्ञ के

भी स्वरूप, कलाकाष्ठानिमेषरूप, कालरूपी २१ प्राणियों की आत्मा, ऋग्वेद की देह, देवोंकी आत्मा, सामवेद २२ ओंकार, यजुर्वेदस्वरूपी और ऋग्वेद स्वरूपी, चतुर्वेदमय २३ वेद वेदाङ्ग सांगोपांग, गोविन्द, आदि और नाशसेरहित २४ वेद के जानने वाले, विशिष्ट एकस्वरूपी, लक्ष्मी पृथ्वी और लीलाके स्वामी और संसारके पिता आपके नमस्कारहैं २५ महादेवजी बोले कि इत्यादि स्तुतियोंसे देव, वाराहरूपी, आत्माके स्वामी, हरिजी की स्तुतिकर चन्दन और फूल आदिकों से २६ पूजन करतेभये तब तो गन्धर्व और अप्सराओं से आनन्दपूर्वक गानको प्राप्तहोकर भगवान् देवताओंको मनोवांछित वर देतेभये २७ और महर्षियों से स्तुतिको प्राप्त होकर तहांहीं अन्तर्द्धान होगये भक्तिमान् मनुष्य सबेरे उठ कर भक्तिसे इनसे स्तुतिकर २८ बहुतकाल अन्न और फलसे युक्त ईप्सित पृथ्वी को प्राप्त होताहै हे श्रेष्ठ मुखवाली देवी पार्वती! यह भगवान् के वाराहरूप का सब वैभव तुमसे कहा अब नृसिंहजी का चरित्र कहताहूं सुनिये २९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेवराहावतारकथनंनामसप्तत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३७ ॥

दोसौ अड़तीसका अध्याय ॥

नृसिंहजी का चरित्र वर्णन।

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! महादैत्य हिरण्यकशिपु भाई को माराहुआ जानकर सुमेरुके पार्श्व में हमारी तपस्या करताभया १ हे शुभे! वह महाबलवान् देवताओं के हजारवर्ष पवन भोजनकर पंचाक्षर मंत्रका जप करताहुआ हमारी पूजा करताभया २ हे सुन्दर मुखवाली! तबतो प्रसन्नमन होकर तिस महाअसुर से हम बोले कि हे दैत्य! जो तुम्हारे मनमें वर्त्तमानहो वह वरमांगो तो प्रसन्न हुए हमसे वह दैत्यबोला ३ कि देवता, असुर, मनुष्य, गन्धर्व, सर्प, राक्षस, पशु, पक्षी, हरिण, सिद्ध, महात्मा ४ यक्ष, विद्याधर, किन्नर, सबरोग, हथियार और सब मुख्य ऋषियों से मेरी मृत्यु न हो यही

मुझे दीजिये ५ तब महादेव जी बोले कि हे प्रियदर्शनवाली पा
र्वती! राक्षससे मैं यह कहताभया कि ऐसाही होगा तब महाबल
वान् दैत्य हमसे महान्वर को प्राप्त होकर ६ इन्द्र और देवों के
जीतकर तीनोंलोकका ईश्वर होगया सब यज्ञके भागों को बल से
आपही ग्रहण करताभया ७ तब उससे जीतेहुए देवता रक्षक के
न पाकर सब गंधर्व, देवता, दानव ८ यक्ष, नाग, सिद्ध और साध्य
उसी के वशमें वर्तमान नौकर होगये फिर महाबली दैत्योंका राज
उत्तानपादकी कन्या कल्याणीनामको विधिपूर्वक विवाह करताभय
तिसमें दैत्यों के राजा, महातेजस्वी प्रह्लादजी उत्पन्न हुए ९। १०
ये गर्भ में भी भगवान्ही में अनुरक्तहुए और मन, वचन, देह और
कर्मों से सब अवस्थाओं में कृत्यों में भगवान्ही में अनुरक्तभये ११
और प्रसन्नआत्मा होकर सनातन, देवों के स्वामी से अन्यदेव को
न जानतेभये फिर समय पाकर यह बुद्धिमान् नम्रहोकर गुरुजीके
घरमें बसकर १२ सब वेद और अनेकप्रकारके शास्त्रोंको पढ़तेभये
किसीसमयमें गुरुजीसमेत प्रह्लाद १३ नम्रतायुक्तहोकर पिताकेपास
आकर वन्दना करतेभये तब दैत्येन्द्र हिरण्यकशिपु शुभलक्षणवाले
पुत्रको भुजाओं से आलिंगनकर कोड़े में बैठाकर विस्मययुक्तहोकर
बोला १४ कि हे सुव्रत प्रह्लाद! तुम बहुतकालतक गुरुजी के घरमें
रक्खेगयेहो जो गुरुजी ने विद्या तुमसे कही है तिसको हमसे कहिये
१५ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार अपने पितासे पूछे
गये जन्मके वैष्णव प्रह्लादजी दैत्यों के स्वामीसे प्रीतिपूर्वक पाप
नाशनेवाले वचन बोले १६ कि जो सब उपनिषदोंका अर्थ, पुरुष
और ईश्वरहै तिस सबमें प्राप्त विष्णुजीके नमस्कार कर आपसे क
हताहूं १७ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! यह विष्णुजीकी स्तुतिसुन
कर विस्मययुक्त दैत्यराज क्रोधसे तिन गुरुजीसे बोला कि मेरेपुत्र
को आपने क्या पढ़ायाहै १८ हे दुर्बुद्धे! इस प्रकारके जाड्य, न क
रने योग्य, ब्राह्मणों के उचित भगवान्के स्तोत्रको किसलिये पढ़ाया
है १९ यह हमारे वैरीका स्तोत्र हमारे आगे नहीं सुनाने योग्यहै हे
ब्राह्मणों में अधम! तुम्हारेही प्रसादसे बालक ने यह पढ़ा है २०

ऐसाकहकर चारोंओर देखकर क्रोधसे मूर्च्छित दैत्यराज एक दैत्य से बोला कि इस अधम ब्राह्मण को बांधो २१ ये राजाके वचन सुनकर वह दैत्य भृगुजी के पुत्रको बांध देताभया तब ब्राह्मणोंके प्रिय प्रह्लादजी बँधेहुए गुरुजी को देखकर पितासे बोले कि हे पिताजी! यह गुरुजी ने हमसे नहीं कहाहै २२ हे प्रभो! देवदेव हरिजी की कृपासे सीखाहूं सोई प्रेरक भगवान् हमारे गुरुहैं और नहीं है २३ श्रोता, मंता, वक्ता, द्रष्टा, सबमें प्राप्त, ईश्वर, हरिही नाशरहित कर्ता और सब देहधारियों के नियंता हैं तिससे निरपराधी यह ब्राह्मण, गुरु छोड़देने योग्यहै२४शिवजी बोले कि हे पार्वती! ये पुत्रकेवचन सुनकर हिरण्यकशिपु तिस ब्राह्मणको छुड़ाकर विस्मयसे अपने पुत्र से बोला २५ कि हे बालक! तुम ब्राह्मणके झूठे वचनोंसे क्यों इस प्रकार भ्रमते हो विष्णु कौन है तिसका रूप क्याहै और यह हरि कहां स्थित है २६ संसार में मैंही ईश्वर त्रैलोक्य का स्वामी हूं मुझीको पूजिये दुरासद वैरी गोविन्दको छोड़ दीजिये २७ अथवा शंकर, देव, रुद्र, लोककेगुरु, प्रभु, असुरों के स्वामी, सब ऐश्वर्य के देनेवाले शिवजीको पूजन करो २८ भस्मसे त्रिपुंड्र धारणकर दैत्यों के पूजित महादेवजीको पाशुपत्योक्त मार्गसे पूजन करो २९ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ये दैत्य के वचन सुनकर दैत्योंके पुरोहित बोले ३० कि हे महाभाग! इसीप्रकार पिताके वचन करो कैटभके वैरी शत्रुरूपको त्यागकर महादेवजीको पूजिये ३१ महादेव से श्रेष्ठ मनुष्योंको सब देनेवाला कोई नहीं है तुम्हारे पिताभी तिन्हींके प्रसादसे ईश्वर होगयेहैं ३२ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ये तिनके वचन सुनकर जन्मके वैष्णव प्रह्लादजी बोले कि ३३ वेदान्तके जाननेवाले भगवान्की मायासे यह संसार मोहितहै श्रेष्ठ, सब लोकोंमें पूजित ३४ मदसे युक्त ब्राह्मणभी चपलतासे इसप्रकार कहते हैं नारायण, परब्रह्म, परंतत्व ३५ परध्याता, परंध्यान, संसारकीगति, शाश्वत, शिव, अच्युत ३६ धाता, संसारके विधाता, वासुदेव, सनातन हैं यह विश्वपुरुषही और संसारको भगवान्ही जिलाते हैं ३७ हिरण्मयदेह, नित्य, कमलकेसमान नेत्रवाले, लक्ष्मी,

पृथ्वी और लीलाके पति, सौम्य, निर्मल, शुभदेहवाले हैं ३८ सृष्टिमें तिन्हींके रचेहुए देवोंमें उत्तम, विभु, ब्रह्मा और महादेवजी हैं येदोनों देव तिन्हींकी आज्ञासे वर्तमान हैं ३९ पवन जिनकी आज्ञासे चलता, सूर्य उदयहोते, अग्नि, चन्द्रमा और पांचवां मृत्युभी चलता है ४० एकहरिही दिव्य, देव, नारायण, परहैं ब्रह्मा, इन्द्र, महादेव, चन्द्रमा, सूर्य ४१ आकाश, पृथ्वी, नक्षत्र और स्वर्गवासी ये कोई नहीं हैं विद्वान् लोग तिन विष्णुजी के परंधाम को सदैव देखते हैं ४२ हे उत्तमब्राह्मणो! इसप्रकार सब उपनिषदों के अर्थ को छोड़कर राग, लोभ वा डरसे क्या हमारे आगे कहरहेहो ४३ तिन सब के रक्षा करनेवाले, देव, सबके ईश्वर, हरिजीको छोड़कर कैसे पाखंड को आश्रयकर महादेवजीको पूजनकरूं ४४ लक्ष्मीजीके पति, देवदेव, अनन्त, पुरुषोत्तम, नीलकमलके समान श्यामवर्ण, कमलपत्र के समान बड़े नेत्रवाले ४५ भृगुलताके चिह्नसेयुक्त छातीवाले, सब गहनोंसे भूषित, सदैवकुमार, सबके स्वामी, नित्यानन्द सुखके देनेवाले ४६ कृष्णजी को महात्मा योगी सनकादिक ध्यान करते हैं ब्रह्मा, महादेव और इन्द्रादिक देवताओंके समूह जिनको पूजते हैं ४७ जिनकी स्त्रीकी कटाक्षकी आधी दृष्टिसे देखेगये देवता ब्रह्मा, इन्द्र, महादेव, वरुण, यमराज, चन्द्रमा और कुबेर हैं ४८ जिनके नामके स्मरणही से पापी प्राणियोंकी भी शीघ्रही ब्रह्मादिकोंको दुर्लभ मुक्तिहोती है ४९ सोई लक्ष्मी के पति सदैव देवताओं के रक्षा करनेवाले हैं तिन लक्ष्मीसंयुक्त अच्युतको मैं पूजनकरूंगा ५० जिससे सुखसे तिन विष्णुजीके परमपदको प्राप्तहोजाऊंगा महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ये तिनके वचन सुनकर हिरण्यकशिपु ५१ बड़े क्रोधसेयुक्त दूसरे अग्निहीकी नाई प्रकाशितहुआ और क्रोधसे मूर्च्छितहोकर चारोंओर दैत्योंको देखकर यह बोला ५२ कि हमारी आज्ञासे भयानक शस्त्रसमूहों से पापी, शत्रुके पूजनमें तत्पर ब्रह्मादिकों मारडालो ५३ इसके रक्षा करनेवाले हरि इसके ऊपर कृपाकर रक्षा करेंगे इसीसमयमें तिसके ऊपर भगवान्की रक्षा सफलदेखिये ५४ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! तिससमय में दैत्येश्वर की

आज्ञासे दैत्यलोग प्रह्लादजीके मारनेके लिये हथियार लेकर तैयार हुए और महात्माको निवारणकर स्थितहोगये ५५ प्रह्लादभीहृदय-कमलमें विष्णुजीको ध्यानकर अष्टाक्षरमन्त्र जपतेहुए दूसरे पर्वत की नाईं स्थितहोगये ५६ तब वीरलोग चारोंओरसे शूल, तोमर और शक्तियों से प्रह्लादजी को मारनेलगे उससमय में भगवान् के स्मरण और दुर्द्धर्ष प्रभावसे प्रह्लादजीकी देह वज्रके समान होगई तब वीरोंके महान् अस्त्र प्रह्लादजी की देहमें प्राप्तहोकर ५७। ५८ नीलकमल के दलकी नाईं कटकर पृथ्वी में गिरते भये दैत्यलोग थोड़ी भी तिनकी देह काटनेको समर्थ न हुए ५९ तबतो दैत्यराज के समीप विस्मितहोकर नीचेका मुखकर स्थित होगये तब क्रोधसे मूर्च्छितहोकर दैत्यराज तिसप्रकार के महात्मा महाबली पुत्रको देखकर परमविस्मय को प्राप्तहोकर सब महाविषवाले ६०।६१ भयानक वासुदेव इत्यादिक सर्पोंको आज्ञा देताभया कि क्रोधसे प्रह्लाद को खायजाइये तब तिस राजाकी आज्ञापाकर महाबली सर्प्प ६२ प्रकाशितमुखवाले, महाभयानक, तिसमहाबली, भगवान् के भक्त को खानेलगे और उनको काटकर विष आयुधवाले ६३ पवन भोजन करनेहारे सर्प विषरहित, कटे दांतोंवाले, हज़ार गरुड़ोंसे कटी देहहोकर व्याकुलहोकर ६४ वारंवार रक्त वमन करतेहुए सब दिशाओं में भागगये तिसप्रकार के भारी सर्प्पोंको देखकर दैत्यपति तिससमय में ६५ क्रोधितहोकर मदयुक्त दिग्गजों को आज्ञा देता भया तो उस राजाकी आज्ञापाकर मदोद्धत दिग्गज ६६ वारंवार दांतोंसे प्रह्लादजी को मारनेलगे तब तो उनके दांत जड़से कटकर पृथ्वीमें गिरपड़े ६७ तो दांतहीन हाथी भयसे व्याकुलहोकर भाग गये तिन महाहाथियों को देखकर बली दैत्येन्द्र क्रोधितहोकर ६८ बड़ी अग्निको जलाकर प्रह्लादको छोड़देताभया तबतो अग्नि भगवान् के प्यारे प्रह्लाद धीरको देखकर न जलाताभया अत्यन्त ठण्ढाहीहोगया तब नहीं जलेहुए बालकको देखकर विस्मययुक्त राजा ६९।७० तिनको सब प्राणियोंका हितकारी घोरविष देताभया तब तो विष्णुजीके प्रभावसे प्रह्लादजीको विषभी अमृतहोगया ७१

देवके अर्पणसे विष और अमृतको भोजन करगये इसीप्रकार के घोर मारनेके उपायों से ७२ पुत्रको मोहित कराकर और उसकी मृत्यु न देखकर विस्मयसे व्याकुल दैत्यराज सामसे पुत्रसे बोला ७३ कि तुमने हमारे आगे विष्णुजी का परत्व अच्छीतरह से कहा सब प्राणियोंके व्यापित्वसे विष्णु कहाते हैं ७४ जो यह सबमें प्राप्तदेवहैं सोई परमेश्वरहैं तिसका सबमें प्राप्तहोना प्रत्यक्ष हमको दिखलाइये ७५ ऐश्वर्य, शक्ति, तेज, ज्ञान, वीर्य्य, बल, तिसपरका परमरूप गुण विभूति ७६ प्रयत्नसे अच्छेप्रकार देखकर देवताओं के विष्णुको मैं मानताहूं संसार में देवों में कोई हमारे समान बलवान् नहीं है ७७ हे मान देनेवाले! महादेवजी के वरदानसे सब प्राणियों में अवध्यता को और सब प्राणियोंके दुर्जयत्वको मैं प्राप्तहुआहूं बल और वीर्य से विष्णुजी हमको जीतकर ईश्वरत्वको प्राप्तहोंगे ७८ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ये तिसके वचन सुनकर सुन्दर व्रतवाले प्रह्लाद जी विस्मय होकर भगवान् के प्रभावको दैत्यसे कहतेभये ७९ कि जो यह श्रीमान् नारायण, सनातन परमात्मा हैं सोई सब प्राणियों में बसनेसे वासुदेव कहाते हैं ८० सब संसारके पालन करनेवाले हैं इससे विष्णुजी कहाते हैं इनसे अन्य स्थावरजंगम कुछ संसार नहीं हैं ८१ सर्वत्र चित् अचित् वस्तु तिन्हींका रूपहै और नहीं है आकाश में त्रिपाद्व्याप्ति, पादव्याप्ति कला अद्भुतहै ८२ जो यह चक्र और गदा हाथमें लेनेवाले, पीताम्बर धारण करनेहारे जनार्दनजी हैं सो भक्तिसे योगियोंको दिखाई पड़ते हैं विना भक्तिके कभी नहीं दिखाई देते हैं ८३ देवता, तिर्यङ्, मनुष्य और स्थावर प्राणी राग और मत्सरसे भगवान्के देखनेमें समर्थ नहीं हैं सब बड़े और छोटों में व्याप्तहोकर भगवान् स्थितहैं ८४ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ये प्रह्लादके वचनसुनकर दैत्योंमें श्रेष्ठ हिरण्यकशिपु रोषसे ताम्रवर्ण नेत्रहोकर पुत्रको वारंवार डाटताहुआ बोला ८५ कि जो यह सबमें प्राप्त परमपुरुष विष्णुजी हैं तो इससमयमें प्रत्यक्ष दिखलाइये बहुतकहनेसे क्याहै ८६ महादेवजी बोले कि ऐसाकहकर दैत्य सहसा में अपने महलके खम्भेको हाथसे ताड़नाकर प्रह्लादसे यह बोला

८७ कि जो सबमें प्राप्त भगवान् हैं तो इसखम्भेमें तिनको दिखला-इये जो नहीं दिखलावेगा तो झूठबोलनेवाले तुझको मारडालूंगा ८८ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! ऐसाकहकर दैत्यों का स्वामी सहसासे तलवार खींचकर क्रोधसे प्रह्लादजी के मारने के लिये उन की छातीमें चलाताभया ८९ उस समयमें खम्भमें बड़ाशब्द सुनाई पड़ा मेघ और वज्रके शब्दोंसे मानों स्फुटित अंतर आकाशहै ९० दैत्यों के कान फोड़नेवाले तिस बड़े शब्दसे सब दैत्य इस प्रकार पृथ्वी में गिरा दियेगये जैसे कटीहुई जड़वाले वृक्ष गिरजाते हैं ९१ डरेहुए दैत्यलोग तीनोंलोकको संलुत मानतेभये तदनन्तर खम्भमें महातेजस्वी भगवान् निकलआये ९२ और संसारके नाशके समान घोरशब्द करनेलगे तिस बड़ेशब्दसे नक्षत्र पृथ्वीमें गिरतेभये ९३ तहांपर नृसिंहजीकी देहमें स्थितहोकर भगवान् प्रकटहोगये जोकि अनेक करोड़ सूर्य्य और अग्नि के तेजसेयुक्त ९४ मुख में सिंहके समान, देह में मनुष्य के आकार, दाढ़ोंसेयुक्त भयानक मुखवाले, प्रकाशिताजेह्वाम्बराद्दन ९५ ज्वालावलित केशों के अन्तवाले, तपेहुए अंगार के समान नेत्रयुक्त, विभुहैं ये सब हथियारोंसे युक्त, बड़ी हज़ार भुजाओंसेयुक्त होकर बहुतवृक्ष और पहाड़सेयुक्त सु-मेरुपर्वतकी नाईं शोभित हुए और सुन्दरमाला और कपड़े धारण किये सुन्दर गहनों से भूषित ९६। ९७ नृसिंहरूप भगवान् सब दानवों के मारनेके लिये स्थितहुए तिन घोर, महाबली नरसिंहजीको देखकर ९८ नेत्रोंकी पलक जलकर विह्वलअंग होकर दैत्येन्द्र गि-रपड़ा तिस समयमें प्रह्लादजी नारसिंहके उपमावाले, हरि, देवोंके स्वामी, जनार्दनजीको देखकर जयशब्दसे नमस्कार करतेभये और तिन नृसिंह महात्माकी देहों में ९९। १०० द्वीपसमुद्रोंसमेत लोक, देवता, गन्धर्व्व और मनुष्यों को देखते भये और तिनकी सटाके आगे अजाण्डोंका हज़ारा देखतेभये १०१ तिनकेनेत्रोंमें चन्द्रमा और सूर्य आदिक, कानों में देव अश्विनीकुमार, दिशा और विदि-शा १०२ माथे में ब्रह्मा और महादेव, नासिका में आकाश और पवन, मुखके अन्तमें इन्द्र और अग्नि, जीभ में सरस्वती १०३

डाढ़ों में सिंह, शार्दूल, गिरगिट, बड़ेसांप, कण्ठमें सुमेरुपर्वत, कांधों में बड़े बड़े पर्वत १०४ भुजाओं में देवता तिर्य्यक्, मनुष्य, नाभिमें अन्तरिक्ष, पांवों में पृथ्वी, १०५ रोमों में सब औषधियां, नहोंकी पंक्तियों में वृक्ष, निःश्वासों में सांगोपांग युक्त वेद १०६ सब अंगोंमें सूर्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेवा, मरुद्गण, गन्धर्व और अप्सरा दिखलाईपड़ीं १०७ इसप्रकार तिन परमात्माकी विभूतियां दिखलाईदीं भृगुलता और कौस्तुभमणि छातीमें धारे, वनमाला से विभूषित १०८ शंख, चक्र, गदा, खड्ग और शार्ङ्ग आदिक हेतियोंसेयुक्त, सब उपनिषदों के अर्थरूप भगवान् को देखकर प्रह्लादजी १०९ आनंद के आंशुओंके जलसेसींचे अंगहोकर वारंवार प्रणाम करतेभये हिरण्यकशिपु क्रोधसे भगवान्को देखकर मृत्युके वशमें स्थितहोकर ११० नृसिंहजीसे युद्धकरने के लिये तलवार उठाकर उनपर दौड़ा तदनन्तर सब दैत्यसमूह महाबली होशमें आकर १११ शीघ्रतासमेत अपने अपने हथियारोंको लेकर नृसिंहजीको मारनेलगे तो जैसे अग्निमें अनेकों पयालके काण्ड गिरकर भस्म होजावें ११२ तैसेही भगवान्की देहमें बड़े बड़े अस्त्र भस्म होगये तिस समयमें दैत्यों की सेनाओं को नृसिंहजी देखकर ११३ ज्वालाकी मालासे रचित स्फुटवाली सटाओंसे जलादेतेभये नृसिंहजीकी सटासे उत्पन्न अग्निसे दानव ११४ सब भस्म होगये अनुचरों समेत प्रह्लादजीही शेष रहगये इसतरह अपनी फ़ौजको भस्महुई देखकर ११५ क्रोध से हिरण्यकशिपु तलवार खींचकर प्राप्तहुआ तब भगवान् एकहाथ से तलवार हाथमें लियेहुए दैत्येन्द्रको पकड़कर ११६ इस प्रकार गिरादेतेभये जैसे आंधी वृक्षकी डालको गिरादेती है फिर नृसिंहजी बड़ी देहवाले हिरण्यकशिपुको पृथ्वीसे ग्रहणकर ११७ अपने कोड़ा में बैठा लेतेभये तब वह भगवान्कामुख देखनेलगा तो विष्णुनिन्दा से किया पाप और वैष्णवदोषसे उत्पन्नहुआ भी पाप ११८ नृसिंहजी के छूनेसे भस्महोगये तदनन्तर नृसिंहजी दैत्येश्वरको वक्षस्थल को तीक्ष्ण, वज्रके सदृश, घन, नहोंसे फाड़डालतेभये और वह दैत्यपति भगवान का साक्षात् मुख देखनेही से निर्मल आत्मा होकर

११९। १२० कृतार्थ होगया और नखोंसे हृदय फटनेसे प्राणों को छोड़ देताभया तब नृसिंहजी तीक्ष्णनखों से तिसकी देहके सैकड़ों टुकड़े करदेतेभये १२१ और बड़ी आंतोंको खींचकर कण्ठमें पहन लेतेभये तदनन्तर सब देवसमूह, तपस्वीमुनि १२२ ब्रह्मा और महादेवजी को आगेकर धीरे धीरेसे स्तुति करने को जातेभये और डरसमेत वे प्रकाशित, विश्वतोमुख भगवान्के प्रसन्न करनेके लिये १२३ माता, संसारकी धात्री, ईश्वरीजीको चिन्तना करतेभये और सोने के वर्णवाली, हरिणी, सब उपद्रव नाश करनेवाली १२४ विष्णुजी के नित्यही अनवद्य अंगवाली शुभनारायणीजी को ध्यान कर भक्तिसे देवीसूक्तके जपसे सनातनीके नमस्कार करतेभये १२५ तिनसे चिन्त्यमानहुई चारभुजा धारे, सुन्दर नेत्रवाली, सब गहनों से भूषित देवीजी तहांहीं प्रकट होगई १२६ रेशमी कपड़ों समेत, सुन्दरमाला और अनुलेपनधारे भगवान्की प्रियाको देखकर सब देवता १२७ हाथ जोड़कर देवीजीसे बोले कि अपने प्रियको प्रसन्न कीजिये और स्वामीजी जिसतरहसे तीनोंलोक को अभयदेवें तैसाही कीजिये १२८ महादेवजी बोले कि इसप्रकार कहनेपर सहसासे देवी प्रिय जनार्दनजीको प्राप्तहोकर नमस्कारकर बोलीं कि प्रसन्न हूजिये १२९ तब सर्वेश्वर हरिजी तिन अपनी प्यारी स्त्री को देखकर क्षणमात्रमें राक्षसके शरीरसे उत्पन्न क्रोधको त्यागकर देतेभये १३० और दयाके निधि भगवान् तिन देवीको कोड़में बैठाकर आलिंगनकर दयारूपी अमृतकी गीली दृष्टिसे देवताओंको देखनेलगे १३१ तब स्तुति और नमस्कार करतेहुए भगवान्की दयादृष्टिसे देखेहुओंका ऊंचीस्वरसे जय जय शब्द और आनन्दसमेत संभ्रम होताभया १३२ तदनन्तर हर्षयुक्त सब देवसमूह हाथ जोड़कर देव, संसारके पति भगवान्के नमस्कारकर बोले १३३ कि हे संसारके पति! आपके अत्यन्त अद्भुत तेजके देखने को हम लोग नहीं समर्थ हैं बहुत भुजा और चरणों से चिह्नित यह रूप आपका अत्यन्त अद्भुतहै १३४ और तीनोंलोकसे आक्रांत आपका अत्यन्त तीक्ष्ण तेजहै सब देवता यहां देखने और स्थितहोने को

डाढ़ों में सिंह, शार्दूल, गिरगिट, बड़ेसांप, कण्ठमें सुमेरुपर्वत, कांधों में बड़े बड़े पर्वत १०४ भुजाओं में देवता तिर्य्यक्, मनुष्य, नाभिमें अन्तरिक्ष, पांवों में पृथ्वी, १०५ रोमों में सब औषधियां, नहोंकी पंक्तियों में वृक्ष, निःश्वासों में सांगोपांग युक्त वेद १०६ सब अंगोंमें सूर्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेवा, मरुद्गण, गन्धर्व और अप्सरा दिखलाईपड़ीं १०७ इसप्रकार तिन परमात्माकी विभूतियां दिखलाईदीं भृगुलता और कौस्तुभमणि छातीमें धारे, वनमाला से विभूषित १०८ शंख, चक्र, गदा, खड्ग और शार्ङ्ग आदिक हेतियोंसेयुक्त, सब उपनिषदों के अर्थरूप भगवान् को देखकर प्रह्लादजी १०९ आनंद के आंशुओंके जलसेसींचे अंगहोकर वारंवार प्रणाम करतेभये हिरण्यकशिपु क्रोधसे भगवान्को देखकर मृत्युके वशमें स्थितहोकर ११० नृसिंहजीसे युद्धकरने के लिये तलवार उठाकर उनपर दौड़ा तदनन्तर सब दैत्यसमूह महाबली होशमें आकर १११ शीघ्रतासमेत अपने अपने हथियारोंको लेकर नृसिंहजीको मारनेलगे तो जैसे अग्निमें अनेकों पयालके काण्ड गिरकर भस्म होजावें ११२ तैसेही भगवान्की देहमें बड़े बड़े अस्त्र भस्म होगये तिस समयमें दैत्यों की सेनाओं को नृसिंहजी देखकर ११३ ज्वालाकी मालासे रचित स्फुटवाली सटाओंसे जलादेतेभये नृसिंहजीकी सटासे उत्पन्न अग्निसे दानव ११४ सब भस्म होगये अनुचरों समेत प्रह्लादजीही शेष रहगये इसतरह अपनी फ़ौजको भस्महुई देखकर ११५ क्रोधसे हिरण्यकशिपु तलवार खींचकर प्राप्तहुआ तब भगवान् एकहाथसे तलवार हाथमें लियेहुए दैत्येन्द्रको पकड़कर ११६ इस प्रकार गिरादेतेभये जैसे आंधी वृक्षकी डालको गिरादेती है फिर नृसिंहजी बड़ी देहवाले हिरण्यकशिपुको पृथ्वीसे ग्रहणकर ११७ अपने कोड़ा में बैठा लेतेभये तब वह भगवान्कामुख देखनेलगा तो विष्णुनिन्दा से किया पाप और वैष्णवदोषसे उत्पन्नहुआ भी पाप ११८ नृसिंहजी के छूनेसे भस्महोगये तदनन्तर नृसिंहजी दैत्येश्वरकी बड़ीदेह को तीक्ष्ण, वज्रके सदृश, घन, नहोंसे फाड़डालतेभये और वह दैत्यपति भगवान् का साक्षात् मुख देखनेही से निर्मल आत्मा होकर

११९। १२० कृतार्थ होगया और नखोंसे हृदय फटनेसे प्राणों को छोड़ देताभया तब नृसिंहजी तीक्ष्णनखों से तिसकी देहके सैकड़ों टुकड़े करदेतेभये १२१ और बड़ी आंतोंको खींचकर कण्ठमें प-हन लेतेभये तदनन्तर सब देवसमूह,तपस्वीमुनि १२२ ब्रह्मा और महादेवजी को आगेकर धीरे धीरेसे स्तुति करने को जातेभये और डरसमेत वे प्रकाशित, विश्वतोमुख भगवान्के प्रसन्न करनेके लिये १२३ माता, संसारकी धात्री, ईश्वरीजीको चिन्तना करतेभये और सोने के वर्णवाली, हारिणी, सब उपद्रव नाश करनेवाली १२४ वि-ष्णुजी के नित्यही अनवद्य अंगवाली शुभनारायणीजी को ध्यान कर भक्तिसे देवीसूक्तके जपसे सनातनीके नमस्कार करतेभये १२५ तिनसे चिन्त्यमानहुई चारभुजा धारे, सुन्दर नेत्रवाली, सब गहनों से भूषित देवीजी तहांहीं प्रकट होगई १२६ रेशमी कपड़ों समेत, सुन्दरमाला और अनुलेपनधारे भगवान्की प्रियाको देखकर सब देवता १२७ हाथ जोड़कर देवीजीसे बोले कि अपने प्रियको प्र-सन्न कीजिये और स्वामीजी जिसतरहसे तीनोंलोक को अभयदेवें तैसाही कीजिये १२८ महादेवजी बोले कि इसप्रकार कहनेपर स-हसासे देवी प्रिय जनार्दनजीको प्राप्तहोकर नमस्कारकर बोलीं कि प्रसन्न हूजिये १२९ तब सर्व्वेश्वर हरिजी तिन अपनी प्यारी स्त्री को देखकर क्षणमात्रमें राक्षसके शरीरसे उत्पन्न क्रोधको त्यागकर देतेभये १३० और दयाके निधि भगवान् तिन देवीको कोड़ में बै-ठाकर आलिंगनकर दयारूपी अमृतकी गीली दृष्टिसे देवताओंको देखनेलगे १३१ तब स्तुति और नमस्कार करतेहुए भगवान्की दयादृष्टिसे देखेहुओंका ऊंचीस्वरसे जय जय शब्द और आनन्द-समेत संभ्रम होताभया १३२ तदनन्तर हर्षयुक्त सब देवसमूह हाथ जोड़कर देव, संसारके पति भगवान्के नमस्कारकर बोले १३३ कि हे संसारके पति! आपके अत्यन्त अद्भुत तेजके देखने को हम लोग नहीं समर्थ हैं बहुत भुजा और चरणों से चिह्नित यह रूप आपका अत्यन्त अद्भुतहै १३४ और तीनोंलोकसे आक्रांत आपका अत्यन्त तीक्ष्ण तेजहै सब देवता यहां देखने और स्थितहोने को

समर्थ नहीं हैं १३५ महादेवजी बोले कि इसप्रकार देवताओं से स्तुति कियेगये भगवान् तिस अत्यन्त तेजको नाशकर सुखपूर्वक दर्शनवाले होगये १३६ शरदऋतुके करोड़ चन्द्रमाके समान, कमलके सदृश नेत्रवाले, अमृतमय सटासमूह से करोड़ बिजली के समान, शुभ, १३७ अनेकप्रकार के रत्नमय, सुन्दर, केयूर, बहूटायुक्त चार कोमल भुजाओं से इसप्रकार युक्त जैसे अच्छे फलवाली कल्पवृक्षकी डालों से कल्पवृक्ष युक्तहो ऐसे परमेश्वर, जपाके फूल के समान कमलरूपी हाथों से शोभित १३८।१३९ शंख और चक्र ग्रहण कियेहुए ऊपर के भुजाओं से विराजित, वर और अभय देनेवाले दो शेष भुजाओं से भी प्रकाशित, नृसिंह १४० भृगुलता और कौस्तुभमणि छाती में धारे, वनमाला से विभूषित, उदयहुए सूर्यों के समान कुण्डलों से विराजित १४१ हार, केयूर और कटक नाम भूषणोंसे अलंकृत और बायें अंगमें स्थित लक्ष्मी से युक्त नृसिंहजी हैं १४२ इसतरह लक्ष्मीजी और नृसिंहजीको देखकर महर्षियोंसमेत देवता आनन्दके आंशुओं के जलसे सींचगये आनंद चित्त में भरगया १४३ और आनन्द के समुद्र में डूबकर निरन्तर नमस्कारकर सुन्दरफूलों से भगवान्को पूजतेभये १४४ और अमृतसे पूर्णरत्नके कलशोंसे सनातन भगवान्को अभिषेककर कपड़े, गहने, चन्दन, फूल, मनोरमधूप १४५ और सुन्दरनैवेद्य और दीपों से नृसिंहजी को पूजनकर सुन्दर स्तोत्रोंसे स्तुति और बारंबार नमस्कार करतेभये १४६ तब लक्ष्मी के स्वामी, सबके स्वामी और भक्तों के ऊपर कृपाकरनेवाले भगवान् प्रसन्न होकर तिनको मनोवांछित वर देकर उन्हीं देवसमूहोंसमेत १४७ नाशरहित प्रह्लाद को सब दैत्यों का राजा करतेभये और भक्त प्रह्लाद को समझाकर उत्तम देवताओं से अभिषेक कराकर १४८ तिनको इष्टवर और अचल भक्तिदेकर सब देवताओं से स्तुति को प्राप्त और फूलोंकी वर्षा से आच्छादितदेह होकर नृसिंहजी तहांहीं अन्तर्द्धान होगये तबतो सब देवसमूहभी अपने अपने स्थानों को प्राप्त होगये १४९ १५० और प्रसन्नमन होकर अपने अपने यज्ञके भागोंको फिर भो-

जन करनेलगे तब तिस समयमें देवता और गन्धर्व आतंकरहित होगये १५१ तिस महादैत्य के मारेजाने में सब प्रसन्न होगये तब वैष्णव प्रह्लादजी धर्मसे राज्य करनेलगे १५२ श्रेष्ठ वैष्णव प्रह्लाद जी भगवान् के प्रसादसे मिलीहुई राज्यको धर्म्मसे कर बहुत यज्ञ और दान आदिकों से नृसिंहजी को पूजनकर १५३ समयपाकर सनातन, योगियों के जानेयोग्य भगवान् के पदको प्राप्त होतेभये इस प्रह्लादचरित्र को जे नित्यही सुनते हैं १५४ ते सम्पूर्ण पापसे छूटकर परमगति को प्राप्त होते हैं हे पार्वती देवी ! यह भगवान् के नृसिंहजीका वैभव तुमसे कहा अब क्रमसे शेष वैभव अवस्था को सुनिये १५५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेनृसिंहप्रादुर्भावोनामाष्टत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३८॥

दोसौउनतालीसका अध्याय ॥

वामनजीका चरित्र वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! प्रह्लादजी के पुत्र विरोचनहुए विरोचन के महाबाहु, प्रभु, वैश्वानर बलि उत्पन्नहुए १ यह धर्म्म जाननेवालों में श्रेष्ठ, सत्यप्रतिज्ञावाले, जितेन्द्रिय, भगवान् के अत्यन्तप्यारे, भक्त, नित्यही धर्ममें रत और पवित्रहुए २ येमहाबली बलि इन्द्रसमेत सब देवता और मरुद्गणों को जीतकर तीनोंलोकों को अपने वशमें स्थापितकर राज्य करतेभये ३ पृथ्वी विना जोतने के बहुत अन्न फलकी देनेवाली, सब गौवें कामना देनेवाली, वृक्ष फल और फूल देनेवाले ४ सब मनुष्य अपने धर्म्ममें निरत, पाप से वर्जित और ज्वररहित होकर भगवान् को पूजन करते भये ५ इसप्रकार बली दैत्यपति धर्म्मसे राज्य करताभया और इन्द्रादिक देवता तिसके नौकर उपस्थितहुए ६ तब बलके दर्पका हरनेवाला यह बलि तीनोंलोकोंमें ऐश्वर्य भोगनेलगा तब धर्मात्मा पयोव्रतसे युक्त कश्यपजी अदिति स्त्रीसमेत होकर इन्द्रकी भ्रष्टराज्य देखकर उनके हितकी कामनासे भगवान्की तपस्याकर ७। ८ देवेश, पद्म-

नाभ, जनार्दनजी को पूजन करतेभये इनके हज़ारवर्ष पूजन करने से हरि ९ सनातन भगवान् देवीसमेत प्रकट होगये तिन कमल-नयन, शंख, चक्र, गदा के धारण करनेवाले १० इन्द्रनीलमणि के समान श्यामवर्ण, सब गहनों से भूषित, प्रकाशित मुकुट, केयूर हार और कुण्डलसे शोभित ११ कौस्तुभमणिसे प्रकाशित छातीवाले पीले कपड़ों से आच्छादित, महात्मा श्रेष्ठमण्डल में लक्ष्मीसमेत बैठेहुए १२ संसारके स्वामीको देखकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कश्यपजी स्त्रीसमेत होकर आनन्दयुक्त चित्तसे उनके नमस्कारकर स्तुति करतेभये १३ कि लक्ष्मी के स्वामी, सब जाननेवाले, संसारके ईश्वर, सर्वात्मन्, सब देवों के स्वामी, सृष्टिके संहार करनेवाले १४ आदि और नाशरहित, अपार देहवाले, संसार के धारण करनेहारे, वेद और वेदांगकी देह, सर्वनेत्र १५ सबके आत्मा, अत्यन्त सूक्ष्म, कल्याणगुणों से पूर्ण, योगियों से ध्यान करने योग्य आत्मावाले १६ युवकुमार, लक्ष्मी, पृथ्वी और लीलाके स्वामी, नित्यमुक्त एकभोग, परधाममें स्थित १७ चतुरात्मा, चतुर्व्यूह, पंचअवस्था और पंचात्मक आपके नमस्कार हैं १८ पञ्चात्मकमें निष्ठा करनेवाले योगियों से आप सदा पूजेजाते हैं पञ्चार्थ तत्त्वके विद्वानोंके पञ्चसंस्कार में स्थितहैं १९ हे हरिजी! आपका पञ्चापरस्वरूप निरन्तर जानने योग्यहै और हे चारप्रकार परिपूर्ण आत्मावाले! कविलोग आपको नियत जानते हैं २० आपकी उत्पत्ति सब संसार को पवित्र करती है आपके दास जे त्रयीमय, कर्म्ममें निष्ठ, भक्तवत्सल ब्राह्मणहैं २१ तिनके दयायुक्त देखनेसे संसारके बन्धनसे मुक्ति होती है तीनोंलोक के पालन करनेवाले, आपही धारण करनेहारे, सबकी आत्मा २२ धाता, विधाता, संसार, संसारकेरूप, नारायण, कृष्ण, वासुदेव, शार्ङ्गधनुषधारी, विष्णु, जिष्णु और शुद्ध सतोगुणवाले आप के नमस्कारहैं २३ इत्यादिक स्तुतियोंसे महर्षि कश्यपने जब अच्छीतरह से स्तुतिकी तो जनार्दनजी प्रसन्नहोकर गम्भीरवाणी से बोले २४ कि हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुमने भक्तिसे मेरी पूजाकी है इससे मैं प्रसन्न हुआहूं वरदान मांगिये तुम्हारा कल्याणहो तुम्हारे वाञ्छितको मैं

करूंगा २५ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! तब स्त्रीसमेत कश्यप जी भगवान्से बोले २६ कि हे देवोंके स्वामी! हे देव! आप हमारे पुत्र होकर देवताओंका कल्याण कीजिये बलिने बलसे तीनोंलोक जीतलिये हैं २७ इससे उपेन्द्रनामसे प्रसिद्ध इन्द्रके छोटेभाई होकर जिस किसी राहसे मायासे बलिको जीतकर हमारेपुत्र इन्द्रको तीनों लोक दीजिये २८ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! तिन ब्राह्मण ने जब इसप्रकार कहा तो भगवान् बोले कि ऐसाहीहोगा तब तो देवताओंसे स्तुतिको प्राप्त होकर भगवान् तहांहीं अन्तर्द्धान होगये २९ इसीसमयमें कश्यप महात्माकी अदिति स्त्रीकेगर्भ में प्राणियों की रक्षा करनेवाले भगवान् प्राप्त होगये ३० और तिसी समय में महातपस्वी बलिजी आठ महर्षियोंसमेत विधिपूर्व्वक बड़ीभारी यज्ञका प्रारम्भ करतेभये ३१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेवामनप्रादुर्भावोनामैकोनचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः२३९॥

दोसौचालीसका अध्याय ॥

वामनजीका चरित्र वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! अदितिजी हज़ारवर्ष के अन्त में सब लोकोंके महेश्वर, वामन, विष्णु, अच्युतजी को उत्पन्न करतीभई १ यह भृगुलता छातीमें धारे, पूर्ण चन्द्रमा के समान द्युति वाले, सुन्दर, कमलनयन, अत्यन्त छोटीदेहवाले, हरि २ ब्रह्मचारी का वेषधारे, देव, सब वेदांगगोचर, मेखला, मृगछाला और दण्ड आदिक चिह्नोंसे चिह्नित, ईश्वर हैं ३ तिन महातेजस्वी वामनजी को देखकर महर्षियोंसमेत सब इन्द्रादिक देवता स्तुतिकर नमस्कार करतेभये ४ तब भगवान् प्रसन्नहोकर श्रेष्ठदेवताओं से बोले कि हे सुरोत्तमो! हमको इससमयमें क्या करना चाहिये सो कहिये ५ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब तो प्रसन्न होकर देवता तिन परमेश्वरजी से बोले कि हे मधुदैत्यके मारनेवाले! इससमयमें बलि जीका यज्ञ होरहाहै ६ और हे प्रभुजी! तिस दैत्यपतिका अप्रत्या-

स्यानकाल यहहै इससे आप उससे तीनोंलोक मांगकर हमारेदेने के योग्यहैं ७ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! सब देवताओंके इस प्रकार कहनेपर वामनजी, आठ ऋषियोंसमेत यज्ञके स्थानमें बैठे हुए बलिके पास जातेभये ८ तब दैत्यराज, अभ्यागत तिनको देखकर सहसा से उठताभया और अभ्यागत आपही विष्णुजी हैं इस हाससे युक्तहोकर ९ फूलों के आसन में बैठाकर विधिपूर्वक पूजनकर हाथजोड़ नमस्कारकर गद्गदवाणी से बोला १० कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ! मैं धन्य और कृतकृत्यहूं मेराजीवन सफल हुआहै आपकीपूजनकर आपका क्या प्रियकरूं ११ हे उत्तम ब्राह्मण! हे वेद जाननेवालों में श्रेष्ठ ! हमारा उद्देशकर जिसलिये आप आयेहैं वह आपको शीघ्रही दूंगा आपकहिये १२ महादेवजी बोले किहे पार्वती ! तब प्रसन्नमन होकर वामनजी तिस राजासे बोले कि हे राजाओंमें श्रेष्ठ ! अपने आनेका कारण कहताहूं सुनिये १३ हे मानके देनेवाले दैत्यों के स्वामी ! हमारे तीन पांव अग्निकुण्ड की पृथ्वी हमको दीजिये और कुछनहीं इच्छाकरताहूं १४ सब दानोंसे पृथ्वी का दान उत्तमहै जो राजा दरिद्री ब्राह्मण को अंगूठेभर भी पृथ्वी देताहै वह पृथ्वीका स्वामी होजाताहै पृथ्वीके दानके समान यहां पर कोईपवित्र नहींहै १५।१६ जो पृथ्वीको ग्रहणकरता और जो दान करताहै ये दोनों पुण्यकर्म करनेवाले नाश होने में स्वर्ग को जातेहैं १७ हे महाराज ! हे भूप ! तिससे तीनपैग पृथ्वी हमकोदीजिये इसथोड़ी पृथ्वी देनेमें शंका न कीजिये तीनोंलोक देनेवाला नामहोगा १८ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! तब तो राजा प्रसन्नमुख होकर बोला कि ऐसाही करेंगे फिर विधिपूर्वक वामनजी को पृथ्वी दान करनेको मानताभया १९ तिससमय में तिस दैत्यराज को देखकर उन्हीं के पुरोहित शुक्रजी बोले कि हे राजन् पृथ्वी को मतदीजिये २० ये विष्णु, परेश, देवोंसे प्रार्थनाको प्राप्तहोकर छलकर सब पृथ्वी तुमसे प्राप्त होनेको यहां आयेहैं २१ हे भूपते! हे राजन् ! तिससे तिन महात्माको पृथ्वी न देनीचाहिये हमारे वचनसे और द्रव्य दीजिये २२ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! तब हँसकर

राजा धैर्य्य से तिन गुरुजी से बोले कि भगवान् की प्रीतिके लिये सबपुण्य मैंने की है २३ इससमयमें मैं धन्यहूं जो आपही विष्णुजी प्राप्तहोगये तिनको इससमय में मुझे बड़े सुख देनेवाला जीवनभी देनाचाहिये २४ तिससे इनको बहुतजल्द तीनोंलोकोंको भी दूंगा महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ऐसा कहकर राजा वामनजी के चरण भक्तिसे धोकर २५ विधिसे जलपहले लेकर नमस्कारकर वांछितभूमि और दक्षिणा देतेभये २६ और प्रसन्नहोकर फिर ब्राह्मण से बोले कि हे द्विज! आपको पृथ्वी देकर मैं धन्य और कृतकृत्यहूं २७ हे विप्रेन्द्र! जो आपको पृथ्वी इष्टहो वहग्रहण कीजिये महादेव जीबोले कि हे पार्वती! तब विष्णुजी तिस राजासे बोले कि राजन् तुम्हारे समीपसे २८ तुम्हारे देखतेही देखते पांवसे पृथ्वीको मापताहूं ऐसा कहकर परमेश्वरजी छोटेरूपको छोड़कर २९ त्रिविक्रमदेह होकर इस पृथ्वी को ग्रहण करते भये पचास करोड़ विस्तृत, समुद्र, पर्व्वत ३० सागर, द्वीप, देवता, असुर और मनुष्योंसमेत पृथ्वीको भगवान् एकही पैगसे नापकर ३१ दैत्यराजसे बोले कि इस समय में क्याकरूं यह ईश्वरका बड़ा तेजस्वी त्रिविक्रमरूप ३२ देवता और महात्माऋषियों के हितकेलिये है ब्रह्मा और महादेव जीभी नहीं देखसक्ते हैं ३३ हे शुभे पार्वती! वहपद सौयोजन विस्तृत सबपृथ्वीको नाप लेताभया ३४ फिर सनातन भगवान् तिस राजा को दिव्यनेत्र देतेभये और अपने जनार्दनरूप को भी दिखलाते भये ३५ तब आनन्द के आंशुओं से युक्त दैत्येश्वर बलिभगवान् के विश्वरूप को देखकर अतुल आनन्द को प्राप्त होताभया ३६ और प्रसन्नहृदय से भगवान् के दर्शन नमस्कार और स्तुतियों से स्तुतिकर गद्गदवाणीसे बोला ३७ कि हे परमेश्वर! आपको देखकर मैं धन्य और कृतकृत्य हूं इन तीनोंलोकों को आप ग्रहण कीजिये ३८ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब तो सर्वेश्वर, विष्णु, अच्युतजी नाशरहित दूसरे पांवको ब्रह्मलोकपर्य्यन्त ऊपर फैलाते भये ३९ तो भगवान् के पदसे नक्षत्र और ग्रहोंसे युक्त, सब देवताओं समेत परिपूर्ण होगया ४० तब पितामह ब्रह्मा आनन्दयुक्तचित्तसे

चक्र और कमलआदि से चिह्नित भगवान् के चरणको ४१ धन्य हूं ऐसाकहकर अपने कमण्डलुकोलेकर वहांके स्थित जलसे भक्तिपूर्वक धोलेतेभये ४२ तो विष्णुजी के प्रभावसे नाशरहित, निर्मल जलहोकर सुमेरुपर्वत के कँगूड़ेमें गिरकर तीर्थ होगया ४३ फिर संसारके पवित्र करनेके लिये चारों दिशाओं में बहायागया सिता, अलकनन्दा और चक्षुर्भद्रा ये क्रम से नामहुये ४४ अलकनन्दा सुमेरुपर्वत के दक्षिणवाली कहाई इसके तीन नामहुए त्रिपथगा, त्रिस्रोता और संसारके पवित्र करनेवाली ४५ स्वर्गमें मन्दाकिनी कहाई पाताल में भोगवती और मध्यमें मनुष्यों के पवित्र करनेके लिये वेगयुक्त, कल्याण करनेवाली गंगा कहाई ४६ हे सुन्दरमुखवाली पार्वती! सुमेरुके बीचमें बहतीहुई तिनको देखकर आत्माके पवित्र करनेके लिये शिरसे मैं धारण करताभया ४७ हे देवि! देवताओंके हज़ारवर्ष शुभगंगाजल को धारणकर सब लोकोंमें पूजित शिवजी के भावको प्राप्त होगया ४८ जो शिरसे विष्णुजीके चरण से उत्पन्न गंगाजल को धारण करता है वा पीताहै वह निस्सन्देह संसारमें पूज्य होजाताहै ४९ जो सैकड़ों योजनोंसे गंगागंगा ऐसा कहता है वह सब पापोंसे छूटकर विष्णुलोक को प्राप्त होताहै ५० तदनन्तर राजाभगीरथ और महातपस्वी गौतमजी तपस्यासे हमको पूजनकर गंगाजी को मांगते भये ५१ तब सब मनुष्योंके हितकेलिये वैष्णवी, शिवा, गंगाजीको प्रीतिसे तिनको मैं देताभया ५२ गौतमजी करके लाईगई तिससे गौतमी कहाईं भगीरथ राजा से युक्तथीं इससे भागीरथी नामसे प्रसिद्धहुईं ५३ प्रसंगसे अत्युत्तम गंगाजी के जन्मको तुमसे कहा तदनन्तर श्रीमान्, नारायण, प्रभुजी दैत्यपति बलिको ५४ शुभ रसातललोक देतेभये सब दानव, नाग और जलजन्तुओं का ५५ प्रलयपर्यन्त राजा बलि को करते भये और दैत्यों के मारनेवाले भगवान् ब्रह्मचारी के वेषसे बलिके लोकों को लेकर ५६ प्रीति से इन्द्रको देतेभये तब गन्धर्वोंसमेत देवता और महातेजस्वी ऋषि ५७ भगवान् की सुन्दर स्तुतियों से स्तुति और पूजाकरतेभये तब हरिजी उस महद्रूपसे दर्शनदेकर

छोटा रूपकर ५८ देवताओं से स्तुति को प्राप्त होकर अन्तर्द्धान होगये इसप्रकार प्रभविष्णु विष्णुजी ने इन्द्रकी रक्षाकी ५९ और इन्द्र तीनों लोकके महान् ऐश्वर्यकोभी प्राप्तहोगये हे देवी पार्वती ! यह वामनजीका शुभ वैभव तुमसे कहा अब शेष जो वैभवहै तिस को क्रमसे कहता हूं ६० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेवामनप्रादुर्भावोनामचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४० ॥

दोसौइकतालीसका अध्याय ॥

परशुरामजीका चरित्र वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! भृगुजी के पुत्र महान्, ब्राह्मणों में उत्तम जमदग्निजी हुए ये सब वेद और वेदांगके पारगामी, महातपस्वी हुए १ और गंगाजी के शुभ किनारे यह धर्मात्मा एकहज़ार वर्षपर्यन्त इन्द्रकी तपस्या करते भये २ तब प्रसन्न होकर इन्द्र भगवान् यहबोलतेभये कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! जो तुम्हारेमनमें वर्त्तमानहो वह वरमांगिये ३ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! तब ब्राह्मणोंमें ऋषि जमदग्निजी प्रसन्न हुए इन्द्रसे बोले कि हे देव ! सदैव सब काम देनेवाली कामधेनु दीजिये ४ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! तब तिससमयमें प्रसन्न हुए देवोंके स्वामी इन्द्र तिन ब्राह्मण को सब कामना देनेवाली कामधेनु देवी देतेभये ५ तब महातपस्वी जमदग्निजी कामधेनु देवीको पाकर बड़े ऐश्वर्ययुक्त दूसरे इन्द्रकी नाईं बसतेभये ६ फिर महातपस्वी जमदग्निजी रेणुककी सुन्दर रेणुका नाम कन्याको विधिपूर्वक विवाह करतेभये ७ यह धर्मात्मा तिसकेसाथ अनेकोंवर्ष इसप्रकार रमणकरतेभये जैसे इन्द्र इन्द्राणी के साथ रमण करते हैं ८ तदनन्तर यह धार्मिक पुत्रकी कामनासे यज्ञ करतेभये और यज्ञसे ईश्वर इन्द्रको प्रसन्न करतेभये ९ तब प्रसन्न होकर इन्द्र तिनको महाबली, महातेजस्वी, महाबाहु और सब शत्रुओंको ताप देनेवाले पुत्र होनेका वर देतेभये १० तदनन्तर समय करके जमदग्निजी रेणुकामें महावीर्यवान् और बलयुक्त

पुत्रको उत्पन्न करतेभये ११ यह विष्णुजी के अंशांशभागसे सब लक्षणोंसे लक्षितहुए तिनपुत्र महावीर्यवान्‌का इन्हींके पितामह भृगुजी १२ आनन्दसे विष्णुजीके अंशसे उपलक्षित, राम यह सुन्दरनाम रखतेभये १३ और जमदग्निजीसे उत्पन्नहुए इससे जामदग्न्य कहाये यह भृगुके वंशवाले श्रेष्ठ ब्राह्मण बढ़तेभये १४ तो जनेऊहोकर सब विद्या पढ़ाकर निपुण किये गये फिर यह तपस्या करने के लिये शालग्रामपर्वतको गये १५ तो अपारतेजस्वी कश्यपजीको तहांपर देखतेभये तबतो आनन्दसे युक्त होकर ब्राह्मण, मरीचिजीकेपुत्र १६ विधिपूर्वक तिनको नाशरहित वैष्णवमन्त्र देतेभये तबतो कश्यप महात्मासे मन्त्र पाकर परशुरामजी १७ विधिपूर्वक भगवान्‌को पूजन करते भये दिनरात षडक्षर महामन्त्रको जपकर १८ विष्णु, सबसेंप्राप्त, हरिजी को ध्यानकर यह धर्मात्मा भार्गवजी बहुत वर्ष तक तपस्या करतेभये १९ और जितेन्द्रिय, सत्य बोलनेवाले महातपस्वी, ब्राह्मणोंमें ऋषि जमदग्निजी गंगाजी के शुभ किनारे स्थित हुए २० वहांपर विधिपूर्वक यज्ञदानादिक महान् धर्म करते भये इन्द्रकी गऊके प्रसादसे तिनके सम्पदा पूर्ण रहती भई २१ किसीसमय हैहयकास्वामी राजा कार्त्तवीर्य सब सेनासे युक्त होकर सब राजाओंको जीतकर २२ भार्गव जमदग्निजीके स्थानको प्राप्त हुआ और तिन महाभाग श्रेष्ठमुनिको देखकर वन्दना करताभया २३ और तिन महर्षि भावितात्माकी कुशल पूंछकर राजा तिनको कपड़े और गहने देताभया २४ तब जमदग्निजी घरमें आयेहुए उत्तमराजाकी मधुपर्कविधिसे पूजा करतेभये २५ और सेनासमेत श्रेष्ठ राजाके भोजन देनेके लिये इन बुद्धिमान् मुनिने कामधेनुकी प्रार्थनाकी २६ तो वह तिसीसमयमें संपूर्ण अन्नपानादिकको उत्पन्न करदेतीभई तब महातपस्वी जमदग्निजी कामधेनुके उत्पन्नकियेहुए नाशरहित अन्न और पान आदिकको २७ सेनासमेत राजाको देदेतेभये तब कुतूहलयुक्त राजा तिस कामधेनुको देखकर २८ तिस गऊमें वांछा करताभया फिर इस दुर्मति राजाने जमदग्निजी से कामधेनुकोमांगा २९ कि हे ब्राह्मण! हे अच्छेव्रतकरनेवाले! सब कामना

देनेवाली कपिलागऊको हमें देदीजिये आपको मैं और हज़ारगऊ देदूंगा ३० महादेवजी बोले कि हे पार्वती! जब तिस राजाने महातपस्वी जमदग्निजी से यह कहा तो वे उससे बोले कि हे राजन्! मैं इस कामधेनुको आपको नहीं देसक्ता हूं ३१ इसकी देवदेव इन्द्र ने रक्षाकी है इससे देवताओंके धनको कैसे मैं देसक्ताहूं ३२ महादेव जी बोले कि हे पार्वती! जब मुनिने यहकहा तो सबसेनासे युक्तराजा क्रोधकर बलसे कामधेनु को ग्रहण करताभया ३३ तब महाभागा कामधेनु क्रोधकर सींगों और खुरोंसे कार्तवीर्य्यकी सेना को नाश करने लगी ३४ मुहूर्तमात्रही में बलसे तिसकी सेना को नाशकर कामधेनु देवी अन्तर्द्धान होकर क्षणमात्रमें इन्द्रके समीप प्राप्त होगई ३५ तब तो अपनी सेना को नष्टहुई देखकर क्रोधसे मूर्च्छित अर्जुन मुट्ठीसे भार्गव द्विजश्रेष्ठ को मारताभया ३६ तिससे बहुत ताड़ितहुए जमदग्निजी विकल अंगहोकर कँपकर सहसासे पृथ्वी में गिरकर मरजातेभये ३७ तब पापात्मा हैहयाधिप मुनिको मार कर महाभयसे युक्त आत्माहोकर अपने नगरको प्रवेश करताभया ३८ भार्गव परशुरामजी देवदेवेश को पूजन करतेथे तब उनसे पूजित होकर देव केशवजी प्रसन्न होकर बोले ३९ कि हे वत्स! नियतात्मा तुम्हारे तपसे मैं प्रसन्नहूं हे विप्र! अपनी श्रेष्ठ शुभ शक्ति को तुमको दूंगा ४० हमारी शक्तिसे प्रवेशयुक्त होकर तुम पृथ्वीके भारके नाश करने और देवताओं के हितके लिये दुष्ट राजाओंको नाश कीजिये ४१ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! ऐसा कहकर भगवान् शत्रुओंकेधर्षण करनेवाले फरसे, वैष्णव बड़ा धनुष और अनेक सुन्दर अस्त्रोंको देकर परशुरामसे बोले ४२ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शत्रुके वीरोंके नाश करनेवाले तुम मदोत्कट बहुत राजाओं को मारकर समुद्रपर्य्यन्त सब पृथ्वी को ग्रहण कीजिये ४३ धर्म्म और बड़ेवीर्य्य से युक्त होकर पृथ्वीका पालनभी करिये फिर हमारे प्रसादसे कालपाकर हमारे पदको प्राप्त होजावोगे ४४ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! ऐसा कहकर परशुरामको वर देकर भगवान् अन्तर्द्धान होगये और परशुरामजी पिताके स्थान देखनेकी इच्छा

से वहां को जातेभये ४५ तो पिताको माराहुआ देखकर क्रोधसे मूर्च्छित परशुरामजी होगये और राजाओं से व्याकुल पृथ्वी को क्षत्रियरहित करनेकी इच्छा करते भये ४६ तब तो क्रोधके प्रवेश से प्रकाशितदेह होकर राजा से युक्त हैहयपति के नगरको जाकर हथियार लेकर उसके द्वारमें स्थित होजातेभये ४७ तिन महातेजस्वी, देहसे प्रकाशित परशुरामजीको देखकर कार्तवीर्य्यके पुरके मनुष्य कालकी अग्निकी नाईं मानते भये ४८ और सब भयसे व्याकुल होकर भागकर हैहयके स्वामी राजासे तिन महासत्व सब आयुध से युक्तको कहतेभये ४९ तब राजा तिनके वचन सुनकर विस्मययुक्त चित्तसे तिनसे बोला कि यह कौनहै जो हथियारोंसमेत बलसे हमारे पुरके द्वारमें स्थितहै ५० इन्द्र वा यमराज वा महादेव वा कुबेरभी हथियारोंसमेत होकर हमारे पुरके द्वार में स्थित होने को कभी समर्थ नहीं हैं ५१ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! ऐसा कहकर दुर्बुद्धि वहराजा तिनके देखनेको महाबली वीरोंको भेजकर यह बोला कि इसको पकड़लावो ५२ तबतो वीर जाकर पुरके द्वार में महाबली वीरको कालाग्निकीनाईं प्रकाशित और अपने तेजसे नहीं देखने योग्य देखतेभये ५३ तिनके देखने में भी वे महाबली वीर न समर्थहुए परन्तु तिनवीरके पकड़नेकी इच्छाकर चारोंओर प्राप्तहोतेभये ५४ तिनराजाके सब वीरों को हथियारसमेत देखकर विप्रेन्द्र महाबली परशुरामजी बोले ५५ कि हे अधम मनुष्यो! मैं जमदग्निजीका पुत्र परशुरामहूं अपने पिताके मारेजानेसे सब उत्तम राजाओंको मारडालूंगा ५६ कार्तवीर्य्यके रक्तमें तिलमिलाकर अपने पिताको तिलांजलिदूंगा और उसके कमलरूपी शिरसे पिण्डदानदूंगा ५७ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ऐसा कहनेपर वे महावीर्य्य तिस राजाके नौकर बाणों से परशुरामजी को इसप्रकार ताड़ना करनेलगे जैसे पयालोंसे अग्नि ताड़नकीजावे ५८ तदनन्तर महावीर्य, सत्यपराक्रमी परशुरामजी क्रोधयुक्त होकर वैष्णव धनुष खींचकर प्रत्यंचाके शब्दको करतेभये ५९ तिसमहान् शब्द से तीनों भुवन पूरितहोगये देवताओंको भी बड़ाभारी डरहुआ६०

तब महाबली परशुरामजी अग्निकेसदृश बाणोंसे राजाके महाबली वीर नौकरोंको ताड़ना करतेभये ६१ तिसमहात्मा राजाके वीरोंको मारकर सब प्राणियों के भय देनेवाले परशुरामजी कालकी अग्नि की नाईं स्थित होतेभये ६२ तब तो बुद्धिमान् परशुरामजी से अपने नौकरों को नष्टहुए सुनकर वीर हैहयाधिप क्रोध से लालनेत्र कर ६३ जहांपर नाशरहित परशुरामजी थे तहांको सेनासमेत जाताभया और महाभयानक अपने तेजसे प्रकाशित परशुरामजीको देखकर ६४ सबमनुष्य डरकर मनुष्योंके नाशकी शंका मानतेभये तिससमयमें परशुरामजी और राजाका बड़ाघोर युद्ध होनेलगा ६५ भयानक शस्त्र और अस्त्र मेघोंकी वर्षाकीनाईं गिरनेलगे तब महातेजस्वी परशुरामजी राजाकी सेनाको तिससमयमें ६६ लीलासे वैष्णव अस्त्रसे क्षणमात्रमें जला देतेभये और तीक्ष्ण फरसासे अमितपराक्रमी ने ६७ दुर्बुद्धि कार्तवीर्यके हजार भुजाओं को भी काटडाला तब तो महावीर्यवान् राजाभी परशुरामजी से युद्ध करनेको न समर्थहुआ ६८ अपनेही पापसे दुर्बुद्धि नष्टवीर्य होगया तबक्रोधयुक्त, बली, रेणुकाके पुत्र परशुरामजी तिसके शिरको काटडालतेभये ६९ जैसे वली इन्द्रने वज्रसे बड़े पर्वतके कँगूड़े को काटडालाहै तैसेही प्रतापयुक्त परशुरामजी तिस सहस्रबाहुको मारकर ७० संग्राममें सब राजाओं को मारा महाभयानक परशुरामजी को देखकर राजा लोग पृथ्वी में ७१ भयसे व्याकुल होकर सब इसप्रकार भागे जैसे सिंहको देखकर हाथी भागजाताहै तबतो भागेहुए भी राजाओंको पिताके नाशके क्रोधसे ७२ क्रोधितहोकर परशुरामजी इसप्रकार मारतेभये जैसे गरुड़ सर्प्पोंको मारताहै प्रतापी परशुरामजी सब क्षत्रिय मारडालतेभये ७३ एक इक्ष्वाकु के महान् कुलको नानाके वंशहोने और माताके वचनसे रक्षा करतेभये ७४ राजाओंके कुल के नाश करनेवाले परशुरामजी नानाके कुलके उत्पन्नहोनेवालों को भी राज्यसे भ्रष्टकरदेतेभये परन्तु तिनमनुके वंशवालोंको नहीं मारतेभये ७५ वीर्य्यवान्, बली जमदग्निके पुत्र सब राजाओंके वंश को नाशकर पृथ्वीको क्षत्रियहीनकर ७६ विधिपूर्वक ब्राह्मण अश्व-

मेध महायज्ञ को करतेभये और श्रेष्ठ ब्राह्मणों को सातों द्वीपवाली पृथ्वी देदेतेभये ७७ फिर प्रतापी परशुरामजी ब्राह्मणों को पृथ्वी देकर तपस्याकरनेको नरनारायण के स्थानको चलेगये ७८ हे देवि पार्वती ! यह महात्मा, शक्तिके प्रवेशके अवतारवाले, शार्ङ्गधनुषधारी, प्रभु, परशुरामजी का चरित्र तुमसे कहा ७९ तिसमहात्माके शक्तिके प्रवेशसे उपास्य नहीं होताहै श्रेष्ठब्राह्मण, महात्मा, भगवद्भक्तोंको ८० राम और कृष्णजी के अवतार उपासना करने योग्य हैं ये अच्छे गुणोंसे परिपूर्ण, ऋषियोंसे उपासना कियेगये और मनुष्यों को मोक्षके देनेवाले हैं ८१ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेपरशुरामचरितंनामैकचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४१ ॥

दोसौबयालीसका अध्याय ॥

रामचन्द्रजीका चरित्र वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! पूर्वसमयमें स्वायम्भुवमनु गोमतीनदी के किनारे निर्मल, शुभ नैमिषारण्यमें द्वादशार्ण महामन्त्र को जपतेभये १ इन्होंने हज़ारवर्षतक भगवान्की पूजाकी तब हरिभगवान् उनसे बोले कि हमसे वरमांगो २ तब आनन्दसे स्वायम्भुवमनु भगवान्से बोले कि हे देवों के स्वामी ! हे अच्युत ! आप तीन जन्मतक हमारे पुत्र हूजिये ३ पुरुषोत्तम आपको पुत्रही की लालसासे भजताहूं महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! मनुजी के इस प्रकार कहनेपर लक्ष्मी के स्वामी भगवान् उनसे सुन्दर महान्वाणी से बोले ४ कि हे राजाओं में श्रेष्ठ ! जो तुम्हारे मनमें वांछा है वह होगी तुम्हारी पुत्रके हेतु मुझमें बड़ी प्रीति है ५ इससे हे नृपोत्तम हे सुव्रत ! संसारके पालनके प्रयोजनके समयमें आपके उत्पन्नहोने में मैंभी उत्पन्नहूंगा ६ साधुओंकी रक्षा करनेके लिये, दुष्टों के नाश करनेके वास्ते और धर्म के स्थापनके लिये हे पापरहित ! मैं आपके यहां उत्पन्नहूंगा ७ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! इसप्रकार तिनको वरदेकर भगवान् अन्तर्द्धान होगये तोइन स्वायम्भुवमनु

का पहला जन्म यह हुआ ८ कि रघुके वंशमें पूर्वसमयमें राजा दशरथजी हुए और यदुकेवंशमें दूसरे जन्ममें वसुदेवजी हुए ९ और कलियुगके एकहज़ारवर्ष रहजाने में शंभलग्राम में ब्राह्मण उत्पन्न होगा १० राजा दशरथकी कौशल्या स्त्री होंगी यदुकेवंशकी सेवाके लिये देवकी नाम प्रसिद्धहोंगी ११ और हरिव्रत ब्राह्मणकी फिर देवप्रभानाम स्त्री होंगी इसप्रकार भगवान्के तीन जन्मतक माताहोंगी १२ हे अच्छे व्रत करनेवाली पार्वती! पहले रामजी के चरित्र को तुमसे कहताहूं जिसके स्मरणही मात्रसे पापियों की भी मुक्तिहोगी १३ हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष दूसरे जन्ममें महाबली कुम्भकर्ण और रावण होंगे १४ पुलस्त्यजी के पुत्र विश्रवानाम ब्राह्मण धर्मात्मा हुए तिनकी स्त्री सुन्दर नेत्रवाली सुमाली दैत्यकी कन्या केकसीनाम दृढ़व्रत करनेवाली हुई १५। १६ यह शुभदर्शनवाली, पतले करिहांवसे युक्त स्त्री कामसे पीड़ित होकर संध्यासमयमें महामुनिसे इच्छापूर्वक रमण करती भई १७ सन्ध्याके उत्पन्न काम से तिसमें महाबली, संसारमें प्रसिद्ध रावण और कुम्भकर्ण नाम राक्षस उत्पन्नहुए १८ और अत्यन्त विकृतमुखवाली शूर्पणखा नाम कन्याहुई और किसी धर्म के समयसे तिसी में विभीषणजी भी उत्पन्न हुए १९ यह सुशील, भगवान्के भक्त, सत्य बोलनेवाले, धर्मवान् और पवित्रहुए रावण और कुम्भकर्ण उत्तम हिमवान् पर्व्वत में २० महान् घोर तपस्यासे हमको पूजन करतेभये दुष्टात्मा रावण सुन्दर अपने शिररूपी कमलों से २१ हमको पूजन करताभया इसप्रकारके घोरकर्म से पूजन देखकर प्रसन्नहोकर मैं तिससे बोला २२ कि हे वत्स! जो तेरे मनमें वर्तमान हो वह वरमांगो तब दुष्टात्मा रावण बोला कि देवता, दानव और यक्षों से २३ मेरी मृत्यु न हो जिसमें सबलोक मैं जीतसकूं यही वर दीजिये तबतो मैं तिस दुरात्मा राक्षस को २४ देवता, दानव और यक्षों से मृत्यु न होना यहवर देताभया तब यह महावीर्यवान् राक्षस वरदानसे अभिमानयुक्तहोकर २५ देवता, दानव और मनुष्यों को तीनोंलोकमें पीड़ा देताभया तिससे पीड़ितहोकर ब्रह्मादिक देवता २६ भयसे व्याकुल

होकर लक्ष्मी के पति ईश्वरजी की शरणमें गये तब सनातन भगवान् तिनकी वेदना जानकर उनके भयरहित होने के लिये २७ सब ब्रह्मा और रुद्र इत्यादिक देवताओं से बोले कि रघुके कुलमें राजा दशरथ के यहां में उत्पन्न होकर २८ दुरात्मा, बांधवोंसमेत रावणको मारूंगा मनुष्यकी देह धारणकर देवताओं के कण्टकको नाश करदूंगा २९ नंदी के शापसे गंधर्व और उत्तम अप्सरा और आप सब देव वानर होकर हमारी सहाय कीजिये ३० महादेवजी बोले कि हे पार्वती! देवदेव विष्णुजी ने सब देवताओं से जब इस प्रकार कहा तो वानर होकर वे पृथ्वी में उत्पन्न होगये ३१ परशुरामजी ने समुद्रपर्य्यन्त पृथ्वी महर्षियों को देदीथी फिर पूर्वसमयमें महर्षियों ने महात्मा रघुवंशियों को देडाली ३२ वैवस्वतमनुके पुत्र, राजाओं में श्रेष्ठ, महाबलवान्, सब धर्म जाननेवालों में श्रेष्ठ इक्ष्वाकु नामसे प्रसिद्ध हुए ३३ तिनके वंशमें महातेजस्वी, बलवान्, अज राजाके पुत्र, सत्य और शीलयुक्त, पवित्र राजा दशरथजी हुए ३४ यह राजा वीर्य्य से सब पृथ्वी की पालनाकर राज्यों में सब श्रेष्ठ राजाओंको स्थापित करतेभये ३५ और कोशल राजाकी सबअंगों में सुन्दरी कौशल्यानाम कन्याको विवाह करतेभये ३६ इन राजाके मागध राजाकी कन्या, पवित्र मुसिकानियुक्त, सुमित्रानाम दूसरी स्त्री हुई ३७ और केकय राजाकी कन्या कमलकेसमान नयनवाली केकयीनाम तीसरी स्त्रीहुई ३८ तिन तीनस्त्रियों से धर्मसंयुक्त राजा पृथ्वी की पालना करतेहुए रमण करते भये ३९ अयोध्या नाम नगरी, सरयू के किनारे स्थित, सबरत्नोंसे पूर्ण, धनधान्यसेयुक्त ४० प्राकार और गोपुरों से सेवित, सोने के प्राकारसेयुक्त, उत्तमहाथी और घोड़ोंसे इन्द्रपुरीकी नाईंथी ४१ तिसमें यहधर्मात्मा राजा मुनिश्रेष्ठों और पुरोहित, महात्मा वसिष्ठ ब्राह्मणसमेत बसते भये ४२ और अकंटकराज्य करतेभये जिससे तिसमें भगवान् पुरुषोत्तमजी उत्पन्नहुए ४३ तिससे पुण्यकारी अयोध्या नामनगरी कहाई और तिसनगरका परंधाम नामहुआ ४४ जहांपर भगवान् विष्णुजी रहते हैं सोई परमपद है तहांपर सबकर्मका नाश करनेवाला मोक्ष

होताहै ४५ वहांपर महाविष्णुजी के उत्पन्न होनेमें सबमनुष्य आनन्दको प्राप्त हुएहैं हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्वती ! यह राजा सब पृथ्वी को पालनकर ४६ पुत्रकी इच्छाकर वैष्णवयज्ञ से अच्युत हरिजी को पूजन करतेभये तिनसे पूजितहुए लक्ष्मीके स्वामी, राजा, सबमें प्राप्त, हरि ४७ केशव, वरदान देनेवाले, वैष्णवयज्ञ से पूजेगये, यज्ञरूप भगवान् तिस अग्निमें प्रकट होगये ४८ यह तपेहुए सोने के समान, शंख, चक्र, गदा धारणकिये, सफेदवस्त्र पहने, श्रीमान्, सब गहनोंसे भूषित ४९ भृगुलता औरकौस्तुभमणि छातीमें धारे, वनमालासे विभूषित, कमलके पत्र के समान सुन्दर नेत्रवाले, चार भुजा धारण किये उदारबुद्धि ५० भक्तों के ऊपरदया करनेवाले भगवान् बायेंअंग में स्थित लक्ष्मीजीसमेत प्रकट होगये और तिस राजासे यह बोले कि मैं वर देनेवालाहूं ५१ तिन सबलोकों के स्वामीको देखकर स्त्रीसमेत आनन्द से युक्तहोकर राजा प्रसन्न होकर वन्दना करताभया ५२ और हाथजोड़ नमस्कारकर हर्षसे गद्गद वाणी होकर देवदेव जनार्दनजी से बोला कि मेरे पुत्र हूजिये ५३ तब प्रसन्न होकर अच्युतभगवान् राजासे बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ ! मैं देवलोक के हितकरनेके लिये, साधुओं की रक्षाकरने, राक्षसोंके मारने, लोकोंको मुक्तिदेने और धर्मके स्थापन करनेके लिये उत्पन्न हूंगा ५४। ५५ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! ऐसा कहकर सुन्दर, सोनेके बर्तनमें स्थित, शृत, लक्ष्मीजीके हाथमें स्थित, शुभ्रखीर को भगवान् राजा को देतेभये बोले ५६ कि हे सुन्दर व्रत करनेवाले ! हे राजन् ! इस खीरको स्त्रियोंको दीजिये उनमें हमारे अंगसे उत्पन्न पुत्र उत्पन्नहोंगे ५७ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! ऐसा कहकर सब मुनियों से स्तुतिको प्राप्त होकर जनार्दनजी अपनी आत्मा दिखलाकर अन्तर्द्धान होगये ५८ तब राजा तहांपर बड़ी और छोटी स्त्रीकोदेखकर सुन्दर खीरको बांटकर दोनोंको देदेते भये ५९ इसी अवसर में राजाकी मध्यमास्त्री, पुत्रकी कामनायुक्त, सुन्दर नेत्रवाली सुमित्राजी तिनके पास जातीभई ६० तिन सुमित्राजीको देखकर कौशल्या और सुन्दरकरिहांववाली कैकेयी अपनी

अपनी खीरमेंसे आधा आधा उनको देतीभई ६१ तिस सुन्दरखीर को खाकर सुन्दर करिहांववाली रानियां गर्भयुक्त होकर शुभ्रतेज-समेत सब प्रकाशितहुईं ६२ तिनके स्वप्नों में देवोंके स्वामी, पीताम्बरधारे, जनार्दन, शंख, चक्र, गदा हाथमें लेकर भगवान् प्रकटहोगये ६३ इसी सुन्दरसमय, चैत्रमहीने के शुक्लपक्षकी नवमी में पुनर्वसुनक्षत्रमें ६४ दोपहरकेसमय सबग्रहशुभसेयुक्त लग्नमें कौशल्याजी लोकों के ईश्वर, हरिपुत्रको उत्पन्न करतीभई ६५ यह नीलकमलकेसमान श्यामवर्ण, करोड़ कामदेवकेसमान, कमलपत्रकेसमान सुन्दर नेत्रवाले, सब गहनों से शोभित ६६ भृगुलता और कौस्तुभ मणि छातीमें धारे, सब आभरणों से भूषित, उदयहुए सूर्य्यकेसमान कुण्डलों से विराजित ६७ अनेक सूर्य के सदृश, महान् तेजसेयुक्त, दीपसे उत्पन्न दीपकीनाईं सुन्दर देहवाले ६८ सब लोकोंके स्वामी, योगियों के ध्यान करनेके योग्य, सनातन, सब उपनिषदोंका अर्थ, अनन्त, परमेश्वर ६९ संसारकीउत्पत्ति, पालन और संहारके करनेवाले, रोगरहित, सब प्राणियोंको शरणदेनेवाले, सर्वभूतमय और विभुहैं ७० ऐसे संसारकेस्वामीके उत्पन्नहोने में आकाशमें देवताओं के नगारे बजतेभये श्रेष्ठ देवता फूलोंकी वर्षा करनेलगे ७१ हर्षके पूर्णहोनेसे विह्वल अंगवाले प्रजापति इत्यादिक देवता आकाशमें विमानपर चढ़कर मुनियोंसमेत स्तुति करनेलगे ७२ गन्धर्वों के स्वामी गानेलगे अप्सराओं के समूह नाचनेलगे, पुण्यकारी और कल्याणयुक्त पवनचलनेलगी सूर्यनारायण सुन्दर दीप्तियुक्त होगये ७३ शांतहुई अग्नि फिर प्रकाशितहुई दशोंदिशा निर्मलहोगईं तब राजा सनातनपुत्रको आनन्दसे देखकर ७४ तिसीसमयमें वसिष्ठ पुरोहितसे जातकर्म्म करातेभये फिर भगवान् वसिष्ठजी तिसीकाल में सुन्दर नाम रखते भये ७५ कि यह महान् प्रभु कमलवासिनी लक्ष्मीजी के रमण करनेवाले हैं इससे इनका पुरातन श्रीराम यह नाम सिद्धहै ७६ यह नाम भगवान्के सहस्रनामके तुल्य, मनुष्यों को मुक्तिका देनेवालाहै और विष्णुनाम चैत्रके महीने में उत्पन्न हुए हैं इससे विष्णु यह नाम कहा जाता है ७७ इसप्रकार भगवान्,

ऋषि वसिष्ठजी इनके नाम रखकर नमस्कार और स्तुतियोंसे स्तुति कर ७८ महात्माजी के मंगलके लिये सहस्रनाम कीर्तनकर महातेजस्वी आप तिस पुण्यकारी घरसे जातेभये ७९ तदनन्तर रघुकुलमें उत्तम राजा दशरथ आनन्दयुक्त होकर श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको बहुत धन देतेभये धर्म्मसे दशहजार गौवों का दान करतेभये ८० एकलाख गांव देतेभये कपड़े, सुन्दर गहने और अगणित धनोंसे ८१ भगवान्‌की प्रसन्नताके लिये ब्राह्मणों को प्रसन्न करतेभये कौशल्याजी रामजी को कमलनयन, फूले कमल के समान हाथयुक्त और कमलके तुल्य चरणों में ८२। ८३ शंख, चक्र, गदा, कमल, ध्वजा और वज्रादिकोंसे चिह्नित देखतीभई छाती में भृगुलता, कौस्तुभमणि और वनमाला धारण कियेहुए देखती भई ८४ तिनके अंग में देवता असुर और मनुष्योंसमेत सब संसार, मुसिक्यानियुक्त मुखमें चौदहोंभुवन ८५ तिन महात्माके निश्वासमें इतिहासोंसमेत वेद, जंघामेंद्वीप, समुद्र और पर्व्वत ८६ नाभिमें ब्रह्मा और महादेव, कानोंमें शुभ दिशा, नेत्रों में अग्नि और सूर्य्य, नासिकामें बड़े वेगवाली पवन ८७ और सब उपनिषदोंका अर्थ तिनकी विभूतियां देखतीभई तब सुन्दर करिहांववाली यह डरकर वारंवार प्रणाम करतीभई और आनन्दके आंशुओंसे पूर्णनयन होकर हाथ जोड़कर बोली ८८ कि हे देव! हे देवोंके स्वामी! हे प्रभो! हे संसार के स्वामी! आपको पुत्र पाकर मैं धन्यहूं मेरे ऊपर प्रसन्नहोकर पुत्र के स्नेहको दिखलाइये ८९ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! इस प्रकार मातासे कहेहुए हृषीकेश, सबमें प्राप्त भगवान् मायाके मनुष्यरूप होकर बालक के भावसे रोने लगे ९० तब आनन्दयुक्त, देवी, सुन्दर लक्षण और करिहांववाली कौशल्या आनन्दसे पुत्र को आलिंगनकर दूधपिलातीभई ९१ तब देव, सनातन, संसारके स्वामी महाविभुजी बालभावसे तिनका दूध पीकर माता के पास बसतेभये ९२ तिस शुभ, रम्य और मनुष्यों को सब कामना देने वाले देशमें पुरवासी और सब देशवासी भी प्रसन्न होकर उत्सव करतेभये ९३ कैकेयी में शंखके अंशसे प्रेरित भरतजी उत्पन्न हुए

सुमित्राजी शुभ लक्षणवाले लक्ष्मणजी और देवताओं के वैरियोंके ताप देनेवाले शत्रुघ्नजी को उत्पन्न करतीभईं शत्रुओंके वीरोंके नाश करनेवाले लक्ष्मणजी शेषजी के अंशसे उत्पन्नहुए ९४। ९५ और अपारपराक्रमी शत्रुघ्नजी सुदर्शनचक्रके अंशसे उत्पन्न हुए ये सब तहांपर वैवस्वतमनुके कुलमें वृद्धिको प्राप्त होतेभये ९६ ये बालक सब महातेजस्वी वसिष्ठजीसे संस्कार कियेगये और वेदपढ़ते और सुनतेभये ९७ ये सब शास्त्रके अर्थके तत्त्व जाननेवाले, धनुर्वेद में निष्ठायुक्त, परमउदार और मनुष्योंके आनन्द बढ़ानेवालेहुए ९८ इनमें राम और लक्ष्मणजी का जोड़ा और भरत और शत्रुघ्नजी का होताभया ९९ तदनन्तर लोककी ईश्वरी राजाजनकके नगरमें शुभखेतमें सुन्दर मुहूर्त में जनकजी के यज्ञके लिये उनके हल जोतनेमें १०० हलकी पद्धतिमें उत्पन्न हुई यह करोड़ बाल सूर्य्य के समान, लालकमलके तुल्य हाथवाली, सब लक्षणसे युक्त, सब गहनोंसे भूषित १०१ छाती में म्लानताहीन कमलकी माला पहने, बालभावसे सुन्दरी थीं १०२ मिथिलाके पति राजाजनकजी तिस वेदमयी शुभ कन्याको देखकर पुत्रके भावसे उखाड़कर पालनकरते भये १०३ तब सब लोकोंके ईश्वरकी प्यारी, सुरेश्वरीजी सब लोकों की रक्षाके लिये जनकके सुन्दर घरमें बढ़तीभईं १०४ इसी अन्तर में संसारमें प्रसिद्ध विश्वामित्रजी सिद्धोंके आश्रम महापुण्यकारी में गंगाजी के शुभ किनारे में श्रेष्ठ यज्ञप्रारम्भ करतेभये तबइन महामुनिजीकी यज्ञ वर्तमान होतेही १०५। १०६ रावणके राक्षस यज्ञविध्वंस करनेलगे तदनन्तर धर्मात्मा विश्वामित्रजी रघुवंशमें उत्पन्न भगवान्की चिन्तनाकर लोकोंके हितकी कामनासे उनके लानेकी इच्छा करतेभये तब मुनिश्रेष्ठजी सुन्दर, रघुकीपालीहुई अयोध्यानगरी में जाकर १०७। १०८ राजाओंमें श्रेष्ठ दशरथजीको देखते भये राजाभी विश्वामित्रजीको देखकर उठकर हाथजोड़कर १०९ पुत्रोंसमेतहोकर मुनिश्रेष्ठजीकी वन्दना करतेभये और महातेजस्वी, रघुके वंशके बढ़ानेवाले राजा आनन्दसे यह कहतेभये कि मैं धन्यहूं ११० फिर विधिपूर्वक श्रेष्ठ आसनमें बैठाकर पूजनकर नमस्कारकर तिनसे बोले कि

क्याकरूं १११ तब प्रसन्नआत्मा, महातपस्वी विश्वामित्रजी बोले कि हे राजन्! हमारी यज्ञकी रक्षाकेलिये मुझको रामचन्द्रको दीजिये ११२ हमारी यज्ञमें रामजी के समीप रहनेसे सफलता होगी तिससे रक्षाकेलिये रामचन्द्रजी के देने के आप योग्यहैं ११३ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! सब जाननेवालों में श्रेष्ठ राजा विश्वामित्रजीके वचन सुनकर लक्ष्मणसमेत रामचन्द्रजीको उन्हें देतेभये ११४ तब महातपस्वी, श्रेष्ठब्राह्मण विश्वामित्रजी प्रसन्न होकर रामलक्ष्मणजी को लेकर अपने आश्रमको चलतेभये ११५ रामचन्द्रजी के जानेमें महातेजस्वी देवता प्रसन्न होकर फूलोंकी वर्षा और स्तुति करनेलगे ११६ तदनन्तर प्रसन्नआत्मा, महाबली गरुड़जी सबप्राणियों को अदृश्य होकर रामचन्द्रजी के पास प्राप्त होगये ११७ और रामलक्ष्मणजीको सुन्दर धनुष, नाशरहित तरकस और सुन्दर अस्त्रशस्त्र देकर चलेगये ११८ तब महात्मा विश्वामित्रजी राम लक्ष्मण वीरों को वनमें जातीहुई, भयानक दर्शनवाली, सुन्दर राक्षसकी स्त्री ताड़काको जनातेभये तो वे महावीर सुन्दर धनुषसे छूटेहुये बाणोंसे तिसको मारडालतेभये ११९।१२० रामजीसे मारीहुई भयानक दर्शन वाली राक्षसी घोररूपवाली देहको छोड़कर सुन्दररूप होगई १२१ और देहसे प्रकाशितहुई सबगहनोंसे विभूषितहोकर रामलक्ष्मणजी के प्रणामकर वैष्णवलोकको जातीभई १२२ और महातेजस्वी श्रीमान्रामचन्द्रजी तिसके मारनेके पीछे महात्मा लक्ष्मणजीसमेत विश्वामित्रजी के सुन्दरआश्रमको प्रवेश करतेभये १२३ तब मुनिलोग प्रसन्न होकर उठकर रामचन्द्रजीको बैठाकर अर्घ आदिकोंसेपूजन करतेभये १२४ फिर मुनिश्रेष्ठ, दीक्षायुक्त विश्वामित्रजी विधिपूर्वक मुनियोंसमेत उत्तमयज्ञ प्रारम्भ करतेभये १२५ महायज्ञ के वर्त्तमान होनेमें मारीचनाम राक्षस भाई सुवाहु राक्षससमेत विघ्न करने के लिये स्थितहोगया १२६ तिन घोरराक्षसों को देखकर शत्रुवीरों के नाश करनेवाले रामजी एक बाणसे सुवाहु राक्षसेश्वरको मारते भये १२७ और बड़े, पवनकेअस्त्रसे मारीचराक्षसको इसप्रकारसमुद्र में गिराते भये जैसे पवन सूखे पत्तेको गिरा देताहै १२८ तब तो

श्रेष्ठ राक्षस रामजीके महावीर्य्यको देखकर शस्त्र छोड़कर तपस्या करनेके लिये महत् आश्रमको जाताभया १२९ फिर महातेजस्वी विश्वामित्रजी बड़ीयज्ञके समाप्त होने में प्रसन्नमनसे रामचन्द्रजी को पूजन करतेभये १३० और महात्मा, कुल्लै धारण कियेहुए,नील कमलके दलकेसमान श्यामवर्ण,कमलके पत्तेकी नाई नेत्रवाले भगवान्को आलिंगनकर १३१ मस्तकमें सूंघकर स्तुति करते भये इसी अवसरमें मिथिलाके स्वामी राजा जनकजी १३२ मुनिश्रेष्ठोंसमेत बाजपेय यज्ञको प्रारम्भ करतेभये तिसके देखनेको सब विश्वामित्र इत्यादिक मुनि, पुण्यचित्तवाले, राम लक्ष्मणजी समेत जातेभये तिन महात्माके चरणकमलसे जातेहुए १३३।१३४ पृथ्वी पवित्र होगई फिर पति, गौतमजीसे शाप दीहुई महाशिलारूप १३५ अहल्याजी रामचन्द्रजीके चरणके छूनेसे शुभ अंगवाली हो गई तदनन्तर मुनिश्रेष्ठ राम लक्ष्मणजीसमेत मिथिलानगरी को प्राप्त होकर प्रसन्नमन होगये तब महाबली राजा जनक आयेहुए महाभागोंको देखकर १३६।१३७ उठकर प्रणामकर पूजन करता भया फिर कमलके समान सुन्दर नेत्रयुक्त, नीलकमलके समान दीप्तिवाले १३८ पीताम्बरधारे, मनोहर, कोमल अंगों से उज्ज्वल, करोड़ कामदेवके समान सुन्दर, उत्तम १३९ सब लक्षणयुक्त, सब गहनोंसे भूषित और अपने हृदयरूपी कमलके बीचमें जो भगवान् की देह, हरिजी, सौशील्य आदिक श्रेष्ठ गुणोंसे दीपसे दीपकी नाईं उत्पन्नहुए रघुनाथजीको देखकर प्रसन्नमन होकर १४०।१४१ दशरथजीके पुत्र रामजीको परेश मानकर उनकी पूजनकर यह कहताभया कि मैं धन्यहूं १४२ फिर राजा वासुदेव विष्णुजीके प्रसाद को मानकर तिनके कन्या देनेको मनमें चिन्तना करताभया १४३ फिर रघुवंशके पुत्र जानकर धर्मसे सुन्दर कपड़े और गहनोंसे पूजन करताभया १४४ और मधुपर्क आदिक पूजनोंसे ऋषियों की भी पूजन करताभया तदनन्तर यज्ञके अन्तमें कमलनयन रामचंद्र जी १४५ सुन्दर, महादेवजीके धनुषको तोड़कर सीताजीको जीत लेतेभये तिस पीछे बड़े, वीर्यके मोलसे प्रसन्न कियेगये १४६ राजा

जनकजी आनन्दसे जानकीजीको इसप्रकार देतेभये जैसे पूर्व स-
मयमें समुद्रने भगवान्को लक्ष्मीदीथी १४७ फिर जनकजी राजा
दशरथजी के पास दूत भेजते भये तब धर्म्मात्मा दशरथजी भरत
और शत्रुघ्न पुत्रोंसमेत मिथिलामें प्रवेश करतेभये १४८ और प्र-
सन्नहुए वसिष्ठ और वामदेव आदिकोंके साथ दशरथजी जनकजी
के सुन्दर नगरमें बसतेभये १४९ और तिसी शुभ समयमें जनक
जीसे पूजित दशरथजी रामचन्द्रजीका विवाह जानकीजीके साथ
करतेभये १५० लक्ष्मणजीका जनकजीकी कन्या उर्मिलासे और
जनकके छोटे भाईकी सुन्दर तेजवाली १५१ माण्डवी और सब
लक्षणोंसे युक्त श्रुतकीर्ति का विवाह क्रमसे भरत और शत्रुघ्नजी
का करदेते भये १५२ फिर बलवान् श्रीमान् राजा दशरथजी वि-
वाहोंसे छुट्टी पाकर पुरवासी और देशवासियोंसे युक्त होकर अयो-
ध्याजीको प्रस्थान करतेभये १५३ पारिवर्ह को लेकर जनकजी से
पूजित, पुत्र, पतोहू, घोड़े, हाथी और सेनासमेत राजा चलेजातेथे
१५४ कि मार्ग्गमें महावीर्य्यवान्, प्रतापयुक्त परशुरामजी फरसा
और धनुषको लिये हुए क्रोधयुक्त सिंहकी नाईं मिलते भये १५५
और राजाओं के नाश करनेवाले, युद्धकी कामनायुक्त परशुरामजी
रामजीके पासको दौड़े और रामजीको देखकर ये वचनबोले १५६
कि हे राम! हे राम! हे महावाहो! हमारे वचन सुनो लड़ाईमें बड़े
पराक्रमवाले बहुत राजाओंको मारकर १५७ ब्राह्मणोंको पृथ्वी दे-
कर तपस्या करनेको मैं चलागयाथा अब तुम्हारे वीर्य और बलको
सुनकर तुमसे युद्ध करनेको यहां आयाहूं १५८ इक्ष्वाकुवंशी, नाना
के कुलसे उत्पन्न हमारे मारने योग्य नहीं हैं वीर्य और क्षत्रबल सुन
कर मैं नहीं सह सकाहूं १५९ हे नृप! हे वदान्य! तुमने महादेवजी
का दुराधर्ष धनुष तोड़ डालाहै तिससे हे रघुवंशियों में श्रेष्ठ! हम
को युद्ध दीजिये १६० हे शत्रुओं के नाश करनेवाले! यह वैष्णव
धनुष महादेवजीके धनुषके समानहै इसको वीर्य्य से चढ़ा दीजिये
तो तुमसे मैं हार जाऊं १६१ अथवा मुझ बलीके आगे शस्त्रों को
त्याग दीजिये शरणमें आइये जो चित्तमें कातरताहो १६२ महा-

श्रेष्ठ राक्षस रामजीके महावीर्य्यको देखकर शस्त्र छोड़कर तपस्या करनेके लिये महत् आश्रमको जाताभया १२९ फिर महातेजस्वी विश्वामित्रजी बड़ीयज्ञके समाप्त होने में प्रसन्नमनसे रामचन्द्रजी को पूजन करतेभये १३० और महात्मा, कुल्लै धारण कियेहुए,नील कमलके दलकेसमान श्यामवर्ण, कमलके पत्तेकी नाईं नेत्रवाले भगवान्को आलिंगनकर १३१ मस्तकमें सूंघकर स्तुति करते भये इसी अवसरमें मिथिलाके स्वामी राजा जनकजी १३२ मुनिश्रेष्ठोंसमेत बाजपेय यज्ञको प्रारम्भ करतेभये तिसके देखनेको सब विश्वामित्र इत्यादिक मुनि, पुण्यचित्तवाले, राम लक्ष्मणजी समेत जातेभये तिन महात्माके चरणकमलसे जातेहुए १३३। १३४ पृथ्वी पवित्र होगई फिर पति, गौतमजीसे शाप दीहुई महाशिलारूप १३५ अहल्याजी रामचन्द्रजीके चरणके छूनेसे शुभ अंगवाली हो गई तदनन्तर मुनिश्रेष्ठ राम लक्ष्मणजीसमेत मिथिलानगरी को प्राप्त होकर प्रसन्नमन होगये तब महाबली राजा जनक आयेहुए महाभागोंको देखकर १३६। १३७ उठकर प्रणामकर पूजन करता भया फिर कमलके समान सुन्दर नेत्रयुक्त, नीलकमलके समान दीप्तिवाले १३८ पीताम्बरधारे, मनोहर, कोमल अंगों से उज्ज्वल, करोड़ कामदेवके समान सुन्दर, उत्तम १३९ सब लक्षणयुक्त, सब गहनोंसे भूषित और अपने हृदयरूपी कमलके बीचमें जो भगवान् की देह, हरिजी, सौशील्य आदिक श्रेष्ठ गुणोंसे दीपसे दीपकी नाईं उत्पन्नहुए रघुनाथजीको देखकर प्रसन्नमन होकर १४०। १४१ दशरथजीके पुत्र रामजीको परेश मानकर उनकी पूजनकर यह कहताभया कि मैं धन्यहूं १४२ फिर राजा वासुदेव विष्णुजीके प्रसाद को मानकर तिनके कन्या देनेको मनमें चिन्तना करताभया १४३ फिर रघुवंशके पुत्र जानकर धर्मसे सुन्दर कपड़े और गहनोंसे पूजन करताभया १४४ और मधुपर्क आदिक पूजनोंसे ऋषियों की भी पूजन करताभया तदनन्तर यज्ञके अन्तमें कमलनयन रामचंद्रजी १४५ सुन्दर, महादेवजीके धनुषको तोड़कर सीताजीको जीत लेतेभये तिस पीछे बड़े, वीर्यके मोलसे प्रसन्न कियेगये १४६ राजा

जनकजी आनन्दसे जानकीजीको इसप्रकार देतेभये जैसे पूर्व समयमें समुद्रने भगवान्को लक्ष्मीदीथी १४७ फिर जनकजी राजा दशरथजी के पास दूत भेजते भये तब धर्म्मात्मा दशरथजी भरत और शत्रुघ्न पुत्रोंसमेत मिथिलामें प्रवेश करतेभये १४८ और प्रसन्नहुए वसिष्ठ और वामदेव आदिकों के साथ दशरथजी जनकजी के सुन्दर नगरमें बसतेभये १४९ और तिसी शुभ समयमें जनकजीसे पूजित दशरथजी रामचन्द्रजीका विवाह जानकीजीके साथ करतेभये १५० लक्ष्मणजीका जनकजीकी कन्या उर्मिलासे और जनकके छोटे भाईकी सुन्दर तेजवाली १५१ माण्डवी और सब लक्षणोंसे युक्त श्रुतकीर्ति का विवाह क्रमसे भरत और शत्रुघ्नजीका करदेते भये १५२ फिर बलवान् श्रीमान् राजा दशरथजी विवाहोंसे छुट्टी पाकर पुरवासी और देशवासियों से युक्त होकर अयोध्याजीको प्रस्थान करतेभये १५३ पारिवर्ह को लेकर जनकजी से पूजित, पुत्र, पतोहू, घोड़े, हाथी और सेनासमेत राजा चलेजातेथे १५४ कि मार्ग्गमें महावीर्य्यवान्, प्रतापयुक्त परशुरामजी फरसा और धनुषको लिये हुए क्रोधयुक्त सिंहकी नाईं मिलते भये १५५ और राजाओं के नाश करनेवाले, युद्धकी कामनायुक्त परशुरामजी रामजीके पासको दौड़े और रामजीको देखकर ये वचनबोले १५६ कि हे राम! हे राम! हे महाबाहो! हमारे वचन सुनो लड़ाईमें बड़े पराक्रमवाले बहुत राजाओंको मारकर १५७ ब्राह्मणोंको पृथ्वी देकर तपस्या करनेको मैं चलागयाथा अब तुम्हारे वीर्य और बलको सुनकर तुमसे युद्ध करनेको यहां आयाहूं १५८ इक्ष्वाकुवंशी, नाना के कुलसे उत्पन्न हमारे मारने योग्य नहीं हैं वीर्य और क्षत्रबल सुन कर मैं नहीं सह सकाहूं १५९ हे नृप! हे वदान्य! तुमने महादेवजी का दुराधर्ष धनुष तोड़ डालाहै तिससे हे रघुवंशियों में श्रेष्ठ! हम को युद्ध दीजिये १६० हे शत्रुओं के नाश करनेवाले! यह वैष्णव धनुष महादेवजीके धनुषके समानहै इसको वीर्य्य से चढ़ा दीजिये तो तुमसे मैं हार जाऊं १६१ अथवा मुझ बलीके आगे शस्त्रों को त्याग दीजिये शरणमें आइये जो चित्तमें कातरताहो १६२ महा-

देवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार परशुरामजीने कहा तो प्रतापी रामचन्द्रजी तिस धनुष और वैष्णवी शक्तिकोभी ग्रहणकर लेतेभये १६३ तब शक्तिसे हीनहोकर प्रतापी परशुरामजी वीर्य्य और तेजसे इसप्रकार नष्ट होगये जैसे कर्महीन ब्राह्मण नष्ट होजाताहै १६४ तेजरहित परशुरामजी को देखकर श्रेष्ठराजा साधुसाधु ऐसा कहकर वारंवार रामजी की प्रशंसा करनेलगे १६५ तब रामजी बड़ेभारी धनुषको लीलापूर्वक चढ़ाकर उसीमें बाणको संधानकर विस्मययुक्त परशुरामजीसे बोले १६६ कि हे ब्राह्मण! इसमुख्य बाणसे तुम्हारा क्याकरूं इस लोकको काटूं वा स्वर्ग वा तुम्हारी तपस्याको काटूं १६७ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! परशुराम जी रामचन्द्रजीके तिस घोरबाणको देखकर तिनको परमात्मा जानकर प्रसन्न होकर उनसे बोले १६८ कि हे राम! हे राम! हे महाबाहो! हे काकुत्स्थ! मैं आपको सनातन नहीं जानताथा इससमयमें आपके वीर्य्य और गुण आदिकों से जानताहूं १६९ आप आदिपुरुष परब्रह्म, पर, नाशरहित, अनन्त, महाविष्णु, वासुदेव, परात्पर १७० नारायण, लक्ष्मीके स्वामी, ईश्वर, त्रयीमय, काल, सम्पूर्ण संसार अकाराख्य १७१ संसारके रचने, पालने और संहार करनेवाले परमेश्वर, नहीं चिन्तना करनेयोग्य, महद्भूतरूप, महानमनु १७२ चार छः और पांच गुणयुक्त, पुरुषोत्तम, यज्ञ, वषट्कार, ॐकार, त्रयीमय १७३ व्यक्त और अव्यक्तस्वरूप, गुणभृत, निर्गुण और परहैं वेदोंके भी अगोचर आपकी स्तुति करनेमें मैं असमर्थहूं १७४ हे प्रभो! हे नाथ! आपसे युद्धकरने की इच्छासे जो मैंने चपलता कियाहै उसको केवल कृपाहीकरके आप क्षमाकरनेके योग्यहैं १७५ आपहीकी शक्तिसे सब राजाओंको जीतकर ब्राह्मणोंको पृथ्वीदियाहै और आपही के प्रसाद के वशसे नैष्ठिकी शान्तिको प्राप्त हुआहूं १७६ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार महातपस्वी परशुरामजी काकुत्स्थ, संसारकी रक्षा करनेवाले, रामचन्द्रजीसे इसप्रकार कहकर उनके नमस्कारकर १७७ सौयज्ञके कियेहुए स्वर्गको तिस अस्त्रको देतेभये फिर महातेजस्वी रामचन्द्रजी तिन महामुनिजीकी

न्दनाकर १७८ पाद्य, अर्घ और आचमन आदिकोंसे विधिपूर्वक
ज़न करतेभये रामजी से पूजितहोकर महातपस्वी परशुराम जी
७९ तपस्या करने के लिये नर नारायणजी के आश्रम को जाते
ये तदनन्तर स्त्रीसंयुक्त पुत्रोंसे महाबली राजा दशरथजी सुन्दर
हूर्तसे अपनी पुरी में प्रवेश करतेभये रामचन्द्र, लक्ष्मण, शत्रुघ्न
और भरतजी १८०।१८१ प्रसन्नमन होकर अपनी अपनी स्त्रियों
को प्राप्तहोकर रमण करतेभये और धर्म्मात्मा रामचन्द्रजी सीता-
समेत बारहवर्ष तहांपर १८२ लक्ष्मीजीसे नारायणकी नाईं रमण
करतेभये तदनन्तर राजा दशरथ प्रीतिसे तिससमय में ज्येष्ठ पुत्र
को राज्यमें संयुक्त करनेकी इच्छा करतेभये राजाकी प्यारी स्त्री कै-
कयीथी उसको पहले दोवर राजादेचुके थे १८३।१८४ उसने राजा
से भरतका अभिषेक और रामजी का चौदहवर्षका वनवास ये दो
वर उसीसमयमें मांगलिये १८५ तब सत्यवचन से दुःखसे हत-
चित्तहोकर राजारामजी को तिससमय में वन देताभया १८६ तो
समर्थ भी रामचन्द्रजी धर्मसे राज्य छोड़कर पिताजीके वचनके हेतु
से रावणके वधके लिये १८७ लक्ष्मण और सीतासमेत वन को
जातेभये तबतो पुत्रके वियोगसे पीड़ितहोकर राजा शोकसे मृत्युको
प्राप्तहोजाताभया १८८ उससमय में मन्त्रियों ने भरतको राज्य में
युक्त करनाचाहा तब धर्मात्मा भरतजी सौभ्रात्र दिखलाकर राज्य
की नहीं इच्छा करतेभये १८९ फिर वन में आकर भरतजी रामजी
से राज्य करनेको कहतेभये तब शत्रुओं के नाश करनेवाले रामजी
पिताजीकी आज्ञासे राज्यकी इच्छा नहीं करतेभये १९० फिर अ-
पनी खड़ाऊं भरतजी को देतेभये तो भक्तिसे भरतजी लेकर राज-
गद्दीपर स्थापितकर १९१ प्रतिदिन चन्दन और फूलोंसे पूजनकर
तपस्या करतेभये १९२ जबतक रामचन्द्र महात्माका आना नहीं
हुआ तबतक सब पुरवासी व्रत में परायणहीरहे १९३ रामचन्द्रजी
चित्रकूटपर्वतमें भरद्वाजजी के शुभ आश्रममें गंगाजी के शुभ जल
को स्नान और पानकर सीताजी से रमतेभये १९४ किसीसमयमें
महामन रामजी सीताजी के अंकमें सोतेथे कि इन्द्रका पुत्र ज॰॰

कौवेका रूप धारणकर १९५ कामके बाणसे पीड़ितहोकर जानकीजीको देखकर तीक्ष्ण नहोंसे उनके मोटे और ऊंचे स्तनको विदारण करताभया १९६ तिस कौवेको देखकर धरणीधर रामजी हाथ से कुशलेकर ब्रह्माजी के अस्त्रसेयुक्त कर छोड़ देतेभये १९७ तब कौवा घोर, ज्वालासे रचित देहवाले तृणको देखकर कायर स्वरछोड़ताहुआ भागा १९८ तब तो घोर रामजीका अस्त्र उसकेपीछे जाताभया यह भयसे पीड़ितहुआ कौवा तीनोंलोकों में घूमा १९९ परन्तु शरणकी इच्छा करत्ताहुआ वह जहांजहां गया तहांतहां पर भयानक यह अस्त्र भी प्रवेश करताभया २०० शस्त्रसे पीड़ितहोकर यह शीघ्रही शरणकी इच्छाकर ब्रह्मा, इन्द्र, महादेव, यमराज और वरुणके पासभी गया २०१ तो तिसकौवेको देखकर सबबुद्धिमान् महादेव आदिक देवता और दैत्य यहबोले कि हमलोग रक्षाकरने में समर्थ नहीं हैं तब तीनोंलोक के ईश्वर भगवान् ब्रह्माजी बोले २०२ कि हे बलिके भोगकरनेवालोंमें श्रेष्ठ! तिन्हींकी शरणमें जाइये वही श्रीमान्, दयाकेनिधि सबके रक्षा करनेवाले २०३ क्षमा करनेवाले, सब प्राणियों के ईश्वर, सौशील्य आदिक गुणोंसेयुक्त, जीवलोकके रक्षाकरनेवाले, पिता, माता, सखा और मित्रहैं वे शरणागतों के ऊपर कृपा करते हैं इससे हे कौवे! तिन्हीं देवोंके स्वामी भगवान् की शरणमें जाइये और कहीं शरण न होगी २०४।२०५ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ब्रह्माजी के इसप्रकार कहनेपर वह कौवा भयसे व्याकुल होकर रामचन्द्रजी के पास जाकर सहसासे पृथ्वी में गिर जाताभया २०६ तब सीताजी संशयमें प्राप्त प्राणवाले कौवेको देखकर नम्रतासे स्वामी रामचन्द्रजीसे बोलीं कि इसकी रक्षाकीजिये २०७ फिर सीताजी अपने आगे पृथ्वी में पड़ेहुए कौवेके शिर को रामजीके चरणोंमें छोड़ देतीभई २०८ तब दयारूपी अमृतके समुद्र, गुणवान् रामजी दयासेयुक्त होकर हाथसे उसकौवेको उठाकर रक्षाकरतेभये २०९ और दयानिधि रामजी उससे यह बोले कि मतडरो तुमको अभयदूंगा तुम सुखपूर्वक चलेजावो २१० तब रामचन्द्रजी से रक्षायुक्त होकर वह कौवा रामजी और सीताजी के

वारंवार प्रणाम कर शीघ्रही स्वर्गलोक को जाताभया २११ तब सीता और बुद्धिमान् लक्ष्मणजीसमेत, महर्षियोंसे स्तुति कियेगये रामचन्द्रजी चित्रकूट पर्वतमें बसते भये २१२ वहांपर भरद्वाजजी से पूजित होकर अत्रिजी के सुन्दर आश्रम में जातेभये २१३ तब मुनिवरोंमें उत्तम अत्रि धर्मात्मा स्त्रीसहित आनन्दयुक्त होकर आते हुए रामचन्द्रजी को देखकर उठकर २१४ सुन्दर मुख्य आसन में सीतासमेत बैठाकर अर्घ्य, पाद्य, आचमन, अनेकप्रकार के कपड़े २१५ मधुपर्क, गहने और अनुलेपन प्रीति से देतेभये और तिन की स्त्री अनसूयाजी उत्तम सुन्दर कपड़े २१६ और प्रकाशित गहने प्रीतिसे सीताजी को देतीभई और सुन्दर अन्न पान और भक्ष्य आदिकों से रामजीको भोजन कराती भई २१७ अत्रिजी से प्रीतिपूर्वक श्रेष्ठभक्तिसे पूजितहुए लक्ष्मणसमेत रामचन्द्रजी दिन रात तहां बसतेभये २१८ फिर निर्मल प्रातःकाल होने में महामुनिजी को उठाकर नमस्कारकर जाने का प्रारंभ करते भये २१९ अत्रिजीकी आज्ञा पाकर कमलनयन रामजी महर्षियों के समूह से युक्त दण्डकारण्यको जातेभये २२० तहांपर अत्यन्त भयानक विराधनाम राक्षसको मारकर शरभंगजी के शुभ आश्रमको प्रवेशकरते भये २२१ तब शरभंगजी रामजी को देखकर शीघ्रही पापरहित होकर गंधर्व और अप्सराओं से युक्त, ब्रह्मलोकको जातेभये २२२ फिर रामजी सुतीक्ष्ण, अगस्त्य और अगस्त्यजी के भाई के आश्रमको क्रमसे जाते भये और तिनसे पूजितहुए २२३ तिस पीछे गोदावरी के शुभ किनारे पंचवटी में सुखपूर्वक बहुत कालतक बसते भये २२४ तब तपस्वी, धर्मचारी, श्रेष्ठमुनि तहां जाकर आत्माके ईश, कमलनयन, रामजीको पूजन करतेभये २२५ फिर राक्षससमूहों से प्राप्तहुए डरको रामजी से कहतेभये तब रामचन्द्रजी तिन को धैर्य देकर अभयरूपी दक्षिणा देते भये २२६ और रामजी से पूजित होकर वे लोग अपने अपने आश्रमोंको प्राप्त होतेभये तिस गोदावरी के सुन्दर किनारे मनोरम पंचवटी में रामचन्द्रजी को तेरह वर्ष बीततेभये तब किसीसमयमें घोररूपिणी, राक्षसी २२७। २२८

रावणकीबहन शूर्पणखा तहांपर प्रवेश करतीभई यह करोड़ काम-देवकेसमान २२९ नीलकमलकेसमान श्यामवर्ण, कमलपत्रकेस-मान भारी नेत्रवाले, ऊंचे कांधोंसे युक्त, बड़ी भुजावाले, शंखकीस-मान गर्दनयुक्त बड़ी ठोढ़ीवाले २३० पूर्णचन्द्रमाके समान, मुसिका-नियुक्त मुखकमलवाले भँवरोंकी पंक्तियोंकेसमान चिकने, टेढ़ेबालोंसे युक्त २३१ लाल कमलके समान, कमलरूपी हाथकी हथेलियोंसे चि-ह्नित, कलङ्करहित चन्द्रमाकेसमान नहोंकी पंक्तियोंसे विराजित २३२ चिकनी कोमल दूबके समान, सुकुमारताके निधि, शुभ, पीले रे-शमी कपड़े धारे, सबगहनोंसे भूषित २३३ युवाकुमार अवस्थावाले, संसारके मोहन करनेवाली देहसे युक्त रामजी को देखकर कामदेव के बाणसे पीड़ित होकर २३४ कमललोचन रामजी के पास आ-कर उनसे बोलीं कि दण्डकवन में तपस्वी के वेषसे वर्तमान आप कौनहैं २३५ और राक्षसों से युक्त इस वनमें किसलिये आये हैं तत्त्वसे शीघ्रही कहिये झूंठ कहनेके आप योग्य नहीं हैं २३६ महा-देवजी बोले कि हे पार्वती! ऐसा कहनेपर रामजी हँसकर बोले कि राजा दशरथजी का पुत्र रामचन्द्र मैं हूं यह धनुषधारी, पापरहित, मेरा छोटा भाई लक्ष्मणहै २३७ और यह जनकजीकी कन्या, सीता मेरी प्यारी स्त्री है पिताजीकी आज्ञासे मैं वनको प्राप्तहुआहूं २३८ यहांपर ऋषियों के हितकी कामनासे महावनमें घूमरहाहूं हे सुंदरि! तुम हमारे स्थान में किसलिये आई हो २३९ कौनहो और किस कुलमें उत्पन्नहुईहो यह सब सत्य सत्य हमसे कहो महादेवजी बोले कि हे पार्वती! रामचन्द्रजी के इसप्रकार कहनेपर राक्षसी निश्शंक होकर रामचन्द्रजीसे बोली २४० कि मैं विश्रवाकी पुत्री, रावणकी बहन, तीनोंलोक में प्रसिद्ध, शूर्पणखा नामहूं २४१ हे प्रभो! यह दण्डकारण्य मेरे भाई ने मुझे दिया है इस महावनमें ऋषिसमूहों को खातीहुई मैं घूमतीहूं २४२ मुनियों में श्रेष्ठ आपको देखकर काम-देवके बाण से पीड़ित होकर निर्भय आपके साथ रमण करने की कामना से आई हूं २४३ हे राजाओं में श्रेष्ठ! आप मेरे पति होने के योग्य हैं और मैं इस तुम्हारी पतिव्रता सीताके खानेकी इच्छा

करतीहूं २४४ वन और मुख्य पहाड़ों में आपके साथ रमणकरूंगी महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ऐसा कहकर वह राक्षसी सीताजी के भक्षण करने में उद्यतहुई तब उसको देखकर २४५ श्रीरामजी तलवार लेकर उसके नाक और कान काट लेतेभये २४६ तब वह विकृतमुख होकर राक्षसी भयसमेत रोतीहुई खरराक्षसके स्थानमें प्रवेशकर रामजीका सब चेष्टित कहतीभई २४७ तब वह शत्रुओं का नाश करनेवाला खरराक्षस सैकड़ों राक्षस और दूषण और त्रिशिरासे भी युक्तहोकर रामजी से युद्ध करनेको आताभया २४८ तिन बड़ी देहवाले राक्षसों को रामजी घोर वनमें कालांतक के समान बाणों से लीलापूर्वक नाश करदेतेभये २४९ खर, त्रिशिरा और महाबलवान् दूषण को सर्पके सदृश बाणों से रणभूमिमें गिरा देते भये २५० सब दण्डकारण्य के बसनेवाले राक्षसों को मारकर देवताओं के समूहों से पूजित और महर्षियों से स्तुतिको प्राप्तहोकर २५१ सीता और लक्ष्मणसंयुक्त रामजी दण्डकारण्य में बसतेभये तब राक्षसोंका नाश सुनकर क्रोधसे मूर्च्छित रावण २५२ दशग्रीवा वाला राक्षस दुरात्मा मारीच को संगलेकर पंचवटी में रामजी के स्थानके पास जाताभया २५३ तब मायावी मारीच राक्षस मृगरूप होकर राम लक्ष्मणजी को आश्रम के दूर लेजाताभया २५४ उस समय रावण अपने नाश होनेकी कांक्षासे रामजीकी स्त्री सीताको हर लेता भया सीताजीको हरीहुई देखकर गीधोंका राजा बलवान् जटायु २५५ रामजी की मित्रताके हेतुसे तहांपर तिस रावण राक्षस से युद्धकरताभया तब शत्रुओंका नाशकरनेवाला रावण भुजाओं के पराक्रमसे जटायुको मारकर २५६ बहुत राक्षसोंसेयुक्त लंकापुरी में प्रवेशकर अशोकवाटिकामें सीताजीको रखकर २५७ रामजीके बाणसे नाशकी कांक्षा करताहुआ अपने घरमें प्रवेश करताभया और रामजी मृगरूपी मारीच राक्षसको मारकर २५८ लक्ष्मण भाई समेत फिर स्थानमें प्रवेशकर राक्षससे हरीहुई सीताको जानकर २५९ अत्यन्त शोकसे संतप्तहोकर रोदनकरतेभये फिर वन में सीताको ढूंढ़तेहुए राहमें महाबली गृध्रको २६० चरण और पंख

कटकर पृथ्वी में गिरेहुए और रक्तसे पूरित सब अंगहुए देखकर विस्मयको प्राप्तहोकर २६१ श्रीमान् रामजी उससे पूंछतेभये कि किसने तुम्हें मारा है तब गृध्र रामचन्द्रजी को देखकर धीरे धीरे बोला २६२ कि हे रामजी! बलवान्, राक्षसों में मुख्य रावणने आपकी भार्या हरलीहै तिसीने लड़ाई में मुझे माराहै २६३ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ऐसा कहकर वह रामजीके आगे सहसासे प्राण छोड़देताभया तब रामजी ब्रह्मके विधानसे उसका संस्कार करतेभये २६४ और योगियोंके जाने योग्य, सनातन अपने पदको देतेभये रामजीके प्रसादसे वह गृध्र पक्षियों में उत्तम भगवान् के सामान्यरूपसे परमपद मुक्तिको प्राप्तहोजाताभया फिर राम और लक्ष्मणजी माल्यवान्के पास जाकर मतंगजीके शुभआश्रममें २६५।२६६ महाभागा, धर्मचारिणी शबरीसे मिले यह भगवान्के भक्तों में श्रेष्ठ,राम और लक्ष्मणजीको देखकर २६७ उठकर नमस्कार कर कुशासन में बैठाकर पैरधोकर वनके सुगन्धित फूलोंसे २६८ भक्तिपूर्व्वक पूजन करतीभई और आनन्दसेयुक्त मन होकर सुगन्धितफल और मीठीमूलों को २६९ राम लक्ष्मणजी को देतीभई इस दृढ़व्रतवाली के फलोंका स्वादलेकर रामजी तिसको श्रेष्ठमुक्ति देतेभये २७० तदनन्तर शत्रु नाशनेवाले रामजी पंपासरमें जाकर घोररूपी कबन्धराक्षस को तहांपर मारते भये २७१ और महापराक्रमी ने आपही उसको मारकर जलादिया तो वह स्वर्गको प्राप्त होगया तदनन्तर कमलनयन रामजी गोदावरी के पास जाकर २७२ पूंछते भये कि हे गंगे! हमारी प्रिया सीताजी को जानतीहौ तब तमोगुण से आच्छादित गंगाजी रामजी से न बोलतीभई २७३ तब तो रामजी क्रोधसे उनको शाप देतेभये कि तुम्हारा जल रक्त होजावे तदनन्तर भयसे डरीहुई गंगाजी महामुनियों को आगे कर २७४ हाथजोड़कर दीनहोकर रामजीकी शरणमें प्राप्तहोतीभई तब सबमहर्षि सनातनरामजीसे बोले २७५ कि हे संसारके स्वामी! आपके चरणकमलसे उत्पन्न, तीनों लोकोंके पवित्र करनेवाली गंगाजी हैं आपही तिसको शापसे छुड़ानेके योग्यहैं २७६ महादेवजी बोले

कि हे पार्वती! तब धर्मात्मा, शरणागतों के ऊपर प्यार करनेवाले रामजी बोले कि शबरी के स्नानमात्र सुन्दर जलसे मिलकर यह पापनाशिनी गंगाजी हमारे शापसे मुक्त होजावेगी २७७ ऐसाकह कर महाबली रामजी उत्तम शबरी तीर्थको धनुषकी कोटिसे गंगा और गयाजी के समान करतेभये २७८ जिसके जलमें महाभागवतोंका तीर्थ हुआहै तिसका शरीर निस्सन्देह संसार में वन्दना के योग्यहोगा २७९ ऐसा कहकर रामजी ऋष्यमूक पर्वतको जाते भये तदनन्तर पम्पासर के किनारे हनुमान् वानरसे मिले २८० और हनुमान् के वचनसे सुग्रीव से मेल होगया और सुग्रीव के वचनसे वानरों के स्वामी बालीको मारकर २८१ तिसकी राज्य में सुग्रीवको अभिषेक करतेभये तब सुग्रीव सीताजीके ढूंढ़ने के लिये हनुमान् इत्यादिक वीरोंको भेजतेभये तब पवनपुत्र हनुमान्जी समुद्रनांघकर २८२। २८३ लंकानगरी में प्रवेशकर दृढ़व्रत वाली सीताजी को देखतेभये यह व्रतसे दुर्बल, दीन, शोक में परायण, २८४ मलरूपी कीचड़से दिग्ध अंगवाली और मलिनकपड़े धारणकियेहुए थीं उनको हनुमान्जी ज्ञान निवेदनकर प्रवृत्तिभी निवेदन करतेभये २८५ और बन्दनवारके खम्भेको उखाड़कर सात मंत्रीके पुत्र और रावणके पुत्रको भी मारतेभये २८६ फिर सीता जीको समझाकर रावणके उपवन को उजाड़कर वनके पालनेवाले नौकरों और पांच सेनाके नायकों को मारतेभये २८७ फिर रावण के पुत्रसे इच्छापूर्वक पकड़ेजाकर रावणको देखते और उससे बात चीत करतेभये २८८ फिर अपनी पूंछकी अग्निसे लंकानगरी को जलाकर सीताजी से ज्ञान पाकर फिर लौट आतेभये २८९ तब महातेजस्वी हनुमान्जी कमलनयन रामजी से मिलकर यह कहते भये कि तत्त्वसे सीता देखआये २९० फिर बहुत वानरों और सुग्रीवसमेत रामचन्द्रजी समुद्रके किनारे जाकर सेनाको ठहरातेभये २९१ तिस पीछे रावणका छोटाभाई विभीषण, धर्मात्मा, सत्य प्रतिज्ञावाला, महाभागवतोंमें उत्तम २९२ आयेहुए रामजीको जान कर अपने बड़ेभाई, राज्य, पुत्र और स्त्रियोंको छोड़कर रामजी की

शरण में जाताभया २९३ तब हनुमान्‌जी के वचनसे सौम्य विभीषणको ग्रहणकर तिसको अभयदेकर रावणकी राज्यमें अभिषेक करतेभये २९४ तदनन्तर महाबली रामजी समुद्रके पार उतरने की कामनाकर समुद्रकेपास प्राप्तहोकर तिसके निर्मलजलको २९५ बाणसमूहों से धनुषलेकर सुखा देतेभये तब नदियोंका स्वामी करुणानिधि २९६ देवकी शरणमें प्राप्तहोकर पूजन करताभया फिर रामजी वरुणके अस्त्रसे समुद्रको पूर्ण करदेतेभये २९७ तिस पीछे समुद्रके वचनसे मगरोंके स्थान समुद्रही में वानरोंके लायेहुए पर्व्वतोंसे नल सेतु बांधते भये २९८ तदनन्तर लंकापुरी में जाकर सेनाको प्रवेश कराकर वानर और राक्षसोंका अच्छे प्रकारसे युद्ध करातेभये २९९ फिर रावणका पुत्र इन्द्रका जीतनेवाला बली मेघनाद राक्षस नागपाशोंसे राम लक्ष्मणजीको बांध लेताभया ३०० तब गरुड़ आकर नागपाशों से राम लक्ष्मणजी को छुड़ा देतेभये फिर महाबली वानरोंसे सब राक्षस नाशकर डालेगये ३०१ तिस पीछे रामजी लड़ाई में रावणके छोटेभाई कुम्भकर्ण महाबली वीर को अग्नि की शिखाके सदृश बाणों से मारतेभये ३०२ तब क्रोधसमेत मेघनाद ब्रह्मास्त्र से वानरों को गिरा देतेभये फिर हनुमान्‌जी महौषधिका पर्वत लेआतेभये ३०३ तिस पर्व्वतके स्पर्शही से सब वानर उठ आतेभये तदनन्तर वीर लक्ष्मणजी संग्राम में मेघनादको ३०४ बाणोंसे इसप्रकार गिरादेतेभये जैसे इन्द्रने वृत्रासुर को गिरायाथा तिसपीछे रावणलड़ाई में रामजीसे युद्ध करनेको प्राप्त होताभया ३०५ यह महाबली हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल वाली सेना और मंत्रियोंको भी साथही में लायाथा फिर चारोंओरसे वानर और राक्षसोंका युद्ध होताभया ३०६ राम और रावणका युद्धहुआ फिर रावण और लक्ष्मणजीसे होनेलगा तब रावण शक्तिसे लक्ष्मण जीको गिरा देताभया ३०७ तदनन्तर महातेजस्वी, राक्षसोंके नाश करनेवाले रामजी क्रोधकर कालांतकके समान बाणोंसे राक्षस वीरों को मारतेभये ३०८ फिर प्रदीप्त, कालदण्डके सदृश हज़ारबाणोंसे रावणराक्षसको आच्छादित करदेतेभये ३०९ तब रामजीके अस्त्र

से सम्पूर्ण अंग कटकर डरसे लंकाको रावण भगगया ३१० फिर कष्टसे संसार को राममय देखताहुआ घरमें प्रवेशकर जाताभया तदनन्तर हनुमान्‌जी महौषधिका भारी पर्वत लेआये ३११ तिस से लक्ष्मणजी शीघ्रही होशमें आगये तिसपीछे रावण जयकीकांक्षा से होमका प्रारम्भ करताभया ३१२ तब श्रेष्ठ वानरों ने वैरीके अभिचारात्मक होमको विध्वंस करदिया तिसपीछे फिररावण रामजी से युद्ध करनेको बहुतराक्षसोंसे युक्त सुन्दर रथपर चढ़कर प्राप्तहोताभया तदनन्तर बुद्धिमान् इन्द्र घोड़े और सारथी समेत सुन्दर रथको रामजी के पास भेजताभया तब सारथी से लायेहुए रथपर रामचन्द्रजी चढ़कर ३१३।३१४।३१५ देवसमूहोंसे स्तुतिको प्राप्त होकर तिसराक्षससे युद्धकरनेलगे तब राम और रावणका बड़ा भयानक युद्ध सात दिनरात शस्त्र और अस्त्रोंसे भी अत्यन्त भयङ्कर होताभया सब देवता विमानोंमें चढ़कर तहांपर लड़ाई देखतेभये ३१६।३१७ तब रामचन्द्रजी रावणके शिरोंको काटडालतेभये तो वे महादेवजी के वरदानसे बहुत शिर फिर होजातेभये ३१८ तब रामजी शीघ्रही इस दुरात्माके मारनेके लिये महाभयानक, कालकी अग्निके सदृश दीप्तिवाले ब्राह्मअस्त्रको उत्पन्न करतेभये३१९और उसीसे रावणको मारतेभये तो यह ब्राह्मअस्त्र रामजीका छोड़ाहुआ रावणके स्तनोंके बीचको काटकर पृथ्वी भेदनकर रसातलके तलमें प्राप्तहोजाताभया ३२० फिर वहां सर्पोंसे पूजितहोकर यह ब्रह्मास्त्र रामजी के हाथमें प्राप्त होजाताभया और रावण प्राणहीन होकर गिरकर मरजाताभया ३२१ तब आनन्दयुक्त मनहोकर सबदेवसमूह परमात्मा रामचन्द्रजी में फूलोंकी वर्षा करतेभये ३२२ गंधर्वों के समूह गानेलगे अप्सराओं के समूह नाचनेलगीं पुण्यकारी पवन चलनेलगी सूर्यनारायण सुन्दर दीप्तियुक्त होगये ३२३ मुनि, सिद्ध, देवता, गन्धर्व और किन्नर स्तुति करनेलगे तब तो लंका में राक्षसोंमें श्रेष्ठ विभीषणको अभिषेककर ३२४ रामचन्द्रजी आत्मा को कृतकृत्यसा मानतेभये फिर अभिषेकके पीछे विभीषणसे बोले ३२५ कि जबतक चन्द्रमा, सूर्य, पृथ्वी और हमारी कथा संसार में

रहेगी तबतक तुम्हारी राज्यरहेगी ३२६ और पुत्र पौत्र और गणों समेत महाबली तुम सनातन, योगियों के जाने योग्य, सुन्दर, हमारे पदको प्राप्तहोगे ३२७ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! इसप्रकार महाबली रामचन्द्रजी तिसराक्षसको वरदेकर मनुष्योंकी सभा में सीताजी को प्राप्तहोकर ३२८ उनसे बहुत निन्दित वचन बोले तब रामजी के निन्दित वचन सुनकर पतिव्रता सीताजी भारी अग्निमें प्रवेशकर जातीभई ३२९ तदनन्तर महादेवजी और ब्रह्मा इत्यादिक सब देवसमूह भयसें व्याकुल होकर माता सीताजी को अग्निमें प्रवेश करती देखकर रामजी केपास जाकर हाथ जोड़कर बोले ३३० कि हे राम! हे राम! हे महाबाहो! हे अत्यन्त पराक्रमी! आपसुनिये यह सीता अत्यन्त विमल, पतिव्रता, तुम्हारी नीतिसे नाशरहितहै ३३१ सूर्यसे दीप्तिकी नाईं वृथा नहीं त्यागने योग्यहै यह संसारके हितकेलिये पृथ्वी में उत्पन्नहुईहै ३३२ सबसंसार की माता और सम्पूर्ण संसारके आश्रयहै रावण और कुम्भकर्ण आप में परायण दासथे ३३३ ये सनकादिकों के शापसे पृथ्वी में उत्पन्न हुएथे इनदोनोंकी मुक्तिके लिये दण्डकवनमें सीता ग्रहणकीगईथी ३३४ येदोनों श्रेष्ठराक्षस पुत्रपौत्र और नौकरोंसमेत आपसे नाश को प्राप्तहोकर विमुक्तहोकर स्वर्ग को प्राप्तहोगये हैं ३३५ आप विष्णु, परंब्रह्म, योगियोंके ध्यान करनेयोग्य, सनातन, सब देवताओं में आदि और नाशरहित, अव्यय ३३६ नारायण और श्रीमान्‌हैं सीताजी लक्ष्मी, सनातनी और सब लोकोंकी माताहैं हे परमेश्वरजी! आप पिताहैं ३३७ यह नित्या, संसारकी माता आपके नित्य नाशरहितहैं हे रघुवंशियोंमें उत्तम! जैसे सबमें प्राप्त आपहैं तैसेही ये हैं ३३८ तिससे शुद्ध समाचारवाली, पतिव्रता, दृढ़व्रत करनेवाली सीताजी को शीघ्र जिसप्रकार क्षीरसागरसे ग्रहण कियाथा तैसेही ग्रहणकीजिये ३३९ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसी अन्तर में लोकोंका साक्षी अग्नि, सबशरीरमें प्राप्त रहनेवाला देवताओंके समीपमें सीताजी को लेकर रामजीको देकर उनसे बोला ३४० कि हे विभो! हे रामजी! यह शुद्ध समाचारवाली, पापरहित सीता है

नको आप शीघ्रही ग्रहण कीजियेमें सत्यहीसत्य कहताहूं ३४१ हादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब अग्निजीके वचनसे रामचंद्रजी तिाको ग्रहण करलेतेभये और उत्तम देवताओं से पूजित होकर सन्नहोतेभये ३४२ जे उत्तम वानर राक्षसोंसे मारेगयेथे वे ब्रह्माजी वचनसे जीकर उठआतेभये ३४३ तदनन्तर विभीषण लड़ाईमें वणसे ग्रहण कियेहुए सूर्य्यके समान, कुबेरके पुष्पकनाम विमान ४४ और कपड़े और गहनोंको रामचन्द्रजी को देताभया विभी- णसे पूजितहुए श्रीमान्, प्रतापयुक्त रामचन्द्रजी ३४५ सीतास्त्री रवीर लक्ष्मण भाई, रीछ और वानरों के समूह, महात्मा सुग्रीव, रवीर विभीषण और महाबली राक्षसोंसमेत श्रेष्ठ विमानपर चढ़ते ये ३४६ । ३४७ जैसे नित्यमुक्त महात्माओं से वैकुण्ठमें चढ़ते हैं सेही सब रीछ, वानर और राक्षस सब विमानपर चढ़तेभये ३४८ फिर सत्यपराक्रमी रामजी उत्तम देवताओं से स्तुतिको प्राप्तहोकर अयोध्याको चलतेभये और राहमें भरद्वाजजी के आश्रममें जाकर ३४९ भरतके समीप हनुमान्जी को भेजतेभये तब श्रेष्ठवानर ह- नुमान्जी निषाद के स्थानमें जाकर वैष्णवगुह को देखकर ३५० तिनसे रामजी के आगमन को कहकर नन्दिग्राम में जाकर भरत जीको भी देखकर ३५१ रामजी के आगमन के उत्सव को उनसे कहतेभये तब भरतजी हनुमान्जी से रामचन्द्रजी के आगमनको सुनकर ३५२ भाई शत्रुघ्न और मित्रोंसमेत अतुल आनन्द को प्राप्त होतेभये फिर हनुमान्जी रामजीके पासआकर ३५३ उनसे सब भरतजी के वृत्तान्तको कहतेभये फिर लक्ष्मणसमेत रामच- न्द्रजी विमान से उतरकर ३५४ स्त्रीसमेत तपोनिधि भरद्वाजजी की वन्दना करतेभये तब मुनिजी पक्वान्न, फल मूलआदिक, कपड़े और गहनोंसे लक्ष्मणसमेत रामजीकी पूजा करतेभये मुनि से पू- जित होकर रामचन्द्रजी मुनिश्रेष्ठजी के प्रणामकर ३५५ । ३५६ उनकी आज्ञालेकर अनुज और मित्रोंसमेत पुष्पकविमानपर चढ़ कर नन्दिग्राम को जातेभये ३५७ तब मंत्री, मुख्यपुरवासी और बलवान् श्रेष्ठराजाओंसमेत शत्रुघ्न और भरतजी आनन्द से राम

जीके लेनेको चलतेभये ३५८ और रामजी से मिलकर उनकी व
न्दना करतेभये फिर अनुगोंसमेत शत्रुओं के तापदेनेवाले रामज
पुष्पक विमानसे उतरकर ३५९ भरत और शत्रुघ्नको आलिंगन
करतेभये पुरोहित वसिष्ठजी, माता और वृद्ध बान्धवोंको ३६० म
हातेजस्वी रामजी सीता और लक्ष्मणसमेत प्रणाम करतेभये वि
भीषण, सुग्रीव, जाम्बवान्, अंगद ३६१ हनुमान् और सुषेण क
भरतजी आलिंगन करतेभये फिर भाइयों और दासों से तहांप
मंगलके स्नानकर ३६२ सुन्दरमाला और कपड़े धारणकर सुंद
चन्दनका लेपनकर सुमंत्र के लायेहुए सुन्दर शुभरथपर सीताज
और लक्ष्मणजी सहित रामचन्द्रजी चढ़कर देवताओं से स्तुि
कियेगये फिर भरत, सुग्रीव, शत्रुघ्न, विभीषण ३६३। ३६४ अङ्गद
सुषेण, जाम्बवान्, हनुमान्, नील, नल, सुभग, गन्धमादन ३६
और भी शूरकपि, निषादोंके स्वामी गुह, महावीर्यवान् राक्षस औ
महाबली श्रेष्ठराजा ३६६ बहुतसे शुभहाथी और घोड़ोंपर अच्छ
तरहसे चढ़कर चले अनेक प्रकारके मंगल बाजाओं, सुन्दर स्तु
तियों ३६७ रीछ, वानर, राक्षसों निषाद और श्रेष्ठ सेनावालों से युक्त
होकर महातेजस्वी रामजी नाशरहित अयोध्यापुरी को प्रवेशकरते
भये ३६८ मार्ग में रामचन्द्रजी पिता राजादशरथजी की चिन्तन
कर राजनगरी को देखकर सुग्रीव, हनुमान् और विभीषणके पुण्य
कारी चरणोंके चलनेसे पवित्रहुए स्थानको प्रवेश करतेभये ३६९।

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे रामस्यायोध्याप्रवेशोनामद्विचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४२॥

दोसौ तैंतालीसका अध्याय॥

रामचन्द्रजीका अभिषेक होना और महादेवजीका उनकी स्तुति करना॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! मनुष्य तिस पुण्यकारी दिनमें
शुभयुक्त शुभलग्नमें मंगलके अभिषेक के लिये मंगल करतेभये
वसिष्ठ, वामदेव, जावालि, कश्यप, मार्कण्डेय, मौद्गल्य, पर्वत और
नारदजी २ ये महर्षि तहांपर जप और होम पढ़लेकर रामचन्द्रज

का अभिषेक करतेभये ३ अनेकप्रकारके रत्नमय, सुन्दर, शुभ से युक्त सोनेके पीठमें सीतासमेत रामचन्द्रजी को इसप्रकार बैठालते भये जैसे लक्ष्मीजी सहित जनार्दनजी बैठे हैं ४ सुन्दर, अनेकरत्न-मय, शुभ सोने के कलशों में पुण्यकारी, मंगलकी द्रव्यों से युक्त, दूब, तुलसी के पत्ते और सुगन्धित फूलोंसमेत सब्बतीर्थों का जल मन्त्रसे पवित्र और शुद्ध लेकर व्रत करनेवाले मुनि लोग ५। ६ चतुर्वेदमय, शुभ वैष्णवसूक्तों को जपकर संसारके स्वामी रामच-न्द्रजीका शुभ अभिषेक करतेभये ७ तिस अत्यन्त शुभ लग्न में आकाश में देवताओं के नगारा बजतेभये चारोंओर फूलोंकी वर्षा होतीभई ८ सुन्दर कपड़े, गहने, लेपन और अनेकप्रकारके सुंदर फूलोंसे जानकीजीसमेत रामचन्द्रजी ९ अलंकृतहुए और वेदके पारगामी मुनियों से शोभित होतेभये छत्र और सुन्दर चामर को तिससमयमें लक्ष्मणजी धारण करतेभये १० समीपमें तालवृन्त भरत और शत्रुघ्नजी प्रकाशित होतेभये श्रीमान्, राक्षसोंमें श्रेष्ठ, विभीषणजी दर्पण देतेभये ११ वानरोंके स्वामी सुग्रीवजी पूर्णक-लशको धारणकरतेभये महातेजस्वी जाम्बवान् मनोहर फूलों की मालाको १२ अंगदजी कर्पूरसमेत पानको रामजीको देतेभये हनु-मान्जी सुन्दर दीपका और सुषेण सुन्दर ध्वजाको लेतेभये १३ मन्त्रीलोग महात्मा रामजीके पास आकर उपासना करनेलगे सृष्टि, जयन्त, विजय, सौराष्ट्र, राष्ट्रवर्द्धन १४ अकोप, धर्मपाल और सु-मन्त्र ये मन्त्रीहैं राजा मनुष्योंमें श्रेष्ठ और अनेकदेशोंके स्वामी १५ पुरवासी, वेदके जाननेवाले और वृद्धलोग राजाकी उपासना करते भये रीछ, श्रेष्ठ वानर, मन्त्री, राजा १६ राक्षस, श्रेष्ठ ब्राह्मण और दासोंसेयुक्त श्रेष्ठ आकाशमें देवताओं से लक्ष्मीपतिकी नाईं १७ श्रीमान् राजाओंमें श्रेष्ठ रामजी अयोध्याजीमें तिससमय शोभित होतेभये और नीलकमलके समान श्यामवर्ण, कमलपत्रके समान नेत्रवाले १८ गांठियोंपर्यन्त लम्बी भुजाधारे, काकुत्स्थ, पीतांवर पहने, हरि, शंखकी समान गर्दनवाले, चौड़ी छातीसेयुक्त, विचित्र गहनोंसेभी युक्त १९ सीताजी समेत बैठेहुए, अभिषेकको प्राप्त,

रामचन्द्रजीकी विमानोंमें स्थित, आनन्दयुक्त मनवाले देवताओंके समूह २० और गन्धर्व और अप्सराओंकेभी समूह जय शब्द से स्तुति करतेभये तदनन्तर वसिष्ठ आदिक महर्षियों से अभिषेक कियेहुए रामजी २१ सीता देवीसे इसप्रकार शोभितहुए जैसे लक्ष्मीजी से नारायणजी शोभितहोते हैं फिर अत्यन्त मनुष्यभावसे चरणकमलकी उपासना करनेमें डरेहुए २२ प्रसन्न आत्मा, प्रसन्नताको प्राप्तहुए महादेवजी आनन्दसमेत, गद्गदवाणी से व्याकुल होकर रामचन्द्रजी के दर्शनकर सब देवता, मुनि और वानरोंको प्रसन्न करातेहुये रामचन्द्रजी की स्तुति करतेभये २३ कि मूलप्रकृति,नित्य,परमात्मा, सच्चिदानन्दरूप, विश्वरूप, वेधा २४ निरंतर आनन्दकन्दकी मूल, विष्णु, तीनोंलोक में की हुई आनन्दकीमूर्ति, दिव्यमूर्ति २५ ब्रह्मा और इन्द्रसे पूज्य, महादेवजी को अभयदेने वाले, विष्णुस्वरूप, सर्वरूप २६ उत्पत्ति,पालन और संहारके करने वाले, त्रिगुणात्मा, निर्गत उपाधिस्वरूप, महात्मा २७ इस विद्या देवी सीतासे उपाधि के करनेवाले, पुरुष प्रकृति दोनों करके तीनों लोकों के करनेवाले २८ संसार के माता, पिता, राघवजी के नमस्कार हैं और संसारकी माता प्रपंचरूपिणी सीताजी के नमस्कार हैं निष्प्रपञ्चस्वरूपी रामजी के नमस्कार हैं २९ ध्यानस्वरूपिणी सीताजी के नमस्कार हैं योगियों से ध्यान करने योग्य आत्ममूर्ति रामजी के नमस्कार हैं परिणाम और अपरिणाम से रिक्त सीता और रामजी के नमस्कारहैं ३० कूटस्थबीजरूपिणी सीताजी और रामजी के नमस्कारहैं सीताजी लक्ष्मी, आप विष्णुहैं सीताजी पार्वती, आप शिवहैं ३१ सीताजी सरस्वती,आप चारमुखवाले ब्रह्मा हैं सीताजी इन्द्राणी,आप इन्द्रहैं सीताजी स्वाहा आप अग्निहैं ३२ सीताजी संहारिणी देवी,आप यमराजरूप धारण करनेवाले हैं सीताजी सर्वसम्पत्ति, आप कुबेर हैं ३३ सीता रुद्राणीदेवी, आप महाबली रुद्रहैं सीता रोहिणीदेवी, आपलोकके सुख देनेवाले चंद्रमा हैं ३४ सीताजी संज्ञा आप सूर्य्य हैं सीताजी रात्रि, आप दिन हैं सीता महाकालीदेवी और आप सदा महाकालहैं ३५ तीनोंलोकों

में स्त्रीलिङ्ग में जो हैं वे सब जानकीजी हैं और हे प्रभुजी! पुल्लिङ्ग में जो हैं वे सब आपहैं ३६ हे सब देवों के स्वामी! सब जगह सीता सर्वत्र धारिणी हैं तिस समयमें आपभी रक्षाकरने को तिनकी संसारके धारण करनेवाली शक्तिधारण करतेहैं ३७ तिससे कोटिगुणा पुण्य आप दोनोंसे परिचिह्नित है और शिव और शक्तिसे चिह्नित आपका शांति देनेवाला चरित्रहै ३८ हम और पार्वतीजी हे रामजी! संसारमें पूज्य आपही को पूजते हैं और आप दोनोंसे मैं सदैव पूज्यहूं आपका नाम जपनेवाली पार्व्वतीजी हैं आपका मंत्र जपने वाला मैंहूं ३९ मरनेकी इच्छावाले, आधेजलमें बसनेवाले को मणिकर्णी में मैं आपके ब्रह्म देनेवाले तारक मन्त्रको देताहूं ४० हे जानकीनाथ! इससे आप निश्चय परब्रह्महैं आपकी मायासे सब मोहित होकर आपको तत्त्वसे नहीं जानते हैं ४१ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार शम्भुजी से कहेगये रामजी प्रसन्न होकर सुन्दर रूप धारणकर, श्रीमान्हो अद्भुत दर्शनवाले होगये ४२ उनके महत् अद्भुत, तेजवाले रूपको देखकर मनुष्य, वानर और देवता देखनेकोभी न समर्थ हुए ४३ डरसे श्रेष्ठ देवता अत्यन्तभक्ति से प्रणाम करतेभये तब रामचन्द्रजी मनुष्य वानर और देवताओं को डरेहुए जानकर मायाके मनुष्यरूपको प्राप्त होकर देवताओंसे फिर बोलते भये ४४ कि हे देवताओ! सुनो जो मनुष्य शम्भुजी के कहेहुए स्तोत्रसे प्रतिदिन हमारी स्तुति करताहै वह देवों के समान होताहै ४५ और सब पापोंसे छूटकर हमारे स्वरूपको प्राप्तहोता है लड़ाई में जयको पाता और कहींपर मारा नहीं जाता ४६ भूत वेताल और कृत्याग्रहों से बाधित नहीं होताहै पुत्रहीन पुत्रको पाता और कन्या पतिको पाती है ४७ दरिद्री लक्ष्मीको पाता, सत्त्ववान्, शीलवान्, श्रीमान् और हमारे समान बलको निस्सन्देह पाता है ४८ सब कार्य्योंमें सबके आरम्भों में मनुष्यों के विघ्न नहीं होते हैं मनुष्य दुर्लभ भी जिस जिस मनोरथ की इच्छा करताहै ४९ वह इस स्तोत्र के प्रसादसे छः महीने में सिद्धिको प्राप्तहोताहै जो सब तीर्थोंमें पुण्य और सब यज्ञोंमें फलहै तिसका करोड़गुणा फल इस

स्तोत्रसे प्राप्त होताहै ५० महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ऐसा कहकर रामचन्द्रजी महादेवजी को और आयेहुए ब्रह्मादिक सब देवताओं को बिदा करतेभये ५१ और परमप्रीतिसेयुक्त सब मनुष्य, वानर और देवताओंको भी भेजदेतेभये ५२ इस प्रकार रामजीने सबको बिदा करदिया तो वे सब अत्यन्त प्रसन्न होकर महादेवजी के कहेहुए स्तोत्रको पढ़ते और श्रेष्ठ विश्वरूप रामजी को स्मरण करतेहुए जातेभये ५३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशतसाहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेविश्वदर्शनंनामत्रिचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४३ ॥

दोसौचवालीसका अध्याय ॥

श्रीरामचन्द्रजीका चरित्र वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! रामचन्द्रजी सीताजीसमेत मनोरम राज्यके भोगोंको हजारवर्षतक भोग करते और सबओर से दिशाओंकी रक्षा करतेभये १ घरके सब मनुष्य और देशों के भी सब मनुष्य राक्षस के घरमें स्थित सीताजी की निन्दाकरतेभये २ तब शत्रुओंके नाश करनेवाले रामजी लोकापवादके डरसे मनुष्यों के धर्मको दिखलाकर राजकन्या सीताजीको ३ गर्भवती होनेमेंभी गंगाजीके किनारेके महावन, बाल्मीकिजी के पुण्यकारी आश्रम में त्याग करदेतेभये ४ तब सीताजी स्वामी के आधीन होनेके हेतुसे मुनियों की स्त्रियों से पूजित और बाल्मीकिमुनिजी से रक्षितहोकर मुनिके स्थानमें बसनेलगीं ५ और तहांहीं दो पुत्रोंको उत्पन्नकरती भईं जिनके नाम कुश और लवहुए इनके मुनिजी ने संस्कार किये और ये बढ़नेलगे ६ यमआदि गुणोंसेयुक्त, सब भोगसेहीन रामचंद्रजी भाइयोंसमेत पृथ्वीकी पालना करतेभये ७ निरन्तर आदि और नाशरहित विष्णु, हरिजीको पूजनकर नित्यही ब्रह्मचर्य में परायण होकर पृथ्वीकी पालना करतेभये ८ शत्रुघ्नजी लवणराक्षस को मारकर पुत्रोंसमेत धर्म्मात्मा, रघुवंश में उत्पन्न, आप देवों से रचीहुई मथुरापुरी की पालना करतेभये ९ भरतजी समुद्रके दोनोंओर ग-

न्धर्वों को मारकर तिसी देशमें अपने महाबली पुत्रों को स्थापित करतेभये १० पश्चिममें मद्रदेशमें महाबली लक्ष्मणजी मद्रोंको मारकर अपने महावीर्यवान् पुत्रोंको अभिषेककर ११ अयोध्याजी में फिर जाकर रामजी के चरणोंको छूतेभये फिर रामजी कालधर्म को प्राप्त ब्राह्मण के मरेहुए बालकको तपस्वी शूद्रको मारकर जिलाते भये तदनन्तर गौतमी के किनारे मनुष्यों की सभायुक्त नैमिषारण्य में १२।१३ शत्रुवीरोंके नाश करनेवाले, महाबली रामचन्द्रजी सोने की जानकी बनवाकर तिसके साथ अश्वमेध यज्ञ करते भये १४ परमार्थ के जाननेवाले, प्रभु रामजी बहुत यज्ञ करतेभये दशहज़ार अश्वमेध और वाजपेय यज्ञ करतेभये १५ अग्निष्टोम, विश्वजित, गोमेध सौयज्ञ तथा अनेक प्रकारकी परिपूर्ण दक्षिणावाली यज्ञ करतेभये १६ इसीअन्तरमें महातपस्वी वाल्मीकिजी सीताजीको लेकर रामजी से ये वचन बोले १७ कि हे सुन्दर व्रत करनेवाले! हे रामजी! पापरहित जानकीजी के त्याग करनेके आप योग्य नहीं हैं यह रजरहित पतिव्रता सूर्य्यकी दीप्तिकी नाईं आपके अनन्याहै हे काकुत्स्थ! हे पापरहित! आपने इसे क्योंत्याग करदियाहै १८ तब रामजी बोले कि हे ब्रह्मन्! आपके वचनसे मैं पापरहित जानकीको जानताहूं इस पतिव्रता को पहले मनुष्यरहित दण्डकवनमें रावण हरलेगयाथा १९ तब रावणको मारकर अग्नि के मुखमें प्राप्तहुई शुद्ध सीताको धर्मसे लेकर फिर अयोध्याजी में प्राप्तकरताभया २० फिर पुरके मनुष्यों में बड़ाभारी लोकापवाद हुआ इससे तिसके डरसे इस शुभ आचारवालीको मैंने आपके समीपमें त्यागकर दिया है २१ तिससे मुझमें परायण सीता लोककी प्रसन्नताके लिये राजाओं और महर्षियोंकी सौगन्द करनेके योग्यहै २२ महादेव जी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार मुनि और राजाओंकी सभामें कही हुई सीता, सती, देवी मनुष्योंके आश्चर्य्य करनेवाली सौगन्दको करतीभई २३ और तिसलोकको रामजीकी अनन्यता दिखलकार सब मनुष्योंकी सभामें हाथ जोड़कर बोलीं २४ कि जैसे मैं रामजी से अन्यको मनसे भी नहीं चिन्तना करतीहूं तैसे पृथ्वी देवी मुझ

को विवर देनेके योग्यहैं २५ जैसे मैं सत्यही कहतीहूं कि रामसे दू
सरे को मैं नहीं जानतीहूं तैसेही अपनी पुत्रीके पास सहसासे पृ
थ्वी प्राप्त होतीभई २६ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती ! तब वीर
गरुड़जी तिस समयमें माता सीताजीको जानकर रसातलसे रत्न
मय पीठको पीठ में धारणकर आतेभये २७ तदनन्तर पृथ्वी देवी
हाथों से सीता को ग्रहणकर सुन्दर आगमनसे इनकी प्रशंसाकर
आसनमें बैठा लेतीभई २८ सीताजी को तिस आसन में प्राप्तहुई
देखकर आकाशसे देवसमूह वारंवार अविच्छिन्न, फूलोंकी वर्षा सु-
न्दर सीताजीके ऊपर छोड़तेभये २९ फिर यह सनातनी सीताजी
सुन्दर अप्सराओंसे पूज्यमान होकर गरुड़पर चढ़कर तिस राहसे
स्वर्गको जातीभई ३० पूर्वभागमें दासीगणों से युक्त होकर संसार
की ईश्वरी सीताजी सनातन, योगियोंके जाने योग्य, परमधाम को
प्राप्तहोकर ३१ रसातलमें प्रविष्ट होजातीभई तब सब मनुष्य रसा-
तलमें प्रवेशहुई सीताजीको देखकर ऊंचेस्वरसे साधु साधु यहश-
ब्द करतेभये ३२ फिर शोकमें युक्त होकर रामजी दोनों पुत्रों के
ग्रहणकर मुनि और राजाओंसहित अयोध्यापुरीमें प्रवेश करतेभये
३३ तदनन्तर बहुत समयके पीछे व्रत करनेवाली माता कालधर्म्म
को प्राप्तहोकर राजा दशरथजीके पास स्वर्गको प्राप्त होतीभई ३४
और व्रत करनेवाले रामचन्द्रजी धर्मसे ग्यारहहज़ार वर्ष राज्यक-
रतेभये ३५ तदनन्तर किसी समयमें तपस्वीके रूपसे कालका राम
जीके पास प्रवेशहुआ यह काल प्राप्तहोकर रामजीसे यहवचन बो-
ला ३६ कि हे राम ! हे राम ! हे महाबाहो ! हे रघुवंशियों में श्रेष्ठ !
महाबुद्धिमान् ! मुझको ब्रह्माजीने भेजाहै जो मैं कहताहूं तिसक
आप सुनिये ३७ हमारा और आपका वार्त्तालाप अलग होवे तिस
बीचमें जो प्रवेशकरे वह मारने योग्यहोवे ३८ महादेवजी बोले कि
हे पार्वती ! तब कमलनयन रामजी तैसाही करेंगे यह सुनाकर ल-
क्ष्मणजीको द्वारपालक करतेभये तब तो वैवस्वत काल दशरथजीके
पुत्र रामजीसे वचन कहनेलगा ३९ कि हे राम ! आगमनके कारण
के वृत्तान्तको सुनिये कि आपने देवसमूहों से यह कहकर पृथ्वी में

अवतार लियाथा कि ग्यारह हज़ार वर्ष मनुष्यलोकमें बसकर श्रेष्ठ राक्षस रावण कुम्भकर्ण को इसी बीच में मारडालूंगा ४० । ४१ इससे हे पापरहित ! वही आपके स्वर्गलोक जानेका समय प्राप्तहुआहै आपसे सब देवता सनाथ होंगे ४२ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती ! तब काकुत्स्थ रामजी महामुनि कालसे यह कहतेभये कि ऐसाही होगा इसी अन्तरमें महातपस्वी दुर्वासाजी ४३ राजद्वार पर आकर लक्ष्मणजी से यहवचन बोले कि हे राजपुत्र ! जल्द जाकर हमारी ख़बर रामजीसे करके हमको लेचलो ४४ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! तब लक्ष्मणजी उनसे बोले कि हे ब्राह्मण ! रामजी के समीप इससमय जानेका मौका नहीं है तब तो श्रेष्ठमुनि दुर्वासाजी क्रोधसेयुक्तहोकर लक्ष्मणसे बोले ४५ कि रामजीको जो नहीं दिखलावोगे तो मैं उनको शाप देदूंगा महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! तब लक्ष्मणजी तिस शापके डरसे ब्राह्मणको रामचंद्रजीके पास लेजाते भये तो सब प्राणियोंका भय देनेवाला काल तहांहीं अन्तर्द्धान हो जाताभया ४६ तब रामचंद्रजी प्राप्तहुए ऋषिजीकी पूजा करतेभये और रघुवंशियोंमें श्रेष्ठ लक्ष्मणजी रामचन्द्रजीकी प्रतिज्ञा जानकर सरयूजीके जलमें मनुष्यरूप त्यागकर अपनी देहमें प्रवेश करजाते भये ४७ । ४८ हज़ारफणासे युक्त, करोड़ चन्द्रमाकेसमान तेजवाले, सुन्दरमाला और कपड़े धारे, सुन्दर चन्दनका लेपनकिये ४९ हज़ारनागोंकी कन्याओंसे युक्त, अच्छे प्रकार अलंकृत, लक्ष्मणजी सुन्दर विमानपर चढ़कर वैष्णवपदको जातेभये ५० तब काकुत्स्थ रामचन्द्रजी लक्ष्मणकी सब गति जानकर आपभी स्वर्ग्ग जानेकी इच्छाकर ५१ अपने कुश और लव दोनों पुत्रोंको अभिषेककर रथ, हाथी, घोड़ा और धनको दोनों पुत्रोंमें बांटकर देतेभये ५२ और अपनी राज्यमें कुशावतीपुरीमें कुशको और शरवतीमें लवको धर्म्म से स्थापित करतेभये ५३ विदित आत्मावाले रामजीका अभिप्राय जानकर सब वानर और महाबलवान् राक्षस प्राप्त होजातेभये ५४ विभीषण, सुग्रीव, जाम्बवान्, हनुमान्, नील, नल, सुषेण, निषादों का स्वामी गुह ५५ और वीर पुत्रों का अभिषेककर महामन शत्रुघ्न

जी ये सब रामजीकी पालीहुई अयोध्यापुरी को प्राप्त होतेभये ५६ और हाथ जोड़कर महात्मा रामजी के प्रणामकर बोलतेभये कि हे रघुसत्तम! हे प्रभो! हे सुन्दर नेत्रवाले! हे रामजी! आपको स्वर्गलोक जाने में उद्यत जानकर हम सब लोग आपके पीछे चलनेके लिये प्राप्तहुए हैं आपके विना क्षणमात्र भी जीने में समर्थ नहीं हैं तिससे आपके साथही स्वर्ग को चलेंगे ५७।५८ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तिन लोगों से इसप्रकार कहेहुए महातेजस्वी रामजी उनके कहेहुएको अंगीकारकर राक्षसों में श्रेष्ठ विभीषणजी से बोले ५६ कि धर्म से राज्यकरो प्रतिज्ञा को वृथा न करना जबतक चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी स्थितरहें तबतक प्रसन्नहोकर रमो कालमें हमारे पदको प्राप्तहोवो ६० महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ऐसा कहकर काकुत्स्थ, कमलनयन, राघव, शत्रुओं के नाश करनेवाले, रामचन्द्रजी अपने अंग, विष्णु, सनातन, श्रीरंगशायी, सौम्य, इक्ष्वाकुकुल के देवताको प्रीति से बिभीषणको देदेतेभये तिस पीछे हनुमान्‌जी से बोले ६१।६२ कि हे वानरों में श्रेष्ठ! जबतक संसार में हमारी कथाओं का प्रचार रहे तबतक हे अच्छे व्रत करनेवाले! तुम पृथ्वी में रहो ६३ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! रामचन्द्रजी हनुमान्‌जी से इसप्रकार कहकर जाम्बवान्‌से फिर बोले कि हे रीछों में श्रेष्ठ! द्वापरयुगके प्राप्तहोने में यदुकेवंशमें फिर मैं पृथ्वी के भार के नाश करनेके लिये उत्पन्नहूंगा तब आपही लड़ाई करूंगा ६४।६५ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! जाम्बवान्‌से इसप्रकार कहकर काकुत्स्थ, महाबली रामचन्द्रजी सब रीछ और वानरों से वाणी से बोले कि आपलोग चलें ६६ फिर मंत्री, नैगम और केकयीके पुत्र भरतजी निश्चित होकर रामचन्द्रजी के पीछे चलने में प्राप्त होते भये ६७ तदनन्तर सफ़ेद कपड़े पहनकर ब्रह्मचारी हाथों में कुश ग्रहणकर रामजी के पास प्राप्त होतेभये ६८ रामजी के दक्षिणओर कमल हाथमें लेकर लक्ष्मीजी प्राप्तहुईं और बाईंओर पृथ्वी देवी प्राप्तभईं ६९ अंगोंसमेत वेद, इतिहासोंसहित पुराण, ॐकार, वषट्कार, संसार के पवित्र करनेवाली सरस्वती ७० और धनुष

आदिक अस्त्र शस्त्र ये सब पुरुषकी देह धारणकर रामजी के पीछे चलते भये ७१ भरत, शत्रुघ्न, सब पुरके निवासी पुत्र स्त्री और दासोंसमेत रामजी के पीछे चलतेभये ७२ मंत्री, भृत्यों के समूह, दूत, नैगम, सुग्रीवसमेत वानर और रीछ ७३ पुत्र और स्त्रियोंसमेत महाबुद्धिमान् रामजी के पीछे चलतेभये पशु, पक्षी, सब स्थावर और जंगम ७४ समीप में स्थित श्रेष्ठ मनुष्य जे रामजी को स्वर्ग में जातेहुए देखते हैं वे सब प्रभु महात्मा रामजीके पीछे चलतेभये ७५ कोई लौटे नहीं हैं तदनन्तर बारहकोस जाकर पश्चिममुख स्थित, पुण्यकारी जलवाली सरयूनदी में अनुगोंसमेत रामजी प्रवेशकरते भये तब सब देवसमूहोंसे युक्त होकर ब्रह्माजी ७६।७७ अक्षर ऋषियोंसमेत हो रघुवंशियों में शार्दूलरूप, काकुत्स्थ, सरयूके जलमें पैठेहुए रामजीकी स्तुति करतेभये ७८ कि हे विष्णो! हे मान देने वाले! आइये आपका कल्याणहो बड़ी भाग्य से आप प्राप्तहुए हैं देवताओं की दीप्ति समान भाइयों से वैष्णवी, महातेजवाली, देवों के आकार, सनातनी अपनी देहमें प्रवेश कीजिये हे देव! आपही लोककी गति हैं आपको कोई नहीं जानताहै ७९। ८० आप चिन्तना करनेके योग्य नहीं, महात्मा, अक्षर और सर्वसंग्रहहैं महातेजस्वी आप जिसकी इच्छा करतेहो उसी देहमें प्रवेश कीजिये ८१ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! रामजी सूर्य की किरणों से आच्छादित, फूलों की वर्षा गिरीहुई में मनुष्यरूप छोड़कर अपनी देहको प्रवेश करतेभये ८२ और शंख, चक्र इन दो अंशोंसमेत भरत और शत्रुघ्नजी महात्मा, सुन्दर तेज से युक्तहुए ८३ फिर शंख, चक्र, गदा, शार्ङ्गधनुष और कमल हाथमें लिये, चारभुजाधारे, सुन्दर गहनों से युक्त, सुन्दर चन्दनका लेपन किये ८४ सुन्दर पीताम्बर धारे, कमलपत्रके समान नेत्रवाले, युवा, कुमार, सुन्दर अंगोंवाले, कोमल उज्ज्वल अंगयुक्त ८५ चिकने नील कुन्तलवाले, शुभलक्षण युक्त, नवीन दूबके अंकुरके समान, श्यामवर्ण, पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाले ८६ देवियोंसहित, श्रीमान्, प्रभु, महातेजस्वी रामजी विमानपर चढ़कर तिस कल्पवृक्षके मूल, सुन्दर सिंहासन में

सब देवों से स्तुतिको प्राप्तहोकर बैठतेभये और जे रीछ,वानर और मनुष्य रामजी के पीछे गयेथे ८७।८८ वे सरयूजी के जलको छूकर सुखसे जीव छोड़कर रामजी के प्रसादसे सुन्दररूप धारणकर शुभ युक्त ८९ सुन्दरमाला और कपड़े पहन, सुन्दर मङ्गल और तेज धारणकर अगणितदेहधारी मनुष्य विमानपर चढ़तेभये ९० सब से युक्त,श्रीमान्, राम, कमलनयन, देवता और सिद्धोंकेसमूह तथा महात्मा मुनियों से पूजित होकर ९१ विभु भगवान् रामचन्द्रजी शाश्वत, दिव्य, अक्षर अपने पदको प्राप्तभये जो मनुष्य रामचरित का एक श्लोक तथा आधा श्लोक पढ़ता ९२ वा सुनता तथा भक्ति से शुभदर्शन में स्मरण करताहै वह करोड़ जन्मके इकट्ठे कियेहुए ज्ञान वा अज्ञान से कियेहुए पापों से ९३ छूटकर पुत्र, स्त्री और बान्धवोंसमेत अनायासही योगियों के जानेयोग्य वैष्णव लोकको प्राप्त होताहै ९४ हे श्रेष्ठमुखवाली पार्वती देवी! यह महत् रामजी का चरित तुमसे कहा रामचन्द्रजी के कीर्तन से तुमने मुझे धन्य कियाहै अब क्या सुननेकी इच्छाहै वह कहिये तो मैं कहूं ९५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे श्रीरामचरितकथनंनामचतुश्चत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४४॥

दोसौ पैंतालीसका अध्याय॥

श्रीकृष्णजी के चरित्र में वसुदेवजी के विवाहसे लेकर कंसनाश और उग्रसेन के अभिषेकपर्यन्त कथा वर्णन॥

पार्वतीजी बोलीं कि! हे विभो! हे महेश्वर! आपने रघुनाथजी का चरित्र अच्छीतरह से कहा उसको सुनकर आपके प्रसादसे मैं धन्यहूं १ अब हे देवों के स्वामी! वसुदेवजी के पुत्र कृष्णजीका पाप नाशनेवाला चरित सुननेकी मेरे इच्छाहै २ तब महादेवजी बोले कि हे देवि! महात्मा कृष्णजीका चरित कहताहूं सुनिये वासुदेवजी का चरित मनुष्यों को सब फलका देनेवालाहै ३ यदुकेवंशमें देवमीढ के पुत्र, सब धर्म जाननेवालों में श्रेष्ठ वसुदेवजी हुए ४ ये मथुराजी में देवताओं के समान वर्णवाली देवककी कन्या देवकी से विधि-

पूर्वक विवाह करतेभये ५ उग्रसेनका महाबली, शूर पुत्र कंस हुआ यह वसुदेव और देवकी के रथको आपही सारथी बनकर बिदा के समयमें हांकनेलगा ६ तो शुभ देनेवाली सुन्दर मार्ग में उन सब के जानेमें आकाश में आकाशवाणी गम्भीरवाणी से होतीभई ७ कि हे कंस! इसका आठवांगर्भ तुम्हारे प्राणोंको हरेगा ८ महादेव जी बोले कि हे पार्वती! यह सुनकर तिस समय में कंस बहन के मारनेका प्रारम्भ करनेलगा तब वसुदेवजी अपनी बुद्धिसे उससे बोले ९ कि हे महाभाग! हे महाबली! धर्म से आपको बहनका मारना योग्य नहीं है इसके उत्पन्न हुए गर्भोंको मारिये १० महादेव जी बोले कि हे पार्वती! तब कंस वसुदेवके वचनको अंगीकार करलेता भया फिर वसुदेव और देवकीजी को अपने सब भोगयुक्त सुन्दर घरमें बांधकर रखताभया ११ इसी अन्तरमें पापके भारसे पीड़ितहुई पृथ्वी देवी सहसा से ब्रह्माजी के समीप जातीभई १२ और लोकोंके ईश्वर परमेष्ठी ब्रह्माजी के पास जाकर गम्भीर वाणी से उनसे बोली १३ कि हे प्रजापते! हे सुन्दर व्रत करनेवाले! हे प्रभो! मैं इन लोकोंके धारण करने को नहीं समर्थ हूं मुझमें पापकर्म करनेवाले राक्षस स्थितहैं १४ वे महाबली संसारके सब धर्मों को विध्वंस कररहे हैं और सब मनुष्य अधर्मतेजवाले और पाप से विमोहितहैं १५ इस संसारमें थोड़ाभी धर्म नहीं दिखाई देताहै हे देव! धर्म, सत्य, शौच और दमसे मैं धारण कीहुईहूं तिससे अधर्मसे उत्पन्न लोकके धारण करनेको मैं उत्साह नहीं करतीहूं १६ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ऐसाकहकर पृथ्वी देवी तहांहीं अन्तर्द्धान होजाती भई तदनन्तर सब ब्रह्मा और महादेव आदिक देवसमूह १७ क्षीरसमुद्र के उत्तर किनारे जाकर और महातपस्वी मुनिलोग भी जाकर सुन्दर स्तुतियों से भगवान् की स्तुति करते भये १८ तब तो प्रसन्न होकर ईशजी सब श्रेष्ठमुनियों से बोलते भये कि हे सब देवसमूहो! किस निमित्त आपलोग यहां आये हैं महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब ब्रह्माजी जनार्दन, देवोंके देव भगवान्से बोले १९ कि हे देवदेव! हे जगन्नाथ! पृथ्वी भारसे पी-

ड़ितहैं संसारमें बहुतसे दुरासद राक्षस उत्पन्न हुएहैं २० जरासंध, कंस, प्रलम्बासुर और धेनुक आदिक दुरात्मा राक्षस सनातन सब लोकों को बाधा देरहेहैं २१ पृथ्वी के भार दूरकरने के लिये आपही योग्यहैं महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ब्रह्मा परमेष्ठीजी ने जब इस प्रकार कहा तो पृथ्वी के पति, नाशरहित भगवान् गम्भीरवाणी से बोले २२ कि हे देवताओ! महाबलयुक्तो! इस संसारमें यदुके वंशमें उत्पन्न होकर अव्यग्र पृथ्वी के भारको दूर करूंगा २३ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! जब इसप्रकार भगवान्ने सब देवताओंसे कहा तो देवता जनार्दनजी के नमस्कारकर अपने अपने लोकोंको प्राप्त होकर भगवान्की चिन्तना करतेभये तदनन्तर भगवान् नारायणी मायासे बोले २४ कि हे शुभदर्शनवाली! हिरण्याक्षके छःपुत्रों को पृथ्वीसे लाकर वसुदेवजीकी स्त्री देवकी में प्रवेश करदो २५ अनन्त जीके अंशसप्तमपुत्र प्रवेशहोनेमें तिनकीसौति रोहिणी में देवकी के गर्भ से निकालकर देदो २६ तदनन्तर अष्टमगर्भ में हमारा अंश देवकी में होगा और नन्दगोपकी स्त्री यशोदामें सनातनी २७ तुम्हारे अंशसे उत्पन्न महानिद्राजी होकर विन्ध्यनाम महापर्व्वत में जाकर वहांपर इन्द्रादिक देवताओं से पूजित होकर महापराक्रमी शुम्भासुर इत्यादिक दैत्योंको मारेगी २८ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब महामाया भगवान् के वचनों को अंगीकारकर तिसीसमय में हिरण्याक्ष के पुत्रोंको पर्यायसे देवकीजी में छः गर्भोंको प्रवेशकर देतीभई २९ तिन पुत्रोंके उत्पन्न होतेही तिसी समय में महाबली कंस उनको मारडालताभया तदनन्तर सातवांगर्भ शेषजीके अंश से प्रेरित हुआ ३० तो बढ़ेहुए गर्भको रोहिणीजी में खैंचकर योगमाया करदेती भई गर्भके खींचने से तिनमें नाशरहित संकर्षण जीहुए ३१ इन प्रभुजी को रोहिणीजी भादोंके कृष्णपक्षकी अष्टमी में शुभोदय में उत्पन्न करती भई ३२ तदनन्तर भगवान् हरिजी देवकीजीके गर्भमें प्राप्तहुए तब कंस गर्भयुक्त देवकीजीको देखकर भयसे पीड़ित होगया ३३ और सब देवसमूह आनन्दयुक्तमनहोकर आकाशमें विमानपर चढ़कर देवकीजीकी स्तुति करतेभये ३४

तिस पीछे दशवेंमहीना में भादोंके कृष्णपक्षकी अष्टमी रोहिणीयुक्त में आधीरात के समय जनार्दनजी उत्पन्नहुए ३५ यह नीलकमल के समान श्यामवर्ण, कमलके पत्रके सदृश बड़े बड़े नेत्रयुक्त, चार भुजाधारे, सुन्दर अंगयुक्त, सुन्दरगहनोंसे भूषित ३६ भृगुलता और कौस्तुभमणि छातीमें धारे, वनमाला से विभूषित, वसुदेवजीके उत्पन्न, वासुदेव, सनातनजी हुए ३७ तिनसंसारके नाथ, जगन्मय, कृष्णजी को देखकर वसुदेवजी हाथजोड़ नमस्कार कर बोले ३८ कि हे संसारके स्वामी! हे भक्तोंके कल्पवृक्ष! हे प्रभुजी! आपहमारे यहां उत्पन्न हुए हैं सब देवताओं के आपही आदिरहित, पुरुषों में उत्तम ३९ अचिन्त्यमहद्भूत, योगियोंके ध्यानकरनेयोग्य, सनातनहैं हे पृथ्वीके धारण करनेवाले! आप पृथ्वी में हमारे पुत्रभाव को प्राप्तहुए हैं ४० हे पुरुषोत्तमजी! इस अद्भुत ईश्वर के रूपको देख कर बड़े पराक्रमी, पापकर्म्म करनेवाले राक्षस न सह सकेंगे ४१ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार वसुदेवजी नें जब स्तुति किया तो पद्मनाभ, सनातन श्री भगवान् चार भुजाओं से युक्त रूपको हरलेते भये ४२ और मनुष्यों के भावसे दो भुजाओं से शोभित होतेभये जे अंगकी रक्षा करनेवाले दानव वहांपर स्थित थे ४३ वे भगवान् की माया से मोहित होकर सोगये इसी अन्तरमें वसुदेवजी भगवान् को लेकर ४४ सब देवताओंसे स्तुति को प्राप्तहोकर नगरसे शीघ्रही चलतेभये उस समयमें मेघ बरसने लगे तो महाबली नागों के राजा ४५ भक्तिसे हज़ारफनों से भगवान् को आच्छादितकर पीछे चलतेभये और गोपुरके किंवाड़ भगवान्के चरणके छूनेसे तिससमयमें ४६ खुलजातेभये और वहां के द्वारपाल सो जातेभये यमुनाजी जलसे पूर्णथीं वे महात्माजी के ४७ प्रवेशही करनेसे गांठोंपर्यन्त जलवाली होगईं तब वसुदेवजी यमुनाजी को उतरकर उन्हीं के किनारे स्थित गोकुलको जातेभये ४८ और देवताओं से स्तुतिको प्राप्तहोकर यदूत्तम वसुदेवजी नन्द के घर में प्रवेश करतेभये तो वहां शुभ गोत्रजमें नंदजीकी स्त्री कन्याको उत्पन्न कर ४९ भगवान्की मायासे मोहित होकर सोरहीथीं तब वसुदेव

जी यशोदाजीकी शय्यामें भगवान्‌को पौढ़ाकर ५० उस कन्याको लेकर फिर मथुराजी को लौटआये और स्त्रीको कन्या देकर पहले की तरह बसतेभये ५१ तब देवकीजी की शय्या में प्राप्तहुई वह कन्या बालभावसे रोनेलगी तो कन्याके रोनेका शब्द सुनकर द्वारपालक ५२ कंससे शुभ, देवकीजी के कन्या उत्पन्न होनेको कहते भये तब कंस शीघ्रही देवकीजीके पास आकर कन्याको लेकर ५३ शिलाकी पीठपर पटकने लगा तो वह कन्या शीघ्रही कंसके शिरमें चरण धरकर आकाशमें जाकर पूर्णमुखसे स्थित होगई ५४ और आठभुजाकी देवीहोकर कंससे बोली कि रे मूर्ख! मेरे पटकनेसे क्या है जो तुझको मारेगा ५५ वह सब संसारका रचने, पालने और संहार करनेवाला प्रभु इस लोकमें उत्पन्न होगया वही तेरे प्राणों को हरेगा ५६ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! इसप्रकार देवीजी कहकर सहसासे आकाशको तेजसे पूरितकर देवता और गन्धर्वों से स्तुतिको प्राप्तहोकर हिमाचलको चलीगईं ५७ तो उस समयमें उद्विग्नमन होकर भयसे पीड़ित कंस अपने प्रलंब और चाणूर इत्यादिक राक्षसों को बुलाकर बोला ५८ कि हमारे डरसे देवसमूह मिलकर क्षीरसागरमें जाकर हरिजीसे राक्षसों के नाशको सब कहतेभये हैं ५९ तिनके वचन सुनकर नाशरहित भगवान् मनुष्य के भावसे पृथ्वी में उत्पन्नहुएहैं ६० तिससे इसीसमयमें तुम सब कामरूपी राक्षस निश्शङ्क होकर अत्यन्त बली बालकों को मारडालिये ६१ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार कंस राक्षसोंको आज्ञा दे वसुदेवजी और देवकीजी को समझा छोड़कर अपने मन्दिर में प्रवेश करताभया तदनन्तर वसुदेवजी सबसे उत्तम नन्दजीके गोकुलमें गये ६२ तो नन्दजीने उनकी पूजाकी फिर वसुदेवजी आनंद से अपने पुत्र वलदेवजी को वहां छोड़कर नन्दकी स्त्री यशोदाजी से बोले ६३ कि हे सुभगे! मेरे इस रोहिणीजीके पेटसे उत्पन्न पुत्र की अपने पुत्रकी नाईं रक्षाकीजिये यहकंसके डरसे यहां प्राप्त किया गयाहै ६४ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तिससमयमें सूक्ष्म अंग युक्त, दृढ़ व्रत करनेवाली नन्दजी की स्त्री वसुदेवजीके वचन अङ्गी-

कारकर आनन्दयुक्तहोकर दोनोंपुत्रोंकी पालना करतीभई ६५ फिर वसुदेवजी नन्दगोपजी के घरमें दोनोंपुत्रोंको छोड़कर विश्रब्ध होकर जल्द कंसकी पालीहुई मथुरापुरी को जातेभये ६६ तदनन्तर वसुदेवजीके पठायेहुए गर्गब्राह्मण शुभदिन में नन्दगोपके ब्रज में जाकर नन्दादिकोंसे पूजितहोकर ६७ विधिपूर्वक गोकुलमें भगवान् का जातक कर्मकर वसुदेवजी के दोनोंपुत्रोंके सुन्दर नाम रखतेभये ६८ गर्गब्राह्मण बड़े पुत्रके संकर्षण, रौहिणेय, बलभद्र, महाबल और राम इत्यादि नाम रखतेभये ६९ छोटे पुत्रके श्रीधर, श्रीकर, श्रीमान्, कृष्ण, अनन्त, जगत्पति, वासुदेव और हृषीकेश ये नाम धरतेभये ७० और इसलोकमें राम और कृष्ण इस नामसे प्रसिद्धहोंगे यह कहकर श्रेष्ठब्राह्मण पितृ और देवताओं को पूजकर ७१ गोपालोंसे पूजितहोकर फिर मथुरापुरीको प्राप्तहोजातेभये फिर कंसने रात्रिमें बालकोंके मारनेवाली पूतनाको भेजा ७२ यह अमित तेजवाले कृष्ण जीको विषसे लिप्तहुए स्तन देतीभई तब कृष्णजी राक्षसी जानकर स्तनोंको बड़े ज़ोरसे प्राणोंसमेत पीतेभये तब राक्षसी सहसासे विकल अंगवाली और कटेहुए स्नायुबन्धनसेयुक्तहोकर ७३।७४ कँपतीहुई बड़ा शब्दकर गिरकर मरजातीभई तिसके बड़े शब्दसे आकाशपूरित होजाताभया ७५ तबतो सब गोप तिसको पृथ्वीमें गिरीहुई देखकर डरगये और राक्षसी की चौड़ी छातीमें क्रीड़ाकरतेहुए कृष्णजी को ७६ शीघ्रही उठाकर राक्षस के डरसे मस्तक में गऊके गोबरसे ७७ शुद्धकर गऊके बालसे मुखकोभी शुद्ध करतेभये फिर नन्दगोपजी आकर पुत्रको लेकर ७८ भगवान् के नामोंसे तिनके सबअंगों में मार्जनकर तिसभयानक राक्षसीको गोकुलसे बाहर उठवालेजाकर ७९ डरेहुए गोपसमूहोंसे जलवा देतेभये फिर किसी समयमें भगवान्, हरि, मधुदैत्यकेनाशकर्त्ता गाड़ाकेनीचे सोते थे कि इन्हों ने पांव फैलाये और रोनेलगे तो भगवान्के चरणके प्रहारसे गाड़ा गिरपड़ा ८०। ८१ तो उसके ऊपर मट्टी के बर्तन जो रक्खे थे वे उलटा गिरपड़े तब गोपी और गोप भारी गाड़े को देखकर ८२ परम विस्मयको प्राप्तहुए कि क्या यह है इसप्रकार शंकायुक्त

होजाते भये तब विस्मित होकर यशोदाजी तिस समय में शीघ्रही बालक को उठा लेतीभई ८३ फिर ये यदूत्तम बालक थोड़ेही कालमें यशोदाजी के स्तनपानसे पोषित होकर बढ़तेभये ८४ और गांठों और हाथोंसे रिंगमाण होकर शोभित होतेभये फिर मायावी राक्षस ब्रह्मचारी का वेष धारणकर ८५ भगवान्‌के मारने के लिये पृथ्वी में घूमता भया तब कृष्णजी तिसको राक्षस जानकर तलसे मारतेभये ८६ तो राक्षसरूपसे गिरकर वह मरजाताभया तदनंतर भगवान् सब गोकुलमें घूमतेभये ८७ और गोपियोंके घर घरमें माखन चुरातेभये तब क्रोधयुक्तहोकर यशोदा रस्सीसे उलूखलमें बांध कर गोरस आदिक बेंचनेको जातीभई तब तो उलूखलमें रस्सीसे बँधेहुए भगवान् उलूखलको खींचकर ८८।८९ यमलार्जुनके बीच में जातेभये और उलूखलसे उन दोनों वृक्षोंको गिरा देतेभये ९० तो स्कन्धटूटकर बड़े शब्दसे वे वृक्ष पृथ्वीतलमें गिरजातेभये तिस बड़े शब्दसे वहांपर बड़े पराक्रमी गोपवृद्ध जातेभये और यह देखकर परमविस्मयको प्राप्त होजातेभये और समुद्विग्न यशोदा भगवान्‌को छोड़कर ९१।९२ विस्मितहुए तिनकोलेकर महात्माजीको दूध पिलातीभई माताने जगत्‌के पतिको दाम अर्थात् रस्सीसे उदर नाम पेटको बांधाहै ९३ इसीसे सब महर्षियोंने दामोदर यह नाम कहाहै और वे विमुक्तहुए यमलार्जुन किन्नरके भावको प्राप्तहोजाते भये ९४ तदनन्तर नन्दादिक सब गोपवृद्ध इसभारी उत्पातको जानकर और स्थानको प्राप्त होतेभये ९५ यमुनाजी के किनारे शुभ, मनोरम वृन्दावन में गौओं और गोपियोंके सुन्दर निवासको करते भये ९६ तहांपर तिससमयमें महाबली राम और कृष्णजी बढ़कर वत्सपालोंसे युक्तहोकर बछड़ोंको पालतेभये ९७ तब बछड़ोंके बीच में प्राप्त यदूत्तम कृष्णजीके पास बकनाम महाअसुर बगुलेके रूपसे भगवान्‌के मारनेको प्राप्त होताभया ९८ वासुदेवजी तिसको देखकर लीलापूर्वक लोष्ट उठाकर पखने के अन्त में मारते भये तब वह महाअसुर पृथ्वी में गिर जाताभया ९९ तदनन्तर कईदिनोंके उपरांत राम और कृष्णजी वनमें बछड़े चराकर जामुनके पेड़की

छायामें कोमल पत्तोंपर सोरहेथे १०० कि इसीअन्तरमें देवसमूहों सेयुक्त होकर देव ब्रह्माजी कृष्णजी के देखने को आतेभये तो राम और कृष्णजीको सोयेहुए देखकर १०१ बछड़े और गोपों के बालकोंको हरकर फिर स्वर्गको चलेगये जब राम और कृष्णजी जगे तो बालक और बछवों को नष्टहुए देखतेभये १०२ तबतो यह विस्मय करतेभये कि बछवे और गोपके बालक कहांगये तिससमय में कृष्णजी ब्रह्माजी के कियेहुए कर्म्म को जानकर १०३ बालक और बछवोंको तैसेही रच देतेभये जैसी शीघ्रता और जैसा रूपथा तैसेही सनातन, मधुसूदनजी ने रचा १०४ संसारके रक्षा करनेवाले प्रभुजी बछवे और गोपालोंको रचकर संध्याके समयमें गौवें बछवों की माता १०५ अपने अपने बछवोंको प्राप्तहोकर पहलेहीकी नाईं प्रवर्तितहुईं इसप्रकार कृष्णजीको एकसाल व्यतीत होगया १०६ तब तीनों भुवनके ईश्वर प्रजापति ब्रह्माजी फिर कृष्णजीको बछवे और बालकोंको देदेतेभये और हाथ जोड़ प्रणामकर डरसे गोविन्दजीसे बोले १०७ कि हे सबकी आत्मा! हे अत्यन्त प्रिय आत्मा वाले! तत्त्वज्ञानस्वरूपा और नित्यानन्दस्वरूप आपके नमस्कार हैं १०८ हे आदि, मध्य और अन्तसे रहित रूपवाले हे स्वरूपात्मन्! आपके नमस्कार हैं आपका छोटा और बड़ा अत्यन्त मोटा रूपहै और सबमें प्राप्त, नाशरहित आप हैं १०९ हे महाशक्ते! आप के नमस्कारहैं आप तेजोमयका नित्यज्ञान, बल, ऐश्वर्य्य और वीर्यहैं और पूर्ण छःगुणोंकी मूर्त्ति हैं ११० हे ब्रह्मन्! आप वेदपुरुष, महापुरुष और छन्दःपुरुष और शरीरपुरुषहैं १११ हे पुरुषोत्तम! हे ब्रह्मन्! आप चारोंपुरुष और पुराण हैं पृथ्वी, अग्नि और पवनआदिक आपकी विभूतियांहैं ११२ हे संसारके ईश्वर! हे विभो! पृथ्वी और अग्नि आपकी वाणीसे उत्पन्नहैं आकाश और पवन आपके प्राण से रचेगयेहैं ११३ हे नाश और पापरहित! आपके नेत्रसे आकाश और सूर्य रचेगयेहैं कानसे दिशा और चन्द्रमा रचेगयेहैं ११४ हे महेश्वर! आपके मनसे जलोंकाश्राव वरुणजी उत्पन्नहैं महान् मीमांसा कहनेमें जो ब्रह्म प्रकाशित होताहै ११५ यज्ञोंमें, महाव्रतमें,

वेदके गानमें, आकाश में वहवायु आपही हैं ११६ आकाश यहीहै ओषधियों,सब नक्षत्रों,ग्रहों और सूर्यमेंभी यहीहै ११७ श्रुति आप को ब्रह्म कहती है सोई परमब्रह्म और अमृत जाननाचाहिये ११८ हिरण्मय, अव्यय, शुचि, शुचिषत् ये वैदिकनाम आपकेही हैं और किसीके नहीं हैं ११९ वेद आपको चक्षुर्मय, श्रोत्रमय, छन्दोमय, मनोमय,वाङ्मय,परमात्मा और परेश कहताहै १२० हे कमलनयन! सब उपनिषदोंका अर्थ आपहीहैं सबवेदांतके पारगामी जिनआपकी स्तुति मैं नहींकरसक्ताहूं १२१ हे शरणागतवत्सल! मैंने आपकेबछ-वोंको जो हरणकिया यह बड़ा अपराधकिया तिसको हे स्वामी क्षमा कीजिये १२२ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार ब्रह्मा भग-वान्की स्तुतिकर वारंवार प्रणामकर बछवोंकोदेकर अपने स्थानको जातेभये १२३ और बालरूप भगवान्का सदैव हृदयमें करके हृष्ट-पुष्ट, महातपस्वी ब्रह्माजी देवताओंसमेत बसतेभये १२४ कृष्ण जीके रचेहुए बछवे और पहलेके बछवे तथा बालक देवताओं के देखतेही देखते तहांपर ऐक्यता को प्राप्त होतेभये १२५ फिर कृ-ष्णजी बछरे चरानेवालोंसमेत नन्दजी के गोकुल में जातेभये त-दनन्तर कईदिन पीछे गोपालोंसमेत भगवान् १२६ यमुनाजी के कुण्ड में जाकर तहांहीं स्थित, महाविषवाले, हज़ार मस्तकयुक्त, बली, नागराज के १२७ हज़ारों फणोंको एक पांवसे लीलापूर्वक मर्दनकर प्राण संशययुक्त कर देतेभये १२८ तब कालिय होशमें आकर भगवान् की शरण में जाताभया तब तो भगवान् कृष्णजी विषत्याग कियेहुए नागकी रक्षा करते भये १२९ और गरुड़ के डरसे डरेहुए सर्प के मस्तकों में अपने चरणसे चिह्नकर यमुनाजी के कुण्डसे निकाल देतेभये १३० तिससमय में कालियनाग पुत्र और स्त्रीसंयुक्त शीघ्रही उस कुण्डको छोड़कर गोविन्दजीके नम-स्कारकर जाताभया १३१ पहले उसकुण्डके किनारेके जे पेड़ विष से जलगये थे वे भगवान्के देखनेहीसे शीघ्रही फल और फूलयुक्त होजाते भये १३२ तदनन्तर मधुसूदन, सर्वदेवमय, प्रभुजी काल पाकर कौमार अवस्था को पाकर गौओंके समूहों को पालन करते

भये १३३ कृष्णजी बलभद्र और अपनी समान उमरवाले गोपालोंसमेत मनोरम वृन्दावन में घूमतेभये १३४ और तहांहीं महाघोर, महादेहवाले, मेरुमंदार के समान गौरवयुक्त सर्प्परूप महाअसुरको मारडालतेभये १३५ फिर धेनुकके वनमें प्राप्तहोकर ताल हिन्ताल से गह्वर तिस सुन्दरवन में धेनुक,पर्व्वताकार सदैव गधाकेरूप धारण करनेवाले राक्षस के पांवों को पकड़कर तालवृक्ष से मार डालतेभये तो उसीक्षण से उस वनके पालनेवाले भगवान् के समीप में क्रीड़ा करतेभये १३६। १३७ फिर धेनुक वनसे निकलकर भाण्डीरवट में सबलोग प्राप्त होजाते भये तहांपर राम और कृष्णजीके साथमें बाललीला से क्रीड़ा करतेभये १३८ तबतो गोपके वेषसे वहांपर प्रलम्बनाम राक्षस आकर रामजी को अपनी पीठपर चढ़ाकर शीघ्रही आकाश को जाताभया १३९ तब बलभद्रजी तिसको राक्षस मानकर क्रोधसे तिसके मस्तकमें मुष्टिसे मारते भये तो वह विकलअंग होकर गिर पड़ताभया १४० और राक्षस के रूपसे भयानक शब्द करताभया फिर मस्तक और देहके भिन्न होनेसे रक्तसे देह भरीहुई होकर तहांहीं मरजाताभया १४१ तदनन्तर कृष्णजी रात्रिके समय में प्रकाशयुक्त गोकुलमें गोपकन्याओंके साथ क्रीड़ा करतेहुए बसतेभये १४२ तब अरिष्टनाम दैत्यों का स्वामी बैलकारूप धारणकर कृष्णजी के मारनेके लिये आकर बड़ेशब्दसे गर्जा १४३ तिसको देखकर सबगोपाल भयसे पीड़ित होकर भागे फिर कृष्णजी ने भी तिस भयानक दैत्योंके स्वामी को देखा १४४ तब तो भगवान् ने तालके पेड़को उखाड़कर सींगोंके बीचमें मारा तो राक्षस का शिर और सींग टूटकर बहुतरक्त बहने लगा १४५ फिर भयंकर वेगसे शब्दकर यह राक्षस जीवहीन होकर गिरपड़ा इसप्रकार भगवान् बड़ी देहवाले दैत्योंके स्वामी अरिष्टको मारकर १४६ गोपोंके बालकों को बुलाकर तिसी गोकुलमें बसतेभये तदनन्तर कईदिनों के पीछे केशीनाम महाअसुर १४७ घोड़े की देह धारणकर गोविन्दजी के मारने के लिये व्रजमें प्राप्त होताभया यह सुन्दर गौवोंके व्रजमें जाकर ऊंचेस्वरसे हिनहिना-

ताभया १४८ तिस महान् शब्दसे तीनों भुवन पूरित होजातेभये तब सब देवसमूह डरकर युगके नाशकी शंकाकरतेभये १४९ और तहांके स्थित सबगोप और गोपी मोहित और विकल होजातेभये फिर होश आनेपर सब चारोंओर भागगये १५० और गोपियां रक्षाकरो रक्षाकरो यह कहतीहुई कृष्णजी की शरण जातीभई तब भगवान् उनसे मतडरो मतडरो यह कहतेभये १५१ फिर सबको समझाकर कृष्णजी शीघ्रही मुष्टिसे लीलापूर्वक तिस दैत्यके शिर में मारतेभये १५२ तो दांत और नेत्रटूटकर वह बड़ेशब्दसे गर्जा तब कृष्णजी बड़ी शिलाको तिसके अंगमें मारतेभये १५३ उससे राक्षसके सब अंग चूर्णहोगये तब वह बड़ेशब्द से गर्जकर सहसा से पृथ्वीमें गिरकर मरजाताभया १५४ केशीको मराहुआ देखकर आकाश में देवसमूह फूलोंकी वर्षा करतेभये और साधु साधु यह कहतेभये १५५ इसप्रकार बलरामसंयुक्त कृष्णजी बालकपनमें बड़े बली दैत्योंको मारकर सुखसे आनन्दित होतेभये १५६ ये कृष्णजी नीलकमलके समान श्यामवर्ण,कमलपत्रके सदृश नेत्रवाले,पीतांबर धारे, माला और वनमाला से विभूषित १५७ कौस्तुभमणिसे प्रकाशित छातीवाले चित्र विचित्र माला और लेपन धारे, विचित्र गहनोंसे युक्त कुण्डलों से विराजित १५८ मोती और तुलसीका मालाधारे,कस्तूरीके तिलकसेयुक्त, सुन्दर चिकना नीला टेढ़ा बालों का जूड़ा बांधेहुए १५९ अनेक प्रकारके फूल बांधेहुए,मुरैलेके पंखों का कानों का गहना धारे, लालकमल के समान हाथ और पांवके तलवोंसेयुक्त १६० पक्षके मध्यमें प्राप्त चन्द्रमा के कलंक की नाईं भौंहरूप लतासेयुक्त मुखवाले और हार, नूपुर, केयूर और बहूटों से विराजित हैं १६१ इसप्रकारके यदुनन्दनजी महासुन्दर, फल और फूलोंसे विराजित वृन्दावनमें सुन्दर वंशीको बजातेहुए रहते भये १६२ करोड़ कामदेव के समान सुन्दर भगवान् को देखकर सब गोपोंकी स्त्रियां कामदेव के बाणसे पीड़ित होजातीभई १६३ पूर्व समय में दण्डकारण्यवासी सब महर्षि हरि रामजीके सुन्दर शरीरको देखकर भोग करानेकी इच्छा करतेभये १६४ वही सब स्त्री

होकर गोकुल में उत्पन्नहुएहैं फिर कामसे भगवान्को प्राप्त होकर संसाररूपी समुद्रसे छूटगयेहैं १६५ जैसे दैत्य क्रोधसे भगवान् के पास आकर लड़ाईमें मृत्युको पाकर मुक्तिको प्राप्त हुएहैं १६६ संसारमें काम और क्रोध मनुष्योंको नरकका कारणहै गोपियां भगवान्में कामही से प्राप्त होकर मुक्त होगई हैं १६७ जे काम वा डर वा वैरसे भगवान्को भजतेहैं वे वैकुण्ठको प्राप्त होते हैं भक्तियोग से भजनेवालों का तो कहनाही क्याहै १६८ भगवान् की वंशीका शब्द सुनकर रात्रिमें गोपों की सब स्त्रियां शय्याओं से उठतीभईं यह कपड़े और बालोंको खोले १६९ पति, पुत्र, बंधु और कुलकी लज्जाको त्यागे कामदेव के बाणसे पीड़ित होकर भगवान्के पास प्राप्त होतीभईं १७० सब गोपियां मिलकर भुजाओंसे भगवान्को आलिंगनकर ओष्ठके अमृतको इसप्रकार पान करतीभईं जैसे देवता अमृत पान करतेभये हैं १७१ तिन सबसे भगवान् वृन्दावन में क्रीड़ा करतेभये और भगवान्से सब स्त्रियां निर्भयहोकर रमती भईं १७२ इसप्रकार दिन दिनमें गोपियां मनोरम वृन्दावन तथा यमुनाजीके किनारे भगवान् से रमण करतीभईं १७३ पार्व्वतीजी बोलीं कि हे महादेवजी! भगवान् धर्म्मकीरक्षा करनेकेलिये पृथ्वी में अवतार लेकर पराई स्त्री से गमन कैसे करतेभये १७४ तब महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! अपने शरीर और पराये शरीरमें अंग का भेद नहीं है सब संसार भगवान्हीका अंगहै अलग नहींहै १७५ तिस महात्मापुरुष, नैसर्गिक, संसारके स्वामी के स्वामीभाव और आत्माके ईशभावसे स्त्री और पुरुषका भेद नहीं है १७६ हे सुभगे! पापके नाश करनेकी सामर्थ्य से व्यापी, प्रभु, देव, परमात्माका दोष नहीं है १७७ वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! इसप्रकार त्रिपुरान्तक महादेवजी पार्व्वतीजी से कहकर श्रीकृष्णजी के शेष चरित्र कहनेका प्रारंभ करतेभये १७८ कि शरत्कालके प्राप्तहोने में नंदगोप इत्यादिक सबगोप इन्द्रके महोत्सव करनेका प्रारम्भ करतेभये १७९ तबपराक्रमी गोविन्दजी इन्द्रके तिस उत्सव को रोककर पर्वतराज गोवर्द्धनका उत्सव करातेभये १८० तब क्रोधयुक्त होकर इन्द्र नन्दगोप

के वृन्दावन में सातरात्रि तक निरन्तर महावर्षा करतेभये १८१ फिर जनार्दन भगवान् गोवर्द्धन महापर्वत को उखाड़कर गौवोंकी रक्षाकरने के लिये लीलापूर्वक धारण करलेतेभये १८२ तब तिस पहाड़की छायामें गोप और गोपियां महल के भीतरकी नाईं सुख से बसतेभये १८३ तदनन्तर डरकर इन्द्र संभ्रांतचित्तसे तिस वर्षा को रोंककर नन्दजी के ब्रजको जातेभये १८४ तब कृष्णजी तिस महापर्वतको पहलेकी तरह रखदेतेभये फिर नन्दआदिक सबगोप-वृद्ध १८५ गोविन्दजीकी पूजाकर परमविस्मयको प्राप्त होतेभये तब देवइन्द्र भगवान् के पास आकर हाथजोड़कर आनन्दसे ग-द्गदवाणी से स्तुति करतेभये १८६ कि हे कमलनयन! हे सर्वज्ञ! हे अतित्रिविक्रम! हे त्रिगुणातीत! हे सबकेईश! हे संसारकी आत्मा आपके नमस्कारहैं १८७ हे केशवजी! आप यज्ञ, वषट्कार, ओ-ङ्कार, यज्ञ, हवि, सब देवताओं के पिता और माताहैं १८८ प्राणी के आगे हिरण्यगर्भ आपही वर्तमान होते हैं आपही पति और हि-रण्मय पुरुषहैं १८९ हे संसारके ईश्वर! हे देव! आपही पृथ्वी और आकाशको धारण कियेहुएहैं आत्मा और फलके देनेवाले हैं १९० हे सनातन! तिस संसार के पतिके प्रकाश को देवताओं ने प्राप्त कियाहै अमृत और मृत्यु आपकी छायाहैं १९१ तिस देव आपको हम हवि से पूजन करते हैं ये सुवर्णयुक्त जिसके हिरण्मय उत्पन्न हुएहैं १९२ हे केशव! हे नाशरहित! समुद्र जिसकी जिह्वा और वाहहैं ये दिशा और प्रतिदिशा वायुहैं १९३ तिस देव आपको हम हविसे पूजन करते हैं जिस बढ़ेहुए आपसे पृथ्वी फिर समारूढ़हुई १९४ हे ब्रह्मन्! हे महेश्वर! जिस आपसे स्वर्ग्गलोक स्तम्भित कियागया है आप आकाशमें रजके अन्त, सबमें प्राप्त और नाश-रहित हैं १९५ तिस देव आपको हम हविसे पूजन करते हैं प्र-काशमान, तप्तदीप्ति, गुणयुक्त १९६ आपको लक्ष्मी जी सदैव मनसे अवश्यही देखती हैं जिस परमपद में सूर्य्यनारायण उदय होकर प्रकाशित होतेहैं १९७ तिस देव आपको हम हविसे पूजन करते हैं जो जनार्दन, जल, बृहत्, विश्व ब्रह्ममायको १९८ इस

सर्ग में गर्भ में धारणकर उत्पन्न करते हैं देवताओं के एक प्राण, नाशरहित विभु वर्तमान हैं १९९ तिस देव आपको हम हविसे पूजन करते हैं जे जल सहिसे दक्ष प्रजापतिको देखते भये २०० और आदि में तहांपर यज्ञ को धारणकर पुरुष हवि को उत्पन्न करते हैं जो देवताओं में एक अधिदेव परसेपर हुए हैं २०१ तिस देव आपको हम हविसे पूजनकरते हैं जो नाशरहित पुरुष उत्पन्न होकर पृथ्वी के मानको नाश करते हैं २०२ और जो सत्यधर्मवाले, नाशरहित ईश्वर स्वर्ग को प्रकट करते हैं जो चन्द्रमा और बृहत् जल होकर सब संसारको प्रकट करते हैं २०३ तिस देव आपको हम हविसे पूजन करते हैं हे प्रभुजी! ये संसार आपही से उत्पन्न हुएहैं २०४ हे प्रजाओं के स्वामी! हे अच्युतजी! आपसे भविष्यत् और भूत उत्पन्न हुएहैं जिस कामनासे हम आपकी पूजन करते हैं वह हमको संक्षेपसे होवें २०५ आपकी दयाके देखने से हम तीनों के पतिहोंगे हिरण्मयपुरुष हिरण्यश्मश्रुकेशयुक्त २०६ हिरण्य-भाक्, सूर्य सब हिरण्यको उत्पन्न करतेभये हैं यह सबमें प्राप्त ब्रह्म हैं जो सूर्य में स्थितहैं २०७ तिस देव सूर्य के श्रेष्ठ उत्तम भर्ग आप के रूपको हम सदैव ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धिको प्रकाशित करते हैं २०८ हे कमलनयन! हे लक्ष्मी के स्वामी! हे सबके ईश! हे केशव! हे वेदान्तसे जानने योग्य! हे यज्ञके स्वामी! हे यज्ञरूप आपके नमस्कारहैं २०९ वासुदेवजी गोपों के वेष धारण करनेवाले के भी नमस्कारहैं तिस सबके ध्वंसनसे मैंने अपराध कियाहै २१० तिसको हे संसारके स्वामी! हे कृपाके समुद्र! हे पुरुषोत्तमजी क्षमा कीजिये और थोड़ेही कालमें दुरासदकंस को मारिये देवताओं का कल्याणकर सुखसे पृथ्वीको स्थित कीजिये २११ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार सब देवों के स्वामी इन्द्रजी गोविन्दजीकी स्तुतिकर सुधामृतसे अभिषेककर सुन्दर कपड़े और गहनों से २१२ भगवान्का पूजनकर फिर स्वर्ग को चलेगये गोपवृद्ध और गोपियां इन्द्रको देखकर २१३ उनसे पूजित होकर अतुल आनन्दको प्राप्त होतीभई और महापराक्रमी राम और कृष्णजी सुन्दर गहनेसे भू-

षित होकर २१४ नन्दजी के सुन्दर वृन्दावनमें सुखसे स्थित होते भये इसी अन्तर में मुनिश्रेष्ठ नारदजी २१५ सहसा से मथुराजी में जाकर कंसके समीप प्रवेश करतेभये तब राजासे पूजित होकर शुभ आसन में बैठते भये २१६ और भगवान् के सब चेष्टित को जनातेभये देवताओं का उद्योग, भगवान्का जन्म २१७ वसुदेव का पुत्रको लेकर गोकुलमें जाना, राक्षसोंका नाश, कालियकायमुनाके कुण्डसे निकालना २१८ गोवर्द्धन पर्वतका धारणकरना और इन्द्रके समागमको कंससे सम्पूर्णतासे कहकर २१९ तिस राक्षस से पूजित होकर ब्रह्माजी के स्थानको जातेभये तब कंस मंत्रियों से परिवेष्टित होकर उद्विग्नमनहो २२० तिनके साथ अपने नाशहोने की सलाह करतेभये फिर दानवों में श्रेष्ठ महाबली कंस बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, धर्म्मवत्सल अक्रूरजी से अपने हितके कार्य्यको कहतेभये २२१ कि मेरे भयसे सब इन्द्रादिक देवता भयसे पीड़ित होकर विष्णुजी के पास शरणमें गयेथे २२२ तब प्राणियोंके पालन करने वाले मधुसूदन भगवान् देवताओं को अभय देकर मेरे मारने के लिये देवकीजी के गर्भमें उत्पन्न हुएहैं २२३ दुष्टात्मा वसुदेव जी रात्रिमें मुझको छलकर दुरात्मा नन्दके यहां पुत्रको देआयाहै २२४ वह बाल्यावस्थाही से दुराधर्ष है उसने बड़े बड़े राक्षस मारडालेहैं और मेरे मारने केलिये भी निस्सन्देह तैयार हुआहै २२५ वह इन्द्रादिक देवता और असुरोंसे भी मारनेको नहीं समर्थ है मैं उसे यहां बुलाकर उपायसे मारना चाहताहूं २२६ मतवाले हाथी, मल्ल और श्रेष्ठ घोड़ोंसे वा जिस किसी उपायसे यहींपर मारसकूंगा २२७ हे यदुवंशियों में उत्तम! तिससे व्रजमें जाकर कृष्ण, राम और सब नंदादिक गोपोंको धनुषयज्ञ देखनेकेलिये यहां लाइये २२८ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब पराक्रमी, यदुवंशियों में श्रेष्ठ, कृष्णजी के दर्शनकी उत्साहयुक्त अक्रूरजी कंस के वचन अंगीकारकर रथपर चढ़कर सुन्दर गोकुल को जातेभये २२९ वहांपर महाभागवतोंमें श्रेष्ठ, नम्रतायुक्त अक्रूरजी गौवों के बीचमें स्थित, क्लेशरहित कृष्णजीको देखतेभये २३० यह नीलमेघों के सदृश दीप्तियुक्त, सब

गहनोंसे भूषित, कमलके पत्रके समान सुन्दर नेत्रयुक्त, लम्बी भुजावाले, रोगरहित २३१ पीताम्बर से आच्छादित, सब अंगों से सुन्दर, कौस्तुभमणिसे प्रकाशित छातीवाले, रत्नके कुण्डलों से शोभित २३२ तुलसी और वनमालासे युक्त, वनके फूलोंका गहनाधारे और गोपोंकी कन्याओंसे युक्तथे ऐसे जनार्दनजी को देखकर २३३ पुलकावली से चिह्नित सब अंगयुक्त और आनन्द के आंशुओं से नेत्रयुक्त होकर अक्रूरजी तिस रथ से उतरकर प्रणाम करते भये २३४ फिर आनन्दसे गोविन्दजीसे मिलकर प्रणामकर लालकमल के सदृश, वज्र और चक्रके चिह्नसे चिह्नित २३५ चरणकमलों को अपने मस्तक में धरकर वारंवार प्रणाम करतेभये फिर कैलास के कँगूड़े के सदृश दीप्तिवाले, नीलवस्त्र धारे, प्रभु २३६ शरदृतु के पूर्णचन्द्रमा के समान, मुक्तादाम से विभूषित बलरामजी को देखकर प्रणाम करतेभये २३७ तब राम और श्रीकृष्ण दोनोंवीर आनन्द से अक्रूरजी को उठाकर तिन यादवसमेत घर को आते भये २३८ तब नन्दगोप महातेजस्वी ने आतेहुए अक्रूरजी को देखकर श्रेष्ठ आसन पर बैठाकर २३९ आनन्दसे विधिपूर्व्वक अर्घ्यपाद्य आदिक और भक्ति से सुन्दर वस्त्रों से उनकी पूजा किया २४० फिर यादव अक्रूरजी राम और कृष्णजीको वस्त्र और गहने देकर नन्दगोप और यशोदाजीकोभी देतेभये २४१ फिर कुशासन में बैठकर कुशलप्रश्न नन्दजीसे पूछकर नन्दजी के पूछनेपर बुद्धिमान् अक्रूरजी सब राजकार्य्यों को कहते भये २४२ कि ये कृष्ण महातेजस्वी, साक्षात्नारायण, नाशरहितहैं ये देवताओंके कल्याण, साधुओंकी रक्षा २४३ पृथ्वीके भारके नाश, धर्म्मके स्थापन और कंसादिक सब दैत्योंके नाश करनेकेलिये २४४ देवसमूह और महात्मा मुनियों से प्रार्थित होकर वर्षाकालमें महारात्रिमें देवकी के पेटमें उत्पन्न हुएहैं २४५ इन देवोंके स्वामी, पुत्र हरिजी को कंसके डरसे वसुदेवजी लेकर आपके घरमें तिसीसमय रात्रि में छोड़गये हैं २४६ और तिसीसमयमें यशस्विनी यशोदाजी मायाके अंशसे उत्पन्न, शुभ मुखवाली कन्याको उत्पन्न करती भई २४७ तिस क-

न्यासे सब शुभ यह ब्रजकुल मोहित होगयाथा तब वसुदेवजी मूर्च्छित यशोदाजीकी शय्यामें यदुश्रेष्ठ २४८ कृष्णजी को पौढ़ाकर तिस कन्याको लेकर अपने घरमें प्राप्त होजातेभये और कन्याको देवकीजी की शय्यामें पौढ़ाकर बाहर निकल आतेभये २४६ तब देवकीजीकी शय्यामें स्थित कन्या शीघ्रही रोतीभई तिसके रोनेको सुनकर सहसासे कंस कन्याको लेकर २५० घुमाकर शिलाकीपीठ पर पटकनेलगे तब हथियार और आठ भुजाओंसे युक्त कन्या हाथ से छूटकर क्रोधसे गम्भीरवाणी से कंससे आकाशमें स्थित होकर बोली २५१ कि हे अधम राक्षस! जो अनन्त सब देवों के ईश्वर पुरुषोत्तमजी हैं वे तुम्हारे मारने के लिये गोकुलमें प्राप्त हैं २५२ अक्रूरजी बोले कि हे नन्दजी! ऐसा कहकर वह महामाया हिमवान् पर्व्वतको जातीभई तबसे लेकर दुष्टात्मा, भयसे उद्विग्नमनहोकर कंस २५३ महात्मा कृष्णजी के नाश करने के लिये दानवोंको भेजताभया तब इन बुद्धिमान् बालकने लीलापूर्वकही सब दानवोंको मारडाला २५४ और अत्यन्त अद्भुत कर्म्मकिये गोवर्द्धनपर्व्वतका उठाना, कालियनागका निकालना २५५ इन्द्रका समागम और सब राक्षसोंका नाश होना नारदजी से सुनकर अत्यन्त भयसे पीड़ित होकर २५६ महाबाहु,दुरासद राम और कृष्णजीको वहां बुलाकर मदोत्कट बड़े हाथी वा मल्लोंसे मारनेके लिये उद्यत हुआहै २५७ कृष्णजी के बुलानेके लिये हमको यहां भेजाहै और दुरात्माने वसुदेवजीको कैदकियाहै २५८ यह सब दुरात्माका चेष्टित मैंने कहा अब तुम सब ब्रजवासी धनुषयज्ञ देखनेके लिये २५६ दही और घी आदिको लेकर प्रातःकाल जानेके योग्यहौ राम और कृष्णजी कोभी तुम सब लेकर कंसकेपास चलो २६० कृष्णजीसे निस्संदेह कंस माराजावेगा तिससे डर छोड़कर राजा की आज्ञा से चलिये २६१ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! ऐसा कहकर बुद्धिमान् अक्रूर चुपरहतेभये अक्रूरजी के रोमहर्षण दारुणवचन सुनकर २६२ नन्दगोप इत्यादिक सब गोपवृद्ध भयसे व्याकुल महादुःखसागर में शोकसे मोहित होकर बोलतेभये २६३ तब पराक्रमी कमलन

यन हरिजी तिनको देखकर समझाकर बोले कि राक्षससे डर मत करो २६४ आप लोगों और बलभद्रजी के संग मैं दुरात्मा कंसके मारनेकेलिये मथुरापुरी को जाऊंगा २६५ तहांपर दानवों में श्रेष्ठ दुरात्मा कंस और सब राक्षसों को मारकर पृथ्वीकी पालना करूंगा २६६ तिससे शोक छोड़कर मथुरापुरी को चलिये इसप्रकार हरिजी के कहनेपर नन्द इत्यादिकगोप २६७ कृष्णजीको वारंवार आलिंगनकर मस्तक सूंघनेलगे और महात्माजी के अप्रमेयकर्म विचारकर २६८ अक्रूरजी के वचनसे सब गोप व्यथारहित होगये दूध,दही और घीसेयुक्त,पवित्र, अनेकप्रकारके पकान्न सुहृद्य,स्वादु और मीठे, सुन्दर, बहुतभोजन यशोदाजी देतीभई २६९। २७० राम और कृष्ण और नन्दादिक श्रेष्ठ गोपों और बालक और वृद्ध मित्रोंसमेत अच्छेप्रकार अलंकृत स्थान में २७१ यादवों में श्रेष्ठ अक्रूरजी यशोदाजी के दियेहुए सुन्दर, पाप और रोग नाश करने वाले, शुभ अन्नको भोजन करतेभये २७२ फिर दृढ़व्रत करनेवाली यशोदाजी न्यायपूर्वक भोजन कराकर जलका आचमन देकर कपूरसमेत पान तिनको देतीभई २७३ फिर सूर्य्यनारायणजीके अस्त होनेमें अक्रूरजी सन्ध्याकर राम और कृष्णजी समेत उत्तम दूधयुक्त अन्नको भोजनकर २७४ राम और कृष्णजीसे शय्यामें प्रवेश करायेगये तिस श्रेष्ठ, सुन्दर, दीपों से विराजित स्थानमें मनोहर, अनेकप्रकारके फूलोंसे विराजित शय्यामें हरिकृष्णजी नारायणजी की नाईं शयन करतेभये २७५। २७६ तिनको देखकर आनन्दके आंसू और पुलकावलीसे चिह्नित भागवतों में उत्तम अक्रूरजी सहसासे तामसी नींद को छोड़कर कल्याणको देखकर विष्णुजी के चरण चापने लगे कि इतनेही से मेरा जीवन अच्छा और सफल हुआ २७७। २७८ यह त्रैलोक्य का ऐश्वर्य्य, उत्तमसुख, राज्य, धर्म्म, मोक्ष, सुख और श्रेष्ठ है २७९ शिव और ब्रह्मादिक देवता, सनकादिक मुनिश्रेष्ठ और वसिष्ठआदिक महर्षियों से मन से भी स्मरण करने को समर्थ नहीं हैं २८० सोई भगवान्के शरद्ऋतु के कमलके तुल्य उज्ज्वल, सुन्दर सुख देनेवाले, लक्ष्मी

जी के हाथों से स्पर्श कियेगये दोनों चरण २८१ कमल के तुल्य, शुभ मैंने बड़ी भाग्यसे पाये हैं इस प्रकार ब्रह्मानन्द के गौरव से क्षणमात्रहीमें रात्रि व्यतीत होगई २८२ निर्म्मल प्रातःकाल होने में आकाश से उत्तम देवसमूहों से स्तुति किये गये हरि जी तिस शय्या से जागतेभये २८३ फिर न्यायपूर्वक बुद्धिमान् बलभद्रजी सहित जलका स्पर्शकर माताके चरणों में गिरकर यात्राको प्रकाशित करतेभये २८४ तब दुःख और आनन्दसे युक्त, आंशुओं से पूरितमुख होकर यशोदाजी पुत्रोंको उठाकर आलिंगन करतीभई २८५ फिर दृढ़व्रत वाली देवीजी आशिष देकर महावीर पुत्रोंको वारंवार आलिंगनकर छोड़देतीभई २८६ फिर अक्रूरजी हाथजोड़ कर यशोदाजी के प्रणामकर बोले २८७ कि हे महाभागे ! हे पापरहित यशोदाजी ! मैं जाताहूं प्रसन्न हूजिये यह महाबाहु कृष्णजी महाबली कंसको मारकर २८८ सबसंसारके निस्सन्देह राजाहोंगे तिससे हे श्रेष्ठ मुखवाली ! शोक छोड़कर सुखीहूजिये २८९ महादेवजीबोले कि हे पार्वती ! इसप्रकार यशोदाजी से कहकर अक्रूर जी उनसे बिदाहोकर राम और कृष्णजी समेत उत्तम रथपरचढ़ते भये २९० और अप्सराओं के समूहों से स्तुतिको प्राप्तहोकर शीघ्रही मथुरापुरी को चलतेभये और नन्द गोप इत्यादिक सबगोपवृद्धभी तिनके पीछे चलतेभये २९१ इनगोपोंने दही, घी और अनेक प्रकारकेफल लेलिये हैं जातेहुए हरिजीको देखकर गोकुलसे गोपोंकी स्त्रियां २९२ रथमें स्थित भगवान्के पीछे चलतीभई तब हरिजी सबगोपोंकी स्त्रियोंको लौटारतेभये २९३ तब शोकसे संतप्तहृदय होकर वे भगवान् को रोनेलगीं हाकृष्ण ! कृष्ण, कृष्ण, गोविन्द येनाम कहकर वारंवार रोतीभई २९४ आंशुओंसे पूर्णनयन, दीनहोकर वहीं स्थितहुई रोतीभई तदनन्तर अक्रूरजी सुन्दर रथ को गोकुलसे हांकतेभये २९५ राम और कृष्णजीसमेत यादव अक्रूरजी शीघ्रही मथुरा चलनेमें यमुनाजीको उतरकर किनारे उत्तम रथको खड़ाकर २९६ तिस रथसे उतरकर स्नान करनेका प्रारम्भ करनेलगे तथा आवश्यककर्म करनेको सुन्दर जलमें स्नानकर २९७

भागवतोंमें उत्तम अक्रूरजी अच्छेप्रकार अघमर्षण जपकर शुभयुक्त राम और कृष्णजीको जलमें देखतेभये २६८ शरद् ऋतुके करोड़ चन्द्रमा की दीप्तिसदृश, नीलवस्त्रधारे, प्रभु, सुन्दर चन्दनसे युक्त अंगवाले, मोतीके गहनेकीसी छवियुक्त २६६ लालकमल के समान नेत्रवाले, कमलके गहने धारे ऐसे बलरामजी को देखा और कृष्णजीको नीलमेघोंके सदृश ३०० सुन्दर पीताम्बरधारे, कमल के समान बड़े नेत्रयुक्त, हरिचन्दनसे लिप्त अंगवाले और अनेक प्रकार के रत्नों से विभूषित देखकर अक्रूरजी परमविस्मयको प्राप्त होगये जब अक्रूरजी जलसे उठे तो दोनों महाबली रामकृष्णजीको रथमें देखतेभये ३०१।३०२ फिर जब बुड़की लगाई और दोनोंमंत्रों से हरिजीको जपा तो अमृतके समुद्रमें शेषजीकी शय्यापर लक्ष्मी-सहित हरिजीको ३०३ सनकादिकोंसे स्तुतिकोप्राप्त,सब देवताओं से उपासना कियेगये तिसजलमें देखा तो परमविस्मयको प्राप्तहोकर सबमें प्राप्त,ईश्वर, हरिजीकी स्तुति करनेलगे ३०४ कि कालात्मा, आदि और नाशरहित, अव्यक्त, अविकार ३०५ प्राणियों के स्वामी, प्राणियेंा में व्याघ्र, सब प्राणियों के नियंता, परमात्मा ३०६ विकार, अविकार, प्रत्यक्षपुरुष, गुणोंके स्वामी, नियम ३०७ देशकालादिनिर्भेदरहित, परात्मा, अनन्त, अच्युत ३०८ गोविन्द, त्रयीनाथ, शार्ङ्गधनुषधारी, नारायण, विश्व, वासुदेव ३०९ विष्णु, पुरुरूप, शाश्वत, कमलनयन, नित्य, शंख और चक्रके धारण करनेवाले ३१० करोड़ सूर्य्यके उदयके सदृश गहनोंसे अंचित तेजवाले, हरि, सब लोकों के ईश्वर ३११ सविता, सब लोकों के बीज, परमात्मा, संकर्षण, कृष्ण, प्रद्युम्न ३१२ अनिरुद्ध, धाता, विधाता, संसार की योनि, सहस्रमूर्ति, बहुत मस्तक, चरण और भुजावाले ३१३ सहस्रनाम, नित्य, पुरुष, सर्पकी शय्यापर सोनेवाले, सौम्यरूपी ३१४ केशव, पीलेकपड़े धारण करनेवाले, लक्ष्मीजी के घनस्तनों के आलिंगनके मर्दनसे उज्ज्वल तेजवाले, श्रीधर, लक्ष्मी के स्वामी और अनन्तरूपी के नमस्कारहैं ३१५ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! जो मनुष्य भक्तिसे स्नानके समयमें इस स्तोत्रको सना-

तन देवजीका ध्यानकर पढ़ताहै वह बड़े पापोंसे छूटजाताहै ३१६ और सब तीर्थों के फलको पाकर विष्णुसायुज्य को प्राप्त होता है इसप्रकार भागवतों में उत्तम अक्रूरजी जलके भीतर भगवान् की स्तुतिकर ३१७ जलसमेत सुगन्धित फूलोंसे पूजन करतेभये और कृतकृत्य होकर यमुनाजी के जल से निकल कर ३१८ बलराम और श्रीकृष्णजी के पास आकर शुभसेयुक्त होकर नमस्कार करते भये अक्रूरजी को विनीत और विस्मित देखकर गोविंद हरिजी बोले ३१९ कि हे अक्रूर! तिस जलमें क्या आश्चर्य देखाहै महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब अक्रूरजी यदुवंशियों में श्रेष्ठ, सुंदर तेजवाले कृष्णजी से बोले ३२० कि हे ईश! हे संसारकेप्रभु! हे हृषीकेशजी! सबमें प्राप्त आपकी महिमा का क्या आश्चर्य्य है सम्पूर्ण संसार आपहीहो ३२१ आप जल, आकाश, अग्नि, पृथ्वी, पवन और चार प्रकारका स्थावर जंगम सब संसारहो ३२२ मेघोंसे अमृतकी नाईं हे वासुदेवजी! आपसे अन्यत् नहीं है आप यज्ञ, वषट्कार, ओंकार, हवि ३२३ सब देवताओं के ईश्वर, शाश्वत, नाशरहित और नाकारण, कारण, करण और अकारणसे परहो ३२४ हे देवोंके स्वामी! आपके शरीरका ग्रहण धर्म्मकी रक्षाकेलिये है मत्स्य, कच्छप और शूकर आदिक अवतारोंको आप धारण करतेहो ३२५ हे विभुजी! त्वन्मय इस सब लोककी तुम्हीं रक्षा करतेहो ३२६ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार यदुवंशियों में उत्तम अक्रूर संसारकेपति गोविन्दजी के प्रणामकर रामकृष्णसमेत सुन्दररथपर चढ़जाते भये ३२७ तदनन्तर अक्रूरजी शीघ्रही देवों की रचीहुई मथुरापुरी में प्राप्त होकर राम और कृष्णजी को पुरके द्वारमें प्रवेश कराकर राजाके मन्दिरमें जातेभये ३२८ और राम और कृष्णजीके आगमनको राजासे कहकर उससे पूजितहोकर अपने घरमें प्रवेश करतेभये ३२९ तदनन्तर सन्ध्याकेसमयमें महाबली राम और कृष्णजी परस्पर हाथ पकड़कर मथुराजी में प्राप्त होतेभये ३३० ये महापराक्रमी, यदुवंशियों में उत्तम, महात्माजी राजमार्ग में घूमतेहुए कपड़े धोनेवाले धोबीको देखतेभये ३३१ तब बलभद्रजीसमेत परा-

क्रमी अच्युत कृष्णजी सुन्दर वस्त्रोंसेयुक्त, राजाकेमंदिरमें आतेहुए धोबीसे तिनकपड़ोंको मांगतेभये ३३२ तब धोबी क्रोधसे भगवान्को कपड़े न देताभया और उसी राहमें स्थित होकर बहुत कडुयेवचन बोला ३३३ तब तो महाबली कृष्णजी तिसको हाथसे मारतेभये तो वहीं राहमें वह बहुतरक्त बहाताहुआ मरजाताभया ३३४ फिर गोपाल और बान्धवोंसमेत राम और कृष्णजी तिन सुन्दर कपड़ोंको धारण करतेभये ३३५ तिस पीछे माली के घरमें प्राप्तहुए तो माली ने राम और कृष्णजीको देखकर नमस्कार किया और आनन्दयुक्त दोनों देवों की सुन्दर सुगन्धित फूलों से पूजाकिया ३३६ तो राम और कृष्णजी मालीको वांछितवर देतेभये और फिर राहमें आकर आतीहुई, शुभ मुखवाली ३३७ चन्दनका बर्तनधारे, टेढ़े अंग पीठ वाली कुब्जा स्त्रीको देखकर उससे चन्दन मांगतेभये ३३८ तब हँसतीहुई कुब्जा राम और कृष्णजी को उत्तम चन्दन देतीभई तब राम और कृष्णजी सुन्दर चन्दनको लेकर इच्छापूर्व्वक लेपनकर ३३९ तिसको अत्यन्त सुन्दररूप देकर मार्गमें फिर प्राप्तहुए तो इनदोनों सुकुमार, सुन्दर मुखवालोंको स्त्रियां देखतीभईं ३४० फिर दोनों महात्मा यज्ञशाला को अनुगोंसमेत प्रवेश करतेभये वहांपर केशवमधुसूदन कृष्णजी पूजित,सुन्दर धनुषको देखकर लीलापूर्वक ग्रहणकर तोड़डालतेभये तिस धनुषके टूटनेको सुनकर कंस विह्वल होकर ३४१।३४२ मल्ल,सारथी और श्रेष्ठदैत्योंको बुलाकर मंत्रियों से सलाहकर चाणूरसे बोले ३४३ कि सब दैत्यों के नाश करनेवाले राम और कृष्ण आये हैं प्रातःकाल मल्लयुद्धसे निश्शंकहोकर उन्हें मारिये ३४४ जिसकिसी उपायसे वे बलके दर्प्पवाले मारनेयोग्य हैं मतवाले हाथियों वा मुख्यमल्लों से यत्नसे मारनेचाहिये ३४५ महादेवजी बोले कि हेपार्वती! इसप्रकार राजाकंस चाणूरको आज्ञा देकर भाई और मंत्रियोंसमेत डरसे शीघ्रही महलके ऊपर चढ़गया ३४६ और द्वारों और सब राहोंमें मतवाले हाथियों और सबओर मल्ल और मतवाले हाथियों को खड़ा करादेताभया ३४७ कृष्णजी बुद्धिमान् रामजीसमेत यह सब जानकर अनुगोंसमेत तिसीयज्ञके

स्थानमें रात्रिभर रहे ३४८ रात्रिबीतनेके पीछे निर्म्मल प्रातःकाल हुए राम और कृष्णवीर शयनसे उठकर स्नानकर ३४९ अलङ्कारयुक्तहो भोजनकर लड़ाई में उत्साहयुक्त होकर उसघरसे इसप्रकार निकले जैसे महागुहासे दोसिंह निकलें ३५० फिर राजाके द्वारमें स्थित, हिमाचलके कँगूड़े के सदृश, कंसकी जय बढ़ानेवाले, देवताओं के हाथियों के अभिमान नाश करनेवाले, बड़ी देहयुक्त, मतवाले कुबलयापीड़नाम बड़े हाथीको सिंहकीनाईं केशवजी देखकर ३५१। ३५२ लीलापूर्वक कूदकर हाथसे सूंड़ पकड़कर घुमाकर पृथ्वी में पटकदेतेभये ३५३ तो उसका सब अंग चूर्णहोकर भयानक शब्दकर वह सहसा से पृथ्वी में गिरकर मर गया ३५४ तब राम और कृष्णजी हाथी के मारने के पीछे उसके दांतोंको उखाड़ कर तिसीसमय में मल्लों से युद्ध करने के लिये रंगभूमि में प्रवेश करतेभये ३५५ तब गोविन्दजी के पराक्रमको देखकर वहांके सब राक्षस डरकर भागकर कंस राजाके मंदिरमें चलेगये ३५६ और वहांपर मजबूत किंवाड़ों को बंदकर हजारों वीर तहांपर स्थितहोगये तब कृष्णजी लीलापूर्वक मजबूत किंवाड़ोंको बन्द देखकर पांव से मारकर गिरा देतेभये दोनों किंवाड़ों को गिराकर राक्षसोंको सब को मारकर अंग और गर्दनको उनकी चूर्णकर दोनों महाबली राम और कृष्णजी कंसके मन्दिरमें प्रवेश करतेभये ३५७। ३५८। ३५९ वहांपर सींगों को घुमातेहुए, मोटे, रणके उत्साहयुक्त महात्मा राम और कृष्णजी चाणूर और मुष्टिक इन दो मल्लोंको देखतेभये ३६० फिर कंस गोविंद और महाबली रामजी को देखकर डरयुक्तहोकर मल्लों में श्रेष्ठ चाणूरसे बोले ३६१ कि हे मल्ल! इस अवसरमें गोपालके दोनों बालकोंको मारडालो तो तुमको विना यत्नही के आधी राज्य बांटकर मैं देदूंगा ३६२ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तिस अवसर में कृष्णजी लड़ाई में मल्लों को दूसरे सुमेरुपर्वतकी नाईं दिखाई दिये ३६३ कंसकी दृष्टिके विषयमें प्रलयकी अग्निकी नाईं स्त्रियों को साक्षात् कामदेवके समान, माता और पिताको बालकके तुल्य ३६४ देवताओंको हरिजीकेसमान और गोपालोंको मित्रकी

नाईं दिखाईपड़े मनुष्य सबमें प्राप्त हरिजीको बहुतरूपसे देखतेभये ३६५ वसुदेव, अक्रूर और महाबुद्धिमान् नन्दगोप और महलपर चढ़कर बड़ेक्लेशको देखतेभये ३६६ अन्तःपुरमें स्थित स्त्रियोंसमेत देवकीजी वहां स्थितहोकर आंशुओंसे पूरितनेत्रहोकर पुत्रका मुख देखतीभई ३६७ फिर तिन स्त्रियों ने देवकीजीको समझाया तो देवकीजी दूसरे स्थानमें प्रवेशकरगई तदनंतर आकाशमें सबदेवसमूह विमानपर स्थितहोकर ३६८ कमलनयन अच्युतजीकी जयशब्द से स्तुति करतेभये और ऊंचेस्वरसे यह कहतेभये कि कंसको मारिये ३६९ इसीअवसरमें नगारे बजनेलगे तब दोनोंमहाबली यदुवंशियों में सिंहरूप महामल्लराम और कृष्णजी प्राप्तहुए ३७० फिर दोनों महात्मा नील और सफ़ेद पर्वतके समान होकर चाणूरसे कृष्णजी और मुष्टिकसे रामजी युद्ध करतेभये ३७१ मल्लयुद्ध के विधान से मुष्टियों और पांवोंके मारनेसे देवोंको भयदाता घोरक्लेशहुआ ३७२ चाणूर से बहुतकाल क्रीड़ाकर जनार्दनजी उस मल्लके देहको पीस कर लीलापूर्वकही गिरादेतेभये ३७३ तब वह देवता और दैत्यों को दुःखदेनेवाला महामल्ल पृथ्वी में गिरकर बहुत रक्त बहाकर मरगया ३७४ तैसेही रामजी ने मुष्टिकसे बहुतकाल युद्ध किया फिर इन पराक्रमी ने मुष्टियोंसे तिसकी छातीमेंमारा ३७५ तो मुष्टिकके हाँड़ और स्नायुबन्ध टूटकर वह पृथ्वी में गिरपड़ा तब तो सब मल्ल राम और कृष्णजीका पराक्रम देखकर भागगये ३७६ तब कष्टसे व्याकुल होकर कंस बड़े तीव्र डरको प्राप्त होताभया इसीअन्तरमें दुरासद, वीर, राम और कृष्णजी ३७७ महात्मा राजाके बड़े ऊंचे महलपर चढ़गये तब जनार्दनजी कंसके मस्तकमें हाथसे मारकर ३७८ उसको महलके कँगूड़ेसे पृथ्वी में गिरा देतेभये तब वह पृथ्वी में सब अंग टूटकर मरगया ३७९ कृष्णजी से कंसके मारेजाने में महाबली बलभद्रजी भी कंसके छोटेभाई सुनामाको मुष्टिहीसे मार डालतेभये ३८० और धरणीधरजी उसको भी पृथ्वी में गिरादेते भये फिर राम कृष्णजी छोटे भाई समेत कंसके मारनेके पीछे ३८१ माता और पिताके समीप आकर भक्तिसे प्रणाम करतेभये फिर

पुत्रकी लालसासेयुक्त देवकी और वसुदेवजी वारंवार पुत्रोंको आलिंगनकर स्नेह से मस्तक सूंघतेभये और दोनों पुत्रोंके ऊपर देवकीके स्तन दूध वर्षातेभये ३८२। ३८३ तदनंतर माता और पिता को समझाकर राम और कृष्णजी बाहर निकलआये इसी अंतरमें आकाशमें देवताओंके नगारे ३८४ बजनेलगे देवता फूल बरसाते और जनार्दनजीके नमस्कारकर स्तुति करतेभये ३८५ और श्रेष्ठ आनन्दकोपाकर अपने अपने लोकोंको प्राप्त होतेभये फिर बलरामजी समेत धर्मात्मा कृष्णजी नन्दगोप और गोपवृद्धों के नमस्कार कर आनन्दसे आलिंगन करतेभये फिर जनार्दनजी प्रीतिसे नन्दजीको बहुत रत्न धन देतेभये ३८६।३८७ और सब गोपवृद्धों को कपड़े, गहने इत्यादिक बहुत धन धान्यों से पूजन करतेभये ३८८ फिर नन्दगोप इत्यादिकों को कृष्णजी बिदा करतेभये तो वे सब आनन्द और शोकयुक्त होकर सुन्दर गोकुल को जातेभये ३८९ फिर दुरासद राम और कृष्णजी नानाके पास प्राप्तहोकर बन्धनसे छोड़कर वारंवार समझाकर ३९० तिस राज्यमें कृष्णजी नानाका अभिषेक करतेभये और श्रेष्ठ ब्राह्मणोंसे कंसकी षोड़शी सापिण्डी इत्यादिक कर्म करादेतेभये ३९१ फिर धर्मात्मा वसुदेवजी के पुत्र कृष्णजी अक्रूर इत्यादिक श्रेष्ठ यादवों को राज्यमें स्थापितकर उग्रसेनको राजा बनाकर धर्मसे पृथ्वीकी पालना करते भये ३९२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेश्रीकृष्णचरितेकंसवधोनामपञ्चचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४५॥

दोसौछियालीसका अध्याय॥

श्रीकृष्णजी के चरित्रमें मुचुकुन्दजीका मोक्ष वर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! वसुदेवजी राम और कृष्णपुत्र का वेदकी विधिसे जनेऊ करतेभये १ आचार्य्य गर्गजीसे संस्कार किये गये बलभद्र और कृष्णजी और पण्डित वैष्णवों से भी संस्कारयुक्त दोनों महाबली पुत्र सुन्दर निर्म्मल शुभ स्नानोंसे २ संस्कारकर्म्म कियेगये होकर सान्दीपनिजी के घर जाकर महात्मा

के नमस्कार कर ३ तिन्हीं श्रेष्ठ ब्राह्मणसे वेद और शास्त्रोंको पढ़कर उनके मरेहुए पुत्रको लाकर तिनको दक्षिणा देतेभये ४ फिर तिन महात्मा गुरुजीसे आशीर्व्वाद के वचन पाकर तिनके प्रणामकर दोनोंभाई यदुवंशियोंमें श्रेष्ठ मथुरापुरीको प्राप्तहोगये ५ तदनन्तर कृष्णजी से दुरासद कंसको माराहुआ सुनकर राजा कंसका श्वशुर महाबलवान् जरासन्ध ६ महाबली हज़ार अक्षौहिणी सेनाओं से कृष्णजी के मारने के लिये आकर मथुरापुरी को घेर लेताभया ७ तब महाबली राम और कृष्णजी उत्तमपुरसे निकलकर हाथी और घोड़ोंसे आच्छादित तिसकी सेनाके समूहको देखकर ८ वासुदेवजी ने सनातन पूर्वरूपको स्मरण किया तिनके स्मरणमात्रही से विष्णु जीका सारथी दारुक ९ सुग्रीव पुष्पकनाम महारथको लाताभया यह रथ सनातन, दिव्य पुष्पादिक घोड़ों से जोताहुआ १० शंख और चक्र आदिक सुन्दर हथियारों से युक्त, गरुड़ के पताका से शोभित और देवों को दुर्जयथा ११ ऐसे रथको भगवान्का सारथी पृथ्वी में प्राप्तकर गोविन्दजीके प्रणामकर सुन्दर रथको आयुध और घोड़ोंसे युक्त करदेताभया १२ तब कृष्णजी उस रथ को देखकर बलदेवजी समेत और देवताओंसे स्तुतिको प्राप्तहोकर महारथपर चढ़तेभये १३ चारभुजाकी देह धारणकर शंख, चक्र, गदा और तलवार को लेकर मुकुट, कुण्डल और माला धारणकर कृष्णजी संग्राम के सम्मुख जातेभये १४ पराक्रमी बलदेवजी मुशल और हलग्रहणकर दूसरे महेश्वरकी नाईं जरासंध की सेनाके मारने का प्रारम्भ करतेभये १५ फिर दारुक तिस रणमें शीघ्रही रथको इस प्रकार लाताभया जैसे तृणगुल्म और लतासे आक्रांत वनमें पवन अग्निको लाताहै १६ तदनन्तर जरासंधकी सेनावाले गदा, परिघ, शक्ति और मुद्गरों से तिस रथ को आच्छादित करतेभये १७ तब भगवान् शीघ्रही चक्रसे तिन को इस प्रकार काट डालतेभये जैसे महाअग्नि दीप्तिसे बहुत तृण काष्ठोंको जलादेतीहै १८ तदनन्तर शार्ङ्गधनुष लेकर नाशरहित तीक्ष्णबाणों से तिन सेनाओं को काट डालतेभये कुछ भी न जानपड़तेभये १९ कोई महाबली चक्र से

मुखरूपी कमल कटेहुए होगये कोई गदासे चूर्ण, कोई और हथियारों से कटे २० कोई तलवारसे छिन्नहुए कोई बाणसे ताड़ितहुए कोई हलसे गर्दन कटेहुए होगये कोई मुशलसे मस्तक कटेहुए होगये २१ क्षणमात्र में यदुश्रेष्ठ मधुसूदन जी सब सेना को मारकर प्रलयके वज्रके सदृश शब्दवाले शंखको बजातेभये २२ तब तो वे महाबली शंख के शब्दसे हृदय फटकर घोड़ा और हाथियोंसमेत गिरकर प्राणहीन होगये २३ घोड़ा,रथ और हाथियोंसमेत हज़ार अक्षौहिणी सेना अकेले कृष्णजी नाश करडालतेभये कुछ भी सेना बाक़ी न रही २४ वासुदेव शार्ङ्गधनुषधारी ने आधे पहरमेंही सब सेना नष्टकरदी तब सब देवसमूह आनन्दयुक्तचित्त होकर २५ फूलोंकी वर्षा बरसनेलगे और साधु साधु यह कहनेलगे धरणीधरजी सब पृथ्वीके भारको दूरकर २६ देवताओं से स्तुतिको प्राप्तहोकर संग्राममें शोभित होतेभये अपनी फ़ौजको नष्टहुई देखकर अत्यंत पराक्रमी दुर्मति जरासंध बलदेवजीसे युद्ध करनेको प्राप्तहोताभया तब दोनोंवीरोंका बड़ाघोर युद्धहुआ २७। २८ शूर बलदेवजी हल को लेकर सारथीसमेत तिसके रथको गिराकर तिस महाबली को पकड़कर २९ शीघ्रही मुशल लेकर तिसके मारनेका प्रारम्भ करने लगे तब प्राण संशययुक्त उत्तम राजा जरासन्धको ३० बली रामजीने इस प्रकार किया जैसे सिंह वड़े हाथी को करताहै इस प्रकार जरासन्धको देखकर प्रभु कृष्णजी बलरामजीसे बोले कि यह मारने योग्य नहीं है ३१ जब महा बुद्धिमान् धर्मात्मा कृष्णजी नेइसप्रकार कहकर उसको छुड़वाया तब नाशरहित बलदेवजी कृष्णजी के वचनसे छोड़कर ३२ कृष्णसमेत होकर रथपर चढ़कर मथुरापुरीमें प्रवेश करतेभये फिर जरासन्ध, महावीर्य्यवान् बलवान् कालयवन के पास प्राप्त होकर ३३ वसुदेवजी के पुत्रोंके पराक्रमको कहतेभये राक्षसों और कंसका नाश अक्षौहिणियों का वध और अपनी हार ये सब महान् कृष्णजी के चरित्रों को कहताभया ३४। ३५ यह सुनकर क्रोधकर महाबली कालयवन महाबल पराक्रम और मदसंयुक्त करोड़ों हज़ार म्लेच्छोंसे युक्त होकर ३६ तिस जरासन्धकी सहा-

थताके लिये तिसी के साथ शीघ्रही मथुरापुरी को जाताभया ३७ सेनाओंसे पृथिवी को आच्छादित कर महासेनाको प्रवेश कराकर अनेक देशोंसेयुक्त मथुरापुरीको आच्छादित करलेताभया ३८ तब कृष्णजी तिससमयमें पुरवासियों की कुशल चिन्तनाकर मनुष्योंके निवास करनेके लिये समुद्रसे पृथ्वीको मांगतेभये ३९ तब समुद्र कृष्णजी को एकसौबीसकोसकी विस्तारित पृथ्वी देताभया तहांपर कृष्णजी जलके बीचमें द्वारकापुरीको रचतेभये ४० यह पुरी बहुत महलोंसेयुक्त, सोनेके प्राकार और बन्दनवारवाली, अनेकप्रकारकी मणिमय सुन्दर घरकी पंक्तियों से आच्छादित ४१ बगीचा और सुन्दर बहुत तालाबोंसे युक्त है इसको इन्द्रकी अमरावती पुरी की नाईं कमलनयन भगवान्ने रचाहै ४२ मथुरापुरी में सोतेहुए पुरवासियों को जनार्दनजी सहसासे रात्रिमें उठाकर द्वारकापुरी में प्रवेश करदेतेभये ४३ जब सब मनुष्य पुत्र और स्त्रीसंयुक्त जगे तो सोने के महलके तले प्रवेशहुए अपनाको देखकर परमविस्मयको प्राप्त हुए ४४ और बहुत धनधान्य और सुन्दर कपड़े गहनों से परिपूर्ण भोगोंकी नाईं मुख्य घरों से युक्त ४५ प्रसन्न मनुष्य तिस पुरी में आकाशमें देवसमूहोंकी नाईं स्थित होतेभये फिर कालयवन के साथ युद्ध करनेको महाबली राम और कृष्णजी ४६ आत्माके स्वामी तिससमयमें मथुराजी से बाहर निकलते भये तब महारथ रामजी हल और मुशल लेकर संग्राममें क्रुद्धहोकर यवनोंकी बड़ी सेनाको मारते भये और कृष्णजी शार्ङ्गधनुषमें अग्निकी शिखाके सदृश बाणोंको लगाकर म्लेच्छोंकी सब सेनाको बाणोंसे जलादेते भये तब बली कालयवन अपनी सेनाको नष्टहुई देखकर ४७।४८ ४९ गदासे वासुदेवजी से युद्ध करनेलगा और रोगरहित, कमलनयन कृष्णजीभी तिससे क्लेशको पाकर ५० विमुखहोकर तिस संग्राम से भागे तब वह खड़ेहो खड़ेहो यह कहताहुआ अत्यन्तवेगसे कृष्ण जी के पीछे चला ५१ तब महाबुद्धिमान् कृष्णजी वेगसे पहाड़कीगुहा में प्रवेश करगये तहांपर राजा मुचुकुन्द महामुनि सोरहे थे ५२ तिन राजाके अदृश्य होकर भगवान् हरिजी स्थित होगये तब महावीर

कालयवन हाथमें गदा लेकर ५३ कृष्णजी के मारने के लिये तिस गुहामें प्रवेश करताभया और वहांपर सोतेहुए राजा मुचुकुन्द को देखकर कृष्ण जनार्दन समझकर ५४ पांवसे महामुनि मुचुकुन्दजी को मारताभया तब भगवान् महामुनि मुचुकुन्दजी जगकर ५५ क्रोधसे लाल नेत्रकर हुंकार करतेभये तिनके हुंकार शब्द तथा क्रोध के देखनेसे ५६ कालयवन जलकर भस्म होगया तदनन्तर कृष्ण प्रभु राजर्षिके आगे दिखलाई देतेभये ५७ यह नीलकमल के समान श्यामवर्ण, कमलके सदृश नेत्रवाले, शंख, चक्र, गदा हाथ में लिये, पीतांबर धारे जनार्दनजी थे ५८ तिन अमितपराक्रमी को राजर्षि महामुनिजी देखकर सहसा से उठकर बड़ीभाग्य हुई यह कहतेभये ५९ और पुलकावली से युक्त सब अंगवाला आनन्दके आंशुओं के जलसे आकुल होकर जय शब्द से स्तुतिकर वारंवार प्रणाम करतेभये ६० कि हे परमेश्वरजी! आपके दर्शनसे मैं धन्य और कृतकृत्यहूं इससमयमें मेरा जन्म और जीवन सफलहै ६१ वासुदेव, जगन्नाथ, शार्ङ्गधनुषधारी, दामोदर, देव, तेजों की निधि ६२ अधोक्षज, हरि, नृसिंहकी देहवाले राघव, कमलनयन ६३ अच्युत, विकार, अनन्त, गोविन्द, विष्णु, जिष्णु ६४ नारायण, लक्ष्मी के स्वामी, कृष्ण, परमात्मा, मुकुन्द, चतुर्व्यूह ६५ परमकल्याण, परमात्मा, वासुदेव, शांत और यदुवंशियों के पति आपके नमस्कार हैं ६६ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार राजा गोविन्दजीकी स्तुतिकर वारंवार प्रणाम करताभया तब प्रसन्नहोकर भगवान् महामुनि मुचुकुन्दजी से बोले ६७ कि हे राजाओं में ऋषि! जो तुम्हारे मनमें वर्तमानहो वह वरमांगो महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब राजा फिर आने से रहित मुक्तिको मांगताभया ६८ तब कृष्णजी तिनको सुन्दर सनातनलोक देतेभये तबतो महाबुद्धिमान्राजा मनुष्यरूप छोड़कर ६९ देव परमात्माके समानरूप में स्थितहोकर गरुड़पर चढ़कर शाश्वतपदमें प्रवेशकरतेभये७०॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे श्रीकृष्णचरितेमुचुकुन्दमोक्षोनामपट्चत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः२४६॥

दोसौ सैंतालीसका अध्याय ॥

श्रीकृष्णचरित्रमें श्रीकृष्णजीका रुक्मिणीजी को हरना और शिशुपाल की सेना और रुक्मकी सेनाका उनसे माराजाना ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! श्रीकृष्णजी बुद्धिमान् मुचुकुन्द जीसे कालयवन को भस्मकराकर और तिनको मुक्तिवर देकर गुहा से निकलआये १ तब अपनी सेनासेयुक्त दुर्बुद्धि जरासन्ध काल-यवनका नाश सुनकर राम और कृष्णजीसे युद्ध करताभया २ तो कृष्णजीने तिस दुरात्माकी सब सेना नाशकरदी तब जरासन्ध मूर्च्छित होकर पृथ्वी में गिरपड़ा ३ फिर बहुत देरमें होशको पाकर विकल अंग और भयसे व्याकुल होकर बलरामजीसे युद्धकरनेको न समर्थ हुआ ४ मारनेसे बची शेषसेना और नौकरोंसमेत विमुख होकर शीघ्रही महाबली राम और कृष्णजी को नहीं जीतनेयोग्य मानकरभागा ५ और दोनों भाइयोंसे विरोधभी छोड़कर अपनी नगरी में प्रवेश करताभया तदनन्तर राम और कृष्णजी सेनासमेत ६ मथुरानगरी को छोड़कर द्वारकापुरी में प्रवेश करतेभये फिर इन्द्रका भेजाहुआ पवन विश्वकर्माकी रचीहुई देवताओंकी सभाको प्रीतिसे कृष्णजीको देताभया यह सभा हीरा और वैडूर्य्यसे रचित, बहुत आसनोंसे चित्र विचित्र ७।८ अनेक प्रकारके रत्नमय, सुन्दर, सोनेके छत्रोंसे विराजितहै तिस सुन्दर सभाकोपाकर उग्रसेन आदिकराजा ९ नैगमोंसमेत आकाशमें देवसमूहोंकीनाईं आनन्दित होतेभये फिर इक्ष्वाकुवंशमें उत्पन्न रैवतनाम राजा १० अपनी सब लक्षणसंयुक्त रेवतीनाम कन्याको प्रीतिसे बलरामजी को देताभया ११ तब रामजी तिस रेवतीसे विधिपूर्वक विवाहकर इंद्राणीसे इन्द्र कीनाईं तिससे रमण करतेभये १२ धर्मात्मा विदर्भराज भीष्मकके रुक्मइत्यादिक शुभपुत्र होतेभये १३ तिनकी छोटीबहन श्रेष्ठवर्णवाली, लक्ष्मीजीके अंशसेउत्पन्न,सब लक्षणसंयुक्त रुक्मिणीजीहुईं १४ रामचन्द्रजीके जन्ममें सीताहुईं और कृष्णजीके जन्ममें रुक्मिणी हुईं औरभी अवतारों में यह विष्णुजीके सहाय करनेवालीहुईं १५

हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष फिर द्वापरमें उत्पन्नहुए वेही शिशुपाल और दन्तवक्र इननामोंसेयुक्त १६ महाबल और पराक्रमसमेत चैद्य के वंशमें उत्पन्नहुए भीष्मकजीकापुत्र रुक्म रुक्मिणीको शिशुपाल के देनेकी इच्छाकरताभया १७ और शुभमुखवाली, बाल्यावस्थासे लेकर विष्णुजीमें अनुरक्त, दृढ़व्रतयुक्त रुक्मिणी तिस शिशुपालके पति होनेकी नहीं इच्छा करतीभई १८ और यह रुक्मिणी कन्या कृष्णपतिको उद्देशकर देवताओंका सदैव पूजन और अनेकप्रकारके दान करतीभई १९ फिर व्रतचर्या में परायणहोकर आत्माके स्वामी अपने पति पुरुषोत्तमजी का ध्यान करतीहुई पिताके मन्दिर में बसतीभई २० राजा भीष्मक रुक्मिणीजी का विवाह शिशुपालके साथ करनेके लिये बुद्धिमान् रुक्मी पुत्रसे यत्न करातेभये २१ तब रुक्मिणीजी कृष्णपति का उद्देशकर ब्राह्मण, पुरोहितके पुत्रको द्वारका भेजतीभई तबतो ब्राह्मण शीघ्रही द्वारका जाकर २२ राम और कृष्णजीसे मिलतेभये तो राम और कृष्णजी ने विधिपूर्वक उनकी पूजाकी तब ब्राह्मण तिनसे एकान्त में सब रुक्मिणीजी का भाषित कहतेभये २३ तिसको सुनकर राम और कृष्णजी तिन बुद्धिमान् ब्राह्मणसमेत सबशस्त्र और अस्त्रोंसे पूर्ण आकाशगामी रथपर २४ चढ़कर सारथियों में मुख्य दारुकमहात्मा से हँकवाकर विदर्भनगरीको जातेभये २५ वहांपर सब राज्योंसे राजा जरासन्ध इत्यादिक राजा बुद्धिमान् शिशुपालके विवाह देखनेकोलिये आये २६ तिस विवाहके समय में भूषण धारणकर रुक्मिणीजी दुर्गाजी के पूजन करने के लिये नगर से बाहर निकलतीभई २७ और इसीसमय में बलवान् मधुसूदन, देवकीजी के पुत्रभी प्राप्तहोकर रथमें स्थित रुक्मिणीजी को ग्रहणकर २८ सहसासे रथपर चढ़ाकर शीघ्रही अपने स्थानको चलतेभये तब क्रोधसेयुक्त जरासंध इत्यादिक राजा २९ हाथी, घोड़ा, रथ और पैदलकी सेनासेयुक्त राजपुत्र रुक्मिणीजीको संगलेकर हरिजी के पीछे युद्ध करने के लिये चलतेभये ३० तब महाबाहु बलभद्रजी उत्तम रथसे उतरकर हल और मुशल लेकर क्षणमात्रमेंही वैरियोंको मारतेभये ३१ रथ, घोड़ा, बड़े हाथी,

और पैदलोंको भी बलसे हल और मुशल से रणमें मारतेभये ३२ तिनके हलके पातसे रथकी पंक्तियां चूर्ण होगईं और हाथी इसप्रकार पृथ्वी में गिरे जैसे वज्रसे पर्वत गिरेहैं ३३ सबके मस्तक फूट गये और बहुतरक्त बहानेलगे क्षणमात्रही में बलरामजी ने सेना नष्टकरदी ३४ घोड़ा, हाथी, रथ और पैदलसमेत सेनाके मरनेपर सबओर रक्तकी नदियां बहनेलगीं ३५ सबराजा भग्नहोकर डरसे पीड़ितहोकर भागतेभये तब कृष्णजीने क्रोधवश होकर बली रुक्मी को क्लेशयुक्त किया ३६ फिर रुक्मी ने धनुषमें बाणसमूह लगाकर उनसे भगवान् को ताड़ित किया तब गोविन्दजी हँसकर लीलापूर्वक धनुषलेकर ३७ एकही बाणसे रथ, घोड़ा, सारथी, ध्वजा और उस के पताका को काट डालतेभये ३८ तब रुक्मी रथहीनहोकर तलवार लेकर पृथ्वी में स्थितहोगया फिर वीर्य्यवान् कृष्णजी ने एकही बाणसे तलवार को भी काटडाला ३९ तब वह मुष्टिसे कृष्णजी की छाती में ताड़ना करताभया तबतो हरिजी तिसवीरको रणमें पकड़ कर अच्छीतरह बांधकर ४० तीक्ष्ण छूरालेकर हँसकर उसके शिर को मुंडनकर मधुसूदन जनार्दनजी ने छोड़दिया ४१ तब रुक्मी शोकसेयुक्त होकर सांपकी नाईं श्वास लेकर अपने पुरमें प्रवेशकर तहांहीं बसनेलगा ४२ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे श्रीकृष्णचरितेविदर्भसेनाविध्वंसनंनामसप्तचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४७॥

दोसौअड़तालीसका अध्याय॥

रुक्मिणी और कृष्णजीका विवाहहोना॥

महादेवजीबोले किहे पार्वती! कृष्णजी बलराम, रुक्मिणी और दारुक सारथीसमेत सुन्दर रथपर चढ़कर शीघ्रही अपने स्थान को चलतेभये १ फिर देवकी के पुत्र हरिजी द्वारकानगरी में प्रवेश कर शुभदिन और शुभलग्न में वेदमें कहीहुई विधिसे २ राजपुत्री, सोने से भूषित, रुक्मिणीजी के साथ विवाह करतेभये तिनके वि-

वाहके समयमें आकाश में देवोंके नगारे ३ बजनेलगे श्रेष्ठ देवता फूलों की वर्षा बरसते भये वसुदेव, उग्रसेन, यदुवंशियों में उत्तम अक्रूर ४ महातेजस्वी बलभद्र तथा और भी श्रेष्ठ यदुवंशी कृष्ण जीका रुक्मिणीजी के साथ सुखपूर्वक विवाह करतेभये ५ नन्दगोपजी गोपाल गोपवृन्दों और अलंकारयुक्त स्त्रियोंसमेत आतेभये और यशोदाजी भी आतीभई ६ वसुदेवजी की देवकी इत्यादिक सब स्त्रियां रेवती और रोहिणीदेवी तथा और भी पुरकी स्त्रियां ७ आनन्दयुक्त होकर सब विवाह के कर्म करतीभई और देवकीजी प्रीतिसे देवताओंका पूजन करतीभई ८ और बूढ़ी, राजाकी स्त्रियों सेभी विधिपूर्वक पूजन करातीभई और उत्तमब्राह्मणों से सब विवाहकर्म के उत्सव को करातीभई ९ और ब्राह्मणों को भोजनकराकर शुभ कपड़े और गहने देतीभई उग्रसेनादिक राजा भी अच्छे प्रकारसे पूजितहुए १० नन्द गोपआदिक गोप और यशोदाआदिक स्त्रियां बहुतसोना रत्नआदिक और कपड़े और गहनोंसे ११ पूजित होकर विवाहके बड़े उत्सव में अत्यन्त प्रसन्नहुईं फिर नम्र हुए कृष्णजी और रुक्मिणीजी अग्निके समीप १२ वेदके जानने वाले श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके आशीर्वादों से प्रसन्न होकर तिस विवाह की वेदीमें शोभित होतेभये १३ और स्त्रीसमेत भगवान् ब्राह्मण वृद्ध और ज्येष्ठ भाई की वन्दना करतेभये १४ इसप्रकार मधुसूदनजी सब विवाहकर्म से निवृत्त होकर राजा तथा जे औरभी आयेथे उन सबको विदा करतेभये १५ हरिजीसे पूजित होकर श्रेष्ठराजा और महात्मा ब्राह्मण विदाहोकर अपने अपने स्थानोंको जातेभये १६ और नाशरहित,धर्मात्मा, भगवान् रुक्मिणीसमेत सुन्दर महल में सुखपूर्वक वसतेभये १७ और लक्ष्मीजी से नारायणजीकी नाईं रुक्मिणीजीसे रमतेभये फिर मुनि और देवसमूहोंसे स्तुतिको प्राप्त होकर १८ सनातन जनार्दनजी प्रसन्नआत्मा होकर सुन्दर शोभायुक्त द्वारकापुरी में दिन दिनमें सुखसे वसनेलगे १९ ॥

इतिश्रीपाद्मेउत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेश्रीकृष्णचरितेरुक्मिणीविवाहकथनंनामाष्टचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४८ ॥

दोसौउनचासका अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीके जांबवती आदिक स्त्रियों से विवाह होनेका चरित्र वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती ! सत्राजितकी कन्या,यशस्विनी, पृथ्वी के अंशसे उत्पन्न सत्यानाम कृष्णजीकी स्त्री हुई १ और महाभागा, सूर्य्यकी पुत्री, लीलाका अंश कालिन्दीनाम तीसरी स्त्री हुई २ फिर विन्दानुविन्दकी कन्या, पवित्र मुसिकानियुक्त, स्वयंवर में स्थित मित्रविन्दाको जनार्दनजी विवाहतेभये ३ और कमलपत्र के समान नेत्रवाले भगवान् एक फँसरीसे सात बड़े मदयुक्त बैलों को बांधकर तिस वीर्य्य से मोललीहुई नाग्नजिती को ग्रहण करते भये ४ सत्राजित राजा स्यमन्तक नाम महारत्नको प्रसेन महात्मा अपने छोटे भाईको देताभया ५ तिसी समयमें मधुसूदनजी तिससे श्रेष्ठ मणि को मांगतेभये तब प्रसेन भगवान् से बोला ६ कि यह मणि नित्यही आठभार सोनेको पैदा करती है तिससे यह स्यमन्तकमणि हमको किसीको न देनी चाहिये ७ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती ! कृष्णजी तिस अभिप्रायको जानकर चुपचाप बसतेभये किसीसमयमें कृष्णजी सब उत्तम यदुवंशी प्रसेन आदिक महाबलवानोंसमेत शिकार खेलने के लिये महावन में प्रवेश करते भये वहांपर एक एक हरिणके मारनेके लिये हजारों पीछे जातेभये ८।९ परन्तु महावनमें प्रसेन अकेलाही दूर चलागया तब उसको सिंह मारकर मणि लेकर चला जाताहीथा १० कि उसको महाबली जाम्बवान्ने मारकर मणि लेलिया और सुन्दर स्त्रियोंसे सेवित बिल में शीघ्रही प्रवेश करगया ११ तिसदिन सूर्य्यके अस्त होजाने में अनुगोंसमेत वासुदेवजी चौथ के उदय हुए चन्द्रमा को देखकर अपने पुरमें प्रवेश करतेभये १२ तदनन्तर सब पुरके मनुष्य परस्पर कृष्णजीको कहतेभये कि गोविन्दजी ने शिकारके बहानेसे वन में प्रसेनको मारकर १३ मणियों में श्रेष्ठ स्यमंतकको निश्शंकहोकर लेलियाहै तिस द्वारकाके मनुष्यों के भाषणको सुनकर हरिजी १४ मूर्ख मनुष्यों के डरसे सब यदुवंशियोंसमेत वनको जातेभये और

तिनसबको वनमें सिंहसे मारेहुए प्रसेनको दिखलातेभये १५ और तहांहीं अपनी शुद्धिको प्राप्त होकर बड़ी सेनाको स्थापितकर अकेलेही धनुष और गदा हाथमें लेकर सघन वनको जातेभये १६ वहांपर बड़े बिलको देखकर निश्शंक होकर कृष्णजी अनेकप्रकार की श्रेष्ठ मणियोंसे प्रकाशित, निर्मल घरमें प्रवेश करतेभये १७ तो वहां ढाढ़ी जाम्बवान् के पुत्रको भूलापर चढ़ाकर भूला के मुंह में मणि धरकर आनन्द से झुलातीहुई गातीथी १८ कि हे सुकुमार बालक मतरोवे सिंहने प्रसेन को मारा और जाम्बवान् ने सिंहको मारकर इस तुम्हारी स्यमन्तकमणि को यहां प्राप्त कियाहै १९ तिस को सुनकर प्रतापी वासुदेवजी शंख बजातेभये तो शंखके बड़ेशब्द से वहांपर जाम्बवान् जातेभये २० तो जाम्बवान् और कृष्णजी से वज्रकेसमान मुष्टियों से सब प्राणियों के भयदेनेवाला घोरयुद्ध दशरात्रतक होताभया २१ तब जाम्बवान् कृष्णजी के बलकी वृद्धि और अपने बलका नाश देखकर परमात्माजी के पहले वचन को जानताभया २२ कि यह मेरेस्वामी रामही धर्मकीरक्षाके लिये फिर अवतार लेकर मेरे मनोरथ देनेके लिये आयेहैं २३ ऐसाजानकर जाम्बवान् लड़ाई छोड़कर हाथजोड़कर गोविन्दजी से विस्मयपूर्वक बोला कि आपकौनहैं २४ तब भगवान् क्लेशकोदूरकर गम्भीर वाणीसे बोले कि मैं वसुदेवजी का पुत्र वासुदेवनाम हूं २५ तुमने निर्भय होकर हमारे स्यमन्तकरत्न को हरलिया है इससे मुझे शीघ्रही स्यमन्तकको दीजिये नहीं तो नाशको प्राप्त होवोगे २६ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तिसको सुनकर प्रसन्नहोकर जाम्बवान् दण्डवत् प्रणामकर नम्रतासे केशवजी से बोला २७ कि हे प्रभो! हे देवकीकेपुत्र! मैं आपके दर्शनसे धन्य और कृतकृत्यहूं औरपूर्वभावसे दासहूं २८ हे गोविन्द! हे संसारकेनाथ! हे करुणाकीखानि! आपने पहलेके कांक्षितक्लेश को मुझे दियाहै और मैंने जो मोहसे आपको कष्टदियाहै तिसको स्वामी आप क्षमाकीजिये २९ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! ऐसाकहकर जाम्बवान् नम्रहोकर वारंवार नमस्कारकर अनेकप्रकारके रत्नमय पीठमें प्रभुजीको बैठाकर ३०

शुभजलसे शरद्ऋतुके कमलोंकेसमान चरणोंको धोकर मधुपर्क की विधानसे उनकी पूजाकर ३१ सुन्दर कपड़े और गहनोंसे विधिपूर्वक पूजनकर लावण्यतासंयुक्त जाम्बवती नाम कन्यारत्न को अमितपराक्रमी भगवान्‌को स्त्री बनाने के लिये देकर और भी मुख्य मणियोंसमेत स्यमन्तकनाम मणिको भी देताभया ३२। ३३ तब शत्रुओंके वीरोंके नाश करनेवाले भगवान् प्रसन्न होकर वहां ही उस कन्यासे विवाहकर तिस जाम्बवान् को श्रेष्ठमुक्ति प्रीति से देकर ३४ तिसकी कन्या जाम्बवती को आनन्दसे ग्रहणकर तिस बिल से निकलकर द्वारकापुरी को जातेभये ३५ और सत्राजित को स्यमन्तक रत्न देते भये तब सत्राजित उस उत्तम मणिको अपनी कन्या को देताभया ३६ भादों महीने के शुक्लपक्ष की चौथमें चन्द्रमाका दर्शन करने से मुनिलोग झूठा कलंक कहते हैं तिससे इसको वर्जित करै ३७ और जो चौथमें चन्द्रमाके दर्शन मनुष्य करलेवे तो स्यमन्तकमणिकी कथा सुनकर झूठे कलंकसे छूटजावे ३८ लक्ष्मणा, नाग्नजिती और यशस्विनी सुशीला ये मद्रराजकी शुभमुखवाली तीनों कन्या हैं ३९ ये उज्ज्वल स्वयंवर में स्थित होकर कृष्णजीको वर करतीभई तब कृष्णजी एकही दिनमें तिनको विवाहतेभये ४० महात्मा कृष्णजी के रुक्मिणी आदिक आठ पटरानीहुई रुक्मिणी, सत्यभामा, पवित्र मुसिकानियुक्त कालिन्दी ४१ मित्रविन्दा, जाम्बवती, नाग्नजिती, लक्ष्मणा और पतले अंगवाली आठवीं स्त्री सुशीला हुई ४२ पृथ्वीका पुत्र महापराक्रमी नरकनाम राक्षस हुआ यह देवोंके पति इन्द्र और सब देवताओं को लड़ाई में जीतकर ४३ देवोंकी माता अदितिके सुन्दर तेजवाले कुण्डल और देवताओंके अनेकप्रकारके रत्न बलसे ग्रहण करलेताभया ४४ इन्द्रके ऐरावत हाथी और उच्चैःश्रवा घोड़े को, कुबेर की माणिक्य आदि तथा शंख पद्मनिधिको और अप्सराओंको हरताभया और तिन देवताओं के वज्रआदि अस्त्रोंको बलसे हरकर ४५। ४६ तिन से देवताओं को मारकर निर्म्मल आकाशमें मयकी रचीहुई सभामें बसताभया ४७ तब सब देवसमूह इन्द्रको आगेकर भयसे व्याकुल

होकर वाधारहित करनेवाले कृष्णजीकी शरणमें जातेभये४८कृष्ण
जीभी सब नरकासुरका चेष्टित सुनकर देवताओं को अभय देकर
गरुड़की चिन्तना करते भये ४९ तो उसीक्षणमें महाबली गरुड़
सब देवोंसे नमस्कार को प्राप्त होकर भगवान्‌के आगे स्थित होते
भये ५० तब सत्यभामासमेत केशवजी तिसपर चढ़कर मुनियों से
स्तुतिको प्राप्तहोकर नरकासुरके स्थानको जातेभये ५१ यह स्थान
आकाशमें सूर्य्यमण्डलकीनाईं प्रकाशित, बहुत राक्षस और सुंदर
गहनोंसे युक्तहै ५२ कृष्णजी देवताओंसे भी दुर्भेद्य तिसके पुरको
देखते भये और वीर्य्यवान् भगवान् तिसके आवरणों को भी देख
कर चक्रसे ५३ इसप्रकार काटतेभये जैसे तेज और दीप्तिसे सूर्य-
नारायण अन्धकार को दूरकरते हैं तदनन्तर सब सैकड़ों हजारों
राक्षस ५४ शूल लेलेकर युद्ध करनेकेलिये सम्मुख जातेभये और
सुन्दर तोमर, गोफना और पट्टिशों से ५५ केशवजी को पयाल से
अग्निकी नाईं ताड़ना करतेभये तब गरुड़ध्वज भगवान् शार्ङ्गध-
नुषलेकर ५६ अग्निकी शिखाकेसदृश बाणोंसे उनके सुन्दर शस्त्रों
को काटडालतेभये और उनकी गर्दन, हाथी और वेगवान् घोड़ों
को ५७ वीर्य्यवान् पुरुषोत्तमजी ने चक्रसे काटडाला कोई चक्रसे
काटेगये तथा और बाणसे ताड़ितहुए ५८ और कोईराक्षस तिस
रणभूमि में गदासे मारेगये इसप्रकार सब राक्षस पृथ्वीतलमें गि-
रायेगये ५९ इन्द्रके छोड़ेहुए वज्रसे पहाड़ोंकीनाईं सब राक्षसोंको
काटकर कमलनयन ६० पुरुषोत्तमजी पांचजन्य महाशंख को ब-
जातेभये तब वीर्य्यवान् नरकासुर धनुषलेकर ६१ सुन्दर रथपर
चढ़कर युद्ध करनेके लिये केशवजीके पास जाताभया तो कृष्णजी
और नरकासुरका घोर, तुमुल, रोमहर्षण युद्ध होताभया ६२ बहुत
हज़ारों बाणोंसे मेघोंकी नाईं दोनोंवीर बरसनेलगे तब अर्द्धचन्द्र
बाणसे सनातन वासुदेवजी ६३ वीर्य्यवान्‌ने तिस श्रेष्ठ राक्षस का
धनुष काटडाला और महादिव्य अस्त्र को उसकी चौड़ी छाती में
मारा ६४ तो उससे हृदय टूटकर वह महाअसुर इसप्रकार पृथ्वी
में गिरपड़ा जैसे इन्द्र के वज्रसे महापर्व्वत पृथ्वी में गिराहै उसके

गिरने से बड़ा शब्दहुआ ६५ फिर पृथ्वीसे प्रार्थित होकर कृष्णजी तिस राक्षसकेसमीप जाकर यह बोले कि वर मांगिये तब गरुड़जी के ऊपर स्थित कृष्णजी से राक्षस बोला ६६ कि मैं नरकहूं मुझको वरसे कुछ कृत्य नहीं है तिसपर भी और मनुष्यों के हित के लिये उत्तम वर मांगताहूं ६७ कि हे कृष्ण! हे सब प्राणियों के ईश्वरों के ईश्वर! हे मधुसूदन! हे भयके दूर करनेवाले! जे मनुष्य मेरे मृतक दिनमें मंगलस्नानकरें उनको नरककी प्राप्ति नहीं होवे ६८ महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! गोविन्द प्रभुजी ऐसाही होगा यह तिसको वर देतेभये तदनन्तर राक्षस शरदऋतुके कमलके सदृश, हीरा, वैडूर्य और नूपुरोंसे विराजित, ब्रह्मा और महादेव आदिक देवता और मुनियों से पूजित भगवान् के चरणों को साक्षात् देखता हुआ ६९।७० प्राणों को छोड़कर हरिजी की सारूप्य को प्राप्त होताभया तब आनन्दसेयुक्त मन होकर सब देवसमूह ७१ फूलोंकी वर्षा करतेभये और महर्षिजन स्तुति करतेभये फिर कमलनयन कृष्णजी भौमासुर के नगरमें प्रवेशकर ७२ बलसे उसके ग्रहण कियेहुए देवताओं के रत्न, अदिति के कुण्डल, उच्चैःश्रवाघोड़ा ७३ हाथियों में श्रेष्ठ ऐरावत और प्रकाशित मणियों के पर्वतको वज्रधारी इन्द्रको देदेतेभये ७४ और इस नरकासुर बलीराक्षस ने सब राज्योंसे राजाओंको जीतकर सोलहहज़ार कन्याहरकर ७५ सबको अपने घरमें रोंक रक्खाथा वे सब स्त्रियां महावीर्यवान्, सौ कामदेवके सदृश कृष्णजी को देखकर ७६ उन्हीं संसारके स्वामी, सब में प्राप्त भगवान् के पति करनेको अंगीकार करती भईं इसीसमय में गोविन्द, अनन्तरूपयुक्त ७७ पुरुषोत्तम जी विधि से तिनका विवाह करलेते भये फिर भौमासुर के सब पुत्र पृथ्वी को आगेकर तिसीसमय में ७८ गोविन्दजी की शरणमें जातेभये तब भगवान् तिनकी रक्षा करतेभये और पृथ्वी के वाक्यके गौरवसे तिन सबको तिस राज्य में स्थापितकर ७९ सब श्रेष्ठ स्त्रियों को इन्द्रके विमान पर चढ़ाकर महाभाग देवताओं के दूतों से द्वारकामें प्रवेश कराते भये ८० और सत्यभामासमेत केशवजी गरुड़पर चढ़कर अदि-

तिजी के देखने के लिये शीघ्रही स्वर्गलोकको जातेभये ८१ वहांपर महाबली जनार्दनजी इन्द्रकी नगरी में प्रवेशकर स्त्रीसमेत गरुड़ से उतरकर ८२ देवताओं के वन्दना करनेवाली अदिति माताकी वन्दना करतेभये तब पुत्रके ऊपर प्यार करनेवाली अदितिजी भुजाओं से कृष्णजी को आलिंगनकर ८३ मुख्य आसन में बैठाकर भक्ति से पूजन करती भईं और सूर्य, वसु, रुद्र और इन्द्रजी ८४ यथार्ह परमेश्वरजीकी पूजा करतेभये और यशस्विनी सत्यभामा जी इन्द्राणी के घरमें जाकर ८५ उनसे पूजितहोकर सुखपूर्वक आसनमें बैठतीभईं तिसीसमयमें नौकरलोग कल्पवृक्षके फूलोंको ८६ इन्द्रकी आज्ञानुसार प्रीति से इन्द्राणी को देतेभये तिन पुष्पों को लेकर सुन्दर करिहांववाली इन्द्राणी देवी ८७ यशस्विनी सत्यभामा का अनादरकर नील निर्मल बालोंवाले अपने मस्तकमें बांध लेती भईं ८८ और यहमानुषी अपूज्यहै और ये फूल शुभ और देवताओं के योग्यहैं यह बुद्धिकर तिनको फूल नहीं देतीभईं ८९ तब कमलनयनी, कोपसंयुक्त होकर सत्यभामाजी तिसपुरसे निकलकर कृष्ण स्वामी से मिलकर बोलीं ९० कि हे यदुवंशियों में श्रेष्ठ! हे गोविन्दजी! यह इन्द्राणी कल्पवृक्षसे अभिमानयुक्तहै कल्पवृक्षके फूलोंको हमें न देकर अपने मस्तकमें इसने बांधलियाहै ९१ महादेवजीबोले कि हे पार्वती! सत्यभामाके वचन सुनकर वासुदेव, महाबली, देवकी के पुत्र कृष्णजी कल्पवृक्षको उखाड़कर गरुड़केऊपर रखकर ९२ शीघ्रही सत्यभामासमेत महाबली गरुड़पर चढ़कर सुन्दर द्वारका नगरीको चलतेभये ९३ तब कोपसे युक्तहोकर देवोंके राजा इन्द्र, रुद्र, वसु, आदित्य, साध्य और पवनके गणों समेत ९४ ऐरावतहाथी पर चढ़कर युद्धकरनेके लिये केशवजीके पास जातेभये तब सबदेवसमूह जनार्दनजी के ऊपर यों शस्त्रोंकी वर्षा बरसतेभये जैसे मेघ महापर्वत में बरसते हैं तब कृष्णजी देवताओं के तिन अस्त्रों को चक्रसे काट डालतेभये ९५। ९६ फिर वीर्य्यवान् गरुड़जी क्रोधयुक्तहोकर पंखोंसे तिन देवताओं को इसप्रकार गिरा देतेभये जैसे पवन पयालों को उड़ा देतीहै ९७ तब हज़ार नेत्रवाले, देवताओं

के स्वामी, प्रभुइन्द्रजी क्रोधकर सहसा से प्रकाशित वज्रको कृष्ण जीके मारने की इच्छासे छोड़तेभये ९८ तब तो कृष्णजी तिसवज्र को लीलापूर्वक एक हाथसे ग्रहणकर लेतेभये तो इन्द्रडरकर हाथी से उतरकर ९९ हाथ जोड़कर जनार्दनजी के आगे स्थित होकर उनके नमस्कारकर स्तुतियों से स्तुतिकर गद्गदवाणीसे बोले १०० कि हे कृष्णजी! इस देवताओं के योग्य कल्पवृक्ष को आपने पहले देवताओंके लिये मुझेदियाथा वह मनुष्यलोक में कैसे स्थितरहेगा १०१ महादेवजी बोले कि हे पार्वती! तब भगवान् उपस्थित हुए इन्द्रसे बोले कि हे देवताओं के ईश्वर! तुम्हारे घरमें इन्द्राणी ने सत्यभामाका अपमान कियाहै १०२ कल्पवृक्षके फूलोंको तुम्हारी प्यारी इन्द्राणीने सत्यभामाको न देकर अपने आप अपने शिरमें धारण करलिया है १०३ हे देवेन्द्र! हे देवसमूहों के ईश्वर! इसी निमित्त कल्पवृक्ष मैंने हर लियाहै क्योंकि सत्यभामा के देनेको मैं कहचुकाहूं १०४ हे देवताओं के ईश्वर! हे इन्द्र! तुम्हारे घरमें मैं कल्पवृक्ष को स्थापित करदूंगा परन्तु इससमयमें नहींदूंगा १०५ देवताओंके हितकेलिये पृथ्वीमें प्राप्तकरूंगा हे देवोंके स्वामी इन्द्र! कल्पवृक्ष तबतक हमारेस्थानमें स्थितरहेगा १०६ जबतकमैंस्वर्ग नहीं जाऊंगा मेरे स्वर्ग जानेके पीछे तुम इच्छापूर्वक लेलेना महादेवजी बोले कि हे पार्वती! इसप्रकार कृष्णजीकहकर इन्द्रको अपने आपही वज्र देतेभये १०७ और इन्द्र ऐसाहीहो यह भगवान् से कहकर उनके नमस्कारकर देवसमूहोंसे युक्तहोकर अपने दिव्यपुर को जातेभये १०८ और सत्यभामादेवीसमेत, मुनियोंसे स्तुतिको प्राप्त होकर कृष्णजी गरुड़ के ऊपर चढ़कर द्वारकापुरी में प्रवेश करतेभये १०९ और सबमें प्राप्त हरिजी सत्यभामा के निकट देवताओं के वृक्ष कल्पवृक्ष को स्थापितकर सब स्त्रियोंसे रमणकरते भये ११० और सुखके देनेवाले, विश्वरूप धारण करनेहारे मधुसूदनजी तिन सब स्त्रियोंके मन्दिरों में वसतेभये १११॥

इतिश्रीपाद्मेउत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेश्रीकृष्णचरितेश्रीवासुदेवविवाहकथनंनामैकोनपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४९॥

दोसौपचासका अध्याय॥

अनिरुद्ध और उषाके चरित्रमें कृष्णजी और बाणासुरका युद्धहोकर बाणासुरका अपनी कन्या उषासे अनिरुद्धका विवाहकर द्वारकापुरीमें उनका जानावर्णन॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! कृष्णजीके रुक्मिणी स्त्रीमें कामदेवके अंशसे प्रद्युम्नजी उत्पन्नहुए १ यहकामदेवसे उत्पन्न महाबली प्रद्युम्नजी शंबरराक्षसको मारतेभये २ और प्रद्युम्नजीकी रुक्मीकी कन्यामें अनिरुद्धजी उत्पन्नहुए ३ ये अनिरुद्धजी भी बाणासुरकी कन्या उषाको विवाहतेभये ४ यह उषा स्वप्नमें नीलकमलके समान श्यामवर्ण, कमलके सदृश नेत्रवाले, महाबाहु, विचित्र गहनोंसेयुक्त अनिरुद्धजीसे सोलहवर्षकी आप अच्छेप्रकार भोगकर जब जगी तो आगे अनिरुद्धजीको न देखकर कामसे पीड़ित और भ्रांतचित्त होकर यह कहकर बहुतभांतिसे रोनेलगी कि समान उमरवाली, लालकमलके समान मुखसेयुक्त मुझको छोड़कर आपकौनथे और कहां चलेजाते हैं ५ तब उषाकी सखी चित्रलेखा नामवाली उषाको इस रोनेकी अवस्थामें प्राप्त देखकर पूछनेलगी कि किसलिये तुम भ्रांतचित्तहो ६ तब उषा स्वप्नमें प्राप्तहुए पतिको यथावत् कहतीभई ७ तब चित्रलेखा सब देवता और श्रेष्ठमनुष्य आदिकोंकी तसवीर कपड़ेमें लिखकर उषाको दिखलातीभई ८ फिर यदुवंशमें उत्पन्न कृष्ण, बलदेव, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध आदिकोंकी भी तसवीर अच्छे प्रकार लिखकर दिखलातीभई ९ तब उषा अनिरुद्धजीको कृष्णही अनुमानकर प्रद्युम्नके पीछे अनिरुद्धजीकी तसवीर देखकर यही हैं यह कहकर तसवीरको आलिंगन करतीभई १० तदनन्तर चित्रलेखा बहुतमाया जाननेवाली दैत्यकी स्त्रियोंसेयुक्तहोकर रात्रिमें द्वारकापुरीमें जाकर मन्दिरके भीतर सोतेहुए अनिरुद्धजीको देखकर मोहयुक्त कर ग्रहणकर माहिष्मतीपुरीमें चैत्य प्रासाद आदिसेयुक्त बाणासुरके मन्दिरमें उषाकी शय्यामें पौढ़ा देतीभई ११ जब अनिरुद्धजी जगे तो अत्यन्त सुन्दर मनोहर शय्यामें स्थित, सब लक्षणोंसे लक्षित, विचित्र गहने वस्त्र चन्दन और मालासे अलंकृत, सुवर्ण

के वर्णवाली, सुन्दर बाल और स्तनवाली उषाको देखकर हथिनी से सुगन्धयुक्त हाथीकी नाईं अत्यन्त प्रीतियुक्त तिससे सुखपूर्व्वक रमतेभये १२ इसप्रकार महीने भरतक निरन्तर अनिरुद्धजी को रमतेहुए जानकर कोई महलकी वसनेवाली वृद्धा दैत्यकी स्त्री राजा से कहतीभई १३ तब राजा बाणासुर क्रोधसे ताम्र नेत्र होकर बड़ी विस्मयको प्राप्त होकर पहले नौकरोंको भेजतेभये कि अनिरुद्धको यहां लेआइये १४ तब राजाके नौकर शीघ्रही राजाके महलपर चढ़कर उषाकी शय्यामें स्थित अनिरुद्धजी के पकड़नेके लिये प्राप्त होगये १५ तब अनिरुद्धजी तिनको समारब्ध देखकर महलके एक खम्भको हेलासे उखाड़कर नियुतसंख्या वीरों को मुहूर्तमात्रही में चूर्ण करदेतेभये १६ तदनन्तर बाणासुर मारेहुए वीरोंको देखकर कौतूहलको प्राप्त होकर नारदजी के कहनेसे श्रीकृष्णजी का पौत्र जानकर धनुष लेकर आपही अनिरुद्धजीके पकड़नेके लिये उनके पास जाताभया १७ तब अनिरुद्धजी युद्ध करने के लिये आयेहुए हजार भुजावाले राजाको देखकर तिस परिघको घुमाकर बाणासुर के ऊपर छोड़तेभये १८ तब बाणासुर अपने धनुषसे छूटेहुए बाणसे तिस परिघको काटडालताभया १९ तिसपीछे नागपाशसे अनिरुद्ध जीको अच्छीतरह बांधकर अपने मन्दिरमें प्रवेश कराताभया २० फिर श्रीकृष्णजी नारदजी से अनिरुद्धके पकड़ने के हालको जान कर बलदेवजी प्रद्युम्न और अपनी सेनासमेत होकर गरुड़पर चढ़कर तिस बाणासुरके भुजारूप वनके काटनेको जातेभये २१ पहले बाणासुरने महादेवजी की पूजाकी थी तब प्रसन्न होकर महादेवजी बोलेथे कि वरमांगिये २२ तब बाणासुर महादेवजी से मांगताभया कि मेरे पुरके द्वारमें रक्षाकेलिये सदैव बैठकर आईहुई शत्रुकी सेना को नाशकीजिये २३ तब महादेवजी उसके वचन अंगीकार कर तिसके पुरके द्वार में हथियार पुत्र और गणोंसमेत बैठतेभये उसी समयमें आतेहुए सेनासमेत क्रोधयुक्त वासुदेवजी को देखकर सब आयुध और अपने पुत्र और गणों से युक्त होकर युद्ध करने के लिये निकलतेभये २४ तब कृष्णजी तिन भूतोंकेस्वामी, हाथीकीचर्म

और भस्म धारण करनेवाले, प्रकाशित सर्पोंकोधारे, पिंगलवर्ण, तीन नेत्रवाले, त्रिशूलधारे, सब प्राणियों के समूहों के संहार करने वाले, सब प्राणियोंके भयदेनेहारे, प्रलयकी अग्निकी दीप्तिवाले दो पुत्र और सब गणोंसेयुक्त महादेवजीको देखकर सेनाको दूर पीछे रखकर बलभद्र और प्रद्युम्नसमेत कृष्ण जी तिन रुद्रजी से युद्ध करनेकेलिये हँसकर युद्धको प्रारम्भ करतेभये २५ पहले तिससमय में कृष्ण और महादेवजीका पिनाक और शार्ङ्गधनुषसे छूटेहुए प्रलयकी उपमावाले बाणोंसे घोरयुद्ध होनेलगा २६ बलरामजी बाणासुर से और प्रद्युम्नजी स्वामिकार्तिकजी से युद्ध करनेलगे ये महापराक्रमी सिंहकीनाईं बलमें उत्कटहैं २७ गणेशजी अपने दांत से बलरामजी की छाती में मारतेभये तब बलदेवजी मुशल लेकर तिनके दांतमें मारतेभये २८ तो गणेशजीका दांत टूटकर वेसहसा से भागे तबसे लेकर इस संसार में हलदंत और देवता दानव और गन्धर्वों से एकदन्त गणेशजी कहलाये स्वामिकार्तिकजी प्रद्युम्नजी के संग युद्ध करतेभये २९।३० बलरामजी मुशलसे गणोंको भगा देतेभये और महादेवजी कृष्णजी से बहुत कालतक युद्धकर ३१ महाप्रकाशित तापज्वरको बाण में युक्तकर क्रोध से लालनेत्रहोकर छोड़ते भये ३२ तब कृष्णजी शीतज्वर से तापज्वर को निवारण करतेभये और कृष्णजी और महादेवजी से छोड़ेहुए दोनोंज्वर ३३ उन्हींकी आज्ञासे मनुष्यलोक में प्रवेश करतेभये जे मनुष्य कृष्ण जी और महादेवजी का युद्ध सुनते हैं ३४ वे सब ज्वर से छूटकर रोगरहित होजाते हैं तदनन्तर कृष्णजी दुरासद मोहनअस्त्रको ३५ बाणमें युक्तकर महादेवजी के ऊपर छोड़तेभये तब देवताओं के ईश्वर महादेवजी तिस अस्त्रसे मोहित होकर वारंवार जँभाई लेकर मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिरपड़े पिताको मूर्च्छित देखकर पराक्रमी, मयूरवाहन स्वामिकार्तिकजी शक्तिलेकर श्रीकृष्णजी से युद्ध करने के लिये प्राप्तहुए तब श्रीकृष्णजी हुंकारही से तिनको भगा देते भये ३६।३७।३८ इसप्रकार श्रीकृष्णजी ने शूलपाणि, त्रिलोचन, श्री महादेवजी को जीतकर प्रतापयुक्त होकर बड़े शब्दवाले पांच-

जन्यशंखको बजाया ३९ तिस समयमें श्रीकृष्णजी से पुत्रोंसमेत श्री महादेवजी को जीता हुआ सुनकर बाणासुर रथपर चढ़कर केशवजी से युद्ध करनेको प्राप्त होताभया ४० और सहसा से श्रीकृष्ण गोविन्दजी को गरुड़ के ऊपर चढ़ेहुए देखकर गदा, परिघ, शूल, शक्ति, तोमर, गोफना, तलवार, चक्र और बाणों की बहुत वर्षा कर उनको आच्छादित करदिया ४१। ४२ तब जनार्दनजी तिन सबको चक्रसे काटकर तिसके भुजाओं के काटने के लिये सहस्रार सुदर्शनचक्रको छोड़तेभये तब सुदर्शनचक्र दैत्यराजके भुजारूप वनको शीघ्रही हज़ार प्रकारसे काट डालताभया ४३। ४४ इसी अन्तर में व्रतयुक्त पार्वतीजी भगवान् के समीप आकर हाथ जोड़कर बोलती भई ४५ कि हे कृष्ण हे कृष्ण ! हे जगन्नाथ ! हे नारायण ! हे दयानिधे ! हे देवों के ईश ! हे यदूत्तमजी ! पूर्वभावमें मैं आपकी दासी हूं ४६ आपने मुझे कौशलपर्वतमें प्रसन्न होकर निरन्तर सौभाग्य होनेकेलिये वरदियाथा ४७ हे विभुजी यह सौभाग्य आपके हज़ार नामों का मुख्यहै और मुनियों ने गौरीसौभाग्यदाता यह आपका नाम कहाहै ४८ तिससे हे गोविन्द ! हे गरुड़ के ऊपर चढ़नेवाले ! हे शाश्वत ! हे देव ! आप अपने नामको सत्य कीजिये हमारेपतिको जिलाइये ४९ महादेवजी बोले कि हे पार्वती ! इसप्रकार देवीजी से कहेहुए कमललोचन कृष्णजी उस अस्त्र को संहार करदेतेभये जिससे महादेवजीको मोहित कियाथा ५० तब कृष्णजी के अस्त्रसे छूटकर सब भूतों के पति शिवजी उठकर भगवान् के हाथ जोड़कर स्तुति करनेलगे ५१ कि हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे जगन्नाथ ! हे भगवन् ! हे पुरुषोत्तम ! हे परेश ! हे परमेशान ! हे आदि और नाशरहित ५२ मनुष्यों में तीव्र वीर्य और सबकी शरीरग्रहणात्मिका आपकी यहचेष्टा और मानलक्षणभी वहीहै ५३ हे शाश्वत ! हे संसारके स्वामिन् ! हे अच्युत ! हे केशवजी आपके नमस्कारहैं आप मेरेऊपर प्रसन्नहूजिये ५४ हे सुरेश्वरजी ! आपही संसारके उत्पन्न पालन और संहार करनेवाले, संसारके गुरु, चित् अचित् वस्तुरूप ब्रह्म ५५ आदि, अनादि, ईश्वर, शेष, महत्, पर-

ब्रह्म, प्रत्यक् आत्मा, ५६ सब देवताओं में श्रेष्ठ, अमर्त्य, मनुष्यों के स्वामी औरस योनि हैं हे प्रभुजी आपके सुन्दरशीलसे ५७ आपही के श्वाससे उत्पन्न सनातन पर जीवहैं और पांचोंभूत भी आपही के वात्सल्य के गौरवसे आपहीके श्वाससे उत्पन्नहैं ५८ क्षर, अक्षर, पर, दीप्ति के धाम, देवताओं के आश्रय, अधिविश्व आपमें दास्य-कर्म में आप धारण करते हैं और तरहसे नहीं ५९ जो इसलोकमें पर और अवरके ईश्वर धाम आपको नहीं जानताहै वह मूर्ख सर्व-भावन है बुद्धिमान् लोग दास्यमें आपको जानते हैं ६० और वेही युक्त बुद्धिमान् देवताओं के साथ तिस पद को प्राप्त होते हैं और सामान्य मनुष्य नित्यही आपके पद जानेके लिये दूरहीमें भजता है ६१ तिसकी तुर्या, चारुकेशी अवस्था आपही में घटित होतीहै हे यदुवंशियों में शाश्वत! आपहीको मिथुन कहते हैं ६२ हेगुणातीत! आपके नाम, कर्म्म, शाश्वत गुण और ऐश्वर्यों को ये उत्तम मनुष्य कहते हैं ६३ हे केशवजी! कर्म्मज्ञानमयरूप आपके पूर्वोत्तर सुने गयेहैं मेरे पुत्र, स्त्री और मुझसे स्तुति कियेगये हैं ६४ हे शाश्वत! आप प्रज्ञान और परंब्रह्म हैं बुद्धिमान् आप श्रेष्ठ आत्मा से मुझे जिलाइये ६५ आपके दिये हुए आत्मबोधयुक्त होकर तिस शरीर से केवल आपहीकी कृपासे निकलकर श्रेष्ठ स्वर्ग्ग में जाऊंगा ६६ प्रज्ञान, विज्ञान, बुद्धि, दृष्टि, धृति और सब कामनाओंको प्राप्त हो-कर मनुष्य तिससमय में मोक्ष होजाता है ६७ हे प्रभुजी, प्रज्ञान, घृणाके निधि आप के यह संज्ञानआत्मा, हृदय, मन, बुद्धि, युक्ति, स्मृति, संकल्प, तप, यज्ञ और काम ये दशनाम होते हैं ६८। ६९ परमब्रह्म, प्रजापति, इन्द्र, रुद्र और सब देवता आपही हैं ७० ये सब प्राणी भी आपही हैं हे परमेश्वरजी! पुत्र, मित्र, जीवायु तथा औरभी ७१ जरायुज, अण्डज, चिलुवे और उद्भिज, घोड़े, गऊ, पुरुष, हाथी ७२ और जो कुछप्राणी उत्पन्न होतेहैं हे नाथ! जंगम प्राणी और स्थावर सब आपहीसे उत्पन्न होतेहैं ७३ वेद आपको हरि और सबमें प्राप्त कहते हैं आपही से प्रेरित लोक साधु और असाधुओं में चेष्टा करते हैं ७४ हे प्रभो! हे दयाके समुद्र! तिससे

इस मेरे कियेहुए अपराधको अपने अत्यन्त शुभगुणोंसे क्षमा कीजिये ७५ हे कमलनयन! हे गोविन्द! हे अच्युत! हे माधव! हे वासुदेव! हे संसार में वन्द्य! हे नारायण! आपके नमस्कार हैं ७६ हे संसारके स्वामिन्! हे नृसिंह! हे दयाकीखानि! हे लक्ष्मीके स्वामी! हे सबमें प्राप्त! हे श्रीमन्! हे परमात्मन्! आपके नमस्कार हैं ७७ हे निज वैकुण्ठमें निवास करनेवाले! हे नित्यमुक्त! हे पूजित! हे प्रभुजी! हेत्रयीनाथ! हेराम! हे कमलनयन! आपके नमस्कारहैं ७८ हे यदुनन्दनजी! पृथ्वी के भारके नाश करनेवाले, कृष्णानन्दस्वरूपी, विष्णु और जिष्णु आपके नमस्कारहैं ७९ इसप्रकार भूतोंके स्वामी महादेवजी गोविन्दजी की स्तुति और हाथ जोड़कर नमस्कारकर गम्भीरवाणी से बोले ८० महादेवजी बोले कि हे प्रभो! इस बलिके पुत्रने पूर्वसमयमें हमारी तपस्याकीथी तब मैंने इसको ८१ अमर होने का वर दियाथा तिससे हे यदुश्रेष्ठ! सब करने के आप योग्यहैं इस मेरेप्यारे बाणासुरकी रक्षा करनेके आप योग्यहैं ८२ तब भगवान् तिससमयमें बलिकेपुत्र, प्राणसंशयमें प्राप्त, छिन्न भुजावाले और रक्तसेयुक्त बाणासुर को तैसाही करदेंगे यह महादेवजीसे कहकर ८३ दयानिधि गोविन्दजी चक्रको संहारकर बाणासुरको छोड़देतेभये फिर व्रतयुक्त महादेवजी बलिकेपुत्रको छुड़ाकर ८४ पार्व्वतीसमेत श्रेष्ठ बैलपर चढ़कर अपने रहने के स्थान कैलासपर्व्वतपर जातेभये ८५ फिर बाणासुर महाबली राम और कृष्णजी के नमस्कारकर तिनसमेत नगरी में जाकर अनिरुद्धजी को छोड़ देतेभये ८६ और सुन्दर कपड़े और गहनोंसे यथोचित पूजनकर श्रीकृष्णजी के पौत्र अनिरुद्धजी को उषा दे देतेभये ८७ फिर प्रद्युम्नसमेत श्रीबलदेव जी और श्रीकृष्ण जी विधिपूर्व्वक अनिरुद्धजीका विवाहकर बाणासुरसे पूजित हुए तिसीसमय में ८८ श्रीजनार्दनजी उषासमेत अनिरुद्धजी को अतिसुन्दर रथमें बैठालकर द्वारकापुरी को चलतेभये ८९ तदनन्तर बलराम, प्रद्युम्न और सेनासहित श्रीकृष्णजी देवताओंसे इन्द्रकीनाईं सुन्दर पुरी में प्रवेश करतेभये ९० तब आनन्दयुक्त अनिरुद्धजी निरन्तरबाणासुरकी पुत्री

केसाथ अनेक प्रकार के रत्नमय मन्दिर में रमण करते भये ६१ ॥
इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसं-वादेत्राणासुरसंग्रामकथनंनामपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५० ॥

दोसौ इक्यावनका अध्याय ॥

कृष्णजी के हाथसे वासुदेव पौण्ड्रकका वध सुनकर उसकेपुत्रका कृत्याको द्वारकापुरी जलाने के लिये भेजना और कृष्णजीकी आज्ञासे सुदर्शन चक्रका कृत्या को भगाकर कृत्याही से पौंड्रकके पुत्र दण्डपाणि को भस्मकराकर काशीपुरी जलाना ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! पौण्ड्रक वासुदेव, काशिराज निराहार होकर काशीजी में एकान्तमें बैठकर महादेवजी को पूजन कर बारहवर्ष पञ्चाक्षर मंत्र जपताभया १ और पुरश्चरणके समय में महादेवजी को अपने नेत्ररूपकमलसे पूजन करताभया २ तब शूल हाथमें लेनेवाले महादेवजी प्रसन्न होकर उससे बोले कि वर मांगिये ३ तब पौंड्रक सब भूतों के पति, शिवजी, वर देनेवाले को प्रसन्न हुए देखकर यह बोले कि हमको वासुदेवजी के समान रूप दीजिये ४ तब शिवजी शंख, चक्र, गदा और कमलयुक्त चारभुजा, कमलसमान नेत्र और वासुदेवजी के सदृश मुकुट और ललित कुन्तल देतेभये फिर पौण्ड्रक पीलेवस्त्र कौस्तुभमणि आदि के चिह्नों को भी मांगताभया तब शिवजी सब तिसको देतेभये ५ तब पौण्ड्रक वासुदेव मैंहीं हूं यह कहकर सब लोकोंको मोहित करताभया ६ कदाचित् स्वर्ग्ग में रहनेवाले नारदजी मद और बलसे उत्कट तिस काशी के राजा पौण्ड्रकके पास आकर उससे बोले कि वसुदेव जी के पुत्रके विना जीतलिये वासुदेवभाव तुम में नहीं विद्यमान होगा ७ तब पौण्ड्रक तिसी क्षण में गरुड़ और पताका आदि से युक्तरूप रथपर चढ़कर चतुरंगिनी अक्षौहिणी सेना से द्वारकापुरी को प्राप्तहुआ ८ और द्वारकापुरी के द्वारमें सोने के रथपर स्थित होकर दूतको यह कहकर कृष्णजी के पास भेजताभया कि वासुदेव मैं हूं युद्धकरने के लिये आपकेपास प्राप्तहुआहूं विना मरेजीते आ-

पका वासुदेवभाव नहीं होगा ९ तब विष्णुजी यह दूतसे सुनकर गरुड़पर चढ़कर पौण्ड्रकसे युद्धकरनेके लिये पुरके द्वारमें निकल कर अक्षौहिणी सेनासेयुक्त, रथमें बैठेहुए, शंख, चक्र, गदा और पद्म हाथमें लियेहुए पौण्ड्रक को देखतेभये १० और धनुषलेकर प्रलय की अग्निकेसदृश बाणों से घोड़ा, हाथी और पैदलसमेत बड़ी अक्षौहिणी सेनाको मुहूर्तमात्रही में सब जलादेतेभये ११ और एक बाणसे तिसके हाथमें स्थित शंख, चक्र, गदादिक हेतियों को भी लीलापूर्वकही काटडालतेभये १२ और पवित्र सुदर्शनचक्र से मुकुट और कुण्डलयुक्त तिसके शिररूप कमलको काटकर काशी-पुरीमें उसकेमन्दिरमें गिरादेतेभये १३ तिसकोदेखकर सब काशी के बसनेवाले क्या है यह शंकाकर विस्मययुक्त होतेभये १४ फिर तिस पौण्ड्रककापुत्र दण्डपाणि वासुदेव भगवान्से मारेहुए अपने पिताको सुनकर मृत्यु माताकी आज्ञालेकर अपने पुरोहितसे युक्त होकर माहेश्वर यज्ञसे महादेवजी को पूजन करताभया १५ तब महादेवजी प्रसन्नहोकर प्रीतिसे कृष्णजी के मारनेकी इच्छासे स-मर्थ माहेश्वरी कृत्या को तिसको देतेभये १६ तब काशीका राजा दण्डपाणि तिस माहेश्वरी, ज्वालाकेसमूहसे वृद्धिकोप्राप्त देहवाली, प्रकाशित सटाके समूहयुक्त, पिंगल नेत्रवाली, प्रकाशित करालमु-खयुक्त,त्रिशूल हाथमें लियेहुई, भस्मके अंगरागसे लिप्त, मनुष्यके मुण्डमालासे विभूषित, सब देवोंके भयकरनेवाली और महादेवकी दीहुई को देखकर यह कहतेभये कि पुत्र, स्त्री और बान्धवोंसमेत कृष्णजीको नाश कीजिये १७ तब सब लोकोंको भयकी देनेवाली, सब पृथ्वीको अपने तेजसे जलातीहुई, प्रलयके वज्रकेसमान निर्भर शब्द को करतीहुई द्वारकापुरी को प्राप्तहुई १८ तो द्वारकापुरी के सब मनुष्य तिसको देखकर महाप्रलय मानकर हाहाकार करतेहुए कृष्णजी से कहतेभये १९ कृष्णजी तिन सबसे मतडरो यह कहकर रक्षाके वन्दनवार में स्थित, महाभयानक तिसप्रकारकी कृत्याको देखकर सबशस्त्र और अस्त्रके निवारण में समर्थ, हज़ार अरवाले सुदर्शनचक्र को तिस कृत्यामें सहसासे छोड़तेभये २० तब कल्पके

अन्तके करोड़ सूर्य्य के समान तेजसे सौ योजन में प्राप्त, सम्पूर्ण दीप्त अस्त्रों से युक्त, सुवर्णमय, दीप्तिसे पूर्ण, सब संसार के प्रलय और पालन में समर्थ, हज़ार अरसेयुक्त, सब देवोंसे नमस्कृत, संसारकी शरणभूत महासुदर्शनचक्र को देखकर नष्टतेज हो भयसे पीड़ित रोतीहुई काशीपुरी को भागी २१ तब सुदर्शनचक्रभी तिस कृत्याके पीछे प्राप्तहुआ २२ तो वह भयसे पीड़ित रोतीहुई काशीके राजाके मन्दिर में प्रवेश करती भई २३ तब सुदर्शनचक्रभी तिस काशीपुरी में प्राप्तहोकर नौकर, सेना और वाहनोंसमेत, पौण्ड्रक के पुत्र, दण्डपाणिनाम काशिराज को बहुत महलोंसेयुक्त काशीपुरी सहित भस्मकर सब देवता और महर्षियों से पूज्यमान होकर फिर द्वारकापुरी में कृष्णजी के सुन्दर हाथ में कल्पकीनाईं प्रवेश करता भया २४ संस्कृतका भाषानुवाद होकर अब श्लोकोंका भाषानुवाद कियाजाताहै ॥ सुदर्शनचक्र पराक्रमसे शस्त्र और अस्त्रके छोड़ने वाली, वृद्धावस्थारहित दण्डपाणि की सेनाको जलाकर काशीपुरी कोभी जलाताभया २५ यह पुरी रथ, हाथी, घोड़ा, पुरुष और स्त्रियोंसेयुक्त, सब खज़ानोंसेभीयुक्त, देवताओंसे भी दुःखसे देखने योग्य २६ द्वारों से उपलक्षित सब घर प्राकार और चत्वरवाली है इस सबको हरिजी का चक्र जलाकर २७ गति और सामर्थ्य से क्षीण न होकर असाध्यकृत साधनयुक्त, अत्यन्त प्रज्वलित दीप्तियुक्तभी होकर विष्णुजी के हाथमें आताभया २८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेश्रीकृष्णचरितेपौण्ड्रकपुत्रकृत्याविध्वंसनंनामैकपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५१ ॥

दोसौबावनका अध्याय॥

भीमसेनसे जरासन्धवध, युधिष्ठिरकी यज्ञमें कृष्णजी से शिशुपालवध और मथुरापुरी में दन्तवक्त्रवध होकर ऋषिके शापसे सब यदुवंश क्षयकराकर अपने धामको गमन वर्णन ॥

महादेवजी बोले कि हे पार्वती! कंसके वधके अनन्तर मगध

देशका राजा जरासन्ध सब यादवोंसे वैरकर उनको सदैव पीड़ित करताभया तब वे दुःखित होकर कृष्णजीसे बोले १ तब तो कृष्ण जी भीम और अर्जुन को बुलाकर सलाह करतेभये कि जरासन्ध ने महादेवजीको पूजाथा उन्हीं के प्रसादसे यह शस्त्रोंसे मारनेयोग्य नहीं है परन्तु किसी प्रकारसे मारना चाहिये २ तदनन्तर विचार कर भीमसेनसे कृष्णजी बोले कि जरासन्धसे मल्लयुद्ध कीजिये तब भीमसेन ने कृष्णजी के वचन स्वीकार करलिये ३ फिर सब चराचर संसारके वन्दनीय, भीम और अर्जुनसमेत वासुदेवजी ब्राह्मण के वेषसे जरासन्धकी पुरी में जाकर तिसके मन्दिरमें प्राप्तहोतेभये ४ यह महापराक्रमी क्षत्रियों को युद्धमें जीतकर बल से पकड़कर अपने मन्दिरमें बन्दकर महीने महीनेकी कृष्णपक्षकी चतुर्दशी में एक एक को मारकर तिसके रक्तसे भैरवजीकी बलि करताभया ५ इस प्रकार सब मनुष्य और राजाओं के नाश करनेवाले जरासंध के मन्दिरमें भीमसेन और अर्जुनसमेत कृष्णजी ब्राह्मण के वेषसे प्रवेश करतेभये ६ तब जरासन्ध तिनको देखकर दण्डवत्कर यथोचित आसनों में बैठाकर मधुपर्कविधानसे पूजनकर यह कहता भया कि मैं धन्य और कृतकृत्यहूं आपलोग किसलिये मेरे पास आये हैं यह कहिये तिस सबको मैं आपलोगोंको दूंगा ७ तिनके बीचमें कृष्णजी हँसकर तिस राजासे बोले कि कृष्ण, भीमसेन और अर्जुन हमलोगोंके नामहैं हमलोग युद्धकेलिये आये हैं हमसे द्वंद्व युद्ध कीजिये ८ तब जरासन्ध कृष्णजी के वचन स्वीकारकर भीमसेनसे युद्ध करना अंगीकार करताभया ९ तदनन्तर भीमसेन और जरासन्ध का परस्पर भयङ्कर मल्लयुद्ध निरन्तर पच्चीसदिन होता भया १० तब कृष्णजीसे प्रेरित होकर भीमसेन जरासन्धके शरीर के दो खण्डकर पृथ्वी में गिरादेतेभये इस प्रकार वासुदेवजी भीमसेनसे जरासन्धका नाश कराकर उसके बन्दकियेहुए राजाओं को छुड़ा देतेभये ११ जब कृष्णजीने भीमसेनसे जरासन्धका वध कराकर राजाओं को छुड़ादिया १२ तब वे कृष्णजी से रक्षित होकर मधुसूदनजीके नमस्कार और स्तुतिकर सब अपने अपने देशोंको

जातेभये १३ तदनन्तर कृष्णजी भीमसेन और अर्जुन समेत हस्तिनापुर जाकर राजसूय महायज्ञको युधिष्ठिर से करातेभये १४ फिर यज्ञ की समाप्तिमें युधिष्ठिरजी भीष्मपितामहकी सलाह से अग्रकी पूजा कृष्णजीको देतेभये १५ तहांपर शिशुपाल कृष्णको बहुत कठोर वचन कहताभया १६ तब कृष्णजी सुदर्शनचक्र से शिशुपाल का शिर काट लेतेभये १७ तो यह तीन जन्मके अन्तमें हरिजीकी सारूप्यको प्राप्त होताभया १८ तदनन्तर शिशुपालको माराहुआ सुनकर दन्तवक्र कृष्णजी से युद्धकरनेके लिये मथुरापुरी को प्राप्त होताभया १९ तब कृष्णजी यह सुनकर रथपर चढ़कर तिस से युद्ध करनेके लिये मथुरापुरी में प्राप्त होजातेभये २० तो दन्तवक्र और वासुदेवजी का दिनरात मथुरापुर के द्वारमें यमुनाजी के किनारे संग्राम होताभया तब कृष्णजी गदासे दन्तवक्रको मारडालते भये २१ तो उसका सबअंग चूर्णहोकर वज्रसे कटेहुए पर्वतकी नाईं वह प्राणहीन होकर पृथ्वी में गिरताभया २२ फिर यह हरिजीकी सायुज्य, योगियों के जानेयोग्य, नित्यानन्दसुख, शाश्वत, परमपद को प्राप्त होगया २३ इसप्रकार जय और विजय सनकादिकों के शापके बहानेसे केवल भगवान् की लीलाकेलिये संसार में उत्पन्न होकर तीनों जन्ममें भगवान् से नाशको प्राप्त होकर तीन जन्मके अन्त में मुक्तिको प्राप्त होतेभये २४ फिर कृष्णजी दन्तवक्रके मारनेकेपीछे यमुनानदी उतरकर नन्दके व्रजमें जाकर पहलेके माता और पिताके नमस्कारकर समझाकर तिनके आंशू कण्ठतक वहाकर आलिंगित होकर सब गोपवृद्धोंके प्रणामकर उनको भी समझाकर वहां वालोंको रत्न और गहनेआदिकों से प्रसन्न करतेभये २५ फिर भगवान् यमुनाजी के सुन्दर किनारे पुण्यकारी वृक्षों से युक्तमें गोपोंकी स्त्रियोंसे निरन्तर क्रीड़ा करतेभये २६ गोपका वेष धारणकर हरिजी सुन्दर केलिसुखसे बँधेहुए प्रेमके रससे व्रज में दोमहीने वसतेभये २७ तदनन्तर तहांके नन्द गोपआदिक सब मनुष्य पुत्र और स्त्रीसमेत पशु पक्षी और हरिणआदिक भी वासुदेवजी के प्रसादसे सुन्दररूप धारणकर विमानपर चढ़कर श्रेष्ठ व-

कुण्ठलोकको प्राप्त होतेभये २८ फिर कृष्णजी नन्द गोपके व्रजके रहनेवाले सबको श्रेष्ठ,रोगरहित अपना पद देकर आकाशमें देवसमूहोंसे स्तुतिको प्राप्त होकर श्रीमती द्वारकापुरीको प्रवेश करते भये २९ और तहांपर विश्वरूपधारण करनेवाले कृष्णजी वसुदेव, उग्रसेन, बलदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध और अक्रूर आदिकोंसे प्रतिदिन पूजित होकर सोलह हजार स्त्रियों और आठ पटरानियों से सुन्दर रत्नमय अनेक प्रकार के मन्दिरों में फूलों से युक्त अत्यन्त कोमल शय्याओंमें रमण करतेभये ३० तदनन्तर राम और कृष्ण जीके साथका पढ़नेवाला ब्राह्मण बाल्यावस्था का मित्र सदैव अत्यन्त दारिद्र्यसे पीड़ितहोकर मांगनेसे मुष्टिमात्र चावलकी किनकी को जीर्ण कपड़े में बांधकर वासुदेवजी के देखने के लिये श्रीमती द्वारका नगरीको प्राप्तहोताभया ३१ और रुक्मिणीके महलके द्वार पर चुपचाप क्षणमात्र स्थितहोताभया ३२ तब कृष्णजी आयेहुए ब्राह्मणको जानकर उठकर हाथ पकड़कर घरके भीतर में अच्छे आसनपर बैठालकर भयसे कँपते हुए ब्राह्मणके रुक्मिणी के हाथ में प्राप्त सोने के घड़े के जलसे चरण धोकर मधुपर्कसे पूजनकरते भये ३३ और अमृतकेसदृश अन्न और पानआदिकोंसे भोजन में प्रसन्नकर उनके जीर्ण कपड़े में मांगी हुई किनकी को आप अपने हाथसे लेकर हँसकर चबातेभये ३४ कृष्णजी के किनकीके चबाते ही उसी क्षणमें सुदामाजीके बहुत धन, धान्य, कपड़े और गहनों से उत्पन्न बड़ा ऐश्वर्य होगया ३५ फिर सुदामाजी कृष्णजी से बिदा होकर यह शोचकरताहुआ अपने पुरमें प्रवेश करताभया कि मुझ को कुछ कपड़ा वा धन कृष्णजीने नहीं दिया ३६ तदनन्तर बहुत धन और धान्यसेयुक्त अपने घरको देखकर भगवान्ही के प्रसाद से यह सब मिलाहै यह कहकर प्रसन्न अन्तरात्मा से सुन्दर कपड़े और गहने आदिसे स्त्रीसमेत सब कामनाओंको भोगकर भगवान् की प्रसन्नताकेलिये बहुत यज्ञोंको करके भगवान्के प्रसादसे परम, नित्य, स्वर्गसुखको प्राप्तहोताभया ३७ तदनन्तर धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधनजी पाण्डुके पुत्रोंको कपटके जुएंके बहाने से राज्यछीनकर

राज्यसे निकाल देताभया ३८ तब युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेवजी सुन्दर स्त्री द्रौपदीसमेत महावनमें जाकर वहां पर बारहवर्ष स्थित रहकर एक वर्ष सब अज्ञातहोकर मत्स्य देश के राजाविराटके स्थान में स्थितहोकर वासुदेवजी की सहायता से धृतराष्ट्र के पुत्रों से युद्ध करने के लिये आतेभये ३९ तब धृतराष्ट्र और पाण्डुके पुत्रों का अनेकप्रकारके देशोंके राजाओं से कुरुक्षेत्र महापुण्ययुक्तमें देवताओंकोभी भयंकर महायुद्धहोताभया ४० तदनन्तर श्रीकृष्णजी अर्जुनके सारथी बनकर अर्जुनमें अपनी शक्ति प्रवेशकर उन्हींसे दुर्योधन, भीष्म और द्रोणाचार्य्य इत्यादिक सब राजाओंको ग्यारह अक्षौहिणी सेनासमेत कुरुक्षेत्रमें नाशकराकर पाण्डवों को राज्यमें स्थापितकर सब पृथ्वी के भारको दूरकर अपनीपुरी में प्रवेश करतेभये ४१ फिर कुछ काल बीतने पर एक वेद का जाननेवाला ब्राह्मण मरेहुए पांचवर्ष के बालकको लेकर राजद्वार में धरकर बहुत विलाप कर बहुत आक्रोशवचन श्रीकृष्णजी को कहताभया ४२ तब कृष्णजी तिस आक्रोशको सुनकर चुपचाप रहजाते भये ४३ तब ब्राह्मण बोला कि मेरे पांचपुत्र पहले मरचुके हैं यह छठवां है जो कृष्णजी इसको न जिलावेंगे तो राजद्वारमें मर जाऊंगा ४४ तिसीसमयमें अर्जुनजी कृष्णजी के देखने के लिये आकर प्राप्तहोगये तब इन्हों ने तिसप्रकार पुत्रके शोक से ! रोते हुए ब्राह्मणको देखा ४५ तब दयायुक्त होकर अर्जुन पांचवर्षके बालक को मराहुआ देखकर ब्राह्मण को अभय देकर यह बोले कि मैं तुम्हारे पुत्रको जिलाऊंगा ४६ तब अर्जुनके समझाने से ब्राह्मण प्रसन्न होगये ४७ तदनन्तर अर्जुन ब्राह्मणके बालकको बहुत संजीवन अस्त्रों से अभिमन्त्रणकर नहीं जीवते देखकर वृथा प्रतिज्ञाको प्राप्त होकर बहुत शोकसे युक्तहोकर तिसी के साथ प्राण छोड़नेकी इच्छा करताभया ४८ तब तो कृष्णजी यह सब वृत्तान्त जानकर मन्दिरसे निकलकर वैदिक ब्राह्मणसे बोले कि तुम्हारे सब पुत्रोंको मैं दूंगा इस प्रकार समझाकर गरुड़पर चढ़कर अर्ज्जुनसमेत वैष्णवलोकको जातेभये ४९ तहांपर सुन्दर मणियों के मण्डपके उ-

देशमें देवीसमेत बैठेहुए नारायणजीको देखकर कृष्ण और अर्जुन नमस्कार करतेभये ५० तब नारायणजी कृष्ण और अर्जुनको भुजाओं से आलिंगनकर बोले कि आपलोग किसलिये आये हैं ५१ तब कृष्णजी बोले कि हे भगवन्! वैदिकके पुत्रोंको हमैं देदीजिये ५२ तब नारायणजी तिसी अवस्थामें स्थित ब्राह्मण के पुत्रों को कृष्ण जी को देदेतेभये ५३ तो श्रीकृष्णजी तिनको गरुड़ के कांधे पर चढ़ाकर आनन्दयुक्त होकर अर्जुनसमेत आपभी गरुड़पर चढ़कर आकाश में देवसमूहों से स्तुतिको प्राप्तहोकर द्वारकापुरी में प्रवेश करतेभये ५४ और तिस ब्राह्मण को पांचवर्षकी उमरवाले छःपुत्रों को देतेभये तब ब्राह्मण आनन्दयुक्त होकर कृष्णजीको यह आशिष देताभया कि आपकी वृद्धिहो ५५ फिर अर्ज्जुन सफल प्रतिज्ञा को प्राप्तहोकर कृष्णजी के नमस्कारकर युधिष्ठिरजी की रक्षित अपनी हस्तिनापुरी को जातेभये ५६ कृष्णजी की सोलहहज़ार स्त्रियों में दशहज़ार पुत्र उत्पन्नहुए तिनके पुत्र और पौत्रों की संख्या कहने को समर्थ नहीं है ५७ कक्षाओं से भाषानुवाद होकर अब श्लोकों का भाषानुवाद होता है॥ दशहज़ार आठसौ पुत्र कृष्णजी के हुए तिन सब में रुक्मिणी जी के पुत्र प्रद्युम्नजी प्रथम हुए थे ५८ अगणित यादवों से यह पृथ्वी आच्छादित होजाती भई ५९ फिर पृथ्वी के भारकी शंकासे कृष्णजी तिन यादवों को ऋषि के शाप के बहानेसे संहार करनेकी इच्छा करतेभये ६० किसीसमयमें सब कुमार नर्मदानदी में विहार करनेके लिये जातेभये तहांपर तपस्या करतेहुए कण्वमहर्षि को देखकर जाम्बवती के पुत्र सांबको स्त्रीका वेष बनाकर तिनके पेटमें एकलोहे का मुसल बांधकर कण्वऋषिके समीप आकर सब कुमार नमस्कारकर स्त्रीरूप सांबकुमार को तिनके आगे बैठाकर यह बोले कि इसके गर्भ में कन्या व पुरुषहोगा तिसको आप बतलाइये ६१।६२ तब कण्वजी मनसे उनके सबवृत्तान्तको जानकर क्रोधकर बोले कि इस मुसलसे तुमसब नाशहोजावोगे ६३ ये वचन सुनकर सबकुमार उद्विग्नमन होकर कृष्णजी के पासआकर महर्षि के कहेहुए तिस कर्म्मको कहते भये ६४ तब

कृष्णजी तिस लोहे के मुसल को चूर्ण कराकर कुण्ड में फेंकवादेते भये ६५ तो उसलोहेके चूर्णरूपी बीजसे उत्पन्न वज्रके सदृश महाकाश होतेभये ६६ और तहांही मुसलसे बचेहुए कनिष्ठा अंगुलि के समानको मछली खाजातीभई तिस मछली को निषाद पकड़कर तिसके पेटमें स्थित मुसलके टुकड़ेकोलेकर बाणके अग्रमें फलक बनाताभया ६७ किसीसमयमें राम कृष्ण और प्रद्युम्नआदिक सब यादव इन्द्रकी भेजीहुई वारुणी मदिरा पीकर मस्त होजातेभये ६८ तब परस्पर वीरणको लेकर बहुत आक्रोशके वचनोंको कहकर युद्धकर नाशको प्राप्तहोजातेभये ६९ फिर युद्धसे थककर कृष्णजी कल्पवृक्षकी छायामें शयन करनेलगे तबवही निषाद धनुषबाण लेकर शिकारकी जीविका को जाताभया ७० इसप्रकार सब यादव प्राणहीन होकर अपने अपने देवताओं को प्राप्त होजातेभये ७१ इसप्रकार मुसलसे सबको संहारकर आपही एक देव कृष्णजी बहुत गुल्मों से आच्छादित कल्पवृक्ष की छाया में चारप्रकार के व्यूह में प्राप्त वासुदेवात्मक आत्मा को चिन्तनकर गांठ के ऊपर पांव धरकर मानुष शरीरके छोड़ने के लिये सोरहे ७२ कि इसीबीच में वहनिषाद तिस समयमें कालके प्रभावसे चक्र, वज्र, ध्वजा और अंकुश आदिसे चिह्नित अत्यन्त लाल भगवान्के चरणकमल देखकर बाण मारताभया ७३ और तिस पीछे श्रीकृष्णजी को जानकर बड़ेभय से पीड़ितहोकर कांपकर हाथजोड़कर बोला कि मैंने बड़ा अपराधकिया इसको आप क्षमाकीजिये ऐसा कहकर प्रणाम करताभया ७४ तब श्रीकृष्णजी निषाद को तिसप्रकार महाभय से पीड़ित देखकर अमृतमय हाथोंसे उसको उठाकर बहुत समझाकर यह बोले कि तुमने कुछ अपराध नहीं कियाहै ७५ तदनन्तर कृष्णजी योगियों के जानेयोग्य, पुनरावृत्तिशाश्वत, सब उपनिषदमय, वैष्णवलोक उसको देतेभये ७६ तब निषाद सब पुत्र और स्त्रियोंसमेत तिसी मुहूर्त्तमें मानुषरूप पंचउपनिषन्मयको छोड़कर हजार सूर्य्यके सदृश, सुन्दर अप्सरागणोंसेयुक्त, सुवर्णमय, सुन्दर विमान पर चढ़कर दीप्तिमय वैष्णवलोक को जाताभया ७७ तिसी समय

में दारुक सारथी रथपर चढ़कर विष्णुजी के पास आताभया ७८ तब कृष्णजी ने दारुकसे कहा कि पहले हमारे स्वरूप अर्ज्जुन को लेआइये यह कहकर भेजदिया ७९ तब दारुक मनोजव रथपर चढ़कर अर्जुन के पास प्राप्त होगया ८० इसी बीचमें देव अर्ज्जुन रथपर चढ़कर कृष्णजीके हाथ जोड़कर नमस्कारकर बोले कि क्या आज्ञा है ८१ तब कृष्णजी तिनसे बोले कि हे अर्ज्जुन! मैं अपने लोक जाताहूं तुम द्वारकापुरी में जाकर वहां स्थित रुक्मिणी आदिक आठों पटरानियों को लेकर मेरे शरीरमें भेजदीजिये ८२ तब अर्जुन दारुकसमेत होकर द्वारकापुरीको जातेभये ८३ इसीअन्तर में आकाशमें विमानपर स्थित देवता ऋषियोंसमेत होकर स्वर्गलोक जातेहुए कृष्णजी को देखकर उनकी स्तुतिकर फूलोंकी वर्षा करतेभये ८४ तब कृष्णजी मानुषदेह त्यागकर सब संसारके पालन और संहारके हेतुभूत, सकलक्षेत्रज्ञ, अन्तर्य्यामी, योगियों के ध्यानकरनेयोग्य, रोगरहित, वासुदेवात्मक देहधारणकर गरुड़पर चढ़कर महर्षियोंसे स्तुतिको प्राप्त होकर वैकुण्ठको जातेभये ८५ फिर अर्जुन, वसुदेव, उग्रसेन और रुक्मिणीआदिक स्त्रियों से सब वृत्तान्त कहतेभये ८६ तिसको सुनकर सब पुरकेमनुष्य और स्त्रियां और कृष्णजी की प्यारी स्त्रियां वसुदेव और उग्रसेनसमेत होकर शीघ्रही हरिजीकेपास द्वारकापुरी छोड़कर महलोंसे निकलकरजाती भईं ८७ ये वसुदेव, उग्रसेन और अक्रूरआदिक सबयदुवंशियों में वृद्धमनुष्य देह छोड़कर सनातन वासुदेवजी को प्राप्त होजाते भये ८८ और रेवती जी बलभद्रजी के शरीर को आलिंगन कर अग्नि में प्रवेशकर तिसमें देहको प्राप्त होकर सुन्दर विमान पर चढ़करस्वामी बलरामजी के दिव्यलोक को प्राप्त होजाती भईं तैसेही प्रद्युम्नजी के संग रुक्म की पुत्री और अनिरुद्धजी के साथ उषा और सब यादवोंकी स्त्रियां अपनेअपने स्वामियों के देहों को पूजकर अग्निमें प्रवेश करगईं ८९।९० तब अर्ज्जुन तिन सबकी षोड़शी सापिण्डीको करताभया ९१ तिसीसमयमें सुग्रीवनाम सुन्दर घोड़ेसेयुक्त और सब रत्नोंसमेत सुन्दर रथपर चढ़कर दारुक सा-

रथीभी प्राप्त होजाताभया ९२ कल्पवृक्ष और सुधर्मानाम देवताओं की सभा इन्द्रलोकको चलीगई ९३ और तिसीसमयमें द्वारकापुरी समुद्रमें डूबजातीभई ९४ तदनन्तर सब सोलहहज़ार कृष्णजीकी स्त्रियां अर्ज्जुनके संग हस्तिनापुर जाती थीं तब उनको चोर छीन लेतेभये ९५ ये पहलेकी देवता और गन्धर्वोंकी स्त्रियांथीं इन्होंने अष्टावक्र महामुनिको देखकर हासकियाथा तब मुनिने उनको शाप दियाथा कि वेश्याहोजावो तदनन्तर स्त्रियोंने पूजनकर मुनिको प्रसन्न किया तो मुनिजी के प्रसादसे सबलोकों के नमस्कारके योग्य वासुदेवजीको पतिपाकर फिर मुनिके शापके कारणसे चोरोंके हाथ में प्राप्त होगईं ९६ तब अर्जुन चोरों से हारकर शोकसेयुक्त होकर मेरे भुजाओंका वीर्य्यसमेत बल और सब ऐश्वर्य्य कृष्णजीकेसाथ चलागया यह मानकर और इससमयमें मेरी भाग्यका नाश होगया यह कहकर सायंकालकी संध्याके सूर्य्यकीनाईं सब तेज नष्ट होकर अपनी पुरी को जातेभये ९७ इसप्रकार सब देवताओं के कल्याण केलिये और सब पृथ्वी के भारके नाशने के अर्थ यदुवंश में अवतार लेकर सब राक्षसों का नाशकर बड़ेभारी पृथ्वी के भारको नाशकराकर नन्दके व्रज, द्वारका और मथुराके सब स्थावरजंगम निवासियोंको कालभवबन्धन से छुटाकर श्रेष्ठ ऐश्वर्य्ययुक्त, शाश्वत, योगियों के जानेयोग्य, हिरण्मय, सुन्दर सात्विकमें स्थापितकर नित्यही सुन्दर स्त्री आदिकों से सेवित होकर वासुदेवजी बसतेभये ९८ अब कक्षाओंका भाषानुवादहोकर श्लोकोंका भाषानुवाद होताहै॥ और सब अवतार हैं परन्तु कृष्णजी का महान् चरित्र है पृथ्वी के भारके नाश करनेकेलिये भगवान् प्रकट हुएथे ९९ यह कृष्णजीका चरित्र दुष्टोंके नाश करनेके लियेहै श्रीकृष्ण दयासिन्धुजी वैकुण्ठमें सदैव आनन्द करते हैं १०० हे पार्वतीदेवी! यह कृष्णजीका चरित शुभ अत्यन्तअद्भुत और सबफलका देनेवाला संक्षेपसे मैंने तुमसे कहा १०१ वासुदेवजी का चरित्र जो भगवान् के समीप पढ़ता स्मरण करता वा भक्तिसे सुनताहै वह परमपदको प्राप्त होताहै १०२ महापाप तथा उपपातकों से युक्त भी मनुष्य बालकृष्णजी के चरित सु-

नकर पापोंसे छूट जाताहै १०३ द्वारकापुरी में रुक्मिणीसमेत हरि जीको बैठेहुए जो स्मरण करताहै वह इस स्मरणसे निस्संदेह बड़े ऐश्वर्यको प्राप्त होताहै १०४ संग्राम, संकट और शत्रुओंसे परिवेष्टित क़िले में जो सब देवताओं के स्वामी को ध्यान करता है वह विजयी होताहै १०५ जो शुभ गोकुलमें गोपोंकी कन्याओंसे क्रीड़ा करतेहुए कृष्णजीको स्मरण करताहै वह सब कामनाओं और सौभाग्यको प्राप्त होताहै १०६ महोपसर्ग और रोग आदिकोंसेयुक्त होकर जो सनातन भगवान् जीतनेवाले और काशीपुर में स्थित महाभयानक कृत्याको स्मरण करताहै वह सब दुःखों से छूट जाता है १०७ बहुत कहनेसे क्याहै पण्डित मनुष्य कृष्णायनमः इसमंत्र को उच्चारण करै १०८ कृष्णायवासुदेवाय हरयेपरमात्मने ॥ प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दायनमोनमः ॥ कृष्ण, वासुदेव, हरि, परमात्मा, प्रणतोंके क्लेश नाशनेवाले, गोविन्दजीके नमस्कारहैं १०९ मनुष्य इस मन्त्रको भक्तिसे प्रतिदिन जपकर सब पापों से छूटकर विष्णुलोकको प्राप्त होताहै ११० यह ईश्वर जनार्दनजी सब देवता और लोकोंकी रक्षा करनेकेलिये अवतार धारण करते हैं १११ त्रिपुरासुर के मारने की कामना से मैंने हरिजीको पूजा तब श्रीमान् भगवान् बुद्धका रूप धरकर तिन शत्रुओं को मोहित करदेतेभये ११२ तब तिस शास्त्रसे मोहित, सब धर्मोंसे वर्जित, देवताओंके शत्रु नारायण अस्त्रसे मुझसे नाश करडालेगये ११३ फिर जनार्दनजी कलियुग के अन्तमें ब्राह्मणके स्थानमें अवतार लेकर भयानक सब म्लेच्छों को नाश करेंगे ११४ हे सुन्दर मुखवाली पार्व्वती! तिन तिन भावों से मैंने सब भगवान् की अवस्थाकही अब क्या सुनने की तुम्हारे इच्छाहै सो कहिये तिसको भी मैं वर्णन करूंगा ११५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेश्रीकृष्णचरितेश्रीकृष्णस्वधामगमननिरूपणन्नामद्विपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५२॥

दोसौतिरपनका अध्याय ॥

विष्णुपूजाविधान और वैष्णव आचारोंका वर्णन ॥

पार्वतीजी बोलीं कि हे भगवन्! आपने हरिजीके अवतारके सब चरित्रको वर्णनकिया इसमें राम और कृष्णजी का चरित्र अत्यन्त विस्मयदायकहै १ महात्मा बलराम और कृष्णजीके चरित्र सुनते हुए हे देवेशजी! मुझको सौकल्पों में भी हरिकी कथारूप अमृतसे चित्तमें तृप्ति नहींहोगी अब हे भूतोंके स्वामी! हे महादेवजी! विष्णुजीके उत्तम माहात्म्य और तिनके पूजनकी विधिको सुननाचाहती हूं २।३ तब महादेवजी बोले कि हे पार्वती देवी! महात्मा हरिजी के अपनेआप प्रकट, दोप्रकारके माहात्म्यको कहताहूं सुनिये ४ पत्थर, मिट्टी, काष्ठ और लोह आदिकों से भगवान्‌की मूर्त्ति बनाकर वेद, स्मृति और शास्त्र की कहीहुई क्रियाओं से जो स्थापन है ५ वही स्थापन अपनेआप प्रकट कहाहुआ है तिसको मुझसे सुनिये पृथ्वीमें मनुष्यों के कल्याणके लिये जिसमें विष्णुजी आपही स्थितहोजाते हैं ६ पत्थर और काष्ठमें भगवान् आपही प्रकट होजाते हैं इससे स्वयंव्यक्त कहाते हैं स्वयंव्यक्त वा स्थापितहुए मधुसूदन जी को पूजनकरे ७ देवता और महर्षियोंके पूजनके लिये सनातन, जगन्नाथ केशवजी सांनिध्यको प्राप्त होजाते हैं ८ जिसका जिसदेह में भोग्य सोई पृथ्वी में प्रकटहोजाते हैं तिसका नित्यही पूजन और तिसी में सदैव रमनाचाहिये ९ श्रीरंगशायी, देवोंके ईश, देवताओं में उत्तम विधिसे पूजनेचाहिये सोई देव पृथ्वी में इक्ष्वाकुनाथों की तपस्यासे प्रकटहोते हैं १० हमको भी काशीजी में पापके नाशकरने वाले माधवजी पूजनेयोग्य हैं जिस जिस सुन्दर घरमें सनातन भगवान् आपही प्रकटहैं ११ तहां तहां प्राप्त और स्थितहोकर मैं रमताहूं यज्ञेश भगवान् मनुष्यों को अष्टांगयोगमें नहीं प्राप्तहोते हैं पूजनमें प्राप्तहोते हैं १२ और नेत्रोंके विषय प्राप्तहोकर मनोवांछित वरको देतेहैं पूजनमें सब अवस्थाओं में मनुष्यों को सुलभहोकर प्राप्तहोते हैं १३ शुभ भारतवर्ष महापुण्यकारी जम्बूद्वीपमें पृथ्वी में

सदैव अज्ञोंको सांनिध्य भगवान् हैं १४ पूजनमें भगवान् समीप रहते हैं और में कभीनहीं रहते हैं तिससे भारतवर्ष में मुनि और देवताओंकरके १५ तपस्या, यज्ञ और क्रिया आदिकों से निरन्तर भगवान् सेवितहैं इस भारतवर्ष में हरिजी नित्यही पासरहते हैं १६ ऐंद्रद्युम्न, कौर्म, सिंहाद्रि, करवीरक, काशी, प्रयाग, सौम्य, शालग्राम पर्वत १७ द्वारका, नैमिषारण्य और बदरिकाश्रम में स्नानकरनेसे पापको नाश करतेहैं पौण्डरीक, दण्डक १८ माथुर, वेङ्कटपर्व्वत, श्वेतपर्वत, गरुड़पर्वत, कांची, अनन्तशयन, श्रीरंग, वासवपर्वत १९ नारायणपर्व्वत, सौम्य, वाराह, वामनआश्रम इनको आदि देकर और भी स्थानों में सबकाम और फलके देनेवाले भगवान् आपही प्रकट हैं २० आपही जिसमें जनार्दनजी सांनिध्यको प्राप्तहोते हैं तिसी में शुभ मुनिजन भगवान्‌को स्वयंव्यक्त कहते हैं २१ महाभागवतों में श्रेष्ठ मनुष्य विधिपूर्व्वक केशवजी को स्थापितकर मंत्रसे सांनिध्य और स्थापनकरै २२ तिसमें गांवों और घरोंमें देवजी को पूजनकरै सज्जनों ने शालग्रामकी शिलामें गृहार्चा कही है २३ महात्मा भगवान्‌का पूजन, मन्त्रपठन, यज्ञयोग, नामकाकीर्त्तन, सेवा तिन चिह्नोंसे अंकन २४ तिनका आराधन नवप्रकार शुभमें भेदहैं ब्राह्मणका निरन्तर तीन तीन कर्मविधान कहाहै २५ महाभागवतों में श्रेष्ठब्राह्मण मनुष्यों का गुरु है सब मनुष्यों को भगवान्‌की नाई ब्राह्मण पूजना चाहिये २६ तापादि पांच संस्कार करनेवाला नव यज्ञ, कर्मका करानेवाला अर्थपञ्चकका जाननेवाला ब्राह्मण महाभागवत कहाताहै २७ तिन तिन कर्मकी विधिसे यज्ञ क्षत्रियकी कही है और तिन चिह्नोंसे अंकन, सेवा, तिनके भक्तोंका पूजन २८ मंत्र वर्णका जाप, भगवान् के नामका कीर्त्तन और छःकर्म्मकी यज्ञ विधान से वैश्योंको वन्दन कहाहै २९ नामकाकीर्त्तन, सेवा, पूजन, वन्दन, भगवान् के भक्तोंका पूजन यह शूद्रको पांचप्रकारकी यज्ञकही है ३० हे प्रिये! सब मनुष्यों को अपने अधिकारके अनुरूप साधारणसे भगवान्‌की पूजा करनीचाहिये ३१ नहीं और देवताके भक्त, नहीं और फलके साधन करनेवाले, वेदके जाननेवाले, ब्रह्मके तत्त्व

जाननेवाले, रागरहित, मोक्षहोनेकी इच्छावाले ३२ गुरुकी भक्तिसे युक्त, प्रसन्न, साधु, ब्राह्मण वा औरही वर्ण इनसबसे भगवान् सदैव पूजनेयोग्यहैं ३३ मनुष्यों को वर्ण के उचित हरिजीकी पूजा करनी चाहिये शुभ, वैष्णवोंकरके वर्ण और आश्रमोंके अनुरूप पूजनकरना चाहिये ३४ नित्यही अच्छेप्रकार से वेद और स्मृतिके कहेहुए कर्म करनेचाहिये बुद्धिमान् मनुष्य वेद और स्मृतिके कहेहुए कर्मों को न छोड़े ३५ जो वैष्णव मनुष्य वेद और स्मृतिके कहेहुए आचार को नहीं सेवताहै वह पाखण्डयुक्त मनुष्य रौरवनरकमें बसताहै ३६ तिससे वर्णके अनुरूप भगवान् की पूजाकरै स्मृति के कहेहुए आचारको सदैव मनुष्यकरै ३७ हे शुभे! सब मनुष्योंको साधारण मानसपूजा करनी चाहिये अतंद्रितहोकर मनुष्य अपने अधिकार को देखकर कर्म्मकरै ३८ शम, दम, तपस्या, पवित्रता, सत्य, मांस छोड़ना, चोरी न करना, जीव न मारना ये सबके धर्म्मके साधनहैं ३९ तिससे वर्णके अनुरूपसे भगवान्को पूजनकरै रात्रिके अन्तमें उठकर विधिपूर्व्वक मंगल वस्तुओं को स्पर्शकर ४० गुरुओं के नमस्कारकर अपने हृदयमें अच्युत भगवान् को स्मरणकरै और मौन होकर भक्तिसे पवित्र मनुष्य सहस्रनामों से कीर्तनकरै ४१ गांवसे बाहर विधिपूर्व्वक मल और मूत्र त्यागकर न्यायपूर्व्वक शौचकर आचमनकर पवित्रहो ४२ पहले दूतनकर विधिसे स्नानकरै तुलसी की जड़ की मिट्टी और तुलसी के पत्र लेकर ४३ मूलमन्त्र और गायत्रीसे अभिमन्त्रणकर मन्त्रहीसे देहमें मिट्टीका लेपकर अघमर्षणकर स्नानकरै ४४ निर्म्मल जलमें भगवान्के चरणों से उत्पन्न गंगाजी को आवाहनकर डुबकी मारकर शीघ्रही उत्तम अघमर्षण सूक्तको जपै ४५ फिर पण्डितजन आचमन कर पौरुपोक्त क्रमसे मार्जन करै और पीछेसे जलमें स्नानकर मूलमन्त्रको जपै ४६ वैष्णव मनुष्य अट्ठाइस वा एकसौआठवार जलमन्त्रसे अभिमन्त्रण कर प्रार्थना करै ४७ फिर आचमनकर देवता, ऋषि और पितरों को तर्प्पणकर कपड़े को निचोकर आचमनकर धोया कपड़ा पहने ४८ फिर वैष्णव श्रेष्ठ ब्राह्मण सुन्दर निर्म्मल मिट्टी लेकर मन्त्रसे

अभिमन्त्रणकर माथे आदिकों में ४९ ऊर्ध्वपुण्ड्र यथासंख्य धारण करै और अतन्द्रित बुद्धिमान् मनुष्य विधिपूर्वक सन्ध्याकर गायत्री को जपै ५० फिर संयतआत्मा मनुष्य मौनहोकर घरजाकर चरण धोकर आचमनकर एकाग्रमन होकर पूजाके मण्डप में प्रवेश करै ५१ सुन्दर अत्यन्त शुभ्र, फूलों से शोभित पीठ में लक्ष्मीनारायण देव प्रभुजीको बैठाकर ५२ अच्छीविधिसे चन्दन, फूल और अक्षत आदिकों से पूजन करै वा स्वयंव्यक्त स्थापनमें गृहपूजामें विधिसे ५३ प्रसन्नमन होकर ब्राह्मण विष्णुजीका वेद, स्मृति और शास्त्रमें कहीहुई पूजा भक्तिसे यथोचितकरै ५४ वैष्णव मनुष्य जिसप्रकार गुरुजी ने उपदेश दिया है तैसेही करै श्रौतवैखानस और वासिष्ठ-स्मार्त कहाताहै ५५ पञ्चरात्रविधान दिव्यागम कहाताहै क्रियालो-प न करना चाहिये विष्णुजी का श्रेष्ठ आराधन करना चाहिये ५६ आवाहन, आसन, अर्घ्यआदिक, चन्दन, फूल, अक्षत आदिक, धूप, दीप, नैवेद्य, पानआदिक और नमस्कारों से ५७ आनन्दयुक्त वै-ष्णव मनुष्य यथाशक्ति सहस्रशीर्षमन्त्रके प्रत्येकऋचा और मूल-मन्त्रसे विष्णुजीका आराधन करै ५८ दोमन्त्रसे सोलह उपचारों से पूजाकरै फिर प्रत्युपचारों में पुष्पांजलि देवै ५९ फिर वैष्णवम-नुष्यमुद्रासे जगन्नाथजी को आवाहन करै फूलसे और मुद्रासे आ-सनदेवै ६० दीपजलावै और मंगलद्रव्य और तुलसीदलसे मिले हुए निर्म्मल जलोंसे अर्घ्य, आचमन और स्नान करावै ६१ फिर मूल दोमन्त्रोंसे प्रत्युपचार देवै तदनन्तर सुवासित तेलसे अञ्जन करै ६२ कस्तूरी और चन्दनसे उबटनकरै सुगन्धसे वासित शुभ जलों से मन्त्रोंसे स्नान कराकर ६३ कपड़े और सुन्दर गहनों से विधिपूर्व्वक अलङ्कारकर मधुपर्क और सुवासित चन्दन देवै ६४ फिर सुगन्धित सुन्दर फूलोंको अच्छीभांति भक्तिसे चढ़ावै दशांग धूप और मनोहर अष्टांगदीप ६५ और खीर पुवोंसे मिली हुई अ-नेकप्रकारकी नैवेद्यदेवै फिर कपूर मिलेहुए पान भक्तिसे चढ़ावै ६६ और दीपोंसे आरतीकर फूलोंकी मालासे पूजे फिर नमस्कार और उत्तम स्तोत्रों से स्तुतिकर ६७ गरुड़जीके कोरे में सुलाकर मंगल

अर्घ्य निवेदन करै फिर पुण्यकारी नामों से कीर्तनकर पीछेसे होम करै ६८ और हरिजीकी शेष नैवेद्यसे अग्निमण्डलमें सहस्रशीर्षा और मंगलनाम श्रीसूक्तके प्रत्येक ऋचासे घीसे मिली हुई खीरसे भक्तिसंयुक्त कहेहुए मन्त्ररत्नसे वैदिक अग्निमें हवन करै ६९।७० एकसौ आठ वा अट्ठाइसबार यज्ञरूप महाविष्णुजी का ध्यानकर खीर होमे ७१ शुद्ध सुवर्णके सदृश, शंख, चक्र और गदाधारे, सब वेद वेदान्तके सांगोपांगयुक्त, प्रभु ७२ लक्ष्मी देवीसमेत बैठेहुए भगवान्को ध्यानकर होमकरै पीछेसे नामोंसे एक एक आहुति हवन करै ७३ फिर महाभागवतों में उत्तम मनुष्य नित्य भक्तों का उद्देश कर भूलीला विमलाआदिक शक्तियों को क्रमसे प्रथम ७४ तदनन्तर अनन्त विहगेन्द्रादिक देवता और तिसपीछे वासुदेव आदिक तथा शक्तिआदि देवता ७५ केशव आदिक मूर्ति तथा संकर्षण आदिक मत्स्य कूर्म्म आदिक तथा चक्रादिक हेतियां ७६ कुमुदादिक तथा चन्द्रादिक देवता इन्द्रादिक लोकपाल तथा धर्मादिक देवता ७७ क्रमसे तिसमें होमनेयोग्य और विशेषकर पूजने चाहिये यह वैकुण्ठ होम महाभागवतों में उत्तम मनुष्य ७८ नित्य पूजनविधि में समाहित होकर करै घरके पूजन घरके द्वारमें पंचयज्ञके विधान से ७९ विधिपूर्वक बलिदेकर पीछेसे आचमनकरै सुन्दर कृष्ण मृगछाला वा कुशके आसनमें बैठकर ८० मंत्रयोगमें आत्माके सुखभोगकेलिये करै फिर अच्छे प्रकार पद्मासनमें बैठकर भूतशुद्धि करै ८१ और इन्द्रियजित् होकर मन्त्रसे तीन प्राणायाम करै तदनंतर अत्युत्तम हृदयरूप कमलको उत्तर मुखकर ८२ विज्ञानरूप सूर्यसे हृदयमें तिसका विकासकरै और तिस कर्णिकामें अग्नि, सूर्य और चन्द्रमाके विम्बोंको क्रमसे करै ८३ फिर वैष्णवों में उत्तम मनुष्य तिस त्रयीमयमें त्रयको चिन्तना करै और तिनके ऊपर अनेक प्रकारके रत्नमयपीठको चिन्तना करै ८४ फिर तिसमें हृदयरूप कमलके मूलके अन्तमें वालसूर्यके समान दीप्तिवाला, अष्टैश्वर्यदल, कमल मंत्राक्षरमय बनावै ८५ और तिसमें देवीसमेत बैठेहुए, करोड़ चन्द्रमाके समान, चारभुजावाले, सुन्दर अङ्गयुक्त, शंख, चक्र,

गदाधारे ८६ कमलके पत्रके समान सुन्दर नेत्रवाले, सब लक्षणोंसे लक्षित्त, भृगुलता और कौस्तुभमणि छातीमें धारे, पीताम्बर धारण किये, प्रभु, ८७ विचित्र गहनोंसे युक्त, सुन्दर मण्डनोंसे मण्डित, सुंदर चन्दनसे लिप्त अंगवाले, सुन्दर फूलोंसे शोभित ८८ तुलसी के कोमलदल और वनमालासे भूषित, बाल करोड़सूर्य के समान दीप्तिवाले, देवी लक्ष्मीसमेत ८९ और सब लक्षणोंसेयुक्त लक्ष्मीजी की देहके आलिंगन करनेवाले, कल्याणरूप भगवान्‌को ध्यानकर समाहितमन और पवित्र होकर मंत्रको जपै ९० हज़ारबार वा सौ बार अथवा यथाशक्ति जपकर मनसे भक्तिसे पूजनकर रमै ९१ और तिस कालमें आयेहुए भगवान्‌के भक्तोंको भक्तिसे पूजनकर अन्न पानादिकों से तृप्तकर बिदाकरै ९२ फिर पितृ और देवताओंको पूजनकर विधिसे तर्पणकरै और अतिथि और नौकरोंको पूजनकर स्त्री पुरुष आपभी भोजनकरै ९३ यक्ष, राक्षस और भूतोंका पूजन सदैव न करै जो ब्राह्मण इनका मोहसे पूजन करताहै वह निश्चय चांडाल होताहै ९४ यक्ष, पिशाच और मदिरा और मांसके भोजन करने वाले देवताओंका भोजन मदिरापानके समान होताहै ९५ मनुष्यों को ब्रह्मराक्षस, वेताल, यक्ष और भूतोंका पूजन कुम्भीपाक महा-भयानक नरककी प्राप्तिका साधन है ९६ यक्ष और भूतादिकों के पूजनसे यज्ञ, दान, क्रियाआदिक करोड़ जन्मकी कीहुई पुण्यसब शीघ्रही नाश होजाती है ९७ स्त्री वा पुरुष यक्ष और भूतादिकों के पूजनसे करोड़हज़ार कल्प वा सौकरोड़ कल्प ९८ विष्ठामें कीड़ाहो-कर पितरोंसमेत डूबता है यक्ष, पिशाच और तामसी देवताओंके ९९ निवेदित अन्नको जो भोजन करताहै वह पीव और रक्तका भो-जन करनेवाला होताहै यक्ष, भूतसमूह तथा और क्रूरब्रह्मराक्ष-सोंका १०० उद्देशकर जो ब्राह्मण भोजन करताहै वह शीघ्रही चा-ण्डाल होजाताहै और जो स्त्री यक्ष, पिशाच, सर्प और राक्षसोंको पूजती है १०१ वह नीचेका मुखकर भयानक कालसूत्रनाम नरक में जाती है और पितरोंसमेत तिस घोरनरक में कल्पके अन्तपर्य-न्त वसकर १०२ मूत्र और विष्ठाका स्वादलेकर क्लेशसे सूचीमुख

नरकके कीड़ोंसे प्रलयपर्यन्त अंगभक्षण होकर १०३ पीछेसे भूमि में दशदिनों में सौसंख्या से उत्पन्न होतीहै तिससे यक्षआदिक देवताओं का पूजन छोड़देवे १०४ जहांपर वैदिकोंका भी स्वतन्त्र पूजन त्यागकरदेवे संसार में वन्दनीय, देव, नारायण, हरिजी को अर्चनकर १०५ देवजी के चारोंओर तिनके आवरणसंस्थान को पूजे और भगवान् के भोजन से बचीहुई वस्तुसे तिनको बलिदेवे १०६ फिर तिसी बचीहुई से वैष्णवमनुष्य होमकरै और भगवान् की निवेदनकीहुई हविको अच्छेप्रकार देवताओंको हवनकरे १०७ और तिसको पितरोंको भी देवे तो सब अनन्तफलको प्राप्त होजावे विद्वान् प्राणियोंको पीड़ादेना नरकके लियेहै १०८ हे पार्वती! जो कुछ नहीं दीहुई पराई द्रव्य मनुष्यों करके ग्रहण कीजाती है तिस को चोरी जानिये यह चोरी नरकही का कारण है १०९ लहसुन, मदिरापानआदिक, मूली, गाजर, तिलकी पीठी, सहँजन, बेल, कोशातकी ११० अलाबु, सफ़ेद बैंगन, बीजाली, कवच इसी प्रकार और भी शास्त्रकी देखीहुई नहीं खानेयोग्य वस्तुहैं तिनको मनुष्य १११ खाकर विचित्र अकल्याणकारी नरकको प्राप्त होताहै अवैष्णवों और पतितोंका जो अन्न ११२ तथा विष्णुजी को जो नहीं अर्पण कियागया ये सब अन्न कुत्तेके मांसके समान होते हैं यक्ष राक्षस और भूतों का अन्न, सुरामदिरा और गाजर ११३ को जो मनुष्य खाताहै वह पीब और रक्तके भोजनवाले नरक को जाता है मनुष्य इनके संस्थापन, छूने और साथ बसने से ११४ विष्ठा, मूत्र और कीड़ों के भोजनवाले नरकको जाते हैं और पतित और पाखण्डियों के संसर्ग से भी उसी नरक को प्राप्तहोते हैं ११५ सब यज्ञ के भोक्ता पुराणपुरुषोत्तमजीको जानकर सब नित्य नैमित्तिक क्रिया करै ११६ हे देवि! स्वर्गलोगकी इच्छा करनेवालों को यक्ष, राक्षस, भूत, कूष्माण्डों के समूह, भैरव सदा नहीं पूजने योग्य हैं ११७ ब्राह्मण यक्ष, राक्षस और भूतों के पूजन को छोड़देवे इनके पूजन करने से तीनसौ करोड़ कल्प पिशाच होताहै ११८ तिससे राक्षस और भूतों का पूजन निषिद्धहै यक्ष और भूतसमूहों के पू-

जनसे करोड़ हज़ार कल्प वा सौकरोड़ कल्प रौरव नरकमें जाताहै शंख चक्र आदिक और भगवान्‌के अत्यन्त प्यारे चिह्नों से ११९। १२० रहित सब धर्मों से च्युतहोकर नरक को जाताहै नहीं भोग करनेवाली स्त्रीसे भोग करने,जीव मारने, पराई द्रव्यके चुराने१२१ और नहीं खाने योग्य वस्तुओं के खानेसे शीघ्रही नरकको प्राप्तहोता है जो विवाहीहुई स्त्रीको छोड़कर और स्त्री से भोग करताहै १२२ यह अगम्यागमन शीघ्रही नरक देनेवालाहै पतित, पाखण्डी और कुकर्म में स्थित होनेवालों के संसर्गसे मनुष्य नरक को जाताहै संसर्गियों के संसर्ग और तिनके संसर्ग को भी छोड़देवे १२३।१२४ वैष्णवमनुष्य पापसंयुक्त एककुल को भी त्याग देवे एकांती महापापों से युक्त गांव को छोड़देवे १२५ तैसेही परमएकान्ती तिस देशको भी त्यागदेवे अपने कर्म ज्ञान और भक्ति आदिका साधन वैष्णव कहाताहै १२६ हरिजीकी आज्ञाके अनुरूपसे जो कर्म और ज्ञानआदिक करता है वह वासुदेवजी में परायण एकांती ब्राह्मण होताहै १२७ वैष्णव मनुष्य पापबुद्धिसे नहीं करने योग्यको अच्छेप्रकार छोड़देवे एकान्ती शास्त्र और मनसे भी दूषणोंको त्याग देवे १२८ तैसेही परमएकान्ती त्यागने के योग्य की बुद्धिसे छोड़ देवे नित्य, नैमित्तिक और काम्य ये तीनप्रकारकी कृत्य हैं १२९ तैसेही इसलोकमें मुनियों ने ज्ञान कहाहै करने और नहीं करने योग्यका विवेक परलोक का चिन्तन १३० तिसके प्राप्ति का साधन और विष्णुजी के स्वरूपका ज्ञानहै भक्तियुक्त भक्तहोताहै यह भक्ति नवप्रकार की कहीगई है १३१ सुदर्शनचक्र और ऊर्ध्वपुण्ड्र आदिक भगवान्‌के चिह्नों से शुभ चिह्न, अच्छे गुरुजी के मंत्रकापाठ, विधिसे भगवान् का पूजन १३२ स्मरण, कीर्त्तन और विष्णु परमात्माकीसेवा, तिनके आगे प्रणाम, भगवान्‌के भक्तोंका पूजन१३३ प्रसाद, तीर्थकी सेवा यह नवप्रकारकी भक्ति कही है जिससे वैष्णव देव हरिजी की शरण में प्राप्त होताहै १३४ सो प्रपत्ति जाननेयोग्य है यह तीनप्रकारकी कहीहुई है तामसी, राजसी और सात्त्विकी ये प्रपत्तिके तीनप्रकार हैं १३५ सोई सब देहधारियोंको सामान्य

तीनप्रकार की सिद्धिकीहुई है हे देवि! वैष्णवमनुष्य इस त्यागने योग्य चतुष्टयको त्यागकर १३६ उपायभूत, ब्रह्म, वैष्णवको अवलम्बनकरै महाभागवतोंमें उत्तममनुष्य भगवान्‌की प्रीतिके लिये उपायभावसे कर्मज्ञानआदिक को छोड़कर करै तीनोंकाल भक्तिसे पुरुषोत्तम विष्णुजीको पूजनकरै १३७।१३८ हे शुभे! नैमित्तिक में विधिसे विशेषकर पूजनकरै कार्तिकमास में प्रतिदिन चमेली के फूलों से पूजनकरै १३९ और नियतआत्मा, दृढ़व्रत करनेवाला मनुष्य अखण्डदीपदेवे और ब्राह्मणों को भोजनकरावे तो अन्तसमय में हरिसायुज्यको प्राप्त होवे १४० धनकेसूर्यों में प्रातःकाल निरन्तर एकमहीने भगवान् को कमलसफ़ेद और श्यामकरवीर के फूलोंसे पूजे १४१ धूप, दीप और यथाशक्ति नैवेद्यलगावे और समाप्तहोने में महाभागवतोंमें उत्तमब्राह्मणोंको भोजनकरावे १४२ तो निस्सन्देह हज़ार अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोवे फिर माघमहीने में सूर्यके उदयहोनेमें नदीमें स्नानकर विशेषकर १४३ माधवजीको कमल के फूलोंसे पूजनकरै और घीसहित सुन्दर खीरको भक्तिसे निवेदनकरै १४४ स्नानकर निरन्तर एकमहीने विष्णुजीको पूजन करै नित्यही शक्कर और जलयुक्त उद्यान निवेदनकरै १४५ फिर महीनेके अन्तमें भक्तिसे वैष्णवोंकोपूजे तैसेही चैत्रकेमहीनेमें नित्यही वकुल और चम्पकके फूलोंसे १४६ भगवान् को पूजनकर गुड़ अन्न निवेदनकरै और समाहित होकर महीने के अन्त में वैष्णव ब्राह्मणों को भोजनकरावे १४७ तो प्रतिदिन हज़ारवर्ष की पूजाको प्राप्तहोवे वैशाखमहीने में वड़े कमलके फूलोंसे देवजी को पूजनकरै १४८ हे देवि! विधिसे पूजनकर फलसंयुक्त दही, अन्न, गुड़ और जल भक्तिसे तिनमें निवेदनकरै १४९ तो लक्ष्मीसंयुक्त जगन्नाथजी प्रसन्न होते हैं ज्येष्ठमहीने में सफेदकमल, पाटल, कोकावेलि और कमलोंसे १५० भगवान् को पूजनकर आंबके फलों सेयुक्त अन्नको भक्तिसे निवेदनकरै तो करोड़गौवोंका देनेवाला होता है १५१ तदनन्तर वैष्णवोंको भोजनकरावे तो सब अनन्तफलको प्राप्त होवे आषाढ़महीने में देवदेवेश, लक्ष्मीजी के स्वामी, अच्युत

भगवान्‌को १५२ नित्यही श्रीकेफूलोंसे पूजनकर खीर अन्नको निवे-
दनकरै फिर महीने के अंतमें महाभागवतों में उत्तमब्राह्मणोंको भोजन
करावै तो १५३ निस्संदेह साठहज़ार वर्षकी पूजाको प्राप्तहोवेश्रावण
महीने में विष्णुजीको पुन्नाग और केतकी के दलों से १५४ भक्तिसे
पूजन करै तो फिर जन्म नहीं होवे शक्कर और घी से मिलेहुए पुवोंको
भक्तिसे देवे १५५ और ब्राह्मणोंको भोजन करावै तो सबअनंतफल
कोप्राप्तहोवे भादों के महीने में भी भगवान्‌को कुन्द और कुरवक के
फूलों से पूजनकर १५६ गुड़ और दूध मिलेहुए अन्नको भक्ति से
निवेदन करै तो प्रतिदिन करोड़ गौवों के फलको प्राप्त होवे १५७
कुंवार के महीने में नीलकमलों से मधुसूदनजी को भक्तिसे पूजन
कर तिनमें पुवोंसंयुक्त दूधको निवेदनकरै १५८ तो करोड़ हज़ार
वा सौ करोड़ कल्प आनन्दयुक्त भैयाचारोंसमेत वैष्णवलोक को
प्राप्तहोवे १५९ हे देवि! कार्तिकके महीने में कोमल तुलसी के दलों
से भक्ति से भगवान्‌को पूजनकरै तो भगवान् की सायुज्यको प्राप्त
होवे १६० दूध, घी, शक्करसे युक्त अन्न तथा खीर और पुवोंको क्रमसे
भक्तिसे अच्छेप्रकार निवेदन करै १६१ अमावास्या, शनैश्चर, श्रवण
नक्षत्र, सूर्य्यकी संक्रान्ति, व्यतीपात, चन्द्रमा और सूर्यके ग्रहणमें
१६२ यथाशक्ति विष्णुजी को पूजनकरै गुरु के उत्क्रांत दिन तथा
हरिजी के जन्मके नक्षत्रों में श्रेष्ठ ब्राह्मण शक्तिसे वैष्णवी यज्ञ करै
और प्रत्येक ऋचामें वेदके संमित फूलों की अंजली देवै १६३।१६४
चरु वा खीरसे पारणकरै फिर शक्ति से वैष्णव ब्राह्मणों को भोजन
कराकर दक्षिणादेवै १६५ तो करोड़ कुलको उद्धारकर वैष्णवपद
को प्राप्तहोवे जो सब वेदों से असमर्थहो तो उत्तम भागवत को पू-
जन करने के लिये १६६ निरन्तर सातरात्र वैष्णव अनुवाकों से
हज़ार फूलों की अंजली और प्रतिदिन होम करना चाहिये १६७
वा पण्डित मनुष्य भगवान्‌की प्रीतिके लिये प्रत्येक श्लोकमें पूजन
करै अथवा निरन्तर सातरात्र मन्त्ररत्नको १६८ एकहज़ार आठ
बार हविसे हवनकरै फिर विद्वान् मनुष्य विशेषकर महाभागवतों
में उत्तमोंको पूजनकरै १६९ फिर द्रव्यके अनुसार यज्ञके अन्तमें

ब्राह्मण वैष्णव अनुवाकोंसे स्नानकरै १७० यहांपर उत्तम तथा शक्ति विधिपूर्वक स्नानकर शुभ,सुन्दर बर्तनमें भक्तिसे को धोकर १७१ चन्दन, फूलआदिक, कपड़े और गहने क, पान और फलों से यथाशक्ति पूजनकर १७२ अन्न आदिकों से भोजन कराकर वारंवार प्रणामकर सीमाके पहुंचाकर नमस्कारकर बिदाकरै १७३ फिर भक्तिसे प्रणामके पीछे धीरे धीरे लौटकर घरमें प्रवेशकर प्रयतआत्मवान् होकर देवोंके स्वामी भगवान् को पूजनकरै १७४ इसप्रकार अतन्द्रित मनुष्य जबतकजीवे तबतक विष्णुजी को पूजे और तिनके भक्तोंको सदैव विशेषकर पूजनकरै १७५ सबके आराधनोंसे विष्णुजीका आराधन श्रेष्ठहै और विष्णुजी के भक्तोंका पूजन उससे भी श्रेष्ठहै १७६ गोविन्दजी को पूजनकर उनके भक्तोंको फिर न पूजै तो वह भागवत नहीं जानना चाहिये केवल दांभिकही है १७७ तिससे पुरुष यत्न से वैष्णवोंका सदैव पूजनकरै महाभागवतों के पूजनसे सब दुःखसमूहों से तरजाता है १७८ हे देवि! इसप्रकार मैंने विष्णुजी का श्रेष्ठआराधन, नित्यनैमित्तिक और श्रीभगवान् के भक्तों का पूजन कहा १७९ और तिनका याथात्म्यपौरुष फलसाधन तिनका अवसथ देह कर्म्मादिक वरोंको भी तुमसे कहा अब और क्या सुनने की इच्छा है १८० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्रयांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादेविष्णुपूजाविधानवैष्णवाचारकथनंनामत्रिपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५३ ॥

दोसौचौवनका अध्याय ॥

रामचन्द्रजी के एकसौआठ नामों का वर्णन ॥

वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! इस प्रकार जब शूलपाणि महादेवजी ने पार्व्वतीजी से कहा तो पार्वतीजी महात्मा महादेवजी को प्रणामकर हाथ जोड़कर बोलीं १ कि हे नाथ! आपने उत्तम वैष्णव-

धर्मको अच्छीभांति कहा और विष्णु परमात्माजी के गुप्तसे अत्यन्त गुप्त स्वरूपको भी कहा २ हे सब देवोंसे नमस्कार कियेगये! हे देवों के स्वामी! मैं धन्य और कृतकृत्यहूं आपके प्रसादसे सनातन परमेश्वरजी का पूजन करूंगी ३ वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! तदनन्तर पार्वतीजी के वचन सुनकर महादेवजी प्रसन्न अंतरात्मा से पार्व्वतीजी को आलिंगनकर बोले ४ कि हे महादेवि! हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्व्वतीजी! बहुत अच्छाहै तुम हृषीकेश, लक्ष्मीजी के स्वामी, अच्युत भगवान्को पूजो ५ हे भद्रे! हे पवित्र अंगवाली! वैष्णवी तुम समान स्त्रीसे मैं कृतकृत्यहूं तुम्हारे गुरु बुद्धिमान् वामदेवसे ६ आज्ञा पाकर तुम ईश, पुराण, पुरुषोत्तमजीको पूजनकरो गुरुजी के उपदेश कियेहुए मार्गसे केशवजीको पूजनकर सब वाञ्छित को प्राप्तहोगी और तरहसे न प्राप्तहोगी ७ वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! इसप्रकार कहीहुई पार्वतीजी तिसीसमयमें प्रसन्नहो विष्णुजी के पूजनकी लालसासमेत होकर सहसासे वामदेवजी के समीप जातीभई ८ और तिन गुरुजीके पास जाकर प्रणाम और पूजनकर नम्रहोकर हाथ जोड़कर श्रेष्ठ मुनिजी से बोलीं ९ कि हे भगवन्! हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! आपके प्रसादसे अच्छे प्रकार हरिजीका आराधन करूंगी आप आज्ञादेनेके योग्यहैं १० वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! तिस देवी के इसप्रकार कहनेसे वामदेव महामुनि गुरुजी तिनको विधिसे श्रेष्ठमंत्र देतेभये ११ और मुनिसत्तमजी विष्णुजी के सहस्रनामों को भी कहकर पूजाकी विधि को निवेदन करतेभये और परमप्रीति से व्रतयुक्त पार्वतीजी से बोले १२ कि हे पार्वती! प्रातःकाल नित्यही हृषीकेशजी को पूजनकर तिस पीछे सहस्रनाम का पाठकरो १३ वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! तिन प्रसन्न अन्तरात्मा गुरुजी के इसप्रकार कहनेपर पार्व्वतीजी गुरुजी की पूजा और नमस्कारकर फिर अपने स्थानको आतीभई १४ तिन वामदेव गुरुसे शिक्षितहुई पार्वतीजी से कुछदिनके पीछे कैलासके सुन्दर कँगूड़ेपर वृषभध्वज शंकरजी विष्णुजीकी आराधनाकर बैठकर बोले १५। १६ कि हे भुवनों में वन्दित पार्वती! मेरेसाथ भोजन

करनेके लिये आइये वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! तब पार्वती देवी महादेवजीसे बोलीं कि हे देव! हे प्रभुजी! आप भोजनकीजिये मैं सहस्रनाम जपकर भोजन करूंगी तब हँसकर महादेवजी पार्वती से बोले १७। १८ कि हे ईश्वरि! पार्वती! तुम धन्य, कृतकृत्य और विष्णुजीकी भक्तहो भागधेयके विना वैष्णवीभक्ति दुर्लभहै १९ हे रमे! हे रामे! हे मनोरमे! हे वरानने! राम राम राम यह सहस्रनाम के तुल्य रामजीकानाम है २० हे पार्वती! रकारआदिक नामों को सुनकर रामनामही की शंकासे मेरामन प्रसन्नता को प्राप्त होताहै २१ हे महादेवी! राम यह कहकर इससमयमें मेरेसाथ भोजनकरो श्रीवसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! तदनन्तर पार्व्वतीजी राम यह नाम कहकर साथ भोजनकर २२ शम्भुजी के साथ स्थित होती भईं और प्रसन्नमन होकर शंकरदेवजीसे पूछतीभईं २३ कि हे देवों के स्वामी! आपने रामकानाम सहस्रनाम के तुल्य कहा है अब तिन रावण के वैरी रामजी के और नामोंको मुझसे कहिये क्योंकि रामजी में मेरी भक्ति उत्पन्न हुई है २४ तब महादेवजी बोले कि हे पार्व्वती! रामचन्द्रजी के नामों को कहता हूं सुनिये लौकिक और वैदिक जो कुछ शब्दहैं २५ उनमें रामचन्द्रजी के सहस्रनाम अधिक हैं और तिनमें एकसौआठनाम मुख्य हैं २६ विष्णुजी का एक एकनाम सब वेदों से अधिक कहाहै तैसेही हजारनाम रामजी के नामके समान हैं २७ हे प्रिये! जो सब वेदोंके मन्त्र जपनेसे फल होता है तिसका करोड़गुणा फल रामजी के नामसे मिलताहै २८ हे शुभदर्शने! हे प्रिये! ऋषियों करके गायेगये रामजी के मुख्य नामोंको कहताहूं सुनिये २९ श्रीराम, रामचन्द्र, रामभद्र, शाश्वत, राजीवलोचन, राजेन्द्र, रघुपुंगव ३० जानकीवल्लभ, जैत्र, जितामित्र, जनार्दन, विश्वामित्रप्रिय, दांत, शरण्यत्राणतत्पर ३१ वालिप्रमथन, वाग्मी, सत्यवाक्, सत्यविक्रम, सत्यव्रत, व्रतफल, सदाहनुमदाश्रय ३२ कौशलेय, खरध्वंसी, विराधवधपण्डित, विभीषणपरित्राता, दशग्रीवशिरोहर ३३ सप्ततालप्रभेत्ता, हरकोदण्डखण्डन, जामदग्निमहादर्प्पदलन, ताडकान्तकृत ३४ वेदान्तपार,

वेदात्मा, भवबन्धैकभेषज, दूषणत्रिशिरोरि, त्रिमूर्त्ति, त्रिगुण, त्रयी ३५ त्रिविक्रम, त्रिलोकात्मा, पुण्यचारित्रकीर्तन, त्रिलोकरक्षक, धन्वी, दण्डकारण्यवासकृत् ३६ अहल्यापावन, पितृभक्त, वरप्रद, जितेन्द्रिय, जितक्रोध, जितलोभ, जगद्गुरु ३७ ऋक्षवानरसंघाती, चित्रकूटसमाश्रय, जयन्तत्राणवरद, सुमित्रापुत्रसेवित ३८ सर्व्वदेवाधिदेव, मृतवानरजीवन, मायामारीचहंता, महाभाग, महाभुज ३९ सर्वदेवस्तुत, सौम्य, ब्रह्मण्य, मुनिसत्तम, महायोगी, महोदार, सुग्रीवस्थिरराज्यद ४० सर्वपुण्याधिकफल, सर्वाघनाशन, आदिपुरुष, महापुरुष, परमपुरुष ४१ पुण्योदय, महासार, पुराणपुरुषोत्तम, स्मितवक्त्र, मितभाषी, पूर्वभाषी, राघव ४२ अनन्तगुणगम्भीर, धीर, दान्तगुणोत्तर, मायामानुषचारित्र, महादेवाधिपूजित ४३ सेतुकृत्, जितवारीश, सर्वतीर्थमय, हरि, श्यामांग, सुन्दर, शूर, पीतवासा, धनुर्द्धर ४४ सर्वयज्ञाधिप, यज्ञ, जरामरणवर्जित, शिवलिंगप्रतिष्ठाता, सर्वाघगुणवर्जित ४५ परमात्मा, परब्रह्म, सच्चिदानन्दविग्रह, परंज्योति, परंधाम, पराकाश, परात्पर ४६ परेश, पारग, पार, सर्वभूतात्मक, शिव ये श्रीरामचन्द्रजी के एकसौ आठ नामहुए ४७ हे देवि! ये गुप्तसे अत्यन्त गुप्तहैं तुम्हारे स्नेहसे मैंने प्रकाश कियाहै जो भक्तियुक्त चित्तसे पढ़ता वा सुनता है ४८ वह सैकड़ों करोड़ कल्पोंसे उत्पन्न सब पापों से छूटजाताहै जल स्थल भावको प्राप्त होजातेहैं शत्रु मित्र होजातेहैं ४९ राजा दासभावको प्राप्त होजाते हैं अग्नि सौम्यता को प्राप्त होजाती है प्राणी प्रसन्न होजातेहैं चंचललक्ष्मी स्थिरभावको प्राप्त होजातीहै ५० ग्रह दया को प्राप्त होजाते हैं उपद्रव शांतिको प्राप्त होतेहैं हे पार्वती! भक्तिभावसे पढ़नेवाले मनुष्य को ये सबफल होतेहैं ५१ जो श्रेष्ठभक्ति से पढ़ताहै तिसके वश तीनोंलोक होजाते हैं और जिस जिस कामनाको करताहै तिस तिसको कीर्तनसे प्राप्तहोताहै ५२ और दश पहिले और दश पीछेकी पीढ़ियों समेत करोड़हज़ार वा सौकरोड़ कल्पतक नित्यही वैकुण्ठमें आनन्द करता है ५३ जे दूर्वादल के समान श्यामवर्ण, कमलनयन, पीताम्बर धारेहुए रामजीकी सुंदर

नामों से स्तुति करतेहैं वे संसारीमनुष्य नहीं होते हैं५४राम,रामभद्र, रामचन्द्र, वेधा, रघुनाथ, नाथ और सीताजीके पतिके नमस्कार हैं ५५ हे महादेवि! इसमंत्रको दिन रात जपकर सबपापों से छूट कर विष्णुसायुज्य को प्राप्त होताहै ५६ हे सुन्दर भौंहवाली! पार्वती! यह शुभनाम वाला, वेदसंमित, रामचन्द्रजी का माहात्म्य मैंने तुम्हारी प्रीतिके लिये तुमसेकहा ५७ वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! महादेवजी से कहेहुए परमात्माके माहात्म्य को सुनकर आनन्दके आंशुओं के जलसे युक्तहोकर पार्वतीजी अतुलआनन्द को प्राप्त होतीभई ५८ और देवोंके स्वामी, वृषभध्वजस्वामी के प्रणामकर बोलीं कि परमात्मा रामचन्द्रजी के अतुलमाहात्म्य को सुनकर सैकड़ोंकल्पोंमेंभी मेरेकानोंको तृप्ति न होगी ५९ हे पापरहित शिवजी! आपने सबकहाहै इससे मैं धन्य और कृतकृत्यहूं आपके प्रसादसे हरिजीकी भक्ति मेरेजन्म जन्ममेंहोवे ६० वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! इसप्रकार भागवतों में उत्तमपार्वती अपने पतिसे कहकर (रामायरामभद्राय रामचन्द्रायवेधसे॥ रघुनाथाय नाथाय सीतायाःपतयेनमः)राम, रामभद्र, रामचन्द्र, वेधा, रघुनाथ, नाथ और सीताजीके पतिके नमस्कार हैं ६१ इसमंत्र को सब अवस्थाओं में पार्वतीजी जपकर कैलासपर्वत में पतिसमेत सुखसे वसतीभई ६२ हे राजन् दिलीप! यह गुप्तसे अत्यन्तगुप्त चरित्र तुमसेकहा महादेवजी के कहेहुए तामसशास्त्र हैं ६३ तिनमेंसे इसएक को वृषभध्वज, प्रभु महादेवजी लोकोंके मोहनेकेलिये पार्वतीजी से एकान्तमें कहतेभये ६४ और तत्परहोकर महादेवजी देवीजी की प्रीतिकेलिये मन्त्रके यथार्थ, अर्थ,गुप्त, सारको भी कहतेभये ६५ जो भक्तियुक्त चित्तसे इस अद्भुतमहादेव और पार्वतीजी के संवादको पढ़ता वा सुनताहै ६६ वह सबसे वन्दनीय, सब जाननेवाला, महाभागवत और सब धर्मोंसे छूटकर परमपद को प्राप्त होताहै६७ हे महाबली राजाओं में श्रेष्ठ! आपसंसारमें निश्चय धन्यहैं आपकेवंशमें हरि,श्रीमान्, पुराण, पुरुषोत्तम ६८ दशरथजी के पुत्र होकर सबलोकों के कल्याणकेलिये उत्पन्नहोंगे तिससे इक्ष्वाकुवंशी देवताओंको भी पूज्य

हैं ६९ जिनके वंशमें कमललोचन रामचन्द्रजी उत्पन्नहोंगे ७० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेउमामहेश्वरसंवादे रामचन्द्राष्टोत्तरशतनामकथनंनामचतुःपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः२५४॥

दोसौपचपनका अध्याय ॥

भृगुजीका ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजीकी परीक्षाकरना ॥

दिलीपजी बोले कि हे ब्रह्मन् वसिष्ठजी ! आपने सम्पूर्णता से सबधर्म, पर जीवका सामान्य विशिष्टस्वरूप १ स्वर्ग, मोक्ष और तिन का साधन कहा हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ! हे सदैवके गुरुजी ! आपके प्रसादसे मैं धन्यहूं २ अब कुतूहलसे एक और आपसे पूंछताहूं वात्सल्यके गौरवसे यथातथ्य कहिये ३ महाभागवतोंमें श्रेष्ठ, त्रिपुरासुर के नाश करनेवाले महादेवजी स्त्रीसमेत कैसे निन्दितरूपको प्राप्त हुएहैं ४ महात्माके योनिलिंग स्वरूपकैसे हुआहै पांचमुख चारभुजायुक्त शूलपाणि त्रिलोचन महादेवजी ५ कैसे विगर्हितरूपको प्राप्त हुएहैं हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! हे मित्रावरुणजी के पुत्र वसिष्ठजी ! इस सबको मुझसे कहिये ६ तब वसिष्ठजी बोले कि हे राजन् दिलीप ! जो मुझसे गौरवसे पूंछतेहो तिसको कहताहूं सुनिये पुरुषोंके विशुद्धहृदयमें कल्याण में बुद्धि उत्पन्न होती है ७ स्वायंभुवमनु पूर्वसमयमें मुनियोंसमेत उत्तम मन्दरपर्वत में अत्युत्तम बड़ी यज्ञ करने के लिये जातेभये ८ तहांपर व्रतयुक्त, अनेक शास्त्रोंके जाननेवाले, श्रेष्ठ, बालसूर्य और अग्निकी दीप्तिके समान, सब वेद जाननेवाले, ब्राह्मण, सबधर्म में परायण, पापरहित मुनिलोग बड़ीयज्ञके वर्तमान होतेही आतेभये ९। १० और परस्पर देवता तत्त्वके ढूंढ़नेके लिये बोलतेभये कि वेदके जाननेवाले ब्राह्मणों में कौनश्रेष्ठ देवता पूज्यहै ११ ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी किसकी स्तुति करते हैं मनुष्यों को मुक्ति देनेवाला कौनहै किसके चरणों का जल और भोजन से बचीहुई पवित्र जूंठन सेवने योग्यहै १२ कौन नाशरहित, परमधाम, परमात्मा, सनातनहै किसके प्रसाद तीर्थ पितरोंके तृप्ति देनेवाले होते हैं १३ तिन बैठेहुए मुनियोंका बड़ा वादहोनाभया उनमेंसे कोई

महर्षिरुद्रजी को कहतेभये १४ और कोई मुनिश्रेष्ठ ब्रह्माजी को पूज्य कहतेभये और कोई उत्तममुनि आत्माओं को सूर्यही पूज्यकहतेभये १५ और ब्राह्मण यह कहतेभये कि जो यहसबमें प्राप्त, श्रीमान्, श्रीपति, पुरुषोत्तम, नाशरहित, कमलनयन, वासुदेव, परात्पर, आदि और नाशरहित, विष्णुहै सोई परमेश्वर देवताओं में श्रेष्ठहै १६। १७ तिनके विवादकरने में स्वायम्भुवमनु बोले कि जो यह शुद्धसत्वमय, कल्याणगुणोंसेयुक्त, प्रभु, कमलनयन, श्रीमान्, श्रीपति, पुरुषोत्तम और प्रभुहै सोई अकेलाही वेदके जाननेवाले विद्वानोंको पूज्यहै १८। १९ और रजोगुण और तमोगुणसे मिलेहुए देव ब्राह्मणों को नहीं पूज्यहैं ये स्वायम्भुवमनुके वचन सुनकर सब महर्षि भृगु तपस्वी ब्राह्मणके हाथ जोड़कर उनसे बोले २० कि हे सुन्दर व्रत करनेवाले! हमारे संशय काटनेके लिये आपही समर्थ हैं इससे ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी के पास जाइये २१ और तिनके पास जाकर उनके तैसे देहों को देखिये हे मुनिजी! तिन में शुद्ध सत्वगुण जिसमें विद्यमानहो २२ सोई ब्राह्मणों को पूज्यहै और देव कभी नहीं पूज्यहै शुद्धसत्वमय साक्षात् ब्रह्मण्यहोगा २३ संसारमें ब्राह्मणोंको तीर्थ प्रसादयुक्त होगा देवता और पितरों को तिनकी जूंठन पवित्रहोगी २४ तिससे हे मुनिश्रेष्ठ! हे प्रभुजी! देवताओं के स्थानोंको जाकर शीघ्रही सब संसारका कल्याण कीजिये २५ इसप्रकार मुनियोंके कहनेपर मुनिश्रेष्ठ शीघ्रही कैलासको गये जहांपर वामदेवजी के संग महादेवजी रहते हैं २६ वहांपर महात्मा महादेवजी के घरके द्वारमें प्राप्तहोकर शूल हाथमें लियेहुए महाभयानकनन्दीको देखकर भृगुजी बोले २७ कि मैं भृगुब्राह्मण देवताओं में उत्तम महादेवजी के दर्शन करनेके लिये प्राप्तहुआ हूं शीघ्रही मुझ को महात्मा महादेवजीसे निवेदन कीजिये २८ भृगुजी के ये वचन सुनकर सब गणों के स्वामी नन्दीजी अमितपराक्रमी महर्षि भृगुजी से कठोर वचन बोले २९ कि हे मुनियों में श्रेष्ठ! देवीजी से महादेवजी क्रीड़ा कररहे हैं तिन प्रभुजी के पास नहीं जासकोगे जो जीवनेकी इच्छाहो तो लौटजाइये ३० इस प्रकार अनादरको प्राप्त

होकर भी महातपस्वी भृगुजी महादेवजी के घरके द्वारमें बहुतदिन तक स्थित रहतेभये ३१ फिर यह शाप देतेभये कि स्त्री के संगम में मत्त यह जिससे हमको अनादर कियाहै तिससे योनिलिंग का स्वरूप तिसके होजावे ३२ तमोगुणको प्राप्तहोकर मुझ ब्राह्मणको इन्हों ने अनादर कियाहै इससे ब्रह्मण्यभावको न प्राप्तहोगा और ब्राह्मणों के पूजाके योग्य नहीं होगा ३३ तिससे तिनमें दीहुई अन्न; जल, फूल और खीर यह सव इनकी निस्संदेह निर्माल्य होजावेगी ३४ इस प्रकार महातेजस्वी भृगुजी संसारमें पूजित महादेवजी को शापदेकर अत्यन्त उग्र,शूलधारण करनेवाले नन्दीगणसे बोले ३५ कि जे संसारमें महादेवजीके भक्त भस्म लिंग और अस्थिके धारण करनेवाले होंगे वे पाखण्डभावको प्राप्त होकर वेदसे वाह्य होजावेंगे ३६ इस प्रकार भृगुमुनि त्रिपुरासुरके नाश करनेवाले महादेवजीको शापदेकर सव लोकोंसे नमस्कार कियेहुए ब्रह्मलोकको जातेभये३७ तहांपर महाबुद्धिमान् भृगुजी देवताओंसमेत वैठेहुए परमेष्ठी, देव ब्रह्माजीको वैठेहुए देखकर हाथजोड़कर प्रणाम करतेभये ३८ और प्रणाम करनेके पीछे महातपस्वी भृगुजी चुपचाप तिनके आगे वैठ जातेभये तिन मुनिशार्दूल, प्राप्तहुए महर्षिजीको देखकर रजोगुणसे युक्त ब्रह्माजी उनका पूजन न करतेभये और प्रत्युत्थान और प्रियव-चनभी न बोलतेभये ३९।४० बड़े ऐश्वर्यसे तहांही ब्रह्माजीस्थित होगये तव महर्षिजी ब्रह्माजीको रजोगुणसे युक्त देखकर ४१ उन से बोले कि महातेजस्वी, लोकके पितामह, वड़े रजसे युक्त होकर जिससे आपने मेरा अनादर किया है ४२ तिससे सव लोकों की अपूज्यताको आप प्राप्तहोवें इसप्रकार लोकमें पूजित महात्मा ब्र-ह्माजीको शाप देकर ४३ सहसासे भृगु ब्राह्मण भगवान्के मन्दिर को जातेभये और क्षीरसागरके उत्तर किनारे वैष्णवलोकमें प्रवेश कर ४४ वहांपर स्थितहुए महाभागोंसे यथोचित पूजितहुए और रोंकेभी न गये तव तो ब्राह्मण भगवान्के मन्दिरमें प्रवेश करगये ४५ वहांपर प्रवेश होकर निर्म्मल, सूर्यके सदृश विमानमें सर्प्पकी शय्यामें सोतेहुए भगवान्को देखतेभये ४६ कि जिनके दोनों च-

रणोंको लक्ष्मीजी अपने हाथरूपी कमलों से चाप रही हैं तिनको देखकर मुनिशार्दूल भृगुजी क्रोधसंयुक्तहोकर ४७ विष्णुजीकी सुन्दर छातीमें बाईं अपनी लात मारतेभये तब भगवान् शीघ्रही उठकर आनन्दसे यह कहतेभये किमैं धन्यहूं ४८ और प्रसन्नहोकर तिनके चरणोंको दाबनेलगे धीरे धीरेसे तिनके चरणों को दाबकर मीठे वचन बोले ४९ कि हे विप्रर्षिजी! इससमयमें मैं धन्य और सदैव कृतकृत्यहूं आपके चरणके स्पर्शनसे मेरी देहमें मंगल होंगे ५० सब सम्पत्ति के प्राप्तिकी हेतु, उठीहुई आपत्तियों के समूहों के लिये अग्निरूप, अपार संसाररूपी समुद्रकी सेतु, ब्राह्मणके चरण की धूलि मुझको पवित्र करै ५१ ब्राह्मणके चरणकी धूलि जिसकी देहमें सदैव स्थित रहती है तिसके गंगादिक सबतीर्थ निस्सन्देह स्थित होते हैं ५२ ऐसा कहकर लक्ष्मीजी समेत जनार्दनजी सहसा से उठकर भक्तिसे चन्दन और सुन्दर माला आदिकोंसे पूजनकरते भये ५३ तिन दयानिधिजी को देखकर महातपस्वी मुनिशार्दूल भृगुजी आनन्दके आँशुओं से पूर्णनेत्रहोकर आसन मुख्यसे उठकर तिनके प्रणामकर हाथजोड़कर आनन्दसे बोले ५४ कि हरिजी आपकारूप, शान्ति, ज्ञान, दया, निर्म्मल क्षमा, सत्वगुण ५५ तैसे ही गुणरूपी समुद्रका नैसर्गिक शुभ सत्व सब देवताओं में और किसी मेंभी नहीं विद्यमानहै ५६ ब्रह्मण्य, शरणागतकी रक्षाकरने वाले ब्राह्मणोंके स्वामी आपही पुरुषोत्तमजी हैं और कोई देवता पूज्य नहींहै आपही पूज्यहैं ५७ हे पुरुषोत्तमजी! जे आपके विना और देवताओंको पूजते हैं वे पाखण्डभावको प्राप्त होकर सब संसारमें निन्दित होते हैं ५८ वेदके जाननेवाले ब्राह्मणोंको आपही जनार्दनजी पूज्यहैं देवताओं में और कोई देवता कभी पूज्य नहीं है ५९ रजोगुणसेयुक्त ब्रह्मा और तमोगुणसेयुक्त महादेवआदिक देवता नहीं पूजने योग्य हैं शुद्धसत्वगुणयुक्त आपही ब्राह्मणों के पूजनीयहैं ६० आपके चरणका जल पितृ,देवता और सब ब्राह्मणों के सेवनेयोग्य, मुक्ति देनेवाला और पाप नाश करनेवाला है ६१ आपके भोजनकी जूंठन बचीहुई पितृ, देवता और ब्राह्मणोंके से-

वने योग्यहै और किसीको कभी योग्य नहींहै ६२ और देवताओं का अन्न, फूल, जल सब निर्माल्य छूनेयोग्य नहीं होताहै मदिराके समान होताहै ६३ तिससे पण्डित ब्राह्मण तीर्थरूप सनातन आप को नित्यही पूजनकर भोजन कियेहुए अन्नको निरन्तर सेवन करें ६४ ब्राह्मण और देवको न देखे न पूजन करै न औरके प्रसादको भोजन करै और न अन्य देवताके मन्दिरमें प्रवेशकरै ६५ जो ब्राह्मण पितरोंके श्राद्धकर्म्म में आपके भोजन कियेहुए तीर्थरूप अन्न को नहीं देताहै तो उसका सब निष्फल होजाताहै ६६ उसके पितर हजार करोड़कल्प तथा सौ करोड़कल्प पीव और रक्त भरेहुए नरकमें गिरतेहैं ६७ हे विभुजी! आपकी जूंठनको जो हवन करता वा देदेताहै तो देवता और पितरोंकी अनन्त तृप्ति होजातीहै६८ तिससे ब्राह्मणोंको आपही पूज्यहैं और कोई देव पूज्य नहीं है मोह से जो और देवताओंको पूजताहै वह पाखण्डी होताहै ६९ आप नारायण, श्रीमान्, वासुदेव, सनातन, विष्णु सबमें प्राप्त, नित्य, परमात्मा और महेश्वरजी हैं ७० ब्रह्मण्य और शुद्धसत्वयुक्त आपही ब्राह्मणोंके सेवनेयोग्यहैं ब्राह्मणोंके पूज्यत्व और शुद्धसत्वगुणसे ७१ सब देवताओं के ब्राह्मणभावको आप प्राप्तहोंगे आपही पुरुषोत्तम जीको ब्राह्मण सदैव भजते हैं ७२ तिसी से वे ब्राह्मण निस्सन्देह होते हैं और नहीं होतेहैं देवकी के पुत्र, मधुसूदन ७३ कमलनयन, विष्णु, अच्युत, भगवान्, कृष्ण, वासुदेव, अच्युत, हरि ७४ नारसिंह, नारायण, नाशरहित, श्रीधर, लक्ष्मीके स्वामी, गोविन्द, वामन ७५ यज्ञशूकर, केशव, पुरुषोत्तम, राघव, श्रीमान् राम, कमललोचन ७६ पद्मनाभ, दामोदर, प्रभु, माधव, यज्ञ, त्रिविक्रम, प्रभु ७७ हृषीकेश, पीताम्बरधारी, जनार्दनजी ब्रह्मण्य हैं ब्रह्मण्यदेव, वासुदेव, शार्ङ्ग-धनुषधारी ७८ नारायण, लक्ष्मीके स्वामी, कमलनयन, ब्रह्मण्यदेव, वासुदेव, विष्णु ७९ कल्याणगुणोंसेपूर्ण, परमात्मा, ब्रह्मण्यदेव, सर्व्व-देवस्वरूपी ८० शूकरकी देहवाले, त्रयीनाथ, ब्रह्मण्यदेव, सर्प की शय्यापर सोनेवाले ८१ कमलदलकेसमान नेत्रवाले रामचन्द्रजीके नमस्कारहैं सबदेवता और ऋषि आपकी मायासे मोहितहोकर ८२

हे प्रभुजी! हे भगवन्! सब वेद जानकरभी महात्मा, सब लोक के ईश्वर आपको नहीं जानते हैं ८३ हे लक्ष्मीके स्वामी! नाम, रूप, गुण और दुष्कृत चरित्रों से आपके परत्वसूचक सत्व जानने के लिये मुझ समर्थ को ८४ महर्षियों ने भेजा तब मैं आपके पास आया और हे केशवजी! आपके शील और गुण जानने के लिये मैंने अपना चरण ८५ आपकी छाती में मारा तिसको हे गोविन्द! हे दयानिधिजी! क्षमाकीजिये इसप्रकार भृगुजी कहकर वारंवार देव के प्रणामकर ८६ प्रसन्नआत्मा होकर दिव्य, महात्मा महर्षियों से पूजित होकर शुभनामवाली यज्ञभूमिको फिर चलेगये ८७ आये हुए महात्मा भृगुजी को देखकर महर्षिलोग उठकर नमस्कारकर विधिपूर्वक पूजा करते भये ८८ तब मुनिश्रेष्ठ भृगुजी तिनसे सब वृत्तान्त कहतेभये कि देवताओं में उत्तम ब्रह्मा और महादेवजी रजोगुण और तमोगुणसे युक्तहैं ८९ हे ऋषिश्रेष्ठो! उनको मैंने शाप दियाहै कि ब्राह्मणों के तुम दोनों पूज्य नहीं होगे और अब्रह्मण्यभावको प्राप्त, निन्दितरूपमें स्थित ९० तमोगुणसे युक्त महादेवजी को मैंने कैलासपर्वत के कँगूड़े पर शापदियाहै और शुद्धसत्वमय, विष्णु, कल्याण गुणों का समुद्र ९१ नारायण, परंब्रह्म, ब्राह्मणों के देवता, हरि, ब्रह्मण्य, श्रीपति, विष्णु, वासुदेव, जनार्दन ९२ ब्रह्मण्य, कमलनयन, गोविन्द, हरि, अच्युतजी हैं सोई ब्राह्मणों के पूजने योग्यहैं और श्रेष्ठ पुरुष नहीं पूजने योग्यहैं ९३ मोहसे जो और को पूजताहै वह पाखण्डी होताहै कृष्णजी के स्मरणसे पापियोंकी भी मुक्ति होती है ९४ तिनका चरणजल और पवित्रभोजन की जूंठन ब्राह्मण मनुष्यों को विशेषकर सेवने योग्य है यह स्वर्ग और मोक्षको देती है ९५ विष्णुजी की निवेदित हविको देवताओं को हवन करे और पितरों को भी देवे तो सब अनंतफल को भोग करे ९६ हे ब्राह्मणो! जो पितरों के श्राद्धकर्म में भगवान्की जूंठन को नहीं देताहै तो उसके पितर निरन्तर विष्ठा और मूत्रको भोजन करते हैं ९७ तिससे विष्णुजी का प्रसाद ब्राह्मणों के सेवने योग्यहै और देवताओं का निर्माल्य निन्दित होताहै ९८ जो ज्ञानसे दुर्बल

ब्राह्मण एकवार भी महादेव आदिकोंके निर्माल्यको भोजन करता है वह निश्चय चाण्डाल होताहै ९९ और करोड़ हजार कल्प नरककी अग्निसे पचताहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो! महादेव आदिक देवताओं का निर्माल्य १०० राक्षस, यक्ष और पिशाचों का अन्न ये सब मदिरा और मांस के समान हैं तिससे देवताओं की भोजनकीहुई हवि ब्राह्मणों को न खानी चाहिये १०१ हे श्रेष्ठब्राह्मणो! तिससे अतंद्रितहोकर और देवको छोड़कर सनातन विष्णुजीहीका जीवनपर्यन्त पूजन करो १०२ तिन विष्णुजी के परमधामको मानकर, संशयरहित, तापादिक पांच संस्कारों से युक्त, शुभचित्तवाले आप लोग १०३ अप्राकृत हरिजी को अच्छे प्रकार पूजन करो चक्र से चिह्नित भुजावाले ब्राह्मण अप्राकृत, शुभ होते हैं १०४ और चक्रके चिह्नसेहीन प्राकृत तामस कहाते हैं तिससे हरिजीके,प्राकृत संसर्ग पापसमूहके जलानेवाले १०५ तप्तहुए चक्र और शंख को दोनों भुजाओं की मूलों में धारणकरै और शास्त्र में कहेहुए मार्गसे अंगों में ऊर्ध्वपुण्ड्र धारणकर १०६ विधिपूर्वक मन्त्ररत्नसे पुरुषोत्तमजी को पूजनकरै और अतन्द्रितहोकर तिनके प्रसादसेवाको नित्यहीकरै १०७ तिनकी आवरणपूजा में देवताओं को सदैव पूजनकरै तिनको सब यज्ञोंके भोक्ता, परमेश्वर १०८ जानकर हवन, दान और निरन्तर जपकरै १०९ वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! इसप्रकार भृगुजी के कहनेपर पापरहित सबऋषि नमस्कारकर हाथ जोड़कर तिसीसमयमें भृगुजीसे बोले ११० कि हे भगवन्! हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! हे ब्रह्मन्! सन्देह के काटनेवाले, लोककी गति, श्रेष्ठ गति १११ परमधर्म और परमतपस्या आपही हैं आपही के प्रसाद से हमलोग ब्राह्मणहोंगे और तरहसे नहीं ११२ वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप! इसप्रकार सब महर्षि भृगु ब्राह्मणकी स्तुतिकर तिनसे मंत्र प्राप्तकर भगवान् की पूजा करतेभये ११३ हे राजाओं में उत्तम! प्रसंगसे यह सब तुमसे कहा रामचन्द्रजीके कमलरूपी हाथके छूने से ११४ संसारमें निन्दित भी रूप निर्मल होजाताहै सब देवताओं में पवित्र, पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी हैं ११५ तिन्हींके छूने और देखने

से महादेव आदिक निर्म्मल होगयेहैं सब देवताओं के पिता और माता जनार्दनजी हैं ११६ सब लोकोंकी रक्षा करनेवाले और वात्सल्यगुणके समुद्र हैं तिन्हींकी शरणजाइये जो परमपद की इच्छा होतो इससे ११७ हे राजन् यह स्वायम्भुवमनु के अन्तरमें ब्रह्माजी करके कहाहुआ वेदसम्मित सब पुराण कहा ११८ विष्णुभक्तिसे नम्र, शुद्धसत्ववाले पुरुषको मुक्ति देनेवाली हरिजी की कथा नित्यही सुनावे ११९ शंख,चक्र और ऊर्ध्वपुण्ड्रादिक धारण करनेवाला कथा बांचनेहारा पुरुष होना चाहिये तिसके मुखसे नित्यही कथा सुनो तो पुत्रयुक्तहोगे और तरहसे न होगे १२० जो एकाग्रचित्तहोकर इसको सुनाता वा पढ़ता है तिसके भगवान्की अनन्यभक्ति सर्वदा होजाती है १२१ विद्यार्थी विद्या को, धर्म्मार्थी धर्म्म को, मोक्षार्थी मोक्षको और कामार्थी सुख को प्राप्तहोताहै १२२ द्वादशी, श्रवण नक्षत्र,इतवार, संक्रांति,ग्रहण,अमावास्या और पौर्णमासी में भक्तियुक्त होकर पढ़ै १२३ जो श्लोकका आधा वा चौथाई एकाग्रचित्त होकर पढ़ताहै वह हज़ार अश्वमेध यज्ञके फलको निस्सन्देह प्राप्त होताहै १२४ यह गुप्त, संहितात्मक पुराण तुमसे कहा जो परमपद की इच्छाहो तो भगवान्को पूजिये १२५ सूतजी बोले कि हे शौनक! वसिष्ठ गुरुजी ने जब इसप्रकार राजाओं में श्रेष्ठ दिलीपजीसे कहा तो राजा गुरुजी के प्रणाम और यथोचित पूजाकर १२६ तिन्हीं श्रेष्ठ ब्राह्मण से विधिपूर्वक मंत्र प्राप्तहोकर अतंद्रितहो जीवनपर्यंत भगवान्की पूजाकर समयमें सनातन,योगियोंके जानेयोग्य हरिजी के पदको प्राप्त होतेभये १२७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपंचपंचाशत्साहस्र्यांसंहितायामुत्तरखण्डेवैयासिक्या मुन्नामप्रदेशान्तर्गततारगांवनिवासिरामविहारिसुकुलकृतभाषानुवादेभृगुपरीक्षाकथनंनामपंचपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५५॥

इत्युत्तरखण्डस्समाप्तः॥

———— ————

बारहोंस्कन्ध श्रीमद्भागवत क़ीमत ४) पु०

इसके भाषा टीकाको श्रीअंगदशास्त्रीजी ने अक्षर२ के अर्थको ललित भ बोली में रचना कियाहै यह टीका ऐसा मनोहर हुआहै कि जिसकी सहायता थोड़ा भी जाननेवाला भागवतको अच्छीतरहसे समझसक्ताहै यह पुस्तक नये विद्वान्के पास रहनी चाहिये क्योंकि भागवत बड़ा कठिन पुराण है बिना ऐ सहज भाषा टीकाके सबको श्लोकार्थ नहीं समझ पड़ता है इसका मूल श्लो और भाषाटीका नीचे ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धता से पत्रेनुमा छपा है काग़ चिकनाई है और छापा पत्थरहै ॥

तथा उत्तम कागज़ और टैप के छापे की क़ीमत ७) पु०

बामनपुराण भाषा क़ीमत ॥|≡)

पण्डितरविदत्तकृतभाषा है–जिस में कपालमोचनआख्यान, दक्षयज्ञविन श, महादेव का कालरूपधारण, कामदेवदहन, प्रह्लाद नारायण युद्ध और देव सुरसंग्राम इत्यादि श्रीवामन भगवान्की उत्तमोत्तम कथा सरल भाषामें वर्णितहै

पद्मपुराणभाषा प्रथमसृष्टिखंड व द्वितीयभूमिखंड क़ीमत १॥) पु

पण्डित महेशदत्त सुकुलकृत भाषा–इसमें पुष्करका माहात्म्य, ब्रह्मयज्ञविधि, वेदपाठ आदिका लक्षण, दानों और व्रतोंका कीर्त्तन, पार्वतीजीका विवाह, न रकाख्यान, गवादिकों का माहात्म्य, कालकेयादि दैत्योंका वध, ग्रहोंका अर्च और दान, पिता और माता आदिके पूजन के पीछे शिवशर्म्म और सुव्रत की कथा, वृत्रासुरकावध, पृथुसैन्यका आख्यान इत्यादि अनेक विषय संयुक्तहैं ॥

पद्मपुराणकाचतुर्थ पातालखण्ड भाषा क़ीमत १॥) पु०

पण्डित महेशदत्तकृत भाषा–इसमें प्रथम रामाश्वमेधकी कथामें श्रीरामजी के अभिषेक का वर्णन, अगस्त्यादि ऋषियोंका अयोध्याजी में आगमन, रावण के वंशका वर्णन, अश्वमेध करनेका उपदेश, अश्वका छोड़ाजाना और उसका इ धर उधर घूमना, नानाप्रकारके राजाओं की कथा, जगन्नाथजी का अन्तर्धान वृन्दावनका माहात्म्य इत्यादि अनेक कथायें संयुक्त हैं ॥

पद्मपुराणका स्वर्गखण्ड भाषा क़ीमत १॥) पु०

पण्डित महेशदत्तकृत भाषा ॥

बाक़ी खण्डों का उल्था होगयाहै ॥

प्रेमगंगतरंग भाषा क़ीमत १॥) पु०

जिसको मुबारकपुर ज़िला सारननिवासी श्रीवास्तव कायस्थ श्रीभक्त भगवत दास मुन्शी श्री तपस्वीराम सीतारामीयने श्रीतुलसीकृत रामायण और पुराणों से संग्रहकर छपवाया है यह पुस्तक ऐसी संग्रह हुई है कि गीत, सवैया, चौपाई इत्यादि सैकड़ों प्रकारके जिसमें छन्द विद्यमानहैं अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है देखनेही से उत्तमता मालूम होसक्ती है यह पुस्तक रामजी के भक्तको अवश्यही रखनी योग्य है ॥

जैमिनिपुराण भाषा क़ीमत ॥।)

पण्डित शिवदुलारेकृत उल्था—जिस में राजायुधिष्ठिरने गोत्रहत्या निवारणार्थ अगस्त्योपदेश से अश्वमेध घोड़ाछोड़ यौवनाश्व,नीलध्वज,सुरथ,सुधन्वा व अपने पुत्र बभ्रुवाहन इत्यादि राजाओंको श्रीकृष्णचन्द्रकी सहायतासे विजय किया इत्यादि कथायें बहुतसी वर्णितहैं ॥

आदिब्रह्मपुराण भाषा क़ीमत १)

पण्डित रविदत्तकृत जिसमें ब्रह्माजीसे लेकर सृष्टिके उत्पत्तिका वृत्तांत,राजा, पृथु का चरित्र, मन्वन्तर कीर्त्तन, आदित्य उत्पत्ति, सूर्य्यवंश व चन्द्रवंश कथन राजा ययाति चरित्र और कृष्णवंशकीर्त्तन इत्यादि कथायें वर्णितहैं ॥

नरसिंहपुराण भाषा क़ीमत ।≡)

भाषा पं० महेशदत्त सुकुल कृत—इसमें संस्कृत नरसिंहपुराण से प्रतिश्लोक प्रतिचरण व प्रतिपद का टीका अति सरल व मधुर भाषा में कियागयाहै—जिस में सृष्टि वर्णन, सर्ग रचना,मृष्टि रचना प्रकार, पुंसवनोपाख्यान, मार्कण्डेय मुनि का तपोबलसे मृत्युको जीतना, यमगीता, यमाष्टक वर्णन, मार्कण्डेय चरित्र, यमीयम संवाद, ब्रह्मचारी व पतिव्रता संवाद, एक ब्राह्मणका इतिहास जिस ने परमेश्वर कृष्णजीका ध्यानकर देहत्यागकिया और व्यासजी का शुकाचार्य से संसाररूपी वृक्षको वर्णन करना,शिव व नारद करके भवतरनेकी क्रियाका वर्णन और अष्टाक्षर मन्त्र माहात्म्य इत्यादि अनेक विषय संयुक्त हैं ॥